608

धर्म सिन्धुः

भाषानुवादसहित

606
R

श्री

व्रजजीवन प्राच्यभारती ग्रन्थमाला

७३

धर्म सिन्धुः

भाषानुवादसहित

टीकाकारः

राजवैद्य रविदत्त शास्त्री

ज्ञाने सर्वं प्रतिष्ठितम्

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
दिल्ली-११०००७
१९९४

प्रकाशक
चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
३८ यू.ए. बंगलो रोड, जवाहरनगर
पो० बा० नं० २११३
दिल्ली ११०००७
दूरभाष : २३६३९१

Acc. 23982/23182

निर्णयसागर संस्करण से पुनः मुद्रित

प्रथम संस्करण १९९४

मूल्य ३००-००

अन्य प्राप्तिस्थान
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के० ३७/११७, गोपालमन्दिर लेन
पो० बा० नं० ११२९, वाराणसी २२१००१
दूरभाष : ३३३४३१

★

प्रधान वितरक
चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे)
पो० बा० नं० १०६९, वाराणसी २२१००१
दूरभाष : ३२०४०४

THE
VRAJAJIVAN PRACHYBHARAT/GRANTHAMALA
73

DHARMA-SINDHU

WITH

HINDI COMMENTRY

Translated by
RAJVAIDYA RAVIDUTTA SHASTRY

THE CHAUKAMBA SANSKRIT PRATISHTHAN
DELHI-110007
1994

CHAUKHAMBA SANSKRIT PRATISHTHAN
38 U.A. Bungalow Road, Jawaharnagar
Post Box No. 2113
DELHI 110007
Telephone : 236391

First Published in Nirnaya Sagar Press
1892
First Reprint 1994
Price Rs 300-00

Also can be had of
© CHAUKHAMBA SURBHARATI PRAKASHAN
(Oriental publishers & Distributors)
K. 37/177, Gopal Mandir Lane
Post Box No. 1129
VARANASI 221001
Telephone : 333431

Sole Distributors
CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
CHOWK (Behind The Benares State Bank Building)
Post Box No. 1069
VARANASI 221001
Telephone : 320404

Printed at
A.K. Lithographer
Delhi-1100035

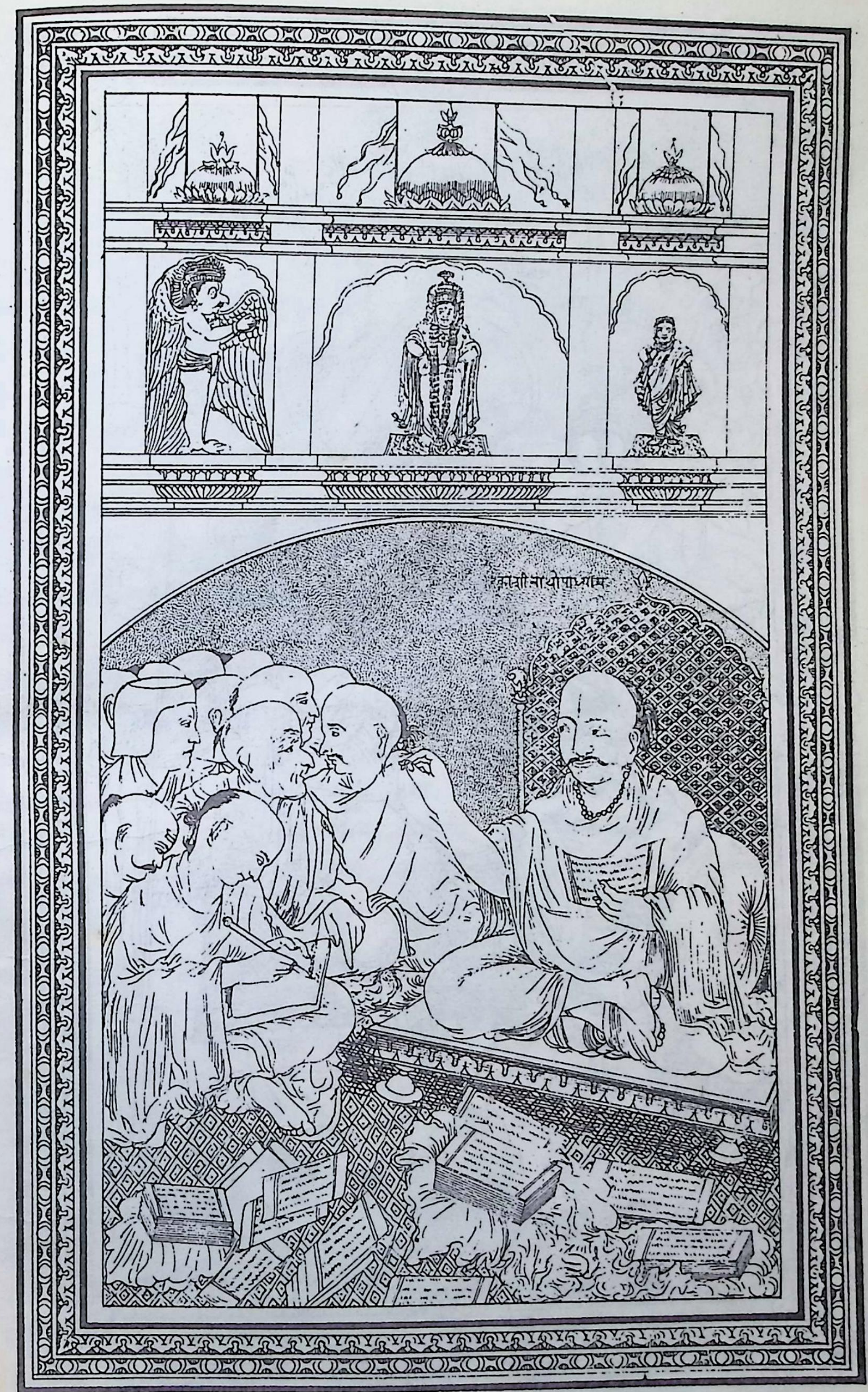
काशीनाथोपाध्याय

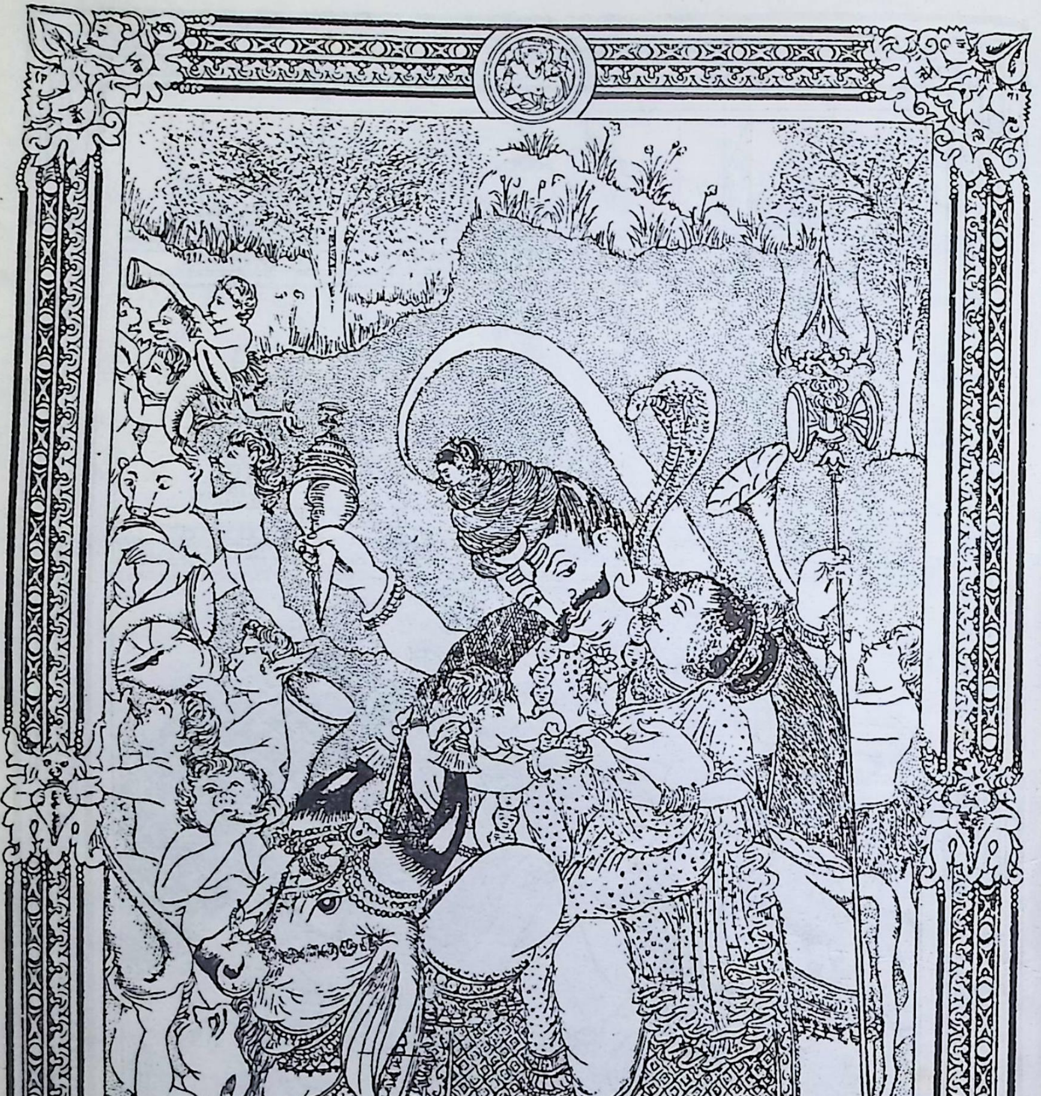

प्रस्तावना.

प्राचीन कालमें इस भरतखंडके लोक वेदशास्त्रादिक सकल संस्कृत विद्यामें बडे विद्वान् हो गये हैं और तिन्होंनें अपनी कीर्ति चिरकाल रहके जनोंका उद्धार होनेके अर्थ अनेक प्रकारके विषयोंपर नाना प्रकारके संस्कृत ग्रंथ लिखेभी हैं. वे ग्रंथ सांप्रत कालमें इस भरतखंडमें सब जगह छापखानोंका प्रचार होनेसें भाषांतररूपसें अथवा यथास्वरूप छापके प्रसिद्ध होनेसें लोकोंकों तिनका लाभ होता है, यह एक देशके उत्कर्षकाही मार्ग है. तथापि जिसमें श्रौतस्मार्तादि धर्मका विवेचन होके हिंदुस्तानी भाषामें तिसका भाषांतर हुआ है ऐसा एकभी ग्रंथ अबतक छापके तैयार नहीं हुआ है. और तैसे ग्रंथकी तौ विद्यमान कालमें अत्यंत आवश्यकता है. क्योंकी, धर्मका ज्ञान कर लेनेकी लोकोंकी उत्सुकता दिन प्रतिदिन बहुतही बढती जाती है, और मनुष्योंनें तैसी जिज्ञासा रखके अपने वर्णाश्रमधर्मोंका विचार करके तिसके अनुसार अपना वर्तन रखना यह तिन्होंका सब कर्तव्योंमें मुख्य कर्तव्य है. और मनुष्यकों वह धर्म इतना अंतरंग है की, कैसाभी संकट प्राप्त होवै तौभी तिसका त्याग नहीं करना. इस विषयमें व्यासजीनें अपने शुकाचार्य नामके पुत्रकों ऐसा कहा है की **"न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः ॥ धर्मो नित्यः सुखदुःखे त्वनित्ये जीवो नित्यो हेतुरस्य त्वनित्यः"** ॥ अर्थ यह—कामोपभोगके लिये अथवा भयसें किंवा लोभसें धर्मका त्याग कभीभी नहीं करना. विशेष क्या कहना, जीवितके संरक्षणके लियेभी धर्मका त्याग नहीं करना. क्योंकी, धर्म यह नित्य अर्थात् शाश्वत होके कामादिजन्य सुखदुःख अनित्य हैं. तात्पर्य यह है की, मरणपर्यंत आपत्ति होवै तौभी अनित्य ऐसे कामआदिकोंका आश्रय करके शाश्वत ऐसे धर्मका त्याग कभीभी नहीं करना.

पूर्वोक्त धर्मका ज्ञान केवल संस्कृत भाषाके आधीन है और वह भाषा तौ अति दुर्बोध होनेसें जिन्होंकों तिस भाषाका ज्ञान नहीं है ऐसे प्राकृत जनोंकों वह अतीव दुर्लभ है, और धर्मका ज्ञान संपादन करना यह मनुष्यका मुख्य कर्तव्यकर्म है; परंतु वे धर्मसंबंधी सब ग्रंथ संस्कृत भाषामें होनेसें साधारण धर्मजिज्ञासु जनोंकों जैसा तिसका ज्ञान होना अवश्य है तैसा नहीं होके तिन्होंकी धर्मजिज्ञासा केवल मनमेंही रहती है.

कभी कभी बडे नगरोंमेंभी ऐसा प्रसंग आता है की धर्मशास्त्र कहनेवाला ऐसा कोईभी संनिध नहीं होता है, और शास्त्रार्थ तौ समज लेना अवश्य होता है, तब ऐसे समयमें बडा संकट प्राप्त होके कामकी बडी हानि होती है. इसलिये अवश्य करके जिस्सें प्रायशः सबोंकों धर्मशास्त्रका ज्ञान होवै और प्राप्त हुए अपने अपने कार्य संपादन हो सकैं ऐसे किसीक धर्मशास्त्रप्रतिपादक संस्कृत ग्रंथका हिंदुस्तानी भाषामें भाषांतर करके और वह छापके प्रसिद्ध कियेविना पूर्वोक्त हेतु सिद्ध नहीं होवैगा, ऐसा निश्चय करके धर्मशास्त्रप्रतिपादक संस्कृत ग्रंथ देखते देखते **निर्णयसिंधु, कालमाधव** और **हेमाद्रि** इत्यादि बहुतही ग्रंथ देखनेमें आये.

परंतु व्यवहारमें जो जो धर्मशास्त्रके विषय आवश्यक हैं तिन सबोंका एकही ग्रंथमें संग्रह किया होवै और सुबोध तथा विद्वन्मान्य ऐसा ग्रंथ **धर्मसिंधुही** उपलब्ध होता है, अन्य जो **कालमाधव** आदि अनेक ग्रंथ हैं वे पृथक् पृथक् विषयोंके होनेसें तिन सब ग्रंथोंका भाषांतर किया जावै तौभी प्रतिग्रंथसें कितनेक विषयोंका लोकोंकों ज्ञान होवैगा परंतु एकही ग्रंथसें सब विषयोंका ज्ञान होना चाहिये ऐसा जो हमारा उद्देश है, सो सिद्ध नहीं होवैगा; तौ तैसा उद्देश सिद्ध होनेके अर्थ **धर्मसिंधुके** समान सुबोध ग्रंथ दूसरा नहीं, ऐसा निश्चय हुआ; इस लिये यही ग्रंथका यह भाषांतर किया है.

यह भाषांतर करनेका दूसरा प्रयोजन यह है की, जिन्होंकों आस्तिक्यबुद्धि होके जो केवल धर्म नहीं समझनेसें अज्ञानसागरमें निमग्न होते हैं तिन्होंका इस ग्रंथके अर्थबोधनरूप नौकासें उद्धार होनेके लिये हिंदुस्तानी भाषामें इसका भाषांतर किया है. इस्सें संस्कृत भाषा नहीं जाननेवाले लोकोंकोंभी धर्मका ज्ञान होके वे इस ग्रंथमें कहे श्रौतस्मार्तादि धर्मोंका अपनी अपनी शक्तिके अनुसार कछुक तौभी आचरण करैंगे, और तिस्सें चित्तशुद्धिद्वारा तिन्होंके संसारसंबंधी और परलोकसंबंधी कार्य होके तिन मनुष्योंके जन्मका साफल्य होवैगा.

अब मीमांसा धर्मशास्त्रज्ञ ऐसे धर्मशास्त्रमें कुशाग्रबुद्धिवाले जो पंडित हैं वे **निर्णयसिंधु**, **हेमाद्रि**, और **कालमाधव** इत्यादि प्राचीन ग्रंथोंसेंही कृतकार्य हुए हैं और होतेभी हैं; ऐसे जनोंके लिये यह मेरा उद्यम नहीं है. केवल मंदबुद्धिवाले, आलस्ययुक्त और शास्त्रीय व्युत्पत्तिसें रहित होके धर्मका निर्णय जाननेविषे उत्सुक ऐसे जो हैं तिन्होंके लिये यह मेरा भाषांतरका प्रयत्न है.

यह मूलग्रंथ जिन्होंनें बनाया है तिन्होंका इतिहास वाचक लोकोंकों समझना अवश्य होनेसें वह इहां संक्षेपसें लिखते हैं.—रत्नागिरी जिलामें संगमेश्वर तालुकामें गोळवली नामका ग्राम है. वह ग्राम इस ग्रंथकर्ताके वंशजोंकों अग्रहार है. तिसी वंशमें विद्वान् ब्राह्मणोंमें केवल सार्वभौम ऐसे **काशीनाथोपाध्याय** होते भये. तिन्होंकों **यज्ञेश्वरोपाध्याय** तथा **अनंतोपाध्याय** ऐसे दो पुत्र होते भये. तिन्होंमें **यज्ञेश्वरोपाध्याय** श्रौतमार्गमें प्रवीण होके तैसेही ज्योतिष और वेदोंका अंग जो उत्तम व्याकरणशास्त्र तिसमें सुशिक्षित होते भये. दूसरे **अनंतोपाध्यायभी** भक्तजनोंमें श्रेष्ठ होके अनंतका अंशभूत अवतार होनेसें अनंत गुणोंका वसतिस्थान ऐसे होते भये. ये **अनंतोपाध्याय** वैराग्ययुक्त होनेसें इन्होंनें स्वकीय कोंकण नामकी अपनी जन्मभूमि छोडके **श्रीपंढरीक्षेत्रमें श्रीपांडुरंगके** सन्निध वास्तव्य किया. पीछे वे **श्रीपांडुरंगकी** संतत भक्ति करके **भीमानदीके** तीरपर मुक्तिकों प्राप्त होते भये. तिन **अनंतोपाध्यायके** प्रसिद्ध पुत्र विद्वान् **काशीनाथोपाध्याय** इन्होंनें यह **धर्मसिंधु** नामक ग्रंथ शके १७१२ में रचा है.

अब इस ग्रंथका भाषांतर जिस पद्धतीसें किया है तिसविषे वाचकोंकों सूचना करनी अवश्य है. इसलिये वह पद्धति वाचकोंकों दिखाते हैं. यह भाषांतर करनेके समयमें अनुष्ठानके प्रसंगमें जहां जहां संकल्प, मंत्र, त्याग और तत्सदृश ऊहादिक करनेके दूसरे वाक्य हैं तहां

तिन्होंका उपयोग कहके वे संकल्पादिक अनुष्ठानमें तैसेही पठन करने चाहिये, इसलिये तिन्होंका अर्थ लिखेविना वे तैसेही " " ऐसा चिन्ह करके तिसमें बडे अक्षरोंसें मूलकी तरह तैसेही समग्र लिखे हैं इस उपरसें वे मंत्र संकल्पादिकके हैं ऐसा जानना.

यह मेरा भाषांतर करनेका प्रथमही प्रयत्न होनेसें इसमें जो दोष होवैंगे तिन्होंमांहसें विद्वान् लोकोंनें हंसक्षीरन्यायसें गुण ग्रहण करके दोषोंका त्याग करना ऐसी तिन्होंकों प्रार्थना है.

भाषांतरकर्ता.

अनुक्रमणिका.

प्रथम परिच्छेद.

विषय. पृष्ठ.

प्रथम कालके भेद २
संक्रांतिके निर्णय ४
बारह संक्रांतियोंके दान ५
मलमासका निर्णय ६
अधिकमासका उदाहरण ७
क्षयमासका उदाहरण ७
अधिकमासमें और क्षयमासमें वर्ज्य और अवर्ज्य कर्म ८
मलमासमें वर्जित कर्म १०
सिंहके बृहस्पतिमें विशेषकरके वर्जित करनेके कर्म १०
सिंहके बृहस्पतिके अपवाद ११
तिथिके निर्णयकी सामान्य परिभाषा १२
विहित व्रतआदिके विषयमें निर्णय १२
कर्मविशेषका निर्णय १३
स्वतंत्र व्रतोंका निर्णय १४
नक्तव्रतका निर्णय १५
व्रतकी परिभाषा १६
प्रतिपदा आदिका निर्णय १९
द्वितीयाका निर्णय २०
तृतीयाका निर्णय २०
चतुर्थीका निर्णय २१
पंचमीका निर्णय २१
षष्ठीका निर्णय २१
सप्तमीका निर्णय २२
अष्टमीका निर्णय.... .... २२
नवमीका निर्णय २३
दशमीका निर्णय २३
एकादशीका निर्णय २३

विषय. पृष्ठ.

व्रतके दिनका निर्णय २५
एकादशीके भेद २५
स्मार्तोंका निर्णय.... .... २६
एकादशीव्रतका वेध २८
व्रतका प्रयोग २९
एकादशीव्रतसंबंधी नियम.... .... ३०
द्वादशीका निर्णय ३२
त्रयोदशीका निर्णय ३३
चतुर्दशीका निर्णय ३४
पूर्णमासी और अमावसका निर्णय.... ३४
इष्टिकालका निर्णय ३५
बालकोंको बोधके लिये दूसरा प्रकार ३६
पौर्णमासीका विशेष निर्णय ३७
अमावसविषे कात्यायनोंका विशेष निर्णय ३९
सामवेदियोंके इष्टीका निर्णय ४१
पिंडपितृयज्ञके कालका निर्णय ४१
श्राद्धमें अमावसका निर्णय ४३
इष्टि और स्थालीपाकके आरंभका निर्णय ४४
विकृतियोंका काल ४५
पशुयागका काल ४५
चातुर्मास्यका काल ४६
काम्येष्टियोंका काल ४६
आधानका काल.... .... ४७
ग्रहणका निर्णय ४८
पुरश्चरणका विधि.... .... ५१
ग्रहणके वेधका निर्णय ५२
ग्रहणके शुभाशुभका निर्णय ५३
समुद्रस्नानका निर्णय ५४

विषय. पृष्ठ.
तिथी, नक्षत्र और वार इन्होंविषे वर्ज्य पदार्थ.... .... ५५
यह ग्रंथ बनानेका प्रयोजन.... .... ५५

द्वितीय परिच्छेद.

चैत्रमास.

तिथीका निर्णय ५८
दश अवतारोंकी जयंती ६०
नवमीव्रतका प्रयोग ६२
श्रीकृष्णका दोलोत्सव ६३
दमनाके उत्सवका प्रयोग.... .... ६४
अनंगपूजनरूप व्रत ६६
वैशाखमासके कृत्य ६७
नृसिंहजयंतीका प्रयोग ७०
ज्येष्ठमासके कृत्य ७२
दशहराव्रतका विधि ७४
वटसावित्रीव्रत ७७
आषाढमासके कृत्य ७८
आषाढशुदि एकादशीमें विष्णुके शयनका उत्सव.... .... ७८
चातुर्मास्यके व्रतका आरंभ ७९
चातुर्मास्यव्रत ग्रहण करनेका प्रकार. ८०
चातुर्मास्यव्रतमें निषिद्ध वस्तु ८०
काम्य व्रत ८१
तप्तमुद्राधारण ८२
वामनपूजा.... .... ८३
संन्यासियोंनें चातुर्मास्यमें एक जगह रहनेका विधि ८४
श्रावणमासके कृत्य ८५
पवित्रारोपणप्रयोग ८७
उपाकर्मका काल.... .... ८९
यजुर्वेदियोंके उपाकर्मका काल ९०
विषय. पृष्ठ.
काण्व माध्यन्दिन आदिकोंके उपाकर्मका काल.... .... ९१
सामवेदियोंके उपाकर्मका काल ९२
रक्षाबंधनका निर्णय ९५
जन्माष्टमीके व्रतका निर्णय ९६
तिसविषयमें पक्षान्तर ९८
पारणाकालका निर्णय १००
व्रतका विधि १०२
पूजाके अनन्तर कृत्य १०५
दर्भानयनविधि १०६
भाद्रपदमासके कृत्य १०७
गणेशचतुर्थी १०७
ऋषिपंचमी १०९
विष्णुका परिवर्तनोत्सव ११०
श्रवणद्वादशीका व्रत १११
पारणाका काल ११२
वामनजयंतीका निर्णय ११४
भाद्रपद शुद्ध चतुर्दशीके दिन अनंत व्रत ११४
महालयका निर्णय ११६
प्रतिदिन महालयसंबंधी पितृगण ११८
संन्यास और पतितपना आदिसें युत पिता होनेमें १२१
संन्यासीका महालय १२२
दुर्मरण श्राद्धविधि १२६
कपिलाषष्ठीका निर्णय १२७
संक्षेपसें कपिलाषष्ठीका व्रतविधि १२८
आश्विनमासके कृत्य १२९
नवरात्रके गौणपक्ष १३१
नवरात्रके आरंभका प्रयोग १३३
दुर्गापाठका विधि १३५
कुमारीपूजाका विधि १३६
उपांगललिताव्रतका निर्णय १३७
सरस्वतीपूजा १३७

विषय. पृष्ठ.
पत्रिकापूजन १३८
महाअष्टमीका निर्णय १३९
बलिदान.... .... १४०
पारणा और देवतोंके विसर्जनका काल १४२
विजयादशमीका निर्णय १४४
कार्तिकस्नानका निर्णय १४६
कार्तिकमासमें वर्जनेके योग्य पदार्थ १४८
व्रतके समाप्तिके दिनके दान १४८
पुराणश्रवणका विधि १४९
कोजागरव्रत १५०
आग्रयणका काल.... .... १५२
आग्रयणके गौण काल १५३
ज्येष्ठापत्यकों आरति १५४
करकचतुर्थी १५४
राधाकुंडमें स्नान १५४
गोवत्सद्वादशी १५५
नरकचतुर्दशी १५६
तैलाभ्यंग १५७
कार्तिकमासके कृत्य १५८
लक्ष्मि और कुबेरकी पूजा.... .... १५९
गोवर्धनकी पूजाका विधि १६०
मार्गपालीबंधन १६१
यमद्वितीयाका निर्णय १६१
गोपाष्टमी १६१
भीष्मपंचकव्रत १६३
आंवलाके मूलमें देवपूजाका विधि.... १६५
प्रबोधोत्सव और तुलसीविवाहका विधि १६७
वैकुंठचतुर्दशीका निर्णय १६९
चातुर्मास्यव्रतकी समाप्ति १७०
त्रिपुरी पौर्णमासी.... .... १७१
कालाष्टमी १७२
मंगशिरमासके कृत्य १७२
नागपूजा.... .... १७२

विषय. पृष्ठ.
चंपाषष्ठी.... .... १७२
दत्तजयंती १७३
सूर्यव्रत १७४
पौषमासके कृत्य १७५
शुभयोगकृत्य १७७
माघस्नानका निर्णय १७७
माघस्नानका विधि १७९
पात्रदानका प्रयोग १८०
माघमासके कृत्य १८१
तिलपात्रदानका विधि १८१
वेणीदानका विधि १८२
त्रिवेणीमें देहत्यागका विधि १८३
ढुंढिराजव्रत १८४
वसंतपंचमी १८४
रथसप्तमी १८४
भीष्माष्टमी १८५
तिलदानादिविधि.... .... १८५
माघकी पौर्णमासीका कृत्य १८६
अष्टकादि श्राद्धकृत्य १८६
शिवरात्रीका निर्णय १८७
पारणाका निर्णय.... .... १८७
शिवरात्रीका प्रयोग १८९
चारप्रहरोंकी पूजा १९१
माटीके लिंगमें शिवकी पूजा करनेका विधि १९२
लिंगके विशेषकरके फलविशेष १९३
शिवनिर्माल्यग्रहणविचार १९४
फाल्गुनमासके कृत्य १९५
हुताशनी.... .... १९५
भद्राके मुख और पुच्छका लक्षण.... १९६
होलिकाकी पूजाका विधि १९७
वसंतारंभोत्सव १९८
देशग्रामाधिपतिकृत्य १९८
प्रकीर्णप्रकरणका निर्णय.... .... १९८

विषय. पृष्ठ.
चंद्रमा, मंगल इन आदि ग्रहोंकी संक्रांतिका पुण्यकाल १९९
ग्रहपीडानाशार्थ ओषधियुक्त जलसें स्नान २००
नवग्रहोंके दान २००
शनीका व्रत २०१
यह ग्रंथकरनेका प्रयोजन.... .... २०२

तृतीय परिच्छेद पूर्वार्ध.

गर्भाधानका संस्कार २०४
प्रथम रजोदर्शन हुए पीछेका विधि.... २०५
सब रजोदर्शनके साधारण नियम २०६
रजस्वला स्त्रीके प्रथम दिनका निर्णय २०८
आतुर रजस्वलाका स्नानविधि २१०
गर्भाधानका काल.... .... २१२
प्रथम ऋतुगमनकृत्य २१४
नांदीश्राद्धका निर्णय २१६
नांदीश्राद्ध करनेवालेका पिता जीवता होवै तौ तिसका निर्णय २१८
नांदीश्राद्धीय पिंडदानविधि २२०
मैथुनके अंतमें करनेके योग्य विधि २२१
संततिप्रतिबंधनिवारणके अर्थ नारायणादि बलि २२२
नागबलीका विधि २२५
कृच्छ्रोंके लक्षण २२८
कृच्छ्रोंके प्रतिनिधि २२९
प्रायश्चित्तका प्रयोग २३०
गोमयस्नान २३१
मृत्तिकास्नान २३२
पानीसें स्नान २३२
पंचगव्यका विधि.... .... २३३
स्त्रीशूद्रविषयक पंचगव्यग्रहणविधि.... २३४
संतति होनेके दूसरे विधान २३४
विषय. पृष्ठ.
गोद लेनेके पुत्रमें ग्राह्य और अग्राह्यका निर्णय.... .... २३६
ऋग्वेदवालोंनें पुत्र गोद लेनेका प्रयोग २३८
यजुर्वेदवालोंका बौधायनकी कहीहुई रीतिसें प्रयोग २४०
दूसरे गोदमें उत्पन्न हुए दत्तकका कृत्य २४०
कन्याही जन्मतीं होवैं तब पुत्रकी प्राप्तिके लिये पुत्रकामेष्टि २४२
पुंसवनसंस्कार २४४
सीमन्तोन्नयनसंस्कारका काल २४५
गर्भिणीस्त्रीके धर्म २४६
गर्भिणीपतिके धर्म २४७
सूतिकाघरमें गर्भिणीका प्रवेश २४९
जातकर्मसंस्कार २५०
अनिष्टग्रहनिमित्त कर्तव्य विधि २५१
कन्यासंस्कारनिर्णय २५२
जन्मदादिदेवताका पूजन २५२
आशौचमें करनेके योग्य और नहीं करनेके योग्य कर्मोंका निर्णय.... २५३
सूतिकाकी शुद्धि २५५
जन्मसमयके दुष्ट काल और तिनोंकी शांति २५५
कृष्णपक्षकी चतुर्दशीकों जन्म होनेकी शांति २५७
सिनीवाली, कुहू और दर्श इन्होंमें जन्म हुआ होवै तौ तिसके फल और शांति २५८
दशदानोंका प्रमाण २५९
दर्शशांति.... .... २६०
नक्षत्रशांति और मूलनक्षत्रका फल २६१
शांतिके होमका मुख्य काल २६२
अग्निचक्र देखनेका प्रकार.... .... २६२
शांतिके निमित्त शुभदिनका निर्णय २६२
अभुक्तमूलनक्षत्रमें जन्म होनेमें कृत्य २६४

विषय. पृष्ठ.

आश्लेषाशांति २६६
ज्येष्ठानक्षत्रमें जन्म होवै तौ तिसका फल २६७
ज्येष्ठानक्षत्रकी शांति २६८
चित्राआदि नक्षत्रचरणफल २६८
व्यतिपात, वैधृति और संक्रांति इन्होंके फल और शांति २६९
वैधृतिशांतिका विशेष प्रकार २७०
एक नक्षत्रमें जन्म होनेमें तिसके फल और शांति २७०
ग्रहणमें जन्म हुआ होवै तौ तिसका फल और शांति २७१
नक्षत्रगंडांत और तिसकी शांति २७२
तिथिगंडांत और लग्नगंडांतकी शांति २७३
दिनक्षय आदिकी शांति २७४
विषघटीओंकी शांति २७४
जोडले दो बालक जन्मनेकी शांति २७५
तीन पुत्र होके चौथी कन्या होवै अथवा तीन कन्या होके चौथा पुत्र होवै तिसकी शांति २७६
दंतोंसहित बालक जन्मनेमें शांति २७७
विपरीत उत्पत्ति होनेकी शांति २७८
नामकरणसंस्कार.... .... २७९
उक्तकालके अतिक्रममें अपेक्षित ऐसा शुभतिथि आदि २७९
चार प्रकारके नाम २८०
प्रयोगका विशेष प्रकार २८२
स्त्रीओंका नामकर्म २८३
बालककों पालनेमें सुवानेका विधि २८३
दुग्धप्राशनविधि २८३
जलपूजा; सूर्यावलोकन २८४
बालककों पृथ्वीपर बैठानेका काल २८४
अन्नप्राशनका काल २८४
अन्नप्राशनकर्म करनेके पीछे कर्तव्य विधि २८५

विषय. पृष्ठ.

कर्णवेध २८६
बालककों दुष्टदृष्टिदोष आदि हुआ होवै तौ तिसका रक्षाविधि २८६
बढादिनका विधि २८७
संक्षेपसें वर्धापनका प्रयोग २८८
चौलसंस्कार २८९
विद्यारंभका काल.... .... २९१
नहीं यज्ञोपवीत हुए बालकके धर्म.... २९१
यज्ञोपवीतसंस्कार २९२
यज्ञोपवीतसंस्कारका काल २९३
यज्ञोपवीतकर्ममें कौनसी तिथि लेनी तिसका विचार २९५
नैमित्तिक अनध्याय २९७
वारआदिका निर्णय २९८
यज्ञोपवीतकर्मके नक्षत्र २९९
लग्नविषे ग्रहबल ३००
यज्ञोपवीतकर्ममें कौनसे पदार्थ संपादन करने ३०१
यज्ञोपवीत बनानेका प्रकार ३०२
मेखला और दंड आदि ३०४
यज्ञोपवीतके अंतर्गत पदार्थविशेष ३०४
उपसंहरणप्रकार ३०५
शिष्यनें नमस्कार किये पीछे गुरुनें तिसकों आशीर्वाद देना सो ३०५
विनायकशांति ३०५
ग्रहमख ३०६
बृहस्पतिशांति ३०८
यज्ञोपवीत आदि संस्कारोंके समयमें संकल्प करनेका सो ३१०
दूसरे दिनका कृत्य ३११
शांतिका प्रयोग ३१२
ब्रह्मचारीका व्रत ३१४
मंडपदेवतोंका उत्थापन ३१४
सपिंडवर्ज्य कर्म ३१४

विषय. पृष्ठ.

षंडबधिरादिकोंका संस्कार ३१४
कुंडगोलकनिर्णय ३१५
पुनरुपनयन ३१६
दूसरा पुनरुपनयन ३१८
तीसरा पुनरुपनयन ३१८
प्रायश्चित्तके लिये जो पुनरुपनयनसंस्कार तिसविषे विशेष ३१९
यजुर्वेदियोंका पुनःसंस्कार.... .... ३२१
ब्रह्मचारीके धर्म ३२२
ब्रह्मचारीके व्रतोंका लोप होनेमें प्रायश्चित्त ३२३
वेदाध्ययनारंभ ३२३
अनध्याय ३२३
वेदाध्ययनके धर्म और व्रत ३२४—३२५
समावर्तन ३२५
समावर्तनका काल ३२७
मणिकुंडलादिकोंका संपादन ३२८
समावर्तनका संकल्प ३२९
स्मृतिमें कहे व्रत ३३०
आतुर अवस्थामें संक्षेपसें समावर्तन ३३१
ब्रह्मचर्यावस्थागत अशौचनिर्णय ३३१
विवाहसंस्कार ३३२
ग्रहोंके मित्र सम और शत्रु ३३२
गणमैत्री, राशिकूट ३३३
नाडी ३३४
सापिंड्यनिर्णय ३३५
सापत्नमाताके कुलमें सुमंतुके मतसें सापिंड्यका निर्णय ३४३
संक्षेपसें गोत्र और प्रवरका निर्णय ३४५
आंगिरसगण ३४९
भारद्वाज.... .... ३५०
केवल आंगिरस ३५१
अत्रिगण.... .... ३५२
विश्वामित्रगण ३५३

विषय. पृष्ठ.

कश्यपगण ३५४
वसिष्ठगण ३५५
आगस्त्यगण ३५५
द्विगोत्र ३५६
स्मृत्यर्थसार आदि ग्रंथोंमें कहे हुए द्विगोत्र ३५७
अपना गोत्र नहीं मालूम होवै तौ तिसका निर्णय.... .... ३५८
विवाहमें माताके गोत्रकों वर्जनेका निर्णय ३५८
एक गोत्रसें विवाह हो जावै तौ प्रायश्चित्त ३५८
विवाहमें अन्यभी निषेध ३५९
इन निषेधोंके अपवाद ३६१
प्रतिकूलका निर्णय ३६२
प्रतिकूलके विषयमें विशेष ३६३
श्रीपूजनादि शांति ३६५
नांदीश्राद्धका अपकर्ष ३६७
विवाहके पहिले कन्याकों रजका दर्शन होनेमें विधि.... .... ३६९
क्षयपक्षादिकोंका निर्णय ३७०
गुरुबलका निर्णय ३७०
वरकों शुभ रवि ३७०
कन्याके विवाहका काल ३७१
विवाह कितने प्रकारके हैं ३७१
कन्या दान करनेवालोंका अनुक्रम ३७४
मूलनक्षत्रसंबंधी आदिके तीन पादोंका फल ३७५
विवाहमें महीना आदिका निर्णय.... ३७५
घातचंद्र ३७६
विवाहलग्नविषे ग्रहबल ३७७
लग्नमें वर्जित ग्रह.... .... ३७७
नवांशप्रवृत्ति ३७८
इक्कीसमहादोष ३७८

विषय. पृष्ठ.

संकटमें गोधूलमुहूर्त ३७९
यथोक्त चंद्रमा और तारा आदिके अभावमें दान ३७९
कन्याकों जन्मकालमें ग्रहादिके योगसें सूचित विधवापनेके परिहारका उपाय ३८०
विधवापना हरनेवाला कुंभविवाह ३८१
वरके मृतभार्यात्वदोषके परिहारका उपाय ३८१
मृतपुत्रत्वदोषका परिहार ३८२
कन्यादानप्रशंसा ३८२
वाग्दान आदिका निर्णय ३८३
विवाहके दिनका कृत्य ३८३
मंडपदेवतास्थापन, ग्रहयज्ञ और पुण्याहवाचन इन्होंका काल ३९०
सीमांतपूजाका विधि ३९०
मधुपर्कका विधि ३९१
लग्नघटिके स्थापनका विधि ३९२
कन्यादानके अंगत्वसें गौ आदिके दानके मंत्र ३९५
अंतःपटधारणआदि ३९६
विवाहहोम ३९६
गृहप्रवेशनीयहोम ३९७
चौथे दिनमें ऐरिणीदान ३९८
वधूप्रवेशका निर्णय ४००
द्विरागमन ४००
पतिआदिके घरमें प्रथमवर्षविषे वासका निषेध ४०१
पुनर्विवाह ४०२
दो अग्नियोंका संसर्गप्रयोग ४०३
द्वितीयआदि विवाहका काल ४०४
अर्कविवाह ४०५
आह्निकविधि ४०६
मूत्रआदि त्यागनेका विधि ४०७

विषय. पृष्ठ.

आचमनका विधि ४०८
आचमनके निमित्त ४०९
दंतधावन ४१०
स्नानविधि, ... ४१०
गृहस्नान ४११
चांडालआदिकोंका स्पर्श होनेमें कर्तव्य विधि ४१२
काम्यस्नान ४१२
गौणस्नान ४१२
तिलकविधि ४१३
भस्मका त्रिपुंड्र ४१३
संध्याकाल ४१४
ऋक्शाखियोंका संध्याप्रयोग ४१४
मंत्राचमन ४१५
गायत्रीमंत्रका जप.... .... ४१६
तैत्तिरीयशाखियोंका संध्याप्रयोग ४१८
कात्यायनोंका संध्याप्रयोग.... .... ४१९
संध्याका फल ४२०
संध्यावोंके गौणकाल ४२०
औपासनहोम ४२१
आश्वलायनोंके स्मार्तहोमका प्रयोग ४२२
हिरण्यकेशियोंके स्मार्तहोमका प्रयोग ४२३
कात्यायनोंके स्मार्तहोमका प्रयोग ४२४
होमके द्रव्य ४२५
समस्यहोम ४२६
पक्षहोम ४२६
अग्निसमारोप ४२७
पतिप्रवासमें होवै तौ पत्नीका कृत्य.... ४२८
औपासनअग्नि नष्ट होनेमें कर्तव्य विधि ४२९
यज्ञके पहले अन्वारब्ध अग्नि नष्ट होवै तौ कृत्य ४३०
होमके द्रव्योंके दोष ४३२
अग्निका नाश होनेके निमित्त ४३३

विषय.	पृष्ठ.
अग्निका नाश करनेवाले निमित्त	४३४
स्त्री प्रवासमें होनेमें कृत्य	४३५
स्त्री मृत होनेमें कर्तव्य	४३६
अरणी स्रुवादिक पात्रोंके लक्षण	४३६
कात्यायनोंके उपयोगका कछुक निर्णय	४३७
बह्वृचकारिकोक्ति	४३७
नित्यदान	४३९
दिनके दूसरे भागका कृत्य	४४०
देवपूजाका प्रकार	४४१
दिनके तीसरे भागका कृत्य	४४४
दिनके चौथे भागका कृत्य	४४५
तैत्तिरीयशाखियोंकी माध्यान्हसंध्या	४४५
कात्यायनोंकी माध्यान्हसंध्या	४४६
ब्रह्मयज्ञविधि	४४६
तर्पण	४४८
हिरण्यकेशियोंका ब्रह्मयज्ञविधि	४५०
तर्पणका विधि	४५१
आपस्तंब आदिकोंका तर्पणविधि	४५२
कात्यायनशाखियोंका ब्रह्मयज्ञविधि	४५२
तर्पण	४५३
पांचमे भागका कृत्य	४५५
प्रातःकालीन और सायंकालीन वैश्वदेवबरोबर करनेके पक्षमें एकतंत्र प्रयोग	४५६
सायंकालीन वैश्वदेवकी आहुती	४५७
बलिहरणनामक भूतयज्ञ	४५८
मनुष्ययज्ञ	४५९
तैत्तिरीयशाखियोंका वैश्वदेवप्रयोग	४५९
देवयज्ञ आदि चार यज्ञ	४६०
कात्यायनशाखियोंका वैश्वदेवप्रयोग	४६१
सब शाखियोंकों साधारणपनेसें भोजन आदिका विधि	४६३
भोजनोत्तर कृत्य	४६८

विषय.	पृष्ठ.
दिनके छठे और सातमे भागोंका कृत्य	४६९
आधानका निर्णय	४७१
शूद्रोंके संस्कारोंका निर्णय	४७२
बावडी कूवा आदिका उत्सर्ग	४७४
जलके उत्सर्गके नक्षत्र	४७४
वृक्ष आदिकोंका रोपण	४७४
मूर्तिप्रतिष्ठाका काल	४७५
पंचसूत्रीनिर्णय	४७७
रुद्राक्ष, तुलसी आदि प्रकारकी जपमालाओंका संस्कार	४८०
बोपदेवोक्त रुद्राक्षधारणकी संख्या	४८०
विष्णु आदिके पंचायतन स्थापन करनेकी विधि	४८१
केशव आदि चोवीस मूर्तियोंके लक्षण	४८२
निर्णयसिंधुमें कही रीतिके अनुसार देवप्रतिष्ठाका प्रयोग	४८४
कर्तव्यविधि	४८६
चलप्रतिष्ठा	४८६
स्थिर प्रतिष्ठाके विषयमें अनुष्ठानक्रम और विशेष	४९१
दूसरे दिनका कृत्य	४९२
स्थिरप्रतिष्ठा और चलप्रतिष्ठाका साधारण प्रयोग....	४९४
एकाध्वरविधिकरके चलप्रतिष्ठाका प्रयोग	४९८
पुनःप्रतिष्ठा	४९९
बुद्धिपूर्वक पूजानाश अथवा शूद्रस्पर्श आदि होनेमें कर्तव्य	५००
प्रोक्षणका विधि	५००
जीर्णोद्धारका विधि	५००
मूर्ति, शिवलिंग इन आदिका नाश होनेमें शांति....	५०२
देवताकी पूजाकों पुष्प	५०३
बेल आदि पत्र और पुष्प कितने दिनपर्यंत वासी नहीं होते हैं सो	५०४

विषय.	पृष्ठ.
तुलसीके ग्रहणविषे काल....	५०४
विहित और निषिद्ध पुष्प....	५०५
विष्णुके प्रिय पुष्प	५०५
शिवजीके प्रिय पुष्प	५०६
निषिद्ध पुष्प	५०६
शिवनिर्माल्यग्रहणका निर्णय	५०७
नक्षत्रोंकी संज्ञा	५०७
जिसविषयमें तिथि आदि नहीं कहे होवैं तहां निर्णय	५०८
वस्त्रादि धारणका प्रयोग	५०९
शस्त्र घडानेका मुहूर्त	५१०
अंध, मंद, चिबिट और सुलोचनसंज्ञक नक्षत्र	५११
रोगकी उत्पत्ति होनेमें नक्षत्रोंके फल	५१३
सब नक्षत्रोंका साधारण शांतिप्रयोग	५१४
सर्व रोगनाशक विधि	५१५
औषध भक्षण करनेका काल	५१५
अभ्यंगकों निषिद्ध काल	५१५
गृहारंभकों मुहूर्त....	५१६
गृहप्रवेश....	५१७
धनसंपादन आदिके उद्देशसें गमन	५१८
वारशूल	५१८
गमन समयमें लग्नकी शुद्धि	५१८
गमन समयमें नियम	५१९
प्रस्थानके विषयमें देशमर्यादा	५२०
गोचरप्रकरण	५२०
पल्ली (छीपकली) पतन	५२१
छिपकली और किरलिहाकी शांति	५२१
अनेक दुश्चिन्होंकी शांति....	५२२
काकका स्पर्श और मैथुन देखना आदिकी शांति	५२२
घरट और ऊखळ इन आदिकोंका कारणकेविना भंग होनेमें शांति	५२२
उत्पातशांति	५२३

विषय.	पृष्ठ.
गायत्रिपुरश्चरणका प्रयोग	५२३
दूसरे दिनका कृत्य	५२४
नित्यकर्म....	५२५
पीपलवृक्षका उपनयन	५२७
प्रयोग	५२७
वट आदि वृक्षोंका पुत्र ऐसा मानके प्रतिग्रह	५२८
दूसरे दिनका कृत्य	५२९
सब कर्मोंकी साधारण परिभाषा	५२९
आहुतिका प्रमाण	५३०
कर्मोंके विशेषकरके अग्निके नाम....	५३१
कर्मोंकी अंगदेवता	५३२
कलियुगविषे वर्ज्यावर्ज्यनिर्णय	५३३
श्रीमद्भागवतोक्ति	५३४
कलियुगविषे निषिद्ध कर्म....	५३६
स्वप्नका निर्णय	५३९
अशुभ स्वप्न	५४०
जाग्रत् अवस्थाके अरिष्ट....	५४०
शुभफल देनेवाले स्वप्न	५४१
दुष्ट स्वप्न देखनेमें परिहार	५४२
यह ग्रंथ करनेका प्रयोजन	५४३

तृतीय परिच्छेद उत्तरार्ध.

विषय.	पृष्ठ.
जीवत्पुत्रकके अधिकारका विचार....	५४६
अविभक्त पुत्रोंका कृत्य	५५०
प्रेतकर्मका प्रतिप्रसव	५५२
श्राद्धादिके अधिकारियोंका निर्णय....	५५३
स्त्रियोंके दाहादिकर्मोंके अधिकारी	५५७
जन्म देनेवाले पिताके पुत्र आदिके अभावमें दत्तकको अधिकार	५५८
ब्रह्मचारिका मासिक आदि कर्म	५५९
श्राद्धशब्दका अर्थ	५६०
श्राद्धके भेद	५६१
श्राद्धदेश....	५६३

अनुक्रमणिका.

विषय. पृष्ठ.

श्राद्धका काल ५६४
अपराण्हादि विशेष निर्णय ५६५
प्रतिसांवत्सरिक आदि श्राद्धोंका निर्णय ५६५
श्राद्धके योग्य नक्षत्रादि ५६६
विश्वेदेव ५६९
श्राद्धमें ब्राह्मण ५७०
उत्तम ब्राह्मण ५७१
मध्यम ब्राह्मण ५७२
वर्ज्य ब्राह्मण ५७२
श्राद्धके योग्य द्रव्य ५७४
श्राद्धमें शुद्ध पदार्थ ५७६
श्राद्धमें वर्जित पदार्थ ५७७
कदर्य आदिकोंका लक्षण ५७९
श्राद्धदिनका कृत्य.... .... ५८०
गृह्याग्निपर पाक करनेमें विशेष ५८१
श्राद्धकर्ताके और ब्राह्मणोंके नियम ५८२
श्राद्धविषे ब्राह्मणोंकी संख्या ५८३
एकही ब्राह्मण होनेमें कर्तव्य ५८४
सामान्यसें श्राद्धपरिभाषा ५८५
आचमन.... .... ५८६
भोक्ताके आचमन, डाभ.... .... ५८६
ऊहका निर्णय ५८७
बहूतसी माता होनेमें ऊह.... .... ५८८
आश्वलायन आदिकोंका प्रयोगक्रम ५८९
पाद्य ५९०
आसन ५९१
अर्घ्यकल्पना ५९४
विहित पुष्प ५९५
वर्जित पुष्प ५९५
धूप दीपक ५९६
अन्य देनेके योग्य पदार्थ.... .... ५९६
अर्घ्यपात्रका स्थापन ५९८
अग्नौकरण ६०२
होमका प्रकार ६०३

विषय. पृष्ठ.

पाणिहोमका प्रकार ६०४
ब्राह्मणकों वमन आवै तौ कर्तव्य विधि ६१०
भोजनके अनंतरका कृत्य.... .... ६११
पिंडदान.... .... ६१२
पिंडोपघात ६१५
पिंडोंका निषेध ६१५
श्राद्धके दिनमें वैश्वदेवका निर्णय.... ६२०
नित्यश्राद्ध ६२०
ब्राह्मणका अथवा अन्नका अभाव होनेमें कर्तव्यविधि ६२१
श्राद्धके अनुकल्प.... .... ६२१
आमान्नश्राद्ध ६२२
हिरण्यश्राद्ध ६२३
पक्कान्नद्रव्यका सांकल्पिक विधि ६२३
दूसरेभी अनुकल्प ६२४
श्राद्धमें भोजन करनेमें प्रायश्चित्त ६२५
क्षयाहश्राद्धमें विशेष ६२६
क्षयदिनका अज्ञान होवै तौ तिसका निर्णय ६२७
श्राद्धमें विघ्न होवै तौ तिसका निर्णय ६२८
स्त्री रजस्वला होवै तिसका निर्णय.... ६३०
पतिके उद्देशकरके स्त्रीका अग्निमें प्रवेश होवै तिसविषयमें ६३१
एक दिनमें अनेक श्राद्ध प्राप्त होवैं तौ तिनोंका निर्णय ६३१
मयूखका मत ६३३
संक्रांत्यादिक श्राद्धविधि ६३३
तिलतर्पणका निर्णय ६३४
श्राद्धांगतर्पणका निषेध ६३५
ब्रह्मयज्ञांगभूत नित्यतर्पणविषे तिलयुक्त तर्पणके निषेधका काल ६३५
तिथी आदिके निषेधका अ० .... ६३६
विभक्त और अविभक्तोंका निर्णय ६३७
तीर्थश्राद्ध.... .... ६३८

विषय. पृष्ठ.
तीर्थयात्राका विधि ६३९
तीर्थका सांनिध्य प्राप्त होनेमें कर्तव्य विधि ६४०
परार्थ स्नानविधि ६४१

आशौचनिर्णय.

प्रथम गर्भका नाश और जन्म इत्यादिक आशौच ६४२
मृताशौच ६४५
अतिक्रांताशौच ६५३
आशौचसंपातविषे निर्णय ६५७
शवस्पर्श और शवकेसाथ अनुगमन ६६०
प्रेतकेसाथ अनुगमन ६६१
प्रेतकों कांधिया लगनेमें आशौच.... ६६१
दाह आदि करनेमें आशौच ६६२
रोदन करनेमें आशौच ६६३
आशौचियोंका अन्न भक्षण करनेमें आशौच ६६४
आशौचका अपवाद ६६५
कर्ताके योगसें अपवाद ६६६
कर्मसें आशौचका अपवाद ६६७
द्रव्यसें आशौचका अपवाद ६६९
मृतदोषसें आशौचका अपवाद ६७०
सर्पके ड़सनेसें मरनेमें आशौच ६७२
प्रायश्चित्त ६७२
विधिसें विहित जो जल आदिसें मरण तिसविषे आशौच ६७५
विधानसें अपवाद ६७७
जीवतेहुवेका आशौच ६७७
और्ध्वदेहिककर्मके आरंभकों उपयोगी नारायणबलि आदि प्रकार ६७८
सर्पसें मरनेमें व्रत ६७९
पालाशकी समिधोंका पुतला बनायके दाह आदि विधि ६८०

विषय. पृष्ठ.
अतिक्रांत प्रेतसंस्कारका काल ६८१
प्रशस्त वारनक्षत्रादि ६८२
निषिद्ध नक्षत्र आदिकोंका अप०.... ६८२
साग्निकका पर्णशरदाह किये पीछे तिसके देहका लाभ होनेमें ६८३
घटस्फोटविधि ६८३
अंत्यकर्मके अधिकारी ६८६
तिलपात्रदानका विधि ६८७
वैतरणी गोदानका विधि.... .... ६८८
उत्क्रांतिधेनुका विधि ६८८
स्मशानमें ले जानेके शवकूं शूद्रका स्पर्श होनेमें ६८९
पति और स्त्रीका दाह एक कालमें प्राप्त होनेमें ६९०
साग्निकका विशेष निर्णय.... .... ६९१
स्मार्त अग्निवाला होनेमें ६९२
निरग्निक होनेमें ६९३
इसविषयमें निर्णयसिंधुका मत ६९४
अनेक भार्या जिसकूं होवैं तिसके विषयमें ६९४
घरसें स्मशानविषे मुर्दा ले जानेका प्रकार ६९५
आशौचसंबंधी नियम ६९७
अस्थिसंचयन ६९७
दशपिंडदानविधि.... .... ६९८
दश दिनके मध्यमें दर्श प्राप्त होवै तौ तिसका निर्णय ६९९
नवश्राद्ध ७००
दशमदिनकृत्य ७०२
अस्थियोंकों स्थापन करनेका विधि ७०२
तीर्थमें अस्थि छोडनेके लिये तिसका पूर्वांगविधि ७०३
ग्यारहमे दिनका कृत्य ७०५
वृषोत्सर्गादि कर्तव्य ७०५

विषय. पृष्ठ.
वृषका लक्षण ७०६
ग्यारहमे दिनमें महैकोद्दिष्ट श्राद्ध ७०७
आद्यमासिक ७०८
सोलह मासिकोंका अपकर्ष ७०९
मासिक ७०९
ग्यारहमे दिनमें रुद्रगणश्राद्ध ७१०
पददान ७१०
शय्यादान ७११
उदकुंभश्राद्ध ७१२
दीपदान ७१३
सोलह मासिक ७१३
आहिताग्निका विशेष प्रकार ७१४
ऊनमासिक, ऊनषाण्मासिक और ऊनाब्दिक इन श्राद्धोंमें वर्ज्य दिन ७१४
सोलह मासिकोंके विषयमें कर्तव्य ७१४
सपिंडीकरणका विचार ७१७
व्युत्क्रममरण होनेमें कर्तव्य ७१९
स्त्रियोंविषे ७२०
तेरहमे दिनमें पाथेयश्राद्ध ७२१
प्रथम वर्षमें निषिद्ध कृत्य ७२२
विधान ७२३
इस विपयमें विशेष ७२४
त्रिपादशांति ७२५
मृत हुआ मनुष्य स्मशानमें ले जानेके अनंतर जीवता होनेमें ७२५
ब्रह्मचारीके मरनेमें निर्णय ७२६

विषय. पृष्ठ.
कुष्ठीके मरनेमें निर्णय ७२६
रजस्वला आदिके मरनेमें निर्णय ७२७
गर्भिणीके मरनेमें निर्णय ७२८
अन्वारोहण अर्थात् सती होना ७२८
प्रयोग ७२९
विधवाके धर्म ७३२
संन्यास ७३३
संन्यास चार प्रकारका ७३३
संन्यासग्रहणका विधि ७३४
आठ श्राद्ध ७३६
सावित्रीप्रवेश ७३९
ब्रह्मान्वाधानका काल ७३९
विरजाहोम ७४१
प्रैषोच्चार ७४३
पर्यंकशौचप्रयोग ७४४
योगपट्ट ७४५
अग्निहोत्रीका विशेष ७४५
ब्रह्मान्वाधान ७४५
आतुरसंन्यास ७४७
मृत हुए संन्यासीका संस्कार ७४९
पार्वणश्राद्ध ७५१
बारहदिनमें नारायणबलि ७५२
आराधन ७५३
संन्यासीके धर्म ७५५
यह ग्रंथ करनेका प्रयोजन ७५७
एकादशीके निर्णयका पट ७५९

धर्मसिंधु, हिंदुस्तानी भाषांतरसहित.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीमद्देवीपदद्वंद्वं प्रत्यूहव्यूहनाशनम् ।
तं नमामि नतिर्यस्य वितरत्युत्तमां मतिम् ॥ १ ॥
बालानां सुखबोधाय रविदत्तः सतां मुदे ।
धर्माब्धिसारग्रंथस्य करोमि विवृतिं पराम् ॥ २ ॥

अब ग्रंथके आदिमें विघ्नोंकों दूर करनेके लिये और शिष्टोंके आचारकी प्रतिपालनाके लिये ग्रंथकार मंगलाचरण करता है—

श्रीविठ्ठलंसुकरुणार्णवमाशुतोषंदीनेष्टपोषमघसंहतिसिंधुशोषम् ।
श्रीरुक्मिणीमतिमुषंपुरुषंपरंतंवंदेदुरंतचरितंहृदिसंचरंतम् ॥ १ ॥

सुंदर दयाके सागर और शीघ्र प्रसन्न होनेवाले, और पापोंके समूहरूपी समुद्रकों शोषनेवाले, और लक्ष्मीरूपी रुक्मिणीजीकी बुद्धिकों आकर्षण करनेवाले, और अनंत चरितोंवाले, और हृदयमें संचार करनेवाले, और परमपुरुष ऐसे विठ्ठलजीकों मैं प्रणाम करताहुं ॥१॥

वंदेप्रतिघ्नंतमघानिशंकरंधत्तांसमेमूर्ध्निदिवानिशंकरम् ।
शिवांचविघ्नेशमथोपितामहंसरस्वतीमाशुभजेपितामहम् ॥ २ ॥

पापोंका नाश करनेवाले जो महादेवजी हैं, तिन्होंकों मैं प्रणाम करताहुं. सो महादेवजी महाराज अपने कल्याणकों करनेवाले हाथकों सबकाल मेरे शिरपैं धारण करो. और पार्वतीजी, गणेशजी, ब्रह्माजी, सरस्वतीजी, इन सबोंकों भी मैं शीघ्र प्रणाम करताहुं ॥ २ ॥

श्रीलक्ष्मींगरुडंसहस्रशिरसंप्रद्युम्नमीशंकपिं
श्रीसूर्यंविधुभौमविद्गुरुकविच्छायासुतान्षण्मुखम् ।
इंद्राद्यान्विबुधान्गुरूंश्चजननींतातंत्वनंताभिधं
नत्वार्यान्वितनोमिमाधवमुखान्धर्माब्धिसारंमितम् ॥ ३ ॥

श्रीलक्ष्मीजी, गरुडजी, शेषजी, प्रद्युम्न, नारायण, हनुमान्, सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्वर, स्वामिकार्तिक, इंद्र आदि सब देव औ गुरुजी, माता, अनंत नामवाले पिता, और माधव आदि श्रेष्ठ पुरुष इन सबोंकों प्रणाम करिके अतिसंक्षिप्तरूपी धर्माब्धिसार नामक धर्मसिंधुसार ग्रंथकों मैं रचताहुं ॥ ३ ॥

दृष्ट्वापूर्वनिबंधान्निर्णयसिंधुक्रमेणसिद्धार्थान् ॥
प्रायेणमूलवचनान्युज्झित्यलिखामिबालबोधाय ॥ ४ ॥

इस ग्रंथकों मैं अपनी कपोलकल्पनासें नहीं रचता; किंतु कमलाकरभट्टका रचा **निर्णयसिंधु**, नीलकंठभट्टका रचा हुआ **द्वादश मयूख**, विष्णुभट्टका रचा हुआ **पुरुषार्थचिंतामणि**, **कालमाधव**, **हेमाद्रि**, अनंतदेवका रचा हुआ **कौस्तुभ**, इत्यादिक प्राचीन ग्रंथोंकों देखकर और प्रायतासें ग्रंथोंके मूलगत वचनोंकों छोडकर बालबोधके लिये निर्णयसिंधुके क्रमसें प्रसिद्ध अर्थोंकों मैं लिखताहुं ॥ ४ ॥

तत्रकालः षड्विधः वत्सरः अयनं ऋतुः मासः पक्षो दिवसइति वत्सरः पंचधा चांद्रः सौरः सावनो नाक्षत्रो बार्हस्पत्यइति शुक्लप्रतिपदादिदर्शांतैश्चैत्रादिसंज्ञैर्द्वादशभिर्मासैश्चतुःपंचाशदधिकशतत्रयदिनैःसतिमलमासेत्रयोदशभिर्मासैश्चांद्रोवत्सरः चांद्रस्यैवप्रभवोविभवः शुक्लइत्यादयःषष्टिसंज्ञाः मेषादिषुद्वादशराशिषुरविभुक्तेषुपंचषष्ट्यधिकशतत्रयदिनैःसौरो वत्सरःसंपद्यते षष्ट्युत्तरशतत्रयदिनैःसावनः वक्ष्यमाणैर्द्वादशभिर्नाक्षत्रमासैर्नाक्षत्रोवत्सरः सचचतुर्विंशत्यधिकशतत्रयदिनैः स्यात् मेषाद्यन्यतमराशौबृहस्पतिनाभुक्तेबार्हस्पत्यः सचएकषष्ट्यधिकशतत्रयसंख्यदिनैर्भवति कर्मादौसंकल्पेचांद्रवत्सरएवस्मर्तव्योनान्यः अयनंद्विविधंदक्षिणमुत्तरंच सूर्यस्यकर्कसंक्रांतिमारभ्यषट्राशिभोगेनदक्षिणम् मकरसंक्रांतिमारभ्य राशिषट्कभोगेनोत्तरायणम् ऋतुर्द्विविधः सौरश्चांद्रश्च मीनारंभोमेषारंभोवा सूर्यस्यराशिद्वयभोगात्मकोवसंतादिषट्संज्ञकःसौरऋतुः चैत्रमारभ्यमासद्वयात्मकोवसंतादिषट्संज्ञकश्चांद्रः मलमासेतुकिंचिदूननवतिसंख्यैर्दिनैश्चांद्रऋतुः श्रौतस्मार्तादौचांद्रर्तुस्मरणंप्रशस्तम् मासश्चतुर्धा चांद्रः सौरः सावनोनाक्षत्रइति शुक्लप्रतिपदादिरमांतःकृष्णप्रतिपदादिः पूर्णिमांतो वाचांद्रोमासः तत्रापिशुक्लादिर्मुख्यः कृष्णादिर्विंध्योत्तरएवग्राह्यः अयमेवचैत्रादिसंज्ञकः कर्मादौस्मर्तव्यः केचिन्मीनराशिमारभ्यसौराणांचैत्रादिसंज्ञामाहुः अर्कसंक्रांतिमारभ्योत्तरसंक्रांत्यवधिःसौरोमासः त्रिंशद्दिनैःसावनः चंद्रस्याश्विन्यादिसप्तविंशतिनक्षत्रभोगेननाक्षत्रोमासः प्रतिपदादिपौर्णिमांतःशुक्लपक्षःप्रतिपदादिदर्शांतःकृष्णपक्षः दिवसःषष्टिघटिकात्मकः ॥ इति श्रीधर्मसिंधुसारेप्रथमउद्देशः ॥ १ ॥

प्रथम कालके भेद कहताहुं.

तहां वत्सर (वर्ष), अयन, ऋतु, मास (महीना), पक्ष (पखवाडा), दिवस इन भेदोंसें काल छह प्रकारका है. **चांद्र**, **सौर**, **सावन**, **नाक्षत्र**, **बार्हस्पत्य**, इन भेदोंसें संवत्सर पांच प्रकारका है. शुक्लपक्षकी प्रतिपदासें लगायत अमावस्यातक एक मास होता है, ऐसे चैत्र आदि बारह महीनोंकरिके, तथा ३५४ दिनोंकरिके तथा अधिकमासके होनेमें १३ महीनोंकरिके, **चांद्रवर्ष** होता है. और **प्रभव**, **विभव**, **शुक्ल**, इत्यादिक नाम चांद्रवर्षके ही हैं. मेष आदि बारह राशियोंकों जब सूर्य भोग चुके तब ३६५ दिनोंकरिके **सौरवर्ष** संपन्न होताहै. तीनसौ साठ दिनोंकरिके **सावनवर्ष** होताहै. वक्ष्यमाण अर्थात् आगे

कहे जावैंगे ऐसे **नाक्षत्र** संज्ञक १२ महीनोंकरिके **नाक्षत्रवर्ष** होताहै. और यह नाक्षत्रवर्ष ३२४ दिनोंकरिके होताहै. मेष आदि किसी एक राशिकों जितने दिनोंकरिके बृहस्पति भोग चुकै वह ३६१ दिनोंकरिके **बार्हस्पत्यवर्ष** होताहै. कर्म आदिमें संकल्पके समय चांद्रवर्षकाही स्मरण करना चाहिये, दूसरेका नहीं करना. **अयन दो प्रकारका है.** एक **दक्षिणायन,** दूसरा **उत्तरायण.** जब कर्कराशिपर सूर्य आवै तबसें लगायत धनराशिके अंततक रहै ऐसे ६ राशियोंके भोगकरिके **दक्षिणायन** होताहै; मकरकी संक्रांतिसें लगायत मिथुनराशिके अंततक सूर्य रहै ऐसे ६ राशियोंके भोगकरिके **उत्तरायण** होताहै. **ऋतु दो प्रकारके हैं.** एक **सौरऋतु,** दूसरा **चांद्रऋतु.** मीनराशिपैं सूर्य आवै तबसें लगायत दो दो महीनोंका अथवा मेषराशिपैं सूर्य आवै तबसें लगायत दो दो महीनोंका ऋतु होताहै. सूर्यकी दो राशियोंके भोगके अनुसार वसंत आदिक छह ऋतुओंकों **सौरऋतु** कहतेहैं. चैत्रमाससें लगायत दो दो महीनोंके भोगके अनुसार वसंत आदि छह ऋतुओंकों **चांद्रऋतु** कहतेहैं. अधिकमास होवै तब कछुक न्यून नव्वै ९० दिनोंकरिके **चांद्रऋतु** होताहै. श्रौत और स्मार्त आदि कर्ममें संकल्पसमय चांद्रऋतुका स्मरण करना श्रेष्ठ है. **मास चार प्रकारका है. चांद्र, सौर, सावन, नाक्षत्र,** इन भेदोंसें. शुक्लपक्षकी प्रतिपदासें लगायत अमावस्यापर्यंत अथवा कृष्णपक्षकी प्रतिपदासें लगायत पूर्णिमातक **चांद्रमास** होताहै; परंतु इन दोनों तरहके महीनोंमें जो शुक्लपक्षसें आरंभित होके अमावस्याकों पूरा होताहै सोही मुख्य है. जो कृष्णपक्षकी प्रतिपदासें आरंभ कर शुक्लपक्षकी पूर्णिमाकों पूरा होताहै सो कृष्णादि मास विंध्याचलके उत्तरप्रदेशमें ग्रहण करना चाहिये. यही चैत्रादि संज्ञक मास कर्म आदिमें स्मरण करा जाताहै. कितनेक मीनराशिपैं सूर्यका संक्रमण होवै तिसके अनुसार चैत्रआदि मासोंकी संज्ञाकों कहतेहैं. सूर्यकी संक्रांतिसें लगायत सूर्यकी दूसरी संक्रांतिका दिन आवै यह **सौरमास** होताहै. तीस दिनोंकरिके **सावनमास** होताहै. अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रोंकों जब चंद्रमा भोग चुकताहै तब **नाक्षत्रमास** होताहै. शुक्लपक्षकी प्रतिपदासें लगायत पूर्णिमातक शुक्लपक्ष होताहै. कृष्णपक्षकी प्रतिपदासें लगायत अमावस्यातक कृष्णपक्ष होताहै. साठ घटिकाओंका दिवस होताहै. **इति धर्मसिंधुसारे भाषाटीकायां प्रथमपरिच्छेदे प्रथम उद्देशः ॥ १ ॥**

अथसंक्रांतिनिर्णयउच्यते मेषेसूर्यसंक्रांतौप्रागूर्ध्वंच पंचदशपंचदशघटिकाःपुण्यकालः दशदशेत्येके वृषेपूर्वाःषोडश मिथुनेपराःषोडश कर्केपूर्वास्त्रिंशत् सिंहेपूर्वाःषोडश कन्यायांपराःषोडश तुलायांप्रागूर्ध्वंचपंचदशपंचदश दशदशेत्येके वृश्चिकेपूर्वाःषोडश धनुषिपराःषोडश मकरेपराश्चत्वारिंशत् कुंभेपूर्वाःषोडश मीनेपराःषोडश घटिकाद्वयाद्यल्पादिनशेषेमिथुनकन्याधनुर्मीनेष्वपिमकरेपिपूर्वाएवपुण्याः प्रभातेघटिकाद्वयाद्यल्पकालेवृषसिंहवृश्चिककुंभेष्वपिकर्केपिपराएवपुण्याः प्रभातेकर्कसंक्रांतौपूर्वादिनेपुण्यमित्येके रात्रौसंक्रमेमध्यरात्रादर्वाक्संक्रांतौपूर्वदिनोत्तरार्धंपुण्यम् मध्यरात्रात्परतःसंक्रांतौपरदिनस्यपूर्वार्धंपुण्यं निशीथमध्यएवसंक्रांतौदिनद्वयेपिपूर्वदिनोत्तरार्धंपरदिनपूर्वार्धंचपुण्यम् इदंमकरकर्कातिरिक्तेसर्वत्ररात्रिसंक्रमेज्ञेयम् अयनेतुमकरेरात्रिसंक्रमेसर्वत्रपरदिनमेवपुण्यम् रात्रौकर्कसंक्रांतौपूर्वदिनमे

वपुण्यं सूर्यास्तोत्तरंघटिकात्रयंसायंसंध्या तत्रमकरसंक्रमेपूर्वदिनेपुण्यम् सूर्योदयात्प्राक्घटिकात्रयंप्रातःसंध्या तत्रकर्कसंक्रांतौपरदिनेपुण्यमितिसंध्याकालेविशेषोज्योतिःशास्त्रेप्रसिद्धः ॥

अब संक्रांतिके निर्णय कहताहुं.

मेषराशिपर सूर्यकी संक्रांति होवै तब संक्रमकालकी पहली और पिछली पंदरह पंदरह घडी पुण्यकाल है; और कितनेक मुनियोंके मतमें पहली और पिछली दश दश घडी पुण्यकाल है. वृषकी संक्रातिमें पहली सोलह घडी पुण्यकाल है. मिथुनकी संक्रांतिमें पिछली सोलह घडी पुण्यकाल है. कर्कसंक्रांतिमें पहली तीस घडी पुण्यकाल है. सिंहसंक्रांतिमें पहली सोलह घडी पुण्यकाल है. कन्यासंक्रांतिमें पिछली सोलह घडी पुण्यकाल है. तुलासंक्रांतिमें पहली और पिछली पंदरह पंदरह घडी पुण्यकाल है. कितनेक मुनियोंके मतमें पहली और पिछली दश दश घडी पुण्यकाल है. वृश्चिकसंक्रांतिमें पहली सोलह घडी पुण्यकाल है. धनसंक्रातिमें पिछली सोलह घडी पुण्यकाल है. मकरकी संक्रांतिमें पिछली चालीस घडी पुण्यकाल है. कुंभकी संक्रांतिमें पिछली सोलह घडी पुण्यकाल है. मीनसंक्रांतिमें पिछली सोलह घडी पुण्यकाल है. दो घडीसें अल्प दिन शेष होवै जब मिथुन, कन्या, धन, मीन, मकर इन्होंकी संक्रांति होवै तब पहली घडियोंमेंही पुण्यकाल होताहै. प्रभात होनेमें दो घडीसें अल्प काल शेष होवै जब वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ, कर्क, इन्होंकी संक्रांति होवै तब पिछलीही घडियोंमें पुण्यकाल होताहै. कितनेक मुनि कहतेहैं की, प्रभातमें कर्कसंक्रांति होवै तौ पूर्वदिनमें पुण्यकाल होताहै. अर्धरात्रिके पहले संक्रांति होवै तौ पहले दिनके उत्तरार्धमें पुण्यकाल होताहै. अर्धरात्रके पश्चात् संक्रांति होवै तौ पिछले दिनके पूर्वार्धमें पुण्यकाल होताहै. अर्धरात्रिमेंही संक्रांति होवै तौ दोनों दिनोंमें पहले दिनके उत्तरार्धमें और पिछले दिनके पूर्वार्धमें पुण्यकाल होताहै. यह व्यवस्था मकर और कर्ककी संक्रांतिसें अन्य संक्रांतियोंमें जाननी चाहिये. मकर संक्रांति जो रात्रिमें होवै तौ परदिनमें पुण्यकाल होताहै. रात्रिमें कर्कसंक्रांति होवै तो पूर्वदिनमें पुण्यकाल होताहै. सूर्यके अस्तसें तीन घडीतक सायंसंध्या होतीहै. तहां मकरसंक्रांति होवै तौ पूर्वदिनमें पुण्यकाल होताहै. सूर्यके उदयके पहले तीन घडीतक प्रातःसंध्या होतीहै. तहां कर्कसंक्रांति होवै तौ परदिनमें पुण्यकाल होताहै. ऐसा संध्याकालमें संक्रांतिका विशेष विचार ज्योतिषशास्त्रमें प्रसिद्ध है.

अथदानम् मेषेमेषदानम् वृषेगोदानम् मिथुनेवस्त्रान्नादिदेयम् कर्केघृतधेनुः छत्रंसुवर्णंचसिंहे कन्यायांगृहंवस्त्रंच तुलायांतिलागोरसाश्चदेयाः वृश्चिकेदीपः धनुषिवस्त्रंयानिच मकरेकाष्ठानिअग्निश्च कुंभेगौर्जलंतृणंच मीनेभूमिर्मालाश्चदेयाः एवमन्यान्यपिदानानिद्रष्टव्यानि अयनसंक्रांतौमेषतुलासंक्रांतौचपूर्वंत्रिरात्रमेकरात्रंवोपोष्यस्नानदानादिकार्यम् चरमोपोषणंसंक्रांतिमत्यहोरात्रेपुण्यकालवत्यहोरात्रेवायथापतेत्तथाकार्यम् अयमुपवासःपुत्रवद्गृहस्थभिन्नेनपापक्षयकामेनकार्यः काम्योनतुनित्यः सर्वसंक्रांतिषुपिंडरहितंश्राद्धंकार्यम् अयनद्वयेतुनित्यम् यथातत्तत्संक्रांतिषुदानादिकंकर्तव्यं तथैवताभ्यः पूर्वमयनांशप्रवृत्तौतत्तत्संक्रांत्युचितस्नानदानादिकंकर्तव्यं अयनांशाज्योतिःशास्त्रेप्रसिद्धाः तेचेदानींद्वादशाधिकस

प्रदशशतसंख्याकेशालिवाहनशकेएकविंशतिरयनांशाइत्येकविंशतितमेदिनेपूर्वमयनांशपर्वकाइलतिपर्यवसन्नोर्थः एवंन्यूनाधिकशकेऊह्यम् वृषसिंहवृश्चिककुंभेषुसंक्रांतिर्विष्णुपदसंज्ञा मिथुनकन्याधनुर्मीनेषुसंक्रांतिःषडशीतिसंज्ञा मेषतुलयोर्विषुवसंज्ञा कर्कमकरयोरयनसंज्ञा एतासुचतुर्विधासुउत्तरोत्तरंपुण्याधिक्यं मंगलकृत्येषुसर्वसंक्रांतिष्वविशेषेणपूर्वतःपरतश्च षोडशषोडशघटिकास्त्याज्याः चंद्रादिसंक्रांतिषुतुपूर्वत्रपरत्रचमिलित्वाक्रमेणद्वेनवद्वेचतुरशीतिःषट्सार्धशतंचघटिकास्त्याज्याः रात्रौसंक्रमणेग्रहणवद्रात्रावेवस्नानदानादिकंकर्तव्यमितिकेचित् रात्रौसंक्रमणेपिदिवैवस्नानादिकंनतुरात्रावितितुसर्वसंमतं बहुदेशाचारश्चैवम् यस्यजन्मर्क्षेरविसंक्रमस्तस्यधनक्षयादिपीडा तत्परिहरार्थपद्मपत्रादियुक्तजलेनस्नानम् विषुवायनयोरह्निसंक्रमेपूर्वापररात्रौतदह्निचाध्यापनाध्ययनेवर्जयेत् रात्रिसंक्रमेपूर्वापरदिनयोस्तद्रात्रौवर्जयेत्एवंपक्षिणीसंक्रांतिः द्वादशप्रहरपर्यंतमनध्यायादिकमितितात्पर्यम् अन्योपि विशेषोऽयनसंक्रांतौवक्ष्यते इतिसंक्रांत्युद्देशोद्वितीयः ॥ २ ॥

अब बारह संक्रांतियोंके दान कहताहुं.

मेषसंक्रांतिमें बकराका दान करना; वृषसंक्रांतिमें गायका दान करना; मिथुनसंक्रांतिमें वस्त्र और अन्नका दान करना; कर्ककी संक्रांतिमें घृतधेनुका[1] दान करना; सिंहसंक्रातिमें छत्र और सोना इन्होंका दान करना; कन्यासंक्रांतिमें वरका और वस्त्रका दान करना; तुलासंक्रांतिमें तिल और गोरसका दान करना; वृश्चिकसंक्रांतिमें दीपकका दान करना; धनसंक्रांतिमें वस्त्र और असवारीका दान करना; मकरसंक्रांतिमें लकडी और अग्निका दान करना; कुंभसंक्रांतिमें गाय, पानी, तृण, इन्होंका दान करना; मीनसंक्रांतिमें पृथिवी और मालाका दान करना. ऐसे अन्य भी दान विचार लेने. अयनसंक्रांतिमें, मेष और तुलासंक्रांतिमें पहली तीन रात्रि अथवा एक रात्रि उपवास करके स्नान और दान आदि करना चाहिये. और ऐसी विधि करना की अंतका उपवास अर्थात् व्रतकी पूर्ति संक्रांतिवाले दिन-रात्रिमें अथवा पुण्यकालवाले दिनरात्रिमें होवै. यह उपवास पुत्रवाले गृहस्थनें वर्ज्य करना, और पापका नाश करनेकी इच्छावाले मनुष्यनें करना चाहिये. और यह उपवास काम्य अर्थात् कामनाके लिये किया जाता है, नित्य नहीं है. सब संक्रांतियोंके दिन पिंडरहित श्राद्ध करना चाहिये. उत्तरायणके दिन और दक्षिणायनके दिन श्राद्ध नित्य है. सब संक्रांतियोंकों यथायोग्य दान करना कहाहै. तैसा संक्रांतियोंसें पहले जिस जिस दिनसें अयन संक्रांति होवै तिस तिस दिनमें संक्रांतिके अनुसार योग्य स्नान और दान आदि करना चाहिये. अयनांशका विचार ज्योतिषशास्त्रमें प्रसिद्ध है. जैसे १७१२ शालिवाहनके शाकेमें २१ अयनांश होतेहैं, ऐसे संक्रांतिसें इक्कीस २१ दिन पहले आयनांशका पर्वकाल जानना यह सिद्धांतअर्थ है. ऐसेही न्यून और अधिक संख्यावाले शाकेमें भी जानना. वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ इन संक्रांतियोंकी **विष्णुपद** संज्ञा है. मिथुन, कन्या, धन, मीन, इन संक्रांतियोंकी **षडशीति** संज्ञा है. मेष और तुला संक्रातिकी **विषुव** संज्ञा है. कर्क और मकरसंक्रांतियोंकी **अयन** संज्ञा

---

[1] घृतधेनुका प्रकार दानचंद्रिकामें देख लेना.

है. इन च्यारों संज्ञाओंमें विष्णुपदसें षडशीति और षडशीतिसें विषुव और विषुवसें अयन ऐसे अधिक अधिक पुण्यकों देनेवाली हैं. शुभ कर्मोंमें सब संक्रांतियोंकी पहली और पीछेकी सोलह सोलह घडी त्यागनी चाहिये. और चंद्र आदि सब ग्रहोंकी संक्रांतियोंमें पहली और पीछेकी मिलकर क्रमसें २, ९, २, ८४, ६, १६० ऐसी घडी त्याग देनी. कोईक मुनि कहते हैं की रात्रिमें संक्रांति होवै तौ रात्रिके ग्रहणकी तरह रात्रीमेंही स्नान और दान आदि करना चाहिये; और सब मुनियोंके मतमें रात्रिमें संक्रांति होवै तौ दिनमेंही स्नान और दान आदि करना चाहिये; और रात्रिमें नहीं. देशाचार भी ऐसाही है. जिस मनुष्यके जन्मनक्षत्रपर सूर्यका संक्रम होवै तिसकों धनक्षयादि पीडा उपजती है. तिसकी शांतिके लिये कमलके पत्तोंसें युक्त हुये पानीसें स्नान करना. मेष, तुला, कर्क मकर, इन्होंकी संक्राति जो दिनमें होवैं तौ पहली और पिछली रात्रि तथा संक्रांतिवाला दिन इन्होंमें पठन और पाठनकों वर्ज देना, और येही चारों संक्रांति रात्रिमें होवैं तौ पहला और पिछला दिन तथा संक्रांतिवाली रात्रिमें पठन पाठन नहीं करना, ऐसी ये पक्षिणी संक्रांति कहाती हैं. इन्होंमें १२ पहरतक अनध्याय रहता है ऐसा तात्पर्य है. अन्य भी विशेष विचार कर्क और मकरसंक्रांतिके प्रकरणमें कहैंगे. इति धर्मसिंधुसारे भाषाटीकायां संक्रातिविचारो नाम द्वितीय उद्देशः ॥ २ ॥

अथ मलमासः सद्विविधः अधिमासःक्षयमासश्च संक्रांतिरहितोमासोधिमासः संक्रांतिद्वययुक्तोमासःक्षयमासः पूर्वाधिमासादुत्तरोधिमासस्त्रिंशत्तममासमारभ्याष्टसुनवसुवा मासेष्वन्यतमोभवति क्षयमासस्तुएकचत्वारिंशदधिकशतसंख्यैर्वर्षैरेकोनविंशतिसंख्यैर्वा वर्षैर्भवतिनत्वधिकमासवदल्पकालेन क्षयमासःकार्तिकमार्गशीर्षपौषेष्वन्यतमो भवतिनेतरः यस्मिन्वर्षेक्षयमासस्तस्मिन्वर्षेऽधिकमासद्वयम् क्षयमासात्पूर्वमेकोधिमासः क्षयमासानंतरमेकोधिमासइति ॥

अब मलमासका निर्णय कहताहुं.

मलमास दो प्रकारका है. एक अधिमास, दूसरा क्षयमास. संक्रांतिसें रहित महिनेकों अधिमास कहतेहैं. और दो संक्रांतियोंसें युक्त हुये महीनेकों क्षयमास कहतेहैं. पहले अधिमाससें दूसरा अधिमास, तीसमें महीनेसें लगायत आठमें और नवमें महीनोंमेंसें एक कोई भी महीनेमें होताहै. क्षयमास १४१ वर्षमें अथवा ११९ वर्षमें होताहै, अधिमासकीतरह अल्पकालमें क्षयमास नहीं होता. कार्तिक, मगशीर, पौष इन्होंमेंसें एक कोई भी क्षयमास होताहै, अन्य महीना नहीं होता. जिस वर्षमें क्षयमास होताहै तिस वर्षमें अधिक महीने दो होतेहैं. क्षयमासके पहले एक अधिकमास होताहै, और क्षयमासके पीछे एक अधिक महीना होताहै.

अधिकमासोदाहरणम् चैत्रामावास्यायांमेषसंक्रांतिः ततःशुक्लप्रतिपदमारभ्यामावास्यापर्यंतंसंक्रांतिर्नास्ति ततःशुक्लप्रतिपदिवृषभसंक्रांतिरिति पूर्वःसंक्रांतिरहितोमासोधिकवैशाखसंज्ञःवृषभसंक्रांतियुतस्तुशुद्धवैशाखसंज्ञः ॥

अब अधिकमासका उदाहरण कहताहुं.

चैत्रकी अमावसकों मेषकी संक्रांति होवै, तिस्सें पीछे शुक्लपक्षकी प्रतिपदासें लगायत अमावसतक संक्रांति नहीं हो. पीछे शुक्लप्रतिपदाकों वृषसंक्रांति होवै तब संक्रांतिसें रहित अधिकमास वैशाख होताहै. और वृषसंक्रांतिसें युत हुआ शुद्ध वैशाख होताहै.

अथक्षयमासोदाहरणम् भाद्रपदकृष्णामावास्यायांकन्यासंक्रांतिः ततआश्विनोधिमासः शुद्धाश्विनप्रतिपदितुलासंक्रांतिः कार्तिकशुक्लप्रतिपदिवृश्चिकसंक्रांतिः ततोमार्गशीर्षशुद्धप्रतिपदिधनुःसंक्रांतिः तस्मिन्नेवमासेअमावास्यायांमकरसंक्रांतिरितिधनुर्मकरसंक्रांतिद्वययुक्तएकोमासःक्षयमाससंज्ञकः सचमार्गशीर्षपौषाख्यमासद्वयात्मकएकोमासोज्ञेयः तस्यप्रतिपदादितिथीनांपूर्वार्धेमार्गशीर्षउत्तरार्धेपौषइत्येवंसर्वतिथीनांमासद्वयात्मकत्वात् अत्रतिथिपूर्वार्धे मृतस्यमार्गशीर्षेप्रत्यब्दश्राद्धमुत्तरार्धेमृतस्यतुपौषे एवंजननेवर्धापनादिविधिरपि ततऊर्ध्वंमाघामावास्यायांकुंभसंक्रांतिः ततःफाल्गुनोधिमासः शुद्धफाल्गुनशुक्लप्रतिपदिमीनसंक्रांतिः एवंपूर्वापराधिमासद्वययुक्तःक्षयमासोयस्मिन्वर्षेतत्रत्रयोदशमासात्मकंकिंचिदूननवत्यधिकशतत्रयदिनैर्वर्षम् तत्रक्षयमासात्पूर्वोधिमासःसंसर्पसंज्ञःसर्वकर्मार्हः शुभकर्मणिनत्याज्यः अंहस्पतिसंज्ञः क्षयमासस्तदुत्तरभाव्यधिकमासश्चसर्वकर्मसुवर्ज्यः एवंत्रिवत्सरांतरस्थः केवलोधिकमासोपिवर्ज्यः ॥

अब क्षयमासका उदाहरण कहताहुं.

भाद्रपदकी अमावसकों कन्यासंक्रांति हो तब अधिकमास आश्विन होताहै. शुद्ध आश्विनकी प्रतिपदाकों तुलासंक्रांति हो और कार्तिकके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाकों वृश्चिकसंक्रांति हो, पीछे मगशिरके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाकों धनसंक्रांति हो और तिसी मगशिरकी अमावसकों मकरसंक्रांति हो, ऐसे धन और मकर दोनों संक्रांतियोंसें युक्त एक महीना **क्षयमास** कहाताहै. वह मगशिर और पौष इन दोनों महीनोंवाला एक महीना होताहै. तिस एक महीनाकी प्रतिपदा आदि तिथियोंका पूर्वार्ध मगशिर कहाताहै, और उत्तरार्ध पौष कहाताहै. ऐसी सब तिथि दो महीनोंवाली होती हैं. यहां तिथिके पूर्वभागमें मरे हुये मनुष्यका क्षयाहश्राद्ध मगशिरमें करना और उसी तिथिके उत्तरार्धमें मरे हुये मनुष्यका क्षयाहश्राद्ध पौषमें करना. इसी प्रकार बालकके जन्ममें भी ऐसेही गिनकर संस्कार आदिका विधि करना. तिस्सें पीछे माघकी अमावसकों कुंभसंक्रांति हो तिस्सें पीछे फागन अधिकमास होताहै. शुद्ध फागनके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाकों मीनकी संक्रांति होतीहै. ऐसे पूर्व और अपर दो अधिकमाससें युक्त क्षयमास जिस वर्षमें होताहै तहां तेरह महीनोंवाला और कछुक कम ३९० दिनोंसें युक्त वर्ष होताहै, तहां क्षयमासके पहला जो अधिकमास है सो **संसर्पसंज्ञक** है. यह सब कर्मोंके योग्य है. इसलिये शुभकर्मोंमें वर्जित नहीं करना. **अंहस्पतिसंज्ञक** क्षयमास और क्षयमासके पीछे होनेवाला अधिकमास ये दोनों सब कर्ममें वर्जित हैं. ऐसाही तीन वर्षके भीतर हुआ केवल अधिकमास भी वर्जित है.

तत्रवर्ज्यावर्ज्यनिर्णयः अनन्यगतिकंनित्यंनैमित्तिकंकाम्यंचअधिकमासक्षयमासयोःक

र्तव्यम् सगतिकंनित्यंनैमित्तिकंकाम्यंचवर्ज्यं तथाहि संध्याग्निहोत्रादिनित्यं ग्रहणस्नानादिनैमित्तिकं कारीर्यादिकंरक्षोगृहीतजीवनार्थराक्षोघ्नेष्ट्यादिकंचकाम्यं मलमासेऽपिकार्यम् ज्योतिष्टोमादिनित्यंजातेष्ट्यादिनैमित्तिकंपुत्रकामेष्ट्यादिकाम्यंचमलमासोत्तरंशुद्धमास्येवकर्तव्यम् आरब्धकाम्यस्यमलमासेप्यनुष्ठानम् नूतनारंभःसमाप्तिश्चनकर्तव्या तथापूजालोपादिनिमित्तकपुनर्मूर्तिप्रतिष्ठांगर्भाधानाद्यन्नप्राशनांतसंस्कारान्प्राप्तकालाननन्यगतिकान्ज्वरादिरोगशांतिमलभ्ययोगेश्राद्धव्रतादिकंनैमित्तिकप्रायश्चित्तं नित्यश्राद्धमूनमासिकादिश्राद्धानिदर्शश्राद्धंचमलेऽपिकुर्यात् चैत्रादौमलमासेमृतानांकदाचिद्बहुकालेनतस्मिन्नेवचैत्रादौमलमासेप्राप्तेमलमासएवप्रतिसांवत्सरिकंश्राद्धंकर्तव्यं चैत्रादौशुद्धमासेमृतानांतुप्रत्याब्दिकंश्राद्धं मलमासेनकर्तव्यं शुद्धेएवचैत्रादौकर्तव्यं शुद्धमासेमृतानांतुप्रथमाब्दिकंमलमासएवकार्यंन शुद्धे द्वितीयाब्दिकंतुशुद्धेएव एकादशाहांतकर्मसपिंडीकर्मचमलेऽपिकार्यं द्वितीयमासिकादिश्राद्धंतुमलेशुद्धेचावृत्त्याद्विवारंकर्तव्यं एवंचयत्रद्वादशमासिकं अधिकमासेप्राप्तंतस्यमलेशुद्धेचद्विरावृत्तिकंकृत्वाऊनाब्दकालेऊनाब्दिकंचकृत्वाचतुर्दशेमासेप्रथमाब्दिकंकार्यं यस्मिन्वर्षे क्षयमासाव्यवहितोऽधिकमासःयथा कार्तिकोऽधिमासस्तदुत्तरोमासोवृश्चिकधनुःसंक्रांतियुक्तत्वात्क्षयसंज्ञकस्तत्रकार्तिकमासस्थंप्रत्याब्दिकंपूर्वेधिमासे उत्तरेक्षयमासेचकार्यं यत्रापिक्षयाव्यवहितपूर्वोऽधिमासो यथाश्विनोऽधिमासोमार्गशीर्षः क्षयमासस्तत्रापिआश्विनमासगतं श्राद्धमधिकेशुद्धेचआश्विनेकार्यं द्वयोरपिकर्मार्हत्वादितिभाति व्यवहितक्षयमासगतंत्वाब्दिकंक्षयमासएवकार्यं तथाचपूर्वोक्तेमार्गशीर्षक्षयोदाहरणेमार्गशीर्षगतंपौषगतंचाब्दिकमेकस्मिन्नेवमासेतिथिपूर्वार्धादिविभागंविनैवकार्यमितिफलितं ॥

अब अधिकमासमें और क्षयमासमें वर्ज्य और अवर्ज्य कर्मोंको कहताहुं.

अनन्यगतिक (जिस वख्त करना चाहिये उसी वख्त करनेका) ऐसा **नित्यकर्म**, **नैमित्तिककर्म**, और **काम्यकर्म**, ये तीनों कर्म अधिकमासमें और क्षयमासमें करना चाहिये. और सगतिक (आगल करनेकूं वख्त है) ऐसे **नित्यकर्म**, **नैमित्तिककर्म** और **काम्यकर्म** ये तीनों नहीं करना चाहिये. सो कर्म दिखाते हैं—**संध्या**, **अग्निहोत्र** इन आदि **नित्यकर्म** कहाते हैं, ग्रहणमें स्नान आदि **नैमित्तिककर्म** कहाते हैं. मेघके वास्ते **कारीर्यादि** इष्टिकर्म और ब्रह्मराक्षस आदिकसें गृहीत किये हुए मनुष्यकों जिवानेके लिये जो **राक्षोघ्नेष्टि** आदि **काम्यकर्म** कहाते हैं. ये मलमासमें भी करना चाहिये. **ज्योतिष्टोम** इन आदि **नित्यकर्म**, जातेष्टि आदि **नैमित्तिककर्म**, पुत्रकी कामनासें **पुत्रेष्टि** इन आदि **काम्यकर्म** हैं. ये मलमासके पीछे शुद्धमासमें करना चाहिये. और मलमासके पहले आरंभित किये **काम्यकर्म** मलमासमें भी करना अर्थात् मलमासमें भी अनुष्ठान करते रहना; परंतु नवीन कर्मका आरंभ औ समाप्ति मलमासमें नहीं करनी. पूजाका लोप आदिके निमित्तसें फिर मूर्तिप्रतिष्ठा, कालप्राप्त और जिस वख्तके उस वख्त करनेके ऐसे गर्भाधान कर्मसें लगायत अन्नप्राशन संस्कारतकके कर्म, ज्वर आदि रोगोंकी शांति, अलभ्य योगमें श्राद्ध और व्रत आदि **नैमित्तिक प्रायश्चित्त**, **नित्यश्राद्ध**, ऊनमा-

सिकआदि श्राद्ध, अमावसश्राद्ध, इन सबोंकों मलमासमेंभी करना. चैत्रआदि अधिकमासमें मरे हुये मनुष्योंका कभीक बहुतकाल करके चैत्र आदि अधिकमास होवै तौ तिसी अधिकमास अर्थात् मलमासमें प्रतिसांवत्सरिकश्राद्ध करना. चैत्रआदि शुद्ध महीनेमें मरे हुये मनुष्योंका प्रतिसांवत्सरिक श्राद्ध मलमासमें नहीं करना चाहिये, किंतु शुद्धरूपी चैत्रआदि महीनेमें करना, और शुद्ध महीनेमें मरे हुयेका पहला प्रथमाब्दिकश्राद्ध अर्थात् वार्षिकश्राद्ध मलमासमेंही करना, शुद्धमासमें नहीं करना. और दूसरा वर्षआदिमें क्षयाहश्राद्ध शुद्ध महीनेमेंही करना. एकादशाहतक कर्म और सपिंडीकर्म मलमासमेंभी करना. और दूसरे महीनेसें आदि लेकर श्राद्ध मलमासमेंभी और शुद्धमासमेंभी करना. और जहां बारमें महीनेका श्राद्ध अधिकमासमें प्राप्त होवै तहां तिस महीनेके श्राद्धकों द्विरावृत्तिसें अधिकमासमें और शुद्धमासमें करके और साढेतेरह महीनोंमें ऊनाब्दिकश्राद्ध करके पीछे चौदमे महीनेमें प्रथमवार्षिकश्राद्ध करना. जिस वर्षमें क्षयमाससें अव्यवहित अधिकमास होताहै, जैसे कार्तिक अधिकमास होवै और वृश्चिक तथा धनकी संक्रांतिसें युक्त हुआ मगशिर क्षयमास होवै तब कार्तिकमें होनेवाला प्रतिसांवत्सरिकश्राद्ध पहले अधिकमासमें और पिछले क्षयमासमें करना. और जहां क्षयमाससें व्यवहित पहला अधिकमास होवै, जैसे आश्विन अधिकमास होवै और मगशिर क्षयमास होवै, तहां आश्विनमें होनेवाला वार्षिकश्राद्ध अधिकआश्विनमें और शुद्धआश्विनमें करना. क्योंकी, दोनों महीने कर्मके योग्य हैं, और दूरस्थ क्षयमासमें होनेवाला वार्षिकश्राद्ध क्षयमासमेंही करना. तैसाही पूर्वोक्त मगशिर क्षयमासके उदाहरणमें दिखाया है. मगशिरमें और पौषमें होनेवाला वर्षश्राद्ध एकही महीनेमें तिथिके पूर्वार्ध आदि विभागके विनाही करना चाहिये. ऐसा तात्पर्य है.

अथमलमासेवर्ज्यानि उपाकर्मोत्सर्जनेअष्टकाश्राद्धानिअधिकेवर्ज्यानि चूडामौंजीबंधविवाहास्तीर्थादियात्रावास्तुकर्मगृहप्रवेशदेवप्रतिष्ठाकूपारामाद्युत्सर्गोनूतनवस्त्रालंकारधारणं तुलापुरुषादिमहादानानियज्ञकर्माधानमपूर्वतीर्थदेवदर्शनंसंन्यासः काम्यवृषोत्सर्गोराजाभिषेको व्रतानिसगतिकमन्नप्राशनंसमावर्तनमतिक्रांतनामकर्मादिसंस्कारःपवित्रारोपणदमनार्पणेश्रवणाकर्मसर्पबल्यादिपाकसंस्थाः शयनपरिवर्तनाद्युत्सवःशपथदिव्यादिकर्म एतानिमलमासेवर्ज्यानि नैमित्तिकानिरजोदोषशांतिविच्छिन्नाधानपुनःप्रतिष्ठादीनि यदिनिमित्तानंतरमेवक्रियंतेतदानमलमासादिदोषः कालातिपत्तौतुशुद्धेएवकर्तव्यानि आग्रयणंदुर्भिक्षसंकटेमलमासेकार्यमन्यथाशुद्धेएव युगादिमन्वादिश्राद्धानांमासद्वयेप्यावृत्तिः क्षयात्पूर्वोधिमासः संसर्पसंज्ञकःपूर्वमुक्तः तत्रचूडाकर्मव्रतबंधविवाहाग्न्याधानयज्ञोत्सवमहालयराजाभिषेकाएववर्ज्याः नान्यानिकर्माणि अपूर्वव्रतारंभोव्रतसमाप्तिश्चमलमासेनभवति सपूर्वमाघस्नानादेः क्षयमासेप्यारंभसमाप्तीइति मकरसंक्रांतियुक्तक्षयमासगतपौर्णमास्यांमाघस्नानमारभ्यकुंभसंक्रांतियुतमाघपौर्णमास्यांसमापनीयम् एवंकार्तिकेप्यूह्यम् यत्रवैशाखादिरधिकस्तत्रवैशाखस्नानादिमासव्रतानांचैत्रपौर्णमास्यामारब्धानांशुद्धवैशाखपौर्णमास्यांसमाप्तिरिति तेषांमासद्वयमनुष्ठानं यन्मलमासेवर्ज्यमुक्तंतद्गुरुशुक्रास्तबाल्यवार्धकेष्वपिज्ञेयम् तत्रास्तात्प्राक् सप्ताहंवार्धकमुदयानंतरंसप्ताहंबाल्यमितिमध्यमःपक्षः पंचदशाहपंचाहत्र्यहादिपक्षाआपद

नापदादिविषयतयादेशविशेषपरतयाचयोज्याः अयंवर्ज्यावर्ज्यनिर्णयः सिंहस्थेगुरावपिज्ञेयः ॥

अब मलमासमें वर्जित कर्मोंको कहताहुं.

उपाकर्म, उत्सर्जनकर्म, अष्टकाश्राद्ध ये अधिकमासमें वर्जित हैं. और प्रथमक्षौर कराना, यज्ञोपवीतकर्म, विवाह, तीर्थ आदिकी यात्रा, वास्तुकर्म, गृहप्रवेश, देवताकी प्रतिष्ठा, कूवा, और बाग आदिका उत्सर्ग, नवीन वस्त्र और गहना धारण करना, तुलापुरुष आदि महादान, यज्ञकर्म, अग्निस्थापन, अपूर्व देव और तीर्थका दर्शन, संन्यासकर्म, काम्यवृषोत्सर्ग, राजाका अभिषेक, सब व्रत, आगल करनेको जिनको वख्त है ऐसे अन्नप्राशन, समावर्तनकर्म, जातकर्म आदि संस्कार, पवित्रारोपण, दमनकका अर्पण, श्रवणकर्म, सर्पबलि आदि पाककी विधि, विष्णुका शयन और परिवर्तन आदि उत्सव, शपथ आदि कर्म ये सब मलमासमें वर्जित करना चाहिये. भुवनेश्वरीकी शांति, विच्छिन्न हुए अग्निका फिर स्थापन करना, फिर प्रतिष्ठाकर्म ये **नैमित्तिककर्म** हैं. जो ये निमित्तके, पीछेही किये जावैं, तब मलमास आदिका दोष नहीं है. और जो निमित्तके पश्चात् नहीं किये जावैं तौ शुद्धमासमेंही करना चाहिये. दुर्भिक्ष इत्यादिके संकटमें आग्रयण मलमासमें करना और सुभिक्षमें शुद्धमासमें करना. युगादि और मन्वादि श्राद्ध मलमासमें और शुद्धमासमें भी करना चाहिये. क्षयमाससें पहला अधिक मास **संसर्पसंज्ञक** पहले कहा है. तिसमें प्रथमक्षौरकर्म, यज्ञोपवीतकर्म, विवाह, अग्निस्थापन, यज्ञउत्सव, महालय, राजाका अभिषेक ये कर्म वर्जित हैं. और अन्य कर्म वर्जित नहीं करने. पहले नहीं किये व्रतका आरंभ और व्रतकी समाप्ति मलमासमें नहीं होती. पहले किये माघस्नान आदिका आरंभ और समाप्ति क्षयमासमें होती है. मकरसंक्रांतिसें युक्त क्षयमासमें प्राप्त हुई पौर्णमासीको माघस्नानका आरंभ करके पीछे कुंभसंक्रातिसें युक्त हुई माघकी पौर्णमासीको समाप्त करना चाहिये. ऐसाही कार्तिकमेंभी कर लेना. जिस वर्षमें वैशाख आदि मास अधिक होवै तहां चैत्रकी पौर्णमासीको आरंभित किये हुए वैशाखस्नान आदि मासव्रतोंको शुद्ध वैशाखकी पौर्णमासीको समाप्त करना. ऐसा तिन्होंका दो महीनोंतक अनुष्ठान है. जो जो कर्म मलमासमें वर्जित कहे हैं वे सब बृहस्पति और शुक्र इनके अस्त, बाल्य और वार्धक्यमेंभी वर्जित जानना. अस्त होनेके पहले सात दिन वार्धक्य रहता है. उदय होनेके पीछे सात दिनतक बाल्य रहता है, यह मध्यम पक्ष है. पंदरह दिन अथवा पांच दिन अथवा तीन दिन इत्यादि जो पक्ष कहे हैं सो आपत्तिकाल, और अनापत्तिकाल इत्यादि व्यवस्थासें लेना और देशाचार व्यवस्थासें लेना. यह वर्ज्य और अवर्ज्यका निर्णय सिंहके बृहस्पतिमेंभी जानना.

तत्रविशेषउच्यते कर्णवेधचौलमौंजीबंधविवाहदेवयात्राव्रतवास्तुकर्मदेवप्रतिष्ठासंन्यासाविशेषतोवर्ज्याइति ॥

अब सिंहके बृहस्पतिमें विशेषकरके वर्जित करनेके कर्मोंको कहताहुं.

कानोंका वींधना, प्रथमक्षौर कराना, जनेऊ लेना, विवाह, देवताकी यात्रा, व्रत, वास्तुकर्म, देवप्रतिष्ठा, संन्यास ये कर्म सिंहके बृहस्पतिमें विशेषकरके वर्जित करने.

अथसिंहस्थापवादः मघानक्षत्रगतेसिंहांशगतेचगुरौसर्वदेशेषुसर्वमांगलिककर्मणांनिषेधः सिंहांशोत्तरंगोदादक्षिणेभागीरथ्युत्तरेसिंहस्थदोषोनास्ति गंगागोदामध्यदेशेतुसर्वसिंहस्थेविवाहव्रतबंधयोर्दोषः अन्यकर्माणिसिंहांशोत्तरंसर्वदेशेषुकर्तव्यानि मेषस्थेसूर्येसर्वदेशेषुसर्वमांगलिककर्मणांसर्वसिंहस्थेनदोषः क्वचिद्वृषस्थितेऽर्केपिदोषाभावउक्तः अत्रसिंहस्थे गुरौगोदावरीस्नानं कन्यागतेकृष्णास्नानंमहापुण्यम् गोदावर्यांयात्रिकाणांमुंडनोपवासावावश्यकौनतुतत्तीरवासिनाम् गर्भिण्यामपिभार्यायांविवाहादिमंगलोत्तरमपिगोदावर्यांमुंडने दोषोनास्ति गयागोदावरीयात्रायांमलमासगुरुशुक्रास्तादिदोषोनास्ति मलमासेव्रतविशेषोऽन्यत्रज्ञेयः इतिमलमासगुरुशुक्रास्तसिंहस्थगुरुवर्ज्यावर्ज्यनिर्णयस्तृतीयउद्देशः ॥

अब सिंहके बृहस्पतिके अपवादकों कहताहुं.

मघानक्षत्रपर और सिंहांशमें जबतक बृहसपति स्थित रहै, तबतक सब देशोंमें सब तरहके मंगलकर्म नहीं करने. और सिंहांशके पीछे गोदावरीनदीसें दक्षिणके देशोंमें और गंगाजीसें उत्तरके देशोंमें सिंहके बृहसपतिका दोष नहीं है. गंगा और गोदावरीके मध्यके देशोंमें संपूर्ण सिंहके बृहसपतिमें जनेऊ लेना और विवाह करनेमें दोष है. सिंहांशसें जब बृहसपति निकस जावै, तब अन्य सब कर्म सब देशोंमें करने. मेषराशिपर सूर्य होवै तब सब देशोंमें सब मंगलकर्म करने. उसविषे सिंहस्थका दोष नहीं है. और कहींक वृषराशिपर सूर्य होवै तौभी सिंहके बृहस्पतिका दोष नहीं है. सिंहराशिपर बृहस्पति स्थित होवै तब गोदावरीमें स्नान करना अतिपुण्यकारक है. कन्याराशिपर बृहसपति स्थित होवै तब कृष्णानदीमें स्नान करना अतिपुण्यकारक है. गोदावरीकी यात्रावालोंकों मुंडन और उपवास आवश्यक है, और गोदावरीके तीरपर वसनेवालोंनें मुंडन और उपवास नहीं करना. जिसकी स्त्री गर्भिणी होवै और जिसनें विवाह आदि मंगल कार्य किये होवैं तिसकों भी गोदावरीपर मुंडन करानेमें दोष नहीं है. गयाजी और गोदावरीकी यात्रामें मलमास और गुरुशुक्रका अस्त आदि दोष नहीं है. मलमाससंबंधी व्रतविशेष अन्यग्रंथमें देख लेना. इति तृतीय उद्देशः ॥ ३ ॥

अथतिथिनिर्णयेसामान्यपरिभाषा तिथिर्द्विविधा पूर्णासखंडाच सूर्योदयमारभ्यषष्टिनाडिकाव्याप्तापूर्णा एतदन्यासखंडा सखंडापिद्विविधा शुद्धाविद्धाच सूर्योदयमारभ्यअस्तमयपर्यंतंविद्यमानाशिवरात्र्यादौनिशीथपर्यंतंविद्यमानाचशुद्धा तदन्याविद्धा वेधोपिद्विविधः प्रातर्वेधःसायंवेधश्च सूर्योदयोत्तरंषट्घटिकापरिमिततिथ्यंतरस्पर्शात्मकः प्रातर्वेधः सूर्यास्तात्प्राक्षट्घटीमिततिथ्यंतरस्पर्शःसायंवेधः एकादशीव्रतविषयेतुवेधोवक्ष्यते क्वचित्तिथिविशेषेवेधाधिक्यम् पंचमीद्वादशनाडीभिःषष्ठींविद्धांकरोति दशमीपंचदशभिरेकादशींवेधकृत् चतुर्दशीअष्टादशनाडीभिः पंचदशींविध्यति विद्धाश्चतिथयःक्वचित्कर्मणिग्राह्याःकुत्रचित्त्याज्याश्चभवंति तत्रसंपूर्णाशुद्धाचातिथिःप्रायेणनिर्णयंनापेक्षते संदेहाभावात् निषेधविषयेसखंडापिननिर्णयार्हा निषेधस्तुनिवृत्त्यात्माकालमात्रमपेक्षतेइतिवचनेनअष्टम्यादिषुनारिकेलादिभक्षणनिषेधादेस्तत्कालमात्रव्याप्ततिथ्यपेक्षणात् ॥

अब तिथिके निर्णयकी सामान्य परिभाषाकों कहताहुं.

तिथि दो प्रकारकी हैं, एक **पूर्णा** और दूसरी **सखंडा** है. सूर्यके उदयसें आरंभ कर साठ घडियोंसें जो व्याप्त होवै वह **पूर्णा** तिथि होती है. इस्सें दूसरी तरहकी **सखंडा** तिथि होती है. सो सखंडा तिथि भी दो प्रकारकी है, एक **शुद्धा** और दूसरी **विद्धा**. सूर्योदयसें आरंभ कर सूर्यके अस्तसमयतक विद्यमान और शिवरात्रि आदिमें अर्धरात्रतक विद्यमान रहै वह तिथि **शुद्धा** होती है, तिस्सें दूसरी तरहकी तिथि **विद्धा** होती है. वेध भी दो प्रकारका है. एक **प्रातर्वेध**, दूसरा **सायंवेध**. सूर्योदयके अनंतर छह घडीके पीछे दूसरी तिथिका स्पर्श होवै तिस वेधकों **प्रातर्वेध** कहते हैं, और सूर्यके अस्तके पहले छह घडीतक दूसरी तिथिका स्पर्श होवै तिसकों **सायंवेध** कहते हैं. एकादशीव्रतका वेध उस प्रकरणमें कहेंगे. कितनेक तिथिविशेषमें वेधकी अधिकता है. पंचमी तिथि बारह घडियोंकरके षष्ठीकों वेधती है. दशमी तिथि पंदरह घडियोंकरके एकादशीकों वेधती है, चतुर्दशी तिथि अठारह घडियोंकरके पौर्णिमाकों वेधती है. इसवास्ते विद्ध तिथि कितनेक कर्ममें ग्रहण करी जाती है और कितनेक कर्ममें त्यागी जाती है. संपूर्ण और शुद्धा तिथिके निर्णयकी अपेक्षा नहीं है, क्योंकी, उसमें संदेह नहीं है. और निषेधके विषयमें सखंडा तिथि भी निर्णयके योग्य नहीं होती है. "निवृत्तिरूपी निषेध कालमात्रकी अपेक्षा करता है" इस वचनकरके अष्टमी आदि तिथियोंमें नारियल आदिके खानेका जो निषेध है उसकों तत्कालमात्र व्याप्त हुई तिथिकी अपेक्षा है.

विहितव्रतादिविषयेतुनिर्णयउच्यते तत्रकर्मणोयस्ययःकालस्तत्कालव्यापिनीतिथिर्ग्राह्या यथाविनायकादिव्रतेमध्याह्नादौपूजनादिविधानात्मध्याह्नादिव्यापिनी दिनद्वयेकर्मकाले व्याप्तावव्याप्तौतदेकदेशव्याप्तौवायुग्मवाक्यादिनापूर्वविद्धायाः परविद्धायावातिथेर्ग्राह्यत्वं युग्मवाक्यंतु युग्माग्नियुगभूतानांषण्मुन्योर्वसुरंध्रयोः रुद्रेणद्वादशीयुक्ताचतुर्दश्याचपूर्णिमा प्रतिपद्यप्यमावास्यातिथ्योर्युग्मंमहाफलमिति युग्मंद्वितीयाअग्निस्तृतीया द्वितीयातृतीयाविद्धा ग्राह्या तृतीयाद्वितीयाविद्धाग्राह्येत्येवंद्वितीयातृतीययोर्युग्मं चतुर्थीपंचम्योर्युग्मंषष्ठीसप्तम्योर्युग्मं अष्टमीनवम्योर्युग्मं एकादशीद्वादश्योर्युग्मं चतुर्दशीपौर्णमास्योर्युग्मं अमावास्या प्रतिपदोर्युग्ममित्यर्थः क्वचिच्चतुर्थीगणनाथस्यमातृविद्धाप्रशस्यतइत्यादिविशेषवाक्यैर्ग्राह्यत्वनिर्णयःवचनवशेनग्राह्यायास्तिथेःकर्मकालेसत्त्वाभावेसाकल्यवचनैःसत्त्वंभावनीयम् तानिच यांतिथिंसमनुप्राप्यउदयंयातिभास्करः सातिथिःसकलाज्ञेयास्नानदानजपादिष्वित्यादीनि ॥ इति सामान्यनिर्णयश्चतुर्थ उद्देशः ॥

विहित व्रत आदिके विषयमें निर्णयकों कहताहुं.

तहां जिस कर्मका जो काल है तिस कालव्यापिनी तिथि ग्रहण करनी. जैसे गणेश आदिके व्रतमें मध्यान्ह आदिविषे पूजनके विधानकों होनेसें मध्यान्हकालव्यापिनी तिथि लेनी और जो दोनों दिन कर्मकालमें व्याप्त होवै अथवा व्याप्त नहीं होवै अथवा तिसके एकदेशमें व्याप्त होवै तब इस वक्ष्यमाण युग्मवाक्य आदिसें पूर्वविद्धा और परविद्धा तिथिका

ग्रहण करना चाहिये. युग्मवाक्य "युग्माग्नियुगभूतानां षण्मुन्योर्वसुरंध्रयोः ॥ रुद्रेणद्वादशीयुक्ता चतुर्दश्या च पूर्णिमा ॥ प्रतिपद्यप्यमावास्या तिथ्योर्युग्मं महाफलं," द्वितीया तृतीयासें विद्धा लेनी, तृतीया द्वितीयाविद्धा लेनी, इस प्रकार द्वितीया और तृतीयाका युग्म हुआ, चतुर्थी पंचमीसें विद्धा लेनी, षष्ठी सप्तमीसें विद्धा लेनी, अष्टमी नवमीसें विद्धा लेनी, एकादशी द्वादशीसें विद्धा लेनी, चतुर्दशी पौर्णमासीसें विद्धा लेनी, अमावस प्रतिपदासें विद्धा लेनी. ऐसे ये तिथियोंके युग्म हैं. कहींक "गणेशजीके व्रतमें चतुर्थी तृतीयासें विद्धा होवै वह श्रेष्ठ होती है;" इस आदि विशेषवाक्योंसें ग्रहण करनेका निर्णय है. वचनके वशसें ग्रहणकरनेके योग्य तिथि कर्मसमयमें नहीं होवै, तब साकल्यबोधक वचनोंसें तिथिका संभव मानना. साकल्यबोधक वचनकों कहते हैं. जिस तिथिकों अच्छीतरह प्राप्त होकर सूर्यउदय होता है, वह स्नान, दान, जप आदियोंमें संपूर्ण तिथि जाननी. इति चतुर्थ उद्देशः ॥४

कर्मविशेषेनिर्णयः कर्माणिद्विविधानि दैवानिपित्र्याणिच दैवानिषड्विधानि एकभक्तनक्तायाचितोपवासव्रतदानाख्यानि मध्याह्नेएकवारमेकान्नभोजनमेकभक्तम् रात्रावेवप्रदोषकालेभोजनंनक्तम् याचनांविनातद्दिनेलब्धस्यान्नादेर्भोजनमयाचितम् दिनांतरलब्धस्यापिपाचकंस्त्रीपुत्रादिकंप्रतियाचनमंतरेणभोजनमयाचितमितिकेचित् अहोरात्रभोजनाभावउपवासः पूजाद्यात्मकःकर्मविशेषोव्रतम् स्वत्वनिवृत्तिपूर्वकंपरस्वत्वापादनंदानम् तानिचैकभक्तादीनिक्वचिद्व्रताद्यंगतयाविहितानि क्वचिदेकादश्याद्युपवासप्रतिनिधितयाविहितानि क्वचित्स्वतंत्राणीतित्रिविधानि तत्रान्यांगानांप्रतिनिधिभूतानांचतत्तत्प्रधानवशेननिर्णयः ॥

अब कर्मविशेषके निर्णयकों कहताहुं.

कर्म दो प्रकारका है. एक दैवकर्म, दूसरा पित्र्यकर्म. दैवकर्म भी छह प्रकारका है. **एकभक्त, नक्त, अयाचित, उपवास, व्रत, दान** इन भेदोंसें है. मध्यान्हमें एक अन्नकों एकवार भोजन करना **एकभक्त** कहाता है. रात्रिमेंही प्रदोषसमय भोजन करना **नक्त** कहाता है. याचनाके विना तिस दिनमें लब्ध हुये अन्नकों भोजन करना **अयाचित** कहाता है. और अन्य दिनमें लब्ध हुये अन्नकों भी पाचक स्त्री, पुत्र, इन आदिके प्रति याचनाके विना भोजन करना अयाचित कहाता है. ऐसा कितनेकोंका मत है. दिन और रात्रिमें भोजन नहीं करना **उपवास** कहाता है. पूजाआदि कर्मविशेष **व्रत** कहाता है; अपनी मेरकों दूर कर दूसरेकी मेरकों प्राप्त कराना **दान** कहाता है. ये एकभक्त आदि दैवकर्म कहींक व्रतआदिके अंगपनेसें विहित हैं और कहींक एकादशी आदि उपवासके स्थानमें विहित हैं, और कहींक स्वतंत्र हैं, ऐसे तीन प्रकारके हैं, अंगव्रतोंमें और प्रतिनिधिव्रतोंमें प्रधानव्रतके वशकरके निर्णय जानना.

स्वतंत्राणांनिर्णयउच्यते तत्रदिनंपंचधाविभज्यप्रथमभागःप्रातःकालोज्ञेयः द्वितीयःसंगवः तृतीयोमध्याह्नः चतुर्थोभागोऽपराह्णः पंचमःसायाह्नः सूर्यास्तोत्तरंत्रिमुहूर्तःप्रदोषः तत्रैकभक्तेमध्याह्नव्यापिनीतिथिर्ग्राह्या तत्रापिदिनार्धसमयेऽतीतेत्रिंशत्घटिकात्मकमध्यमदिनमानेनषोडशादिघटीत्रयंमुख्योभोजनकालः ततऊर्ध्वमासायंगौणकालः अत्रपूर्वेद्युरेवमुख्यकालेव्याप्तिःपरेद्युरेवव्याप्तिरुभयेद्युर्व्याप्तिरुभयत्रापिव्याप्त्यभावः उभयत्रसाम्येनैकदेश

व्याप्तिर्वैषम्येणैकदेशव्याप्तिरितिषट्पक्षाभवंति तत्रपूर्वेद्युरेवमुख्यकालेग्राह्यतिथिसत्त्वेपूर्वैव परत्रैवसत्त्वेपरैवेत्यसंदेहः उभयत्रापिपूर्णव्याप्तित्वेयुग्मवाक्यान्निर्णयः उभयत्रव्याप्त्यभावेपूर्वैव गौणकालव्याप्तिसत्त्वात्साम्येनैकदेशव्याप्तौपूर्वा वैषम्येणैकदेशव्याप्तौदिनद्वयेपिकर्मपर्याप्ततिथिलाभेयुग्मवाक्यान्निर्णयः कर्मपर्याप्ततिथ्यलाभेपूर्वैवेति ॥ इतिएकभक्तं ॥

अब स्वतंत्र व्रतोंका निर्णय कहताहुं.

तहां दिनके पांच भाग करके प्रथम भाग **प्रातःकाल** जानना; दूसरा भाग **संगवकाल** जानना; तीसरा भाग **मध्यान्हकाल** जानना; चतुर्थ भाग **अपराह्णकाल** जानना; पांचमा भाग **सायान्हकाल** जानना. सूर्यके अस्तसें छह घडीतक **प्रदोषकाल** जानना. तहां एकभक्तव्रतमें मध्यान्हव्यापिनी तिथि ग्रहण करनी. उसमेंभी दिनका आधा भाग व्यतीत हो जावै तब तीस घडीवाले मध्यम दिनमानकरके सोलह आदि तीन घडी मुख्य भोजनकाल है. तिस्सें उपर सायंकालतक भोजनका गौणकाल है. तिथीके व्याप्तिविषे निर्णयके छह पक्ष हैं. सो ऐसें; १ पूर्वदिनमेंही मुख्यकालमें व्याप्ति होवै, २ दूसरे दिनमेंही व्याप्ति होवै, ३ दोनों दिनोंमेंही व्याप्ति होवै, ४ दोनोंही दिन नहीं व्याप्ति होवै, ५ दोनोंही दिन सरीखी एकदेशमें व्याप्ति होवै, ६ विषमपनेसें एकदेशमें व्याप्ति होवै, ऐसे छह पक्ष हैं. तहां जो पूर्वदिनकी मुख्यकालविषे ग्रहण करनेके योग्य तिथि होवै तहां पूर्वतिथिही लेनी. दूसरे दिनकीही जो ग्राह्यतिथि होवै तौ परतिथिही लेनी, इसमें संशय नहीं. दोनोंही दिनोंमें पूर्णतिथि व्याप्त होवै तौ पूर्वोक्त युग्मवाक्यसें निर्णय करना. गौणकालमें व्याप्ति होनेसें दोनों दिनोंमें तिथि व्याप्त नहीं होवै तहां पूर्वतिथि लेनी. समानपनेसें एकदेशमें तिथि व्याप्त होवै तब पूर्वतिथि लेनी. विषमपनेसें एकदेशमें तिथि व्याप्त होवै, तब दोनों दिनोंमें कर्मके योग्य तिथिके लाभमें पूर्वोक्त युग्मवाक्यसें निर्णय करके तिथि लेनी. कर्मके योग्य तिथिके अलाभमें पूर्वविद्धा तिथि लेनी. यहां एकभक्त समाप्त हुआ.

अथनक्तं ॥ तत्रसूर्यास्तोत्तरत्रिमुहूर्तात्मकप्रदोषव्यापिनीतिथिर्नक्तेग्राह्या अन्यतरदिने तद्व्याप्तौतदेकदेशस्पर्शेवासैवग्राह्या ॥

भोजनंतुअस्तोत्तरंघटिकात्रयसंध्याकालंत्यक्त्वाकार्यं संध्याकालेभोजननिद्रामैथुनाध्ययनवर्जनात् यतिभिरपुत्रविधुरैर्विधवाभिश्चनक्तंसायाह्नव्यापिन्यादिनाष्टमभागेकार्यं रात्रौतेषां भोजननिषेधात् एवंसौरनक्तमपिसायाह्नव्यापिन्यांदिवैवकार्यं दिनद्वयेप्रदोषव्याप्तौपरा दिनद्वयेप्रदोषव्याप्त्यभावेपरत्रैवसायाह्नेदिनाष्टमभागेनक्तंकार्यंनतुरात्रौ साम्येनैकदेशव्याप्तौपरैव वैषम्येण प्रदोषैकदेशव्याप्तौतदाधिक्यवतीपूर्वापिग्राह्या यदिपूजाभोजनपर्याप्तंतदाधिक्यंलभ्यते नोचेत्साम्यपक्षवदुत्तरैवनत्वाधिक्यवशात्पूर्वेति नक्तव्रतभोजनंवैधत्वाद्रविवासरसंक्रांत्यादावपिरात्रावेवकार्यं रविवारादौरात्रिभोजननिषेधस्य रागप्राप्तभोजनपरत्वात् एकादश्याद्युपवासप्रत्याम्नायभूतंनक्तंतूपवासनिर्णीतदिनेएवेति अयाचितस्यत्वहोरात्रसाध्यत्वादुपवासवन्निर्णयःपित्र्याणामपराह्णादिव्यापित्वेननिर्णयस्तत्तत्प्रकरणेवक्ष्यते एकभक्तनक्तायाचितोपवासानांपूर्वतिथावनुष्ठितानांपरेद्युस्तिथ्यंतेपारणं यामत्रयोर्ध्वगामिन्यांतिथौ प्रातःपारणमितिसर्वत्रज्ञेयमितिमाधवः ॥ इति एकभक्तादिनिर्णयःपंचमउद्देशः ॥

अब नक्तव्रतका निर्णय कहताहुं.

तहां सूर्यके अस्तसें उपरंत छह घडीतक प्रदोषव्यापिनी तिथि नक्तव्रतमें ग्रहण करनी. जो दोनों दिनोंमें वह तिथि व्याप्त होवै अथवा प्रदोषकालमें एकदेशविषे व्याप्त होवै तब वही तिथि ग्रहण करनी.

संध्याकालमें भोजन, नींद, स्त्रीसंग, पठन, इन्होंकों वर्ज किये हैं, वास्ते सूर्यके अस्तके उपरंत तीन घडीतक संध्याकालकों वर्ज करके भोजन करना चाहिये. यति, पुत्र और स्त्रीसें रहित पुरुष, विधवा स्त्री, इन्होंनें तिन्होंकों 'रात्रिमें भोजनका निषेध होनेसें' सायान्हव्यापिनी तिथि होवै तब दिनके आठमें भागमें नक्तव्रतका पालन करना. ऐसेही सौरनक्त भी सायान्हकालव्यापिनी तिथि होवै तब दिनविषेही करना. और दोनों दिनोंमें प्रदोषव्यापिनी होवै तौ दूसरे दिनकी तिथि लेनी. और दोनों दिनोंमें प्रदोषव्यापिनी नहीं होवै तौ दूसरे दिनके सायंकालमें दिनके आठमें भागमें नक्तव्रत करना, रात्रिमें नहीं करना. दोनों दिनोंमें समताकरके एकदेशमें व्याप्ति होवै तब दूसरे दिनकीही तिथि लेनी. दोनों दिनोंमें विषमपनेसें प्रदोषकालके एकदेशमें व्याप्ति होवै और उसमें पूजा, और भोजन होवै इतनी तिथि मिलैगी तौ अधिकतावाली पहलीही तिथि ग्रहण करनी. पूजा, भोजन हो सके इतनी न मिलैगी तौ समानपनेकी पक्षकी तरह परतिथि ग्रहण करनी. किंतु अधिकताके वशसें पहलीही तिथि नहीं लेनी. नक्तव्रतभोजन विधिप्राप्त होनेसें रविवार और संक्रांति आदिमेंभी रात्रिविषेही करना. क्योंकी, रविवार आदिमें रात्रिमें भोजनका निषेध प्रीतिप्राप्त भोजनके विषयमें है, विधिप्राप्त भोजनमें नहीं. एकादशी आदि उपवासके प्रत्याम्नायभूत नक्तव्रत करनेका सो उपवास निर्णीत दिनमेंही करना. अयाचितव्रतका दिनरात्रिमें साध्यपनेसें उपवासकीतरह निर्णय जानना. पित्र्यकर्मोंकों अपराण्हकालमें व्यापित ऐसी तिथि लेनेका निर्णय तिस तिस प्रकरणमें कहेंगे. एकभक्त, नक्त, अयाचित और उपवास पूर्वतिथिमें अनुष्ठित होवै तौ दूसरे दिन तिथिके अंतमें पारणा करनी, और तीन पहरके उपर गमन करनेवाली तिथिमें प्रभातमें पारणा करनी ऐसा सब जगह जानना. यह माधवका मत है. इति एकभक्तादिनिर्णयो नाम पंचम उद्देशः ॥ ५ ॥

अथ व्रतपरिभाषा ॥ तत्रस्त्रीशूद्राणांद्विरात्राधिकोपवासेनाधिकारः स्त्रीणामपिभर्त्रनुज्ञांविनाव्रतोपवासादौनाधिकारः उपवासदिनेश्राद्धदिनेचकाष्ठेनदंतधावनंनकार्यं पर्णादिनाद्वादशगंडूषैर्वाकार्यं जलपूर्णताम्रपात्रंगृहीत्वोदङ्मुखःप्रातरुपवासादिव्रतंसंकल्पयेत् अपूर्वव्रतारंभोव्रतोद्यापनंचमलमासेगुर्वाद्यस्ते वैधृतिव्यतीपातादिदुर्योगेविष्टौक्रूरवारनिषिद्धेदर्शादितिथौनभवति एवंखंडतिथावपिनभवति उदयस्थातिथिर्याहिनभवेद्दिनमध्यभाक् सा खंडानव्रतानांस्यादारंभश्चसमापनमितिसत्यव्रतोक्तेः क्षमासत्यंदयादानंशौचमिंद्रियनिग्रहः देवपूजाचहवनंसंतोषःस्तेयवर्जनं सर्वव्रतेष्वयंधर्मःअत्रहोमोव्याहृतिभिः काम्यव्रतविशेषो ज्ञेयः यद्देवतायाउपोषणव्रतंतद्देवताजपस्तद्ध्यानंतत्कथाश्रवणंतदर्चनंतन्नामश्रवणकीर्तनादिकंकार्यं उपवासेऽनावलोकनगंधादिकमभ्यंगंतांबूलमनुलेपनंचत्यजेत् सभर्तृकस्त्रीणां सौभाग्यव्रतेऽभ्यंगतांबूलादिनवर्ज्यं अष्टैतान्यव्रतघ्नानिआपोमूलंफलंपयः हविर्ब्राह्मणका

म्याचगुरोर्वचनमौषधं प्रमादादिनाव्रतभंगेदिनत्रयमुपोष्यक्षौरंकृत्वापुनर्व्रतंकुर्यात् अशक्तस्योपवासप्रतिनिधिरेकब्राह्मणभोजनंतावद्धनादिदानंवासहस्रगायत्रीजपोवाद्वादशप्राणायामावाप्रायश्चित्तम् स्वीकृतंव्रतंकर्तुमशक्तः प्रतिनिधिनाकारयेत् पुत्रः पत्नीभर्ताभ्रातापुरोहितः सखाचेतिप्रतिनिधयः पुत्रादिःपित्राद्युद्देशेनव्रतंकुर्वन्स्वयमपिव्रतफलंलभते असकृज्जलपानाच्चसकृत्तांबूलचर्वणात् उपवासःप्रणश्येतदिवास्वापाच्चमैथुनात् स्मरणंकीर्तनंकेलिःप्रेक्षणं गुह्यभाषणम् संकल्पोध्यवसायश्चक्रियानिर्वृत्तिरेवचेत्यष्टविधंमैथुनम् प्राणसंकटेष्वसकृज्जलपानेदोषोनास्ति चर्मस्थंजलंगोभिन्नक्षीरंमसूरंजंबीरफलंशुक्तिचूर्णमित्यामिषगणोव्रते वर्ज्यः अश्रुपातक्रोधादिनासद्योव्रतनाशः परान्नभोजनेचापियस्यान्नंतस्यतत्फलम् तिलमुद्गभिन्नचणकादिकोशीधान्यंमाषादिकंमूलकंचेत्येवमादिक्षारगणं लवणमधुमांसादिकंचवर्जयेत् श्यामाकाश्चैवनीवारागोधूमाश्चव्रतेहिताः व्रीहिमुद्गयवतिलकंगुकलापादिधान्यंरक्तेतरमूलकंसूरणादिकंदः सैंधवसामुद्रलवणेगव्यदधिसर्पिर्दुग्धानिपनसफलमाम्रफलंनारीकेलंहरीतकीपिप्पलीजीरकंशुंठीतिंतिणीकदलीलवलीधात्रीफलानिगुडेतरेक्षुविकारइत्येतानि अतैलपक्वानिहविष्याणि गव्यंतक्रंमाहिषंघृतमपिक्वचित् अनुक्तव्रतविधिस्थलेमाषादिपरिमितसुवर्णरजतादिप्रतिमापूज्या द्रव्यानुक्तावाज्यहोमः देवतानुक्तौप्रजापतिः मंत्रानुक्तौसमस्तव्याहृतिः संख्यानुक्तावष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरष्टौवा होमसंख्या उपवासेकृतेब्राह्मणभोजनंतत्सांगतार्थम् उद्यापनानुक्तौगांसुवर्णंवादद्यात् विप्रवचनाद्व्रतसांगताविप्रवचनंचदक्षिणांदत्त्वैवग्राह्यं सर्वत्रगृहीतव्रतत्यागेचांडालतुल्यत्वम् विधवाभिर्व्रतादौचित्ररक्तादिवस्त्रंनधार्यंश्वेतमेवधार्यम् सूतकादौस्त्रीणांरजोदोषादौज्वरादौचगृहीतव्रतादौशारीरनियमान् स्वयंकुर्यात्पूजादिकमन्यद्वाराकारयेत् अपूर्वारंभस्तुसूतकादौनभवति काम्येप्रतिनिधिर्नास्तिनित्येनैमित्तिकेचसः काम्येप्युपक्रमादूर्ध्वंकेचित्प्रतिनिधिंविदुः नस्यात्प्रतिनिधिर्मंत्रस्वामिदेवाग्निकर्मसु नापिप्रतिनिधातव्यंनिषिद्धंवस्तुकुत्रचित् व्रतादिसन्निपातेदानहोमाद्यविरुद्धं क्रमेणकार्यम् विरुद्धेतुनक्तभोजनोपवासादावेकंस्वयंकृत्वान्यत्पुत्रभार्यादिनाकारयेत् यत्रचतुर्दश्यष्टम्यादौदिवाभोजननिषेधोव्रतांतरपारणाचप्राप्तातत्रभोजनमेवकार्यम् पारणायाविधिप्राप्तत्वात् निषेधस्तुरागप्राप्तभोजनपरः एवंरविवारादौसंकटचतुर्थ्यादिव्रतेरात्रिभोजनमेवकार्यम् ॥

अब व्रतकी परिभाषा कहताहुं.

स्त्री और शूद्रकों दो दो रात्रिसें अधिक उपवासका अधिकार नहीं है. स्त्रियोंकों भी पतिकी आज्ञाविना व्रत उपवास आदि करनेका अधिकार नहीं है. उपवासके दिन और श्राद्धके दिन काष्ठसें दंतधावन नहीं करना. किंतु पत्ता आदिकरके अथवा बारह कुल्लोंकरके दंतोंकी शुद्धि करनी. जलसें पूर्ण हुये तांबाके पात्रकों ग्रहण करके और उत्तरकों मुख करके प्रभातमें उपवास आदि व्रतका संकल्प करना. पहले नहीं किये हुये व्रतका आरंभ और व्रतका उद्यापन मलमास, बृहस्पति और शुक्रका अस्त, वैधृति, व्यतीपात आदि दुष्टयोग, भद्रा, पापवार, (शनि, मंगळ इ०), निषिद्धरूप अमावस आदि तिथि, इन्होंमें नहीं होते हैं. और ऐसेही खंडातिथिमेंभी व्रतका आरंभ और उद्यापन नहीं होता है. उदयमें स्थित होनेवाली तिथि मध्याह्न-

समयमें नहीं होवै तिसकों खंडा कहते हैं. तिसमें व्रतोंका आरंभ और समाप्ति नहीं करनी ऐसी **सत्यव्रतकी** उक्ति है. "क्षमा करनी, सत्य बोलना, दया करनी, दान करना, पवित्र रहना, इंद्रियोंका निग्रह करना, देवताकी पूजा, होम, संतोष, चोरी नहीं करना," ये धर्म सब व्रतोंमें हैं. यहां होम व्याहृतिमंत्रोंकरके करना. और काम्यव्रत विशेष जानना. जिस देवताका उपवास और व्रत होवै तिसी देवताका जप, ध्यान, कथा सुनना चाहिये. और तिसही देवताकी पूजा और तिसी देवताके नामकों सुनना तथा कीर्तन करना चाहिये. उपवासमें अन्नका देखना, अन्नकी गंध आदि लेनी, तैलाभ्यंग, नागरपानका खाना, अत्तर आदिका लगाना, इन्होंकों वर्ज करना चाहिये. और सुहागन स्त्रियोंनें सौभाग्यव्रतमें तैलाभ्यंग और नागरपान आदि नहीं वर्जने. जल, मूल, फल, दूध, हविष्य पदार्थ, ब्राह्मणकी इच्छा, गुरुका वचन, औषध ये आठों व्रतकों नहीं नाशते हैं. प्रमाद आदिकरके व्रतका भंग हो जावै तौ तीन दिन उपवास करके पीछे क्षौर करके फिर व्रत करना. असमर्थ मनुष्यसें व्रत नहीं हो सकै तौ एक ब्राह्मणकों भोजन करा देना अथवा एक ब्राह्मण भोजन कर सकै इतने द्रव्यका दान करना अथवा गायत्रीका एक हजार जप करना अथवा बारह प्राणायाम करने ये प्रायश्चित्त है. अंगीकार किये हुये व्रतके करनेमें असमर्थ होवै तौ प्रतिनिधि अर्थात् दूसरे मनुष्यसें व्रत कराना. पुत्र, स्त्री, पति, भाई, पुरोहित, मित्र ये प्रतिनिधि जानने. पिता आदिके उद्देशसें व्रतकों करता हुआ आप भी व्रतके फलकों प्राप्त होता है. वारंवार पानी पीनेसें और एक वार भी नागरपान खानेसें, दिनमें शयन करनेसें और मैथुन करनेसें उपोषणका नाश होता है. स्त्रीका स्मरण करना, स्त्रीका नाम लेना, क्रीडा करनी, स्त्रियोंकों देखना, स्त्रियोंसें गुप्त बोलना, इस तरह मैं विषयोपभोग करूंगा ऐसा संकल्प करना, इस विषयका मैं उपभोग करूंगा ऐसा निश्चय करना, और प्रत्यक्ष मैथुन करना ऐसे यह आठ प्रकारके मैथुन हैं. यह भी व्रतमें वर्जित हैं और प्राणोंके संकटविषे व्रतमें वारंवार पानी पीनेकों दोष नहीं है. चर्ममें स्थित हुआ पानी, गायके दूधविना अन्य किसीका दूध, मसूर, बिजौरा, शींपीका चुना ये सब **आमिषगण** कहाते हैं. ये सब व्रतमें वर्जित हैं. नेत्रोंसें आंशुओंकों निकासनेसें और क्रोध आदिसें तत्काल व्रतका नाश होता है. व्रत करके पराये अन्नके खानेमें जिसका अन्न होवै तिसकों व्रतका फल मिलता है. तिल और मूंगसें रहित चना आदि मटर, चौला आदि और उडद आदि अन्न, सहोंजनाकी फली यह **क्षारगण** है. नमक, मद्य, मांस आदि इन्होंकों व्रतमें वर्जित करना. शामक, देवभात, गेहूं ये व्रतमें उत्तम हैं. व्रीहिअन्न, जव, मूंग, तिल, कांगनी, वांस, मती, चावल इन आदि अन्न; लालसें अन्य रंगकी मूली; जमीकंद आदि कंद, सेंधा नमक, खारी नमक, गायका दहीं, दूध, घृत, फणसफल, आंबफल, नारियल, हरडै, पीपल, जीरा, सूंठ, आमली, केलाकी घड, राने आंवले, आंवले, गुडसें भिन्न ईखका विकार ये सब घृतमें पकाये हुये हविष्य अर्थात् व्रतके योग्य पदार्थ होते हैं. और कहींक गायका तक्र अर्थात् छाछ, भैंसका घृत ये भी व्रतमें लिये जाते हैं. नहीं कहे हुये व्रतविधिके स्थलमें मासा आदि तोलसें परिमित हुई सोनेकी अथवा रूपेकी प्रतिमाकी पूजा करनी योग्य है. द्रव्य नहीं कहा होवै तौ घृतसें होम करना. देवता नहीं कहनेमें प्रजापति देवता जाननी. मंत्रके नहीं कहनेमें सब व्याहृति जाननी. आहुतियोंकी संख्या नहीं कह-

नेमें एकसौ आठ अथवा अठाईस अथवा आठ आहुति देनी. उपवास करके पीछे तिस उपवासकी सिद्धिके लिये ब्राह्मणकों भोजन कराना. जिस जगह व्रतका उद्यापन कहा नहीं है तिस जगह गौ अथवा सोनाका दान देना. अथवा ब्राह्मणके वचनसें व्रतकी सांगता अर्थात् संपूर्णता होती है. दक्षिणा देके ब्राह्मणका वचन सब जगह ग्रहण करना चाहिये. ग्रहण किये व्रतकों त्यागनेसें चांडालके समान मनुष्य दोषी होता है. व्रतआदिमें विधवा स्त्रियोंनें चित्र और लाल वस्त्र नहीं धारण करना, किंतु सुपेद वस्त्र धारण करना. सूतक आदिमें और स्त्रियोंके रजोदोषमें और ज्वर आदिमें गृहीत किये व्रत आदिमें उपोषणादि शरीरके नियमोंकों आप करना और पूजा आदिकों दूसरेके द्वारा कराना. पहले नहीं किये व्रतका आरंभ सूतक आदिमें नहीं करना. काम्यकर्ममें प्रतिनिधि अर्थात् दूसरेसें व्रतका कराना नहीं होता. नित्य और नैमित्तिक कर्ममें आपकूं सामर्थ्य नहीं होवै तौ दूसरेसें व्रत कराना. कितनेक मुनियोंके मतमें काम्यकर्मका आरंभ हो चुका होवै और अपनी सामर्थ्य नहीं होवै तौ दूसरेसें काम्यकर्म कराना ऐसा है. मंत्र, यजमान, देवता, अग्निकार्य इन्होंमें प्रतिनिधि नहीं होता, अर्थात् दूसरेसें काम नहीं चलता. और कहीं भी निषिद्ध वस्तु प्रतिनिधि स्थानमें लेना नहीं. व्रत आदिके सन्निपातमें दान और होम आदि विरुद्ध नहीं है. किंतु क्रमसें करने. विरुद्धरूपी रात्रिभोजन और उपवास आदिमें एक आप करके दूसरा पुत्र और भार्या आदिसें कराना. जहां चतुर्दशी और अष्टमी आदिमें दिनके भोजनका निषेध होवै और अन्य व्रतकी पारणाही प्राप्त होवै तहां भोजनही करना चाहिये. क्योंकी, पारणा विधिप्राप्त है. और चतुर्दशी तथा अष्टमीमें दिनके भोजनका निषेध प्रीतिप्राप्त भोजनके विषयमें है. ऐसेही अंतवार आदिमें, संकटचतुर्थी आदिके व्रतमें रात्रिमेंही भोजन करना उचित है.

यत्राष्टम्यादौदिवाभोजननिषेधोरात्रौतुरविवारादिप्रयुक्तभोजननिषेधस्तत्रार्थप्राप्तउपवासः ॥ यत्रतु पुत्रवद्गृहस्थस्य संक्रांत्यादावुपवासोपिनिषिद्धोभोजनस्याप्यष्टम्यादिप्रयुक्तनिषेधस्तत्रकिंचिद्भक्ष्यंप्रकल्प्योपवासएवकार्यः चांद्रायणमध्येएकादश्यादिप्राप्तौग्राससंख्यानियमेनभोजनमेवकार्यम् एवंकृच्छ्रादिव्रतेपि एवमेकादश्यामेकांतरोपवासादिप्रयुक्तपारणायांप्राप्तायांजलपारणंकृत्वोपवसेत् एवंद्वादश्यांमासोपवासश्राद्धप्रदोषादिप्रयुक्तपारणप्रतिबंधेजलपारणंकार्यम् एकादश्यादौसंक्रमेपुत्रवद्गृहस्थस्योपवासनिषेधएकादश्युपवासश्चप्राप्तस्तत्रापिकिंचिदापोमूलंफलंपयोवाभक्ष्यंकल्प्यं द्वयोरुपवासयोर्नक्तयोरेकभक्तयोर्वैकस्मिन्दिनेप्राप्तौ अमुकोपवासममुकोपवासंचोभयंतंत्रेणकरिष्यइत्यादिसंकल्प्यसहैववोपवासपूजाहोमानामनुष्ठानम् यत्रोपवासैकभक्तयोरेकादिनेप्राप्तिस्तत्रतिथिद्वैधेगौणकालव्याप्तिमाश्रित्यएकं पूर्वतिथौद्वितीयंशेषतिथौकार्यम् अखंडतिथावेकंपुत्रादिनाकारयेदित्युक्तम् एवंकाम्यंनित्यस्यबाधकमित्यादिवाक्यैःकाम्यनित्यादिबलाबलबाधाबाधसंभवासंभवादिविचार्यानुष्ठानमूह्यम् ॥ इतिसामान्यव्रतपरिभाषोद्देशःषष्ठउद्देशः ॥

जहां अष्टमी आदिमें दिनविषे भोजनका निषेध है और रात्रिमें अंतवार आदि प्रयुक्त भोजनका निषेध है तहां अर्थप्राप्त उपवास करना. जहां पुत्रवाले गृहस्थ मनुष्यकों संक्रांति आदिमें उपवासकाही निषेध कहा है और अष्टमी आदिप्रयुक्त निषेध है तहां कछुक भक्ष्य

पदार्थकी कल्पना करके उपवासही करना चाहिये. चांद्रायणव्रतमें एकादशी आदि व्रत प्राप्त होवै तहां ग्रासकी संख्याके नियमसें भोजनही करना उचित है. ऐसेही कृच्छ्र आदि व्रतमें भी करना. जो एकादशीमें एकांतरोपवास आदिप्रयुक्त पारणा प्राप्त होवै तहां पानीसें पारणा करके उपवास करना. इस तरह द्वादशीमें मासोपवास, श्राद्ध, प्रदोष आदिप्रयुक्त पारणाका प्रतिबंध होवै तहां जलसें पारणा करनी. एकादशी आदिमें सूर्यसंक्रांति होवै तौ पुत्रवाले गृहस्थी मनुष्यकों उपवासका निषेध है. और पुत्रवाले गृहस्थी मनुष्यकों एकादशीका उपवास प्राप्त होवै, तौ जल, मूल, फल, दूध, इन्होंमेंसें कुछ भी भक्षण करना. एक दिनमें दो उपवास, दो नक्त और दो एकभक्त प्राप्त होवैं तौ **"अमुकोपवासममुकोपवासं चोभयं तंत्रेण करिष्ये"** ऐसा संकल्प करके साथही उपवास, पूजा, होम, इन्होंका अनुष्ठान करना. जहां उपवास और एकभक्तसंज्ञक व्रतकी प्राप्ति एक दिनमें होवै तहां दो प्रकारकी तिथिमें गौण कालकी व्याप्तिवाली तिथिकों ग्रहण करके एक व्रत पहली तिथिमें करना और दूसरा परतिथिमें करना उचित है. अखंडतिथि होवै तौ एक व्रत पुत्र आदिके द्वारा करवाना ऐसा कहा है. ऐसेही काम्यव्रत नित्यव्रतका बाधक है, इत्यादि वाक्योंकरके काम्यव्रत और नित्यव्रतके बल, अबल, बाध, अबाध, संभव, असंभव, इन आदिका विचार करके अनुष्ठान विचार लेना. **इति सामान्यव्रतपरिभाषोद्देशो नाम षष्ठ उद्देशः ॥ ६ ॥**

अथप्रतिपदादिनिर्णयः शुक्लप्रतिपत्पूजाव्रतादावपराह्णव्याप्तिसत्त्वेपूर्वविद्धाग्राह्या सायाह्णव्याप्तित्वेपिपूर्वैवेतिमाधवाचार्यः अन्यथाद्वितीयायुताग्राह्या कृष्णप्रतिपत्सर्वापिद्वितीयायुतैवग्राह्या उपवासेतुपक्षद्वयेपिप्रतिपत्पूर्वविद्धैवग्राह्या अपराह्णव्यापिन्यांप्रतिपदिकरणीयस्योपवासादेःसंकल्पंप्रातरेवकुर्यात् संकल्पकालेप्रतिपदादितिथ्यभावेपिसंकल्पेप्रतिपदादिरेववक्तव्यानत्वमावास्यादिः एवमुपोष्याद्वादशीशुद्धेत्यादिस्थलेएकादशीव्रतप्रयुक्तसंकल्पपूजादावेकादश्येवकीर्तनीया नतुद्वादशी संध्याग्निहोत्रादिकर्मांतरेषुतत्तत्कालव्यापिनीद्वादश्यादिरेवेतिममप्रतिभाति संकल्पश्चसूर्योदयात्प्रागुषःकालेसूर्योदयोत्तरंप्रातःकालाख्यत्रिमुहूर्तस्याद्यमुहूर्तद्वयेप्रशस्तः तृतीयोमुहूर्तस्तुनिषिद्धः ॥ इतिप्रतिपन्निर्णयः सप्तमउद्देशः ॥

अब प्रतिपदा आदिके निर्णयकों कहताहुं.

शुक्लपक्षकी प्रतिपदा पूजा और व्रत आदिमें अपराह्णकालव्यापिनी होवै तौ पूर्वविद्धा ग्रहण करनी. सायान्हकालव्यापिनी शुक्लप्रतिपदा भी पूर्वविद्धाही लेनी ऐसा माधवाचार्यका मत है. तैसी न होवै तौ द्वितीयासें युक्त हुई वह प्रतिपदा लेनी. कृष्णपक्षकी कोई भी प्रतिपदा द्वितीयासें युक्त होवै सोही ग्रहण करनी. उपवासविषे दोनों पक्षकी प्रतिपदा पूर्वविद्धाही लेनी चाहिये. और अपराह्णकालव्यापिनी प्रतिपदामें करनेके योग्य उपवास आदिका संकल्प प्रभातमें ही करना. संकल्पकालमें प्रतिपदा आदि तिथिके अभावमें भी संकल्पमें प्रतिपदादि ही तिथि कहनी उचित है, और अमावस आदि नहीं कहनी. ऐसेही "शुद्धद्वादशी उपवासके योग्य है" इत्यादि स्थलमें एकादशीव्रतप्रयुक्त संकल्प और पूजा आदिमें भी एकादशी ही कहनी, द्वादशी नहीं कहनी. संध्या, अग्निहोत्र इन आदि अन्य कर्मोंमें तत्कालव्यापिनी द्वादशी आदि लेनी ऐसा मेरा मत है. संकल्प सूर्योदयके पहले उषःकालमें अथवा सूर्योदयके

पीछे प्रातःकालके तीन मुहूर्तोंमेंसें पूर्वके दो मुहूर्तोंमें करना श्रेष्ठ है. प्रातःकालका तीसरा मुहूर्त निषिद्ध है. **इति प्रतिपन्निर्णयो नाम सप्तमउद्देशः ॥ ७ ॥**

द्वितीयाशुक्लपक्षेपरविद्धाग्राह्या कृष्णपक्षेद्वेधाविभक्तदिनपूर्वभागात्मकपूर्वाह्णप्रविष्टा चेत्पूर्वाग्राह्या अन्यथातुकृष्णपक्षेपिद्वितीयापरविद्धैव ॥ इति द्वितीयानिर्णयोऽष्टमउद्देशः ॥

अब द्वितीयाका निर्णय कहताहुं.

शुक्लपक्षमें द्वितीया परविद्धा लेनी चाहिये. कृष्णपक्षमें दो भागसें विभाग किये दिनके पूर्वभागरूपी पूर्वाह्णकालमें प्रविष्ट हुई द्वितीया पूर्वविद्धा लेनी, तैसी न होवै तौ कृष्णपक्षमें भी द्वितीया परविद्धा ही लेनी. **इति द्वितीयानिर्णयो नाम अष्टमउद्देशः ॥ ८ ॥**

तृतीयारंभाव्रतेपूर्वविद्धाग्राह्या रंभाव्यतिरिक्तव्रतेषुत्रिमुहूर्तद्वितीयाविद्धांपूर्वांत्यक्त्वापरदिनेत्रिमुहूर्तव्यापिनीग्राह्या पूर्वदिनेत्रिमुहूर्तन्यूनद्वितीयावेधेपरदिनेत्रिमुहूर्तव्याप्त्यभावेपूर्वाग्राह्या पूर्वदिनेत्रिमुहूर्तद्वितीयावेधेपरदिनेत्रिमुहूर्तन्यूनापिग्राह्या गौरीव्रतेतुकलाकाष्ठादिपरिमितस्वल्पद्वितीयायुक्तापिनिषिद्धा परदिनेकलाकाष्ठादिपरिमितास्वल्पापितृतीयापरिग्राह्या यदातुदिनक्षयवशात्परदिनेस्वल्पापिचतुर्थीयुतातृतीयानलभ्यते पूर्वदिनेचद्वितीयाविद्धातदाद्वितीयाविद्धैवग्राह्या यदाचदिनवृद्धिवशात्पूर्वदिनेषष्टिघटिकातृतीयापरदिनेचघटिकादिशेषवतीतदापूर्वांशुद्धांषष्टिघटिकामपित्यक्त्वाचतुर्थीयुतैवगौरीव्रतेग्राह्या ॥ इति तृतीया निर्णयो नवमउद्देशः ॥

अब तृतीयाका निर्णय कहताहुं.

रंभाव्रत अर्थात् केलीव्रतमें तृतीया पूर्वविद्धा लेनी. रंभाव्रतसें अन्यव्रतोंमें तीन मुहूर्त द्वितीयासें विद्ध हुई पहली तृतीयाकों त्याग कर दूसरे दिन तीन मुहूर्त अर्थात् छह घडीतक व्यापिनी तृतीया लेनी. पूर्वदिनमें छह घडीसें कम द्वितीयाका वेध होवै, और परदिनमें छह घडीसें कम व्याप्ति होवै तब पूर्वविद्धा तृतीया लेनी. पूर्वदिनमें छह घडी द्वितीयाका वेध होवै और परदिनमें छह घडीसें कम भी तृतीया होवै तौ कमही ग्रहण करनी. गौरीव्रतमें कला, काष्ठा आदि स्वल्प परिमाणसें युक्त हुई द्वितीयासें विद्ध हुई तृतीया नहीं लेनी और परदिनमें कला, काष्ठा आदि कालसें परिमित स्वल्प भी तृतीया होवै तौ लेनी. अठारहवार आंखकों मींचै तिसकों काष्ठा कहते हैं. और तीस काष्ठाओंकों कला कहते हैं. जो दिनके क्षयसें परदिनमें स्वल्प भी चतुर्थीसें युत तृतीया नहीं लब्ध होवै और पूर्वदिनमें द्वितीयासें विद्ध होवै, तब द्वितीयासेंही विद्ध हुई तृतीया ग्रहण करनी. जो दिनकी वृद्धिसें पूर्वदिनमें साठ घडी तृतीया होवै और परदिनमें एक घडी आदि शेष रहै तब पहली शुद्धा साठ घडीवाली भी त्यागके चतुर्थीसें युतही तृतीया गौरीव्रतमें ग्रहण करनी. **इति तृतीयानिर्णयो नाम नवमउद्देशः ॥ ९ ॥**

चतुर्थीगणेशव्रतातिरिक्तोपवासकार्येपंचमीयुताग्राह्या गौरीविनायकव्रतयोस्तुमध्याह्नव्यापिनीग्राह्या परदिनएवमध्याह्नव्यापिनीचेत्परैव दिनद्वयेमध्याह्नव्यापित्वेदिनद्वयेमध्याह्नव्याप्त्यभावेसाम्येनवैषम्येणवैकदेशेव्याप्तौचपूर्वैव तृतीयायोगप्राशस्त्यात् नागव्रतेतुपूर्व

दिनएवमध्याह्नव्यापिनीचेत्पूर्वैव उभयदिनमध्याह्नव्याप्तादिपक्षचतुष्टयेपंचमीयुतैवग्राह्या संकष्टचतुर्थीतुचंद्रोदयव्यापिनीग्राह्या परदिनेएवचंद्रोदयव्याप्तौपरैव उभयदिनेचंद्रोदयव्याप्तित्वेतृतीयायुतैवग्राह्या दिनद्वयेचंद्रोदयव्याप्त्यभावेपरैव ॥ इतिचतुर्थीनिर्णयोदशमउद्देशः ॥

अब चतुर्थीका निर्णय कहताहुं.

गणेशव्रतसें अन्य उपवासकार्यमें पंचमीसें युत हुई चतुर्थी लेनी. गौरी और गणेशके व्रतमें मध्यान्हव्यापिनी चतुर्थी लेनी. जो परदिनमें मध्यान्हव्यापिनी चतुर्थी होवै तौ पराही लेनी. दोनों दिनोंमें मध्यान्हसमयव्यापिनी होवै अथवा दोनों दिनोंमें मध्यान्हव्यापिनी नहीं होवै और समताकरके अथवा विषमताकरके एकदेशमें व्याप्त होवै तब तृतीयाका योग प्रशस्त होनेसें पूर्वविद्धाही लेनी. नागव्रतमें जो पूर्वदिनविषे मध्यान्हव्यापिनी होवै तौ पूर्वविद्धाही लेनी. दोनों दिनोंमें मध्यान्हव्याप्तिके चारों पक्षोंमेंसें पंचमीसें युत हुई चतुर्थी लेनी. और संकटचतुर्थी तौ चंद्रोदयव्यापिनी लेनी. परदिनमें भी चंद्रोदयव्यापिनी होवै तौ परविद्धाही लेनी. दोनों दिन चंद्रोदयव्यापिनी होवै तौ तृतीयायुक्तही लेनी. दोनों दिनोंमें चंद्रोदयव्यापिनी नहीं होवै तौ परविद्धा लेनी. इति चतुर्थीनिर्णयो नाम दशमउद्देशः ॥ १० ॥

पंचमीशुक्लपक्षेकृष्णपक्षेचकर्ममात्रेपिचतुर्थीविद्धाग्राह्या स्कंदोपवासेतुषष्ठीयुताग्राह्या नागव्रतेपंचमीपरविद्धाग्राह्या परेद्युस्त्रिमुहूर्तन्यूनापंचमीपूर्वेद्युस्त्रिमुहूर्तन्यूनचतुर्थ्याविद्धा तदापूर्वैव त्रिमुहूर्ताधिकचतुर्थीवेधेद्विमुहूर्तापिपरैव ॥ इति पंचमीनिर्णयएकादशउद्देशः ॥

अब पंचमीका निर्णय कहताहुं.

कृष्णपक्षमें और शुक्लपक्षमें कर्ममात्रविषे चतुर्थीसें विद्ध हुई पंचमी लेनी, स्वामिकार्तिकके उपवासमें षष्ठीसें युत हुई पंचमी लेनी. नागव्रतमें परविद्धा पंचमी लेनी. परदिनमें छह घडीसें कम पंचमी होवै और पूर्वदिनमें छह घडीसें कम चतुर्थीसें विद्धा होवै, तब पूर्वविद्धा पंचमी लेनी. और छह घडीसें अधिक चतुर्थीसें विद्धा पंचमी होवै और परदिनमें ४ घडी पंचमी होवै तब परविद्धाही लेनी. इति पंचमीनिर्णयो नाम एकादशउद्देशः ॥ ११ ॥

षष्ठीस्कंदव्रतेपूर्वविद्धा ग्राह्या अन्यव्रतेषुपरविद्धैव पूर्वेद्युःषण्मुहूर्तन्यूनपंचम्यावेधेपूर्वापिषष्ठीसप्तम्योरविवासरयोगेपद्मकयोगः ॥ इति षष्ठीनिर्णयोद्वादशउद्देशः ॥

अब षष्ठीका निर्णय कहताहुं.

स्वामिकार्तिकके व्रतमें षष्ठी पूर्वविद्धा ग्रहण करनी. अन्य व्रतोंमें परविद्धाही लेनां. पूर्वदिनमें बारह घडीयोंसें कम पंचमीका वेध होवै तौ पूर्वविद्धाही लेनी. षष्ठी और सप्तमीमें रविवारका योग होवै तब पद्मकयोग होता है. इति षष्ठीनिर्णयो नाम द्वादशउद्देशः॥१२॥

सप्तमीकर्ममात्रेषष्ठीयुतैवग्राह्या यदापूर्वेद्युरस्तमयपर्यंताषष्ठीतिदिवाषष्ठीविद्धानलभ्यतेपरेद्युश्चाष्टमीविद्धातदाचागत्यापरैव एवंतिथ्यंतरनिर्णयेष्वप्यूह्यम् ॥ इति सप्तमीनिर्णयत्रयोदशउद्देशः ॥

अब सप्तमीका निर्णय कहताहुं.

सब कर्मोंमें षष्ठीसें युत हुई सप्तमी लेनी. जो पहले दिन सूर्यके अस्ततक षष्ठी होवै और उस दिनमें षष्ठीसें विद्ध हुई सप्तमी नहीं मिलै और परदिनमें अष्टमीसें विद्ध हुई सप्तमी होवै तब परदिनकी सप्तमी अष्टमीविद्धाही लेनी. ऐसा ही अन्यतिथियोंके निर्णयोंमें भी विचार लेना. **इति सप्तमीनिर्णयो नाम त्रयोदशउद्देशः ॥ १३ ॥**

व्रतमात्रेष्टमीशुक्लपक्षेपरा कृष्णपक्षेपूर्वा मिलितशिवशक्त्योरुत्सवेकृष्णापिपरा बुधाष्टमीशुक्लपक्षे प्रातःकालमारभ्यापराह्णपर्यंतंयदिनेमुहूर्तमात्रोपिबुधवासरयोगःसाग्राह्या सायान्हकालेचैत्रमासेश्रावणादिमासचतुष्टयेकृष्णपक्षेचनग्राह्या सर्वकृष्णाष्टमीषुकालभैरवोद्देशेनकेचिदुपवसंति तत्रमार्गशीर्षकृष्णाष्टम्यांभैरवजयंतीत्वात्तद्वन्निर्णयौचित्येनमध्याह्नव्यापिनीग्राह्या दिनद्वयेमध्याह्नव्याप्तौपूर्वैव प्रदोषव्यापिनीतिकौस्तुभे अतउभयदिनेप्रदोषव्याप्तौद्विविधवाक्याविरोधात्परैव पूर्वत्रप्रदोषव्याप्तिरेवपरत्रमध्याह्नेएवतदाबहुशिष्टाचारानुरोधात्प्रदोषगापूर्वैव यत्तुअर्कपर्वद्वयेरात्रौचतुर्दश्यष्टमीदिवेतिवचनाद्दिवाभोजननिषेधमात्रपरिपालनंनतुकिंचिद्व्रतं तत्र निषेधस्तुनिवृत्त्यात्माकालमात्रमपेक्षतइतिवचनाद्भोजनकालव्यापिनीमष्टमींत्यक्त्वानवम्यांसप्तम्यांवाभोक्तव्यं इतिभाति युक्तमयुक्तंवासद्भिर्विचारणीयं ॥ इत्यष्टमीनिर्णयश्चतुर्दशउद्देशः ॥

अब अष्टमीका निर्णय कहताहुं.

शुक्लपक्षविषे सब व्रतोंमें परविद्धा अष्टमी लेनी. कृष्णपक्षमें पूर्वविद्धा अष्टमी लेनी. मिश्रित शिवशक्तिके उत्सवविषे कृष्णपक्षकी दुसरे दिनकीही लेनी. शुक्लपक्षमें बुधाष्टमी प्रभातसें आरंभ करके अपराह्णकाल अर्थात् तीसरे पहरतक दो घडी भी बुधवारसें युक्त होवै वह ग्रहण करनी. सायान्हकालमें, चैत्र, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक इन महीनोंमें और कृष्णपक्षमें होनेवाली बुधाष्टमी नहीं ग्रहण करनी. सब महीनोंकी कृष्णाष्टमियोंमें कालभैरवके उद्देशकरके कितनेक लोक उपवास करते हैं, तहां मगशिरकी कृष्णाष्टमीकों भैरवजयंती होनेसें तिसके निर्णयके अनुसार मध्यान्हव्यापिनी अष्टमी लेनी. दोनों दिनोंमें मध्यान्हव्यापिनी अष्टमी होवै तौ पहली लेनी. कौस्तुभमें प्रदोषकालव्यापिनी अष्टमी लेनी ऐसा लिखा है. इसी कारणसें दोनों दिनोंमें प्रदोषकालव्यापिनी अष्टमी होवै तौ दो प्रकारसें वाक्योंका परस्पर अविरोध होनेसें परविद्धाही लेनी. और पहले दिनमें प्रदोषव्यापिनी होवै और, परदिनमें मध्यान्हव्यापिनीही होवै, तब शिष्टाचारके अनुरोधसें प्रदोषव्यापिनी पहलीही लेनी. "रविवार, अमावास्या, और पौर्णिमा इन्होंमें रात्रिके भोजनका निषेध और अष्टमी तथा चतुर्दशीमें दिनके भोजनका निषेध मात्र कहा है," और कछु व्रत नहीं है, और तहां " निषेध तौ निवृत्तिस्वभाववाले कालमात्रकी अपेक्षा करता है " इस वचनसें भोजनकालव्यापिनी अष्टमीकों त्यागकर नवमीमें अथवा सप्तमीमें भोजन करना उचित है ऐसा मेरा मत है. यहां युक्त अथवा अयुक्त सत्पुरुषोंनें विचार लेना. **इति अष्टमीनिर्णयो नाम चतुर्दशउद्देशः ॥ १४ ॥**

नवमीसर्वत्राष्टमीविद्धैवग्राह्या ॥ इति नवमीनिर्णयःपंचदशउद्देशः ॥

अब नवमीका निर्णय कहताहुं.

सब जगह नवमी अष्टमीसें विद्ध हुई लेनी चाहिये. इति नवमीनिर्णयो नाम पंचदशउद्देशः ॥ १५ ॥

दशमीतूपवासादौनवमीयुतैवग्राह्या पूर्वविद्धायाअलाभेउत्तरविद्धाग्राह्या ॥ इति दशमीनिर्णयः षोडशउद्देशः ॥

अब दशमीका निर्णय कहताहुं.

उपवास आदिमें नवमीसें युत हुई दशमी लेनी. पूर्वविद्धा दशमी नहीं मिलै तो परविद्धा लेनी. इति दशमीनिर्णयो नाम षोडशोद्देशः ॥ १६ ॥

अथैकादशीनिर्णयः तत्रैकादश्युपवासोद्वेधा भोजननिषेधपरिपालनात्मकोव्रतात्मकश्च आद्येपुत्रवद्गृहस्थादीनांकृष्णपक्षेप्यधिकारः व्रतात्मकोपवासस्तुअपत्ययुक्तैर्गृहस्थैश्चकृष्णपक्षेमकार्यः किंतुसमंत्रकंव्रतसंकल्पमकृत्वायथाशक्तिनियमयुतंभोजनवर्जनमेवकार्यं एवंतिथिक्षयेशुक्लैकादश्यामपिज्ञेयम् शयनीबोधिनीमध्यवर्तिकृष्णैकादशीषुसापत्यगृहस्थादीनां सर्वेषामधिकारः विष्णुसायुज्यकामैरायुःपुत्रकामैश्चकाम्यव्रतं पक्षद्वयेपिकार्यं तत्रनकोपिनिषेधः वैष्णवगृहिणांकृष्णैकादश्यपिनित्योपोष्या इदमेकादशीव्रतंशैववैष्णवसौरादीनांसर्वेषां नित्यं अकरणेप्रत्यवायश्रवणात्संपत्त्यादिफलश्रवणात्काम्यंचभवति केचिन्मुहूर्तादिमितदशमीसत्त्वेदशम्यामेवभोजनंकर्तव्यं सूर्योदयात्पूर्वमेवप्रवृत्तायांशुद्धाधिकाधिकद्वादशिकायांतु नैरंतर्येणोपवासद्वयंकार्यमितितिथिपालनमपिवदंति तन्नयुक्तंअष्टमवर्षादूर्ध्वमशीतितमवर्षपर्यंतमेकादशीव्रताधिकारः शक्तस्यतुअशीतेरूर्ध्वमप्यधिकारः सभर्तृकाणांस्त्रीणांभर्त्रनुज्ञांपित्राद्यनुज्ञांवाविनोपवासव्रताद्याचरणेव्रतवैफल्यंभर्त्रायुःक्षयोनरकश्च अशक्तानांतु नक्तंहविष्यान्नमनौदनंवाफलंतिलाःक्षीरमथांबुचाज्यं यत्पंचगव्यंयदिवापिवायुःप्रशस्तमत्रोत्तरमुत्तरं चेतिपक्षेषुशक्तितारतम्येनैकपक्षाश्रयणं नत्वेकादशीत्यागः प्रमादादिनैकादश्यामुपोषणाकरणेद्वादश्यामपिव्रतंकार्यं द्वादश्यामप्यकरणेयवमध्यचांद्रायणंप्रायश्चित्तं नास्तिक्यादकरणेपिपीलिकामध्यचांद्रायणं अशक्तपतिपित्राद्युद्देशेनस्त्रीपुत्रभगिनीभ्रात्रादिभिरेकादशीव्रताचरणेक्रतुशतजंपुण्यं ॥

अब एकादशीका निर्णय कहताहुं.

तहां एकादशीका उपवास दो प्रकारका है. एक भोजननिषेधपरिपालनात्मक और दूसरा व्रतात्मक. केवल भोजननिषेधपरिपालनात्मक व्रतमें पुत्रवाले गृहस्थी आदिकोंको कृष्णपक्षमें भी अधिकार है, और व्रतात्मक उपवास, पुत्रवाले गृहस्थीनें कृष्णपक्षमें नहीं करना; किंतु मंत्रसहित व्रतके संकल्पकों नहीं करके शक्तिके अनुसार नियमसें भोजनकोंही वर्ज देना. ऐसाही तिथिके क्षयविषे शुक्लपक्षकी एकादशीमें भी करना चाहिये. देवशयनी, देवउठनी इन एकादशीयोंके मध्यवर्तिनी कृष्णा एकादशी इन्होंमें पुत्रवाले गृहस्थ आदिकों व्रत क-

रनेका अधिकार है. विष्णुके समीप पहुंचनेकी कामनावालोंनें, आयु और पुत्रकी कामनावालोंनें काम्यव्रत दोनों भी पक्षोंमें करना चाहिये. तिसविषे कोई भी निषेध नहीं है. वैष्णव गृहस्थियोंनें कृष्णपक्षकी एकादशीकों भी नित्य नित्य उपोषण करना. यह एकादशीव्रत शैव, वैष्णव, सूर्यके भक्त इन आदि सबोंनें नित्य करना. नहीं करनेमें दोष लगता है. संपत्ति आदि प्राप्त होनेवाले फलकों सुननेसें काम्यव्रतभी होता है. कितनेक मुनि कहते हैं की दो घडी आदि परिमाणसें युत दशमी होवै तौ दशमीमेंही भोजन करना उचित है. और सूर्योदयके पहले प्रवृत्त हुई शुद्धाधिकाधिक द्वादशीमें निरंतरपनेसें दो उपवास करने, ऐसा तिथिपालन भी कहते हैं, परंतु वह युक्त नहीं है. आठमे वर्षसें उपरंत आइशी वर्षतक एकादशीके व्रतका अधिकार है, और समर्थ मनुष्यकों आइशी वर्षसें उपरभी अधिकार है. पतिवाली स्त्रियोंनें पतीकी अथवा पिताकी आज्ञाके विना उपवास और व्रत आदिके आचरण करनेसें व्रत निष्फल होके पतिकी आयुका क्षय तथा नरकप्राप्ति होती है. और असमर्थ मनुष्योंनें "नक्तभोजन केवल चावल अथवा गेहूंकी रोटी, फल, तिल, दूध, पानी, घृत, पंचगव्य, (दूध, दहीं, घृत, गोमूत्र, गोवर,) पवन ये सब उत्तरोत्तर क्रमसें एकसें दूसरा श्रेष्ठ है." इन पक्षोंमेंसें अपनी शक्तिके अनुसार एक पक्षका आश्रय करना. एकादशीकों नहीं त्यागना. प्रमाद आदि करके एकादशीके दिन उपोषण नहीं किया होवै तौ द्वादशीकों भी व्रत करना चाहिये. और द्वादशीके दिन भी व्रत नहीं किया होवै तौ [1]यवमध्यचांद्रायण प्रायश्चित्त करना. नास्तिकपनेसें एकादशीके व्रतके नहीं करनेमें [2]पिपीलिकामध्यचांद्रायण प्रायश्चित्त करना. सामर्थ्यसें रहित पति और पिता आदिके उद्देश करके स्त्री, पुत्र, बहन, भाई, इन्होंकों एकादशीके व्रतके आचरण करनेमें सौ यज्ञके पुण्यका फल मिलता है.

अथव्रतदिननिर्णयः तत्रव्रताधिकारिणोद्विविधावैष्णवाःस्मार्ताश्च तत्रयद्यपियस्यदीक्षास्तिवैष्णवीत्यादिलक्षणयुक्तावैष्णवास्तद्भिन्नाःस्मार्ताइतिमहानिबंधेषूक्तंतथापिस्वपारंपर्यप्रसिद्धमेववैष्णवत्वंस्मार्तत्वंचवृद्धामन्यंतइतिसिंधूक्तमेवसर्वदेशेसर्वशिष्टपरिगृहीतंप्रचरति वेधोपि द्विविधः अरुणोदयेदशमीवेधः सूर्योदयेतद्वेधश्च सूर्योदयात्प्राक्चतुर्घटिकात्मकोऽरुणोदयः सूर्योदयस्तुस्पष्टः तेनषट्पंचाशद्घटिकानंतरंपलादिमात्रदशमीप्रवेशेऽरुणोदयवेधोवैष्णवविषयः षष्टिघटिकात्मकसूर्योदयोत्तरंपलादिमात्रदशमीसत्त्वेसूर्योदयवेधःस्मार्तविषयः ज्योतिर्विदादिवादेनवेधादिसंदेहेतु बहुवाक्यविरोधेनब्राह्मणेषुविवादिषु एकादशींपरित्यज्यद्वादशींसमुपोषयेत् ॥

---

[1] यवमध्यचांद्रायण–शुक्ल पक्षकी प्रतिपदासें आरंभ करके अमावास्यातक एक मास करना. सो ऐसा–प्रतिपदाके दिन एक ग्रास, द्वितीयाके दिन दो, तृतीयाके दिन तीन, इस तरह पौर्णिमापर्यंत ग्रासकी वृद्धि करनी, और कृष्ण प्रतिपदाके दिन चौदह ग्रास, द्वितीयाके दिन तेरह ग्रास, इस प्रमाणसें एक एक ग्रास कम करते जाना और अमावास्याके दिन उपोषण करना, पीछे गोप्रदान करना, और प्रतिदिन त्रिकाल स्नान करना. इसकों यवमध्यचांद्रायण कहते हैं. इसमें ग्रास लेनेका सो मोरके अंडेके प्रमाणका लेना. [2] पिपीलिकामध्यचांद्रायण, यवमध्यचांद्रायणसरीखाही है; परंतु इसमें भेद इतना है की, कृष्णपक्षकी प्रतिपदाकों चौदह ग्रास, फिर तेरह, बारह इस प्रकारसें एक एक कम करते चतुर्दशीके दिन एक ग्रास भक्षण करना और अमावास्याके दिन उपोषण करके पीछे शुक्ल प्रतिपदामें एक एक ग्रासकी वृद्धि करनी.

अब व्रतके दिनका निर्णय कहताहुं.

तहां व्रतके अधिकारी दो प्रकारके हैं. एक वैष्णव और दूसरे स्मार्त. तहां जिसकी वैष्णवी आदि लक्षणोंसें युक्त दीक्षा है तिसकों वैष्णव कहते हैं, और वैष्णवसें भिन्न स्मार्त कहाते हैं ऐसा महान् ग्रंथोंमें कहा है, तथापि अपनी परंपरासें प्रसिद्ध ऐसे वैष्णवपना और स्मार्तपनाकों वृद्ध पंडित मानते हैं ऐसा निर्णयसिंधु ग्रंथमें कहा हुआ ही सब शिष्टजनोंसें गृहीत किया हुआ सब देशोंमें प्रचलित है. वेध दो प्रकारका है. एक अरुणोदयमें दशमीका वेध और दूसरा सूर्योदयमें दशमीका वेध. सूर्योदय पहले चार घडी अरुणोदय होता है, सूर्योदय तौ स्पष्टही है. तिसकरके छप्पन घडियोंके पीछे पल आदिमात्र दशमीका प्रवेश हुआ होवै तौ वह अरुणोदयवेध वैष्णवोंनें अपने निर्णयके विषे लेना. साठ घडीमात्र सूर्योदयके अनंतर पल आदिमात्र प्रमाणसें दशमी होवै तौ वह सूर्योदयवेध स्मार्तोंनें लेना. और ज्योतिषी आदियोंके वादकरके वेध आदिका संदेह होवै और बहुतसे वाक्यविरोधकरके पंडित विवाद करैंगे तौ "एकादशीकों त्यागके द्वादशीके दिन उपवास करना."

तथाचैकादशीद्विविधा विद्धाशुद्धाच अरुणोदयवेधवतीविद्धातांत्यक्त्वावैष्णवैर्द्वादश्येवोपोष्या अरुणोदयवेधरहिताशुद्धा साचचतुर्विधा एकादशीमात्राधिक्यवती द्वादशीमात्राधिक्यवती उभयाधिक्यवती अनुभयाधिक्यवतीचेति अत्राधिक्यंसूर्योदयोत्तरंसत्वं तत्रोदाहरणं दशमीनाड्यः ५५ एकादशी ६०।१ द्वादश्याःक्षयः ५८ इयमेकादशीमात्राधिक्यवती शुद्धावैष्णवैःपरोपोष्या स्मार्तगृहस्थैःपूर्वा अथदशमी ५५ एकादशी ५८ द्वादशी ६०।१ इयंशुद्धाद्वादशीमात्राधिक्यवती अत्रवैष्णवानांद्वादश्यामुपोषणं स्मार्तानांपूर्वा अथ दशमी ५५ एकादशी ६०।१ द्वादशी ५ इयंशुद्धाउभयाधिक्यवती अत्रसर्वैर्वैष्णवैःस्मार्तैश्च परैवोपोष्या अथ दशमी ५५ एकादशी ५७ द्वादशी ५८ इयमनुभयाधिक्यवतीशुद्धा वैष्णवैःस्मार्तैश्चपूर्वैवोपोष्या ॥ इति संक्षेपतोवैष्णवनिर्णयः ॥

अब एकादशीके भेद कहताहुं.

एकादशी दो प्रकारकी है. एक **विद्धा** और दूसरी **शुद्धा**. अरुणोदयवेधवाली एकादशी **विद्धा** कहाती है, तिसकों त्यागकर वैष्णवोंनें द्वादशीकोंही उपवास करना. अरुणोदयवेधसें जो रहित एकादशी सो **शुद्धा** कहाती है. वह (शुद्धा) चार प्रकारकी है. एक **एकादशीमात्राधिक्यवती**, दूसरी **द्वादशीमात्राधिक्यवती**, तीसरी **उभयाधिक्यवती**, चौथी **अनुभयाधिक्यवती**. यहां आधिक्य अर्थात् अधिकपना सूर्योदयके उपरंत होता है. उसका उदाहरण कहते हैं. दशमी ५५ घडी होवै, एकादशी ६० घडी १ पल होवै और द्वादशीका क्षय ५८ घडी होवै, तब **एकादशीमात्राधिक्यवती शुद्धा** जाननी. इस जगह वैष्णवोंनें परविद्धा सेवनी और स्मार्त गृहस्थियोंनें पूर्वा करनी. और दशमी ५५ घडी होवै, एकादशी ५८ घडी होवै और द्वादशी ६० घडी १ पल होवै, तब यह **शुद्धा द्वादशीमात्राधिक्यवती** होती है, यहां वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपवास करना और स्मार्तोंनें एकादशीमें उपवास करना. और दशमी ५५ घडी होवै, एकादशी ६०

घडी १ पल होवै और द्वादशी ९ घडी होवै तब वह शुद्धा उभयाधिक्यवती होती है, इस जगह सब वैष्णवोंनें और स्मार्तोंनें परा ही करनी चाहिये. दशमी ५९ घडी होवै, एकादशी ५७ घडी होवै और द्वादशी ५८ घडी होवै तब अनुभयाधिक्यवती शुद्धा होती है. इस जगह वैष्णवोंनें और स्मार्तोंनें पहली ही करनी चाहिये. यह संक्षेपसें वैष्णवोंका निर्णय कहा है.

अथ स्मार्तनिर्णयः तत्रसूर्योदयवेधवतीविद्धातद्रहिताशुद्धाचेतिद्विविधापिप्रत्येकंचतुर्धा एकादशीमात्राधिक्यवती उभयाधिक्यवती द्वादशीमात्राधिक्यवती अनुभयाधिक्यवतीत्येवं अष्टभेदाभवंति अत्रोदाहरणानि दशमी ५८ एकादशी ६०।१ द्वादश्याःक्षयः ५८ इयं शुद्धाएकादशीमात्राधिक्यवती दशमी ४ एकादशी २ द्वादश्याःक्षयः ५८ एवंविद्धाएकादशीमात्राधिक्यवती अत्रोभयत्रापिस्मार्तानांगृहिणांपूर्वोपोष्या यतिभिर्निष्कामगृहिभिर्वनस्थैर्विधवाभिर्वैष्णवैश्चपरैवोपोष्या विष्णुप्रीतिकामैः स्मार्तैरुपवासद्वयंकार्यमितिकेचित् उभयाधिक्यवतीशुद्धायथा दशमी ५८ एकादशी ६०।१ द्वादशी ४ उभयाधिक्यवतीविद्धायथा दशमी २ एकादशी ३ द्वादशी ४ अत्रोभयत्रापिसर्वैःस्मार्तैर्वैष्णवैश्चावशिष्टापरैवैकादशीउपोष्या द्वादशीमात्राधिक्यवतीशुद्धायथा दशमी ५८ एकादशी ५९ द्वादशी ६०।१ अत्रशुद्धत्वात्स्मार्तानामेकादश्यामेवोपवासोनद्वादश्यामितिमाधवमतं हेमाद्रिमतेतुसर्वैःपराद्वादश्येवोपोष्या केचित्तुमुमुक्षुभिःस्मार्तैःपरोपोष्येत्याहुः द्वादशीमात्राधिकाविद्धायथा दशमी १ एकादशीक्षयगामिनी ५८ द्वादश्यावृद्धिः ६०।१ अत्रैकादश्याविद्धत्वात्द्वादश्यामेवस्मार्तानामप्युपवासः एवंचोभयाधिक्येद्वादशीमात्राधिक्येचस्मार्तानांविद्धायास्त्यागोनान्यत्र वैष्णवानांतुषड्विधामप्याधिक्यवतींत्यक्त्वाद्वादश्युपोष्या अनुभयाधिक्यवतीशुद्धायथा दशमी ५७ एकादशी ५८ द्वादशी ५९ स्मार्तानामेकादश्यामेवोपवासोनद्वादश्यां वैष्णवानांतुविद्धत्वात्द्वादश्यामेवोपवासः अनुभयाधिक्यवतीविद्धायथादशमी २ एकादश्याःक्षयः ५६ द्वादशी ५५ अत्रापिस्मार्तानामेकादश्यामुपवासः वैष्णवानांद्वादश्यामुपवासः अस्मिन्नुभयाधिक्यवतीविद्धाचरमेभेदेप्रथमभेदद्वयेइवयतिभिर्मुमुक्षुभिर्विधवाभिःपरोपोष्या विष्णुप्रीतिकामैरुपवासद्वयंकार्यमितितुल्ययुक्त्याप्रतिभाति इदानींशिष्टास्तुहेमाद्रिमतंनिष्कामत्वादिकंचानादृत्यमाधवमतेनैवसर्वस्मार्तनिर्णयमविशेषेणवदंतिनतुक्वचिदुपवासद्वयं शुद्धाधिकद्वादशिकायांसर्वेषामेकंपरोपवासंवावदंति इतिसर्वत्रदेशेषुप्रायोमाधवोक्तानुसारएवप्रचारइतिबोध्यं एतेनवैष्णवाष्टादशभेदानांस्मार्ताष्टादशभेदानांचनिर्णयःसर्वोपिगतार्थो भवतीतिविभावनीयं विस्तरस्तुमहाग्रंथेष्वनुसंधेयः अत्राष्टादशभेदानांपृथक्पृथगुदाहरणकथनेतन्निर्णयकथनेचबालानांव्यामोहमात्रंस्यादितिसनिर्णयः पृथगेवपट्टेलिखित्वास्थापितोऽनुसंधेयः ॥

अब स्मार्तोंका निर्णय कहताहुं.

तहां सूर्योदयवेधवाली विद्धा एकादशी होती है और सूर्योदयवेधसें रहित एकादशी शुद्धा होती है. यह दो प्रकारकी होके दरएकके चार चार भेद होते हैं. एक एकादशी-

मात्राधिक्यवती, दूसरी **उभयाधिक्यवती**, तीसरी **द्वादशीमात्राधिक्यवती**, चौथी **अनुभयाधिक्यवती** ऐसे आठ भेद हैं. तिनके उदाहरण कहते हैं. दशमी ५८ घडी, एकादशी ६० घडी १ पल, द्वादशीका क्षय ५८ घडी होवै यह **शुद्धा एकादशीमात्राधिक्यवती** होती है. दशमी ४ घडी, एकादशी २ घडी, द्वादशीका क्षय ५८ घडी होवै यह **विद्धा एकादशीमात्राधिक्यवती** होती है. इन दोनोंमें स्मार्त गृहस्थियोंनें पहली ही करनी. और यति, कामनासें रहित गृहस्थी, वनवासी, विधवा और वैष्णव, इन्होंनें पिछली ही करनी. विष्णुकों प्रसन्न करनेवाले स्मार्तोंनें दोनों व्रत करने ऐसा कितनेक कहते हैं. अब **उभयाधिक्यवती शुद्धा**का उदाहरण कहते हैं–दशमी ५८ घडी, एकादशी ६० घडी १ पल, द्वादशी ४ घडी होवै तब वह **उभयाधिक्यवती शुद्धा** होती है. अब **उभयाधिक्यवती विद्धा**का उदाहरण कहते हैं–दशमी २ घडी, एकादशी ३ घडी, द्वादशी ४ घडी होवै वह **उभयाधिक्यवती विद्धा** होती है. इन दोनोंमें सब स्मार्त और वैष्णवोंनें अवशिष्ट रही पिछली ही एकादशी करनी. अब **द्वादशीमात्राधिक्यवती शुद्धा** कहते हैं–दशमी ५८ घडी, एकादशी ५९ घडी, द्वादशी ६० घडी १ पल होवै वह **द्वादशीमात्राधिक्यवती शुद्धा** होती है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमें व्रत करना और द्वादशीमें नहीं. यह माधवका मत है. **हेमाद्रिके** मतमें तौ सबोंनें पिछली द्वादशीमेंही उपोषण करना. कितनेक कहते हैं की मोक्षकी इच्छावाले स्मार्तोंनें पिछली ही ग्रहण करनी चाहिये. अब **द्वादशीमात्राधिक्यवती विद्धा** कहते हैं.–दशमी १ घडी, एकादशीका क्षय ५८ घडी, और द्वादशीकी वृद्धि ६० घडी १ पल होवै, वह **द्वादशीमात्राधिक्यवती विद्धा** होती है. यहां एकादशीसें विद्ध होनेसें द्वादशीमेंही स्मार्तोंनें उपवास करना. ऐसेही **उभयाधिक्यवतीमें** और **द्वादशीमात्राधिक्यवतीमें** स्मार्तोंनें विद्धाका त्याग करना, अन्य जगह विद्धाका त्याग नहीं करना. वैष्णवोंनें तौ छह प्रकारकी आधिक्यवतीका त्याग करके द्वादशीमेंही उपवास करना. अब **अनुभयाधिक्यवती शुद्धा** कहते हैं.–दशमी ५७ घडी, एकादशी ५८ घडी और द्वादशी ५९ घडी होवै वह **अनुभयाधिक्यवती शुद्धा** होती है. स्मार्तोंनें एकादशीमेंही उपवास करना, और द्वादशीमें नहीं करना. और वैष्णवोंनें तौ विद्धपनेसें द्वादशीमेंही उपवास करना. अब **अनुभयाधिक्यवती विद्धा** कहते हैं.–दशमी २ घडी, एकादशीका क्षय ५६ घडी और द्वादशी ५५ घडी होवै वह **अनुभयाधिक्यवती विद्धा** होती है. यहां भी स्मार्तोंनें एकादशीमें उपोषण करना, और वैष्णवोंनें तौ द्वादशीमें उपवास करना. **अनुभयाधिक्यवती विद्धाके** अंतके भेदमें पहले दोनों भेदोंकी तरह संन्यासी, मोक्षकी इच्छावाले और विधवा स्त्री इन्होंनें पिछली करनी. विष्णुकों प्रसन्न करनेकी कामनावालोंनें दोनों दिन उपवास करना. यह तुल्ययुक्तिकरके प्रतिभान होता है. सब शिष्ट मुनि तौ हेमाद्रिके मतकों और निष्कामपना आदिका अनादर करके माधवमतके अनुसारही स्मार्तोंका निर्णय कहते हैं. दो उपवास करना अथवा शुद्धाधिक द्वादशीमें सबोंनें पीछला एक उपवास करना ऐसा कहीं भी नहीं कहते. सब देशोंमें प्रायतासें माधवके मतके अनुसार ही प्रचार है ऐसा जानना. इसी तरह वैष्णवोंके अठारह भेदोंका और स्मार्तोंके अठारह भेदोंका निर्णय यह सब उदाहरणों-

सें गतार्थ हुआ है ऐसा जान लेना. इस्सें विशेष विस्तार बडे ग्रंथोंमेंसें जान लेना. इस ग्रंथमें अठारह भेदोंके पृथक् पृथक् उदाहरण कहनेसें और तिन्होंका निर्णय कहनेसें बालकोंकों भ्रांति उपजैगी इस लिये वह निर्णय पृथक् ही [1]पट्टपर लिखा है सो देख लेना.

अत्रार्धरात्रोत्तरंदशमीसत्त्वे कपालवेधोद्विपंचाशद्धटिकादशमीसत्त्वेछायावेधस्त्रिपंचाशद्धटीत्वेदशम्याग्रस्ताख्योवेधश्चतुःपंचाशत्त्वेसंपूर्णाख्यःपंचपंचाशत्त्वेऽतिवेधःषट्पंचाशत्त्वेमहावेधःसप्तपंचाशत्त्वेप्रलयाख्योष्टपंचाशत्त्वेमहाप्रलयएकोनषष्टित्वेघोराख्यःषष्टिघटीत्वेराक्षसाख्यइतिवेधभेदानारदेनोक्तामध्वादिमतानुसारिभिःकैश्चिदिवकेचिदेवानुसृताः माधवाचार्यादिसर्वसंमतस्तुषट्पंचाशद्धटीवेधएवेतिज्ञेयं दशमीपंचदशघटीभिरेकादशीदूषिकेतितूपवासातिरिक्तव्रते ॥ व्रतांगेसंकल्पार्चनादौतत्रापितद्दोषेणनसर्वथात्यागःकिंतुप्रातःकर्तव्यंसंकल्पार्चनादिमध्याह्नोत्तरंकार्यमितिध्येयं ॥

अब एकादशी व्रतका वेध कहताहुं.

यहां अर्धरात्रके उपरंत दशमी होवै तब **कपालवेध**, ५२ घडी दशमी होवै तब **छायावेध**, ५३ घडी दशमी होवै तब **ग्रस्ताख्यवेध**, ५४ घडी दशमी होवै तब **संपूर्णाख्यवेध**, ५५ घडी दशमी होवै तव **अतिवेध**, ५६ घडी दशमी होवै तब **महावेध** ५७ घडी दशमी होवै तब **प्रलयाख्यवेध**, ५८ घडी दशमी होवै तब **महाप्रलयवेध**, ५९ घडी दशमी होवै तब **घोराख्यवेध**, ६० घडी दशमी होवै तव **राक्षसाख्यवेध** होता है. ऐसे वेधके भेद नारदजीनें कहे हैं. इन्होंकों मध्वादि मतके अनुसारी कितनेकोंकी तरह कितनेक अनुसरते हैं. माधवाचार्य आदि सबोंका माना हुआ ५६ घडीवाला **महावेधही** है ऐसा जानना चाहिये. पंदरह घडियोंकरके दशमी एकादशीकों दूषित करै, यह उपवाससें अन्य व्रतमें लेनी. और व्रतके अंगमें तथा संकल्प और पूजन आदिमें दशमीसें दूषित हुई एकादशीकों नहीं त्यागना, किंतु प्रभातमें करनेके योग्य संकल्प और पूजन आदि मध्यान्हके उपरंत करना उचित है ऐसा चितवन करना.

अथ व्रतप्रयोगः उपवासात्पूर्वदिनेप्रातःकृतनित्यक्रियः दशमीदिनमारभ्यकरिष्येहंव्रतंतव त्रिदिनंदेवदेवेशनिर्विघ्नंकुरुकेशवेतिसंकल्प्यमध्याह्नेएकभक्तंकुर्यात् तत्रनियमाः कांस्यमांसमसूरदिवास्वापातिभोजनात्यंबुपानपुनर्भोजनमैथुनक्षौद्रानृतभाषणचणककोद्रवशाकपरान्नघृततैलातिलपिष्टतांबूलवर्जनादयःएकभक्तांतरेकाष्ठेनदंतधावनंकुर्यात् निशिभूतल्पेशयित्वा प्रातरेकादश्यांपर्णादिनादंतधावनंकार्यंनतुकाष्ठेन स्नानादिनित्यक्रियांतेपवित्रपाणिरुदङ्मुखः वारिपूर्णताम्रपात्रमादायसंकल्पंकुर्यात् एकादश्यांनिराहारोभूत्वाहमपरेहनि भोक्ष्यामिपुंडरीकाक्षशरणंमेभवाच्युतेति अनेनमंत्रेणपुष्पांजलिंवाहरौदद्यात् अशक्तस्यतुएकादश्यांजलाहारएकादश्यांक्षीरभक्षएकादश्यांफलाहारएकादश्यांनक्तभोजीत्याद्यूहेन शक्त्यनुसारेणसंकल्पः शैवानांरुद्रगायत्र्यासंकल्पः सौराणांनित्यगायत्र्यानाम्नावासंकल्पः अयंसंकल्पःसूर्योदयोत्तरंदशमीसत्त्वेस्मार्तैरेकादश्यांरात्रौकार्यः अर्धरात्रादुपरिदशम्यनुवृत्तौस

---

[1] यह पट्ट ग्रंथके अंतमें छपा है सो देख लेना.

वैरेवैकादश्यांमध्याह्नोत्तरंकार्यः संकल्पोत्तरमष्टाक्षरमंत्रेणात्रिरभिमंत्रितंतज्जलंपिबेत् ततः पुष्पमंडपंकृत्वा तत्रपुष्पैर्गंधैस्तथाधूपैर्दीपैर्नैवेद्यकैः परैः स्तोत्रैर्नानाविधैर्दिव्यैर्गीतवाद्यैर्मनोहरैः दंडवत्प्रणिपातैश्चजयशब्दैस्तथोत्तमैः हरिंसंपूज्याविधिवद्रात्रौकुर्यात्प्रजागरम् ॥

अब व्रतका प्रयोग कहताहुं.

व्रतके पहले दिन प्रभातमें नित्यकर्मोंकों करके मनुष्य कहै की "हे देव, दशमीके दिनसें आरंभ करके आपके व्रतकों करूंगा. हे देव, हे देवेश, हे केशव, तीन दिनोंतक विघ्न मत होने दो." ऐसा संकल्प करके मध्यान्हसमयमें एकवार भोजन करना. तहां नियम कहे जाते हैं—कांसीके पात्रमें भोजन, मांस, मसूर, दिनमें शयन, अतिभोजन, अतिजलपान, पुनर्भोजन, स्त्रीसंग, मद्य, झूठ बोलना, चना, कोदू, शाक, दूसरेका अन्न, जूवा खेलना, तेल, तिलोंकी पीठी, नागरपान इन पदार्थोंकों वर्ज देना. एकभक्तव्रतके दिन काष्ठकरके दंतधावन करना, और रात्रिमें पृथिवीरूपी शय्यापर शयन करना. एकादशीके प्रातःकालमें पत्ताआदिकरके दंतधावन करना. काष्ठसें नहीं करना. स्नानआदि नित्यक्रियाके अंतमें शुद्ध हाथोंवाले और उत्तरके तर्फ मुखवाले ऐसे मनुष्यनें पानीसें पूरित हुये तांबाके पात्रकों ग्रहण करके संकल्प करना. तहां मंत्र—**"एकादश्यां निराहारो भूत्वाहमपरेहनि ॥ भोक्ष्यामि पुंडरीकाक्ष शरणं मे भवाच्युत"** अर्थ—एकादशीके दिन निराहार होके मैं दूसरे दिन भोजन करूंगा. हे पुंडरीकाक्ष, हे अच्युत, आप मेरे शरणस्थान हो. इस मंत्रकरके पुष्पांजलि विष्णुकेलिये देनी. जिसकी सामर्थ्य निराहारव्रत करनेकी नहीं होवै तिसनें एकादशीमें जलका आहार करूंगा, और एकादशीमें दूध पिऊंगा, और एकादशीमें फल खाऊंगा, और एकादशीमें नक्तभोजन करूंगा इत्यादिक कल्पनासें शक्तिके अनुसार संकल्प करना. शैव मनुष्योंनें शिवगायत्रीसें संकल्प करना, और सूर्यके भक्तोंनें नित्यगायत्रीसें अथवा नाममंत्रसें संकल्प करना. वह संकल्प सूर्यके उदयके पीछे दशमी होवै तौ स्मार्त मनुष्योंनें एकादशीकी रात्रिमें करना, और अर्धरात्रिके उपरंत भी दशमी होवै तौ सब मनुष्योंनें एकादशीके मध्यान्हके उपरंत संकल्प करना. संकल्प करके पीछे **"ॐनमो नारायणाय"** इस मंत्रसें तीन वार पानी अभिमंत्रित करके पीना. पीछे पुष्पोंका मंडप बनाके तहां पुष्प, चंदन, धूप, दीप, सुंदर नैवेद्य, नानाप्रकारके दिव्य स्तोत्र, सुंदर गाना, और बजाना, और दंडकी तरह पडना, अर्थात् वारंवार दंडवत करना, और उत्तम जय जय शब्द इन्होंकरके विधिपूर्वक विष्णुकी पूजा करके रात्रिमें जागरण करना.

एकादश्यांनियमाः पाखंडिसंभाषणस्पर्शदर्शनवर्जनं ब्रह्मचर्यसत्यभाषणदिवास्वापवर्जनादयःपरिभाषोक्ताश्चज्ञेयाः पाखंडिदर्शनादौतुसूर्यंपश्येत्ततःशुचिः संस्पर्शेतुबुधःस्नायाच्छुचिरादित्यदर्शनात् संभाष्यतान्शुचिषदंचिंतयेदच्युतंबुध इत्यादिप्रायश्चित्तं उपवासदिने श्राद्धप्राप्तौ श्राद्धशेषसर्वान्नेनैकंपात्रंपरिविष्य तत्सर्वान्नावघ्राणंकृत्वा पात्रंगवादिभ्योदेयं कंदमूलफलाहाराद्यनुकल्पेनोपवासकर्त्रातु स्वभक्षस्यैवफलादेःपितृब्राह्मणपात्रेषुपरिवेषणपूर्वकतच्छेषभक्षणंकार्यं एकादश्यांयदाभूपमृताहःस्यात्कदाचन तद्दिनंतुपरित्यज्यद्वादश्यामेवकारयेदित्यादिवचनानियथाचारंवैष्णवपराणि वैष्णवैःषोडशमहालयकरणपक्षे ए

कादश्यधिकरणकंद्वादश्यधिकरणकंचमहालयंतंत्रेणकरिष्ये इतिसंकल्प्य महालयद्वयंद्वादश्यांकार्यं काम्योपवासेसूतकप्राप्तौशारीरनियमान्स्वयंकृत्वासूतकांतेपूजादानब्राह्मणभोजनादिकंकार्यं नित्योपवासेसूतकादिप्राप्तौस्नात्वाहरिंप्रणम्यनिराहारादिकंस्वयंकृत्वापूजादिकंब्राह्मणद्वाराकार्यं दानादेर्लोपोनसूतकांतेऽनुष्ठानावश्यकत्वं एवंरजस्वलादिदोषेपि द्वादश्यांप्रातर्नित्यपूजांविधायभगवतेव्रतमर्पयेत् अज्ञानतिमिरांधस्यव्रतेनानेनकेशव प्रसीदसुमुखोनाथज्ञानदृष्टिप्रदोभवेति तत्रमंत्रः दशम्यादिषूक्तानां नियमानांभंगेदिवास्वापेबहुशोजलपानेमिथ्याभाषणेवातत्तन्नियमभंगानुद्दिश्यनारायणाष्टाक्षरमंत्रजपमष्टोत्तरशतसंख्ययाकुर्यात् अल्पदोषेनामशतत्रयजपः रजस्वलाचंडालरजकसूतिकादिशब्दस्यव्रतमध्येश्रवणेष्टोत्तरसहस्रगायत्रीजपः ततोनैवेद्यतुलसीमिश्रितान्नेनपारणंकार्यं आमलकीफलस्य पारणायांभक्षणेऽसंभाष्यभाषणादिदोषनाशः पारणंचद्वादश्युल्लंघनेमहादोषात्द्वादशीमध्येएवकार्यं स्वल्पद्वादशीसत्वेरात्रिशेषेआमाध्याह्नांताःक्रियाःसर्वाअपकृष्यकार्याः अग्निहोत्रहोमस्यनापकर्षइतिकेचित् एवंश्राद्धस्यापिनापकर्षोरात्रौश्राद्धनिषेधात् अतिसंकटेश्राद्धेचप्रदोषादिव्रतेचतीर्थजलेनपारणंकार्यं द्वादशीभूयस्त्वेद्वादशीप्रथमपादंहरिवासरसंज्ञकमुल्लंघ्यपारणंकार्यं कलामात्रायाअपिद्वादश्याअभावेत्रयोदश्यांपारणं द्वादश्यामध्याह्नोर्ध्वसत्त्वेप्रातर्मुहूर्तत्रयमध्येएवपारणंनमध्याह्नादौइतिबहवः बहूनांकर्मकालानांबाधापत्तेरपराह्णएवेतिकेचित् द्वादश्यांसर्वमासेषुशुक्लायांकृष्णायांवाश्रवणयोगेशक्तेनैकादशीद्वादश्योर्द्वयोरप्युपवासःकार्यः अशक्तेनैकादश्यांफलाहाराद्यनुकल्पंकृत्वाश्रवणद्वादश्यामुपवासःकार्यः विष्णुशृंखलयोगसत्त्वेतुएकादश्यामेवश्रवणद्वादशीप्रयुक्तमप्युपवासंकृत्वाद्वादश्यांश्रवणयोगरहितायांपारणंकार्यं द्वादश्याःश्रवणतोन्यूनत्वेश्रवणयुक्तायामपिद्वादश्यामेवपारणं द्वादश्युल्लंघनेदोषात् विष्णुशृंखलयोगादिनिर्णयोभाद्रपदमासगतश्रवणद्वादशीप्रकरणेवक्ष्यते दिवानिद्रांपरान्नंचपुनर्भोजनमैथुने क्षौद्रंकांस्यामिषंतैलंद्वादश्यामष्टवर्जयेत् द्यूतक्रोधचणककोद्रवमाषातिलपिष्टमसूरनेत्रांजनमिथ्याभाषणलोभायासप्रवासभारवाहनाध्ययनतांबूलादीनिवर्जयेत् एतेचनियमाःकाम्यव्रतेआवश्यकाः नित्यव्रतेतु शक्तिमांस्तुपुमान्कुर्यान्नियमंसविशेषणं विशेषनियमाशक्तोऽहोरात्रंभुजिवर्जितः निगृहीतेंद्रियःश्रद्धासहायोविष्णुतत्परः उपोष्यैकादशींपापान्मुच्यतेनात्रसंशयः अन्यंभुंक्ष्वेतियोब्रूयाद्भुंक्तेवायःसनारकी एकादशीव्रताद्विष्णुसायुज्यंलभतेश्रियं इत्येकादशीव्रतनिर्णयः ॥ कार्यांतरेष्वेकादशीद्वादशीयुतैवग्राह्या इत्येकादशीनिर्णयउद्देशःसप्तदशः ॥

अब एकादशी व्रतसंबंधी नियम कहताहुं.

पाखंडियोंसें बोले नहीं और पाखंडियोंके शरीरकों छूहै और देखै नहीं और ब्रह्मचर्यकों धारै और सत्य बोलै और दिनमें सोवना आदि व्रतपरिभाषाविषयमें कहे हैं तिन सबोंकों वर्जै, पाखंडीके देखने आदिमें मनुष्य सूर्यका दर्शन करै और पाखंडीसें छुहा जावै तौ बुद्धिमान् स्नान करके पीछे सूर्यका दर्शन करै, और पाखंडीसें बोला जावै, तौ विष्णुका चितवन करै. इन आदि प्रायश्चित्त है. व्रतके दिन श्राद्ध प्राप्त होवै तौ श्राद्धसें बचे हुये संपूर्ण अन्न करके एक पात्र परोस पीछे तिस पात्रकों सूंघ वह पात्र गाय आदिकों देना

चाहिये. कंद, मूल, फल, इन्होंके आहार करनेवाले गौणव्रती मनुष्यनें तिसी कंदमूल आदिकों पितरोंके ब्राह्मणोंके पात्रोंपर परोस तिस्सें बचे हुयेकों भक्षण करना चाहिये. हे राजा, "जो एकादशीके दिन कदाचित् क्षयाहश्राद्ध आय पडै तौ एकादशीकों त्यागके द्वादशीके दिन श्राद्ध करना." यह जो वचन है सो अपने आचारके अनुसार वैष्णव लोगोंनें मानना. वैष्णव लोगोनें सोलह महालयपक्षमें **"एकादश्यधिकरणकं द्वादश्यधिकरणकं च महालयं तंत्रेण करिष्ये"** ऐसा संकल्प करके दोनों महालयश्राद्ध द्वादशीमें करने. काम्यव्रतमें जो सूतक आदि प्राप्त होवै तौ शरीरके नियमोंकों आप करके सूतकके अंतमें पूजा, दान, ब्राह्मणभोजन आदि करना. नित्यव्रतमें सूतक आदि प्राप्त होवै तौ स्नान करके विष्णुकों प्रणाम कर निराहार आदिकों आप करके पूजन आदि ब्राह्मणके द्वारा कराना. उस दान आदिकों सूतकमें नहीं करना. सूतकके अंतमें उसकी आवश्यकता नहीं है. ऐसा ही स्त्रीके रजस्वलाआदि दोषमें भी जानना. द्वादशीके दिन प्रभातं ही नित्यपूजा करके व्रत विष्णुके अर्थ इस मंत्रकरके अर्पण करना. मंत्र कहते हैं—**"अज्ञानतिमिरांधस्य व्रतेनानेन केशव ॥ प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव"** अर्थ—अज्ञानरूपी अंधेरासें अंधा हुआ जो मैं हूं सो मेरे इस व्रतकरके हे केशव, प्रसन्न हो. हे नाथ, सन्मुख हो और ज्ञानरूपी दृष्टिकों देनेवाले हो. दशमी आदिमें कहे हुये नियमोंका भंग होवै अथवा दिनका सोना, बहुतवार जलका पीना और झूठ बोलना इन्होंविषे अथवा अनेक प्रकारके नियमोंके भंगोंविषे प्रायश्चित्तके लिये **"ॐनमो नारायणाय"** इस मंत्रका १०८ जप करना और अल्प दोषमें नाममंत्रकरके ३०० जप करना. रजस्वला स्त्री, चांडाल, धोबी, सूतिका स्त्री आदि इन्होंका शब्द व्रतमें सुना जावै तौ १००८ गायत्रीका जप करना. पीछे नैवेद्य और तुलसी इन्होंसें मिले हुये अन्नकरके पारणा करनी. आंवलासें पारणा करनेमें नहीं कहनेके योग्य कहे हुये वचनोंका दोष दूर होता है. और द्वादशी उल्लंघन करके पारणा करनेसें महादोष लगता है, इसवास्ते द्वादशीमें ही पारणा करनी चाहिये. जो अल्प द्वादशी होवै तौ रात्रिके शेषमें मध्यान्हतककी सब क्रियाओंकों अपकर्षसें करना. और अग्निहोत्रहोमका अपकर्ष नहीं करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. ऐसा ही रात्रिमें श्राद्धका निषेध है, इसवास्ते श्राद्धका भी अपकर्ष नहीं करना. अतिसंकटमें और श्राद्धमें और प्रदोष आदि व्रतमें तीर्थके जलकरके पारणा करनी. जो द्वादशी बहुत होवै तौ द्वादशीके **हरिवासरसंज्ञक** प्रथम पादकों उल्लंघित करके पारणा करनी. जो द्वादशी कलामात्र भी नहीं होवै तौ त्रयोदशीमें पारणा करनी उचित है. जो मध्यान्हकालके उपरंत भी द्वादशी होवै तौ प्रभातकी छह घडीके मध्यमेंही पारणा करनी. मध्यान्ह आदिमें नहीं करनी ऐसा बहुतसे ग्रंथकार कहते हैं. बहुतसे कर्मकालोंकी बाधापत्तीसें अपराण्हकालमेंही पारणा करनी ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. सब महीनोंके शुक्लपक्षकी और कृष्णपक्षकी द्वादशीमें श्रवण नक्षत्रका योग होवै तौ सामर्थ्यवालेनें एकादशी और द्वादशीके दोनों उपवास करने और असमर्थ मनुष्यनें एकादशीमें फलाहार आदि गौणपक्ष स्वीकारके श्रवणयुक्त द्वादशीमें उपवास करना. और **विष्णुशृंखलयोग** होवै तौ एकादशीमेंही श्रवणद्वाशीका उपवास करके पीछे श्रवणके योगसें रहित हुई द्वादशीमें पारणा करनी. श्रवणकी

घडियोंसें द्वादशीकी घडी कम होवै तौ श्रवणसें युक्त हुई द्वादशीमें भी पारणा करनी, क्यौंकी द्वादशीके उल्लंघनसें महादोष लगता है. **विष्णुशृंखलयोग** आदिका निर्णय भाद्रपद महीनेकी श्रवणयुक्त द्वादशीके प्रकरणमें कहेंगे. "दिनमें शयन, पराया अन्न, पुनर्भोजन, स्त्रीसंग, शहद, कांसीके पात्रमें भोजन, मांस, तेल," इन आठोंकों द्वादशीके दिन वर्जै. "जूवा खेलना, क्रोध, चना, कोदूअन्न, उडद, तिलकी पीठी, मसूर, नेत्रोंमें अंजन घालना, झूठ बोलना, लोभ, परिश्रम, गमन, बोजा उठाना, पठन, नागरपान," इन आदिकों भी वर्जना. ये नियम काम्यव्रतमें अवश्यक करने. नित्यव्रतमें तौ शक्तिमान् मनुष्यनें विशेष करके नियम करने. और विशेष नियममें अशक्त हुए मनुष्यनें दिन और रात्रिमें भोजन नहीं करना. इंद्रियोंकों वश करनेवाला और श्रद्धावाला, और विष्णुमें तत्पर हुआ ऐसा मनुष्य एकादशीके व्रतकों करनेसें पापसें छूट जाता है इसमें संशय नहीं. जो मनुष्य एकादशीके दिन दूसरेकों भोजन करनेकों कहै और आप भी करै वह दोनों मनुष्य नरकमें जाते हैं और एकादशीके व्रतसें मनुष्य विष्णुके निकटस्थानकों और लक्ष्मीकों प्राप्त होता है. यहां एकादशीके व्रतका निर्णय समाप्त हुआ. अन्य कर्मोंमें द्वादशीसें युत हुई एकादशी लेनी चाहिये. **इति एकादशीनिर्णयो नाम सप्तदश उद्देशः ॥ १७ ॥**

द्वादशीत्वेकादशीविद्धाग्राह्या अथअष्टौमहाद्वादश्यः शुद्धाधिकैकादशीयुक्ताद्वादशीउन्मीलनीसंज्ञा द्वादश्येवशुद्धाधिकावर्धतेसावंजुली सूर्योदयेएकादशीतत.क्षयगामिनीद्वादशी द्वितीयसूर्योदयेत्रयोदशीएवमेकाहोरात्रेतिथित्रयस्पर्शात्रिस्पर्शसंज्ञाद्वादशी दर्शस्यपौर्णमास्यावायदादिनवृद्धिस्तदापक्षवर्धिनीसंज्ञा पुष्यर्क्षयुताजया श्रवणयुताविजया पुनर्वसुयुताजयंती रोहिणीयुतापापनाशिनी एताःपापक्षययुक्तिकामउपवसेत् श्रवणयुतातुएकादशीवन्नित्या एतास्वष्टसुएकादशीद्वादश्योरेकत्वेतंत्रेणोपवासः पार्थक्येशक्तस्योपवासद्वयं यस्त्वारब्धव्रतद्वयउपवासद्वयाशक्तश्चतस्यद्वादशीसमुपोषणात्व्रतद्वयपुण्यलाभः तत्रश्रवणर्क्षयोगोमुहूर्तमात्रोऽपिग्राह्यः पुष्यादियोगःसूर्योदयमारभ्यास्तमयपर्यंतश्चेदुपवासःपारणंतुतिथिनक्षत्रसंयोगोपोषणेउभयांतेन्यतरांतेवेतिसर्वसामान्यनिर्णयः ॥ इति द्वादशीनिर्णयउद्देशः अष्टादश ॥१८॥

अब द्वादशीका निर्णय कहताहुं.

द्वादशी तौ एकादशीसें विद्ध हुई लेनी चाहिये. अब आठ **महाद्वादशियोंकों** कहते हैं. १ शुद्धाधिक एकादशीसें युक्त हुई द्वादशी **उन्मीलनीसंज्ञक** होती है. २ द्वादशीही शुद्धा और अधिका होके बढै वह **वंजुलीसंज्ञक** होती है. ३ सूर्योदयमें एकादशी होके तिस्सें पीछे क्षयगामिनी द्वादशी होवै और दूसरे सूर्योदयमें त्रयोदशी होवै, ऐसे एक दिनरात्रिमें तीन तिथियोंके स्पर्शसें **त्रिस्पर्शसंज्ञक** द्वादशी होती है. ४ जब अमावसकी अथवा पौर्णमासीके दिनकी वृद्धि होती है तब **पक्षवर्धिनीसंज्ञक** होती है. ५ पुष्यनक्षत्रसें युक्त हुई **जया** नामवाली होती है. ६ श्रवणनक्षत्रसें युक्त हुई **विजया** नामवाली होती है. ७ पुनर्वसुनक्षत्रसें युक्त हुई **जयंती** नामवाली होती है. ८ रोहिणीनक्षत्रसें युक्त हुई **पापनाशिनी** नामवाली होती है. इन सबोंमें पापकों नाशनेकी कामवाला और मुक्तीकी कामनावाला व्रतकों करै. और श्रवणसें युक्त हुई द्वादशी नित्यएकादशीकी तरह होती है. और

इन आठ प्रकारकी महाद्वादशीयोंमें एकादशी और द्वादशीकी एकता होवै तौ एकतंत्र करके उपवास करना. एकादशी और द्वादशी अलग अलग होवै तौ समर्थ मनुष्यनें दोनों दिन उपोषण करना उचित है. पहले जो दो व्रतोंका आरंभ किया होवै और जिसकों दोनों दिन उपवास करनेका सामर्थ्य नहीं होवै उसनें द्वादशीके दिन उपवास करनेसें दोनों दिनके व्रतका पुण्य मिलता है. तहां श्रवणनक्षत्रका योग दो घडी भी होवै सो ग्रहण करना. और पुष्य आदि योग सूर्योदयसें आरंभ कर सूर्यके अस्ततक जो होवै तौ उपवास करना. और पारणा तौ तिथि और नक्षत्रके संयोगमें उपोषण होवै तौ तिथि और नक्षत्रके अंतमें अथवा दोनोंमेंसें एकके अंतमें करना, ऐसा सर्वसामान्य निर्णय है.—इति द्वादशीनिर्णयो नाम अष्टादश उद्देशः ॥ १८ ॥

त्रयोदशीशुक्लापूर्वाकृष्णोत्तरा शनिवारादियुक्तांकांचिच्छुक्लत्रयोदशीमारभ्यसंवत्सरपर्यंतं प्रतिपक्षंत्रयोदशीषुशनिवारयुक्तास्वेवचतुर्विंशतिशुक्लत्रयोदशीषुवाकर्तव्यंयत्प्रदोषसमयेशिवपूजानक्तभोजनात्मकंप्रदोषव्रतंतत्रसूर्यास्तमयोत्तरत्रिमुहूर्तात्मकप्रदोषव्यापिनीत्रयोदशीग्राह्या दिनद्वयेप्रदोषव्याप्तौसाम्येनतदेकदेशस्पर्शेवाउत्तरा वैषम्येणैकदेशस्पर्शेतदाधिक्यवतीपूर्वापि ग्राह्या यदिदेवपूजाभोजनपर्याप्तंतदाधिक्यंलभ्येत नोचेत्साम्यपक्षवदुत्तरैव उभयत्रसर्वथा व्याप्त्यभावेऽपिपरैव ॥ इति त्रयोदशीनिर्णयउद्देशएकोनविंशतितमः ॥ १९ ॥

अब त्रयोदशीका निर्णय कहताहुं.

शुक्लपक्षकी त्रयोदशी पूर्वदिनकी लेनी. कृष्णपक्षकी त्रयोदशी दुसरे दिनकी लेनी. शनिवार आदिसें संयुक्त शुक्लपक्षकी किसीक त्रयोदशीसें आरंभ कर एक वर्षपर्यंत पक्षपक्षके-प्रति शनिवारसें युक्त हुई त्रयोदशियोंमें अथवा २४ शुद्ध त्रयोदशियोंमें प्रदोषसमयविषे जो शिवका पूजन और नक्तभोजनरूपी प्रदोषव्रत है तहां सूर्यके अस्तके उपरंत छह घडी प्रदोषकालव्यापिनी त्रयोदशी ग्रहण करनी, और दोनों दिनोंमें प्रदोषव्याप्ति होवै तौ समानपनेसें अथवा तिसके एकदेशके स्पर्शसें पिछली त्रयोदशी लेनी. विषमपनेसें एकदेशके स्पर्शसें तिसके अधिकतावाली पहली त्रयोदशी लेनी. जो देवपूजा और भोजन करना होवै तौ अधिकता लब्ध होती है. और समान पक्षकी तरह पिछली त्रयोदशी नहीं लेनी. जब दोनोंमें सब प्रकारसें प्रदोषव्याप्ति नहीं होवै तौ भी पिछली अर्थात् परविद्धा त्रयोदशी लेनी.—इति त्रयोदशीनिर्णयो नामैकोनविंशतितम उद्देशः ॥ १९ ॥

चतुर्दशीतुशुक्लापराकृष्णापूर्वा यत्तुप्रतिमासंकृष्णचतुर्दश्यांशिवरात्रिव्रतंकाम्यमनुष्ठीयते तत्रमहाशिवरात्रिवन्निशीथव्यापिन्येवग्राह्या उभयत्रनिशीथव्याप्तौपरा प्रदोषव्याप्तेराधिक्यात्कैश्चित्प्रदोषमात्रव्यापिनीगृह्यते तत्रमूलंचिंत्यं यत्तुचतुर्दश्यांदिवाभोजननिषेधएवनित्यत्वात्पाल्यतेतत्रभोजनकालव्यापिनींचतुर्दशींत्यक्त्वात्रयोदश्यांपंचदश्यांवाभोक्तव्यं । शिवरात्रिव्रतिभिस्तुचतुर्दश्यामेवपारणाकर्तव्या नतत्रचतुर्दश्यष्टमीदिवेतिभोजननिषेधप्राप्तिः विधिप्राप्तेनिषेधाप्रवेशात् ॥ इति चतुर्दशीनिर्णयउद्देशोविंशतितमः ॥ २० ॥

अब चतुर्दशीका निर्णय कहताहुं.

शुक्लपक्षकी चतुर्दशी परविद्धा लेनी. कृष्णपक्षकी चतुर्दशी पूर्वविद्धा लेनी. प्रतिमासकों कृष्णपक्षकी चतुर्दशीमें काम्यसंज्ञक शिवरात्रिव्रत किया जाता है, तहां महाशिवरात्रिकी तरह अर्धरात्रव्यापिनीही चतुर्दशी लेनी. जो दोनों दिन अर्धरात्रव्यापिनी चतुर्दशी होवै तौ पिछली चतुर्दशीमें व्रत करना. कितनेक (कौस्तुभादिक) प्रदोषकी व्याप्तिके अधिकपनेसें प्रदोषमात्रव्यापिनी चतुर्दशी ग्रहण करते हैं. तहां मूल चितवन करना चाहिये. जो चतुर्दशीमें दिनके भोजनका निषेधही है और नित्यपनेसें पालन किया जाता है, तहां भोजनकालव्यापिनी चतुर्दशीकों त्यागके त्रयोदशीमें अथवा पूर्णमासीमें भोजन करना चाहिये. शिवरात्रिके व्रतियोंनें तौ चतुर्दशीमेंही पारणा करनी चाहिये. तहां चतुर्दशी और अष्टमीमें दिनके भोजनके निषेधकी प्राप्ति नहीं है. विधानकी प्राप्तिमें निषेधका अप्रवेश होनेसें—

इति चतुर्दशीनिर्णयो नाम विंशतितम उद्देशः ॥ २० ॥

पूर्णमास्यमावास्येतुसावित्रीव्रतंविनापरेग्राह्ये यत्तुकैश्चिच्छ्रावणीहुताशनीपूर्णिमास्योः कुलधर्मादौपूर्वविद्धयोर्ग्राह्यत्वोक्तेःसर्वापौर्णमासीकुलधर्मादौपूर्वागृह्यतेतत्रमूलंमृग्यं अष्टादशनाडिकातोन्यूनचतुर्दशीसत्त्वेतादृशचतुर्दशीवेधस्य भूतोष्टादशनाडीभिरितिवचनात्अदूषकत्व प्रतीतेरस्तुवातादृशस्थलेकुलधर्मेपूर्वत्रग्राह्यत्वं अष्टादशनाडिकाधिकचतुर्दशीवेधेतुपूर्वविद्धा पौर्णमासीनग्राह्येतिमेप्रतिभाति अमावास्याभौमसोमवारयुतास्नानदानादौमहापुण्या एवंभानुयुतासप्तमी भौमयुताचतुर्थी यत्तुसोमयुतामावास्यायामश्वत्थपूजाद्यात्मकंसोमवतीव्रतमनुष्ठीयतेतत्र अपराह्णपर्यंतंमुहूर्तमात्रयोगेऽपिव्रतंकार्यं दिनांतेषट्घटिकात्मकसायाह्नयोगेरात्रियोगेचनकार्यमितिशिष्टाचारः यतीनांक्षौरादौउदयेत्रिमुहूर्तव्यापिनीपौर्णमासीग्राह्या तृतीयमुहूर्तस्पर्शाभावेचतुर्दशीयुता ॥ इति पंचदशीनिर्णयउद्देशएकविंशः ॥ २१ ॥

अब पूर्णमासी और अमावसका निर्णय कहताहुं.

पूर्णमासी और अमावस सावित्रीके व्रतकेविना पिछली ग्रहण करनी. जो कितनेक पंडित श्रावणकी और फागनकी पूर्णमासी कुलधर्म आदिमें पूर्वविद्धा लेते हैं और कितनेक पंडित कुलधर्म आदिमें सब पूर्णमासी पूर्वविद्धा लेते हैं, तहां मूल चितवन करना चाहिये. अठारह घडियोंसें कम चतुर्दशी होवै तौ तिस चतुर्दशीके वेधकों "अठारह घडीकरके चतुर्दशी पूर्णमासीकों दूषित करती है" इस वचनसें चतुर्दशीके वेधका दोष नहीं है, वास्ते कुलधर्मसरखे तादृश प्रकरणमें पूर्वविद्धा ग्रहण करनी हो, परंतु अठारह घडीसें अधिक चतुर्दशीके वेधमें पूर्वविद्धा पूर्णमासी नहीं लेनी ऐसा मेरा मत है. मंगलवार और सोमवारसें युक्त हुई अमावस स्नान और दान आदिमें बहुत पुण्यकों देती है. ऐसे रविवारसें युत हुई सप्तमी और मंगलवारसें युत हुई चतुर्थी भी स्नानदानमें बहुत पुण्यकों देती है. और जो सोमवारसें युत हुई अमावसमें पिप्पल वृक्षकी पूजा आदिसें युक्त सोमवतीके व्रतकों करते हैं तहां अपराण्हकालपर्यंत दो घडी मात्र योग होनेमें भी व्रत करना. और दिनके अंतमें छह घडी सायान्हकालके योगमें और रात्रिके योगमें व्रत

नहीं करना ऐसा शिष्टोंका आचार है. संन्यासियोंके क्षौर आदि कर्ममें उदयकालविषे छह घडीतक व्याप्त होनेवाली पौर्णमासी लेनी चाहिये. छह घडीके स्पर्शके अभावमें चतुर्दशीसें युत हुई पौर्णमासी लेनी. इति पौर्णिमानिर्णयो नाम एकविंशतितमउद्देश: ॥ २१ ॥

अथेष्टिकाल: पक्षांताउपवस्तव्या: पक्षाद्यायष्टव्या: उपवासोऽन्वाधानाख्यंकर्म पर्वणो यश्चतुर्थांशआद्या:प्रतिपदस्त्रय: ॥ यागकाल:सविज्ञेय:प्रातरुक्तोमनीषिभि: ॥ प्रतिपत्तुर्यचरणेनयष्टव्यमितिस्थिति: ॥ तत्रपर्वप्रतिपदो:पूर्णत्वेसंदेहाभाव: पर्वण्यन्वाधानस्योत्तरदिने यागस्ययथोक्तकाललाभात् पर्वण:खंडत्वेतुपर्वापेक्षायाप्रतिपदोह्रासवृद्धिघटिकागणयित्वातदर्धंह्रासेपर्वणिवियोज्यवृद्धौसंयोज्यसंधिकालंज्ञात्वान्वाधानादिकालोनिर्णेतव्य: यत्रह्रासवृद्धीनस्तस्तत्रयथास्थित:स्पष्टएवसंधि:तत्रसंधिश्चतुर्विध: पूर्वाह्णसंधिर्मध्याह्नसंधिरपराह्णसंधीरात्रिसंधिश्चेति द्वेधाविभक्तदिनस्यपूर्वार्धंपूर्वाह्ण:अपरार्धंअपराह्ण: पूर्वाह्णापराह्णसंधिभूतोघटिकाद्वयात्मकोमुहूर्तोमध्याह्नआवर्तनापरपर्यायइतिकौस्तुभे उभयसंधिरेकपलात्मकएवमध्याह्नोनतुघटिकाद्वयात्मक इतिप्रायेणेदानींशिष्टाचार: तत्रोक्तरीत्याह्रासवृद्ध्यर्धवियोजनसंयोजनेन निर्णीत: पर्वप्रतिपदो:संधिर्यदिपूर्वाह्णेमध्याह्नेवाभवति तदासंधिदिनात्पूर्वदिनेन्वाधानंसंधिदिनेयाग: यद्यपराह्णेरात्रौवासंधिस्तदासंधिदिनेन्वाधानंतत्परदिनेयाग: अथोदाहरणं पर्वसप्तदशघटीमितंप्रतिपदेकादशघटीमितातत्रषद्घटीमित:प्रतिपत्क्षयस्तदर्धंघटीत्रयंपर्वणिवियोजितंजात:संधिश्चतुर्दशघटीमित: अयंत्रिंशद्घटीमितेदिनमानेपूर्वाह्णसंधि: अष्टाविंशतिघटीमितेतुदिनमानेऽयमेवमध्याह्नसंधि:अत्रसंधिदिनेयाग: पूर्वदिनेऽन्वाधानं पर्व १४ प्रतिपत् १९ अत्रपंचघटिकावृद्धि: तदर्धंसार्धघटीद्वयंपर्वणिसंयोजितंजात:संधि:सार्धषोडशघटीमित: अयं अपराह्णसंधि: अत्रसंधिदिनेऽन्वाधानंपरेद्युर्याग: ॥

अब इष्टिकालका निर्णय कहताहुं.

पक्षके अंतके दिन उपवासके योग्य हैं और पक्षके आदिके दिन पूजनके योग्य हैं. **अन्वाधान**नामक कर्मकों उपवास कहते हैं. "पर्वका चतुर्थांश और प्रतिपदाके पहले तीन अंशोंकों मिलाके जो काल है वह यज्ञकाल जानना. और वही पंडितोंनें प्रात:काल कहा है. प्रतिपदाके चतुर्थ चरणमें यज्ञ नहीं करना ऐसा नियम है." तहां पर्व और प्रतिपदा पूर्ण होवै तौ संदेहका अभाव है. और पर्वके दिन उपवासका और प्रतिपदाके दिन यज्ञके यथोक्त कालके लाभसें और पर्वके खंडितपनेमें पर्वकी अपेक्षा करके प्रतिपदाके क्षय और वृद्धिकी घटिकाओंकों गिनके तिन्होंमांहसें आधी घटिका पर्वका क्षय होवै तौ घटाके और पर्वकी वृद्धि होवै तौ बढाके संधिके कालकों जानके अन्वाधान आदि कालका निर्णय करना. जहां घटना और बढना नहीं है तहां यथायोग्य स्थित हुई संधि स्पष्टही है. संधि चार प्रकारके हैं. १ पूर्वाण्हसंधि, २ मध्यान्हसंधि, ३ अपराण्हसंधि, ४ रात्रिसंधि ऐसे हैं. दो प्रकारसें भाग किये दिनके पूर्वार्धकों पूर्वाण्ह कहते हैं और दिनके अपरार्धकों अपराण्ह कहते हैं. पूर्वाण्हके अंतकी १ घडी और अपराण्हके आदिकी १ घडी ऐसी ये दो घडी मिलके जो दो घडी (१ मुहूर्त) उसकों मध्यान्हसंधि कहते हैं, और इसी मध्यान्हसं-

धिका **आवर्तन** ऐसा दूसरा भी नाम कौस्तुभग्रंथमें है. और दोनों संधियोंका जो एक पलमात्र काल सोही मध्यान्हसंधि कहता है. दो घटिकाओंवाला मध्यान्हसंधि नहीं. यह प्रायताकरके अब सब शिष्टोंका आचार है. तहां उक्तरीतिकरके क्षय होवै तौ घटाके और वृद्धि होवै तौ मिलाके संधिका निर्णय करना. पर्व और प्रतिपदाका संधि जो पूर्वाण्हमें अथवा मध्यान्हमें होवै तौ संधिदिनके पहले दिनमें उपवास और संधिके दिन यज्ञ करना. और जो अपराण्हकालमें अथवा रात्रिमें संधि होवै तौ संधिदिनमें उपवास और परदिनमें यज्ञ करना. **अब उदाहरण कहते हैं.** पर्व १७ घडी परिमित होवै और प्रतिपदा ११ घडी प्रमाणसें होवै तहां ६ घडी प्रमाणसें प्रतिपदाका क्षय होवै, तिस्सें आधी तीन घडी हुई, तिन ३ घटिकाओंकों पर्वमें कम करावै, तब १४ घडी प्रमाणसें संधि हुआ. ऐसे ३० घडीके दिनमानमें यह पूर्वाण्हसंधि होता है. और २८ घडीके दिनमानमें यही मध्यान्हसंधि होता है. इस संधिदिनमें यज्ञ करना और इस्सें पहले दिनमें उपवास करना. पर्व १४ घडी होवै और प्रतिपदा १९ घडी होवै तब यहां पांच घडियोंकी वृद्धि हुई. तिन पांच घडियोंसें आधी, अढाई घडी हुई; इन्होंकों पर्वकी १४ घडियोंमें मिलावै तब १६॥ घडी होती हैं. यह ३० घडियोंके दिनमानसें अपराण्हसंधि है. यहां संधिदिनमें उपवास करना और संधिके परदिनमें यज्ञ करना.

अथात्रबालबोधार्थप्रकारांतरं सूर्योदयोत्तरंविद्यमानाः पर्वनाडिकाःप्रतिपन्नाडिकाश्चैकीकृताःसत्योयदिदिनमानतोन्यूनास्तदापूर्वाह्णसंधिः यदिदिनमानसमानास्तदामध्याह्नसंधिः यदिदिनमानादधिकास्तदापराह्णसंधिरिति इत्थंसूर्योदयोत्तरमनुवर्तमानपर्वप्रतिपदोःक्षयवृद्धिभ्यामेवसंध्यवलोकनमिदानींसर्वत्रशिष्टाचारेषुप्रसिद्धं कौस्तुभादौतुचर्दशीदिनस्थाउदयात्पूर्वपर्वणोगतघटिकाउदयादेष्यघटिकाश्चैकीकृत्यैवंप्रतिपदः पूर्वदिनस्थाउत्तरदिनस्थाश्चघटिकाएकीकृत्यपर्वापेक्षयाप्रतिपदोवृद्धिक्षयौज्ञेयौ तद्यथा चतुर्दशी २२ पर्व १७ चतुर्दशीदिनस्थाःपर्वनाडिकाः ३८ उत्तरदिनस्थाः १७ एकीकृत्यजाताः ५५ पर्वदिनस्थाःप्रतिपन्नाड्यः ४३ उत्तरदिनस्थाः ११ एकीकृत्यजाताः ५४ अत्रैकाघटीप्रतिपत्क्षयस्तदर्धमर्धघटीपर्वणिवियोजिताजातःसंधिःसार्धषोडशनाड्यः अयमपराह्णसंधिः प्रथममतेत्वत्रपूर्वाह्णसंधिःस्थितः तथाचतुर्दशी २४ पर्व १७ पूर्वगतनाड्यः ३६ एष्ययोगेजाताः ५३ प्रतिपत् ११ गतैष्ययोगेजाताः ५४ अत्रपूर्वोक्तरीत्याक्षयोदाहरणेएवैकाघटीवृद्धिस्तदर्धसंयोजनेसार्धसप्तदशनाडीमितोऽपराह्णसंधिः एवंचपूर्वमतैतन्मतयोरत्यंतविरोधः वृद्धिक्षयादिसर्ववैपरीत्यात् अत्रमतेघटीद्वयाधिकावृद्धिःक्षयोवानसंभवतीतिपरेऽह्निघटिकान्यूनास्तथैवाभ्यधिकाश्चयाइतिबहुवचनमसंगतमितिदूषणंपुरुषार्थचिंतामणौद्रष्टव्यं ॥

अब बालकोंकों बोधकेलिये दूसरा प्रकार कहताहुं.

सूर्योदयके अनंतर विद्यमान हुई पर्वकी घडियोंकों और प्रतिपदाकी घडियोंकों मिलाके गिनै, जो दिनमानसें कम होवै तब पूर्वाण्हसंधि और जो दिनमानके समान होवै तब मध्यान्हसंधि. जो दिनमानसें अधिक होवै तब अपराण्हसंधि है ऐसा जानना. ऐसेही सूर्यके उदयके अनंतर वर्तमान पर्व और प्रतिपदाकी क्षय और वृद्धि करके भी संधि देखते हैं. यही

आचार सब शिष्टोंमें प्रसिद्ध है. और कौस्तुभ आदि ग्रंथोंमें तो चतुर्दशीके दिनमें स्थित हुई और उदयके पहले पर्वकी गत हुई घटिकाओंकों और उदयसें प्राप्त होनेवाली घटिकाओंकों मिलावै, ऐसे प्रतिपदासें पूर्वदिनमें स्थित हुई और परदिनसें स्थित हुई घटिकाओंकों मिलाके पर्वकी अपेक्षाकरके प्रतिपदाकी वृद्धि अथवा क्षय जान लेना. **उदाहरण दिखाते हैं;**–चतुर्दशी २२ घडी होवै और पर्व १७ घडी होवै, चतुर्दशीके दिनमें स्थित हुई पर्वकी घडी ३८ और उत्तरदिनमें स्थित हुई पर्वघडी १७ इन सबोंकों मिलानेसें ९९ घडी होती हैं. पर्वके दिनमें स्थित हुई प्रतिपदाकी घडी ४३ और परदिनमें स्थित हुई प्रतिपदाकी घडी ११ ऐसे मिलाकर ९४ घडी हुई. यहां प्रतिपदाका क्षय १ घडी, तिसकी आधी हुई आधी घडी, पर्वमें कम करनी तब १६॥ घडी प्रमाण संधि हुआ; वास्ते यह अपराण्हसंधि है. पहले मतसें यहां तो पूर्वाण्हसंधि होता है. दुसरा उदाहरण–चतुर्दशी २४ घडी, और पर्व १७ घडी होवै और पूर्व गतघडी ३६ होवै तिसमें एष्य घडी मिलानेसें ९३ घडी हुई और प्रतिपदा ११ घडी होवै और गतएष्य योगमें हुई ९४ यहां पूर्वोक्त रीतिकरके क्षयके उदाहरणमें एक घडीकी वृद्धि हुई, तिसमें आधी घडीकों मिलानेसें १७॥ घडी परिमित अपराण्हसंधि हुआ. ऐसे पहले मतकेसाथ इन मतोंका अत्यंत विरोध है. वृद्धि क्षय आदिके सब विपरीतपनेसें. इस मतमें २ घडी अधिक वृद्धि है अथवा क्षयका संभव नहीं होता, और पर दिनमें घटिका कम है या अधिक है यह बहुवचन असंगत है. यह दूषण **पुरुषार्थचिंतामणिमें** देखना.

अथपौर्णमास्यांविशेषः संगवकालादूर्ध्वंत्रयोदशादिघटीमारभ्यार्धाह्नात्पूर्वंसंधौसद्यस्कालापौर्णमासीतस्यांसंधिदिनेएवान्वाधानं यागश्चसद्योऽनुष्ठेयः इदंपौर्णमास्यांसद्यस्कालत्वंवैकल्पिकमितिकेचित् अमावास्यायांसर्वत्रद्व्यहकालतैवनकदाचिदपिसद्यस्कालतापूर्णमास्याममायांचापराह्णसंधौप्रतिपच्चतुर्थपादेयागोनदोषाय अमावास्यायामपराह्णसंधावपिप्रतिपदि त्रिमुहूर्ताधिकद्वितीयाप्रवेशेचंद्रदर्शनसंभवेनचंद्रदर्शनेयागनिषेधादमावास्यायामेवेष्टिश्चतुर्दश्यामन्वाधानंबौधायनादीनां अमावास्यायांसप्तघटीमितप्रतिपदभावेचंद्रदर्शनेऽपिप्रतिपद्येवबौधायनैरिष्टिःकार्या आश्वलायनापस्तंबादीनांतुचंद्रदर्शनानिषेधोनास्तीतिप्रतिपद्येवेष्टिः यत्रसंधिदिनेइष्टिस्तत्रसाप्रतिपद्येवसमापनीयानतुपर्वणि पर्वणियागसमाप्तौपुनर्यागःकर्तव्यः एवमेवस्मार्तेपार्वणस्थालीपाकनिर्णयः केचित्तुस्मार्तेस्थालीपाकःप्रतिपद्येवसमापनीयइतिनियमोनास्ति पूर्वाह्णएवस्थालीपाकंसमाप्यसंधेरूर्ध्वंप्रतिपदिब्राह्मणभोजनमात्रंकार्यं जयंतोपिसंधिसन्निकृष्टे प्रातःकालेएवस्थालीपाकमाहेतिविशेषमाहुः श्रौतेपिब्राह्मणभोजनमात्रंप्रतिपदि कार्यं अन्यत्तंत्रंपूर्वाह्णएवसमापनीयंनप्रतिपदपेक्षेतिपुरुषार्थचिंतामणावुक्तं कात्यायनानांपौर्णमासेष्टिनिर्णयः पूर्वोक्तःसर्वसाधारणएवनतत्रकश्चिद्विशेषः इति सिंध्वादिबहुग्रंथसंमतंमतं अन्येतुपूर्वाह्णसंधौसंधिदिनेऽन्वाधानंपरेह्नियागइतिपूर्णमासीविषयेकातीयानांविशेषमाहुः ॥

अब पौर्णमासीका विशेष निर्णय कहताहुं.

संगवकालके उपरंत तेरह आदि घडीकों आरंभ कर आधे दिनकी पूर्वसंधिमें तत्कालकी

जो पौर्णमासी है तिसमें संधिके दिनविषेही उपवास करना. और यज्ञ तत्कालही करना चाहिये. कितनेकके मतमें पौर्णमासीविषे यह तत्काल वैकल्पिक है. और अमावसमें सब जगहही दो दिन निराले काल होते हैं और कभी भी तत्कालपना नहीं है. पौर्णमासीमें और अमावसमें अपराण्हसंधिविषे प्रतिपदाके चौथे पादमें यज्ञका करना दूषित नहीं है. और अमावसमें अपराण्हसंधिविषे भी प्रतिपदाके दिन छह घडीसें अधिक द्वितीयाके प्रवेशमें चंद्रमाके दर्शनका संभव है और चंद्रदर्शनके दिन यज्ञका निषेध है, वास्ते बौधायन आदिकोंनें अमावसमेंही यज्ञ करना और चतुर्दशीमें उपवास करना. अमावसके दिन सात घडीपरिमित प्रतिपदाके अभावमें चंद्रदर्शनमें भी प्रतिपदामेंही बौधायनोंनें यज्ञ करना. और आश्वलायन तथा आपस्तंब आदियोंकों चंद्रमाके दर्शनका निषेध नहीं है, इस कारणतें प्रतिपदामेंही यज्ञ करना. और जो संधिदिनमें यज्ञ करना होवै तहां प्रतिपदामेंही यज्ञकी समाप्ति करनी, पर्वमें नहीं. पर्वमें यज्ञकी समाप्ति हो जावै तौ फिर यज्ञ करना उचित है. ऐसेही स्मार्ताग्निसंबंधी पार्वणस्थालीपाकका भी निर्णय जानना. कितनेक ग्रंथकार स्मार्ताग्निसंबंधी स्थालीपाक प्रतिपदामेंही समाप्त करना ऐसा नियम नहीं है ऐसा कहते हैं. पूर्वाण्हमेंही स्थालीपाककों समाप्त कर संधिके उपरांत प्रतिपदामें ब्राह्मणभोजन मात्र करना. जयंतपंडित भी संधिके समीपमें प्रातःकालविषेही स्थालीपाककों कहता है, यह विशेष है. श्रौतकर्ममें भी ब्राह्मणभोजन मात्र प्रतिपदामें ही करना. और अन्य तंत्र पूर्वाण्हमेंही समाप्त करना. प्रतिपदाकी अपेक्षा नहीं करनी ऐसा **पुरुषार्थचिंतामणि**में कहा है. कात्यायनोंका पौर्णमासीयज्ञका निर्णय पहले कहाही है, और सब प्रकारसें साधारणही है, तहां कछु भी विशेष नहीं है. यह **निर्णयसिंधु** आदि बहुतसे ग्रंथोंकरके माना हुआ मत है. अन्य ग्रंथकार तौ पूर्वाण्हसंधिमें संधिके दिन उपवास करना और परदिनमें यज्ञ करना ऐसा पौर्णमासीके विषयमें कात्यायनोंविषे विशेष निर्णय कहते हैं.

अथामावास्यायांकातीयानांविशेषः अमाविषयेत्रेधाविभक्तदिनस्यप्रथमोभागःपूर्वाह्णः द्वितीयोभागोमध्याह्नः तृतीयोभागोपराह्णः तत्ररात्रिसंधौप्रतिपद्दिनेचंद्रदर्शनेसत्यपिपरेषामिव कातीयानामपिसंधिदिनेपिंडपितृयज्ञोऽन्वाधानंचपरदिनेचेष्टिरितिनिर्विवादं पूर्वाह्णेदिनद्वितीयभागाख्यमध्याह्नेचसंधौसंधिपूर्वदिनेऽन्वाधानपिंडपितृयज्ञौसंधिदिनेचेष्टिः तदाचतुर्दशीदिनेऽमावास्यायादिनतृतीयभागाख्यापराह्णेयदिपूर्णव्याप्तिस्तर्हिअमायुक्तेपराह्णेपिंडपितृयज्ञइतिनसंदेहः इतितृतीयभागाख्यापराह्णांत्यभागेऽपराह्णैकदेशेमावास्याव्याप्तिस्तर्ह्यमावास्यायांप्राप्तायां पिंडपितृयज्ञोनचतुर्दश्यामित्येकःपक्षः चतुर्दश्यंतेभागेपिंडपितृयज्ञश्चंद्रस्यपरमक्षीणत्वादित्यपरःपक्षः अथापराह्णसंधौचत्वारःपक्षाः संधिदिनेएवदिनतृतीयभागाख्यापराह्णेमायाःपूर्णव्याप्तिरितिप्रथमःपक्षः यथा चतुर्दशी २९ अमा ३० प्रतिपत् २ दिनमानंचत्रिंशत् ३० अत्रसंधिदिनेऽन्वाधानपिंडपितृयज्ञौपरदिनेयागःसंधिपूर्वदिनेएवोक्तापराह्णेमायाःपूर्णव्याप्तिरितिद्वितीयःपक्षः यथाचतुर्दशी २० अमा २२ प्रतिपत् २४ दिनमानं ३० अत्रसंधिदिनात्परदिनेमुहूर्तत्रयात्मकप्रातःकालेप्रतिपत्पादत्रयावच्छिन्नयागकाललाभात्संधिदिनेऽन्वाधानपित्र्यागौप्रतिपदिचेष्टिरितिकौस्तुभमतंत्रिमुहूर्ताद्वितीयाचेत्प्रतिपद्यापराह्णिकीत्र

न्वाधानंचतुर्दश्यांपरतः सोमदर्शनादितिवचनाच्चतुर्दश्यांपिंडपितृयज्ञोपवासौसंधिदिनेचेष्टिरितिपरमतं अथापरंद्वितीयपक्षोदाहरणं चतुर्दशी १८ अमा १८ प्रतिपत् १९ दिनमानं २७ अत्रप्रतिपद्दिनेप्रातःपादत्रयावच्छिन्नयागकालाभावात्संधिदिनेएवसर्वमतेकात्यायनानामिष्टिः पूर्वदिनेपिंडपितृयज्ञोपवासौ अथदिनद्वयेसाम्येनवैषम्येणवैकदेशव्याप्तिरितितृतीयःपक्षः यथाचतुर्दशी २५ अमा २५ प्रतिपत् २४ दिनमानं ३० इयंसाम्येनापराह्णव्याप्तिः अत्रकौस्तुभमतपरमतोक्तरीत्याद्वैधानिर्णयः यथावा चतुर्दशी २५ अमा २० प्रतिपत् १७ दिनमानं २७ इयमपिसाम्येनैकदेशव्याप्तिः अत्रसर्वमतेसंधिदिनेएवकातीयेष्टिःपूर्वदिनेचपिंडपितृयज्ञोपवासौ अथवैषम्येणैकदेशव्याप्तिः चतुर्दशी २५ अमा २३ प्रतिपत् २३ दिनमानं ३० अत्रापिपूर्वोक्तमतद्वयेनद्वैधानिर्णयोज्ञेयः यथावाचतुर्दशी२५अमा२२ प्रतिपत् १८ दिनमानं ३० इयमपिवैषम्येणैकद्वेशव्याप्तिः अत्रापिसर्वमतेसंधिदिनेकातीयेष्टिश्चतुर्दश्यामुपवासपिंडपितृयज्ञौ यथावाचतुर्दशी २५ अमा २७ प्रतिपत् २९ दिनमानं ३० अत्रसंधिदिनेन्वाधानयागौप्रतिपदीष्टिः संधिदिनेएवैकदेशव्याप्तिरितिचतुर्थः पक्षः यथाचतुर्दशी ३१ अमा २६ प्रतिपत् २३ दिनमानं ३० यथावा चतुर्दशी २८ अमा २२ प्रतिपत्१७ दिनमानं २७ अत्रोभयत्रापिसंधिदिनेएवपिंडपितृयज्ञान्वाधानेयागस्तुपरेह्निप्रतिपदि एवंचकात्यायनमतेपिसर्वत्रोदाहरणेचंद्रदर्शननिषेधप्रतिपालनंनसंभवति किंतुकुत्रचिन्निषेधादरात्पूर्वत्रयागादिकंक्वचित्तुचंद्रदर्शनवत्येवदिने एवंपिंडपितृयज्ञोऽपीतिध्येयं दर्शश्राद्धार्थममावास्यानिर्णयःसर्वसाधारणोऽग्रेपृथगेववक्ष्यते ॥

अब अमावसविषे कात्यायनोंके विशेष निर्णयकों कहताहुं.

अमावसके विषयमें तीन प्रकारसें विभक्त किये दिनका प्रथम भाग पूर्वाण्ह कहाता है, द्वितीय भाग मध्यान्ह कहाता है, और तृतीय भाग अपराण्ह कहाता है. तहां रात्रिकी संधिमें प्रतिपदाके दिन चंद्रमाका दर्शन होवै तौ भी अन्योंकी तरह कात्यायनोंनें भी संधिदिनमें पिंडपितृयज्ञ और अन्वाधानकर्म करना और परदिनमें यज्ञ करना यह विवादसें रहित विचार है. पूर्वाण्हमें और दिनके दूसरे भागरूपी मध्यान्हमें तिस संधिविषे और संधिके पूर्वदिनविषे अन्वाधानकर्म और पिंडपितृयज्ञ करना. और संधिदिनमें ही यज्ञ करना. तहां चतुर्दशीके दिनमें दिनका तीसरा भाग नामवाले अपराण्हकालमें जो अमावसकी पूर्ण व्याप्ति होवै तब अमावससें युक्त हुये अपराण्हमें पिंडपितृयज्ञ करना इसमें संदेह नहीं है. और ऐसे तिसरे भाग नामवाले अपराण्हकालके अंतभागविषे अपराण्हके एकदेशमें अमावसकी व्याप्ति होवै तब प्राप्त हुई अमावसमें पिंडपितृयज्ञ करना और चतुर्दशीमें नहीं, यह एक पक्ष हुआ. और चंद्रमाके परम क्षीणपनेसें चतुर्दशीके अंतभागमें पिंडपितृयज्ञ करना यह दूसरा पक्ष है. अपराण्हकालकी संधिमें ४ पक्ष हैं. संधिदिनमेंही दिनके तीसरे भाग नामवाले अपराण्हमें अमावसकी पूर्ण व्याप्ति होवै यह प्रथम पक्ष है. जैसे–चतुर्दशी २९ घडी होवै, अमावस ३० घडी होवै, प्रतिपदा २९ घडी होवै, और दिनमान भी ३० घडी होवै. यहां संधिदिनमें अन्वाधानकर्म और पिंडपितृयज्ञ करना और परदिनमें यज्ञ करना. संधिदिनमेंही उक्त किये अपराण्हकालविषे अमावसकी पूर्ण व्याप्ति होवै यह द्वितीय पक्ष

है. जैसे–चतुर्दशी २० घडी होवै अमावस २२ घडी होवै, प्रतिपदा १४ घडी होवै और दिनमान ३० घडी होवै, तहां संधिदिनके परदिनमें छह घटिकारूपी प्रातःकालमें प्रतिपदाके तीन पादसें युक्त हुये यज्ञकालके लाभसें संधिके दिनमें अन्वाधानकर्म और पितृयज्ञ करना और प्रतिपदामें यज्ञ करना ऐसा **कौस्तुभका** मत है. "प्रतिपदामें अपराण्हकालव्यापिनी द्वितीया छह घडी होवै तब परदिनमें चंद्रमाके दर्शन होनेसें चतुर्दशीमें अन्वाधानकर्म करना," इस वचनसें चतुर्दशीविषे पिंडपितृयज्ञ और उपवास करना और संधिदिनमें यज्ञ करना यह दूसरेका मत है. अब अपर द्वितीयपक्षके उदाहरणकों कहते हैं. चतुर्दशी १८ घडी होवै, अमावस १८ घडी होवै, प्रतिपदा १९ घडी होवै, और दिनमान २७ घडी होवै, तहां प्रतिपदाके दिनविषे तीन पादोंसें युक्त हुये यज्ञकालके अभावसें संधिदिनमेंही सब मतोंमें कात्यायनोंनें यज्ञ करना और पूर्वदिनमें पिंडपितृयज्ञ और उपवास करना. दोनों दिनोंमें बराबरसें अथवा विषमपनेसें एकदेशमें व्याप्ति होवै यह **तृतीय पक्ष** है. जैसे,–चतुर्दशी २९ घडी होवै, अमावस २९ घडी होवै, प्रतिपदा २४ घडी होवै और दिनमान ३० घडी होवै, यह समपनेसें अपराण्हकालमें व्याप्ति है. यहां कौस्तुभके मत और परमतमें कही हुई रीतिकरके दो प्रकारसें निर्णय है. जैसे,–चतुर्दशी २९ घडी होवै, अमावस २० घडी होवै, प्रतिपदा १७ घडी होवै और दिनमान २७ घडी होवै, यह भी समपनेसें एकदेशमें व्याप्ति है. यहां सब मतोंमें संधिदिनविषेही कात्यायनोंनें यज्ञ करना और पूर्व दिनमें पिंडपितृयज्ञ और उपवास करना ऐसा है. अब विषमपनेसें एकदेशमें व्याप्तिकों कहते हैं. जैसे–चतुर्दशी २९ घडी होवै, अमावस २३ घडी होवै, प्रतिपदा २३ घडी होवै, और दिनमान ३० घडी होवै, तहां भी पहले कहे हुये दोनों प्रकारके मतकी तरह दो प्रकारके निर्णय जानने. जैसे, चतुर्दशी २९ घडी होवै, और अमावस २२ घडी होवै, प्रतिपदा १८ घडी होवै, और दिनमान ३० घडी होवै यह भी विषमपनेसें एकदेशव्याप्ति है. यहां भी सब मतोंमें संधिके दिन कात्यायनोंनें यज्ञ करना और चतुर्दशीमें उपवास और पिंडपितृयज्ञ करना ऐसा है. जैसे,–चतुर्दशी २९ घडी होवै, अमावस २७ घडी होवै, प्रतिपदा २९ घडी होवै और दिनमान ३० घडी होवै, यहां संधिदिनमें उपवास और यज्ञ करना और प्रतिपदामें इष्टि करना. संधिदिनमेंही एकदेशमें व्याप्ति होवै, यह **चतुर्थ पक्ष** है. जैसे,–चतुर्दशी ३१ घडी होवै, अमावस २६ घडी होवै, प्रतिपदा २३ घडी होवै और दिनमान ३० घडी होवै अथवा जैसे–चतुर्दशी २८ घडी होवै अमावस २२ घडी होवै, प्रतिपदा १७ घडी होवै और दिनमान २७ घडी होवै, यहां दोनों उदाहरणोंमें संधिदिनमेंही पिंडपितृयज्ञ और उपवास करना और परदिनमें प्रतिपदाविषे यज्ञ करना. ऐसेही कात्यायनोंके मतमें भी सब उदाहरणोंमें चंद्रमाका दर्शन और निषेधके प्रतिपालनका संभव नहीं है. किंतु कहींक निषेधके आदरसें पूर्वदिनमें यज्ञ आदि करना ऐसा कहा है और कहींक चंद्रदर्शनवाले दिनमेंही यज्ञ आदि करने ऐसा कहा है. ऐसाही पिंडपितृयज्ञविषे भी जान लेना. दर्शश्राद्धके लिये अमावसका सर्वसाधारण निर्णय आगे पृथक्ही कहैंगे.

अथसामगानामिष्टेर्निर्णयः तत्रपौर्णमासीसर्वसाधारणापूर्वोक्तैव अमावास्यायांतुरात्रिसंधौ प्रतिपद्येवचंद्रदर्शनेपियागः अपराह्णसंधौतुप्रातः षट्घटिकात्मकप्रतिपदाद्यपादत्रयरूपया

गकाललाभे प्रतिपदिचंद्रदर्शनेपीष्टिः संधिदिनेचोपवासपितृयज्ञौउक्तयागकाललाभेसंधिदिने यागःपूर्वदिनेचतुर्दश्यांपितृयज्ञोपवासौ एवंचसामगैरपिचंद्रदर्शननिषेधःकात्यायनवदेवयथा संभवंपालनीयः ॥ इति सामगनिर्णयः ॥ इति यागकालनिर्णयउद्देशोद्वाविंशः ॥ २२ ॥

अब सामवेदियोंके इष्टिका निर्णय कहताहुं.

तहां सर्वसाधारणरूपी पौर्णमासी पहले कही ही है. और अमावसविषे तौ रात्रिकी संधिमें प्रतिपदाकों ही चंद्रदर्शन होवै तौ यज्ञ करना और अपराण्हसंधिमें तौ प्रातःकालकी छह घडीरूप प्रतिपदाके आदिके तीन पादरूप यज्ञकालके लाभमें प्रतिपदाकों चंद्रदर्शन होवै तौ भी प्रतिपदाके दिन ही यज्ञ करना और संधिदिनमें उपवास और पितृयज्ञ करना. और पूर्व कहे हुये यज्ञकालके अलाभमें तौ संधिदिनविषे यज्ञ करना. और पूर्वदिनमें चतुर्दशीकों पितृयज्ञ और उपवास करना. ऐसे ही सामवेदियोंनें भी चंद्रदर्शनका निषेध कात्यायनोंकी तरह संभवके अनुसार पालना चाहिये. यह सामवेदियोंका निर्णय है. इति यज्ञकालनिर्णयो नाम द्वाविंशतितम उद्देशः ॥ २२ ॥

अथपिंडपितृयज्ञकालः तत्राश्वलायनानांयस्मिन्नहोरात्रेअमावास्याप्रतिपदोःसंधिस्तद्दिनापराह्णेपंचधाविभक्तदिनचतुर्थभागरूपेपिंडपितृयज्ञः सचापराह्णसंधावन्वाधानदिनेभवति मध्याह्नेपूर्वाह्णेवासंधौयागदिनेयागोत्तरमपराह्णेभवति यदाहोरात्रसंधौतिथिसंधिस्तदान्वाधानदिनेएवपिंडपितृयज्ञः एवमापस्तंबहिरण्यकेशिमतानुसारिणामपिसंधिदिनेएवपितृयज्ञः सचापराह्णेऽधिवृक्षसूर्येवाकार्यः अपराह्णश्चपंचधाविभक्तदिनचतुर्थभागोनवधाविभक्तदिनसप्तमभागोवा सांख्यायनकात्यायनसामगानामन्वाधानदिनेएवपिंडपितृयज्ञःपूर्वमेवोक्तः सचत्रेधाविभक्तदिनतृतीयभागरूपेऽपराह्णेकार्यः गृह्याग्निमतांबह्वृचानांदर्शश्राद्धपिंडपितृयज्ञयोरेकस्मिन्दिनेप्राप्तौव्यतिषंगेणानुष्ठानं व्यतिषंगोनामोभयोःसहप्रयोगः खंडपर्वणितुपूर्वेद्युःकेवलदर्शश्राद्धमुत्तरेऽह्निकेवलःपिंडपितृयज्ञः श्रौताग्निमतांतुकेवलपिंडपितृयज्ञएवदक्षिणाग्नौकार्योनव्यतिषंगेण श्रौताग्निमतांसंपूर्णेदर्शेइत्थंक्रमः आदावन्वाधानंततोवैश्वदेवस्ततःपिंडपितृयज्ञस्ततोदर्शश्राद्धमिति अस्मिन्नेवकालेजीवत्पितृकेणसाग्निकेनहोमांतेवापितुःपित्रादित्रयोद्देशेनपिंडसहितोवापिंडपितृयज्ञःकार्यः ॥ यद्वापिंडपितृयज्ञोनैवारब्धव्यः इष्टिलोपेपादकृच्छ्रंप्रायश्चित्तं इष्टिद्वयलोपेऽर्धकृच्छ्रं इष्टित्रयलोपेअग्निनाशात्पुनराधानं पिंडपितृयज्ञलोपेवैश्वानरेष्टिःप्रायश्चित्तं इष्टिस्थानेसप्तहोतारंहोष्यामीतिसंकल्प्यतन्मंत्रेणचतुर्गृहीताज्येनपूर्णाहुतिर्वाकार्या ॥ इति पिंडपितृयज्ञनिर्णयउद्देशस्त्रयोविंशः ॥ २३ ॥

अब पिंडपितृयज्ञके कालका निर्णय कहताहुं.

तहां आश्वलायनोंनें जिस दिन और रात्रिमें अमावस और प्रतिपदाकी संधि होवै तिस दिनके पांच प्रकारसें भाग किये हुए चतुर्थभागरूपी अपराण्हकालमें पिंडपितृयज्ञ करना. वह पिंडपितृयज्ञ अपराण्हकी संधिविषे होवै तौ अन्वाधानकर्मके दिनमें होवै. मध्यान्हकी अथवा पूर्वाण्हकी संधिमें होवै तौ यज्ञके दिनमें यज्ञकालके उपरंत अपराण्हकालमें होवै. जब दिनरात्रिकी संधिमें तिथिकी संधि होवै तब अन्वाधानके दिनमें ही पिंडपितृयज्ञ करना.

ऐसेही आपस्तंब और हिरण्यकेशीके मतानुसारियोंनें भी संधिदिनमें ही पितृयज्ञ करना और यह यज्ञ अपराण्हकालमें अथवा अल्प शेष रहे दिनमें करना. पांच प्रकारसें विभक्त किये दिनका चतुर्थ भाग अथवा नव प्रकारसें विभक्त किये दिनका सातमा भाग अपराण्ह कहाता है. सांख्यायन, कात्यायन और सामवेदी, इन्होंके मतमें उपवासके दिनमें ही पिंडपितृयज्ञ करना ऐसा पहले ही कहा है. वह पिंडपितृयज्ञ तीन प्रकारसें विभक्त किये दिनके तृतीयभागरूपी अपराण्हमें करना चाहिये. गृह्याग्निवाले ऋग्वेदियोंके मतमें दर्शश्राद्ध और पिंडपितृयज्ञ एक दिनमें प्राप्त होवैं तौ व्यतिषंगकरके अनुष्ठान करना ऐसा है. दोनोंका एकही वखत आरंभ करना इसकों व्यतिषंग कहते हैं. और जो पर्व खंडित होवै तौ पहले दिनमें केवल दर्शश्राद्ध करना और परदिनमें केवल पिंडपितृयज्ञ करना. श्रौताग्निवालोंनें केवल पिंडपितृयज्ञ ही दक्षिणाग्निमें करना; परंतु दोनोंका एकहीवार आरंभ नहीं करना. श्रौताग्निवालोंनें संपूर्ण दर्शमें नीचे लिखे हुए क्रमसें करना. आदिमें अन्वाधानकर्म, पीछे वैश्वदेवकर्म, पीछे पिंडपितृयज्ञ, पीछे दर्शश्राद्ध करना. और इसी कालमें जीवता हुआ पितावाले अग्निहोत्री मनुष्यनें होमके अंतमें पिताके पिता आदि तीनोंके उद्देशकरके पिंडोंसहित पिंडपितृयज्ञ, अथवा अपिंडक ऐसा पिंडपितृयज्ञ करना अथवा पिंडपितृयज्ञका आरंभ ही नहीं करना. इष्टिके लोपमें पादकृच्छ्र[1] नामवाला प्रायश्चित्त करना. और दो इष्टियोंके लोपमें अर्धकृच्छ्र नामक प्रायश्चित्त करना. तीन इष्टियोंके लोपमें अग्निका नाश होजानेसें फिर आधान (अग्निस्थापन) करना. पिंडपितृयज्ञका लोप होनेमें वैश्वानरेष्टि नामक प्रायश्चित्त करना. अथवा इष्टिके स्थानमें " **सप्त होतारं होष्यामि** " ऐसा संकल्प करके पीछे चारवार ग्रहण किये घृतकरके तिसी मंत्रसें पूर्णाहुति करनी. इति पिंडपितृयज्ञनिर्णयो नाम त्रयोविंशतितम उद्देशः ॥ २३ ॥

अथश्राद्धेऽमावास्यानिर्णीयते पंचधाविभक्तदिनचतुर्थभागाख्यापराह्णव्यापिन्यमावास्या दर्शश्राद्धेग्राह्या पूर्वेद्युरेवपरेद्युरेववापराह्णेकार्त्स्न्येनैकदेशेनवाव्यापित्वेसैवग्राह्या उभयदिनेऽप्यपराह्णेवैषम्येणैकदेशव्यापित्वेयाधिकव्यापिनीसाग्राह्या दिनद्वयेसाम्येनैकदेशव्याप्तौतिथिक्षयेपूर्वातिथिवृद्धौतिथिसाम्येचपरा तत्रसमव्याप्तौतिथिवृद्धिक्षयसाम्योदाहरणानि चतुर्दशी १९ अमा २३ दिनमानं ३० अत्रदिनद्वयेऽपिसमापंचघटिकैकदेशव्याप्तिचतुर्दश्यपेक्षयाचतुर्घटिकाभिरमायावृद्धिसत्त्वादुत्तराग्राह्या तथाचतुर्दशी २३ अमा १९ अत्रैकाघटिकासमाव्याप्तिर्घटिकाचतुष्टयेन तिथिक्षयात्पूर्वाग्राह्या अथ चतुर्दशी २१ अमा २१ अत्रघटीत्रयेणदिनद्वयेंशतःसमाव्याप्तिस्तिथेस्तुवृद्धिक्षयाभावेनसमत्वात्पराग्राह्या दिनद्वयेपूर्णापराह्णव्याप्तौतिथिवृद्धित्वात्पराग्राह्या यदादिनद्वयेप्यपराह्णस्पर्शाभावस्तदागृह्याग्निमद्भिःश्रौताग्निमद्भिश्चसिनीवालीसंज्ञिकाचतुर्दशीमिश्रापूर्वाग्राह्या निरग्निकैःस्त्रीशूद्रादिभिश्चकुहूसंज्ञिकाप्रतिपन्मिश्रापराग्राह्येतिमाधवाचार्यसंमतोदर्शनिर्णयःप्रायःसर्वत्रशिष्टैराद्रियते पुरुषार्थचिंतामणौतुबह्वृचैस्तैत्तिरीयैश्चसाग्निकैरपराह्णव्याप्त्यसत्त्वेपिइष्टिदिनात्पूर्वदिनेएवदर्शश्राद्धंकार्यं तथाचदिनद्वयेकार्त्स्न्येनापराह्णव्याप्तौपरत्रैवदर्शः एकदेशेनापराह्णद्वयव्याप्तौप्रतिपद्वृद्धयाप्रतिपदी

---

[1] पादकृच्छ्र इत्यादिक कृच्छ्रोंके लक्षण तृतीय परिच्छेदमें कहे हैं.

ष्टावुत्तरत्रैवदर्शः द्वितीयदिनेएवापराह्णव्याप्तौतुयदिप्रतिपत्क्षयवशाद्दर्शदिनएवइष्टिप्राप्तिस्तदा बह्वृचानांसिनीवालीतैत्तिरीयाणांकुहूर्ग्राह्या सामगानांविकल्पेनद्वयं यदापूर्वदिनेऽपराह्णेऽधिकाव्याप्तिःपरदिनेऽल्पातदासामगानांपूर्वातैत्तिरीयाणांउत्तरा उभयत्रापराह्णस्पर्शाभावेऽपि सामगानांपूर्वातैत्तिरीयाणांपरेत्याद्युक्तं दर्शेदर्शश्राद्धवर्षश्राद्धयोर्दर्शमासिकयोर्दर्शश्राद्धोदकुंभश्राद्धयोश्चसंपातेदेवताभेदाच्छ्राद्धद्वयंकार्यं तत्रादौमासिकाब्दिकादिश्राद्धंकृत्वापाकांतरेणदर्शश्राद्धंकार्यं वैश्वदेवआब्दिकादिश्राद्धशेषेणपृथक्पाकेनवादर्शश्राद्धात्प्राक्भवति आहिताग्निस्तुवैश्वदेवंपिंडपितृयज्ञंचकृत्वाब्दिकंकुर्यात् दर्शश्राद्धमनुपनीतविधुरप्रवासस्थैरपि कार्यं अमाश्राद्धातिक्रमेन्यूषुवाचमितिऋचंशतवारंजपेत् ॥ इतिदर्शनिर्णयउद्देशश्चतुर्विंशः ॥ २४ ॥

अब श्राद्धमें अमावसका निर्णय कहताहुं.

पांच प्रकारसें विभक्त किये दिनका चतुर्थ भागनामक अपराण्हकालव्यापिनी अमावस दर्शश्राद्धमें लेनी. पहले दिनमें ही होवै अथवा पिछले दिनमें ही होवै, परंतु अपराण्हकालमें संपूर्णपनेकरके अथवा एकदेशकरके व्याप्त होवै तौ वह ही ग्रहण करनी. दोनों दिनोंमें भी अपराण्हकालविषे विषमपनेसें अथवा एकदेशमें व्याप्त होनेसें अधिकव्यापिनी अमावस ग्रहण करनी. दोनों दिनोंमें समपनेसें एकदेशव्याप्ति होनेमें तिथिके क्षयमें पूर्वतिथिकी लेनी. वृद्धिमें और तिथिके समानपनेमें बराबर परविद्धा अमावस लेनी. तहां समानव्याप्तिमें तिथिकी वृद्धि, क्षय, और समपना इन्होंके उदाहरण कहते हैं—चतुर्दशी १९ घडी होवै, अमावस २३ घडी होवै, और दिनमान ३० घडी होवै यहां दोनों दिनोंमें भी समान पांच घटिका एकदेशमें व्याप्त होवै तब चतुर्दशीकी अपेक्षा चार घटिकाओंकरके अमावसकी वृद्धिके होनेसें परविद्धा अमावस ग्रहण करनी. तैसे चतुर्दशी २३ घडी होवै, अमावस १९ घडी होवै, यहां एक घडी समानव्याप्ति होवै, तब चार घटिकाओंकरके तिथिके क्षयसें पूर्वविद्धा ग्रहण करनी. अब चतुर्दशी २१ घडी होवै, और अमावस २१ घडी होवै, यहां तीन घटिकाओंकरके दोनों दिनोंमें अंशसें समानव्याप्ति होवै तब तिथिकी वृद्धि अथवा क्षयका अभाव करके समानपनेसें परविद्धा अमावस ग्रहण करनी. दोनों दिनोंमें पूर्ण अपराण्हकालमें व्याप्ति होवै तब तिथिके वृद्धिसें परविद्धा लेनी. जो दोनों दिनोंमें भी अपराण्हकालके स्पर्शका अभाव होवै तब गृह्याग्निवाले मनुष्योंनें और श्रौताग्निवाले मनुष्योंनें **सिनीवालीसंज्ञक** अमावस चतुर्दशीसें मिली हुई पूर्वविद्धा ग्रहण करनी. निरग्निवालोंनें और स्त्री शूद्र इन आदियोंनें **कुहूसंज्ञक** अमावस प्रतिपदासें मिली हुई परविद्धा ग्रहण करनी. ऐसा माधवाचार्यसंमत दर्शका निर्णय प्रायताकरके सब शिष्टोंनें आद्रित किया है. **पुरुषार्थचिंतामणिमें** तौ ऋग्वेदी, तैत्तिरीय, साग्निक, इन्होंनें अपराण्हकालमें व्याप्ति न होवै तब यज्ञके दिनके पूर्वदिनमें ही दर्शश्राद्ध करना और दोनों दिनोंमें संपूर्णपनेसें अपराण्हकालमें व्याप्ति होवै तब परदिनमें ही दर्शश्राद्ध करना. एकदेशकरके दोनों दिनोंके अपराण्हकालोंमें व्याप्ति होवै तब प्रतिपदाकी वृद्धि करके प्रतिपदामें इष्टि भी होवै तब परदिनमें दर्शश्राद्ध करना. जो दूसरे दिन ही अपराण्हकालमें व्याप्ति होवै तौ प्रतिपदाके क्षयके वशसें अमावसके दिनमेंही इष्टिकी प्राप्ति होवै तब ऋग्वेदियोंनें **सिनीवालीसंज्ञक** अमावस लेनी, और तैत्ति-

रीयोंनें कुहूसंज्ञक अमावस लेनी, और सामवेदियोंनें विकल्पकरके दोनों दिन अमावस लेनी. जब पूर्वदिनमें अपराण्हकालविषे अधिकव्याप्ति होवै और परदिनमें अल्पव्याप्ति होवै तब सामवेदियोंनें पूर्वविद्धा अमावस लेनी, और तैत्तिरीयोंनें परविद्धा अमावस लेनी. दोनों भी दिनोंमें अपराण्हकालव्याप्ति न होवै तौ सामवेदियोंनें पूर्वदिनकी लेनी और तैत्तिरीयोंनें परदिनकी लेनी ऐसा कहा है. अमावसके दिन दर्शश्राद्ध और वार्षिक श्राद्धकी प्राप्ति होवै, अथवा दर्शश्राद्ध और मासिकश्राद्धकी प्राप्ति होवै, अथवा दर्शश्राद्ध और उदकुंभश्राद्धकी प्राप्ति होवै, तब देवताओंके भेदसें दो श्राद्ध करने उचित हैं. सो ऐसे;—पहले मासिकश्राद्ध अथवा वर्षश्राद्ध जो प्राप्त हुआ होवै सो करके पीछे दुसरे पाकसें दर्शश्राद्ध करना. वैश्वदेव करनेका सो वर्षश्राद्धादिक करके जो श्राद्धशेष अन्न होवै उस्सें अथवा दुसरा पाक करके उस्सें दर्शश्राद्धके पहले करना. अग्निहोत्री मनुष्यनें वैश्वदेव और पिंडपितृयज्ञ करके पीछे आब्दिकश्राद्ध आदिक करना. यज्ञोपवीतसंस्कारसें रहित, मृत हुई स्त्रीवाला और परदेशमें रहनेवाला इन्होंनेंभी दर्शश्राद्ध करना उचित है. अमाश्राद्धके अतिक्रममें "न्यूषुवाचं" इस ऋचाकों १०० वार जपना. इति दर्शनिर्णयो नाम चतुर्विंश उद्देशः ॥२४॥

इष्टिस्थालीपाकौपौर्णमास्यामारब्धव्यौनतुदर्शे आधानंगृहप्रवेशनीयहोमानंतरमेवपौर्णमास्यांयदिदर्शपौर्णमासारंभःक्रियतेतदामलमासपौषमासशुक्रास्तादिदोषोनास्ति तत्रातिक्रमेतुशुद्धमासादिप्रतीक्षेत्येके सर्वथाशुद्धकालेएवारंभइत्यपरे ॥ इति इष्ट्यादिप्रारंभनिर्णयउद्देशःपंचविंशः ॥ २५ ॥

अब इष्टि और स्थालीपाकके आरंभका निर्णय कहताहुं.

इष्टि और स्थालीपाकका आरंभ पौर्णमासीके दिन करना, अमावसके दिन नहीं करना. गृहप्रवेशनीय होमके अनंतरही अग्निस्थापन करना. पौर्णमासीमें जो दर्शपौर्णमासस्थालीपाकका आरंभ करना होवै तौ तिसविषे मलमास, पौषमास, गुरुशुक्रका अस्त आदि इन्होंका दोष नहीं है. पौर्णमासीके दिन आरंभ नहीं किया जावै तौ शुद्धमास आदिमें आरंभ करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. सब प्रकारसें शुद्धकालमें ही आरंभ करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. इति इष्ट्यादिप्रारंभनिर्णयो नाम पंचविंश उद्देशः ॥ २५ ॥

अथविकृतिकालः तास्त्रिविधाः नित्याआग्रयणचातुर्मास्याद्याः नैमित्तिकाजातेष्ट्यादयः काम्याः सौर्यादयः एताःपुरुषार्थाः एवंक्रत्वंगभूताअपिद्विविधाः नित्यानैमित्तिकाश्च अत्र विकृतिषुसद्यस्काललव्यहकालत्वयोर्विकल्पः एवंपर्वणिशुक्लपक्षगतदेवनक्षत्रेषुवा कर्तव्या इतिविकल्पः तत्रपर्वणिकरणपक्षे अपराह्णादिसंधौसंधिदिनेसद्यस्कालांव्यहकालांवाविकृतिंकृत्वाप्रकृतेरन्वाधानं मध्याह्नेपूर्वाह्णेवासंधौसंधिदिनेप्रकृतिंसमाप्यसद्यस्कालैवविकृतिः कार्या कृत्तिकादीनिविशाखांतानिचतुर्दशनक्षत्राणिदेवनक्षत्राणीत्युच्यंते आग्रयणेविशेषो द्वितीयपरिच्छेदेवक्ष्यते अन्वारंभणीयेष्टिश्चतुर्दश्यांकार्या ॥ इति विकृतिसामान्यनिर्णय उद्देशः षड्विंशः ॥ २६ ॥

---

[1] कात्यायनोंनें पिंडपितृयज्ञके दिनमेंही दर्शश्राद्ध करना, इत्यादि.

अब विकृतियोंका काल कहताहुं.

विकृति तीन प्रकारकी हैं. नित्य, नैमित्तिक और **काम्य.** आग्रयण और **चातुर्मास्य** आदिक जो विकृति सो **नित्य** हैं. जातेष्ट्यादिक **नैमित्तिक** हैं. सौर्य आदिक **काम्य** हैं. ऐसी तीन प्रकारकी विकृति पुरुषार्थ कहाती हैं. ऐसेही यज्ञके अंगभूत जो विकृति सो भी दो प्रकारकी हैं. एक **नित्य** और दूसरी **नैमित्तिक.** यहां विकृति तत्काल करना अथवा दो दिनमें करना ऐसा इसविषे विकल्प है. ऐसे ही पर्वमें अथवा शुक्लपक्षगत देवनक्षत्रोंमें करना ऐसा विकल्प है. तहां पर्वविषे करनेके पक्षमें अपराण्हकाल आदि संधिविषे संधिदिनमें तत्काल करनेके योग्य अथवा दो दिनमें करनेके योग्य ऐसी विकृतिकों करके प्रकृतिका अन्वाधान करना. मध्यान्हसंधिमें अथवा पूर्वाण्हसंधिमें संधिके दिनविषे प्रकृति समाप्त करके तत्काल करनेके योग्य विकृति करनी. कृत्तिकासें लगाय विशाखातक जो १४ नक्षत्र सो देवनक्षत्र कहे जाते हैं. आग्रयणका विशेष निर्णय द्वितीय परिच्छेदमें कहैंगे. अन्वारंभणीया इष्टि चतुर्दशीमें करनी उचित है. **इति विकृतिसामान्यानिर्णयो नाम षड्विंशतितम उद्देशः ॥ २६ ॥**

पशुयागस्तुवर्षतौंश्रावण्यादिचतुर्णांपर्वणामन्यतमेपर्वणि दक्षिणायनादिनेउत्तरायणादिनेवाकार्यः तत्रखंडपर्वणिविकृतिसामान्योक्तपर्वनिर्णयः ॥ इति पशुयागनिर्णयउद्देशःसप्तविंशः ॥ २७ ॥

अब पशुयागका काल कहताहुं.

पशुयज्ञ तौ वर्षाऋतुमें, श्रावणी आदि चार पर्वोंमेंसें एक कोई पर्वमें अथवा दक्षिणायनदिनमें अथवा उत्तरायणदिनमें करना उचित है. तहां खंडितपर्व होवै तौ विकृतिविषे कहा सामान्यपर्वनिर्णय सोही यहां जानना. इति **पशुयज्ञनिर्णयो नाम सप्तविंश उद्देशः ॥ २७ ॥**

अथ चातुर्मास्यकालःतत्प्रयोगेचत्वारःपक्षाः फाल्गुन्यांचैत्र्यांवापौर्णमास्यांवैश्वदेवपर्वकृत्वाचतुर्षुचतुर्षुमासेष्वाषाढ्यादिष्वेकैकंपर्वेत्येवंयावज्जीवमनुष्ठानमितियावज्जीवपक्षः उक्तरीत्यासंवत्सरपर्यंतमनुष्ठायसवनेष्ट्यापशुयागेनवासोमयागेनवासमापनंसांवत्सरपक्षः प्रथमेहनिवैश्वदेवपर्व चतुर्थेवरुणप्रघासपर्व अष्टमनवमयोःसाकमेधपर्व द्वादशेशुनासीरीयपर्वेतिद्वादशाहपक्षः पंचभिर्दिनैःसमाप्तौयथाप्रयोगपक्षः द्वादशाहयथाप्रयोगपक्षयोरुदगयनेशुक्लपक्षेदेवनक्षत्रेष्वारभ्यशुक्लपक्षएवसमाप्तिरितिबहवः कृष्णपक्षेवासमाप्तिरितिकेचित् द्वादशाहपंचाहपक्षयोरपिसवनेष्ट्यादिनासमापनेकृतेसकृत्करणं तदभावेप्रतिवत्सरमनुष्ठानम् कचिदैकाहिकप्रयोगपक्षोप्युक्तः सचचैत्र्यादिषुचतसृषुपौर्णमासीष्वेकस्यांकस्यांचिद्भवति क्वचित्तुसप्ताहपक्षः सयथाद्व्यहेवैश्वदेवपर्व तृतीयदिनेवरुणप्रघासः चतुर्थेग्रहमेधीया पंचमेमहाहविषि षष्ठेपितृयज्ञादिसाकमेधपर्वशेषः सप्तमेशुनासीरीयपर्वेतिअत्रशुक्लपक्षादिःपंचाहपक्षोक्तःकालः ॥ इति चातुर्मास्यकालनिर्णयउद्देशअष्टाविंशः ॥ २८ ॥

अब चातुर्मास्यका काल कहताहुं.

तिसके प्रयोगमें ४ पक्ष हैं. फाल्गुनकी अथवा चैत्रकी पौर्णमासीविषे वैश्वदेवपर्वकों करके चार चार महीनोंमें आषाढी आदिकोंविषे एक एक पर्व करना. यह अनुष्ठान मनुष्य जबतक जीवै तबतक करना. यह **यावज्जीवपक्ष** है. उक्तरीतिकरके एक वर्षतक अनुष्ठान करके सवनेष्टि, पशुयज्ञ अथवा सोमयज्ञ इन्होंमेंसें कोई एक करके समाप्ति करना यह **सांवत्सरपक्ष** है. प्रथम दिनमें वैश्वदेवपर्व, चौथे दिन वरुणप्रघासपर्व, आठमे और नवमे दिनमें साकमेधपर्व, और बारमे दिन शुनासीरीयपर्व, ऐसा यह **द्वादशाहपक्ष** है. पांच दिनोंतक करिके पांचमे दिन समाप्ति करी जावै यह **यथाप्रयोगपक्ष** है. द्वादशाहपक्ष और यथाप्रयोगपक्षका उत्तरायणमें शुक्लपक्षविषे जब देवनक्षत्र होवै तब आरंभ करके शुक्लपक्षमें ही समाप्ति करनी ऐसा बहुतसे ग्रंथकार कहते हैं. कितनेक ग्रंथकार कहते हैं की कृष्णपक्षमें समाप्ति करनी. द्वादशाहपक्ष और पंचाहपक्षकी सवनेष्टि आदिकरके समाप्ति करी जावै तब एकही वार करना. और तिस समाप्तिके अभावमें प्रतिवर्ष अनुष्ठान करना. और कहींक एकाहिकप्रयोगपक्षभी कहा है. वह चैत्री आदि चार पौर्णमासियोंमेंसें किसी एक पौर्णमासीमें होता है. और कहींक सप्ताहपक्ष है. वह दिखाते हैं. जैसे—दो दिन वैश्वदेवपर्व, तीसरे दिन वरुणप्रघासपर्व, चौथे दिन ग्रहमेधीयपर्व, पांचमे दिन महाहवींषिपर्व, छट्ठे दिन पितृयज्ञ आदि साकमेधपर्वका शेष, और सातमे दिन शुनासीरीयपर्व. यहां शुक्लपक्ष आदि पांच दिनके पक्षका काल कहा है सो लेना. **इति चातुर्मास्यकालनिर्णयो नाम अष्टाविंश उद्देशः ॥ २८ ॥**

काम्येष्टीनांविकृतिसामान्यनिर्णयानुसारेणपर्वण्यनुष्ठानम् शुक्लपक्षस्थदेवनक्षत्रेवा जातेष्टिस्तुपत्न्याविंशतिरात्र्यात्मककर्मानधिकाराख्यजननाशौचनिवृत्तौसत्यांपर्वणिकार्या गृहदाहेष्ट्यादिनैमित्तिकेष्टीनांनिमित्तानंतरमनुष्ठानेपर्वाद्यपेक्षानास्ति तदसंभवेपर्वापेक्षाक्रत्वर्थानां नित्यानांक्रतुनासहैवानुष्ठानम् नतत्रपृथक्कालापेक्षा हविर्दोषोद्देशादिनैमित्तिकक्रत्वर्थेष्टयस्तु स्विष्टकृदुत्तरंसमिष्टयजुषःप्राक्निमित्तस्मरणेतदानीमेवतदीयतंत्रोपजीवनेननिर्वापप्रभृतिकार्याः तदनंतरंस्मरणेतत्प्रयोगंसमाप्यपुनरन्वाधानादिविधिनाकार्याः इति काम्यनैमित्तिकादीष्टीनांनिर्णयउद्देशएकोनत्रिशः ॥ २९ ॥

अब काम्येष्टियोंका काल कहताहुं.

काम्येष्टियोंका विकृतिसामान्यनिर्णयके अनुसारकरके पर्वदिनमें अनुष्ठान करना. अथवा शुक्लपक्षमें स्थित हुये देवनक्षत्रमें अनुष्ठान करना. स्त्रीकों बालक उपजै तब जातेंष्टि करनी होवै तौ सो तिस सूतिका स्त्रीकों वीस दिनोंतक कर्ममें अधिकार नहीं होनेसें जन्मका सूतक दूर हो चुकै तब पर्वदिनमें करनी. और गृहदाहइष्टि आदि नैमित्तिक इष्टियोंको निमित्तके अनंतर अनुष्ठानमें पर्व आदिकी अपेक्षा नहीं है. और तिसका असंभव होवै तौ पर्वदिनमें करना. यज्ञके अंगभूत नित्य इष्टिकों यज्ञके साथही करना. तहां पृथक् कालकी अपेक्षा नहीं है. होम करनेके द्रव्य दोषोंसें युक्त होवैं तब दोष नैमित्तिक प्राप्तकालमें यज्ञके लिये प्रायश्चित्तेष्टि, स्विष्टकृत्कर्मके पश्चात् और **समष्टि यजुःसंज्ञक** होमके पहले दोषका स्म-

रण होवै तब ही तिस तंत्रके उपजीवनकरके निर्वाप आदिक करना और प्रायश्चित्तकी आहुतियोंसें पश्चात् दोषका स्मरण होवै तौ समस्त प्रयोगकों समाप्त कर फिर अन्वाधान आदि विधिकरके करना. इति काम्यनैमित्तिकादि इष्टिनिर्णयो नाम एकोनत्रिंश उद्देशः ॥

आधानंतुपर्वणिनक्षत्रेचोक्तं तत्रसंकल्पप्रभृतिपूर्णाहुतिपर्यंतप्रयोगपर्याप्तंपर्वंग्राह्यम् तदसंभवेगार्हपत्याधानाद्याहवनीयाधानपर्यंतंविद्यमानंग्राह्यं एवंनक्षत्रस्यापिनिर्णयः दिनद्वयेकर्मकालव्याप्तपर्वसत्त्वेयत्रोक्तनक्षत्रयोगस्तद्ग्राह्यं वसंतऋतुपर्वोक्तनक्षत्रेत्येतद्त्रितयसान्निपाते प्रशस्ततमं ऋत्वभावेमध्यमं केवलेपर्वणिनक्षत्रेवाधमं नक्षत्राणितुकृत्तिकारोहिणीविशाखा पूर्वाफल्गुनीउत्तराफल्गुनीमृगोत्तराभाद्रपदेतिसप्ताश्वलायनसूत्रोक्तानि कृत्तिकारोहिणीत्र्युत्तरामृगपुनर्वसुपुष्यपूर्वाफल्गुनीपूर्वाषाढाहस्तचित्राविशाखानुराधाश्रवणज्येष्ठारेवतीतिसूत्रांतरोक्तानिसोमपूर्वाधानेतुनर्तुंपृच्छेन्ननक्षत्रमितिवचनात्सोमकालानुरोधेनैवाधानं नतत्रपृथक्कालविचारः ॥ इत्याधानकालनिर्णयउद्देशस्त्रिंशत्तमः ॥ ३० ॥

अब आधानका काल कहताहुं.

अग्निस्थापन पर्वदिनमें और उक्तनक्षत्रमें करना. तहां संकल्पसें प्रारंभ करके पूर्णाहुतीपर्यंत प्रयोगकालतक पर्व ग्रहण करना उचित है. तिसके असंभवमें गार्हपत्याधानसें लगायत आहवनीय आधानपर्यंत विद्यमान होवै सो पर्व लेना. ऐसा नक्षत्रका भी निर्णय जानना. दोनों दिनोंमें कर्मकालव्याप्त पर्व होनेमें जहां यथोक्त नक्षत्रका योग होवै वह पर्व लेना. और वसंतऋतु, पर्व, और कहे हुए नक्षत्र ये तीनों जिस एक दिनमें होवैं वह दिन अति उत्तम है. और वसंतऋतुके अभावमें मध्यम दिन होता है. अकेला पर्व होवै अथवा अकेला नक्षत्र होवै सो अधम दिन होता है. कृत्तिका, रोहिणी, विशाखा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, मृगशिर, उत्तराभाद्रपदा ये सात नक्षत्र आश्वलायनसूत्रमें कहे हैं. कृत्तिका, रोहिणी, तीनों उत्तरा, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, श्रवण, ज्येष्ठा, रेवती ये नक्षत्र अन्यसूत्रोंमें कहे हैं. सोमपूर्वक अग्निस्थापनमें ऋतुकों नहीं पूछना और नक्षत्रकोंभी नहीं पूछना इस वचनसें सोमकालके अनुरोधकरके अग्निस्थापन करना. तहां पृथक् कालका विचार नहीं है. इति आधानकालनिर्णयो नाम त्रिंशत्तम उद्देशः ॥ ३० ॥

अथ ग्रहणनिर्णयः चंद्रसूर्यग्रहणंयावच्चाक्षुषदर्शनयोग्यंतावान्पुण्यकालः अतोग्रस्तास्तस्थलेऽस्तोत्तरंद्वीपांतरेग्रहणसत्त्वेपिदर्शनयोग्यत्वाभावान्नपुण्यकालः एवंग्रस्तोदयेउदयात्पूर्वंनपुण्यकालः मेघादिप्रतिबंधेनचाक्षुषदर्शनासंभवेशास्त्रादिनास्पर्शमोक्षकालौज्ञात्वास्नानदानाद्याचरेत् रविवारेसूर्यग्रहश्चंद्रवारेचंद्रग्रहश्चूडामणिसंज्ञस्तत्रदानादिकमनंतफलं ग्रहस्पर्शकालेस्नानंमध्येहोमःसुरार्चनंश्राद्धंचमुच्यमानेदानंमुक्तेस्नानमितिक्रमः तत्रस्नानजलेषुतारतम्यं शीतमुष्णोदकात्पुण्यमपारक्यंपरोदकात् भूमिष्ठमुद्धृतात्पुण्यंततःप्रस्रवणोदकं ततोपिसारसंपुण्यंततःपुण्यंनदीजलं ततस्तीर्थनदीगंगापुण्यापुण्यस्ततोंबुधिरिति ग्रहणेस्नानंचसचैलं कार्यं सचैलत्वंमुक्तिस्नानपरमितिकेचित् मुक्तिस्नानाभावेसूतकित्वानपगमः ग्रहणेस्नानममं

त्रकं सुवासिनीभिःस्त्रीभिरशिरःस्नानंकार्यं शिष्टस्त्रियस्तुग्रहणेषुशिरःस्नानंकुर्वंति जाताशौचे मृताशौचेचग्रहणनिमित्तंस्नानदानश्राद्धादिकंकार्यमेव स्नानेनैमित्तिकेप्राप्तेनारीयदिरजस्वलापात्रांतरिततोयेनस्नानंकृत्वाव्रतंचरेत् नवस्त्रपीडनंकुर्यान्नान्यद्वासश्चधारयेत् त्रिरात्रमेकरात्रंवासमुपोष्यग्रहणेस्नानदानाद्यनुष्ठानेमहाफलं एकरात्रपक्षेग्रहणदिनात्पूर्वदिनेउपवासइतिकेचित् ग्रहणसंबंधाहोरात्रउपवासइत्यपरे पुत्रवद्गृहिणोग्रहणसंक्रांत्यादौनोपवासः पुत्रवत्पदेनकन्यावानपिग्राह्यइतिकेचित् ग्रहणेदेवपितृतर्पणंकार्यमितिकेचित् सर्वेषामेववर्णानां सूतकंराहुदर्शने तेनग्रहणकालेस्पृष्टवस्त्रादेःक्षालनादिनाशुद्धिःकार्या अत्रगोभूहिरण्यधान्यादिदानंमहाफलं तपोविद्योभययुक्तंमुख्यंदानपात्रं सत्पात्रेदानात्पुण्यातिशयः सर्वंगंगासमंतोयंसर्वेंव्याससमाद्विजाः सर्वभूमिसमंदानंग्रहणेचंद्रसूर्ययोरित्युक्तिःपुण्यसामान्याभिप्राया अतएव सममब्राह्मणेदानंद्विगुणंब्राह्मणब्रुवे श्रोत्रियेशतसाहस्रंपात्रेत्वानंत्यमश्नुते इतितारतम्यमुक्तम् अब्राह्मणेसंस्कारादिरहितेजातिमात्रेब्राह्मणेदानंयथोक्तफलं गर्भाधानादिसंस्कारयुतोवेदाध्ययनाध्यापनरहितोब्राह्मणब्रुवस्तत्रदानमुक्तंद्विगुणफलं वेदाध्ययनादियुते श्रोत्रियेसहस्रफलं विद्यासदाचरणादियुतेपात्रेऽनंतफलमित्येतद्वाक्यार्थः ग्रहणेश्राद्धमामेनहेम्नावाकार्यं संपन्नश्चेत्पक्वान्नेनकुर्यात् सूर्यग्रहणेतीर्थयात्रांगश्राद्धवत्घृतप्रधानान्नेनश्राद्धंकार्यं ग्रहणेश्राद्धभोक्तुर्महादोषः ग्रहणेतुलादानादिकंसंपन्नेनकार्यं चंद्रसूर्यग्रहेतीर्थेमहापर्वादिके तथा मंत्रदीक्षांप्रकुर्वाणोमासर्क्षादीन्नशोधयेत् मंत्रदीक्षाप्रकारस्तंत्रेद्रष्टव्यः दीक्षाग्रहणमुपदेशस्याप्युपलक्षणं युगेयुगेतुदीक्षासीदुपदेशःकलौयुगे चंद्रसूर्यग्रहेतीर्थेसिद्धक्षेत्रेशिवालये मंत्रमात्रप्रकथनमुपदेशःसउच्यते मंत्रग्रहणेसूर्यग्रहणमेवमुख्यं चंद्रग्रहणेदारिद्र्यादिदोषोक्तेरितिकेचित् चंद्रसूर्योपरागेचस्नात्वापूर्वमुपोषितः स्पर्शादिमोक्षपर्यंतंजपेन्मंत्रंसमाहितः जपाद्दशांशतोहोमस्तथाहोमाच्चतर्पणं होमाशक्तौजपंकुर्याद्धोमसंख्याचतुर्गुणं मूलमंत्रमुच्चार्यतदंतेद्वितीयांतंमंत्रदेवतानामोच्चार्य अमुकांदेवतामहंतर्पयामिनमइतियवादियुक्तजलांजलिभिस्तर्पणं होमदशांशेनकार्यं एवंनमोंतंमूलमंत्रमुक्त्वाअमुकांदेवतामहमभिषिंचाम्यनेनेत्युच्चार्यजलेनस्वमूर्ध्निअभिषिंचेदिति मार्जनंतर्पणदशांशेनकार्यं मार्जनदशांशेनब्राह्मणभोजनंएवंजपहोमतर्पणमार्जनविप्रभोजनात्मकपंचप्रकारंपुरश्चरणं तर्पणाद्यसंभवेतत्तत्संख्याचतुर्गुणोजपएवकार्यः अयंचग्रहणेपुरश्चरणप्रकारोग्रस्तोदयेग्रस्तास्तेचनसंभवति पुरश्चरणांगोपवासःपुत्रवद्गृहिणापिकार्यः पुरश्चरणकर्तुःस्नानदानादिनैमित्तिककर्मलोपेप्रत्यवायप्रसंगान्नैमित्तिकंस्नानदानादिकंभार्यापुत्रादिप्रतिनिधिद्वाराकार्यं ॥

अब ग्रहणका निर्णय कहताहुं.

जबतक नेत्रोंसें दर्शनके योग्य सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण होवै तबतक पुण्यकाल है, इस कारणसें ग्रस्तास्तके स्थलमें अस्तसें उपरंत अन्यद्वीपमें ग्रहण होनेमें भी दिखनेके अभावसें पुण्यकाल नहीं है. ऐसे ग्रस्तोदयमें उदयके पहले पुण्यकाल नहीं है. और मेघ आदिके प्रतिबंधकरके नेत्रोंसें दिखनेके अभावमें शास्त्र आदिकरके ग्रहणके स्पर्श और मोक्षकालकों जानके स्नान दान आदि करने. रविवारकों सूर्यग्रहण होवै और सोमवारकों चंद्रग्रहण होवै तब वह **चूडामणिसंज्ञक** ग्रहण कहाता है. तहां दान आदिका करना अनंत फलकों देता है.

ग्रहणके स्पर्शकालमें स्नान करना और ग्रहणके मध्यमें होम, देवताका पूजन, श्राद्ध ये करने. और मुक्त होते हुये ग्रहणमें दान करना और मुक्त हुये ग्रहणमें स्नान करना यह क्रम है. तहां **स्नान करनेके पानीका तारतम्य**—"गरम पानीसें शीतल पानी पुण्यकारक है. और दूसरेके दिये हुये पानीसें अपना पानी पुण्यकारक है. निकासे हुये पानीसें स्नान करनेसें पृथिवीमें स्थित पानीमें डुबकी मारके स्नान करना पुण्यकारक है, और तिस्सें वहता हुआ पानी पुण्यकारक है, और तिस्सें सरोवरका पानी पुण्यकारक है, और तिस्सें नदीका पानी पुण्यकारक है, और तिस्सें तीर्थ और गंगा आदि नदीका जल पुण्यकारक है, और तिस्सें भी समुद्रका जल पुण्यकारक है." इन पानियोंमें ग्रहणविषे वस्त्रोंसहित स्नान करना. वस्त्रोंसहित स्नान करना सो मुक्तिस्नानपर है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. मुक्तिस्नान कियेसें सूतकिपना दूर नहीं होता. ग्रहणमें मंत्रोंकेविना स्नान करना और सुवासिनी स्त्रियोंनें शिरउपरसें स्नान नहीं करना. शिष्ट पुरुषोंकी स्त्रियें ग्रहणोंमें शिरउपरसें स्नान करती हैं. जन्मके सूतकमें और मरणके सूतकमें ग्रहणनिमित्तक स्नान, दान, श्राद्ध इन आदि करने उचित ही हैं. "जो नैमित्तिक स्नानकी प्राप्तिमें नारी रजस्वला हो जावे तो पात्रमें पानी लेके स्नान करके व्रतका आचरण करै. और वस्त्रकों निचोडै नहीं. और दूसरे वस्त्रकों धारै नहीं." तीन दिन अथवा एक दिन उपवास करके ग्रहणमें स्नान दान आदिके करनेमें महाफल है. और एकरात्रके पक्षमें ग्रहणके दिनके पहले दिनमें उपवास करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. और ग्रहणके संबंधसें दिनरात्रि उपवास करना ऐसा अन्य ग्रंथकार कहते हैं. पुत्रवाले गृहस्थीनें ग्रहण और संक्रांति आदियोंमें उपवास नहीं करना. यहां पुत्रवाले पदकरके कन्यावाला भी लेना उचित है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. ग्रहणमें देव और पितरोंका तर्पण करना उचित है ऐसा कितनेक कहते हैं. "सब वर्णोंकों ग्रहणमें सूतक लग जाता है." तिसकरके ग्रहणकालमें धारित किये हुये और छुहे हुये वस्त्र आदिकों पानीसें धोके शुद्धी करनी. यहां ग्रहणमें गौ, पृथिवी, सुवर्ण, धान्य आदिके दान महाफलकों देते हैं. तप और विद्यासें युक्त हुआ ब्राह्मण मुख्य दानपात्र है. सत्पात्रकों दान देनेसें अत्यंत पुण्य होता है. "चंद्रमा और सूर्यके ग्रहणमें गंगाजलके समान सब पानी हो जाते हैं, और वेदव्यासजीके समान सब ब्राह्मण हो जाते हैं, और पृथिवीके समान सब दान हो जाते हैं." यह उक्ति पुण्यसामान्यके अभिप्रायवाली है. इसवास्ते "अब्राह्मणकों दिया दान दानके समान फलकों देता है, और ब्राह्मणब्रुवकों दिया दान दानसें दुगुने फलकों देता है, और श्रोत्रियकों दिया दान सो हजारगुने फलकों देता है. और सत्पात्रकों दिया दान अनंतगुने फलकों देता है." ऐसा तारतम्य कहा है. संस्कार आदिसें वर्जित और जातिमात्र ब्राह्मणपनेसें युक्त अब्राह्मण कहाता है. ऐसे ब्राह्मणकों दान देना दानके अनुसार फलकों देता है. और गर्भाधान आदि संस्कारसें युक्त होवै, परंतु वेदके पठन और पाठनसें वर्जित होवै वह ब्राह्मणब्रुव कहाता है. ऐसे ब्राह्मणकों दिया दान दानसें दुगुने फलकों देता है. वेद आदिके पठन आदिसें युक्त होवै वह श्रोत्रिय कहाता है, ऐसे ब्राह्मणकों दिया दान दानसें हजारहगुने फलकों देता है. विद्या और श्रेष्ठ आचरण आदिसें युत हुये पात्रकों दिया दान अनंत फलकों देता है. ऐसा यह वाक्यार्थ है. ग्रहणमें श्राद्ध कच्चा अन्नकरके अथवा सुवर्णकरके

करना. जो संपन्न मनुष्य होवै तौ ग्रहणमें भी पक्वान्नकरके श्राद्ध करै. सूर्यग्रहणमें तीर्थयात्राके अंगभूत श्राद्धकी तरह घृतकी प्रधानतावाले अन्नकरके श्राद्ध करना. ग्रहणमें श्राद्धसंबंधी भोजन करनेवालेकों अत्यंत दोष है. ग्रहणमें संपन्न मनुष्यनें तुलादान आदि करना उचित है. “चंद्र और सूर्यके ग्रहणमें, तीर्थपर और महापर्व आदिमें मंत्रदीक्षाकों लेता हुआ मनुष्य महीना और नक्षत्र आदिकी शुद्धिकों नहीं विचारै. मंत्रदीक्षाका प्रकार तंत्रमें देखना.” यहां दीक्षापद उपदेशका ही उपलक्षण है. युगयुगमें दीक्षा हुई है और कलियुगमें उपदेश होता है. चंद्र तथा सूर्यके ग्रहणमें, तीर्थपर, सिद्धक्षेत्रपर, और शिवालयमें मंत्रमात्रका जो कथन सो उपदेश कहाता है. मंत्रके ग्रहणमें सूर्यका ग्रहणही प्रधान है. क्योंकी चंद्रमाके ग्रहणमें मंत्रकों ग्रहण करै तौ दरिद्रपना आदि दोष लगते हैं ऐसा कितनेक कहते हैं. चंद्रमा और सूर्यके ग्रहणके पहले उपवास करके और ग्रहणसमय स्नान करके स्पर्शकालसें आरंभ कर मोक्षकालतक सावधान हुआ मनुष्य मंत्रकों जपै. और जपके दशांश होम करना, और होमके दशांश तर्पण करना, और होम करनेकी सामर्थ्य नहीं होवै तौ होमकी संख्याके चौगुना जप करना.” मूलमंत्रका उच्चारण करके जिसके अंतमें द्वितीया विभक्ति है ऐसे मंत्रदेवताके नामका उच्चारण करके “अमुकां देवतामहं तर्पयामि नमः” इस मंत्रसें जव आदिसें युक्त हुई जलकी अंजलियोंकरके होमके दशांश तर्पण करना. ऐसे नमः है अंतमें जिसके ऐसे मूलमंत्रका उच्चारण करके “अमुकां देवतामहमभिषिंचामि” ऐसा उच्चारण करके जलसें अपने शिरपर अभिषेक करै. यह मार्जन तर्पणके दशांशकरके करना. मार्जनके दशांशकरके ब्राह्मणभोजन कराना. ऐसा जप, होम, तर्पण, मार्जन, ब्राह्मणभोजन इनरूपी पांच प्रकारका पुरश्चरण होता है. तर्पण आदिके असंभवमें तर्पण आदिकी संख्याके अनुसार चौगुना जप ही करना. पुरश्चरणका यह प्रकार ग्रस्तोदय और ग्रस्तास्त संज्ञक ग्रहणमें नहीं होता. पुरश्चरणका अंगभूत उपवास पुत्रवाले गृहस्थीनेंभी करना. पुरश्चरण करनेवालेके स्नान दान आदि नैमित्तिक कर्मका लोप हो जावै तौ दोषके प्रसंगसें नैमित्तिक स्नान, दान आदि स्त्री और पुत्र आदि प्रतिनिधिद्वारा कराने.

अत्रेत्थमितिकर्तव्यता स्पर्शकालात्पूर्वंस्नात्वाअमुकगोत्रोमुकशर्माहं राहुग्रस्तेदिवाकरेनिशाकरेवा अमुकदेवतायाअमुकमंत्रसिद्धिकामोग्रासादिमुक्तिपर्यंतममुकमंत्रस्यजपरूपंपुरश्चरणंकरिष्ये इतिसंकल्पंचकृत्वासनबंधन्यासादिकंचस्पर्शात्पूर्वमेवविधायस्पर्शादिमोक्षपर्यंतंमूलमंत्रजपंकुर्यात् ततःपरदिनेस्नानादिनित्यकृत्यंविधायअमुकमंत्रस्यकृतैतद्ग्रहणकालिकामुकसंख्याकपुरश्चरणजपसांगतार्थं तद्दशांशहोमतद्दशांशतर्पणतद्दशांशमार्जनतद्दशांशब्राह्मणभोजनानिकरिष्येइतिसंकल्प्य होमादिकंतत्तच्चतुर्गुणद्विगुणान्यतरजपंवाकुर्यात्ग्रहणकालेचतत्प्रेरितःपुत्रादिरमुकशर्मणोमुकगोत्रस्यामुकग्रहणस्पर्शस्नानजनितश्रेयःप्राप्त्यर्थं स्पर्शस्नानंकरिष्येइत्यादिसंकल्पपूर्वकंतदीयस्नानदानादिकंकुर्यात् पुरश्चरणमकुर्वद्भिरपिगुरूपदिष्टःस्वस्वेष्टदेवतामंत्रजपोगायत्रीजपश्चावश्यंग्रहणेकार्योन्यथामंत्रमालिन्यं ग्रहणकालेशयनेकृतेरोगोमूत्रेदारिद्र्यंपुरीषेकृमिर्मैथुनेग्रामसूकरोभ्यंगेकुष्ठीभोजनेनरकइति पूर्वपक्वमन्नंग्रहणोत्तरंत्याज्यं एवंग्रहणकालस्थितजलपानेपादकृच्छ्राभिधानाज्जलमपित्याज्यं कांजिकंतक्रंघृततैलपाचितमन्नंक्षीरंचपूर्वसिद्धंग्रहणोत्तरंग्राह्यं घृतेसंधितेगोरसेषुग्रहणकालेकुशांतरायंकुर्यात् ॥

तहां ऐसी कर्तव्यता है.—स्पर्शकालके पहले स्नान करके “**अमुकगोत्रोमुकशर्माहं राहुग्रस्ते दिवाकरे निशाकरे वा अमुकदेवताया अमुकमंत्रसिद्धिकामो ग्रासादिमुक्तिपर्यंतं अमुकमंत्रस्य जपरूपं पुरश्चरणं करिष्ये**” ऐसा संकल्प करके स्पर्शके पहले आसनबंध और न्यास आदि कर्म करके स्पर्शसें आरंभ कर मोक्षकालपर्यंत मूलमंत्रका जप करै. तिसके पीछे दूसरे दिन स्नान आदि नित्यकर्म करके—“**अमुकमंत्रस्य कृतैतद्ग्रहणकालिकामुकसंख्याकपुरश्चरणजपसांगतार्थं तद्दशांशहोम तद्दशांशतर्पण तद्दशांशमार्जन तद्दशांशब्राह्मणभोजनानि करिष्ये,**” ऐसा संकल्प करके होम आदिके अथवा होम आदिकी संख्याके चौगुना अथवा दुगुना जप करै. ग्रहणकालमें तिस पुरश्चरणकर्तानें अपने पुत्रादिकोंको अपना स्नानादि करनेकों आज्ञा किये पीछे पुत्र आदिनें “**अमुकशर्मणोमुकगोत्रस्यामुकग्रहणस्पर्शस्नानजनितश्रेयःप्राप्त्यर्थं स्पर्शस्नानं करिष्ये,**” ऐसा संकल्प करके ग्रहणसंबंधी उसके स्नान, दान आदिकों करना. पुरश्चरण नहीं करनेवालोंनें भी गुरुसें उपदेशित ऐसे अपने अपने इष्ट देवताके मंत्रका जप और गायत्रीमंत्रका जप निश्चय करके ग्रहणमें करना उचित है. नहीं करै तौ मंत्रकी मलिनता हो जाती है. ग्रहणकालमें शयन किया जावै तौ रोग उपजता है. मूत्र किया जावै तौ दरिद्रपना उपजता है. मलका त्याग किया जावै तौ कीडेका शरीर मिलता है. स्त्रीसंग किया जावै तौ ग्रामके शूकरका शरीर मिलता है. तेल आदिसें मालिस किई जावै तौ कुष्ठी हो जाता है. भोजन किया जावै तौ नरकमें वास होता है. पहले पकाया हुआ अन्न ग्रहणके पीछे त्यागना उचित है. ऐसे ग्रहणकालमें स्थित हुये पानीके पीनेमें पादकृच्छ्र प्रायश्चित्त होनेसें जल भी त्यागना उचित है. ग्रहणके पहले सिद्ध किये कांजी, तक्र, घृत और तेलमें पकाया अन्न, दूध, ये सब ग्रहणके पहले होवैं तौ ग्रहणके पश्चात् लेने उचित हैं. घृत, संधान, गोरस इन्होंविषे ग्रहणकालमें कुश डालके रखना.

अथवेधविचारः सूर्यग्रहेग्रहणप्रहरादर्वाक्यामचतुष्टयंवेधः चंद्रग्रहेतुप्रहरत्रयं तथाचादिनप्रथमप्रहरेसूर्यग्रहेपूर्वरात्रिप्रहरचतुष्टयेनभोक्तव्यं द्वितीयेयामेग्रहणेरात्रिद्वितीययामादौनभोक्तव्यं एवंरात्रिप्रथमप्रहरेचंद्रग्रहेदिनद्वितीययामादौनभुंजीत रात्रिद्वितीययामादौग्रहणेदिनतृतीययामादौनभुंजीत बालवृद्धातुरविषयेतुसार्धप्रहरात्मकोमुहूर्तत्रयात्मकोवावेधः शक्तस्यवेधकालेभोजनेत्रिदिनमुपोषणंप्रायश्चित्तं ग्रहणकालेभोजनेप्राजापत्यंप्रायश्चित्तं चंद्रस्यग्रस्तोदयेतुयामचतुष्टयवेधात्तत्पूर्वंदिवानभुंजीत केचित्तुचंद्रपूर्णमंडलग्रासेयामचतुष्टयंवेधएकदेशग्रासेयामत्रयमित्याहुः ग्रस्तास्तेतु ग्रस्तावेवास्तमानंतुरवींदूप्राप्नुतोयदि परेद्युरुदयेस्नात्वाशुद्धोऽभ्यवहरेन्नरः अत्रस्नात्वाशुद्धइत्युक्त्याशुद्धमंडलदर्शनकालिकस्नानात्पूर्वमशुद्धिप्रतिपादनाज्जलाहरणपाकादिकं शुद्धबिंबोदयकालिकस्नानात्पूर्वंनकार्यमितिभाति सूर्यग्रस्तास्तादौपुत्रवद्गृहिणउपवासनिषेधात्तेनषण्मुहूर्तात्मकंवेधंत्यक्त्वाग्रहणात्पूर्वंभोक्तव्यमितिकेचित् पुत्रवद्गृहिणामपितत्रोपवासएवकार्यइतिमाधवमतमेवतुशिष्टाचारानुसृतंयुक्तं सूर्यग्रस्तास्तेचंद्रग्रस्तोदयेचाहिताग्निनान्वाधानंविधायजलेनव्रतंकार्यंनतुभोजनं चंद्रग्रस्तास्तेउत्तरदिनेसंध्याहोमादौनदोषःतत्राल्पकालेनशास्त्रतोमुक्तिनिश्चयेमुक्त्यनंतरंस्नात्वाहोमादिकंकर्तव्यं चिरकालेनमुक्तौहोमकालातिक्रमप्रसंगाद्ग्रस्तोदयइवग्रहणमध्येएवसंध्यांहोमंचकृत्वा शास्त्रतोमुक्तिकाले

स्नात्वाब्रह्मयज्ञादिनित्यकर्मकर्तव्यमितिभाति दर्शेग्रहणनिमित्तकश्राद्धेनैवदर्शश्राद्धसंक्रांति श्राद्धानांप्रसंगसिद्धिर्भवति ग्रहणदिनेपित्रादेर्वार्षिकश्राद्धप्राप्तौसतिसंभवेऽन्नेनकार्यं ब्राह्मणाद्यलाभेनासंभवेतुआमेनहेम्नावाकार्यं ॥

अब ग्रहणके वेधका निर्णय कहताहुं.

सूर्यके ग्रहणमें ग्रहणके प्रहरके पहले ४ प्रहरतक वेध होता है. चंद्रग्रहणमें पहले ३ प्रहरतक वेध होता है. तैसेही दिनके प्रथम प्रहरमें सूर्यग्रहण होवै तौ पहली रात्रिके ४ प्रहरोंतक भोजन नहीं करना. दिनके दुसरे प्रहरमें ग्रहण होवै तौ पूर्वरात्रिके द्वितीय प्रहरसें भोजन नहीं करना. और ऐसाही रात्रिके प्रथम प्रहरमें चंद्रग्रहण होवै तौ दिनके द्वितीय प्रहरसें भोजन नहीं करना. रात्रिके द्वितीय प्रहर आदिमें ग्रहण होवै तौ दिनके तृतीय प्रहर आदिसें भोजन नहीं करना. बालक, वृद्ध, रोगी इन्होंके विषे तौ डेढ प्रहर अथवा ६ घडी ग्रहणके पहले वेध लेना. सामर्थ्यवाला मनुष्य वेधकालमें भोजन करै तौ उसनें ३ दिन उपवास करना, यह प्रायश्चित्त है. ग्रहणकालमें भोजन किया जावै तौ प्राजापत्य प्रायश्चित्त करना. चंद्रमाके ग्रस्तोदय ग्रहणमें ग्रहणके पहले ४ प्रहर वेध लगता है. इसवास्ते उस दिनमें भोजन नहीं करना. कितनेक कहते हैं की, चंद्रमाका सर्व ग्रहण होवै तौ ४ प्रहर पहले वेध लगता है और चंद्रमाके एकदेशमें ग्रास होवै तौ तीन प्रहर पहले वेध लगता है. ग्रस्तास्तमें तौ "जो सूर्य और चंद्रमा ग्रस्त होते हुयेही अस्त हो जावैं तौ परदिनमें जब सूर्य और चंद्रमाका क्रमसें उदय होवै तब स्नान करके शुद्ध होके भोजन करना." यहां स्नान करके शुद्ध होके इस उक्तिसें शुद्धमंडलदर्शनकालिक स्नानके पहले अशुद्धिके प्रतिपादनसें कूप आदिसें जलका लाना और पाक आदि, शुद्धबिंबवाले सूर्य अथवा चंद्रमाके उदयकालिक स्नानके पहले नहीं करना ऐसा मेरेकूं लगता है. सूर्यग्रहण ग्रस्तास्त अथवा ग्रस्तोदय होवै तब पुत्रवाले गृहस्थीकों उपवास करनेका निषेध है. इसवास्ते उसनें १२ घडीरूपी वेधकों त्यागकर ग्रहणके पहले भोजन करना ऐसा कितनेक कहते हैं. ग्रहणके वेधमें पुत्रवाले गृहस्थियोंनें उपवासही करना उचित है ऐसा माधवका ही मत शिष्टाचारसें युक्त हुआ श्रेष्ठ है. सूर्य ग्रस्त होता हुआ अस्त हो जावै और चंद्रमा ग्रस्त होता हुआ उदय होवै तब अग्निहोत्रीनें अन्वाधानकर्म करके जलसें व्रत करना उचित है, भोजन नहीं करना. चंद्रमा ग्रस्त होता हुआ अस्त हो जावै तब परदिनमें संध्या होम आदि करनेविषे दोष नहीं है. अल्पकालकरके शास्त्रसें मोक्षका निश्चय होवै तौ मोक्षकालके पश्चात् स्नान करके होम आदि करने उचित हैं; और जो बहुत कालके पीछे मोक्ष होनेका होवै तौ होमकालके अतिक्रमके प्रसंगसें ग्रस्तोदयकी तरह ग्रहणके मध्यमेंही संध्या और होम करके शास्त्रकेद्वारा मोक्षकालमें स्नान करके ब्रह्मयज्ञ आदि नित्यकर्म करना उचित है ऐसा लगता है. अमावसमें ग्रहणनिमित्तक श्राद्ध करनेसें दर्शश्राद्ध और संक्रांतिश्राद्धोंकी सिद्धि होती है. ग्रहणके दिन पिता आदिका वार्षिक श्राद्ध प्राप्त होवै तौ ब्राह्मण आदिके मिलनेमें अन्नसें करना, और ब्राह्मण आदिके अलाभमें कच्चा अन्नकरके अथवा सुवर्ण करके करना.

स्वजन्मराशेस्तृतीयषष्ठैकादशदशमराशिस्थितंग्रहणंशुभप्रदं द्वितीयसप्तमनवमपंचमस्था

नेषु मध्यमं जन्मचतुर्थाष्टमद्वादशराशिस्थितमनिष्टप्रदं यस्यजन्मराशौजन्मनक्षत्रेवाग्रहणंतस्यविशेषतोऽनिष्टप्रदं तेनगर्गाद्युक्ताशांतिःकार्या अथवाबिंबदानंकार्यं तद्यथा चंद्रग्रहेरजतमयंचंद्रबिंबं सुवर्णमयंनागबिंबंचकृत्वासूर्यग्रहेसौवर्णसूर्यबिंबंनागबिंबंचकृत्वाघृतपूर्णेताम्रपात्रे कांस्यपात्रेवानिधाय तिलवस्त्रदक्षिणासाहित्यंसंपाद्य ममजन्मराशिजन्मनक्षत्रस्थितामुकग्रहणसूचितसर्वानिष्टप्रशांतिपूर्वकं एकादशस्थानस्थितग्रहणसूचितशुभफलावाप्तयेबिंबदानंकरिष्येइतिसंकल्प्य सूर्यंचंद्रंराहुंचध्यात्वानमस्कृत्य तमोमयमहाभीमसोमसूर्यविमर्दन हेमतारप्रदानेनममशांतिप्रदोभव विधुंतुदनमस्तुभ्यंसिंहिकानंदनाच्युत दानेनानेननागस्यरक्षमांवेधजाद्भयादितिमंत्रमुच्चार्य इदंसौवर्णंराहुबिंबंनागंसौवर्णंरविबिंबंराजतंचंद्रबिंबं वाघृतपूर्णकांस्यपात्रानिहितंयथाशक्तितिलवस्त्रदक्षिणासहितं ग्रहणसूचितारिष्टविनाशार्थंशुभफलप्राप्त्यर्थंचतुभ्यमहंसंप्रददे इतिदानवाक्येनपूजितब्राह्मणायदद्यात् एवंचतुर्थाद्यनिष्टस्थानेष्वपिदानंकार्यमितिभाति यस्यजन्मराश्यादिग्रहणंतेनराहुग्रस्तरवींदुबिंबंनावलोकनीयं इतरजनैरपिपटजलादिव्यवधानेनैवग्रस्तबिंबंद्रष्टव्यंनसाक्षात् मंगलकार्येषुपूर्णग्रासेचंद्रग्रहेद्वादश्यादितृतीयांतंदिनसप्तकंवर्ज्यं सूर्यपूर्णग्रासेएकादश्यादिचतुर्थ्यंतदिनानिवर्ज्यानिखंडग्रहणेचतुर्दश्यादिदिनत्रयंवर्ज्यं ज्योतिर्निबंधेषुग्रासपादतारतम्येनदिनाधिक्योनत्वं तारतम्येनयोजितं ग्रस्तास्तेपूर्वंदिनत्रयंवर्ज्यं ग्रस्तोदयेपरंदिनत्रयंवर्ज्यं ग्रहणनक्षत्रंषण्मासंपूर्णग्रासेवर्ज्यं पादादिग्रासेसार्धमासादितारतम्येनयोज्यं पूर्वसंकल्पितस्यद्रव्यस्यग्रहणोत्तरंदानेतद्द्विगुणंदेयंभवति ।। इति ग्रहणनिर्णयउद्देश एकत्रिंशः ।। ३१ ।।

अब ग्रहणके शुभाशुभका निर्णय कहताहुं.

अपनी जन्मराशिसें तीसरी, छठी, ग्यारमी, दशमी, इन राशियोंपर स्थित हुआ ग्रहण शुभ है. दूसरी, सप्तमी, नवमी, पंचमी, इन राशियोंपर स्थित हुआ ग्रहण मध्यम है. पहली, चौथी, आठमी, बारहमी, इन राशियोंपर स्थित हुआ ग्रहण अशुभ है. जिसकी जन्मराशिपर और जन्मनक्षत्रपर ग्रहण होवै तिसकों विशेषकरके अनिष्टकारक होता है, इस कारणसें गर्ग आदि मुनियोंनें कही हुई शांति करनी, अथवा बिंबदान करना. सो ऐसा—चंद्रग्रहणमें चांदीका चंद्रबिंब बनाय और सोनेका सर्पबिंब बनावै. सूर्यग्रहणमें सोनाका सूर्यबिंब और नागबिंब करके घृतसें पूर्ण किये तांबाके पात्रमें अथवा कांसीके पात्रमें स्थापित करके तिल, वस्त्र, दक्षिणा इन आदिकों प्राप्त कर "**ममजन्मराशिजन्मनक्षत्रस्थितामुकग्रहणसूचितसर्वानिष्टप्रशांतिपूर्वकं एकादशस्थानस्थितग्रहणसूचितशुभफलावाप्तये बिंबदानं करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके सूर्य, चंद्रमा, और राहु, इन्होंका ध्यान और प्रणाम करके "**तमोमय महाभीम सोमसूर्यविमर्दन ।। हेमतारप्रदानेन मम शांतिप्रदो भव ।। विधुंतुद नमस्तुभ्यं सिंहिकानंदनाच्युत ।। दानेनानेन नागस्य रक्ष मां वेधजाद्भयात्,**" इस मंत्रका उच्चारण करके "**इदं सौवर्णं राहुबिंबं नागं सौवर्णं रविबिंबं राजतं चंद्रबिंबं वा घृतपूर्णकांस्यपात्रनिहितं यथाशक्ति तिलवस्त्रदक्षिणासहितं ग्रहणसूचितारिष्टविनाशार्थं शुभफलप्राप्त्यर्थं च तुभ्यमहं संप्रददे,**" इस दानवाक्यकरके पूजित किये हुये ब्राह्मणकों देना. ऐसेही अपनी राशिसें चौथी आदि अशुभ फल देनेवाली राशियोंपर ग्रहण होवै तब भी दान करना ऐसा

लगता है. जिसकी जन्मराशि आदिपर ग्रहण होवै तिसनें राहुसें ग्रस्त हुआ सूर्य अथवा चंद्रमाका मंडल नहीं देखना. अन्य जनोंनें भी वस्त्र और पानी आदिके व्यवधान करके ग्रस्त हुआ मंडल देखना, और साक्षात् नहीं देखना. मंगलकार्योंविषे पूर्ण ग्रासवाला चंद्रग्रहण होवै तब द्वादशीसें आरंभ कर तृतीयातक सात दिन वर्जित करने, और सूर्यके पूर्णग्रासमें एकादशीसें आरंभ कर चतुर्थीतक दिन वर्ज करने. खंडग्रहणमें चतुर्दशीसें आरंभ कर तीन दिन वर्ज देने. ज्योतिषके ग्रंथोंमें ग्रासके चरणके अनुसार दिनोंकी अधिकता और न्यूनता जाननी. ग्रस्तास्त ग्रहणमें पहले तीन दिन वर्ज देने और ग्रस्तोदय ग्रहणमें पिछले तीन दिन वर्ज देने. संपूर्ण ग्रासके दिन जो नक्षत्र होवै वह छह महीनोंतक वर्ज देना. पाद आदि ग्रासमें डेढ महीना आदि कालतक नक्षत्र वर्ज देना. पूर्व संकल्पित द्रव्य ग्रहणके पश्चात् दान करना होवै तौ दुगुना देना उचित है.—**इति ग्रहणनिर्णयो नाम एकत्रिंश उद्देशः ।। ३१ ।।**

समुद्रेपौर्णिमामावास्यादिपर्वसुस्नायात् भृगुभौमदिनेस्नानंवर्जयेत् अश्वत्थसागरौसेव्यौ नस्पृष्टव्यौकदाचन अश्वत्थंमंदवारेचसागरंपर्वणिस्पृशेत् नकालनियमःसेतौसमुद्रस्नानकर्मणि समुद्रस्नानप्रयोगोन्यत्रज्ञेयः ।। इतिधर्मसिंधुसारेसमुद्रस्नाननिर्णयउद्देशोद्वात्रिंशत्तमः ३२

अब समुद्रस्नानका निर्णय कहताहुं.

पूर्णिमा, अमावस आदि पर्वविषे समुद्रस्नान करना. शुक्रवार और मंगलवारके दिन समुद्रस्नान वर्ज देना. पीपलवृक्ष और समुद्र इन्होंकी सेवा करना, कभीभी छूहना नहीं; परंतु शनिवारके दिन पीपलवृक्षकों और पर्वकालमें समुद्रकों छूहना. सेतुबंध तीर्थविषे समुद्रके स्नानमें कालका नियम नहीं है. समुद्रस्नानका प्रयोग अन्य ग्रंथमें देख लेना. इति समुद्रस्नाननिर्णयो नाम द्वात्रिंशत्तम उद्देशः ।। ३२ ।।

तिथिविशेषेनक्षत्रविशेषेवारादौचविधिनिषेधः सप्तम्यांनस्पृशेत्तैलंनीलवस्त्रंनधारयेत् नचाप्यामलकैःस्नानंनकुर्यात्कलहंनरः सप्तम्यांनैवकुर्वीतताम्रपात्रेणभोजनं नंदातिथिष्वभ्यंगोवर्ज्यः रिक्तासुक्षौरंवर्ज्यं जयासुमांसंशूद्राद्यैर्वर्ज्यं पूर्णासुस्त्रीवर्ज्या रविवारेभ्यंगोभौमवारेक्षौरं बुधेयोषिच्चवर्ज्या चित्राहस्तश्रवणेषुतैलंवर्ज्यं विशाखाप्रतिपत्सुक्षौरंवर्ज्यं मघाकृत्तिकात्युत्तरासुस्त्रीनसेव्या तिलभक्षणंतिलतर्पणंचसप्तम्यांन नारीकेलमष्टम्यामलाबुनवम्यांपटोलं दशम्यांनिष्पावमेकादश्यांमसूरंद्वादश्यांवार्ताकंत्रयोदश्यांवर्ज्यं पूर्णिमादर्शसंक्रांतिचतुर्दश्यष्टमीषुच नरश्चंडालयोनौस्यात्तैलस्त्रीमांससेवनात् पूर्णिमादर्शसंक्रांतिद्वादशीषुश्राद्धदिने चवस्त्रंनपीडयेत् रात्रौमृदंगोमयमुदकंचनाहरेत् गोमूत्रंप्रदोषकालेनगृह्णीयात् अमादिपर्वस्ववश्यंशांत्यर्थंतिलहोमीस्यात् आत्मरक्षणायदानादिकंचकुर्यात् पर्वसुनाधीयीत शौचाचमनब्रह्मचर्यादिसेवीस्यात् प्रतिपद्दर्शषष्ठीनवमीतिथिषुश्राद्धदिनेजन्मदिनेव्रतेचोपवासेचरविवारेमध्याह्नस्नानसमयेचकाष्ठेनदंतधावनंवर्ज्यं अलाभेदंतकाष्ठानांनिषिद्धेपिदिनेतथा अपांद्वादशगंडूषैःपत्रैर्वाशोधयेन्मुखं अत्रसर्वत्रनिषेधेषुतिथ्यादिकंतत्कालव्यापिग्राह्यं ।। इति धर्मसिंधुसारेतिथ्यादौविधिनिषेधसंग्रहनिर्णयउद्देशस्त्रयस्त्रिंशत्तमः ।। ३३ ।।

अब तिथि, नक्षत्र और वार इन्होंकेविषे वर्ज्य पदार्थोंकों कहताहुं.

सप्तमीके दिन तेलकों छूहै नहीं, नीले वस्त्रकों धारै नहीं, आवलोंसें स्नान और कलह करै नहीं. और सप्तमीके दिन तांबाके पात्रमें भोजन नहीं करना. प्रतिपदा, षष्ठी, और एकादशी, इन नंदा तिथियोंमें तेल उवटना आदिकों वर्ज देना. चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी इन रिक्ता तिथियोंमें क्षौर वर्ज देना. तृतीया, अष्टमी, और त्रयोदशी इन जया तिथियोंमें शूद्र आदिनें मांसकों वर्ज देना. पंचमी, दशमी, और पौर्णिमा इन पूर्णा तिथियोंमें स्त्रीसंग वर्ज देना. अंतवारकों तेल आदि नहीं लगाना. मंगलवारमें क्षौर नहीं कराना और बुधवारमें स्त्रीसंग नहीं करना. चित्रा, हस्त, और श्रवण इन नक्षत्रोंमें तेल वर्ज देना. विशाखा और प्रतिपदामें क्षौर नहीं कराना. मघा, कृत्तिका, और तीनों उत्तरा इन्होंमें स्त्रीसंग नहीं करना. तिलोंका भक्षण और तिलोंसें तर्पण सप्तमीमें नहीं करना. अष्टमीमें नारियल; नवमीमें तूंवी; दशमीमें परवल; एकादशीमें मोठ, द्वादशीमें मसूर; त्रयोदशीमें वैंगन अथवा कटेलीका फल ये सब वर्ज देने. "पौर्णमासी, अमावस, संक्रांति, चतुर्दशी और अष्टमी इन्होंमें तेल, मांस, स्त्रीसंग इन्होंके सेवनेसें मनुष्य चांडालयोनिमें उपजता है." पूर्णिमा, अमावस, संक्रांति, द्वादशी और श्राद्धदिन इन्होंमें वस्त्रकों नहीं निचोवना. रात्रिमें गायका गोवर, माटी, पानी इन्होंकों लावै नहीं. गोमूत्र प्रदोषकालमें ग्रहण नहीं करना. अमावस आदि पर्वोंमें शांतिके लिये अवश्य ही तिलोंका होम करना. अपनी रक्षाके लिये दान आदि भी करना. पर्वदिनमें अध्ययन करना नहीं. पवित्रता, आचमन, ब्रह्मचर्य इन्होंकों सेवता रहना. प्रतिपदा, अमावस, षष्ठी, नवमी, इन तिथियोंमें, श्राद्धदिनमें, जन्मदिनमें, व्रतमें, उपवासमें, अंतवारमें और मध्यान्हके स्नानसमयमें काष्ठकरके दंतधावन करना वर्जित है. "जो दंतून नहीं मिलै और निषिद्ध दिन होवै तब पानीके १२ कुल्लोंकरके अथवा पत्तोंकरके मुखकों शोधना" यहां सब जगह निषेधोंमें तिथि आदि तत्कालव्यापिनी लेनी उचित है.

इति तिथ्यादौ विधिनिषेधसंग्रहनिर्णयो नाम त्रयस्त्रिंशत्तम उद्देशः ॥ ३३ ॥

मीमांसाधर्मशास्त्रज्ञाःसुधियोऽनलसाबुधाः । कृतकार्याःप्राङ्निबंधैस्तदर्थंनायमुद्यमः ॥१॥

अब ग्रंथकार यह ग्रंथ बनानेका प्रयोजन क्या है सो कहता है.

मीमांसा और धर्मशास्त्रकों जाननेवाले और सुंदर बुद्धिवाले और आलस्यसें रहित और पहले ग्रंथोंसें कृतकार्य हुये ऐसे जो पंडित हैं तिन्होंके लिये यह उद्यम नहीं है ॥ १ ॥

येपुनर्मंदमतयोलसाअज्ञाश्चनिर्णयं । धर्मेवेदितुमिच्छंतिरचितस्तदपेक्षया ॥ २ ॥

जो मंदबुद्धिवाले और आलस्यवाले और अविद्वान् ऐसे पुरुष धर्मविषयक निर्णय जाननेकी इच्छा करते हैं तिन्होंके लिये यह ग्रंथ रचा है ॥ २ ॥

निबंधोयंधर्मसिंधुसारनामासुबोधनः । अमुनाप्रीयतांश्रीमद्विठ्ठलोभक्तवत्सलः ॥ ३ ॥

धर्मसिंधुसार नामवाला और अच्छी तरहसें जाननेके योग्य यह ग्रंथ है. इसकरके भक्तोंपर दया करनेवाले श्रीमान् विठ्ठलजी प्रसन्न हो ॥ ३ ॥

सर्वत्रमूलवचनानीहज्ञेयानितद्विचारश्च । कौस्तुभनिर्णयसिंधुश्रीमाधवकृतनिबंधेभ्यः ॥ ४ ॥

इस ग्रंथमें मूलवचन और तिन्होंके विचार कौस्तुभ, निर्णयसिंधु, श्रीमाधवकृत ग्रंथ इन्होंमेंसें जान लेने ॥ ४ ॥

प्रेम्णासद्भिर्ग्रंथःसेव्यःशब्दार्थतःसदोषोपि । संशोध्यवापिहरिणासुदाममुनिसतुषपृथुकमुष्टिरिव ॥ ५ ॥ इतिश्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेप्रथम परिच्छेदः समाप्तः ॥ ॥ श्रीरामचंद्रार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥

शब्दार्थदोषसें सहित भी यह ग्रंथ शोधित करके सज्जनोंनें प्रेम करके सेवना योग्य है. जैसे सुदामा मुनिकी दिई हुई तुषसहित चावलोंकी मुष्टि शोधित कर श्रीकृष्णजीनें सेवित करी है तैसे ॥ ५ ॥ इति श्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचिते धर्मसिंधुसारे वेरीनिवासिबुधंशिवसहायपुत्रवैद्यरविदत्तशास्त्रिअनुवादितधर्मसिंधुसारभाषाटीकायां प्रथमः परिच्छेदः समाप्तः ॥ १ ॥

प्रथम परिच्छेद समाप्त.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीपांडुरंगंविबुधांतरंगं नौमींदिरांमाधवमंदिरांच ॥
सतामनंतंहितमामनंतंगुरुंगरिष्ठंजननींवरिष्ठाम् ॥ १ ॥

ज्ञानी मनुष्योंके अंतःकरणमें वास करनेवाले श्रीपांडुरंगजी और विष्णुके मंदिरमें रहनेवाली लक्ष्मीजी और सज्जनोंको अनंत हितके देनेवाले अनंत नामवाले श्रेष्ठ गुरु अर्थात् पिताजी इन्होंको और श्रेष्ठ माताको मैं प्रणाम करताहुं ॥ १ ॥

काशीनाथाभिधेनात्रानंतोपाध्यायसूनुना ॥
सामान्यंनिर्णयंप्रोच्यविशेषेणविनिर्णयः ॥ २ ॥

अनंत उपाध्यायका पुत्र मैं काशीनाथनें प्रथम परिच्छेदविषे सामान्य निर्णयका कथन करके फिर द्वितीय परिच्छेदमें विशेष निर्णयकों कहताहुं ॥ २ ॥

संगृह्यतेधर्मसिंधुसाराख्येकालगोचरे ॥
ग्रंथेप्रस्फुटबोधायपुनरुक्तिर्नदूषणम् ॥ ३ ॥

सब लोगोंकों स्पष्ट बोध होनेकेलिये कालविषयक ऐसे यह धर्मसिंधुसारनामक ग्रंथमें स्थलविशेषमें पुनरुक्ति आवैगी तौ सो दोष है ऐसा नहीं मानना ॥ ३ ॥

प्रथमपरिच्छेदेमासविशेषानपेक्षंसामान्यतस्तिथ्यादिनिर्णयमभिधायास्मिन्द्वितीयपरिच्छेदेचैत्रादिमासविशेषोपादानेन प्रतिपदादितिथिषुविहितसंवत्सरकृत्यनिर्णयसारंसंगृह्णीमः ॥

प्रथम परिच्छेदमें महीनेके विशेषकी अपेक्षाकों त्यागके सामान्यपनेसें तिथि आदिके निर्णयकों कहके इस दूसरे परिच्छेदमें चैत्र आदि महीनोंके विशेषका ग्रहण करके प्रतिपदा आदि तिथियोंमें विहित वार्षिककृत्यनिर्णयसारकों संगृहीत करताहुं.

अत्रशुक्लप्रतिपदादिरमांतएवमासःप्रायेणदाक्षिणात्यैराद्रियतेइतितमेवाश्रित्यनिर्णयउच्यते अत्रकिंचित्पूर्वपरिच्छेदोक्तमपिपुनर्विशेषोक्तिभिर्दृढीक्रियतेइतिपुनरुक्तिर्नदोषायतत्रमेषसंक्रांतौपूर्वाःपराश्चदशदशनाड्यःपुण्यकालः रात्रौत्वर्धरात्रात्प्राक्संक्रमेपूर्वदिनोत्तरार्धंपुण्यम् अर्धरात्रात्परतःसंक्रमेउत्तरदिनस्यपूर्वार्धंपुण्यम् अर्धरात्रेसंक्रमेदिनद्वयंपुण्यं ॥

यहां शुक्ल प्रतिपदासें आरंभ कर अमावसतक महीना बहुतकरके दक्षिणके पंडितोंनें आद्रित किया है, इसलिये तिस महीनेकों ही आश्रित करके निर्णय कहताहुं. यह परिच्छेदमें कछुक प्रथम परिच्छेदमें कहे हुयेकों फिर विशेष उक्तियोंकरके दृढ किया जाता है. इसवास्ते सो पुनरुक्तिदोष नहीं मानना. मेषसंक्रांतिविषे पहली और पिछली दश दश घटी पुण्यकाल है. रात्रिमें अर्धरात्रके पहले संक्रांतिके होनेमें पूर्वदिनके उत्तरार्धमें पुण्यकाल है, और अर्धरात्रके पश्चात् संक्रांतिके होनेमें परदिनका पूर्वार्ध पुण्यकाल है. अर्धरात्रिमें संक्रांति होवै तौ पूर्वदिनमें और परदिनमें पुण्यकाल जानना.

अथतिथिनिर्णयः तत्रचैत्रशुक्लप्रतिपदिवत्सरारंभः तत्रौदयिकीप्रतिपत्ग्राह्या दिनद्वयेउ

दयव्याप्तौअव्याप्तौवापूर्वा चैत्रस्यमलमासत्वेवत्सरारंभनिमित्तकंतैलाभ्यंगसंकल्पादौनूतनवत्सरनामकीर्तनाद्यारंभंचमलमासप्रतिपद्येवकुर्यात् प्रतिगृहंध्वजारोपणंनिंबपत्राशनंवत्सरादिफलश्रवणंनवरात्रारंभोनवरात्रोत्सवादिनिमित्ताभ्यंगादिश्चशुद्धमासप्रतिपदिकार्यः वत्सरारंभनिमित्तकोपितैलाभ्यंगः शुद्धप्रतिपद्येवेतिमयूखेउक्तम् अस्यांतैलाभ्यंगोनित्यः अकरणेप्रत्यवायोक्तेः अस्यामेवप्रतिपदिदेवीनवरात्रारंभः अत्रपरयुतामुहूर्तमात्रापि प्रतिपत्ग्राह्या अत्रमुहूर्तपरिमाणं मुहूर्तमहोरात्रेश्चप्रोचुःपंचदशंलवमित्युक्तंसर्वत्रज्ञेयम् पारणादिविशेषनिर्णयः शारदनवरात्रवद्बोध्यः अत्रैवप्रपादानं तत्रमंत्रः प्रपेयंसर्वसामान्याभूतेभ्यःप्रतिपादिता अस्याःप्रदानात्पितरस्तृप्यंतुहिपितामहाः अनिवार्यंततोदेयंजलंमासचतुष्टयम् प्रपांदातुमशक्तेनप्रत्यहमुदकुंभोद्विजगृहेदेयः तत्रमंत्रः एषधर्मघटोदत्तोब्रह्मविष्णुशिवात्मकः अस्यप्रदानात्सकलाममसंतुमनोरथाः इयमेवप्रतिपत्कल्पादिरपि एवंवैशाखशुक्लतृतीयाफाल्गुनकृष्णतृतीयाशुक्लाचैत्रपंचमीमाघेत्रयोदशी कार्तिकेसप्तमीमार्गशीर्षेनवमीइत्यपिकल्पादयोबोध्याः आसुश्राद्धात्पितृतृप्तिः चैत्रशुक्लप्रतिपत्मत्स्यजयंतीत्येके चैत्रेदधिक्षीरघृतमधुवर्जनंदंपतीपूजनात्मकंगौरीव्रतंकार्यम् चैत्रशुक्लद्वितीयायांनिशामुखे बालेंदुपूजनाद्यात्मकंचंद्रव्रतं अस्यामेवदमनकेनगौरीशिवपूजनं चैत्रशुक्लतृतीयायांगौरींशिवयुतांसंपूज्यांदोलनव्रतंमासपर्यंतंकार्यंअत्रतृतीयामुहूर्तमात्रापिपराग्राह्या द्वितीयायुक्तानकार्या चतुर्थीयुतायांवैधृत्यादियोगेपिसैवकार्या द्वितीयायोगनिषेधस्यबलवत्वात् अस्यामेवतृतीयायांश्रीरामचंद्रस्यदोलोत्सवमारभ्यमासपर्यंतंपूजापूर्वकमांदोलनंकार्यम् एवंदेवतांतराणामपि इयमेवतृतीयामन्वादिरपि अत्रैवसर्वमन्वादिनिर्णयउच्यते तत्रमन्वादयश्चैत्रशुक्लतृतीयापौर्णमासीच ज्येष्ठेपौर्णिमा आषाढस्यशुक्लदशमीपौर्णमासीच श्रावणस्यकृष्णाष्टमी भाद्रपदस्यशुक्लतृतीया आश्विनस्यशुक्लनवमी कार्तिकस्यशुक्लद्वादशीपौर्णमासीचपौषेशुक्लैकादशी माघेशुक्लसप्तमी फाल्गुनस्यपौर्णमास्यमावास्या चेतिचतुर्दशज्ञेयाः एतास्तुमन्वादयःशुक्लपक्षस्थाःदैवेपित्र्येकर्मणिपूर्वाह्णव्यापिन्योग्राह्याः पूर्वाह्णोऽत्रद्वेधाविभक्तदिनपूर्वोभागस्तत्रैवश्राद्धादिविधानात् दैवान्मानुषाद्वापराधात्पूर्वाह्णेश्राद्धाद्यनुष्ठानासंभवेऽपराह्णव्यापिन्योग्राह्याः दिनपूर्वार्धेऽपराह्णेवाश्राद्धाद्यनुष्ठेयं नतुदिनोत्तरार्धगतमध्याह्नभागेइतितात्पर्यं कृष्णपक्षस्थास्तुदैवेपित्र्येचकर्मणिपंचधाविभक्तदिनचतुर्थभागाख्यापराह्णव्यापिन्योग्राह्याः मन्वादिषुपिंडरहितंश्राद्धंकार्यं अत्रश्राद्धैर्द्विसहस्रवर्षपितृणांतृप्तिः मन्वादिश्राद्धंचनित्यम् एतदकरणेत्वंभुवःप्रतिमानमितिऋङ्मंत्रस्यशतवारंजलेजपःप्रायश्चित्तंकार्यम् एवंषण्णवतिश्राद्धान्यपिनित्यानि तानिच अमा १२ युग ४ मनु १४ क्रांति १२ धृति १२ पात १२ महालयाः १५ ॥ अष्टका ५ अन्वष्टका ५ पूर्वेद्युः ५ श्राद्धैर्नवतिश्चषट्इतिज्ञेयानि ॥

अब तिथिके निर्णयकों कहताहुं.

चैत्रके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाविषे वर्षका आरंभ होता है, तहां उदयकालव्यापिनी प्रतिपदा लेनी. दोनों दिनोंमें उदयकालव्याप्ति होवै अथवा अव्याप्ति होवै तौ पूर्वदिनकी लेनी. चैत्र महीना ही अधिकमास होवै तौ नवीन वर्षके आरंभनिमित्तक तैलाभ्यंग और संकल्प आदिमें

नवीन वर्षके नामकीर्तन आदिके आरंभकों मलमासकी प्रतिपदामेंही करना. घरघरके प्रति ध्वजाका रोपण, नींबके पत्तोंका भक्षण, वर्षके आरंभके फलका श्रवण, नवरात्रका आरंभ, नवरात्रका उत्सव आदि निमित्तवाले अभ्यंग आदि शुद्ध मासकी प्रतिपदाविषे करने. वर्षके आरंभनिमित्तक तेलकी मालिस भी शुद्धमासकी प्रतिपदामें करनी ऐसा **मयूखग्रंथमें** कहा है. इस प्रतिपदामें तेलकी मालिस नित्यकर्म कहाता है. क्योंकी नहीं करनेमें पाप लगता है. और इसी प्रतिपदामें देवीके नवरात्रका आरंभ करना. यहां द्वितीयासें युक्त हुई एक मुहूर्त भी प्रतिपदा होवै वह लेनी. यहां मुहूर्तका परिमाण–"दिन और रात्रिका पंदरहमा हिस्सा मुहूर्त कहाता है." ऐसाही सब जगह जानना. पारणा आदि विशेषनिर्णय शारदनवरात्रकी तरह जानना उचित है. यहां ही प्रपाका दान है. तिसका मंत्र—"**प्रपेयं सर्वसामान्या भूतेभ्यः प्रतिपादिता ।। अस्याः प्रदानात् पितरस्तृप्यंतु हि पितामहाः**"—इस मंत्रका उच्चार करके निरंतर चार महीनोंतक जल देता रहै. प्रपादान करनेका सामर्थ्य नहीं होवै तौ नित्यप्रति जलसें भरा कलश ब्राह्मणके घरमें देना. उसका मंत्र—"**एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः ।। अस्य प्रदानात् सकला मम संतु मनोरथाः**"—यही प्रतिपदा कल्पके आदिकी भी है. ऐसे ही वैशाख शुदि तृतीया, फाल्गुन वदि तृतीया, चैत्र शुदि पंचमी, माघ शुदि त्रयोदशी, कार्तिक शुदि सप्तमी, और मगशिरकी नवमी ये भी कल्पके आदिकी जाननी. इन तिथियोंमें श्राद्ध करनेसें पितरोंकी तृप्ति होती है. और कितनेक मुनियोंके मतमें चैत्र शुदि प्रतिपदा **मत्स्यजयंती** कहाती है. चैत्रमें दहीं, दूध, घृत, शहद, इन्होंका त्याग करके स्त्रीपुरुषका पूजनरूपी गौरीव्रत करना. चैत्र शुदि द्वितीयामें रात्रिमुखविषे बालकचंद्रमाका पूजनरूपी चंद्रव्रत करना. इसी द्वितीयामें दमनासें गौरीसहित शिवका पूजन करना. चैत्र शुदि तृतीयामें शिवसें संयुत हुई गौरीका पूजन करके **अंदोलनसंज्ञक व्रत** एक महीनापर्यंत करना. यहां तृतीया मुहूर्तमात्र भी होवै तब भी परविद्धा लेनी, और द्वितीयासें युक्त हुई तृतीया नहीं लेनी. चतुर्थीसें युत हुई तृतीयामें वैधृति आदि योग होवै तब भी वही ग्रहण करनी उचित है. क्योंकी द्वितीयाका योगरूपी निषेध अत्यंत बलवाला है. इसी तृतीयामें श्रीरामचंद्रजीके **दोलोत्सव**का आरंभ करके महीनापर्यंत पूजापूर्वक दोलोत्सव कराना. ऐसेही अन्य देवताओंके भी दोलोत्सव करने. यही तृतीया मन्वादि भी है. यहांही सब मन्वादि तिथियोंका निर्णय कहताहुं.–तहां चैत्रके शुक्लपक्षकी तृतीया और पूर्णिमा, ज्येष्ठकी पूर्णिमा, आषाढके शुक्लपक्षकी दशमी और पूर्णिमा, श्रावणके कृष्णपक्षकी अष्टमी, भाद्रपद शुदि तृतीया, आश्विन शुदि नवमी, कार्तिक शुदि द्वादशी, और पौर्णमासी, पौष शुदि एकादशी, माघ शुदि सप्तमी और फाल्गुनकी पौर्णमासी और अमावस ये चौदह तिथि मन्वादि जाननी. शुक्लपक्षकी मन्वादि तिथि दैवकर्ममें और पित्र्यकर्ममें पूर्वाण्हव्यापिनी लेनी. दो प्रकारसें विभक्त किये दिनका पूर्वभाग पूर्वाण्ह कहाता है. श्राद्ध आदि करनेका सो पूर्वाण्हकालमेंही करना. देवसंबंधी अथवा मनुष्यसंबंधी अपराधसें पूर्वाण्हकालमें श्राद्ध आदिके अनुष्ठान नहीं होनेमें अपराण्हकालव्यापिनी तिथि लेनी. दिनके पूर्वार्धमें अथवा अपराण्हमें श्राद्ध आदि करने. दिनके उत्तरार्धभागगत मध्यान्हकालमें नहीं करने ऐसा तात्पर्य है. कृष्णपक्षकी मन्वादि तिथि दैवकर्ममें और पित्र्यकर्ममें पांच प्रकारसें विभक्त किये दिनके चतुर्थ भागनामक अपराण्हकालव्यापिनी लेनी. मन्वादि

तिथियोंमें पिंडरहित श्राद्ध करना. इन मन्वादि तिथियोंमें श्राद्ध करनेसें दो हजार वर्षपर्यंत पितरोंकी तृप्ति होती है. मन्वादिश्राद्ध नित्य कहाता है. इसकों नहीं करनेमें—“ त्वं भुवः **प्रतिमानम्** ” इस ऋग्वेदके मंत्रका सौ १०० वार जपरूप प्रायश्चित्त है. ऐसेही ९६ श्राद्ध नित्य हैं, तिन्होंकों दिखाते हैं. अमाश्राद्ध १२, युगादि तिथिश्राद्ध ४, मन्वादि तिथिश्राद्ध १४, संक्रांतिश्राद्ध १२, वैधृतिश्राद्ध १२, व्यतीपातश्राद्ध १२, महालयश्राद्ध १५, अष्टकाश्राद्ध ५, अन्वष्टकाश्राद्ध ५, और पूर्वेद्युश्राद्ध ५, ऐसे ९६ श्राद्ध जान लेने.

अथदशावतारजयंत्यः चैत्रशुक्लतृतीयायामपराह्णेमत्स्योत्पत्तिः वैशाखपूर्णिमायांसायंकूर्मोत्पत्तिः भाद्रपदशुक्लतृतीयायामपराह्णेवराहोत्पत्तिः वैशाखशुक्लचतुर्दश्यांसायंनारसिंहावतारः भाद्रपदशुक्लद्वादश्यांमध्याह्नेवामनप्रादुर्भावः वैशाखशुक्लतृतीयायांमध्याह्नेपरशुरामोद्भवः प्रदोषेइतिबहवः चैत्रशुक्लनवम्यांमध्याह्नेदाशरथिरामव्यक्तिः श्रावणकृष्णाष्टम्यांनिशीथेश्रीकृष्णाविर्भावः आश्विनशुक्लदशम्यांसायंबुद्धोऽभूत् श्रावणशुक्लषष्ठ्यांसायंकल्किर्जातइतितत्तत्कालव्यापिन्योग्राह्याः अत्रमत्स्यकूर्मवराहबुद्धकल्किनामाषाढादिमासांतराणिएकादश्यादितिथ्यंतराणिप्रातरादिकालांतराणिचवचनांतरानुसारेणोक्तानिकल्पभेदेनव्यवस्थापनीयानि स्वस्वपरिगृहीतपक्षानुसारेणतत्तदुपासकैरुपोष्याणिश्रीरामकृष्णनृसिंहजयंत्यएवनित्याःसर्वैरुपोष्याः चैत्रशुक्लचतुर्थ्यांमध्याह्नव्यापिन्यांलड्डुकादिभिः श्रीगणेशमर्चयित्वादमनकारोपणंकुर्यात् विघ्ननाशंसर्वान्कामान्प्राप्नुयात् चैत्रशुक्लपंचम्यामनंतादिनागान्पूजयित्वाक्षीरसर्पिर्नैवेद्यंदद्यात् अस्यामेवपंचम्यांलक्ष्मीपूजनंअत्रैवचोच्चैःश्रवादिपूजनात्मकंहयव्रतमुक्तं अत्रसर्वत्रपंचमीसामान्यनिर्णयानुसारेणग्राह्या एवमग्रेपियत्रविशेषनिर्णयोनोच्यतेतत्रप्रथमपरिच्छेदोक्तएवनिर्णयोऽनुसंधेयः षष्ठ्यांस्कंदस्यदमनकारोपणं सप्तम्यांभास्करस्यदमनकपूजा नवम्यांदेव्याःसर्वदेवानांपूर्णमास्यामित्यन्यत्रविस्तरः चैत्रशुक्लाष्टम्यांभवान्याउत्पत्तिः तत्रनवमीयुताअष्टमीग्राह्या अत्रपुनर्वसुयुताष्टम्यामष्टाशोककलिकाप्राशनं तत्रमंत्रः त्वामशोकनराभीष्टमधुमाससमुद्भव पिबामिशोकसंतप्तोमामशोकंसदाकुर्विति अत्रैवयोगविशेषेकृत्यं पुनर्वसुबुधोपेताचैत्रेमासिसिताष्टमी प्रातस्तुविधिवत्स्नात्वावाजपेयफलंलभेदिति चैत्रशुक्लनवमीरामनवमी चैत्रशुक्लनवम्यांपुनर्वसुयुतायांमध्याह्नेकर्केलग्नेमेषस्थेसूर्येउच्चस्थेग्रहपंचकेश्रीरामजन्मश्रवणात् अस्यांमध्याह्नव्यापिन्यामुपोषणंकार्यम् पूर्वेद्युरेवमध्याह्नेसैत्त्वसेवग्राह्यादिनद्वयेमध्याह्नव्याप्तावव्याप्तौवापरा अष्टमीविद्धायाः निषेधात् अतःपूर्वेद्युः सकलमध्याह्नव्यापिनीमपित्यक्त्वामध्याह्नैकदेशव्यापिन्यपिपरैवग्राह्या केचित्त्वष्टमीविद्धांमध्याह्नव्यापिनींपुनर्वसुयुतामपित्यक्त्वापरेद्युस्त्रिमुहूर्तापिनवमीसर्वैरप्युपोष्या यदितुदशम्याह्रासवशेनपारणादिनेस्मार्तानामेकादशीव्रतप्राप्तिस्तदास्मार्तैरष्टमीविद्धोपोष्या वैष्णवैर्मुहूर्तत्रययुतापरैवोपोष्या शुद्धायानवम्याअलाभेमुहूर्तत्रयन्यूनत्वेवासर्वैरपिअष्टमीविद्धैवोपोष्येत्याहुः इदंव्रतंनित्यंकाम्यंच ॥

अब दश अवतारोंकी जयंतियोंको कहताहुं.

चैत्र शुदि तृतीयाविषे अपराण्हकालमें मत्स्यअवतार हुआ है, वैशाखकी पूर्णिमाविषे सायंकालमें कूर्मअवतार हुआ है, भाद्रपद शुदि तृतीयाविषे अपराण्हकालमें वराहअवतार

हुआ है, वैशाख शुदि चतुर्दशीविषे सायंकालमें नरसिंहअवतार हुआ है, भाद्रपद शुदि द्वादशीविषे मध्यान्हमें वामनअवतार हुआ है, वैशाख शुदि तृतीयाके दिन मध्यान्हकालमें परशुरामअवतार हुआ है. बहुतसे मुनि कहते हैं की परशुरामअवतार प्रदोषकालमें हुआ है. चैत्र शुदि नवमीकों मध्यान्हकालमें रामचंद्रका अवतार हुआ है, श्रावण वदि अष्टमीकों अर्धरात्रमें श्रीकृष्णका अवतार हुआ है, आश्विन शुदि दशमीकों सायंकालमें बुद्धअवतार हुआ है, और श्रावण शुदि षष्ठीकों सायंकालमें कल्कि अवतार हुआ है. ये सब तिथियां तत्कालव्यापिनी लेनी. यहां मत्स्य, कूर्म, वराह, बुद्ध, और कल्कि इन्होंके आषाढ आदि दूसरे महीने और एकादशी आदि दूसरी तिथि और प्रातःकाल आदि दूसरे काल अन्य वचनोंके अनुसार कहे हैं; परंतु कल्पभेदकरके उन्होंका निश्चय करना. अपने अपने परिगृहीत पक्षके अनुसार तिस तिस अवतारके उपासकोंनें उपवास करने उचित हैं. श्रीरामचंद्र, श्रीकृष्ण, नृसिंह, इन्होंकी जयंती नित्यही हैं, इसवास्ते सबोंनें उपवास करना उचित है. मध्यान्हकालव्यापिनी चैत्र शुदि चतुर्थीमें लड्डू आदि करके श्रीगणेशजीकी पूजा करके दमनाका आरोपण करना. उस्सें विघ्नोंका नाश होके मनुष्य सब कामनाओंकों प्राप्त होता है. चैत्र शुदि पंचमीकों शेष आदि सर्पोंकी पूजा करके दूध, घृत, नैवेद्य इन्होंकों अर्पण करना. इसी पंचमीमें लक्ष्मीका पूजन करना. और इसी पंचमीमें उच्चैःश्रवा आदि पूजनरूपी हयव्रत कहा है. यहां सब जगह सामान्य निर्णयके अनुसार पंचमी लेनी और ऐसेही आगे भी जानना. और जहां विशेष निर्णय नहीं कहा है तहां प्रथमपरिच्छेदमें कहा निर्णय जान लेना. षष्ठीके दिन स्वामिकार्तिककों दमना आरोपित करना. सप्तमीमें सूर्यकी दमनासें पूजा करनी. नवमीमें देवीकी दमनासें पूजा, और पौर्णमासीमें सब देवतोंकी दमनासें पूजा करनी. ऐसा अन्य ग्रंथमें लिखा है. चैत्र शुदि अष्टमीकों देवीकी उत्पत्ति हुई है. तहां नवमीसें युत हुई अष्टमी लेनी. यहां पुनर्वसु नक्षत्रसें युत हुई अष्टमीमें अशोकवृक्षकी आठ कलियोंका प्राशन करना. उसका मंत्र—**"त्वामशोक नराभीष्ट मधुमाससमुद्भव ॥ पिबामि शोकसंतप्तो मामशोकं सदा कुरु."**—यहां ही योगविशेषमें फल—"पुनर्वसु नक्षत्र और बुधवारसें युत हुई चैत्रमासकी शुदि अष्टमीकों प्रातःकालमें विधिसें स्नान करनेमें वाजपेययज्ञके फलकों मनुष्य प्राप्त होता है. चैत्र शुदि नवमी रामनवमी कहाती है. पुनर्वसु नक्षत्रसें युत हुई चैत्र शुदि नवमीमें मध्यान्हसमय कर्कलग्नमें और मेषराशिपर स्थित हुये सूर्यमें और उच्च राशियोंपर पांच ग्रहोंके होनेमें श्रीरामचंद्रका जन्म हुआ है. उपवास करनेका सो मध्यान्हव्यापिनी नवमीमें करना. पहले दिनमें मध्यान्हव्यापिनी होवै तौ पहली ही लेनी. दोनों दिनोंमें मध्यान्हव्यापिनी होवै अथवा नहीं होवै तब पिछली नवमी लेनी. अष्टमीसें विद्ध हुई नवमी नहीं लेनी ऐसा है, इस कारणसें पहले दिनकी मध्यान्हव्यापिनी नवमीकों भी त्यागकर मध्यान्हकी एकदेशव्यापिनी नवमी पिछली ही लेनी. कितनेक मुनि तौ अष्टमीसें विद्ध हुई और मध्यान्हव्यापिनी और पुनर्वसुसें युत हुई ऐसी नवमीकों त्यागकर परदिनमें तीन मुहूर्त अर्थात् ६ घडी नवमी होवै तौ भी वहही लेते हैं, और यही सबोंनें सेवनी उचित है. दशमीके क्षयके वशकरके पारणदिनमें स्मार्त मनुष्योंकी एकादशी प्राप्त हो जावै तब स्मार्त मनुष्योंनें अष्टमीविद्धा नवमीमें व्रत करना. और वैष्णवोंनें ६ घडी भी

नवमी होवै तौ परविद्धा ही लेनी. शुद्ध नवमी नहीं मिलै और ६ वडीसें भी कम नवमी होवै तब सबोंनें अष्टमीसें विद्ध हुई नवमी लेनी ऐसा कहते हैं. यह व्रत नित्य है और काम्य भी है.

अथव्रतप्रयोगः अष्टम्यामाचार्यसंपूज्य श्रीरामप्रतिमादानंकरिष्येऽहंद्विजोत्तम तत्राचार्यो भवप्रीतःश्रीरामोसित्वमेवमे इतिप्रार्थ्य नवम्याअंगभूतेनएकभक्तेनराघव इक्ष्वाकुवंशतिलकप्रीतोभवभवप्रियेत्येकभक्तंसंकल्प्यसाचार्योहविष्यंभुंजीत पूजामंडपंतत्रवेदिंचकृत्वानवम्यां प्रातः उपोष्यनवमींत्वद्ययामेष्वष्टसुराघव तेनप्रीतोभवत्वंमेसंसाराञ्चाहिमांहरेइत्युपोषणंसंकल्प्य इमांस्वर्णमयींरामप्रतिमांत्वांप्रयत्नतः श्रीरामप्रीतयेदास्येरामभक्तायधीमतेइतिप्रतिमादानंसंकल्पयेत् श्रीरामनवमीव्रतांगभूतांषोडशोपचारैःश्रीरामपूजांकरिष्येइतिसंकल्प्यवेदिकायांसर्वतोभद्रेकलशंसंस्थाप्यतत्रपूर्णपात्रेसवस्त्रेग्न्युत्तारणादिविधिनाप्रतिमायांश्रीरामंप्रतिष्ठाप्यपुरुषसूक्तेनषोडशोपचारैःसंपूज्यपुष्पपूजांते रामस्यजननीचासिरामात्मकमिदंजगत् अतस्त्वांपूजयिष्यामिलोकमातर्नमोस्तुते इतिकौसल्यांसंपूज्य ॐनमोदशरथायेतिदशरथंसंपूज्यसर्वपूजांसमाप्यमध्याह्नेफलपुष्पजलादिपूर्णेनशंखेनार्घ्यंदद्यात् तत्रमंत्रः दशाननवधार्थायधर्मसंस्थापनायच दानवानांविनाशाय दैत्यानांनिधनायच परित्राणायसाधूनांजातोरामः स्वयंहरिः गृहाणार्घ्यंमयादत्तंभ्रातृभिःसहितोनघेति रात्रौजागरणंकृत्वाप्रातर्नित्यपूजांविधाय मूलमंत्रेणपायसाष्टोत्तरशताहुतीर्हुत्वापूजांविसृज्याचार्यायप्रतिमांदद्यात् इमांस्वर्णमयींरामप्रतिमांसमलंकृतां शुचिवस्त्रयुगच्छन्नांरामोऽहंराघवायते श्रीरामप्रीतयेदास्येतुष्टोभवतुराघव इतिमंत्रः तवप्रसादंस्वीकृत्यक्रियतेपारणामया व्रतेनानेनसंतुष्टःस्वामिन्भक्तिंप्रमच्छमेइति प्रार्थ्य नवम्यंतेपारणांकुर्यात् इदंव्रतंमलमासेऽनकार्यं एवंजन्माष्टम्यादिव्रतमपिनकार्यं अस्यामेवनवम्यांदेवीनवरात्रसमाप्तिःकार्या एतन्निर्णयआश्विननवरात्रनवमीवत् ॥

अब नवमीव्रतका प्रयोग कहताहुं.

अष्टमीमें आचार्यकी पूजा करके "श्रीरामप्रतिमादानं करिष्येहं द्विजोत्तम ॥ तत्राचार्यो भव प्रीतः श्रीरामोसि त्वमेव मे" ॥ इस मंत्रसें प्रार्थना करके पीछे "नवम्या अंगभूतेन एकभक्तेन राघव ॥ इक्ष्वाकुवंशतिलक प्रीतो भव भवप्रिय" ऐसा एकभक्तव्रतका संकल्प करके आचार्यसहित आप हविष्यका भोजन करै. तहां पूजाका मंडप और वेदी बनाके नवमीके दिन प्रातःकालमें "उपोष्य नवमीं त्वद्य यामेष्वष्टसु राघव ॥ तेन प्रीतो भव त्वं मे संसाराञ्चाहि मां हरे" ॥ ऐसा उपवासका संकल्प करके "इमां स्वर्णमयीं राम प्रतिमां त्वां प्रयत्नतः ॥ श्रीरामप्रीतये दास्ये रामभक्ताय धीमते" ॥ ऐसा कहकर प्रतिमाके दानका संकल्प करै. पीछे "श्रीरामनमीव्रतांगभूतां षोडशोपचारैः श्रीरामपूजां करिष्ये" ऐसा संकल्प करके वेदिकाविषे सर्वतोभद्रमें कलशकों स्थापित कर तहां वस्त्रसहित पूर्णपात्रमें अग्न्युत्तारण आदि विधिकरके प्रतिमामें श्रीरामचंद्रकों प्रतिष्ठापित करके पुरुषसूक्त करके षोडशोपचारसें अच्छीतरह पूजा कर पुष्पोंकी पूजाके अंतमें "रामस्य जननी चासि रामात्मकमिदं जगत् ॥ अतस्त्वां पूजयिष्यामि लोकमातर्नमोस्तुते" ॥ ऐसा कहकर कौसल्याकी

पूजा करके "ॐनमो दशरथाय" इस मंत्रसें दशरथकी पूजा करनी. पीछे सब प्रकारकी पूजाओंकी समाप्ति करके मध्यान्हसमयमें फल, पुष्प, जल आदिसें पूर्ण किये शंखकरके अर्घ्य देवै. तहां मंत्र—"दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च ॥ दानवानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च ॥ परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोनघ." रात्रिमें जागरण करके पीछे प्रभातमें नित्यपूजा करके पीछे मूलमंत्रकरके खीरकी १०८ आहुतियोंसें होम करके पूजाका विसर्जन करना और आचार्यके लिये प्रतिमा देनी. तहां मंत्रः—"इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां समलंकृताम् ॥ शुचिवस्त्रयुगच्छन्नां रामोऽहं राघवाय ते ॥ श्रीरामप्रीतये दास्ये तुष्टो भवतु राघवः" ॥ इस मंत्रकों कहै. पीछे "तव प्रसादं स्वीकृत्य क्रियते पारणा मया ॥ व्रतेनानेन संतुष्टः स्वामिन् भक्तिं प्रयच्छ मे" ॥ ऐसी प्रार्थना करके नवमीके अंतमें पारणा करनी. यह व्रत मालमासमें नहीं करना. ऐसेही जन्माष्टमी आदि व्रत भी मलमासमें नहीं करने. इसी नवमीके दिन देवीके नवरात्रकी समाप्ति करनी. इसका निर्णय आश्विनके नवरात्रकी नवमीके समान है.

चैत्रशुक्लैकादश्यांश्रीकृष्णस्यांदोलनोत्सवः दोलारूढंप्रपश्यंतिकृष्णंकलिमलापहं अपराधसहस्रैस्तुमुक्तास्तेधूननेकृते तावत्तिष्ठंतिपापानिजन्मकोटिकृतान्यपि क्रीडंतेविष्णुनासार्धंवैकुंठंदेवपूजिताइत्यादिकस्तन्महिमा चैत्रशुक्लद्वादश्यांविष्णोर्दमनोत्सवः सचपारणाहे पारणाहेनलभ्येतद्वादशीघटिकापिचेत् तदात्रयोदशीग्राह्यापवित्रदमनार्पणेइत्युक्तेशिवस्यतुचतुर्दश्यांकार्यः ॥

चैत्र शुदि एकादशीमें श्रीकृष्णका दोलोत्सव[1] होता है. चैत्र शुदि द्वादशीकों विष्णुका दमनोत्सव करना. यह उत्सव पारणाके दिन करना. पारणाके दिन एक घडी भी द्वादशी नहीं मिलै तब पवित्र दमनाके अर्पणमें त्रयोदशी ग्रहण करनी उचित है ऐसा वचन है. महादेवका दमनोत्सव चतुर्दशीमें करना.

अथप्रयोगः उपवासदिनेनित्यपूजांकृत्वादमनकस्थानंगत्वाक्रयेणतमादायचंदनादिनासंपूज्यश्रीकृष्णपूजार्थंत्वांनेष्येइतिप्रार्थ्यप्रणमेत् अन्यदेवतासुयथादैवतमूहः ततोदमनकंगृहमानीयपंचगव्येनशुद्धोदकेनचप्रक्षाल्यदेवाग्रेस्थापयित्वातस्मिन्दमनकेअशोककालवसंतकामान्काममात्रंवागंधादिभिःपूजयेत् तत्रनमोस्तुपुष्पबाणायजगदाल्हादकारिणे मन्मथायजगन्नेत्रे रतिप्रीतिप्रियायतेइतिकामावाहनमंत्रः कामभस्मसमुद्भूतरतिबाष्पपरिप्लुत ऋषिगंधर्वदेवादिविमोहकनमोस्तुतेइतिदमनकमुपस्थाय ॐ कामायनमइतिमंत्रेणसपरिवारायकामरूपिणेदमनकायगंधाद्युपचारान्दद्यात् ततोरात्रौदेवंसंपूज्याधिवासनंकुर्यात् तदित्थं देवाग्रेसर्वतोभद्रं संपाद्यतत्रकलशंसंस्थाप्यतत्रधौतवस्त्राच्छन्नंदमनकं वैणवपटलेस्थापितंनिधाय पूजार्थंदेवदेव

---

[1] "कलिसंबंधी पापके नाश करनेहारे जो कृष्णजी सो हिंडोलामें झूलते हैं ऐसे जो देखते हैं सो हजारों अपराधोंसें मुक्त होते हैं. आंदोलन करनेसें कोटिजन्मके पाप नष्ट होके वह मनुष्य वैकुंठमें देवताओंकों पूज्य होकर विष्णुकेसाथ क्रीडा करता है." ऐसी इस आंदोलन उत्सवकी महिमा है.

स्यविष्णोर्लक्ष्मीपतेःप्रभो दमनत्वमिहागच्छसान्निध्यंकुरुतेनमइतिदमनकदेवतामावाह्यप्रागाद्यष्टदिक्षुक्लींकामदेवायनमोह्रींरत्यैनमः १ क्लींभस्मशरीरायनमोह्रींरत्यैनमः २ क्लींअनंगायनमोह्रींरत्यै० ३ क्लींमन्मथायनमोह्रींरत्यै० ४ क्लींवसंतसखायनमोह्रींरत्यै० ५ क्लींस्मरायनमोह्रींरत्यै० ६ क्लींइक्षुचापायनमोह्रींरत्यै० ७ क्लींपुष्पबाणायनमोह्रींरत्यै० ८ इतिपूजयेत् तत्पुरुषायविद्महेकामदेवायधीमहि तन्नोऽनंगःप्रचोदयात् इतिगायत्र्यादमनकमष्टोत्तरशतमभिमंत्र्यगंधादिभिःसंपूज्यह्रींनमइतिपुष्पांजलिंदत्वानमोस्तुपुष्पबाणायेतिपूर्वोक्तावाहनमंत्रेणनमेत् क्षीरोदधिमहानागशय्यावस्थितविग्रह प्रातस्त्वांपुजयिष्यामिसन्निधौभवतेनमइति देवंप्रार्थ्यपुष्पांजलिंदत्वातस्यामेकादश्यांरात्रौजागरणंकुर्यात् प्रातर्नित्यपूजांकृत्वापुनर्देवंसंपूज्यदूर्वागंधाक्षतयुतांदमनकमंजरीमादायमूलमंत्रंपठित्वा देवदेवजगन्नाथवांछितार्थप्रदायक हृत्स्थान्पूरयमेविष्णोकामान्कामेश्वरीप्रिय इदंदमनकंदेवगृहाणमदनुग्रहात् इमांसांवत्सरींपूजांभगवन्परिपूरय पुनर्मूलंजप्त्वादेवेदमनमर्पयेत् ततोयथाशोभंदत्वांगदेवताभ्योदत्वादेवंप्रार्थयेत् मणिविद्रुममालाभिर्मंदारकुसुमादिभिः इयंसांवत्सरीपूजातवास्तुगरुडध्वज वनमालांयथादेवकौस्तुभंसंततंहृदि तद्वद्दामनकींमालांपूजांचहृदयेवह जानताजानतावापिनकृतंयत्तवार्चनं तत्सर्वंपूर्णतांयातुत्वत्प्रसादाद्रमापते जितंतेपुंडरीकाक्षनमस्तेविश्वभावन हृषीकेशनमस्तेस्तुमहापुरुषपूर्वज मंत्रहीनमित्यादिचसंप्रार्थ्यपंचोपचारैर्देवंसंपूज्यनीराज्यब्राह्मणेभ्योदमनंदत्वास्वयंशेषंसंधार्यसुहृद्युतःपारणांकुर्यात् मंत्रदीक्षारहितैर्नाम्नार्पणीयं अस्यगौणकालः श्रावणमासावधिः नेदंमलमासेभवति शुक्रास्तादौतुकर्तव्यं इतिदमनारोपणविधिः अस्यामेवभारतेअहोरात्रेणद्वादश्यांचैत्रेविष्णुरितिस्मरन् पुंडरीकमवाप्नोति देवलोकंचगच्छतीति।।

अब दमनाके उत्सवका प्रयोग कहताहुं.

व्रतके दिन नित्यपूजा करके दमनाके स्थानमें गमन कर क्रमसें तिस दमनाकों बेचाता ग्रहण करना. पीछे चंदन आदिसें पूजा करके श्रीकृष्णकी पूजाके लिये तुझकों ले जाता हुं ऐसी प्रार्थना करके प्रणाम करना. और अन्य देवताओंमें देवताके अनुसार विचार कर लेना. पीछे दमना घरकों लायकर पंचगव्य और शुद्ध पानीसें धोके देवताके आगे स्थापित कर तिस दमनामें अशोक, काल, वसंत, कामदेव इन्होंकी इच्छाके अनुसार गंधआदिसें पूजा करनी. तहां मंत्रः—“नमोस्तु पुष्पबाणाय जगदाल्हादकारिणे ।। मन्मथाय जगन्नेत्रे रतिप्रीतिप्रियाय ते” ।। ऐसा कामदेवके आवाहनका मंत्र है. पीछे “काम भस्मसमुद्भूत रतिबाष्पपरिप्लुत ।। ऋषिगंधर्वदेवादि विमोहक नमोस्तु ते” ।। इस मंत्रसें दमनाका उपस्थान करके “ॐ कामाय नमः” इस मंत्रकरके कुटुंबसहित कामदेवरूपी दमनाके लिये गंध आदि उपचारोंकों अर्पण करना. पीछे रात्रिमें देवकी पूजा करके अधिवासन करना. सो दिखाते हैं.—देवताके आगे सर्वतोभद्र रचके उसके उपर कलशकों स्थापित करके उस कलशके उपर धोये हुये वस्त्रसें आच्छादित किये हुए दमनाकों वांसके पटलपर स्थापित करके “पूजार्थं देवदेवस्य विष्णोर्लक्ष्मीपतेः प्रभो ।। दमन त्वमिहागच्छ सान्निध्यं कुरु ते नमः” ।। ऐसा दमनाके देवताका आवाहन करके पूर्व आदि आठ दिशाओंमें “क्लीं कामदेवाय नमो ह्रीं रत्यै नमः १, क्लीं भस्मशरीराय नमो ह्रीं रत्यै नमः २, क्लीं अनंगाय नमो

ह्रीं रत्यै नमः ३, क्लीं मन्मथाय नमो ह्रीं रत्यै नमः ४, क्लीं वसंतसखाय नमो ह्रीं रत्यै नमः ५, क्लीं स्मराय नमो ह्रीं रत्यै नमः ६, क्लीं इक्षुचापाय नमो ह्रीं रत्यै नमः ७, क्लीं पुष्पबाणास्त्राय नमो ह्रीं रत्यै नमः ८” ऐसी पूजा करनी. तिसके अनंतर “तत्पुरुषाय विद्महे कामदेवाय धीमहि ॥ तन्नोऽनंगः प्रचोदयात्” इस गायत्रीकरके एकसौ आठवार दमनाकों अभिमंत्रित करके गंध आदिसें पूजा करनी. तिसके अनंतर “ह्रीं नमः” इस मंत्रसें पुष्पांजलि देके “नमोस्तु पुष्पबाणाय०” इस पूर्वोक्त आवाहनमंत्रकरके प्रणाम करना. पीछे “क्षीरोदधिमहानाग पुष्पावस्थितविग्रह ॥ प्रातस्त्वां पूजयिष्यामि सन्निधौ भव ते नमः” इस मंत्रकरके देवकी प्रार्थना कर पुष्पांजलि देनी और तिसी एकादशीकी रात्रिमें जागरण करना. पीछे प्रातःकालमें नित्यपूजा करके फिर देवताकी पूजा करके दूर्वा, गंध, चावलोंके अक्षत इन्होंसें युत हुई दमनाकी मंजरीकों ग्रहण करके मूलमंत्रका पाठ करके “देवदेव जगन्नाथ वांछितार्थप्रदायक ॥ हृत्स्थान् पूरय मे विष्णो कामान् कामेश्वरीप्रिय ॥ इदं दमनकं देव गृहाण मदनुग्रहात् ॥ इमां सांवत्सरीं पूजां भगवन्परिपूरय”—ऐसे मंत्रकों कहके फिर मूलमंत्रका जप करके देवताविषे दमनाकों अर्पित करना. पीछे शोभाके अनुसार दमना अर्पण करना. पीछे अंगदेवतोंकों देके देवताकी प्रार्थना करनी. तहां मंत्रः—“मणिविद्रुममालाभिर्मंदारकुसुमादिभिः ॥ इयं सांवत्सरी पूजा तवास्तु गरुडध्वज ॥ वनमालां यथा देव कौस्तुभं सततं हृदि ॥ तद्वद्दामनकीं मालां पूजां च हृदये वह ॥ जानताऽजानता वापि न कृतं यत्तवार्चनम् ॥ तत्सर्वं पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाद्रमापते ॥ जितं ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ॥ हृषीकेश नमस्तेस्तु महापुरुषपूर्वज ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनम्०” इस आदि मंत्रसें प्रार्थना करके पंचोपचारसें देवकी पूजा और आरति करनी. तिसके अनंतर ब्राह्मणोंके लिये दमना देकर शेष रहेगा सो आप धारण करना और मित्रगणोंसें युत हुआ पारणा करनी. मंत्रदीक्षासें रहित हुये मनुष्योंनें नाममंत्रसें दमनाका अर्पण करना. इस दमनोत्सवका गौणकाल श्रावण महीनातक है. और यह उत्सव अधिकमासमें नहीं करना. शुक्र और बृहस्पतिके अस्त आदिमें यह कर्म हो सकता है. यह दमनारोपणकी विधि है. इसी चैत्र शुदि द्वादशीमें दिनरात्रिकरके विष्णुका जो स्मरण करता है वह मनुष्य पुंडरीकयज्ञके फलकों प्राप्त होके विष्णुलोकमें प्राप्त होता है ऐसा भारतमें कहा है.

चैत्रशुक्लत्रयोदश्यामनंगपूजनव्रतं तत्रत्रयोदशीपूर्वविद्धाग्राह्या अथचतुर्दश्यांनृसिंहस्य दोलोत्सवः अत्रैवश्रीशिवस्यैकवीरायाभैरवस्यचदमनकैःपूजनं अत्रचचतुर्दशीपूर्वविद्धापराह्णव्यापिनीग्राह्या अपराह्णव्याप्त्यभावेपराह्णस्पर्शिन्यपिपूर्वाग्राह्या तदभावेपराग्राह्या चैत्रपौर्णमासीसामान्यनिर्णयात्पराग्राह्या पूर्वोक्ततत्तत्तिथौदमनकपूजनाकरणेस्यामेवसर्वदेवानांदमनकपूजनं चैत्र्यांचित्रायुतायांचित्रवस्त्रदानंसौभाग्यदं रविगुरुमंदवारयुतचैत्र्यांस्नानश्राद्धादिभिरश्वमेधपुण्यंचैत्रस्यशुक्लैकादश्यांपौर्णमास्यांवामेषसंक्रांतिमारभ्यवावैशाखस्नानारंभः तत्रमंत्रः वैशाखंसकलंमासंमेषसंक्रमणेरवेः प्रातःसनियमःस्नास्येप्रीयतांमधुसूदनः मधुहंतुःप्रसादेनब्राह्मणानामनुग्रहात् निर्विघ्नमस्तुमेपुण्यंवैशाखस्नानमन्वहं माधवेमेषगेभानौमुरारेम

धुसूदन प्रातःस्नानेनमेनाथफलदोभवपापहन्निति अत्रहविष्याशनब्रह्मचर्यादयोनियमाः एवं संपूर्णस्नानाशक्तौत्रयोदश्यादिदिनत्रयमंतेस्नायात् इयंपौर्णमासीमन्वादिः पूर्वमुक्ताचैत्रकृष्णत्रयोदशीशततारकानक्षत्रयुतावारुणीसंज्ञकास्नानादिनाग्रहणादिपर्वतुल्यफलदा शनिवारयुक्तामहावारुणीशुभयोगशनिवारशततारकायुक्तामहामहावारुणी वारुणीयोगेकृष्णादिःपौर्णमास्यंतोमासस्तेनामांतमासेफाल्गुनकृष्णत्रयोदशीग्राह्येतिबोध्यं चैत्रकृष्णचतुर्दश्यांशिवसन्निधौस्नानेनभौमवारयुतायांगंगायांस्नानेनपिशाचत्वाभावःफलं ॥ इति श्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेचैत्रमासकृत्यनिर्णयउद्देशःसमाप्तः ॥

चैत्र शुदि त्रयोदशीमें कामदेवका पूजन और व्रत होता है. तहां पूर्वविद्धा त्रयोदशी लेनी. चैत्र शुदि चतुर्दशीमें नृसिंहजीका दोलोत्सव करना. यही चतुर्दशीके दिन महादेव, एकवीरा देवी, भैरव, इन्होंकी दमनाकरके पूजा करनी. यहां अपराण्हकालव्यापिनी चतुर्दशी पूर्वविद्धा लेनी. अपराण्हकालमें जो चतुर्दशी नहीं होवै तब अपराण्हमें स्पर्श करनेवाली भी पूर्वविद्धा लेनी. तिसके अभावमें परविद्धा लेनी. चैत्रकी पौर्णमासी सामान्य निर्णयसें परविद्धा लेनी. पहले कही हुई तिस तिस तिथियोंमें दमनासें पूजा नहीं किई जावै तौ इसी पौर्णमासीमें सब देवतोंकी दमनासें पूजा करनी. चित्रानक्षत्रसें युत हुई चैत्रकी पौर्णमासीमें चित्रवस्त्रका दान सौभाग्यकों देता है. और अंतवार, बृहस्पतिवार, शनिवार इन्होंसें युत हुई चैत्रकी पौर्णमासीमें स्नान और श्राद्ध आदिके करनेमें अश्वमेधयज्ञका फल मिलता है. चैत्र शुदि एकादशीमें अथवा पौर्णमासीमें अथवा मेषकी संक्रांति इन्होंमेंसें कीसीक भी दिनमें वैशाखस्नानका आरंभ करना. तहां मंत्रः—“**वैशाखं सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः ॥ प्रातः सनियमः स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदनः ॥ मधुहंतुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात् ॥ निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम् ॥ माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन ॥ प्रातःस्नानेन मे नाथ फलदो भव पापहन्**” ॥ यहां हविष्यअन्न भोजनका और ब्रह्मचर्य आदिका नियम है. इस तरह संपूर्ण मासतक स्नान करनेका सामर्थ्य नहीं होवै तौ अंतकी त्रयोदशीसें आरंभ कर तीन दिन स्नान करना. यह पौर्णमासी मन्वादि तिथि है ऐसा पहलेही कहा है. चैत्र वदि त्रयोदशीकों शतभिषा नक्षत्र होवै तौ वारुणी होती है, तहां स्नान आदि करनेसें ग्रहण आदि पर्वके तुल्य फल मिलता है. चैत्र वदि त्रयोदशीकों शनिवार होवै तौ **महावारुणी** होती है और शुभयोग, शनिवार, शतभिषा नक्षत्र इन्होंसें युत हुई त्रयोदशी **महामहावारुणी** होती है. वारुणी योगमें कृष्ण पक्षकी प्रतिपदासें आरंभ कर पौर्णमासीतक महीना होता है, तिस करके अमावसतक महीनेके होनेमें फाल्गुन वदि त्रयोदशी लेनी उचित है. चैत्र वदि चतुर्दशीकों शिवके समीपमें स्नान करनेसें और मंगलवारसें युत हुई चैत्र वदि चतुर्दशीकों गंगाजीमें स्नान करनेसें पिशाचपना दूर होता है. यह फल है. **इति चैत्रमासकृत्यनिर्णयो नाम प्रथम उद्देशः ॥ १ ॥**

अथवैशाखमासः ॥ अत्रवृषसंक्रमेपूर्वाःषोडशनाडिकाःपुण्यकालः रात्रौचप्रागुक्तं अत्रप्रातःस्नानंतिलैःपितृतर्पणंधर्मघटदानंचकार्यं अत्रब्राह्मणानांगंधमाल्यपानककदलीफलादिभिर्वसंतपूजाकार्या वैशाखेज्येष्ठेवायत्रमासेऊष्मबाहुल्यंतत्रप्रातर्नित्यपूजांकृत्वागंधोदकपूर्णोपा

त्रेविष्णुं संस्थाप्यपंचोपचारैः संपूज्यतत्रैवजलेसूर्यास्तपर्यंतमाधिवास्यरात्रौस्वस्थानेस्थापयित्वा पंचोपचारैः पूजयेत्तेनतीर्थोदकेनगृहदारादियुतमात्मानंपावयेत् एतच्चद्वादश्यांदिवानकार्यं रात्रौकिंचित्कालंजलस्थंपूजयित्वास्वस्थानेस्थापयेत् अत्रमासेकृष्णगौराख्यतुलसीभिर्विष्णुं त्रिकालमर्चयेन्मुक्तिःफलं प्रातःस्नात्वाबहुतोयेनाश्वत्थमूलंसिंचेत्प्रदक्षिणाश्चकुर्यात्अनेककुलतारणंफलं एवंगवांकंडूयनेपिअत्रमासेएकभक्तंनक्तमयाचितंवासर्वेप्सितफलदं अत्रमासे प्रपादानंदेवेगलंतिकाबंधनंव्यजनच्छत्रोपानच्चंदनादिदानंमहाफलं यदावैशाखोमलमासोभवतितदा काम्यानांतत्रसमाप्तिनिषेधान्मासद्वयंवैशाखस्नानहविष्याशनादिनियमाअनुष्ठेयाः चांद्रायणादिकंतुमलेपिसमापनीयं वैशाखशुक्लतृतीयायांगंगास्नानंयवहोमोयवदानंयवाशनंचसर्वपापापहं यःकरोतितृतीयायांकृष्णंचंदनभूषितं वैशाखस्यसितेपक्षेसयात्यच्युतमंदिरं इयमक्षय्यतृतीयासंज्ञिका अस्यांयत्किंचिज्जपहोमपितृतर्पणदानादिक्रियतेतत्सर्वमक्षयं इयंरोहिणीबुधयोगेमहापुण्या अस्याःजपहोमादिकृत्येपिवक्ष्यमाणयुगादिवन्निर्णयः इयंकृतयुगस्यादिः अत्रयुगादिश्राद्धमपिंडकमनुष्ठेयं श्राद्धासंभवेतिलतर्पणमप्यत्रकार्यं अत्रशुक्लयुगादिकृत्यंपूर्वाह्णेकार्यं तत्रासंभवेपराह्णेपि कृष्णयुगादिकार्यंत्वपराह्णेइत्यादिमन्वादिप्रकरणोक्तोनिर्णयः द्वेधाविभक्तदिनपूर्वार्धैकदेशव्यापिनीदिनद्वयेचेत्त्रिमुहूर्ताधिकव्याप्तिसत्त्वेपरा त्रिमुहूर्तन्यूनत्वेपूर्वा मन्वादौचयुगादौचग्रहणेचंद्रसूर्ययोः व्यतीपातेवैधृतौचतत्कालव्यापिनीक्रियेतिवचनेन साकल्यव्याप्तिवाक्यानामपवादात्श्राद्धादिकंतृतीयामध्येएवकर्तव्यं पुरुषार्थचिंतामणौतुसप्तमाष्टमनवममुहूर्तानांगांधर्वकुतुपरौहिणसंज्ञकानांयुगादिश्राद्धकालत्वात् शुक्ले मध्यमदिनमानेत्रयोदश्यादिपंचदश्यंतघटीत्रयव्यापिन्यांश्राद्धं कृष्णेतुषोडशीमारभ्यघटीत्रये उभयत्रतादृशघटीत्रयव्याप्तौसत्यामसत्यांवाशुक्लापरा यदातुपरेद्युस्त्रयोदशघटीतः पूर्वसमाप्ता पूर्वेद्युस्त्रयोदश्यादिघटीत्रयेतदेकदेशेवाविद्यतेतदाकर्मकालशास्त्रबाहुल्यात्पूर्वैवग्राह्येत्युक्तंइदमेवयुक्तमितिभातिअत्रदेवतोद्देशेनपित्रुद्देशेनचोदकुंभदानमुक्तं तत्रश्रीपरमेश्वरप्रीतिद्वाराउदकुंभदानकल्पोक्तफलावाप्त्यर्थंब्राह्मणायोदकुंभदानंकरिष्ये इतिसंकल्प्यसूत्रवेष्टितंगंधफलयवाद्युपेतंकलशंपंचोपचारैर्ब्राह्मणंचसंपूज्य एषधर्मघटोदत्तोब्रह्मविष्णुशिवात्मकः अस्यप्रदानात्सकलाममसंतुमनोरथाइतिमंत्रेणदद्यात् पित्रुद्देशेतुपितृणामक्षय्यतृप्त्यर्थंउदकुंभदानंकरिष्येइतिसंकल्प्यपूर्ववत्कुंभब्राह्मणौसंपूज्योदकुंभेगंधतिलफलादिनिक्षिप्य एषधर्मघटोदत्तोब्रह्मविष्णुशिवात्मकःअस्यप्रदानात्तृप्यंतुपितरोपिपितामहाः गंधोदकतिलैर्मिश्रंसान्नंकुंभंफलान्वितं पितृभ्यः संप्रदास्यामिह्यक्षय्यमुपतिष्ठत्वितिमंत्रेणदद्यात् युगादौसमुद्रस्नानंमहाफलं वैशाखस्याधिमासत्वेयुगादिश्राद्धंमासद्वयेपिकार्यं युगादिषूपवासोमहाफलः युगादिमन्वादौरात्रिभोजनेअभिस्ववृष्टिमितिमंत्रजपः युगादिश्राद्धलोपेयुगादिश्राद्धलोपजन्यप्रत्यवायपरिहारार्थंमृग्विधानोक्तंप्रायश्चित्तंकरिष्येइतिसंकल्प्य नयस्यद्यावेतिऋचंशतवारंजपेत् अयंनिर्णयःसर्वयुगादौ ज्ञेयः इतिअक्षय्यतृतीयानिर्णयः ॥

अब वैशाखमासके कृत्योंकों कहताहुं.

वृषसंक्रांतिमें पहली सोलह घडी पुण्यकाल है. रात्रिमें संक्रांति होवै तौ तिसविषे पहले कहा है सो जान लेना. इस महीनेमें प्रातःस्नान, तिलोंसें तर्पण और धर्मघटका दान

ये करने. ब्राह्मणोंकी गंध, माला, नागरपान, केलाके फल, इन आदिकरके वसंतपूजा करनी उचित है. वैशाखमें अथवा ज्येष्ठमें जब बहुत गर्मी होवै तब प्रातःकालमें नित्यपूजा करके चंदन और पानीसें पूर्ण हुये पात्रमें विष्णुकों स्थापित कर पंचोपचारकरके पूजा कर तहांही जलविषे सूर्यके अस्तपर्यंत अधिवासन करके रात्रिविषे अपने स्थानमें स्थापित कर पंचोपचारकरके पूजा करनी. पीछे तिस जलकरके गृह और स्त्रीसें युत हुये आपकों अभिषिंचित करना. यह कृत्य द्वादशीमें दिनकों नहीं करना. रात्रिमें कछुक कालतक जलमें स्थित हुयेकी पूजा करके अपने स्थानमें स्थापित करना. इस महीनेमें काली और गौरी तुलसीकरके विष्णुकी तीनों काल पूजा करनी. इस्सें मुक्ति होती है. प्रातःकालमें स्नान करके बहुतसे पानीसें पीपल वृक्षकी जडकों सींचै और परिक्रमाओंकों करै. इस्सें बहुतसे कुलोंका तारण होता है, ऐसा फल है. ऐसेही गायोंके खाजके करनेमें भी फलकी प्राप्ति होती है. इस महीनेमें एकभक्तव्रत, नक्तव्रत, अयाचितव्रत, करनेसें सब प्रकारके वांछित फल प्राप्त होते हैं. इस महीनेमें प्रपा अर्थात् पाऊका लगाना और देवताके लिये जलकी गलंतिकाकों बांधना और वीजना, छत्री, जूतीजोडा, चंदन इन आदिके दान महाफलकों देते हैं. जब वैशाख अधिकमास होवै तब काम्यव्रतोंकी समाप्तिका निषेध होनेसें दोनों महीनोंमें वैशाखस्नान और हविष्यका भोजन करना आदि नियम करने. चांद्रायण आदि व्रत तौ मलमासमें भी समाप्त करने. वैशाख शुदि तृतीयाकों गंगास्नान करना, जवोंका होम, जवोंका दान, जवोंका भोजन ये सब पापोंकों हरते हैं. "जो मनुष्य वैशाख शुदि तृतीयाकों श्रीकृष्णकों चंदनसें अलंकृत बनाता है, वह वैकुंठमें प्राप्त होता है." यह अक्षय्यतृतीया संज्ञक है. इसमें जो कछु जप, होम, पितृतर्पण, दान आदि किया जाता है वह सब अक्षय होता है. यह रोहिणी नक्षत्र और बुधवारके योगसें युक्त होवै तौ महापुण्यकों देती है. इसका जप होम आदि कृत्यमेंभी वक्ष्यमाण युग आदिकी तरह निर्णय जानना. यह कृतयुगकी आदि तिथि है. इसमें पिंडसें रहित युगादि श्राद्ध करना. श्राद्ध नहीं बन सकै तौ तिलोंसें तर्पण तौ भी करना. यहां शुक्लपक्षकी युगादि तिथीका कृत्य पूर्वाण्हमें करना और पूर्वाण्हमें नहीं बन सकै तौ अपराण्हकालमें करना. कृष्ण पक्षकी युगादि तिथियोंका कार्य अपराण्हमें करना. इस आदि मन्वादि प्रकरणमें निर्णय कहा है. यह तृतीया दो प्रकारसें विभक्त किये दिनके पूर्वार्धके एकदेशमें व्यापिनी होके ६ घडीसें अधिकव्यापिनी दोनों दिनोंमें होवै तब परविद्धा तिथि लेनी और ६ घडीसें कम होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी. "मन्वादि और युगादि तिथिमें चंद्रमा और सूर्यके ग्रहणमें, व्यतीपात और वैधृति इन आदिमें जो क्रिया करनेकी सो तत्कालव्यापिनी तिथिमें करनी उचित है, इस वचनसें साकल्यव्याप्तिवाक्योंके अपवादके होनेसें श्राद्ध आदि तौ तृतीयाके मध्यमेंही करना उचित है. पुरुषार्थचिंतामणिमें तौ सातमा, आठमा, नवमा, इन मुहूर्तोंकी **गांधर्व, कुतुप, रौहिण,** ये संज्ञा हैं और ये सब युगादि तिथियोंके श्राद्धकाल हैं, इस लिये शुक्लपक्षमें मध्यम दिनमान होवै तब तेरहमी घडीसें आरंभ कर पंदरहमी घडीतक व्याप्त होनेवाली तिथिमें श्राद्ध करना और कृष्णपक्षमें सोलहमी घडीसें आरंभ कर तीन घडीतक श्राद्ध करना, और दोनों जगह तिसी प्रकारकी तीन घडी व्याप्त होवै अथवा नहीं होवै तब शुक्लपक्षमें दूसरे दिन श्राद्ध करना. जो परदि-

नमें तेरह घडीके पहले समाप्ति होवै और पूर्व दिनमें त्रयोदशी आदि तीन घडीमें अथवा तिसके एकदेशमें विद्यमान होवै तब कर्मकाल शास्त्रके बहुतपनेसें पहिलीही लेनी ऐसा कहा है, और यही योग्य है ऐसा मेरेकूं लगता है. यह तृतीयाके दिन देवताके उद्देशकरके और पितरोंके उद्देशकरके जलसें भरे हुये घटका दान कहा है. तहां मंत्रः—"श्रीपरमेश्वरप्रीतिद्वारा उदकुंभदानकल्पोक्तफलावाप्त्यर्थं ब्राह्मणायोदकुंभदानं करिष्ये" ऐसा संकल्प करके सूत्रसें वेष्टित और गंध, फल, यव आदिसें संयुक्त हुये कलशकों और ब्राह्मणकों पंचोपचारसें पूजित करके "**एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः ॥ अस्य प्रदानात्सकला मम संतु मनोरथाः**" ॥ इस मंत्रकरके कलशका दान करना. पितरोंके उद्देशसें देना होवै तौ "**पितॄणामक्षय्यतृप्त्यर्थं उदकुंभदानं करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके पहलेकी तरह कलश और ब्राह्मणकी पूजा कर कलशमें चंदन, तिल, फल, इन आदिकों डालकर "**एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः ॥ अस्य प्रदानात्तृप्यंतु पितरोपि पितामहाः ॥ गंधोदकतिलैर्मिश्रं सान्नं कुंभं फलान्वितम् ॥ पितृभ्यः संप्रदास्यामि ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु**" ॥ इस मंत्रकरके देना. युगादि तिथियोंमें समुद्रविषे स्नान करनेसें बहुतसा फल मिलता है. जो वैशाख अधिकमास होवै तौ युगादि श्राद्ध दोनों महीनोंमें करना. युगादि तिथियोंमें किया उपवास महाफलकों देता है. युगादि और मन्वादि तिथियोंमें रात्रिके भोजनविषे "**अभिस्ववृष्टि०**" इस मंत्रका जप करना. युगादि तिथियोंमें श्राद्ध नहीं किया जावै तौ "**युगादिश्राद्धलोपजन्यप्रत्यवायपरिहारार्थमृमविधानोक्तं प्रायश्चित्तं करिष्ये**" इस प्रकार संकल्प करके "**नयस्यद्यावा०**" इस मंत्रकों सौ १०० वार जपना. यह निर्णय सब युगादि तिथियोंमें जानना. इस तरह अक्षय्यतृतीयाका निर्णय समाप्त हुआ.

इयमेवतृतीयापरशुरामजयंती इयंरात्रिप्रथमयामव्यापिनीग्राह्या पूर्वेद्युरेवप्रथमयामव्याप्तौ पूर्वा दिनद्वयेरात्रिप्रथमयामेसाम्येनवैषम्येणवैकदेशव्याप्तौपरा अत्रप्रदोषेपरशुरामंसंपूज्यार्घ्यंदद्यात् तत्रमंत्रः जमदग्निसुतोवीरक्षत्रियांतकरप्रभो गृहाणार्घ्यंमयादत्तंकृपयापरमेश्वरेति वैशाखशुक्लसप्तम्यांगंगोत्पत्तिस्तस्यांमध्याह्नव्यापिन्यांगंगापूजनंकार्यं दिनद्वयेतद्व्याप्तौपूर्वा वैशाखमासेद्वादश्यांपूजयेन्मधुसूदनं अग्निष्टोममवाप्नोतिसोमलोकंचगच्छति वैशाखशुक्लचतुर्दशीनृसिंहजयंती सासूर्यास्तमयकालव्यापिनीग्राह्या दिनद्वयेतद्व्याप्तौतदव्याप्तौवापरैव स्वाती नक्षत्रशनिवारादियोगेसातिप्रशस्ता ॥

यही तृतीया परशुरामजयंती है. यह रात्रिके प्रथम प्रहरमें व्याप्त होनेवाली लेनी. पहले ही दिनमें प्रथम प्रहरमें व्याप्त होवै तौ पहली लेनी. दोनों दिनोंमें रात्रिके प्रथम प्रहरमें समानपनेसें अथवा विषमपनेसें एकदेशमें व्याप्त होवै तौ पिछली लेनी. इस तिथिविषे प्रदोषकालमें परशुरामजीकी पूजा करके अर्घ्य देना. तहां मंत्र—"**जमदग्निसुतो वीर क्षत्रियांतकर प्रभो ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर**" ॥ वैशाख शुदि सप्तमीकों गंगाजीकी उत्पत्ति हुई है. इसवास्ते मध्यान्हव्यापिनीमें गंगाजीका पूजन करना उचित है. दोनों दिनोंमें मध्यान्हसमयविषे सप्तमी होवै तौ पहली लेनी. "वैशाखमहीनेमें द्वादशीकों विष्णुकी **पूजा करनी, इस्सें मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञके फलकों प्राप्त होके सोमलोककों प्राप्त होता है.**"

वैशाख शुदि चतुर्दशीमें **नृसिंहजयंती** होती है, यह सूर्यके अस्तकालमें व्याप्त होनेवाली लेनी. दोनों दिन अस्तसमयमें चतुर्दशी होवै अथवा नहीं होवै तब पिछलीही लेनी. स्वातीनक्षत्र तथा शनिवार आदिके योगमें यह चतुर्दशी अतिश्रेष्ठ होती है.

अथव्रतप्रयोगः त्रयोदश्यांकृतैकभक्तश्चतुर्दश्यांमध्याह्नेतिलामलकैःस्नात्वा उपोष्येहंनारसिंहभुक्तिमुक्तिफलप्रद शरणंत्वांप्रपन्नोस्मिभक्तिंमेनृहरेदिशेतिमंत्रेणव्रतंसंकल्प्याचार्यंवृत्वा सायंकालेधान्यस्थोदकुंभेपूर्णपात्रेसौवर्णप्रतिमायांषोडशोपचारैर्देवंसंपूज्यार्घ्यंदद्यात् तत्रमंत्रः परित्राणायसाधूनांजातोविष्णोनृकेसरी गृहाणार्घ्यंमयादत्तंसलक्ष्मीर्नृहरिःस्वयंरात्रौजागरणंकृत्वा प्रातर्देवंसंपूज्यविसृज्याचार्यायधेनुयुतांप्रतिमांदद्यात् तत्रमंत्रः नृसिंहाच्युतगोविंदलक्ष्मीकांतजगत्पते अनेनार्चाप्रदानेनसफलाःस्युर्मनोरथाः अथप्रार्थना मद्वंशेयेनराजातायेजनिष्यंतिचापरे तांस्त्वमुद्धरदेवेशदुःसहाद्भवसागरात् पातकार्णवमग्नस्यव्याधिदुःखांबुवारिधेः नीचैश्चपरिभूतस्यमहादुःखागतस्यमे करावलंबनंदेहिशेषशायिन्जगत्पते श्रीनृसिंहरमाकांतभक्तानांभयनाशन क्षीरांबुधिनिवासत्वंचक्रपाणेजनार्दन व्रतेनानेनदेवेशभुक्तिमुक्तिप्रदोभवेति ततोब्राह्मणैःसहतिथ्यंतेपारणंकार्यं यामत्रयोर्ध्वगामिन्यांचतुर्दश्यांतुपूर्वाह्णएवपारणं पौर्णमास्यांशृतान्नसहितोदकुंभदानेगोदानफलं स्वर्णतिलयुक्तद्वादशोदकुंभदानेब्रह्महत्यापापान्मुक्तिः अत्रयथाविधिकृष्णाजिनदानेपृथ्वीदानफलं स्वर्णमधुतिलसर्पिर्युतकृष्णाजिनदाने सर्वपापनाशः अत्रतिलस्नानंतिलहोमस्तिलपात्रदानंतिलतैलेनदीपदानं तिलैःपितृतर्पणंमधुयुक्ततिलदानंचमहाफलं तत्रतिलपात्रदानमंत्रः तिलावैसोमदैवत्याःसुरैःसृष्टास्तुगोसवे स्वर्गप्रदाःस्वतंत्राश्चतेमांरक्षंतुनित्यशः वैशाखशुक्लद्वादश्यांपौर्णमास्यांवावैशाखस्नानोद्यापनं एकादश्यांपौर्णमास्यांवोपोष्यकलशेसुवर्णप्रतिमायांसलक्ष्मीकंविष्णुंसंपूज्यरात्रौजागरणंकृत्वा प्रातर्गृहपूजनपूर्वकंपायसेनतिलाज्यैर्वायवैर्वाअष्टोत्तरशतंहोमःप्रतद्विष्णुरितिवाइदंविष्णुरितिवामंत्रेणकार्यः सांगतार्थंगोदानंपादुकोपानहछत्रव्यजनोदकुंभदानंशय्यादिदानंचकार्यं अशक्तेनकृसराद्यन्नैर्दशब्राह्मणभोजनंकार्यं एतत्पौर्णमासीमारभ्यज्येष्ठशुक्लैकादशीपर्यंतंजलस्थविष्णुपूजोत्सवः कार्यः वैशाखामावास्याभावुकाख्यदिनंतत्परंकरिसंज्ञकदिनंचशुभेषुवर्ज्यं इतिश्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेवैशाखमासकृत्यनिर्णये उद्देशः समाप्तः ॥

अब व्रतका प्रयोग कहताहुं.

त्रयोदशीकों मध्यान्हमें एकवार भोजन करके पीछे चतुर्दशीमें मध्यान्हसमयमें तिल और आंवलोंसें स्नान करके "**उपोष्येऽहं नारसिंह भुक्तिमुक्तिफलप्रद ॥ शरणं त्वां प्रपन्नोस्मि भक्तिं मे नृहरे दिश**" इस मंत्रकरके व्रतका संकल्प कर और आचार्यका वरण करके सायंकालविषे अन्नपर स्थापित किये हुये कलशरूपी पूर्णपात्रपर सोनाकी प्रतिमा धर उसपर देवताका आवाहन करके षोडशोपचारसें देवकी पूजा करके अर्घ्य देना. तहां मंत्र—"**परित्राणाय साधूनां जातो विष्णो नृकेसरी ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सलक्ष्मीर्नृहरिः स्वयम्**" ॥ पीछे रात्रिमें जागरण करके और प्रभातमें देवकी पूजा और विसर्जन करके

आचार्यके लिये गायसहित प्रतिमा देनी. तहां मंत्र.—“**नृसिंहाच्युत गोविंद लक्ष्मीकांत जगत्पते ॥ अनेनार्चाप्रदानेन सफलाः स्युर्मनोरथाः**” अब प्रार्थनाका मंत्र कहताहुं—“**मद्वंशे ये नरा जाता ये जनिष्यंति चापरे ॥ तांस्त्वमुद्धर देवेश दुःसहाद्भवसागरात् ॥ पातकार्णवमग्नस्य व्याधिदुःखांबुवारिधेः ॥ नीचैश्च परिभूतस्य महादुःखागतस्य मे ॥ करावलंबनं देहि शेषशायिन् जगत्पते ॥ श्रीनृसिंह रमाकांत भक्तानां भयनाशन ॥ क्षीरांबुधिनिवास त्वं चक्रपाणे जनार्दन ॥ व्रतेनानेन देवेश भुक्तिमुक्तिप्रदो भव**” इन मंत्रोंकों पढके प्रार्थना करनी. पीछे ब्राह्मणोंके साथ तिथिके अंतमें पारणा करनी. तीन प्रहरसें अधिक चतुर्दशी होवै तौ पूर्वाण्हकालविषे ही पारणा करनीं. पौर्णमासीकों पक्वान्नसहित जलसें भरे कलशके दान करनेमें गोदानका फल मिलता है. सोना और तिलोंसें युत किये १२ पानीके कलशोंका दान करनेसें ब्रह्महत्याका पाप दूर हो जाता है. यह पौर्णमासीके दिन विधिके अनुसार काले मृगछालेके दानमें पृथिवीके दानका फल मिलता है. सोना, शहद, तिल, घृत इनसें युक्त काले मृगछालाका दान करनेसें सब पापोंका नाश होता है. यह पौर्णमासीमें तिलोंसें स्नान करना और तिलोंका होम करना और तिलोंसें भरे हुये पात्रका दान और तिलोंके तेलसें दीपदान करना और तिलोंकरके पितरोंका तर्पण और शहदसहित तिलोंका दान महाफलकों देता है. तिलपात्रके दानका मंत्र—“**तिला वै सोमदैवत्याः सुरैः सृष्टास्तु गोसवे ॥ स्वर्गप्रदाः स्वतंत्राश्च तेमां रक्षंतु नित्यशः**” ॥ वैशाख शुदि द्वादशीकों अथवा पौर्णमासीकों वैशाखस्नानका उद्यापन करना. एकादशीमें अथवा पौर्णमासीमें उपवास करके कलशपर सोनाकी प्रतिमाविषे लक्ष्मीसहित विष्णुकी पूजा करके रात्रिमें जागरण करना. प्रभातमें ग्रहोंका पूजन करके पीछे खीर, तिल, घृत, यव, अथवा घृतकी “**प्रतद्विष्णु०**” इस मंत्र करके अथवा “**इदं विष्णु०**” इस मंत्रकरके १०८ आहुति देनी. संपूर्णताके लिये गोदान, खडाऊं, जूतीजोडा, छत्री, वीजना, जलका कलश इन्होंका दान और शय्या आदि दान करने. सामर्थ्यसें रहित मनुष्यनें खीचडी और कृसर आदि अन्नकरके दश ब्राह्मणोंकों भोजन कराना. इस पौर्णमासीसें आरंभ कर ज्येष्ठ शुदि एकादशीपर्यंत जलमें स्थित हुये विष्णुका पूजोत्सव करना. वैशाखकी अमावसकों भावुका नामसें कहते हैं और तिस्सें पिछला दिन करिसंज्ञक है. ये दोनों दिन शुभ कार्योंमें वर्जित है. **इति वैशाखमासकृत्यनिर्णयो नाम द्वितीय उद्देशः ॥ २ ॥**

अथज्येष्ठकृत्यं ॥ मिथुनसंक्रांतौ पराःषोडशनाड्यःपुण्यकालः रात्रौतुप्रागुक्तं ज्येष्ठेमासेपिष्टेनब्रह्ममूर्तिंकृत्वावस्त्राद्यैःपूजयेत्सूर्यलोकप्राप्तिःअत्रमासेजलधेनुदानमुक्तंज्येष्ठशुक्लप्रतिपदिकरवीरव्रतमुक्तं ज्येष्ठशुक्लतृतीयायांरंभाव्रतंसापूर्वविद्धाग्राह्या यत्रपूर्वविद्धाग्राह्यतयोच्यतेतत्रास्तात्पूर्वंद्विमुहूर्ताधिकायाग्राह्यत्वंज्ञेयंनन्यूनायाःतत्रापियदिपरेद्युःसूर्यास्तमयपर्यंतंपूर्वविद्धायास्तिथेःसत्त्वंतदासत्यपिपूर्वविद्धाग्राह्यत्ववचनेपूर्वविद्धांत्यक्त्वाअखंडत्वाच्छुद्धत्वात्परैवग्राह्या यदातुग्राह्यायाःपूर्वविद्धायाः पूर्वेद्युर्मुहूर्तद्वयान्न्यूनत्वंपरेद्युश्चास्तमयात्प्राक्समाप्तत्वंतदापिपरैवग्राह्या एवंसर्वत्रोह्यं रंभाव्रतेपंचाग्नितपनपरास्त्रीपुमान्वाभवानींस्वर्णप्रतिमायांसंपूज्य यथोक्तविधिहोमादिकृत्वासपत्नीकायगृहंसोपस्करंदद्यात् दांपत्यानिभोजयेत् विशेषविधिर्ब्रे-

तग्रंथेज्ञेयः चतुर्थ्यामुमावतारस्तत्रोमापूजनव्रतं अष्टम्यांशुक्लादेवीपूजा नवम्यामुपोष्यदेवीं पूजयेत् ॥

अब ज्येष्ठमासके कृत्योंकों कहताहुं.

मिथुनसंक्रांतिमें पिछली १६ घडी पुण्यकाल है. रात्रिमें मिथुनसंक्रांति होवै तौ उसके पुण्यकालका निर्णय प्रथमपरिच्छेदमें कह चुके हैं. ज्येष्ठमहीनेमें पीठीकी ब्रह्माजीकी मूर्ति वनाके उसकी वस्त्र आदिकरके पूजा करनेसें सूर्यलोककी प्राप्ति होती है. इस महीनेमें जलधेनुका दान कहा है. ज्येष्ठ शुदि प्रतिपदाकों करवीरव्रत कहा है. ज्येष्ठ शुदि तृतीयामें रंभाव्रत कहा है. यह तृतीया पूर्वविद्धा लेनी उचित है. जहां पूर्वविद्धा ग्रहण करनेका कहा है तहां सूर्यास्तके पहले चार घडीसें अधिक होवै सो ग्रहण करनी उचित है. चार घडीसें कम होनेवालीका ग्रहण नहीं करना. तहां भी जो परदिनमें सूर्यके अस्तकालतक पूर्वविद्धा तिथि होवै तब पूर्वविद्धाकों ग्रहण करनेके वचनके होनेमें भी पूर्वविद्धाकों त्यागकर अखंडपनेसें और शुद्धपनेसें परविद्धा लेनी. और जो ग्रहण करनेके योग्य पूर्वविद्धाका पूर्वदिनमें चार घडीसें कमपना होवै और परदिनमें अस्तकालके पहले समाप्ति हो जावै तब भी परविद्धा लेनी. ऐसाही सव जगहविषे जानना. रंभाव्रतमें पंचाग्निसें तपनेवाली स्त्री अथवा पुरुषनें देवीकी सोनाकी प्रतिमामें पूजा करके और यथोक्तविधिसें होम आदि करके भार्यासहित ऐसे ब्राह्मणकों सब सामग्रियोंसहित घरका दान करना. स्त्री और पुरुषके जोडेकों भोजन करवाना. विशेषविधि व्रतविषयक अन्य ग्रंथमें देख लेना. चतुर्थीमें उमादेवीका अवतार हुआ है तहां उमादेवींका पूजनरूप व्रत करना. अष्टमीमें शुक्लादेवीकी पूजा करनी. नवमीमें उपवास करके देवीकी पूजा करनी.

ज्येष्ठशुक्लदशम्यांगंगावतारः इयंदशहरासंज्ञिका अत्रदशयोगाउक्ताः ज्येष्ठमासि १ सितेपक्षे २ दशम्यां ३ बुध ४ हस्तयोः ५ ॥ व्यतीपाते ६ गरानंदे ७।८ कन्याचंद्रे ९ वृषेरवौ १० इति गराख्यंकरणं बुधवारहस्तयोगेआनंदाख्योयोगः अत्रदशमीव्यतीपातयोर्मुख्यत्वं तेनयस्मिन्दिनेकतिपययोगवतीदशमीपूर्वाह्णेलभ्यतेतत्रदशहराव्रतंकार्यं दिनद्वये पूर्वाह्णेतत्सत्त्वेयत्रबहूनांयोगःसाग्राह्या ज्येष्ठेमलमासेसतितत्रैवदशहराकार्यानतुशुद्धे दशहरासुनोत्कर्षश्चतुर्ष्वपियुगादिष्वितिहेमाद्रौऋष्यशृंगोक्तेः अत्रकाशीवासिभिर्दशाश्वमेधतीर्थे स्नात्वागंगापूजनंकार्यं इतरदेशस्थैःस्वसन्निहितनद्यांस्नात्वागंगापूजनादिकंकार्यं ॥

ज्येष्ट शुदि दशमीकों गंगाजीका अवतार हुआ है. यह दशहरासंज्ञक दशमी है. इसमें दश योग कहे हैं. ज्येष्ठका महीना होवै १, शुक्लपक्ष होवै २, दशमी तिथि होवै ३, बुधवार होवै ४, हस्त नक्षत्र होवै ५, व्यतीपात योग होवै ६, गर करण होवै ७, आनंद योग होवै ८, कन्याका चंद्रमा होवै ९, और वृषराशिपर सूर्य होवै १०, गर नामवाला यहां करण लेना. बुधवार और हस्त नक्षत्रके योगमें आनंदयोग होता है. यहां दशमी और व्यतीपातयोगकी प्रधानता है. तिसकरके जिस दिनमें इन्होंमेंसें कितनेक योगवाली दशमी पूर्वाण्हमें प्राप्त होवै, तहां ही दशहराका व्रत करना उचित है. दोनों दिनोंमें पूर्वाण्हसमयमें दशमी

होवै तौ जहां बहुतसे योगोंका समूह होवै वह लेनी. ज्येष्ठ महीना अधिकमास होवै तौ अधिकमासमें ही दशहरा करना, शुद्ध मासमें दशहरा नहीं करना. क्योंकी, "चारों युगआदियोंमें दशहरामें उत्कर्ष नहीं करना." ऐसा **हेमाद्रि** ग्रंथमें ऋष्यशृंगका वचन है. इस व्रतके दिनमें काशीमें वसनेवालोंनें दशाश्वमेधतीर्थमें स्नान करके गंगाजीका पूजन करना. अन्य देशोंमें स्थित हुये मनुष्योंनें अपने समीपकी नदीमें स्नान करके गंगापूजन आदि करना.

अथव्रतविधिः देशकालौसंकीर्त्यममैतज्जन्मजन्मांतरसमुद्भूतत्रिविधकायिकचतुर्विधवाचिकत्रिविधमानसेति स्कांदोक्तदशविधपापनिरासत्रयस्त्रिंशच्छतपित्रुद्धारब्रह्मलोकावाप्त्यादिफलप्राप्त्यर्थं ज्येष्ठमाससितपक्षदशमीबुधवारहस्ततारकागरकरणव्यतीपातानंदयोगकन्यास्थचंद्रवृषस्थसूर्येतिदशयोगपर्वण्यस्यांमहानद्यांस्नानंतीर्थपूजनंप्रतिमायांजाह्नवीपूजांतिलादिदानंमूलमंत्रजपमाज्यहोमंचयथाशक्तिकरिष्ये यथाविधिस्नानंदशवारंकृत्वाजलेस्थितोदशवारंसकृद्वावक्ष्यमाणंस्तोत्रंपठित्वा वासःपरिधानादिपितृतर्पणांतंनित्यंविधायतीर्थेपूजांविधायसर्पिर्मिश्रान्दशप्रसृतिकृष्णतिलान्तीर्थेंजलिनाप्रक्षिप्यगुडमिश्रान्सक्तुपिंडान्दशप्रक्षिपेत् ततोगंगातटेताम्रेमृन्मयेवास्थापितेकलशेसौवर्णादिप्रतिमायांगंगामावाहयेत् तत्रमंत्रः नमोभगवत्यैदशपापहरायैगंगायैनारायण्यैरेवत्यैशिवायैदक्षायैअमृतायैविश्वरूपिण्यैनंदिन्यैतेनमोनमः अयंरुयादिसाधारणः द्विजमात्रविषयोविंशत्यक्षरोयथा ॐनमःशिवायैनारायण्यैदशहरायैगंगायैस्वाहेति एवंगंगामावाह्य नारायणंरुद्रंब्रह्माणंसूर्यंभगीरथंहिमाचलंचनाममंत्रेणतत्रैवावाह्य उक्तमूलमंत्रमुच्चार्यश्रीगंगायैनारायणरुद्रब्रह्मसूर्यभगीरथहिमवत्सहितायैआसनंसमर्पयामीत्येवमासनाद्युपचारैःपूजयेत् दशविधैःपुष्पैःसंपूज्यदशांगंधूपंदत्वादशविधनैवेद्यांतेतांबूलंदक्षिणांदत्वादशफलान्यर्पयेत् दशदीपान्दत्वापूजांसमापयेत् दशविप्रेभ्यःप्रत्येकंषोडशषोडशमुष्टितिलान्सदक्षिणान्दद्यात् एवंयवानपि ततोदशगाएकांवागांदद्यात् मत्स्यकच्छपमंडूकान्सौवर्णान्राजतान्पिष्टमयान्वासंपूज्यतीर्थेक्षिपेत् एवंदीपान्प्रवाहयेत् जपहोमचिकीर्षायांपूर्वोक्तमूलमंत्रस्यपंचसहस्रसंख्याजपोदशांशेनहोमः यथाशक्तिवाजपहोमौ तत्रदशहराव्रतांगत्वेनहोमंकरिष्येइतिसंकल्प्यस्थंडिलेग्निंप्रतिष्ठाप्यान्वाधाने चक्षुषीआज्येनेत्यंतेश्रीगंगाममुकसंख्ययाज्येननारायणादिषड्देवताएकैकयाज्याहुत्याशेषेणस्विष्टकृतमित्यादिप्रोक्षण्यादिषट्पात्राण्यासाद्याज्यंसंस्कृत्ययथान्वाधानंजुहुयात् दशब्राह्मणान्सुवासिनीश्चभोजयेत् प्रतिपद्दिनमारभ्यस्नानादिपूजांतोविधिःकार्यइतिकेचित् स्तोत्रंयथास्कांदे ब्रह्मोवाच नमःशिवायैगंगायैशिवदायैनमोनमः नमस्तेरुद्ररूपिण्यैशांकर्यैतेनमोनमः नमस्तेविश्वरूपिण्यैब्रह्ममूर्त्यैनमोनमः सर्वदेवस्वरूपिण्यैनमोभेषजमूर्तये सर्वस्यसर्वव्याधीनांभिषक्श्रेष्ठ्यैनमोस्तुते स्थाणुजंगमसंभूतविषहंत्र्यैनमोनमः भोगोपभोगदायिन्यैभोगवत्यैनमोनमः मंदाकिन्यैनमस्तेस्तुस्वर्गदायैनमःसदा नमस्त्रैलोक्यभूषायैजगद्धात्र्यैनमोनमः नमस्त्रिशुक्लसंस्थायैतेजोमत्यैनमोनमः नंदायैलिंगधारिण्यैनारायण्यैनमोनमः नमस्तेविश्वमुख्यायैरेवत्यैतेनमोनमः बृहत्यैतेनमस्तेस्तुलोकधात्र्यैनमोनमः नमस्तेविश्वमित्रायैनंदिन्यैतेनमोनमः पृथ्व्यैशिवामृतायैचसुवृषायैनमोनमः शांतायैचवरिष्ठायैवरदायैनमोनमः उस्रायैसुखदोग्ध्र्यैचसंजीविन्यैनमोनमः

ब्रह्मिष्ठायैब्रह्मदायैदुरितघ्न्यैनमोनमः प्रणतार्तिप्रभंजिन्यैजगन्मात्रेनमोस्तुते सर्वापत्प्रतिपक्षायैमंगलायैनमोनमः शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे सर्वस्यार्तिहरेदेविनारायणिनमोस्तुते निर्लेपायैदुर्गहंत्र्यैदक्षायैतेनमोनमः परात्परतरेतुभ्यंनमस्तेमोक्षदेसदा गंगेममाग्रतोभूयागंगेमेदेविपृष्टतः गंगेमेपार्श्वयोरेहित्वंहिगंगेस्तुमेस्थितिः आदौत्वमंतेमध्येचसर्वंत्वंगांगतेशिवे त्वमेवमूलप्रकृतिस्त्वंहिनारायणःपरः गंगेत्वंपरमात्माचशिवस्तुभ्यंनमःशिवे यइदंपठतिस्तोत्रंभक्त्यानित्यंनरोपियः शृणुयाच्छ्रद्धयायुक्तःकायवाक्चित्तसंभवैः दशधासंस्थितैर्दोषैःसवैरेवप्रमुच्यते सर्वान्कामानवाप्नोतिप्रेत्यब्रह्मणिलीयते ज्येष्ठेमासिसितेपक्षेदशमीहस्तसंयुता तस्यांदशम्यामेतच्चस्तोत्रंगंगाजलेस्थितः यःपठेद्दशकृत्वस्तुदरिद्रोवापिचाक्षमः सोपितत्फलमाप्नोतिगंगांसंपूज्ययत्नतः अदत्तानामुपादानंहिंसाचैवाविधानतः परदारोपसेवाचकायिकंत्रिविधंस्मृतं पारुष्यमनृतंचैवपैशून्यंचापिसर्वशः असंबद्धप्रलापश्चवाङ्मयंस्याच्चतुर्विधं परद्रव्येष्वभिध्यानंमनसानिष्टचिंतनं वितथाभिनिवेशश्चमानसंत्रिविधंस्मृतं एतानिदशपापानिहरत्वंममजाह्नवि दशपापहरायस्मात्तस्माद्दशहरास्मृता त्रयस्त्रिंशच्छतंपूर्वान्पितॄनथपिता महान् उद्धरत्येवसंसारान्मंत्रेणानेनपूजिता नमोभगवत्यैदशपापहरायैगंगायैनारायण्यैरेवत्यैशिवायैदक्षायैअमृतायैविश्वरूपिण्यैनंदिन्यैतेनमोनमः सितमकरनिषण्णांशुभ्रवर्णांत्रिनेत्रांकरधृतकलशोद्यत्सोत्पलामत्यभीष्टां विधिहरिहररूपांसेंदुकोटीरजुष्टांकलितसितदुकूलांजाह्नवींतांनमामि आदावादिपितामहस्यनिगमव्यापारपात्रेजलं पश्चात्पन्नगशायिनोभगवतःपादोदकंपावनं भूयःशंभुजटाविभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरियंदेवीकल्मषनाशिनीभगवतीभागीरथी दृश्यते गंगागंगेतियोब्रूयाद्योजनानांशतैरपि मुच्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसगच्छति इतिस्तोत्रेणस्तुत्वाहोमांतेप्रतिमोत्तरपूजांकृत्वाविसृज्याचार्यायमूलमंत्रेणदद्यात् इति दशहराविधिः॥

अब दशहराव्रतके विधिकों कहताहुं.

देश और कालका उच्चारण करके “ममैतजन्मजन्मांतरसमुद्भूतत्रिविधकायिकचतुर्विधवाचिकत्रिविधमानसेतिस्कांदोक्तं दशविधपापनिरासत्रयस्त्रिंशच्छतपित्रुद्धारब्रह्मलोकावाप्त्यादिफलप्राप्त्यर्थं ज्येष्ठमाससितपक्षदशमीबुधवारहस्ततारकागरकरणव्यतीपातानंदयोगकन्यास्थचंद्रवृषस्थसूर्येति दशयोगपर्वण्यस्यां महानद्यां स्नानं तीर्थपूजनं प्रतिमायांजान्हवीपूजां तिलादिदानं मूलमंत्रजपमाज्यहोमंचयथाशक्तिकरिष्ये” ऐसा संकल्प करके विधिपूर्वक दशवार स्नान कर जलमें स्थित हुआ दशवार अथवा एकवार वक्ष्यमाण स्तोत्रका पाठ कर वस्त्रपरिधानसें पितृतर्पणांत नित्यकर्म करके और तीर्थमें पूजा करके घृतसें मिले हुये दश प्रसृतिभर काले तिलोंकों तीर्थविषे अंजलिकरके डालकर गुडसें मिले हुये सत्तूके दश पिंडोंकों तीर्थमें डालके पीछे गंगाके तटपर तांबाके अथंवा माटीके कलशकों स्थापित कर सोना आदिकी प्रतिमामें गंगाका आवाहन करना. तहां मंत्रः—“ नमो भगवत्यै दशपापहरायै गंगायै नारायण्यै रेवत्यै शिवायै दक्षायै अमृतायै विश्वरूपिण्यै नंदिन्यै ते नमो नमः” यह स्त्री आदिमें साधारण मंत्र है. द्विजमात्रविषयमें वीस अक्षरोंके आवाहनमंत्रकों कहते हैं. “ ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै स्वाहा ” इस मंत्रसें गंगाजीका आवाहन करके नारायण, रुद्र, ब्रह्माजी, सूर्य, भगीरथ, हिमाचल, इन्होंका नाममंत्रोंसें

तहांही आवाहन करके और उक्त मूलमंत्रका उच्चारण करके “**श्रीगंगायै नारायणरुद्रब्रह्मसूर्यभगीरथहिमवत्सहितायै आसनं समर्पयामि**” ऐसे आसन आदि उपचारोंकरके पूजा करनी और दश प्रकारके पुष्पोंकरके अच्छीतरह पूजा करके और दशांगसंज्ञक धूप देकर दश प्रकारका नैवेद्य अर्पण किये पीछे नागरपान और दक्षिणा देके दश फलोंकों अर्पित करना. दश दीपकोंकों देके पूजा समापित करनी. दश ब्राह्मणोंकों अलग अलग दक्षिणासहित सोलह सोलह मुष्टिभर तिल देना. ऐसेही यवोंका भी दान करना. पीछे दश गाय अथवा एक गायका दान करना. सोना अथवा चांदीसें बनाये हुये अथवा पीठीसें बनाये हुये मच्छ, कच्छुये, मेंडक इन्होंकी पूजा करके तीर्थमें प्राप्त करना. ऐसेही दीपकोंकों वहावै. जप और होम करनेकी इच्छामें पूर्वोक्त मूलमंत्रका ९००० जप और तिसके दशमे हिस्सेकरके होम करना. अथवा शक्तिके अनुसार जप और होम करने. तहां—“**दशहराव्रतांगत्वेन होमं करिष्ये**” ऐसा संकल्प करके वेदीपर अग्निकों स्थापित कर अन्वाधान करना. सो ऐसा—“**चक्षुषी आज्येनेत्यंते श्रीगंगाममुकसंख्ययाज्येन नारायणादि षट्देवता एकैकयाज्याहुत्या शेषेण स्विष्टकृतं**” इस तरह अन्वाधान किये पीछे प्रोक्षणी आदि छह पात्रोंकों प्रसादित कर और घृतका संस्कार कर अन्वाधानकर्मके अनुसार होम करना. दश ब्राह्मणोंकों और दश सुहागन स्त्रियोंकों भोजन कराना. प्रतिपदाके दिनसें आरंभ कर स्नान आदि पूजाके अंततककी विधि करनी उचित है ऐसा कितनेक कहते हैं. अब स्कंदपुराणमें लिखे हुये गंगाजीके स्तोत्रकों कहते हैं.—“ब्रह्मोवाच ॥ नमः शिवायै गंगायै शिवदायै नमोनमः ॥ नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शांकर्यै ते नमोनमः ॥ नमस्ते विश्वरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमोनमः ॥ सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमो भेषजमूर्तये ॥ सर्वस्य सर्वव्याधीनां भिषक्श्रेष्ठयै नमोस्तु ते ॥ स्थाणुजंगमसंभूतविषहंत्र्यै नमोनमः ॥ भोगोपभोगदायिन्यै भोगवत्यै नमोनमः ॥ मंदाकिन्यै नमस्तेस्तु स्वर्गदायै नमोनमः ॥ नमस्त्रैलोक्यभूषायै जगद्धात्र्यै नमोनमः ॥ नमस्त्रिशुक्लसंस्थायै तेजोवत्यै नमोनमः ॥ नंदायै लिंगधारिण्यै नारायण्यै नमोनमः ॥ नमस्ते विश्वमुख्यायै रेवत्यै ते नमोनमः ॥ बृहत्यै ते नमस्तेस्तु लोकधात्र्यै नमोनमः ॥ नमस्ते विश्वमित्रायै नंदिन्यै ते नमोनमः ॥ पृथ्व्यै शिवामृतायै च सुवृषायै नमोनमः ॥ शांतायै च वरिष्ठायै वरदायै नमोनमः ॥ उस्रायै सुखदोग्ध्र्यै च संजीविन्यै नमोनमः ॥ ब्रह्मिष्ठायै ब्रह्मदायै दुरितघ्न्यै नमोनमः ॥ प्रणतार्तिप्रभंजिन्यै जगन्मात्रे नमोस्तु ते ॥ सर्वापत्प्रतिपक्षायै मंगलायै नमोनमः ॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ॥ सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ॥ निर्लेपायै दुर्गहंत्र्यै दक्षायै ते नमोनमः ॥ परात्परतरे तुभ्यं नमस्ते मोक्षदे सदा ॥ गंगे ममाग्रतो भूया गंगे मे देवि पृष्ठतः ॥ गंगे मे पार्श्वयोरेहि त्वयि गंगेस्तु मे स्थितिः ॥ आदौ त्वमंते मध्ये च सर्वं त्वं गां गते शिवे ॥ त्वमेव मूलप्रकृतिस्त्वं हि नारायणः परः ॥ गंगे त्वं परमात्मा च शिवस्तुभ्यं नमः शिवे ॥ य इदं पठति स्तोत्रं भक्त्या नित्यं निरोपि यः ॥ शृणुयात् श्रद्धया युक्तः कायवाक्चित्तसंभवैः ॥ दशधा संस्थितैर्दोषैः सर्वैरेव प्रमुच्यते ॥ सर्वान्कामानवाप्नोति प्रेत्य ब्रह्मणि लीयते ॥ ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता ॥ तस्यां दशम्यामेतच्च स्तोत्रं गंगाजले स्थितः॥ यः पठेद्दशकृत्वस्तु दरिद्रो वापि चाक्षमः ॥ सोपि तत्फलमाप्नोति गंगां संपूज्य यत्नतः ॥

अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः ।। परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतं ।। पारुष्यमनृतं चैव पैशून्यं चापि सर्वशः ।। असंबद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधं ।। परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिंतनं ।। वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतं ।। एतानि दश पापानि हर त्वं मम जाह्नवि ।। दशपापहरा यस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता ।। त्रयस्त्रिंशतच्छतं पूर्वान् पितृनथ पितामहान् ।। उद्धरत्येव संसारान्मंत्रेणानेन पूजिता ।। नमो भगवत्यै दशपापहरायै गंगायै नारायण्यै रेवत्यै शिवायै दक्षायै अमृतायै विश्वरूपिण्यै नंदिन्यै ते नमोनमः ।। सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृतकलशोद्यत्सोत्पलामत्यभीष्टां ।। विधिहरिहररूपां सेंदुकोटीरजुष्टां कलितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ।। आदावादिपितामहस्य निगमव्यापारपात्रे जलं पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनं ।। भूयः शंभुजटाविभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरियं देवी कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी दृश्यते ।। गंगागंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि ।। मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ।।” इस स्तोत्रसें स्तुति करके होम किये पीछे प्रतिमाकी उत्तरपूजा करके प्रतिमाका विसर्जन करना. पीछे आचार्यके लिये मूलमंत्रसें प्रतिमा दान देनी. यह दशहराकी विधि समाप्त हुई.

ज्येष्ठशुक्लैकादशीनिर्जला अस्यांनित्याचमनादिव्यतिरिक्तजलपानवर्जनेनोपवासेकृते द्वादशैकादश्युपवासफलं द्वादश्यांचनिर्जलोपोषितैकादशीव्रतांगत्वेनसहिरण्यसशर्करोदकुंभदानंकरिष्येइतिसंकल्प्य देवदेवहृषीकेशसंसारार्णवतारक उदकुंभप्रदानेनयास्यामिपरमांगतिमितिमंत्रेणशर्करायुतंसहिरण्यमुदकुंभंदद्यात् ज्येष्ठमाससितद्वादश्यामहोरात्रंत्रिविक्रमपूजनाद्गवामयनाख्यक्रतुफलसिद्धिः ज्येष्ठपौर्णमास्यांतिलदानादश्वमेधफलं ज्येष्ठानक्षत्रयुतायां ज्यैष्ठ्यांछत्रोपानहदानान्नराधिपत्यप्राप्तिः ज्येष्ठपूर्णिमायांबिल्वत्रिरात्रिव्रतमुक्तं अत्रपरविद्धा ग्राह्या ।।

ज्येष्ठ शुदि एकादशी निर्जला कहाती है. इसमें नित्यके आचमनव्यतिरिक्त जलकों वर्ज करके उपवास करनेमें वारह एकादशीके उपवासका फल मिलता है. द्वादशीमें, “**निर्जलोपोषितैकादशीव्रतांगत्वेन सहिरण्यसशर्करोदकुंभदानं करिष्ये**” ऐसा संकल्प करके “**देवदेव हृषीकेश संसारार्णवतारक ।। उदकुंभप्रदानेन यास्यामि परमां गतिम्**,” इस मंत्रकरके खांड और सोनासें युत हुये जलके कलशकों देना. ज्येष्ठमासके शुक्ल पक्षकी द्वादशीमें दिनरात्र त्रिविक्रमकी पूजा करनेसें गवामयन नामक यज्ञके फलकी प्राप्ति होती है. ज्येष्ठ शुदि पौर्णमासीकों तिलोंके दानसें अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है और ज्येष्ठानक्षत्रसें युत हुई ज्येष्ठकी पौर्णमासीकों छत्री और जूती जोडेके दानसें मनुष्य राजा होता है. ज्येष्ठकी पौर्णमासीकों बिल्वत्रिरात्रिव्रत कहा है, तहां परविद्धा पौर्णमासी लेनी.

अस्यामेववटसावित्रीव्रतं अत्रव्रतेयत्रोदश्यादिदिनत्रयमुपवासः अशक्तौतुत्रयोदश्यांनक्तं चतुर्दश्यामयाचितं पौर्णमास्यामुपोषणं अत्रपौर्णमासीनिर्णयानुसारेणयथात्रिरात्रंभवेत्तथात्रयोदश्यादिदिनत्रयंग्राह्यं तत्रपौर्णिमासूर्यास्तमयात्पूर्वंत्रिमुहूर्ताधिकव्यापिनीचतुर्दशीविद्धाग्राह्या त्रिमुहूर्तन्यूनत्वेपरैव भूतोष्टादशनाडीभिर्दूषयत्युत्तरांतिथिमितिवचनंसावित्रीव्रतातिरिक्ते

ज्ञेयं सावित्रीव्रतोपवासेष्टादशनाडीविद्धायाअपिग्राह्यत्वात् यत्तुकेवलंपूजनात्मकमुपवासरहितंसावित्रीव्रतंसर्वत्रस्त्रियोनुतिष्ठंति तत्रभूतोष्टादशेतिवेधोव्रतदानादिपरोनतूपवासपरइति निर्णयसिंधुलिखितमाधवाशयानुसारेणाष्टादशनाडीचतुर्दशीसत्त्वेपरैवपूजाव्रतेग्राह्या उपवासव्रतेतुपूर्वेतिममप्रतिभाति अत्रपारणंपूर्णिमांतेकर्तव्यं अत्ररजस्वलादिदोषेपूजादिब्राह्मणद्वाराकार्यं स्वयमुपवासादिकंकार्यमित्यादयःस्त्रीव्रतेविशेषाःप्रथमपरिच्छेदेज्ञेयाः अत्रपूजोद्यापनादिविधिर्व्रतग्रंथेप्रसिद्धः अत्रज्येष्ठपौर्णिमायांज्येष्ठानक्षत्रे बृहस्पतिश्चंद्रश्चरोहिणीनक्षत्रेतुसूर्यस्तदामहाज्येष्ठेतियोगस्तत्रस्नानदानादिकंकार्यं अस्याःपौर्णमास्यामन्वादित्वादत्रपिंडरहितंश्राद्धमुक्तं एतन्निर्णयश्चैत्रेउक्तः अत्रमासेविप्रेभ्यश्चंदनव्यजनोदकुंभादिकंत्रिविक्रमप्रीतयेदेयं ॥ इति श्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचिते धर्मसिंधुसारे ज्येष्ठमासकृत्य निर्णय उद्देशः समाप्तः ॥

अब वटसावित्रीव्रत कहताहुं.

इसी पौर्णमासीमें वटसावित्रीका व्रत होता है. इस व्रतमें त्रयोदशी आदि तीन दिनोंतक उपवास करना. जो सामर्थ्य नहीं होवै तौ त्रयोदशीकों नक्तव्रत, चतुर्दशीकों अयाचितव्रत और पौर्णमासीकों उपवास करना. यहां पौर्णमासीके निर्णयके अनुसार जैसे तीन रात्रि होवै तैसे त्रयोदशी आदि तीन दिन ग्रहण करने उचित हैं. यहां सूर्यके अस्तके पहले ६ घडीसें अधिकव्यापिनी पौर्णमासी चतुर्दशीविद्धा लेनी और ६ घडीसें कम होवै तौ परविद्धा पौर्णमासी लेनी. “ चतुर्दशी अठारह घटीकाओंकरके उत्तरतिथिकों दूषित करती है ” यह वचन सावित्रीव्रतसें अन्य व्रतमें जानना. क्योंकी, सावित्रीव्रतमें अठारह घटीकाओंकरके विद्ध हुईका भी ग्रहण करना. जो केवल पूजनरूपी और उपवाससें रहित ऐसे सावित्रीव्रतका अनुष्ठान सब स्त्रियां कर्तीयां हैं तहां चतुर्दशी अठारह घटीकाओंकरके पूर्णिमाकों वेधती है. यह वेध व्रत, दान आदिमें है, उपवासमें नहीं है. इस प्रकार **निर्णयसिंधुलिखित** माधवाचार्यके आशयके अनुसार अठारह घटीका चतुर्दशी होवै तब भी पूजा और व्रतमें परविद्धा लेनी और उपवासरूपी व्रतमें तौ पूर्वविद्धा लेनी ऐसा मुझकों प्रतिभान होता है. यहां पूर्णिमाके अंतमें पारणा करनी. जो स्त्री रजस्वला होवै तौ पूजा आदि ब्राह्मणके द्वारा कराने, और आप उपवास आदि करने. इन आदि स्त्रीव्रतमें विशेष प्रथम परिच्छेदविषे जान लेने. पूजा और उद्यापन आदिकी विधि व्रतग्रंथमें प्रसिद्ध है. इस ज्येष्ठकी पौर्णमासीमें ज्येष्ठानक्षत्रपर बृहस्पति और चंद्रमा होवै और रोहिणीनक्षत्रपर सूर्य होवै तब **महाज्येष्ठा** ऐसा योग होता है. तहां स्नान और दान आदि करने. और यह पौर्णमासी मन्वादि तिथि है, इसवास्ते इसमें पिंडरहित श्राद्ध करनेकों कहा है. यह निर्णय चैत्रमासके प्रकरणमें कहा है. इस महीनेमें ब्राह्मणोंके अर्थ चंदन, वीजना, जलका कलश इन आदि दान त्रिविक्रमकी प्रीतिके लिये देने. इति ज्येष्ठमासकृत्यनिर्णयो नाम तृतीय उद्देशः ॥ ३ ॥

अथाषाढेदक्षिणायनसंज्ञाकर्कसंक्रांतिः कर्कसंक्रांतौपूर्वात्रिंशन्नाड्यःपुण्यकालः तत्रापि संक्रांतिसन्निहितानाड्यःपुण्यतमाः रात्रावर्धरात्रात्प्राक्परतश्चसंक्रमेपिपूर्वदिनेपुण्यकालः

तत्रापिमध्याह्नात्परतःपुण्यतमत्वं सूर्योदयोत्तरंघटीद्वयात्प्राक्संक्रमेपरतएवपुण्यं ज्योतिर्ग्रंथे तुसूर्योदयात्प्राक्घटीत्रयात्मकसंध्यासमयेपिकर्कसंक्रमेपरदिनेएवपुण्यमित्युक्तं अत्रदानोपवासादिप्रथमपरिच्छेदेउक्तं कर्ककन्याधनुःकुंभस्थेरवौकेशकर्तनादिकंनिषिद्धं आषाढमासमेकभक्तव्रतेकृतेबहुधनधान्यपुत्रप्राप्तिः अत्रमासेउपानच्छत्रलवणामलकानिवामनप्रीत्यैदेयानि आषाढशुक्लद्वितीयायांपुष्यनक्षत्रयुतायांकेवलायांवाश्रीरामस्यरथोत्सवः आषाढशुक्लपक्षे दशमीपौर्णमासीचमन्वादिः तन्निर्णयस्तूक्तः ॥

अब आषाढ महीनेके कृत्योंकों कहताहुं.

आषाढ महीनेमें दक्षिणायनसंज्ञक कर्ककी संक्रांति है. इस कर्कसंक्रांतिमें पहली ३० घडी पुण्यकाल है. तहां भी संक्रमणके समीपकी घडी अतिपुण्यकारक हैं. रात्रिमें अर्धरात्रसें पहले और पीछे संक्रांति होवै तौ पूर्वदिनमें पुण्यकाल है. और तहां पूर्वदिनमें भी मध्यान्हके उपरंत ही अति पुण्यकाल है. सूर्योदयके उपरंत दो घडीके पहले संक्रांति होवै तौ परदिनमें ही पुण्यकाल है. और ज्योतिषग्रंथोंमें तौ सूर्योदयके पहले तीन घडीरूप संध्यासमयमें भी कर्कसंक्रांति होवै तौ परदिनविषे पुण्यकाल है ऐसा कहा है. यहां दान और उपवास आदि करनेके तिन्होंका निर्णय प्रथम परिच्छेदमें कहा है. कर्क, कन्या, धन, कुंभ इन राशियोंपर सूर्य होवै तब केशच्छेदादि करना वर्जित है. आषाढमें महीनातक एकभक्तव्रत करनेमें बहुतसा धन, अन्न, पुत्र आदि इन्होंकी प्राप्ति होती है. इस महीनेमें जूतीजोडा, छत्री, निमक, आंवला, इन्होंका दान वामनजीके प्रीतिके लिये देना. आषाढ शुदि द्वितीया पुष्यनक्षत्रसें युत होवै अथवा केवल होवै तब श्रीरामका रथोत्सव करना. आषाढ महीनेके शुक्लपक्षकी दशमी और पौर्णमासी मन्वादि तिथि होती हैं, तिन्होंका निर्णय चैत्र महीनेके निर्णयमें कह चुके हैं.

अथैकादश्यांविष्णुशयनोत्सवः तत्रसोपस्करेमंचकेसुप्तांश्रीविष्णुप्रतिमांशंखादिचतुरायुधांलक्ष्मीसंवाहितचरणांनानाविधोपचारैःसंपूजयेत् सुप्तेत्वयिजगन्नाथेजगत्सुप्तंभवेदिदं विबुद्धेत्वयिबुध्येतसर्वंसचराचरमितिप्रार्थ्यउपोष्यजागरंकृत्वाद्वादश्यांपुनःसंपूज्यत्रयोदश्यांगीतनृत्यवाद्यादिकंनिवेदयेत् एवमिदंत्रिदिनसाध्यंव्रतं तत्रस्मार्तैर्वैष्णवैश्वस्वस्वैकादशीव्रतदिने शयनीव्रतमारब्धव्यं रात्रौशयनोत्सवः दिवाप्रबोधोत्सवः द्वादश्यांपारणाहेशयनप्रबोधोत्सवावितिकेचित् अत्रदेशाचाराद्व्यवस्था नेदंमलमासेकार्यं आषाढशुद्धद्वादश्यामनुराधायोगरहितायांपारणंकार्यं तत्रापिअनुराधाप्रथमपादयोगएववर्ज्यः यदातुद्वादशीस्वल्पावर्ज्यनक्षत्रभागोद्वादशीमतिक्रम्यविद्यतेतदानिषेधमनादृत्यद्वादश्यामेवपारणंकार्यमितिकौस्तुभेउक्तं संगवकालभागंत्यक्त्वाप्रातर्मध्याह्नभागेवाभोक्तव्यमितिपुरुषार्थचिंतामणौ ॥

अब आषाढ शुदि एकादशीमें विष्णुके शयनके उत्सवकों कहताहुं.

तहां सामग्रियोंसहित पलंगपर शयन करती हुई और शंख, चक्र, गदा, पद्म, इन्होंकों हाथोंमें धारण करती हुई और लक्ष्मीजीनें सेवित हुये चरणोंवाली ऐसी विष्णुकी प्रति-

माकों अनेक प्रकारके उपचारोंसें पूजना.—पीछे **"सुप्ते त्वयि जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम् ॥ विबुद्धे त्वयि बुद्ध्येत तत्सर्वं सचराचरम् "** ऐसी प्रार्थना करके उपवास और जागरण करके द्वादशीमें फिर पूजा कर त्रयोदशीमें गीत, नृत्य, बाजा इन्होंकों निवेदन करना. ऐसा यह तीन दिनोंकरके साध्य व्रत है. तहां स्मार्तोंनें और वैष्णवोंनें अपनी अपनी एकादशीके व्रतके दिनमें शयनी एकादशीका व्रत आरंभित करना. रात्रिमें शयनोत्सव करना और दिनमें जागरणका उत्सव करना. द्वादशीमें पारणा होवै तौ शयनोत्सव और जागरणोत्सव करने ऐसा कितनेक कहते हैं. यहां देशाचारके अनुसार व्यवस्था जान लेनी. यह उत्सव मलमासमें नहीं करना. अनुराधाके योगसें वर्जित हुई द्वादशीमें पारणा करनी उचित है, तहां भी अनुराधाके प्रथम पादका योग वर्जित करना. जब द्वादशी स्वल्प होवै और अनुराधानक्षत्रका भाग द्वादशीकों उल्लंघित करके विद्यमान होवै तब निषेधका अनादर करके द्वादशीमें ही पारणा करनी उचित है. ऐसा **कौस्तुभ** ग्रंथमें कहा है. संगवकालके भागकों त्यागके प्रभातके भागमें अथवा मध्यान्हके भागमें भोजन करना उचित है. ऐसा **पुरुषार्थचिंतामणिमें** कहा है.

द्वादश्यांपारणोत्तरंसायंपूजांकृत्वाचातुर्मास्यव्रतसंकल्पंकुर्यादितिकौस्तुभे एकादश्यामेवेतिनिर्णयसिंधुः चातुर्मास्यव्रतप्रथमारंभोगुरुशुक्रास्तादावाशौचादौचनभवति द्वितीयाद्यारंभस्तुअस्तादावाशौचादौचभवत्येव चातुर्मास्यव्रतंचशैवादिभिरपिकार्यम् ॥

अब चातुर्मास्यके व्रतके आरंभकों कहताहुं.

द्वादशीमें पारणाके पश्चात् सायंकालकी पूजा करके चातुर्मास्यव्रतका संकल्प करना ऐसा **कौस्तुभ** ग्रंथमें लिखा है. एकादशीमें ही चातुर्मास्यव्रतका संकल्प करना ऐसा **निर्णयसिंधुका** मत है. चातुर्मास्य व्रतका प्रथम आरंभ बृहस्पति और शुक्रके अस्तमें और आशौच आदिमें नहीं करना. दूसरे आदिका आरंभ अस्त आदिमें और आशौच आदिमें भी होता है. शैव आदिकोंनें भी चातुर्मास्यव्रत करना उचित है.

व्रतग्रहणप्रकारस्तु भगवतोजातीपुष्पादिभिर्महापूजांकृत्वा सुप्तेत्वयिजगन्नाथेजगत्सुप्तंभवेदिदं विबुद्धेत्वयिबुध्येतप्रसन्नोमेभवाच्युतेतिप्रार्थ्यअग्रेकृतांजलिः चतुरोवार्षिकान्मासान्देवस्योत्थापनावधि श्रावणेवर्जयेशाकंदधिभाद्रपदेतथा दुग्धमाश्वयुजेमासिकार्तिकेद्विदलंतथा इमंकरिष्येनियमंनिर्विघ्नंकुरुमेच्युत इदंव्रतंमयादेवगृहीतंपुरतस्तव निर्विघ्नंसिद्धिमायातुप्रसादात्तेरमापते गृहीतेस्मिन्व्रतेदेवपंचत्वंयदिमेभवेत् तदाभवतुसंपूर्णंप्रसादात्तेजनार्दन इतिप्रार्थ्यदेवायशंखेनार्घ्यंनिवेदयेत् एतानिव्रतानिनित्यानि हविष्यभक्षणादिव्रतांतरचिकीर्षायांश्रावणेवर्जयेशाकमितिश्लोकस्थानेहविष्यान्नंभक्षयिष्येदेवाहंप्रीतयेतवेत्यूहःकार्यः शाकव्रतेव्रतांतरेचसमुच्चयेनकर्तव्येतंश्लोकंपठित्वाव्रतांतरमंत्रंवदेत् एवंगुडवर्जनादिधारणापारणादिव्रतेषु वर्जयिष्येगुडंदेवमधुरस्वरसिद्धये वर्जयिष्येतैलमहंसुंदरांगत्वसिद्धये योगाभ्यासीभविष्यामिप्राप्तुंब्रह्मपदंपरं मौनव्रतीभविष्यामिस्वाज्ञापालनसिद्धये एकांतरोपवासीचप्राप्तुंब्रह्मपुरंपरमि

त्यादिरीत्योहःकार्यः निषिद्धमात्रवर्जनेच्छायां वृंताकादिनिषिद्धानिहरेसर्वाणिवर्जयेइति संकल्पः ॥

अब चातुर्मास्यव्रत ग्रहण करनेका प्रकार कहताहुं.

भगवानकी चमेली आदिके फूलोंसें महापूजा करके “ सुप्ते त्वयि जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम् ॥ विबुद्धे त्वयि बुद्ध्येत प्रसन्नो मे भवाच्युत ॥ ”—इस मंत्रसें प्रार्थना करके और आगे हाथ जोडके—“ चतुरो वार्षिकान् मासान् देवस्योत्थापनावधि ॥ श्रावणे वर्जये शाकं दधि भाद्रपदे तथा ॥ दुग्धमाश्वयुजे मासि कार्तिके द्विदलं तथा ॥ इमं करिष्ये नियमं निर्विघ्नं कुरु मेऽच्युत ॥ इदं व्रतं मयादेव गृहीतं पुरस्तस्तव ॥ निर्विघ्नं सिद्धिमायातु प्रसादात्ते रमापते ॥ गृहीतेस्मिन् व्रते देव पंचत्वं यदि मे भवेत् ॥ तदा भवतु संपूर्णं प्रसादात्ते जनार्दन ॥ ”—इस प्रकार प्रार्थना करनी. देवके अर्थ अर्घ्य शंखके द्वारा देना. ये व्रत नित्य है. हविष्यभक्षण आदि अन्य व्रत करनेकी इच्छामें “ श्रावणे वर्जये शाकं ” इस श्लोकके जगह “ हविष्यान्नं भक्षयिष्ये देवाहं प्रीतये तव ” यह विविशेष करना. शाकव्रत और अन्य व्रत समुच्चयकरके करने होवैं तौ तिस श्लोककों पढकर अन्य व्रतके मंत्रकों कहना. ऐसेही गुडवर्जन आदि धारणापारणा आदि व्रतोंमें “ वर्जयिष्ये गुडं देव मधुरस्वरसिद्धये ॥ वर्जयिष्ये तैलमहं सुंदरांगत्वसिद्धये ॥ योगाभ्यासी भविष्यामि प्राप्तुं ब्रह्मपदं परम् ॥ मौनव्रती भविष्यामि स्वाज्ञापालनसिद्धये ॥ एकांतरोपवासी च प्राप्तुं ब्रह्मपुरं परम् ॥” इस प्रकारसें उच्चार करना. निषिद्धमात्र वर्जनेकी इच्छामें “ वृंताकादि निषिद्धानि हरे सर्वाणि वर्जये ” इस प्रकारसें उच्चार करना.

तानिच चातुर्मास्येनिषिद्धानि प्राण्यंगचूर्णंचर्मस्थोदकंजंबीरंबीजपूरंयज्ञशेषभिन्नंविष्णवनिवेदितान्नंदग्धान्नंमसूरंमांसंचेत्यष्टविधमामिषंवर्जयेत् निष्पावराजमाषधान्ये लवणशाकंवृंताकंकलिंगफलंअनेकबीजफलं निर्बीजंमूलकंरक्तमूलकंकूष्मांडंइक्षुदंडंनूतनबदरीधात्रीफलानिंचिंचामंचकादिशयनमनृतुकालेभार्यांपरान्नंमधुपटोलंमाषकुलित्थसितसर्षपांश्चवर्जयेत् वृंताकबिल्वोदुंबरकलिंगभिःसटास्तुवैष्णवैःसर्वमासेषुवर्ज्याः अन्यत्रतुगोछागीमहिष्यन्यदुग्धंपर्युषितान्नंद्विजेभ्यःक्रीतारसाभूमिलवणंताम्रपात्रस्थंगव्यंपल्वलजलंस्वार्थपक्वमन्नमित्यामिषगणउक्तः चतुर्ष्वपिहिमासेषुहविष्याशिनपापभाक् हविष्याणितुव्रीहिमुद्गयवतिलकंगुकलापश्यामाकगोधूमधान्यानिरक्तभिन्नमूलकंसूरणादिकंदः सैंधवसामुद्रलवणंगव्यानिदधिसर्पिर्दुग्धानिपनसाम्रनारीकेलफलानिहरीतकीपिप्पलीजीरकंशुंठीचिंचाकदलीलवलीधात्रीफलानिगुडेतरेक्षुविकारइत्येतानिअतैलपक्वानि गव्यंतक्रंमाहिषंघृतंक्वचित् ॥

अब चातुर्मास्यव्रतमें निषिद्ध वस्तुओंकों कहताहुं.

सीपीका चूना, चाममें स्थित हुआ पानी, नींबू, बिजोरा, यज्ञशेषसें भिन्न अन्न, विष्णुकों नहीं निवेदन किया अन्न, दग्ध हुआ अन्न, मसूर, मांस, इन आठ प्रकारके मांसरूपी पदार्थोंकों वर्जना. चौला, रानेउडद, नमकका शाक, बैंगन, कलिंगड फल, बहुत बीजोंवाला फल, बीजोंसें वर्जित फल, मूली, लाल मूली, कोहला, ईषका गन्ना, नवीन बेर,

नवीन आंवला, अमली, पलंग आदिपर सोवना, ऋतुकालके विना अपनी स्त्रीसें भोग, पराया अन्न, शहद, मदिरा, परवल, उडद, कुलथी, सुपेद सरसों इन्होंकों वर्ज देना. वैंगन, वेलगिरी, गूलरका फल, कलिंगण, और दग्ध अन्न इतने सब पदार्थ वैष्णवोंनें सब महीनोंमें वर्जने. अन्य ग्रंथमें तौ गाय, बकरी, भैंस, इन्होंसें अन्य पशुका दूध, वासी अर्थात् शीला अन्न, ब्राह्मणोंसें खरीदे हुये रस, पृथिवीसें निकसा निमक, तांबाके पात्रमें रखा हुआ गायका दूध, छोटी जोहडीका पानी, मात्र अपने लिये पकाया अन्न इत्यादि मांसगण कहा है. चारों महीनोंमें हविष्यकों भोजन करनेवाला मनुष्य पापभागी नहीं होता. व्रीही अन्न, मूंग, जव, तिल, कांगनी, मटर, सामक, गेहूं ये अन्न और लाल मूलीसें वर्जित मूली, जमीकंद आदि कंद, सेंधा निमक, सामुद्र निमक, गायका दूध, दहीं, घृत, पनसफल, आंब, नारियल, हरडै, पीपल, जीरा, सूंठ, अमली, केलाकी घड, राने आंवले, आंवले, गुडसें वर्जित ईखका विकार, ये सब तेलमें न पके हुये हविष्य जानने. गायका तक्र और भैंसका घृत ये भी कहींक हविष्य माने गये हैं.

अथकाम्यव्रतानि गुडवर्जनान्मधुरस्वरता तैलवर्जनात्सुंदरांगता योगाभ्यासीब्रह्मपदमाप्नोति तांबूलत्यागाद्भोगीमधुरकंठश्च घृतत्यागीस्निग्धतनुः शाकत्यागीपक्वान्नभुक् पादाभ्यंगत्यागाद्वपुःसौगंध्यं दधिदुग्धतक्रत्यागाद्विष्णुलोकः स्थालीपाचितान्नत्यागाद्दीर्घसंततिः भूमौदर्भशायीविष्णुदासः भूमिभोजनान्नृपत्वं मधुमांसत्यागा मुनिः एकांतरोपवासाद्ब्रह्मलोकः नखकेशधारणाद्दिनेदिनेगंगास्नानं मौनादस्खलिताज्ञा विष्णुवंदनाद्गोदानफलं विष्णुपादस्पर्शात्कृतकृत्यता हरेरालयेसंमार्जनादिनानृपत्वं शतप्रदक्षिणाकरणाद्विष्णुलोकः एकभक्ताशनादग्निहोत्रफलं अयाचितेनवापीकूपोत्सर्गादिपूर्तफलं षष्ठाहःकालभोजनाच्चिरस्वर्गः पर्वोषुभोजनात्कुरुक्षेत्रवासफलं शिलाभोजनात्प्रयागस्नानफलं एवंमासचतुष्टयसाध्यानांव्रतानां संकल्पमेकादश्यांद्वादश्यांवाकृत्वाश्रावणमासव्रतविशेषसंकल्पइहैवकार्यः अहंशाकंवर्जयिष्येश्रावणेमासिमाधवेति अत्रशाकशब्देनलोकेप्रसिद्धाःफलमूलपुष्पपत्रांकुरकांडत्वगादिरूपावर्ज्याः नतुव्यंजनमात्रं शुंठीहरिद्राजीरकादिकमपिवावर्ज्यं तत्रतत्कालोद्भवानामातपादिशोषितकालांतरोद्भवानांचसर्वशाकानांवर्जनंकार्यं अथैषांचातुर्मास्यव्रतानांसमाप्तौकार्तिक्यां दानानितत्रैववक्ष्यंते ॥

अब काम्यव्रतोंकों कहताहुं.

गुड वर्जनेसें मधुर स्वर होता है. तेलके वर्जनेसें अंगोंकी सुंदरता होती है. योगाभ्यास करनेवाला ब्रह्मपदकों प्राप्त होता है. नागरपान त्यागनेसें भोगी और मधुर कंठवाला ऐसा मनुष्य होता है. घृत त्यागनेसें स्निग्ध शरीरवाला होता है. शाक त्यागनेसें पक्वान्नकों भोजन करनेवाला होता है. पैरोंके अभ्यंगकों त्यागनेसें शरीरमें सुगंध उपजता है. दहीं, दूध, तक्र इन्होंकों त्यागनेसें विष्णुलोक प्राप्त होता है. पात्रसें पकाये हुये अन्नकों त्यागनेसें बहुतसे संतान होते हैं. भूमीपर डाभ डालके उसपर शयन करनेसें मनुष्य विष्णुका दास होता है. भूमीपर भोजन करनेसें मनुष्य राजा होता है. मदिरा और मांस त्यागनेसें मनुष्य

मुनि होता है. एक दिन उपवास करके दूसरे दिन भोजन करनेसें ब्रह्मलोक प्राप्त होता है. नख और वालोंकों धारण करनेसें दिनदिनकेप्रति गंगास्नानका फल प्राप्त होता है. और मौन धारनेसें आज्ञाका भंग नहीं होता है. विष्णुकों प्रणाम करनेसें गोदानका फल मिलता है. विष्णुके चरणस्पर्शसें मनुष्य कृतकृत्य होता है. विष्णुके स्थानमें बुहारी आदिसें शुद्धि करनेसें मनुष्य राजा होता है. १०० परिक्रमा करनेसें विष्णुलोक प्राप्त होता है. एकबार भोजन करनेसें अग्निहोत्रका फल मिलता है. अयाचितव्रत करनेसें वावडी, कूवा इन्होंके उत्सर्ग आदिका पूर्तफल मिलता है. दिनके छठे भागमें भोजन करनेसें बहुत कालतक स्वर्गमें वास होता है. झाडके पत्तोंपर भोजन करनेसें कुरुक्षेत्रवासका फल मिलता है. और पत्थरपर भोजन करनेसें प्रयागके स्नानका फल मिलता है. ऐसे चार महीनोंसें साध्य ऐसे व्रतोंका संकल्प एकादशीमें अथवा द्वादशीमें करके पीछे श्रावणमासके व्रतविशेषका संकल्प यहां ही करना. सो ऐसा,—“**अहं शाकं वर्जयिष्ये श्रावणे मासि माधव.**” इस श्लोकस्थ शाकशब्द करके लोकमें प्रसिद्ध फल, मूल, पुष्प, पत्र, अंकुर, कांड, छाल इनरूपी शाक वर्जित करने, व्यंजन मात्रकों नहीं वर्जना. शुंठी, हलदी, जीरा इन आदि भी वर्जित करने. तहां तिस कालमें उत्पन्न हुयेली और अन्य कालोंमें उत्पन्न हुई घाम आदिसें सुकवायके रखेली ऐसी सब शाकोंकों वर्जित करना. इन चातुर्मास्यसंज्ञक व्रतोंकी समाप्तिमें दान करनेके, तिन्होंका निर्णय कार्तिककी पौर्णमासीके प्रकरणमें कहैंगे.

शयनीबोधिन्योस्तप्तमुद्राधारणमुक्तंरामार्चनचंद्रिकायां अत्रतप्तमुद्राधारणेविधायकानिप्रशंसावचनानिनिषेधकानिनिंदावचनानिचबहुतराण्युपलभ्यंते तेषांशिष्टाचाराद्व्यवस्था येषांकुलेपितृपितामहादिभिस्तप्तमुद्राधारणादिधर्मोंनुष्ठितस्तैस्तथैवानुष्ठेयः येषांतुकुलेषुनकेनाप्यनुष्ठितस्तैर्नस्वमतिविलसितश्रद्धयातद्धर्मोंनुष्ठेयोदोषश्रवणादितितात्पर्यं ॥

देवशयनी और देवउठनी एकादशीविषे तप्तमुद्राओंका धारण **रामार्चनचंद्रिकामें** कहा है. तप्तमुद्रा धारण करनेमें विधिरूपी प्रशंसाके वचन और निषेधरूपी निंदाके वचन बहुतसे लब्ध होते हैं, वास्ते तिन्होंकी शिष्टाचारकी माफक व्यवस्था करनी. जिन्होंके कुलमें पिता और पितामह आदियोंनें तप्तमुद्राधारण आदि धर्मका आचरण किया है, तिन्होंनें तैसेही तप्तमुद्रा आदिकों धारण करना और जिन्होंके कुलोंमें किसीनें भी तप्तमुद्राओंका धारण नहीं किया होवै तिन्होंनें अपनी बुद्धिके कुशलपनेसेंयुक्त श्रद्धाकरके तप्तमुद्राधर्मकों धारण नहीं करना. क्यौंकी, इस धर्मकों धारण करनेमें दोष है. ऐसा तात्पर्य है.

आषाढशुक्लद्वादश्यांवामनपूजनेनरमेधफलं पूर्वाषाढायुतायांपौर्णमास्यामन्नपानादिदानादक्षय्यान्नादिप्राप्तिः अस्यामेवपौर्णमास्यांप्रदोषव्यापिन्यांश्रीशिवस्यशयनोत्सवः अस्यामेव कोकिलाव्रतं तत्र स्नानंकरिष्येनियताब्रह्मचर्येस्थितासती भोक्ष्यामिनक्तंभूशय्यांकरिष्येप्राणिनांदयामितिमासव्रतंसंकल्प्य कोकिलारूपिणींशिवांप्रत्यहंसंपूज्यनक्तभोजनं यस्मिन्वर्षेधिकाषाढस्तस्मिन्नेववर्षेशुद्धाषाढेव्रतंकार्यमित्याचारःसनिर्मूलः आषाढस्यश्रावणस्यवापौर्णमास्यांचतुर्दश्यामष्टम्यांवाशिवपवित्रारोपणमुक्तं अस्यांपौर्णमास्यांसंन्यासिनांचातुर्मास्यावाससंकल्पांग

लेनक्षौरव्यासपूजादिकंविहितं अत्रकर्मणिऔदयिकीत्रिमुहूर्तापौर्णमासीग्राह्याचातुर्मासस्यमध्येतुवपनंवर्जयेद्यतिः चातुर्मासंद्विमासंवासदैकत्रैवसंवसेत् ॥

आषाढ शुदि द्वादशीमें वामनजीकी पूजा करनेसें नरमेध यज्ञका फल मिलता है. पूर्वाषाढानक्षत्रसें युत हुई पौर्णमासीमें अन्नपान आदिके दानसें अक्षय्य अर्थात् जिसका कभी भी नाश नहीं होता ऐसे अन्न आदिकी प्राप्ति होती है. प्रदोषकालव्यापिनी इसी पौर्णमासीमें श्रीमहादेवजीका शयनोत्सव करना. इसी पौर्णमासीमें कोकिलाव्रत होता है. तहां **"स्नानं करिष्ये नियता ब्रह्मचर्ये स्थिता सती ॥ भोक्ष्यामि नक्तं भूशय्यां करिष्ये प्राणिनां दयाम्,"** ऐसा मासव्रतका संकल्प करके पीछे कोकिलाके रूपवाली शिवा देवीकी नित्यप्रति पूजा करके रात्रिमें भोजन करना. जिस वर्षमें अधिकमास आषाढ होवै, तिसी वर्षमें शुद्ध आषाढमें यह व्रत करना ऐसा जो आचार है सो निर्मूल है. आषाढकी अथवा श्रावणकी पौर्णमासी अथवा चतुर्दशी अथवा अष्टमी इन्होंमें महादेवजीके पवित्राका रोपण कहा है. इसी पौर्णमासीमें संन्यासियोंनें क्षौर कराके चार महीनोंतक एक जगह रहनेका संकल्प करके व्यासजीकी पूजा करनी. इस कर्ममें उदयकालव्यापिनी ६ घडीवाली पौर्णमासी ग्रहण करनी. "चतुर्मासके मध्यमें संन्यासीनें क्षौर नहीं कराना, और चार महीने अथवा दो महीने संन्यासीनें निरंतर एक जगह वास करना."

तत्रादौक्षौरंविधायद्वादशमृत्तिकास्नानानिप्राणायामादिविधिंचकृत्वाव्यासपूजांकुर्यात् अथसंक्षेपेणतद्विधिः देशकालौसंकीर्त्यचातुर्मास्यवाससंकल्पंकर्तुंश्रीकृष्णव्यासभाष्यकाराणांसपरिवाराणांपूजनंकरिष्येइतिसंकल्प्य मध्येश्रीकृष्णंतत्पूर्वतःप्रादक्षिण्येनवासुदेवसंकर्षणप्रद्युम्नानिरुद्धानावाह्य श्रीकृष्णपंचकदक्षिणभागेव्यासंतत्पूर्वतःप्रादक्षिण्येनसुमंतुजैमिनिवैशंपायनपैलानितिव्यासपंचकमावाह्यश्रीकृष्णादिवामेभाष्यकारंश्रीशंकरंतत्पूर्वतः प्रादक्षिण्येनपद्मपादविश्वरूपत्रोटकहस्तामलकाचार्यानावाह्यश्रीकृष्णपंचके श्रीकृष्णपार्श्वयोर्ब्रह्मरुद्रौपूर्वादिचतुर्दिक्षुसनकादीन् श्रीकृष्णपंचकात्पुरतःगुरुपरमगुरुपरमेष्ठिगुरून् ब्रह्मवसिष्ठशक्तिपराशरव्यासशुकगौडपादगोविंदपादशंकराचार्यान्ब्रह्मनिष्ठांश्चावाह्य पंचकत्रयस्याग्नेयेगणेशंईशान्येक्षेत्रपालंवायव्येदुर्गांनैर्ऋत्येसरस्वतींप्रागाद्यष्टदिक्षुइंद्रादिलोकपालांश्चावाह्यपूजयेत् तत्रनारायणाष्टाक्षरेणश्रीकृष्णपूजाअन्येषांप्रणवादिनमोंतैस्तत्तन्नाममंत्रैःपूजाकार्या पूजांतेअसतिप्रतिबंधेचतुरोवार्षिकान्मासानिहवसामिइतिमनसासंकल्प्य अहंतावन्निवत्स्यामिसर्वभूतहितायवै प्रायेणप्रावृषिप्राणिसंकुलंवर्त्मदृश्यते अतस्तेषामहिंसार्थपक्षान्वैश्रुतिसंश्रयान स्थास्यामश्चतुरोमासानत्रैवासतिबाधके इतिवाचिकसंकल्पंकुर्यात् ततोगृहस्थाःप्रतिब्रूयुः निवसंतुसुखेनात्रगमिष्यामःकृतार्थतां यथाशक्तिचशुश्रूषांकरिष्यामोवयंमुदेति ततोवृद्धानुक्रमेण यतीन्गृहस्थाःयतयश्चान्योन्यंनमस्कुर्युः एतद्विधिःपौर्णमास्यामसंभवेद्वादश्यांकार्यः आषाढकृष्णद्वितीयायामशून्यशयनंव्रतं अत्रलक्ष्मीयुतंविष्णुंपर्यंकेसंपूज्य पत्नीभर्तुर्वियोगंचभर्ताभार्यासमुद्भवं नाप्नुवंतियथादुःखंदंपत्यानितथाकुर्वित्यादिभिर्दांपत्याभंगप्रार्थनार्थैर्मंत्रैःप्रार्थयेत् ततश्चंद्रायार्घ्यंदत्वानक्तभोजनंकार्यं एवंमासचतुष्टयेकृष्णद्वितीयासुसंपूज्यसपत्नीकायशय्यादानंकृत्वातांप्रतिमांचसोपस्करांदद्यात् अस्मिन्व्रतेअक्षय्यंदांपत्यसुखंपुत्रधनाद्यवियोगोगार्ह

स्थ्यावियोगःसप्तजन्मानिभवति अत्रव्रतेचंद्रोदयव्यापिनीतिथिर्ग्राह्या चंद्रोदयेपूजाद्युक्तेःदिनद्वयेसत्त्वेऽसत्त्वेवापरैव ॥ इति श्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेआषाढमासकृत्यनिर्णयउद्देशः समाप्तः ॥

संन्यासीओनें चातुर्मास्यमें एक जगह रहना उसका विधि कहताहुं.

तहां आदिमें क्षौर करवायके पीछे बारह मृत्तिकाओंसें स्नान और प्राणायाम आदि विधिकों करके व्यासजीकी पूजा करनी. अब संक्षेप करके तिसकी विधि कहते हैं. देश और कालका उच्चार करके—**“चातुर्मास्यवाससंकल्पं कर्तुं श्रीकृष्णव्यासभाष्यकाराणां सपरिवाराणां पूजनं करिष्ये,”** इस प्रकार संकल्प करके मध्यमें श्रीकृष्णजीकों, श्रीकृष्णके पूर्व दिशामें वासुदेवजी, दक्षिण दिशामें बलदेवजी, पश्चिम दिशामें प्रद्युम्नजी, उत्तर दिशामें अनिरुद्धजी इन्होंका आवाहन करके श्रीकृष्ण आदि पांचोंके दक्षिणभागमें व्यासजी, और व्यासजीके पूर्वमें सुमंतुजी, और दक्षिणमें जैमिनीजी, पश्चिममें वैशंपायनजी, उत्तरमें पैलजी ऐसे व्यासजी आदि पांचोंका आवाहन करके और श्रीकृष्ण आदिके वामे भागमें भाष्यकार श्रीशंकराचार्यजी और श्रीशंकराचार्यके पूर्वमें पद्मपाद और दक्षिणमें विश्वरूप, पश्चिममें त्रोटक और उत्तरमें हस्तामलक इन आचार्योंका श्रीकृष्णपंचकमें आवाहन करके श्रीकृष्णके पार्श्वभागोंमें ब्रह्माजी और महादेवजी, पूर्व आदि चार दिशाओंमें सनक आदि मुनि और श्रीकृष्णपंचकके आगे गुरु, परमगुरु, परमेष्ठीगुरु, ब्रह्माजी, वसिष्ठ, शक्ति, पराशर, व्यास, शुकदेव, गौडपाद, गोविंदपाद, शंकराचार्य इन ब्रह्मनिष्ठ मुनियोंका आवाहन करके इस पंचकत्रयके अग्निदिशामें गणेशजी, ईशान दिशामें क्षेत्रपाल, वायव्य दिशामें दुर्गा, और नैर्ऋत्य दिशामें सरस्वती, और पूर्व आदि आठ दिशाओंमें इंद्र आदि लोकपाल इन्होंका आवाहन करके पूजा करनी. तहां **‘ॐ नमो नारायणाय’** इस अष्टाक्षरी मंत्रकरके श्रीकृष्णकी पूजा करनी. और अन्य सबोंकी ॐकार आदिमें होवै, और नमः ऐसा अंतमें होवै ऐसे नाममंत्रोंकरके पूजा करनी. पूजाके अंतमें जो प्रतिबंध नहीं होवै तौ **“चतुरो वार्षिकान् मासानिह वसामि,”** ऐसा मनसें संकल्प करके **“अहं तावन्निवत्स्यामि सर्वभूतहिताय वै ॥ प्रायेण प्रावृषि प्राणिसंकुलं वर्त्म दृश्यते ॥ अतस्तेषामहिंसार्थं पक्षान् वै श्रुतिसंश्रयान् ॥ स्थास्यामश्चतुरो मासानत्रैवासति बाधके,”** ऐसा वाचिक संकल्प करना. पीछे गृहस्थी मनुष्योंनें प्रतिवचन कहना.—**“निवसंतु सुखेनात्र गमिष्यामः कृतार्थताम्॥ यथाशक्ति च शुश्रूषां करिष्यामो वयं मुदा,”** इस मंत्रकों पढना. पीछे वृद्धानुक्रमकरके संन्यासीयोंकों गृहस्थी मनुष्यनें प्रणाम करने, और संन्यासीयोंनें भी आपसमें प्रणाम करने. यह विधि पौर्णमासीमें नहीं बन सकै तौ द्वादशीमें करना. आषाढ वदि द्वितीयाकों अशून्यशयनव्रत होता है, तहां लक्ष्मीजीसें संयुत हुये विष्णुकी पलंगपर पूजा करके **“पत्नीभर्तुर्वियोगं च भर्ता भार्यासमुद्भवम् ॥ नाप्नुवंति यथा दुःखं दंपत्यानि तथा कुरु,”** इन आदि स्त्रीपुरुषके भंगकों नहीं करनेवाले मंत्रोंकरके प्रार्थना करनी. पीछे चंद्रमाकों अर्घ्य देके रात्रिमें भोजन करना. इस तरह चार महीनोंतक कृष्णपक्षकी द्वितीयाओंमें अ-

च्छीतरह पूजा करके पत्नीसहित ऐसे ब्राह्मणको शय्यादान करके सामग्रीसहित तिस प्रतिमाका दान करना. इस व्रतसें स्त्रीपुरुषका अक्षय्य सुख, पुत्र और धन आदिके वियोगका अभाव और गृहस्थाश्रमके वियोगका अभाव ये सात जन्मतक फल प्राप्त होते हैं. चंद्रोदयमें पूजा करनी ऐसा कहा है, वास्ते इस व्रतमें चंद्रोदयव्यापिनी तिथि लेनी उचित है. दोनों दिनोंमें व्याप्ति होवै अथवा अव्याप्ति होवै तब परविद्धाही लेनी. इति आषाढमासकृत्यनिर्णयो नाम चतुर्थ उद्देशः ॥ ४ ॥

अथश्रावणमासः ॥ सिंहेपूर्वाःषोडशनाड्यःपुण्यकालःरात्रौतूक्तं अत्रमासेएकभक्तव्रतंनक्तव्रतंविष्णुशिवाद्यभिषेकश्चोक्तः सिंहराशिगतेसूर्येयस्यगौःप्रसूयतेतेनव्याहृतिभिर्घृताक्तायुतसंख्यसर्षपहोमंकृत्वासागौर्ब्राह्मणायदेया एवंनिशीथेगोःक्रंदनेपिमृत्युंजयमंत्रेणहोमादिरूपाशांतिःकार्या एवंश्रावणमासेदिवाश्विनीप्रसवोपिनिषिद्धः माघेबुधेचमहिषीश्रावणेवडवादिवा सिंहेगावःप्रसूयंतेस्वामिनोमृत्युदायकाइत्युक्तेरत्रापिशांतिःशांतिग्रंथतोज्ञेया सोमवारव्रतंकार्यं श्रावणेवैयथाविधिशक्तेनोपोषणंकार्यमथवानिशिभोजनं एवंश्रावणेभौमवारेगौरीपूजाप्युक्ता श्रावणशुक्लचतुर्थीमध्याह्नव्यापिनीपूर्वयुताग्राह्या श्रावणशुक्लपंचमीनागपंचमी इयमुदयेत्रिमुहूर्तव्यापिनीपरविद्धाग्राह्या परेद्युस्त्रिमुहूर्तन्यूनापंचमीपूर्वेद्युस्त्रिमुहूर्तन्यूनचतुर्थ्याविद्धातदापूर्वैव त्रिमुहूर्ताधिकचतुर्थीवेधेद्विमुहूर्तापिपरैव मुहूर्तमात्रातुनग्राह्येतिममप्रतिभाति अस्यांभित्त्यादिलिखिताः मृन्मयावायथाचारंनागाःपूज्याः श्रावणशुक्लद्वादश्यांमासंकृतस्यशाकवर्जनव्रतस्यसांगतार्थं ब्राह्मणायशाकदानंकरिष्यइतिसंकल्प्यब्राह्मणंसंपूज्य उपायनमिदंदेवव्रतसंपूर्णहेतवे शाकंतुद्विजवर्यायसहिरण्यंददाम्यहं इत्यादिमंत्रेणपक्वमामंवाशाकंदद्यात् ततोदधिभाद्रपदेमासेवर्जयिष्येसदाहरेइतिदधिव्रतंसंकल्पयेत् अत्र दधिमात्रंवर्ज्यंतक्रादीनामनिषेधः अथपारणाहेद्वादश्यांविष्णोःपवित्रारोपणं पारणाहेद्वादश्यसत्त्वेत्रयोदश्यांपारणाहेतत्रासंभवेश्रवणर्क्षेपूर्णिमायांवाकार्यं शिवपवित्रंचतुर्दश्यामष्टम्यांवापौर्णमास्यांवाकार्यं एवंदेवीगणेशदुर्गादीनांचतुर्दशीचतुर्थीतृतीयानवम्यादयोयथाकुलाचारंतिथयःतत्तत्तिथिष्वसंभवेसर्वदेवानांश्रावणपौर्णमास्यांकार्यं तत्राप्यसंभवेकार्तिक्यवधिगौणकालः इदंनित्यं अकुर्वाणोव्रजत्यधः तस्यसांवत्सरीपूजानिष्फलेत्याद्युक्तेः गौणकालेप्यकरणेतदायुतंजपेन्मंत्रंस्तोत्रंवापिसमाहितइत्युक्तेरयुतसंख्याकतद्देवतामूलमंत्रजपःप्रायश्चित्तं तत्रपूर्वेद्युरधिवासनंपरेह्निपवित्रारोपणं द्व्यहकालासंभवेसद्योधिवासनपूर्वकंतत्कार्यं ॥

अब श्रावणमासके कृत्योंकों कहताहुं.

सिंहसंक्रांतिमें पहली सोलह घटिका पुण्यकाल है. और रात्रिमें संक्रांति होवै तौ तिसका निर्णय पहलेही कह चुके हैं. इस महीनेमें एकभक्तव्रत, नक्तव्रत, विष्णु और शिव आदिकों अभिषेक करना ऐसा कहा है. सिंहराशिपर सूर्य होवै तब जिसकी गौ व्यावै तिसनें व्याहृतियोंकरके घृतसें भिगोई हुई राईसें दश हजार होम करके पीछे वह गौ ब्राह्मणकों देनी. ऐसेही अर्धरात्रिमें जो गौ ऊंचे स्वरसें पुकारै तब भी मृत्युंजयमंत्रकरके होम आदि शांति करनी. ऐसेही श्रावणमहीनेमें दिनकों घोडीका व्यावना भी निषिद्ध है. “ माघ महीनेमें और

बुधवारमें भैंस व्यावै, और श्रावण महीनेमें दिनकों घोडी व्यावै और सिंहराशिपर सूर्य होवै तब गौ व्यावै ये सब मालिककों मृत्यु देनेवाले हैं." इस वचनसें यहां भी शांति करनी. सो शांति शांतिग्रंथमें देख लेनी. "श्रावण महीनेमें विधिपूर्वक सोमवारका व्रत करना. इस व्रतमें समर्थ मनुष्यनें उपवास करना अथवा रात्रिमें भोजन करना." ऐसेही श्रावण महीनेमें मंगलवारकों गौरीकी पूजा कही है. श्रावण शुदि चतुर्थी मध्यान्हव्यापिनी पूर्वविद्धा लेनी. श्रावण शुदि पंचमी नागपंचमी कहाती है. यह उदयकालमें ६ घटीका व्यापिनी परविद्धा लेनी. परदिनमें ६ घटीकाओंसें कम पंचमी होवै और पूर्वदिनमें ६ घटीओंसें कम चतुर्थीसें विद्धा होवै तब पहले दिनकीही लेनी. पूर्वदिनमें ६ घटीकाओंसें अधिक चतुर्थीसें विद्धा होवै तौ चार घटीका होवै तौभी परदिनकीही लेनी. २ घटीका मात्र पंचमी नहीं ग्रहण करनी, ऐसा मुझकों प्रतिभान होता है. इस पंचमीमें भींत आदिमें लिखित किये अथवा माटीसें बनाये हुये नागका पूजन करना. श्रावण शुदि द्वादशीकों "**मासं कृतस्य शाकवर्जनव्रतस्य सांगतार्थं ब्राह्मणाय शाकदानं करिष्ये**" इस प्रकार संकल्प करके ब्राह्मणकी पूजा करनी. पीछे **उपायनमिदं देव व्रतसंपूर्णहेतवे ॥ शाकं तु द्विजवर्याय सहिरण्यं ददाम्यहम्**," इस मंत्रकरके पकाई हुई अथवा कच्ची शाक देना. तिसके अनंतर "**दधि भाद्रपदे मासे वर्जयिष्ये सदा हरे**" इस मंत्रसें दधिव्रतका संकल्प करना. इस व्रतमें दहीमात्रकों वर्ज करना. तक्र आदिका निषेध नहीं है. पारणाके दिन द्वादशीमें विष्णुकों पवित्रारोपण करना. पारणाके दिनमें द्वादशी नहीं होवै और त्रयोदशीमें पारणादिन होवै और तहां श्रवणनक्षत्र नहीं होवै तब, अथवा पौर्णमासीविषे पवित्रारोपण करना. महादेवका पवित्रारोपण चतुर्दशीमें अथवा अष्टमीमें अथवा पौर्णमासीमें करना. ऐसेही देवी, गणेश, दुर्गा, इन आदिकोंके पवित्रारोपणकों चतुर्दशी, चतुर्थी, तृतीया, नवमी इन आदि तिथि आचारके अनुसार लेनी. तिस तिस तिथिमें संभव नहीं होवै तब श्रावणकी पौर्णमासीमें सब देवताओंके पवित्रे रोपित करने. तहां भी नहीं हो सकें तौ कार्तिककी पौर्णमासीतक गौणकाल है. यह नित्य है. "इसके नहीं करनेमें मनुष्य नरकमें जाता है, और तिसकी वर्षतककी पूजा निष्फल होती है" इन आदि वचन कहे हैं. और जो यह कर्म गौणकालमें भी नहीं किया जावै तौ "दश हजार मंत्रकों जपना अथवा सावधान हुए मनुष्यनें स्तोत्रकों भी जपना," इस वचनसें दश हजारसंख्याक तिस तिस देवताके मूलमंत्रका जप करना, यह प्रायश्चित्त है. तहां पूर्वदिनमें अधिवासन करके परदिनमें पवित्राकों रोपित करना. दोनों दिनोंमें नहीं बन सकै तौ पहले अधिवासन करके पीछे पवित्राकों रोपित करना.

अथसंक्षेपतःप्रयोगः कार्पाससूत्रस्यनवसूत्रींविधायअष्टोत्तरशतनवसूत्र्यादेवजानुपर्यंतं चतुर्विंशतिग्रंथिकमुत्तमपवित्रं चतुःपंचाशन्नवसूत्र्याऊरुलंबिद्वादशग्रंथिकं मध्यमं सप्तविंशतिनवसूत्र्याअष्टग्रंथिकं नाभिपर्यंतंकनिष्ठंपवित्रंचकृत्वा विंशत्युत्तरशतेनसप्तत्यावानवसूत्र्या पादलंबिनींवनमालामष्टोत्तरशतचतुर्विंशत्यन्यतरग्रंथिकां कृत्वा द्वादशनवसूत्र्याद्वादशग्रंथिकं गंधपवित्रंसप्तविंशतिनवसूत्र्यागुरुपवित्रंत्रिसूत्र्यांगदेवतापवित्राणिकुर्यात् शिवपवित्राणिलिंगविस्तारानुसारेणकुर्यात् सर्वाणिपवित्राणिपंचगव्येनप्रोक्ष्यप्रणवेनप्रक्षाल्यमूलेनाष्टो

त्तरशतमभिमंत्र्य ग्रंथीन्कुंकुमेनरंजयित्वासर्वपवित्राणिवंशपात्रेसंस्थाप्यवस्त्रेणापिधायदेवपुरतोन्यस्य क्रियालोपविधानार्थंयत्त्वयाविहितंप्रभो मयैतत्क्रियतेदेवतवतुष्ट्यैपवित्रकं नमेविघ्नोभवेद्देवकुरुनाथदयांमयि सर्वथासर्वदाविष्णोममत्वंपरमागतिरितिप्रार्थ्याधिवासनंकुर्यात् तत्र देशकालौसंकीर्त्य संवत्सरकृतपूजाफलावाप्त्यर्थंअमुकदेवताप्रीत्यर्थंअधिवासनविधिपूर्वकंपवित्रारोपणंकरिष्ये इतिसंकल्प्यदेवपुरतःसर्वतोभद्रेजलपूर्णंकुंभंसंस्थाप्यकुंभेवंशपात्रंतत्रतानिपवित्राणिनिधायतेषु संवत्सरस्ययागस्यपवित्रीकरणायभोः विष्णुलोकात्पवित्राद्यआगच्छेहनमोस्तुते इतिमंत्रेणमूलमंत्रेणचावाह्यत्रिसूत्र्यांब्रह्मविष्णुरुद्रान्नवसूत्र्यां ॐकारसोमवह्निब्रह्मनागेशसूर्यशिवविश्वेदेवानुत्तममध्यमकनिष्ठपवित्रेषु ब्रह्मविष्णुरुद्रान्सत्वरजस्तमांस्यावाह्यवनमालायांप्रकृतिंचावाह्यमूलमंत्रेणश्रीपवित्राद्यावाहितदेवताभ्योनमइत्यंतेनगंधाद्युपचारैःपूजयेत् ततःपूर्वसंपादितंवितास्तिमात्रंद्वादशग्रंथिकं गंधपवित्रमादाय विष्णुतेजोद्भवंरम्यंसर्वपातकनाशनं सर्वकामप्रदंदेवतवांगेधारयाम्यहमितिमंत्रेणमूलसंपुटितेनदेवपादयोःसमर्पयेत् देवस्यकरेबध्नीयादित्यन्ये ततोदेवंपंचोपचारैःसंपूज्यप्रार्थयेत् आमंत्रितोसिदेवेशपुराणपुरुषोत्तम प्रातस्त्वांपूजयिष्यामिसान्निध्यंकुरुकेशव क्षीरोदधिमहानागशय्यावस्थितविग्रह प्रातस्त्वांपूजयिष्यामिसन्निधौभवतेनमः ततःसाष्टांगंप्रणम्यपुष्पांजलिंदद्यात् इत्यधिवासनं अत्र सर्वत्रमूलमंत्रोगुरूपदिष्टस्तांत्रिकोवैदिकोवादेवगायत्रीरूपोवाग्राह्यः ॥

अब संक्षेपसें पवित्रारोपणप्रयोगकों कहताहुं.

कपासके सूत्रकी नवसूत्री बनाय पीछे १०८ नवसूत्रीसें देवताके गोडापर्यंत चौवीस ग्रंथियोंवाले **उत्तम** पवित्राकों बनाय और ९४ नवसूत्रीसें देवताके जांघतक लंबित और बारह ग्रंथियोंवाले **मध्यम** पवित्राकों बनाय और २७ नवसूत्रीसें आठ ग्रंथियोंवाला और देवताकी नाभिपर्यंत ऐसे **कनिष्ठ** पवित्राकों बनाय और १२० अथवा ७० नवसूत्रीयोंसें देवताके पैरोंतक लंबी और १०८ अथवा २४ ग्रंथियोंवाली वनमाला बनाय और १२ नवसूत्रीयोंसें बारह ग्रंथियोंवाला **गंधपवित्रा** बनाय और २७ नवसूत्री करके **गुरुपवित्रा** और तीन सूत्रीसें अंगदेवताका पवित्रा बनाना. महादेवके पवित्रे लिंगके विस्तारके अनुसार करने. पीछे सब पवित्रोंकों पंचगव्यसें प्रोक्षित करके और ॐकारमंत्रसें धोके और मूलमंत्रसें १०८ वार अभिमंत्रित करके और ग्रंथियोंकों केसरसें अथवा रोलीसें रंगवायके सब पवित्रोंकों वांशके पात्रपर अच्छी तरह स्थापित करके और वस्त्रसें आच्छादित करके और देवताके आगे स्थापित करके—“**क्रियालोपविधानार्थं यत्त्वया विहितं प्रभो ॥ मयैतत् क्रियते देव तव तुष्ट्यै पवित्रकम् ॥ न मे विघ्नो भवेदेव कुरु नाथ दयां मयि ॥ सर्वथा सर्वदा विष्णो मम त्वं परमा गतिः**” इस प्रकार प्रार्थना करके अधिवासन करना. तहां देश और कालका उच्चारण करके—“**संवत्सरकृतपूजाफलावाप्त्यर्थममुकदेवताप्रीत्यर्थमधिवासनविधिपूर्वकं पवित्रारोपणं करिष्ये**” ऐसा संकल्प करके देवताके आगे सर्वतोभद्रमंडलपर जलसें पूर्ण हुये कलशकों स्थापित करना और तिस कलशपर वांशके पात्रकों धरके उसमें पवित्रोंकों स्थापित करके तिन्होंमें “**संवत्सरस्य यागस्य पवित्रीकरणाय भोः ॥ विष्णुलोकात् पवित्राद्य आगच्छेह नमोस्तुते,**” इस मंत्रकरके और

मूलमंत्रकरके आवाहन करना और त्रिसूत्रीमें ब्रह्मा, विष्णु, महादेव इन्होंकों और नवसूत्रीमें ॐकार, चंद्रमा, अग्नि, ब्रह्माजी, शेषनाग, सूर्य, शिव, विश्वेदेवा इन्होंका उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ इन पवित्रोंमें आवाहन करना. ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण इन्होंका आवाहन करना, और वनमालामें प्रकृतिका आवाहन करके **"श्रीपवित्राद्यावाहितदेवताभ्यो नमः"** यह है अंतमैं जिसके ऐसे मूलमंत्रकरके गंध आदि उपचारोंसें पूजा करनी. पीछे पूर्वसंपादित वितस्तिमात्र और बारह ग्रंथियोंवाले ऐसे गंधपवित्राकों ग्रहण करके— **"विष्णुतेजोद्भवं रम्यं सर्वपातकनाशनम् ॥ सर्वकामप्रदं देव तवांगे धारयाम्यहम्,"** इस संपुटित किये मूलमंत्रसें देवताके पैरोंमें अर्पित करना. कितनेक कहते हैं की देवताके हाथपर बांध देना. पीछे देवकी पंचोपचारोंसें पूजा करके प्रार्थना करनी. तिसका मंत्र— **"आमंत्रितोसि देवेश पुराणपुरुषोत्तम ॥ प्रातस्त्वां पूजयिष्यामि सान्निध्यं कुरु केशव ॥ क्षीरोदधिमहानागशय्यावस्थितविग्रह ॥ प्रातस्त्वां पूजयिष्यामि सन्निधौ भव ते नमः"** पीछे साष्टांग प्रणाम करके पुष्पांजलि अर्पण करनी. यह अधिवासन समाप्त हुआ है. यहां सब जगह गुरुसें उपदिष्ट हुआ और तांत्रिक अथवा वैदिक ऐसा मूलमंत्र अथवा गायत्रीमंत्र ग्रहण करना उचित है.—

ततोरात्रिंसत्कथाजागरेणातिवाह्यप्रातःकालेसद्योधिवासनेगोदोहांतरितेवाकालेपवित्रारोपणांगभूतंदेवपूजनंपवित्रपूजनंचकरिष्येइतिसंकल्प्यदेवंपवित्राणिचफलाद्युपनैवेद्यांतगंधाद्युपचारैःसंपूज्यगंधदूर्वाक्षतयुतंकनिष्ठंपवित्रमादाय देवदेवनमस्तुभ्यंगृहाणेदंपवित्रकं पवित्रीकरणार्थायवर्षपूजाफलप्रदं पवित्रकंकुरुष्वाद्ययन्मयादुष्कृतंकृतं शुद्धोभवाम्यहंदेवत्वत्प्रसादात्सुरेश्वरेतिमंत्रेणमूलसंपुटितेनदत्वा मध्यमोत्तमपवित्रेवनमालांचैवमेवैतन्मंत्रावृत्त्यादद्यात् अंगदेवताभ्योनाम्नासमर्प्यमहानैवेद्यंदत्वानीराज्यप्रार्थयेत् मणिविद्रुममालाभिर्मंदारकुसुमादिभिः इयंसांवत्सरीपूजातवास्तुगरुडध्वज वनमालांयथादेवकौस्तुभंसततंहृदि तद्वत्पवित्रतंतूंस्त्वंपूजांचहृदयेवह जानताऽजानतावापियत्कृतंनतवार्चनं केनचिद्विघ्नदोषेणपरिपूर्णंतदस्तुमे मंत्रहीनंक्रियाहीनंभक्तिहीनंसुरेश्वर यत्पूजितंमयादेवपरिपूर्णंतदस्तुमे अपराधसहस्राणि क्रियंतेहर्निशंमया दासोहमितिमांमत्वाक्षमस्वपरमेश्वरेति अत्रशिवादौगरुडध्वजेत्यादौवृषवाहनेत्यूहः वनमालामितिश्लोकस्यतुलोपः देव्यांतुदेवदेवसुरेश्वरेत्यादौदेविदेविसुरेश्वरीत्यादिस्त्रीप्रत्ययांतपदोहःकार्यः शेषंसमानं ततोगुरुंसंपूज्यपवित्रंदत्वान्यब्राह्मणेभ्यःसुवासिनीभ्यश्चान्यानिदत्वास्वयमपिस्वकुटुंबोधारयेत् ततोब्राह्मणैःसहभुक्त्वात्रिरात्रंब्रह्मचर्यादिनियमवान् देवेपवित्राणिधारयेत् देवस्यस्नानादिकोपचारान्पवित्राणिउत्तार्यकारयेत् त्रिरात्रांतेदेवंसंपूज्यपवित्राणि विसर्जयेत् अत्रशिवादिपवित्रारोपणेचतुर्दशीपूर्वविद्धाग्राह्या एवंपूर्णिमापित्रिमुहूर्तसायाह्नव्याप्तापूर्वविद्धैवग्राह्या अष्टम्यादितिथ्यंतराण्यपिपवित्रारोपणेप्रथमपरिच्छेदोक्तसामान्यतिथिनिर्णयानुसारेणग्राह्याणि ॥ इति पवित्रारोपणविधिः ॥

पीछे उत्तम कथा और जागरणसें रात्रिकों व्यतीत करके प्रातःकालमें तत्काल अधिवासन करना होवै तौ गोदोहन कालमें **"पवित्रारोपणांगभूतं देवपूजनं पवित्रपूजनं च करिष्ये,"** ऐसा संकल्प करके देवकी और पवित्रोंकी फलसें आरंभ करके नैवेद्यतक गंध

आदि उपचारोंसें पूजा करके गंध, दूव, अक्षत, इन्होंसें युत हुये कनिष्ठ पवित्रेकों ग्रहण करके **“देवदेव नमस्तुभ्यं गृहाणेदं पवित्रकम् ॥ पवित्रीकरणार्थाय वर्षपूजाफलप्रदम् ॥ पवित्रकं कुरुष्वाद्य यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ शुद्धो भवाम्यहं देव त्वत्प्रसादात्सुरेश्वर ॥”** इस मूलसंपुटितमंत्रसें देके मध्यम, उत्तम पवित्रा और वनमाला इन्होंकों इस पूर्वोक्त मंत्रकी आवृत्तिसें देना. और अंगदेवतोंके अर्थ नाममंत्रसें समर्पित कर और महानैवेद्य अर्पण करके आरती करके प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—**“मणिविद्रुममालाभिर्मंदारकुसुमादिभिः ॥ इयं सांवत्सरी पूजा तवास्तु गरुडध्वज ॥ वनमालां यथा देव कौस्तुभं सततं हृदि ॥ तद्वत्पवित्रतंतूंस्त्वं पूजां च हृदये वह ॥ जानताऽजानता वापि यत्कृतं न तवार्चनम् ॥ केनचिद्विघ्नदोषेण परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽहमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर.”** यहां शिव आदि देवताओंके पवित्रोंमें ‘गरुडध्वज’ इस पदके स्थानमें ‘वृषवाहन’ ऐसा उच्चार करना. ‘वनमालां’ इस श्लोकका लोप करना. देवीकें विषयमें ‘देवदेव सुरेश्वर’ इस आदिके स्थानमें ‘देविदेवि सुरेश्वरी’ इत्यादि स्त्रीप्रत्ययांत पदका उच्चार करना. शेष रहे समान जानने. पीछे गुरुकी पूजा कर और पवित्रेका दान कर और अन्य ब्राह्मणोंकों तथा सुहागन स्त्रियोंकों अन्य पवित्रोंकों देके कुटुंबसहित आप भी धारण करने. पीछे ब्राह्मणोंके साथ भोजन करके तीन रात्रितक ब्रह्मचर्य आदि नियमोंवाला होके देवताओंकों पवित्रे धारण करवाने. देवका स्नान आदि पवित्रे उतारके करना. इस तरह तीन दिन व्यतीत हुए पीछे देवताकी पूजा करके पवित्रे उतार लेने. यहां शिव आदिके पवित्रारोपणमें पूर्वविद्धा चतुर्दशी लेनी. ऐसेही पौर्णमासी भी ६ घटीका सायान्हकालमें व्याप्ति होवै तौ पूर्वविद्धा ही लेनी. अष्टमी आदि अन्य तिथियोंमें पवित्रारोपण करना होवै तौ प्रथम परिच्छेदमें कहे हुए सामान्यतिथिनिर्णयके अनुसार करके तिथि लेनी. इसतरह पवित्रारोपणविधि समाप्त हुआ.

अथोपाकर्मकालः तत्रबह्वृचानांश्रावणशुक्लपक्षेश्रवणनक्षत्रंपंचमीहस्तइतिकालत्रयंतत्रश्रवणंमुख्यकालस्तदलाभेपंचम्यादिः तथाचकालतत्त्वविवेचनेसंग्रहकारिकायां पर्वणिश्रवणेकार्यंग्रहसंक्रांत्यदूषिते अध्वर्युभिर्बह्वृचैश्चकथंचित्तदसंभवे तत्रैवहस्तपंचम्यांतयोःकेवलयोरपि तत्रदिनद्वयेश्रवणसत्त्वेयदिपूर्वसूर्योदयमारभ्यप्रवृत्तंश्रवणंद्वितीयदिनेसूर्योदयोत्तरंत्रिमुहूर्तंवर्ततेतदापरदिनएवोपाकर्म धनिष्ठायोगप्राशस्त्यात् यदित्रिमुहूर्तन्न्यूनं तदापूर्वदिनएवसंपूर्णव्याप्तेः यदिपूर्वदिनेसूर्योदयेनास्तिपरदिनेसूर्योदयोत्तरंमुहूर्तद्वयंवर्ततेतदोत्तरदिनएव उत्तराषाढावेधनिषेधात् यदिपरदिनेमुहूर्तद्वयंन्यूनंपूर्वदिनेचोत्तराषाढाविद्धंतदापंचम्यादिकालोग्राह्यः पंचमीहस्तइतिकालद्वयंतु औदयिकंमुहूर्तत्रयव्यापिमुख्यं तदलाभेपूर्वविद्धमपि एवंभाद्रपदशुक्लपक्षेपिश्रवणपंचमीहस्तकालत्रयनिर्णयोज्ञेयः एतद्बह्वृचैःपूर्वाह्णेकार्यं ॥

अब उपाकर्मका काल कहताहुं.

तहां ऋग्वेदियोंकों श्रावणके शुक्लपक्षमें श्रवणनक्षत्र, पंचमी, हस्तनक्षत्र ये तीन काल कहे हैं. तिन्होंमें मुख्यकाल श्रवणनक्षत्र है. तिसके अलाभमें पंचमी तथा हस्तनक्षत्र लेना. तैसेही **कालतत्त्वविवेचन** ग्रंथविषे संग्रहकारिकामें कहा है की, “ग्रहण और संक्रांतिकरके

नहीं दूषित होवै ऐसी पौर्णमासी और श्रवणनक्षत्रमें ऋग्वेदी और यजुर्वेदियोंनें उपाकर्म करना. कदाचित् नहीं बन सकै तौ उही शुक्लपक्षमें हस्तनक्षत्रसहित पंचमीमें अथवा केवल पंचमीमें अथवा केवल हस्तनक्षत्रमें उपाकर्म करना." दोनों दिनोंमें श्रवणनक्षत्र होवै और जो पहले दिनके सूर्योदयसें आरंभ कर प्रवृत्त हुआ श्रवणनक्षत्र दूसरे दिनमें सूर्योदयके उपरंत ६ घटीका होवै तब धनिष्ठायोगके प्रशस्तपनेसें परदिनमेंही उपाकर्म करना. और जो ६ घटीकासें कम होवै तब संपूर्णव्याप्तिके होनेसें पूर्वदिनमेंही उपाकर्म करना. जो पूर्वदिनमें सूर्योदयविषे नहीं होवै और परदिनमें सूर्योदयके पश्चात् ४ घटीका होवै तब उत्तराषाढाके वेधके निषेधसें परदिनमें उपाकर्म करना. जो परदिनमें ४ घटीकासें कम होवै और पूर्वदिनमें उत्तराषाढाका वेध होवै तव पंचमी आदि काल लेना. पंचमी और हस्त ये दोनों काल तौ सूर्योदयसें ६ घटीका व्याप्त होनेवाला होवै सो मुख्य काल है. तिसके अलाभमें पूर्वविद्ध भी लेना. ऐसेही भाद्रपदके शुक्लपक्षमें भी श्रवण, पंचमी, हस्त इन तीन कालोंका निर्णय जानना. यह उपाकर्म ऋग्वेदियोंनें पूर्वाण्हकालविषे करना उचित है.—

अथयजुर्वेदिनिर्णयः तत्रबह्वृचानांश्रवणवत्सर्वयजुर्वेदिनांश्रावणपौर्णमासीमुख्यःकालः पौर्णमास्याःखंडत्वेयदापूर्णिमापूर्वदिनेमुहूर्ताद्यनंतरंप्रवृत्ताद्वितीयदिनेषण्मुहूर्तव्यापिनी तदा सर्वयाजुषाणामुत्तरैव यदाशुद्धाधिकतयादिनद्वयेपिसूर्योदयव्यापिनीतदासर्वयाजुषाणांपूर्वैव पर्वदिनेमुहूर्ताद्यनंतरंप्रवृत्ताद्वितीयदिनेमुहूर्तद्वयत्रयादिव्यापिनीषण्मुहूर्तन्यूना तदातैत्तिरीयैरुत्तराग्राह्या तैत्तिरीयभिन्नयाजुषैःपूर्वाग्राह्या यदापूर्वदिनेमुहूर्ताद्यनंतरंप्रवृत्ताद्वितीयदिनेमुहूर्तद्वयन्यूनाभवतिक्षयवशान्नास्त्येववातदासर्वयाजुषाणांपूर्वैव हिरण्यकेशितैत्तिरीयाणांश्रावणीपूर्णमासीमुख्यःकालस्तदभावेश्रावणेहस्तः श्रावणशुक्लपंचमीतुतत्तत्सूत्रेऽनुक्तेर्नग्राह्या एतदेवभाद्रपदेपिकालद्वयमितिविशेषः खंडतिथित्वेनिर्णयःपूर्वोक्तएव हस्तनक्षत्रमपिऔदयिकं संगवस्पर्शिग्राह्यमन्यथापूर्वविद्धमेव आपस्तंबानांश्रावणीपूर्णमासीमुख्यातदभावेभाद्रपदीति विशेषः बौधायनानांश्रावणीपूर्णमासीमुख्यादोषसंभावनयातदभावेआषाढीतिविशेषः एतेषामपिखंडतिथित्वेपूर्वोक्तएवनिर्णयः ॥

अब यजुर्वेदियोंके उपाकर्मका काल कहताहुं.

ऋग्वेदियोंके उपाकर्मका श्रवणनक्षत्र जैसा मुख्यकाल है तैसा यजुर्वेदियोंकों श्रावणकी पौर्णमासी उपाकर्मका मुख्यकाल है. पौर्णमासीके खंडितपनेमें जो पूर्णिमा पूर्वदिनमें दो घटी आदिके अनंतर प्रवृत्त होवै और दूसरे दिनमें १२ घटीतक व्याप्त होवै तब सब यजुर्वेदियोंनें दूसरे दिनकीही लेनी. जो शुद्ध तथा अधिकपनेसें दोनों दिनोंमें सूर्योदयव्यापिनी पूर्णिमा होवै तव सव यजुर्वेदियोंनें पहिलीही लेनी. पूर्वदिनमें दो घटी आदिके अनंतर प्रवृत्त होवै और दूसरे दिनमें ४ अथवा ६ घटीका आदिसें व्याप्त होवै और बारह घटीकासें कम होवै तव तैत्तिरीयोंनें पिछली लेनी. और तैत्तिरीयोंसें भिन्न यजुर्वेदियोंनें पहली लेनी. जो पूर्वदिनमें २ घटीका आदिके अनंतर प्रवृत्त होवै और दूसरे दिनमें ४ घटीकासें कम होवै और क्षयके वशसें नहीं होवै तब सब यजुर्वेदियोंनें पहलीही लेनी. हिरण्यकेशी तैत्तिरीय

शाखावालोंकेवास्ते श्रावणकी पौर्णमासी मुख्यकाल है. तिसके अभावमें श्रावणविषे हस्तनक्षत्र मुख्यकाल है. और श्रावण शुदि पंचमी तौ तिस सूत्रमें नहीं कही है, इसवास्ते नहीं लेनी. यहही दोनों काल भाद्रपदमासमें भी तिन्होंकों उक्त हैं, यह विशेष है. और तिथिके खंडितपनेमें पूर्वोक्तही निर्णय लेना. हस्त नक्षत्र भी उदयकालसें संगवकालवाला ऐसा होवै सो लेना. अन्यथा पूर्वविद्ध लेना. आपस्तंबोंकों श्रावणकी पौर्णमासीही मुख्य है और तिसके अभावमें भाद्रपदकी पौर्णमासी लेनी यह विशेष है. बौधायनोंकों श्रावणकी पौर्णमासी मुख्य है और दोषकी संभावना करके तिसके अभावमें आषाढकी पौर्णमासी लेनी यह विशेष है. इन्होंमें भी तिथीके खंडितपनेमें पूर्वोक्त ही निर्णय लेना.

अथकाण्वमाध्यंदिनादिकात्यायनानां श्रवणयुताश्रावणपूर्णिमाकेवलावाहस्तयुक्तापंचमीकेवलावामुख्यःकालः अतःकेवलश्रवणेकेवलहस्तेचतैर्नकार्यं श्रावणमासेविघ्नदोषेभाद्रपदगतपूर्णिमापंचम्योःकार्यं तिथेःखंडत्वेषण्मुहूर्ताधिक्येउत्तरा षण्मुहूर्तन्यूनत्वेपूर्वाग्राह्येत्यादिःपूर्वोक्तएवनिर्णयः ॥

काण्व, माध्यंदिन आदि कात्यायनोंकों श्रवणनक्षत्रसें युत हुई श्रावणकी पूर्णिमा अथवा अकेली पूर्णिमा और हस्तसें युत हुई पंचमी अथवा अकेली पंचमी यह मुख्यकाल है, इसवास्ते अकेले हस्तमें अथवा अकेले श्रवणमें तिन्होंनें उपाकर्म नहीं करना. श्रावणमासमें कुछ विघ्न होवै अथवा दोष होवै तब भाद्रपदकी पूर्णिमा और पंचमीमें उपाकर्म करना. तिथिके खंडितपनेमें जो बारह घटीकाओंसें अधिक होवै तब पिछली लेनी. और बारह घटीकाओंसें कम होवै तौ पहली लेनी इस आदि पूर्वोक्तही निर्णय जानना.

अथसामवेदिनांभाद्रपदशुक्लेहस्तनक्षत्रंमुख्यःकालः संक्रांत्यादिदोषेणतत्रासंभवेश्रावणमासेहस्तोग्राह्यइतिनिर्णयसिंधुः अन्येतुभाद्रपदहस्तेदोषसंभवेश्रावणपौर्णमास्यामुपाकर्मकृत्वाभाद्रपदस्यहस्तपर्यंतंनपठनीयंततःपरंपठनीयमित्याहुः हस्तस्यखंडत्वेदिनद्वयेपराह्णपूर्णव्याप्तौ अपराह्णैकदेशस्पर्शेवापरदिनेएवोपाकर्म पूर्वदिनएवापराह्णपूर्णव्याप्तौपूर्वत्रैव सर्वत्र सामगानामपराह्णस्यैवोपाकर्मकालत्वेनोक्तेः पूर्वदिनएवापराह्णैकदेशस्पर्शेदिनद्वयेप्यपराह्णस्पर्शाभावेवापरत्रैव येषांसामवेदिनांप्रातःसंगवौकर्मकालत्वेनोक्तौतेषांपूर्वत्रापराह्णव्याप्तिंत्यक्त्वा परदिनेसंगवोर्ध्ववर्तमानहस्तग्रहणं सिंहस्थेसूर्येउपाकर्मविधानंतुयदिश्रावणेहस्तःपूर्णिमावासिंहस्थेसूर्येभवतितदातत्रोपाकर्म नकर्कस्थे इतिसामगानांश्रावणमासगतहस्तपर्वणोर्व्यवस्थापरंअन्यशाखिनांसिंहस्थरवेर्विधिर्निषेधोवानास्ति अथर्ववेदिनांतुश्रावण्यांभाद्रपदगतायांवापौर्णमास्यांउपाकर्म तिथिखंडेऔदयिकसंगवकालव्यापिनीतिथिर्ग्राह्येति सर्वशाखिनांश्रावणभाद्रपदमासगतस्वस्वगृह्योक्तकालेषुग्रहणसंक्रांत्याशौचादिदोषसंभावनायांसर्वथाकर्मलोपप्राप्तौ शाखांतरोक्तकालानांग्राह्यत्वमावश्यकं तत्रापस्तंबबौधायनसामगादीनांश्रावणभाद्रपदगतपंचमीपूर्णिमादेरप्यविशेषेणग्राह्यत्वप्राप्तौनर्मदोत्तरदेशेसिंहगतेसूर्येपंचम्यादेर्ग्रहणं नर्मदादक्षिणभागेकर्कटस्थेसूर्येश्रावणपंचम्यादेर्ग्रहणमितिव्यवस्थेतिकौस्तुभेउक्तं तेनऋग्वेदिनामपिसर्वथाकर्मलोपप्रसक्तौपूर्णिमापिसिंहस्थकर्कस्थादिव्यवस्थयाग्राह्येतिममभाति सर्वशाखिभिः

श्रावणमासेमुख्यकालेपर्जन्याभावेन व्रीह्याद्यौषधिप्रादुर्भावाभावेआशौचादौवाभाद्रपदश्रवणादौकार्यं औषधिप्रादुर्भावाभावेपिश्रावणमासेकार्यमितिकर्कादिमतं सर्वशाखिनां गृह्योक्तमुख्यकालत्वेननिर्णीतेदिने ग्रहणस्य संक्रांतेर्वासत्त्वे संक्रांतिरहिताः पंचम्यादयोग्राह्याः ग्रहणसंक्रांतियोगश्चोपाकर्मसंबंधिन्यहोरात्रे भविष्यन्मध्यरात्रात्पूर्वमतीतमध्यरात्रादूर्ध्वंचेतियामाष्टकेविद्यमानः श्रवणनक्षत्रपूर्णिमादितिथ्यस्पृष्टोप्युपाकर्मदूषकः केचित्तूक्तयामाष्टकादन्यत्रापिविद्यमानोग्राह्यश्रवणादिनक्षत्रपर्वादितिथिस्पर्शीचेत्सोपिदूषकइत्याहुः नूतनोपनीतानांप्रथमोपाकर्मगुरुशुक्रास्तादौमलमासादौसिंहस्थेगुरौचनकार्यं द्वितीयाद्युपाकर्मतुअस्तादावपिकार्यं मलमासेतुद्वितीयाद्यपिनकार्यं प्रथमोपाकर्मस्वस्तिवाचननांदीश्राद्धादिकृत्वाकार्यं नूतनोपनीतानांश्रावणमासगतपंचमीहस्तश्रवणादिकालेषुगुरुशुक्रास्तादिप्रतिबंधेनोपाकर्मारंभाभावेभाद्रपदमासगतपंचमीश्रवणादयोग्राह्याः मौंजींयज्ञोपवीतंचनवंदंडंचधारयेत् अजिनंकटिसूत्रंचनववस्त्रंतथैवचेतिब्रह्मचारिणोविशेषःप्रतिवर्षंज्ञेयः उपाकर्मोत्सर्जनेब्रह्मचारिसमावृतगृहस्थवानप्रस्थैःसर्वैःकर्तव्ये उत्सर्जनकालस्तुनेहप्रपंच्यते उपाकर्मदिनेऽथवेतिवचनानुसारेण सर्वशिष्टानामिदानीमुपाकर्मदिनेएवोत्सर्जनकर्मानुष्ठानाचारेणैतन्निर्णयस्यानुपयोगात् एते उपाकर्मोत्सर्जनेयदिअन्यैर्द्विजैःसहकरोतितदालौकिकाग्नौकुर्यात् यदैकःकरोतितदास्वगृह्याग्नौकुर्यात् कात्यायनैस्तुऔपवसथ्यअग्नावेवहोतव्यंनलौकिकाग्नौ बह्वृचादिःस्वयंचतुरवर्त्तीबहुभिश्चतुरवत्तिभिरुपाकर्मादिवंकुर्वन्नेकस्यापिजामदग्न्यादेः पंचावत्तिनःसत्त्वेतदनुरोधेनपंचावत्तमेवकुर्यात् चतुरवत्तिनामपिपंचावत्तित्वस्यवैकल्पिकत्वोक्त्यातेषामपिकर्मवैगुण्याभावात् अकरणेदोषश्रवणेनप्रत्यब्दमेतेकर्तव्येक्वचित्पुस्तकेनिर्णयसिंधावेतदकरणेप्राजापत्यकृच्छ्रमुपवासोवाप्रायश्चित्तंदृश्यतेनसर्वत्र उपाकर्मोत्सर्जनयोरुभयोरपिऋषिपूजनमुक्तं ऋष्यादितर्पणंतूत्सर्जनएव अत्रविवाहोत्तरंतिलतर्पणेनदोषः अत्रसंकल्पेअधीतानांछंदसामाप्यायनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमुपाकर्मदिनेअद्योत्सर्जनाख्यंकर्मकरिष्यइति उपाकर्मणितु अधीतानामध्येष्यमाणानांचछंदसांयातयामतानिरासेनाप्यायनद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंइति विशेषः अवशिष्टःसर्वोपिप्रयोगविशेषःस्वस्वगृह्यानुसारेणज्ञेयः अत्रनदीनांरजोदोषोन ब्रह्मादिदेवऋष्यादीनांजलेसान्निध्यंतेनस्नानात्सर्वदोषक्षयः ऋषिपूजनस्थानस्थितजलस्पर्शनपानाभ्यांसर्वकामावाप्तिः इतिसर्वशाखिसाधारणनिर्णयः ॥

सामवेदियोंका भाद्रपद शुदिमें हस्तनक्षत्र मुख्यकाल है. संक्रांति आदि दोषकरके तिस नक्षत्रमें उपाकर्म नहीं बन सके तौ श्रावणमहीनेमें हस्तनक्षत्र ग्रहण करना ऐसा निर्णयसिंधुका मत है. अन्य पंडितोंके मतमें भाद्रपदसंबंधी हस्तनक्षत्रमें दोष होवै तौ श्रावणकी पौर्णमासमें उपाकर्म करके भाद्रपदसंबंधी हस्त नक्षत्रतक अध्ययन नहीं करना. तिस हस्तनक्षत्रके पश्चात् अध्ययन करना ऐसा है. हस्तनक्षत्र खंडित हो जावै और दोनों दिनोंमें अपराण्हकालमें पूर्ण व्याप्ति होवै अथवा दोनों दिनोंमें अपराण्हके एकदेशका स्पर्श होवै तब परदिनमेंही उपाकर्म करना. और जो पूर्वदिनमेंही अपराण्हविषे पूर्ण व्याप्ति होवै तब पूर्वदिनमेंही उपाकर्म करना और सब जगह सामवेदियोंका अपराण्हमेंही उपाकर्मकाल है ऐसा वचन है और पूर्वदिनमेंही अपराण्हके एकदेशमें स्पर्श होवै अथवा दोनों दिनोंमें अ-

पराह्णके स्पर्शका अभाव होवै तब परदिनमेंही उपाकर्म करना. जिन सामवेदियोंकों प्रातःकाल और संगवकाल कर्मकेलिये कहा है तिन्होंनें पूर्वदिनमें अपराह्णकालसंबंधी व्याप्तिका त्याग करके परदिनमें संगवकालके उपरंत वर्तमान हस्तनक्षत्र ग्रहण करना. सिंहके सूर्यमें उपाकर्म करनेका सो तौ जब श्रावणमें हस्तनक्षत्र अथवा पूर्णिमा सिंहपर स्थित हुये सूर्यमें होवै तब ठीक है अर्थात् तहां उपाकर्म करना, और कर्कराशीपर स्थित हुये सूर्यमें नहीं करना. इस प्रकार सामवेदियोंनें श्रावण महीनेका हस्तनक्षत्र और पौर्णमासीकी व्यवस्थाके अनुसार उपाकर्म करना. अन्य शाखावालोंकों सिंहराशिपर स्थित हुये सूर्यका विधि अथवा निषेध नहीं है. अथर्ववेदियोंनें तौ श्रावणकी अथवा भाद्रपदकी पौर्णमासीमें उपाकर्म करना. तिथिके खंडितपनेमें उदयकालमें संगवकालतक व्याप्त होनेवाली तिथि लेनी. सब शाखावालोंनें श्रावणगत और भाद्रपदगत अपने अपने मतके अनुसार ग्रहण करनेके योग्य कालोंमें ग्रहण और संक्रांति आदि दोषकी संभावनामें सब प्रकार करके कर्मका लोप प्राप्त होवै तब अन्य शाखावालोंको कहे हुये कालोंकों ग्रहण करना आवश्यक हैं. तहां आपस्तंब बौधायन, सामवेदी इन आदिकोंनें श्रावण और भाद्रपदगत पंचमी और पौर्णमासी आदिके अविशेषपनेसें ग्रहण करनेकी प्राप्तिमें नर्मदाके उत्तर देशोंविषे सिंहके सूर्यमें पंचमी आदिका ग्रहण करना और नर्मदाके दक्षिणभागमें कर्कराशिपर स्थित हुये सूर्यमें श्रावणकी पंचमी आदिका ग्रहण करना. ऐसी **कौस्तुभमें** व्यवस्था कही है. इसवास्ते ऋग्वेदियोंनें भी सब प्रकारके कर्मका लोप प्राप्त हो जावै तब पौर्णमासी भी सिंहके सूर्यमें और कर्कके सूर्यमें कही हुई व्यवस्थासें लेनी ऐसा मुझकों प्रतिभान होता है. सब शाखावालोंनें श्रावण महीनेके मुख्यकालमें वर्षा नहीं होनेसें व्रीहि आदि अन्न और ओषधी नहीं ऊगनेमें अथवा आशौच आदिमें भाद्रपद और श्रावण आदि विषे उपाकर्म करना. अन्न तथा ओषधीके नहीं ऊगनेमें श्रावण महीनेमें उपाकर्म करना ऐसा कर्क आदिका मत है. सब शाखावालोंनें गृह्यमें कहे कालकरके निर्णीत किये दिनमें ग्रहण अथवा संक्रांतिके होनेमें संक्रांतिसें रहित पंचमी आदि ग्रहण कर लेनी. ग्रहण और संक्रांतिका योग उपाकर्मसंबंधी दिनरात्रिमें होवै अर्थात् मध्यरात्रके पहले दो प्रहर और व्यतीत हुये मध्यरात्रके उपरंत दो प्रहर होता है और आठ प्रहरमें विद्यमान और श्रवणनक्षत्रकी पूर्णिमा आदि तिथिसें नहीं स्पर्शित हुआ ऐसाभी ग्रहण और संक्रांतिका योग उपाकर्मकों दूषित करता है. और कितनेक पंडित तौ कहे हुये आठ प्रहरसें अन्य जगह भी विद्यमान और ग्राह्य श्रवण आदि नक्षत्र और पूर्णिमा आदि तिथिमें स्पर्शवाला भी संक्रांति और ग्रहणकाल उपाकर्मकों दूषित करता है ऐसा कहते हैं. नवीन यज्ञोपवीत संस्कारवालोंका प्रथम उपाकर्म बृहस्पति और शुक्रके अस्त आदिमें और अधिकमास आदिमें और सिंहके सूर्यमें नहीं करना. दूसरा आदि उपाकर्म तौ बृहस्पति और शुक्रके अस्त आदिमें भी करना; परंतु अधिकमासमें नहीं करना. प्रथमउपाकर्म स्वस्तिवाचन तथा नांदीश्राद्ध आदि करके पीछे करना. नवीन यज्ञोपवीतसंस्कारवाले मनुष्योंका उपाकर्म श्रावण महीनेकी पंचमी, हस्त, श्रवण इन आदि कालोंमें बृहस्पति और शुक्रके अस्त आदि प्रतिबंध करके उस वखतमें न बन सकै तौ भाद्रपदमहीनाकी पंचमी और श्रवण आदि ग्रहण करने. "मूंज, यज्ञोपवीत, नवीन दंडा, मृगछाला, कटिसूत्र, नवीन वस्त्र इन्होंकों ब्रह्मचारी धारै,

यह विशेष ब्रह्मचारीविषे प्रतिवर्प जानना. उपाकर्म और उत्सर्जनकर्म ब्रह्मचारी, समावृत, गृहस्थी, वानप्रस्थ इन सबोंनें करना उचित है. उत्सर्जनकर्मका काल तौ यहां नहीं लिखा है. इसका कारण "अथवा उपाकर्मके दिनमें करना' इस वचनके अनुसार सब शिष्टोंका उपाकर्मके दिनमें उत्सर्जनकर्म करनेका आचार होनेसें तिसका निर्णय उपयोगका नहीं है. उपाकर्म और उत्सर्जनकर्म ये दोनों जो अन्य द्विजोंके संग करना होवैं तब लौकिकअग्निमें करना, और जो अकेलेकों करना होवै तब अपने गृह्याग्निमें करना. कात्यायनोंनें तौ औपवसथ्य अग्निमें करना, लौकिकअग्निमें नहीं करना. ऋग्वेदी आदि आप चतुरवत्ती होके बहुतसे चतुरवत्तियोंके संग उपाकर्म आदिकों करता हुआ एक भी जामदग्न्य आदि पंचावत्तीके होनेमें तिसके अनुरोधकरके पंचावत्त कर्मकों ही करना. और चतुरवत्तियोंनें भी पंचावत्तिपनेके विकल्पकताकी उक्ति करके तिन्होंकों भी कर्मके वैगुण्यपनेका अभाव है. इस कर्मकों नहीं करनेमें दोष होनेसें वर्पवर्षके प्रति ये करने उचित हैं. किसीक **निर्णयसिंधुके** पुस्तकमें इस कर्मकों नहीं करनेमें प्राजापत्यकृच्छ्र अथवा उपवास प्रायश्चित्त कहा है. सब ग्रंथोंमें नहीं है. उपाकर्म और उत्सर्जन इन दोनोंमें भी ऋषियोंका पूजन कहा है. ऋषि आदिकोंका तर्पण तौ उत्सर्जनकर्ममेंही कहा है. विवाहके उपरंत उपाकर्ममें तिलोंसें तर्पण करनेमें दोष नहीं है. यहां संकल्पमें "**अधीतानां छंदसामाप्यायनद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमुपाकर्मदिने अद्योत्सर्जनाख्यं कर्म करिष्ये**" ऐसा विशेप करना. उपाकर्ममें तौ "**अधीतानामध्येष्यमाणानां च छंदसां यातयामतानिरासेनाप्यायनद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं**" ऐसा विशेष है. और बाकी रहा सब प्रकारका प्रयोगविशेष अपने अपने गृह्यके अनुसार करना. यंहां नदियोंके रजोदोष नहीं हैं. ब्रह्माजी आदि देव और ऋषि आदि जलके समीप हैं तिसकरके स्नानसें सब दोष नाशकों प्राप्त हो जाते हैं. ऋषिपूजनके स्थानमें स्थित हुये जलका स्पर्श और प्राशन करनेसें सब कामोंकी प्राप्ति होती है. इस प्रकार सब शाखावालोंका साधारण निर्णय है.

अथरक्षाबंधनमस्यामेवपूर्णिमायांभद्रारहितायांत्रिमुहूर्ताधिकोदयव्यापिन्यामपराह्णेप्रदोषेवाकार्यं उदयेत्रिमुहूर्तन्यूनत्वेपूर्वेद्युर्भद्रारहितेप्रदोषादिकालेकार्यं इदंग्रहणसंक्रांतिदिनेपिकर्तव्यं मंत्रस्तु येनबद्धोबलीराजादानवेंद्रोमहाबलः तेनत्वामभिबध्नामिरक्षेमाचलमाचलेति अत्रैवपूर्णिमायांहयग्रीवोत्पत्तिः श्रावणपूर्णिमाकुलधर्मादौत्रिमुहूर्तसायाह्नव्याप्तापूर्वविद्धैवग्राह्या त्रिमुहूर्तन्यूनत्वेपरा अस्यामेवपौर्णमास्यामाश्वलायनानांश्रवणाकर्मसर्पबलिश्चरात्रावुक्तः तैत्तिरीयाणांतुसर्पबलिरेवोक्तः कात्यायनानांसामगानांचश्रवणाकर्मसर्पबलीद्वावप्युक्तौ श्रवणाकर्मसर्पबल्याश्वयुजीप्रत्यवरोहणादिपाकसंस्थानांस्वस्वकालेष्वकरणेप्राजापत्यंप्रायश्चित्तंकार्यंनतुकालांतरेतदनुष्ठानं श्रवणाकर्मादिसंस्थाःपत्न्यामृतुमत्यामपिकार्याःप्रथमारंभस्तुनभवति अत्रपौर्णमासीअस्तमयप्रभृतिप्रवृत्तकर्मपर्याप्तकालव्यापिनीपूर्वैवचेत्पूर्वैवग्राह्यादिनद्वयेतत्संबंधस्यसत्त्वेअसत्त्वेवापरैव प्रयोगस्तुस्वस्वसूत्रेषुज्ञेयः श्रावणकृष्णचतुर्थ्यांप्रारभ्यकृष्णचतुर्थीषुयावज्जीवमेकविंशतिवर्षाणिवाएकवर्षंवासंकष्टचतुर्थीव्रतंकार्यं अशक्तौप्रतिवर्षं

श्रावणचतुर्थ्यामेवकार्यं अत्रचंद्रोदयव्याप्त्यातिथिनिर्णयःप्रथमपरिच्छेदेउक्तः सोद्यापनव्रतप्रयोगःकौस्तुभादौज्ञेयः ॥

अब रक्षाबंधनका निर्णय कहताहुं.

भद्रासें वर्जित और छह घटीकाओंसें अधिक उदयकालमें व्याप्त होनेवाली ऐसी पौर्णमासीमें अपराण्हकालविषे अथवा प्रदोषकालविषे रक्षाबंधन करना. उदयकालमें ६ घटीकाओंसें कम पौर्णमासी होवै तौ पहली करनी. परंतु भद्रासें रहित प्रदोषकालमें रक्षाबंधन करना. यह रक्षाबंधन ग्रहण और संक्रांतिके दिनमें भी करना. उसका मंत्र—"**येन बद्धो बली राजा दानवेंद्रो महाबलः ॥ तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचलमाचल**" इस मंत्रसें रक्षाबंधन करना. इसी पूर्णिमाविषे हयग्रीवकी उत्पत्ति हुई है. कुलधर्म आदिमें श्रावणकी पूर्णिमा ६ घटीका सायान्हकालविषे व्याप्त होवै तौ पूर्वविद्धा ही लेनी. और ६ घटीकाओंसें कम होवै तौ परविद्धा लेनी. इसी पौर्णमासीमें आश्वलायनोंनें श्रवणाकर्म और सर्पबलि रात्रिविषे करना ऐसा कहा है. तैत्तिरीयशाखावालोंनें सर्पबलि ही करना. कात्यायन और सामवेदियोंकों श्रवणाकर्म और सर्पबलि ये दोनों कहे हैं. श्रवणाकर्म, सर्पबलि, आश्वयुजीकर्म, प्रत्यवरोहणकर्म, इन आदि पाकसंस्था अपने अपने कालमें नहीं करी जावैं तौ प्राजापत्य प्रायश्चित्त करना. अन्यकालमें तिन्होंका अनुष्ठान नहीं करना. जो स्त्री रजस्वला होवै तब भी श्रवणाकर्म आदि संस्था करनी उचित है; परंतु श्रवणाकर्मका प्रथम आरंभ नहीं करना. यहां पौर्णमासी सूर्यास्तसें आरंभ करके प्रवृत्तकर्मकालव्यापिनी पहली होवै तौ पहलीही लेनी, और दोनों दिनोंमें तिसका संबंध होवै अथवा नहीं होवै तब पिछली लेनी. और प्रयोग तौ अपने अपने सूत्रोंमें देख लेना. श्रावण वदि चतुर्थीसें आरंभ करके प्रति कृष्णपक्षकी चतुर्थीमें जबतक जीवै तबतक अथवा इक्कीस वर्षोंतक अथवा एक वर्षतक संकष्टचतुर्थीका व्रत करना और जो सामर्थ्य नहीं होवै तौ वर्षभरमें श्रावणकी चतुर्थीमेंही व्रत करना. यहां चंद्रोदयकी व्याप्तिकरके तिथिका निर्णय प्रथम परिच्छेदमें कहा है. उद्यापनसहित व्रतका प्रयोग कौस्तुभ आदि ग्रंथमें जान लेना.

अथजन्माष्टमीव्रतं तत्राष्टमीद्विविधा शुद्धाविद्धाच दिवारात्रौवासप्तमीयोगरहिता यत्र दिनेयावतीतत्रतावतीशुद्धा दिवारात्रौवासप्तमीयोगवतीयस्मिन्नहोरात्रेयावतीतत्रतावतीविद्धा सापुनर्द्विविधा रोहिणीयुतारोहिणीयोगरहिताचेति तत्ररोहिणीयोगरहितकेवलाष्टमीभेदाः सप्तमीनाड्यः ५९ पलानि ५९ अष्टमी ५८।५ अस्यांशुद्धायांसंदेहोनास्ति द्वितीयकोट्यभावात् सप्तमी २ अष्टमी ५५ अस्यांविद्धायामप्यसंदेहः दिनांतरेऽभावेनाद्वितीयकोट्यभावात् यदादिनद्वयेकेवलाष्टमीवर्ततेतदाचत्वारःपक्षाः पूर्वेद्युरेवनिशीथव्यापिनीपरेद्युरेवनिशीथव्यापिनीदिनद्वयेपिनिशीथव्यापिनी दिनद्वयेपिनिशीथव्याप्त्याभावइति रात्र्यर्धनिशीथपदार्थः स्थूलदृष्ट्यात्वष्टमोमुहूर्तोनिशीथः तत्रपूर्वेद्युरेवनिशीथव्यापिनी यथा सप्तमी ४० अष्टमी ४२ अत्रसप्तमीयुतापूर्वविद्धैवाष्टम्युपोष्या यथावाष्टमी ६०।४ इयंशुद्धाधिकापिपूर्वैव परेद्युरेवनिशीथे यथा सप्तमी ४७ अष्टमी ४६ अत्रपरैवाष्टम्युपोष्या उभयत्रनिशीथे

यथा सप्तमी ४२ अष्टमी ४६ अत्रापिपरैवाष्टमीग्राह्या दिनद्वयेनिशीथव्याप्त्यभावोयथा सप्तमी ४७ अष्टमी ४२ अत्रापिपरैवाष्टमीग्राह्या अत्रसर्वत्रसप्तमीयुक्तायांरात्रिपूर्वार्धावसानेकलयाप्यष्टम्याःसत्त्वेएवनिशीथव्यापित्वंनवमीयुक्तायांरात्र्युत्तरार्धादिभागेसत्त्वएवोत्तरत्रनिशीथव्यापित्वं सप्तमीदिनेउत्तरभागेएवसत्त्वेनवमीयुतदिनेपूर्वभागएवसत्त्वेचनिशीथाव्यापित्वपक्षएवमंतव्यःएवंवक्ष्यमाणरोहिणीयुक्तभेदेष्वपिज्ञेयं रोहिणीयुताष्टम्यामपिपूर्वदिनेएवनिशीथेष्टमीरोहिण्योर्योगःपरदिनएवनिशीथेयोगः दिनद्वयेनिशीथेयोगइतिपक्षत्रयं पूर्वेद्युरेवनिशीथेयोगोयथा सप्तमी ४० तद्दिनेकृत्तिका ३५ अष्टमी ४६ तद्दिनेरोहिणी ३६ अत्रपूर्वविद्धैवाष्टम्युपोष्या परदिनेएवनिशीथयोगोयथा सप्तमी ४२ तद्दिनेकृत्तिका ५० अष्टमी ४७ रोहिणी ४६ अत्रपरैवाष्टमीग्राह्या दिनद्वयेनिशीथेष्टमीरोहिण्योर्योगो यथा सप्तमी ४२ कृत्तिका ४३ अष्टमी ४७ रोहिणी ४८ अत्रपरैवाष्टमीग्राह्या अथरोहिणीयुताष्टम्यामेवदिनद्वयेपिनिशीथेरोहिणीयोगाभावोबहुधासंभवति ॥

अब जन्माष्टमीके व्रतका निर्णय कहताहुं.

अष्टमी दो प्रकारकी है. एक शुद्धा और दूसरी विद्धा, दिनमें अथवा रात्रिमें सप्तमीके योगसें रहित ऐसी जिस दिनरात्रिमें जितनी होवै तहां तितनीही शुद्धा जाननी. दिनमें अथवा रात्रिमें सप्तमीके योगसें युक्त ऐसी जिस दिनरात्रिमें जितनी होवै तिस दिनमें तितनी विद्धा जाननी. वह फिर दो प्रकारकी है. एक रोहिणीसें युत हुई और दूसरी रोहिणीके योगसें रहित हुई. तहां रोहिणीके योगसें रहित हुई केवल अष्टमीके भेद कहताहुं.—सप्तमी ५९ घडी और ५९ पल होवै और अष्टमी ५८ घडी और ५ पल होवै इस शुद्धामें दूसरी कोटिके अभावसें संदेह नहीं है, और सप्तमी २ घडी होवै और अष्टमी ५५ घडी होवै इस विद्धामें भी अन्य दिनमें दूसरी कोटिके अभावसें संदेह नहीं. और जो दोनों दिन केवल अष्टमी होवै तब चार पक्ष होते हैं. पूर्वदिनमें निशीथव्यापिनी १, परदिनमें निशीथव्यापिनी २, दोनों दिनोंमें निशीथव्यापिनी ३, और दोनों दिनोंमें नहीं निशीथव्यापिनी ४ ऐसे हैं. यहां निशीथपद अर्धरात्रका वाचक है. स्थूलदृष्टिकरके आठमा मुहूर्त निशीथ होता है. अब पूर्वदिनमें निशीथव्यापिनी,—जैसे सप्तमी ४० घडी होवै और अष्टमी ४२ घडी होवै, यहां सप्तमीसें युत हुई पूर्वविद्धाही अष्टमी उपवासके योग्य है. अथवा अष्टमी ६० घडी और ४ पल यह शुद्धा और अधिका भी पहलीही लेनी उचित है. परदिनमें निशीथव्यापिनी,—जैसे सप्तमी ४७ घडी होवै और अष्टमी ४६ घडी होवै तब पिछलीही अष्टमी उपवासके योग्य है. दोनों दिनोंमें निशीथव्यापिनी,—जैसे सप्तमी ४२ घडी होवै और अष्टमी ४६ घडी होवै तब भी पिछलीही अष्टमी लेनी, और दोनों दिनोंमें नहीं निशीथव्यापिनी,—जैसे सप्तमी ४७ घडी होवै और अष्टमी ४२ घडी होवै तब भी पिछलीही अष्टमी लेनी. यहां सब जगह सप्तमीसें युक्त हुईमें रात्रिके पूर्वभागके अंतमें एक घटीका भी अष्टमी होवै तौ निशीथव्यापीपना जानना. और नवमीसें युत हुईमें रात्रिके उत्तरार्ध आदि भागमें एक घटीका भी अष्टमी होवै तौ परदिनमें निशीथव्यापीपना जानना. सप्तमीके दिनके उत्तर भागमें होवै और नवमीसें युत हुये दिनके पूर्वभागविषे होवैं तब नहीं निशीथव्यापीपना

होता है यह भी पक्ष मानना उचित है. ऐसेही वक्ष्यमाण रोहिणीसें युक्त हुये भेदमें जानना उचित है. रोहिणीसें युत हुई अष्टमीमें भी पूर्वदिनमेंही अर्धरात्रविषे अष्टमी और रोहिणीका योग होवै और परदिनमें अर्धरात्रविषे रोहिणीका योग होवै, और दोनों दिनोंमें अर्धरात्रविषे रोहिणीका योग होवै ऐसे ये तीन पक्ष हैं. पहले दिनमें अर्धरात्रविषे रोहिणीका और अष्टमीका योग—जैसे, सप्तमी ४० घडी होवै और तिसी दिनमें कृत्तिका नक्षत्र ३९ घडी होवै और अष्टमी ४६ घडी होवै और अष्टमीके दिनमें रोहिणी ३६ घडी होवै, यहां पूर्वविद्धाही अष्टमी लेनी उचित है. परदिनमें अर्धरात्रविषे रोहिणी और अष्टमीका योग—जैसे, सप्तमी ४२ घडी होवै और सप्तमीके दिन कृत्तिका ९० घडी होवै और अष्टमी ४७ घडी होवै और अष्टमीके दिन रोहिणी ४६ घडी होवै, यहां परविद्धाही अष्टमी लेनी. दोनों दिनोंमें अर्धरात्रविषे रोहिणीका योग—जैसे, सप्तमी ४२ घडी होवै और कृत्तिका ४३ घडी होवै और अष्टमी ४७ घडी होवै और रोहिणी ४८ घडी होवै, तब यहां परविद्धाही अष्टमी लेनी, और रोहिणीसें युत हुई अष्टमीमेंही दोनों दिन अर्धरात्रमें रोहिणीके योगका नहीं होना बहुत प्रकारसें होता है.

परेद्युरेवनिशीथव्यापिनीअष्टमीपरेद्युरेवनिशीथादन्यत्ररोहिणीयुक्ताचेत्येकःपक्षः यथा सप्तमी ४७ अष्टमी ५० अष्टमीदिनेकृत्तिका ४६ अत्रपक्षेपरैवाष्टमीग्राह्या एतत्तुल्ययुक्त्यापूर्वेद्युरेवनिशीथव्यापिनीपूर्वेद्युरेवनिशीथादन्यत्ररोहिणीयुतेतिपक्षेपिपूर्वैवग्राह्या दिनद्वयेपिनिशीथादन्यत्ररोहिणीयुतापरेद्युरेवनिशीथव्यापिनीतिद्वितीयःपक्षः यथा सप्तमी ४८ तद्दिनेकृत्तिका ३० अष्टमी ४८ रोहिणी २५ अत्रापिपरैवग्राह्या दिनद्वयेनिशीथादन्यत्ररोहिणीयुक्तापूर्वेद्युरेवनिशीथव्यापिनीति तृतीयोयथा सप्तमी २५ कृत्तिका ४८ अष्टमी २० रोहिणी ४३ अत्रापिपरैव रोहिणीयोगसाम्येपिपूर्वत्रसप्तमीविद्धत्वात् यथावाष्टमी ६०।४ कृत्तिका ५० अत्रपूर्वैवग्राह्या अहोरात्रद्वयेरोहिणीयोगसाम्येपिपूर्वस्याःशुद्धत्वात्पूर्णव्याप्तेश्च दिनद्वयेपिनिशीथव्यापिनीपरेद्युरेवनिशीथादन्यत्ररोहिणीयुतेतिचतुर्थोयथा सप्तमी ४३ अष्टमी ४१ कृत्तिका ४६ अत्रपरैवाष्टमी एवंदिनद्वयेपिनिशीथव्यापिनीपूर्वत्रैवनिशीथादन्यत्ररोहिणीयुतेतिपंचमोयथा सप्तमी ४१ तद्दिनेरोहिणी ४३ अष्टमी ४७ अत्रपूर्वैवाष्टम्युपोष्या दिनद्वयेपिनिशीथव्यापिनीदिनद्वयेनिशीथादन्यत्ररोहिणीयुतेतिषष्ठो यथा सप्तमी ४२ कृत्तिका ४८ अष्टमी ४९ रोहिणी ४२ अत्रपरैव दिनद्वयेपिनिशीथाव्यापिनीपूर्वेद्युरेवनिशीथादन्यत्ररोहिणीयुतेतिसप्तमोयथा सप्तमी ४८ तद्दिनेरोहिणी ५८ अष्टमी ४२ अत्रपरैवाष्टमीग्राह्या अत्रैवपक्षेपरेद्यु[1]रेवउभय[2]त्रवानिशीथादन्यत्ररोहिणीयोगेपिपरैवेतिकैमुत्येनसिद्धम् पूर्वेद्युरेवनिशीथव्यापिनीपरेद्युरेवनिशीथादन्यत्ररोहिणीयुतेतिचरमःपक्षः यथा सप्तमी ३० अष्टमी २५ तद्दिनेकृत्तिका ५ यथावाष्टमी ६०।४ अष्टमीशेषदिनेकृत्तिका १ अत्रोदाहरणद्वयेपिपरैवाष्टमीग्राह्या स्वल्पस्यापिरोहिणीयोगस्यप्राशस्त्येनमुहूर्तमात्रायाअपि परस्या ग्राह्यतयापूर्वत्राविद्यमानायानिशीथव्याप्तेरनादरात्सर्वपक्षेषुयदिपरदिनेमुहूर्तन्यूनावर्ततेतदासानग्राह्या किंतुपूर्वैवेतितुपुरुषार्थचिंतामणावक्तुं परेद्युरेवनिशीथव्यापिनीपूर्वेद्युरेवानि

---

१ सप्तमी ४८ अष्टमी ४२ तद्दिने कृत्तिका १२॥०२ सप्तमी ४८ कृत्तिका ४८ अष्टमी ४२ रोहिणी ४२॥

शीथादन्यत्ररोहिणीयुता यथासप्तमी ४८ रोहिणी ५५ अष्टमी ४८ अत्रपरैव विद्धायां निशीथोत्तरंरोहिणीयोगस्याप्रयोजकत्वात् अत्रविस्तरेणोक्तानांबहुपक्षाणांसंक्षेपेणनिर्णयसंग्रहः पुरुषार्थचिंतामणौ शुद्धसमायांशुद्धन्यूनायांवाविद्धसमायांविद्धन्यूनायांवाकेवलाष्टम्यां संदेहएवनास्ति शुद्धाधिकापिकेवलाष्टमीपूर्वैव विद्धाधिकातुपूर्वदिनएवनिशीथव्याप्तौपूर्वा दिनद्वयेनिशीथव्याप्तावव्याप्तौवापरैवेति ॥

परदिनमेंही अर्धरात्रव्यापिनी अष्टमी होवै और परदिनमेंही अर्धरात्रसें अन्यकालमें रोहिणीसें युक्त अष्टमी होवै यह **पहला पक्ष है.**—जैसे, सप्तमी ४७ घडी होवै और अष्टमी ९० घडी होवै और अष्टमीके दिनमें कृत्तिका ४६ घडी होवै, इस पक्षमें परदिनकीही अष्टमी लेनी. इसके तुल्य युक्ति करके पूर्वदिनमेंही अर्धरात्रव्यापिनी और पूर्वदिनमेंही अर्धरात्रसें अन्य कालमें व्यापिनी और रोहिणीसें युत अष्टमी होवै इस पक्षमें पूर्वविद्धा लेनी. दोनों दिनोंमें भी अर्धरात्रसें अन्य कालमें रोहिणीसें युत और परदिनमें अर्धरात्रव्यापिनी होवै यह **दूसरा पक्ष है.**—जैसे, सप्तमी ४८ घडी होवै और सप्तमीके दिनमें कृत्तिका ३० घडी होवै और अष्टमी ४८ घडी होवै और रोहिणी २९ घडी होवै यहां भी परविद्धाही अष्टमी लेनी. दोनों दिनोंमें अर्धरात्रसें अन्यकालविषे रोहिणीसें युत होवै तब पूर्वदिनमेंही अर्धरात्रव्यापिनी लेनी. यह **तीसरा पक्ष.**—जैसे, सप्तमी २९ घडी होवै और कृत्तिका ४८ घडी होवै और अष्टमी २० घडी होवै और रोहिणी ४३ घडी होवै यहां भी परविद्धाही लेनी. दोनों दिनोंमें रोहिणीयोग होवै, तथापि पूर्वदिनमें सप्तमीसें विद्धा होनेसें पूर्वदिनकीही लेनी.—जैसे, अष्टमी ६० घडी और ४ पल होवै और कृत्तिका ९० घडी होवै इस पक्षमें दिनरात्रिमें रोहिणीयोग समान है तौ भी पहलीके शुद्धपनेसें और पूर्णव्याप्तिसें पूर्वदिनकीही लेनी. दोनों दिनोंमें अर्धरात्रव्यापिनी होवै और परदिनमें अर्धरात्रसें अन्यकालमें रोहिणीसें युत होवै यह **चौथा पक्ष.**—जैसे, सप्तमी ४३ घडी होवै और अष्टमी ४१ घडी होवै और कृत्तिका ४६ घडी होवै तब यहां परविद्धाही अष्टमी लेनी. ऐसेही दोनों दिनोंमें अर्धरात्रव्यापिनी होवै और पूर्वदिनमेंही अर्धरात्रसें अन्यकालमें रोहिणीसें युत होवै यह **पांचमा पक्ष.**—जैसे, सप्तमी ४१ घडी होवै और सप्तमीमें रोहिणी ४३ घडी होवै और अष्टमी ४७ घडी होवै यहां पहलीही अष्टमी लेनी. दोनों दिनोंमें अर्धरात्रव्यापिनी होवै और दोनों दिनोंमें अर्धरात्रसें अन्यकालमें रोहिणीसें युत होवै, इस प्रकार **छठा पक्ष.**—जैसे, सप्तमी ४२ घडी होवै और कृत्तिका ४८ घडी होवै और अष्टमी ४९ घडी होवै और रोहिणी ४२ घडी होवै यहां परविद्धाही लेनी. दोनों दिनोंमें अर्धरात्रव्यापिनी न होवै और पूर्वदिनमेंही अर्धरात्रसें अन्यकालमें रोहिणीसें युत होवै, इस प्रकार **सातमा पक्ष.**—जैसे, सप्तमी ४८ घडी होवै और सप्तमीमेंही रोहिणी ९८ घडी होवै और अष्टमी ४२ घडी होवै, यहां परविद्धाही रो- अष्टमी लेनी. और इसही पक्षमें [1]परदिनमें अथवा [2]दोनों दिनोंमें अर्धरात्रसें अन्यकालमें हिणीयोगमें भी परविद्धाही लेनी. ऐसा कैमुत्यन्यायकरके सिद्ध होता है. पूर्व दिनमेंही अर्धरात्रव्यापिनी होवै और परदिनमें अर्धरात्रसें अन्यकालमें रोहिणीसें युत होवै यह अंतका

---

[1] सप्तमी ४८, अष्टमी ४२, तिस दिनमें कृत्तिका १२ घडी. [2] सप्तमी ४८, अष्टमी ४२, तिस दिनमें रोहिणी ४२ घडी.

पक्ष.—जैसे, सप्तमी ३० घडी होवै और अष्टमी २९ घडी होवै और अष्टमीके दिनमें कृत्तिका ९ घडी होवै अथवा अष्टमी ६० घडी और ४ पल होवै और अष्टमीके शेषदिनमें कृत्तिका १ घडी होवै, यहां दोनों उदाहरणोंमें भी परविद्धाही अष्टमी लेनी. स्वल्परूपी भी रोहिणीयोगके अच्छेपनेसें एक मुहूर्तमात्र भी परविद्धाके ग्रहणसें पूर्वदिनमें विद्यमान हुई अर्धरात्रगत व्याप्तिके अनादरसें सब पक्षोंमें जो परदिनविषे दो घडीसें कम होवै तब वह नहीं ग्रहण करनी, किंतु पहलीही ग्रहण करनी ऐसा पुरुषार्थचिंतामणिमें कहा है. परदिनमेंही अर्धरात्रव्यापिनी होवै और पूर्वदिनमेंही अर्धरात्रसें अन्यकालमें रोहिणीसें युत होवै,—जैसे, सप्तमी ४८ घडी होवै और रोहिणी ५९ घडी होवै और अष्टमी ४८ घडी होवै तब परविद्धाही लेनी. विद्धामें अर्धरात्रसें उपरंत रोहिणीका योग प्रयोजक नहीं होता इसविषे विस्तारकरके कहे हुये बहुतसे पक्षोंका संक्षेप करके निर्णयका संग्रह पुरुषार्थचिंतामणिमें किया है. **शुद्धसम**, **शुद्धन्यून** अथवा **विद्धसम**, **विद्धन्यून** अथवा केवल अष्टमी इन्होंमें संदेहही नहीं है. **शुद्धाधिक** ऐसी केवल अष्टमी पूर्वविद्धाही लेनी. और **विद्धाधिक** ऐसी पूर्वदिनमेंही अर्धरात्रव्यापिनी होवै तब पूर्वविद्धाही लेनी. दोनों दिनोंमें अर्धरात्रव्यापिनी होवै अथवा अर्धरात्रव्यापिनी नहीं होवै तब परदिनकीही लेनी.

अथरोहिणीयोगेयदिशुद्धसमायांशुद्धन्यूनायांवाईषदपिरोहिणीयोगस्तदानसंदेहः शुद्धाधिकायांपूर्वदिनोदिनद्वयेपिवारोहिणीयोगेपूर्वैव शुद्धाधिकायामुत्तरदिनेएवरोहिणीयोगेमुहूर्तमात्राप्युत्तरैव विद्धाधिकायांपूर्वदिनएवनिशीथात्पूर्वंनिशीथेवारोहिणीयोगेपूर्वा दिनद्वयेपिपरत्रैववानिशीथेनिशीथंविहायवारोहिणीयोगेपरैवेतिसंक्षेपेणनिर्णयसंग्रहः एवंकौस्तुभादिनवीनग्रंथानुसृतमाधवमतानुसारेणजन्माष्टमीनिर्णीता अत्रकेचित्केवलाष्टमीजन्माष्टमीसैवरोहिणीयुताजयंतीसंज्ञकेतिजयंत्यष्टम्योर्व्रतैक्यमाहुः अन्येतुजन्माष्टमीव्रतंजयंतीव्रतंचभिन्नंरोहिणीयोगाभावेजयंतीव्रतलोपाज्जन्माष्टमीव्रतमेवकार्यं यस्मिन्वर्षेजयंत्याख्ययोगोजन्माष्टमीतदा अंतर्भूताजयंत्यांस्यादितिजयंतीदिनेनिशीथाख्यकर्मकालेष्टम्याद्यभावेपिसाकल्यवचनापादितकर्मकालव्याप्तिमादायव्रतद्वयमपिजयंतीदिनएवतंत्रेणानुष्ठेयंव्रतद्वयस्याप्यकरणेमहादोषश्रवणेनफलश्रवणेनचनित्यकाम्योभयरूपत्वात् नतुनिशीथव्याप्तायांपूर्वाष्टम्यांजन्माष्टमीव्रतंकृत्वाजयंतीदिनेपारणमनुष्ठेयं नित्यव्रतलोपेप्रत्यवायापातादित्याहुः निर्णयसिंधौतु उक्तरीत्यामाधवमतमुपपाद्यहेमाद्रिमतेनजन्माष्टमीव्रतमेवनित्यंजयंतीव्रतंतुनित्यमपिकलियुगेलुप्तमितिकेचिन्नानुतिष्ठंतिइत्युक्त्वा स्वमतेनयस्मिन्वर्षेपूर्वदिनेएवनिशीथेष्टमीपरदिनेएवनिशीथादन्यत्रजयंत्याख्ययोगस्तत्रोपोषणद्वयंकार्यं व्रतद्वयस्यापिनित्यत्वेनाकरणेदोषात् जयंत्याष्टम्यंतर्भावोक्तिस्तुमूर्खप्रतारणामात्रमितिप्रतिपादितं ममतुकौस्तुभादिनवीनपरिगृहीतमाधवमतरीत्याजयंत्यंतर्भावेनाष्टमीव्रतानुष्ठानमेवयुक्तंप्रतिभाति अत्रव्रतेबुधसोमवारयोगःप्राशस्त्यविधायकोनतुरोहिणीवन्निर्णायकः ॥

रोहिणीयोगविषे जो शुद्धसमपक्षमें अथवा शुद्धन्यूनपक्षमें कछुक भी रोहिणीका योग होवै तब संदेह नहीं करना. शुद्धाधिक अष्टमीमें पूर्वदिनविषे अथवा दोनों दिनोंविषे रोहिणीका योग होवै तब पूर्वदिनकीही लेनी. शुद्धाधिक अष्टमीमें उत्तरदिनविषे रोहिणीका योग होवै

तब दो घडीमात्र भी परविद्धाही लेनी. और विद्धाधिक अष्टमीमें पूर्वदिनमेंही अर्धरात्रसें पहले अथवा अर्धरात्रमें रोहिणीयोग होवै तब पूर्वविद्धा लेनी. दोनोंही दिनोंमें अथवा परदिनमेंही अर्धरात्रकालमें अथवा अर्धरात्रकों त्यागकर रोहिणीयोग होवै तब परदिनकीही लेनी. इस प्रकार संक्षेपसें निर्णयका संग्रह कहा है. ऐसाही कौस्तुभादि नवीन ग्रंथोंमें ग्रहण किये हुए माधवाचार्यके मतके अनुसार जन्माष्टमीका निर्णय कहा है. यहां कितनेक ग्रंथकार केवल अष्टमी जो है वही जन्माष्टमी है और रोहिणीसें युत हुई अष्टमी जयंतीसंज्ञक है, इस प्रकार जयंती और अष्टमीके व्रतोंकी एकताकों कहते हैं. अन्य पंडित तौ, जन्माष्टमीका व्रत और जयंतीका व्रत भिन्न है, इसवास्ते रोहिणीके योगके अभावमें जयंतीके व्रतका लोप करके जन्माष्टमीकाही व्रत करना, और "जिस वर्षमें जयंतीनामक योग होवै तब जन्माष्टमी जयंतीके अंतर्भूत होती है" ऐसा वचन है, इसवास्ते जयंतीके दिनमें अर्धरात्रनामक कर्मकालविषे अष्टमी आदिका अभाव होवै तबभी साकल्यवचनकरके वर्णित कर्मकालव्याप्तिकों ग्रहण करके दोनों व्रत जयंतीके दिनमेंही एकतंत्रसें करने. यह दोनों व्रत नित्य और काम्य हैं, वास्ते सो दोनों व्रतोंकों नहीं करनेमें महादोष और करनेसें महाफल है ऐसा सुननेसें इन दोनों व्रतोंकों करना. और अर्धरात्रमें व्याप्त हुई पहली अष्टमीमें जन्माष्टमीके व्रतकों नहीं करके जयंतीके दिनमें पारणा करनी, और नित्यव्रतके लोपसें दोष लगता है ऐसा कहते हैं. **निर्णयसिंधुमें** तौ उक्तरीतिकरके माधवके मतकों उपपादित करके और **हेमाद्रिके** मतकरके जन्माष्टमीव्रतही नित्य है और जयंतीव्रत तौ नित्यभी है परंतु कलियुगमें लुप्त हो रहा है इसवास्ते कितनेक पंडित अनुष्ठित नहीं करते ऐसा कहके अपने मत करके जिस वर्षमें पूर्वदिनमेंही अर्धरात्रसमय अष्टमी होवै और परदिनमेंही अर्धरात्रसें अन्यकालमें जयंतीनामक योग होवै तहां दो उपवास करने. नित्यरूपी इन दोनों व्रतोंकों नहीं करनेमें दोष लगता है. जयंतीमें अष्टमीके अंतर्भावकी उक्ति मूर्खोंकों प्रतारणमात्र है, इस प्रकार प्रतिपादन किया है. और मुझकों तौ **कौस्तुभ** आदि नवीन ग्रहण किये हुए माधवके मतकी रीतिकरके जयंतीका अंतर्भावकरके अष्टमीके व्रतका अनुष्ठानही युक्त है ऐसा प्रतिभान होता है. इस व्रतमें बुध और सोमवारका योग आवै सो प्रशस्तपनेकों बतावनेवाला है. और रोहिणीके योगकी तरह निर्णय करनेके योग्य नहीं है.

अथद्वितीयदिनेभोजनरूपंपारणंव्रतांगंविहितंतत्कालोनिर्णीयते केवलतिथ्युपवासेतिथ्यंतेनक्षत्रयुक्ततिथ्युपवासेउभयांतेपारणंकार्यं यदितिथिनक्षत्रयोरेकतरांतोदिनेलभ्यतेउभयांतस्तुरात्रौतदादिवैवान्यतरांतेपारणं यदादिवानैकस्याप्यंतस्तदानिशीथादर्वागन्यतरांतेउभयांतेवापारणं यदातुनिशीथाव्यवहितपूर्वक्षणेएकतरांतउभयांतोवातदानिशीथेपिपारणंकार्यंभोजनासंभवेपारणासंपत्त्यर्थंफलाद्याहारोविधेयः केचित्तूक्तविषयेनिशीथेपारणंनकार्यंकिंतूपवासात्तृतीयेह्निदिवाकार्यमित्याहुस्तन्नयुक्तं अशक्तस्तुएकतरांताभावेपिउत्सवांतेप्रातरेवदेवपूजाविसर्जनादिकृत्वापारणंकुर्यात् ॥

पीछे दूसरे दिनमें भोजनरूपी पारणव्रतका अंग कहा है, तिसके कालका निर्णय किया जाता है. केवल तिथिमें उपवास किया जावै तौ तिथिके अंतमें पारणा करनी और नक्षत्रसें

युक्त हुई तिथिमें उपवास किया जावै तौ नक्षत्र और तिथिके अंतमें पारणा करनी. जो तिथि और नक्षत्रमाहसें एक कोईका अंत दिनमें प्राप्त होवै और दोनोंका अंत रात्रिमें प्राप्त होवै तब दिनमेंही एक कोईके अंतमें पारणा करनी. जो दिनमें एक कोईकाभी अंत नहीं होवै तब अर्धरात्रसें पहले एक कोईके अंतमें अथवा दोनोंके अंतमें पारणा करनी. और जो अर्धरात्रसें अव्यवहित पूर्व मुहूर्तमें एक कोईका अंत होवै अथवा दोनोंका अंत प्राप्त होवै तब अर्धरात्रमें भी पारणा करनी. भोजनका संभव नहीं होवै तौ पारणाकी सिद्धिके लिये फलआदिका भोजन करना. कितनेक ग्रंथकार तौ, उक्त विषयमें अर्धरात्रविषे पारणा नहीं करनी, किंतु उपवासके दिनसें तीसरे दिनमें दिनविषेही पारणा करनी ऐसा कहते हैं, यह ठीक नहीं है. असमर्थ मनुष्यनें तौ एक कोईके अंतके अभावमें भी उत्सवके अंतविषे प्रभातमें ही देवपूजा और विसर्जन आदि करके पारणा करनी.

अथसंक्षेपेणव्रतविधिः प्रातःकृतनित्यक्रियःप्राङ्मुखोदेशादिसंकीर्त्यतत्तत्कालेसप्तम्यादि सत्त्वेपिप्रधानभूताष्टमीमेवसंकीर्त्य श्रीकृष्णप्रीत्यर्थंजन्माष्टमीव्रतंकरिष्ये जयंतीयोगसत्त्वेजन्माष्टमीव्रतंजयंतीव्रतंचतंत्रेणकरिष्येइतिसंकल्पयेत् ताम्रपात्रेजलंगृहीत्वा वासुदेवंसमुद्दिश्यसर्वपापप्रशांतये उपवासंकरिष्यामिकृष्णाष्टम्यांनभस्यहं अशक्तौ फलानिभक्षयिष्यामीत्याद्यूहः आजन्ममरणंयावद्यन्मयादुष्कृतंकृतं तत्प्रणाशयगोविंदप्रसीदपुरुषोत्तमेतिपात्रस्थंजलंक्षिपेत् ततःसुवर्णरजतादिमय्योमृन्मय्योवाभित्तिलिखितावाप्रतिमायथाकुलाचारंकार्याः तायथा पर्यंकेप्रसुप्तदेवक्याःस्तनंपिबंतींश्रीकृष्णप्रतिमांनिधायजयंतीसत्त्वेत्वन्यदेवक्याउत्संगेद्वितीयांश्रीकृष्णमूर्तिंनिधायपर्यंकस्थदेवकीचरणसंवाहनपरांलक्ष्मींनिधाय भित्त्यादौखड्गधरंवसुदेवंनंदगोपींगोपांल्लिखित्वा प्रदेशांतरेमंचकेप्रसूतकन्ययासहयशोदाप्रतिमांपीठांतरे वसुदेवदेवकीनंदयशोदाश्रीकृष्णरामचंडिकाइतिसप्तप्रतिमाःस्थापयेत् एतावत्प्रतिमाकरणाशक्तौवसुदेवादिचंडिकांताःसप्तवायथाचारंयथाशक्तिवाकृत्वाअन्याःसर्वायथायथंध्यायेदिति भाति निशीथासन्नप्राक्कालेस्नात्वाश्रीकृष्णप्रीत्यर्थंसपरिवारश्रीकृष्णपूजांकरिष्यइतिसंकल्प्यन्यासान्शंखादिपूजांतंनित्यवत्कृत्वा पर्यंकस्थांकिन्नराद्यैर्युतांध्यायेत्तुदेवकीं श्रीकृष्णंबालकंध्यायेत्पर्यंकेस्तनपायिनं श्रीवत्सवक्षसंशांतंनीलोत्पलदलच्छविं संवाहयंतींदेवक्याःपादौध्यायेच्चतांश्रियं एवंध्यात्वादेवक्यैनमःइतिदेवकीमावाह्यमूलमंत्रेणपुरुषसूक्तऋचावाश्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णमावाहयामीतिआवाह्य लक्ष्मींचावाह्यदेवक्यैवसुदेवाययशोदायैनंदायकृष्णा य रामायचंडिकायैइतिनाम्नावाह्यलिखितादिदेवताः सकलपरिवारदेवताभ्योनमइत्यावाह्यमूलमंत्रेणसूक्तऋचावा अत्रावाहितदेवक्यादिपरिवारदेवतासहितश्रीकृष्णाय नमइत्यासनपाद्यार्घ्याचमनीयाभ्यंगस्नानानिदत्वापंचामृतस्नानांतेचंदनेनानुलेपयेत् शुद्धोदकाभिषेकांतेवस्त्रयज्ञोपवीतगंधपुष्पाणिधूपदीपौच विश्वेश्वरायविश्वायतथाविश्वोद्भवायच विश्वस्यपतयेतुभ्यंगोविंदायनमोनमः यज्ञेश्वरायदेवायतथायज्ञोद्भवायच यज्ञानांपतयेनाथगोविंदायनमोनमइतिमंत्राभ्यांमूलमंत्रादिसमुच्चिताभ्यांदद्यात् जगन्नाथनमस्तुभ्यंसंसारभयनाशन जगदीश्वरायदेवाय भूतानांपतयेनमइतिनैवेद्यं मूलमंत्रादिकंसर्वत्रयोज्यं तांबूलादिनमस्कारप्रदक्षिणापुष्पांजल्यंतं कार्यं अथवोद्यापनप्रकरणोक्तविधिनापूजा सायथा उक्तप्रकारेणध्यानावाहनेकृत्वा देवा

ब्रह्मादयोयेनस्वरूपंनविदुस्तव अतस्त्वांपूजयिष्यामिमातुरुत्संगवासिनं पुरुषएवेदमासनं अवतारसहस्राणिकरोषिमधुसूदन नतेसंख्यावताराणांकश्चिज्जानातितत्त्वतः एतावानस्येति पाद्यं जातःकंसवधार्थायभूभारोत्तारणायच देवानांचहितार्थायधर्मसंस्थापनायच कौरवाणां विनाशायपांडवानांहितायच गृहाणार्घ्यंमयादत्तंदेवक्यासहितोहरे त्रिपादू० अर्घ्यं सुरासुरनरेशायक्षीराब्धिशयनायच कृष्णायवासुदेवायददाम्याचमनंशुभं तस्मा० आचमनीयं नारायणनमस्तेस्तुनरकार्णवतारक गंगोदकंसमानीतंस्नानार्थंप्रतिगृह्यतां यत्पुरुषे० स्नानं पयोदधिघृतक्षौद्रशर्करास्नानमुत्तमं तृप्त्यर्थंदेवदेवेशगृह्यतांदेवकीसुतेतिपंचामृतं शुद्धोदकस्नानमाचमनं क्षौमंचपट्टसूत्राद्यंमयानीतांशुकंशुभं गृह्यतांदेवदेवेशमयादत्तंसुरोत्तम तंयज्ञं० वस्त्रं नमःकृष्णायदेवायशंखचक्रधरायच ब्रह्मसूत्रंजगन्नाथगृहाणपरमेश्वर तस्माद्यज्ञा० यज्ञोपवीतं नानागंधसमायुक्तंचंदनंचारुचर्चितं कुंकुमाक्ताक्षतैर्युक्तंगृह्यतांपरमेश्वर तस्माद्यज्ञा० गंधं पुष्पाणियानिदिव्यानिपारिजातोद्भवानिच मालतीकेसरादीनिपूजार्थंप्रतिगृह्यतां तस्माद० पुष्पाणि अथांगपूजा श्रीकृष्णायनमःपादौपूजयामि संकर्षणायनमःगुल्फौ० कालात्मनेन० जानुनीपू० विश्वकर्मणेन० जंघेपू० विश्वनेत्राय० कटीपू० विश्वकर्त्रेन० मेढ्रंपू० पद्मनाभाय० नाभिंपू० परमात्मनेन० हृदयंपू० श्रीकंठायन० कंठंपू० सर्वास्त्रधारिणेन० बाहूपू० वाचस्पतयेन० मुखंपू० केशवायन० ललाटंपू० सर्वात्मनेन० शिरःपू० विश्वरूपिणेनारायणायनमः सर्वांगंपूजयामि वनस्पतिरसो० यत्पुरुषं० धूपं त्वंज्योतिःसर्वे देवानांतेजस्त्वंतेजसांपरं आत्मज्योतिर्नमस्तुभ्यंदीपोयंप्रतिगृह्यतां ब्राह्मणो० दीपं नानागंध समायुक्तंभक्ष्यभोज्यंचतुर्विधं नैवेद्यार्थंमयादत्तंगृहाणपरमेश्वर चंद्र० नैवेद्यं आचमनंकरोद्वर्तनं तांबूलंचसकर्पूरंपूगीफलसमन्वितं मुखवासकरंरम्यंप्रीतिदंप्रतिगृह्यतां सौवर्णंराजतंताम्रं नानारत्नसमन्वितं कर्मसाद्गुण्यसिद्ध्यर्थंदक्षिणांप्रतिगृह्यतां रंभाफलंनारिकेलंतथैवाम्रफलानिच पूजितोसिसुरश्रेष्ठगृह्यतांकंससूदन नाभ्याआ० नीराजनं० यानिका० सप्तास्या० प्रदक्षिणां यज्ञेनेत्यादिवेदमंत्रैः पुष्पांजलिं नमस्कारान् अपराधस० पूजांनिवेदयेत् सर्वोपचारपूजनसमाप्तौद्वादशांगुलविस्तारंरौप्यमयंस्थंडिलादिलिखितंवारोहिणीयुतंचंद्रं सोमेश्वराय सोमायतथासोमोद्भवायच सोमस्यपतयेनित्यंतुभ्यंसोमायवैनमइतिसंपूज्यसपुष्पकुशचंदनंतोयं शंखेनादाय क्षीरोदार्णवसंभूतअत्रिगोत्रसमुद्भव गृहाणार्घ्यंशशांकेशरोहिणीसहितोमम ज्योत्स्नापतेनमस्तुभ्यंज्योतिषांपतयेनमः नमस्तेरोहिणीकांतअर्घ्यंनःप्रतिगृह्यतां इतिमंत्राभ्यांचंद्रायार्घ्यंदद्यात् ततःश्रीकृष्णायार्घ्यंदद्यात् तत्रमंत्रः जातःकंसवधार्थायभूभारोत्तारणायच पांडवानांहितार्थायधर्मसंस्थापनायच कौरवाणांविनाशायदैत्यानांनिधनायच गृहाणार्घ्यंमयादत्तंदेवक्यासहितोहरेइति ततःप्रार्थयेत् त्राहिमांसर्वलोकेशहरेसंसारसागरात् त्राहिमांसर्वपापघ्नदुःखशोकार्णवात्प्रभो सर्वलोकेश्वरत्राहिपतितंमांभवार्णवे त्राहिमांसर्वदुःखघ्नरोगशोकार्णवाद्धरे दुर्गतांस्त्रायसेविष्णोयेस्मरंतिसकृत्सकृत् त्राहिमांदेवदेवेशत्वत्तोनान्योस्तिरक्षिता यद्वाक्चनकौमारेयौवनेयच्चवार्धके तत्पुण्यंवृद्धिमायातुपापंदहहलायुधेति ॥

अब संक्षेपसें व्रतका विधि कहताहुं.

प्रभातमें नित्यकर्मोंकों करनेवाला और पूर्वकों मुखवाला होके देश और काल, आदिका

उच्चार करके और तिस कालमें सप्तमी आदिके होनेमें प्रधानभूत अष्टमीकाही उच्चार करके—“**श्रीकृष्णप्रीत्यर्थं जन्माष्टमीव्रतं करिष्ये**”—जयंतीयोगके होनेमें “**जन्माष्टमीव्रतं जयंतीव्रतं च तंत्रेण करिष्ये**” इस प्रकार संकल्प करना. तांबाके पात्रमें जल लेकर—“**वासुदेवं समुद्दिश्य सर्वपापप्रशांतये ॥ उपवासं करिष्यामि कृष्णाष्टम्यां नभस्यहम्**”॥ और जो सामर्थ्य नहीं होवै तौ—“**फलानि भक्षयिष्यामि**” इस आदि उच्चार करना. “**आजन्ममरणं यावद्यन्मया दुष्कृतं कृतम् ॥ तत्प्रणाशय गोविंद प्रसीद पुरुषोत्तम**” ॥ इस प्रकार कहके पात्रमें स्थित हुये जलकों छोड देना. पीछे सोना, चांदी, आदिसें बनी हुई अथवा माटीसें बनी हुई अथवा भींतपर लिखी हुई ऐसी प्रतिमा कुलके आचारके अनुसार करनी. वे प्रतिमा दिखाई जाती हैं—जैसे, पलंगपर सोती हुई देवकीकी चूंचियोंकों पीवती हुई श्रीकृष्णकी प्रतिमाकों स्थापित करके और जयंतीव्रतके होनेमें दूसरी देवकीके गोदमें प्राप्त हुई दूसरी श्रीकृष्णकी मूर्तिकों स्थापित करके और पलंगपर स्थित हुई देवकीके चरणोंकों दाबती हुई लक्ष्मीकी प्रतिमाकों स्थापित करनी. पीछे भींतपर तलवार धारण करनेवाले वसुदेवजी, नंदजी, गोप, गोपी इन्होंकों लिखके और अन्य स्थलमें पलंगपर जन्मी हुई कन्याके साथ यशोदाकी प्रतिमाकों स्थापित करनी. और अन्य पीठपर वसुदेव, देवकी, नंदजी, यशोदा, श्रीकृष्ण, बलदेव, चंडिका इन सात प्रतिमाओंकों स्थापित करना. इन प्रतिमाओंकी करनेकी शक्ति नहीं होवै तौ वसुदेवजीसें आरंभ करके चंडिकापर्यंत सात प्रतिमाओंकों अथवा आचार और शक्तिके अनुसार प्रतिमाओंकों करके अन्य सब प्रतिमाओंका यथायोग्य चितवन करना, ऐसा मुझकों लगता है. अर्धरात्रके समीप प्राक्कालमें स्नान करके “**श्रीकृष्णप्रीत्यर्थं सपरिवारश्रीकृष्णपूजां करिष्ये**” इस प्रकार संकल्प करके न्यास, शंखपूजा इत्यादिक नित्यकीतरह करके “**पर्यंकस्थां किन्नराद्यैर्युतां ध्यायेत्तु देवकीम् ॥ श्रीकृष्णं बालकं ध्यायेत्पर्यंके स्तनपायिनम् ॥ श्रीवत्सवक्षसं शांतं नीलोत्पलदलच्छविम् ॥ संवाहयंतीं देवक्याः पादौ ध्यायेच्च तां श्रियम्**”॥ इस प्रकार ध्यान करके “**देवक्यै नमः**” इस नाममंत्रसें देवकीका आवाहन करके पीछे मूलमंत्रसें अथवा पुरुषसूक्तसें “**श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णमावाहयामि**” इस प्रकार आवाहन करके और लक्ष्मीजीका आवाहन करके “**देवक्यै वसुदेवाय यशोदायै नंदाय श्रीकृष्णाय रामाय चंडिकायै**” इन नाममंत्रोंकरके आवाहन करना. पीछे लिखित किये देवतोंका “**सकलपरिवारदेवताभ्यो नमः**” इस मंत्रसें आवाहन करके मूलमंत्रसें अथवा पुरुषसूक्तसें आवाहन कर “**अत्रावाहितदेवक्यादिपरिवारदेवतासहितश्रीकृष्णाय नमः**” इस मंत्रकरके आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, अभ्यंग, स्नान इन्होंकों देके पंचामृत स्नानके अंतमें चंदन चढावना. पीछे शुद्ध पानीकरके अभिषेकके अंतमें वस्त्र, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप इन्होंकों “**विश्वेश्वराय विश्वाय तथा विश्वोद्भवाय च ॥ विश्वस्य पतये तुभ्यं गोविंदाय नमो नमः ॥ यज्ञेश्वराय देवाय तथा यज्ञोद्भवाय च॥ यज्ञानां पतये नाथ गोविंदाय नमोनमः**” ॥ इस प्रकार मूलमंत्र आदिसें समुचित किये इन दो मंत्रोंकरके वस्त्रादिक उपचार निवेदन करना. “**जगन्नाथ नमस्तुभ्यं संसारभयनाशन ॥ जगदीश्वराय देवाय भूतानां पतये नमः**” इस मंत्रसें नैवेद्य निवेदन करना और मूलमंत्र आदि सब

जगह योजित करने. नागरपान, नमस्कार, प्रदक्षिणा पुष्पांजलीतक पूजा करनी. अथवा उद्यापन प्रकरणमें कही विधिकरके पूजा करनी. सो ऐसी—उक्त प्रकारसें ध्यान और आवाहन करके ‘‘देवा ब्रह्मादयो येन स्वरूपं न विदुस्तव ॥ अतस्त्वां पूजयिष्यामि मातुरुत्संगवासिनम् ॥ पुरुषएवेदं० इन मंत्रोंसें आसन निवेदन करना. अवतारसहस्राणि करोषि मधुसूदन ॥ न ते संख्यावताराणां कश्चिज्जानाति तत्त्वतः ॥ एतावानस्य० इन मंत्रोंसें पाद्य निवेदन करना. जातः कंसवधार्थाय भूभारोत्तारणाय च ॥ देवानां च हितार्थाय धर्मसंस्थापनाय च ॥ कौरवाणां विनाशाय पांडवानां हिताय च ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देवक्या सहितो हरे ॥ त्रिपादूर्ध्वम्० इन मंत्रोंकरके अर्घ्य निवेदन करना. सुरासुरनरेशाय क्षीराब्धिशयनाय च ॥ कृष्णाय वासुदेवाय ददाम्याचमनं शुभम् ॥ तस्मा० इन मंत्रोंसें आचमन निवेदन करना. नारायण नमस्तेस्तु नरकार्णवतारक ॥ गंगोदकं समानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ यत्पुरुषे० इन मंत्रोंसें स्नान निवेदन करना. पयोदधिघृतक्षौद्रशर्करास्नानमुत्तमम् ॥ तृप्त्यर्थं देवदेवेश गृह्यतां देवकीसुत ॥ इस मंत्रसें पंचामृत निवेदन करना. शुद्धजलसें स्नान और आचमन देके क्षौमं च पट्टसूत्राद्यं मयानीतांशुकं शुभम् ॥ गृह्यतां देवदेवेश मया दत्तं सुरोत्तम ॥ तंयज्ञं० इन मंत्रोंसें वस्त्र निवेदन करना. नमः कृष्णाय देवाय शंखचक्रधराय च ॥ ब्रह्मसूत्रं जगन्नाथ गृहाण परमेश्वर ॥ तस्माद्यज्ञात्० इन मंत्रोंसें यज्ञोपवीत निवेदन करना. नानागंधसमायुक्तं चंदनं चारु चर्चितम् ॥ कुंकुमाक्ताक्षतैर्युक्तं गृह्यतां परमेश्वर ॥ तस्माद्यज्ञा० इन मंत्रोंसें गंध निवेदन करना. पुष्पाणि यानि दिव्यानि पारिजातोद्भवानि च ॥ मालतीकेसरादीनि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ तस्माद० इन मंत्रोंसें पुष्प निवेदन करना. अब अंगपूजाकों कहते हैं.—श्रीकृष्णाय नमः पादौ पूजयामि ॥ संकर्षणाय नमः गुल्फौ पूजयामि ॥ कालात्मने नमः जानुनीपू० ॥ विश्वकर्मणे नमः जंघेपू० ॥ विश्वनेत्राय नमः कटिं पू० ॥ विश्वकर्त्रे नमः मेढ्रं पू० ॥ पद्मनाभाय नमः नाभिं पू० ॥ परमात्मने नमः हृदयं पू० ॥ श्रीकंठाय नमः कंठं पू० ॥ सर्वास्त्रधारिणे नमः बाहू पू० ॥ वाचस्पतये नमः मुखं पू० ॥ केशवाय नमः ललाटं पू० ॥ सर्वात्मने नमः शिरः पू० ॥ विश्वरूपिणे नारायणाय नमः सर्वांगं पू० ॥ वनस्पतिरसो० यत्पुरुषं० इन मंत्रोंसें धूप निवेदन करना. त्वं ज्योतिः सर्वदेवानां तेजस्त्वं तेजसां परम् ॥ आत्मज्योतिर्नमस्तुभ्यं दीपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ब्राह्मणोस्य० इन मंत्रोंसें दीप निवेदन करना. नानागंधसमायुक्तं भक्ष्यभोज्यं चतुर्विधम् ॥ नैवेद्यार्थं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ चंद्रमा० इन मंत्रोंसें नैवेद्य निवेदन करना. पीछे आचमन और हाथोंका उद्वर्तन करना. तांबूलं च सकर्पूरं पूगीफलसमन्वितम् ॥ मुखवासकरं रम्यं प्रीतिदं प्रतिगृह्यताम् ॥ सौवर्णं राजतं ताम्रं नानारत्नसमन्वितम् ॥ कर्मसाद्गुण्यसिद्ध्यर्थं दक्षिणां प्रतिगृह्यताम् ॥ रंभाफलं नारिकेलं तथैवाम्रफलानि च ॥ पूजितोसि सुरश्रेष्ठ गृह्यतां कंससूदन ॥ इस मंत्रसें फल निवेदन करना. नाभ्याआसी० इन मंत्रोंसें आरती करनी. यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि च ॥ तानि सर्वाणि नश्यंतु प्रदक्षिणपदे पदे ॥ सप्तास्या० इन मंत्रोंसें परिक्रमाओंकों करना. यज्ञेन० इस आदि वेदके मंत्रोंकरके पुष्पांजली और प्रणाम निवेदन करना. अपराधसह० इस मंत्रसें प्रार्थना करनी.’’ सब प्रकारके पूजनकी समाप्तिमें

बारह अंगुल विस्तारवाला और चांदीसें बना हुआ अथवा वेदी आदिपर लिखित किया और रोहिणीसें युत ऐसे चंद्रमाकी “सोमेश्वराय सोमाय तथा सोमोद्भवाय च ॥ सोमस्य पतये नित्यं तुभ्यं सोमाय वै नमः ॥” इस प्रकारसें पूजा करके शंखके द्वारा कुश, चंदन, जल इन्होंकों ग्रहण करके “क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिगोत्रसमुद्भव ॥ गृहाणार्घ्यं शशांकेश रोहिणीसहितो मम ॥ ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः ॥ नमस्ते रोहिणीकांत अर्घ्यं नः प्रतिगृह्यताम् ॥” इन मंत्रोंकरके चंद्रमाकेलिये अर्घ्य देना. पीछे श्रीकृष्णकों अर्घ्य देना. तहां मंत्र.—“जातः कंसवधार्थाय भूभारोत्तारणाय च ॥ पांडवानां हितार्थाय धर्मसंस्थापनाय च ॥ कौरवाणां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देवक्या सहितो हरे ॥” इन मंत्रोंकों कहै. पीछे प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—“त्राहि मां सर्वलोकेश हरे संसारसागरात् ॥ त्राहि मां सर्वपापघ्न दुःखशोकार्णवात्प्रभो ॥ सर्वलोकेश्वर त्राहि पतितं मां भवार्णवे ॥ त्राहि मां सर्वदुःखघ्न रोगशोकार्णवाद्धरे ॥ दुर्गतांस्त्रायसे विष्णो ये स्मरंति सकृत् सकृत् ॥ त्राहि मां देवदेवेश त्वत्तो नान्योस्ति रक्षिता ॥ यद्वा क्वचन कौमारे यौवने यच्च वार्द्धके ॥ तत्पुण्यं वृद्धिमायातु पापं दह हलायुध ॥” इन मंत्रोंसें प्रार्थना करनी.

अथपूजानंतरंकृत्यंअग्निपुराणे इत्येवंपूजयित्वातुपुरुषसूक्तैःसवैष्णवैः ॥ स्तुत्वावादित्रनिर्घोषैर्गीतवादित्रमंगलैः ॥ सुकथाभिर्विचित्राभिस्तथाप्रेक्षणकैरपि ॥ पूर्वेतिहासैःपौराणैःक्षिपेत्तांशर्वरींनृपेति अत्रकथासुवैचित्र्यंदेशभाषाकाव्यकृतं सूक्तानांप्रागुक्तैःपुराणकथानामंतेभिधानात् प्रेक्षणकानिनृत्यादीनि तथाचवैदिकसूक्तकरणकस्तुतिविशिष्टःपौराणेतिहासमिश्रितोगीतनृत्ययुतदेशभाषाकाव्यप्रमुखकथाकरणकोजागरो विप्रादिवर्णत्रयस्यविधीयते शूद्रादीन्प्रतिएतादृशजागरस्यविधातुमयोग्यत्वात् वचनांतरेणतुसूक्तादिरहितगीतादिविशिष्टोवर्णचतुष्टयसाधारणोविधीयते गोकुलस्थजन्मलीलादिश्रवणोत्तरंवैष्णवैःपरस्परंदध्यादिभिःसेचनंकार्यं दधिक्षीरघृतांबुभिः आसिंचंतोविलिंपंतइत्यादिभागवतवचनेनतथाविधिकल्पनात् अयमुत्सवोधुनामहाराष्ट्रदेशेगोपालकालेतिव्यवह्रियतइतिमेभाति एतत्सर्वंकौस्तुभेश्रीमदनंतदेवैःस्पष्टीकृतमस्तीतिनमह्यमसूयाकार्या एतादृशकथायुतोजागरोन्यत्ररामनवम्येकादश्याद्युत्सवेष्वप्यूह्यः पूजाजागरादिविशिष्टव्रतोत्सवसाम्यात् महाराष्ट्रीयेषुतथाचाराच्च भगवत्प्रेमादिभाग्यशालिनस्तुपर्वणिस्युरुतान्वहमितिन्यायेनप्रत्यहमेवोक्तविधिकथोत्सवंकुर्वंतीतिभाति ॥

पूजाके अनंतर कृत्य—अग्निपुराणमें है की इस प्रकारसें पूजा करके विष्णुसूक्तोंसें और पुरुषसूक्तसें स्तुति करके पीछे बाजाके शब्द, गीत, बाजाओंके मंगल, विचित्ररूप कथा, भजन, नृत्य, पुराने इतिहास, और पुराणसंबंधी इतिहास इन्होंकरके हे राजन् तिस रात्रिकों व्यतीत करना. यहां कथाओंमें विचित्रपना देशभाषा और काव्यसें किया जानना. वेदके सूक्तोंका और पुराणसंबंधी कथाओंका अंतमें अभिधान है. और वैदिक सूक्तकरके जो किया स्तुतिविशिष्टकर्म और पुराण और इतिहाससें मिश्रित किया गीत, नृत्य, देशकी भाषा और कविता है प्रधान जिसमें ऐसी कथाका करना जागरण कहाता है. यह जागरण ब्रा-

ह्मण आदि तीनों वर्णोंकों योग्य है, शूद्र आदिकों इस प्रकारका जागरण करनेका अधिकार नहीं है. और अन्य वचनकरके तौ सूक्त आदिसें रहित गीत आदिसें विशिष्ट और चारों वर्णोंकरके साधारण ऐसा जागरणका विधान है. गोकुलस्थ जन्मलीला आदिकों सुननेके उपरंत वैष्णवोंनें आपसमें दही आदिकरके सेचन करना उचित है. “गोपोंनेंही, दूध, घृत, पानी इन्होंकरके सबतर्फसें परस्परोंकों सिंचित करना. और विशेषकरके लेपित करना.” ऐसे श्रीमद्भागवतके वचनकरके तिस विधिकी कल्पनासें यह उत्सव अब महाराष्ट्र देशमें ‘गोपालकाला’ इस नामसें प्रसिद्ध है ऐसा मुझकों भान होता है. यह सब कौस्तुभ ग्रंथमें श्रीमान् अनंतदेवनें स्पष्ट किया है इसवास्ते मेरेकूं दोष नहीं देना. पूजा और जागरण इन आदिकरके युक्त ऐसा व्रतका उत्सव सबकों समान है इसवास्ते इसी प्रकारकी कथासें युत हुआ जागरण अन्यजगह रामनवमी और एकादशी आदि उत्सवोंमें भी करना. क्योंकी महाराष्ट्रदेशमें तैसाही आचार है. और भगवान्के जो प्रेमी भक्त हैं सो “पर्वदिनमें उत्सव करना अथवा नित्यप्रति उत्सव करना.” इस न्यायकरके दिनदिनकेप्रतिही उक्त कथाके उत्सवकों करते हैं ऐसा मुझकों भान होता है.

ततोनवम्यांब्राह्मणान्भोजनदक्षिणादिभिःसंतोष्योक्तपारणानिर्णीतिकालेभोजनंकुर्यात् अस्यैवजयंतीव्रतस्यसंवत्सरसाध्यःप्रयोगः श्रावणकृष्णाष्टमीमारभ्यप्रतिमासंकृष्णाष्टम्यामुक्तविधिनापूजादिरूपःपुराणांतरेउक्तः अत्रोद्यापनविधिर्ग्रंथांतरेज्ञेयः ॥ इतिजन्माष्टमीनिर्णयः ॥

पीछे नवमीमें ब्राह्मणोंकों भोजन और दक्षिणा आदिकरके प्रसन्न कर उक्त पारणाके निर्णीत हुये कालमें भोजन करना. इसी जयंतीव्रतका वर्षसाध्य प्रयोग है. श्रावण वदि अष्टमीकों आरंभ कर महीना महीनाप्रति कृष्णपक्षकी अष्टमीकों उक्तविधिकरके पूजा आदि करनी, ऐसा इस रीतका प्रयोग अन्य पुराणमें कहा है. इसके उद्यापन आदिकी विधि अन्य ग्रंथमें देख लेनी.—ऐसा जन्माष्टमीका निर्णय समाप्त हुआ.

नभोमासस्यदर्शेतुशुचिर्दर्भान्समाहरेत् अयातयामास्तेदर्भाविनियोज्याःपुनःपुनः केचिद्भाद्रामायांदर्भग्रहणमाहुः कुशाःकाशायवादूर्वाउशीराश्चसकुंदकाः गोधूमाव्रीहयोमौंजादशदर्भाःसबल्वजाः विरिंचिनासहोत्पन्नपरमेष्ठिनिसर्गज नुदसर्वाणिपापानिदर्भस्वस्तिकरोभव एवंमंत्रंसमुच्चार्यततःपूर्वोत्तरामुखःहुंफट्कारेणमंत्रेणसकृच्छित्वासमुद्धरेत् चतुर्भिर्दर्भैर्विप्रस्यपवित्रं क्षत्रियादेरेकैकन्यूनं सर्वेषांवाभवेत्द्वाभ्यांपवित्रंग्रंथितंनवा ॥ इतिश्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेश्रावणमासकृत्यनिर्णयउद्देशः समाप्तः ॥

“श्रावणमहीनेके अमावसकों पवित्र होके डाभकों लावै. वे डाभ वर्षदिनतक ताजे रहते हैं, अर्थात् पुराने नहीं होते. ये वारंवार ब्रह्मकर्मोंमें योजित करनेके योग्य हैं.” और कितनेक ग्रंथकार भाद्रपदकी अमावसमें डाभ लाने ऐसा कहते हैं. कुशा, काश, जव, दूव, खस, कुंदक, तृण, गेहूं, व्रीही, मुंज, बल्वज अर्थात् मोल ये दशों दर्भ कहाते हैं. डाभकों

तोडनेका मंत्र कहते हैं—"विरंचिना सहोत्पन्न परमेष्ठीनिसर्गज ॥ नुद सर्वाणि पापानि दर्भ स्वस्तिकरो भव" इस प्रकार मंत्रका उच्चारण कर पीछे पूर्वके तर्फ अथवा उत्तरके तर्फ मुखवाला होके "हुंफट्" इस मंत्रकरके डाभकों छेदित कर इकठे करना. चार डाभोंकरके ब्राह्मणका पवित्रा होता है, क्षत्रियका तीन डाभोंका और वैश्यका दो डाभोंका और शूद्रका एक डाभका पवित्रा होता है. अथवा सब वर्णोंनें दो दो डाभोंका पवित्रा धारण करना. पवित्रामें ग्रंथि देनी सो वैकल्पिक है. इति श्रावणमासकृत्यनिर्णयोनाम पंचम उद्देशः ॥९

अथ भाद्रपदमासः ॥ तत्रकन्यासंक्रांतौपराःषोडशनाड्यःपुण्यकालः भाद्रपदमासेएकान्नाहारव्रताद्धनारोग्यादिफलं अत्रमासेहृषीकेशप्रीत्यर्थंपायसगुडौदनलवणादेर्दानंभाद्रपदशुक्लतृतीयायांहरितालिकाव्रतं तत्रमुहूर्तमात्राततोन्यूनापिपराग्राह्या यदाक्षयवशात्परदिने नास्तितदाद्वितीयायुतापिग्राह्या यदाशुद्धाधिकातदापूर्वदिनेषष्टिघटीमितामपित्यक्त्वापरदिने स्वल्पापिचतुर्थीयुतैवग्राह्या गणयोगप्राशस्त्यात् अत्रव्रतेभवानीशिवयोःपूजनमुपवासश्चस्त्रीणांनित्यः तत्र मंदारमालाकुलितालकायैकपालमालांकितशेखराय दिव्यांबरायैचदिगंबराय नमःशिवायैचनमःशिवायइत्यादयःपूजामंत्राज्ञेयाः ॥

अब भाद्रपदमहीनेके कृत्योंका निर्णय कहताहुं.

कन्यासंक्रांतिमें पिछली सोलह घटीका पुण्यकाल है. भाद्रपदमहीनेमें एक अन्नकों खानेके व्रतसें धन और आरोग्य आदि फल मिलता है. इस महीनेमें विष्णुकी प्रीतिके अर्थ खीर, गुड, चावल, नमक आदि इन्होंका दान करना. भाद्रपद शुदि तृतीयाकों हरितालिकाव्रत होता है. तहां दो घडीमात्र और तिस्सेंभी कम होवै तौभी दूसरे दिनकी ग्रहण करनी. जो तिथिके क्षयके वशसें परदिनमें तृतीया नहीं होवै तब द्वितीयासें युत हुई भी तृतीया लेनी. जो शुद्धा तथा अधिका तृतीया होवै तब पूर्वदिनमें ६० घडीपरिमित तृतीयाका त्याग करके परदिनमें चतुर्थीसें युत हुई स्वल्परूपभी तृतीया लेनी. क्योंकी चतुर्थीका योग सुंदर होता है. इस व्रतमें स्त्रियोंनें पार्वती और महादेवजीका पूजन और उपवास करना. यह व्रत स्त्रियोंकों नित्य है. तहां "मंदारमालाकुलितालकायै कपालमालांकितशेखराय ॥ दिव्यांबरायै च दिगंबराय नमः शिवायै च नमः शिवाय" इन आदि पूजामंत्र जानने.

शुक्लचतुर्थ्यांसिद्धिविनायकव्रतं सामध्याह्नव्यापिनीग्राह्या दिनद्वयेसाकल्येनमध्याह्नेव्याप्तावव्याप्तौवापूर्वा दिनद्वयेसाम्येनवैषम्येणवैकदेशव्याप्तावपिपूर्वैव वैषम्येणव्याप्तावधिकव्यापिनीचेत्परेतिकेचित् पूर्वदिनेसर्वथामध्याह्नस्पर्शोनास्त्येव परदिनेएवमध्याह्नस्पर्शिनीतदैवपरा पूर्वदिनेएकदेशेनमध्याह्नव्यापिनी परदिनेसंपूर्णमध्याह्नव्यापिनीतदापिपरैव एवंमासांतरेपिनिर्णयः इयंरविभौमवारयोगे प्रशस्ता ॥

भाद्रपद शुदि चतुर्थीकों सिद्धिविनायकव्रत होता है. यह चतुर्थी मध्यान्हकालव्यापिनी लेनी. दोनों दिनोंमें सकलपनेसें मध्यान्हकालविषे व्याप्त होवै अथवा नहीं व्याप्त होवै तब पहली चतुर्थी लेनी. दोनों दिनोंमें समपनेसें अथवा विषमपनेसें एकदेशमें व्याप्त होवै तब भी पहलीही चतुर्थी लेनी. विषमपनेसें अधिक व्याप्ति होवै तौ पिछली चतुर्थी लेनी ऐसा

कितनेक पंडित कहते हैं. पूर्वदिनमें सब प्रकारसें मध्यान्हमें स्पर्श नहीं होवै और परदिनमेंही मध्यान्हमें स्पर्शवाली होवै तब भी पिछली चतुर्थी लेनी. पूर्वदिनमें एकदेशकरके मध्यान्हव्यापिनी होवै और परदिनमें संपूर्णमध्यान्हव्यापिनी होवै तब भी पिछलीही चतुर्थी लेनी. ऐसाही अन्य महीनोंमें भी निर्णय जान लेना. अंतवार तथा मंगलवारसें युत हुई यह चतुर्थी उत्तम होती है.

अत्रचतुर्थ्यांचंद्रदर्शनेमिथ्याभिदूषणदोषस्तेनचतुर्थ्यामुदितस्यपंचम्यांदर्शनंविनायकव्रतदिनेपिनदोषाय पूर्वदिनेसायाह्नमारभ्यप्रवृत्तायांचतुर्थ्यांविनायकव्रताभावेपिपूर्वेद्युरेवचंद्रदर्शनेदोषइतिसिद्ध्यति चतुर्थ्यामुदितस्यनदर्शनमितिपक्षेतुअवशिष्टपंचषण्मुहूर्तमात्रचतुर्थीदिनेपिनिषेधापत्तिः इदानींलोकास्तुएकतरपक्षाश्रयेणविनायकव्रतदिनेएवचंद्रंनपश्यंतिनतूदयकालेदर्शनकालेवाचतुर्थीसत्त्वासत्त्वेनियमेनाश्रयंति दर्शनेजातेतद्दोषशांतये सिंहःप्रसेनमवधीत्सिंहोजांबवतहातः सुकुमारकमारोदीस्तवह्येषस्यमंतकः इतिश्लोकजपःकार्यः तत्रमृन्मयादिमूर्तौप्राणप्रतिष्ठापूर्वकंविनायकंषोडशोपचारैःसंपूज्यैकमोदकेननैवेद्यंदत्वासगंधाएकविंशतिदूर्वागृहीत्वा गणाधिपायोमापुत्रायाघनाशनायविनायकायेशपुत्रायसर्वसिद्धिदायैकदंतायेभवक्त्रायमूषकवाहनायकुमारगुरवेइति दशनामभिर्दूर्वयोर्द्वयंद्वयंसमर्प्यावशिष्टामेकांदूर्वांउक्तदशनामभिःसमर्पयेत् दशमोदकान्विप्रायदत्वादशस्वयंभुंजीतेतिसंक्षेपः ॥

इस चतुर्थीमें चंद्रमा दीख जावै तौ मिथ्याभिदूषणदोष लगता है, तिसकरके चतुर्थीमें उदय हुये चंद्रमाकों पंचमीमें देखना होवै और उस दिनमें विनायकका व्रतदिन होवै तौ चंद्रमाकों देखनेसें दोष नहीं लगता. पूर्वदिनमें सायान्हकालकों आरंभ कर प्रवृत्त हुई चतुर्थीमें गणेशजीके व्रतके विनाभी पहलेही दिन चंद्रमाके दर्शनमें दोष है यह सिद्ध होता है. चतुर्थीमें उदय हुये चंद्रमाका दर्शन नहीं करना, इस पक्षमेंभी शेष रही १० घटीका अथवा १२ घटीका चतुर्थीमें चंद्रदर्शनका निषेध है. अब संसारी मनुष्य एक पक्षका आश्रय करके गणेशजीके व्रतके दिनमेंही चंद्रमाकों नहीं देखते हैं, परंतु उदयकालमें अथवा दर्शकालमें चतुर्थी है अथवा नहीं यह देखके तिस नियमानुसार नहीं चलते. जो चंद्रमा दिख जावै तौ तिसके दोषकी शांतिके लिये "सिंहः प्रसेनमवधीत्सिंहो जांबवता हतः ॥ सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमंतकः ॥" इस श्लोकका जप करना. तहां माटी आदिसें बनी हुई मूर्तिमें प्राणप्रतिष्ठापूर्वक गणेशजीकी षोडशोपचारोंकरके पूजा कर एक लड्डूकरके नैवेद्यकों निवेदन करके गंधसहित इक्कीस दूर्वाओंकों ग्रहण कर "गणाधिपायोमापुत्रायाघनाशनाय विनायकायेशपुत्राय सर्वसिद्धिदायैकदंतायेभवक्त्राय मूषकवाहनाय कुमारगुरवे" इस मंत्रके द्वारा दश नामोंकरके दो दो दूर्वाकों समर्पित कर पीछे शेष रही एक दूर्वाकों उक्त किये दश नामोंकरके समर्पित करनी. दश लड्डु ब्राह्मणकों देके दश लड्डु आप भोजन करना. ऐसा व्रतका संक्षेप है.

भाद्रशुक्लपंचमी ऋषिपंचमी सामध्याह्नव्यापिनीग्राह्या दिनद्वयेमध्याह्नव्याप्तौतदव्याप्तौचपूर्वैव अत्रऋषीन्पूजयित्वाकर्षणरहितभूमिजन्यशाकाहारंकुर्यात् शुक्लेभाद्रपदेषष्ठ्यांस्नानंभास्करपूजनं प्राशनंपंचगव्यस्यअश्वमेधफलाधिकं इयंसूर्यषष्ठीसप्तमीयुताग्राह्या अस्यामेव

स्वामिकार्तिकेयदर्शनाद्ब्रह्महत्यादिपापनाशः भाद्रपदशुक्लाष्टमीदूर्वाष्टमीसापूर्वाग्राह्या इयंज्येष्ठामूलर्क्षयुतात्याज्या अलाभेतद्युक्तापिग्राह्या इदंदूर्वापूजनव्रतंकन्यार्केऽगस्त्योदयेचवर्ज्यं इदं स्त्रीणांनित्यं अत्रज्येष्ठादेवीपूजनव्रतंकेवलाष्टमीप्राधान्येनकेवलज्येष्ठानक्षत्रप्राधान्येनचोक्तं तत्रदाक्षिणात्या:केवलज्येष्ठानक्षत्रएवकुर्वंति तच्चानुराधायामावाहनंज्येष्ठायांपूजनंमूलेविसर्जनमितित्रिदिनंज्ञेयं आवाहनविसर्जनदिनयो:पूजनदिनानुरोधेननिर्णयः तत्रयदापूर्वेमध्याह्नमारभ्यप्रवृत्ताज्येष्ठाद्वितीयदिनेमध्याह्नेमध्याह्नात्पूर्वंवासमाप्यतेतदापूर्वदिनेएवपूजनं यदापूर्वदिनेमध्याह्नोत्तरंप्रवृत्तापरदिनेमध्याह्नेसमाप्तातदाष्टमीयोगवशेनपूर्वापरावाग्राह्या उभयत्राष्टमीयोगेपूर्वैव यदापूर्वत्रमध्याह्नमारभ्यमध्याह्नोत्तरंवाप्रवृत्तापरदिनेमध्याह्नोत्तरमपराह्णं स्पृशतितदाष्टमीयोगाभावेपिपरैव ॥

भाद्रपद शुदि पंचमी ऋषिपंचमी कहाती है. वह मध्यान्हव्यापिनी लेनी. दोनों दिन मध्यान्हसमयव्याप्ति होवै अथवा व्याप्ति नहीं होवै तब पहलीही पंचमी लेनी. इसमें ऋषियोंकी पूजा करके हल आदिसें नहीं वाही हुई पृथिवीमें उपजें शाकका आहार करना. “भाद्रपद शुदि षष्ठीकों प्रात:स्नान, सूर्यका पूजन, और पंचगव्य पीना, इन्होंसें अश्वमेधयज्ञके फलसें अधिक फल मिलता है.” यह सूर्यषष्ठी सप्तमीसें युत हुई लेनी. इसी षष्ठीमें स्वामिकार्तिकजीका दर्शन करनेसें ब्रह्महत्या आदि पापोंका नाश होता है. भाद्रपद शुदि अष्टमी दूर्वाष्टमी कहाती है. वह पूर्वविद्धा लेनी. ज्येष्ठा और मूलनक्षत्रसें युत हुई यह अष्टमी त्याग देनी. ज्येष्ठा और मूलसें रहित जो अष्टमी नहीं मिलै तौ ज्येष्ठा और मूलसें युत हुईभी अष्टमी लेनी. यह दूर्वापूजनव्रत कन्याके सूर्यमें और अगस्त्यजीके उदयमें वर्ज्य देना. यह व्रत स्त्रियोंकों नित्य है. यहांही ज्येष्ठादेवीपूजनव्रत केवल अष्टमीकी प्रधानताकरके अथवा केवल ज्येष्ठानक्षत्रमात्रकी प्रधानताकरके कहा है. दक्षिण देशके लोक तौ केवल ज्येष्ठानक्षत्रमेंही करते हैं. अनुराधामें आवाहन, ज्येष्ठामें पूजन और मूलमें विसर्जन इस प्रकार तीन दिनात्मक यह व्रत है ऐसा जानना. आवाहन और विसर्जनका निर्णय पूजनदिनके निर्णयके अनुरोधकरके जानना. तहां जो पूर्वदिनमें मध्यान्हविषे प्रवृत्त हुआ ज्येष्ठानक्षत्र होवै और दूसरे दिन मध्यान्हमें अथवा मध्यान्हके पहले ज्येष्ठानक्षत्र समाप्त होवै तब पूर्वदिनमेंही पूजन करना और जो पूर्वदिनमें मध्यान्हके उपरंत ज्येष्ठा प्रवृत्त होवै और परदिनमें मध्यान्हविषे ज्येष्ठा समाप्त होवै तब अष्टमीके योगके वशकरके पूर्वविद्धा अथवा परविद्धा लेनी. दोनों दिन अष्टमीका योग होवै तब पूर्वविद्धाही लेनी. जो पूर्वदिनमें मध्यान्हके आरंभमें अथवा मध्यान्हके अनंतर ज्येष्ठा प्रवृत्त होवै और परदिनमें मध्यान्हके उपरंत अपराण्हकों स्पर्श करै, तब अष्टमीके योगके अभावमें भी परविद्धा अष्टमी लेनी.

भाद्रपदशुक्लैकादश्यांद्वादश्यांवापारणोत्तरंविष्णुपरिवर्तनोत्सवः तत्रश्रुतेश्चमध्येपरिर्वतमेतीतिवचनात्त्रेधाविभक्तश्रवणमध्यभागयोगस्यैकादश्यांसत्त्वेतत्रैवद्वादश्यांसत्त्वेद्वादश्यामेवोभयत्रनक्षत्रयोगाभावेद्वादश्यामेवेत्यादिव्यवस्थाज्ञेया तत्रसंध्यायांविष्णुंसंपूज्यवासुदेवजगन्नाथप्राप्तेयंद्वादशीतव पार्श्वेनपरिवर्तस्वसुखंस्वापिहिमाधवेतिमंत्रेणप्रार्थयेत् ॥

---

१ मैत्रशाक्रभमूलेषुज्येष्ठाह्वार्चाविसर्जनं ॥ नकालनियमस्तत्रनचपातादिलक्षणं ॥

भाद्रपद शुदि एकादशीमें अथवा द्वादशीमें पारणाके उपरंत विष्णुका परिवर्तनोत्सव करना. तहां "श्रवणनक्षत्रके मध्यभागमें विष्णु करवट लेता है" इस वचनसें तीन प्रकारसें विभक्त कीये हुए श्रवणके मध्यभागयोगमें एकादशी होवै तौ एकादशीमें परिवर्तनोत्सव करना. द्वादशीकों होवै तौ द्वादशीमें परिवर्तनोत्सव करना. दोनों दिनोंमें नक्षत्रके योगका अभाव होवै तौ द्वादशीमेंही परिवर्तनोत्सव करना. इस आदि व्यवस्था जाननी. तहां संध्यासमयमें विष्णुकी पूजा करके **"वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव ॥ पार्श्वेन परिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधव"** इस मंत्रसें प्रार्थना करनी.

अथश्रवणद्वादशीव्रतं तत्रयत्रदिनेमुहूर्तमात्रादिःस्वल्पोपिद्वादश्याःश्रवणयोगस्तत्रोपोषणं उत्तराषाढाविद्धश्रवणनिषेधवाक्यानितुनिर्मूलानि यदापूर्वदिनेएकादशीविद्धाद्वादशी परदिनेनुवर्ततेदिनद्वयेपिचश्रवणयोगस्तदापूर्वदिनेएकादशीद्वादशीश्रवणेतित्रितययोगरूप विष्णुश्रृंखलयोगात्पूर्वैवोपोष्या तत्रोदाहरणं एकादशी १८ उत्तराषाढा ६ द्वादशी २० श्रवण १२ यथावा एकादशी १८ उत्तराषाढा २५ द्वादशी २० श्रवण १८ अत्रद्वितीयोदाहरणेएकादश्याःश्रवणयोगाभावेपिश्रवणयुक्तद्वादशीस्पर्शमात्रेणविष्णुश्रृंखलयोगः द्विविधोप्ययंयोगोदिवैवग्राह्योनरात्रौइतिपुरुषार्थचिंतामणौ रात्रावपिनिशीथोत्तरमपियोगोग्राह्यइतिनिर्णयसिंधुः रात्रेःप्रथमप्रहरपर्यंततिथ्योःश्रवणयोगोग्राह्योनद्वितीयप्रहरादावित्यपरे अत्रचरमपक्षएवयुक्तोभाति अत्रविष्णुश्रृंखलयोगेव्रतं[1]द्वयोपोषणंतंत्रेणैकादश्यामेवकृत्वाद्वादश्यांवक्ष्यमाणपारणानिर्णयानुसारेणपारणंकार्यं यदोक्तविष्णुश्रृंखलयोगोनास्तितदायदिशुद्धाधिकाद्वादशीदिनद्वयेपिश्रवणयोगःपूर्वदिनेचोदयेश्रवणाभावस्तदोत्तरैवग्राह्या यदोभयदिनेसूर्योदयेद्वादश्यांश्रवणयोगस्तदापूर्वैव विद्धाधिकायामपिपरत्रैवोदयेउदयोत्तरंवाश्रवणयोगेपरैवेतिनिर्विवादं उभयत्रश्रवणयोगेउक्तविधविष्णुशृंखलयोगेपूर्वाअन्यथापरैवेति विज्ञेयं एवंयत्रैकादशीश्रवणद्वादश्योर्नैरंतर्येणोपवासप्राप्तिस्तत्रशक्तेनोपवासद्वयंकार्यं व्रतद्वयस्यापिनित्यत्वात् व्रतद्वयस्यैकदैवतत्वान्नपारणलोपदोषः यस्तूपवासद्वयासमर्थएकादशीव्रतसंकल्पात्पूर्वंचनिजासामर्थ्यंनिश्चिनोतितेनैकादश्यांफलाद्याहारंकृत्वाद्वादश्यांनिरशनंकार्यं नचैकादशीव्रतलोपः उपोष्यद्वादशींपुण्यांविष्णुऋक्षेणसंयुतां एकादश्युद्भवंपुण्यंनरः प्राप्नोत्यसंशयमितिनारदोक्तेः श्रवणेनयुताचेत्स्यात्द्वादशीसाहिवैष्णवैः स्मार्तैश्चोपोषणीयास्यात्त्यजेदेकादशींतदा इतिमाधवोक्तेश्चअत्रैकादशीत्यागपदेनफलाहारोबोध्यतेनतुभोजनं यस्तूपवासद्वयशक्तिभ्रमेणाकृतैकादशीव्रतसंकल्पःसंकल्पोत्तरंचद्वितीयोपवासासामर्थ्यमनुभवतितदातेनैकादश्यामुपोष्यद्वादश्यांविष्णुपूजनंकृत्वापारणंकार्यं अत्रव्रतांगपूजनंकृत्वोपवासासमर्थउपवासप्रतिनिधिरूपंविष्णुपूजनंकरिष्यइतिसंकल्प्यपुनःपूजनंकुर्यात् अत्रद्वादश्यांश्रवणयोगाभावेएकादश्यांश्रवणयोगेतत्रैवश्रवणद्वादशीव्रतंकार्यं विद्धैकादश्यांश्रवणयोगेतुयेषांतत्रैकादशीव्रतप्राप्तिस्तेषांतंत्रेणोपवासद्वयसिद्धिः अन्येषांगृहीतश्रवणद्वादशीव्रतानामुपवासद्वयं तत्राशक्तानांतुपूर्वेह्निफलाहारःपरेह्निनिरशनमितिभाति ॥

---

[1] एकादशीश्रवणद्वादशीव्रतद्वयं ।

अब श्रवणद्वादशीका व्रत कहताहुं.

तहां जिस दिनविषे दो घडी आदि द्वादशीमें श्रवणका योग होवै तहां उपवास करना. और उत्तराषाढासें विद्ध श्रवणनिषेधसंबंधी वाक्य तौ निर्मूल है, और जो पूर्वदिनमें एकादशीविद्धा द्वादशी होवै और परदिनमें अनुवर्तित होवै और दोनों दिनोंमें श्रवणका योग होवै तब पूर्वदिनमें एकादशी, द्वादशी, और श्रवण इन तीनोंके योगरूपी **विष्णुशृंखलयोगसें** पूर्वविद्धाहीमें उपवास करना. तहां उदाहरण—एकादशी १८ घडी होवै और उत्तराषाढा ६ घडी होवै और द्वादशी २० घडी होवै और श्रवण १२ घडी होवै, अथवा जैसे, एकादशी १८ घडी होवै और उत्तराषाढा २९ घडी होवै और द्वादशी २० घडी होवै और श्रवण १८ घडी होवै; यह दूसरे उदाहरणमें एकादशीमें श्रवणका योग नहीं भी हो परंतु श्रवणसें युत हुई द्वादशीके स्पर्शमात्रकरकेभी विष्णुशृंखलयोग होता है. यह दोनों प्रकारका योग दिनमेंही लेना और रात्रिमें नहीं ऐसा **पुरुषार्थचिंतामणिमें** कहा है. रात्रिमें भी अर्धरात्रसें उपरंत यह योग ग्रहण करना. इस प्रकार **निर्णयसिंधुका** मत है. रात्रिके प्रथम प्रहरपर्यंत दोनों तिथियोंमें श्रवणका योग होवै तौ ग्रहण करना. दूसरे प्रहर आदिमें नहीं लेना ऐसा अन्य पंडित कहते हैं. यहां अंतका पक्षही अच्छा है ऐसा मेरा मत है. विष्णुशृंखलयोगके दिनमें एकादशी और श्रवणद्वादशी ऐसे दोनों व्रतोंके उपवास एकतंत्रसें एकादशीमें करके द्वादशीमें वक्ष्यमाण पारणाके निर्णयके अनुसार पारणा करनी. जो पूर्वोक्त विष्णुशृंखलयोग नहीं होवै तब जो शुद्धा और अधिका द्वादशीके दोनों दिनोंमें भी श्रवणयोग होवै और पूर्वदिनमें तथा उदयमें श्रवणका अभाव होवै तब परविद्धाही लेनी. जो दोनों दिन सूर्योदयमें द्वादशीके दिन श्रवणयोग होवै तब पहलीही लेनी. विद्धाधिक द्वादशीमें भी परदिनके उदयमें अथवा उदयके उपरंत श्रवणयोग होवै तब परविद्धाही लेनी. यह विवादसें रहित पक्ष है. दोनों दिन श्रवणका योग होवै और उक्त विधिसें विष्णुशृंखलयोग होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी. अन्यथा होवै तौ परविद्धाही लेनी ऐसा जानना. ऐसे जो एकादशी और श्रवणसहित द्वादशीमें निरंतरताकरके उपवासकी प्राप्ति होवै तौ तहां समर्थ मनुष्यनें दोनों दिन उपवास करना. ये दोनों व्रत नित्य हैं, और इन दोनों व्रतोंकी एक देवता है इसवास्ते पारणाके लोपमें दोष नहीं है. दो उपवास करनेकेवास्ते अशक्त मनुष्यनें एकादशीके व्रतके संकल्पसें पहले अपने सामर्थ्यका निश्चय करके एकादशीमें फल आदिका आहार करके पीछे द्वादशीमें निरशनव्रत करना. “ श्रवणनक्षत्रसें युत हुई पवित्र द्वादशीमें उपवास करनेसें मनुष्य एकादशीके व्रतके पुण्यके फलकों प्राप्त होता है इसमें संशय नहीं ” ऐसा नारदजीका वचन है. वास्ते एकादशीके व्रतका लोप नहीं होता है, और “ जो श्रवणसें युत हुई द्वादशी होवै तब वैष्णवोंनें और स्मार्तोंनें उपवास करना. और एकादशीका त्याग करना. ” ऐसा माधवका वचन है. यहां एकादशीकों त्यागना इस त्यागपदकरके फलाहार कहा गया है, और भोजनमात्र नहीं. जो दोनों उपवासकी शक्तिके भ्रमकरके एकादशीके व्रतका संकल्प करै और संकल्पके उपरंत दूसरे उपवासकी सामर्थ्य नहीं रहै तब तिस मनुष्यनें एकादशीकों उपवास करके द्वादशीमें विष्णुका पूजन करके पारणा करनी. व्रतांगपूजन करके उपवास करनेमें असमर्थ होवै तौ “ **उपवासप्रतिनिधिरूपं विष्णुपूजनं करिष्ये** ”

इस प्रकार संकल्प करके फिर पूजन करना. यहां द्वादशीमें श्रवणके योगका अभाव होवै तौ और एकादशीकों श्रवणयोग होवै तवही श्रवणद्वादशीका व्रत करना. विद्धारूपी एकादशीमें श्रवणयोग होवै तौ जिन्होंकों उस दिनमें एकादशीव्रतकी प्राप्ति होवै तिन्होंकों तंत्रसें दोनों उपवासकी सिद्धि होती है. गृहीत किये श्रवणद्वादशीके व्रतवालोंनें दोनों उपवास करने. और तहां भी असमर्थोंनें पूर्वदिनमें फलाहार करना और परदिनमें निरशनव्रत करना ऐसा मेरा मत है.

अथपारणाउभयांतेपारणंमुख्यःपक्षःअन्यतरांतेगौणःपक्षः तत्रविष्णुशृंखलाभावेत्रयोदश्यामुभयांतेपारणं विष्णुशृंखलयोगेतुपूर्वदिनेतंत्रेणकृतोपवासद्वयस्यपरदिनेश्रवणर्क्षात्द्वादश्याधिक्येश्रवणमतिक्रम्यद्वादश्यांपारणं यदिचद्वादश्यपेक्षयाश्रवणाधिक्यंपारणादिनेभवतितदाएकादशीव्रतपारणायांद्वादश्युल्लंघनेदोषोक्तेर्द्वादश्यामेवपारणंनत्वन्यतरांतापेक्षा तत्र सतिसंभवेश्रवणमध्यभागंविंशत्यादिघटिकात्मकंत्यक्त्वापारणं यथैकादशी ३० उत्तराषाढा २९ द्वादशी २८ श्रवण २९ अत्रपूर्वेद्युस्तंत्रेणोपवासद्वयंकृत्वा परेह्निश्रवणमध्यभागमवशिष्टंनवघटिकात्मकंत्यक्त्वा द्वादश्यांचरमेविंशतिघटिकारूपेश्रवणभागेपारणं एवमुक्तोदाहरणेएवएकादश्याःदशनाडिकात्वे द्वादश्याःअष्टनाडिकात्वे द्वादशीश्रवणयोःपंचदशचत्वारिंशन्नाडीत्वेवा श्रवणमध्यभागत्यागे द्वादश्युल्लंघनापत्तौ संगवकालंत्यक्त्वामुहूर्तत्रयपर्यंतं सप्तममुहूर्तादौवाऋक्षमध्यभागेएवभोक्तव्यं अयंमध्यभागत्यागोभाद्रपदगतश्रवणद्वादशीव्रतएव नतुमाघफाल्गुनमासकृष्णपक्षगतश्रवणद्वादशीव्रतपारणायां मासांतरगतश्रवणभागेविष्णुपरिवर्तनाभावात्येतुभाद्रेश्रवणमध्यवर्जनमात्रेणनिषेधचारितार्थ्यंमन्यमानाविष्णुशृंखलयोगाभावेऽपिश्रवणमध्यमात्रंत्यक्त्वाभुंजंते तेनित्यश्रवणद्वादशीव्रतमाहात्म्यानभिज्ञाभ्रांताएव अयंसर्वोपिनिर्णयोमासांतरगतश्रवणद्वादशीव्रतेप्यूह्यः श्रवणद्वादशीव्रतेनदीसंगमेस्नात्वाकलशेस्वर्णमयंजनार्दननामानंविष्णुंसंपूज्य वस्त्रयज्ञोपवीतोपानच्छत्रादिसमर्प्योपोष्य पारणादिनेदध्योदनयुतंवस्त्रवेष्टितंजलपूर्णघटंछत्रादियुतांपूजितांसपरिवारांतांप्रतिमांचदद्यात् तत्रमंत्रः नमोनमस्तेगोविंदबुधश्रवणसंज्ञक अघौघसंक्षयंकृत्वासर्वसौख्यप्रदोभवेति ॥

अब पारणाका काल कहताहुं.

द्वादशी और श्रवण इन दोनोंके अंतमें पारणा करनी यह मुख्य पक्ष है. दोनोंमांहसें कोई एकके अंतमें पारणा करनी यह गौण पक्ष है. तहां विष्णुशृंखलयोग नहीं होवै तौ त्रयोदशीविषे दोनोंके अंतमें पारणा करनी. विष्णुशृंखलयोगमें तौ पूर्व दिनमें तंत्रकरके जिसनें दो उपवास किये होवैं उसनें परदिनमें श्रवणसें द्वादशीकी अधिकतामें श्रवणकों उल्लंघित करके द्वादशीमें पारणा करनी. और जो द्वादशीसें श्रवणकी अधिकता होवै तौ एकादशीव्रतकी पारणामें द्वादशीकों उल्लंघित करनेसें दोष है ऐसा वचन है, वास्ते द्वादशीमेंही पारणा करनी. एक कोईके अंतकी अपेक्षा नहीं है. तहां संभव होवै तौ श्रवणके वीस २० घटीकापरिमित मध्यभागकों त्यागके पारणा करनी. जैसे, एकादशी ३० घडी होवै, उत्तराषाढा २९ घडी होवै और द्वादशी २९ घडी होवै और श्रवण २९ घडी होवै, यहां पूर्वदिनसें दोनों

उपवासोंको करके दूसरे दिनमें श्रवणके नव घटीका परिमित मध्यभागकों त्यागकर द्वादशीविषे वीस २० घटीकापरिमित अंतके श्रवणभागमें पारणा करनी. ऐसे उक्त उदाहरणमेंही एकादशी दश घटीका होवै और द्वादशी आठ घटीका होवै और द्वादशी पंदरह घटीका और श्रवण चालीस घटीका होवै तब श्रवणके मध्यभागकों त्यागनेमें द्वादशीका उल्लंघन प्राप्त होता है, तब संगवकालकों त्यागकर छह घटीकातक अथवा सातमा मुहूर्त आदिमें श्रवणनक्षत्रके मध्यभागमेंही भोजन करना उचित है. यह मध्यभागका त्याग भाद्रपदके श्रवणद्वादशीव्रतमेंही है. माघ और फाल्गुनमासके कृष्णपक्षकी श्रवणद्वादशीव्रतकी पारणामें नहीं है. क्योंकी अन्य महीनोंके श्रवणभागमें विष्णुका परिवर्तनोत्सव नहीं होता है. जो भाद्रपदमहीनेमें श्रवणके मध्यभागकों वर्जनमात्रकरके निषेधकी चरितार्थताकों मानते हुये विष्णुशृंखलयोगके अभावमें भी श्रवणके मध्यभागकों त्यागकर भोजन करते हैं, वे नित्य श्रवणद्वादशीव्रतके माहात्म्यकों नहीं जाननेवाले और भ्रांतरूपही हैं. यह संपूर्णभी निर्णय अन्य मासगत श्रवणद्वादशीके व्रतमें भी जान लेना. श्रवणद्वादशीके व्रतमें नदीसंगमविषे स्नान करके और कलशेमें सोनासें रचित किंये जनार्दन नामवाले विष्णुकी पूजा करके वस्त्र, यज्ञोपवीत, उपानह अथवा खडाऊं, छत्री इन आदिकों समर्पित कर उपवास करना. पारणादिनमें दही और चावलोंसें युत तथा वस्त्रसें वेष्टित ऐसे जलके घटका और छत्र आदिसें युत हुई प्रतिमाका दान करना. तहां मंत्र–" **नमो नमस्ते गोविंद बुधश्रवणसंज्ञक ॥ अघौघसंक्षयं कृत्वा सर्वसौख्यप्रदो भव.** " इस मंत्रकों जपै.

अथवामनजयंती भाद्रपदशुक्लद्वादश्यांश्रवणयुतायांमध्याह्नेवामनोत्पत्तिः अतोमध्याह्नव्यापिनीद्वादशीमध्याह्नेततोन्यत्रकालेवाश्रवणयुताग्राह्या उभयदिनेश्रवणयोगेपूर्वैव सर्वथाद्वादश्याःश्रवणयोगाभावेएकादश्यामेवश्रवणसत्त्वेमध्याह्नव्यापिनीमपिद्वादशींविहायैकादश्यामेवव्रतंकार्यं शुद्धैकादश्यांश्रवणाभावेदशमीविद्धैकादश्यामपिश्रवणयुतायांव्रतंपूर्वदिनएवमध्याह्नव्यापिनीद्वादशीपरदिनेमध्याह्नादन्यत्रकालेश्रवणयुतातदापूर्वैव तिथिद्वयेपिश्रवणयोगाभावेद्वादश्यामेवमध्याह्नव्यापिन्यांव्रतं दिनद्वयेमध्याह्नव्याप्तौतदव्याप्तौचैकादशीयुक्तैवग्राह्या पारणातुपूर्वोक्तरीत्योभयांतेन्यतरांतेवाकार्या अत्रमध्याह्नेनदीसंगमेस्नात्वासौवर्णंवामनंसंपूज्यार्घ्यंसौवर्णपात्रेणदद्यात् तत्रपूजामंत्रः देवेश्वरायदेवायदेवसंभूतिकारिणेप्रभवेसर्वदेवानांवामनायनमोनमः अथार्घ्यमंत्रः नमस्तेपद्मनाभायनमस्तेजलशायिनेतुभ्यमर्घ्यंप्रयच्छामिबालवामनरूपिणे नमःशार्ङ्गधनुर्बाणपाणयेवामनायच यज्ञभुक्फलदात्रेचवामनायनमोनमः ततःपरदिनेसपरिवारंवामनंद्विजायदद्यात् वामनःप्रतिगृह्णातिवामनोहंददामिते वामनंसर्वतोभद्रंद्विजायप्रतिपादये इतिदानमंत्रः अस्यामेवद्वादश्यांरात्रौदेवपूजांकृत्वातत्रासंभवेदिवैववादधिव्रतंनिवेद्यदधिदानंकृत्वादुग्धव्रतसंकल्पंकुर्यात् अत्रपयोव्रतेपयोविकारस्यपायसादेःदुग्धपाचितान्नस्यचवर्जनं दध्यादेःपयोविकारस्यापिनवर्जनं एवंदधिव्रतेतक्रादेर्नवर्जनं यत्रप्रसूतायागोर्दशदिनेषुसंधिन्यादेश्चक्षीरनिषेधस्तत्रक्षीरविकारस्यदधितक्रादेःसर्वस्यैववर्जनं ॥

अब वामनजयंतीका निर्णय कहताहुं.

भाद्रपदके शुक्लपक्षमें श्रवणयुत द्वादशीकों मध्यान्हसमय वामनजीकी उत्पत्ति हुई है. इस कारणसें मध्यान्हव्यापिनी द्वादशी मध्यान्हमें होवै अथवा अन्यकालमें होवै तब श्रवणसें युत हुई ग्रहण करनी. दोनों दिन श्रवणयोग होवै तब पूर्वविद्धाही द्वादशी लेनी. सब प्रकारसें द्वादशीकों श्रवणयोगका अभाव होवै और एकादशीकोंही श्रवणनक्षत्र होवै तब मध्यान्हव्यापिनी द्वादशीकों भी वर्जित करके एकादशीमेंही व्रत करना उचित है. और शुद्ध एकादशीमें श्रवणनक्षत्र नहीं होवै तौ दशमीसें विद्ध हुई और श्रवणसें युत हुई ऐसी एकादशीमें व्रत करना. पूर्वदिनमें मध्यान्हव्यापिनी द्वादशी होवै और परदिनमें मध्यान्हसें अन्यकालमें श्रवणसें युत हुई द्वादशी होवै तब पहलीही लेनी. दोनों तिथियोंमें श्रवणके योगका अभाव होवै तब मध्यान्हव्यापिनी द्वादशीमेंही व्रत करना. दोनों दिन मध्यान्हमें व्याप्ति होवै अथवा नहीं व्याप्ति होवै तब एकादशीसें युत हुई द्वादशी लेनी. पारणा पूर्वोक्त रीतिकरके दोनोंके अंतमें अथवा एक कोईके अंतमें करनी. इस व्रतमें मध्यान्हसमयमें नदीके संगममें स्नान करके सोनासें रचित किये वामनजीकी पूजा करके सोनाके पात्रकरके अर्घ्य देना. तहां पूजाका मंत्र—“ **देवेश्वराय देवाय देवसंभूतिकारिणे ॥ प्रभवे सर्वदेवानां वामनाय नमो नमः** ” ॥ अब अर्घ्यके मंत्रकों कहताहुं—“ **नमस्ते पद्मनाभाय नमस्ते जलशायिने ॥ तुभ्यमर्घ्यं प्रयच्छामि बालवामनरूपिणे ॥ नमः शार्ङ्गधनुर्बाणपाणये वामनाय च ॥ यज्ञभुक् फलदात्रे च वामनाय नमो नमः** ” ॥ पीछे परदिनमें कुटुंबसहित वामनजीकी प्रतिमा ब्राह्मणकों दान देनी. तहां मंत्र—“ **वामनः प्रतिगृह्णाति वामनोहं ददामि ते ॥ वामनं सर्वतोभद्रं द्विजाय प्रतिपादये** ” ॥ इसी द्वादशीमें रात्रिमें देवताकी पूजा करनी. रात्रिमें पूजा नहीं हो सकै तौ दिनमेंही पूजा करनी. पूजा किये पीछे दधिव्रत निवेदन करके दहीका दान करना और दुग्धव्रतका संकल्प करना. इस दुग्धव्रतमें दूधके बने हुए खीर आदिका और दूधमें पकाये अन्नकों वर्ज देना. दही आदि दूधके बने हुएकों नहीं वर्जना, ऐसेही दधिव्रतमें तक्र आदिकों नहीं वर्जना. प्रसूता अर्थात् व्याई हुई गौके दश दिनोंमें दूधका निषेध है. और संधिनी (बैलसें मैथुनार्थ आक्रमित) गौके दूधका निषेध है. तहां दूधसें वने हुए दही, तक्र इन आदि सब पदार्थोंकों वर्ज देना.

अथभाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यामनंतव्रतं तत्रोदयेत्रिमुहूर्तव्यापिनीचतुर्दशीग्राह्येतिमुख्यःपक्षः तदभावेद्विमुहूर्ताग्राह्येत्यनुकल्पः द्विमुहूर्तन्यूनातुपूर्वैवग्राह्या दिनद्वयेसूर्योदयव्यापित्वेसंपूर्णत्वात्पूर्वैव अत्रपूर्वाह्णोमुख्यःकर्मकालः तदभावेमध्याह्नोपि अत्रव्रतेसुवर्णप्रतिमायांचतुर्दशग्रंथियुतदोरकेवानंतपूजनादिविधिस्तदुद्यापनविधिश्चकौस्तुभादौज्ञेयः पूजितदोरकनाशेतु गुरुंवृत्वा तदनुज्ञयायथाशक्तिकृच्छ्रादिप्रायश्चित्तंविधायाष्टोत्तरशतमाज्येनद्वादशाक्षरवासुदेवमंत्रेणहुत्वा केशवादिचतुर्विंशतिनामभिःसकृत्सकृद्धुत्वाहोमशेषंसमाप्यनूतनदोरकेपूर्ववत्पूजनादिचरेत् ॥

अब भाद्रपद शुद्ध चतुर्दशीके दिन अनंतव्रत कहताहुं.

भाद्रपद शुदि चतुर्दशीकों अनंतव्रत होता है. तहां उदयकालमें ६ घटीका व्यापिनी

चतुर्दशी लेनी, यह मुख्य पक्ष है. और ६ घटीकाभी नहीं होवै तौ ४ घटीका चतुर्दशी लेनी, यह गौणपक्ष है. ४ घटीकासें कम चतुर्दशी होवै तौ पूर्वविद्धाही चतुर्दशी लेनी. दोनों दिन सूर्योदयव्यापिनी चतुर्दशी होवै तौ संपूर्णपनेसें पूर्वविद्धाही चतुर्दशी लेनी. यहां मुख्यकाल पूर्वाण्ह है. तिसके अभावमें मध्यान्ह भी लेना. इस व्रतमें सोनाकी प्रतिमाविषे अथवा चौदह ग्रंथियोंसें युत हुये डोरेमें अनंतपूजा आदिकी विधि है, और तिसके उद्यापनकी विधि कौस्तुभ आदि ग्रंथोंमें जाननी. पूजित किये अनंतरूपी डोरेका नाश हो जावै तौ गुरुका वरण करके और तिसकी आज्ञासें अपनी शक्तिके अनुसार कृच्छ्र आदि प्रायश्चित्त करके घृतकी **"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय"** इस द्वादशाक्षर मंत्रसें १०८ आहुति देके पीछे केशव आदि चौवीस नामोंकरके एक एक आहुति देकर होमके शेषकर्मकों समाप्त करके नवीन डोरेमें पहलेकी तरह पूजा आदि करनी.

सूर्यस्यवृषभसंक्रमोत्तरंसप्तमदिनेऽगस्त्योस्तंप्रयाति सिंहसंक्रांत्युत्तरमेकविंशतितमेदिने उदयमेति तत्रकन्यासंक्रांतेःपूर्वसप्तदिनमध्येऽगस्त्यपूजनंतदर्घ्यादिकंकार्यं भाद्रपदपौर्णमास्यांप्रपितामहात्पूरान्पित्रादींस्त्रीन्सपत्नीकान्वसुरुद्रादित्यरूपान् मातामहादित्रयंचसपत्नीकमुद्दिश्यश्राद्धंकार्यं इदंपार्वणत्वादपराह्णेपुरूरवार्द्रवदेवयुक्तंसपिंडकंकार्यं केचित्तुप्रपितामहस्यपित्रादित्रयमात्रमुद्दिश्यनांदीश्राद्धधर्मेणसत्यवसुदेवयुक्तश्राद्धंकार्यं नात्रमातामहाद्युद्देशइत्याहुःइदंप्रोष्ठपदीश्राद्धंसकृन्महालयपक्षेसकलकृष्णपक्षव्यापिमहालयपक्षेचावश्यकं पंचम्यादिमहालयपक्षेषुकृताकृतम् ॥

वृषराशिपर सूर्यका संक्रमण जब होवै तिस्सें सातमे दिन अगस्त्यजीका अस्त होता है और सिंहकी संक्रांति जिस दिनमें होवै तिस्सें इक्कीसमें दिन अगस्त्यजीका उदय होता है. तहां कन्याकी संक्रांतिके पहले सात दिनोंके मध्यमें अगस्त्यजीका पूजन और अगस्त्यजीके लिये अर्घ्य आदि देने. भाद्रपदकी पौर्णमासीमें प्रपितामहकों छोडके उसके पहले तीन (प्रपितामहका पिता, पितामह, प्रपितामह यह तीन) पत्नियोंसहित तथा वसु, रुद्र, आदित्य, इन रूपोंवाले ऐसे और मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह इन्होंके उद्देशसें श्राद्ध करना उचित है. यह पार्वणश्राद्ध है. इस कारणसें अपराण्हकालमें पुरूरवा और आर्द्रव इन देवतोंसें युक्त और पिंडोंसहित श्राद्ध करना. कितनेक पंडित प्रपितामहके पिता आदि तीनोंके उद्देशकरके नांदीश्राद्धकी रीतिसें सत्य और वसुदेवतोंसें युत श्राद्ध करना और मातामह आदिके उद्देशसें नहीं करना ऐसा कहते हैं. यह प्रोष्ठपदीश्राद्ध सकृत् (पंदरह दिनमेंसें एक दिन करना) महालयपक्षमें और सकल कृष्णपक्षव्यापी महालयपक्षमें आवश्यक है. पंचमी आदि महालयपक्षमें कृत अर्थात् करना और अकृत अर्थात् नहीं करना ऐसा है.

अथमहालयः तत्रशक्तेनभाद्रपदापरपक्षेप्रतिपदमारभ्यदर्शांततिथिवृद्धौषोडशमहालयाःकर्तव्याः वृद्धिक्षयाभावेपंचदशैवमहालयाः तिथिक्षयेचतुर्दशैव अशक्तेनतुपंचम्यादिषुषष्ठ्यादिष्वष्टम्यादिषुदशम्यादिष्वेकादश्यादिषुदर्शांततिथिषुकार्याः अत्राप्यशक्तेनानिषिद्धेकस्मिंश्चिदेकस्मिन्दिनेसकृन्महालयःकर्तव्यः प्रतिपदादिदर्शांतपक्षेचतुर्दशीनवर्ज्या पंचम्यादिदर्शांतादिपंचपक्षेषुचतुर्दशींवर्जयित्वान्यातिथिषुमहालयाः सकृन्महालयेपिचतुर्दशी

वर्जनीया सकृन्महालयेप्रतिपदाषष्ठीएकादशीचतुर्दशीशुक्रवारोजन्मनक्षत्रंजन्मनक्षत्राद्दशममेकोनविंशंनक्षत्रंचरोहिणीमघारेवतीचेतिवर्ज्यानि क्वचित्त्रयोदशीसप्तमीरविवारोभौमवारोपिवर्ज्यउक्तः पितृमृततिथौसकृन्महालयकरणेनंदादिनिषेधोनास्ति अशक्तःपितृपक्षेतुकरोत्येकदिनेयतः निषिद्धेपिदिनेकुर्यात्पिंडदानंयथाविधिइत्यादिवचनात् मृततिथौ श्राद्धासंभवेनिषिद्धतिथ्यादिदिनंवर्जयित्वामहालयः तत्रापिद्वादश्यमावास्याष्टमीभरणीव्यतीपातेषुमृततिथ्यभावेपिसकृन्महालयेकोपितिथ्यादिनिषेधोनास्ति संन्यासिनांमहालयस्तुअपराह्णव्यापिन्यांद्वादश्यामेवसपिंडकःकार्योनान्यतिथौ चतुर्दश्यांमृतस्यापिमहालयश्चतुर्दश्यां नभवति श्राद्धंशस्त्रहतस्यैवचतुर्दश्यांप्रकीर्तितमितिनियमेनसर्वतोबलिष्ठेनप्रतिवार्षिकश्राद्धातिरिक्तश्राद्धस्यचतुर्दश्यांनिषेधात् एवंपौर्णमासीमृतस्यापिमहालयःपौर्णमास्यांनकार्यः अपरपक्षत्वाभावेनतस्यांमहालयप्राप्तेः तेनचतुर्दशीमृतस्यपौर्णमासीमृतस्यवामहालयोद्वादश्यमावास्यादितिथिषुकार्यः अत्रकन्यार्कःप्राशस्त्यसंपादको नतुनिमित्तं आदौमध्येवसानेवायत्रकन्यांव्रजेद्रविः सपक्षःसकलःपूज्यःश्राद्धषोडशकंप्रतीत्यादिस्मृतेः अमावास्यापर्यंततिथावसंभवेआश्विनशुक्लपंचमीपर्यंतंयस्मिन्कस्मिंश्चित्तिथौमहालयः तत्रासंभवेयावद्वृश्चिकदर्शनं व्यतीपातद्वादश्यादिपर्वणिकार्यः मृताहेमहालयेचश्राद्धंपक्वान्नेनैवकार्यंनत्वामान्नादिना महालयेगयाश्राद्धेमातापित्रोर्मृतेहनि कृतोद्वाहोपिकुर्वीतपिंडदानंयथाविधि ॥

अब महालयका निर्णय कहताहुं.

द्रव्यादिसें समर्थ मनुष्यनें भाद्रपदके कृष्णपक्षमें प्रतिपदाकों आरंभ कर अमावसतक तिथिकी वृद्धिमें सोलह महालय करने उचित हैं. वृद्धि और क्षयके अभावमें पंदरह महालय करने और तिथिके क्षयमें चौदह महालय करने. असमर्थ मनुष्यनें पंचमी आदि और षष्ठी आदि और अष्टमी आदि और दशमी आदि और एकादशी आदि ऐसी अमावसतककी तिथियोंमें महालय करने. इसमें भी असमर्थ मनुष्यनें निषिद्ध नहीं ऐसे किसीक दिनमें एकवार महालयश्राद्ध करना. प्रतिपदासें अमावसतक इस पक्षमें चतुर्दशी नहीं वर्जनी. पंचमी आदि अमावासतक इन पांच पक्षोंमें चतुर्दशी वर्ज करके अन्य तिथियोंमें महालयश्राद्ध करने. एकवार महालयश्राद्ध करना इस पक्षमें चतुर्दशी वर्जित करनी. एकवार महालयश्राद्ध करनेमें प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी, चतुर्दशी, शुक्रवार, जन्मनक्षत्र, और जन्मनक्षत्रसें दशमा और उन्नीशमा नक्षत्र और रोहिणी, मघा, रेवती येभी नक्षत्र वर्जित करने. कहींक त्रयोदशी, सप्तमी, अंतवार, मंगलवार, येभी वर्जित कहे हैं. पिताकी मृततिथिमें एकवार महालयश्राद्ध करना होवै तब प्रतिपदा आदि तिथियोंका निषेध नहीं है. “ असमर्थ मनुष्य पितृपक्षमें एकदिनविषे श्राद्ध करना चाहै तब निषिद्ध दिनमेंभी विधिके अनुसार पिंडदानकों करै ” इस आदि वचनसें मृततिथिमें श्राद्ध नहीं बन सकै तौ निषिद्ध तिथि आदि दिनकों वर्ज करके महालयश्राद्ध करना. तहांभी द्वादशी, अमावस, अष्टमी, भरणी, व्यतीपात इन्होंमें मृततिथिके अभावमेंभी एकवार महालय करनेमें कोईभी तिथि आदिकोंका निषेध नहीं है. संन्यासियोंका महालयश्राद्ध अपराह्णव्यापिनी द्वादशीमें पिंडोंसहित करना, अन्य तिथिमें नहीं करना. चतुर्दशीमें मृत हुये मनुष्यकाभी महालयश्राद्ध चतुर्दशीमें नहीं होता है;

क्योंकी "शस्त्रसें मृत हुये मनुष्यका श्राद्ध चतुर्दशीमें करना" ऐसा कहा है. इस सब तर्फसें अतिबलवान नियमकरके प्रतिवार्षिक श्राद्धसें अन्य श्राद्धका चतुर्दशीमें निषेध है. ऐसेही पौर्णमासीमें मृत हुये मनुष्यका भी महालयश्राद्ध पौर्णमासीमें नहीं करना. क्योंकी कृष्णपक्षके अभावकरके पौर्णमासीमें किया श्राद्ध महालय नहीं कहाता है, तिसकरके चतुर्दशीमें मृत हुएका और पौर्णमासीमें मृत हुएका महालयश्राद्ध द्वादशी और अमावस आदि तिथियोंमें करना. यहां कन्याका सूर्य उत्तमपनेकों देता है, निमित्तभूत नहीं है. क्योंकी आदिमें, मध्यमें और अंतमें जहां कन्याराशिपर सूर्य प्राप्त होवै सो सब पक्ष सोलह श्राद्धमें उत्तम है ऐसी स्मृति है. अमावसपर्यंत तिथिविषे श्राद्ध नहीं बन सकै तब आश्विन शुदि पंचमीतक जिस किसीक तिथिविषे श्राद्ध करना. तहांभी श्राद्ध नहीं बन सकै तो जबतक वृश्चिकराशिपर सूर्य नहीं आवै तबतक व्यतीपात, द्वादशी, आदि पर्वकालमें महालयश्राद्ध करना. क्षयाहमें और महालयमें श्राद्ध पक्वान्नकरके करना. कच्चा अन्नसें नहीं करना. महालय, गयाश्राद्ध, माता और पिताका क्षयाहश्राद्ध इन आदि श्राद्धोंमें विवाह किया होवै तोभी विधिके अनुसार पिंडदान करना.

पक्षश्राद्धे पित्रादिपार्वणत्रयपत्न्याद्येकोद्दिष्टपितृगणसहितसर्वपित्रुद्देशेनसपत्नीकपित्रादित्रयसपत्नीकमातामहादित्रयेतिषट्दैवतमात्रोद्देशेनवा षट्दैवतैकोद्दिष्टगणोद्देशेनवा प्रत्यहंमहालयइतिपक्षत्रयं एवंपंचम्यादिपक्षेष्वपि सकृन्महालयेतुसर्वपित्रुद्देशेनैव तत्रदेवतासंकल्पःपितृपितामहप्रपितामहानां मातृतत्सपत्नीपितामहीतत्सपत्नीप्रपितामहीतत्सपत्नीनां यद्वाअस्मत्सापत्नमातुरितिपृथगुद्देशः मातामहमातृपितामहमातृप्रपितामहानां सपत्नीकानां यथानामगोत्राणांवस्वादिरूपाणांपार्वणविधिनापत्न्याःपुत्रस्यकन्यकायाःपितृव्यस्यमातुलस्य भ्रातुःपितृष्वसुर्मातृष्वसुरात्मभगिन्याःपितृव्यपुत्रस्यजामातुर्भागिनेयस्यश्वशुरस्यश्वश्र्वाआचार्यस्योपाध्यायस्यगुरोःसख्युःशिष्यस्यएतेषांयथानामगोत्ररूपाणां पुरुषविषयेसपत्नीकानांस्त्रीविषयेसभर्तृकसापत्यानामेकोद्दिष्टविधिनामहालयापरमक्षश्राद्धमथवासकृन्महालयापरपक्षश्राद्धंसदैवंसद्यःकरिष्यइति एतेषांमध्येयेकेचिज्जीवंतितान्विहायइतरेषामुद्देशः मातामहादिषुपत्न्याजीवनेसपत्नीकेत्यस्यस्त्रीषुचभर्त्रादेरनुच्चारः महालयेगयाश्राद्धेवृद्धौचान्वष्टकासुच नवदैवतमत्रेष्टंशेषंषाट्पौरुषंविदुः अन्वष्टकासुवृद्धौचप्रतिसंवत्सरेतथा महालयेगयायांच सपिंडीकरणात्पुरा मातुःश्राद्धंपृथक्कार्यमन्यत्रपतिनासह इत्यादिस्मृत्यनुसारात्पार्वणत्रयमेवोक्तं केचित्तुमातामह्यादित्रयंपृथगुच्चार्यद्वादशदेवताकंपार्वणचतुष्टयमाहुः एताएवदेवतागयायांतीर्थश्राद्धेनित्यतर्पणेचज्ञेयाः महालयेधूरिलोचनसंज्ञकाविश्वेदेवाः अत्रसतिसंभवेदेवार्थंद्वौविप्रौपार्वणत्रयार्थंप्रतिपार्वणंत्रीनित्येवंनव पत्न्याद्येकोद्दिष्टगणेप्रतिदैवतमेकैकमेवंविविप्रान्निमंत्रयेत् अशक्तौदेवार्थमेकंप्रतिपार्वणमेकमितिपार्वणत्रयेत्रीन्सर्वैकोद्दिष्टगणार्थमेकमितिनिमंत्रयेत् देवार्थंविप्रद्वयपक्षेप्रतिपार्वणेत्रयएवकार्याःनतुदेवार्थंद्वौप्रतिपार्वणमेकइतिवाप्रतिपार्वणंत्रीन्देवार्थमेकइतिवावैषम्यंकार्यं एवंसर्वत्रअमावास्यादिश्राद्धेष्वपिज्ञेयं अत्यशक्तौपार्वणद्वयार्थमेकोपिकार्यः महालयेअंतेमहाविष्णवर्थंविप्रोऽवश्यंनिमंत्रितव्यइतिविशेषःकौस्तुभेजीवन्मातृकःसापत्नमातुरेकोद्दिष्टंकुर्यान्नपार्वणं अनेकाःसापत्नमातरोयस्यतेनसर्वमात्रुद्दे

नैकएवविप्रःपिंडश्चकार्योर्घ्यपात्रंपृथक् स्वजनन्यासहानेकमातृत्वेस्वजनन्यासहसर्वमात्रर्थमेकोविप्रःपिंडोर्घ्यश्चेतिपार्वणमेवनपृथक्सापत्नमातॄणामेकोद्दिष्टमितिवा सर्वसापत्नमातॄणांपृथगेवैकोद्दिष्टमितिवापक्षः महालयेपार्वणार्थेअग्नौकरणमेकोद्दिष्टगणार्थंत्वग्नौकरणंकृताकृतं करणपक्षेएकोद्दिष्टगणार्थमग्नौकरणान्नंपृथक्पात्रेग्राह्यं महालयेसर्वपार्वणार्थमेकोद्दिष्टार्थंचसकृदाच्छिन्नंबर्हिरेकमेव दर्शादौतुप्रतिपार्वणंबर्हिर्भिन्नमेव अवशिष्टःश्राद्धप्रयोगोनेकमातृत्वेभ्यंजनादिमंत्रोहश्चश्राद्धसागरेस्वस्वशाखोक्तप्रयोगग्रंथेषुचज्ञेयः सकृन्महालयेश्राद्धांगतिलतर्पणंपरेहन्येवसर्वपित्रुद्देशेनप्रातःसंध्यायाः पूर्वमेवप्रातःसंध्योत्तरंवाब्रह्मयज्ञांगतर्पणाद्भिन्नमेवकार्यं प्रतिपदादिपंचम्यादिपक्षेषुविप्रविसर्जनांतेएवश्राद्धपूजितपित्रुद्देशेनतर्पणंकार्यं पत्न्यांरजस्वलायांसकृन्महालयोनकार्यः कालांतराणांसत्त्वात् अमायांरजोदोषेआश्विनशुक्लपंचमीपर्यंतं गौणकालेमहालयः प्रतिपदादि[1]ष्वन्येषुपक्षेषुप्रारंभदिनेपाकात्पूर्वंपत्नीरजस्वलाचेदुत्तरोत्तरपक्षस्वीकारः पाकारंभोत्तरंचेत्तांगृहांतरेऽपरुध्यमहालयःकर्तव्यः एवंविधवाकर्तृकश्राद्धेपिज्ञेयं अत्रापुत्राविधवाममभर्तृतत्पितृपितामहानांभर्तुर्मातृपितामहीप्रपितामहीनांममपितृपितामहप्रपितामहानांमममातृपितामहीप्रपितामहीनांमममातामहमातृपितामहमातृप्रपितामहानांममातामहीमातृपितामहीमातृप्रपितामहीनांतृप्त्यर्थंसकृन्महालयापरपक्षश्राद्धंकरिष्ये इतिस्वयं संकल्प्यब्राह्मणद्वाराअग्नौकरणादिसहितंसर्वमविकृतंप्रयोगंकारयेत् ब्राह्मणस्त्वमुकनाम्न्यायजमानायाभर्तृतत्पितृपितामहेत्याद्युच्चार्यप्रयोगंकुर्यात् अशक्तौभर्त्रादित्रयंस्वपित्रादित्रयंस्वमात्रादित्रयंस्वमातामहादित्रयंसपत्नीकमितिपार्वणचतुष्टयोद्देशेनमहालयः अत्यशक्तौस्वभर्त्रादित्रयंस्वपित्रादित्रयंचेतिपार्वणद्वयमेवकार्यं ।।

पक्षश्राद्धमें अर्थात् प्रतिपदासें आरंभ कर अमावसपर्यंत जो नित्यप्रति महालयश्राद्ध करना चाहै तब पितृगणकों ध्यावै अर्थात् पिता आदि पार्वणसंज्ञक तीन (पितृत्रयी, मातृत्रयी और मातामहत्रयी सपत्नीक) और पत्नी आदि एकोद्दिष्टसंज्ञक पितृगण (स्त्री, पुत्रादिक, पितृव्य, मातुल, भ्राता ये सब सपत्नीक, और पितृभगिनी, मातृभगिनी, आत्मभभिनी ये सब पति और पुत्रसहित, श्वशुर और गुरु) सहित सब पितरोंके उद्देशकरके, अथवा पत्नीयोंसहित पिता आदि तीन और पत्नीयोंसहित मातामह आदि तीन, इस प्रकार छह देवतोंके उद्देशकरके अथवा पितृत्रयी सपत्नीक और मातामहत्रयी सपत्नीक यह छह देवता और स्त्री इत्यादि एकोद्दिष्टगणके उद्देशकरके नित्यप्रति महालय करना. इस प्रकार तीन पक्ष हैं, ऐसेही पंचमी आदि पक्षोंमेंभी जानना. एकहीवार महालय करना होवै तौ सब पितरोंके उद्देशकरके महालय करना. तिसका संकल्प—“ पितृपितामहप्रपितामहानां मातृतत्सपत्नीपितामहीतत्सपत्नीप्रपितामहीतत्सपत्नीनां यद्वाऽस्मत्सापत्नमातुरितिपृथगुद्देशः मातामहमातृपितामहमातृप्रपितामहानां सपत्नीकानां यथानामगोत्राणां वस्वादिरूपाणां पार्वणविधिना पत्न्याः पुत्रस्य कन्यायाः पितृव्यस्य मातुलस्य भ्रातुः पितृष्वसुर्मातृष्वसुरात्मभगिन्याः पितृव्यपुत्रस्य जामातुर्भागिनेयस्य श्वशुरस्य श्वश्र्वा आचार्यस्योपाध्यायस्य गुरोः सख्युः शिष्यस्य एतेषां यथानामगोत्ररूपाणां पुरुषविषये सपत्नीकानां स्त्रीविषये

---

[1] अत्रसूतकप्राप्तौतृतीयोत्तरार्धेनिर्णयः ।। आत्रादिमहालयनिर्णयश्चतत्रैव ।।

सभर्तृकसापत्यानामेकोद्दिष्टविधिना महालयापरपक्षश्राद्धमथवा सकृन्महालयापरपक्षश्राद्धं सदैवं सद्यः करिष्ये.” इस प्रकार संकल्प करना. इन्होंके मध्यमें जो जीवते होवैं तिन्होंकों छोडके अन्योंका उच्चार करना. मातामह आदिकी पत्नी जीवती होवै तौ **“सपत्नीक”** इस पदकों और पति जीवता होके स्त्री मर गई होवै तब **“सभर्तृक”** इस पदका उच्चारण नहीं करना. “महालयश्राद्धमें, गयाश्राद्धमें, नांदीश्राद्धमें और अन्वष्टकाश्राद्धमें, ९ देवताओंके और शेष रहे श्राद्धोंमें ६ देवताओंके उद्देशसें श्राद्ध करना. अन्वष्टकाश्राद्धमें तथा नांदीश्राद्धमें और प्रतिवार्षिकश्राद्धमें और महालयश्राद्धमें और गयाश्राद्धमें सपिंडीकर्मके पहले माताका श्राद्ध पृथक् करना और अन्य श्राद्धोंमें पतिके साथही श्राद्ध करना. इस आदि स्मृतिके अनुसार तीनही पार्वण लेनेकों कहे हैं. कितनेक पंडित मातामही आदि तीनोंका पृथक् उच्चार करके बारह देवतावाले चार पार्वणोंकों कहते हैं. येही देवता गयाश्राद्धमें और तीर्थश्राद्धमें और नित्यतर्पणमें जानना. महालयश्राद्धमें धूरिलोचनसंज्ञक विश्वेदेव जानने. जो सामर्थ्य होवै तौ देवतोंके लिये दो ब्राह्मण चाहिये. पार्वणसंज्ञक तीनोंके लिये प्रतिपावर्णकों तीन तीन ऐसे नव ब्राह्मण चाहिये. पत्नी आदि एकोद्दिष्टसंज्ञक गणमें देवता देवताके प्रति एक एक ब्राह्मण चाहिये. इस प्रकार ब्राह्मणोंकों निमंत्रित करना. इतनेकों आमंत्रित करनेकी शक्ति नहीं होवै तौ देवताके लिये एक ब्राह्मण और प्रतिपार्वणकों एक ब्राह्मण इस प्रकार पार्वणत्रयकेलिये तीन ब्राह्मण और सब प्रकारके एकोद्दिष्टगणकेलिये एक ब्राह्मण इस प्रकार निमंत्रण करना. देवताके लिये दो आमंत्रित किये होवैं तौ पार्वणपार्वणकेप्रति तीन ब्राह्मण चाहिये. देवताके लिये दो ब्राह्मण और प्रतिपार्वणकों एक ब्राह्मण होवै अथवा पार्वणके प्रति तीन तीन ब्राह्मण होवैं और देवतोंके लिये एक ब्राह्मण होवै इस प्रकार विषमपना नहीं करना. इसी प्रकार सब जगह अमावस आदि श्राद्धमेंभी जानना. अत्यंत असमर्थ मनुष्यनें दो पार्वणोंकेलिये एकही ब्राह्मण निमंत्रित करना. महालयश्राद्धविषे अंतमें महाविष्णुकेलिये एक ब्राह्मण निश्चयकरके निमंत्रित करना. यह विशेष **कौस्तुभमें** लिखा है. जीवती हुई मातावाले पुत्रनें सापत्नमाताका एकोद्दिष्टश्राद्ध करना. पार्वणश्राद्ध नहीं करना. जिसकी बहुतसी सापत्नमाता होवैं तिस मनुष्यनें सब माताओंके उद्देशकरके एकही ब्राह्मण निमंत्रित करना और एकही पिंड देना. मात्र अर्घ्यपात्र पृथक् पृथक् करने. अपनी माताके साथ अनेक मातृपनेमें अपनी माताके साथ सब माताओंके लिये एक ब्राह्मण निमंत्रित करना. और एक पिंड देना और एकही अर्घ्यपात्र करना. इस तरह पार्वणश्राद्ध करना. सापत्नमाताओंका एकोद्दिष्टश्राद्ध अलग नहीं करना. अथवा सब सापत्न माताओंका पृथक् एकोदिष्टश्राद्ध अलगही करना ऐसा पक्ष है. महालयविषे पार्वणश्राद्धके लिये अग्नौकरण कर्म अवश्य है और एकोद्दिष्टगणके लिये तौ अग्नौकरण करना अथवा नहीं करना ऐसा है. अग्नौकरण करनेके पक्षमें एकोद्दिष्टगणके लिये अग्नौकरणसंबंधी अन्न पृथक् पृथक् पात्रमें ग्रहण करना उचित है. महालयविषे सब प्रकारके पार्वणके लिये और एकोद्दिष्टके लिये एकवार आच्छिन्न किया हुआ एकही कुश लेना. अमावस आदिविषे पार्वणपार्वणकेप्रति पृथक् पृथक् कुश लेना. बाकी रहा श्राद्धप्रयोग अनेक माताओंके होनेमें अभ्यंजन आदि विषयक मंत्रका उच्चार करना. यह **श्राद्धसागर** ग्रंथमें और अपनी अपनी शाखाके अनुसार कहे

हुये प्रयोगविषयक ग्रंथोंमेंसें जान लेना. एकवार महालयश्राद्ध करना होवै तौ श्राद्धांगविषयक तिलतर्पण परदिनमेंही सब पितरोंके उद्देशकरके प्रातःसंध्याके पूर्व अथवा प्रातःसंध्याके उपरंत ब्रह्मयज्ञके अंगसंबंधी तर्पणसें भिन्नही करना उचित है. प्रतिपदा आदि तथा पंचमी आदि पक्षोंमें ब्राह्मणकों विसर्जन करनेके अंतमेंही श्राद्धविषे पूजित किये पितरोंके उद्देशकरके तर्पण करना. जो स्त्री रजस्वला हो जावै तब महालयश्राद्ध नहीं करना. क्योंकी अन्य कालोंके होनेसें और जो अमावसकों स्त्री रजस्वला हो जावै तौ आश्विन शुदि पंचमीपर्यंत गौणकालमें महालयश्राद्ध करना. प्रतिपदा आदि अन्य पक्षोंविषे पहले दिनमें पाक अर्थात् रसोई बनानेके पहले स्त्री रजस्वला हो जावै तौ उत्तरोत्तर पक्षकों क्रमसें अंगीकार करना. पाकके आरंभके उपरंत स्त्री रजस्वला हो जावै तौ तिस स्त्रीकों दूसरे घरमें रखकर महालयश्राद्ध करना. ऐसेही विधवाकर्तृक श्राद्धमेंभी जान लेना. जिसकों पुत्रसंतान नहीं होवै ऐसी विधवा श्राद्ध करती होवै तौ उसनें "**मम भर्तृतत्पितृपितामहानां भर्तुर्मातृपितामहीप्रपितामहीनां मम पितृपितामहप्रपितामहानां मम मातृपितामहीप्रपितामहीनां मम मातामहमातृपितामहमातृप्रपितामहानां मम मातामहीमातृपितामहीमातृप्रपितामहीनां तृप्त्यर्थंसकृन्महालयापरपक्षश्राद्धं करिष्ये**" इस प्रकार आप संकल्प करके ब्राह्मणद्वारा अग्नौकरण आदिसें सहित सब प्रकारसें अविकृत प्रयोगकों करवावै और ब्राह्मणनेंभी "**अमुकनाम्न्या यजमानाया भर्तृतत्पितृपितामह**" इस आदिका उच्चारण करके प्रयोग करना. जो सामर्थ्य नहीं होवै तौ पति आदि तीन और अपने पिता आदि तीन और अपनी माता आदि तीन और अपने मातामह आदि तीन पत्नियोंसहित इन सबोंके उद्देशकरके महालयश्राद्ध करना. अत्यंत असमर्थ होवै तौ अपना पति आदि तीन और अपने पिता आदि तीन इस प्रकार दो पार्वण करना.

महालयःपितरिसंन्यस्ते पतित्यादियुतेवाजीवत्पितृकेणापिपुत्रेणपितुःपित्रादिसर्वपित्रुद्देशेनपिंडदानरहितःसांकल्पविधिनाकार्यः वृद्धौतीर्थेचसंन्यस्तेतातेचपतितेसति येभ्यएव पितादद्यात्तेभ्योदद्यात्स्वयंसुतः मुंडनंपिंडदानंचप्रेतकर्मचसर्वशः नजीवत्पितृकःकुर्याद्दुर्विणीपतिरेवचेत्यादिवचनात् पिंडदानादिविस्तरंकर्तुमशक्तेनापिसांकल्पविधिःकार्यः सांकल्पिकविधावर्घ्यदानंसमंत्रकावाहनमग्नौकरणं पिंडदानंविकिरदानंस्वधांवाचयिष्ये ॐस्वधोच्यतामित्यादिस्वधावाचनप्रयोगंचवर्जयेत् अनेकब्राह्मणालाभेदेवस्थानेशालग्रामादिदेवमूर्तिंसंस्थाप्यश्राद्धंकार्यं सर्वथाविप्रालाभेदर्भबटुविधिनाश्राद्धं पित्रोर्मरणेप्रथमाब्देमहालयःकृताकृतः महालयोमलमासेनकार्यः अपरपक्षेप्रतिवार्षिकप्राप्तौमृततिथौवार्षिकंकृत्वातिथ्यंतरेसकृन्महालयःकार्यः प्रतिपदादिदर्शांतादिपक्षेषुमृततिथौवार्षिकंकृत्वापाकांतरेणमहालयः अमायांप्रतिवार्षिकसकृन्महालयप्राप्तौपूर्ववार्षिकंततोमहालयःततोदर्शश्राद्धमितित्रयंपाकभेदेन महालयमात्रप्राप्तावपिपूर्वंमहालयःततोदर्शः मृततिथौसकृन्महालयपक्षेतत्तत्तिथेर्ग्राह्यत्वनिर्णयोपराह्णव्याप्त्यादर्शवदितिभाति अत्रापरपक्षेभरणीश्राद्धाद्गयाश्राद्धफलप्राप्तिः भरणीश्राद्धमपिंडकंषट्दैवतंसांकल्पविधिनाकार्यंदेवाधूरिलोचनौपुरूरवार्द्रवौवा भरणीश्राद्धंकाम्यंगयाश्राद्धफलकामेनप्रतिवर्षंकार्यं केचित्पित्रादिमरणोत्तरंप्रथमवर्षेएवकुर्वंतिद्वितीया

दिवर्षेनकुर्वंतितत्रमूलंचिंत्यं ममतुनदैवंनापिवापित्र्यंयावत्पूर्णोनवत्सरइत्यादिवचनेनसर्वस्यापिदर्शादिश्राद्धस्यप्रथमाब्देनिषेधाद्वर्षांतेएवपितृत्वप्राप्तेश्चद्वितीयादिवर्षेएवकर्तुंयुक्तमितिभाति यत्तुपितृभिन्नोपियोयोम्रियतेतस्यतस्यप्रथमाब्देभरणीश्राद्धंक्रियते तत्रापिमूलंनपश्यामः गयाश्राद्धफलार्थमाचारमनुसृत्यक्रियतेचेन्मृताद्येकमेवपार्वणमुद्दिश्यसदैवंकार्यं अत्रसपिंडत्वाचारोपिचिंत्यः ॥

“पिता संन्यासी हो जावै अथवा पतितपना आदिसें युत हो जावै तब जीवता पितावाले पुत्रनेंभी पितामह आदि सब पितरोंके उद्देशकरके पिंडदानसें रहित महालयश्राद्ध सांकल्पविधिकरके करना.” क्योंकी “नांदीश्राद्धमें और तीर्थश्राद्धमें और पिता संन्यासी अथवा पतित हो जावै तब जिन पितरोंकों पिता देवै तिन्हों पितरोंकों अपने हाथसें पुत्र देवै” और ‘मुंडन, पिंडदान, सब प्रकारके प्रेतकर्म इन्होंकों जीवते हुये पितावाला और गर्भिणी स्त्रीका पति नहीं करै’ इस आदि वचनसें पिंडदान आदि विस्तारकों करनेमें असमर्थ हुये मनुष्यनें भी सांकल्पविधिकरके श्राद्ध करना, और सांकल्पिकविधिमें अर्घ्यदान, मंत्रोंसहित आवाहन, अग्नौकरण, पिंडदान, विकिरदान, “स्वधां वाचयिष्ये ॐ स्वधोच्यताम्” इस आदि स्वधावाचनप्रयोगकों वर्जै, और बहुत ब्राह्मण नहीं मिलैं तौ देवस्थानमें शालग्राम आदि देवकी मूर्तिकों स्थापित करके श्राद्ध करना उचित है. सर्वथा ब्राह्मण नहीं मिलैं तौ डाभके मोटक बनाके विधिसें श्राद्ध करना. माता और पिताके मरनेमें प्रथम वर्षमें महालयश्राद्ध करना अथवा नहीं करना. अधिकमासमें महालयश्राद्ध नहीं करना. इनही महालयके योग्य पंदरह दिनोंमें प्रतिवार्षिक क्षयाहश्राद्ध प्राप्त होवै तौ मृततिथिमें क्षयाहश्राद्ध करके दूसरी तिथिमें सकृन्महालयश्राद्ध करना. प्रतिपदासें अमावसतक इन आदि पक्षोंमें मृततिथिविषे क्षयाहश्राद्ध करके पीछे दूसरे पाककरके महालयश्राद्ध करना. अमावसमें क्षयाहश्राद्ध और सकृन्महालयश्राद्ध प्राप्त होवैं तौ पहले क्षयाहश्राद्ध करके पीछे महालयश्राद्ध करना. और उसके पीछे दर्शश्राद्ध करना. इसप्रकार तीन पृथक् पृथक् पाक करके करने उचित हैं. अकेले महालयश्राद्धकी प्राप्ति होवै तौ पहले महालयश्राद्ध करना और पीछे दर्शश्राद्ध करना. मृततिथिमेंही एकवार महालयश्राद्ध करना इस पक्षमें तिस तिस तिथिके ग्राह्यपनेका निर्णय अपराह्णकालव्याप्तिकरके दर्शश्राद्धकी तरह प्रतिभान होता है. इसी पक्षमें भरणीनक्षत्रविषे श्राद्ध करनेसें गयाश्राद्धके फलकी प्राप्ति होती है. सो पिंडोंसें वर्जित और ६ देवताओंसें युक्त भरणीश्राद्ध सांकल्पविधिकरके करना. इसमें धूरिलोचन अथवा पुरूरवा और आर्द्रव देवता लेना. गयाश्राद्धके फलकी इच्छावाले मनुष्यनें काम्यश्राद्धकी अंगताकरके भरणीश्राद्ध वर्षवर्षमें करते रहना. कितनेक पंडित पिता आदिके मरणके उपरंत प्रथम वर्षमेंही भरणीश्राद्ध करते हैं और द्वितीय आदि वर्षोंमें नहीं करते, तहां मूलका चितवन करना उचित है. मेरे मतमें तौ “जबतक वर्ष पूर्ण नहीं होवै तबतक दैवकर्म और पित्र्यकर्म नहीं करना,” इस आदि वचनकरके सब प्रकारके दर्श आदि श्राद्धका प्रथम वर्षमें निषेध कहा है. इसवास्ते एक वर्ष पूर्ण होवै तबही पितृभाव प्राप्त होता है, इसलिये दूसरे आदि वर्षमें श्राद्ध करना उचित है ऐसा मेरा मत है. पितासें भिन्न जो जो मरता है तिस तिसका प्रथम वर्षमें भरणीश्राद्ध किया जाता है. तहांभी कुछ मूल हम नहीं देखते हैं. गयाश्राद्धके फलके लिये

लोकाचारके अनुसार जो करना होवै तौ मृत आदि एकही पार्वणका उद्देशकरके देवताओं-सहित श्राद्ध करना. यहां सपिंडपनेके आचारकाभी चितवन करना उचित है.

अत्रापरपक्षेसप्तम्यादिदिनत्रयेमाघ्यावर्षश्राद्धंकर्तुंपूर्वेद्युःश्राद्धंकरिष्ये माघ्यावर्षश्राद्धंकरिष्येऽन्वष्टक्यश्राद्धंकरिष्येइतिक्रमेणसंकल्पंकृत्वा सर्वोप्यष्टकाविधिराश्वलायनैःकार्यः इदमाश्वलायनानामष्टकाविकृतिरूपमेकाष्टकाकरणपक्षेपिकार्यं इतरशाखिनांत्वष्टकारूपमेवेति पंचाष्टकाकरणपक्षेष्टकाश्राद्धंकरिष्यइतिसंकल्प्यकार्यं एकाष्टकापक्षेतुनकार्यं नवम्यामन्वष्टक्यश्राद्धंनवदैवतं सर्वशाखिभिरष्टम्यामष्टकाश्राद्धाकरणेपिगृह्याग्नौयथोक्तविधिनाकार्यं अस्यामन्वष्टक्यस्यमुख्यत्वात् गृह्याग्निरहितस्तु येषांपूर्वंमातामृतापश्चात्पितामृतस्तैर्मृतमातापितृकैःपाणिहोमादिविधिनानवदैवत्यंकार्यं जीवत्पितृकेणमृतमातृकेणानुपनीनेनापिमात्रादित्रितयमात्रोद्देशेनैकपार्वणकंपुरूरवार्द्रवदेवसहितंसपिंडकंश्राद्धकार्यं स्वमातरिजीवंत्यांमृतसापत्नमात्रादित्रयोद्देशेनकार्यं स्वमातृसापत्नमात्रोर्मृतौद्विवचनप्रयोगेणसापत्नमात्रनेकत्वेचमात्रासहबहुवचनप्रयोगेणएकस्मिन्विप्रेएकएवक्षणोर्घ्यःपिंडश्चैकएवदेयः पितामहीप्रपितामह्योर्द्वौविप्रौपिंडौचेत्येवंपार्वणमावश्यकं केचिन्मातृबहुत्वेविप्रपिंडादिभेदमाहुः स्वमातृसापत्नमातृजीवने तुगृह्याग्निरहितेनमृतपितृकेणापिनकार्यं अन्वष्टक्येमातृयजनस्यमुख्यत्वादतएवात्रकैश्चिन्मातृपार्वणस्यैवप्राथम्यमुक्तमितिभाति पूर्वंपितृमृतौपश्चान्मातृमृतावपिगृह्याग्निमतामस्यांनवम्यामन्वष्टक्यमावश्यकंनित्यत्वात् अन्येषांपश्चान्मातृमृतौनावश्यकं केचिन्नवम्यांपूर्वमृतमातृश्राद्धं मृतेभर्तरिलुप्यतइतिवचनप्रामाण्यमाश्रित्यपितृमरणोत्तरंनकुर्वंति भर्तुरग्रेसहदाहेनवामृतानांमातामहीभगिनीदुहितृमातृष्वसृपितृष्वस्रादीनामपुत्राणांपितृमात्रादिकुलोत्पन्नानांसर्वासामेवसौभाग्यवतीनामस्यांनवम्यांश्राद्धंकार्यं भर्तुरग्रेमृतानांतत्तद्भर्तृमरणोत्तरंचनकार्यं अतएवास्याअविधवानवमीत्वप्रसिद्धिःअतःपत्न्याअपिनवमीश्राद्धंकार्यं अस्याविधवानवमीश्राद्धस्यमहालयवद्यावद्वृश्चिकदर्शनंगौणकालः एवंदौहित्रप्रतिपच्छ्राद्धस्यापीति कालतत्त्वविवेचनेअत्राविधवानवमीश्राद्धेसुवासिनीनांप्रतिसांवत्सरिकश्राद्धादौचसुवासिनीभोजनमपिकार्यं भर्तुरग्रेमृतानारीसहदाहेनवामृता तस्याःस्थाने नियुंजीतविप्रैःसहसुवासिनीमित्यादिमार्कंडेयवचनात् अस्यांनवम्यांपिंडदानंजीवत्पितृकेणापिगर्भिणीपतिनाचापिकार्यं नवमीश्राद्धासंभवेममान्वष्टक्याकरणजनितप्रत्यवायपरिहारार्थंशतवारमेभिर्द्युभिःसुमनाइति मंत्रजपंकरिष्येइतिसंकल्प्यतज्जपंकुर्यात् अन्वष्टक्येसामवेदिभिःपितृपार्वणमेवकार्यंमातृमातामहपार्वणेनकार्येइतिसिंधुः ॥

यहां अपरपक्षविषे सप्तमी, अष्टमी और नवमी इन आदि तीन दिनोंमें "माघ्या वर्षश्राद्धं कर्तुं पूर्वेद्युः श्राद्धं करिष्ये, माघ्या वर्षश्राद्धं करिष्ये, अन्वष्टक्यश्राद्धं करिष्ये" ऐसा क्रमसें संकल्प करके आश्वलायनोंनें सब प्रकारसें अष्टकाश्राद्धकी विधि करनी, और आश्वलायनोंनें यह अष्टकाविकृतिरूप श्राद्ध एकाष्टकाकरणपक्षमें भी करना और अन्य शाखावालोंनें अष्टकारूपही श्राद्ध करना. पंचाष्टकाकरणपक्षमें "अष्टकाश्राद्धं करिष्ये" इस प्रकार संकल्प करके श्राद्ध करना. एकाष्टकापक्षमें श्राद्ध नहीं करना. नवमीके दिनमें अन्वष्ट-

क्यश्राद्ध नवदैवत (पितृत्रयी, मातृत्रयी, मातामहत्रयी सपत्नीक) सर्वशाखीयोंनें अष्टमीके दिनमें अष्टकाश्राद्ध न करनेमें भी गृह्याग्निविषे यथोक्तविधिकरके श्राद्ध करना. इस तिथिमें अन्वष्टक्यश्राद्धही मुख्य है. और गृह्याग्निसें रहित मनुष्यनें तौ, जिन्होंकी पहले माता मरी और पीछे पिता मरा है अर्थात् मृत हुई मातापितावालोंनें पाणिहोम आदि विधिकरके नवदेवताओंवाला श्राद्ध करना. जिसका पिता जीवता होवै और माता मर गई होवै और यज्ञोपवीतकर्म नहीं हुआ होवै ऐसे मनुष्यनेंभी माता आदि तीनोंके उद्देशकरके एकपार्वणरूपी पुरूरवा और आर्द्रव देवकरके सहित और पिंडोंसहित ऐसा श्राद्ध करना. अपनी माता जीवती होवै और सापत्नमाता मर गई होवै तब भी सापत्नमाता आदि तीनोंके उद्देशकरके श्राद्ध करना. अपनी माता तथा सापत्नमाता दोनों मर गई होवैं तौ द्विवचनके प्रयोगकरके और जो बहुतसी सापत्नमाता मर गई होवैं तौ बहुवचनके प्रयोगकरके एक ब्राह्मणमें एकही मुहूर्तविषे अर्घ्य और पिंडभी एकही देना. पितामही और प्रपितामहीके दो ब्राह्मण और दो पिंड देने. इस प्रकार पार्वण आवश्यक है. कितनेक ग्रंथकार बहुत माता होवैं तौ ब्राह्मण और पिंड पृथक् पृथक् चाहिये ऐसा भेद कहते हैं. आपनी माता और सापत्नमाता जीवती होवै तौ गृह्याग्निसें रहित और मर गया है पिता जिसका ऐसे मनुष्यनें भी श्राद्ध नहीं करना, क्योंकी अन्वष्टक्यश्राद्धमें मातृपूजन मुख्य है, इसी कारणसें यहां अन्वष्टक्यश्राद्धमें कितनेक ग्रंथकारोंनें माताओंका पार्वणही प्रथम कहा है ऐसा प्रकाशित होता है. जो पहले पिता मर गया होवै और पीछे माता मरी होवै तौभी गृह्याग्निवालोंनें नित्य है इसवास्ते इसी नवमीसें अन्वष्टक्यश्राद्ध आवश्य करना. अन्योंकों माता जो पीछे मरी होवै तौ अन्वष्टक्यश्राद्ध आवश्यक नहीं है. कितनेक ग्रंथकार नवमीमें पहले मरी माताका श्राद्ध “ जब स्त्रीका पति मर जाता है तब स्त्रीका श्राद्ध करना आवश्यक नहीं ” इस वचनके प्रमाणका आश्रय करके पिताके मरनेके उपरंत नहीं करते हैं. पतिके आगे अथवा पतिके दाहके संग मृत हुई मातामही अर्थात् नानी, वहन, पुत्री, मावसी, फूफी अर्थात् भूवा, इन आदि पुत्रकी संतानसें रहित होवै और पिता माता आदिके कुलमें उत्पन्न हुई सब सौभाग्यवती अर्थात् सुहागन स्त्री इन्होंका इसी नवमीमें श्राद्ध करना. पतिके आगे मृत हुई स्त्रियोंका श्राद्ध तिन स्त्रियोंके पतियोंके मरनेके पश्चात् नहीं करना, इसी कारणसें इस नवमीकों अविधवानवमी कहते हैं. इसवास्ते पत्नीका भी श्राद्ध नवमीकोंही करना उचित है. इस अविधवानवमीश्राद्धका महालयश्राद्धकी तरह जबतक वृश्चिकराशिपर सूर्य नहीं आवै तबतक गौणकाल है. और इसी प्रकार प्रतिपदामें दौहित्रनें करनेका जो मातामहका श्राद्ध तिसकाभी वृश्चिकराशिपर सूर्य आवै तबतक गौणकाल जानना, ऐसा कालतत्त्वविवेचन ग्रंथमें लिखा है. यहां अविधवानवमीश्राद्धमें सुहागन स्त्रियोंके प्रतिसांवत्सरिकश्राद्धकीतरह सुहागन स्त्रियोंकों भोजन कराना उचित है. क्योंकी “ पतिके आगे नारी मरै अथवा पतिके दाहके साथ मरै तिस स्त्रीके श्राद्धमें ब्राह्मणोंके साथ सुहागन स्त्रियोंकोंभी भोजन कराना ” इस आदि मार्कंडेयजीका वचन है. इस नवमीमें जीवते हुए पितावालेनें और गर्भिणीके पतिनें भी पिंडदान करना. जो नवमीकों श्राद्ध नहीं बन सकै तौ “ **ममान्वष्टक्याकरणजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं शतवारम् ‘ एभिर्द्युभिः सुमना० ’ इति मंत्रजपं करिष्ये** ” इस प्रकार संकल्प करके पीछे तिस मंत्रका जप करना.

अन्वष्टक्यश्राद्धमें सामवेदियोंनें पावर्णश्राद्धही करना. माता और मातामहके पार्वण नहीं करने ऐसा निर्णयसिंधुका मत है.

अत्रद्वादश्यांसंन्यासिनांमहालयःसचापराह्णव्यापिन्यामित्युक्तं तत्रवैष्णवाअपराह्णव्यापिन्यांद्वादश्यां एकादशीव्रतदिनसत्त्वेस्वल्पायामपिद्वादश्यांशुद्धत्रयोदश्यांवैकादशीपारणादिने एवसंन्यासिदैवत्यंश्राद्धंकुर्वंति ममत्वीदृशेविषयेवैष्णवैःसंन्यासिमहालयोदर्शेकार्य इतिभाति ॥

यह द्वादशीमें संन्यासियोंका महालयश्राद्ध करना. सो महालयश्राद्ध अपराण्हकालव्यापिनीं द्वादशीमें करना ऐसा कहा है. तहां वैष्णव, अपराण्हकालव्यापिनी द्वादशी, एकादशीके व्रतके दिन होवै तौ स्वल्परूप द्वादशीमें अथवा शुद्धत्रयोदशीमें अर्थात् एकादशीके पारणाके दिनविषेही संन्यासिदेवताओंवाले श्राद्धकों करते हैं. मुझकों तौ इस प्रकारके विषयमें वैष्णवौंनें संन्यासियोंका महालयश्राद्ध अमावसमें करना ऐसा भासता है.

अत्रत्रयोदश्यांमघायुतायांकेवलायांवाश्राद्धंनित्यंकेवलमघायामपिश्राद्धंकार्यं अत्रश्राद्धविधौबहुग्रंथेषुबहवःपक्षाः अपुत्रेणपुत्रिणावागृहिणासपत्नीकपितृपार्वणमातामहपार्वणाभ्यांपितृव्यभ्रातृमातुलपितृष्वसृमातृष्वसृभगिनीश्वशुरादिपार्वणैश्चसहितं अपिंडकंसांकल्पविधिनाश्राद्धंकार्यं अथवापित्रादिपार्वणद्वयंमहालयवत्पितृव्याद्येकोद्दिष्टगणांश्चोद्दिश्यसांकल्पविधिनाश्राद्धंकार्यं यद्वादर्शवत्षट्दैवतंश्राद्धमपिंडकंकार्यं अथवानिष्कामेणपुत्रिणाश्राद्धविधिनाश्राद्धंनानुष्ठेयं किंतुपित्रादिपार्वणद्वयंकेवलंपितृव्यादिसहितंवोद्दिश्यैतेषांतृप्त्यर्थं ब्राह्मणभोजनंकरिष्यइतिसंकल्प्यपितृरूपिणेब्राह्मणायगंधंसमर्पयामीत्येवंपंचोपचारान्समर्प्य ब्रह्मार्पणमित्यादिपठित्वानेनब्राह्मणभोजनेनपित्रादिरूपीश्वरःप्रीयतामित्यन्नमुत्सृज्यपायसादिमधुरान्नेनविप्रान्भोजयित्वादक्षिणादिभिःसंतोष्यस्वयंभुंजीतेत्येतावदेवकर्तव्यं अपुत्रिणःसकामस्यचपिंडदानरहितश्राद्धविधिनाश्राद्धंनदोषाय क्वचिदपुत्रिणःपिंडदानमप्युक्तं एवमुक्तपक्षेष्वन्यतमपक्षेणमघात्रयोदशीश्राद्धमवश्यानुष्ठेयं अकरणेदोषोक्तेर्नित्यत्वात् हस्तनक्षत्रस्थेसूर्येमघायुतात्रयोदशीजगच्छायासंज्ञिता अस्यांश्राद्धेनफलभूयस्त्वं अत्रमहालयस्ययुगादेश्चप्राप्तौमघात्रयोदशीमहालययुगादिश्राद्धानितंत्रेणकरिष्यइतिसंकल्प्यतंत्रेणकुर्यात् नतु दर्शेननित्यश्राद्धस्यैवकस्यचित्प्रसंगसिद्धिः अत्रैवंभाति अंगानामैक्यंप्रधानमात्रभेदस्तंत्रं ते नविश्वेदेवपाकाद्यंगानामैक्यंविप्रार्घ्यपिंडादेर्भेदएव प्रसंगसिद्धिस्थलेतुप्रधानमपिनभिद्यत इति त्रयोदशीश्राद्धेऽपरपक्षत्वाद्धूरिलोचनाविश्वेदेवाः श्राद्धसागरेउक्ताः अविभक्तैरपिभ्रातृभिर्मघात्रयोदशीश्राद्धंपृथक्कार्यमितिसिंधुकौस्तुभादौ विभक्तैरपिसहैवेतिश्राद्धसागरे ॥

यहां मघानक्षत्रसें युत हुई अथवा केवलरूप ऐसी इस त्रयोदशीमें श्राद्ध करना सो नित्य है. अकेले मघामें भी श्राद्ध करना. यहां श्राद्धकी विधिविषे बहुतसे ग्रंथोंमें बहुतसे पक्ष कहे हैं. पुत्रसें रहित अथवा पुत्रवाले गृहस्थनें पत्नियोंसहित पितृपार्वण और मातामहपार्वण करके और पितृव्य अर्थात् चाचा, भ्राता, मातुल अर्थात् मामा, फूफी, बहन, श्वशुर इन आदि पार्वणोंसहित और पिंडोंसें रहित ऐसा श्राद्ध सांकल्पविधिसें करना, अथवा पिता

आदि दो पार्वणोंको और महालयश्राद्धकी तरह पितृव्य आदि एकोद्दिष्टगणोंके उद्देशकरके सांकल्पविधिसें श्राद्ध करना. अथवा दर्शश्राद्धकी तरह छह देवताओंवाला और पिंडोंसें रहित ऐसा श्राद्ध करना अथवा कामनासें रहित पुत्रवालेनें श्राद्धकी विधिकरके श्राद्ध नहीं करना, किंतु पिता आदि केवल दो पार्वण अथवा पितृव्य आदि एकोद्दिष्टगणके उद्देशसें "**एतेषां तृप्त्यर्थं ब्राह्मणभोजनं करिष्ये**" इस प्रकार संकल्प करके—"**पितृरूपिणे ब्राह्मणाय गंधं समर्पयामि**" इस प्रकार उच्चार करके गंधादि पंचोपचारोंकों समर्पित करके "**ब्रह्मार्पणं०**" इस आदि मंत्रोंका उच्चार करके "**अनेन ब्राह्मणभोजनेन पित्रादिरूपी परमेश्वरः प्रीयताम्**" इस मंत्रसें अन्नदानका उदक छोडना. पीछे खीर आदि मधुर अन्नकरके ब्राह्मणोंको भोजन करायके और दक्षिणा आदिसें प्रसन्न करके पीछे आप भोजन करना. इतनाही विधि करना. कामनावाले और पुत्रसें रहित ऐसे मनुष्यनें पिंडदानसें रहित ऐसे श्राद्धके विधिसें श्राद्ध करनेमें दोष नहीं प्राप्त होता है. और कितनेक ग्रंथोंमें नहीं पुत्रवालेनें भी पिंडदान करना ऐसा कहा है. इस प्रकार उक्त पक्षोंमांहसें एक कोईसा पक्ष ग्रहण करके मघात्रयोदशीके दिनमें श्राद्ध निश्चयकरके करना. नहीं करनेमें दोष कहा है वास्ते वह नित्य है. हस्तनत्रपर सूर्यके होनेमें मघानक्षत्रसें युत हुई त्रयोदशी गजच्छायासंज्ञक होती है. इसमें श्राद्ध करनेसें बहुत फल मिलता है. यह त्रयोदशीके दिन महालयश्राद्ध और युगादितिथिश्राद्ध प्राप्त होवै तौ "**मघात्रयोदशीमहालययुगादिश्राद्धानि तंत्रेण करिष्ये**" इस प्रकार संकल्प करके तंत्रसें श्राद्ध करना. दर्शश्राद्धकरके किसीक नित्यश्राद्धके प्रसंगकी सिद्धि नहीं होती है. यहां ऐसा भान होता है, की अंगरूप कर्मोंकी एकता होवै और प्रधानकर्मका मात्र भेद होवै वह तंत्र कहाता है. इसवास्ते विश्वेदेव, पाक, इन आदि अंगोंकी एकता है और विप्र, अर्घ्य, पिंड, इन आदि प्रधानकर्म पृथक् पृथक् ही करने. प्रसंगसिद्धिके स्थलमें प्रधानकाभी भेद नहीं किया जाता है. त्रयोदशीश्राद्ध अपरपक्षीय श्राद्ध होनेसें धूरिलोचन नामवाले विश्वेदेव लेने ऐसा श्राद्धसागरग्रंथमें कहा है. नहीं विभक्त हुये भ्राताओंनेंभी मघात्रयोदशीका श्राद्ध पृथक् पृथक् करना ऐसा निर्णयसिंधु और कौस्तुभ आदि ग्रंथोंमें कहा है. विभक्त हुये भ्राताओंनें भी यह श्राद्ध साथही करना ऐसा श्राद्धसागर ग्रंथमें लिखा है.

अथात्रचतुर्दश्यांपित्रादित्रयमध्येएकस्यापिशस्त्रविषाग्निजलादिशृंगिव्याघ्रसर्पादिनिमित्तेनदुर्मरणेनमृतस्यैकोद्दिष्टविधिनाश्राद्धंकार्यम् पित्रादिद्वयोःशस्त्रादिहतत्वेद्वेएकोद्दिष्टेकार्ये पित्रादीनांत्रयाणांशस्त्रादिहतत्वेपार्वणमेवकार्यं केचिदेकोद्दिष्टत्रयंकार्यमित्याहुः सहगमने प्रयागादौचविधिप्राप्तेग्निजलादिमरणेचतुर्दशीश्राद्धंनकार्यं युद्धप्रायोपवेशनयोर्वैधत्वेपीदंकार्यं अत्रशस्त्रादिहतपितृव्यभ्रात्रादेरप्यपुत्रस्यैकोद्दिष्टंकार्यं इदंधूरिलोचनसंज्ञकदेवसहितंकार्यं अत्रसंबंधगोत्रनामाद्युच्चार्यामुकनिमित्तेनमृतस्यचतुर्दशीनिमित्तमेकोद्दिष्टंश्राद्धंसदैवंसपिंडंकरिष्यइतिसंकल्प्यप्रत्येकोद्दिष्टमेकार्घ्यैकपवित्रैकपिंडयुतंश्राद्धंकार्यं पित्रादेर्भ्रात्रादेश्चशस्त्रहतत्वे पृथकपाकादिनामहालयवत्सहतंत्रेणवैकोद्दिष्टद्वयादि एवंचतुर्दश्यामेकोद्दिष्टंकृत्वापित्रादिसर्वपितृगणोद्देशेनसकृन्महालयस्तिथ्यंतरेऽवश्यंकार्यः अस्यांचतुर्दश्यांयदिशस्त्रादिमृतयोर्मातापित्रोर्मृताहस्तदाचतुर्दशीनिमित्तमेकोद्दिष्टंकृत्वापुनस्तदैवमृतादित्रयोद्देशेनसांवत्सरिकं पा

र्वणविधिनाकार्यमितिश्राद्धसागरे कौस्तुभादौतुसांवत्सरिकपार्वणेनैवचतुर्दशीश्राद्धसिद्धिर्नै पृथक्कार्यमित्युक्तं दिनांतरेचसकृन्महालयःकार्यः अत्रचतुर्दशीश्राद्धस्यकथंचिद्विघ्नेतुअत्रैवपक्षेग्रिमपक्षेवादिनांतरेतत्पार्वणविधिनैवकार्यंनत्वेकोद्दिष्टं अत्रैकोद्दिष्टेपराह्णव्यापिन्ये वचतुर्शीग्राह्यानत्वितरैकोद्दिष्टतिथिवत्मध्याह्नव्यापिनीतिकौस्तुभे ॥

इस चतुर्दशीमें पिता आदि तीनोंके मध्यमेंसें किसीकभी शस्त्र, विष, अग्नि, जल आदि अथवा शृंगयुक्त (गवादिक) व्याघ्र, सर्प, आदि निमित्तक दुर्मरणकरके मृत हुये एकका भी एकोद्दिष्टविधिकरके श्राद्ध करना. पिता और पितामह आदि दो शस्त्रसें हत हुये होवैं तौ दो दो एकोद्दिष्टश्राद्ध करने. पिता पितामह, और प्रपितामह आदि तीन जो शस्त्रसें मारे गये होवैं तौ पार्वणश्राद्धही करना, कितनेक पंडित कहते हैं की तीनों एकोद्दिष्टश्राद्ध करने. सहगमनमें विधिप्राप्त ऐसा अग्निसें मरण प्राप्त होवै तथा प्रयाग आदि तीर्थोंमें विधिप्राप्त ऐसा अग्नि और जलआदिसें मरण प्राप्त होवै तौ चतुर्दशीश्राद्ध नहीं करना. युद्धमें तथा डाभ हाथमें लेके उपवासके द्वारा बैठकर मरनेमें भी यह चतुर्दशीश्राद्ध करना. यहां शस्त्र आदिसें नष्ट हुये पितृव्य और भ्राता आदि पुत्रकी संतानसें रहित होवै तिनका एकोद्दिष्टश्राद्ध करना. यह श्राद्ध धूरिलोचनसंज्ञक देवसें सहित करना. यहां संबंध, गोत्र, नाम, इन आदिकोंका उच्चारण करके—“ **अमुकनिमित्तेन मृतस्य चतुर्दशीनिमित्तमेकोद्दिष्टं श्राद्धं सदैवं सपिंडं करिष्ये** ” इस प्रकार संकल्प करके प्रत्येक एकोद्दिष्ट एक अर्घ्य, एक पवित्रा, एक पिंड, इन्होंसें युत हुआ ऐसा करना. पिता आदि और भ्राता आदि शस्त्रसें नष्ट हुये होवैं तौ पृथक् पृथक् पाक आदि करके महालयश्राद्धकी तरह एकतंत्रकरकेही दोनों एकोद्दिष्टश्राद्ध करने. ऐसा चतुर्दशीमें एकोद्दिष्टश्राद्ध करके पिता आदि सब पितृगणके उद्देशकरके सकृन्महालयश्राद्ध अन्यतिथिमें निश्चयकरके करना. जो इस चतुर्दशीमें शस्त्रआदिसें मृत हुये माता और पिताका क्षयाह प्राप्त होवै तौ तिस चतुर्दशीनिमित्तक एकोद्दिष्टश्राद्ध करके फिर उसही दिनमें मृत हुये आदि तीनोंके उद्देशकरके पार्वणविधिसें सांवत्सरिकश्राद्ध करना, ऐसा श्राद्धसागर ग्रंथमें लिखा है. कौस्तुभ आदि ग्रंथोंमें तौ सांवत्सरिकका पार्वणविधि करनेसें चतुर्दशीके श्राद्धकी सिद्धि होती है. पृथक् श्राद्ध नहीं करना ऐसा कहा है. अन्य दिनमें सकृन्महालयश्राद्ध करना. यहां चतुर्दशीश्राद्धमें कछुक विघ्न प्राप्त हो जावै तौ इसी पक्षमें अथवा आगले पक्षमें अन्यदिनविषे पार्वणविधिकरकेही करना, और एकोद्दिष्टश्राद्ध नहीं करना. यहां एकोद्दिष्टश्राद्धमें अपराह्णकालव्यापिनीही चतुर्दशी लेनी. अन्य एकोद्दिष्टश्राद्धसरीखी मध्यान्हव्यापिनी नहीं लेनी, ऐसा कौस्तुभ ग्रंथमें लिखा है.

हस्तनक्षत्रेसूर्येसतिचांद्रहस्तनक्षत्रयुतामावस्यागजच्छाया तस्यांश्राद्धदानादिकार्यं इत्यमायांगजच्छाया आश्विनशुक्लप्रतिपदिदौहित्रेणानुपनीतेनापिसपत्नीकमातामहस्यपार्वणंमातुलेसत्यपिअवश्यंकार्यं मातामहीसत्त्वेकेवलमातामहपार्वणं इदंजीवत्पितृकेणैवकार्यं इदंसपिंडकमपिंडकंवा अत्रपुरूरवार्द्रवसंज्ञकाविश्वेदेवाः धूरिलोचनाइतिकेचित् इयंप्रतिपदपराह्णव्यापिनीग्राह्येतिबहवः संगवव्यामिनीतिकेचित् अस्यश्राद्धस्ययावद्वृश्चिकदर्शनंगौणकालइतिकालतत्त्वविवेचने इतिमहालयादिनिर्णयोद्देशः समाप्तः ॥

हस्तनक्षत्रपर सूर्य होवै और अमावसकों चांद्र हस्तनक्षत्र होवै वह गजच्छायायोग होता है, वास्ते यह दिनमें श्राद्ध, दान इत्यादिक करने. इस तरह अमावसके दिन गजच्छाया पर्वणी कही है. आश्विन शुदि प्रतिपदामें यज्ञोपवीत नहीं लेनेवाले दौहित्रनेंभी मातामहीसहित मातामह अर्थात् नानाका पार्वणश्राद्ध मामाके होते हुयेभी आवश्यक करना. मातामही अर्थात् नानी जीवती होवै तौ अकेले मातामहका श्राद्ध करना. यह श्राद्ध जीवता हुआ पितावाले मनुष्यनेंही करना. यह श्राद्ध पिंडोंसहित अथवा पिंडोंरहित करना. इस श्राद्धमें पुरूरवा और आर्द्रवसंज्ञक विश्वेदेव लेने. कितनेक ग्रंथकार कहते हैं की धूरिलोचन लेने. यह प्रतिपदा अपराण्हकालव्यापिनी लेनी ऐसा बहुत ग्रंथकारोंका मत है. और कितनेक ग्रंथकार कहते हैं की संगवकालव्यापिनी लेनी. इस श्राद्धका गौणकाल जबतक वृश्चिकराशिपर सूर्य आवै तबतक है, ऐसा **कालतत्त्वविवेचन** ग्रंथमें लिखा है. इसप्रकार महालय आदिकोंका निर्णय समाप्त हुआ.

भाद्रपदकृष्णपक्षेभौमवारव्यतीपातरोहिणीयुताषष्ठीकपिलाषष्ठी अत्रहस्तस्थेसूर्येफलातिशयः अयंयोगोदिवैवग्राह्योनतुरात्रौसूर्यपर्वत्वादितिभाति अस्यांहुतंचदत्तंचसर्वंकोटिगुणंभवेत् अत्रश्राद्धंकार्यमितिविशेषवचनंनोपलभ्यते तथापिअलभ्ययोगेश्राद्धविधानाद्दर्शवतूषट्दैवतंश्राद्धंकार्यं ॥

अब कपिलाषष्ठीका निर्णय कहताहुं.

भाद्रपदमहीनाके कृष्णपक्षमें मंगलवार, व्यतीपात, रोहिणी, इन्होंसें युत हुई षष्ठी कपिलाषष्ठी कहाती है. यहां हस्तनक्षत्रपर सूर्य होवै तब फलकी अतिशयता है. यह योग दिनमेंही ग्रहण करना रात्रिमें नहीं. क्योंकी यह योग सूर्यपर्व है ऐसा मुझकों भान होता है. इस षष्ठीमें हवन किया और दान किया सब पदार्थ कोटिगुणा हो जाता है. इसमें श्राद्ध करना ऐसा विशेषवचन नहीं लब्ध होता है तथापि अलभ्य योगमें श्राद्धका विधान है इसवास्ते अमाश्राद्धकी तरह ६ देवताओंवाला श्राद्ध करना उचित है.

अथात्रासंक्षेपतोव्रतविधिः सूर्योद्देशेनोपवासंसंकल्प्य देवदारूशीरकुंकुमैलामनशिलापद्मकाष्ठतंडुलान्मधुगव्याभ्यांपेषयित्वाक्षीरालोडितेनकल्केनांगंविलिप्यस्नायात् तत्रमंत्रः आपस्त्वमसिदेवेशज्योतिषांपतिरेवच पापंनाशयमेदेववाङ्मनःकायकर्मजं ततःपंचगव्येनस्नात्वापंचपल्लवैर्मार्जयित्वामृत्तिकास्नानंकुर्यात् तर्पणादिनित्यविधिंकृत्वावरुणंपूजयित्वासर्वतोभद्रमध्येकलशोपरितंडुलादौपद्मंलिखित्वातस्याष्टसुपत्रेषुपूर्वादौसूर्यंतपनंस्वर्णरेतसंरविमादित्यंदिवाकरंप्रभाकरंसूर्यमित्यावाह्यमध्येसौवर्णरथेसूर्यमग्रेरुणंचावाह्यकरवीरार्कादिपुष्पैर्धूपादिभिःसंपूजयेत् दिक्पालादिदेवताःसंपूज्यद्वादशार्घ्यान्सूर्यायदद्यात् सविस्तरःपूजाविधिर्द्वादशार्घ्यमंत्राश्चकौस्तुभेज्ञेयाः सूर्यांग्रे प्रभाकरनमस्तुभ्यंसंसारान्मांसमुद्धर भुक्तिमुक्तिप्रदोयस्मात्तस्माच्छांतिंप्रयच्छमे नमोनमस्तेवरदऋक्सामयजुषांपते नमोस्तुविश्वरूपायविश्वधात्रेनमोस्तुते इतिप्रार्थ्य उदुत्यमित्यादिसौरसूक्तानिजपित्वारात्रौजागरणंकृत्वाप्रातराकृष्णेने

तिमंत्रेणार्कसमिच्चर्वाज्यतिलैःप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतंहुत्वाघंटादिसर्वालंकारयुतांकपिलांगांमंत्रैःसंपूज्यविप्रायदद्यात् गोपूजामंत्राः कौस्तुभे दानमंत्रस्तु नमस्तेकपिलेदेविसर्वपापप्रणाशिनि संसारार्णवमग्नंमांगोमातस्त्रातुमर्हसि वस्त्रयुगच्छन्नांसघंटामित्यादिविशेषणान्युक्त्वाइमांगांतुभ्यमहंसंप्रददेइतिदत्वा सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ततस्तस्मैविप्रायरथंसूर्यप्रतिमांच दद्यात् तत्रमंत्रः दिव्यमूर्तिर्जगच्चक्षुर्द्वादशात्मादिवाकरः कपिलासहितोदेवोमममुक्तिंप्रयच्छतु यथात्वंकपिलेपुण्यासर्वलोकस्यपावनी प्रदत्तासहसूर्येणमममुक्तिप्रदाभवेत्यादि ततःकापिलाप्रार्थनादिविस्तारःकौस्तुभे अथवोपोषणजागरहोमादिविधिमकृत्वाषष्ठ्यामेवस्नानंरथादिपूजनकपिलादानादिकार्यं इपिसंक्षेपतःकपिलाषष्ठीव्रतविधिः इतिश्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेभाद्रपदमासकृत्यनिर्णयउद्देशः समाप्तः ॥

अब संक्षेपसें कपिलाषष्ठीका व्रतविधि कहताहुं.

सूर्यके उद्देशकरके उपवासका संकल्प करके देवदार, खस, केशर, इलायची, मनशिल, पद्माक, चावल, इन्होंकों शहद और गौके घृतमें पीसकर पीछे दूधमें आलोडित करके कल्क बनाय तिस्सें अंगपर लेप करके पीछे स्नान करना. तहां मंत्र—**“आपस्त्वमसि देवेश ज्योतिषां पतिरेव च ॥ पापं नाशय मे देव वाङ्मनःकायकर्मजम् ॥”** इस मंत्रसें स्नान करके पीछे पंचगव्यसें स्नान करना. पीछे पीपल, गूलर, वड, आंब, पिलषत, इन्होंके पांच पत्तोंसें मार्जन करके पीछे मृत्तिकास्नान करना. पीछे तर्पणादि नित्यविधि करके वरुणपूजा करनी. पीछे सर्वतोभद्रमंडलके मध्यभागमें कलशउपर चावलोंसें युत पूर्णपात्र रखके चावल आदिमें कमलकों लिखके तिस कमलके आठ पत्तोंमें पूर्व आदि दिशाओंविषे सूर्य, तपन, स्वर्णरेता, रवि, आदित्य, दिवाकर, प्रभाकर, और सूर्य इन आठ देवताओंका आवाहन करके तिसके मध्यमें सोनाके रथविषे सूर्यका, अग्रभागमें अरुणका आवाहन करके कनेर और आक आदिके पुष्पोंकरके और धूप, दीप आदिकरके अच्छीतरह पूजा करनी. पीछे दिक्पाल आदि देवताओंका अच्छीतरह पूजन करके सूर्यके सन्मुख बारह आर्घ्योंकों देना. विस्तारसहित पूजाविधि और बारह अर्घ्योंके मंत्र **कौस्तुभ** ग्रंथमें देख लेने. सूर्यके आगे हाथ जोडके प्रार्थना करनी. तिसका मंत्र—**“प्रभाकर नमस्तुभ्यं संसारान्मां समुद्धर ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदो यस्मात्तस्माच्छांतिं प्रयच्छ मे ॥ नमोनमस्ते वरद ऋक्सामयजुषां पते ॥ नमोस्तु विश्वरूपाय विश्वधात्रे नमोस्तु ते,”** इस प्रकारसें प्रार्थना करके **“उदुत्यं जातवेदसम्०”** इस आदि सूर्यके सूक्तोंका जप करके रात्रिमें जागरण करना. प्रातःकालमें—**“आकृष्णेन रजसा”** इस मंत्रकरके आककी समिध, चरु, घृत और तिल, इन्होंमांहसें प्रतिद्रव्यकी १०८ आहुतियोंकों देके घंटा आदि सब प्रकारके अलंकारोंसें युत हुई कपिलागौकी मंत्रोंसें पूजा करके ब्राह्मणकेलिये देना. गौकी पूजाके मंत्र **कौस्तुभ** ग्रंथमें कहे हैं. दानके मंत्रकों कहताहुं—**“नमस्ते कपिले देवि सर्वपापप्रणाशिनि ॥ संसारार्णवमग्नं मां गोमातस्त्रातुमर्हसि”** **“वस्त्रयुगच्छन्नाम्”** इस आदि विशेषणोंकों कहके **‘इमां गां तुभ्यमहं संप्रददे’** इस प्रकारसें गौ देके सोनाकी दक्षिणा देनी. पीछे तिस ब्राह्मणके लिये रथ और सूर्यकी प्रतिमाका दान करना. तहां मंत्र—**“दिव्यमूर्तिर्जगच्चक्षुर्द्वादशात्मा दिवाकरः ॥ कपिलासहितो देवो मम**

मुक्तिं प्रयच्छतु ॥ यथा त्वं कपिले पुण्या सर्वलोकस्य पावनी ॥ प्रदत्ता सह सूर्येण मम मुक्तिप्रदा भव" इस आदि मंत्रकों कहै. तिसके पीछे कपिलाकी प्रार्थना करनी इत्यादि विस्तार कौस्तुभमें कहा है. अथवा उपवास, जागरण, होम आदि विधि कियेविना षष्ठीमेंही स्नान, रथ आदिकी पूजा, कपिलादान आदि करने. इस तरह संक्षेपसें कपिलाषष्ठीके व्रतकी विधि कही. इति भाद्रपदमासकृत्यनिर्णयो नाम षष्ठ उद्देशः ॥ ६ ॥

तुलामेषसंक्रांतिर्विषुवसंज्ञा तस्याःपूर्वाःपराश्चपंचदशपंचदशनाड्यःपुण्यकालः विशेषः प्रागुक्तएव आश्विनशुक्लप्रतिपदिदेवीनवरात्रारंभः नवरात्रशब्दःआश्विनशुक्लप्रतिपदमारभ्य महानवमीपर्यंतंक्रियमाणकर्मनामधेयं तत्रकर्मणिपूजैवप्रधानं उपवासादिकंस्तोत्रंजपादिकं चांगं तथाचयथाकुलाचारमुपवासैकभक्तनक्तायाचितान्यतमव्रतयुक्तंयथाकुलाचारंसप्तशती लक्ष्मीहृदयादिस्तोत्रजपसाहितंप्रतिपदादिनवम्यंतनवतिथ्यधिकरणकपूजाख्यंकर्मनवरात्रशब्दवाच्यं पूजाप्राधान्योक्तेरेव क्वचित्कुलेजपोपवासादिनियमस्यव्यतिरेकउपलभ्यते पूजायास्तुनक्वापिकुलेनवरात्रकर्मण्यभावोदृश्यते यत्कुलेनवरात्रमेवनानुष्ठीयतेतत्रनवरात्रपूजादेरप्यभावश्चास्तांनाम सचनवरात्रारंभःसूर्योदयोत्तरंत्रिमुहूर्तव्यापिन्यांप्रतिपदिकार्यः तदभावेद्विमुहूर्तव्यापिन्यामपिक्वचिन्मुहूर्तमात्रव्यापिन्यामप्युक्तः सर्वथादर्शयुक्तप्रतिपदिनकार्यइतिबहुग्रंथसंमतं मुहूर्तन्यूनव्याप्तौसूर्योदयास्पर्शेवादर्शयुतापिग्राह्या प्रथमदिनेषष्टिघटिकाप्रतिपद्द्वितीयदिनेमुहूर्तद्वयादिपरिमितावर्धतेतदापूर्णत्वात्पूर्वैवग्राह्या द्वितीयावेधनिषेधोपिएतत्पक्षद्वये एवयोज्यः पुरुषार्थचिंतामणौतुपूर्वदिनेमुहूर्तचतुष्टयोत्तरंमुहूर्तपंचकोत्तरंवाप्रवृत्ताद्वितीयदिने मुहूर्तद्वयादिपरिमिताप्रतिपत्तदापरस्याःक्षयगामितयानिषिद्धत्वादमायुक्तापिपूर्वैवग्राह्येत्युक्तं तत्रसूर्योदयोत्तरंदशघटीमध्येतत्रासंभवेमध्यान्हेऽभिजिन्मुहूर्तेप्रारंभःकार्योनत्वपराह्णे एवंच प्रतिपदआद्यषोडशनाडीनिषेधश्चित्रावैधृतियोगनिषेधश्चोक्तकालानुरोधेनसतिसंभवे पालनीयोनतुनिषेधानुरोधेनपूर्वाह्णःप्रारंभकालःप्रतिपत्तिशिर्वातिक्रमणीयः ॥

अब आश्विनमासके कृत्यकों कहताहुं.

तुला और मेषकी संक्रांति विषुवसंज्ञक कहाती है. विषुवसंज्ञक संक्रांतिकी पहली और पिछली पंदरह पंदरह घटीका पुण्यकाल है. विशेष निर्णय पहले परिच्छेदमें कह चुकेही हैं. आश्विन शुदि प्रतिपदाकों देवीके नवरात्रका आरंभ करना.—यहां नवरात्रशब्द आश्विन शुदि प्रतिपदासें आरंभ करके महानवमीपर्यंत क्रियमाण कर्मका वाचक है. तहां कर्ममें पूजाही प्रधानकर्म है. उपवास आदिक, स्तोत्र, जप आदि ये सब इसके अंग हैं. कुलके आचारके अनुसार उपवास, एकभक्तव्रत, नक्तव्रत, अयाचितव्रत, इन्होंमाहसें एक कोईसे व्रतसें युक्त और कुलके आचारके अनुसार दुर्गापाठ, लक्ष्मीहृदय आदि स्तोत्रजप इन्होंसेंयुत प्रतिपदासें ऐसा नवमीपर्यंत नव तिथिअधिकरणक जो पूजानामक कर्म है तिसकों नवरात्र कहते हैं. पूजाके प्रधानपनेकी उक्तिसें किसीक कुलमें जप, उपवास आदि नियमका व्यतिरेक प्राप्त होता है; परंतु पूजाका व्यतिरेक किसीकभी कुलमें नहीं प्राप्त होता है. किसीक कुलमें नवरात्रकर्मका अ-

भाव दीखता है. जिस कुलमें नवरात्रही अनुष्ठित नहीं किया जाता है तहां नवरात्रसंबंधी पूजा आदिका अभाव होता है. वह नवरात्रारंभ सूर्यके उदयके उपरंत छह घटीकाव्यापिनी प्रतिपदामें करना. तिसके अभावमें ४ घटीकाव्यापिनी प्रतिपदामेंभी नवरात्रका आरंभ करना. कितनेक ग्रंथोंमें दो घटीकाव्यापिनी प्रतिपदामेंभी नवरात्रका आरंभ करना ऐसा कहा है, परंतु सब प्रकारसें अमावसकरके युक्त हुई प्रतिपदामें नवरात्रका आरंभ नहीं करना ऐसा बहुत ग्रंथोंका मत है. सूर्योदयके अनंतर दो घटीकासें कम व्यापिनी होवै आथवा सूर्योदयमें स्पर्शसें रहित होवै तब अमावससें युत हुईभी प्रतिपदा लेनी. प्रथम दिन साठ ६० घटीका प्रतिपदा होवै और द्वितीय दिनमें चार घटीका आदि परिमित होके प्रतिपदा बढै तब पूर्णपनेसें पहली प्रतिपदा लेनी. द्वितीयाके वेधका निषेधभी इन दोनों पक्षोंमें ग्रहण करना. **पुरुषार्थचिंतामणि**में तौ पूर्वदिनमें आठ घटीकासें उपरंत अथवा १० घटीकासें उपरंत प्रतिपदा प्रवृत्त होवै और दूसरे दिनमें ४ घटीका आदि प्रतिपदा होवै तब परदिनकी प्रतिपदा क्षयगामिनी होनेसें और निषिद्ध होनेसें अमावससें युक्त हुईभी प्रतिपदा पहलीही लेनी, ऐसा कहा है. तहां सूर्यके उदयके उपरंत दश घटीकाओंके मध्यमें आरंभ करना, नहीं हो सकै तौ मध्याह्नसमयमें अभिजित् मुहूर्तमें आरंभ करना. अपराह्णकालमें आरंभ नहीं करना. ऐसेही प्रतिपदाके आदिकी १६ घटीकाओंका निषेध और चित्रा और वैधृतियोगका निषेध जो कहा है वह कालके अनुरोधसें संभवके होनेमें पालन करना उचित है. और निषेधके अनुरोधसें प्रारंभकाल जो पूर्वाह्ण है तिसकों अथवा प्रतिपदातिथिकों उल्लंघित नहीं करना.

अत्रकर्मणिब्राह्मणादिचतुर्वर्णस्यम्लेच्छादेश्चाधिकारः तत्रविप्रेणजपहोमान्नबलिनैवेद्यैः सात्त्विकीपूजाकार्या नैवेद्यैश्चनिरामिषैः मद्यंदत्वाब्राह्मणस्तुब्राह्मण्यादेवहीयते मद्यमपेयमदेयमित्यादिनिषेधान्मांसमद्यादियुतराजसपूजायांब्राह्मणस्यनाधिकारः मद्यपानेमरणांतप्रायश्चित्तोक्तेःस्पर्शेतदंगच्छेदोक्तेश्चाल्पप्रायश्चित्तेनदोषानपगमेनपातित्यापातात् इत्थमेवसर्वेप्राचीनानवीनाश्चनिबंधकारानिर्बंधेनलिखंति नवीनतराभास्कररायप्रभृतयोपिसप्तशतीटीकादौ प्राचीनग्रंथाननुसृत्यैवमेवपरिष्कुर्वंति सभायांचैतन्मतमेवश्लाघंतेचआचरणंत्वन्यथाकुर्वंति तत्किंस्वयंदुर्दैववशेनब्राह्मण्यभ्रष्टोभूवमन्येप्येवंमाभूवन्नितिभूतदययावास्वपातित्यगोपनायवान्येषांकलियुगस्थविप्राणामधिकाराभावालोचनयावेतिनवयंतत्त्वंजानीमः क्षत्रियवैश्ययोर्मांसादियुतजपहोमसहितराजसपूजायामप्यधिकारः सचकेवलंकाम्यएवनतुनित्यः निष्कामक्षत्रियादेःसात्त्विकपूजाकरणेमोक्षादिफलातिशयः एवंशूद्रादेरपि शूद्रादेर्मंत्रहीनाजपादिरहितामांसादिद्रव्यकातामसपूजापिविहिता शूद्रेणसप्तशत्यादिजपहोमसहितासात्त्विकीपूजाब्राह्मणद्वाराकार्या स्त्रीशूद्रादेःस्वतःपौराणमंत्रपाठेपिनाधिकारः अतएवशूद्रःसुखमवाप्नुयादित्यत्रभाष्येस्त्रीशूद्रयोःश्रवणादेवफलंनतुपाठादित्युक्तं एतेनस्त्रीशूद्रयोर्गीताविष्णुसहस्रनामपाठोदोषायैवेतिज्ञेयं क्वचित्पौराणमंत्रयुक्तपूजायांस्त्रीशूद्रयोःस्वतोप्यधिकारउक्तःजपहोमादौविप्रद्वारैव म्लेच्छादीनांतुब्राह्मणद्वारापिजपहोमेसमंत्रकपूजायांचनाधिकारः किंतुतैस्तत्तदुपचाराणांदेवीमुद्दिश्यमनसोत्सर्गमात्रंकर्तव्यं ॥

इस कर्ममें ब्राह्मण आदि चार वर्णोंको और म्लेच्छ आदिकों भी अधिकार है. तहां ब्राह्मणनें जप, होम, अन्नका बलि और नैवेद्य इन्होंकरके सात्त्विकी पूजा करनी. "मांससें वर्जित नैवेद्य अर्पण करना. मदिरा देनेसें ब्राम्हण ब्राह्मणपनेसें हीन होता है" इसवास्ते मदिरा पीनी नहीं और देनी नहीं. इस निषेधसें मांस, मदिरा आदिसें युत हुई राजस पूजा करनेकेवास्ते ब्राह्मणकों अधिकार नहीं है. मदिराके पीनेमें देहांतप्रायश्चित्त कहा है. जिस अंगकों मदिराका स्पर्श होवै तिस अंगकों छेदित करना ऐसा वचन है. और अल्प प्रायश्चित्तकरके मदिराका दोष दूर न होनेसें पतितपना प्राप्त होता है. इस प्रकार सब प्राचीन और नवीन ग्रंथकार निश्चयकरके लिखते हैं. अत्यंत नवीन भास्करराय आदि पंडितभी दुर्गापाठके टीकामें प्राचीन ग्रंथोंके अनुसार ऐसाही लिखते हैं, और सभामेंभी इसी मतकी श्लाघा करते हैं और अन्य प्रकारसें आचरण करते हैं. वह आचरण ऐसा है की जैसे आप अपने दुर्दैवसें ब्राह्मणपनेसें भ्रष्ट हुआ हूं तैसा दूसरा कोईभी इस प्रकार भ्रष्ट न होवै ऐसी मनुष्योंपर दया करके अथवा अपने पतितपनेकी रक्षा करनेके लिये अथवा कलियुगमें स्थित हुये अन्य ब्राह्मणोंकों अधिकारके अभावकों दिखानेकेवास्ते इस प्रकार कहता है. इसके तत्त्वकों हम नहीं जानते. क्षत्रिय और वैश्यकों मांस आदिसें युत जप होमसहित राजसपूजकाभी अधिकार हैं, सोभी अधिकार काम्य है, नित्य नहीं. कामनासें वर्जित क्षत्रिय आदिकों सात्विक पूजा करनेमें मोक्ष आदि अत्यंत फल मिलता है. ऐसेही शूद्र आदिकोंभी मिलता है. शूद्र आदिकोंनें मंत्रहीन और जप आदिसें रहित और मांस आदि पदार्थोंसें युत हुई ऐसी तामसी पूजा भी करनी. शूद्रनें दुर्गापाठ आदि जप होमसहित सात्विकी पूजा ब्राह्मणके द्वारा करानी. स्त्री और शूद्रकों आपही पुराणसंबंधी मंत्रका पाठ करनेका अधिकार नहीं है. इसी कारणसें "शूद्र सुखकों प्राप्त होता है," इत्यादि जगह भाष्यमें स्त्री और शूद्रकों यह फल सुननेसें प्राप्त होता है, पाठसें नहीं ऐसा कहा है. इसवास्ते स्त्री और शूद्रनें गीता और विष्णुसहस्रनामका पाठ नहीं करना, करनेमें दोष लगता है ऐसा जानना. कितनेक ग्रंथोंमें स्त्री और शूद्रनें आपभी पुराणसंबंधी मंत्रसें युक्त हुई पूजा करनी ऐसा कहा है. जप और होम आदि ब्राह्मणद्वारा कराने. म्लेछ आदिकोंकों तौ ब्राह्मणद्वाराभी जप, होम मंत्रसहित पूजा करानेका अधिकार नहीं है; किंतु तिन म्लेछोंनें तिस तिस उपचार देवीके उद्देशकरके मनसेंही समर्पण करने.

अथनवरात्रेनुकल्पाः तृतीयादिनवम्यंतंसप्तरात्रंवाकर्तव्यं पंचम्यादिपंचरात्रंवासप्तम्यादित्रिरात्रंवा अष्टम्यादिद्विरात्रंवा एकाहपक्षेकेवलाष्टम्यांकेवलनवम्यांवा एषांपक्षाणांस्वस्वकुलाचारानुसारेणप्रतिबंधादिनापूर्वपूर्वपक्षासंभवानुसारेणवाव्यवस्था तत्रतृतीयापंचम्योर्निर्णयःप्रतिपदादिवत् सप्तम्यादिस्तुनिर्णयोवक्ष्यते नवरात्रादिपक्षेषुक्षयवृद्धिवशेनदिनाधिक्यन्यूनत्वेपूजाद्यावृत्तिःकार्या केचित्तुदिनक्षयेष्टावेवपूजांश्चंडीपाठांश्चकुर्वंति इदंदेवीपूजनात्मकंनवरात्रकर्मनित्यंअकरणेदोषश्रवणात् फलश्रवणात्काम्यंच ॥

अब नवरात्रके गौणपक्ष कहताहुं.

तृतीयासें आरंभ करके नवमीपर्यंत सात रात्रि नवरात्र करना. अथवा पंचमीसें आरंभ

करके नवमीपर्यंत पांच रात्रि नवरात्र करना. अथवा सप्तमीसें आरंभ करके नवमीपर्यंत तीन रात्रि नवरात्र करना. अथवा अष्टमीसें आरंभ करके नवमीपर्यंत दो रात्रि नवरात्र करना. एक दिनमें करना होवै तौ केवल अष्टमी अथवा केवल नवमीकों नवरात्र करना. इन सब पक्षोंकी व्यवस्था अपने अपने कुलका जैसा जैसा आचार होवै तिसके अनुसार अथवा प्रतिबंधकरके पूर्व पूर्व पक्षके असंभवके अनुसार जाननी. तहां तृतीया और पंचमीका निर्णय प्रतिपदाकी तरह जानना. सप्तमी आदिका निर्णय प्रकाशित किया जावैगा. नवरात्र आदि पक्षोंमें क्षय वृद्धिके वशकरके दिन अधिक हो जावैं अथवा कम हो जावैं तौ पूजा आदिकी आवृत्ति करनी. कितनेक पंडित तौ दिनका क्षय होता है तब पूजा और दुर्गापाठ आठ आठ करते हैं. यह देवीपूजनात्मक नवरात्रकर्म नित्य है, क्योंकी नहीं करनेमें दोष लगता है, और करनेसें फल प्राप्त होता है ऐसा कहा है, इसवास्ते यह व्रत नित्य और काम्य ऐसा दो प्रकारका है.

अत्रनवरात्रेघटस्थापनंप्रातर्मध्याह्नेप्रदोषकालेचेतित्रिकालंद्विकालमेककालंवास्वस्वकुलदेवतापूजनंसप्तशत्यादिजपोऽखंडदीपःआचारप्राप्तमालाबंधनंउपवासनक्तैकभक्तादिनियमःसुवासिनीभोजनंकुमारीभोजनपूजनादिअंतेसप्तशत्यादिस्तोत्रमंत्रहोमादितिइत्येतानिविहितानि एतेषांमध्येक्वचित्कुलेघटस्थापनादीनिद्वित्रादीन्येवानुष्ठीयंतेनसर्वाणि क्वचित्घटस्थापनादिरहितानिकानिचित्क्वचित्सर्वाण्येवेत्येतेषांसमुच्चयविकल्पौ कुलाचारानुसारेणव्यवस्थितौज्ञेयौ कुलपरंपराप्राप्तादधिकंशक्तिसत्त्वेपिनानुष्ठेयमितिशिष्टाचारः फलकामनयाप्रार्थितमुपवासादिकंकुलाचाराभावेपिकुर्वंति इदंकलशस्थापनंरात्रौनकार्यं तत्रकलशस्थापनार्थंशुद्धमृदावेदिकांकृत्वापंचपल्लवदूर्वाफलतांबूलकुंकुमधूपादिसंभारान्संपादयेत् ॥

यहां नवरात्रविषे कलशका स्थापन प्रातःकालमें अथवा मध्यान्हमें अथवा प्रदोषकालमें इस प्रकार तीन काल अथवा दो काल अथवा एक काल अपने अपने कुलके देवताका पूजन करना; और दुर्गापाठ आदि जप और अखंड दीपक अपने अपने आचारके अनुसार मालाबंधन, उपवास, नक्तव्रत, एकभक्तव्रत इन आदि नियम धारण करने. सुहागनकों भोजन देना, कुमारिकाका भोजन और पूजन आदि करना; और दिनमें दुर्गापाठ आदि स्तोत्रके मंत्रका जप करके होम आदि करना, इस प्रकार कृत्य कहे हैं. इन्होंमांहसें कितनेक कुलविषे कलशस्थापन आदि दो अथवा तीन कर्मोंकों करते हैं, सब कर्मोंकों नहीं करते. कितनेक कुलमें कलशस्थापनसें वर्जित कितनेक कर्म किये जाते हैं. कितनेक कुलमें कलशस्थापन आदि सब कर्म किये जाते हैं. इस प्रकार इन्होंका समुच्चय और विकल्प कुलाचारके अनुसार करके जानना. कुलकी परंपरासें अधिक शक्ति होवै तौ भी अधिक कर्म नहीं करना, ऐसा शिष्टोंका आचार है. फलकी कामनाकरके प्रार्थित किये उपवास आदिकों कुलके आचारके अभावमेंभी करना. यह कलशस्थापन रात्रिमें नहीं करना. तहां कलशकों स्थापन करनेके लिये शुद्ध माटीसें वेदी बनाय पीपल, वड, गूलर, आंब, पिलषन इन वृक्षोंके पंचपल्लव, दूर्वा, फल, नागरपान, रोली, धूप, दीप इन आदि सामग्रियोंकों संपादित करना.

अथसंक्षेपतोनवरात्रारंभप्रयोगः प्रतिपदिप्रातःकृताभ्यंगस्नानःकुंकुमचंदनादिकृतपुंड्रोधृतपवित्रःसपत्नीकोदशघटिकामध्येऽभिजिन्मुहूर्तेवादेशकालौसंकीर्त्य ममसहकुटुंबस्यामुकदेवताप्रीतिद्वारासर्वापच्छांतिपूर्वकदीर्घायुर्धनपुत्रादिवृद्धिशत्रुजयकीर्तिलाभप्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थमद्यप्रभृतिमहानवमीपर्यंतंप्रत्यहंत्रिकालमेककालंवामुकदेवतापूजामुपवासनक्तैकभक्तान्यतमनियमसहितामखंडदीपप्रज्वालनंकुमारीपूजनं चंडीसप्तशतीपाठंसुवासिन्यादिभोजनमित्यादि यावत्कुलाचारप्राप्तमनूद्यएवमादिरूपंशारदनवरात्रोत्सवाख्यंकर्मकरिष्येदेवतापूजांगत्वेनघटस्थापनंचकरिष्ये तदादौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंगणपतिपूजनंपुण्याहवाचनंचंडीसप्तशतीजपाद्यर्थंब्राह्मणवरणंचकरिष्ये एतानिकृत्वा घटस्थापनसत्त्वेमहीद्यौरितिभूमिंस्पृष्ट्वा तस्यांभुविअंकुरारोहणार्थं शुद्धमृदंप्रक्षिप्य ओषधयःसमितितस्यांमृदियवादीन्प्रक्षिप्यआकलशेष्वितिकुंभंनिधायइमंमेगंगेइतिजलेनापूर्यगंधद्वारामितिगंधं याओषधीरितिसर्वाओषधीः कांडात्कांडादितिदूर्वाःअश्वत्थेवइतिपंचपल्लवान्स्योनापृथिवीतिमृदः याःफलिनीरितिफलं सहिरत्नानीतिहिरण्यरूपइतिरत्नहिरण्येप्रक्षिप्ययुवासुवासाइतिसूत्रेणावेष्ट्यपूर्णादर्वीतिपूर्णपात्रंनिधायतत्त्वायामीतिवरुणंसंपूज्यतत्कलशोपरिकुलदेवताप्रतिमांसंस्थाप्यपूजयेत् स्वस्थानेएववासंस्थाप्यपूजयेत् तद्यथा जयंतीमंगलाकालीभद्रकालीकपालिनी दुर्गाक्षमाशिवाधात्रीस्वाहास्वधानमोस्तुते आगच्छवरदेदेविदैत्यदर्पनिषूदनि पूजांगृहाणसुमुखिनमस्तेशंकरप्रिये अनेनपुरुषसूक्तश्रीसूक्तप्रथमऋग्भ्यांचावाह्यजयंतीमंगलाकालीतिमंत्रेणसूक्तऋग्भिश्चासनादिषोडशोपचारैःसंपूजयेत् सर्वमंगलमांगल्येइत्यादिभिःसंप्रार्थ्यप्रत्यहंबलिदानपक्षेमाषभक्तेनकूष्मांडेनवाबलिंदद्यात् अंतेएववाबलिदानं नवाबलिदानं ततःअखंडदीपकंदेव्याःप्रीतयेनवरात्रकं उज्ज्वालयेअहोरात्रमेकचित्तोधृतव्रतइत्यखंडदीपंप्रतिष्ठापयेत् ॥

अब सक्षेपसें नवरात्रके आरंभका प्रयोग कहताहुं.

प्रतिपदाके दिन प्रातःकालमें अभ्यंगस्नान करके पीछे केशर और चंदन आदिसें तिलक करके हाथमें पवित्राकों धारण करके स्त्रीसहित दश घटीकापरिमित अथवा अभिजितुमुहूर्तमें देश और कालका उच्चार करके "मम सहकुटुंबस्यामुकदेवताप्रीतिद्वारा सर्वापच्छांतिपूर्वकदीर्घायुर्धनपुत्रादिवृद्धिशत्रुजयकीर्तिलाभप्रमुखचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं अद्यप्रभृति महानवमीपर्यंतं प्रत्यहं त्रिकालमेककालं वाऽमुकदेवतापूजामुपवासनक्तैकभक्तान्यतमनियमसहितामखंडदीपप्रज्वालनं कुमारीपूजनं चंडीसप्तशतीपाठं सुवासिन्यादिभोजनमित्यादि यावत्कुलाचारप्राप्तमनूद्य एवमादिरूपं शारदनवरात्रोत्सवाख्यं कर्म करिष्ये देवतापूजांगत्वेन घटस्थापनं च करिष्ये तदादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिपूजनं पुण्याहवाचनं चंडीसप्तशतीजपाद्यर्थं ब्राह्मणवरणं च करिष्ये," इस तरह संकल्प करके गणपतिपूजन, पुण्याहवाचन और चंडीसप्तशतीके पाठके लिये ब्राह्मणवरण करना. पीछे घटस्थापन करना होवै तौ "महीद्यौ०" इस मंत्रकरके पृथिवीकों स्पर्श करके तिस पृथ्वीमें अंकुर जमानेके लिये शुद्ध माटी डालनी. पीछे "ओषधयः सं०" इस मंत्रकरके तिस माटीमें जव आदिकों डालके "आकलशेषु०" इस मंत्रसें कलशकों स्थापित करके "इमंमे गंगे०" इस मंत्रसें जलसें पूरित करना. पीछे "गंधद्वारां०" इस मंत्रसें गंध अर्पित क-

रना, और "**या ओषधीः०**" इस मंत्रसें कूट, छालछलीरा; हलदी, आंबेहलदी, वच, चमेली, दगडफूल, नागरमोथा; मुरामांसी इन सब ओषधियोंकों कलशमें डालना, और "**कांडात्कांडात्०**" इस मंत्रसें दूवकों कलशमें डालना, और "**अश्वत्थेव०**" इस मंत्रसें पंचपल्लव कलशमें डालना, और "**स्योनापृथिवी०**" इस मंत्रसें हस्तीके नीचेकी माटी, घोडाके नीचेकी माटी, राजद्वारकी माटी, रथके नीचेकी माटी, चौराहाकी माटी, तलावकी माटी, गौके ठानकी माटी ऐसे सात माटियोंकों कलशामें डालना, और "**याः फलिनी०**" इस मंत्रसें फलकों कलशमें डालना, और "**सहि रत्नानि०**" इस मंत्रसें सोना, हीरा, पन्ना, मोती, नीलम, इन पंच रत्नोंकों कलशमें डालना, और "**हिरण्यरूप०**" इस मंत्रसें सोनाकों कलशमें डालना, और "**युवासुवासाः०**" इस मंत्रसें कलशकों सूत्र वीटना. और "**पूर्णादर्वि०**" इस मंत्रसें कलशपर पूर्णपात्रकों स्थापित करके "**तत्त्वायामि०**" इस मंत्रसें वरुणकी पूजा करके वह कलशके उपर पूर्णपात्रमें कुलदेवताकी प्रतिमाकों स्थापित करके तिसकी पूजा करनी अथवा देवताके स्थानमेंही देवताकी प्रतिमाकों स्थापित करके पूजा करनी. सो ऐसी "**जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तु ते ॥ आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि ॥ पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये ॥**" इन मंत्रोंसें और पुरुषसूक्त तथा श्रीसूक्तके प्रथम ऋचाओंसें आवाहन करके "**जंयती मंगला काली०**" इस मंत्रसें और सूक्तोंकी ऋचाओंकरके आसन आदि षोडशोपचारोंसें पूजा करनी. पीछे "**सर्वमंगलमांगल्ये०**" इस मंत्रसें प्रार्थना करके प्रतिदिन बलिदान करना होवै तौ उडदोंके भातसें आथवा कोहलासें बलिदान देना अथवा नवरात्रके अंतमें बलिदान करना अथवा बलिदान नहीं करना. पीछे "**अखंडदीपकं देव्याः प्रीतये नवरात्रकं ॥ उज्ज्वालये अहोरात्रमेकचित्तो धृतव्रतः**" इस मंत्रसें अखंडदीपककों स्थापित करना.

अथचंडीपाठप्रकारः यजमानेनवृतोहंचंडीसप्तशतीपाठंनारायणहृदयलक्ष्मीहृदयपाठंवा करिष्येइत्यादिसंकल्प्यआसनादिविधायआधारेअन्यहस्तलिखितंपुस्तकं स्थापयित्वा नारायणं नमस्कृत्येतिवचनात् ॐनारायणायनमः नरायनरोत्तमायनमः देव्यैसरस्वत्यैनमः व्यासायनमः इतिनमस्कृत्यप्रणवमुच्चार्यसर्वपाठांतेप्रणवंपठेत् पुस्तकवाचनेनियमाः हस्तेपुस्तकंन धारयेत् स्वयंब्राह्मणभिन्नेनचलिखितंविफलं अध्यायंप्राप्यविरमेन्नतुमध्येकदाचन कृतेविरामेमध्येतुअध्यायादिपठेत्पुनः ग्रंथार्थंबुध्यमानःस्पष्टाक्षरंनातिशीघ्रंनातिमंदंरसभावस्वरयुतंवाचयेत् त्रिवर्गफलकामेनचंडीपाठःसदैवकर्तव्यः तस्मान्ममैतन्माहात्म्यंपठितव्यंसमाहितैः श्रोतव्यंचसदाभक्त्येत्यादिवचनात् नैमित्तिकपाठोप्युक्तः शांतिकर्मणिसर्वत्रतथादुःस्वप्नदर्शने ग्रहपीडासुचोग्रासुमाहात्म्यंशृणुयान्ममेत्यादि तथा अरण्येप्रांतरेवापिदावाग्निपरिवारितः दस्युभिर्वावृतःशून्येगृहीतोवापिशत्रुभिरित्यादिसंकटान्युद्दिश्य सर्वबाधासुचोग्रासुवेदनाभ्यर्दितोपिवा स्मरन्ममैतन्माहात्म्यंनरोमुच्येतसंकटादित्युक्तं उपसर्गोपशांत्यर्थंत्रयः पाठाः कार्याः ग्रहपीडाशांतयेपंच महाभयेसप्त शांत्यर्थंवाजपेयफलार्थंचनव राजवश्यार्थमेकादश वैरनाशार्थंद्वादश स्त्रीपुंसवश्यतार्थंचतुर्दश सौख्यायलक्ष्म्यर्थंचपंचदश पुत्रपौत्रधनधान्यार्थंषो

डश राजभयनाशायसप्तदश उच्चाटनायाष्टादश वनभयेविंशतिः बंधमोचनायपंचविंशतिः दुश्चिकित्स्यरोगकुलोच्छेदायुर्नाशवैरिवृद्धिव्याधिवृद्धित्रिविधोत्पातादिमहासंकटनाशोराज्यवृद्धिश्चशतावृत्तिभिः सहस्रावर्तनैःशताश्वमेधफलंसर्वमनोरथावाप्तिर्मोक्षश्चेतिवाराहीतंत्रेउक्तं सर्वत्रकाम्यपाठेआदौसंकल्पपूर्वकंपूजनमंतेबलिदानंचकार्यं अत्राचाराद्वेदपारायणमपिकार्यं तद्विधिर्बौधायनोक्तःकौस्तुभेज्ञेयः ॥

अब दुर्गापाठका विधि कहताहुं.

ब्राह्मणनें आचमन और प्राणायाम करके “**यजमानेन वृतोहं चंडीसप्तशतीपाठं नारायणहृदयलक्ष्मीहृदयपाठं वा करिष्ये**” इस प्रकार संकल्प करके आसन आदिकों लगाय आधारमें दूसरेके हाथसें लिखित किये पुस्तककों स्थापित करके “**नारायणं नमस्कृत्य**” इस वचनसें “**ॐ नारायणाय नमः नराय नरोत्तमाय नमः देव्यै सरस्वत्यै नमः व्यासाय नमः**” इस प्रकार प्रणाम करके और ॐकारका उच्चार करके सब पाठके अंतमें ॐकारका उच्चार करना. **अब पुस्तक वाचनेके नियमोंकों कहताहुं.** हाथमें पुस्तक धारण नहीं करना. अपने हाथसें अथवा ब्राह्मणसें अन्य जातीके हाथसें लिखा हुआ पुस्तक फलकों नहीं देता है. “अध्यायके अंतकों प्राप्त होके विराम करना, मध्यमें कभीभी विराम नहीं करना. अध्यायके मध्यमें विराम किया जावै तौ अध्याय आदिकों फिर पढना.” ग्रंथके अर्थकों जानता हुआ स्पष्ट अक्षरोंसहित और न अति शीघ्र और न अति मंद और रस, भाव तथा स्वरसें युत हुआ ऐसा पाठ करना. धर्म, अर्थ, काम इन्होंकी कामनावाले मनुष्योंनें सब कालही दुर्गापाठ करना. क्योंकी, “देवीजीनें कहा है की, सावधान हुये मनुष्योंनें मेरा यह माहात्म्य पढना और सब काल भक्तिकरके सुनना” ऐसा वचन है. कुछ निमित्त प्राप्त होवै तबभी पाठ करना. “सब शान्तिकर्ममें, दुष्ट स्वप्न, और उग्र ग्रहपीडा प्राप्त होवै तौ मेरा माहात्म्य श्रवण करना. तैसेही वनमें तथा शून्यस्थानमें और दावाग्निसें परिवारित हुआ और शून्यजगहमें धाडियोंसें आवृत्त हुआ और शत्रुओंकरके गृहीत हुआ” इन आदि संकटोंके उद्देशकरके और “सब प्रकारकी दारुण पीडाओंमें अथवा पीडासें अत्यंत पीडित हुए मनुष्यनें मेरे इस माहात्म्यकों स्मरण करनेसें संकटसें छुट जाता है” इस प्रकार कहा है. अशुभसूचक उपद्रवोंकी शांतिके लिये तीन दुर्गापाठ करने. ग्रहोंकी पीडाकों शांत करनेके लिये पांच पाठ करने. महाभयकों शांत करनेके लिये सात पाठ करने. शांतिके लिये और वाजपेययज्ञके फलके लिये नव पाठ करने. राजाकों वश करनेके लिये ग्यारह पाठ करने. वैरीके नाशके लिये बारह पाठ करने. स्त्री और पुरुष वश करनेके लिये चौदह पाठ करने. सुखके और लक्ष्मीके लिये पंदरह पाठ करने. पुत्र, पौत्र, धन, अन्न इन्होंके प्राप्तिके लिये सोलह पाठ करने. राजाके भयकों दूर करनेके लिये सतरह पाठ करने. उच्चाटनके लिये अठारह पाठ करने. वनके भयकों दूर करनेके लिये वीस पाठ करने. बंध अर्थात् कैदसें छुटनेके लिये पचीस पाठ करने. दुश्चिकित्स्य रोगके गणकों छेदनेके लिये और आयुर्नाश, वैरिवृद्धि, रोगवृद्धि, तीन प्रकारके उत्पात आदि महासंकट इन्होंकों दूर करनेके लिये सौ १०० पाठ करने. हजार पाठ करनेसें सौ १०० अश्वमेधयज्ञोंका फल और सब मनोरथोंकी प्राप्ति और मोक्ष ये प्राप्त होते हैं, ऐसा वाराहीतंत्रमें कहा है. सब जगह काम-

नाके पाठमें आदिविषे संकल्पपूर्वक पूजन और अंतमें वलिदान करना. यहां आचार होवै तौ वेदपारायणभी कराना उचित है. तिसकी विधि बौधायनसूत्रमें कही हुई कौस्तुभमाहसें जान लेनी.

अथकुमारीपूजा एकवर्षातुयाकन्यापूजार्थंतांविवर्जयेत् द्विवर्षकन्यामारभ्यदशवर्षावधि कुमारीणांक्रमेणकुमारिका त्रिमूर्तिः कल्याणीरोहिणीकालीचंडिकाशांभवीदुर्गाभद्रेतिनामानि आसांकुमारीणांप्रत्येकंपूजामंत्राःफलविशेषाःलक्षणानिचान्यत्रज्ञेयानि ब्राह्मणेनब्राह्मणीत्येवंसवर्णाप्रशस्ता विजातीयापिक्वचित्कामनाविशेषेणोक्ता एकैकवृद्ध्याप्रत्यहमेकावाकुमारी पूज्या मंत्राक्षरमयींलक्ष्मींमातृणांरूपधारिणीं नवदुर्गात्मिकांसाक्षात्कन्यामावाहयाम्यहं जगत्पूज्येजगद्वंद्येसर्वशक्तिस्वरूपिणि पूजांगृहाणकौमारिजगन्मातर्नमोस्तुते इतिमंत्रेणपादक्षालनपूर्वकंवस्त्रकुंकुमगंधधूपदीपभोजनैःपूजयेदितिसंक्षेपः कुमारीपूजावद्देवीपूजाचंडीपाठश्चैकोत्तरवृद्ध्यापिविहितः भवानीसहस्रनामपाठोपिक्वचिदुक्तः अयंशारदनवरात्रोत्सवोमलमासेनिषिद्धः शुक्रास्तादौतुभवति प्रथमारंभस्तुनकार्यः शावाशौचजननाशौचयोस्तुसर्वोपिघटस्थापनादिविधिर्ब्राह्मणद्वाराकार्यः केचिदारंभोत्तरंमध्येआशौचपातेस्वयमेवारब्धंपूजादिकं कार्यमित्याहुः शिष्टास्त्वाशौचेपूजादेवतास्पर्शादेर्लोकविद्विष्टत्वादन्येनैवकारयंति अपरेतृतीयादिपंचम्यादिसप्तम्याद्यनुकल्पेननवरात्रविधीनांसत्त्वात्प्रतिपद्याशौचे तृतीयाद्यनुकल्पाश्रयणंकुर्वंति सर्वथालोपप्रसक्तावेवब्राह्मणद्वाराकुर्वंति उपवासादिशारीरनियमःस्वयंकार्यःएवंरजस्वलापिउपवासादिकंस्वयंकृत्वापूजादिकमन्येनकारयेत् अत्रसभर्तृकस्त्रीणांउपवासेगंधतांबूलादिग्रहणंनदोषायेत्याहुः ॥

अब कुमारीपूजाकी विधि कहताहुं.

“एक वर्षकी कन्या पूजामें वर्जित करनी.” दूसरे वर्षसें आरंभ कर दश वर्षतककी कन्याओंके क्रमसें नाम कहे जाते हैं. दो वर्षकी कुमारिका, तीन वर्षकी त्रिमूर्ति, चार वर्षकी कल्याणी, पांच वर्षकी रोहिणी, छह वर्षकी काली, सात वर्षकी चंडिका, आठ वर्षकी शांभवी, नव वर्षकी दुर्गा और दश वर्षकी भद्रा ऐसे नाम हैं. इन कुमारियोंके पृथक् पृथक् पूजामंत्र, और फलविशेष और लक्षण अन्य ग्रंथोंमांहसें जान लेने. कितनेक ग्रंथोंमें ब्राह्मणनें ब्राह्मणकी कन्या पूजनी ऐसा कहा है, इस तरह अपने अपने वर्णकी कुमारी उत्तम जाननी. कामनाविशेषकरके अन्य जातीकीभी कन्या कही है. नित्यप्रति एकएककी वृद्धि करके अथवा एकही कुमारी पूजनी. तिसका मंत्र—“मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ जगत्पूज्ये जगद्वंद्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तु ते,” इन मंत्रोंसें पैरोंकों धोयकर वस्त्र, रोली, गंध, धूप, दीप, भोजन इन्होंकरके पूजा करनी, ऐसा संक्षेप कहा है. कुमारीपूजाकी तरह देवीपूजा और दुर्गापाठ एकोत्तरवृद्धि करके करना ऐसा कहा है. कहींक भवानीसहस्रनामका भी पाठ करना ऐसा कहा है. यह शरदृतुके नवरात्रका उत्सव अधिकमासमें वर्जित करना. गुरुशुक्रके अस्त आदिमें इस नवरात्रका उत्सव होता है. गुरुशुक्रके अस्तमें नवरात्रका प्रथमारंभ नहीं करना. मरनेके सूतकमें और जन्मके सूतकमें सब प्रकारकी घटस्था-

पन आदि विधि ब्राह्मणके द्वारा करानी. कितनेक ग्रंथकार तौ आरंभके उपरंत मध्यमें सूतक प्राप्त होवै तौ प्रारंभ किया पूजन आदि अपने हाथसेंही करना ऐसा कहते हैं. शिष्टजन तौ सूतकमें पूजा और देवताकों स्पर्श आदि लोकोंमें निंदित होता है इसवास्ते दूसरेके हाथसें करवाते हैं. अन्य किसीकनें तौ गौणकालोंकरके नवरात्रविधि तृतीयासें, पंचमीसें और सप्तमी आदिसें कहे हैं, इसवास्ते प्रतिपदामें सूतक आदि होवै तौ तृतीया आदि गौणकालका आश्रय करते हैं. अर्थात् तृतीया आदिमें नवरात्रका आरंभ करते हैं. जो सब प्रकारसें नवरात्रमें सूतक आदि रहै तौ ब्राह्मण आदिके द्वारा कराते हैं. और उपवास आदि शरीरके नियम आप करते हैं. ऐसेही रजस्वला स्त्रीनें भी उपवास आदि आप करके पूजा आदि दूसरेके द्वारा करवानी. यहां सुहागन स्त्रियोंनें उपवासमें नागरपान आदिकों ग्रहण करनेमें दोष नहीं है ऐसा कहते हैं.

अथपंचम्यामुपांगललिताव्रतं अत्रपंचमीअपराह्णव्यापिनीग्राह्या अपराह्णस्यैवतत्पूजाकालत्वोपपत्तेः दिनद्वयेकात्स्न्येनापराह्णव्याप्तौसाम्येनवैषम्येणवापराह्णैकदेशव्याप्तौचपूर्वैव युग्मवाक्यात्परत्रैवापराह्णव्याप्तौपरैव केचित्तुरात्रिव्यापिनींगृह्णंति पूजादिकंचरात्रावेवकुर्वंतितत्रमूलंचिंत्यं अत्रपूजादिविधिर्ग्रंथांतरेप्रसिद्धइतिनलिख्यते ॥

अब उपांगललिताव्रतका निर्णय कहताहुं.

यहां पंचमीमें उपांगललिताव्रत कहा है. यहां अपराण्हव्यापिनी पंचमी लेनी. क्योंकी अपराण्हकालमेंही तिसकी पूजाका विधान कहा है. दोनों दिनोंमें संपूर्णपनेसें अपराण्हकालमें व्याप्ति होवै अथवा दोनों दिनोंमें समानपनेसें अथवा विषमपनेसें अपराण्हकालके एकदेशमें व्याप्ति होवै तब युग्मवाक्यके होनेसें पूर्वविद्धा पंचमी लेनी. परदिनमेंही अपराण्हकालविषे व्याप्ति होवै तौ परविद्धा पंचमी लेनी. कितनेक ग्रंथकार तौ रात्रिव्यापिनी पंचमी ग्रहण करते हैं और रात्रिमेंही पूजा आदि करते हैं, तहां मूलका विचार करना योग्य है. यह उपांगललिताव्रतकी पूजा आदिकी विधि अन्य ग्रंथोंमें प्रसिद्ध है इसवास्ते यहां कही नहीं है.

आश्विनशुक्लपक्षेमूलनक्षत्रेपुस्तकेषुसरस्वतीमावाह्यपूजयेत् मूलेषुस्थापनंदेव्याःपूर्वाषाढासुपूजनं उत्तरासुबलिंदद्याच्छ्रवणेनविसर्जयेदितिवचनात् अत्रपूजयेत्प्रत्यहमितिरुद्रयामलवचनात् मूलेआवाहनंतदंगभूतंपूजनंचकरिष्येइत्यादिसंकल्प्यावाहनपूजनेकार्ये पूर्वाषाढासुपूजनंकरिष्यइतिसंकल्प्यावाहनरहितपूजैवकेवलं उत्तरासुबलिदानंतदंगभूतांपूजांचकरिष्येइत्येवंतेकार्ये श्रवणेविसर्जनंकर्तुंतदंगभूतांपूजांकरिष्यइतिसंकल्प्यसंपूज्यविसर्जयेदितिक्रमः तत्रमूलस्यप्रथमेपादेसूर्यास्तात्प्राक्त्रिमुहूर्तव्यापिनिसरस्वत्यावाहनं त्रिमुहूर्तन्यूनत्वेरात्रौवाप्रथमपादसत्त्वेतस्यविशेषवचनंविनाग्राह्यत्वाभावाद्द्वितीयादिपादेपरदिनएवावाहनं एवंपूर्वाषाढादिनक्षत्रंपूजादौदिनव्याप्त्येवग्राह्यं विसर्जनंतुश्रवणप्रथमपादेरात्रिभागगतेपिकार्यं विशेषवचनात् तच्चरात्रेःप्रथमप्रहरपर्यंतमेवेतिभाति ॥

आश्विन शुक्लपक्षमें मूलनक्षत्रविषे पुस्तकोंमें सरस्वतीजीका आवाहन करके पूजा करनी. क्योंकी, “मूलनक्षत्रमें देवीका आवाहन, पूर्वाषाढानक्षत्रमें पूजन, उत्तराषाढानक्षत्रमें

बलिदान और श्रवणनक्षत्रमें देवीका विसर्जन करना" ऐसा वचन है. यहां "नित्यप्रति पूजा करनी." ऐसे **रुद्रयामल**ग्रंथके वचनसें मूलनक्षत्रविषे "**आवाहनं तदंगभूतं पूजनं च करिष्ये**" इस आदि संकल्प करके आवाहन और पूजन करना. पूर्वाषाढानक्षत्रविषे "**पूजनं करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके आवाहनसें वर्जित केवल पूजाही करनी. उत्तराषाढा नक्षत्रविषे "**बलिदानं तदंगभूतां पूजां च करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके बलिदान और पूजा करनी. श्रवणनक्षत्रमें "**विसर्जनं कर्तुं तदंगभूतां पूजां करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके अच्छीतरह पूजा करनी. और तिसके अनंतर विसर्जन करना ऐसा क्रम है. तहां मूलके प्रथमपादमें सूर्यके अस्तके पहले ६ घटीकाव्यापी मूलमें सरस्वतीका आवाहन करना और ६ घटीकासें कम होवै अथवा रात्रिके प्रथम पादमें होवै तौ वह लेनेविषे विशेषवचनके अभावसें दूसरे तीसरे आदि पादमें परदिनविषेही आवाहन करना. ऐसेही पूर्वाषाढा आदि नक्षत्र पूजा आदिमें दिनव्यापी लेना, और विसर्जन तौ रात्रिभागमें प्राप्त हुये श्रवणके प्रथम पादमें भी विशेषवचनके होनेसें रात्रिमेंही करना. सो विसर्जन रात्रिके प्रथम प्रहरपर्यंतही करना ऐसा प्रतिभान होता है.

अथसप्तम्यादिदिनत्रयेपत्रिकापूजनंविहितं तत्रसप्तम्यादितिथित्रयंसूर्योदयेमुहूर्तमात्रमपिग्राह्यं तत्राधिवासनादिप्रयोगविस्तारःकौस्तुभादौज्ञेयः यत्तुसप्तमीप्रभृतित्रिरात्रंनवरात्रकर्म कुर्वंतितत्रसप्तमीसूर्योदयोत्तरंमुहूर्ताधिकव्यापिनीग्राह्या मुहूर्तन्यूनत्वेपूर्वा ॥

सप्तमी, अष्टमी और नवमी आदि तीन दिनोंमें पत्रिकापूजन करना. तहां सप्तमी आदि तीन तिथि सूर्योदयविषे २ घटीकामात्रभी लेनी. तिस पत्रिकापूजनविषे अधिवासन आदि प्रयोगका विस्तार **कौस्तुभ** आदि ग्रंथोंमें देख लेना. सप्तमीसें तीन रात्रि ऐसा जो नवरात्रसंबंधी कर्म करते हैं, तहां सप्तमी सूर्यके उदयके उपरंत २ घटीकासें अधिकव्यापिनी लेनी उचित है. २ घटीकासें कम सप्तमी होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी.

अथमहाष्टमीघटिकामात्राप्यौदयिकीनवमीयुताग्राह्या सप्तमीस्वल्पयुतासर्वथात्याज्यायदा तुपूर्वत्रसप्तमीयुतापरत्रोदयेनास्तिघटिकान्यूनावावर्ततेतदापूर्वासप्तमीविद्धापिग्राह्या इयंभौमवारेतिप्रशस्ता यदाचपूर्वदिनेषष्टिघटिकाष्टमीपरदिनेमुहूर्तादिव्यापिनीतदानवमीयुतामप्युत्तरांत्यक्त्वासंपूर्णत्वात्पूर्वैवग्राह्या एवंनवम्याःक्षयवशेनदशमीदिनेसूर्योदयोत्तरमनुवृत्त्यभावेऽष्टमींनवमीयुतामौदयिकीमपित्यक्त्वासप्तमीयुतैवाष्टमीग्राह्या अष्टम्यांपुत्रवतोपवासोनकार्यः कुलाचारप्राप्तौकिंचिद्भक्ष्यंप्रकल्प्यकार्यः महानवमीतुबलिदानव्यतिरिक्तविषयेपूजोपोषणादावष्टमीविद्धाग्राह्या साचयदिअष्टमीदिनेसायंत्रिमुहूर्तास्यात्तदैवग्राह्यात्रिमुहूर्तन्यूनत्वेपरैवग्राह्या नवमीप्रयुक्तमहाबलिदानेतुदशमीविद्धायदाशुद्धाधिकानवमीतदाबलिदानमपिपूर्णत्वात् पूर्वत्रैवकार्यं अष्टमीनवम्योःसंधौपूजोक्तासाष्टमीनवम्योःपृथक्त्वेदिवारात्रौवाष्टम्यंतनाडीनवम्याद्यनाड्योःकार्या यदितुह्यष्टमीनवम्योर्मध्यान्हेऽपराण्हेवायोगस्तदाष्टमीनवमीपूजयोरप्येकदिनेएवप्राप्तेरष्टमीनवमीपूजांतत्संधिपूजांचतंत्रेणकरिष्ये इतिसंकल्प्यतंत्रेणपूजाकार्या यदिशुद्धाधिकाष्टमीतदापूर्वेद्युरष्टमीपूजापरेद्युःसंधिपूजानवमीपूजयोस्तंत्रं अत्रनवरात्रेस्वयंपूजा

दिकंकर्तुमशक्तावन्येनकारयेत् षोडशोपचारपूजाविस्तारंकर्तुमशक्तोगंधादिपंचोपचारपूजांकुर्यात् नवम्यांपूजांविधायहोमःकार्यः केचिदष्टम्यामेवहोमइत्याहुः अन्येतुअष्टम्यामुपक्रम्य नवम्यांहोमःसमापनीयः सचारुणोदयमारभ्यसायंकालपर्यंतमष्टमीनवम्योःसंधौसंभवति निशायांतत्संधौतुरात्रौहोमादेरयोग्यत्वान्नवम्यामेवहोमोपक्रमसमाप्तीकार्येइत्याहुः अत्रयथा कुलाचारंव्यवस्था सचहोमोनवार्णवमंत्रेणकार्यः अथवाजयंतीमंगलाकालीतिश्लोकेन अथवा नमोदेव्यैमहादेव्यैइतिश्लोकेन अथवासप्तशतीश्लोकैः अथवासप्तशतीस्तोत्रस्यसप्तशतमंत्रैः कवचार्गलाकीलकरहस्यत्रयश्लोकसहितैर्होमःसप्तशतमंत्रविभागोन्यत्रज्ञेयःअत्रापिविकल्पेषु यथाकुलाचारंव्यवस्था होमद्रव्यंसर्पिर्मिश्रितंशुक्लतिलमिश्रंचपायसंकेवलतिलैर्वाहोमः क्वचित्किंशुकपुष्पदूर्वासर्षपलाजपूगयवश्रीफलरक्तचंदनखंडनानाविधफलानामपिपायसेमिश्रणं कार्यमित्युक्तं होमश्चजपदशांशेनकार्यःकुलाचारप्राप्तश्चेन्नृसिंहभैरवादिदैवत्यमंत्रहोमोपिकार्यः अत्रसविस्तरःसग्रहमखोहोमप्रयोगःकौस्तुभेज्ञेयः ॥

अब महाअष्टमीका निर्णय कहताहुं.

महाअष्टमी १ घटीका मात्रभी उदयकालव्यापिनी होवै तौ नवमीसें युत हुई लेनी. अल्प सप्तमीसें युत हुई भी अष्टमी त्यागनी. जब पूर्वदिनमें सप्तमीसें युत होवै और परदिनमें उदयकालमें नहीं होवै अथवा १ घटीका अथवा १ घटीकासें भी कम होवै तब पहली सप्तमीसें विद्ध हुई भी लेनी. यह अष्टमी मंगलवारके योगसें युत हुई अति श्रेष्ठ होती है. जब पूर्वदिनमें ६० घटीका अष्टमी होवै और परदिनमें २ घटीका आदिसें व्याप्त होवै तब नवमीसें युत हुई परविद्धाकों त्यागकर संपूर्णतासें पहलीही लेनी. ऐसेही नवमीके क्षयके वशकरके दशमीके दिनमें सूर्यके उदयके उपरंत अल्पभी शेषका अभाव होवै तौ नवमीसें युत हुई और उदयकालव्यापिनी ऐसी नवमीका त्याग करके सप्तमीसें युत हुई अष्टमी लेनी उचित है. अष्टमीकों पुत्रवाले मनुष्यनें उपवास करना नहीं. कुलाचारकी प्राप्तिमें कछुक भक्ष्य पदार्थका उपाहार करके उपवास करना. बलिदानसें रहितविषयक पूजा और उपवास आदिमें महानवमी अष्टमीसें विद्ध हुई लेनी. जब नवमी अष्टमीके दिनमें सायंकालमें ६ घटीकापरिमित होवै तौ तिस दिनकीही ग्रहण करनी. ६ घटीकाओंसें कम होवै तौ परविद्धा लेनी. नवमीप्रयुक्त महाबलिदानमें तौ दशमीसें विद्ध हुई लेनी. शुद्धा और अधिका ऐसी नवमी होवै तब तिथिके संपूर्णपनेसें बलिदानभी पूर्वदिनमेंही करना. अष्टमी और नवमीकी संधिमें जो पूजा कही है वह अष्टमी और नवमीकी पृथक्तामें दिनविषे अथवा रात्रिविषे अष्टमीके अंतकी एक घटीका और नवमीके आदिकी एक घटीका इन दो घटीकाओंमें पूजा करनी. जो अष्टमी और नवमीका मध्यान्हसमयमें अथवा अपराण्हसमयमें योग होवै तब अष्टमी और नवमीकी पूजा एक दिनमेंही प्राप्त होती है इसवास्ते **"अष्टमीनवमीपूजां तत्संधिपूजां च तंत्रेण करिष्ये"** ऐसा संकल्प करके तंत्रसें पूजा करनी. जो शुद्ध तथा अधिका अष्टमी होवै तौ पूर्वदिनमें अष्टमीकी पूजा और परदिनमें संधिकी पूजा और नवमीकी पूजा एकतंत्रसें करनी. जो नवरात्रमें आप पूजा करनेकों समर्थ नहीं होवै तौ दूसरेके द्वारा पूजा करवानी. षोडशोपचार पूजा करनेकों समर्थ नहीं

होवै तौ गंध आदि पंचोपचारसें पूजा करनी. नवमीमें पूजा करके होम करना. कितनेक ग्रंथकार अष्टमीमेंही होम करना ऐसा कहते हैं. अन्य किसीक ग्रंथकार तौ अष्टमीमें होमका आरंभ करके नवमीमें होम समाप्त करना ऐसा कहते हैं. वह होम अरुणोदयसें आरंभ करके सायंकालपर्यंत अष्टमी और नवमीकी संधिमें होता है. अष्टमी और नवमीकी संधि जो रात्रिमें होवै तौ रात्रिविषे होम आदिके अयोग्यपनेसें नवमीमेंही होमका आरंभ और समाप्ति करनी ऐसा कहते हैं. यहां अपने अपने कुलाचारके अनुसार व्यवस्था जाननी. वह होम नवार्णवमंत्रसें करना. अथवा **"जयंती मंगला काली०"** इस श्लोककरके अथवा **"नमो देव्यै महादेव्यै०"** इस श्लोककरके अथवा सप्तशतीके श्लोकोंसें अथवा कवच, अर्गला, कीलक, तीनों रहस्य इन्होंके श्लोकोंसहित दुर्गापाठके ७०० मंत्रोंसें होम करना. इन ७०० मंत्रोंका विभाग अन्य ग्रंथमें देख लेना. यहांभी विकल्पोंमें कुलाचारके अनुसार व्यवस्था जाननी. होमके द्रव्य घृतसें मिश्रित, अथवा सुपेद तिलोंसें मिश्रित ऐसे खीरसें अथवा अकेले तिलोंकरके होम करना. क्वचित् ग्रंथोंमें केशूके फूल, दूव, सरसों, धानकी खील, सुपारी, जव, नारियल, लाल चंदनके टुकडे और अनेक प्रकारके फल इन्होंकों खीरमें मिलाना ऐसा कहा है. जपके दशांशकरके होम करना उचित है. जो कुलाचार होवै तौ नृसिंह, भैरव आदि देवताके मंत्रोंसें भी होम करना. इसविषे विस्तारसहित ग्रहयज्ञका प्रयोग कौस्तुभमें देख लेना.

अथबलिदानं ब्राह्मणेनमाषादिमिश्रान्नेनकूष्मांडेनवाकार्यं यद्वाघृतमयंयवपिष्टादिमयंवा सिंहव्याघ्रनरमेषादिकंकृत्वाखड्गेनघातयेत् ब्राह्मणेनपशुमांसमद्यादिबलिदानेब्राह्मण्यभ्रष्टता सकामेनक्षत्रियादिनासिंहव्याघ्रनरमहिषच्छागसूकरमृगपक्षिमत्स्यनकुलगोधादिप्राणिस्वगात्ररुधिरादिमयोबलिर्देयः कृष्णसारमृगःक्षत्रियादिभिरपिनदेयः अत्रबलिदानमंत्रादिप्रकारःसिंधौज्ञेयः अत्रशतचंडीसहस्रचंडीप्रयोगःकौस्तुभादौज्ञेयः द्विविधाशौचेपिनवम्यांहोमघटादिदेवतोत्थापनंचब्राह्मणद्वाराकारयित्वा स्वयंपारणंकृत्वाशौचांतेब्राह्मणभोजनंदक्षिणादिदानंचकार्यं एवंरजस्वलापिपारणाकालेपारणंकृत्वाशुद्धौदानादिकंकुर्यात् विधवायास्तुरजोदोषेभोजननिषेधात्पारणापिशुद्ध्युत्तरमेव एवंव्रतांतरेप्यूह्यं प्रतिपदादियावदष्टमीलोहाभिसारिकंकर्मराज्ञांविहितं तत्रछत्रचामरादिराजचिन्हानांगजाश्वादीनांचापादिशस्त्राणांदुंदुभ्यादीनांचपूजाहोमादिकंकार्यं येहयान्पालयंतितेराजभिन्नाअपिस्वातीयुतामाश्विनप्रतिपदंद्वितीयांवारभ्यनवमीपर्यंतंवाजिनीराजनाख्यंकर्मकुर्युः तत्रोच्चैःश्रवःपूजारेवतपूजाचप्रतिमायांकार्या प्रत्यक्षंअश्वपूजानीराजनंचकार्यं कर्मद्वयेपितत्पूजामंत्राहोमादिमंत्राःसविस्तरप्रयोगश्चकौस्तुभे इदानीमश्ववंतः प्राकृतजनास्तुविजयादशम्यामश्वान्तोयेवगाह्यपुष्पमालाभिर्विभूष्याश्वशालायांप्रवेशयंति तत्रगंधर्वकुलजातस्त्वंमाभूयाःकुलदूषकःब्राह्मणःसत्यवाक्येनसोमस्यवरुणस्यच प्रभावाच्चहुताशस्यवर्धयत्वंतुरंगमान् रिपून्विजित्यसमरेसहभर्त्रासुखीभवेतिमंत्रेणकेवलाश्वपूजापिकर्तुमुचिता ॥

अब बलिदान कहताहुं.

ब्राह्मणनें उडद आदिसें मिश्रित किये अन्नकरके अथवा कोहलाकरके बलिदान करना, अथवा

घृत अथवा जवोंकी पीठीके सिंह, वघेरा, मनुष्य, बकरा इन आदिकों बनाय तिनका तलवारसें घात करना. ब्राह्मण, पशुमांस, मदिरा आदिके बलिदान करनेसें ब्राह्मणपनेसें भ्रष्ट होता है. कामनावाले क्षत्रिय आदिनें सिंह, वघेरा, मनुष्य, भैंसा, बकरा, शूर, मृग, पक्षी, मछली, नौला, गोह इन आदि जीव और अपने शरीरके रक्त आदिका बलिदान करना. कृष्णसारमृगका क्षत्रिय आदिनें भी बलि नहीं देना. इस बलिदानसंबंधी मंत्र आदिका प्रकार **निर्णयसिंधु** ग्रंथमें कहा है सो देख लेना. इस नवरात्रसंबंधी शतचंडीप्रयोग तथा सहस्रचंडीप्रयोग **कौस्तुभ** आदि ग्रंथोंमें कहा है सो देख लेना. सूतक और जननाशौच होवै तौभी नवमीके दिनका होम, घट आदि देवतोंका उत्थापन ब्राह्मणद्वारा करवायके आप पारणा करके सूतक और जननाशौचके अंतमें ब्राह्मणभोजन और दक्षिणा आदि दान करना. ऐसेही रजस्वला स्त्रीनेंभी पारणाकालमें पारणा करके शुद्धि हुए पीछे दान आदि करना. विधवा स्त्रीनें रजोदोषमें भोजनके निषेधसें पारणाभी शुद्धिके उपरंतही करनी. ऐसाही अन्यव्रतोंविषेभी विचार लेना. राजाओंनें प्रतिपदासें अष्टमीतक सब लोहाके शस्त्रोंकी स्थापना करनी. और छत्र, चवर आदि राजचिन्ह, हस्ती, घोडे इन आदि और धनुष आदि शस्त्र, नक्कारा आदि बाजे इन आदिकी पूजा और होम आदि करना. जो घोडोंकों पालते हैं वे राजा लोगोंसें भिन्नभी होवै तौभी तिन्होंनें स्वातीनक्षत्रसें युत हुई आश्विनकी प्रतिपदाकों अथवा द्वितीयाकों आरंभ करके नवमीपर्यंत **वाजिनीराजनाख्य** अर्थात् घोडोंकी आरती करनी तहां उच्चैःश्रवा अश्वकी और रेवत अश्वकी पूजा प्रतिमामें करनी. अश्वकी प्रत्यक्ष पूजा तथा आरती करनी. इन दोनों कर्मोंमें इन कर्मोंकी पूजाके मंत्र और होम आदिके मंत्र और विस्तारसहित प्रयोग **कौस्तुभ** ग्रंथमें कहे हैं. अब घोडोंवाले प्राकृत मनुष्य तौ इस विजयादशमीमें घोडोंकों पानीसें स्नान करवायके और पुष्पोंकी मालाओंसें अलंकृत करके अश्वशालामें रखते हैं. तहां—"**गंधर्वकुलजातस्त्वं माभूयाः कुलदूषकः ॥ ब्राह्मणः सत्यवाक्येन सोमस्य वरुणस्य च ॥ प्रभावाच्च हुताशस्य वर्धय त्वं तुरंगमान् ॥ रिपून् विजित्य समरे सह भर्त्रा सुखी भव**" इन मंत्रोंसें अकेले घोडेकी भी पूजा करनी उचित है.

अथपारणाविसर्जनयोःकालः तत्रविसर्जनंदशम्यांकार्यं दिनद्वयेदशमीसत्त्वेपूर्वदशम्यांश्रवणांत्यपादयोगेतत्रैवविसर्जनं तत्रतद्योगाभावेतुपरदशम्यामेव परत्रदशम्यभावेपूर्वनवम्यांनक्षत्रयोगेसत्यसतिवाकार्यं नक्षत्रयोगानुरोधेनक्रियमाणंविसर्जनमपराण्हेपिभवतिअन्यथाप्रातरेव तत्रमृदादिप्रतिमायाविसर्जनपूर्वकंजलादौत्यागःपरंपरयापूजितायाधातुप्रतिमायास्तुघटादिस्थानादुत्तिष्ठेत्यादिमंत्रैरुत्थापनमात्रंकार्यं नतुविसर्जनं यद्दिनेविसर्जनंतत्रैवानियमत्यागस्यौचित्यात् विसर्जनोत्तरंतद्दिनेएवपारणंकार्यं अन्येतुसत्यपिदशम्यांविसर्जनविधौनवम्यामेवपारणंकार्यं नवम्यांपारणंकुर्याद्दशम्यामभिषेकंचकृत्वामूर्तिविसर्जयेदित्यादिवचनादित्याहुः अत्रैवंव्यवस्था प्रथमदिनेस्वल्पाष्टम्यायुक्तानवमीद्वितीयदिनेपारणपर्याप्तनवम्यायुक्तादशमीतत्परदिनेश्रवणयुक्ताविसर्जनार्हादशमी तत्राष्टमीनवम्युपवासयोःप्रथमदिनेसिद्धत्वादवशिष्टनवम्यांपारणमवशिष्टदशम्यांविसर्जनं यदातुअवशिष्टनवमीदिनेएवदशमीश्रवणयुक्ताविसर्जनार्हातदाविसर्जनोत्तरंपारणं यदापूर्वदिनेषष्टिदंडाष्टमीपरदिनेष्टमीशेषयुतानवमीतत्परादि

नेनवमीशेषयुतादशमीतदा नवम्यायुक्तदशम्यामेवविसर्जनोत्तरंपारणा अथनवमीषष्टिदंडा द्वितीयदिनेनवमीशेषयुक्तादशमीतत्रापिनवम्यायुक्तदशम्यामेवविसर्जनपारणे यदातुअष्टमी नवमीदशम्यस्तिस्रोपितिथयःसूर्योदयमारभ्यास्तमयपर्यंतमखंडास्तत्तत्कृत्यपर्याप्तास्तदादाक्षिणात्यानांनवम्यामेवपारणाचारान्नवम्यामेवपारणविसर्जने येषांदशम्यामेवाचारस्तेषांतदुभयं दशम्यामेव ॥

अब पारणा और देवताओंके विसर्जनका काल कहताहुं.

देवताओंका विसर्जन करनेका सो दशमीमें करना. दोनों दिनोंमें दशमी होवै तौ पहली दशमीमें श्रवणनक्षत्रके अंतपादका योग होवै तौ तिस समयमेंही विसर्जन करना. तहां श्रवणनक्षत्र नहीं होवै तौ पिछली दशमीमेंही विसर्जन करना. परदिनमें दशमी नहीं होवै तौ प्रथम दिनकी दशमीमें श्रवणनक्षत्र होवै अथवा नहीं होवै तौभी विसर्जन करना. नक्षत्रके योगके अनुरोधकरके करनेका जो विसर्जन सो अपराह्णकालमेंही होता है. अन्यथा प्रातःकालमेंही विसर्जन करना. माटी आदिकी प्रतिमाका विसर्जन करके जल आदिमें त्याग करना. परंपराकरके पूजित करी हुई धातुकी प्रतिमाकों घटादि स्थानसें—"उत्तिष्ठ०" इस आदि मंत्रोंसें उत्थापन मात्र करना, विसर्जन नहीं करना. जिस दिनमें देवताका विसर्जन होवै तिस दिनमेंही नियमोंकों त्यागना उचित है. वास्ते विसर्जनके उपरंत तिसही दिनमें पारणा करनी. अन्य ग्रंथकार तौ दशमीमें विसर्जनकी विधि युक्त है तथापि नवमीमेंही पारणा करनी, क्योंकी "नवमीमें पारणा करनी और दशमीमें अभिषेक करके मूर्तिका विसर्जन करना" इस आदि वचनसें ऐसा कहते हैं. यहां इस प्रकार व्यवस्था है—प्रथम दिनमें स्वल्प अष्टमीयुत नवमी होवै और दूसरे दिनमें पारणाके समयतक नवमीसें युत दशमी होवै और तीसरे दिनमें श्रवणनक्षत्रसें युत और विसर्जनके योग्य ऐसी दशमी होवै तहां अष्टमी और नवमीके उपवास प्रथम दिनमें होते हैं, वास्ते शेष रही नवमीमें पारणा करके शेष रही दशमीमें विसर्जन करना. जब शेष रही नवमीके दिनमेंही श्रवणसें युत हुई दशमी विसर्जनके योग्य होवै तब विसर्जनकालके उपरंत पारणा करनी. जब पूर्वदिनमें साठ ६० घटीका अष्टमी होवै और परदिनमें अष्टमीके शेषसें युत हुई नवमी होवै और तीसरे दिनमें नवमीके शेषसें युत हुई दशमी होवै तब नवमीसें युत हुई दशमीमेंही विसर्जनके उपरंत पारणा करनी. जब पूर्वदिनमें नवमी साठ ६० घटीका होवै और द्वितीय दिनमें नवमीके शेषसें युत हुई दशमी होवै तहां भी नवमीसें युत हुई दशमीमेंही विसर्जन और पारणा करनी. जब अष्टमी, नवमी और दशमी ये तीनों तिथि सूर्योदयसें सूर्यके अस्तपर्यंत अखंडित होवैं और तिस तिस कार्यके योग्य होवैं तब दाक्षिण देशके लोकोंका आचार नवमीमेंही पारणा करनेका होनेसें नवमीमेंही पारणा और विसर्जन करने. जिन्होंका आचार दशमीके दिनमेंही पारणा करनेका होवै तिन्होंनें विसर्जन और पारणा दशमीमेंही करनी.

अथ विजयादशमी सा परदिनेएवापराह्णव्याप्तौपरा दिनद्वयेपराह्णव्याप्तौ दिनद्वयेपि श्रवणयोगेसत्यसतिवापूर्वा एवं दिनद्वयेऽपराह्णव्याप्त्यभावेपि श्रवणयोगसत्त्वासत्त्वयोः पूर्वैव दिनद्वयेपराह्णव्याप्त्यव्याप्त्योरेकतरदिनेश्रवणयोगे यद्दिनेश्रवणयोगःसैवग्राह्या एव

मपराण्हैकदेशव्याप्तावूह्यं यदापूर्वदिनेएवापराण्हव्याप्तापरदिनेचश्रवणयोगाभावःतदापिपूर्वैव यदातुपूर्वदिनेएवापराण्हव्यापिनीपरदिनेचमुहूर्तत्रयादिव्यापिनीअपराण्हात्पूर्वमेवसमाप्तापरत्रैवश्रवणयोगवती तदापरैव अपराण्हेदशम्यभावेपि यांतिथिंसमनुप्राप्यउदयंयातिभास्करइत्यादिसाकल्यवचनैः श्रवणयुक्तायाग्राह्यायाऔदयिकस्वल्पदशम्याःकर्मकालेसत्त्वापादनात् सिंधौतुइदंपरदिनेपराण्हकालेश्रवणसत्त्वेएवश्रवणस्याप्यपराण्हात्पूर्वमेवसमाप्तौतु पूर्वैवेत्युक्तं युक्तंचैतत् यदापरदिनेएवापराण्हव्याप्तिःपूर्वदिनेएवापराण्हात्परत्रसायान्हादौश्रवणयोगस्तदातुपरैवग्राह्येतिममप्रतिभाति अत्रापराजितापूजनंसीमोल्लंघनंशमीपूजनंदेशांतरयात्रार्थिनांप्रस्थानंचाविहितं तत्पूजाप्रकारस्तु अपराण्हेग्रामादीशान्यांदिशिगत्वाशुचिदेशेभुवमुपलिप्यचंदनादिनाष्टदलमालिख्यममसकुटुंबस्यक्षेमसिद्ध्यर्थं अपराजितापूजनंकरिष्येइतिसंकल्प्य मध्येअपराजितायैनमइत्यपराजितामावाह्यतद्दक्षिणेक्रियाशक्त्यैनमइतिजयांवामतःउमायैनमइतिविजयांचावाह्यअपराजितायैनमःजयायैनमःविजयायैनमःइतिनाममंत्रैःषोडशोपचारपूजांकृत्वाप्रार्थयेत् इमांपूजांमयादेवियथाशक्तिनिवेदितां रक्षार्थंतुसमादायव्रजस्वस्थानमुत्तममिति अथराज्ञःसंकल्पेयात्रायांविजयसिद्ध्यर्थमितिविशेषः पूजानमस्कारांते हारेणतुविचित्रेणभास्वत्कनकमेखला अपराजिताभद्ररताकरोतुविजयंममेत्यादिमंत्रैर्विजयंप्रार्थ्यपूर्ववद्विसृजेदितिसंक्षेपः ततःसर्वेजनाःग्रामाद्बहिरीशानदिगवस्थितांशमींगत्वापूजयेयुः सीमोल्लंघनंतुशमीपूजनात्पूर्वंपश्चाद्वाकार्यंराजातुअश्वमारुह्यसहपुरोहितःसामात्यःशमीमूलंगत्वावाहनादवरुह्य स्वस्तिवाचनपूर्वकंशमींसंपूज्यकार्योद्देशानमात्यैःसहसंवदन्प्रदक्षिणांकुर्यात् पूजाप्रकारस्तुममदुष्कृतामंगलादिनिरासार्थंक्षेमार्थंयात्रायांविजयार्थंचशमीपूजांकरिष्ये शम्यलाभेअश्मंतकवृक्षपूजांकरिष्येइतिसंकल्पः राजातुशमीमूलेदिक्पालपूजांवास्तुदेवतापूजांचकुर्यात् अमंगलानांशमनींशमनींदुष्कृतस्यच दुःखप्रणाशिनींधन्यांप्रपद्येहंशमींशुभामितिपूजामंत्रः पूजांते शमीशमयतेपापंशमीलोहितकंटका धरित्र्यर्जुनबाणानांरामस्यप्रियवादिनी करिष्यमाणयात्रायांयथाकालंसुखंमया तत्रनिर्विघ्नकर्त्रीत्वंभवश्रीरामपूजितेइतिप्रार्थयेत् अश्मंतकपूजने अश्मंतकमहावृक्षमहादोषनिवारण इष्टानांदर्शनंदेहिशत्रूणांचविनाशनमितिप्रार्थयेत् राजाशत्रोर्मूर्तिंकृत्वाशस्त्रेणविध्येत् प्राकृताःशमीशाखाश्छित्वाआनयंतितन्निर्मूलं गृहीत्वासाक्षतामार्द्रांशमीमूलगतांमृदं गीतवादित्रनिर्घोषैरानयेत्स्वगृहंप्रति ततोभूषणवस्त्रादिधारयेत्स्वजनैःसह नीराज्यमानःपुण्याभिर्युवतीभिःसुमंगलमिति अत्रदेशांतरंजिगमिषुभिर्विजयमुहूर्तेचंद्राद्यानुकूल्याभावेपिप्रयाणंकार्यं तत्रविजयमुहूर्तोद्विविधः ईषत्संध्यामतिक्रम्यकिंचिदुद्भिन्नतारकः विजयोनामकालोयंसर्वकार्यार्थसाधकइत्येकः एकादशोमुहूर्तोपिविजयःपरिकीर्तितः तस्मिन्सर्वैर्विधातव्यायात्राविजयकांक्षिभिरित्यपरः उक्तद्वयान्यतरमुहूर्तेदशमीयुक्तेप्रस्थानंकार्यंनत्वेकादशीयुक्ते आश्वयुक्शुक्लदशमीविजयाख्याखिलेशुभा प्रयाणेतुविशेषेणकिंपुनःश्रवणान्विता ज्योतिर्ग्रंथोक्तेरन्यान्यपिकर्माणिमासविशेषनिरपेक्षाण्यत्रचंद्राद्यानुकूल्याभावेप्यनुष्ठेयानिमासविशेषविहितानितुचूडाकर्मविष्ण्वादिदेवताप्रतिष्ठादीनि नकुर्यात् राज्ञांपट्टाभिषेकेनवमीविद्धादशमीश्रवणयुतापिनग्राह्याकिंत्वौदयिक्येवग्राह्या ॥

अब विजयादशमीका निर्णय कहताहुं.

वह परदिनमेंही अपराण्हकालव्यापिनी होवै तौ परविद्धा लेनी; दोनों दिनोंमें अपराण्हकालमें व्याप्ति होवै अथवा दोनों दिनोंमें श्रवणनक्षत्रका योग होवै अथवा नहीं होवै तब पूर्वविद्धाही लेनी. ऐसेही दोनों दिनोंमें अपराण्हकालमें व्याप्ति नहीं होवै और श्रवणनक्षत्रका योग होवै अथवा नहीं होवै तौ भी पूर्वविद्धाही दशमी लेनी. दोनों दिनोंमें अपराण्हव्याप्ति होवै अथवा नहीं होवै और एक कोईसे दिनमें श्रवणनक्षत्रका योग होवै तौ जिस दिनमें श्रवणनक्षत्रका योग होवै वही तिथि लेनी. दोनों दिनोंमें अपराण्हकालके एकदेशमें व्याप्ति होवै तबभी ऐसाही निर्णय जानना. जब पूर्वदिनमेंही अपराण्हकालव्याप्ति होवै और परदिनमें श्रवणनक्षत्रके योगका अभाव होवै तबभी पूर्वविद्धाही लेनी. जब पूर्वदिनमेंही अपराण्हकालव्यापिनी होवै और परदिनमें ६ घटीका आदि कालव्यापिनी होवै और अपराण्हकालके पहलेही समाप्त होती होवै और परदिनमें श्रवणनक्षत्रके योगसें युत होवै तब पिछलीही लेनी. क्योंकी, अपराण्हकालमें दशमी नहीं होवै तौभी, "जिस तिथिमें सूर्योदय होवै वह तिथि संपूर्ण जाननीं," इत्यादिक साकल्यबोधक वचनोंसें श्रवणनक्षत्रसें युत हुई और उदयकालव्यापिनी ऐसी स्वल्प दशमीभी कर्मकालमें ग्रहण करनी ऐसा कहा है. **निर्णयसिंधुग्रंथमें** तौ परदिनमें अपराण्हकालमें श्रवणनक्षत्र होवै तबभी परदिनकी ग्रहण करनी ऐसा कहा है. जो अपराण्हकालके पहलेही श्रवणनक्षत्रकी समाप्ति होवै तौ पहली दशमी लेनी ऐसा कहा है. और यह युक्त भी है. जब परदिनमेंही अपराण्हकालविषे व्याप्ति होवै और पूर्वदिनमेंही अपराण्हकालके पीछे सायान्हकाल आदिविषे श्रवणनक्षत्रका योग होवै तब परविद्धाही दशमी लेनी ऐसा मुझकों प्रतिभान होता है. यह विजयादशमीके दिन अपराजिता देवीका पूजन, सीमका उल्लंघन, शमीपूजन और देशांतरमें यात्रा करनेवालोंका प्रस्थान ये करने विहित हैं. **अपराजिताकी पूजाका प्रकार कहा जाता है**—अपराण्हकालविषे ग्रामसें ईशानदिशामें गमन करके पवित्र देशमें पृथिवीकों लीप चंदन आदिकरके अष्टदलकों लिखकर "**मम सकुटुंबस्य क्षेमसिद्ध्यर्थं अपराजितापूजनं करिष्ये**" इस प्रकार संकल्प करके अष्टदलके मध्यभागमें "**अपराजितायै नमः**" इस मंत्रसें अपराजिताका आवाहन करके पीछे अष्टदलके दक्षिणभागमें "**क्रियाशक्त्यै नमः**" इस मंत्रसें जयादेवीका आवाहन करके अष्टदलके वामे भागमें "**उमायै नमः**" इस मंत्रसें विजयाका आवाहन करके "**अपराजितायै नमः जयायै नमः विजयायै नमः**" इस प्रकार नाममंत्रोंसें षोडशोपचार पूजा करके प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—"**इमां पूजां मया देवि यथाशक्ति निवेदिताम् ॥ रक्षार्थं तु समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम्**" इस मंत्रकों कहना. राजाके संकल्पमें "**यात्रायां विजयसिद्ध्यर्थं**" इस प्रकार विशेष कहना. पूजा और नमस्कारके अंतमें "**हारेण तु विचित्रेण भास्वत्कनकमेखला ॥ अपराजिता भद्ररता करोतु विजयं मम**" इस आदि मंत्रोंसें विजयकी प्रार्थना करके पहलेकी तरह विसर्जन करना. ऐसा संक्षेप है. पीछे सब मनुष्योंनें ग्रामके बाहिर ईशान दिशामें अवस्थित हुई शमी अर्थात् जांटीके पास गमन करके तिसकी पूजा करनी. सीमका उल्लंघन शमीकी पूजाके पहले अथवा पश्चात् करना. पुरोहित और मंत्रियोंसहित राजानें घोडेपर बैठके शमीके मूलमें गमन करके

घोडापरसें नीचे उतरके स्वस्तिवाचनपूर्वक शमीकी पूजा करनी, पीछे कार्यके उद्देशसें मंत्री और नोकरोंके साथ अच्छीतरह बोलते हुए राजानें शमीकों प्रदक्षिणा करनी. शमीपूजाका प्रकार कहताहुं—“**मम दुष्कृतामंगलादिनिरासार्थं क्षेमार्थं यात्रायां विजयार्थं च शमीपूजां करिष्ये.**” शमी नहीं मिलै तौ “**अश्मंतकवृक्षपूजां करिष्ये**” इस प्रकार संकल्प करना. राजानें शमीके मूलमें दिक्पालोंकी और वास्तुदेवताकी पूजा करनी. “**अमंगलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च ॥ दुःखप्रणाशिनीं धन्यां प्रपद्येहं शमीं शुभाम्**” इस मंत्रसें शमीकी पूजा करनी. पूजाके अंतमें “**शमी शमयते पापं शमी लोहितकंटका ॥ धरित्र्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियवादिनी ॥ करिष्यमाणयात्रायां यथाकालं सुखं मया ॥ तत्र निर्विघ्नकर्त्री त्वं भव श्रीरामपूजिते**” इस मंत्रसें प्रार्थना करनी. अश्मंतक अर्थात् आपटा वृक्षके पूजनमें “**अश्मंतक महावृक्ष महादोषनिवारण ॥ इष्टानां दर्शनं देहि शत्रूणां च विनाशनम्**” इस मंत्रसें प्रार्थना करनी. राजानें वैरीकी मूर्ति बनायके शस्त्रसें काट डालनी. प्राकृत मनुष्य शमीकी शाखाओंकों काटके लाते हैं सो निर्मूल है. “चावलोंके अक्षतोंसहित शमीवृक्षके मूलकी गीली माटी ग्रहण करके गान, और वाजित्रोंकेसहित तिस माटीकों अपने घरमें ले आना. पीछे अपने मित्रोंसहित गहना और वस्त्र आदिका धारण करना. पीछे सुहागन स्त्रियोंसें अपनी मंगलआरती करानी.” देशांतरमें गमन करनेवाले मनुष्योंनें इस विजयमुहूर्तमें चंद्रमा आदि श्रेष्ठ नहीं होवै तबभी गमन करना उचित है. विजयमुहूर्त दो प्रकारका है. “कछुक संध्याकों उल्लंघित करके और कछुक तारे दीखने लगैं तब विजयनाम मुहूर्त जानना. यह सब कार्य और सब प्रयोजनोंका साधक है. इस प्रकार एक विजयमुहूर्त हुआ. सूर्योदयसें ग्यारमा मुहूर्तभी विजयनामक कहा जाता है. इस मुहूर्तमें विजयकी आकांक्षावाले सब मनुष्योंनें प्रयाण करना. यह दूसरा विजयमुहूर्त है. उपर कहे हुये दो प्रकारके इन मुहूर्तोंमें एक कोईसा मुहूर्त दशमीसें युक्त होवै तिसीमें प्रस्थान करना. एकादशीसें युक्त हुये विजयमुहूर्तमें प्रस्थान नहीं करना. “आश्विन शुदि दशमी विजया कहाती है. यह सब कार्योंमें शुभ है, और प्रयाणमें तौ विशेष शुभ है. फिर श्रवणनक्षत्रसें युत हुई दशमीकी कौन कथा है. अर्थात् श्रवणसें युत हुई दशमी बहुत उत्तम है” ऐसे ज्योतिषग्रंथोंके वचन हैं, वास्ते विशेष मासादिकोंकी अपेक्षासें रहित होनेवाले ऐसे जो अन्य कर्म सो विजयादशमीके दिनमें चंद्रमा आदि श्रेष्ठ नहीं होवै तबभी करने. मासविशेषकी अपेक्षावाले चूडाकर्म और विष्णु आदि देवताकी प्रतिष्ठा इन आदि कर्मोंकों नहीं करना. राजाओंके पदाभिषेकमें नवमीसें विद्ध हुई दशमी श्रवणसें युत हुईभी नहीं ग्रहण करनी, किंतु दूसरे दिनकी उदयकालव्यापिनी दशमी ग्रहण करनी.

आश्विनस्यशुक्लांदशमीमेकादशींपूर्णमासींवारभ्यमुहूर्तावशिष्टायांरात्रौ तीर्थादौगत्वाप्रत्यहंमासपर्यंतंकार्तिकस्नानंकार्यं तत्प्रकारः विष्णुंस्मृत्वादेशकालौसंकीर्त्य नमःकमलनाभाय नमस्तेजलशायिने नमस्तेस्तुहृषीकेशगृहाणार्घ्यंनमोस्तुते इत्यर्घ्यंदत्वा कार्तिकेहंकरिष्यामिप्रातःस्नानंजनार्दन प्रीत्यर्थंतवदेवेशदामोदरमयासह ध्यात्वाहंत्वांचदेवेशजलेस्मिन्स्नातुमुद्यतः तवप्रसादात्पापंमेदामोदरविनश्यतुइति मंत्राभ्यांस्नात्वापुनरर्घ्यंद्विर्दद्यात् तत्रमंत्रौ नित्येनैमि

त्तिकेकृष्णकार्तिकेपापनाशने गृहाणार्घ्यंमयादत्तंराधयासहितोहरे व्रतिनःकार्तिकेमासिस्नातस्यविधिवन्मम गृहाणार्घ्यंमयादत्तंराधयासहितोहरे कुरुक्षेत्रगंगापुष्करादितीर्थविशेषेणफलविशेषः अथान्योपिविशेषः कार्तिकंसकलंमासंनित्यस्नायीजितेंद्रियः जपन्हविष्यभुक्दांतः सर्वपापैःप्रमुच्यते स्मृत्वाभागीरथींविष्णुंशिवंसूर्यंजलेविशेत् नाभिमात्रेजलेतिष्ठन्व्रतीस्नायाद्यथाविधि इदंकार्तिकस्नानंप्रातःस्नानंप्रातःसंध्यांचकृत्वाकार्यं ताभ्यांविनेतरकर्मानधिकारात् यद्यपिप्रातःसंध्यायाःसूर्योदयेसमाप्तिस्तथाप्यत्रवचनबलादुदयात्पूर्वं संध्यांसमाप्यकार्तिकस्नानंकार्यमितिनिर्णयसिंधौउक्तं नैवंग्रंथांतरेदृश्यते एवंमासस्नानाशक्तौत्र्यहंस्नायात् अन्येषामपिकार्तिकमासव्रतानामत्रैवारंभः तानियथा तुलसीदललक्षेणकार्तिकेयोऽर्चयेद्धरिं पत्रेपत्रेमुनिश्रेष्ठमौक्तिकंलभतेफलं तुलसीमंजरीभिर्हरिहरार्चनेमुक्तिः फलंरोपणपालनस्पर्शैःपापक्षयःतुलसीछायायांश्राद्धात्पितृतृप्तिः तुलसीशोभितगृहेतीर्थरूपेयमकिंकरानायांतिइत्यादितुलसीमाहात्म्यं एवंधात्रीमाहात्म्यमपि कार्तिकेधात्रीवृक्षाधश्चित्रान्नैस्तोषयेद्धरिं ब्राह्मणान्भोजयेत्भक्त्यास्वयंभुंजीतबंधुभिः धात्रीछायासुश्राद्धंधात्रीपत्रैःफलैश्चहरिपूजनंचमहाफलं देवर्षिसर्वयज्ञतीर्थानांधात्रीवृक्षेनिवासोक्तेःअत्रैवहरिजागरविधिःजागरंकार्तिकेमासियःकुर्यादरुणोदये दामोदराग्रेसेनानीर्गोसहस्रफलंलभेत् शिवविष्णुगृहाभावेसर्वदेवालयेष्वपि कुर्यादश्वत्थमूलेषुतुलसीनांवनेष्वपि विष्णुनामप्रबंधानियोगायेद्विष्णुसन्निधौ गोसहस्रप्रदानस्यफलमाप्नोतिमानवः वाद्यकृत्पुरुषश्चापिवाजपेयफलंलभेत् सर्वतीर्थावगाहोत्थंनर्तकःफलमाप्नुयात् सर्वमेतल्लभेत्पुण्यंतेषांतुद्रव्यदःपुमान् अर्चनाद्दर्शनाद्वापितत्षडंशमवाप्नुयादितिकौस्तुभे सर्वाभावेब्राह्मणानांविष्णुभक्तानांवाश्वत्थवटयोर्वासेवनंकुर्यादितितत्रैव सरोरुहाणितुलसीमालतीमुनिपुष्पकं कार्तिकेविहितान्येवंदीपदानंचपंचमं कार्तिकेमासोपवासोवानप्रस्थयतिविधवाभिःकार्यःगृहस्थैर्नकार्यः कृच्छ्रंवाप्यतिकृच्छ्रंवाप्राजापत्यमथापिवा एकरात्रंव्रतंकुर्यात्त्रिरात्रव्रतमेववा शाकाहारंपयोहारंफलाहारमथापिवा चरेद्यवान्नाहारंवासंप्राप्तेकार्तिकेव्रती ॥

अब कार्तिकस्नानका निर्णय कहताहुं.

आश्विनकी शुदि दशमीकों और एकादशीकों अथवा पौर्णमासीकों कार्तिकस्नानका आरंभ करना. २ घटीकामात्र बाकी रही रात्रिमें तीर्थ आदिविषे गमन करके नित्यप्रति एक महीनापर्यंत कार्तिकस्नान करना. तिसका प्रकार कहताहुं.—विष्णुका स्मरण करके देश और कालका उंच्चार करके "नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने ॥ नमस्तेस्तु हृषीकेश गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते," इस मंत्रसें अर्घ्य देके, "कार्तिकेहं करिष्यामि प्रातःस्नानं जनार्दन ॥ प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर मया सह ॥ ध्यात्वाऽहं त्वां च देवेश जलेस्मिन् स्नातुमुद्यतः ॥ तव प्रसादात् पापं मे दामोदर विनश्यतु," इन मंत्रोंसें स्नान करके फिर दोवार अर्घ्य देना. तिसका मंत्र—"नित्ये नैमित्तिके कृष्ण कार्तिके पापनाशने ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं राधया सहितो हरे ॥ व्रतिनः कार्तिके मासि स्नातस्य विधिवन्मम ॥ गृहाणार्घ्यं मया दत्तं राधया सहितो हरे." कुरुक्षेत्र, गंगाजी, पुष्कर आदि विशेष तीर्थोंविषे फलविशेष जानना. इसके अनंतर अन्यभी विशेष प्रकार कहताहुं.—

" संपूर्ण कार्तिकमें नित्यप्रति स्नान करनेवाला, जितेंद्रिय, जप करनेवाला, हविष्यभोजन करनेवाला, काम क्रोध आदिकों दमन करनेवाला ऐसा मनुष्य सब पापोंसें छुट जाता है. " गंगाजी, विष्णु, महादेव और सूर्य इन्होंका स्मरण करके जलमें प्रवेश करना, और नाभिमात्र जलमें स्थित होके व्रती मनुष्यनें विधिपूर्वक स्नान करना. यह कार्तिकस्नान प्रातःस्नान और प्रातःसंध्या करके पीछे करना. प्रातःस्नान और प्रातःसंध्याके विना अन्य कर्मका अधिकार नहीं है. जोभी प्रातःसंध्याकी समाप्ति सूर्योदयमें होती है ऐसा है तौभी यहां वचनके बलसें उदयकालके पहलेही संध्या समाप्त करके कार्तिकस्नान करना—ऐसा प्रकार निर्णयसिंधुग्रंथमें कहा है. अन्य ग्रंथोंमें ऐसा नहीं कहा है. इस प्रकार एक महीनातक स्नान करनेका सामर्थ्य नहीं होवै तौ तीन दिन स्नान करना. कार्तिकमासके अन्य व्रतोंकाभी इसही दिनमें आरंभ करना. तिन व्रतोंकों दिखाताहुं.—" कार्तिकमासमें जो मनुष्य तुलसीके एक लाख दल अर्थात् पत्तोंकरके विष्णुकी पूजा करता है वह मनुष्य पत्तेपत्तेमें मुक्तिकों देनेवाले फलकों प्राप्त होता है. तुलसीकी मंजरियोंकरके विष्णु और शिवकी पूजा करनेसें मुक्ति प्राप्त होती है. तुलसीरोपण, पालन और स्पर्श करनेसें पापोंका क्षय होता है. तुलसीकी छायामें श्राद्ध करनेसें पितरोंकी तृप्ति होती है. तुलसीके विरवेसें शोभित किये हुए तीर्थरूप ऐसे गृहमें यमराजके दूत नहीं आते हैं." ऐसा तुलसीका माहात्म्य कहा है. ऐसाही आंवलेकाभी माहात्म्य कहा है. " कार्तिकमासमें आंवलाके वृक्षके नीचे अनेक प्रकारके अन्नोंकरके विष्णुकों प्रसन्न करना. ब्राह्मणोंकों भक्ति करके भोजन करवायके पीछे आपभी बंधुओंके साथ भोजन करना. आंवलाकी छायामें श्राद्ध करनेसें और आंवलाके पत्ते तथा फलोंकरके विष्णुका पूजन करनेसें उत्तम फल प्राप्त होता है. क्योंकी देवता, ऋषि, सब प्रकारके यज्ञ और सब तीर्थ इन्होंका निवास आंवलाके वृक्षमें है ऐसा वचन है." यह कार्तिकमहीनेमें विष्णुके जागनेका विधि करना. " कार्तिकमासमें विष्णुकी प्रतिमाके आगे जो मनुष्य अरुणोदयमें जागरण करता है तिसकों हे स्वामिकार्तिक हजार गायोंके दानका फल प्राप्त होता है. शिव और विष्णुके मंदिरमें जागरण करना. महादेव और विष्णुका मंदिर नहीं मिलै तौ सब देवताओंके मंदिरोंमें और पीपल वृक्षके मूलमें और तुलसियोंके बनोंमें जागरण करना. विष्णुके नामोंका गायन करके जो मनुष्य विष्णुके समीप जागरण करता है वह मनुष्य हजार गायोंके दानके फलकों प्राप्त होता है. विष्णुके समीप जो मनुष्य बाजाकों बजाता है वह वाजपेययज्ञके फलकों प्राप्त होता है. विष्णुके आगे नाचनेवाला मनुष्य सब तीर्थोंमें स्नान करनेके फलकों प्राप्त होता है. विष्णुके आगे जागरण करनेवाले आदिकोंकों द्रव्य देनेवाला मनुष्य सब प्रकारके पुण्योंकों प्राप्त होता है. तिन पुरुषोंके पूजन और दर्शन करनेसें मनुष्य पूर्वोक्त पुण्यसें छठे हिस्सेके पुण्यकों प्राप्त होता है," ऐसा कौस्तुभग्रंथमें कहा है. देवताका मंदिर आदिके अभावमें ब्राह्मणोंकी अथवा विष्णुके भक्तोंकी अथवा पीपलवृक्ष तथा वडकी सेवा करनी ऐसा कौस्तुभग्रंथमें कहा है. कमल, तुलसी, मालती अर्थात् चमेलीके पुष्प, अगस्तिवृक्षके पुष्प, और पांचमा दीपदान ये सब कार्तिकमासमें विष्णुकी पूजाविषे श्रेष्ठ हैं. कार्तिकमासमें वानप्रस्थ, संन्यासी, विधवा स्त्री इन्होंनें उपवास करना उचित है, गृहस्थियोंनें नहीं करना. कार्तिक-

मासमें व्रती मनुष्यनें कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र अथवा प्राजापत्य करना. अथवा एकरात्रव्रत और त्रिरात्रव्रत करना. अथवा शाकका भोजन अथवा दूधका पीना अथवा फलका भोजन अथवा जवोंका भोजन अथवा इन्होंमांहसें एक कोईसे व्रतकों करना.

अथकार्तिकेवर्ज्यानिपलांडुलशुनहिंगुछत्राकगृंजनमूलकालाबुशिग्रुवृंताककूष्मांडबृहतीफलकलिंगकपित्थतैललवणशाकद्विपाचितान्नपर्युषितान्नदग्धान्नानि माषमुद्गमसूरचणककुलित्थनिष्पावाढक्यादिद्विदलानिचवर्जयेत् सप्तम्यांधात्रीफलंतिलांश्चाष्टम्यांनालिकेरंरविवारेधात्रीफलंसर्वदावर्ज्यं ॥

अब कार्तिकमासमें वर्जनेंके योग्य पदार्थोंकों कहताहुं.

पियाज, ल्हस्सन, हींग, छत्राक, गाजर, मूली, तूंबी, सहोंजनाकी फली, बैंगन, कोहला, बडी कटेहलीका फल, इंद्रजव, कलिंगड, मतीराविशेष, कैथका फल, तेल, नमक, शाक, दोवार पकाया अन्न, बासी अन्न, दग्ध हुआ अन्न, उडद, मूंग, मसूर, चना, कुलथी, चौला, अर्हर आदि द्विदल अन्न, इन सबोंकों कार्तिकमासमें वर्ज देने. कार्तिककी सप्तमीमें आंवलाके फलकों और तिलोंकों वर्ज देना. अष्टमीमें नारियल और अंतवारमें आंवले, ये पदार्थ सब कालमें वर्जित करने.

कांस्यपात्रभोजनवर्जनव्रतेकांस्यपात्रंघृतपूर्णंदद्यात् मधुत्यागेघृतपायसशर्करादानंसमाप्तौ कार्यं तैलत्यागेतिलदानं कार्तिकेमौनभोजीसतिलांघंटांदद्यात् स्वर्णयुतानिमाषयुतानित्रिंशत्कूष्मांडान्यत्रमासेदद्यात् कार्तिकेकांस्यभोजीकृमिभुक् फलवर्जनेफलंरसत्यागेरसोधान्यत्यागेधान्यानिदेयानि सर्वत्रगोदानंवा एकतः सर्वदानानिदीपदानंतथैकतः कार्तिकेदीपदानस्य कलांनार्हंतिषोडशीं एतावद्व्रतासंभवेचातुर्मास्यव्रतासंभवेवाकार्तिकेकिंचिद्व्रतमवश्यंकार्यंअत्रतःकार्तिकोयेषांगतोमूढधियामिह तेषांपुण्यस्यलेशोपिनभवेत्सूकरात्मनामित्युक्तेः शालग्रामादिदेवताग्रेस्वस्तिकमंडलादिकंरंगवल्ल्यादिनाकरोतिसास्वर्गादिफलंभुक्त्वासप्तजन्मसुवैधव्यं नाप्नोति कार्तिकेपुराणेतिहासश्रवणारंभसमाप्तौविहिते ॥

अब व्रतके समाप्तिके दिन क्या दान करना सो कहताहुं.

कांसीके पात्रमें भोजन नहीं करना ऐसे व्रतमें घृतसें पूरित किये कांसीके पात्रका दान करना. शहदके त्यागमें समाप्तिविषे घृत, खीर, खांड इन्होंका दान करना. तेलकों त्यागनेमें तिलोंका दान करना. कार्तिकमासमें मौनसें भोजन करनेवाले मनुष्यनें तिलोंसहित घंटाका दान करना. अन्य महिनोंमें मौनसें भोजन किया होवै तौ सोना और उडदोंसें युक्त किये तीस ३० कोहलोंका दान करना. कार्तिकमासमें कांसीके पात्रमें भोजन करनेसें कीडोंका भोजन किया ऐसा होता है. फलोंके त्यागमें जिस फलका त्याग किया होवै तिस फलका दान करना. रसके त्यागमें तिस तिस रसका दान करना. धान्यके त्यागमें तिस तिस धान्यका दान करना. सब व्रतोंकी समाप्तिमें गौका दान करना. " एक तर्फ सब दान और एक तर्फ दीपकका दान है, अर्थात् सब दानोंमें दीपदान श्रेष्ठ है. वास्ते कार्तिकमासमें दीपदा-

नके सोलमें हिस्सेके फलकों अन्य कोईभी दान प्राप्त नहीं होता है." ये पूर्वोक्त व्रत नहीं हो सकै अथवा चातुर्मास्यव्रतभी नहीं हो सकै तब कार्तिकमासमें निश्चयकरके कोईकभी व्रत करना उचित है. जिन मनुष्योंका व्रतसें रहित कार्तिकमास व्यतीत हो जाता है तिन मूढबुद्धिवाले और शूरके समान शरीरवाले मनुष्योंकों पुण्यका लेशभी नहीं मिलता है ऐसा वचन है. शालग्राम आदि देवताके आगे स्वस्तिक, मंडल आदिकों जो स्त्री रोली आदिसें रचती है वह स्त्री स्वर्ग आदि फलकों भोगके सात जन्मोंतक विधवा नहीं होती है. कार्तिकमासमें पुराण और इतिहासके श्रवण करनेका आरंभ और समाप्ति करनी ऐसा कहा है.

तत्प्रकारःब्राह्मणंवाचकंकुर्यान्नान्यवर्णजमादरात् श्रावयेच्चतुरोवर्णान्कृत्वाब्राह्मणमग्रतः विस्पष्टमद्रुतंशांतंस्पष्टाक्षरपदंतथा कलास्वरसमायुक्तंरसभावसमन्वितं ब्राह्मणादिषुसर्वेषुग्रंथार्थंचार्पयेन्नृप यएवंवाचयेद्राजन्सविप्रोव्यासउच्यते समाप्तेषुपुराणेषुशक्त्यातंतर्पयेन्नृप वाचकः पूजितोयेनप्रसन्नास्तस्यदेवताः श्राद्धेयस्यद्विजोभुंक्तेवाचकःश्रद्धयान्वितःभवंतिपितरस्तस्यतृप्ता वर्षशतंनृपेति कार्तिकस्नानकालेऽभिलाषाष्टकंकाशीखंडोक्तंपुत्रकामेनपठितव्यं अत्रैवदुग्धव्रतंसमर्प्यदुग्धदानंकृत्वाद्विदलव्रतंसंकल्पयेत् अत्रोत्पत्तौयेषांदलद्वयंदृश्यतेतेवर्जनीयाइत्येके अन्यैस्त्वेवंलक्षणायांवचनाभावात्स्वरूपतोयेषांद्विदलंदृश्यतेतेवर्ज्यानतुअन्येनापिपत्रपुष्पादिकमित्याहुःएवमन्यान्यपितांबूलकेशकर्तनादिवर्जनरूपाणिव्रतानिज्ञेयानि अत्राकाशदीपउक्तः सूर्यास्तेगृहाददूरेपुरुषप्रमाणयज्ञियकाष्ठंभूमौनिखन्यतस्यमूर्ध्निअष्टदलाद्याकृतिनिर्मितेदीपयंत्रे मध्येमुख्यदीपं समंततोष्टाविति संस्थाप्यनिवेदयेत् दामोदरायनभसितुलायांदोलयासह प्रदीपंतेप्रयच्छामिनमोतंतायवेधसइतिमंत्रः एवंमासमाकाशदीपदानान्महाश्रीप्राप्तिः ॥

अब पुराणश्रवणका विधि कहताहुं.

"ब्राह्मणकों आदरसें वाचक बनाना, क्षत्रिय आदि वर्णसें जन्मे हुये मनुष्यकों वाचक नहीं बनाना. ब्राह्मणकों आगे करके चारों वर्णोंकों श्रवण करवाना. विशेषकरके स्पष्ट और जलदपनेसें वर्जित, स्पष्ट अक्षर और पदोंसें सहित कला और स्वरसें युक्त और रसभावसें समन्वित ऐसे ग्रंथके अर्थकों हे राजन् ब्राह्मण आदि सब वर्णोंके अर्थ कहना. इस प्रकार वाचन करता है, वह ब्राह्मण व्यासजी कहाता है. और हे राजन् पुराणोंकी समाप्तिमें शक्तिके अनुसार तिस वाचककों तृप्त करना. जिस मनुष्यनें वाचककी पूजा करी है तिस मनुष्यपर सब देव प्रसन्न होते हैं. जिसके श्राद्धमें श्रद्धासें समन्वित हुआ वाचक ब्राह्मण भोजन करता है, हे राजन् तिस मनुष्यके पितर सौ १०० वर्षोंतक तृप्त रहते हैं." कार्तिकस्नानकालमें काशीखंडविषे कहा अभिलाषाष्टक स्तोत्र पुत्रकी कामनावाले मनुष्यनें पठित करना उचित है. इसही दिनमें दुग्धव्रतकों समाप्त करके दूधका दान करना, और द्विदलव्रतका संकल्प करना. यह द्विदलव्रतमें उत्पत्तिकालमें जिन्होंकों दो दल दीखते हैं वे अन्न वर्जने उचित हैं, ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. अन्य ग्रंथकार तौ लक्षणामें वचनके अभावसें स्वरूपसेंही जिन्होंकों दो दल दीखते हैं वेही अन्न वर्जित हैं, अन्य नहीं; और पत्र, पुष्प आदि नहीं वर्जित हैं ऐसा कहते हैं. ऐसाही नागरपान वर्जना और क्षौर नहीं कराना आदि अन्यभी

व्रत जानने उचित हैं. यह कार्तिकमहीनेमें आकाशदीप लगाना ऐसा कहा है. तिसका प्रकार—सूर्यके अस्तके समयमें घरके समीप पुरुषप्रमाण अर्थात् साढे तीन हाथ प्रमाणवाले यज्ञके योग्य ऐसे काष्ठकों पृथिवीमें गाडके तिसके उपर अष्टदल आदि आकृतिसें रचित किये दीपयंत्रके मध्यमें मुख्य दीपककों स्थापित करके चारों तर्फ आठ दीपकोंको स्थापित करके देवताओंकों निवेदन करना. तिसका मंत्र—“**दामोदराय नभसि तुलायां दोलया सह ॥ प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोनंताय वेधसे,**” इस प्रकार एक महीनातक आकाशदीपकके लगानेसें बहुतसी लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है.

आश्विनपौर्णमास्यांकोजागरव्रतं सापूर्वत्रैवनिशीथव्याप्तौपूर्वा उत्तरदिनेएवदिनद्वयेपिवानिशीथव्याप्तौदिनद्वयेनिशीथास्पर्शेवाउत्तरैव केचित्पूर्वदिनेनिशीथव्याप्तिरेवपरदिनेप्रदोषव्याप्तिरेवतदापरेत्याहुः अत्रलक्ष्मींद्रयोःपूजनंजागरणमक्षक्रीडाचविहितातत्रपद्मासनस्थांलक्ष्मींध्यात्वाक्षतपुंजेॐलक्ष्म्यैनमइत्यावाहनादिषोडशोपचारैःसंपूज्य नमस्तेसर्वदेवानांवरदासिहरिप्रिये यागतिस्त्वत्प्रपन्नानांसामेभूयात्त्वदर्चनादितिपुष्पांजलिंदत्वानमेत् चतुर्दंतसमारूढोवज्रपाणिःपुरंदरः शचीपतिश्चध्यातव्योनानाभरणभूषितइतिध्यात्वाक्षतपुंजादौइंद्रायनमइतिसंपूज्य विचित्रैरावतस्थायभास्वत्कुलिशपाणये पौलोम्यालिंगितांगायसहस्राक्षायतेनमइति पुष्पांजलिंदत्वानमेत् नालिकेरोदकंपीत्वाअक्षक्रीडांसमारभेत् निशीथेवरदालक्ष्मीःकोजागर्तीतिभाषिणी तस्मैवित्तंप्रयच्छामिअक्षैःक्रीडांकरोतियः नालिकेरान्पृथुकांश्चदेवपितृभ्यः समर्प्यबंधुभिःसहस्वयंभक्षयेत् अस्यामेवाश्वयुजीकर्माश्वलायनैःकार्यं तच्चपर्वद्वैधेपूर्वाण्हेसंधौशेषपर्वणिप्रकृतीष्टिंकृत्वाकार्यं अपराण्हसंधौविकृतिमिमांकृत्वाप्रकृतेरन्वाधानं तत्प्रयोगोन्यत्रज्ञेयः ॥

अब कोजागरव्रत कहताहुं.

आश्विन शुदि पौर्णमासीमें कोजागरव्रत होता है. तिस व्रतमें पौर्णमासी पूर्वदिनमें अर्धरात्रव्यापिनी होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी. जो परदिनमेंही अथवा दोनों दिनोंमें अर्धरात्रव्यापिनी होवै अथवा दोनों दिनोंमें अर्धरात्रमें स्पर्शसें रहित होवै तब परविद्धा पौर्णमासी लेनी. कितनेक ग्रंथकार पूर्वदिनमेंही अर्धरात्रव्यापिनी होवै और परदिनविषे प्रदोषकालव्यापिनीही होवै तब परविद्धा पौर्णमासी लेनी ऐसा कहते हैं. इस व्रतमें लक्ष्मी और इंद्रकी पूजा करके जागरण और द्यूत (जूवा) खेलना ऐसा कहा है. तहां अक्षतोंके समूहमें पद्मासनमें स्थित हुई लक्ष्मीका ध्यान करके “**ॐ लक्ष्म्यै नमः**” इस मंत्रसें आवाहन आदि षोडशोपचारोंसें पूजा करनी, और “**नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये ॥ या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात्त्वदर्चनात्,**” इस मंत्रसें पुष्पांजलि देकर प्रणाम करना. पीछे “**चतुर्दंतसमारूढो वज्रपाणिः पुरंदरः ॥ शचीपतिश्च ध्यातव्यो नानाभरणभूषितः**” इस मंत्रसें ध्यान करके चावलोंके समूह आदिमें “**इंद्राय नमः**” इस मंत्रसें पूजा करके, “**विचित्रैरावतस्थाय भास्वत्कुलिशपाणये ॥ पौलोम्यालिंगितांगाय सहस्राक्षाय ते नमः,**” इस मंत्रसें पुष्पांजलि देके प्रणाम करना. “पीछे नारियलके पानीका पान करके जूवा खे-

लनेकों आरंभ करना. अर्धरात्रमें कौन जागता है ऐसा कहती हुई लक्ष्मी वरकों देती है. और कहती है की जो मनुष्य जूवा खेलता है तिसकों मैं धन देती हूं, ऐसा कहती है.” नारियल और चावलोंकी खीलोंकों देवता और पितरोंके लिये समर्पित करके बंधुओंकी साथ आप भक्षण करना. इसी पौर्णमासीमें आश्वलायनोंनें आश्वयुजीकर्म करना. दो प्रकारके पर्व होवैं तौ पूर्वाण्हकी संधिविषे शेषपर्वमें पहले प्रकृतिइष्टि करके तिसके अनंतर आश्वयुजीकर्म कराना. अपराण्हसंधिविषेभी इस विकृतिकों करके प्रकृतिका अन्वाधान कराना. तिसका प्रयोग अन्य ग्रंथमें देख लेना.

अथाग्रयणकालः आश्विनकार्तिकयोःपूर्णमास्याममावास्यायांवाशुक्लपक्षगतकृत्तिकादिविशाखांतनक्षत्रेषुशुक्लपक्षस्थरेवत्यांवाव्रीह्याग्रयणं एवंश्रावणभाद्रपदयोरुक्तेषुपर्वसुनक्षत्रेषुवाश्यामाकाग्रयणं चैत्रवैशाखयोःपर्वादिषुयवाग्रयणं तत्रपूर्णमासीपर्वणिसंगवात्पूर्वसंधौपूर्वदिनेआग्रयणंकृत्वाप्रकृत्यन्वाधानं मध्यान्हात्परसंधौसंधिदिनेआग्रयणंकृत्वाप्रकृत्यन्वाधानंमध्याह्नेसंगवादूर्ध्वंमध्याह्नात्पूर्वत्रवासंधौसंधिदिनेआग्रयणेष्टिंकृत्वाप्रकृतीष्टिःसद्यःकार्या दर्शेतुपूर्वाह्नेपराह्नेवासंधौयथाकालंदर्शेष्टिंकृत्वाप्रतिपन्मध्येआग्रयणेष्टिःकार्या एवंनक्षत्राग्रयणपक्षेपिपौर्णमासेष्टेःप्राक्दर्शेष्टेःपरंयथाभवेत्तथाग्रयणंकार्यं तथाचदीपिकादर्शेष्ट्याःपरमुक्तमाग्रयणकंप्राक्पौर्णमासाच्चतदिति यद्यपिअथोपूर्वाह्नपर्वक्षयइत्युपक्रमात्पूर्वाह्नसंधावेवायंक्रमइतिहेमाद्रिसिद्धांतानुसारिदीपिकामतं तथापिसर्वावस्थेसंधावित्थमेवक्रमइतिकौस्तुभसिद्धांतानुसार्यत्रत्यसिद्धांतोज्ञेयः अत्रपक्षेअथोपदंचार्थेयोज्यं पूर्वाह्नेपर्वक्षयेचेत्यर्थः इत्थंचकृष्णपक्षेनभवतीतिसिद्धं एतद्दीपिकाकारमतममावास्यापर्वण्याग्रयणविधानस्याखंडदर्शेवैयर्थ्यापत्त्यानयुक्तमितिगृह्याग्निसागरोक्तिर्नसमीचीनाप्रतिभाति विकृत्यंतराणांखंडपर्वणिप्रकृत्युत्तरंप्रतिपद्यनुष्ठानेपिपर्वानुग्रहसंमतिवदखंडदर्शेपिप्रतिपदिक्रियमाणाग्रयणस्यदर्शपर्वानुग्रहसंमतिसंभवात् खंडदर्शेदर्शपर्वविधानसार्थक्यसंभवाच्चेतिदिक् श्रावणादौश्यामाकाग्रयणंनकृतंचेच्छरदिव्रीह्याग्रयणेनसमानतंत्रंकार्यं तत्रस्मार्तेव्रीह्याग्रयणंश्यामाकाग्रयणंचतंत्रेणकरिष्ये इतिसंकल्प्यैंद्राग्निविश्वेदेवार्थाष्टौव्रीहिमुष्टीन्निरूप्यशूर्पांतरेश्यामाकान्सोमायनाम्नानिरूप्यपुनःप्रथमशूर्पेद्यावापृथिव्यर्थंव्रीहिनिर्वापःएवंहोमेपिविश्वेदेवहोमात्परंसौम्यश्यामाकचरुंहुत्वाद्यावापृथिवीहोमः आश्विनपौर्णमास्यामपराह्नादिसंधावाग्रयणेक्रियमाणेआश्वयुजीकर्मणापिसमानतंत्रताकार्या तथाचजीर्णव्रीहिचरुर्नवव्रीहिचरुःनवश्यामाकचरुश्चेतिस्थालीत्रयेचरुत्रयं पूर्वाह्नादिसंधौतुसंधिदिनेप्रकृतियागोत्तरमाश्वयुजीपूर्वदिनेसंधिदिनेवाप्रकृतियागात्पूर्वमाग्रयणमितिकालैक्याभावान्नैकतंत्रता श्यामाकचर्वसंभवेश्यामाकतृणैःप्रस्तरंकृत्वास्रुवादुत्तरआस्तीर्यतत्रस्रुचोनिधानंतावतैवश्यामाकाग्रयणसिद्धिरितिवृत्तिकृन्नारायणः यवाग्रयणंतुकृताकृतंव्रीह्याग्रयणस्यवसंतपर्यंतंगौणकालः यवाग्रयणस्यवर्षर्तुपर्यंतं अनापदिगौणकालेकुर्वन्कालातिपत्तिप्रायश्चित्तपूर्वकमाग्रयणंकुर्यात् आपदिगौणकालेकुर्वन्प्रायश्चित्तंनकुर्यात् गौणकालेप्यतिक्रांतेवैश्वानरेष्टिप्रायश्चित्तंकृत्वातिक्रांताग्रयणंकुर्यात् स्मार्तेतुवैश्वानरदेवताकःस्थालीपाकोग्राह्यःयएवाहिताग्नेःपुरोडाशस्तएवौपासनाग्निमतश्चरवइत्युक्तेः प्रथमाग्रयणस्यशरदत्यये

विभ्रष्टेष्टिंतद्देवताकंस्थालीपाकंवाकृत्वा आगामिमुख्यकाले प्रथमाग्रयणंकार्यं गौणकालेप्रथमाग्रयणंनभवति अनारब्धानांदर्शपूर्णमासाग्रयणादीनांप्रायश्चित्तविकल्पाद्विभ्रष्टेष्टिरपिविकल्पिताज्ञेया आग्रयणमकृत्वाकिमपिनवोत्पन्नंसस्यंनभक्षणीयं अकृताग्रयणोश्नीयान्नवान्नंयदि वैनरः वैश्वानरायकर्तव्यश्चरुःपूर्णाहुतिस्तुवा यद्वासामिंद्ररायेतिशतवारंजपेन्मनुं ॥

अब आग्रयणका काल कहताहुं.

आश्विनकी अथवा कार्तिककी पौर्णमासीमें तथा अमावसमें शुक्लपक्षगत कृत्तिका आदि विशाखापर्यंत नक्षत्रोंमें अथवा शुक्लपक्षमें स्थित हुई रेवतीमें, व्रीहि अर्थात् चावलविशेष अन्नका आग्रयण कराना. ऐसेही श्रावण अथवा भाद्रपद महीनेमें पौर्णमासीकों अथवा अमावसकों अथवा पूर्वोक्त नक्षत्रोंमें शामक अन्नका आग्रयण कराना. चैत्र और वैशाखमें पौर्णमासी, अमावस, पूर्वोक्त नक्षत्र इन्होंमें जवोंका आग्रयण कराना. तहां पौर्णमासीपर्वमें संगवकालकी पहली संधिमें पूर्वसंधिविषे आग्रयण करके प्रिकृतिइष्टिका अन्वाधान कराना. मध्यान्हकालके पीछे संधि होवै तौ संधिके दिन आग्रयण करके प्रकृतिइष्टिका अन्वाधान कराना. मध्यान्हमें संगवकालके उपरंत अथवा मध्यान्हके पहले संधि होवै तौ संधिके दिनमें आग्रयणकी इष्टि करके प्रकृतिइष्टि उसी दिन करनी. अमावसविषे पूर्वाण्हमें अथवा अपराण्हमें संधि होवै तौ कालके अनुसार दर्शेष्टि करके प्रतिपदाके मध्यमें आग्रयणेष्टि करनी. ऐसेही नक्षत्राग्रयणपक्षमेंभी पौर्णमासीकी इष्टिके पहले और अमावसकी इष्टिके पीछे जैसा हो सकै तैसा आग्रयण करना. इस विषयमें **दीपिकाग्रंथ**विषे ऐसा कहा है की "आमवसकी इष्टिके पश्चात् और पौर्णमासीकी इष्टिके पहले आग्रयण कराना ऐसा कहा है." और जोभी "**अथो पूर्वाण्हपर्वक्षये**" इस आदि उपक्रमसें पूर्वाण्हकी संधिमें पर्वके क्षयसमयमें यह क्रम जानना. ऐसे **हेमाद्रि**के सिद्धांतके अनुसार **दीपिकाग्रंथ**का मत है. तथापि सब प्रकारकी संधिमें इस प्रकारही क्रम है ऐसे **कौस्तुभग्रंथ**के सिद्धांतके अनुसार सिद्धांत जानना उचित है. इस पक्षमें **अथो** पद चकारार्थमें योजना. और पूर्वाण्हमें और पर्वक्षयमें ऐसा अर्थ करना. इस प्रकार कृष्णपक्षमें आग्रयण नहीं होता है ऐसा सिद्ध हुआ है. अमावसपर्वमें आग्रयण ऐसा कहा है तिसकों अखंड अमावसमें व्यर्थपना प्राप्त होता है इस लिये यह दीपिकाकारका मत योग्य नहीं है. इस प्रकार **गृह्याग्निसागर** ग्रंथका मत है, सो योग्य नहीं है ऐसा मुझकों प्रतिभान होता है. क्योंकी खंडितपर्व होवै तब प्रकृतिके पश्चात् अन्य विकृति प्रतिपदामें किई जावै तौभी पर्वमें करनेके समान फल प्राप्त होता है. तैसेही अखंडित अमावसमेंभी प्रतिपदाविषे क्रियमाण आग्रयणकों अमावसपर्वके फलकी संमति मिलनेका संभव है. खंडित अमावसमें अमावसपर्वके विधानका सार्थकपना होता है ऐसा सिद्धांत जानना. जो श्रावण आदि महीनेमें शामक आदिका आग्रयण नहीं किया होवै तौ शरद ऋतुमें व्रीहि अन्नके आग्रयणके साथ समान तंत्रसें करना उचित है. तहां स्मार्ताग्निमें "**व्रीह्याग्रयणं श्यामाकाग्रयणं च तंत्रेण करिष्ये,**" इस प्रकार संकल्प करके इंद्र, अग्नि और विश्वेदेवता इन्होंके लिये व्रीहिकी आठ मुष्टियोंकों छाजविषे लेके अन्य छाजमें आठ मुष्टि शामकोंकों "**सोमाय०**"इस नामसें लेके प्रथम शूर्पमें "**द्यावापृथि-**

वी०” इस मंत्रसें देवताओंके लिये चावल लेने. ऐसेही होममेंभी विश्वेदेवताके होमके पीछे **सोमदेवताक** शामाकचरुका होम करके पीछे **द्यावापृथिवी** देवताओंका होम करना. आश्विनकी पौर्णमासीमें अपराण्हआदिकी संधिविषे आग्रयणकर्म क्रियमाण होवै तब आश्वयुजीकर्मके साथ समानतंत्रसें आग्रयण करना. तैसेही पुराने व्रीहि चावलोंका चरु और नवीन व्रीहि चावलोंका चरु और नवीन शामाकोंका चरु, इस प्रकार तीन पात्रोंमें तीन चरु अगल अलग करने. पौर्णमासीके दिनमें पूर्वाण्ह आदि संधि होवै तौ संधिदिनमें प्रकृतियज्ञके पश्चात् आश्वयुजीकर्म करके पूर्वदिनमें अथवा संधिदिनमें प्रकृतियज्ञके पहले आग्रयण करना. इस प्रकार दोनों कर्मोंका पृथक् पृथक् काल है इसवास्ते दो कर्म एकतंत्रसें नहीं करने. शामाकका चरु नहीं बन सकै तौ शामाकके तृणोंका प्रस्तर बनाय सो स्रुवके उत्तर भागमें आस्तृत करके तिसके उपर स्रुचापात्रका स्थापन करना, इतना करनेसें शामाकके आग्रयणकी सिद्धि होती है, ऐसा वृत्तिकार **नारायण** कहते हैं. यवोंका आग्रयण करना अथवा नहीं करना. व्रीहिके आग्रयणका वसंतऋतुपर्यंत गौणकाल जानना. जवोंके आग्रयणका वर्षाऋतुपर्यंत गौणकाल जानना. आपत्तिकालविषे आग्रयणके मुख्य कालका उल्लंघन हो जावै तब गौणकालमें पहले तिसका प्रायश्चित्त करके पीछे आग्रयण करना. आपत्कालविषे गौणकालमें आग्रयण करनेवाले मनुष्यनें प्रायश्चित्त नहीं करना. गौणकालमें आग्रयण नहीं बन सकै तौ वैश्वानरेष्टिरूप प्रायश्चित्त करके अतिक्रांत आग्रयण करना. स्मार्त अग्निकेविषे वैश्वानरदेवतावाला स्थालीपाक (चरु) ग्रहण करना. क्योंकी, “ अग्निहोत्रियोंके जो पुरोडाश हैं वेही स्मार्ताग्निवालोंके चरु हैं” ऐसा वचन है. प्रथम आग्रयण करनेका सो शरदऋतुमें करना. शरदऋतुमें प्रथमाग्रयण नहीं बन सकै तौ विभ्रष्टइष्टि अथवा तद्देवताक स्थालीपाक करके आगामि मुख्यकालमें प्रथम आग्रयण करना. गौणकालमें प्रथमाग्रयण नहीं होता है. नहीं प्रारंभित किये अमावस और पौर्णमास, आग्रयण इन आदिकोंका प्रायश्चित्त करनेमें विकल्प है अर्थात् प्रायश्चित्त करना अथवा नहीं करना ऐसा है. इसवास्ते विभ्रष्टइष्टिभी वैकल्पिक जाननी. आग्रयण किये विना कुछभी नवीन उत्पन्न हुआ अन्न आदि नहीं भक्षण करना. “जो मनुष्य आग्रयण कियेविना नवीन अन्नकों खाता है तिसनें वैश्वानरदेवताके अर्थ चरु अथवा पूर्णाहुति करनी अथवा **“समिंद्रराया०”** इस मंत्रका सौ १०० वार जप करना.”

अथाग्रयणानुकल्पाः पृथगाग्रयणप्रयोगाशक्तौप्रकृतीष्टिसमानतंत्राग्रयणप्रयोगः तत्रपौर्णमासेष्ट्यासमानतंत्रत्वेआदावाग्रयणप्रधानंपश्चात्प्राकृतप्रधानं दर्शेष्ट्यैकतंत्रत्वेपूर्वंदर्शेष्टिप्रधानयागःपश्चादाग्रयणप्रधानयागः अन्यत्पूर्वोत्तरांगजातमाग्रयणविकृतिसंबंध्येनकार्यं विरोधे वैकृतंतंत्रमितिसिद्धांतात् एतदसंभवेनवश्यामाकव्रीहियवैःपुरोडाशंकृत्वादर्शपौर्णमासौकुर्यात् यद्वानवव्रीह्यादिभिरग्निहोत्रहोमंकुर्यात् अथवानमान्नान्यग्निहोत्र्यागवाखादयित्वातस्याः पयसाग्निहोत्रंजुहुयात् यद्वानवान्नेनब्राह्मणान्भोजयेदितिसंक्षेपः इदंमलमासेनकार्यं गुर्वाद्यस्तेपिनकार्यमितिकेचित् जीर्णधान्यालाभेतुमलमासादौकार्यं ॥

अब आग्रयणके गौणकाल कहताहुं.

पृथक् आग्रयणका प्रयोग नहीं बन सकै तौ प्रकृतिइष्टिके साथ समानतंत्रसें आग्रयणका

प्रयोग करना. तहां पौर्णमासेष्टिके साथ एकतंत्रसें आग्रयण करना होवै तौ तिसके मध्यमें पहले आग्रयणका प्रधानकर्म करके पीछे प्रकृतिइष्टिका प्रधानकर्म करना. दर्शेष्टिके साथ एकतंत्रसें करना होवै तब प्रथम दर्शेष्टिका प्रधानकर्म करके पीछे आग्रयणका प्रधान कर्म करना. दूसरे, पहले और पीछेके अंगभूत कर्म आग्रयणविकृतिसंबंधी होवैं तौ वेही करने, इष्टिसंबंधी नहीं करने; क्योंकी कर्मका विरोध होवै तौ वैकृततंत्रसें करना, ऐसा सिद्धांत है. इस प्रकार भी नहीं बन सकै तौ नवीन शामाक, व्रीहि, और जव इन्होंका पुरोडाश करके दर्शपौर्णमास स्थालीपाक करने. अथवा नवीन व्रीहि आदि करके अग्निहोत्रसंबंधी होम करना. अथवा नवीन अन्न अग्निहोत्रकी गौसें भक्षण करवायके तिस गौके दूधकरके अग्निहोत्रके स्थानमें होम करना अथवा नवीन अन्नकरके ब्राह्मणोंकों भोजन देना, ऐसा संक्षेप है. यह आग्रयण कर्म अधिकमासमें नहीं करना. बृहस्पति आदिके अस्तमेंभी नहीं करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. पुराना अन्न नहीं मिलै तौ अधिकमास आदिमें आग्रयणकर्म करना.

अस्यामेवपौर्णमास्यांज्येष्ठापत्यनीराजनादिकंपरविद्धायांकार्यं ॥

इसी पौर्णमासीमें ज्येष्ठ अर्थात् बडा पुत्र और बडी कन्याकी आरती आदि कर्म करनेका सो प्रतिपदासें विद्ध हुई इस पौर्णमासीमें करना.

आश्विनकृष्णचतुर्थीकरकचतुर्थी साचंद्रोदयव्यापिनीग्राह्या द्विनद्वयेतद्व्याप्त्यादौसंकष्टचतुर्थीवन्निर्णयः ॥

आश्विन वदि चतुर्थी करकचतुर्थी होती है. यह चंद्रोदयव्यापिनी लेनी. दोनों दिन चंद्रोदयव्याप्ति, अव्याप्ति इस आदिमें संकटाचतुर्थीकी तरह निर्णय जानना.

कृष्णाष्टम्यांराधाकुंडेस्नानंमथुरामंडलवासिभिःकार्यं साअरुणोदयव्यापिनीतदभावेसूर्योदयव्यापिनीग्राह्या ॥

आश्विन वदि अष्टमीकों मथुरामंडलवासी मनुष्योंनें राधाकुंडमें स्नान करना. यहां अष्टमी अरुणोदयव्यापिनी लेनी. तिसके अभावमें सूर्योदयव्यापिनी लेनी.

आश्विनकृष्णद्वादशीगोवत्सद्वादशी साप्रदोषव्यापिनीग्राह्या दिनद्वयेतदव्याप्तौपरा सायंकालाख्यगौणकालेसत्त्वात् उभयत्रतद्व्याप्तौपूर्वेतिबहवः परेतिकेचित् अत्रवत्सतुल्यवर्णां सवत्सांपयस्विनींगांसंपूज्यगोपादेताम्रपात्रेणार्घ्यंदद्यात् तत्रमंत्रः क्षीरोदार्णवसंभूतेसुरासुरनमस्कृते सर्वदेवमयेमातर्गृहाणार्घ्यंनमोस्तुते ततोमाषादिवटकान्गोग्रासार्थंदत्वाप्रार्थयेत् सर्वदेवमयेदेविसर्वदेवैरलंकृते मातर्ममाभिलषितंसफलंकुरुनंदिनि तद्दिनेतैलपक्वंस्थालीपाकंगोक्षीरंगोघृतंगोदधितक्रंचवर्जयेत् नक्तंमाषान्नभोजनभूशय्याब्रह्मचर्यंचकार्यं इमामेवद्वादशीमारभ्यपंचसुदिनेषुपूर्वरात्रेनीराजनविधिर्नारदेनोक्तः नीराजयेयुर्देवांश्चविप्रान्गाश्चतुरंगमान् ज्येष्ठान्श्रेष्ठान्जघन्यांश्चमातृमुख्याश्चयोषितइति त्रयोदश्यामपमृत्युनाशार्थंयमायनिशामुखेबहिर्दीपोदेयः इमामेवत्रयोदशीमारभ्यगोत्रिरात्रव्रतमुक्तं तत्प्रयोगःकौस्तुभे ॥

आश्विन वदि द्वादशी गोवत्सद्वादशी कहाती है. वह प्रदोषव्यापिनी लेनी. दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी नहीं होवै तब परविद्धा लेनी. क्योंकी सायंकाल तिसका गौणकाल है, और तिसमें तिसकी व्याप्ति है. दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी, ऐसा बहुत ग्रंथकारोंका मत है. कितनेक ग्रंथकार परविद्धा लेनी ऐसा कहते हैं. यहां बछडाके समान वर्णवाली और बछडासहित दूध देनेवाली ऐसी गौकी पूजा करके गौके पादमें तांबाके पात्रसें अर्घ्य देना. तहां मंत्र—“**क्षीरोदार्णवसंभूते सुरासुरनमस्कृते ॥ सर्वदेवमये मातर्गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते.**” पीछे उडद आदिके वडोंकों गौकों खुवानेके लिये देके प्रार्थना करनी.—“**सर्वदेवमये देवि सर्वदेवैरलंकृते ॥ मातर्ममाभिलषितं सफलं कुरु नंदिनि.**” इस मंत्रसें प्रार्थना करनी. तिसदिनमें तेलविषे पकाये, पात्रमें पकाये, गौका दूध, गौकी दही, गौका घृत, गौका तक्र इन आदि पदार्थोंकों वर्ज करना. नक्तव्रत, उडदोंसें मिले अन्नका भोजन, पृथिवीपर शय्या और ब्रह्मचर्य ये करने उचित हैं. इसी द्वादशीमें आरंभ करके पांच दिनोंमें पूर्वरात्रिविषे आरती करनेकी विधि नारदजीनें कही है. “देव, ब्राह्मण, गौ, घोडे, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, कनिष्ठ, इन्होंकी माता आदि सब स्त्रियोंनें आरती करनी.” अपमृत्युकों दूर करनेके लिये त्रयोदशीमें रात्रिके मुखविषे घरके बाहिर दीपक लगाना. इसी त्रयोदशीकों आरंभ करके गोत्रिरात्रिव्रत करना. तिसका प्रयोग कौस्तुभग्रंथमें देख लेना.

आश्विनकृष्णचतुर्दश्यांचंद्रोदयव्यापिन्यांनरकभीरुभिस्तिलतैलेनाभ्यंगस्नानंकार्यं अत्ररात्र्यंत्ययाममारभ्यारुणोदयावधिस्ततश्चंद्रोदयावधिस्ततःसूर्योदयावधिरितिकालत्रयेपूर्वःपूर्वो जघन्यउत्तरउत्तरःश्रेष्ठःअतश्चंद्रोदयोत्तरोमुख्यकालः प्रातःकालोगौणः तत्रपूर्वदिनेएवचंद्रोदयव्याप्तौपूर्वा परत्रैवतद्व्याप्तौपरा अस्मिन्पक्षेतद्दिनेस्तमयादिकालेविहितमुल्कादानंदीपदानादिकंतत्कालेचतुर्दश्यभावेपिकार्यं दिनद्वयेचंद्रोदयव्याप्तौपूर्वा दिनद्वयेचंद्रोदयव्याप्तौपक्षत्रयं संभवति पूर्वत्रचंद्रोदयोत्तरमुषःकालंसूर्योदयंचव्याप्यप्रवृत्ताचतुर्दशीपरत्रचंद्रोदयात्पूर्वंसमाप्ता यथात्रयोदशीघट्यः ५८ पलानि ५० चतुर्दशी ५७ अस्मिन्प्रथमपक्षेउषःकालैकदेशे चतुर्दशीयुक्तेभ्यंगस्नानंकार्यं अथपूर्वत्रसूर्योदयमात्रंव्याप्यप्रवृत्तापरत्रचंद्रोदयात्पूर्वंसमाप्ताअथवासूर्योदयास्पर्शेनक्षयएवचतुर्दश्याः यथात्रयोदशी ५९।५९ चतुर्दशी ५७ यथावात्रयोदशी २ तद्दिनेचतुर्दशी ५४ अत्रपक्षद्वयेपरत्रचंद्रोदयेभ्यंगस्नानं चतुर्थयामादिजघन्यकाले चतुर्दशीव्याप्तिसत्त्वात् एतत्पक्षद्वयेकेचिदरुणोदयात्पूर्वमपिचतुर्दशीमध्येएवस्नानंकार्यमिति वदंति अपरेत्वरुणोदयोत्तरंचंद्रोदयादिकालेऽमावास्यायुक्तेपिस्नानमितिवदंति यत्तुचतुर्दशी क्षयेपूर्वत्रत्रयोदश्यांचंद्रोदयेस्नानमित्याहुस्तदयुक्तं अत्राभ्यंगस्नानेविशेषः सीतालोष्ठसमायुक्तसकंटकदलान्वित हरपापमपामार्गभ्राम्यमाणःपुनःपुनरितिमंत्रेणलांगलोद्धृतलोष्ठयुतापामार्गतुंबीचक्रमर्दनशाखानांस्नानमध्येत्रिवारंभ्रामणंकार्यं अभ्यंगस्नानोत्तरंतिलकादिकृत्वा कार्तिकस्नानंकार्यं उक्तकालेषुस्नानासंभवेसूर्योदयोत्तरंगौणकालेपियत्यादिभिरप्यवश्यमभ्यंगस्नानंकार्यं कार्तिकस्नानोत्तरंचयमतर्पणंकार्यं तद्यथा यमायनमः यमंतर्पयामीत्युक्त्वातिलमिश्रांस्त्रीनंजलीन्सव्येनापसव्येनवादेवतीर्थेनापितृपीर्थेनवादक्षिणामुखोदद्यात् एवमग्रेपि धर्मराजाय० मृत्यवे० अंतकाय० वैवस्वताय० कालाय० सर्वभूतक्षयाय० औदुंबराय० दध्ना

य० नीलाय० परमेष्ठिने० वृकोदराय० चित्राय० चित्रगुप्ताय० जीवत्पितृकस्तुयवैर्देवतीर्थेनसव्येनकुर्यात् ततःप्रदोषसमयेदीपान्दद्यान्मनोहरान् देवालयेमठेवापिप्राकारोद्यानवीथिषु गोवाजिहस्तिशालायामेवंघस्त्रत्रयेपिच तुलासंस्थेसहस्रांशौप्रदोषेभूतदर्शयोः उल्काहस्ता नराःकुर्युःपितृणांमार्गदर्शनं तत्रदानमंत्रः अग्निदग्धाश्चयेजीवायेप्यदग्धाःकुलेमम उज्ज्वलज्ज्योतिषादग्धास्तेयांतिपरमांगतिं यमलोकंपरित्यज्यआगतायेमहालये उज्ज्वलज्ज्योतिषावर्त्मप्रपश्यंतुव्रजंतुते अस्यांनक्तभोजनंमहाफलं ॥

आश्विन वदि चंद्रोदयव्यापिनी चतुर्दशीमें नरकका भय माननेवाले मनुष्योंनें तिलोंके तेलसें मालिस करके स्नान करना. यहां रात्रिके अंतके प्रहरसें आरंभ करके अरुणोदयपर्यंत और तिस्सें चंद्रोदयपर्यंत और तिस्सें सूर्योदयपर्यंत इन तीन कालोंमें पूर्व पूर्व क्रमसें गौण हैं और उत्तरोत्तर क्रमसें श्रेष्ठ हैं; इस कारणसें चंद्रोदयके पीछे मुख्यकाल है, और प्रातःकाल गौण है. तहां पूर्वदिनमेंही चंद्रोदयमें व्याप्ति होवै तब पूर्वविद्धा लेनी. परदिनमें चंद्रोदयविषे व्याप्ति होवै तब परविद्धा लेनी. इस चंद्रोदयव्याप्तिपक्षमें तिस दिनविषे अस्त आदि कालमें विहित उल्कादान और दीपकदान आदि, तिस कालमें चतुर्दशी नहीं होवै तबभी करना. दोनों दिन चंद्रोदयमें व्याप्ति होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी. दोनों दिन चंद्रोदयमें व्याप्ति नहीं होवै तब तीन पक्ष संभवते हैं. पूर्वदिनमें चंद्रोदयके उपरंत प्रातःकालमें और सूर्योदयमें प्रवृत्त हुई चतुर्दशी परदिनमें चंद्रोदयके पहले समाप्त हुई; जैसे—त्रयोदशी ५८ घडी और ५० पल होवै और चतुर्दशी ५७ घडी होवै, इस प्रथम पक्षमें प्रातःकालके चतुर्दशीसें युक्त हुये एकदेशमें अभ्यंग और स्नान करना. अब पूर्वदिनमें सूर्योदयमें व्याप्त होके प्रवृत्त हुई चतुर्दशी परदिनमें चंद्रोदयके पहले समाप्त होवै अथवा सूर्योदयकों नहीं स्पर्श करनेसें चतुर्दशीका क्षयही होवै; जैसे—त्रयोदशी ५९ घडी और ५९ पल होवै और चतुर्दशी ५७ घडी होवै अथवा यहां त्रयोदशी २ घडी होवै और तिस दिनमें चतुर्दशी ५४ घडी होवै, यहां दोनों पक्षोंमें परदिनविषे चंद्रोदयमें अभ्यंग और स्नान करना. क्योंकी, चतुर्थ प्रहर आदि गौण कालमें चतुर्दशीकी व्याप्ति होती है. इन दोनों पक्षोंमें कितनेक ग्रंथकार कहते हैं की, अरुणोदयके पहलेभी चतुर्दशीके मध्यमेंही स्नान करना. और अन्य ग्रंथकार अरुणोदयके उपरंत अमावससें युक्त हुये चंद्रोदय आदि कालमेंभी स्नान करना ऐसा कहते हैं. चतुर्दशीके क्षयमें पहले दिन त्रयोदशीविषे चंद्रोदयमें स्नान करना यह ठीक नहीं है. यह अभ्यंगस्नानमें विशेष है. **“सीतालोष्ठसमायुक्त सकंटकदलान्वित ॥ हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाणः पुनः पुनः”** इस मंत्रकरके हलसें उद्धृत करी माटी, ऊंगा, तूंबी, अपुवाड इन्होंकी शाखाओंकों स्नानके मध्यमें तीनवार अपने शरीरपर फिराने उचित हैं. अभ्यंगस्नानके उपरंत तिलक आदि करके कार्तिकस्नान करना. उक्त मुख्य कालोंमें स्नान नहीं हो सकै तौ सूर्योदयके उपरंत गौणकालमेंभी करना. संन्यासी आदियोंनेंभी निश्चयकरके अभ्यंगसहित स्नान करना. कार्तिकस्नानके उपरंत यमतर्पण करना. सो ऐसा,—**“यमाय नमः यमं तर्पयामि”** इस प्रकार कहके तिलोंसें मिश्रित तीन अंजलियोंकों सव्य अथवा अपसव्यकरके देवतीर्थसें[1] अथवा पितृतीर्थसें[2] दक्षिणके तर्फ मुखवाला होके देना. ऐसेही आ-

---

[1] देवतीर्थसें अर्थात् अंगुलियोंके अग्रसें. [2] पितृतीर्थसें अर्थात् अंगुष्ठ और तर्जनी इन्होंके मध्यभागसें.

गेभी "धर्मराजाय नमः धर्मराजं तर्पयामि ॥ मृत्यवे नमः मृत्युं त० ॥ अंतकाय नमः अंतकं त० ॥ वैवस्वताय नमः वैवस्वतं त० ॥ कालाय नमः कालं त० ॥ सर्वभूतक्षयाय नमः सर्वभूतक्षयं त० ॥ औदुंबराय नमः औदुंबरं त० ॥ दध्नाय नमः दध्नं त० ॥ नीलाय नमः नीलं त० ॥ परमेष्ठिने नमः परमेष्ठिनं त० ॥ वृकोदराय नमः वृकोदरं त० ॥ चित्राय नमः चित्रं त० ॥ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तं त० " इन मंत्रोंसें तर्पण करना. जीवते हुये पितावाले मनुष्यनें जवोंसें देवतीर्थकरके सव्य होके तर्पण करना. "पीछे प्रदोषसमयमें देवताके मंदिर, मठ, कोट, गामके समीप बाग, गली, गौ, घोडा, हस्ती इन्होंकी शाला इन्होंमें सुंदर दीप लगाने. और इसी तरह तीन दिनोंतक दीप लगाने." तुलाराशिपर सूर्य होवै तब प्रदोषसमयविषे चतुर्दशीमें और अमावसमें मसाल आदिकों हाथमें लेके पितरोंकों मार्ग दिखाना. तिसका मंत्र—"अग्निदग्धाश्च ये जीवा येप्यदग्धाः कुले मम ॥ उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यांति परमां गतिम् ॥ यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये ॥ उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यंतु व्रजंतु ते." इस चतुर्दशीमें नक्तभोजन करनेसें महाफल प्राप्त होता है.

अथाश्विनामावास्यायांप्रातरभ्यंगः प्रदोषेदीपदानलक्ष्मीपूजनादिविहितं तत्रसूर्योदयंव्याप्यास्तोत्तरंघटिकाधिकरात्रिव्यापिनिदर्शेसतिनसंदेहः अत्रप्रातरभ्यंगदेवपूजादिकंकृत्वापराह्णेपार्वणश्राद्धंकृत्वाप्रदोषसमयेदीपदानोल्काप्रदर्शनलक्ष्मीपूजनानिकृत्वाभोजनंकार्यं अत्रदर्शेबालवृद्धादिभिन्नैर्दिवानभोक्तव्यंरात्रौभोक्तव्यमितिविशेषोवाचनिकः तथाचपरदिनेएवदिनद्वयेवाप्रदोषव्याप्तौपरा पूर्वत्रैवप्रदोषव्याप्तौलक्ष्मीपूजादौपूर्वा अभ्यंगस्नानादौपरा एवमुभयत्रप्रदोषव्याप्त्यभावेपि पुरुषार्थचिंतामणौतुपूर्वत्रैवव्याप्तिरितिपक्षेपरत्रयामत्रयाधिकव्यापिदर्शापेक्षयाप्रतिपद्वृद्धिसत्त्वलेक्ष्मीपूजादिकमपिपरत्रैवेत्युक्तं एतन्मतेउभयत्रप्रदोषाव्याप्तिपक्षेपिपरत्रदर्शस्यसार्धयामत्रयाधिकव्यापित्वात्परैवयुक्तेतिभाति चतुर्दश्यादिदिनत्रयेपिदीपावलिसंज्ञकेयत्रयत्राह्निस्वातीनक्षत्रयोगस्तस्यतस्यप्राशस्त्यातिशयः अस्यामेवनिशीथोत्तरंनगरस्त्रीभिःस्वगृहांगणादलक्ष्मीनिःसारणंकार्यं इतिश्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेद्वितीयपरिच्छेदआश्विनमासकृत्यनिर्णयउद्देशःसमाप्तः ॥

आश्विनकी अमावसकों प्रातःकालविषे अभ्यंगस्नान करना. प्रदोषसमयमें दीपदान और लक्ष्मीपूजन आदि करना. तहां सूर्योदयमें व्याप्त होके अस्तकालके उपरंत एक घटीकासें अधिकव्यापी अमावस होवै तब संदेह नहीं है. यहां प्रातःकालमें अभ्यंग और देवपूजा आदि करके अपराह्णकालमें पार्वणश्राद्ध करना. प्रदोषसमयमें दीपदान, उल्कादर्शन और लक्ष्मीपूजन इन्होंकों करके भोजन करना. यहां अमावसमें बाल, वृद्ध आदिके विना अन्य मनुष्योंनें दिनमें भोजन नहीं करना. रात्रिसमयमें भोजन करना ऐसा विशेषवचन है. परदिनमेंही अथवा दोनों दिनोंमें प्रदोषसमयव्याप्ति होवै तब परविद्धा लेनी. पूर्वदिनमेंही प्रदोषविषे व्याप्ति होवै तब लक्ष्मीपूजा आदिमें पूर्वविद्धा अमावस लेनी. अभ्यंगस्नान आदिविषे परविद्धा लेनी. इस तरह दोनों दिन प्रदोषसमयव्याप्तिके अभावमेंभी जानना. पुरुषार्थचिंतामणिग्रंथविषे पूर्वदिनमेंही व्याप्ति होवै, इस पक्षमें परदिनविषे तीन प्रहरसें अधिक ऐसी अमावस होवै तब

अमावससें प्रतिपदाकी वृद्धि होवै तब लक्ष्मीपूजा आदिभी परदिनमेंही करनी ऐसा कहा है. इस मतमें दोनों दिन प्रदोषमें नहीं व्याप्ति होवै इस पक्षमें भी परदिनमें साढेतीन प्रहरसें अधिकव्यापि अमावस होनेसें परविद्धाही अमावस लेनी ऐसा भान होता है. चतुर्दशी आदि दीपावली अर्थात् दिवालीसंज्ञक तीन दिनोंमें जिस दिनविषे स्वातीनक्षत्रका योग होवै वही दिन अतिश्रेष्ठ होता है. अमावसके दिन अर्धरात्रके उपरंत नगरकी स्त्रियोंनें अपने अपने घरके आंगणमेंसें अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रकों निकासना. इति द्वितीयपरिच्छेदे आश्विनमासकृत्य **निर्णयो नाम सप्तम उद्देशः ॥ ७ ॥**

अथकार्तिकमासः वृश्चिकसंक्रांतौपूर्वाःषोडशनाड्यःपुण्याः शेषंप्राग्वत् अथकार्तिकशुक्लप्रतिपत्कृत्यं अत्राभ्यंगआवश्यकःएवंचचतुर्दश्यादिदिनत्रयेभ्यंगाद्युत्सवस्याकरणेनरकादिदोषश्रवणात्करणेलक्ष्मीप्राप्त्यलक्ष्मीपरिहारादिफलश्रवणाच्चनित्यकाम्योभयरूपत्वं अस्यांप्रतिपदिबलिपूजादीपोत्सवोगोक्रीडनंगोवर्धनपूजामार्गपालीबंधनं वष्टिकाकर्षणंनववस्त्रादिधारणाद्युत्सवोद्यूतंनारीकर्तृकनीराजनंमंगलमालिकाचेत्येवमादीनिकृत्यानि तत्रयदिउदयंव्याप्यदशमुहूर्ताप्रतिपत्तदाचंद्रदर्शनाभावाच्चंद्रदर्शनप्रयुक्तद्वितीयावेधनिषेधाप्रवृत्तेः सर्वकार्याणिपरप्रतिपद्येवभवंतिइष्टिनिर्णयप्रकरणेत्रिमुहूर्तद्वितीयाप्रवेशमात्रेणचंद्रदर्शनमुक्तंतत्सूक्ष्मदर्शनाभिप्रायं अत्रतुस्थूलदर्शनमेवनिषेधप्रयोजकंतच्चषण्मुहूर्तद्वितीयाप्रवेशएवेतिनविरोधइतिभातियदिनवममुहूर्तोनास्तितदाबलिपूजागोक्रीडागोवर्धनपूजामार्गपालीबंधनवष्टिकाकर्षणानि पूर्वविद्धप्रतिपदिकार्याणि अभ्यंगनववस्त्रादिधारणद्यूतनारीकर्तृकनीराजनमंगलमालिकादीनिऔदयिकमुहूर्तव्यापिन्यामपिकार्याणिबलिपूजादेःकेनचिन्निमित्तेनपूर्वविद्धायामनुष्ठानासंभवेपरविद्धायामनुष्ठानंकार्यंनतुकर्मत्यागस्तिथ्यंतरपरिग्रहोवा यथाबौधायनीयाद्यैःस्वस्वसूत्रोक्तानुष्ठानासंभवेआपस्तंबीयादिसूत्रोक्तानुष्ठानंकार्यंनतुकर्मलोपः शाखांतरपरिग्रहोवातद्वदिति माधवीयेस्पष्टं तत्रराजापंचवर्णरंगैर्बलिंद्विभुजमालिख्यअन्यजनाःशुक्लतंडुलैर्विरच्यपूजयेयुः तत्रमंत्रः बलिराजनमस्तुभ्यंविरोचनसुतप्रभो भविष्येंद्रसुराराते पूजेयंप्रतिगृह्यतां बलिमुद्दिश्ययत्किंचिद्दानकरणेऽक्षय्यविष्णुप्रीतिकरंतत् योयादृशेनभावेनतिष्ठत्यस्यांमुनीश्वर हर्षदैन्यादिरूपेणतस्यवर्षंप्रयातिहि अस्यांद्यूतंप्रकर्तव्यंप्रभातेसर्वमानवैः तस्मिन्द्यूतेजयोयस्यतस्यसंवत्सरेजयः विशेषवच्चभोक्तव्यंप्रशस्तैर्ब्राह्मणैःसह बलिराज्येदीपदानात्सदालक्ष्मीःस्थिराभवेत् दीपैर्नीराजनादत्रसैषादीपावलीस्मृता बलिराज्यंसमासाद्ययैर्नदीपावलीकृता तेषांगृहेकथंदीपाःप्रज्वालिष्यंतिकेशवेत्यादि ॥

अब कार्तिकमासके कृत्य कहताहुं.

वृश्चिकसंक्रांतिकी पहली सोलह घटीका पुण्यकाल है. शेष निर्णय पहलेकी तरह जानना. अब कार्तिक शुदि प्रतिपदाका कृत्य कहताहुं. इस प्रतिपदाके दिन अभ्यंग करना आवश्यक है. इसी प्रकार चतुर्दशी आदि तीन दिनोंमें अभ्यंग आदि उत्सव नहीं करनेमें नरक आदि दोष लगता है, और करनेमें लक्ष्मीकी प्राप्ति और दारिद्र्यका नाश होता है, इस वास्ते यह उत्सव नित्य और काम्य कहाता है. इस प्रतिपदामें बलिदैत्यकी पूजा, दीपो-

त्सव, गोक्रीडा, गोवर्धनपूजा, मार्गपालीबंधन, तृणोंकी डोरी, नवीन वस्त्र आदिका धारण आदि उत्सव, जूवा खेलना, नारीके हाथसें आरती करानी, मंगलमालिका इन आदि कृत्य करने. तहां जो उदयकों व्याप्त होके वीस घडी प्रतिपदा होवै तब चंद्रमाके दर्शनके अभावसें चंद्रदर्शनप्रयुक्त द्वितीयावेधके निषेधकी अप्रवृत्ति होती है, इसवास्ते सब कार्य परविद्धा प्रतिपदामेंही होते हैं. इष्टिनिर्णयके प्रकरणमें ६ घटीका द्वितीयाके प्रवेशमात्रकरके चंद्रमाका दर्शन कहा है वह सूक्ष्म दर्शनके अभिप्रायसें कहा है. यहां तौ स्थूलदर्शनही निषेधका प्रयोजक है और वह बारह घटीका द्वितीयाके प्रवेशमेंही है इसवास्ते विरोध नहीं है ऐसा भान होता है. जो नवमा मुहूर्त नहीं होवै तब बलिदैत्यकी पूजा, गोक्रीडा, गोवर्धनपूजा, मार्गपालीबंधन, तृणोंकी डोरी, ये सब कर्म पूर्वविद्धा प्रतिपदामें करने और अभ्यंग, नवीन वस्त्र आदिका धारण, जूवा खेलना, स्त्रियोंके हाथसें आरतीका होना, मंगलमालिका, इन आदि कर्म उदयविषे २ घटीकाव्यापिनी प्रतिपदामेंही करने. बलिपूजा आदि कृत्य किसीक निमित्तकरके पूर्वविद्धा प्रतिपदामें नहीं बन सकै तौ परविद्धा प्रतिपदामें करना, परंतु कर्मका त्याग नहीं करना, और दूसरी तिथिमें नहीं करना. जैसे बौधायनीयशाखी आदियोंनें अपने अपने सूत्रविषे कहे अनुष्ठानके असंभवमें आपस्तंब आदि सूत्रविषे कहा अनुष्ठान करना, परंतु कर्मका लोप नहीं करना और दूसरी शाखाकों ग्रहण नहीं करना तैसा यहभी करना, ऐसा माधवके ग्रंथमें कहा है. इस प्रतिपदाके दिन राजानें पांच वर्णवाले रंगोंकरके दो भुजावाले बलिकी मूर्ति लिखकर तिसकी पूजा करनी. अन्य मनुष्योंनें सुपेद चावलोंकरके मूर्ति रचके तिसकी पूजा करनी. तहां मंत्र—“**बलिराज नमस्तुभ्यं विरोचनसुत प्रभो ॥ भविष्येन्द्रसुराराते पूजेयं प्रतिगृह्यताम्.**” बलिदैत्यके उद्देशकरके जो दान किया जाता है वह अक्षय्य विष्णुकी प्राप्ति करनेवाला होता है. “हे मुनीश्वर, जो मनुष्य इस तिथिमें जिस तरहके भावसें स्थित होता है तैसे भावसें तिस मनुष्यका वर्ष व्यतीत होता है. अर्थात् दैन्यपनासें रहैगा तौ सब वर्ष दैन्यपनेमें व्यतीत होता है और हर्षमें रहैगा तौ सब वर्ष हर्षमें व्यतीत होता है. इसी तिथिमें प्रभातसमय सब मनुष्योंनें द्यूत अर्थात् जूवा खेलना. तिस जूवा खेलनेमें जिस मनुष्यका जय होता है तिसका वर्षदिनतक जय रहता है. सत्पात्र अर्थात् श्रेष्ठ ब्राह्मणोंके साथ भोजन करना. बलिराज्यके[1] दिनमें दीपकके दानसें सब कालमें लक्ष्मी स्थिर रहती है. दीपकोंसें आरती होनेकरके यह दीपावली कहाती है. बलिका दिन प्राप्त होके जिन्होंनें दीपावली नहीं करी है, हे केशव, तिन्होंके घरोंमें दीपक कैसे प्रकाशित होवैंगे” इस आदि वचनकों कहना.

अत्रलक्ष्मीपूजाकुबेरपूजाचोक्ता लक्ष्मीर्यालोकपालानांधेनुरूपेणसंस्थिता घृतंवहतियज्ञार्थे ममपापंव्यपोहतु अग्रतःसंतुमेगावोगावोमेसंतुपृष्ठतः गावोमेहृदयेसंतुगवांमध्येवसाम्यहं इतिमंत्राभ्यां गवांसवत्सानांबलीवर्दानांचपूजनंविभूषणंचकृत्वादोहनभारवाहनादिकंवर्जयेत्

इस प्रतिपदाके दिन लक्ष्मीजीकी पूजा और कुबेरकी पूजा कही है. “**लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता ॥ घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु ॥ अग्रतः संतु मे**

---

[1] आश्विन वदि चतुर्दशीसें कार्तिक शुदि द्वितीयातक जो चार दिन तिनकों बलिराज्य कहते हैं.

गावो गावो मे संतु पृष्ठतः ॥ गावो मे हृदये संतु गवां मध्ये वसाम्यहम्," इन मंत्रोंकरके बछडोंसहित गौओंकी और बैलोंकी पूजा करके पुष्पआदिकी मालाओंसें तिन्होंकों अलंकृत करना. तिस दिन दोहन और भारवहन आदिकों वर्जना.

अथगोवर्धनपूजा मुख्यगोवर्धनसान्निध्येतस्यैवपूजा तदसान्निध्येगोमयेनान्नकूटेनवागोवर्धनंकृत्वातत्सहितगोपालपूजाकार्या तत्र श्रीकृष्णप्रीत्यर्थंगोवर्धनपूजनगोपालपूजनात्मकंमहोत्सवंकरिष्यइतिसंकल्प्य बलिराज्ञोद्वारपालोभवानद्यभवप्रभो निजवाक्यार्थनार्थायसगोवर्धनगोपतेइतिमंत्रेणसगोवर्धनंगोपालमावाह्यस्थापयेत् ततो गोपालमूर्तेविश्वेशशक्रोत्सवविभेदक गोवर्धनकृतच्छत्रपूजांमेहरगोपते गोवर्धनधराधारगोकुलत्राणकारक विष्णुबाहुकृतच्छायगवांकोटिप्रदोभवेतिमंत्राभ्यां श्रीगोपालगोवर्धनौषोडशोपचारैःपूजयेत् तत्रयथावैभवं महानैवेद्योदेयः ततःतदंगत्वेनप्रत्यक्षधेनौमृद्धेनौवागोपूजांपूर्वोक्तमंत्राभ्यांकृत्वाआगावोअग्मन्प्रैतेवदंत्वितिऋग्भ्यांगृहसिद्धचरुहोमःकार्यः ब्राह्मणेभ्योन्नगवादिदानंगोभ्यस्तृणदानंगिरयेबलिदानंच ततोगोविप्रहोमाग्निगिरिप्रदक्षिणासहचरीभिर्गोभिर्युतैःकार्या ॥

अब गोवर्धनकी पूजाका विधि कहताहुं.

मुख्य गोवर्धन पर्वत जिनकों समीप होवै तिन्होंनें तिसी गोवर्धनकी पूजा करनी. मुख्य गोवर्धन दूर होवै तब गोवरकरके अथवा अन्नके समूहकरके गोवर्धनकों बनाय तिससहित गोपालकी पूजा करनी. तहां—"**श्रीकृष्णप्रीत्यर्थं गोवर्धनपूजनं गोपालपूजनात्मकं महोत्सवं करिष्ये,**" इस प्रकार संकल्प करके "**बलिराज्ञो द्वारपालो भवानद्य भव प्रभो ॥ निजवाक्यार्थनार्थाय सगोवर्धन गोपते,**" इस मंत्रकरके गोवर्धनसहित गोपालका आवाहन करके स्थापना करनी. पीछे—"**गोपालमूर्ते विश्वेश शक्रोत्सवविभेदक ॥ गोवर्धनकृतच्छत्र पूजां मे हर गोपते ॥ गोवर्धनधराधार गोकुलत्राणकारक ॥ विष्णुबाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव**" इन मंत्रोंकरके श्रीगोपाल और गोवर्धनजीकी षोडशोपचारोंसें पूजा करनी. तहां अपनी सामर्थ्यके अनुसार महानैवेद्य (अन्नका पर्वत) देना. पीछे तदंगताकरके प्रत्यक्ष गौकी अथवा माटीकी गौकी पूर्वोक्त मंत्रोंसें पूजा करके—"**आगावो अग्मन्० प्रैते वदंतु०**" इन मंत्रोंसें गृहसिद्ध चरुका होम करना. ब्राह्मणोंके लिये अन्नदान और गौ आदिका दान देना. और गौओंके लिये तृणदान देना और गोवर्धन पर्वतके लिये वलिदान देना. पीछे गौ, विप्र, होमका अग्नि, गोवर्धन इन्होंकी प्रदक्षिणा सहचरी गौओंके साथ करनी.

अथापराह्णेमार्गपालीबंधनं तत्रपूर्वस्यांदिशिकुशकाशमयरज्जुविशेषंयथाचारंकृत्वोच्चस्तंभेवृक्षेचबध्वा मार्गपालिनमस्तेस्तुसर्वलोकसुखप्रदे विधेयैःपुत्रदाराद्यैःपुनरेहिव्रतस्यमेइतिनमस्कृत्यप्रार्थ्यतदधोमार्गेणगोगजादिसहिताःविप्रराजादयःसर्वेगच्छेयुः एवंकाशादिमयींवर्ष्टिकांढढांकृत्वाएकतोराजपुत्राअन्यत्रहीनजातयोजयज्ञानार्थंकर्षयेयुः अत्रहीनजातिजयेराजजयः प्रातर्द्यूतंकार्यमित्युक्तं एवंनारीभिर्नीराजनमपिप्रातरेवकार्यं रात्रौगीतवाद्याद्युत्सवःकार्यःनवैर्वस्त्रैश्चसंपूज्याद्द्विजसंबंधिबांधवाइति ॥

इसके अनंतर अपराण्हमें मार्गपालीबंधन करना, सो ऐसा,–पूर्व दिशामें कुश और काशकी रज्जुविशेष आचारके अनुसार बनाय वह रज्जु उच्च स्तंभकों और वृक्षकों बांधके “**मार्गपालि नमस्तेस्तु सर्वलोकसुखप्रदे ॥ विधेयैः पुत्रदाराद्यैः पुनरेहि व्रतस्य मे,**” इस मंत्रसें प्रणाम और प्रार्थना करके तिसके नीचेसें गौ और हस्ती आदिसें सहित ब्राह्मण और राजा आदि सब लोकोंनें गमन करना. ऐसेही काश आदिसें बनी हुई तृणोंकी डोरी दृढ बनाय एक तर्फ राजाके पुत्र और एक तर्फ हीन जातिके मनुष्यनें जयकों जाननेके लिये खेंचना. यहां हीन जातिके जयमें राजाका जय होता है ऐसा जानना. इस प्रतिपदामें प्रातःकालविषे द्यूत अर्थात् जूवा खेलना. ऐसेही स्त्रियोंनें आरतीभी प्रभातमेंही करनी उचित है. रात्रिमें गीत और बाजा आदिसें उत्सव करना. “ नवीन वस्त्रोंकरके ब्राह्मण, अपने संबंधी और बांधवोंकी पूजा करनी.”

अथद्वितीया यमोयमुनयापूर्वंभोजितःस्वगृहेस्वयं अतोयमद्वितीयासाप्रोक्तालोकेयुधिष्ठिर अस्यांनिजगृहेनभोक्तव्यं यत्नेनभगिनीहस्ताद्भोक्तव्यं तेनधनधान्यसुखलाभः वस्त्रालंकरणैःसर्वाभगिन्यःपूज्याः स्वभगिन्यभावेमित्रादिभगिन्यःपूज्याः भगिन्याअपिभ्रातृपूजनेअवैधव्यंभ्रातुश्चिरजीवनंतदकरणेसप्तजन्मसुभ्रातृनाशः इयंपूर्वेद्युरेवापराह्णव्याप्तौपूर्वा उभयत्र व्याप्त्यव्याप्त्यादिपक्षांतरेषुपरैव अस्यांयमुनास्नानमपराह्णेचित्रगुप्तयमदूतसहितयमपूजनंयमायार्घ्यदानंचविहितं ॥

अब यमद्वितीयाका निर्णय कहताहुं.

“ पहले यमुनाजीनें अपने घरमें यमराजकों भोजन करवाया है, इसवास्ते हे युधिष्ठिर, लोकोंमें यह द्वितीयाकों **यमद्वितीया** ऐसा कहते हैं. ” इस द्वितीयामें अपने घरमें भोजन नहीं करना. यतन करके बहनके हाथसें भोजन करना. तिसकरके धन, अन्न, सुख इन्होंका लाभ होता है. वस्त्र और गहनोंकरके सब बहनकी पूजा करनी. अपनी बहनके अभावमें मित्र आदिकी बहन पूजनी. बहनभी भाईके पूजनसें विधवा नहीं होती है, और बहुत कालतक भाई जीता रहता है. इस कर्मकों नहीं करनेसें सात जन्मोंतक भाईयोंका नाश होता है. यह पूर्वदिनमें अपराण्हव्यापिनी होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी. दोनों दिनोंमें अपराण्हव्यापिनी होवै अथवा नहीं होवै इन पक्षांतरोमें परविद्धाही लेनी. इस द्वितीयामें अपराण्हकालविषे यमुनानदीमें स्नान करना. चित्रगुप्त और यमदूतोंसहित यमका पूजन और यमके अर्थ अर्घ्यका दान करना.

कार्तिकशुक्लषष्ठ्यांभौमयुतायांवह्निंसमभ्यर्च्यतत्प्रीत्यर्थंविप्रभोजनंकार्यं ॥

कार्तिक शुदि षष्ठीकों मंगलवार होवै तब अग्निकी पूजा करके तिसकी प्रीतिके लिये ब्राह्मणकों भोजन कराना.

कार्तिकशुक्लाष्टमीगोपाष्टमी अत्रगोपूजनगोप्रदक्षिणगवानुगमनैरिष्टकामावाप्तिः ॥

कार्तिक शुदि अष्टमी गोपाष्टमी कहाती है. यहां गौओंकी पूजा, गौओंकी प्रदक्षिणा और गौओंके साथ वनमें गमन करना, इन्होंकरके मनोवांछित फलकी प्राप्ति होती है.

कार्तिकशुक्लनवम्यांमथुराप्रदक्षिणोक्ता इयंयुगादिरपि अस्यांपूर्वाह्णव्यापिन्यामपिंडकं श्राद्धमुक्तं अत्रविशेषोवैशाखप्रकरणेउक्तः ॥

कार्तिक शुदि नवमीकों मथुरापुरीकी प्रदक्षिणा करनी. यह नवमी युगादि तिथि है. यह पूर्वाण्हव्यापिनी नवमीमें पिंडसें रहित श्राद्ध करना ऐसा कहा है. इसविषे विशेष विचार वैशाखप्रकरणमें कहा है.

एकादश्यादिदिनपंचकेभीष्मपंचकव्रतमुक्तं तच्चशुद्धैकादश्यामारभ्यचतुर्दश्यविद्धौदयिकपौर्णमास्यांसमापनीयं यदिशुद्धैकादश्यामारंभेक्षयवशेनपौर्णमास्यांपंचदिनात्मकव्रतसमाप्तिर्नघटतेतदाविद्धैकादश्यामप्यारंभः शुद्धैकादश्यामारंभेपिदिनवृद्धिवशेनपराविद्धपौर्णमास्यांसमापनेयदिषट्दिनापत्तिस्तदाचतुर्दशीविद्धपौर्णिमायामपिसमाप्तिःकार्याव्रतप्रयोगःकौस्तुभादौज्ञेयः कार्तिकमासेएकादश्यादिपर्वणिचंद्रतारादिबलान्वितेशिवाविष्णुमंत्रग्रहणादिरूपादीक्षाकर्तव्या कार्तिकेतुकृतादीक्षानृणांजन्मविमोचनीतिनारदोक्तेः तथात्रतुलसीकाष्ठमालाधारणमुक्तं स्कांदद्वारकामाहात्म्येविष्णुधर्मेच निवेद्यकेशवेमालांतुलसीकाष्ठसंभवां वहतेयोनरोभक्त्या तस्यनैवास्तिपातकं तुलसीकाष्ठसंभूतेमालेकृष्णजनप्रिये बिभर्मित्वामहंकंठेकुरुमांकृष्णवल्लभं एवंसंप्रार्थ्यविधिवन्मालांकृष्णगलेर्पितां धारयेत्कार्तिकेयोवैसगच्छेद्वैष्णवंपदमितिनिर्णयसिंधौस्पष्टं यत्तुतत्रैवमालाधारणप्रकरणांतेसर्वपुस्तकेष्वदृश्यमानमपि अत्रमूलंचिंत्यमितिवाक्यं क्वचिन्निर्णयसिंधुपुस्तकेदृश्यतेतस्यमालाधारणविधिवाक्यानांनाप्रामाणिकत्वेतात्पर्यं स्वयमेवस्कंदपुराणस्थविष्णुधर्मस्थत्वेनोक्तानांस्वयमेवाप्रामाणिकत्वोक्तौव्याघातप्रसंगात् तुलसीकाष्ठघटितैरुद्राक्षाकारकारितैः निर्मितांमालिकांकंठेनिधायार्चनमारभेत् तुलसीकाष्ठमालयाभूषितःकर्मआचरन् पितृणांदेवतानांचकृतंकोटिगुणंभवेत् इतिपद्मपुराणेपातालखंडेनवसप्ततितमाध्याये प्रत्यक्षोपलभ्यमानवचनविरोधाच्च किंत्वाषाढमासप्रकरणेआषाढशुद्धद्वादश्यामनुराधायोगरहितायांपारणंकार्यमित्युक्त्वा तत्रप्रमाणत्वेनाभाकासितपक्षेषुमैत्राद्यपादेस्वपितीहविष्णुरित्यादीनिभविष्यस्थविष्णुधर्मस्थानिवाक्यानिलिखित्वा यथांतेइदंनिर्मूलमित्युक्तंएवंप्रकरणांतरेपितस्यचमाधवादिमूलग्रंथेषुनोपलभ्यतेइत्येवतत्परिभाषातात्पर्यं नत्वप्रामाणिकत्वेतथात्वे भाद्रकार्तिकयोस्तद्वाक्यानुसारेणपारणनिर्णयलेखनासांगत्यप्रसंगात् कौस्तुभादिसर्वनवीनग्रंथेषुतद्वाक्यानुसारेणैवनिर्णयस्यासंगत्यापाताच्च सर्वशिष्टानांतदनुसारेणैवपारणाचरणस्याप्यप्रमाणत्वापत्तेश्चतद्वदत्रापिज्ञेयं एतेनमाधवादिष्वनुपलंभादेवाप्रामाण्यापत्तिरितिनिरस्तं बहूनांमाधवादिलिखितानांवाक्यानामाचाराणांचाप्रामाण्यापत्तेः यत्रतुयानियत्तुइत्येवमादिरूपेणायत्पदोपक्रममनूद्यतानिनिर्मूलानीत्येवमादिरीत्यादूष्यंते यथाश्रवणद्वादशीप्रकरणे श्रवणस्योत्तराषाढावेधनिषेधकवाक्यानितत्रतेषामप्रमाणत्वेएवसर्वथातात्पर्यमितिसूक्ष्मबुद्ध्योविदांकुर्वंतु ननुमाधवादिग्रंथेष्वनुपलंभान्ननिर्मूलत्वमुच्यतेकिंतुकाष्ठमालाधारणनिषेधवाक्यानांबाधकानामुपलंभादितिचेत् किंतानिवाक्यानिसामान्यतःकाष्ठमालाधारणनिषेधकानिदृश्यंते विशेषतस्तुलसीकाष्ठमालानिषेधकानिवा आद्येसामान्यतःकाष्ठमालानिषेधकवाक्यानांविशेषरूपैस्तुलसीधात्रीकाष्ठमालाधारणविधिवाक्यैर्बाधःस्पष्टः द्वितीयेषोडशीग्रहणाग्रहणवद्विहि

तप्रतिषिद्धत्वेनविकल्पमवगच्छ सचविकल्पोवैष्णवावैष्णवविषयतयाव्यवस्थितोभविष्यति मूलवाक्येषुविष्णवादिपदश्रवणादितिननिर्मूलत्वसंभवः अतएवैतद्वाक्यानांमाधवाद्यनुल्लेखस्याशयोहरिवासरलक्षणवाक्येपुरुषार्थचिंतामणौ वैष्णवानामेवावश्यकत्वादेतदनुपन्यासेपिमाधनादीनांनन्यूनतेत्युक्तयारीत्योहितुंशक्यः एवंधात्रीकाष्ठमालाधारणविधिर्ज्ञेयः रामार्चनचंद्रिकादौतुलसीकाष्ठमालयाजपविधिवाक्यानितुलसीकाष्ठघटितैर्मणिभिर्जपमालिकेत्यादीनिस्पष्टानि एवंग्रंथांतरेषुबहूनिवाक्यान्युपलभ्यंतेतथाचप्रयोगपारिजाताह्निकेपूजाप्रकरणेउक्तं आदौदेवपूजासाधनमग्रोदकगंधपुष्पाक्षतादिकंसंभृत्यपादौपाणीप्रक्षाल्ययथाशक्तिधृतदुकूलादिशुद्धवस्त्रोभूषणभूषितो मुक्ताफलप्रवालपद्माक्षतुलसीमणिनिर्मितमालाः कंठेधृत्वाइतिसर्वदेशीयवैष्णवेषुतुलसीकाष्ठमालाधारणजपाचारश्चोपलभ्यते भस्मादिधारणद्वेषिवैष्णवस्पर्धयाशैवागमाग्रहिभिः केवलंद्विष्यतइत्यलंबहुनेतिदिक् ॥

एकादशीसें पांच दिनोंतक भीष्मपंचक व्रत करना. वह शुद्धएकादशीकों आरंभित करके चतुर्दशीसें नहीं विद्ध हुई उदयव्यापिनी पौर्णमासीमें समाप्त करना. जो शुद्धएकादशीसें आरंभ करनेमें क्षयके वशकरके पौर्णमासीविषे पांच दिनके व्रतकी समाप्ति नहीं घटित होवै तब विद्धाएकादशीमेंभी आरंभ करना. शुद्ध एकादशीमें आरंभ किया जावै तबभी दिनकी वृद्धिके वशकरके परविद्धा पौर्णमासीमें समाप्त करनेमें जो ६. दिनोंकी प्राप्ति होवै तब चतुर्दशीसें विद्ध हुई पौर्णमासीमेंभी समाप्ति करनी. व्रतका प्रयोग कौस्तुभ आदि ग्रंथमें जानना. कार्तिकमासविषे एकादशी आदि पर्वमें चंद्रमा और नक्षत्र आदिका बल होवै तब शिव और विष्णुका मंत्रग्रहण आदि दीक्षा करनी. "कार्तिकमहीनेमें करी दीक्षा मनुष्योंके जन्मकों छुडा देती है" ऐसा नारदजीका वचन है. यह कार्तिकमहीनेमें तुलसीके काष्ठकी मालाकों धारण करना ऐसा **स्कंदपुराण**विषे द्वारकामाहात्म्य और विष्णुधर्ममें कहा है. "जो मनुष्य तुलसीकी माला विष्णुकों निवेदन करके पीछे भक्तिकरके आप धारण करता है तिसकों पाप नहीं लगता है." मालाकी प्रार्थनाका मंत्र—"**तुलसीकाष्ठसंभूते माले कृष्णजनप्रिये ॥ बिभर्मि त्वामहं कंठे कुरु मां कृष्णवल्लभम्** " इस प्रकार प्रार्थना करके विधिपूर्वक कृष्णके कंठमें अर्पित करी मालाकों कार्तिकमासमें जो मनुष्य धारण करता है वह वैकुंठकों प्राप्त होता है, ऐसा **निर्णयसिंधु**में स्पष्ट कहा है. जो तिसी **निर्णयसिंधु** ग्रंथमेंही मालाधारणप्रकरणके अंतमें सब पुस्तकोंमें यह प्रकार स्पष्ट नहीं दीखता है तौभी 'यहां मूल चितवन करना उचित है' ऐसा वाक्य कितनेक **निर्णयसिंधु**के पुस्तकमें दीखता है. तिसका तात्पर्य मालाधारणविषे जो विधिवाक्य हैं सो प्रमाणभूत नहीं इसविषे नहीं है. क्योंकी **निर्णयसिंधुकार** आपही **स्कंदपुराण**के विष्णुधर्ममें कहे हुए वाक्योंकों कहके आपही तिन वचनोंकों अप्रमाण ऐसा कहेंगे तौ तिनकों व्याघातप्रसंग आवैगा. "रुद्राक्षके आकारके किये हुय तुलसीके मणियोंकी मालाकों कंठमें धारण करके पूजाका आरंभ करना. तुलसीकाष्ठकी मालाकरके भूषित हुआ मनुष्य पितर और देवताओंकी पूजा आदि करैगा तौ वह कर्म कोटिगुना होता है." ऐसा **पद्मपुराणविषे पातालखंडमें** उनासी ७९ मे अध्यायमें प्रत्यक्ष उपलभ्यमान वचनोंके साथ विरोध आवै, तौ आषाढमासके प्रकरणमें आषाढ शुद्ध द्वादशीमें अनुराधानक्षत्र नहीं होवै तब द्वादशीमें पारणा करनी ऐसा कहके तिसविषे प्रमाण-

भूत ऐसे “ **आभाकासितपक्षेषु, मैत्राद्यपादे स्वपितीह विष्णुः** ” इस आदि **भविष्यपुराण**-स्थित विष्णुधर्म ग्रंथके वाक्योंकों लिखकर जैसा अंतमें यह निर्मूल है ऐसा कहा है तैसा तिसके अन्य प्रकरणविषे भी जानना. **माधव** आदि मूलग्रंथोंमें वह वचन उपलब्ध नहीं होता है ऐसाही **निर्णयसिंधु**के परिभाषाका तात्पर्य है, और अप्रमाणविषयमें तात्पर्य नहीं. अप्रमाणविषे माना जावै तौ भाद्रपद और कार्तिकमें तिस वाक्यके अनुसारकरके पारणानिर्णय लेखन कीया है, तिसकी संगति नहीं होवैगी और **कौस्तुभ** आदि सब नवीन ग्रंथोंमें तिस वाक्यके अनुसारकरके जो निर्णय कहा है तिसकी भी संगति नहीं होवैगी, और सब शिष्ट तिस वाक्यके अनुसार जो पारणा करते हैं सोभी अप्रमाण होवैगी; वास्ते तैसाही यहांभी जानना. इसकरके **माधव** आदि ग्रंथोंमें न मिलनेसें यह अप्रमाण ऐसा जो कहा है सो खंडित हुआ. **माधव** आदि लिखित बहुत वाक्य और आचार ये सब प्रमाणभूत नहीं ऐसी आपत्ति आवैगी. जहां ‘ **यानि** ’ ‘ **यत्तु** ’ इस आदि रूपकरके यत् पदका उपक्रम दिखायेविना ‘वे सब निर्मूल हैं’ इस आदि रीतिकरके दूषित होते हैं. जैसे—श्रवणद्वादशीके प्रकरणमें श्रवणकों उत्तराषाढानक्षत्रके वेधनिषेधक वाक्य जो कहे हैं तहां तिन्होंके अप्रमाणपनेमेंही सब प्रकारसें तात्पर्य है ऐसा सूक्ष्मबुद्धिवाले पंडितोंनें जानना. यहां **शंका** है की—**माधव** आदि ग्रंथोंमें नहीं मिलते है वास्ते निर्मूल है ऐसा नहीं, तौ काष्ठमालाधारणका निषेध करनेहारे ऐसे बाधक वाक्य मिलते हैं, इसवास्ते निर्मूल ऐसा कहा जावैगा तौ वे वाक्य कौनसे हैं? सामान्यपनेसें काष्ठमालाधारणनिषेधक वचन दिखाये जाते हैं, सो अथवा विशेष करके तुलसीकाष्ठमालानिषेधक वाक्य हैं सो? आद्यपक्षका **समाधान**—सामान्यपनेसें काष्ठमालानिषेधक वाक्योंके विशेषरूपोंकरके तुलसी और आंवलाकाष्ठकी मालाधारणका बाध विधिवाक्योंकरके स्पष्टही है. दूसरे पक्षका **समाधान**—जैसे, अतिरात्रयज्ञमें षोडशी पात्रका ग्रहण विधिनिषेधसें वैकल्पिक अर्थात् ग्रहण करना अथवा नहीं करना, तैसा तुलसीकाष्ठधारणका विकल्प है ऐसा जानना. सो विकल्प वैष्णव और अवैष्णव इन भेदोंसें व्यवस्थित होवैगा. क्योंकी, मूलवाक्योंमें विष्णु आदि पद मिलते हैं वास्ते निर्मूलपनेका संभव नहीं है. इसीवास्ते ये वाक्य माधव आदिनें नहीं लिखे हैं. उनका आशय, हरिवासरलक्षणवाक्यविषे **पुरुषार्थचिंतामणि**ग्रंथमें वैष्णवोंनेंही हरिवासर अवश्य पालना ऐसा कहा है. वास्ते इनका ग्रहण न करनेसें माधव आदियोंकों न्यूनता नहीं है, ऐसा उक्त रीतिकरके जाना जाता है. ऐसाही आंवलाकाष्ठमाला धारण करनेका विधि जानना. **रामार्चनचंद्रिका** आदि ग्रंथोंमें तुलसीकाष्ठकी माला करके जप करनेका विधिवाक्य है, और “तुलसीकाष्ठसें घटित किये मणियोंकरके जप करनेकी माला बनानी” इस आदि स्पष्ट है और ऐसेही अन्य ग्रंथोंमें बहुतसे वचन उपलब्ध होते हैं. तैसाही **प्रयोगपारिजातान्हिक** ग्रंथविषे पूजाप्रकरणमें कहा है, सो ऐसा—आदिमें देवपूजाके लिये अग्रोदक, गंध, पुष्प, अक्षता आदिकों ग्रहण करके हाथ और पैरोंकों धोके अपनी शक्तिके अनुसार सुंदर वस्त्रोंकों धारण करता हुआ और गहनोंकों पहने हुये ऐसे मनुष्यनें मोती, मूंगा, पद्माक्ष, तुलसीके मणियोंकी मालाओंकों कंठमें धारण करके पूजाका आरंभ करना. इस प्रकार सब देशके वैष्णवोंमें तुलसीकाष्ठमाला धारण करके जप करनेका आचार दृष्ट आता

है. भस्म आदिके धारण करनेवालोंके वैरी वैष्णवकी ईर्षाकरके शैव लोक तुलसीकी मालासें वैर करते हैं. इस प्रकार निर्णय हुआ. इस्सें बहुत विस्तार करनेका प्रयोजन नहीं है.

अथधात्रीमूलेदेवपूजाविधिः सर्वपापक्षयद्वाराश्रीदामोदरप्रीत्यर्थंधात्रीमूलेश्रीदामोदरपूजांकरिष्ये पुरुषसूक्तेनषोडशोपचारैःसंपूज्यगंधपुष्पफलयुतमर्घ्यंदधात् अर्घ्यंगृहाणभगवन्सर्वकामप्रदोभव अक्षयासंततिर्मेस्तुदामोदरनमोस्तुते ततोपराधसहस्राणीतिप्रार्थ्यधात्रींकुंकुमगंधादिनाभ्यर्च्यपुष्पैःपूजयेत् धात्र्यैनमः शांत्यैन० मेधायै० प्रकृत्यै० विष्णुपत्न्यै० महालक्ष्म्यै० रमायै० कमलायै० इंदिरायै० लोकमात्रे० कल्याण्यै० कमनीयायै० सावित्र्यै० जगद्धात्र्यै० गायत्र्यै० सुधृत्यै० अव्यक्तायै० विश्वरूपायै० सुरूपायै० अब्धिभवायै० ततोधात्रीमूलेसव्येनतर्पणंकार्यं पितापितामहश्चान्येअपुत्रायेचगोत्रिणः तेपिबंतुमयादत्तंधात्रीमूलेऽक्षयंपयः आब्रह्मस्तंबपर्यंतं० दामोदरनिवासायैधात्र्यैदेव्यैनमोस्तुते सूत्रेणानेनबध्नामिसर्वदेवनिवासिनीमितिसूत्रेणवेष्टयेत् धात्र्यैनमइतिचतुर्दिक्षुबलीन्दत्वाष्टदीपान्दद्यात् अष्टकृत्वःप्रदक्षिणीकृत्यनमेत् धात्रिदेविनमस्तुभ्यंसर्वपापक्षयंकरि पुत्रान्देहिमहाप्राज्ञेयशोदेहिबलंचमे प्रज्ञांमेधांचसौभाग्यंविष्णुभक्तिंचशाश्वतीं नीरोगंकुरुमांनित्यंनिष्पापंकुरुसर्वदा ततोघृतपूर्णसहेमकांस्यपात्रंदद्यादितिसंक्षेपः ॥

अब आंवलाके मूलमें देवपूजाका विधि कहताहुं.

“ सर्वपापक्षयद्वारा श्रीदामोदरप्रीत्यर्थं धात्रीमूले श्रीदामोदरपूजां करिष्ये ”—ऐसा संकल्प करके पुरुषसूक्तसें षोडशोपचार पूजा करके गंध, पुष्प, फल, इन्होंसें युत हुआ अर्घ्य देना. अर्घ्यका मंत्र,–“ अर्घ्यं गृहाण भगवन् सर्वकामप्रदो भव ॥ अक्षया संततिर्मेस्तु दामोदर नमोस्तु ते. ” पीछे “ अपराधसहस्राणि० ” इस मंत्रसें प्रार्थना करके आंवलीकों रोली अथवा केशर और गंध आदिसें अर्चित करके पुष्पोंसें पूजा करनी. पुष्पपूजाका मंत्र–धात्र्यै नमः, शांत्यै नमः, मेधायै नमः, प्रकृत्यै नमः, विष्णुपत्न्यै नमः, महालक्ष्म्यै नमः, रमायै नमः, कमलायै नमः, इंदिरायै नमः, लोकमात्रे नमः, कल्याण्यै नमः, कमनीयायै नमः, सावित्र्यै नमः, जगद्धात्र्यै नमः, गायत्र्यै नमः, सुधृत्यै नमः, अव्यक्तायै नमः, विश्वरूपायै नमः, सुरूपायै नमः, अब्धिभवायै नमः ” इन मंत्रोंसें पूजा करके पीछे सव्य होके आंवलीके वृक्षके मूलमें तर्पण करना. तर्पणका मंत्र–“पिता पितामहश्चान्ये अपुत्रा ये च गोत्रिणः ॥ ते पिबंतु मया दत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पयः ॥ आब्रह्मस्तंबपर्यंतं० ” ऐसा तर्पण करके पीछे “ दामोदरनिवासायै धात्र्यै देव्यै नमोस्तु ते ॥ सूत्रेणानेन बध्नामि सर्वदेवनिवासिनीम्, ” इस मंत्रसें सूत्रकरके आवलीका वृक्ष वेष्टित करना और “ धात्र्यै नमः ” इस मंत्रसें चारों दिशाओंमें बलि देके आठ दीप लगाने. पीछे आठ वार परिक्रमा करके प्रणाम करना. तिसका मंत्र–“ धात्रि देवि नमस्तुभ्यं सर्वपापक्षयंकरि ॥ पुत्रान्देहि महाप्राज्ञे यशो देहि बलं च मे ॥ प्रज्ञां मेधां च सौभाग्यं विष्णुभक्तिं च शाश्वतीम् ॥ नीरोगं कुरु मां नित्यं निष्पापं कुरु सर्वदा. ” पीछे घृतसें पूरित और सोनासहित ऐसे कांसीके पात्रका दान करना. इस प्रकार संक्षेपसें पूजाक्रम कहा है.

कार्तिकशुक्लद्वादश्यांरेवतीयोगरहितायांपारणं अपरिहार्ययोगेचतुर्थपादोवर्ज्यइत्यादिविशेषःश्रवणनिर्णयप्रकरणोक्तोद्रष्टव्यः ॥

रेवतीके योगसें रहित कार्तिक शुदि द्वादशीमें पारणा करनी. तैसा न बन सकै तौ रेवतीका चौथा पाद वर्जित करना. इस आदि विशेष श्रवणनक्षत्रके निर्णयके प्रकरणमें कहा हुआ देख लेना.

अथप्रबोधोत्सवतुलसीविवाहौ तत्रप्रबोधोत्सवःकार्तिकशुक्लैकादश्यांक्वचिदुक्तःरामार्चनचंद्रिकादौद्वादश्यामुक्तः उत्थापनमंत्रेद्वादशीग्रहणात्द्वादश्यामेवयुक्तः तत्रापिद्वादश्यारेवत्यंतपादयोगोरात्रिप्रथमभागेप्रशस्तः तदभावेतत्रैवरात्रौरेवतीनक्षत्रमात्रयोगोपि तदभावेरात्रिप्रथमभागेकेवलद्वादश्यपि एवंकेवलरेवत्यपि द्वादशीरेवत्योरुभयोरपिरात्रावभावेदिवैवद्वादशीमध्येकार्यइतिकौस्तुभेस्थितं तथापिपारणाहेपूर्वरात्रौइतिवचनात्पारणाहेरात्रिपूर्वभागेद्वादश्यभावेपित्रयोदश्यामेवपारणाहेप्रबोधोत्सवइतिदेशाचारः एवंतुलसीविवाहस्यनवम्यादिदिनत्रयेएकादश्यादिपूर्णिमांतेयत्रकापिदिने कार्तिकशुक्लांतर्गतविवाहनक्षत्रेषुवाविधानादनेककालत्वं तथापिपारणाहेप्रबोधोत्सवकर्मणासहतंत्रतयैवसर्वत्रानुष्ठीयतेइतिसोपिपारणाहेपूर्वरात्रे कार्यः प्रबोधोत्सवात्पृथक्चिकीर्षायांकालांतरेवाकार्यःतत्रपुण्याहवाचननांदीश्राद्धविवाहहोमाद्यंगसहितस्तुलसीविवाहप्रयोगःकौस्तुभादौज्ञेयः संक्षेपतस्तुप्रबोधोत्सवेनैकतंत्रतयाशिष्टाचारमनुसृत्यलिख्यते देशकालौसंकीर्त्यश्रीदामोदरप्रीत्यर्थंप्रबोधोत्सवंसंक्षेपतस्तुलसीविवाहविधिंचतंत्रेणकरिष्ये तदंगतयापुरुषसूक्तेनविधिनाषोडशोपचारैस्तंत्रेण श्रीमहाविष्णुपूजांतुलसीपूजांचकरिष्ये न्यासादिविधाय श्रीविष्णुंतुलसींचध्यात्वासहस्रशीर्षेतिश्रीमहाविष्णुंतुलसींचावाह्य पुरुषएवेत्यादिभिःश्रीमहाविष्णवेदामोदरायश्रीदेव्यैतुलस्यैचनमआसनमित्यादिस्नानांते मंगलवाद्यैः सुगंधितैलहरिद्राभ्यांनागवल्लीदलगृहीताभ्यां उष्णोदकेनचमंगलस्नानं विष्णवेतुलस्यैचसुवासिनीभिःकारयित्वास्वयंवादत्वापंचामृतस्नानंसमर्प्यशुद्धोदकेनाभिषिच्य वस्त्रयज्ञोपवीतचंदनंदत्वातुलस्यैहरिद्राकुंकुमकंठसूत्रमंगलालंकारान्दत्वामंत्रपुष्पांतपूजांसमाप्यघंटादिवाद्यघोषेणदेवंप्रबोधयेत् तत्रमंत्राः इदंवि० योजागारेतितुआचारप्राप्तः ब्रह्मेंद्ररुद्राग्निकुबेरसूर्यसोमादिभिर्वंदितवंदनीयः बुध्यस्वदेवेशजगन्निवासमंत्रप्रभावेनसुखेनदेव इयं चद्वादशीदेवप्रबोधार्थंतुनिर्मिता त्वयैवसर्वलोकानांहितार्थंशेषशायिना उत्तिष्ठोत्तिष्ठगोविंदत्यजनिद्रांजगत्पते त्वयिसुप्तेजगत्सुप्तमुत्थितेचोत्थितंजगत् एवमुत्थाप्य चरणंपवित्रं० गतामेघावियच्चैवनिर्मलंनिर्मलादिशः शारदानिचपुष्पाणिगृहाणममकेशवेत्यादिमंत्राभ्यांपुष्पांजलिंदद्यात् अथाचारात्तुलसीसंमुखांश्रीकृष्णप्रतिमांकृत्वामध्येंतःपटंधृत्वामंगलाष्टकपद्यानिपठित्वा अंतःपटंविसृज्याक्षताप्रक्षेपंकृत्वादामोदरहस्तेतुलसीदानंकुर्यात् देवींकनकसंपन्नांकनकाभरणैर्युताम् दास्यामिविष्णवेतुभ्यंब्रह्मलोकजिगीषया मयासंवर्धितांयथाशक्त्यलंकृतामिमांतुलसींदेवीं दामोदरायश्रीधरायवरायतुभ्यमहंसंप्रददे देवपुरतःसाक्षतजलंक्षिपेत् श्रीमहाविष्णुः प्रीयतामित्युक्त्वाइमांदेवींप्रतिगृह्णातुभवान्इतिवदेत् ततोदेवहस्तस्पर्शंतुलस्याःकृत्वा कइदंकस्माअदात्कामःकामायादात्कामोदाताकामःप्रतिगृहीताकामंसमुद्रमाविशकामेनत्वाप्रतिगृह्णामिका

मैतत्तेवृष्टिरसिद्यौस्त्वाददातुपृथिवीप्रतिगृह्णातु इतिमंत्रमन्येनवाचयेत् यजमानः त्वंदेविमेग्रतोभूयास्तुलसीदेविपार्श्वतः देवित्वंपृष्ठतोभूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयाम् दानस्यप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिमांदक्षिणांसंप्रददे देवपुरतोदक्षिणामर्पयेत् ततःस्वस्तिनोमिमीतांशंनइत्यादिस्वस्वशाखोक्तानिशांतिसूक्तानिविष्णुसूक्तानिचपठेयुः तुलसीयुतायविष्णवेमहानीराजनंकृत्वामंत्रपुष्पंदत्वासपत्नीकःसगोत्रजःसामात्योयजमानश्चतस्रःप्रदक्षिणाःकुर्वीत ब्राह्मणेभ्योदक्षिणांदत्वायथाशक्तिब्राह्मणभोजनंसंकल्प्यकर्मेश्वरार्पणंकुर्यात् एवंदेवंप्रबोध्यकार्तिकेयद्यतद्रव्यस्यवर्जनं कृतंतत्तद्द्रव्यमुक्तरीत्याद्रव्यांतरंच ब्राह्मणेभ्योदत्वाव्रतपूर्णतांप्रार्थयेत् इदंव्रतंमयादेवकृतंप्रीत्यैतवप्रभो न्यूनंसंपूर्णतांयातुत्वत्प्रसादाज्जनार्दनेति ततोव्रतंभगवदर्पणंकुर्यात् चातुर्मास्यव्रतसमाप्तिरप्यत्रैवेतिकेचित् कार्तिकमासव्रतोद्यापनंचातुर्मास्यव्रतोद्यापनंचतुर्दश्यांपूर्णिमायांवेत्यपरे ॥

अब प्रबोधोत्सव और तुलसीविवाहका विधि कहताहुं.

प्रबोधोत्सव कार्तिक शुदि एकादशीमें करना ऐसा कितनेक ग्रंथोंमें कहा है. **रामार्चनचंद्रिका** आदि ग्रंथोंमें द्वादशीमें प्रबोधोत्सव करना ऐसा लिखा है. उत्थापन करनेके मंत्रमें द्वादशीका उच्चार किया है, इसवास्ते द्वादशीमेंही प्रबोधोत्सव करना. तहांभी द्वादशीमें रेवतीनक्षत्रके अंतपादका योग रात्रिके प्रथम पादमें श्रेष्ठ कहा है. तिसके अभावमें तहांही रात्रिविषे रेवतीनक्षत्रमात्रका योग श्रेष्ठ माना है. तिसके अभावमें रात्रिके प्रथम भागमें केवल द्वादशीभी श्रेष्ठ कही है. ऐसेही केवल रेवतीभी श्रेष्ठ है. रात्रिमें द्वादशी और रेवती ये दोनों नहीं होवैं तब दिनमेंही द्वादशीके मध्यमें प्रबोधोत्सव करना ऐसा **कौस्तुभ**ग्रंथमें कहा है. और "पारणाके दिनमें पूर्वरात्रि" ऐसे वचनसें पारणाके दिनमें रात्रिके पूर्वभागविषे द्वादशीके अभावमेंभी त्रयोदशीविषेही पारणाके दिनमें प्रबोधोत्सव करनेका देशाचार है. इसी प्रकार तुलसीका विवाह नवमी आदि तीन दिनोंमें, एकादशीसें प्रारंभ करके पूर्णिमाके अंततक कहींक दिनविषे, अथवा कार्तिक शुक्लपक्षके अंतर्गत विवाहके नक्षत्रोंमें करना. ऐसे तुलसीविवाहके अनेक काल कहे हैं, तौभी पारणाके दिनमें प्रबोधोत्सवकर्मकेसाथ एकतंत्रताकरके सब जगह किया जाता है. वहभी पारणादिनविषे पूर्वरात्रिमें करना और प्रबोधोत्सवसें पृथक् करनेकी इच्छा होवै तौ अन्यकालमें करना. तहां पुण्याहवाचन, नांदीश्राद्ध, विवाहहोम आदि अंगोंसहित तुलसीविवाहका प्रयोग **कौस्तुभ** आदि ग्रंथोंमें देख लेना. संक्षेपसें प्रबोधोत्सवकेसाथ एकतंत्रताकरके शिष्टाचारके अनुसार प्रयोग लिखा जाता है. देश और कालका उच्चार करके "**श्रीदामोदरप्रीत्यर्थं प्रबोधोत्सवं संक्षेपतस्तुलसीविवाहविधिं च तंत्रेण करिष्ये, तदंगतया पुरुषसूक्तेन विधिना षोडशोपचारैस्तंत्रेण श्रीमहाविष्णुपूजां तुलसीपूजां च करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके न्यास आदिकरके श्रीविष्णु और तुलसीका ध्यान करके और "**सहस्रशीर्षा०**" इन मंत्रोंसें विष्णु और तुलसीका आवाहन करके "**पुरुषएवे०**" इस आदि मंत्रोंकरके और "**श्रीविष्णवेदामोदराय श्रीदेव्यै तुलस्यै च नमः**" इन मंत्रोसें आसन आदिसें स्नानके अंततक पूजाके पीछे मंगलरूपी बाजोंको बजवायके नागरपान, सुगंधित तेल, हलदी लगाके गरम पानीसें सुहागन स्त्रियोंके

द्वारा अथवा अपने हाथसें विष्णु और तुलसीके अर्थ मंगलस्नान करायके पंचामृतस्नान समर्पित करके शुद्ध पानीसें अभिषेक करना. पीछे वस्त्र, यज्ञोपवीत, चंदन इन्होंकों देके तुलसीकों हलदी, कुंकुम, कंठसूत्र ऐसे मंगलरूपी गहना समर्पित करके मंत्रपुष्पपर्यंत पूजा समाप्त करके और घंटा आदि बाजोंके शब्द करके देवकों जगाना. तहां मंत्र–“ **इदं विष्णु०** ” और “ **योजागार०** ” इन मंत्रोंका उच्चारण करके–“ **ब्रह्मेंद्ररुद्राग्निकुबेरसूर्यसोमादिभिर्वंदितवंदनीयः ॥ बुद्ध्यस्व देवेश जगन्निवास मंत्रप्रभावेन सुखेन देव ॥ इयं च द्वादशी देव प्रबोधार्थं तु निर्मिता ॥ त्वयैव सर्वलोकानां हितार्थं शेषशायिना ॥ उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविंद त्यज निद्रां जगत्पते ॥ त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत्**, ” इन मंत्रोंसें उत्थापन करायके “ **चरणं पवित्रम्०** ” “ **गता मेघा वियच्चैव निर्मलं निर्मला दिशः ॥ शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशव**, ” इन आदि मंत्रोंसें पुष्पांजलि समर्पित करनी. पीछे अपने आचारके अनुसार तुलसीके सन्मुख श्रीकृष्णकी प्रतिमाकों रखके मध्यमें अंतःपटकों धारण करना. मंगलाष्टकके श्लोकोंका पाठ करके अंतःपटका विसर्जन करना. पीछे मूर्ति और तुलसी इनके उपर अक्षता डालके दामोदरके हाथपर तुलसीका दान करना. तिसका मंत्र–“**देवीं कनकसंपन्नां कनकाभरणैर्युताम् ॥ दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोकजिगीषया ॥ मया संवर्धितां यथाशक्त्यलंकृतामिमां तुलसीं देवीं दामोदराय श्रीधराय वराय तुभ्यमहं संप्रददे** ” ऐसा संकल्प करके विष्णुके आगे अक्षतोंसहित जल छोडना. पीछे “ **श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम्**, ” ऐसा कहके “ **इमां देवीं प्रतिगृह्णातु भवान्** ” इस प्रकार कहना. पीछे तुलसीकों विष्णुके हाथका स्पर्श कराय “ **क इदं कस्मा अदात्कामः कामायादात् कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामं समुद्रमाविश कामेन त्वा प्रतिगृह्णामि कामैतत्ते वृष्टिरसि द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी प्रतिगृह्णातु** ” यह मंत्र दूसरेके द्वारा कहाना. पीछे यजमाननें–“ **त्वं देवि मेऽग्रतो भूयास्तुलसीदेवि पार्श्वतः ॥ देवि त्वं पृष्ठतो भूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयां ॥ दानस्य प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिमां दक्षिणां संप्रददे**, ”–ऐसा संकल्प करके विष्णुके आगे दक्षिणा अर्पण करनी. पीछे “ **स्वस्तिनो मिमीता०, शन्न इंद्राग्नी०** ” इस आदि अपनी अपनी शाखाके अनुसार कहे हुये शांतिसूक्त और विष्णुसूक्तोंका पाठ करना. पीछे तुलसीसहित विष्णुकी बडी आरती करके मंत्र और पुष्पोंकों अर्पण करके अपनी स्त्रीसहित और अपने गोत्रियोंसहित और अपने मंत्री तथा नोकरोंसहित ऐसे यजमाननें चार परिक्रमाओंकों करना. पीछे ब्राह्मणोंकों दक्षिणा देके शक्तिके अनुसार ब्राह्मणभोजनका संकल्प करके कर्म ईश्वरकों अर्पण करना. ऐसे विष्णुकों जगाय और कार्तिकमासमें जिस जिस द्रव्यका त्याग किया था तिस तिस द्रव्यकों और अन्य द्रव्यकों उक्त रीतिकरके ब्राह्मणोंकों देके व्रतकी पूर्णताके लिये प्रार्थना करनी. तिसका मंत्र;–“ **इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो ॥ न्यूनं संपूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दन.** ” पीछे व्रत ईश्वरकों अर्पण करना. चातुर्मास्यव्रतकी समाप्तिभी यहांही होती है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. अन्य ग्रंथकार कहते हैं की, कार्तिकमासके व्रतका उद्यापन और चातुर्मास्यव्रतका उद्यापन चतुर्दशीमें अथवा पौर्णमासीमें करना.

अथवैकुंठचतुर्दशी पूर्वेद्युरुपवासंकृत्वारुणोदयव्यापिन्यांचतुर्दश्यांशिवंसंपूज्यप्रातःपारणं कार्यम् तथाचचतुर्दशीयुक्तारुणोदयवतिअहोरात्रेउपवासःफलितः उभयत्रारुणोदयव्याप्तौ परत्रारुणोदयेपूजापूर्वत्रोपवासः उभयत्राव्याप्तौचतुर्दशीयुक्ताहोरात्रेएवारुणोदयेपूजापूर्वत्रोपवासश्च केचित्तुविष्णुपूजायामियंनिशीथव्यापिनीग्राह्या दिनद्वयेतद्व्याप्तौनिशीथप्रदोषोभयव्यापिनीग्राह्येत्याहुः अस्यामेवचतुर्दश्यांपरविद्धायांकार्तिकमासव्रतोद्यापनांगत्वेनोपवासंकृत्वाधिवासनंविधाय रात्रौजागरणंकुर्याद्गीतवाद्यादिमंगलैः नराणांजागरेविष्णोर्गीतंनृत्यंचकुर्वेताम् गोसहस्रंचददतांफलंसमुदाहृतमित्यादिवाक्यैर्विहितंगीतनृत्यवाद्यविष्णुचरितपठनस्वेच्छालापलीलानुकारैर्हरिजागरंकृत्वापरविद्धपौर्णमास्यांसपत्नीकाचार्यंवृत्वाअतोदेवेतिद्वाभ्यां तिलपायसंहुत्वागोदानंकार्यमितिमासव्रतोद्यापनं कार्तिकशुक्लाद्वादशीपौर्णमासीचमन्वादिः सापौर्वाह्णिकीग्राह्या अन्यत्पूर्वमुक्तं ॥

अब वैकुंठचतुर्दशीका निर्णय कहताहुं.

पहले दिन उपवास करके अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशीमें शिवकी पूजा करके प्रातःकालमें पारणा करनी. इस्सें चतुर्दशीसें युक्त अरुणोदयवाले दिनरात्रमें उपवास फलित होता है. दोनों दिन अरुणोदयकालमें व्याप्ति होवै तब परदिनमें अरुणोदयविषे पूजा करनी और पूर्व दिनम उपवास करना. दोनों दिन व्याप्ति नहीं होवै तौ चतुर्दशीसें युक्त हुये दिनरात्रमेंही अरुणोदयविषे पूजा करनी और पूर्वदिनमें उपवास करना. कितनेक पंडित विष्णुपूजामें अर्धरात्रव्यापिनी चतुर्दशी लेते हैं. दोनों दिन अर्धरात्रव्यापिनी होवै तौ अर्धरात्र और प्रदोषव्यापिनी ग्रहण करनी ऐसा कहते हैं. यही परविद्धा चतुर्दशीमें कार्तिकमासव्रतके उद्यापनका अंगभूत ऐसा उपवास करके और अधिवासन करके “रात्रिविषे गीत, बाजा आदि मंगलोंकरके रात्रिमें जागरण करना, विष्णुके जागरणमें गान और नृत्य करनेवाले मनुष्योंकों हजार गौओंके दानका फल मिलता है,” इस आदि वाक्योंकरके विहित ऐसे गीत, नृत्य, बाजा, विष्णुचरित्रका पठन, स्वेच्छालाप, भगवल्लीलाका अनुकरण इन आदिसें हरिजागर करके प्रतिपदासें विद्ध ऐसी पौर्णमासीमें पत्नीसहित आचार्यवरण करके “अतो देवा०” इन मंत्रोंसें तिल और खीरका होम करके गोदान करना. इसप्रकार मासव्रतका उद्यापन है. कार्तिक शुदि द्वादशी और पौर्णमासी मन्वादि तिथि होती हैं. वह पूर्वाण्हव्यापिनी लेनी. अन्य सब निर्णय पहले कह दिया है.

अस्यांचातुर्मास्यव्रतसमाप्तिः तत्र चातुर्मास्यव्रतानांसमाप्तौदानानि नक्तव्रतेवस्त्रयुग्मम् एकांतरोपवासेगौः भूशयनेशय्या षष्ठकालभोजनेगौः व्रीहिगोधूमादिधान्यत्यागेसौवर्णव्रीहिगोधूमादिदानम् कृच्छ्रव्रतेगोयुग्मम् शाकाहारेगौःपयोमात्रभक्षणेपयोवर्जनेचगौः मधुदधिघृतवर्जनेवस्त्रंगौश्च ब्रह्मचर्येस्वर्णम् तांबूलवर्जनेवस्त्रयुग्मम् मौनेघंटाघृतकुंभोवस्त्रद्वयंचरंगवल्लीकरणेगौःसुवर्णपद्मंच दीपदानव्रतेदीपिकावस्त्रद्वयंच भूमिभोजनेकांस्यपात्रंगौश्चगोग्रासे गोवृषौ प्रदक्षिणाशतेवस्त्रम् अभ्यंगवर्जनेतैलपूर्णघटःनखकेशधारणेमधुसर्पिर्हेमदानम् यत्र विशेषतोदानंनोक्तंतत्रस्वर्णंगौश्च गुडवर्जनेगुडपूर्णंससुवर्णंताम्रपात्रंएवंलवणवर्जनेलवणपू

र्णीताम्रपात्रमितिक्वचित् अस्यामेवलक्षप्रदक्षिणालक्षनमस्काराणामाषाढ्यादावारब्धानामुद्यापनंकार्यम् एवंतुलसीलक्षपूजांकार्तिकेमाघेवारभ्यप्रत्यहंसहस्रतुलसीसमर्पणेनलक्षंसमाप्यमाघ्यां वैशाख्यांवोद्यापनंकार्यं एवंपुष्पादिलक्षपूजाअपि तत्रबिल्वपत्रलक्षेणलक्ष्मीप्राप्तिःफलं दूर्वालक्षेणारिष्टशांतिः चंपकलक्षेणायुष्यम् अतसीलक्षेणविद्या तुलसीलक्षेणविष्णुप्रसादः गोधूमतंडलादिप्रशस्तधान्यलक्षेणदुःखनाशः एवंसर्वपुष्पैःसर्वकामावाप्तिः एवंलक्षवर्तिव्रतमपिमासत्रयंकृत्वाकार्तिकेमाघेवैशाखेवाउत्तरोत्तरप्रशस्तेसमापनीयम् एवंधारणपारणव्रतोद्यापनमपिपूर्णमास्यामेवकार्तिकमासव्रतानांमासोपवासादीनांद्वादश्यामेवसमापनम् तत्रासंभवे पौर्णमास्याम् एवंगोपद्मव्रतमाषाढशुक्लैकादश्यादावारभ्यप्रत्यहंत्रयस्त्रिंशद्गोपद्मानिविलिख्य गंधपुष्पैःप्रपूज्यतावत्संख्याकार्घ्यनमस्कारप्रदक्षिणाःकृत्वा कार्तिकद्वादश्यांत्रयस्त्रिंशदपूपवायनंदद्यादेवंवत्सरपंचकमनुष्ठायोद्यापनंकुर्यात् लक्षप्रदक्षिणादिगोपद्मपर्यंतोद्यापनानामितिकर्तव्यताः कौस्तुभेद्रष्टव्याः कार्तिकेपौर्णमास्याःकृत्तिकानक्षत्रयोगेमहापुण्यत्वंरोहिणीयोगे महाकार्तिकीत्वम् कार्तिक्यांकृत्तिकायोगेयःकार्तिकेयदर्शनंकरोतिससप्तसुजन्मसुधनाढ्योवेदपारगोविप्रोभवेत् विशाखास्थेसूर्येसतियदिनेचंद्रनक्षत्रंकृत्तिकातत्रपद्मकयोगः अयंपुष्करतीर्थेतिप्रशस्तः ॥

इस पौर्णमासीमें चातुर्मास्यव्रतकी समाप्ति होती है. चातुर्मास्यव्रतोंकी समाप्तिमें दानोंको कहताहुं,—नक्तव्रतमें दो वस्त्रोंका दान करना. एकांतर उपवासव्रतमें गौका दान करना. पृथिवीपर शयनमें शय्यादान करना. छठे कालमें भोजनविषे गोदान करना. व्रीहि और गेहूं आदि अन्नके त्यागमें सोनाके व्रीहि, गेहूं आदि बनाके तिनका दान करना. कृच्छ्रव्रतमें दो गोदान करने. शाकके भोजनमें गोदान करना. दूधमात्रके पीनेमें अथवा दूधके वर्जनेमें गोदान करना. शहद, दही, घृत इन्होंके त्यागनेमें वस्त्रदान और गोदान करना. ब्रह्मचर्यमें सोनादान करना. नागरपानके त्यागनेमें दो वस्त्रोंका दान करना. मौनके धारनेमें घंटा, घृतकलश और दो वस्त्र इन्होंका दान करना. देवताके मंदिरमें रंगकी वेल करनेमें गौ, सोनाका कमल इन्होंका दान करना. दीपदानव्रतमें दीवट अर्थात् पीलसोत और दो वस्त्रोंका दान करना. पृथिवीपर भोजन करनेमें कांसीके पात्रका दान और गोदान करना. गोग्रासव्रतमें गौ और बैलका दान करना. सौ १०० परिक्रमा करनेके व्रतमें वस्त्रका दान करना, अभ्यंगवर्जनव्रतमें तेलसें पूरित किया घट देना. नख और वालोंको धारनेमें शहद, घृत. सोना इन्होंका दान करना. जहां विशेषतासें दान नहीं कहा होवै तहां सोना और गौका दान करना. गुड वर्जनेके व्रतमें गुडसें पूरित और सोनासें संयुक्त ऐसा तांबाका पात्र देना. ऐसेही नमक वर्जनेके व्रतमें नमकसें पूरित किया तांबाका पात्र देना ऐसा कहींक लिखा है. आषाढकी पौर्णमासीकों आरंभित करी लक्ष परिक्रमा और नमस्काररूप व्रतोंका उद्यापन इसी पौर्णमासीमें करना. ऐसेही तुलसीकी लक्षपूजा कार्तिकमें अथवा माघमें आरंभित करके नित्यप्रति हजार तुलसी समर्पण करके लक्षकी समाप्ति करके माघकी पौर्णमासीमें अथवा वैशाखकी पौर्णमासीमें उद्यापन करना. ऐसेही पुष्प आदिकी लक्षपूजाओंकाभी निर्णय जानना. बिल्वपत्रके लक्षकरके लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है. दूर्वके लक्षकरके अरिष्टकी

शांति होती है. चंपेके फूलोंके लक्षकरके आयु बढता है. अतसीके पुष्पके लक्षकरके विद्या प्राप्त होती है. तुलसीके लक्षकरके विष्णुकी प्रसन्नता होती है. गेहूं, चावल आदि शुद्ध अन्नके लक्षकरके दुःखका नाश होता है. ऐसेही सब प्रकारके पुष्पोंकरके सब कामोंकी प्राप्ति होती है. ऐसेही लक्षवर्तिव्रतकों तीन महीनोंतक करके उत्तरोत्तर प्रशस्त ऐसे कार्तिक, माघ और वैशाख इन महिनोंमें समाप्त करना. इस तरह एकांतरव्रतका उद्यापनभी पौर्णमासीके दिनमेंही करना. एक महिनातक उपवास आदिक जो कार्तिकमासव्रत तिन्होंकी समाप्ति द्वादशीके दिनमेंही करनी. तहां संभव नहीं होवै तौ पौर्णमासीमें करनी. गोपद्मव्रतका आषाढ शुदि एकादशीमें आरंभ करके प्रतिदिन तेतीस पद्मकों लिखके गंध और पुष्पोंसें पूजा करके तेतीस अर्घ्य, नमस्कार और परिक्रमाओंकों करके कार्तिककी द्वादशीकों तेतीस मालपूओंका वायन देना. ऐसा पांच वर्षतक गोपद्मव्रत करके उद्यापन करना. लक्ष प्रदक्षिणा आदि व्रतोंसें गोपद्मव्रतपर्यंत उद्यापनोंके विधि कौस्तुभग्रंथमें देख लेने. कार्तिककी पौर्णमासीमें कृत्तिकानक्षत्रका योग होवै तौ अत्यंत पुण्य है. रोहिणीनक्षत्र होवै तौ महाकार्तिकी कहाती है. कार्तिककी पौर्णमासीमें कृत्तिकायोगविषे जो मनुष्य स्वामिकार्तिकका दर्शन करता है वह सात जन्मोंमें धनवान् और वेदपाठी ऐसा ब्राह्मण होता है. विशाखानक्षत्रपर सूर्य स्थित होके जिस दिनमें चंद्रमाका नक्षत्र कृत्तिका होता है तहां पद्मकयोग जानना. यह योग पुष्करतीर्थमें अति पुण्यकारक है.

अस्यामेवत्रिपुराख्यदीपदानमुक्तम् कार्तिकेपौर्णमास्यांकाम्यवृषोत्सर्गोतिप्रशस्तः एवंगजाश्वरथघृतधेन्वादिमहादानमपिप्रशस्तम् वृषोत्सर्गस्याश्विनीपौर्णमासीग्रहणद्वयमयनद्वयंविषुवद्वयंचेतिकालांतराणि अन्यत्रमाघीचैत्रीवैशाखीफाल्गुन्याषाढीचेतिपौर्णमास्योरेवतीनक्षत्रंवैधृतिव्यतीपातौयुगादिमन्वादिसूर्यसंक्रांतिपितृक्षयाहाष्टकाअपिकालाउक्ताः अत्रवृषोत्सर्गप्रयोगोतिविस्तृतोनानाशाखाभेदभिन्नःकौस्तुभेद्रष्टव्यः ॥

इसी पौर्णमासीमेंही त्रिपुराख्य दीप लगाने. कार्तिकी पौर्णमासीमें काम्यवृषोत्सर्ग करना अति पुण्यकारक है. ऐसेही हस्ती, रथ, घोडा, घृत, गौ इन आदि महादानभी श्रेष्ठ हैं. वृषोत्सर्गकेवास्ते आश्विनकी पौर्णमासी, चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण, उत्तरायणदिन, दक्षिणायनदिन, मेषसंक्रांति और तुलासंक्रांति—ऐसे अन्यभी काल कहे हैं. अन्य ग्रंथोंमें माघ, चैत्र, वैशाख, फाल्गुन और आषाढ इन महीनोंकी पौर्णमासी और रेवतीनक्षत्र, वैधृति, व्यतीपात, युगादि तिथि, मन्वादि तिथि, सूर्यसंक्रांति, पिताके क्षयाहका दिन और अष्टकाश्राद्धका[1] दिन येभी काम्यवृषोत्सर्गके काल कहे हैं. वृषोत्सर्गका प्रयोग अनेक शाखाओंके भेदसें भिन्न भिन्न और विस्तृत है वास्ते तिसका निर्णय कौस्तुभग्रंथमें देखना.

कार्तिककृष्णाष्टमीकालाष्टमी इयंपूर्णिमांतमासपक्षेमार्गशीर्षेकृष्णाष्टमीत्युच्यते सेयंमध्यान्हव्यापिनीग्राह्या दिनद्वयेमध्यान्हव्याप्तौपूर्वैवेतिसिंधौस्थितं प्रदोषव्यापिनीतिकौस्तुभे उभयदिनेप्रदोषव्याप्तौतदेकदेशस्पर्शेवापरैव यदापूर्वत्रप्रदोषव्याप्तिरेवपरत्रमध्यान्हव्याप्तिरेवतदा

---

[1] अष्टकाश्राद्धके दिन मार्गशीर्ष महिनेमें कहे हैं. तहां देख लेना.

बहुशिष्टाचारानुरोधात्प्रदोषव्याप्त्यैवनिर्णयोनमध्यान्हव्याप्त्येतिभाति अत्रकालभैरवपूजांकृत्वात्रयोर्घ्यादेयाः उपवासोजागरश्चकार्यः इति श्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्याय विरचिते धर्मसिंधुसारे कार्तिकमासकृत्यनिर्णयोद्देशः समाप्तः ॥

कार्तिक वदि अष्टमी कालाष्टमी कहाती है. पूर्णिमामें अंत होनेवाले मासके पक्षमें मंगशिरमासविषे कृष्णाष्टमी[1] कहाती है. यह अष्टमी मध्यान्हव्यापिनी लेनी. दोनों दिन मध्यान्हव्यापिनी होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी ऐसा **निर्णयसिंधुग्रंथमें** लिखा है, और प्रदोषव्यापिनी लेनी ऐसा **कौस्तुभग्रंथमें** लिखा है. दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी होवै अथवा तिसके एकदेशमें व्याप्ति होवै तब परविद्धा लेनी. जब पूर्वदिनमें प्रदोषव्यापिनी होवै और परदिनमें मध्यान्हव्यापिनी होवै तब बहुतसे शिष्टोंके आचारके विरोधसें प्रदोषव्यापिनीही लेनी. मध्यान्हव्यापिनी नहीं लेनी ऐसा भान होता है. यह अष्टमीके दिन कालभैरवकी पूजा करके तीन अर्घ्य देने. उपवास और जागरणभी करना. **इति धर्मसिंधुसार भाषाटीकायां कार्तिकमासकृत्यनिर्णयो नाम अष्टम उद्देशः ॥ ८ ॥**

अथमार्गशीर्षमासः धनुःसंक्रांतौपराःषोडशनाड्यःपुण्याः अन्यत्प्रागुक्तं ॥

अब मंगशिर मासके कृत्य कहताहुं.

धनसंक्रांतिमें पिछली सोलह घटीका पुण्यकाल है. अन्य निर्णय पहले कह चुके हैं.

मार्गशीर्षशुक्लपंचम्यांनागपूजादाक्षिणात्यानांप्रसिद्धा इयंषष्ठीयुताग्राह्येत्यादिविशेषः प्रथमपरिच्छेदेउक्तः ॥

मंगशिर शुदि पंचमीकों नागपूजा करनी. सो दक्षिण देशके लोकोंमें प्रसिद्ध है. यह पंचमी षष्ठीसें युत हुई लेनी. इस आदि विशेष निर्णय प्रथम परिच्छेदमें कहा है.

मार्गशीर्षशुक्लषष्ठीचंपाषष्ठीमहाराष्ट्रेषुप्रसिद्धा अत्रतिथिद्वैधेयस्मिन्दिनेरविवारभौमवारशततारकावैधृतीनांमध्येधिकैर्योगः सापूर्वापरावामुहूर्तत्रयव्यापिनीग्राह्या दिनद्वयेपियोगाभावेपरैवत्रिमुहूर्ताग्राह्या इयमेवस्कंदषष्ठीसापूर्वाग्राह्या अथसप्तम्यांसूर्यव्रतंतद्विधिःकौस्तुभेमृगयुतायांपौर्णमास्यांलवणदानेसुंदररूपता ॥

मंगशिर शुदि षष्ठी **चंपाषष्ठी** कहाती है. यह महाराष्ट्रोंमें प्रसिद्ध है. यह षष्ठी दोनों दिनोंमें होवै तब जिस दिनमें अंतवार, मंगलवार, शतभिषानक्षत्र, वैधृतियोग, इन्होंमांहसें अधिक योग होवै वह पूर्वविद्धा अथवा परविद्धा छह घटीकामात्रभी लेनी. दोनों दिन योग नहीं होवै तौ छह घटीकामात्र परविद्धाही लेनी. यही षष्ठी **स्कंदषष्ठी** कहाती है. वह पूर्वविद्धा लेनी. सप्तमीमें सूर्यका व्रत होता है. तिसका विधि **कौस्तुभग्रंथमें** कहा है. मृगशिरनक्षत्रसें युत हुई पौर्णमासीमें नमकके दानसें सुंदर रूप मिलता है.

मार्गशीर्षपौर्णमास्यांदत्तात्रेयोत्पत्तिः इयंप्रदोषव्यापिनीग्राह्या मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यांपौर्ण

---

[1] पौर्णिमाकों अंत होनेवाले महिनेमें पहले कृष्णपक्ष और पीछेसें शुक्लपक्ष होता है.

मास्यांवाप्रदोषेआश्वलायनैःप्रत्यवरोहणंकार्यं तत्रकर्मकालव्यापिनीतिथिः तत्प्रयोगःप्रयोगरत्नकौस्तुभादौज्ञेयः मार्गशीर्षादिमासचतुष्टयस्यकृष्णाष्टमीष्वष्टकाश्राद्धानितत्पूर्वसप्तमीषुपूर्वेद्युःश्राद्धानितदुत्तरनवमीषुचान्वष्टक्यश्राद्धानिकर्तव्यानि एवंभाद्रकृष्णपक्षेपिअष्टकादिश्राद्धानिकार्याणीतिपंचाष्टकापक्षआश्वलायनभिन्नशाखिनां आश्वलायनानांतुमार्गादिचतुरष्टकापक्षएव भाद्रपदकृष्णाष्टम्यांतुमाघ्यावर्षश्राद्धंकरिष्येइतिसंकल्प्यसर्वमष्टकाश्राद्धवत्कार्यं सप्तम्यांतुमाघ्यावर्षश्राद्धंकर्तुं पूर्वेद्युःश्राद्धंकरिष्यइतिसंकल्पः नवम्यामन्वष्टकाश्राद्धंकरिष्यइतिसंकल्पइतिविशेषः एवंभाद्रकृष्णाष्टमीश्राद्धस्यमाघ्यावर्षसंज्ञकत्वादाश्वलायनानांचतुरष्टकापक्षः अन्यशाखिनांपौषादित्र्यष्टकापक्षोपि एवंसर्वाअष्टकाःकर्तुमशक्तेनएकैवाष्टकाकार्या साचमाघपौर्णमास्यनंतरकृष्णपक्षस्यसप्तम्यामष्टम्यांनवम्यामितिदिनत्रयेकार्यादिनत्रयेश्राद्धत्रयंकर्तुमशक्तेनमाघकृष्णेष्टमीश्राद्धमेवकार्यं तत्राष्टकाश्राद्धेऽपराह्णव्यापिन्यष्टमीग्राह्या दिनद्वयेव्याप्त्यव्याप्त्यादौदर्शवन्निर्णयः अष्टम्यनुरोधेनपूर्वपरदिनयोः पूर्वेद्युःश्राद्धान्वष्टक्यश्राद्धेकार्ये नतुसप्तम्यादेरपराह्णव्याप्तिरपेक्षणीया एकदिनेप्यशक्तस्यप्रत्याम्नायाः अनडुहोयवसमाहरेत्अग्निनावाकक्षंदहेदपिवानूचानेभ्यउदकुंभमाहरेदपिवाश्राद्धमंत्रानधीयीतेति क्वचिदुपवासोप्युक्तः एवंश्रवणाकर्मादिपाकसंस्थालोपेप्रतिपाकयज्ञंप्राजापत्यकृच्छ्रंप्रायश्चित्तमुक्तं मलमासेष्टकाश्राद्धानिनकार्याणीतिनारायणवृत्तिः अष्टकादिश्राद्धत्रयप्रयोगःकौस्तुभप्रयोगरत्नादौ अत्राष्टमीश्राद्धेकामकालसंज्ञकौविश्वेदेवौ सप्तमीनवम्योस्तुपुरूरवार्द्रवाविति आहिताग्नेःपूर्वेद्युःश्राद्धांगहोमोष्टकांगहोमोन्वष्टकाग्नौकरणहोमोदिनत्रयेहविःश्रपणंचदक्षिणाग्नौभवतीतिविशेषः शेषमनाहिताग्निवत् अष्टकालोपेप्राजापत्यमुपवासोवाप्रायश्चित्तंअन्वष्टक्यलोपेतद्दिनेशतवारमेभिर्द्युभिःसुमनाइतिमंत्रजपः ॥

मंगशिरकी पौर्णमासीमें दत्तात्रेयजीकी उत्पत्ति हुई है. यह पौर्णमासी प्रदोषव्यापिनी लेनी. मंगशिर शुदि चतुर्दशी अथवा पौर्णमासीमें प्रदोषसमयमें आश्वलायनशाखावालोंनें **प्रत्यवरोहणकर्म करना.** तहां कर्मकाल[१]व्यापिनी तिथि लेनी. तिसका प्रयोग **प्रयोगरत्न** ग्रंथमें और **कौस्तुभ** आदि ग्रंथोंमें देखना. मंगशिर आदि चार महीनोंकी कृष्णाष्टमियोंमें **अष्टकाश्राद्ध** करने. तिस्सें पहले सप्तमीयोंमें **पूर्वेद्युःश्राद्ध** करने और तिस्सें उत्तर नवमियोंमें **अन्वष्टक्यश्राद्ध** करने. ऐसेही भाद्रपद आदिके कृष्णपक्षमेंभी अष्टका आदि श्राद्ध करने. यह पंचाष्टकापक्ष आश्वलायनसें भिन्न शाखावालोंका है. आश्वलायनशाखावालोंनें तौ मंगशिर आदि चार अष्टकाश्राद्धोंका पक्षही करना. भाद्रपद वदि अष्टमीमें तौ "**माघ्या वर्षश्राद्धं करिष्ये**" इस प्रकार संकल्प करके सब कर्म अष्टकाश्राद्धकीतरह करना. सप्तमीके दिनमें तौ "**माघ्या वर्षश्राद्धं कर्तुं पूर्वेद्युः श्राद्धं करिष्ये**" ऐसा संकल्प करना. नवमीमें तौ "**अन्वष्टकाश्राद्धं करिष्ये**" ऐसा संकल्प करना यह विशेष है. इसी प्रकार भाद्रपद वदि अष्टमीश्राद्धकों **माघ्यावर्ष** ऐसी संज्ञा है, इसलिये आश्वलायनशाखावालोंनें चार अष्टकापक्ष करने. अन्य शाखावालोंनें पौष आदि अष्टकापक्षभी करना. इस प्रकार सब अष्टकाश्राद्ध करनेकों असमर्थ होवै तौ तिसनें एकही अष्टकाश्राद्ध करना. वह अष्टकाश्राद्ध माघकी पौर्णमासीके अनंतर कृष्णपक्षकी सप्तमी,

---

[१] कर्मकाल सूर्यास्तके अनंतर है वास्ते सूर्यास्तके अनंतर व्यापिनी होवै सो लेनी.

अष्टमी और नवमी इन तीन दिनोंमें करना. तीन दिनोंमें श्राद्ध करनेका सामर्थ्य नहीं होवै तौ तिस मनुष्यनें माव कृष्ण अष्टमीकों श्राद्ध करना. तिस अष्टकाश्राद्धमें अपराण्हव्यापिनी अष्टमी लेनी. दोनों दिन अपराण्हव्यापिनी अष्टमी होवै अथवा नहीं होवै तौ दर्शश्राद्धकी तरह निर्णय जानना. अष्टमीके अनुरोधकरके पूर्वपर दिनमें पूर्वेद्युःश्राद्ध और अन्वष्टक्यश्राद्ध करना. सप्तमी आदिकों अपराण्हव्यापिनी अपेक्षित नहीं है. एक दिनमेंभी अष्टकाश्राद्ध करनेकों असमर्थ होनेवाले मनुष्यनें गौणपक्षका अंगीकार करना. सो ऐसा;—"बैलोंकों तृण देना; अग्निकरके सूखे तृणोंकों दग्ध कराना और गुरुके मुखसें अंगोंसहित वेदोंकों पढनेवालेकों जलसें भरे कलशोंका दान करना अथवा श्राद्धके मंत्रोंका पाठ करना." कितनेक ग्रंथोंमें उपवासभी करना ऐसा कहा है. इस प्रकार श्रवणाकर्म आदि पाकसंस्थाके लोपमें प्रतिपाकयज्ञकों प्राजापत्यकृच्छ्र प्रायश्चित्त कहा है. अधिकमासमें अष्टकाश्राद्ध नहीं करने ऐसा (आश्वलायनगृह्यसूत्रके) नारायणवृत्तिका मत है. अष्टका आदि श्राद्धका प्रयोग **कौस्तुभ** और **प्रयोगरत्न** आदि ग्रंथोंमें देख लेना. यहां अष्टमीश्राद्धमें **कामकालसंज्ञक** दो विश्वेदेव लेने. सप्तमी और नवमीके श्राद्धमें **पुरूरवा** और **आर्द्रव** ये दो लेने. अग्निहोत्री मनुष्यकों करना होवै तौ पूर्वेद्युःश्राद्धका अंगभूत होम, अष्टकाश्राद्धका अंगभूत होम, अन्वष्टकाश्राद्धकां अग्नौकरण होम और तीन दिनोंमें हवीका श्रपण ये सब कर्म दक्षिणाग्निमें करने ऐसा विशेष है. शेष रहा कर्म गृह्याग्निकीतरह करना. अष्टकाश्राद्ध नहीं किया जावै तौ प्राजापत्यकृच्छ्र[1] अथवा उपवास यह प्रायश्चित्त कहा है. अन्वष्टक्यश्राद्ध नहीं किया जावै तौ तिस दिनमें "**एभिर्द्युभिः सुमना०**" इस मंत्रका १०० वार जप करना.

मार्गशीर्षादिरविवारेषुकाम्यंसौरव्रतमुक्तं तत्रभक्ष्याणि मार्गेतुलसीपत्रत्रयं पौषेत्रिपलंघृतंमाघेतिलानांमुष्टित्रयं फाल्गुनेत्रिपलंदधि चैत्रेत्रिपलंदुग्धं वैशाखेगोमयं ज्येष्ठेतोयांजलित्रयंआषाढेमरीचकत्रयं श्रावणेत्रिफलाःसक्तवः भाद्रेगोमूत्रं आश्विनेशर्करा कार्तिकेसद्धविरिति इतिश्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचिते धर्मसिंधुसारेमार्गशीर्षमासकृत्यनिर्णयउद्देशःसमाप्तः ॥

मंगशिर आदि बारह महीनोंके अंतवारोंमें काम्य ऐसा सूर्यव्रत कहा है. तहां भक्ष्य पदार्थोंकों कहताहुं. मंगशिरमें तुलसीके तीन पत्ते भक्षण करने. पौषमें दश १० तोले घृत पीना. माघमें तीन मुष्टिभर तिलोंकों चावना. फाल्गुनमें दश १० तोले दही पीना. चैत्रमें दश १० तोले दूध पीना. वैशाखमें गोवर भक्षण करना. ज्येष्ठमें तीन अंजलि पानीं पीना. आषाढमें तीन स्याह मिरचोंकों खाना. श्रावणमें दश १० तोले सत्तु खाने. भाद्रपदमें गोमूत्र पीना. आश्विनमें खांड खाना और कार्तिकमें शुद्ध हवि भक्षण करना ऐसा जानना. इति धर्मसिंधुसारभाषाटीकायां मार्गशीर्षमासकृत्यनिर्णयो नाम नवम उद्देशः ॥ ९ ॥

अथपौषः दिवामकरसंक्रमेसंक्रांत्यनंतरंचत्वारिंशन्नाड्यःपुण्याःघटिकाद्यल्पादिनशेषेमकरसंक्रांतौसंक्रांत्यासन्नपूर्वकालेदिवैवस्नानश्राद्धदानभोजनानिकार्याणि रात्रौश्राद्धदानादेर्निषे

---

[1] तीसरे परिच्छेदके पूर्वार्धमें कृच्छ्रके लक्षणमें पादकृच्छ्रका लक्षण कहा है. वह पादकृच्छ्र क्रमसें तीनगुना करनेसें प्राजापत्यप्रायश्चित्त होता है.

धात्स्वल्पदिनभागे स्नानश्राद्धस्वभोजनादेःकर्तुमशक्यत्वाद्रात्रौभोजननिषेधात्पुत्रवद्गृहिणउपवासनिषेधाच्चतस्मादीदृशेविषयेपरपुण्यकालत्वंबाधित्वामकरसंक्रांतेःपूर्वभागएवपुण्यत्वंज्ञेयं रात्रौपूर्वभागेनिशीथेवामकरसंक्रमेउत्तरदिनंपुण्यं तत्राप्युत्तरदिनपूर्वार्धंपुण्यतरं तत्रापिसूर्योदयोत्तरंपंचनाड्यःपुण्यतमाः एवंरात्रिसंक्रांतिविषयेन्यत्रापियत्रपूर्वदिनोत्तरार्धस्यपुण्यत्वंतत्रदिनांतेपंचनाडीनांपुण्यतमत्वं यत्रोत्तरदिनपूर्वार्धस्यपुण्यत्वंतत्रोदयोत्तरंपंचनाडीनांपुण्यतमत्वंएवंदिवासंक्रमेपिसंक्रांतिसन्निहितनाडीनां मकरादिषूत्तरासांकर्कादिषुपूर्वासांपुण्यतमत्वंज्ञेयम् यायाःसन्निहितानाड्यस्तास्ताः पुण्यतमाःस्मृताइत्युक्तेःमुहूर्तचिंतामण्यादौतुसूर्यास्तादूर्ध्वंघटीत्रयंसंध्याकालस्तत्रमकरसंक्रमे परदिनेपुण्यत्वंबाधित्वापूर्वदिनेपुण्यत्वमुक्तंनेदंसर्वत्रधर्मशास्त्रग्रंथेषुदृश्यते शुक्लपक्षेतुसप्तम्यांसंक्रांतिर्ग्रहणाधिका अत्रकृत्यं रविसंक्रमणे प्राप्तेनस्नायाद्यस्तुमानवः सप्तजन्मनिरोगीस्यान्निर्धनश्चैवजायतइतिवचनान्मनुष्यमात्रस्यस्नानं नित्यं एवंश्राद्धमप्यधिकारिणोनित्यं तच्चापिंडकं संक्रांतौयानिदत्तानिहव्यकव्यानिदातृभिः तानिनित्यंददात्यर्कःपुनर्जन्मनिजन्मनि अयनसंक्रांतौत्रिदिनमुपवासःयद्वासंक्रांतिमत्यहोरात्रेपुण्यकालवत्यहोरात्रेवोपवासंकृत्वोक्तपुण्यकालेस्नानदानादिकार्यं अयमुपवासःसापत्यगृहस्थेननकार्यः धेनुंतिलमयींराजन्दद्याच्चैवोत्तरायणे तिलतैलेनदीपाश्चदेयाःशिवगृहेशुभाःसति तैस्तंदुलैश्चैवोत्तरायणे शुक्लतिलैर्देवादितर्पणंकृष्णतिलैःपितृतर्पणंचकार्यं अत्रशंभौघृताभिषेकोमहाफलः अत्रसुवर्णयुततिलताम्रपात्रंदेयंतत्प्रयोगोवक्ष्यते अत्रैवंशिवपूजाव्रतं पूर्वदिने उपोष्यसंक्रांतिदिनेतिलोद्वर्तनतिलस्नानतिलतर्पणानिकृत्वाशिवंगव्येनाज्येनमर्दयित्वाशुद्धोदकेनप्रक्षाल्यवस्त्राद्युपचारैःपूजायित्वा सुवर्णहीरकनीलपद्मरागमौक्तिकमितिपंचरत्नानिकर्षार्धं सुवर्णंवासमर्प्यतिलदीपैःससुवर्णैःसाक्षतैस्तिलैःसंपूज्यघृतकंबलंदत्वा वितानचामरेसमर्प्यविप्रेभ्यःससुवर्णतिलान्दत्वातिलान्हुत्वाविप्रान्यतींश्चसंभोज्य दक्षिणांदत्वासतिलंपंचगव्यंपीत्वापारणंकुर्यादिति अत्रवस्त्रदानंमहाफलं तिलपूर्वमनड्वाहंदत्वारोगैःप्रमुच्यते अत्रक्षीरेण भास्करंस्नापयेत्सूर्यलोकप्राप्तिः दिवाविषुवायनसंक्रांतौतस्मिन्दिनेपूर्वरात्रौआगामिरात्रौचानध्यायःरात्रौतत्संक्रमेतस्यांरात्रौपूर्वदिवसेआगामिदिवसेचेतिपक्षिण्यनध्यायः अत्ररात्रौसंक्रमेग्रहणवद्रात्रावेवस्नानदानादीतिपक्षःकैश्चिल्लिखितोनसर्वशिष्टसंमतः अयनदिनंतत्परंकारिसंज्ञकंचदिनंशुभेषुवर्ज्यमित्युक्तं तत्रार्धरात्रादर्वागयनसंक्रांतौतद्दिनंतत्परदिनंचवर्ज्यं निशीथात्परत्रनिशीथेवासंक्रांतौपरंतत्परंचवर्ज्यमितिभाति एवंग्रहणेप्यूह्यं ॥

अब पौषमासके कृत्य कहताहुं.

दिनमें मकरसंक्रांति होवै तौ संक्रांतिकालके उपरंत चालीस घडी पुण्यकाल है. घटीका आदि अल्प शेष रहे दिनमें मकरसंक्रांति होवै तौ संक्रांतिके समीपके पूर्वकालविषे दिनमेंही स्नान, श्राद्ध, दान, भोजन ये करने. क्योंकी, रात्रिमें श्राद्ध और दान आदिका निषेध है, और स्वल्प रहे दिनभागमें स्नान, श्राद्ध, स्वभोजन आदि बननेकों अशक्य है, और संक्रांतिके रात्रिमें भोजनका निषेध है और पुत्रवाले गृहस्थीकों उपवासका निषेध है वास्ते इस प्रकारके प्रसंगमें परदिनका पुण्यकाल बाधित करके मकरकी संक्रांतिके पूर्व-

भागमेंही पुण्यकाल जानना. रात्रिविषे पूर्वभागमें, उत्तरभागमें अथवा अर्धरात्रिमें मकरसंक्रांति होवै तब परदिनमें पुण्यकाल जानना. तहांभी परदिनके पूर्वार्धमें अतिपुण्यकाल है. तहांभी सूर्योदयके उपरंत पांच घडी अतिपुण्यकाल है ऐसा जानना. ऐसेही रात्रिगत अन्य संक्रांतिके विषयमेंभी जानना. जहां पूर्वदिनके उत्तरार्धमें पुण्यकाल है तहांभी दिनके अंतमें पांच घडी अतिपुण्यकाल है. जहां परदिनके पूर्वार्धमें पुण्यकाल है तहां सूर्योदयके उपरंत पांच घटीका अतिपुण्यकाल है. ऐसेही दिनमें संक्रांति होवै तौभी मकर आदि संक्रांतियोंमें संक्रांतिकालके समीपकी प्रवेशके अनंतरकी घटीका और कर्क आदि संक्रांतियोंमें संक्रांतिकालके समीपकी पहली घटीका अतिपुण्यकाल है. क्योंकी, “संक्रांतिकालके समीपकी जो जो घटीका हैं वेही अतिपुण्यरूप कही हैं” ऐसा वचन है. **मुहूर्तचिंतामणि** आदि ग्रंथोंमें तौ सूर्यके अस्तके उपरंत तीन घटीका संध्याकाल कहा है, तहां मकरसंक्रांति होवै तौ परदिनका पुण्यकाल बाधित करके पूर्वदिनमें पुण्यकाल कहा है; परंतु यह सब धर्मशास्त्रके ग्रंथोंमें नहीं दीखता है. “शुक्लपक्षविषे सप्तमीतिथिमें संक्रांति होवै तौ वह ग्रहणसेंभी अधिक पुण्यवाली होती है.” यह संक्रांतिके कृत्य कहताहुं.—“सूर्यसंक्रांति प्राप्त होवै तब जो मनुष्य स्नान नहीं करता है, वह सात जन्मतक रोगी और निर्धन होता है.” इस वचनसें मनुष्यमात्रकों स्नान नित्य है. ऐसेही अधिकारीकों श्राद्धभी नित्य है. परंतु वह श्राद्ध पिंडोंसें रहित करना. “जिन दाता लोकोंनें संक्रांतिके दिन जो होम और श्राद्ध आदि दान किये होवैं तिन्होंकों सूर्य जन्मजन्ममें फिर देता है.” अयनसंक्रांतिमें तीन दिन उपवास करना. अथवा संक्रांतिवाले दिनरात्रिमें और पुण्यकालवाले दिनरात्रिमें उपवास करके उक्त पुण्यकालविषे स्नान दान आदि करने. यह उपवास संतानवाले गृहस्थीनें नहीं करना. “हे राजन्, उत्तरायणके दिन तिलोंकी धेनु[1] करके तिसका दान करना. महादेवके मंदिरमें तिलोंके तेलके सुंदर दीपक प्रकाशित करने. तिलसहित चावलोंकरके विधिपूर्वक महादेवकी पूजा करनी. मकरसंक्रांतिके दिन काले तिलोंसें स्नान और तिलोंसें उद्वर्तन करना उचित है. उत्तरायणके दिन तिलोंका दान करना, होम करना और भक्षण करना. सुपेद तिलोंसें देव आदिका तर्पण और काले तिलोंकरके पितरोंका तर्पण करना. यहां महादेवजीकी प्रतिमापर घृतके अभिषेकसें महाफल प्राप्त होता है. यह संक्रांतिके दिन सोनासें युत तिलोंसें पूरित किये तांबाके पात्रका दान करना. तिसका प्रयोग आगे कहैंगे. यहांही शिवपूजाव्रत करना, सो ऐसा;— पूर्वदिनमें उपवास करके संक्रांतिके दिनमें तिलोद्वर्तन, तिलस्नान और तिलतर्पण करके महादेवजीकों गौके घृतसें मर्दन करके शुद्ध पानीसें प्रक्षालन करना और वस्त्र आदि उपचारोंकरके पूजा करनी. पीछे सोना, हीरा, नीलम, माणिक और मोती इन पंचरत्न और आठ मासा सुवर्ण शिवकों समर्पित करके सुवर्णसहित तिलके दीपक, तिल और चावल इन्होंसें पूजा करके घृतकंबलका[2] दान करना. पीछे चंदोवा और चवर समर्पित करने और ब्राह्मणोंकों

---

[1] तिलधेनुका प्रकार दानकमलाकर ग्रंथमें कहा है. [2] घृतकंबलका विधि व्रतराज और व्रतार्क इन ग्रंथोंमें देख लेना.

सोनासहित तिल देके तिलोंका होम करना. पीछे ब्राह्मण और संन्यासियोंकों भोजन करवायके दक्षिणा देनी. पीछे तिलोंसहित पंचगव्यका पान करके पारणा करनी. इस दिनमें वस्त्रका दान कियेसें महाफल प्राप्त होता है. "तिलपूर्वक बैलके दानसें मनुष्य रोगोंसें छूट जाता है." यहां दूधकरके सूर्यकों अभिषेक करना. तिस्सें सूर्यलोककी प्राप्ति होती है. दिनमें मेष, तुलाकी संक्रांति अथवा मकर और कर्ककी संक्रांति होवै तौ तिसी दिनमें पूर्वरात्रिविषे और आगामिनी रात्रिविषे अनध्याय होता है. यही संक्रांति रात्रिमें होवै तौ तिस रात्रिमें और पूर्वदिनमें तथा आगमि दिनमें, ऐसे बारह पहर अनध्याय जानना. यहां रात्रिमें संक्रांति होवै तौ ग्रहणकी तरह रात्रिमेंही स्नान और दान आदि करने. यह पक्ष कितनेक ग्रंथकारोंनें लिखा है, सब शिष्टोंका माना हुआ नहीं है. अयनकी संक्रांति होवै तिस दिनसें एक दिन परै **करिसंज्ञक** दिन होता है यह शुभकर्मोंमें वर्जित है. इस प्रकार कहा है. तहां अर्धरात्रके पहले अयनकी संक्रांतिमें वह दिन और परदिन वर्ज देना. अर्धरात्रके परै अथवा अर्धरात्रमें संक्रांति होवै तब परदिन और तिस्सेंभी परदिन वर्जित है, ऐसा भान होता है. इसी प्रकार ग्रहणमेंभी विचार करना.

पौषशुक्लाष्टम्यांबुधवासरयुतायांस्नानजपहोमतर्पणविप्रभोजनानिकार्याणि अस्यांभरणीयोगेमहापुण्यत्वमित्येके रोहिण्याद्रार्योगेइतिपरे ॥

बुधवारसें युत हुई पौष शुदि अष्टमीमें स्नान, जप, होम, तर्पण और ब्राह्मणभोजन ये करने उचित हैं. कितनेक ग्रंथकार कहते हैं की इस अष्टमीमें भरणीनक्षत्रका योग होवै तब अत्यंत पुण्यकाल होता है. और अन्य ग्रंथकार कहते हैं की, इस अष्टमीमें रोहिणी और आर्द्रानक्षत्रका योग होवै तब अतिपुण्यकाल होता है.

पौषशुक्लैकादशीमन्वादिः तन्निर्णयः प्रागुक्तः ॥

पौष शुदि एकादशी मन्वादि तिथि है, तिसका निर्णय पहले कह दिया है.

अथमाघस्नानम् तत्रपौषस्यशुक्लैकादश्यांपौर्णमास्याममावास्यायांवामाघस्नानारंभः माघे द्वादशीपूर्णिमादौसमापनम् यद्वामकरसंक्रमणप्रभृतिकुंभसंक्रमणपर्यंतंस्नानंकार्यं अथस्नानकालः अरुणोदयमारभ्यप्रातःकालावधिः उत्तमंतुसनक्षत्रंलुप्ततारंचमध्यमम् सवितर्युदिते भूपततोहीनंप्रकीर्तितम् माघमासेरटंत्यापःकिंचिदभ्युदितेरवौ ब्रह्मघ्नंवासुरापंवाकंपतंतंपुनीमहे अत्राधिकारिणः ब्रह्मचारीगृहस्थोवावानप्रस्थोथभिक्षुकः बालवृद्धयुवानश्चनरनारीनपुंसकाइति अथजलतारतम्येनफलंतप्तेनवारिणास्नानंयद्गृहेक्रियतेनरैःषडब्दफलदंतद्धिमकरस्थेदिवाकरे वाप्यादौद्वादशाब्दफलं तडागेतद्द्विगुणं नद्यांतच्चतुर्गुणं महानद्यांशतगुणं महानदीसंगमेतच्चतुर्गुणं गंगायांसहस्रगुणं गंगायमुनासंगमेएतच्छतगुणमिति यत्रकुत्रापिस्नाने प्रयागस्मरणंकार्यं इदंसमुद्रेप्यतिप्रशस्तं ॥

अब माघस्नानका निर्णय कहताहुं.

पौषकी शुक्ल एकादशीमें अथवा पौर्णमासीमें अथवा अमावसमें माघके स्नानका आरंभ

करना, और माघमें द्वादशीविषे अथवा पौर्णमासी आदिमें माघस्नान समाप्त करना. अथवा मकरसंक्रांतिसें कुंभसंक्रांतिपर्यंत माघस्नान करना. अब स्नानका काल कहताहुं;— अरुणोदयसें आरंभ करके प्रातःकालतक अवधि है. “ तारागण दीखते होवैं ऐसे कालमें स्नान करना उत्तम है. तारागण छिप जावैं ऐसे कालमें स्नान करना मध्यम है. हे राजन्, सूर्योदयके अनंतर स्नान करना हीन होता है. ” “ माघके महीनेमें कछुक सूर्य उदित होवै तब जल कहते हैं की, ब्रह्महत्या करनेवाला और मदिरा पीनेवाला और कांपते हुये ऐसे मनुष्योंको हम पवित्र करते हैं. ” इसके अधिकारी कहताहुं. “ ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थ, संन्यासी, वालक, वृद्ध, जुवान ऐसे नर, नारी, नपुंसक ये अधिकारी हैं. ” यहां पानीके भेदसें मूलभेद कहताहुं. “ मकरसंक्रांतिपर सूर्य होवै तब घरमें जो गरम पानीसें स्नान करना वह स्नान छह वर्षोंतक फलदायक है. ” बावडी आदिमें किया स्नान बारह वर्षतक फलदायक है. तलावमें किया स्नान चौवीस वर्षोंतक फलदायक है. नदीमें स्नान करना अठतालीस वर्षोंतक फलदायक है. महानदीमें किया स्नान सौ १०० गुना फल देता है. महानदीके संगममें किया स्नान ४०० चारसौ गुना फल देता है. गंगाजीमें किया स्नान हजारगुना फल देता है. गंगा और यमुनाके संगममें किया स्नान पूर्वोक्तसें सौगुना फल देता है. जहां कहांभी स्नानमें प्रयागका स्मरण करना. और यह स्नान समुद्रमें अति प्रशस्त है.

अथविधिः माघमासमिमंपूर्णंस्नास्येहंदेवमाधव तीर्थस्यास्यजलेनित्यमितिसंकल्प्यचेतसि इत्येकतीर्थंपरिगृह्य दुःखदारिद्र्यनाशायश्रीविष्णोस्तोषणायच प्रातःस्नानंकरोम्यद्यमाघेपापविनाशनं मकरस्थेरवौमाघेगोविंदाच्युतमाधव स्नानेनानेनमेदेवयथोक्तफलदोभव इमौमंत्रौ समुच्चार्यस्नायान्मौनसमन्वितः प्रत्यहंसूर्यार्घ्यमंत्रः सवित्रेप्रसवित्रेचपरंधामजलेमम त्वत्तेजसापरिभ्रष्टंपापंयातुसहस्रधेति पितृतर्पणादिनित्यंविधायमाधवंपूजयेत् भूमौशयीतहोतव्यमाज्यंतिलसमन्वितं हविष्यंब्रह्मचर्यंचमाघमासेमहाफलं अत्रेंधनकंबलवस्त्रोपानत्तैलघृततूलपूर्णपटीसुवर्णान्नदानानिमहाफलानि नवह्निंसेवयेत्स्नातोह्यस्नातोपिवरानने होमार्थंसेवयेद्वह्निंसीतार्थेनकदाचन अहन्यहनिदातव्यास्तिलाःशर्करयान्विताः त्रयोभागास्तिलानांचतुर्थःशर्करायाः अत्राभ्यंगोवर्ज्यः माघेमास्युषसिस्नानंकृत्वादांपत्यमर्चयेत् माघेयत्नेनसंत्याज्यंमूलकंमदिरोपमम् पितॄणांदेवतानांचमूलकंनैवदापयेत् यदामाघोमलमासोभवतितदाकाम्यानांतत्रसमाप्तिनिषेधान्मासद्वयंस्नानंतन्नियमाश्चकर्तव्याः मासोपवासचांद्रायणादिकंतुमलमासएवसमापयेदित्युक्तं इदंमाघस्नानंनित्यकाम्योभयरूपं मासपर्यंतस्नानेप्यशक्तस्त्र्यहमेकाहंवास्नायात् तत्राद्यंदिनत्रयमितिकेचित् त्रयोदश्यादिदिनत्रयमितिबहुसंमतं पौषपूर्णिमानंतरासुअष्टमीसप्तमीनवमीष्वष्टकादिश्राद्धानिप्रागुक्तानि पौषामावास्यायामर्धोदययोगः अमार्कपातश्रवणैर्युक्ताचेत्पौषमाघयोः अर्धोदयःसविज्ञेयःकोटिसूर्यग्रहैःसमः किंचिन्न्यूनंमहोदयइतिचतुर्थपादंकेचित्पठंति पौषमाघयोर्मध्यवर्तिनीत्यर्थइत्येके अमांतमासेपौषस्यपूर्णिमांतमासेमाघस्यचेत्यर्थइत्यपरे सर्वथापौषपौर्णमास्युत्तरामावास्येत्यर्थःदिवैवयोगःशस्तोयंनतुरात्रौकदाचन अर्धोदयेतुसंप्राप्तेसर्वंगंगासमंजलं शुद्धात्मानोद्विजाःसर्वेभवेयुर्ब्रह्मसन्निभाः यत्किंचिद्दीयतेदानंतदानंमेरुसन्निभं ॥

अब माघस्नानका विधि कहताहुं.

हे माधव, हे देव, इस संपूर्ण माघमासतक मैं इस तीर्थके जलमें नित्यप्रति स्नान करूंगा, ऐसा चित्तमें संकल्प करके स्नानके लिये एक तीर्थ परिकल्पित करके, "**दुःखदारिद्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च ॥ प्रातःस्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम् ॥ मकरस्थे रवौ माघे गोविंदाच्युत माधव ॥ स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव,**" इन दोनों मंत्रोंका उच्चार करके मौनी होके स्नान करना. स्नानके अनंतर नित्यप्रति सूर्यकों अर्घ्य देना. तिसका मंत्र कहा जाता है;—"**सवित्रे प्रसवित्रे च परंधाम जले मम ॥ त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा.**" तिसके अनंतर पितृतर्पण आदि नित्यकर्म करके विष्णुकी पूजा करनी. "पृथिवीपर शयन, तिलोंसहित घृतका होम, हविष्य पदार्थका भोजन, और ब्रह्मचर्यका धारण ये सब माघमासमें महाफलकों देते हैं." इस महीनेमें इंधन, कंबल, वस्त्र, जूतीजोडा, तेल, कपास पूरित वस्त्र, सोना, और अन्न इन सबोंके दान महाफलकों देते हैं. "हे वराननने, स्नान किया होवै अथवा नहीं किया होवै तिस मनुष्यनेंभी अग्निकों नहीं सेवना. होमके अर्थ अग्निकों सेवना." शीत अर्थात् जाडाके अर्थ अग्निकों कभीभी नहीं सेवना. दिनदिनकेप्रति रोज खांडसहित तिलका दान करना. तिसमें तिलोंके तीन भाग लेने और खांडका एक भाग लेना. इस महीनेमें अभ्यंग करना वर्जित है. माघमासमें प्रभातविषे स्नान करके दंपत्यकी पूजा करनी. माघमासमें जतनकरके मूलीकों त्यागना; क्योंकी, यह मूली मदिराके समान होनेसें निषिद्ध है. पितर और देवताओंकोंभी मूली नहीं अर्पण करनी. जब माघ अधिकमास होता है तब तिस महीनेमें काम्यव्रतोंके समाप्तिका निषेध है, वास्ते दो महीनोंतक स्नान और तिसके नियम करने. मासोपवास और चांद्रायण आदि तौ अधिकमासमेंभी समाप्त करने ऐसा कहा है. यह माघस्नान नित्यभी है और काम्यभी है. एक महीनापर्यंत स्नान करनेकों सामर्थ्य नहीं होवै तौ तीन दिन अथवा एक दिन स्नान करना. तहां आदिके तीन दिन लेने ऐसा कितनेक कहते हैं. त्रयोदशी आदि तीन दिन लेने ऐसा बहुत पंडितोंका मत है. पौषमासकी पौर्णमासीके अनंतर अष्टमी, सप्तमी, नवमी, इन तिथियोंमें अष्टकाश्राद्ध करना ऐसा पहले कहा है. पौषकी अमावसमें अर्धोदय योग होता है. सो ऐसा;—"पौष और माघकी अमावसकों अंतवार, व्यतीपातयोग, श्रवणनक्षत्र ये होवैं तब अर्धोदय योग होता है. यह किरोड सूर्यग्रहणोंके समान है." कछुक न्यून होवै तौ महोदय योग होता है. ऐसे चौथे पादकों कितनेक पंडित पठित करते हैं. पौष और माघके मध्यकी अमावस ऐसा अर्थ कितनेक पंडित करते हैं. अन्य ग्रंथकार कहते हैं की, अमावसकों महीना पूर्ण होता है. इस पक्षमें पौषकी अमावस और पौर्णमासीकों महीना पूर्ण होता है इस पक्षमें माघकी अमावस ऐसा अर्थ करते हैं. और अन्य ग्रंथकार सब प्रकारकरके पौषकी पौर्णमासीके अनंतर जो अमावस आवै वह लेनी ऐसा अर्थ करते हैं. यह योग दिनमेंही श्रेष्ठ है. रात्रिमें कभीभी श्रेष्ठ नहीं है. जब अर्धोदय योग प्राप्त होता है तब सब प्रकारके पानी गंगाजलके समान होते हैं. और शुद्ध आत्मावाले सब द्विज ब्रह्माजीके समान होते हैं. इस अर्धोदयमें जो कछु दान दिया जाता है वही मेरुपर्वतके समान होता है.

अथामत्रदानप्रयोगः देशकालौसंकीर्त्यसमुद्रमेखलायाःपृथ्व्याःसम्यग्दानफलकामोहमर्धोदयविहितामत्रदानंकरिष्येइतिसंकल्प्योपलिप्तेदेशेधौततंडुलैरष्टदलंकृत्वा तत्रचतुःषष्टिपलंचत्वारिंशत्पलंवापंचविंशतिपलंवाकांस्यपात्रंकृताग्न्युत्तारणंस्थापयेत् तत्राष्टगुंजात्मकोमाषःचत्वारिंशन्माषाःकर्षःपलंकर्षचतुष्टयं अमरसिंहमतेतु अशीतिगुंजात्मकःकर्षःपलंकर्षचतुष्टयं कांस्यपात्रेपायसंनिक्षिप्यपायसेष्टदलंकृत्वातत्कर्णिकायांकर्षतदर्धतदर्धान्यतमपरिमाणहेमलिंगंनिधाय कांस्यपात्रेब्रह्माणंपायसेविंष्णुंलिंगेशिवंयथाधिकारंवैदिकैर्मंत्रैर्नामभिर्वावाहनाद्युपचारैःसंपूजयेत् ततोविप्रंवस्त्रादिभिःपूजयेत् सुवर्णपायसामत्रंयस्मादेतत्त्रयीमयं आवयोस्तारकंयस्मात्तद्गृहाणद्विजोत्तम अमुकगोत्रायामुकशर्मणेतुभ्यंइदंसुवर्णलिंगपायसयुक्तममत्रंसमुद्रमेखलापृथ्वीदानफलकामोहं संप्रददेनममेतिविप्रहस्तेजलंदद्यात् विप्रःदेवस्यत्वेतिगृह्णीयात् दातादानस्यसंपूर्णतार्थमिमांदक्षिणांसंप्रददइतियथाशक्तिहिरण्यंदद्यात् हेमाद्याद्युक्तःप्रकारांतरेणार्धोदयव्रतप्रयोगो ब्रह्मादियुततिलपर्वतत्रयशय्यात्रयगोत्रयदानहोमादिसहितःकौस्तुभेद्रष्टव्यः इति श्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेपौषमासकृत्यनिर्णयउद्देशःसमाप्तः ॥

अब पात्रदानका प्रयोग कहताहुं.

देश और कालका उच्चार करके “ **समुद्रमेखलायाः पृथ्व्याः सम्यग्दानफलकामोहमर्धोदयविहितामत्रदानं करिष्ये,** ” ऐसा संकल्प करके पीछे लीपी हुई पृथिवीपर सपेद चावलोंसें अष्टदल करके तहां ६४ पलोंके अथवा ४० पलोंके अथवा २९ पलोंके कांसीके पात्रकों अग्न्युत्तारण करके स्थापित करना. तहां आठ चिरमठियोंका माष होता है, चालीस माषोंका कर्ष होता है और चार कर्षोंका पल होता है. अमरसिंहके मतमें तौ अइशी चिरमठियोंका कर्ष होता है और चार कर्षोंका पल होता है. कांसीके पात्रमें खीर रखके तिस खीरमें अष्टदल करके तिसकी कर्णिकामें कर्षपरिमित अथवा आधा कर्षपरिमित अथवा पा कर्षपरिमित सोनाके लिंगकों स्थापित करके और कांसीके पात्रमें ब्रह्माजीकों और खीरमें विष्णुकों रखके लिंगमें अधिकारके अनुसार वैदिकमंत्रोंकरके अथवा नामोंकरके आवाहन आदि उपचारोंसें शिवकी पूजा करनी. पीछे ब्राह्मणकी वस्त्र आदिसें पूजा करके तिसकों कांसीके पात्रका दान करना. तिसका मंत्र—“ **सुवर्णपायसामत्रं यस्मादेतत्त्रयीमयम् ॥ आवयोस्तारकं यस्मात्तद्गृहाण द्विजोत्तम ॥ अमुकगोत्रायामुकशर्मणे तुभ्यमिदं सुवर्णलिंगपायसयुक्तममत्रे समुद्रमेखलापृथ्वीदानफलकामोहं संप्रददे न मम** ” इस प्रकार संकल्प करके ब्राह्मणके हाथपर उदक देना. और ब्राह्मणनें “ **देवस्यत्वा०** ” इस मंत्रसें ग्रहण करना. यजमाननें “ **दानस्य संपूर्णतार्थमिमां दक्षिणां संप्रददे** ” इस प्रकार संकल्प करके शक्तिके अनुसार सुवर्णकी दक्षिणा देनी. हेमाद्रि आदि ग्रंथकारोंनें कहा हुआ ऐसा दुसरी तरहका अर्धोदयव्रतका प्रयोग है. सो ऐसा,—ब्रह्मा, विष्णु, शिव इन्होंसें युत ऐसे तिलोंके तीन पर्वत, तीन शय्या, और तीन गौ इन्होंका दान करके होम आदि करना. यह प्रयोग कौस्तुभ ग्रंथमें देखना उचित है. इति **धर्मसिंधुसारभाषाटीकाटां पौषमासकृत्यनिर्णयो नाम दशम उद्देशः ॥ १० ॥**

अथमाघमासः कुंभसंक्रांतौपूर्वंषोडशनाड्यःपुण्याःमाघेवेणीस्नानमहिमा सितासितेतु यत्स्नानंमाघमासेयुधिष्ठिर नतेषांपुनरावृत्तिःकल्पकोटिशतैरपि कुरुक्षेत्रसमागंगायत्रकुत्रावगाहिता तस्माद्दशगुणाविंध्येकाश्यांशतगुणाततः काश्याःशतगुणाप्रोक्तागंगायमुनयान्विता सहस्रगुणितासापिमाघेपश्चिमवाहिनी ॥

अब माघमासके कृत्य कहताहुं.

कुंभसंक्रांतिकी पहली सोलह घडी पुण्यकाल है. माघमासमें वेणीके स्नानकी महिमा कहताहुं.—“हे युधिष्टिर, माघमहीनेमें शुक्लपक्षमें और कृष्णपक्षमें जो मनुष्य गंगाजी और यमुनाजीके संगममें स्नान करते हैं तिन मनुष्योंका कल्पकोटिशतवर्षोंसेंभी फिर संसारमें जन्म नहीं होता है. जहां कहांभी गंगाजीमें स्नान करनेसें कुरुक्षेत्रमें स्नान किये समान पुण्य प्राप्त होता है. विंध्याचलके समीप गंगास्नान करनेसें कुरुक्षेत्रसें दशगुना फल प्राप्त होता है. तिस्सें सौगुना काशीमें गंगाजीका स्नान करनेमें फल प्राप्त होता है. गंगा और यमुनाजीके संगममें अर्थात् प्रयागमें स्नान करनेमें काशीसें सौगुना फल प्राप्त होता हैं. और माघमहीनेमें पश्चिमवाहिनी गंगामें स्नान करनेमें प्रयागसें सहस्रगुना फल प्राप्त होता है. इस तरह स्नानका फल जानना.”

अथमाघेतिलपात्रदानंप्रशस्तं तत्प्रयोगः ताम्रपात्रेतिलान्कृत्वापलषोडशनिर्मिते सहिरण्यंस्वशक्त्यावाविप्रायप्रतिपादयेत् वाङ्मनःकायजत्रिविधपापनाशपूर्वकंब्रह्मलोकप्राप्तिकामस्तिलपात्रदानंकरिष्ये उक्तपरिमाणेताम्रपात्रेप्रस्थतिलान्कर्षसुवर्णयुतान्यथाशक्तिसुवर्णयुतान्वाकृत्वाविप्रंसंपूज्य देवदेवजगन्नाथवांछितार्थफलप्रद तिलपात्रंप्रदास्यामितवांगेसंस्थितोह्यहमितिमंत्रेणदद्यात् धान्यमानेतुकुडवोमुष्टीनांस्याच्चतुष्टये चत्वारःकुडवाःप्रस्थश्चतुःप्रस्थमथाढकं अष्टाढकोभवेद्द्रोणोद्विद्रोणःशूर्पउच्यतेसार्धशूर्पोभवेत्खारीत्युक्तरीत्यापलंसुवर्णाश्चत्वारः कुडवंप्रस्थमाढकं द्रोणंचखारिकाचेतिपूर्वपूर्वाच्चतुर्गुणमित्युक्तरीत्यावाप्रस्थमानस्वरूपंज्ञेयंयद्वाहिरण्यरहितान्तिलांस्ताम्रपात्रेनिधाय तिलाःपुण्याःपवित्राश्चसर्वपापहराःस्मृताः शुक्लाश्चैवतथाकृष्णाविष्णुगात्रसमुद्भवाः यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानिच तिलपात्रप्रदानेनतानिनश्यंतुमेसदा इदंतिलपात्रंयथाशक्तिदक्षिणासहितंयमदैवतंब्रह्मलोकप्राप्तिकामस्तुभ्यमहंसंप्रददेइतिदद्यात् अथसहिरण्यतुलसीपत्रदानमंत्रः सुवर्णतुलसीदानाद्ब्रह्मणःकायसंभवात् पापंप्रशममायातुसर्वेसंतुमनोरथाः अथशालग्रामदानमंत्रःशालग्रामशिलापुण्याभुक्तिमुक्तिप्रदायिनी शालग्रामप्रदानेनममसंतुमनोरथाः चक्रांकितसमायुक्तशालग्रामशिलाशुभा दानेनैवभवेत्तस्याउभयोर्वांछितंफलं ॥

माघमहीनेमें तिलपात्रका दान प्रशस्त है. तिसका प्रयोग कहताहुं.—“सोलह पल[1] तांबाके पात्रमें तिलोंकों भरके शक्तिके अनुसार सोनासें संयुक्त करके ब्राह्मणकों दान देना.” तिसका मंत्र—“वाङ्मनःकायजत्रिविधपापनाशपूर्वकब्रह्मलोकप्राप्तिकामस्तिलपात्रदानं करिष्ये,” ऐसा संकल्प करके पूर्वोक्त वजनवाले तांबाके पात्रमें प्रस्थपरिमित तिल डालके

---

[1] व्यवहारिक ५३ तोले और ४ माष.

एक कर्ष सुवर्ण अथवा शक्तिके अनुसार सुवर्ण डालके और ब्राह्मणकी पूजा करके **"देवदेव जगन्नाथ वांछितार्थफलप्रद ॥ तिलपात्रं प्रदास्यामि तवांगे संस्थितो ह्यहम्"** इस मंत्रसें दान देना. धान्यके तोलमें चार मुष्टियोंका कुडव होता है, चार कुडवोंका प्रस्थ होता है, चार प्रस्थोंका आढक होता है, आठ आढकोंका द्रोण होता है, दो द्रोणोंका शूर्प होता है और डेढ शूर्पकी खारी होती है, अथवा उक्त रीतिकरके चार कर्षोंका पल, चार पलोंका कुडव, चार कुडवोंका प्रस्थ, चार प्रस्थोंका आढक, चार आढकोंका द्रोण, चार द्रोणोंकी खारी ऐसे होते हैं, अथवा उक्त रीतिकरके प्रस्थतोलके स्वरूपकों जानना. अथवा सोनासें रहित तिलोंकों तांबाके पात्रमें स्थापित करके **" तिलाः पुण्याः पवित्राश्च सर्वपापहराः स्मृताः ॥ शुक्लाश्चैव तथा कृष्णा विष्णुगात्रसमुद्भवाः ॥ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ॥ तिलपात्रप्रदानेन तानि नश्यंतु मे सदा ॥ इदं तिलपात्रं यथाशक्तिदक्षिणासहितं यमदैवतं ब्रह्मलोकप्राप्तिकामस्तुभ्यमहं संप्रददे"** ऐसा संकल्प करके पात्रका दान करना. अब सोनासहित तुलसीपत्रके दानका मंत्र कहताहुं. **" सुवर्णतुलसीदानाद्ब्रह्मणः कायसंभवात् ॥ पापं प्रशममायातु सर्वे संतु मनोरथाः॥"** अब शालग्रामके दानका मंत्र कहताहुं. **"शालग्रामशिला पुण्या भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ शालग्रामप्रदानेन मम संतु मनोरथाः ॥ चक्रांकितसमायुक्तशालग्रामशिला शुभा ॥ दानेनैव भवेत्तस्या उभयोर्वांछितं फलम्,"** इन मंत्रोंसें शालग्रामका दान करना.

अथप्रयागेवेणीदानं तत्रसर्वेषांवपनविधिः ऊर्ध्वमब्दाद्दिमासोनाद्यदातीर्थंव्रजेन्नरः तदा तद्वपनंशस्तंप्रायश्चित्तमृतेद्विज प्रयागेतुयोजनत्रयादागतस्यदशमासादर्वागपि प्रथमयात्रायां तु जीवत्पितृकगुर्विणीपतिकृतचूडबालानामपिसभर्तृकस्त्रीणामपिवपनमितिविशेषः केचित्तु सभर्तृकस्त्रीणांसर्वान्केशान्समुद्धृत्यछेदयेदंगुलद्वयमित्याहुः तत्प्रयोगः वेणीभूतकेशा कृतमांगलिकवेषास्त्रीभर्तारंनत्वा तदाज्ञयासर्ववपनंद्व्यंगुलकेशच्छेदंवाकृत्वास्नात्वात्रिवेणीपूजांकुर्यात्भर्त्रावाकारयेत् पूजांतेपत्नीछिन्नवेणीयुक्तंवैणवपात्रमंजलौधृत्वातस्यांहेमवेणींमौक्तिकादिकंचनिधाय वेण्यांवेणीप्रदानेनममपापंव्यपोहतु जन्मांतरेष्वपिसदासौभाग्यंममवर्धतामिति त्रिवेण्यांक्षिपेत् विप्राःसुमंगलीरियंवधूरितिपठेयुः ततोविप्रान्सुवासिनीश्चवस्त्रादिनातोषयेत् ॥

अब प्रयागमें वेणीदानका विधि कहताहुं.

प्रयागमें सबोंनें क्षौर कराना. दश मासके उपरंत जब मनुष्य तीर्थकों गमन करता है, तब हे द्विज, प्रायश्चित्तकेविना तिसनें क्षौर कराना. प्रयागतीर्थमें तौ बारह कोशसें आये हुये मनुष्यनें दशमासके पहले भी क्षौर कराना. प्रथम यात्रामें तौ जीवते हुये पितावाला, गर्भिणीका पति, क्षौरकर्म किये हुए बालक, सुहागन स्त्री इन्होंनेंभी क्षौर कराना. यह विशेष है. कितनेक ग्रंथकार कहते हैं की सुहागन स्त्रियोंनें सब बालोंकों पकडके दो अंगुल वाल काट देना. तिस वेणीदानका प्रयोग—वेणीरूप किये बालोंवाली और मंगलसहित वेषवाली स्त्रीनें पतिकों प्रणाम करके और पतिकी आज्ञा लेके सब बालोंका मुंडन अथवा बालोंकों दो अंगुलमात्र कटवाय स्नान करके त्रिवेणीकी पूजा करनी अथवा पतिके द्वारा

पूजा करानी. पूजाके अंतमें वह स्त्री कटे हुये बालोंकी मींढीसें युत किये वांसके पात्रकों अंजलीमें धारण करके और तिसमें सोनाकी वेणी अर्थात् मींढी और मोती आदि स्थापित करके "वेण्यां वेणीप्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ॥ जन्मांतरेष्वपि सदा सौभाग्यं मम वर्धताम्" इस मंत्रसें वंशपात्र त्रिवेणीमें छोड देना. पीछे ब्राह्मणनें "सुमंगलीरियं वधूः०" इस मंत्रका पाठ करना. पीछे ब्राह्मण और सुहागन स्त्रियोंकों वस्त्र और दक्षिणा आदिसें प्रसन्न करना.

अथत्रिवेण्यांदेहत्यागविधिः येवैतन्वं१विसृजंतिधीरास्तेजनासोअमृतत्वंभजंतइतिश्रुतिर्माघमासविषया तनुंत्यजतिवैमाघेतस्यमुक्तिर्नसंशयइतिब्रह्मोक्तेः अन्यमासेतनुत्यागात्स्वर्गप्राप्तिः तत्रयथाशक्तिसर्वप्रायश्चित्तंकृत्वाश्राद्धाधिकार्यभावेस्वीयजीवच्छ्राद्धंसपिंडनांतंकृत्वागोदानादिकृत्वाकृतोपवासःपारणाहेफलोल्लेखपूर्वकंसंकल्प्य विष्णुंध्यात्वावेणींप्रविशेदिति-जीवच्छ्राद्धप्रयोगःकौस्तुभेद्रष्टव्यः माघंप्रकृत्य तिलस्नायीतिलोद्वर्तीतिलहोमीतिलोदकी तिलभुक्तिलदाताचषट्तिलाःपापनाशनाइत्युक्तेवाक्ये तिलस्नायीपदेनातिलयुक्तोदकेनस्नानंतिलहोमपदेनायुतलक्षतिलहोमाद्यात्मकस्यग्रहमखस्यापिसंग्रहः तिलोदकीतितिलयुक्तोदकेनदेवपूजातर्पणसंध्यादिकंपानंचकार्यमित्यर्थः सचहोमस्त्रिधा प्रथमोयुतहोमःस्याल्लक्षहोमस्ततःपरः कोटिहोमस्तृतीयस्तुसर्वकामफलप्रदइति लक्षहोमादिप्रयोगःकुंडमंडपनिर्माणादिसहितकौस्तुभमयूखादौज्ञेयः ॥

अब त्रिवेणीमें देहत्यागका विधि कहताहुं.

"जो मनुष्य गंगायमुनाके संगममें शरीरकों छोडते हैं वे मनुष्य मोक्षकों प्राप्त होते हैं." यह श्रुति माघमासविषयक है. क्योंकी, "जो मनुष्य माघमासमें शरीरकों त्यागते हैं तिसकी मुक्ति होती है इसमें संशय नहीं," ऐसा ब्रह्मपुराणका वचन है. माघसें अन्य महीनेमें तहां शरीरकों छोडनेसें स्वर्गकी प्राप्ति होती है. प्रयागमें शक्तिके अनुसार सब प्रायश्चित्त करके श्राद्धके अधिकारीके अभावमें अपना जीवत्श्राद्ध सपिंडनतक करके और गोदान आदि करके और उपवास करके पारणाके दिनमें फलका कथनपूर्वक संकल्प करके और विष्णुका ध्यान करके वेणीमें प्रवेश करना. जीवत्श्राद्धका प्रयोग कौस्तुभग्रंथमें देखना. माघमासके उद्देशकरके "तिलोंसें स्नान करनेवाला, तिलोंसें उवटना करनेवाला, तिलोंसें होम करनेवाला, तिलोंसें तर्पण करनेवाला, तिलोंका भोजन करनेवाला, और तिलोंका दान करनेवाला, ऐसे छह तिल पापोंकों नाशते हैं." इस उक्त वचनमें तिलोंसें स्नान करनेवाला इस पदकरके तिलोंसें युत किये पानीसें स्नान करना, तिलोंसें होम करना इस पदकरके दश हजार और लक्ष तिलहोम आदि ग्रहयज्ञका संग्रह करना. तिलोंसें तर्पण करना इस पदकरके तिलोंसें युक्त किये पानीसें देवपूजा, तर्पण, संध्या आदि कर्म, और तिलयुक्त जलका पान ये सब करने ऐसा अर्थ होता है. होम तीन प्रकारका है. "दश हजार आहुतियोंका होम पहला है, लक्ष आहुतियोंका होम दूसरा है और किरोड आहुतियोंका होम तीसरा है. यह सब कामनाओंकों देते हैं." कुंडमंडप रचना आदिसें सहित लक्षहोम आदिका प्रयोग कौस्तुभ और मयूख आदि ग्रंथोंमें देख लेना.

माघशुक्लचतुर्थ्यांढुंढिराजोद्देशेननक्तव्रतंतत्पूजातिललड्डुकादिनैवेद्यंतिलभक्षणंचोक्तं अत्र प्रदोषव्यापिनीग्राह्या अस्यामेवप्रदोषव्यापिन्यांकुंदपुष्पैःशिवंसंपूज्योपवासंनक्तभोजनंवाकुर्यात् श्रियंप्राप्नुयात् अत्रविनायकव्रतस्यतुभाद्रपदशुक्लचतुर्थीवन्निर्णयः ॥

माघ शुदि चतुर्थीमें ढुंढिराजके उद्देशकरके नक्तव्रत करना और तिसकी पूजामें तिलोंके लाडू आदि नैवेद्य और तिलोंका भक्षण कहा है. यहां प्रदोषव्यापिनी चतुर्थी लेनी. इसी प्रदोषव्यापिनी चतुर्थीमें कुंदके पुष्पोंसें शिवकी पूजा करके उपवास अथवा नक्तव्रत करना. ऐसा करनेसें लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है. यहां गणेशजीके व्रतका भाद्रपद शुदि चतुर्थीकी तरह निर्णय है.

माघशुक्लपंचमीवसंतपंचमीतस्यांवसंतोत्सवारंभः अस्यांरतिकामयोःपूजोक्ताइयंपरत्रैवपूर्वाह्णव्याप्तौपरा अन्यथापूर्वैव ॥

माघ शुदि पंचमी वसंतपंचमी कहाती है. तिसमें वसंतके उत्सवका आरंभ करना. इस पंचमीमें रति और कामदेवकी पूजा करनी. यह पंचमी परदिनमेंही पूर्वाण्हव्यापिनी होवै तौ परविद्धा लेनी. पूर्वाण्हकालव्यापिनी नहीं होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी.

माघशुक्लसप्तमीरथसप्तमीसारुणोदयव्यापिनीग्राह्या दिनद्वयेरुणोदयव्याप्तौपूर्वा यदाघटिकादिमात्राषष्ठीसप्तमीचक्षयवशादरुणोदयात्पूर्वंसमाप्यतेतदाषष्ठीयुक्ताग्राह्या तत्रषष्ठ्यांसप्तमीक्षयवटीःप्रवेश्यारुणोदयेस्नानंकार्यं अत्रव्रतेषष्ठ्यामेकभक्तंकृत्वासप्तम्यामरुणोदयेस्नानंकार्यं तत्रमंत्रः यदाजन्मकृतंपापंमयाजन्मसुजन्मसु तन्मेरोगंचशोकंचमाकरीहंतुसप्तमी एतज्जन्मकृतंपापंयच्चजन्मांतरार्जितं मनोवाक्कायजंयच्चज्ञाताज्ञातेचयेपुनः इतिसप्तविधंपापंस्नानान्मेसप्तसप्तिके सप्तव्याधिसमायुक्तंहरमाकरिसप्तमि अथार्घ्यमंत्रः सप्तसप्तिवहप्रीतसप्तलोकप्रदीपन सप्तमीसहितोदेवगृहाणार्घ्यंदिवाकरेति इयंचमन्वादिरपि शुक्लपक्षमन्वादित्वात्पौर्वाह्णिकीग्राह्येत्युक्तं ॥

माघ शुदि सप्तमी रथसप्तमी कहाती है. वह अरुणोदयव्यापिनी लेनी. दोनों दिनोंमें अरुणोदयव्यापिनी होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी और जब घटीका आदि परिमाणसें षष्ठी और सप्तमी क्षयके वशसें अरुणोदयके पहले समाप्त होवै तब षष्ठीसें युत हुई सप्तमी लेनी. तहां षष्ठीमें सप्तमीके क्षयकी घटिकाओंका प्रवेश करके स्नान करना उचित है. इस व्रतमें षष्ठीविषे एकभक्तव्रत करके सप्तमीविषे अरुणोदयमें स्नान करना. तहां मंत्र—“ यदाजन्मकृतं पापं मया जन्मसु जन्मसु ॥ तन्मे रोगं च शोकं च माकरी हंतु सप्तमी ॥ एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम् ॥ मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञाते च ये पुनः ॥ इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके ॥ सप्तव्याधिसमायुक्तं हर माकरि सप्तमि, ” इस मंत्रसें स्नान करना. पीछे सूर्यको अर्घ्य देना. तिसका मंत्र—“ सप्तसप्तिवह प्रीत सप्तलोकप्रदीपन ॥ सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर. ” यह सप्तमी मन्वादि तिथि है. यह शुक्लपक्षकी मन्वादि तिथि होनेसें पूर्वाण्हव्यापिनी लेनी ऐसा कहा है.

माघशुक्लाष्टमीभीष्माष्टमी अस्यांभीष्मोद्देशेनयेश्राद्धंकुर्वंतितेसंततिमंतोभवंति तत्रश्राद्धंकाम्यंतर्पणंतुनित्यं तर्पणेकृतेसंवत्सरोपात्तदुरितनाशः अकृतेपुण्यनाशइत्युक्तेः तत्रतर्पणमंत्रः वैयाघ्रपद्यगोत्रायसांकृत्यप्रवरायच गंगापुत्रायभीष्मायआजन्मब्रह्मचारिणे अपुत्रायजलंदद्मि नमोभीष्मायवर्मणे भीष्मःशांतनवोवीरःसत्यवादीजितेंद्रियः आभिरद्भिरवाप्नोतुपुत्रपौत्रोचितांक्रियामिति एवमपसव्येनतर्पणंकृत्वाचम्यसव्येनार्घ्यंदद्यात् वसूनामवतारायशंतनोरात्मजायच अर्घ्यंददामिभीष्मायआबाल्यब्रह्मचारिणेइति अत्रजीवत्पितृकस्यनाधिकारइतिकौस्तुभः जीवत्पितृकस्याप्यधिकारइतिबहवः अत्रमध्याह्नव्यापिनीअष्टमीग्राह्या श्राद्धादेरेकोदिष्टत्वादिति ॥

माघ शुदि अष्टमी भीष्माष्टमी कहाती है. इस तिथिमें भीष्मजीके उद्देशकरके जो मनुष्य श्राद्ध करते हैं वे संतानवाले होते हैं. यह श्राद्ध काम्य है और तर्पण तो नित्य है. इस तिथिमें भीष्मके उद्देशसें तर्पण करनेमें वर्षतक संचित किये पापोंका नाश होता है. क्योंकी, “ इस तिथिमें तर्पण नहीं किया जावै तो वर्षतकके पुण्यका नाश होता है ” ऐसा वचन है. तहां तर्पणका मंत्र–**“ वैयाघ्रपद्यगोत्राय सांकृत्यप्रवराय च ॥ गंगापुत्राय भीष्माय आजन्मब्रह्मचारिणे ॥ अपुत्राय जलं दद्मि नमो भीष्माय वर्मणे ॥ भीष्मः शांतनवो वीरः सत्यवादी जितेंद्रियः ॥ आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्. ”** इस प्रकार अपसव्य होके तर्पण करके आचमन करना और सव्य होके अर्घ्य देना. तिसका मंत्र– **“ वसूनामवताराय शंतनोरात्मजाय च ॥ अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबाल्यब्रह्मचारिणे. ”** यहां जीवता हुआ पितावाले मनुष्यकों तर्पणविषे अधिकार नहीं है ऐसा कौस्तुभ ग्रंथमें कहा है, और यहां बहुतसे पंडित कहते हैं की, जीवता हुआ पितावाले मनुष्यकोंभी अधिकार है. यहां मध्यान्हव्यापिनी अष्टमी लेनी. क्योंकी, यहां श्राद्ध आदि करनेका सो एकोद्दिष्ट करनेविषे कहा है, और तिसका काल मध्यान्ह है.

माघशुक्लद्वादश्यांतिलोत्पत्तिरतोस्यामुपोष्य तिलस्नानंतिलैर्विष्णुपूजनंतिलनैवेद्यंतिलतैलेन दीपदानंतिलहोमस्तिलदानंचतिलभक्षणंचकार्यं ॥

माघ शुदि द्वादशीमें तिलोंकी उत्पत्ति हुई है इस कारणसें इस द्वादशीमें उपवास करके तिलोंसें स्नान, तिलोंकरके विष्णुका पूजन, तिलोंका भोग, तिलोंके तेलके दीपकका दान, तिलोंका दान और तिलोंका भक्षण करना उचित है.

माघीपौर्णिमापरा अत्रकृत्यं एवंमाघावसानेतुदेयंभोज्यमवारितं भोजयेद्द्विजदांपत्यंभूषयेद्वस्त्रभूषणैः कंबलाजिनरक्तवस्त्राणितूलगर्भचोलकानिउपानहौप्रच्छादनपटाश्चैतानिमाधवःप्रीयतामित्युक्त्यादेयानि अथकृतस्यमाघस्नानस्यसांगतार्थमुद्यापनंकरिष्येइतिसंकल्प्य सवित्रेप्रसवित्रेचपरंधामजलेमम त्वत्तेजसापरिभ्रष्टंपापंयातुसहस्रधा दिवाकरजगन्नाथप्रभाकरनमोस्तुते परिपूर्णंकरिष्येहंमाघस्नानंतवाज्ञयेतिमंत्राभ्यामपिसंकल्पःकार्यः एवंचतुर्दश्यांसंकल्पोपवासाधिवासनमाधवपूजनानिकृत्वापौर्णिमायांतिलचर्वाज्यैरष्टोत्तरशतहोमंकृत्वातिलशर्करागर्भत्रिंशन्मोदकात्मकंवायनंदेयं तत्रमंत्रौ सवितःप्रसवस्त्वंहिपरंधामजलेमम त्वत्तेजसापरि

भ्रष्टंपापंयातुसहस्रधा दिवाकरजन्नाथप्रभाकरनमोस्तुते परिपूर्णांकुरुष्वेहमाघस्नानमुषःपते इति ततोदंपत्योःसूक्ष्मवाससीसप्तधान्यानिचदत्वा ब्राह्मणेभ्योदांपत्यायचषड्रसभोजनंदेयं तत्रमंत्रःसूर्योमेप्रीयतांदेवोविष्णुमूर्तिर्निरंजनइति एवंमाघस्नायीयातिभित्वादेवंदिवाकरं परिव्राड्योगयुक्तश्चरणेचाभिमुखोहतइति ॥

माघकी पौर्णमासी परविद्धा लेनी. यहां करनेके कृत्य कहताहुं.—"इस तरह माघकी पौर्णमासीके दिन अन्नदान देना, ब्राह्मणके दांपत्यकों भोजन देना, वस्त्र, और अलंकारोंसें भूषित करना." कंबल, मृगछाला, रक्तवस्त्र, रुईसें भरे सोड सोडियें, जूतीजोडा, उपवस्त्र ये सब 'माधव प्रसन्न हो' इस वचनकरके दान देने. पीछे "**कृतस्य स्नानस्य सांगतार्थमुद्यापनं करिष्ये**" इस प्रकार संकल्प करके "**सवित्रे प्रसवित्रे च परं धाम जले मम ॥ त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा ॥ दिवाकर जगन्नाथ प्रभाकर नमोस्तु ते ॥ परिपूर्णं करिष्येहं माघस्नानं तवाज्ञया.**" इन मंत्रोंसें संकल्प करना और इसी प्रकार चतुर्दशीमें संकल्प, उपवास, अधिवासन, और माधवपूजा करके पौर्णमासीमें तिलोंका चरु और घृतसें युत १०८ आहुति हरएक पदार्थकी देनी. इस तरह होम करके तिल और खांडके तीस लड्डुओंका भोग देना. तिसका मंत्र—"**सवितः प्रसवस्त्वं हि परं धाम जले मम ॥ त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सहस्रधा ॥ दिवाकर जगन्नाथ प्रभाकर नमोस्तु ते ॥ परिपूर्णं कुरुष्वेह माघस्नानमुषःपते.**" पीछे स्त्रीपुरुषकों सूक्ष्म वस्त्र और सप्तधान्य देके और अन्य ब्राह्मणोंकों और स्त्रीपुरुषकों छह रसोंसहित भोजन देना. तहां मंत्र—"**सूर्यो मे प्रीयतां देवो विष्णुमूर्तिर्निरंजनः.**" इस प्रकार माघमें स्नान करनेवाला मनुष्य, योगसें युक्त हुआ संन्यासी, और युद्धमें शत्रुके सन्मुख होके मरा मनुष्य ये सब सूर्यका भेदन करके जाते हैं.

माघकृष्णाष्टम्यांचतुरष्टकाकरणाशक्तएकाष्टकांपूर्वेद्युःश्राद्धान्वष्टक्यश्राद्धसहितांकुर्यात् दिनत्रयेकर्तुमशक्तोष्टम्यामेवैकामष्टकांकुर्यात् ॥

माघ कृष्ण अष्टमीमें चार अष्टकाश्राद्ध करनेकों मनुष्य समर्थ नहीं होवै तौ अष्टमीके दिन एक अष्टकाश्राद्ध, पूर्वेद्युःश्राद्ध और अन्वष्टक्यश्राद्ध इन्होंसें युक्त करना, अर्थात् सप्तमीके दिन पूर्वेद्युःश्राद्ध और अष्टमीके दिन अष्टकाश्राद्ध और नवमीके दिन अन्वष्टक्यश्राद्ध इस प्रकार तीन दिन तीन श्राद्ध करने. तीन दिनोंमें श्राद्ध करनेकों समर्थ नहीं होवै तौ अष्टमीमेंही एक अष्टकाश्राद्ध करना.

अथशिवरात्रिः सानिशीथव्यापिनीग्राह्या निशीथस्तुरात्रेरष्टमोमुहूर्तइत्युक्तं तत्रपरदिन एवार्धरात्रौपरा पूर्वत्रैवतद्व्याप्तौपूर्वा दिनद्वयेप्यर्धरात्रव्याप्त्यभावेपिपरैव दिनद्वयेकात्स्न्येनैकदेशेनवार्धरात्रव्याप्तौपूर्वेतिहेमाद्र्याशयानुसारीकौस्तुभः परैवेतिमाधवनिर्णयसिंधुपुरुषार्थचिंतामण्यादयोबहवः परेद्युर्निशीथैकदेशव्याप्तौपूर्वेद्युःसंपूर्णतद्व्याप्तौपूर्वैव पूर्वदिनेनिशीथैकदेशव्याप्तौपरदिनेसंपूर्णतद्व्याप्तौपरैव इदंव्रतंरविवारभौमवारयोगेशिवयोगयोगेचातिप्रशस्तम् ॥

अब शिवरात्रिका निर्णय कहताहुं.

यह शिवरात्रि निशीथव्यापिनी लेनी. यहां निशीथ, रात्रिका आठमा मुहूर्त कहा है. तहां परदिनमेंही अर्धरात्रिव्यापिनी होवै तौ परविद्धा लेनी और पूर्वदिनमें अर्धरात्रव्यापिनी होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी. दोनों दिन अर्धरात्रव्यापिनी नहीं होवै तौ परविद्धा लेनी. दोनों दिन संपूर्णपनेसें अथवा एकदेशसें अर्धरात्रव्यापिनी होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी. इस प्रकार हेमाद्रि आदिके मतके अनुसार **कौस्तुभग्रंथमें** है. परविद्धा लेनी इस प्रकार **माधव**, **निर्णयसिंधु**, **पुरुषार्थचिंतामणि** इन आदि बहुतसे ग्रंथोंका मत है. परदिनमें अर्धरात्रके एकदेशमें व्यापिनी होवै और पूर्वदिनमें संपूर्णतासें तिसकी व्याप्ति होवै तब पूर्वविद्धाही लेनी, और पूर्वदिनमें अर्धरात्रके एकदेशमें व्याप्त होवै और परदिनमें संपूर्णव्याप्ति होवै तब परविद्धाही लेनी. यह व्रत अंतवार, और मंगलवारके योगमें तथा शिवयोगके योगमें अति श्रेष्ठ है.

अथपारणानिर्णयः यामत्रयादर्वाक्चतुर्दशीसमाप्तौचतुर्दश्यंतेपारणं यामत्रयोर्ध्वगामिन्यांचतुर्दश्यांप्रातश्चतुर्दशीमध्येएवपारणमितिमाधवादयः निर्णयसिंधौतुयामत्रयादर्वाक्चतुर्दशीसमाप्तावपिचतुर्दशीमध्येएवपारणंनतुकदाचिदपिचतुर्दश्यंते उपोषणंचतुर्दश्यांचतुर्दश्यां चपारणं कृतैःसुकृतलक्षैस्तुलभ्यतेयदिवानवा सिक्थेसिक्थेफलंतस्यशक्तोवक्तुंनपार्वतीत्यादिनाचतुर्दशीमध्येपारणेपुण्यातिशयोक्तेरित्युक्तं अत्रैवंव्यवस्थाबोध्या यदानित्यकृत्यपूर्वकपारणपर्याप्ताचतुर्दशीनास्तितदावा येषांचतुर्दशीशेषदिनेदर्शादिश्राद्धप्रसक्तिस्तैर्वातिथ्यंतेपारणंकार्यं द्वादश्यामिवात्रनित्यकृत्यापकर्षकवाक्याभावात् तिथ्यंतपारणविधायकवाक्यसत्त्वेनसंकटविषयकजलपारणविधिवाक्यानामत्राप्रवृत्तेश्च कर्मपर्याप्तचतुर्दशीसत्त्वेश्राद्धप्रसक्त्यभावेच तिथिमध्यएवपारणमिति ॥

अब पारणाका निर्णय कहताहुं.

तीन प्रहरोंके पहले चतुर्दशीकी समाप्ति होवै तौ चतुर्दशीके अंतमें पारणा करनी, और तीन प्रहरके उपरंत गमन करनेवाली चतुर्दशी होवै तौ प्रातःकालमें चतुर्दशीके मध्यमेंही पारणा करनी, इस प्रकार **माधव** आदि कहते हैं. **निर्णयसिंधुमें** तौ तीन प्रहरके पहले चतुर्दशीकी समाप्ति होवै तौ चतुर्दशीके मध्यमेंही पारणा करनी और कभीभी चतुर्दशीके अंतमें पारणा नहीं करनी. क्योंकी, “ चतुर्दशीमें उपवास और चतुर्दशीमें पारणा करनी ये दोनों कर्म लक्ष सुकृत करनेवाले मनुष्योंकों लब्ध होते हैं अथवा नहीं होते हैं और तिसके अवयवके फलकों कहनेमें, हे पार्वतिजी, मैं समर्थ नहीं हुं,” इस आदि करके चतुर्दशीके मध्यमें पारणा करनेसें अति पुण्य कहा है ऐसे वचन हैं. यहां ऐसी व्यवस्था जाननी—जब नित्यकर्म और पारणामें चतुर्दशी नहीं होवै तब अथवा जिन्होंकों चतुर्दशीके शेष दिनमें दर्श आदि श्राद्धकी प्रसक्ति होवै तिन्होंनें चतुर्दशीके अंतमें पारणा करनी. क्योंकी, द्वादशीकी तरह चतुर्दशीमें नित्यकर्मके अपकर्षक वाक्यके अभावसें और तिथिके अंतमें पारणाविधायक वाक्यके होनेसें संकटविषयक जलपारणाविधिसंबंधी वाक्योंकी अप्रवृत्ति होनेसें और कर्मके योग्य चतुर्दशीके होनेमें श्राद्धकी प्रसक्तिके अभावमें तिथिके मध्यमेंही पारणा करनी.

अत्रव्रतप्रयोगः त्रयोदश्यांकृतैकभक्तश्चतुर्दश्यांकृतनित्यक्रियः प्रातर्मंत्रेणसंकल्पंकुर्यात् शिवरात्रिव्रतंह्येतत्करिष्येहंमहाफलं निर्विघ्नमस्तुमेवात्रत्वत्प्रसादाज्जगत्पते चतुर्दश्यांनिराहारोभूत्वाशंभोपरेहनि भोक्ष्येहंभुक्तिमुक्त्यर्थंशरणंमेभवेश्वरेति द्विजस्तुरात्रींप्रपद्येजननीमित्यृचावपिपठित्वाजलमुत्सृजेत् ततःसायाह्नेकृष्णतिलैःस्नानंकृत्वाधृतभस्मत्रिपुंड्ररुद्राक्षोनिशामुखेशिवायतनंगत्वाक्षालितपादःस्वाचांतउदङ्मुखोदेशकालौसंकीर्त्य शिवरात्रौप्रथमयामपूजांकरिष्येइतियामचतुष्टयेपूजाचतुष्टयचिकीर्षायांसंकल्पः सकृत्पूजाचिकीर्षायांश्रीशिवप्रीत्यर्थंशिवरात्रौश्रीशिवपूजांकरिष्यइतिसंकल्पः तदात्रौसामान्यतःपूजाविधिरुच्यते यामभेदेनविशेषस्तुवक्ष्यते अस्यश्रीशिवपंचाक्षरमंत्रस्यवामदेवऋषिः अनुष्टुप्छंदः श्रीसदाशिवोदेवतान्यासेपूजनेजपेचविनियोगः वामदेवऋषयेनमःशिरसि अनुष्टुप्छंदसेनमोमुखे श्रीसदाशिवदेवतायैनमोहृदि ॐनंतत्पुरुषायनमःहृदये ॐमंअघोरायनमःपादयोः ॐशिंसद्योजातायनमः गुह्ये ॐवांवामदेवाय०मूर्ध्नि ॐयंईशानाय० मुखे ॐॐहृदयायनमःॐनंशिरसेस्वाहा ॐमंशिखायैवषट् ॐशिंकवचायहुं ॐवांनेत्रत्रयायवौषट् ॐयंअस्त्रायफट् कुंभपूजांविधाय ध्यायेन्नित्यंमहेशंरजतगिरिनिभंचारुचंद्रावतंसंरत्नाकल्पोज्ज्वलांगंपरशुमृगवराभीतिहस्तंप्रसन्नं पद्मासीनंसमंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिंवसानंविश्वाद्यंविश्ववंद्यंनिखिलभयहरंपंचवक्त्रं त्रिनेत्रं इतिध्यात्वाप्राणप्रतिष्ठांकृत्वा स्थाप्यलिंगंस्पृशन् ॐभूःपुरुषंसांबसदाशिवमावाहयामि ॐभुवःपुरुषंसांब० ॐस्वःपुरुषंसांब० ॐभूर्भुवःस्वःपुरुषंसां० इत्यावाहयेत् स्वामिन्सर्वजगन्नाथयावत्पूजावसानकं तावत्त्वंप्रीतिभावेनलिंगेस्मिन्सन्निधौभवेतिपुष्पांजलिंदद्यात् स्थावरलिंगेपूर्वसंस्कृतचरलिंगेचप्राणप्रतिष्ठाद्यावाहनांतंनकार्यंॐसद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः ॐनमःशिवायश्रीसांबसदाशिवायनमःआसनंसमर्पयामि स्त्रीशूद्रश्चेत्ॐनमःशिवायेतिपंचाक्षरीस्थानेश्रीशिवायनमइतिनमोंतमंत्रेणपूजयेत् ॐभवेभवेनातिभवेभवस्वमां ॐनमःशिवायश्रीसांबसदाशिवायनमःपाद्यंसमर्पयामि ॐभवोद्भवायनमःॐनमःशिवायसांबस० अर्घ्यं० ॐवामदेवायनमःॐनमःशिवायश्रीसांब० आचमनं० ॐज्येष्ठायनमःॐनमःशिवाय० स्नानं ततोमूलमंत्रेणआप्यायस्वेत्यादिभिश्चपंचामृतैःसंस्नाप्यआपोहिष्ठेतितिसृभिः शुद्धोदकेनप्रक्षाल्य एकादशावृत्त्यैकावृत्त्यावारुद्रेणपुरुषसूक्तेनचचंदनकुंकुमकर्पूरवासितजलेनाभिषेकंकृत्वा ॐनमःशिवायेतिस्नानांतेआचमनंदत्वासाक्षतजलेनतर्पणंकार्यं ॐभवंदेवंतर्पयामि १ शर्वंदेवंतर्पयामि २ ईशानंदेवंतर्पयामि ३ पशुपतिंदेवंतर्पयामि ४ उग्रंदेवंत० ५ रुद्रंदेवंत० ६ भीमंदेवंत० ७ महांतंदेवंत० ८ भवस्यदेवस्यपत्नींतर्पयामि शर्वस्यदेवस्यपत्नींतर्पयामि ईशानस्यदेवस्यपत्नींत० पशुपतेर्देवस्यप० उग्रस्यदेवस्यप० रुद्रस्यदेवस्यप० भीमस्यदेवस्यप० महतोदेवस्यप० ॐज्येष्ठायनमः ॐनमःशिवायश्रीसांब० वस्त्रं०मूलेनाचमनं ॐरुद्रायनमःॐनमःशिवाय० यज्ञोपवीतं० मूलेनाचमनं ॐकालायनमः ॐनमःशिवायसांबसदाशिवायनमः चंदनं०ॐकलविकरणायनमः ॐनमःशिवायसांबसदाशिवायनमः अक्षतान् ॐबलविकरणायनमः ॐनमःशिवायश्रीसांबसदाशिवायनमः पुष्पाणि सहस्रमष्टोत्तरशतंवासहस्रादिनामभिर्मूलमंत्रेणवाबिल्वपत्राणिदद्यात् ॐबलायनमः ॐनमःशिवायश्रीसांबसदाशिवायनमःधूपं० ॐबलप्रमथनायनमःॐ

नमःशिवायसां०दीपं० ॐसर्वभूतदमनायनमःॐनमःशिवाय० नैवेद्यं० मूलेनाचमनंफलं च ॐमनोन्मनायनमःॐनमःशिवाय० तांबूलं० मूलेनवैदिकैर्मंत्रैश्चनीराजनं० ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरःसर्वभूतानांब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेअस्तुसदाशिवों ॐनमःशिवाय० मंत्रपुष्पं० भवायदेवायनमःशर्वायदेवायेत्याद्यष्टौभवस्यदेवस्यपत्न्यैइत्यष्टौचनमस्कारान्कृत्वा शिवाय० रुद्राय० पशुपतये० नीलकंठाय० महेश्वराय० हरिकेशाय० विरूपाक्षाय० पिनाकिने० त्रिपुरांतकाय० शंभवे० शूलिने० महादेवायनमइतिद्वादशनामभिर्द्वादश पुष्पांजलीन्दत्वामूलेनप्रदक्षिणानमस्कारान्कृत्वामूलमंत्रमष्टोत्तरशतंजप्त्वाक्षमापयित्वाऽनेन पूजनेनसांबसदाशिवःप्रीयतामितिनिवेदयेत् ॥

अब शिवरात्रिका प्रयोग कहताहुं.

त्रयोदशीमें एक काल भोजन करके और चतुर्दशीमें नित्यकर्मोंकों करके प्रातःकालमें मंत्रपूर्वक संकल्प करना. तिसका मंत्र–“ शिवरात्रिव्रतं ह्येतत्करिष्येऽहं महाफलम् ॥ निर्विघ्नमस्तु मेवात्र त्वत्प्रसादाज्जगत्पते ॥ चतुर्दश्यां निराहारो भूत्वा शंभो परेहनि ॥ भोक्ष्येऽहं भुक्तिमुक्त्यर्थं शरणं मे भवेश्वर.” ब्राह्मणने “रात्रीं प्रपद्ये जननीम्०” इन ऋचाओंकों पढके जल छोडना. पीछे सायान्हमें कृष्णतिलमर्दनपूर्वक स्नान करना. पीछे भस्मका त्रिपुंड्र और रुद्राक्ष धारण करके रात्रिके मुखविषे महादेवके मंदिरमें गमन करके और पैरोंकों धोके आचमन करके पीछे उत्तरके तर्फ मुखवाला होके देश और कालका उच्चार करके “शिवरात्रौ प्रथमयामपूजां करिष्ये.” इस प्रकार चार प्रहरोंमें चार पूजा करनेकी इच्छामें ऐसाही संकल्प करना. एकवार पूजा करनेकी इच्छा होवै तौ “ श्रीशिवप्रीत्यर्थं शिवरात्रौ श्रीशिवपूजां करिष्ये ” इस प्रकार संकल्प करना. तहां आदिमें सामान्यसें पूजाका विधि कहताहुं. प्रहरके भेदकरके विशेष प्रकार आगे कहुंगा. “ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरमंत्रस्य वामदेवऋषिः अनुष्टुप्छंदः श्रीसदाशिवो देवता न्यासे पूजने जपे च विनियोगः ॥ वामदेवऋषये नमः शिरसि ॥ अनुष्टुप्छंदसे नमो मुखे ॥ श्रीसदाशिवदेवतायै नमः हृदि ॥ ॐ नं तत्पुरुषाय नमः हृदये ॥ ॐ मं अघोराय नमः पादयोः ॥ ॐ शिं सद्योजाताय नमः गुह्ये ॥ ॐ वां वामदेवाय नमः मूर्ध्नि ॥ ॐ यं ईशानाय नमः मुखे ॥ ॐ ॐ हृदयायनमः ॥ ॐ नं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ मं शिखायै वषट् ॥ ॐ शिं कवचायहुम् ॥ ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ यं अस्त्राय फट्.” इस प्रकार न्यास करके कलशकी पूजा करके “ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचंद्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ॥ पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववंद्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्,” इस मंत्रसें ध्यान करके प्राणप्रतिष्ठा करनी. पीछे शिवलिंगकों स्थापित करके लिंगकों स्पर्श करता हुआ मनुष्य “ ॐ भूः पुरुषं सांबसदाशिवमावाहयामि ॥ ॐ भुवः पुरुषं सांब० ॥ ॐ स्वः पुरुषं सांब० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पुरुषं सांब०” इन मंत्रोंसें आवाहन करना. पीछे हाथमें पुष्पोंकों लेके “ स्वामिन्सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम् ॥ तावत्त्वं प्रीतिभावेन लिंगेऽस्मिन्सन्निधौ भव ” इस मंत्रसें पुष्पांजली देनी. स्थावर लिंगमें और पूर्व संस्कार किये चर

लिंगमें प्राणप्रतिष्ठा और आवाहनपर्यंत कर्म नहीं करना. “ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय नमः आसनं समर्पयामि.” स्त्री और शूद्र पूजा करनेवाले होवैं तौ “ॐ नमः शिवाय” इस पंचाक्षरी मंत्रके स्थानमें “श्रीशिवाय नमः” इस नमोंतमंत्रसें पूजा करनी. “ॐ भवे भवे नाति भवे भवस्व माम् ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि ॥ ॐ भवोद्भवाय नमः ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि ॥ ॐ वामदेवाय नमः ॐ नमः शिवाय श्रीसांब० आचमनं स० ॥ ॐ ज्येष्ठाय नमः ॐ नमः शिवाय श्रीसांब० स्नानं स०” पीछे मूलमंत्रकरके और “आप्यायस्व०” इस आदि पांच मंत्रोंकरके पंचामृतसें स्नान कराय “आपोहिष्ठा०” इन तीन मंत्रोंसें शुद्ध पानीकरके प्रक्षालित करके पीछे रुद्रकी ग्यारह आवृत्तियोंसें अथवा एक आवृत्तिसें पुरुषसूक्तकरके नवीन चंदन, केसर, कपूर, इन्होंसें सुगंधित किये जलसें अभिषेक करके “ॐ नमः शिवाय” इस मंत्रसें स्नानके अंतमें आचमन देके अक्षतोंसहित जलसें तर्पण करना. सो ऐसा—ॐ भवं देवं तर्पयामि १ ॥ ॐ शर्वं देवं त० २ ॥ ॐ ईशानं देवं त० ३ ॥ ॐ पशुपतिं देवं त० ४॥ ॐ उग्रं देवं त० ५ ॥ ॐ रुद्रं वेदं तर्प० ६ ॥ ॐ भीमं देवं त०७॥ ॐ महांतं देवं त० ८ ॥ भवस्य देवस्य पत्नीं त०॥ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्प०॥ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्प० ॥ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्प० ॥ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्प० ॥ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्प० ॥ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्प० ॥ महतो देवस्य पत्नीं तर्प० ८ ॥ ॐ ज्येष्ठाय नमः ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि. ॥ पीछे “ॐ नमः शिवाय” इस मंत्रकरके आचमन देना. पीछे “ॐ रुद्राय नमः ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि” पीछे मूलमंत्रसें आचमन देना. पीछे ॐ कालाय नमः ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय नमः चंदनं सम०” ॥ ॐ कलविकरणाय नमः ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय० अक्षतान् सम० ॥ ॐ बलविकरणाय नमः ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय नमः पुष्पाणि सम०” इस प्रकार पुष्पपर्यंत पूजा करके हजार अथवा एकसौ आठ बेलपत्र सहस्रनाम आदिसें अथवा मूलमंत्रसें चढाने. पीछे ॐ बलाय नमः ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय नमः धूपं सम० ॥ ॐ बलप्रमथनाय नमः ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय नमः दीपं सम० ॥ ॐ सर्वभूतदमनाय नमः ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय नमः नैवेद्यं सम०” पीछे मूलमंत्रसें आचमन देके फलोंको अर्पण करना. पीछे ॐ नमोन्मनाय नमः ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय नमः तांबूलं सम०” पीछे मूलमंत्रसें अथवा वेदमंत्रोंसें आरती करनी. पीछे “ईशानः सर्वविद्यानां० ॐ नमः शिवाय श्रीसांबसदाशिवाय नमः मंत्रपुष्पं समर्प०” इस प्रकार मंत्रपुष्पपर्यंत पूजा करके पीछे “भवाय देवाय नमः ॥ शर्वाय देवाय नमः” इन आदि आठ और “भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः ”इन आदि आठ वचनोंसें प्रणाम करके “शिवाय नमः रुद्राय नमः पशुपतये नमः नीलकंठाय नमः महेश्वराय नमः हरिकेशाय नमः विरूपाक्षायनमः पिनाकिने नमः त्रिपुरांतकाय नमः शंभवे नमः शूलिने नमः महादेवाय नमः” इस प्रकार बारह नामोंसें बारह पुष्पांजलि देनी.

और मूलमंत्रसें परिक्रमा और नमस्कार करके पीछे मूलमंत्रका १०८ जप करके और प्रार्थना करके "**अनेन पूजनेन सांबसदाशिवः प्रीयताम्**" ऐसा कहके पूजा निवेदन करनी.

अथचतुर्षुयामेषुपूजाचतुष्टयेविशेषः तत्रप्रथमयामेमूलमंत्रांतेश्रीशिवायासनंसमर्पयामीति शिवनाम्नासर्वोपचारसमर्पणम् द्वितीययामेशिवरात्रौद्वितीययामपूजांकरिष्यइतिसंकल्प्यश्री शंकरायासनमितिशंकरनाम्ना ततोमहानिशिपूजांकरिष्यइतिसंकल्प्यपूर्ववत्पूजा ततस्तृतीययामपूजांकरिष्यइत्युक्त्वाश्रीमहेश्वरायासनमित्यादि एवमेवचतुर्थयामेश्रीरुद्रायेतिरुद्रानाम्नाप्रतियामंतैलाभ्यंगपचंचामृतोष्णोदकशुद्धोदकगंधोदकाभिषेकाःकार्याः यज्ञोपवीतांतेगोरोचनकस्तूरीकुंकुमकर्पूरागरुचंदनमिश्रितानुलेपेनलिंगंलेपयेत् पंचविंशतिपलमितःसर्वोनुलेपइति अनुलेपपरिमाणं यथाशक्तिवा धत्तूरकरवीरकुसुमैर्बिल्वपत्रैश्चपूजनमतिप्रशस्तंपुष्पाभावेशालितंडुलगोधूमयवैःपूजानैवेद्योत्तरंतांबूलमुखवासौउक्तौनागवल्लीपत्रक्रमुकफलशुक्त्यादिचूर्णेतित्रयंतांबूलसंज्ञं एतदेवनारिकेलकर्पूरैलाकंकोलैःसहितंमुखवाससंज्ञं एतेषामन्यतमद्रव्यालाभेतत्तद्द्रव्यंस्मरेद्बुधः सर्वपूजांतेप्रार्थना नित्यंनैमित्तिकंकाम्यंयत्कृतंतुमयाशिव तत्सर्वंपरमेशानमयातुभ्यंसमर्पितमितिशिवरात्रिव्रतंदेवपूजाजपपरायणः करोमिविधिवद्दत्तंगृहाणार्घ्यंनमोस्तुतेइत्यर्घ्यः एवंयामचतुष्टयेर्घ्यभेदःकौस्तुभे ततःप्रभातेस्नात्वापुनःशिवंसंपूज्य पर्वोक्तद्वादशनामभिर्द्वादशब्राह्मणानशक्तावेकंवासंपूज्यतिलपक्वान्नपूर्णान् द्वादशकुंभानेकंवादत्वाव्रतमर्पयेत् यन्मयाद्यकृतंपुण्यंतद्रुद्रस्यनिवेदितं त्वत्प्रसादान्मयादेवव्रतमद्यसमर्पितं प्रसन्नोभवमेश्रीमन्सद्गतिःप्रतिपाद्यतां त्वदालोकनमात्रेणपवित्रोस्मिनसंशयइति ततोब्राह्मणान्भोजयित्वापूर्वनिर्णीतेकालेस्वजनैःसहपारणंकुर्यात् तत्रमंत्रः संसारक्लेशदग्धस्यव्रतेनानेनशंकरप्रसीदसुमुखोनाथज्ञानदृष्टिप्रदोभवेति इतिशिवरात्रिव्रतविधिः ॥

अब चार प्रहरोंकी चार प्रकारकी पूजा और तिन्होंका विशेष कहताहुं. तहां पहले प्रहरविषे मूलमंत्रका उच्चार करके "**श्रीशिवाय आसनं समर्पयामि**" इस प्रकार शिवके नामकरके सब सामग्री अर्पण करनी. दूसरे प्रहरमें "**शिवरात्रौ द्वितीययामपूजां करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके "**श्रीशंकराय आसनं समर्पयामि**" ऐसे शंकरके नामसें सामग्री अर्पण करनी. पीछे "**महानिशि पूजां करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके पहलेकी तरह पूजा करनी. तीसरे प्रहरमें "**तृतीययामपूजां करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके "**श्रीमहेश्वराय आसनं समर्पयामि**" ऐसा कहके आसन आदि पूजाकी सामग्री अर्पण करनी. ऐसेही चौथे प्रहरमें "**चतुर्थयामपूजां करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके "**श्रीरुद्राय आसनं समर्पयामि**" ऐसा कहके रुद्रके नामकरके पूजाकी सामग्री अर्पण करनी. प्रहर प्रहरमें तेलका अभ्यंग, पंचामृत, गरम जल, शुद्ध जल, गंधका जल इन्होंसें अभिषेक करना. यज्ञोपवीतके अंतमें गोरोचन, कस्तूरी, केसर, कपूर, अगर और चंदन इन्होंसें मिश्रित किये अनुलेपसें लिंगपर लेप करना. २५ पलपरिमाणसें सब अनुलेप करना. यह अनुलेपका परिमाण है. अथवा शक्तिके अनुसार लेप करना. धतूरा और कनेरके फूलोंकरके और बेलपत्रोंकरके पूजा करनी अति श्रेष्ठ है. पुष्पके अभावमें शालि चावल, गेहूं और जव इन्होंकरके पूजा करनी. नैवेद्यके उपरंत तांबूल और मुखवास अर्पण करना. नागरपान, सुपारी, सींपी आ-

दिका चूना ये तीन मिलके तांबूल होता है और येही नारियलके गोलाका तुकडा, कपूर, इलायची, कंकोल इन्होंसहित मुखवास कहता है. इन्होंमांहसें एक कोईसे द्रव्यके अलाभमें तिस तिस द्रव्यका स्मरण करना. संपूर्ण पूजाके अंतमें प्रार्थना करनी. तिसका मंत्र–“ **नित्यं नैमित्तिकं काम्यं यत्कृतं तु मया शिव ॥ तत्सर्वं परमेशान मया तुभ्यं समर्पितम्** ” इस प्रकार प्रार्थना करके अर्घ्य देना. अर्घ्यदानका मंत्र–“ **शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः ॥ करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते** ” इस मंत्रसें चारों प्रहरोंमें अलग अलग अर्घ्य देने ऐसा **कौस्तुभ** ग्रंथमें कहा है. पीछे प्रभातमें स्नान करके फिर शिवपूजा करके पूर्वोक्त बारह नामोंकरके बारह ब्राह्मणोंकी और शक्ति नहीं होवै तौ एक ब्राह्मणकी पूजा करके तिल और पक्वान्नसें पूरित हुये बारह कलश अथवा एक कलश दान देके व्रत देवकों अर्पण करना. “ **यन्मयाद्य कृतं पुण्यं तद्रुद्रस्य निवेदितम् ॥ त्वत्प्रसादान्मया देव व्रतमद्य समर्पितम् ॥ प्रसन्नो भव मे श्रीमन्सद्गतिः प्रतिपाद्यताम् ॥ त्वदालोकनमात्रेण पवित्रोस्मि न संशयः,** ” इस प्रकार कहना. पीछे ब्राह्मणभोजन कराय पहले निर्णीत किये कालमें अपने आप्त और मित्रोंके साथ भोजन करना. तहां प्रार्थनाका मंत्र–“ **संसारक्लेशदग्धस्य व्रतेनानेन शंकर ॥ प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव.** ” इस प्रकार शिवरात्रिके व्रतका विधि समाप्त हुआ.

अथमृन्मयलिंगेशिवपूजाचिकीर्षायांतद्विधिः ॐहरायनमइतिमृदमाहृत्यशोधितायांतस्यां जलप्रक्षेपेणसंपीड्यतेनपिंडेनॐमहेश्वरायनमइतिलिंगंकुर्यात् तच्चलिंगमशीतिगुंजात्मककर्षादधिकपरिमाणमंगुष्ठमात्रंततोधिकंवाकार्यंनन्यूनं मृन्मयलिंगेपंचसूत्रसंपादनाभावेपिनदोषः अतएवसप्तकृत्वस्तुलारूढंवृद्धिमेतिनहीयते बाणलिंगमितिप्रोक्तंशेषंनार्मदमुच्यतेइत्युक्तलक्षणाद्बाणलिंगादतिदुर्लभाद्दुःसंपाद्यपंचसूत्रसंपादनात्सुवर्णादिलिंगाच्चमृन्मयलिंगंश्रेष्ठं द्वापरे पारदंश्रेष्ठंपार्थिवंतुकलौयुगइतिवचनाच्च ततः ॐशूलपाणयेनमः शिवइहप्रतिष्ठितोभवेतिस बिल्वपत्रेपूजापीठेप्रतिष्ठाप्य ध्यायेन्नित्यंमहेशमितिध्यात्वाॐपिनाकधृषेनमःश्रीसांबशिवइहागच्छहप्रतिष्ठेहसन्निहितोभवेत्यावाहयेत् इहद्विजानांसर्वत्रमूलमंत्रोपिज्ञेयः ततःॐनमःशिवायेतिमूलमंत्रेणपाद्यमर्घ्यमाचमनंदत्वापशुपतयेनमइतिमूलेनचस्नानंवस्त्रमुपवीतंगंधंपुष्पंधूपदीपनैवेद्यफलतांबूलनीराजनमंत्रपुष्पांजलीन्दत्वाशर्वायक्षितिमूर्तयेनमइतिप्राच्यांपूजयेत् भवाय जलमूर्तयेनमईशान्यां रुद्रायाग्निमूर्तये० उदीच्यां उग्रायवायुमूर्तयेनमःवायव्यांभीमायाकाशमू०प्रतीच्यां पशुपतयेयजमानमूर्तयेनमइतिनैर्ऋत्यां महादेवायसोममूर्तयेनमइतिदक्षिणस्यां ईशानायसूर्यमूर्तयेनइत्याग्नेय्यां ततःस्तुत्वानमस्कृत्यमहादेवायनमइतिविसर्जयेदितिसंक्षेपः विस्तारस्तुपुरुषार्थचिंतामणौज्ञेयः शिवरात्रिश्चेत्पूर्वोक्तपूजाविधिः पार्थिवलिंगेपिकार्यः पार्थिवलिंगोद्यापनविधिःकौस्तुभादौज्ञेयः ॥

अब माटीके लिंगमें शिवकी पूजा करनेका विधि कहताहुं.

“ॐ हराय नमः” इस मंत्रसें माटी ग्रहण करके पीछे शोधित करके तिसमें जल डालके सान गोला बनाना. पीछे तिस गोलाका “ **ॐ महेश्वराय नमः** ” इस मंत्रसें लिंग

करना. वह लिंग अश्शी गुंजापरिमित कर्पसें अधिक परिमाणका अंगुष्ठमात्र अथवा तिस्सें अधिक बनाना, कम नहीं करना. माटीके लिंगमें पंचसूत्रके संपादनका अभाव होवे तबभी दोष नहीं है. “ जो तखडीमें प्राप्त किया सात वार तोला जावै और प्रति तोल वढै और वटै नहीं वह बाणलिंग कहाता है. शेष रहा नार्मदलिंग कहाता है. ” इस प्रकार कहे लक्षणोंवाले बाणलिंग अति दुर्लभ हैं. सोना आदिके लिंगमें पंचसूत्रकी क्रिया करनेका कहा है, वह अति श्रमसाध्य है, वास्ते सब लिंगोंमें माटीका लिंग श्रेष्ठ है; क्योंकी, “द्वापरयुगमें पाराका लिंग श्रेष्ठ है और कलियुगमें माटीका लिंग श्रेष्ठ है” ऐसा कहा है. पीछे “ **ॐ शूलपाणये नमः शिव इह प्रतिष्ठितो भव** ” इस मंत्रसें वेलपत्रोंसहित पूजापीठपर लिंगकी स्थापना करनी. और “ **ध्यायेन्नित्यं महेशम्०** ” इस मंत्रसें ध्यान करके “ **ॐ पिनाकधृषे नमः श्रीसांबशिव इहागच्छ इह प्रतिष्ठ इह सन्निहितो भव** ” इस प्रकार आवाहन करना. यहां सब जगह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन्होंनें मूलमंत्रका ग्रहण करना. पीछे “ **ॐ नमः शिवाय** ” इस मूलमंत्रकरके पाद्य, अर्घ्य, आचमन इन्होंकों देके “ **पशुपतये नमः** ” इस मूलमंत्रकरके स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, तांबूल, आरति और मंत्रपुष्पांजली इन्होंकों अर्पण करके पीछे “ **शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः** ” इस मंत्रसें पूर्वदिशामें पूजा करनी. “ **भवाय जलमूर्तये नमः** ” इस मंत्रसें ईशान दिशामें पूजा करनी. “**रुद्रायाग्निमूर्तये नमः**” इस मंत्रसें उत्तर दिशामें पूजा करनी. “ **उग्राय वायुमूर्तये नमः** ” इस मंत्रसें वायव्य दिशामें पूजा करनी. “ **भीमायाकाशमूर्तये नमः** ” इस मंत्रसें पश्चिम दिशामें पूजा करनी. “ **पशुपतये यजमानमूर्तये नमः** ” इस मंत्रसें नैर्ऋत्य दिशामें पूजा करनी. “ **महादेवाय सोममूर्तये नमः** ” इस मंत्रसें दक्षिण दिशामें पूजा करनी. “ **ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः** ” इस मंत्रसें आग्नेयी दिशामें पूजा करनी. पीछे स्तुति और नमस्कार करके “**महादेवाय नमः**” इस मंत्रसें विसर्जन करना. इस प्रकार संक्षेपपूजाका विधि कहा है. विस्तार तौ **पुरुषार्थचिंतामणि** ग्रंथमें देख लेना. शिवरात्रि होवै तौ पूर्वोक्त पूजाकी विधि पार्थिवलिंगमेंभी करनी. पार्थिवलिंगके उद्यापनका विधि **कौस्तुभ** आदि ग्रंथमें देख लेना.

लिंगविशेषेणफलविशेषः आयुष्यंहीरजेलिंगे मौक्तिकेरोगनाशः वैडूर्येशत्रुनाशः पाद्मरागेलक्ष्मीः पुष्परागजेसुखं ऐंद्रनीलेयशः मारकतेपुष्टिः स्फाटिकेसर्वकामाः राजतेराज्यं पितृमुक्तिः हैमेसत्यलोकः ताम्रेपुष्टिरायुश्च पैत्तलेतुष्टिः कांस्येकीर्तिः लौहेशत्रुनाशः सीसजेआयुष्यं मतांतरे सौवर्णेब्रह्मस्वपरिहारःस्थिरलक्ष्मीश्च एवंगंधमये सौभाग्यं हस्तिदंतजेसेनापत्यं व्रीह्यादिधान्यपिष्टजेपुष्टिसुखरोगनाशादि माषजेस्त्रीः नावनीतेसुखं गोमयजेरोगनाशः गौडेन्नादि वंशांकुरजेवंशवृद्धिरित्यन्यत्रविस्तरः एवंलिंगसंख्याविशेषात्फलविशेषःकौस्तुभे ॥

अब लिंगके विशेषकरके फलविशेषकों कहताहुं.

हीराके लिंगकी पूजा करनेसें आयु बढता है. मोतीके लिंगकी पूजा करनेसें रोगोंका नाश होता है. वैडूर्यमणिके लिंगकी पूजा करनेसें शत्रुका नाश होता है. माणिकके लिंगकी पूजा करनेसें लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है. पुष्परागके लिंगकी पूजा करनेसें सुख होता है. नील-

मणिके लिंगकी पूजा करनेसें यशकी प्राप्ति होती है. पन्नाके लिंगकी पूजा करनेसें पुष्टि होती है. स्फटिकके लिंगकी पूजा करनेसें सब कामना प्राप्त होती हैं. चांदीके लिंगकी पूजा करनेसें राज्य मिलता है और पितरोंकी मुक्ति होती है. सोनाके लिंगकी पूजा करनेसें सत्यलोक मिलता है. तांबाके लिंगकी पूजा करनेसें पुष्टि और आयु बढता है. पित्तलके लिंगकी पूजा करनेसें प्रसन्नता होती है. कांसीके लिंगकी पूजा करनेसें कीर्ति बढती है. लोहाके लिंगकी पूजा करनेसें शत्रुओंका नाश होता है और सीसाके लिंगकी पूजा करनेसें आयु बढता है. अब अन्य ग्रंथकारोंके मत कहताहुं.—सोनाके लिंगकी पूजा करनेसें ऋणमुक्ति अर्थात् कर्जाका नाश और स्थिर लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है. गंधके लिंगकी पूजा करनेसें सौभाग्य रहता है और हस्तीदंतके लिंगकी पूजा करनेसें मनुष्य सेना अर्थात् फौजका अधिपति होता है. व्रीहि आदि अन्नकी पीठीके लिंगकी पूजा करनेसें पुष्टि, सुख, रोगका नाश आदि होते हैं. उडदकी पीठीके लिंगकी पूजा करनेसें स्त्री मिलती है. नवनीतके लिंगकी पूजा करनेसें सुख होता है. गौके गोबरके लिंगकी पूजा करनेसें रोगका नाश होता है. गुडके लिंगकी पूजा करनेसें अन्न आदिकी प्राप्ति होती है और वांशोंके अंकुरके लिंगकी पूजा करनेसें वंशकी वृद्धि होती है. ऐसा अन्य ग्रंथोंमें विस्तार कहा है, और ऐसेही लिंगकी संख्याके विशेषसें फलका विशेष कौस्तुभ आदि ग्रंथोंमें देख लेना.

शिवनिर्माल्यग्रहणाग्रहणविचारस्तृतीयपरिच्छेदेज्ञेयः मासशिवरात्रिनिर्णयःप्रथमपरिच्छेदेउक्तः शिवरात्रिव्रतोद्यापनंकौस्तुभादौज्ञेयं मासशिवरात्रिव्रतोद्यापनमपिकौस्तुभेस्पष्टं माघामावास्यायामपराह्णव्यापिन्यांयुगादित्वादपिंडकंश्राद्धंकार्यं तच्चदर्शश्राद्धेनसहतंत्रंकार्यं माघामावास्यायांशततारकायोगेपरमःपुण्यकालस्तत्रश्राद्धात्परमापितृतृप्तिः धनिष्ठायोगेतुतिलान्नेनश्राद्धंकार्यं तेनवर्षायुतकालंपितृतृप्तिः इतिं श्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेमाघमासकृत्यनिर्णयउद्देशः समाप्तः ॥

शिवनिर्माल्य ग्रहण करना अथवा नहीं ग्रहण करना यह विचार तृतीय परिच्छेदमें देख लेना. महीनेकी शिवरात्रिका निर्णय प्रथम परिच्छेदमें कहा है. शिवरात्रिके व्रतके उद्यापनका विधि कौस्तुभ आदि ग्रंथमें देख लेना. महीनेकी शिवरात्रिव्रतका उद्यापन कौस्तुभ ग्रंथमें कहा है. अपराह्णव्यापिनी माघकी अमावस युगादि तिथि होती है. इसमें पिंडोंसें रहित श्राद्ध करना. वह श्राद्ध दर्शश्राद्धके साथ एकतंत्रसें करना. माघकी अमावसकों शतभिषानक्षत्र होवै तौ वह योग अति पुण्यकारक होता है. तहां श्राद्ध करनेसें पितरोंकी उत्तम तृप्ति होती है. धनिष्ठा नक्षत्रका योग होवै तौ तिलयुक्त अन्नसें श्राद्ध करना. तिसकरके दश हजार वर्षोंतक पितरोंकी तृप्ति होती है. इति धर्मसिंधुसारभाषाटीकायां माघमासकृत्यनिर्णयो नाम एकादश उद्देशः ॥ ११ ॥

अथफाल्गुनमासः मीनसंक्रांतौपराः षोडशनाड्यःपुण्याः रात्रौतुप्रागुक्तं फाल्गुनेगोव्रीहिवस्त्रदानंगोविंदप्रीतयेकार्यं अथफाल्गुनशुक्लप्रतिपदमारभ्यद्वादशदिनपर्यंतंपयोव्रतंश्रीभागवतेउक्तं तत्प्रयोगोमूलानुसारेणोह्यः ॥

अब फाल्गुनमासके कृत्य कहताहुं.

मीनसंक्रांतिमें पिछली सोलह घटीका पुण्यकाल होता है. रात्रिमें संक्रांति होवै तौ तिसका निर्णय पहले कह चुके हैं. फाल्गुन महीनेमें गौ, व्रीहि चावल, वस्त्र इन्होंका दान गोविंदके प्रीतिके लिये करना. फाल्गुन शुदि प्रतिपदाकों आरंभ करके बारह दिनपर्यंत पयोव्रत करना, और वह व्रत श्रीमद्भागवतमें (आठमे स्कंधमें) कहा है. तिसका प्रयोग मूलके अनुसार (भागवतमें कहेमुजब) विचार लेना.

फाल्गुनीपौर्णमासीमन्वादिःसापौर्वाह्णिकीग्राह्या इयमेवहोलिकासाप्रदोषव्यापिनीभद्रारहिताग्राह्या दिनद्वयेप्रदोषव्याप्तौपरदिनेप्रदोषैकदेशव्याप्तौवापरैव पूर्वदिनेभद्रादोषात् परदिनेप्रदोषस्पर्शाभावेपूर्वदिनेप्रदोषेभद्रासत्त्वेयदिपूर्णिमापरदिने सार्धत्रियामा ततोधिकावातत्परदिनेचप्रतिपद्वृद्धिगामिनीतदापरदिनेप्रतिपदिप्रदोषव्यापिन्यांहोलिका उक्तविषयेयदिप्रतिपदोह्रासस्तदापूर्वदिनेभद्रापुच्छेवा भद्रामुखमात्रंत्यक्त्वा भद्रायामेववाहोलिकादीपनं परदिने प्रदोषस्पर्शाभावेपूर्वदिनेयदिनिशीथात्प्राक्भद्रासमाप्तिस्तदाभद्रावसानोत्तरमेवहोलिकादीपनं निशीथोत्तरंभद्रासमाप्तौभद्रामुखंत्यक्त्वाभद्रायामेव प्रदोषेभद्रामुखव्याप्तेभद्रोत्तरंप्रदोषोत्तरं वा दिनद्वयेपिपूर्णिमायाःप्रदोषस्पर्शाभावेपूर्वदिनएवभद्रापुच्छेतदलाभेभद्रायामेवप्रदोषोत्तरमेवहोलिका रात्रौपूर्वार्धभद्रायाग्राह्यत्वोक्तेः नतुपूर्वप्रदोषादौचतुर्दश्यांनवापरत्रसायाह्नादौ दिवाहोलिकादीपनंतुसर्वग्रंथविरुद्धं इदंहोलिकापूजनंश्रवणाकर्मादिवद्भुक्त्वापिकुर्वंति युक्तं चैतत् केचिद्धोलिकापूजनंकृत्वाभुंजतेतेषांभोजनस्यपूजनस्यवाननियमेनशास्त्रविहितकाललाभः इदंचंद्रग्रहणसत्त्वेवेधमध्येकार्यं ग्रस्तोदयेपरदिनेप्रदोषेपूर्णिमासत्त्वेग्रहणमध्यएवकार्यं अन्यथापूर्वदिने ॥

फाल्गुनकी पौर्णमासी मन्वादि तिथि होती है. वह पूर्वाण्हव्यापिनी लेनी. यही पौर्णमासी होलिका कहाती है. वह प्रदोषव्यापिनी और भद्रासें रहित लेनी. दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी होवै अथवा परदिनमें प्रदोषके एकदेशविषे व्यापिनी होवै तब पूर्वदिनमें भद्राके दोषसें परविद्धा लेनी. परदिनमें प्रदोषके स्पर्शका अभाव होवै तौ और पूर्वदिनमें प्रदोषसमयमें भद्रा होवै और जो परदिनमें पौर्णमासी साढेतीन प्रहर होवै अथवा तिस्सेंभी अधिक होवै और तिस्सें परदिनमें वृद्धिकों प्राप्त होनेवाली प्रतिपदा होवै तब परदिनविषे प्रदोषव्यापिनी प्रतिपदामें होलिका करनी. उक्त विषयमें जो प्रतिपदाका क्षय होवै तब पूर्वदिनमें अथवा भद्राके पुच्छमें भद्राके मुखमात्रकों त्यागके भद्रामेंही होलिका प्रदीपित करनी. परदिनमें प्रदोषसमयमें पौर्णमासीके स्पर्शका अभाव होवै और पूर्वदिनमें अर्धरात्रके पहले भद्राकी समाप्ति होवै तब भद्राके अंतमेंही होलिका प्रदीपित करनी. जो मध्यरात्रके अनंतर भद्राकी समाप्ति होवै तौ भद्राका मुख मात्र त्यागके भद्रामेंही होलिका प्रदीप्त करनी. प्रदोषकालमें भद्राका मुख होवै तब भद्राके अनंतर अथवा प्रदोषकालके अनंतर होलिका प्रदीप्त करनी. दोनों दिनोंमेंभी पौर्णमासी प्रदोषसमयमें नहीं होवै तब पूर्वदिनमेंही भद्राके पुच्छमें और तिसके अलाभमें भद्राविषेही प्रदोषसमयके उपरंत होलिका करनी. क्योंकी, “रात्रिमें पूर्वार्धकी

भद्रा ग्रहण करनी'' ऐसा वचन है; परंतु पूर्वदिनके प्रदोष आदिमें चतुर्दशीमें नहीं करना और परदिनविषे सायान्ह आदि कालमें नहीं करना और दिनमें होलिका प्रदीप्त करनी अर्थात् जलानी सब ग्रंथोंमें विरुद्ध है. इस होलिकाके व्रतकों श्रवणाकर्म आदिकी तरह भोजन करकेभी करते हैं. यह ठीक है. कितनेक पंडित होलिकाका पूजन करके भोजन करते हैं, तिन्होंके भोजनकों अथवा पूजनकों नियमकरके शास्त्रविहित काल नहीं मिलता. यह होलिकाकी पूजा चंद्रमाके ग्रहणविषे वेध अर्थात् सूतकके मध्यमेंभी करनी. परदिनमें ग्रस्तोदय ग्रहण होवै और प्रदोषकालमें पौर्णमासीभी होवै तब ग्रहणके मध्यमेंही होलिकाकी पूजा करनी. प्रदोषकालविषे पौर्णमासी न होवै तौ पूर्वदिनविषे पूजा करनी.

अथभद्रामुखपुच्छलक्षणं पूर्णिमायांभद्रायास्तृतीयपादांतेघटीत्रयंपुच्छं चतुर्थपादाद्यघटीपंचकंमुखं तथाचमध्यममानेनषष्टिघटीमितायांपूर्णिमायांपूर्णिमाप्रवृत्त्युत्तरंसार्धैकोनविंशतिघटिकोत्तरंघटीत्रयंपुच्छं सार्धद्वाविंशतिघटिकोत्तरंघटीपंचकंमुखं तिथेश्चतुःषष्टिघटीमितत्वेपूर्णिमायाएकविंशतिघटिकोत्तरंपुच्छं चतुर्विंशतिघटिकोत्तरंमुखं एवंतिथेर्मानांतरेप्यूह्यं ॥

अब भद्राके मुख और पुच्छका लक्षण कहताहुं.

पौर्णमासीमें भद्राके तीसरे पादकी अंतकी तीन घडी सो भद्राका पुच्छ है, और चौथे पादकी आदिकी पांच घडी मुख है. तैसेही मध्यम मानकरके साठ घडीपरिमित पूर्णिमामें पूर्णिमाकी प्रवृत्तिके उपरंत साढेउन्नीस घडीके उपरंत तीन घडी पुच्छ है और साढेबाईस घडीके उपरंत पांच घडी मुख है. ६४ घडी पूर्णिमा होवै तब पूर्णिमाकी २१ घडीके उपरंत पुच्छ है और २४ घडीके उपरंत मुख है. ऐसेही तिथीके अन्य परिमाणमेंभी निर्णय जानना.

अथपूजाविधिः देशकालौसंकीर्त्यसकुटुंबस्यममढुंढाराक्षसीप्रीत्यर्थंतत्पीडापरिहारार्थंहोलिकापूजनमहंकरिष्येइतिसंकल्प्य शुष्कानांकाष्ठानांगोमयपिंडानांचराशिंकृत्वावह्निनाप्रदीप्य तत्र अस्माभिर्भयसंत्रस्तैःकृतात्वंहोलिकेयतः अतस्त्वांपूजयिष्यामिभूतेभूतिप्रदाभवेतिपूजामंत्रेणश्रीहोलिकायैनमोहोलिकामावाहयामीत्यावाह्य होलिकायैनमइतिमंत्रेणासनपाद्यादिषोडशोपचारान्दत्वा तमग्निंत्रिःपरिक्रम्यगायंतुचहसंतुच जल्पंतुस्वेच्छयालोकानिःशंकायस्ययन्मतं ज्योतिर्निबंधे पंचमीप्रमुखास्तासुतिथयोनंतपुण्यदाः दशस्युःशोभनास्तासुकाष्ठस्तेयंविधीयते चांडालसूतिकागेहाच्छिशुहारितवह्निना प्राप्तायांपूर्णिमायांतुकुर्यात्तत्काष्ठदीपनं ग्रामाद्बहिश्चमध्येवातूर्यनादसमन्वितः स्नात्वाराजाशुचिर्भूत्वास्वस्तिवाचनतत्परः दत्वादानानिभूरीणिदीपयेद्धोलिकाचितिं ततोभ्युक्ष्यचितिंसर्वांसाज्येनपयसासुधीःनालिकेरानिदेयानिबीजपूरफलानिच गीतवाद्यैस्तथानृत्यैरात्रिःसानीयतेजनैः तमग्निंत्रिःपरिक्रम्यशब्दैर्लिंगभगांकितैः तेनशब्देनसापापाराक्षसीतृप्तिमाप्नुयात् एवंरात्रौहोलिकोत्सवंकृत्वाप्रातःप्रतिपदियःश्वपचंदृष्ट्वास्नानंकुर्यात् नतस्यदुष्कृतंकिंचिन्नाधयोव्याधयोपिच कृत्वाचावश्यकार्याणिसंतर्प्यपितृदेवताः वंदयेद्धोलिकाभूतिंसर्वदुष्टोपशांतये वंदनेमंत्रः वंदितासिसुरेंद्रेणब्रह्मणाशंकरेण च अतस्त्वंपाहिनोदेविभूतेभूतिप्रदाभवेति होलिकादिनंकरिसंज्ञकंतदुत्तरदिनंचशुभेवर्ज्यं हो

लिकाग्रहणभावुकायनप्रेतदाहदिवसोत्रपंचमः तत्परंचकरिसंज्ञकंदिनंवर्जितं सकलकर्मसूभयमित्युक्तेः ग्रहणायनप्रेतदाहेषुनिशीथविभागेनपूर्वदिनपरदिनयोर्निर्णयोज्ञेयः नरोदोलागतं दृष्ट्वागोविंदंपुरुषोत्तमं फाल्गुन्यांसंयतोभूत्वागोविंदस्यपुरंव्रजेत् ॥

अब होलिकाकी पूजाका विधि कहताहुं.

देश और कालका उच्चार करके " **सकुटुंबस्य मम ढुंढाराक्षसीप्रीत्यर्थं तत्पीडापरिहारार्थं च होलिकापूजनमहं करिष्ये** " इस प्रकार संकल्प करके सूखे काष्ठोंकों और गोबरके पिंडोंके समूहकों अग्निसें प्रज्वलित करके तिसके उपर " **अस्माभिर्भयसंत्रस्तैः कृता त्वं होलिके यतः ॥ अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव** " इस पूजाके मंत्रसें " **श्रीहोलिकायै नमः होलिकामावाहयामि** " ऐसा आवाहन करके "**होलिकायै नमः**" इस मंत्रसें आसन और पाद्य आदि षोडशोपचार पूजा करके " तिस अग्निकों तीन परिक्रमा करके शंकासें रहित अपनी इच्छाके अनुसार जिसका जैसा मत होवै तैसा गायन, हास्य, और भाषण करना. " ज्योतिर्निबंध ग्रंथमें लिखा है की " शुक्लपक्षकी पंचमीसें वदि पंचमीतक जो पंदरह तिथि तिन्होंमांहसें दश तिथि अनंतपुण्यकों देती हैं और सुंदर हैं. तिन्होंमें काष्ठ और गोबरकी चोरी करनी. चांडाल और सूतिका स्त्रीके घरसें बालकोंके हाथसें मंगाये हुए अग्निसें पौर्णमासीमें गामके बाहिर अथवा मध्यमें तिस काष्ठोंकों प्रज्वलित करना. राजानें बाजाओंका शब्द कराय स्नान करके और पवित्र होके पुण्याहवाचन करना. बहुतसे दान करके होलिका प्रज्वलित करवानी. पीछे होलिकाकी संपूर्ण चितिकों घृत और दूधसें बुझाय पीछे नारियल और बिजोराके फल देने. पीछे वह रात्रि गाना, नाचना, बाजोंकों बजाना इन्होंसें व्यतीत करनी. लिंग, योनि इन आदि बीभत्स शब्दोंसें सहित वचनोंकों बोलके तिस अग्निकों तीन परिक्रमा करनी. तिस शब्दकरके वह पापिणी राक्षसी होलिका तृप्तिकों प्राप्त होती है. " ऐसा रात्रिमें होलिकाका उत्सव करके प्रातःकालमें प्रतिपदाके दिन चांडालकों स्पर्श करके जो मनुष्य स्नान करता है तिसकों कुछभी दुःख, आधि, व्याधि ये नहीं होते हैं. नित्यकर्मोंकों करके, पितर और देवताओंका तर्पण करके, सब दुःखोंकी शांतिके लिये होलिकाके भस्मकों प्रणाम करना. तिसका मंत्र—" **वंदितासि सुरेंद्रेण ब्रह्मणा शंकरेण च ॥ अतस्त्वं पाहि नो देवि भूते भूतिप्रदा भव.** " होलिकाका दिन और इस्सें पिछला करिसंज्ञक दिन शुभकर्ममें वर्जित है. क्योंकी, " होलिकाका दिन, ग्रहणका दिन वैशाखकी अमावस, अयनकी संक्रांतिका दिन, प्रेतदाहका दिन और इन दिनोंसें पिछले करिसंज्ञक दिन ये सब शुभकर्ममें वर्जित हैं " ऐसा वचन है. ग्रहणका दिन, अयनकी संक्रांतिका दिन, प्रेतदाहका दिन, इन्होंमें मध्यरात्रके विभागकरके पूर्वदिन और करिदिनका निर्णय जानना. " फाल्गुनकी पौर्णमासीके दिन जो मनुष्य हिंदोलामें आरूढ हुये पुरुषोत्तम विष्णुकों देखता है वह मनुष्य विष्णुलोकमें प्राप्त होता है. "

फाल्गुनकृष्णप्रतिपदिवसंतारंभोत्सवःसाचौदयिकीग्राह्या दिनद्वयेसत्त्वेपूर्वा अत्रतैलाभ्यंगउक्तः अत्रप्रतिपदिचूतपुष्पप्राशनमुक्तं तत्प्रकारः गोमयोपलिप्तेगृहांगणेशुक्लवस्त्रासनउ

पविष्टःप्राङ्मुखःसुवासिन्याकृतचंदनतिलकनीराजनःसचंदनमाम्रकुसुमंप्राश्नीयात् तत्रमंत्रः चूतमग्र्यंवसंतस्यमाकंदकुसुमंतव सचंदनंपिबाम्यद्यसर्वकामार्थसिद्धयइति ॥

फाल्गुन वदि प्रतिपदामें वसंतके आरंभका उत्सव होता है. वह प्रतिपदा उदयकालव्यापिनी लेनी. दोनों दिन सूर्योदयव्यापिनी होवै तौ पूर्वविद्धा लेनी. यहां तेलका अभ्यंग करना. इस प्रतिपदामें आंबके पुष्प भक्षण करने. तिसके भक्षणका विधि—गौके गोवरसें लीपे हुये घरके अंगणमें सपेद वस्त्रके आसनपर बैठके पूर्वके तर्फ मुख करके सुहागन स्त्रियोंसें चंदनका तिलक और आरती कराय चंदनसहित आंबके पुष्पकों भक्षण करना. तिसका मंत्र—"चूतमग्र्यं वसंतस्य माकंद कुसुमं तव ॥ सचंदनं पिबाम्यद्य सर्वकामार्थसिद्धये."

कृष्णद्वितीयायांदेशग्रामाधिपतिर्वितते वितानादिशोभितेदेशेरम्यासनेउपविश्य पौरजानपदान्लोकान्सिंदूरादिक्षोदैःचंदनादिभिः पट्टवासैश्चविकीर्यतेभ्यस्तांबूलादिदत्वानृत्यगीताविनोदैर्महोत्सवंकुर्यात् इदानींप्राकृतजनास्तुकृष्णपंचमीपर्यंतमेतमुत्सवंकुर्वंति इतिहोलिकोत्सवः

फाल्गुन वदि द्वितीयाके दिन देश अथवा गामके अधिपतीनें विस्तृत और सुंदर ऐसी जगह छत आदिसें सुशोभित करनी, और तहां उत्तम आसन रखके तिसके उपर तिस अधिकारीनें बैठके नगरवासी और देशवासी ऐसे अपने लोकोंपर सिंदूर, गुलाल, चंदन आदि वखेरके और तिन मनुष्योंकों तांबूल आदि देके नाच, गायन और विनोद आदिसें उत्सव करना. आधुनिक मनुष्य तौ कृष्णपक्षकी पंचमीतक उत्सव करते हैं. इस तरह होलिकाका उत्सव समाप्त हुआ.

फाल्गुनामावास्यामन्वादिः सापराह्णव्यापिनीग्राह्या इतिश्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेफाल्गुनमासकृत्यनिर्णयउद्देशःसमाप्तः ॥

फाल्गुनकी अमावस मन्वादि तिथि है. वह अपराण्हव्यापिनी लेनी. इति धर्मसिंधुसारभाषाटीकायां फाल्गुनमासकृत्यनिर्णयो नाम द्वादशोद्देशः ॥ १२ ॥

अथपरिच्छेदद्वयशेषाख्यंप्रकीर्णप्रकरणमुच्यते द्वादशस्वपिमासेषुश्राद्धेव्यतीपातादियोगस्यभरण्यादिनक्षत्रस्यचापराह्णव्याप्त्यादर्शवन्निर्णयोज्ञेयः उपवासादौप्रचुराचाराभावान्नोक्तः अथचांद्रसांवत्सरभेदाः प्रभवोविभवःशुक्लःप्रमोदोथप्रजापतिः अंगिराःश्रीमुखोभावोयुवाधातातथैवच १ ईश्वरोबहुधान्यश्चप्रमाथीविक्रमोवृषः चित्रभानुःसुभानुश्चतारणःपार्थिवोऽव्ययः २ सर्वजित्सर्वधारीचविरोधीविकृतिःखरः नंदनोविजयश्चैवजयोमन्मथदुर्मुखौ ३ हेमलंबीविलंबीचविकारीशार्वरीप्लवः शुभकृच्छोभकृत्क्रोधीविश्वावसुपराभवौ ४ प्लवंगःकीलकःसौम्यःसाधारणविरोधकृत् परिधावीप्रमादीचआनंदोराक्षसोनलः ५ पिंगलःकालयुक्तश्चसिद्धार्थीरौद्रदुर्मतिः दुंदुभीरुधिरोद्गारीरक्ताक्षीक्रोधनःक्षयः इति ६ रवेःराशिसंक्रमवन्नक्षत्रसंक्रमेपिषोडशनाड्यःपूर्वत्रपरत्रचपुण्यकालः ॥

अब दोनों परिच्छेदोंमें शेष रहे प्रकीर्ण प्रकरणका निर्णय कहताहुं.

वारह महीनोंमेंभी श्राद्धविषे व्यतीपात आदि योगोंका और भरणी आदि नक्षत्रोंका अ-

पराण्हमें व्यातिकरके अमावसकीतरह निर्णय जानना. व्यतीपात आदि योग और भरणी आदि नक्षत्र इन्होंमें उपवास आदि करनेका विशेष आचार नहीं है, इस कारणसें तिसका निर्णय नहीं कहा है. **अब चांद्रसंवत्सरके भेदोंको कहताहुं.**–“ प्रभव, विभव, शुक्ल, प्रमोद, प्रजापति, अंगिरा, श्रीमुख, भाव, युवा, धाता, ईश्वर, बहुधान्य, प्रमाथी, विक्रम, वृष, चित्रभानु, सुभानु, तारण, पार्थिव, व्यय, सर्वजित्, सर्वधारी, विरोधी, विकृति, खर, नंदन, विजय, जय, मन्मथ, दुर्मुख, हेमलंबी, विलंबी, विकारी, शार्वरी, प्लव, शुभकृत्, शोभकृत्, क्रोधी, विश्वावसु, पराभव, प्लवंग, कीलक, सौम्य, साधारण, विरोधकृत्, परिधावी, प्रमादी, आनंद, राक्षस, अनल, पिंगल, कालयुक्त, सिद्धार्थी, रौद्र, दुर्मति, दुंदुभि, रुधिरोद्गारी, रक्ताक्षी; क्रोधन और क्षय ” ऐसे साठ नाम हैं. सूर्यसंक्रमकीतरह नक्षत्रके संक्रम अर्थात् संक्रांतिमेंभी पहली और पिछली सोलह घटीका पुण्यकाल जानना.

अथचंद्रादीनांसंक्रांतौपुण्यकालः चंद्रस्यसंक्रांतौप्राक्परत्रचत्रयोदशपलाधिकाएकाघटी पुण्यकालः भौमस्यैकपलाधिकाश्चतस्रोनाड्यः बुधस्यचतुर्दशपलाधिकास्तिस्रः गुरोःसप्तत्रिंशत्पलाधिकाश्चतस्रः शुक्रस्यैकपलाधिकाश्चतस्रः शनेःसप्तपलाधिकाः षोडश एताःसर्वाः प्राक्परत्रचबोद्धव्याःरात्रौग्रहांतराणांसंक्रमेरात्रावेवपुण्यकालः सूर्यसंक्रांतिवद्दिवापुण्यत्वविधायकाभावात्चंद्रादिसंक्रांतिषुस्नानंकाम्यंनतुनित्यं ॥

अब चंद्रमा, मंगल इन आदि ग्रहोंकी संक्रांतिका पुण्यकाल कहताहुं.

चंद्रमाकी संक्रांतिविषे पहले और पिछले तेरह पल और एक घडी पुण्यकाल है. मंगलकी संक्रांतिमें चार घडी और एक पल पुण्यकाल है. बुधकी संक्रांतिमें तीन घडी और चौदह पल पुण्यकाल है. बृहस्पतिकी संक्रांतिमें चार घडी और सैंतीस पल पुण्यकाल है. शुक्रकी संक्रांतिमें चार घडी और एक पल पुण्यकाल है. शनिकी संक्रांतिमें सोलह घडी और सात पल पुण्यकाल है. ये सब घडी और पल संक्रमणकालके पहले और पीछले जानना. रात्रिविषे अन्य ग्रहोंकी संक्रांतिविषे रात्रिमेंही पुण्यकाल जानना. सूर्यकी संक्रांतिकी तरह दिनमें पुण्यकालके अभावसें चंद्रमा आदिकी संक्रांतियोंमें स्नान काम्य है, नित्य नहीं है.

आदित्यादिसूचितपीडानिरासार्थंस्नानानि मंजिष्ठागजमदकुंकुमरक्तचंदनानिजलपूर्णेताम्रपात्रेप्रक्षिप्यस्नानंसूर्यपीडाहरं उशीरशिरीषकुंकुमरक्तचंदनयुतशंखतोयेनस्नानंचंद्रदोषहरं खादिरदेवदारुतिलामलकयुतरौप्यपात्रजलेनस्नानंभौमे गजमदयुतसंगमजलेनमृत्पात्रस्थेन स्नानंबुधे औदुंबरबिल्ववटामलकानांफलैर्युतसौवर्णपात्रजलेनस्नानंगुरौ गोरोचनगजमदशतपुष्पाशतावरीयुतराजतपात्रजलेनस्नानंशुक्रे तिलमाषप्रियंगुगंधपुष्पयुतलोहपात्रस्थजलेन स्नानंशनौ गुग्गुलहिंगुहरितालमनःशिलायुतमहिषशृंगपात्रजलेनस्नानंराहौ वराहोत्खातपर्वताग्रमृच्छागक्षीरयुतखड्गपात्रजलेनस्नानंकेतौ ॥

सूर्य आदिसें सूचित पीडाकों दूर करनेके लिये स्नानोंकों कहताहुं. मजीठ, हस्तीका मद, केसर, लाल चंदन इन्होंकों जलसें भरे हुये तांबाके पात्रमें छोड स्नान करना. तिस्सें सूर्यकी पीडा दूर होती है. खस, शिरस, केसर, लाल चंदन इन्होंसें युत किये पानीकरके शंखके द्वारा स्नान करनेसें चंद्रमाकी पीडा नष्ट होती है. खैर, देवदार, तिल, आंवला इन्होंकों पानीसें भरे चांदीके पात्रमें छोड स्नान करनेसें मंगलकी पीडा नष्ट होती है. हस्तीके मदसें युत संगमके पानीकों माटीके पात्रमें डालके स्नान करनेसें बुधकी पीडा नष्ट होती है. गूलरका फल, वेलगिरी, वडका फल, आंवला इन्होंसें युत पानी सोनाके पात्रमें लेके स्नान करनेसें बृहस्पतिकी पीडा निवृत्त होती है. गोरोचन, हस्तीका मद, सौंफ, शतावरी इन्होंसें युत किये पानीकों चांदीके पात्रमें लेके स्नान करनेसें शुक्रकी पीडा निवृत्त होती है. तिल, उडद, कांगनी, गंध, पुष्प इन्होंसें युत किये पानीकों लोहाके पात्रमें लेके स्नान करनेसें शनिकी पीडा निवृत्त होती है. गूगल, हींग, हरताल, मनशिल इन्होंसें युत किये पानीकों भैंसाके शींगके पात्रमें लेके स्नान करनेसें राहुकी पीडा नष्ट होती है. वरहडा शूरकी खोदी माटी, पर्वतके अग्रभागकी माटी, वकरीका दूध इन्होंसें युत किये पानीकों गेंडाकी ढालके पात्रमें रखके तिस्सें स्नान करनेसें केतुकी पीडा नष्ट होती है.

अथग्रहप्रीत्यर्थंदानानि माणिक्यगोधूमधेनुरक्तवस्त्रगुडहेमताम्ररक्तचंदनकमलानिरवेः प्रीत्यर्थंदानानि वंशपात्रस्थतंडुलकर्पूरमौक्तिकश्वेतवस्त्रघृतपूर्णकुंभवृषभाश्चंद्रस्य प्रवालगोधूममसूरिकारक्तवृषगुडसुवर्णरक्तवस्त्रताम्राणिभौमस्य नीलवस्त्रसुवर्णकांस्यमुद्गगारुत्मतदासीहस्तिदंतपुष्पाणिबुधस्य पुष्परागमणिहरिद्राशर्कराश्वपीतधान्यपीतवस्त्रलवणसुवर्णानि सुरगुरोः चित्रवस्त्रश्वेताश्वधेनुवज्रमणिसुवर्णरजतगंधतंडुलाःशुक्रस्य इंद्रनीलमाषतैलतिलकुलित्थमहिषीलोहकृष्णधेनवःशनेः गोमेदाश्वनीलवस्त्रकंबलतैलतिललोहानिराहोः वैदूर्यतैलतिलकंबलकस्तूरीछागवस्त्राणिकेतोर्दानानि शनिपीडापरिहारार्थंशनिवारेतैलाभ्यंगस्तैलदानंच ॥

अब नवग्रहोंके दान कहताहुं.

माणिक, गेहूं, गौ, लाल वस्त्र, गुड, सोना, तांबा, लाल चंदन, कमल इन्होंके दान सूर्यकी प्रीतिके लिये करने. वांशके पात्रमें चावल, कपूर, मोती, सुपेद वस्त्र, घृतसें पूरित किया कलश, बैल इन्होंका दान चंद्रमाकी प्रीतिके लिये करना. मूंग, गेहूं, मसूर लाल वैल, गुड, सोना, लाल वस्त्र, तांबा इन्होंका दान मंगलकी प्रीतिके लिये करना. नीला वस्त्र, सोना, कांसी मूंग, पन्ना, दासी, हस्तिदंत, पुष्प इन्होंका दान बुधकी प्रीतिके लिये करना. पुष्परागमणि, हलदी, खांड, घोडा, पीत अन्न, पीत वस्त्र, नमक, सोना इन्होंका दान बृहस्पतिकी प्रीतिके लिये करना. अनेक वर्णका वस्त्र, सुपेद घोडा, गौ, हीरामणि, सोना, चांदी, गंध, चावल इन्होंका दान शुक्रकी प्रीतिके लिये करना. नीलम, उडद, तेल, तिल, कुलथी, भैंस, लोहा, काली गौ इन्होंका दान शनैश्चरकी प्रीतिके लिये करना, गोमेदमणि, घोडा, नीला वस्त्र, कंबल, तेल, तिल, लोहा इन्होंका दान राहुकी प्रीतिके लिये करना. वैडूर्यमणि, तेल, तिल, कंबल, कस्तूरी, बकरा, वस्त्र

इन्होंका दान केतुकी प्रीतिके लिये करना. शनैश्चरकी पीडा दूर करनेके लिये शनिवारमें तेलका अभ्यंग और तेलका दान करना.

अथशनिव्रतं लोहमयंशनिंतैलकुंभेलौहेमृन्मयेवानिक्षिप्यकृष्णवस्त्राभ्यांकंबलेनवायुतंकृष्णैः सुगंधपुष्पैश्चकृसरान्नैस्तिलौदनैःपूजयित्वा कृष्णायद्विजायतदभावेन्यस्मैसशनिर्देयःतत्रशंनोदेवीरितिमंत्रः शूद्रादेस्तु यःपुनर्नष्टराज्यायनलायपरितोषितः स्वप्नेददौनिजंराज्यंसमे सौरिःप्रसीदतु नमोर्कपुत्रायशनैश्चरायनीहारवर्णांजनमेचकाय श्रुत्वारहस्यंभवकामदस्त्वंफलप्रदोमेभवसूर्यपुत्रेत्यादयः एवंव्रतंप्रतिशनिवारंसंवत्सरंकार्यं कोणस्थःपिंगलोबभ्रुःकृष्णोरौद्रोंतकोयमः सौरिःशनैश्चरोमंदःपिप्पलादेनसंस्तुतइतिदशनामानिवानित्यंपठनीयानि अथशनिस्तोत्रं पिप्पलादउवाच नमस्तेकोणसंस्थायपिंगलायनमोस्तुते नमस्तेबभ्रुरूपायकृष्णायच नमोस्तुते नमस्तेरौद्रदेहायनमस्तेचांतकायच नमस्तेयमसंज्ञायनमस्तेसौरयेविभो नमस्तेमंदसंज्ञायशनैश्चरनमोस्तुते प्रसादंकुरुदेवेशदीनस्यप्रणतस्यच अनेनस्तोत्रेणप्रत्यहंप्रातःशनिस्तवनेनसार्धसप्तवार्षिकशनिपीडानाशः ।।

अब शनिका व्रत कहताहुं.

लोहासें बनी हुई शनैश्चरकी मूर्तिकों लोहाके अथवा माटीके तेलसें भरे कुंभमें स्थापित करके पीछे दो कृष्ण वस्त्रोंसें अथवा कंबलसें युत करके काले फूल, सुगंधित पुष्प, कंसार, खीचडी, तिल और चावल इन्होंसें पूजा करके कृष्णवर्णवाले ब्राह्मणके अर्थ अथवा अन्य वर्णवाले ब्राह्मणके अर्थ " शन्नोदेवी " इस मंत्रसें मूर्तिका दान करना. शूद्र आदि दान करनेवाला होवै तौ " यः पुनर्नष्टराज्याय नलाय परितोषितः ।। स्वप्ने ददौ निजं राज्यं स मे सौरिः प्रसीदतु ।। नमोर्कपुत्राय शनैश्चराय नीहारवर्णांजनमेचकाय ।। श्रुत्वा रहस्यं भव कामदस्त्वं फलप्रदो मे भव सूर्यपुत्र " इन आदि मंत्रोंसें दान करना. इस प्रकार वर्षतक प्रतिशनिवारकों व्रत करना. और " कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोंतको यमः ।। सौरिः शनैश्चरो मंदः पिप्पलादेन संस्तुतः " इस प्रकार इन दश नामोंका पाठ नित्यप्रति करना. अब शनिका स्तोत्र कहताहुं.—" पिप्पलाद उवाच ।। नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोस्तु ते ।। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते ।। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च ।। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ।। नमस्ते मंदसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते ।। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च " इस स्तोत्रका नित्यप्रति पाठ करनेसें और रोज प्रातःकालमें शनिकी स्तुति करनेसें साढेसात वर्षतक रहे शनिकी पीडा दूर होती है.

रविवारेसूर्यपूजोपवाससूर्यमंत्रजपैःसर्वरोगनाशः ऱ्हींऱ्हींसःसूर्यायेतिषडक्षरःसूर्यमंत्रः इति श्रीमत्काश्युपाध्यायसूरिसूनुयज्ञेश्वरोपाध्यायानुजानंतोपाध्यायसूरिसुतकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेप्रकीर्णनिर्णयउद्देशः समाप्तः ।।

अंतवारमें सूर्यकी पूजा, उपवास, सूर्यके मंत्रका जप इन्होंकरके सब रोगोंका नाश

होता है. "ऱ्हीं ऱ्हीं सः सूर्याय" यह छह अक्षरोंवाला सूर्यका मंत्र है. इति धर्मसिंधुसारभाषाटीकायां प्रकीर्णनिर्णयस्त्रयोदश उद्देशः ॥ १३ ॥

उक्तआद्यपरिच्छेदेसामान्येनविनिर्णयः द्वितीयेस्मिन्परिच्छेदेविशेषेणविनिर्णयः ॥

प्रथम परिच्छेदमें सामान्यपनेसें निर्णय कहा है और इस दूसरे परिच्छेदमें विशेषपनेसें निर्णय कहा है.

मीमांसाधर्मशास्त्रज्ञाःसुधियोनलसानराः कृतकार्याःप्राङ्निबंधैस्तदर्थंनायमुद्यमः ॥ १ ॥

यह ग्रंथ करनेका प्रयोजन कहताहुं.

मीमांसा और धर्मशास्त्रकों जाननेवाले, सुंदर बुद्धिवाले और आलस्यसें रहित, पहले ग्रंथोंसें कृतकार्य हुये ऐसे जो विद्वान पंडित हैं तिन्होंके लिये यह मेरा उद्यम नहीं है ॥ १ ॥

येपुनर्मंदमतयोलसाअज्ञाश्चनिर्णयम् धर्मेवेदितुमिच्छंतिरचितस्तदपेक्षया ॥ २ ॥
निवंधोयंधर्मसिंधुसारनामासुबोधनः अमुनाप्रीयतांश्रीमद्विठ्ठलोभक्तवत्सलः ॥ ३ ॥

जो मंदबुद्धिवाले, आलस्यवाले और अविद्वान् ऐसे पुरुष धर्मविषयक निर्णयकों जाननेकी इच्छा करते हैं तिन्होंके लिये यह धर्मसिंधुसार नामवाला और अच्छीतरह जाननेके योग्य ऐसा ग्रंथ है. इस करके भक्तोंपर दया करनेवाले श्रीमान् विठ्ठलजी प्रसन्न हो ॥ २ ॥ ३ ॥

सर्वत्रमूलवचनानीहज्ञेयानितद्विचारश्च कौस्तुभनिर्णयसिंधुश्रीमाधवकृतनिबंधेभ्यः ॥ ४ ॥

इस ग्रंथमें मूलवचन और तिन्होंके विचार **कौस्तुभ**, **निर्णयसिंधु**, श्रीमाधवकृत ग्रंथ इन्हों-मांहसें जान लेने ॥ ४ ॥

प्रेम्णासद्भिर्ग्रंथःसेव्यःशब्दार्थतःसदोषोपि संशोध्यवापिहरिणासुदाममुनिसतुषपृथुकमुष्टिरिव ॥ ५ ॥ इतिश्रीमत्काश्युपाध्यायसूरिसुनुयज्ञेश्वरोपाध्यायानुजानंतोपाध्यायसूरिसुतकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेप्रकीर्णनिर्णयउद्देशः समाप्तः ॥

शब्दार्थदोषसें सहितभी यह ग्रंथ शोधित करके सज्जनोंनें प्रेमसें सेवना योग्य है. जैसे सुदामा ब्राह्मणकी दी हुई तुषसहित पृथुककी मुष्टि शोधित करके श्रीकृष्णजीनें सेवित करी है तैसे विद्वानोंनें यह मेरे ग्रंथका अंगीकार करना ॥ ५ ॥

श्रीमान् अनंत उपाध्यायका पुत्र काशीनाथ उपाध्यायनें रचा हुआ धर्मसिंधुसारका द्वितीय परिच्छेद समाप्त हुआ ॥ २ ॥ इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायपुत्रवैद्यरविदत्तशास्त्रिअनुवादितधर्मसिंधुसारभाषाटीकायां द्वितीयपरिच्छेदः समाप्तः ॥ २ ॥

इति द्वितीयपरिच्छेदः समाप्तः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीपांडुरंगमकलंककलानिधानकांताननंयदबुधानमनंमुधान ॥
श्रीवत्सकौस्तुभरमोल्लसितोरसंतंवंदेपदाब्जभृतनंददुदारसंतं ॥ १ ॥

कलंकसें रहित चंद्रमाके समान प्रकाशित मुखवाले और जिनकों अज्ञानी मनुष्यभी प्रणाम करते हुये निरर्थक नहीं होते और श्रीवत्स, कौस्तुभमणि, लक्ष्मी इन्होंसें शोभित छातीवाले और चरणकमलके आश्रयकरके पुष्ट और आनंदकों पावनेवाले महासाधु जिसमें ऐसे श्रीपांडुरंगजीकों प्रणाम करता हूं ॥ १ ॥

भीमाप्रियंस्तुकरुणार्णवमाशुतोषंदीनेष्टपोषमघसंहतिसिंधुशोषम् ॥
श्रीरुक्मिणीमतिमुषंपुरुषंपरंतंवंदेदुरंतचरितंहृदिसंचरंतम् ॥ २ ॥

भीमा नदी है प्रिय जिनकों, दयाके सागर, शीघ्र प्रसन्न होनेवाले, दीन मनुष्योंके मनोरथकों सफल करनेवाले और पापोंके समूहरूपी समुद्रकों शोषनेवाले, लक्ष्मीस्वरूपवाली रुक्मणीजीकी बुद्धिकों खैंचनेवाले और हृदयमें विचरते हुएभी अनंतचरितोंवाले ऐसे परमपुरुष श्रीपांडुरंगजीकों प्रणाम करताहुं ॥ २ ॥

वंदेप्रतिघ्नंतमघानिशंकरंधत्तांसमेमूर्ध्निदिवानिशंकरम् ॥
शिवांचविघ्नेशमथोपितामहंसरस्वतीमाशुभजेपितामहम् ॥ ३ ॥

पापोंकों नाशनेवाले महादेवजीकों प्रणाम करताहुं. सो महादेवजी दिनराति मेरे शिरपर हाथकों धारण करो; और पार्वतीजी, गणेशजी, ब्रह्माजी, और प्रसिद्ध ऐसी सरस्वतीजी इन सबोंकों आदरपूर्वक प्रणाम करताहुं ॥ ३ ॥

श्रीलक्ष्मींगरुडंसहस्रशिरसंप्रद्युम्नमीशंकपिंश्रीसूर्यंविधुभौमविद्गुरु
कविच्छायासुतान्षण्मुखम् ॥ इंद्राद्यान्विबुधान्गुरूंश्चजननींतातंत्व
नंताभिधंनत्वार्यान्वितनोमिमाधवमुखान्धर्माब्धिसारंमितम् ॥ ४ ॥

श्रीलक्ष्मीजी, गरुडजी, शेषनागजी, प्रद्युम्न, नारायण, हनुमान्, सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, स्वामिकार्तिक, इंद्र आदि देव, गुरुजी, माता, अनंत नामवाले पिता, माधव आदि सज्जन पुरुष इन सबोंकों प्रणाम करके संक्षेपसें धर्मसिंधुसार नामक ग्रंथ रचताहुं ॥ ४ ॥

दृष्ट्वापूर्वनिबंधान्प्राच्यांश्चनवांश्चतेषुसिद्धार्थान् ॥
प्रायेणमूलवचनान्युज्झित्वालिखामिबालबोधाय ॥ ५ ॥

कमलाकरभट्टकृत निर्णयसिंधु, नीलकंठभट्टकृत द्वादशमयूख, विष्णुभट्टकृत पुरुषार्थचिंतामणि, कालमाधव, हेमाद्रि, अनंतदेवकृत कौस्तुभ इन आदि प्राचीन और नवीन ग्रंथोंकों देखकर और प्रायशः मूलवचनोंकों त्यागके तिन ग्रंथोंमें जो सिद्ध अर्थ हैं तिन्होंकों बालबोधके लिये मैं लिखताहुं ॥ ५ ॥

उक्त्वाधर्माब्धिसारेस्मिन्निर्णयंकालगोचरं परिच्छेदेप्रथमजेद्वितीयेचयथाक्रमं ॥ ६ ॥ अथ गर्भाधानादिसंस्कारान्धर्मान्गृह्यादिसंमतान् ॥ वक्ष्येसंक्षेपतःसंतोऽनुगृह्णंतुदयालवः ॥ ७ ॥

इस धर्मसिंधुसार ग्रंथके प्रथम और द्वितीयपरिच्छेदमें क्रमके अनुसार कालसंबंधी निर्णय कहके ॥ ६ ॥ इसके अनंतर **गृह्यसूत्र** आदि ग्रंथके अनुसार अच्छीतरह माने हुये गर्भाधान आदि संस्कार और आचार आदि धर्म इन्होंकों संक्षेपकरके कहताहुं. सो दयावाले सत्पुरुष अनुग्रह करो ॥ ७ ॥

काशीनाथाभिधेनात्रानंतोपाध्यायसूनुना ॥ निर्णीयतेयदेतत्तुशोधनीयंमनीषिभिः ॥८॥

अनंत उपाध्यायका पुत्र मैं काशीनाथ इस ग्रंथमें जो निर्णय लिखताहुं सो बुद्धिमानोंनें शोधन करना.

तत्रादौगर्भाधानसंस्कारउच्यते तदुपयोगितयाप्रथमरजोदर्शनेदुष्टमासादिनिर्णीयतेतत्रचैत्रज्येष्ठाषाढभाद्रपदकार्तिकपौषमासादुष्टाः प्रतिपद्रिक्ताष्टमीषष्ठीद्वादशीपंचदश्योऽनिष्टफलास्तिथयः तथारविभौममंदवारेषुभरणीकृत्तिकार्द्राश्लेषामघापूर्वात्रयविशाखाज्येष्ठानक्षत्रेषुविष्कंभगंडातिगंडशूलव्याघातवज्रपरिघपूर्वार्धव्यतीपातवैधृतियोगेषु विष्ट्यांग्रहणेरात्रिसंध्यापराह्णकालेषुनिद्रायांजीर्णरक्तनीलचित्रवस्त्रेषु नग्नत्वेपरगृहपरग्रामेषुअल्पाधिकनीलादिरक्तत्वेचानिष्टफलं संमार्जनीकाष्ठतृणाग्निशूर्पान्हस्तेदधानाकुलटास्यात्वस्त्रेविषमारक्तबिंदवःपुत्रफलाः समाःकन्याफलाः ॥

अब आदिमें गर्भाधानसंस्कार कहताहुं.

तिसके उपयोगिताकरके प्रथम रजोदर्शनमें दुष्ट महीना आदिका निर्णय किया जाता है. तहां चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ, भाद्रपद, कार्तिक, पौष ये महीने दुष्ट हैं. प्रतिपदा, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, अष्टमी, षष्ठी, द्वादशी, और पौर्णिमा ये तिथि दुष्ट फलकों देती हैं. अंतवार, मंगलवार, शनिवार इन्होंमें और भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशाखा, ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंमें और विष्कंभ, गंड, अतिगंड, शूल, व्याघात, वज्र, परिघका पूर्वार्ध, व्यतीपात, और वैधृति इन योगोंमें, भद्रामें और चंद्रमा तथा सूर्यके ग्रहणमें और रात्रि, संध्याकाल, अपराण्हकाल इन्होंमें और नींदमें और पुराना, रक्त, नीला, चित्र, ऐसे वस्त्रोंमें और नग्नपनेमें और दूसरेके घरमें और दूसरेके ग्राममें और रजोदर्शन अल्प होनेसें और अधिक होनेसें और नीले रंगसें संयुक्त होवै इन सबोंमें प्रथम रजोदर्शन अनिष्ट फलकों देता है. बुहारी, काष्ठ, तृण, अग्नि, छाज इन्होंकों हाथमें धारण करती हुई स्त्रीकों प्रथम रजका दर्शन होवै तौ वह स्त्री जारिणी होती है. प्रथम रजोदर्शनमें वस्त्रविषे रक्तकी विषम बूंद होवै तौ पुत्रोंकों उपजानेवाली वह स्त्री जाननी. वस्त्रमें सम अर्थात् पूरी गिनतीकी बूंद होवै तौ वह स्त्री कन्याओंकों उपजानेवाली जाननी.

अथप्रथमर्तौ अक्षतैरासनंकृत्वातत्रतामुपविश्यपतिपुत्रवत्यः स्त्रियोहरिद्राकुंकुमगंधपुष्प

स्रक्तांबूलादितस्यैदत्वादीपैर्नीराज्यसदीपालंकृतेगृहेतांवासयेयुःसुवासिनीभ्योगंधादिकंलवणमुद्गादिचदद्यात् ॥

अब प्रथम रजोदर्शन हुए पीछेका विधि कहताहुं:—प्रथम ऋतुकाल आतेही चावलोंके अक्षतोंकरके आसनकों बनाय तहां तिस स्त्रीकों बैठाय पति और पुत्रवाली स्त्रियोंनें हलदी, कुंकुम, चंदन, पुष्पकी माला और तांबूल इन आदि पदार्थ तिस स्त्रीकों देके दीपकोंसें आरती करके दीपकोंसें अलंकृत किये घरमें तिस स्त्रीकों बिठावना. सुहागन स्त्रियोंकों गंध, हलदर, कुंकुम आदि और नमक, मूंग आदि पदार्थ देने.

अथसर्वर्तुसाधारणनियमाः त्रिरात्रमस्पृश्याभूत्वाअभ्यंगांजनस्नानदिवास्वापाग्निस्पर्शदंतधावनमांसाशनसूर्याद्यवलोकान्भूमौरेखाकरणंचवर्जयेदधःशयीतअंजलिनाताम्रलोहपात्रेणवाजलंनपिबेत् याखर्वपात्रेणजलंपिबतितस्याःखर्वःपुत्रः नखनिकृंतनेकुनखीपुत्रः पर्णेनपानेउन्मत्तइति द्वितीयादिषुऋतुषुप्रवासगंधमाल्यादिधारणतांबूलगोरसभक्षणपीठाद्यारोहणं वर्जयेत् मृन्मयेआयसेभूमौवाभुंजीत ग्रहणादिनिमित्तकस्नानप्राप्तौनोदकमज्जनरूपंस्नानं किंतुपात्रांतरितजलेनस्नात्वानवस्त्रपीडनंकुर्यान्नान्यद्वासश्चधारयेत् एवंमृताशौचादिनिमित्तकस्नानप्राप्तावपि सगोत्रयोर्योनिसंबंधिन्योर्वाब्राह्मण्योःरजस्वलयोःपरस्परंस्पर्शेउक्तरीत्यातदैवस्नानमात्रेणशुद्धिः बुद्धयास्पर्शेएकरात्रमुपवासः गोत्रादिसंबंधाभावेअबुद्धयास्पर्शेतस्मिन्दिनेस्नात्वानभुंजीत मत्यास्पर्शेतुआशुद्धेर्नभुंजीत भोजनेतुशुद्ध्यनंतरंतावद्दिनसंख्ययोपवसेत् उपवासाशक्तौतुतत्प्रत्याम्नायब्राह्मणभोजनादिकुर्यात् सर्वत्रशुद्ध्युत्तरंपंचगव्याशनंज्ञेयं शूद्रीब्राह्मण्योःरजस्वलयोःस्पर्शेआशुद्धेरभोजनंशुद्धौकृच्छ्रप्रायश्चित्तंब्राह्मण्याःशूद्र्यास्तुपादकृच्छ्रमात्रं रजस्वलायाःसूतिकायावाचांडालस्पर्शेआशुद्धेर्नभोजनंअतिकृच्छ्रंच अमत्यास्पर्शेप्राजापत्यं दंडादिपरंपरयाचांडालादिस्पर्शेस्नानमात्रं भुंजानायाःस्पर्शेप्राजापत्यंद्वादशब्राह्मणभोजनंच मिताक्षरायांतुपतितांत्यजचांडालैःकामतःस्पर्शेआशुद्धेरभुक्त्वाशुद्ध्युत्तरंप्रथमेह्निस्पर्शेत्र्यहमुपवासः द्वितीयेद्व्यहं तृतीयेएकाहः अकामतस्तुआशुद्धेरभोजनमात्रं एवंग्रामकुक्कुटसूकरश्ववायसरजकादिस्पर्शेपि अशक्तौतुस्नात्वायावन्नक्षत्रदर्शनमभोजनंभुंजानायाःश्वचांडालादिस्पर्शेआशुद्धेरभोजनंषड्रात्रंगोमूत्रयावकाहारः अशक्तौसुवर्णदानंविप्रभोजनंवा उच्छिष्टयोरजस्वलयोःस्पर्शेउच्छिष्टचांडालेनस्पर्शेवाकृच्छ्रेणशुद्धिः उच्छिष्टद्विजस्पर्शेरजस्वलायास्त्र्यहमूर्ध्वोच्छिष्टेअधरोच्छिष्टेत्वेकाहमुपवासः इत्युक्तं उच्छिष्टशूद्रस्पर्शेअधिकंकल्प्यंपुष्पिण्याःसूतक्याद्यशुद्धनरस्पर्शेआशुद्धेरभोजनं भोजनेतुकृच्छ्रंपंचनखद्विशफैकशफपशुस्पर्शेअंडजस्पर्शेचाशुद्धेरभोजनंरजस्वलायाःश्वजंबूकगर्दभदंशेआशुद्धेरभोजनं शुद्धौपंचरात्रमुपवासः नाभेरूर्ध्वेदंशेदशरात्रं मूर्ध्निदंशेविंशतिरात्रं भुंजानारजस्वलारजस्वलांपश्यतिचेदाशुद्धेरभोजनं चांडालंपश्यतिचेदुपवासत्रयमपि कामतश्चांडालंपश्यतिचेत्प्राजापत्यं रजस्वलायाःशवसूतिकाभ्यांस्पर्शेशुद्ध्यंतेत्रिरात्रमुपवासः आशुद्धेरभोजनंच भोजनेतुकृच्छ्रम् सर्वत्रब्रह्मकूर्चविधिना पंचगव्याशनमुक्तमेत्र आशौचिभिःस्पर्शेस्नानात्प्राग्रजोदर्शनेचतुर्थदिनपर्यंतमभोजनंअशक्तौतु सद्यःस्नात्वाभुंजीत एवंबंधुमरणश्रवणेस्नानात्प्राग्रजोदर्शनेपि तथारजोदर्शनोत्तरं बंधुमरण

अवणेपिशक्तायाः आशुद्धेरभोजनमशक्तायाः स्नानेनभोजनं सर्वत्रास्पृश्यस्पर्शेअशक्तायाः स्नानेकृतेभोजनं शुद्ध्यंतेऽनशनप्रत्याम्नायइतिकेचित् ॥

अब सब रजोदर्शनके साधारण नियम कहताहुं.

रजस्वला स्त्रीनें तीन रात्रितक किसकोंभी स्पर्श नहीं करना. अभ्यंग, अंजन, स्नान, दिनका शयन, अग्निस्पर्श, दंतधावन, मांसका खाना, सूर्य आदिका दर्शन, और पृथिवीपर रेखाओंका करना इन्होंकों वर्ज देना. पृथिवीपर शयन करना. अंजलीकरके तथा तांबाके अथवा लोहाके पात्रकरके जलकों नहीं पीना. जो स्त्री छोटे पात्रसें जलकों पीती है तिसकों ठींगना पुत्र उपजता है. जो स्त्री नखोंकों काटती हैं तिसकों कुत्सित नखोंवाला पुत्र उपजता है. जो स्त्री पत्तासें जल पीती है तिसकों उन्मत्त पुत्र उपजता है. दूसरे आदि ऋतुकालोंमें प्रवास, गंध और माला आदिकों धारना, तांबूल और गोरसका भक्षण और आसन चौकी आदिपर बैठना इन्होंकों वर्जित करना. माटीके पात्रमें अथवा लोहाके पात्रमें अथवा पृथिवीपर भोजन करना. ग्रहण आदि कारणसें स्नान प्राप्त होवै तौ जलमें उतरके स्नान नहीं करना, किंतु अन्य पात्रमें जल लेके तिस्सें स्नान करना. वस्त्रकों निचोडना नहीं और दूसरा वस्त्रभी धारण नहीं करना. ऐसेही मरणसंबंधी पातक आदि कारण करके स्नानकी प्राप्ति होवै तौ भी यही विधि करना. एक गोत्रवाली अथवा दो बहन ऐसी दो ब्राह्मणी रजस्वला हुई स्त्रियोंका आपसमें अज्ञानसें स्पर्श होवै तौ इसी उक्त रीतिकरके स्नान मात्र करनेसें शुद्धि होती है. जानकर स्पर्श कियां जावै तौ एक रात्रि उपवास करना. गोत्र आदि संबंधका अभाव होवै और विना जाने स्पर्श किया जावै तौ तिसी दिनमें स्नान करना, परंतु भोजन नहीं करना. जानके स्पर्श किया जावै तौ शुद्धिपर्यंत भोजन नहीं करना. भोजन किया जावै तौ शुद्धिके पीछे जितने दिन भोजन किया होवै तितनेही दिन उपवास करना. उपवास करनेका सामर्थ्य नहीं होवै तौ उपवासकी एवजी ब्राह्मणभोजन आदि कराना. सब जगह शुद्धिके पश्चात् पंचगव्य प्राशन करना. रजस्वला हुई शूद्री और रजस्वला हुई ब्राह्मणीका आपसमें स्पर्श होवै तौ शुद्धिपर्यंत भोजन नहीं करना, शुद्धि होनेके पश्चात् ब्राह्मणीनें कृच्छ्र प्रायश्चित्त करना और शूद्रकी स्त्रीनें मात्र पादकृच्छ्र प्रायश्चित्त करना. रजस्वला स्त्रीकों अथवा सूतिका स्त्रीकों चांडालका स्पर्श होवै तौ शुद्धिपर्यंत भोजन नहीं करना और अतिकृच्छ्र प्रायश्चित्त करना. विना जाने स्पर्श किया जावै तौ प्राजापत्य प्रायश्चित्त करना. दंड आदिकी परंपराकरके चांडाल आदिका स्पर्श होवै तौ स्नान मात्र करना. भोजन करनेमें चांडालका स्पर्श होवै तौ प्राजापत्य प्रायश्चित्त करना और बारह ब्राह्मणोंकों भोजन कराना. मिताक्षरा ग्रंथमें तौ पतित, म्लेच्छ, चांडाल इन्होंका जानके स्पर्श होवै तौ शुद्धिपर्यंत भोजन नहीं करना और शुद्धिके उपरंत प्रथम दिनमेंही स्पर्श होवै तौ तीन दिन उपवास करना. शुद्धिसें दूसरे दिनमें स्पर्श होवै तौ दो दिन उपवास करना और शुद्धिसें तीसरे दिन स्पर्श होवै तौ एक दिन उपवास करना. विना जाने स्पर्श होवै तौ शुद्धि होनेपर्यंत भोजन नहीं करना. ऐसेही ग्रामका मुरगा, सूर, कुत्ता, काक, धोबी इन आदिका स्पर्श होवै तौभी यही पूर्वोक्त निर्णय जानना. सामर्थ्य नहीं होवै तौ स्नान करके जबतक नक्षत्रोंका दर्शन

होवै तबतक भोजन नहीं करना. भोजन करते वख्त रजस्वला स्त्रीकों कुत्ता, चांडाल आदिका स्पर्श होवै तौ शुद्धि होनेपर्यंत भोजन नहीं करना और छह रात्रितक गोमूत्रमें भिजाए हुए जवोंका भोजन करना. इस तरह करनेकी सामर्थ्य नहीं होवै तौ सोनाका दान अथवा ब्राह्मणभोजन कराना. उच्छिष्ट हुई दो रजस्वला स्त्रियोंका स्पर्श होवै अथवा उच्छिष्ट हुए चांडालका स्पर्श होवै तौ कृच्छ्रव्रतकरके शुद्धि होती है. रजस्वला स्त्रीकों उच्छिष्ट हुए ब्राह्मणका स्पर्श होवै तौ तीन दिन उपवास करना. ऊर्ध्वोच्छिष्टपना (अर्थात् भोजन करके आचमन नहीं करना सो) और अधरोच्छिष्टपना (अर्थात् विष्ठामूत्रका त्याग करके जलसें शुद्धि नहीं करना सो) में एक दिन उपवास करना, इस प्रकार कहा है. उच्छिष्ट हुए शूद्रका स्पर्श होवै तौ अधिक प्रायश्चित्त करना. रजस्वला स्त्रीकों सूतकी आदि अशुद्ध मनुष्यका स्पर्श होवै तौ वह रजस्वलानें शुद्धिपर्यंत भोजन नहीं करना. भोजन किया जावै तौ कृच्छ्रप्रायश्चित्त करना. पांच नखोंवाला और दो खुरोंवाला अथवा एक खुरवाला ऐसे पशुओंके और पक्षियोंके स्पर्शमें रजस्वला स्त्रीनें शुद्धि होनेपर्यंत भोजन नहीं करना. रजस्वला स्त्रीयोंनें कुत्ता, गीदड, गद्धा इन्होंके दंशमें शुद्धिपर्यंत भोजन नहीं करना. शुद्धि होनेके पश्चात् पांच रात्रिपर्यंत उपवास करना. नाभीसें ऊपर अंगमें इनही पशुओंसें दंश हुआ होवै तौ दश रात्रि उपवास करना. मस्तकमें दंश हुआ होवै तौ वीस रात्रि उपवास करना. भोजन करती हुई रजस्वला स्त्री जो अन्य रजस्वला स्त्रीकों देखै तौ शुद्धि होनेपर्यंत भोजन नहीं करना. रजस्वला स्त्री चांडालकों देखै तौ तीन उपवास करने. और जो जानके रजस्वला स्त्री चांडालकों देखै तौ प्राजापत्य प्रायश्चित्त करना. रजस्वला स्त्रीकों मुर्दा अथवा सूतिका स्त्रीका स्पर्श होवै तौ शुद्धिपर्यंत भोजन नहीं करना, और शुद्धिके उपरंत तीन रात्रि उपवास करना. भोजन किया जावै तौ कृच्छ्रप्रायश्चित्त करना. इसमें सब जगह ब्रह्मकूर्चविधिकरके पंचगव्यका प्राशन कहा है. सूतकी आदिके संग स्पर्शके अनंतर स्नानके पहले रजके दीखनेमें चतुर्थ दिनपर्यंत भोजन नहीं करना. सामर्थ्य नहीं होवै तौ तत्कालही स्नान करके भोजन करना. ऐसेही भाईके मरनेकों सुननेमें और स्नानके पहले रजके दीखनेमेंभी प्रायश्चित्त करना. रजकों दीखनेके पश्चात् भाईके मरणकों सुननेमें सामर्थ्यवाली रजस्वला स्त्रीनें शुद्धि होनेपर्यंत भोजन नहीं करना. सामर्थ्य नहीं होवै तौ स्नान करके भोजन करना. अस्पर्शका स्पर्श होवै तौ सब जगह अशक्त होवै उसनें स्नान करके भोजन करना. शुद्धिके अंतमें उपवासका प्रतिनिधि करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं.

रजस्वलायाःप्रथमदिननिर्णयस्तु रात्रेःपूर्वभागद्वयेपूर्वदिनंप्रथमं तृतीयेभागेरजोदर्शनेउत्तरंदिनंप्रथमं यद्वाार्धरात्रात्पूर्वंपूर्वदिनंप्रथमं अर्धरात्रादूर्ध्वंउत्तरदिनंप्रथमं एवंजननमरणाशौचेपिज्ञेयं यस्याःप्रायेणमासेरजोदर्शनंतस्याःसप्तदशदिनपर्यंतंपुनारजोदर्शनेस्नानाच्छुद्धिःअष्टादशाहेएकरात्रमशुचित्वंएकोनविंशेद्विरात्रंविंशतिप्रभृतित्रिरात्रं यस्याः प्रायःपक्षेपक्षेरजोदर्शनंतस्याःदशदिनपर्यंतंस्नानाच्छुद्धिः एकादशाहेरजोदृष्टौएकाहःद्वादशेद्विरात्रंऊर्ध्वंत्रिरात्रं रोगेणयद्रजः स्त्रीणामन्वहंप्रतिवर्ततेतत्रनास्पृश्यत्वंकिंतुरजोनिवृत्तिपर्यंतंपाकदैवपित्र्यकर्मानधिकारमात्रं रोगजेवर्तमानेपिमासजंरजोनिर्यात्येव तत्रसावधानासतीत्रिरात्रमशुचिर्भवेत् य

त्तुगर्भिण्याःप्राक्प्रसवात्रोगजंरजोदर्शनंतत्रत्रिदिनमेवाशौचं प्रसूतिकायाःकिंचिदूनमासात्पूर्वंरजोनिवृत्तौस्नानमात्रं पूर्णेमासेत्रिरात्रं उच्छिष्टास्त्रीयदिरजस्वलाभवतितदाशुद्ध्यंतेत्र्यहमधरोच्छिष्टेत्वेकाहमुपवासः अविज्ञातरजोदोषायदिगृहेव्यवहरतितदातयास्पृष्टंगोरसमृद्भांडादिकंजलादिकंचनत्याज्यम् सूतकवत्ज्ञानकालमारभ्यैवदोषात्अशुचित्वंतुज्ञानमारभ्यत्रिदिनमितिकेचित् अन्येतुद्वितीयादिदिनेरजसिज्ञातेसूतकवच्छेषदिनैरेवशुद्धिरित्याहुः ॥

रजस्वला स्त्रीके प्रथम दिनका निर्णय कहताहुं.—रात्रिके तीन भाग करने. रात्रिके दो पूर्व भागमें रजका दर्शन होवै तौ पूर्वदिनही प्रथम दिन जानना. रात्रिके तीसरे भागमें रजका दर्शन होवै तौ परदिन प्रथम दिन जानना. अथवा अर्धरात्रके पहले रजका दर्शन होवै तब पूर्वदिन प्रथम दिन होता है. अर्धरात्रके पश्चात् रजका दर्शन होवै तौ परदिन प्रथम दिन होता है. ऐसेही जन्म और मरणके सूतक पातकमेंभी जानना. जिस स्त्रीकों प्रायशःकरके महीनेमें रजका दर्शन होवै तिसकों सतरह दिनपर्यंत फिर रज दीख जावै तौ स्नान करनेसें शुद्धि होती है. अठारमें दिन रजका दर्शन होवै तौ एक रात्रि अशुद्धि होती है. और उन्नीशवे दिनमें रजका दर्शन होवै तौ दो दिन अशुद्धि रहती है. और वीस दिनसें आदि लेके रजका दर्शन होवै तौ तीन रात्रि अशुद्धि रहती है. जिस स्त्रीकों प्रायशःकरके पंदरह पंदरह दिनमें रजका दर्शन होवै तिसकों दश दिनपर्यंत फिर रज दीख जावै तौ तिसकी स्नान करनेसें शुद्धि होती है. ग्यारहमें दिन रज दीख जावै तौ एक दिन अशुद्धि रहती है. बारहमें दिन रज दीख जावै तौ दो रात्रितक अशुद्धि रहती है. बारह दिनके उपरंत रज दीख जावै तौ तीन रात्रितक अशुद्धि रहती है. जो रोगकरके स्त्रियोंकों नित्यप्रति रज प्रवृत्त होवै तहां अस्पृश्यपना नहीं है, किंतु रजकी निवृत्तिपर्यंत पाक, दैवकर्म, पितृकर्म, इन्होंकों करनेका अधिकार नहीं है. रोगसें उपजे रजकी प्रवृत्तिमें मासिक रज निवृत्त होता है. तहां सावधान होके वह स्त्रीनें तीन रात्रिपर्यंत रजोदर्शनकी पालना करनी. जो गर्भिणीकों प्रसवकालके पहले रोगसें उपजे रजका दर्शन होवै तहां तीन दिनही अशुद्धि रहती है. सूतिका स्त्रीकों महीनासें कछुक पहले रजकी प्रवृत्ति होवै तौ स्नान मात्र करना उचित है. पूर्ण हुये मासमें रजकी प्रवृत्ति होवै तौ तीन रात्रि अशुद्धि रहती है. जो उच्छिष्ट हुई स्त्री रजस्वला होवै तौ तिस स्त्रीनें शुद्धिके पीछे तीन दिन उपवास करना. अधरोच्छिष्टपनेमें रजस्वला होवै तौ एक दिन उपवास करना. नहीं जाना हुआ रजके दोषवाली स्त्री जो घरमें व्यवहार करती होवै तब तिस स्त्रीकरके छूहे हुए गोरस, माटीके पात्र और जल आदि इन्होंकों नहीं त्यागना; क्योंकी, सूतककी तरह ज्ञानकालके आरंभसें दोष प्राप्त होता है. अशुद्धिपना तौ ज्ञानकालसें आरंभित करके तीन दिन पालना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. अन्य ग्रंथकार तौ दूसरे आदि दिनमें रजका ज्ञान होनेमें सूतककी तरह शेष दिनोंकरके शुद्धि होती है ऐसा कहते हैं.

एवंत्रिदिनंस्थित्वाचतुर्थेहनिषष्टिवारंमृत्तिकाशौचेनमलंप्रक्षाल्यदंतधावनपूर्वकंसंगवकाले स्नायात् सूर्योदयात्प्राक्स्नानंत्वनाचारःचतुर्थेहनिरजोनिवृत्तौभर्तृशुश्रूषणादौशुद्धिःपंचमेहनि

दैवपित्र्यकर्मणिशुद्धिः कानिचिद्दिनानिरजोयद्यनुवर्तेततदातन्निवृत्तिपर्यंतंदैवपित्र्ययोर्नशुद्धिः रोगेणत्वनुवृत्तौप्रागुक्तं केचित्तुचतुर्थदिवसेदर्शेष्ट्यादिश्रौतकर्माणिकर्तव्यानीत्याहुः अपरेतुइतरदिनापेक्षयाचतुर्थदिनस्यैवानुकूलत्वेतत्रैवगर्भाधानंदुष्टरजोदर्शनशांतिश्चकर्तव्या महासंकटे श्रीसूक्तहोमपूर्वकाभिषेकेणोपनयनादिकमपिचतुर्थेहनिकर्तव्यमित्याहुः अयंचतुर्थेहन्याधिकारनिर्णयः सर्वथारजोनिवृत्तावेवज्ञातव्यः ॥

ऐसे तीन दिन स्थित होके चतुर्थ दिनमें साठ वार मृत्तिकासें मलकों प्रक्षालित करके दंतधावनपूर्वक संगवकालमें स्नान करना. सूर्योदयके पहले स्नान करना यह अनाचार है. चौथे दिन रजकी निवृत्ति होजानेके पश्चात् पतिकी सुश्रूषा आदिमें स्त्रीकी शुद्धि होती है. पांचमे दिन दैवकर्ममें और पितृकर्ममें शुद्धि होती है. जो कितनेक दिन रज अनुवर्तित होवै तब तिसकी निवृत्तिपर्यंत दैवकर्ममें और पितृकर्ममें शुद्धि नहीं होती है. रोगकरके रजकी प्रवृत्ति होवै तौ तिसका निर्णय पहले कह दिया है. कितनेक ग्रंथकार तौ चतुर्थ दिनमें दर्शेष्ट्यादि श्रौतकर्म करने उचित हैं ऐसा कहते हैं. अन्य ग्रंथकार तौ अन्य दिनोंकी अपेक्षाकरके चतुर्थ दिनकेही अनुकूलपनेमें तहांही गर्भाधान और दुष्ट रजोदर्शनकी शांति करनी ऐसा कहते हैं. महासंकटमें श्रीसूक्तहोमपूर्वक अभिषेक करके विवाह आदि कर्मभी चतुर्थ दिनमें करने ऐसा कहते हैं. चतुर्थ दिनका यह अधिकारनिर्णय सब प्रकारसें रजकी निवृत्तिमेंही जानना उचित है.

यदिज्वरादिभिरातुराचतुर्थेहनिस्नातुंनशक्ता तदातामन्यानारीनरोवादशवारंस्पृष्ट्वास्नायादाचमेच्चप्रतिस्नानमातुरस्यवस्त्रमन्यदन्यत्परिधापनीयं अंतेस्पृष्टानांसर्ववस्त्राणांत्यागआर्द्रवस्त्रादिव्यवधानेनशुद्धवस्त्रग्रहणांतेब्राह्मणभोजनात्पुण्याहवाचनाच्चशुद्धिः सर्वेषामप्यातुराणांएवं शुद्धिर्विधीयते एवंशुद्धयंतेशुभेदिनेदुष्टरजोदर्शनप्रयुक्तांशौनकोक्तांभुवनेश्वरीशांतिंग्रंथांतरोक्तां वाशांतिंविधायगर्भाधानंकार्यं सूर्यग्रहेरजोदर्शनेहैमंसूर्यबिंबंतन्नक्षत्ररूपंसीसेनराहुंचकृत्वा संपूज्यार्कसमिद्भिःसूर्यंनक्षत्रेशंप्लक्षैराहुं दूर्वाभिर्हुत्वाज्यचरुतिलैश्चजुहुयात् चंद्रग्रहेराजतंचंद्रबिंबंपालाश्यश्चसमिधइतिविशेषः ग्रहणव्यतीपातादिबहुतरदोषेरजोदर्शनेतुद्वितीयादिरजोदर्शनेशांतिपूर्वकंगर्भाधानंकार्यम् गर्भाधानेगुरुशुक्रास्ताधिकमासादिदोषोनास्तियदितुप्रथमरजोदर्शनेशांतिर्नकृताद्वितीयादिरजोदर्शने शुक्रास्तादिदोषप्रसक्तिस्तदानिमित्तानंतरमेवयत्रनैमित्तिकानुष्ठानंतत्रास्तादिदोषाभावोमुख्यकालातिक्रमेतुअस्तादिदोषोस्त्येवेतिसामान्यनिर्णयानुसारेणऋतुशांतिरस्तादौनकार्या तदनुरोधेनगर्भाधानंचकार्यमितिभाति शांतिश्चसग्रहमखैव कार्या शांतौभुवनेश्वरीप्रधानदेवता इंद्रेंद्राण्यौपार्श्वदेवते एवंकलशत्रयेपिप्रतिमात्रयस्थापनं ग्रहाणामर्कादिसमिधश्चरुराज्यंचद्रव्यं प्रधानदेवतायादूर्वास्तिलमिश्रगोधूमाः पायसंआज्यंचेतिहविश्चतुष्टयं एवंपार्श्वदेवतयोरपि पायसस्यस्थंडिलाग्नौश्रपणमेवकार्यं नतुगृहसिद्धस्यग्रहणं ग्रहहोमार्थंगृहसिद्धचरुः पात्रासादनकालेपायसश्रपणार्थमेकास्थालीगृहसिद्धान्नसंस्कारार्थमपरेतिस्थालीद्वयं अनेककर्तृकाज्यहोमप्रसक्तावनेकस्रुवासादनंआज्येनसहहविर्द्वयस्यगृहसिद्धान्नस्यचपर्यग्निकरणं स्रुवादिसंमार्गांतेगृहसिद्धान्नमासादितचरुस्थाल्यामादायाग्नावधिश्रित्याभिघारणादिबर्हिरासादनांतंकुर्यात् ततःपायसाभिघारणाद्यासादनांतं अन्वाधानेहवि

स्त्यागेचप्रधानदेवतायाभुवनेश्वरीपदेनसवितृपदेनवोच्चारः गायत्र्याहोमोक्तेःआज्यभागांतेयजमानोन्वाधानानुसारेणप्रतिदैवतमष्टाविंशत्याहुतिपर्याप्तमर्कादिजातीयसमिच्चार्वाज्यात्मकंहविस्त्रयंसूर्यायसोमायभौमायबुधायबृहस्पतये शुक्रायशनयेराहवेकेतवेनममअष्टाष्टसंख्यापर्याप्तंहविस्त्रयंतत्तदधिदेवताप्रत्यधिदेवताभ्योनमम चतुश्चतुःसंख्यापर्याप्तंतद्धविस्त्रयंविनायकादिभ्यःक्रतुसंरक्षकक्रतुसाद्गुण्यदेवताभ्योनमम अष्टोत्तरशतसंख्याकाहुतिपर्याप्तंदूर्वातिलगोधूमपायसाज्येतिहविश्चतुष्टयंभुवनेश्वर्यैनमम यद्वासवित्रेनमम एवमष्टाविंशतिसंख्यापर्याप्तंतच्चतुष्टयमिंद्रेंद्राणीभ्यांनममेतित्यागंकुर्यात् बहुतरदोषेऽष्टोत्तरसहस्रसंख्याकोहोमोभुवनेश्वर्याइंद्रेंद्राण्योरष्टोत्तरशतसंख्याकः इंद्रेंद्राण्योर्होमःकृताकृतः होमांतेग्रहादिबलयःभुवनेश्वर्यादिबलयोऽभिषेकश्चेतिसंक्षेपः समंत्रकःसविस्तरःप्रयोगःस्वस्वशाखीयानुसारेणज्ञेयः संकल्पः स्वस्तिवाग्विप्रवरणंभूतनिःसृतिःपंचगव्यैर्भूमिशुद्धिर्मुख्यदेवतपूजनम् १ अग्निप्रतिष्ठासूर्यादिग्रहस्थापनपूजनं देवतान्वाहितिःपात्रासादनंहविषाकृतिः २ यथाक्रमंत्यागहोमावितिपौर्वांगकःक्रमः पूजास्विष्टंनवाहुत्याबलिःपूर्णाहुतिस्तथा ३ पूर्णपात्रविमोकाद्यग्न्यर्चनांतेभिषेचनं मानस्तोकेतिभूतिश्चदेवपूजाविसर्जने ४ श्रेयोग्रहोदक्षिणादिदानंकर्मेश्वरार्पणं क्रमोयमुत्तरांगानांप्रायःस्मार्तेष्वितिस्थितिः ५ एवंमदनरत्नोक्ताबौधायनोक्ताचशांतिःकौस्तुभेद्रष्टव्या प्राग्रजोदर्शनात्पत्नीगमनेब्रह्महत्यादोषोक्तेः किंचित् प्रायश्चित्तं विधेयमितिभाति ऋतौतुगमनमावश्यकंअन्यथाभ्रूणहत्यादोषः अयंचमनसिकामेसतिद्वेषादिनास्त्रियमनुपगच्छतोज्ञेयः विरक्तस्यनकोपिदोषइति श्रीभागवतेलोकेव्यवायेतिपद्येटीकायांचस्पष्टं ऋतुकालस्तुरजोदर्शनमारभ्यषोडशदिनपर्यंतंज्ञेयः तत्रप्रथमदिनचतुष्टयैकादशत्रयोदशदिनेषुगमनंवर्ज्यंअवशिष्टदशदिनेषुपुत्रार्थिनासमदिनेकन्यार्थिनाविषमदिनेगमनंकार्यं तत्राप्युत्तरोत्तररात्रीणांप्राशस्त्यं एकस्यांरात्रौसकृदेवगमनंकार्यंसकृद्गमनंचयुग्मासुसर्वासुआवश्यकमितिकेचित् अन्यकालेप्रतिबंधादिगमनासंभवेश्राद्धैकादश्यादिदिनेपिऋतुगमनंकार्यमितिकेचित् स्त्रीणांवरमनुस्मरन् पत्नीच्छयानृतावपिगच्छन्नदोषभाक्किंतुब्रह्मचर्यहानिमात्रं ऋतौगच्छतियोभार्यामनृतौनैवगच्छति यावज्जीवंब्रह्मचारीमुनिभिःपरिकीर्तितः अष्टमीचतुर्दशीपौर्णिमाऽमावास्यासूर्यसंक्रांतिवैधृतिव्यतीपातपरिघपूर्वदलविष्टिसंध्यासुमातापित्रोर्मृतदिनेश्राद्धतत्प्राग्दिनेजन्मनक्षत्रेदिवाचस्त्रीगमनंवर्ज्यं ॥

जो ज्वर आदिसें व्याकुल हुई स्त्री चौथे दिन स्नान करनेकों समर्थ नहीं होवै तौ तिस रजस्वला स्त्रीकों दूसरी नारी अथवा नरनें दशवार स्पर्श करके प्रतिस्पर्शकों स्नान करके आचमन करना. स्नानस्नानकेप्रति रोगीकों अन्य अन्य वस्त्र धारण कराना, और अंतमें छूहे हुये सब वस्त्रोंकों त्यागना. अंतमें नीला वस्त्र आदिके व्यवधान करके शुद्ध वस्त्र ग्रहणके अंतमें ब्राह्मणभोजन और पुण्याहवाचनसें शुद्धि होती है. इस प्रकार सब रोगियोंकी शुद्धि होती है. ऐसेही शुद्धिके अंतमें शुभ दिनविषे दुष्टरजोदर्शनके फलकी निवृत्तिके लिये शांति करके शौनकमुनिनें कही हुई ऐसी भुवनेश्वरीशांति अथवा अन्य ग्रंथमें कही हुई शांति करके गर्भाधान करना. ग्रहणमें रजका दर्शन होवै तौ सोनाकरके सूर्यके बिंबकों और तिस दिनके नक्षत्रके रूपकों वनाय और सीसाकी राहुकी मूर्ति बनाय अच्छी तरह पूजा करके पीछे

आककी समिधोंसें सूर्यका और पिलषणकी समिधोसें चंद्रमाका और दूर्वासें राहुका होम करके पीछे घृत, चरु और तिल इन्होंकरके हवन करना. चंद्रग्रहणमें रजका दर्शन होवै तौ चांदीसें चंद्रमाके बिंबकों बनाय पलाशकी समिधोंसें होम करना यह विशेष है. ग्रहण और व्यतीपात आदि बहुतसे दोषोंमें प्रथम रजका दर्शन होवै तौ दूसरे आदि रजके दर्शनमें शांतिपूर्वक गर्भाधान करना. गर्भाधानमें बृहस्पति और शुक्रका अस्त तथा अधिकमास आदिका दोष नहीं है. जो प्रथम रजके दर्शनमें शांति नहीं करी होवै और दूसरे आदि रजके दर्शनमें गुरु, शुक्र आदिका अस्त प्राप्त होवै तौ अस्तके अनंतर गर्भाधान करना. क्योंकी, निमित्तकी प्राप्तिमें जहां तत्प्रयुक्त अनुष्ठान करते हैं सो मुख्यकाल होनेसें तिसविषे अस्तादिकका दोष नहीं है. मुख्यकालके अतिक्रममें अस्त आदिका दोष होताही है, ऐसे सामान्य निर्णयके अनुसार रजोदर्शनकी शांति अस्त आदिमें नहीं करनी. और शांति नहीं करनी इसवास्ते गर्भाधानभी नहीं करना ऐसा मुझकों प्रतिभान होता है. शांति करनी सो ग्रहयज्ञसहित करनी उचित है. शांतिविषे भुवनेश्वरी प्रधानदेवता है, इंद्र और इंद्राणी ये दोनों पार्श्वदेवता हैं. इन तीन प्रतिमाओंकों तीन कलशोंपर स्थापित करना. आक आदिकी समिध, चरु, घृत ये द्रव्य ग्रहोंके हैं और प्रधानदेवताके दूर्वा, तिलोंसें मिले हुये गेहूं, खीर और घृत ये चार द्रव्य हैं. इसी प्रकार पार्श्वदेवताओंकेभी यह द्रव्य जानने. दूधकी खीर स्थंडिलसंबंधी अग्निपर पकाना. घरके अग्निसें सिद्ध हुई खीर नहीं ग्रहण करनी. ग्रहोंके होमके अर्थ घरमें सिद्ध किया चरु लेना. पात्रोंका स्थापन करनेके समय खीर पकानेके लिये एक स्थाली और घरमें सिद्ध किये अन्नके संस्कारके अर्थ दूसरी स्थाली इस प्रकार दो स्थाली लेनी. घृतका होम करनेवाले बहुत होवैं तौ बहुतसे स्रुवपात्र स्थापित करने. घृतके संग वर्तमान तीन होमके द्रव्य और घरमें सिद्ध किया चरु इन चार द्रव्योंकों अग्निसंस्कार करना. स्रुव आदि पात्रका संस्कार हो चुकै तब घरमें सिद्ध किये चरुकों प्रथम स्थापित कियी स्थालीमें डालके और अग्निपर स्थापित करके सिजाय और घृतसें संस्कार करके कुशाओंके आसादनपर्यंत कर्म करना. पीछे खीरमें घृतका संस्कार करनेसें आसादनपर्यंत कर्म करना. अन्वाधानविषे और घृतके त्यागविषे प्रधानदेवताका **‘भुवनेश्वरी’** इस पदकरके अथवा **‘सवितृ’** पदकरकें उच्चार करना. क्योंकी, गायत्रीमंत्रकरके होम करनेकों कहा है. आज्यभागके अंतमें यजमाननें अन्वाधानके अनुसार करके त्यागका उच्चार करना. सो ऐसा—**“प्रतिदैवतमष्टाविंशत्याहुतिपर्याप्तमर्कादिजातीयसमिच्चर्वाज्यात्मकं हविस्त्रयं सूर्याय सोमाय भौमाय बुधाय बृहस्पतये शुक्राय शनये राहवे केतवे नमम ॥ अष्टाष्टसंख्यापर्याप्तं हविस्त्रयं तत्तदधिदेवताप्रत्यधिदेवताभ्यो नमम ॥ चतुश्चतुःसंख्यापर्याप्तं तद्धविस्त्रयं विनायकादिभ्यः क्रतुसंरक्षकक्रतुसाद्गुण्यदेवताभ्यो नमम ॥ अष्टोत्तरशतसंख्याहुतिपर्याप्तं दूर्वातिलमिश्रगोधूमपायसाज्येतिहविश्चतुष्टयं भुवनेश्वर्यै नमम ॥ अथवा सवित्रे नमम ॥ अष्टाविंशतिसंख्यापर्याप्तंतच्चतुष्टयमिंद्रेंद्राणीभ्यां नमम”** इस प्रकार त्याग करना. ऋतुसमयमें बहुतसे दोषोंमें १००८ आहुतियोंसें होम करना. भुवनेश्वरीका इंद्र और इंद्राणीके अर्थ १०८ आहुतियोंसें होम करना. इंद्र और इंद्राणीका होम करना अथवा नहीं करना. होमके अंतमें ग्रह आदिकोंके अर्थ बलिदान और भुवनेश्वरी आदिके

अर्थ बलिदान देके अभिषेक करना. इस प्रकार संक्षेप है. मंत्रोंसहित और विस्तारसहित ऐसा प्रयोग अपनी अपनी शाखाके अनुसार जानना. "संकल्प, पुण्याहवाचन, ब्राह्मणवरण, भूतोंका निकासना, पंचगव्यसें पृथिवीकों शुद्ध करना, प्रधानदेवताकी पूजा, अग्निकों स्थापन करना, सूर्य आदि नव ग्रहोंका स्थापन और पूजा करनी, देवतोंका अन्वाधान, पात्रासादन, होमके द्रव्य सिद्ध करने, जैसा क्रम होवै तिसके अनुसार होम और त्याग करना, इस प्रकार पौर्वांगक कर्म है. पूजा, स्विष्टकृत, प्रायश्चित्तादि होमशेष, बलिदान, पूर्णाहुति, पूर्णपात्रनिनयन, परिस्तरणविसर्जन आदि, अग्निपूजा, अभिषेक, "**मानस्तोके०**" इस मंत्रसें विभूतिधारण, देवताकी पूजा और विसर्जन, श्रेयोग्रहण, दक्षिणा आदि देना, कर्म ईश्वरके अर्थ समर्पण करना इस प्रकार उत्तरोत्तर क्रम है. यह सब प्रायशःकरके स्मार्त मनुष्योंकी स्थिति है." इसी प्रकार **मदनरत्नकी** कही और **बौधायनकी** कही शांति **कौस्तुभ ग्रंथमें** देखनी. प्रथमरजके दर्शनके पहले स्त्रीसें भोग करनेमें ब्रह्महत्यादोष लगता है ऐसा वचन है, इस लिये कछुक प्रायश्चित्त करना ऐसा मुझकों प्रतिभान होता है. ऋतुकालके समय तौ भोग करना अवश्यक है. ऋतुकालमें भोग करनेमें भ्रूणहत्यादोष नहीं लगता है. यह भ्रूणहत्यादोष मनमें कामदेव उपजै और वैर आदिकरके स्त्रीके समीप जावै नहीं तब लगता है. विरक्त मनुष्यकों कोईभी दोष नहीं लगता है ऐसा **श्रीमद्भागवतके** एकादशस्कंधमें "**लोकेव्यवाया०**" इस श्लोककी टीकामें स्पष्ट किया है. जिस दिनमें रजका दर्शन होवै तिस दिनसें आरंभ करके सोलह दिनपर्यंत ऋतुकाल जानना. तहां पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, ग्यारमा, तेरमा इन दिनोंमें स्त्रीसें भोग करना वर्जित है. बाकी रहे दश दिनोंमें पुत्रकी इच्छावाले पुरुषनें सम अर्थात् पूरे दिनोंमें और कन्याकी इच्छावाले पुरुषनें विषम अर्थात् ऊरे दिनोंमें स्त्रीसें भोग करना. तहांभी उत्तरोत्तरकी रात्रि प्रशस्त हैं. एकरात्रिमें एकहीवार स्त्रीसें भोग करना, और एकवार भोग करनाभी युग्म अर्थात् पूरी रात्रियोंमें आवश्यक है, इस प्रकार कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. अन्य कालमें प्रतिबंध आदिकरके स्त्रीसें भोग नहीं हो सकै तौ श्राद्ध और एकादशी आदिके दिनमेंभी ऋतुकालसंबंधी भोग करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. स्त्रियोंके कामका नाश करनेवाला पापी होवैगा इस वरका स्मरण करता हुआ पुरुष स्त्रीकी इच्छासें ऋतुकालसें दूसरे कालमेंभी भोग करनेसें दोषभागी नहीं होता है; किंतु ब्रह्मचर्यकी मात्र हानि होती है. "जो पुरुष ऋतुकालमें स्त्रीसें भोग करता है और दूसरे कालमें नहीं भोग करता वह जबतक जीता है तबतक मुनियोंनें ब्रह्मचारी कहा है." अष्टमी, चतुर्दशी, पौर्णमासी, अमावस, सूर्यसंक्रांति, वैधृति, व्यतीपात, परिघका पूर्वभाग, भद्रा, संध्या इन्होंमें, माता और पिताके मृतदिनमें, श्राद्धके दिनमें और श्राद्धके पहले दिनमें और जन्मनक्षत्रमें और दिनमें स्त्रीसें भोग करना वर्जित है.

अथगर्भाधानकालः चतुर्थीषष्ठीचतुर्दश्यष्टमीपंचदशीरहिताःतिथयःप्रशस्ताः चंद्रबुधगुरुशुक्रवाराःशुभाः मूलमघारेवतीज्येष्ठानक्षत्राणिवर्ज्यानि भरणीकृत्तिकार्द्राश्लेषापूर्वात्रयविशाखामध्यमानि शेषाणिशुभानि सर्वकार्येषुगोचरेचंद्रबलमावश्यकं तद्यथा चंद्रोन्नमध

नंसौख्यंरोगंकार्यक्षतिंश्रियं स्त्रियंमृत्युंनृपभयंसुखमायंव्ययंक्रमात् १ स्थानेषुद्वादशस्वैतज्जन्मराशेःप्रयच्छति शुक्लपक्षेशशीश्रेष्ठोद्विपंचनवमेष्वपि २ अनेकभार्यस्यऋतुयौगपद्येविवाहक्रमेणऋतुप्राप्तिक्रमेणवागर्भाधानं ऋतावप्यगमनेदोषापवादः व्याधितोबंधनस्थोवाप्रवासेष्वथपर्वसु वृद्धांवंध्यामसद्वृत्तांमृतापत्यामपुष्पिणीं कन्यासूंबहुपुत्रांचअगच्छन्नैवदोषभाक् ॥

अब गर्भाधानका काल कहताहुं.

चतुर्थी, षष्ठी, चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस, पौर्णमासी इन्होंसें वर्जित तिथि श्रेष्ठ हैं. सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये वार शुभ हैं. मूल, मघा, रेवती, ज्येष्ठा ये नक्षत्र वर्जित हैं. भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, विशाखा ये नक्षत्र मध्यम हैं. इन सबोंसें बाकी रहे नक्षत्र शुभ हैं. सब कार्योंमें गोचरविषे चंद्रमाका बल आवश्यक है. सो दिखाते हैं—“अन्नका लाभ, धनका नाश, सुख, रोग, कार्यका नाश, धनलाभ, स्त्रीका लाभ, मृत्यु, राजभय, सुख, धनलाभ और धननाश इस प्रकार क्रमसें अपने जन्मकी राशिसें बारह स्थानोंपर इन फलोंकों चंद्रमा देता है. शुक्लपक्षमें दूसरा, नवमा और पांचमाभी चंद्रमा श्रेष्ठ है. जिसकों अनेक स्त्री होके तिन स्त्रियोंकों एकही समयमें ऋतुकी प्राप्ति होवै तौ उसनें विवाहक्रमकरके अथवा ऋतुकालकी प्रातिके क्रमकरके गर्भाधान करना. ऋतुकालमें भोग नहीं करनेसें दोष नहीं लगता है. सो कहताहुं—“व्याधिमें स्थित हुआ, बंधनमें स्थित हुआ पुरुष, परदेशमें गया हुआ पुरुष और पर्वकालोंमें” ऐसे समयमें स्त्रीसें भोग न करनेसें दोष नहीं लगता है—“वृद्धा, वंध्या, व्यभिचारिणी, मृत हुये संतानवाली, ऋतुकालकों नहीं प्राप्त होनेवाली, कन्याओंकों जन्मानेवाली और बहुतसे पुत्रोंवाली ऐसी स्त्रियोंसें भोग न करनेमें दोषभागी नहीं होता है.

तत्रप्रथमर्तुगमनंगर्भाधानहोमंगृह्याग्नौकृत्वाकार्यं द्वितीयादिकऋतुगमनेचनहोमादिकं येषांसूत्रेहोमोनोक्तस्तैर्होमवर्ज्यमंत्रपाठादिरूपोगर्भाधानसंस्कारः प्रथमगमनेकार्यःआहिताग्नेर्धाधानिनोऽनाहिताग्नेश्चौपासनाग्निसिद्धिसत्त्वेतत्रैवहोमः औपासनाग्निविच्छेदेद्वादशदिनपर्यंतमयाश्चेत्याज्याहुत्याततऊर्ध्वंप्रायश्चित्तपूर्वकंपुनःसंधानविधिनाग्निमुत्पाद्यतत्रकार्यः तत्रप्रत्यब्दंप्राजापत्यकृच्छ्रप्रायश्चित्तं तत्रेत्थंसंकल्पः ममगृह्याग्निविच्छेददिनादारभ्यैतावंतंकालंगृह्याग्निविच्छेदजनितदोषपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गृह्याग्निविच्छेददिनादारभ्यैतावदब्दपर्यंतं प्रत्यब्दमेकैककृच्छ्रान्यथाशक्तितत्प्रत्याम्नायगोनिष्कयीभूतरजतनिष्कनिष्कार्धनिष्कपादनिष्कपादार्धान्यतमद्रव्यदानेनाहमाचरिष्ये तथाएतावद्दिनेषुगृह्याग्निविच्छेदेनलुप्तसायंप्रातरौपासनहोमद्रव्यं लुप्तदर्शपौर्णमासस्थालीपाकादिकर्मपर्याप्तव्रीह्याद्याज्यद्रव्यंचतन्निष्कयंवा दातुमहमुत्सृजे कृच्छ्रप्रत्याम्नायांतरचिकीर्षायांतथोहःकार्यः अशीतिगुंजात्मकोनिष्कपादः अयंचतुर्गुणितोनिष्कः एवंसंकल्प्य विच्छिन्नस्यगृह्याग्नेःपुनःसंधानंकरिष्यइतिसंकल्पपूर्वकं स्वस्वसूत्रानुसारेणगृह्याग्निंसंसाधयेत् सर्वाधानिनापिएवमेवपुनःसंधानेनगृह्याग्निमुत्पाद्यगर्भाधानपुंसवनादिहोमःकार्यः तत्रकृच्छ्रसंकल्पोहोमादिद्रव्यदानसंकल्पश्चनकार्यः गर्भाधानहोमंकर्तुंगृह्यपुनःसंधानंकरिष्येइत्येसंकल्पः गर्भाधानांतेऽग्नित्यागः अर्धाधानिनामपिपक्षद्वयं

गृह्याग्नौसायंप्रातर्होमःस्थालीपाकाःकार्याइत्येकः गृह्याग्निःकेवलंसंरक्ष्योनतुतत्रहोमादिकार्यमित्यपरःआद्यपक्षेपूर्वोक्तहोमादिद्रव्यदानंकार्यं होमाद्यकरणपक्षेप्रायश्चित्तमात्रंकार्यं नतुद्रव्यदानं द्विभार्यस्याग्निद्वयसंसर्गात्पूर्वमुभयाग्न्यनुगतौ उभयविच्छेददिनादब्दगणनयापृथक्पृथक्कृच्छ्रप्रायश्चित्तंपृथक्पृथक्होमद्रव्यदानंस्थालीपाकद्रव्यदानंचकृत्वा पुनःसंधानद्वयेनाग्निद्वयमुत्पाद्याग्निद्वयसंसर्गंविधायतत्रगर्भाधानहोमः अग्निद्वयसंसर्गात्पूर्वंएकाग्न्यनुगतौतन्मात्रप्रायश्चित्तंतद्धोमद्रव्यमात्रदानंचकार्यं नतुस्थालीपाकद्रव्यदानं भार्यांतरस्यासन्निधानेयस्यां गर्भाधानंतदग्निविच्छेदप्रायश्चित्तादिनागृह्यमुत्पाद्यतत्रहोमः सर्वत्रपुनःसंधानेस्थालीपाकानारंभेस्थालीपाकादिद्रव्यदानंकृताकृतं एवंयथायथंगृह्याग्निसिद्धिंकृत्वाममास्यांभार्यायांसंस्कारातिशयद्वाराऽस्यांजनिष्यमाणसर्वगर्भाणांबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गर्भाधानाख्यंकर्मकरिष्ये तदंगत्वेनस्वस्तिवाचनेत्यादिसंकल्प्य पुण्याहवाचनमातृकापूजननांदीश्राद्धादिकृत्वायथागृह्यंगर्भाधानसंस्कारःकार्यः अत्रगर्भाधानकर्मणोब्रह्मदेवताकत्वात्पुण्याहवाचनांतेकर्मांगदेवताब्रह्माप्रीयतामितिवदेत् औपासनांगेस्वस्तिवाचनेअग्निसूर्यप्रजापतयःप्रीयंतां स्थालीपाकारंभेअग्निःप्रीयतामिति एवमन्यत्रग्रंथांतरादूह्यं ॥

तहां गृह्याग्निमें गर्भाधानहोम करके प्रथम ऋतुकालमें स्त्रीसें भोग करना. दूसरे वार आनेवाले आदि ऋतुकालमें होम आदि नहीं करना. जिन्होंके सूत्रमें होम नहीं कहा है तिन्होंनें होमसें वर्जित मंत्रपाठ आदिरूपी ऐसा गर्भाधानसंस्कार प्रथम भोगमें करना. अर्धाधानी[1] और अनाहिताग्नि[2] अग्निहोत्रीयोंनें गृह्याग्नि सिद्ध होवै तौ तिसमेंही गर्भाधानका होम करना. बारह दिनपर्यंत औपासन अग्निका नाश हो जावै तौ "अयाश्चा०" इस मंत्रसें घृतकी आहुतियोंकों देके प्रायश्चित्त करना. अग्निका नाश होके बारहसें अधिक दिन हुए होवैं तौ पहले प्रायश्चित्त करके फिर पुनःसंधानविधिकरके अग्निकों उत्पन्न करके तिस अग्निमें गर्भाधानहोम करना. प्रायश्चित्त करनेका सो प्रतिवर्ष प्राजापत्यकृच्छ्र प्रायश्चित्त करना. तहां इस प्रकार संकल्प करना—"मम गृह्याग्निविच्छेददिनादारभ्यैतावंतं कालं गृह्याग्निविच्छेदजनितदोषपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गृह्याग्निविच्छेददिनादारभ्यैतावदब्दपर्यंतं प्रत्यब्दमेकैककृच्छ्रान् यथाशक्ति तत्प्रत्याम्नायगोनिष्क्रयीभूतरजतनिष्कनिष्कार्धनिष्कपाद-निष्कपादार्धान्यतमद्रव्यदानेनाहमाचरिष्ये। तथा एतावद्दिनेषु गृह्याग्निविच्छेदेन लुप्तसायंप्रातरौपासनहोमद्रव्यं लुप्तदर्शपौर्णमासस्थालीपाकादिकर्मपर्याप्तव्रीह्याद्याज्यद्रव्यं च तन्निष्क्रयं वा दातुमहमुत्सृजे." कृच्छ्रकी जगह दूसरा प्रत्याम्नाय करनेकी इच्छा होवै तौ तैसाही उच्चार करना उचित है. अश्शी चिरमठियोंका निष्कपाद होता है. इस्सें चतुर्गुना निष्क होता है. इस प्रकार संकल्प करके पीछे "विच्छिन्नस्य गृह्याग्नेः पुनःसंधानं करिष्ये" इस प्रकार संकल्प करके अपने अपने सूत्रके अनुसार गृह्याग्निकों अच्छीतरह सिद्ध करना. सर्वाधानीसंज्ञक[3] अग्निहोत्रीनेंभी ऐसाही पुनःसंधान करके गृह्याग्निकों उत्पन्न करके गर्भाधान और पुंसवनादि होम करना उचित है. सर्वाधानीनें कृच्छ्रका संकल्प और होम आदि द्र-

---

१ गृह्याग्निसें युक्त हुए अग्निहोत्रीकों अर्धाधानी कहते हैं. २ स्मार्ताग्निसें युक्त हुए अग्निहोत्रीकों अनाहिताग्नि कहते हैं. २ अग्निहोत्री होके गृह्याग्निसें रहित होवै तिसकों सर्वाधानी कहते हैं.

व्यके दानका संकल्प नहीं करना. किंतु **"गर्भाधानहोमं कर्तुं गृह्यपुनःसंधानं करिष्ये"** इसही प्रकार संकल्प करना. गर्भाधानके अंतमें अग्निका त्याग करना. गर्भाधानवालोंकेभी दो पक्ष हैं. गृह्याग्निमें सायंप्रातर्होम और स्थालीपाक आदि करना यह **एक पक्ष** हुआ. केवल गृह्याग्निकी रक्षा करनी और तिसमें होम आदि नहीं करना यह **दूसरा पक्ष** है. आद्य पक्षमें पूर्वोक्त होम आदि द्रव्यका दान करना. होम आदि नहीं करना होवै तौ प्रायश्चित्त मात्र करना. होमादिकके द्रव्यका दान नहीं करना. दो स्त्रीवाले पुरुषनें दोनों अग्निके संसर्गके पहले दोनों अग्नि नष्ट होवैं तौ उभयविच्छेददिनसें वर्षोंकी गिनती करके पृथक् पृथक् कृच्छ्रप्रायश्चित्त और पृथक् पृथक् होमके द्रव्यका दान और स्थालीपाकद्रव्यका दान इन्होंकों करके फिर दो पुनःसंधान करके दो दो अग्नि उत्पन्न करने. पीछे दोनों अग्नियोंका संसर्ग करके तहां गर्भाधानहोम करना. दोनों अग्नियोंके संसर्गके पहले एक अग्नि नष्ट हो जावै तौ तिसका प्रायश्चित्त और तिसके होमके द्रव्यका दान करना उचित है. स्थालीपाकके द्रव्यका दान नहीं करना. दूसरी भार्या समीप नहीं होवै तौ जिस स्त्रीका गर्भाधान करना होवै तिसके अग्निके नाशका प्रायश्चित्त आदि करके पुनःसंधानविधिसें अग्नि उत्पन्न करके तिसमें गर्भाधानका होम करना. स्थालीपाकका आरंभ नहीं हुआ होवै तौ सब जगह पुनःसंधानसमयमें स्थालीपाक आदिके द्रव्यका दान करना अथवा नहीं करना. इस प्रकार यथायोग्य गृह्याग्निकी सिद्धि करके **"ममास्यां भार्यायां संस्कारातिशयद्वारास्यां जनिष्यमाणसर्वगर्भाणां बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गर्भाधानाख्यं कर्म करिष्ये, तदंगत्वेन स्वस्तिवाचनम्०** " ऐसा संकल्प करके पुण्याहवाचन, मातृकापूजन और नांदीश्राद्ध इन आदि करके अपने अपने गृह्यसूत्रके अनुसार गर्भाधानका संस्कार करना. यह गर्भाधानकर्मकी देवता ब्रह्मा है इस लिये पुण्याहवाचनके अंतमें **"कर्मांगदेवता ब्रह्मा प्रीयताम्"** इस प्रकार उच्चार करना. औपासनांगरूपी स्वस्तिवाचनमें, **"अग्निसूर्यप्रजापतयः प्रीयंताम्"** इस प्रकार उच्चार करना. स्थालीपाकके आरंभमें **"अग्निः प्रीयताम्"** इस प्रकार उच्चार करना. ऐसेही अन्य जगहभी उच्चार करनेका सो दूसरे ग्रंथमें देख लेना.

अथनांदीश्राद्धविचारः गौर्यादिमातृकापूजनंनांदीश्राद्धांगं यत्रनांदीश्राद्धंनक्रियतेतत्रमातृकापूजनमपिनकार्यं तत्र पूर्वंमातृपार्वणंततःपितृपार्वणंततःसपत्नीकमातामहपार्वणंइतिपार्वणत्रयात्मकंनांदीश्राद्धं मातृजीवने सपत्नमातृमरणेपिनमातृपार्वणं एवंमातामह्याजीवनेमातामहीसपत्न्यामरणेपिनमातामहादेःसपत्नीकत्वं एवंदर्शादावपिमातृजीवनेसपत्नमातृमरणेपिनसपत्नीकत्वंपित्रादेः अत्रस्वधाशब्दस्थानेस्वाहाशब्दः सव्येनैवसर्वाःक्रियाःप्रतिपार्वणंदैवेचयुग्माब्राह्मणाः कुशस्थानेदूर्वाःविवाहादिमंगलकर्मांगेवृद्धिश्राद्धे यज्ञादिकर्मांगेतुअमूलादर्भाग्राह्याः दूर्वादर्भाश्चयुग्माएव उदङ्मुखःकर्ताप्राङ्मुखाविप्राःप्राङ्मुखोवाकर्ताउदङ्मुखाविप्राःपूर्वाह्णकालःप्रदक्षिणंकर्म आधानांगत्वमपराह्णेकार्यं पुत्रजन्मनिमित्तकंरात्रावपि एवंचविश्वेदेवार्थविप्रसहिताअष्टौविप्राअत्यशक्तौचत्वारोवा वृद्धिश्राद्धेविश्वेदेवाः सत्यवसुसंज्ञकाः सोमयागगर्भाधानपुंसवनसीमंतोन्नयनाधानादिकर्मांगत्वेनवृद्धिश्राद्धेक्रतुदक्षसंज्ञकाः गर्भाधा

नादिसंस्कारेषुवापीदेवप्रतिष्ठादिपूर्तकर्मसुअपूर्वाधानादिषुसन्यासस्वीकारेकाम्यवृषोत्सर्गेगृहप्रवेशेतीर्थयात्रायां श्रवणाकर्मसर्पबल्याश्वयुजाग्रयणादिपाकसंस्थानांप्रथमारंभेनांदीश्राद्धमावश्यकं पुनराधानेसोमयागादिभिन्नेअसकृत्क्रियमाणेकर्मणिअष्टकादिश्राद्धकर्मसुचनांदीश्राद्धंनकार्यं गर्भाधानपुंसवनसीमंतचौलमौंजीविवाहातिरिक्तसंस्कारेषुश्रवणाकर्मादिषुचनांदीश्राद्धंवैकल्पिकं जातकर्मांगंपुत्रजन्मनिमित्तकंचनांदीश्राद्धंपृथगेव जन्मकालेएवजातकर्मणिक्रियमाणेपुत्रजन्मनिमित्तकंजातकर्मांगंचवृद्धिश्राद्धंतंत्रेणकरिष्ये इतिसंकल्प्यसकृदेवकार्यं नामकर्मणासहजातकर्मचिकीर्षायांपुत्रजन्मनिमित्तंजन्मकालेएवहेम्नाकृत्वाकर्मांगं नामकर्मकालेकार्यं तदातदकरणेनामकर्मकालेएवपुत्रजन्मनिमित्तकंजातकर्मनामकर्मांगंचनांदीश्राद्धंतंत्रेणकरिष्यइतिसंकल्प्यैकमेवकार्यं एवंचौलादिकर्मणासहजातकर्मादिषुक्रियमाणेषुपुत्रजन्मनिमित्तकंचौलांतसंस्कारांगंचनांदीश्राद्धंतंत्रेणकरिष्य इतिसंकल्पः तथाचसहैवक्रियमाणेषुचौलादिष्वन्येषुचकर्मसुनांदीश्राद्धस्यसकृदेवानुष्ठानंनतुप्रतिकर्मपृथगनुष्ठानम् एवंयमलयोर्युगपदेकसंस्कारकरणेपिज्ञेयं ऋक्शाखिभिःकात्यायनैश्चपितृपितामहप्रपितामहाइतिपितृपूर्वकउच्चारःकार्यःअन्यशाखिभिस्तुप्रपितामहपितामहपितरोनांदीमुखाइतिप्रपितामहपूर्वकउच्चारःमातृपार्वणेनांदीमुखशब्देङीष्विकल्पान्नांदीमुख्यइतिनांदीमुखाइतिपक्षद्वयमुच्चारेअनादिसंज्ञात्वेननखमुखात्संज्ञायामितिनिषेधानवतारादितिपुरुषार्थचिंतामणिकारः ॥

अब नांदीश्राद्धका निर्णय कहताहुं.

गौरी आदि मातृकापूजन नांदीश्राद्धका अंग होता है. जहां नांदीश्राद्ध नहीं किया जाता है तहां मातृकापूजनभी नहीं करना. नांदीश्राद्धमें पहले मातृपार्वण करना, पीछे पितृपार्वण करना, पीछे पत्नियोंसहित मातामहपार्वण करना. इस प्रकार तीन पार्वणोंवाला नांदीश्राद्ध होता है. माता जीवती होवै और सापत्नमाता मर गई होवै तबभी मातृपार्वण नहीं होता है. ऐसेही मातामही अर्थात् नानी जीवती होवै और सापत्नमातामही मर गई होवै तबभी मातामह आदिकों सपत्नीकपना नहीं होता है. ऐसेही दर्श आदि श्राद्धमेंभी माता जीवती होवै और सापत्नमाता मर गई होवै तौभी पिता आदिभी सपत्नीक नहीं होते हैं. नांदीश्राद्धमें 'स्वधा' शब्दके स्थानमें 'स्वाहा' शब्द कहना, और सव्य होके सब क्रिया करनी. पार्वणपार्वणके प्रति और दैवपार्वणमें युग्म अर्थात् दो दो ब्राह्मण लेने. विवाहादि मंगलकार्यके अंगभूत नांदीश्राद्ध होवै तौ कुशके स्थानमें दूर्वा लेनी. यज्ञ आदिके कर्मांगभूत नांदीश्राद्धमें मूलसें वर्जित कुश लेने. दूर्वा और कुश दो दो लेने. उत्तरके तर्फ मुखवाला यजमान और पूर्वके तर्फ मुखवाले ब्राह्मण होने चाहिये अथवा पूर्वके तर्फ मुखवाला यजमान और उत्तरके तर्फ मुखवाले ब्राह्मण होने चाहिये. पूर्वाण्हकाल होना चाहिये. सब कर्म प्रदक्षिण होना चाहिये. आधानका अंगभूत नांदीश्राद्ध अपराण्हकालमें करना. पुत्रजन्मनिमित्तक नांदीश्राद्ध रात्रिमेंभी करना. सो विश्वेदेवोंके ब्राह्मणोंसहित आठ ब्राह्मण होने उचित हैं, अथवा अत्यंत असामर्थ्य होवै तौ चार ब्राह्मण उचित हैं. नांदीश्राद्धमें सत्यवसु संज्ञक विश्वेदेव होते हैं. सोमयज्ञ, गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, आधान इन आदिके कर्मांगभूत नांदीश्राद्धमें क्रतुदक्ष संज्ञक विश्वेदेव होते हैं. गर्भाधान आदि संस्कारोंमें

और बावडी, देवताकी प्रतिष्ठा आदि पूर्तकर्मोंमें और प्रथम आधान आदिकोंमें, संन्यास लेनेमें, काम्य वृषोत्सर्गमें, गृहप्रवेशमें, तीर्थयात्रामें, श्रावणीकर्म, सर्पबलि, आश्वयुजीकर्म, आग्रयण इन आदि पाकसंस्थाओंके प्रथमारंभमें नांदीश्राद्ध करना अवश्य है. सोमयज्ञ विना पुनराधानमें, वारंवार क्रियमाण कर्ममें और अष्टका आदि श्राद्धकर्मोंमें नांदीश्राद्ध नहीं करना. गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, चौलकर्म, यज्ञोपवीतकर्म और विवाह इन्होंसें अन्य संस्कारोंमें और श्रवणाकर्म आदिकोंमें नांदीश्राद्ध वैकल्पिक है. जातकर्मका अंगभूत नांदीश्राद्ध और पुत्रजन्मनिमित्तक नांदीश्राद्ध पृथक् पृथक्ही करना. पुत्रजन्मकालमेंही जातकर्म करना होवै तब “ **पुत्रजन्मनिमित्तकं जातकर्मांगं च वृद्धिश्राद्धं तंत्रेण करिष्ये** ” इस प्रकार संकल्प करके एकवारही नांदीश्राद्ध करना. नामकर्मके साथ जातकर्म करनेकी इच्छा होवै तौ पुत्रजन्मनिमित्तक नांदीश्राद्ध जन्मकालमेंही सोनासें करके कर्मांगनामक नांदीश्राद्ध नामकर्मकालमें करना. जन्मकालमें वह नहीं किया जावै और नामकर्मके कालमें करना होवै तौ “ **पुत्रजन्मनिमित्तकं जातकर्मनामकर्मांगं च नांदीश्राद्धं तंत्रेण करिष्ये** ” इस प्रकार संकल्प करके एकही नांदीश्राद्ध करना. इसी प्रकार चौल आदि कर्मके साथ जातकर्म आदि करने होवैं तब “ **पुत्रजन्मनिमित्तकं चौलांतसंस्कारांगं च नांदीश्राद्धं तंत्रेण करिष्ये** ” इस प्रकार संकल्प करना. ऐसेही चौल आदि कर्म और अन्यभी कर्म साथही करने होवैं तौ नांदीश्राद्ध एकवारही करना. कर्मकर्मकेप्रति पृथक् अनुष्ठान नहीं करना. ऐसेही जौडले भाइयोंके एकवार संस्कारके करनेमेंभी जानना. ऋक्शाखियोंनें और कात्यायनशाखियोंनें “ **पितृपितामहप्रपितामहाः** ” इस प्रकार पितृपूर्वक उच्चार करनां. अन्य शाखियोंनें “ **प्रपितामहपितामहपितरो नांदीमुखाः** ” इस प्रकार प्रपितामहपूर्वक उच्चार करना. मातृपार्वणमें **नांदीमुख** शब्दमें ङीष् प्रत्ययके विकल्पसें “**नांदीमुख्यः** ” इस प्रकार अथवा “ **नांदीमुखाः** ” इस प्रकार दो पक्षोसें उच्चार किया जाता है इस लिये दोनोंमांहसें कोईसे एक पक्षका उच्चार करना. “नख और मुख यह शब्द जिसके अंतमें होता है ऐसा शब्द किसीकी संज्ञा होवै तौ तिसके पीछे ङीष् प्रत्यय नहीं होता, किंतु टाप् प्रत्यय होता है ” ऐसा जो निषेध कहा है तिसकी इस जगहमें प्राप्ति नहीं है. क्योंकी, ‘ नांदीमुख ’ यह संज्ञा अनादि है ऐसा पुरुषार्थचिंतामणिकार कहता है.

अथवृद्धिश्राद्धकर्तुर्जीवत्पितृकत्वेनिर्णयः जीवेत्तुयदिवर्गाद्यस्तंवर्गंतुपरित्यजेदितिन्यायेन जीवत्पितृकःस्वापत्यसंस्कारेषुमातृमातामहपार्वणयुतंनांदीश्राद्धंकुर्यात् मातरिजीवत्यांमातामहपार्वणकमेव मातामहेजीवतिमातृपार्वणकमेव केवलमातृपार्वणेविश्वेदेवानकार्याः वर्गत्रयाद्येषुमातृपितृमातामहेषुजीवत्सुनांदीश्राद्धलोपएवसुतसंस्कारेसूचितः द्वितीयविवाहाधानपुत्रेष्टिसोमयागादिषुस्वसंस्कारकर्मसुयेभ्यएवपितादद्यात्तेभ्योदद्यात् तथाचमृतमातृमातामहकोपिजीवत्पितृकःस्वसंस्कारेपितुर्मातृपितामहीप्रपितामह्यः पितुःपितृपितामहप्रपितामहाः पितुर्मातामहमातृपितामहमातृप्रपितामहाः इत्येवपार्वणत्रयमुद्दिश्यश्राद्धंकुर्यात् नतुस्वमातृमातामहपार्वणोद्देशःपितरिपितामहेचजीवतिस्वसंस्कारे पितामहस्यमातृपितामहीप्रपितामह्य इत्याद्युद्देशः एवंप्रपितामहेपियोज्यं पितुर्मात्रादिजीवनेतत्पार्वणलोपएव तथाचयेभ्यएवपिताद

द्यादितिपक्षस्यवर्गाद्यजीवनेतत्पार्वणलोपइतिद्वारलोपपक्षस्यचस्वसंस्कारस्वापत्यसंस्कारभेदेन व्यवस्थासिद्धांतितेतिज्ञेयं केचित्तुपक्षद्वयस्यैच्छिकोविकल्पोनतुव्यवस्थितइत्याहुः एवं मृतपितृकस्यजीवन्मातृमातामहस्यपितृपार्वणेनैवनांदीश्राद्धसिद्धिर्ज्ञेया समावर्तनस्यमाणवककर्तृत्वेपितदंगभूतनांदीश्राद्धेपितुस्तदभावेज्येष्ठभ्रात्रादेरधिकारइतिकेचित् तत्रपितापुत्रसमावर्तनेस्वपितृभ्योनांदीश्राद्धंकुर्यात् पिताजीवत्पितृकश्चेत्सुतसंस्कारत्वात्द्वारलोपपक्षोयुक्तइतिभाति माणवकपितुःप्रवासादिनाअसंनिधानेभ्रात्रादिर्माणवकस्यपितुर्मातृपितामहीप्रपितामह्य इत्याद्युच्चार्यश्राद्धंकुर्यात् मृतपितृकमाणवकसमावर्तनेपितृव्यभ्रात्रादिरस्यमाणवकस्यमातृपितामहीत्याद्युच्चारयेत् भ्रात्रादेरभावेस्वयमेवस्वपितृभ्योदद्यात् एवंजीवत्पितृकोपिपितुरसन्निधानेभ्रात्रादेरभावेपितुः पितृभ्यःस्वयमेवनांदीमुखंकुर्यात् उपनयनेनकर्माधिकारस्यजातत्वात् एवंविवाहेपिद्रष्टव्यं मृतपितृकस्यचौलोपनयनादिकंपितृव्यमातुलादिःकुर्वन्अस्यसंस्कार्यस्य पितृपितामहेत्याद्युच्चार्यश्राद्धंकुर्यात् जीवतःपितुरसन्निधानेनकुर्वन्मातुलादिरस्यसंस्कार्यस्यपितुर्जनकादीनुद्दिश्यकुर्यान्नतुसंस्कार्यस्यमृतानपिमात्रादीनितिसंक्षेपः ॥

अब नांदीश्राद्ध करनेवालेका पिता जीवता होवै तौ तिसका निर्णय कहताहुं.

माता (मा), पितामही (दादी) और प्रपितामही (पडदादी) ये तीनों मिलके एक वर्ग है. पिता (बाप), पितामह (बाबा) और प्रपितामह (पडबाबा) ये तीनों मिलके एक वर्ग है. मातामह (नाना), मातुःपितामह (बडा नाना) और मातुःप्रपितामह (बडा बडा नाना) ये सपत्नीक तीनों मिलके एक वर्ग है. इस प्रकार वर्ग कहे हैं, सो "जिस वर्गके आदिका जीवता होवै तिस वर्गकों त्यागना" इस न्यायकरके जीवते हुये पितावाले मनुष्यनें अपने संतानके संस्कारोंमें मातृपार्वण और मातामहपार्वणसें युक्त हुआ तांदीश्राद्ध करना. माता जीवती होवै तौ मातामहपार्वणसें युक्त नांदीश्राद्ध करना. मातामह जीवता होवै तौ मातृपार्वणसें युक्त नांदीश्राद्ध करना. अकेले मातृपार्वणमें विश्वेदेवता नहीं करने. पिता, माता, मातामह, ये तीनों जीवते होवैं तब पुरुषनें अपने पुत्रके संस्कारोंमें नांदीश्राद्ध नहीं करना उचित है. दूसरा विवाह, अग्न्याधान, पुत्रेष्टि और सोमयज्ञ इन आदि अपने संस्कारकर्मोंमें "जिन पितरोंके अर्थ पिता देवै तिन पितरोंके अर्थही पुत्रभी देवै." जिसकी माता और मातामह मर गये होवैं और पिता जीवता होवै तब अपने संस्कारविषे नांदीश्राद्धकर्ममें पिता जिनका उच्चार करता होवै तिन्होंकाही उच्चार करना. सो ऐसा:—"पितुर्मातृपितामहीप्रपिताभह्यः पितुःपितृपितामहप्रपितामहाः पितुर्मातामहमातृपितामहमातृप्रपितामहाः" इस प्रकार तीन पार्वणोंके उद्देशकरके नांदीश्राद्ध करना. अपने मातृपार्वण और मातामहपार्वणका उच्चार नहीं करना. पिता और पितामह जीवते होवैं तब अपने संस्कारमें पितामहके मातृपार्वणका उच्चार करना. अर्थात् "**पितामहस्य मातृपितामही प्रपितामह्यः**" ऐसा उद्देश करना. प्रपितामह जीवता होवै तवभी इसही प्रकार योजना करनी. पिताकी माता आदि सब जीवते होवैं तब तिस पार्वणका लोपही जानना. तैसेही "जिन पितरोंके अर्थ पिता पार्वण देता होवै तिन्हीं पितरोंके अर्थ पुत्रनेंभी देना,"

यह एक पक्ष, और वर्गका पहला जीवता होवै तौ तिस पार्वणका लोप करना यह दूसरा द्वारलोपपक्ष है. इनकी व्यवस्था अपना संस्कार और अपने संतानका संस्कार इस भेदकरके करनी ऐसा जानना, अर्थात् अपने संस्कारमें पिताके पार्वण और पुत्रके संस्कारमें अपने पार्वण लेने ऐसा तात्पर्य है. कितनेक ग्रंथकार तौ प्रथम कहे हुए दोनों पक्षोंका विकल्प इच्छाके अनुसार है व्यवस्थासें नहीं ऐसा कहते हैं. इसी प्रकार मृतपितावालेके जीवते हुये माता और मातामहके पार्वणकरके नांदीश्राद्धकी सिद्धि होती है ऐसा जानना. समावर्तनकर्मकों करनेवाला बालकही होवै तौभी तदंगभूत नांदीश्राद्ध पितानें और तिसके अभावमें ज्येष्ठ भ्रातानें करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. पुत्रके समावर्तन अर्थात् प्रथम क्षौरकर्ममें पितानें अपने पितरोंके अर्थ नांदीश्राद्ध करना. जो पिताकाभी पिता जीवता होवै तौ पुत्रका संस्कार होनेसें द्वारलोपपक्ष ठीकही है ऐसा प्रतिभान होता है. बालकका पिता परदेश आदिमें जानेसें समीप नहीं होवै तौ बालकका भ्राता आदिनें "**माणवकस्य पितुर्मातृपितामहीप्रपितामह्यः**" इस प्रकार उच्चार करके नांदीश्राद्ध करना. मर गया है पिता जिसका ऐसे बालकके समावर्तनकर्ममें पितृव्य, भ्राता आदिनें बालकके पार्वणसें नांदीश्राद्ध करना. तहां "**अस्य माणवकस्य मातृपितामहीप्रपितामह्यः**" इस प्रकार उच्चार करना. भ्राता आदिके अभावमें आपही अपने पितरोंके अर्थ नांदीश्राद्ध करना. ऐसेही जीवते हुये पितावाले बालकनेंभी पिता समीप नहीं होवै और भ्राता आदिके अभावमें पिताके पितृके उद्देशसें आपही नांदीश्राद्ध करना. क्योंकी, यज्ञोपवीतकर्मके होनेकरके तिसकों कर्म करनेका अधिकार है. इसी प्रकार विवाहमेंभी निर्णय जानना. मर गया है पिता जिसका ऐसे बालकके चौलकर्म और यज्ञोपवीतकर्म पितृव्य और मातुल आदि करैं तौ "**अस्य संस्कार्यस्य पितृपितामहप्रपितामहाः**" ऐसा उच्चार करके जिसका संस्कार करना होवै तिसके पार्वणसें नांदीश्राद्ध करना. जिसका जीवता हुआ पिता समीप नहीं होवै ऐसे बालकके मातुल अर्थात् मामा आदि चौल और यज्ञोपवीतकर्म करनेवाले होवैं तौ जिसका संस्कार करना होवै तिसके पिताके जो माता, पिता आदि तिन्होंके उद्देशसें नांदीश्राद्ध करना. बालकके माता आदि मृत हुए होवैं तौभी तिन्होंके उद्देशसें नांदीश्राद्ध नहीं करना. इस प्रकार नांदीश्राद्धके पार्वणोंका संक्षेपसें निर्णय कहा है.

नांदीश्राद्धेपिंडदानंकुलधर्मानुसारेणवैकल्पिकं पिंडेषुदधिमधुबदरद्राक्षामलकमिश्रणंदक्षिणायांद्राक्षामालकानि प्रथमांतेनसंकल्पः सर्वत्रोच्चारेसंबंधनामगोत्रंवर्जयेत् मालतीमल्लिकाकेतकीकमलानांमालादेयानतुरक्तपुष्पाणां कुंकुमचंदनाद्यलंकृताः सर्वे नांदीश्राद्धारंभे पाकांतरेणवैश्वदेवः साग्निकानग्निकैःसर्वशाखिभिःकार्यः द्वयोर्द्वयोर्विप्रयोर्युगपन्निमंत्रणं भवद्भ्यांक्षणःक्रियतामोंतथाप्राप्नुतांभवंतौप्राप्नुवावेत्युक्तिः शंनोदेवीत्यनुमंत्र्ययवानेवाक्षिपेत् यवोसिसोमदेवत्योगोसवेदेवनिर्मितः प्रत्नवद्भिःप्रत्तःपुष्ट्यानांदीमुखान्पितॄनिमाँल्लोकान्प्रीणयाहिनःस्वाहानमइतिपित्र्येमंत्रः द्विर्द्विर्गंधादिदानं पाणिहोमोग्नयेकव्यवाहनायस्वाहासोमायपितृमतेस्वाहेति अत्रश्राद्धेनापसव्यंनतिलाः नचपितृतीर्थेनदानं पावमानीःशंवतीःशकुनिसूक्तं स्वस्तिसूक्तंचश्रावयेत् मधुवाताइतित्र्यृचस्थानेउपास्मैगायेतिपंचर्चः अक्षंनमीमदंतेतिच तृ

प्तिप्रश्नस्थानेसंपन्नमिति दैवेरुचितमितिप्रश्नः पूर्वाग्रेषुकुशेषुदूर्वासुवाएकस्यद्वौद्वौपिंडौ अक्षय्यस्थानेनांदीमुखाःपितरःप्रीयंतां स्वधावाचनस्थानेनांदीमुखान्पितॄन्वाचयिष्येइत्यादिनस्वधांप्रयुंजीत त्यमूषुवाजिनमितिविप्रविसर्जनं केचिन्नांदीश्राद्धांतेवैश्वदेवोबहूचानामित्याहुः नात्र श्राद्धांगतर्पणं अत्राहिताग्निनापिंडदानंकार्यं पितुर्मात्रादिवर्गत्रयोद्देशेनश्राद्धेपितुर्मातामही चैवतथैवप्रपितामहीत्यादि श्लोकपाठः द्वारलोपपक्षेयत्पार्वणलोपस्तत्पार्वणविषयकश्लोकैकदेशलोपः केवलमातृपार्वणेदेवानकार्याःएताभवंतुसुप्रीताइत्यूहःकार्यः सांकल्पविधिनासंक्षिप्तनांदीश्राद्धप्रयोगःप्रयोगरत्नादौद्रष्टव्यः इतिनांदीश्राद्धविचारः ॥

नांदीश्राद्धमें कुलधर्मके अनुसार पिंडोंकों देना वैकल्पिक है अर्थात् पिंडोंकों देना अथवा नहीं देना. पिंडोंमें दही, शहद, बेर, द्राख, आंवला इन्होंकों मिलाना उचित है. दक्षिणाभी द्राक्ष और आंवलोंकी देनी. प्रथमांत शब्दकरके संकल्प करना. सब जगह उच्चारमें संबंध, नाम, गोत्र इन्होंकों वर्जित करना. चमेली, मोगरी, केतकी, कमल इन्होंके फूलोंकी माला देनी. लाल फूलोंकी माला नहीं देनी. केशर और चंदन आदिकरके अलंकृत हुये सब मनुष्य होने उचित हैं. नांदीश्राद्धके आरंभकें अनंतर वैश्वदेव करनेका सो दूसरी रसोई करके साग्निक और निरग्निक ऐसे सब शाखियोंनें करना. दो दो ब्राह्मणोंकों एकहीवार निमंत्रण करना. तिसका उच्चार—“**भवद्भ्यां क्षणः क्रियतां ॐ तथा, प्राप्नुतां भवंतौ प्राप्नुवाव**” “**शन्नो देवी०**” इन दो मंत्रोंसें आमंत्रित करके जवोंकों छोडना. “**यवोसि सोमदेवत्यो गोसवे देवनिर्मितः ॥ प्रत्नवद्भिः प्रत्तः पुष्ट्या नांदीमुखान् पितॄनिमाँल्लोकान् प्रीणयाहि नः स्वाहा नमः**” इस मंत्रकों पितृकर्ममें योजित करना. दो दो वार गंध आदि उपचार करने. ब्राह्मणोंके हाथोंविषे होम करनेका सो “**अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा, सोमाय पितृमते स्वाहा**” इस मंत्रसें कराना. यहां नांदीश्राद्धमें अपसव्य होके कर्म नहीं करना. तिलोंकों नहीं लेना. पितृतीर्थसें अर्थात् अंगूठाके बीचकरके जल आदिका दान नहीं करना. पावमानीऋचा, शंवतीऋचा और शकुनिसूक्त और स्वस्तिसूक्त इन्होंका पाठ सुनना. “**मधुवाता०**” इस ऋचाकी जगह “**उपास्मै गायता०**” इन पांच ऋचाओंका और “**अक्षन्नमीमदंत०**” इस ऋचाका पाठ करना. तृप्तिप्रश्नकी जगह “**संपन्नम्**” ऐसा उच्चार करना. दैवकर्मके जगह “**रुचितम्**” ऐसा प्रश्न करना. पूर्वकों अग्रभागवाले कुशोंपर अथवा दूर्वोंपर एक एककों दो दो पिंड देने. “**अक्षय्यम्**” इसकी जगह “**नांदीमुखाः पितरः प्रीयंताम्**” ऐसा उच्चार करना. स्वधाशब्दके स्थानमें “**नांदीमुखान् पितॄन् वाचयिष्ये**” ऐसा उच्चार करना. स्वधाशब्दका उच्चार नहीं करना. पीछे “**त्यमूषवाजिनम्०**” इस मंत्रसें ब्राह्मणोंका विसर्जन करना. नांदीश्राद्धके अंतमें ऋग्वेदियोंनें वैश्वदेव करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. नांदीश्राद्धके अंगमें श्राद्धसंबंधी तर्पण नहीं करना. नांदीश्राद्धमें अग्निहोत्रीनें पिंडदान करना. पिताके माता आदि तीन वर्गोंके उद्देशकरके नांदीश्राद्ध होवै तौ तिसमें “**पितुर्मातामही चैव तथैव प्रपितामही**” इस आदि श्लोक पठित करना. द्वारलोपपक्षमें जिस पार्वणका लोप होवै तिस पार्वणविषयक, श्लोक तिसके एकदेशका लोप करना. केवल मातृपार्वणसें युक्त नांदीश्राद्ध होवै तौ देवोंका कारण नहीं है. यहां “**एता भवंतु सप्रीताः**” इस प्रकार उच्चार करना. संकल्पकी विधिकरके

संक्षेपरूप नांदीश्राद्धका प्रयोग **प्रयोगरत्न** आदिमें देखना. इस प्रकार नांदीश्राद्धका विचार समाप्त हुआ.

एवंस्वस्तिवाचनंऋतुदक्षसंज्ञकविश्वेदेवयुतंचनांदीश्राद्धंगर्भाधानांगंकृत्वा यथाशाखंगर्भाधानसंस्कारःकार्यः आश्वालायनैर्गृह्याग्नौप्राजापत्यंचरुंहुत्वाविष्णुंषड्वारंसकृत्प्रजापतिंचाज्येन हुत्वाजपोपस्थानेनस्तः करणादिकंचकार्यं विष्णुर्योनिंजपेत्सूक्तंयोनिंस्पृष्ट्वात्रिभिर्व्रती गर्भाधानं ततःकुर्यात्सुपुत्रोजायतेध्रुवंएवंनेजमेषेत्यादिजपोपि सर्वथाहोमासंभवेअश्वगंधारसंउदीर्ष्वातइतिमंत्रेणदक्षिणनासायामासिच्योपगमनंकार्यं एवंगर्भाधानसंस्कारमकृत्वास्त्रीगमनेगर्भोत्पत्तो तत्प्रायश्चित्तंगोदानंकृत्वापुंसवनंकार्यं ॥

इस प्रकार पुण्याहवाचन और ऋतुदक्षसंज्ञक विश्वेदेवोंसें युत गर्भाधानका अंगभूत नांदीश्राद्ध करके पीछे अपनी अपनी शाखाके अनुसार गर्भाधानका संस्कार करना. आश्वलायन शाखावालोंनें गृह्याग्निविषे प्राजापत्यसंज्ञक चरुका होम करके विष्णुके अर्थ छहवार घृतकी आहुति और प्रजापतिके अर्थ घृतकी एक अहुति देके जप, अग्निकी प्रार्थना, नाकमें दूर्वाके रसकों डालना इन आदि कर्मोंकों करना. "पीछे व्रती होके योनिकों तीन अंगुलियोंसें स्पर्श करके "विष्णुर्योनिम्०" इस सूक्तका जप करके पीछे गर्भाधान करना. इस्सें निश्चय करके सुंदर पुत्र उपजता है. इसी प्रकार "नेजमेष०" इस आदि मंत्रकाभी जप करना. सब प्रकारसें होम करनेका संभव नहीं होवै तौ आसगंधके रसकों दाहिनी नासिकामें "उदीर्ष्वात:०" इस मंत्रसें डालके पीछे स्त्रीसें भोग करना. ऐसे गर्भाधानके संस्कारकों नहीं करके स्त्रीसें भोग करनेसें जो गर्भकी उत्पत्ति होवै तिसके प्रायश्चित्तमें गौका दान करके पुंसवनकर्म करना.

अथमैथुनांते ऋतौतुगर्भशंकित्वात्स्नानंमैथुनिनःस्मृतं अनृतौतुयदागच्छेच्छौचंमूत्रपुरीषवत्इत्युक्तरीत्याशौचंकृत्वाचामेम् आचमनंविनामूत्रपुरीषोत्सर्गेतु तैलाभ्यक्तस्त्वनाचांतःश्मश्रुकर्मणिमैथुने मूत्रोच्चारंयदाकुर्यादहोरात्रेणशुद्ध्यतिइत्येकाहोपवासःस्त्रीणांतुनस्नानं शयनादुत्थितानारीशुचिःस्यादशुचिःपुमान्इत्युक्तेः इतिगर्भाधानाद्युपयोगिनिर्णयः ॥

अब मैथुनके अंतमें करनेके योग्य विधि कहताहुं.—"ऋतुकालमें भोग करनेसें गर्भधारणका संभव होता है, इसवास्ते भोग करनेवाले मनुष्यनें मैथुनके अनंतर स्नान करना. ऋतुकालसें दूसरे कालमें जो पुरुष स्त्रीसें भोग करता है तब मूत्र और विष्ठाके त्यागके समान अशुद्धि है इस वास्ते हाथ पैरोंकों धोके आचमन करना." इस प्रकार कही हुई रीतिसें हाथ और पैरोंकों धोके आचमन करना. आचमनके विना मूत्र और विष्ठाका त्याग करै तौ "अभ्यंग, श्मश्रुकर्म और स्त्रीसें भोग करके आचमन नहीं करके मूत्रका त्याग करै तौ एक दिनरात्रिसें पुरुष शुद्ध होता है," ऐसा वचन है, इसवास्ते एक दिनरात्र उपवास करना. मैथुनके अंतमें स्त्रियोंनें स्नान करना उचित नहीं है. क्योंकी "पलंगसें उत्थित हुई नारी शुद्ध होती है और पुरुष अशुद्ध होता है" ऐसा वचन है. इस प्रकार गर्भाधान आदिके उपयोगका निर्णय समाप्त हुआ.

एवंकृतेपिगर्भाधानेयदिगर्भोत्पत्त्यभावोमृतापत्यतावातदा प्रतिबंधकप्रेतोपद्रवनिवृत्त्यर्थंनारायणबलिर्नागबलिश्चकार्यः तत्रनारायणबलिःशुक्लैकादश्यांपंचम्यांश्रवणेवा कालान्तरानुपलब्धेः तत्प्रयोगःपरिशिष्टस्मृत्यर्थसारानुसारीकौस्तुभे शुक्लैकादश्यांनदीतीरेदेवालयादौतिथ्यादिकीर्तनांतेमदीयकुलाभिवृद्धिप्रतिबंधकप्रेतस्योप्रेततत्वनिवृत्त्यर्थंनारायणबलिंकरिष्येविधिनास्थापितकुंभद्वयेहेमादिप्रतिमयोर्विष्णुंवैवस्वतयमंचावाह्यपुरुषसूक्तेनयमायसोमेतिमंत्रेणच षोडशोपचारैःसंपूजयेत् अत्रकेचित्कुंभपंचकेब्रह्मविष्णुशिवयमप्रेतान्पूजयंतितत्पूर्वभागेरेखायांदक्षिणाग्रकुशेषुशुंधंतांविष्णुरूपीप्रेतइतिदशस्थानेषुदक्षिणासंस्थमपोनिनीय मधुघृततिलयुतान्दशपिंडान्काश्यपगोत्रदेवदत्तप्रेतविष्णुदैवतअयंतेपिंडइति दक्षिणामुखःप्राचीनावीती वामंजान्वाच्यपितृतीर्थेनदद्यात् गंधादिभिरभ्यर्च्यप्रवाहणांतंकृत्वाविसर्जयेत् तस्यामेवरात्रौ श्वःकरिष्यमाणश्राद्धेक्षणःक्रियतामिति एकंत्रीन्पंचवाविप्रान्निमंत्र्योपोषितोजागरंकुर्यात् श्वोभूतेमध्याह्न विष्णुंसंपूज्यविष्णुरूपंप्रेतंविष्णुब्रह्मशिवयमप्रमेतान्वोदिश्यैकोद्दिष्टविधिनापादक्षालनादितृप्तिप्रश्नांतंकृत्वा रेखाकरणाद्यवनेजनांतंतूष्णींकृत्वा विष्णवेब्रह्मणेशिवायसपरिवारयमायेतिचतुरःपिंडान्नाममंत्रैर्दत्वा विष्णुरूपंप्रेतंध्यायन्काश्यपगोत्रदेवदत्तविष्णुरूपप्रेतअयंतेपिंडइतिपंचमंपिंडंदत्वाअर्चनादिप्रवाहणांतेआचांतान्दक्षिणादिभिः संतोष्यतेष्वेकस्मैगुणवतेप्रेतबुद्ध्यावस्त्राभरणादिदत्वाविप्रान्वदेत् भवंतःप्रेतायतिलोदकांजलिदानंकुर्वंत्विितेचपवित्रपाणयःकुशतिलतुलसीयुततिलांजलिं प्रेतायकाश्यपगोत्रायविष्णुरूपिणेअयंतिलांजलिरितिदद्युः विप्रान्वाचयेत् अनेननारायणबलिकर्मणाभगवान्विष्णुरिमंदेवदत्तंप्रेतंशुद्धमपापमर्हंकरोत्वितिविसृज्यस्नात्वाभुंजीतेति सिंधौतुकुंभपंचकेविष्णुब्रह्मशिवयमप्रेतेतिपंचकंपूजयेत्स्वर्णरूप्यताम्रलोहमयाश्चत्वारः प्रेतोदर्भमयः अग्निंप्रतिष्ठाप्यश्रपितचरुंनारायणायपुरुषसूक्तेनषोडशाहुतिभिर्हुत्वादशपिंडांतेपुरुषसूक्ताभिमंत्रितशंखोदकेनप्रेतंप्रत्यृचंतर्पयेत् विष्णवादिचतुर्भ्योबलिंदद्यात् श्वोभूतेएकोद्दिष्टविधिनाश्राद्धपंचकंकरिष्यइतिसंकल्प्यविप्रपंचकेपाद्यादिपिंडदानांतेतर्पणादीतिविशेषउक्तः शेषपूर्ववत् ॥

इस प्रकार गर्भाधान करकेभी जो गर्भकी उत्पत्ति नहीं होवै अथवा संतान मृत्युकों प्राप्त हो जावै तब संतानके नाश करनेवाले पिशाचके उपद्रवकों दूर करनेकेवास्ते नारायणबलि और नागबलि करना उचित है. तहां नारायणबलि शुक्लपक्षकी एकादशीमें, पंचमीमें अथवा श्रवणनक्षत्र जिस दिन होवै तब करना. क्योंकी, इसके विना दूसरे कालकी उपलब्धी नहीं होती है. तिस नारायणबलिका प्रयोग "परिशिष्ट और स्मृत्यर्थसार इन्होंके अनुरोधकरके कौस्तुभ ग्रंथमें कहा है सो ऐसा.—शुक्लपक्षकी एकादशीविषे नदीके तीरपर देवताके मंदिर आदिमें जाके तिथि और वार आदिके उच्चारके अंतमें "मदीय कुलाभिवृद्धिप्रतिबंधकप्रेतस्य प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं नारायणबलिं करिष्ये" ऐसा संकल्प करके पीछे विधिके अनुसार दो कलशोंकों स्थापित करके तिन दोनों कलशोंपर सोना आदिकी प्रतिमा स्थापित करके तिन दोनों प्रतिमाओंविषे विष्णु और वैवस्वत यमधर्मका आवाहन करके पुरुषसूक्तकरके विष्णुकी और "यमाय सोमम्०" इस मंत्रकरके धर्मराजकी षोडशोपचारोंसें पूजा करनी. यहां कितनेक ग्रंथकार पांच कलशोंपर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, धर्मराज और प्रेत

इन पांचोंकों पूजते हैं. कलशके पूर्वभागमें रेखा करके दक्षिणकों अग्रभागवाले कुशोंपर **"शुंधंतां विष्णुरूपी प्रेतः"** ऐसा कहके दश जगह, उत्तरसें प्रारंभकरके दक्षिणदिशामें स्थित ऐसे जलकों देके शहद, घृत और तिल इन्होंसें युत हुये दश पिंडोंकों **"काश्यपगोत्र देवदत्त प्रेत विष्णुदैवत अयं ते पिंडः"** इस प्रकार कहके दक्षिणके तर्फ मुख करके अपसव्य होके वामे गोडेकों निवाय पितृतीर्थ अर्थात् अंगूठा और तर्जनी अंगुलीके मध्यकरके पिंड देना. पीछे गंध आदिसें पूजा करके पिंडोंका प्रवाहणपर्यंत कर्म करके विसर्जन करना. और तिसी रात्रिमें **"श्वः करिष्यमाणश्राद्धे क्षणः क्रियताम्"** इस प्रकार कहके पीछे एक अथवा तीन अथवा पांच ब्राह्मणोंकों निमंत्रण देके उपवाससें संयुक्त हुए वह पुरुषनें जागरण करना. पीछे आगले दिन होनेवाले मध्यान्हसमयमें विष्णुकी पूजा करके विष्णुरूपी प्रेतका अथवा विष्णु, ब्रह्मा, शिव, धर्मराज और प्रेत इन्होंके उद्देशकरके एकोद्दिष्टविधिसें पादप्रक्षालनसें तृप्तिप्रश्नके अंततक कर्म करके और रेखाकरणसें उदकदानतक मंत्ररहित कर्म करके **"विष्णवे, ब्रह्मणे, शिवाय, सपरिवारयमाय"** इस प्रकार उच्चार करके चार पिंड नाममंत्रोंसें देके विष्णुरूपी प्रेतका ध्यान करता हुआ पुरुष **"काश्यपगोत्र देवदत्त विष्णुरूप प्रेत अयं ते पिंडः"** इस प्रकार कहके पांचमा पिंड देके पूजा आदिसें प्रवाहणांत कर्म करके पीछे ब्राह्मणोंनें आचमन किये पीछे तिनकों दक्षिणा आदिसें प्रसन्न करना. पीछे तिन ब्राह्मणोंके मध्यमें जो गुणवान् एक ब्राह्मण होवै तिसकों प्रेतके नामसें वस्त्र और गहना आदि देके ब्राह्मणोंकों कहना की, आप सब प्रेतकों तिलोंसहित जलकी अंजलियोंकों देओ. पीछे तिन ब्राह्मणोंनें हाथमें दर्भके पवित्र धारण करके कुश, तिल, तुलसी इन्होंसें युत करी तिलांजलि **"प्रेताय काश्यपगोत्राय विष्णुरूपिणे अयं तिलांजलिः"** इस प्रकार कहके देनी. पीछे ब्राह्मणोंनें कहना, सो ऐसा—**"अनेन नारायणबलिकर्मणा भगवान् विष्णुरिमं देवदत्तं प्रेतं शुद्धमपापमर्हं करोतु."** इस प्रकार विसर्जन करके स्नानकरके भोजन करना. **निर्णयसिंधु** ग्रंथमें तौ, पांच कलशोंपर विष्णु, ब्रह्मा, शिव, यम, और प्रेत इन पांचोंकी पूजा करनी, सोनाकी विष्णुकी प्रतिमा बनानी, चांदीकी ब्रह्माकी प्रतिमा बनानी, तांबाकी शिवकी प्रतिमा बनाकी, लोहाकी यमकी प्रतिमा बनानी और डाभकी प्रेतकी प्रतिमा बनानी, अग्निकों प्रतिष्ठापूर्वक स्थापित करके तिसके उपर सिद्ध किये चरुका नारायणके अर्थ पुरुषसूक्तकी सोलह ऋचाओंसें आहुतियोंकरके होम करके दश पिंडोंके अंतमें पुरुषसूक्तसें अभिमंत्रित किये शंखके जलकरके एक एक ऋचासें प्रेतका तर्पण करना. विष्णु, ब्रह्मा, शिव और यम इन चारोंके अर्थ बलि देने. दूसरे दिनमें **"एकोद्दिष्टविधिना श्राद्धपंचकं करिष्ये"** इस प्रकार संकल्प करके पांच ब्राह्मणोंकी पाद्य आदिसें पूजा करके पिंडदानपर्यंत कर्म करके पश्चात् तर्पण करना ऐसा विशेष कहा है. शेष रहा कर्म पूर्वोक्त रीतिसें करना ऐसा कहा है.

अथनागबलिः ॥ सचदर्शेपौर्णमास्यांपंचम्यामाश्लेषायुतनवम्यांवाकार्यः तत्रपर्षदंप्रदक्षिणीकृत्यनत्वा तदग्रेगोवृषनिष्क्रयंनिधायसभार्यस्यममेहजन्मानिजन्मांतरेवाजातसर्पवधदोषपरिहारार्थंप्रायश्चित्तमुपदिशंतुभवंतः सर्वेधर्मविवेक्तारइत्यादि० विप्रैश्चतुर्दशकृच्छ्रप्रायश्चित्तेन

अमुकप्रत्याम्नायद्वारापूर्वोक्तरांगसहितेनाचरितेनतवशुद्धिर्भविष्यतीत्युपदिष्टो देशकालौसंकीर्त्य पर्षदुपदिष्टंचतुर्दशकृच्छ्रप्रायश्चित्तंअमुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्येइतिसंकल्प्य वपनादिविधिनातदाचरेत् वपनासंभवेद्विगुणःकृच्छ्रप्रत्याम्नायः सर्पवधदोषपरिहारार्थमिमंलोहदंडंसदक्षिणंतुभ्यमहंसंप्रददइतिदत्वागुर्वनुज्ञांलब्ध्वा गोधूमव्रीहितिलान्यतमपिष्टेनसर्पाकृतिंकृत्वा शूर्पेनिधायसर्पप्रार्थयेत् एहिपूर्वमृतःसर्पअस्मिन्पिष्टेसमाविश संस्कारार्थमहंभक्त्याप्रार्थयामि समाहितः आवाहनादिषोडशोपचारैःसंपूज्यनत्वाभोसर्पइमंबलिंगृहाणममाभ्युदयं कुरुइति बलिंदत्वापादौप्रक्षाल्याचामेत् देशकालौसंकीर्त्यसभार्यस्यममेहजन्मनिजन्मान्तरेवाज्ञानादज्ञानाद्वाजातसर्पवधोत्थदोषपरिहारार्थंसर्पसंस्कारकर्मकरिष्यइतिसंकल्प्य स्थंडिलेग्निंप्रतिष्ठाप्यध्यात्वा अस्मिन्सर्पसंस्कारहोमकर्मणिदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्ये चक्षुषीआज्येनेत्यंतेअग्नौअग्निंवायुंसूर्यंआज्येनसर्पमुखेप्रजापतिमाज्येनआज्यशेषेणसर्पसद्योयक्ष्येइतिसमिधावाधायअग्नेराग्नेयदिशिप्रोक्षितभूमौचितिंकृत्वा अग्निंचितिंचपरिसमुह्याग्नेयाग्रदर्भैः परिस्तीर्यपरिषिच्यषट्पात्रासादनादिचक्षुषीहुत्वासर्पंचित्यामारोप्यजलंश्रोत्रंचस्पृष्ट्वा अग्नौभूःस्वाहाअग्नयइदमित्यादिव्याहृतित्रयेणाज्याहुतीर्हुत्वासमस्तव्याहृतिभिश्चतुर्थींसर्पमुखेजुहुयात्आज्यशेषंस्रुवेणैवसर्पदेहेनिषिंचेत् नात्रस्विष्टकृतादिशेषं चमसजलैः समस्तव्याहृत्यासर्पंपाणिनाप्रोक्ष्य अग्नेरक्षाणोवसिष्ठोग्निर्गायत्री सर्पायाग्निदानेवि० अग्नेरक्षाणोअंहसऋक् अथोपस्थानं नमोअस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु येअंतरिक्षेयेदिवितेभ्यःसर्पेभ्योनमः येदोरोचनेदिवोयेवासूर्यस्यरश्मिषु येषामप्सुसदस्कृतंतेभ्यः० याइषवोयातुधानानांयेवावनस्पतीँरनु येवावटेषुशेरतेतेभ्यः० त्राहित्राहिमहाभोगिन्सर्पोपद्रवदुःखतः संततिंदेहिमेपुण्यांनिर्दुष्टांदीर्घदेहिनीम् प्रपन्नंपाहिमांभक्त्याकृपालोदीनवत्सल ज्ञानतोज्ञानतोवापिकृतःसर्पवधोमया जन्मांतरेतथैतस्मिन्मत्पूर्वैरथवाविभो तत्पापंनाशयक्षिप्रमपराधंक्षमस्वमे इतिसंप्रार्थ्यनागेंद्रंस्नात्वागत्यततःपुनः व्याहृतिभिःक्षीराज्येनाग्निंसंप्रोक्ष्यहुतेसर्पजलेनाग्निंसिंचेत् यज्ञोपवीतिनासर्वंसर्पसंस्कारकर्मतु नास्थिसंचयनंकुर्यात्स्नात्वाचम्यगृहंव्रजेत् सभार्यस्यकर्तुस्त्रिरात्रमाशौचंब्रह्मचर्यंचकार्यम् चतुर्थेहनिसचैलंस्नात्वाघृतपायसभक्ष्यैरष्टौविप्रान्भोजयेत् तद्यथासर्पस्वरूपिणेब्राह्मणायइदंतेपाद्यम् अनंतस्वरूपिणे० शेषस्वरूपि० कपिलस्व० नागस्व० कालिकस्व० शंखपालस्व० भूधरस्व० इत्यष्टसुदत्वास्वपादौप्राक्षाल्याचम्य सर्पस्वरूपिणेब्रा० इदमासनंआस्यतां एवमनंतादिषुततःसर्पस्थानेक्षणःक्रियतामित्यादि ओंतथाप्राप्नोतुभवान्प्राप्नुवानि भोसर्परूपइदंतेगंधं एवंअनंतादिषु एवंपुष्पधूपदीपवस्त्रादिदत्वाअन्नंपरिविष्यप्रोक्ष्यसर्पायइदमन्नंपरिविष्टंपरिवेक्ष्यमाणंचदत्तंदास्यमानंचातृप्तेरमृतरूपेणस्वाहासंपद्यंतांनमम एवमनंतादिभ्योपि आचांतेषुभोसर्पअयंतेबलिरित्यादिनाममंत्रैर्बलिदानं तेषुपिंडेषुवस्त्रादिपूजाचकार्या इदमपिसर्वंसव्येनैव विप्रेभ्यस्तांबूलदक्षिणादिदत्वाआचार्यंसंपूज्य कलशेसुवर्णनागमावाहनादिषोडशोचापरैःसंपूज्यप्रार्थयेत् ब्रह्मलोकेचयेसर्पाःशेषनागपुरोगमाः नमोस्तुतेभ्यःसुप्रीताः प्रसन्नाः संतुतेसदा विष्णुलोकेचयेसर्पावासुकिप्रमुखाश्चये नमोस्तु० रुद्रलोकेचयेसर्पास्तक्षकप्रमुखास्तथा नमोस्तु० खांडवस्यतथादाहेस्वर्गंयेचसमाश्रिताः नमोस्तु० सर्पसत्रेचयेसर्पा आस्तिकेनचरक्षिताः नमोस्तु० मलयेचैवयेसर्पाःकर्कोटप्रमुखाश्चये नमोस्तु० धर्मलोकेचयेसर्पा

वैतरण्यांसमाश्रिताः नमो० येसर्पाःपार्वतीयेषुदरीसंधिषुसंस्थिताः नमो० ग्रामेवायदिवारण्ये येसर्पाःप्रचरंतिहि नमो० पृथिव्यांचैवयेसर्पायेसर्पाबलिसंस्थिताः नमो० रसातलेचयेसर्पाअनंताद्यामहाबलाः नमो० एवंस्तुत्वादेशकालौसंकीर्त्यकृतस्यसर्पसंस्कारकर्मणःसांगतार्थमिमं हैमनागंसकलशंसवस्त्रंसदक्षिणंतुभ्यमहंसंप्रददेनमम अनेनस्वर्णनागदानेनानंतादयोनागदेवताःप्रीयंताम् आचार्यायगोदानं यस्यस्मृत्याच० मयाकृतंसर्पसंस्काराख्यकर्मतद्भवतांविप्राणांवचनात्परमेश्वरप्रसादात्सर्वंपरिपूर्णमस्तु तथास्त्वितितेब्रूयुः ब्राह्मणांस्तोषयेत्सांगतार्थंब्राह्मणान्भोजयेत् कृत्वासर्पस्यसंस्कारमनेनविधिनानरः विरोगोजायतेक्षिप्रंसंततिंलभतेशुभाम् इतिसर्पबलिः ॥ एवमपिपुत्रोत्पत्त्यसिद्धौकर्मविपाकग्रंथोक्तहरिवंशश्रवणादिविधानंकुर्यात् तच्चषडब्दंचतुरब्दंत्र्यब्दंसार्धाब्दं अब्दंवाप्रायश्चित्तंकृत्वावाकार्यं ॥

अब नागबलिका विधि कहताहुं.

नागबलि अमावस, पौर्णमासी, पंचमी अथवा आश्लेषानक्षत्रसें युत हुई नवमीमें करना उचित है. सो ऐसा,–ब्राह्मणोंकी सभाकों परिक्रमा करके पीछे प्रणाम करना. तिसके आगे एक गौ और एक बैलकी कीमत रखके प्रार्थना करनी. सो ऐसी–“ मेरे और मेरी भार्याके जन्ममें अथवा जन्मांतरमें सर्पकों मारनेका दोष दूर करनेके अर्थ धर्मका विवेचन करनेवाले आप सब मुझकों प्रायश्चित्त कहौ ” ऐसी प्रार्थना करके पीछे “ ब्राह्मणोंनें पूर्वांग और उत्तरांगसें युक्त अमुक प्रत्याम्नायके द्वारा चौदह कृच्छ्रोंके पूर्वोत्तरांगसहित प्रायश्चित्त करनेसें तेरी शुद्धि होवैगी इस प्रकार कहना. ” पीछे यजमाननें देश और कालका उच्चार करके “ **पर्षदुपदिष्टं चतुर्दशकृच्छ्रप्रायश्चित्तं अमुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्ये,** ” इस प्रकार संकल्प करके क्षौर आदि विधिपूर्वक प्रायश्चित्त करना. क्षौरके असंभवमें २८ कृच्छ्रोंका प्रत्याम्नाय करना. पीछे सर्पकों मारनेका दोष दूर होनेकेवास्ते लोहदंडका दान करना. सो ऐसा–“ **सर्पवधदोषपरिहारार्थमिमं लोहदंडं सदक्षिणं तुभ्यमहं संप्रददे.** ” इस प्रकार दान देके और गुरुकी आज्ञा लेके गेहूं, व्रीहि, तिल इन्होंमांहसें एक कोईसेकी पीठीका सर्प बनाय शूर्प अर्थात् छाजपर स्थापित करके सर्पकी प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र,–“ **एहि पूर्वमृतः सर्प अस्मिन् पिष्टे समाविश ॥ संस्कारार्थमहं भक्त्या प्रार्थयामि समाहितः** ” ऐसा कहके आवाहन आदि षोडशोपचारोंसें अच्छीतरह पूजा करके प्रणाम करना. पीछे तिसकों बलि देना. सो ऐसा–“ **भो सर्प इमं बलिं गृहाण ममाभ्युदयं कुरु** ” इस मंत्रसें बलि देके हाथ और पैरोंकों धोके आचमन करना. पीछे देश और कालका उच्चार करके “ **सभार्यस्य ममेह जन्मनि जन्मांतरे वा ज्ञानादज्ञानाद्वा जातसर्पवधोत्थदोषपरिहारार्थं सर्पसंस्कारकर्म करिष्ये,** ” इस प्रकार संकल्प करके वेदीपर अग्निकों स्थापित करके और ध्यान करके अन्वाधानका संकल्प करना. तिसका उच्चार–“ **अस्मिन् सर्पसंस्कारहोमकर्मणि देवतापरिग्रहार्थमन्वाधानं करिष्ये चक्षुषी आज्येनेत्यंते अग्नौ अग्निं वायुं सूर्यं आज्येन सर्पमुखे प्रजापतिमाज्येन आज्यशेषेण सर्पं सद्यो यक्ष्ये** ” ऐसा संकल्प करके अन्वाधान किये पीछे दो समिधोंका अग्निमें होम करना. पीछे अग्निके आग्नेयदिशामें पृथिवीकों प्रोक्षण करके तहां चिता करनी. पीछे अग्नि और चिता इनका परिसमूहन (एक प्रकारका जलसंस्कार)

करके आग्नेयदिशामें अग्र करके कुशोंका परिस्तरण करना. पीछे पर्युक्षण (पानीका संस्कार) करके छह पात्रोंकों स्थापित करके चक्षुषीहोमपर्यंत कर्म करना. पीछे सर्पकों चितापर स्थापित करना. पीछे पानी और कानकों स्पर्श करके **“भूस्वाहा अग्नय इदं नमम”** इन आदि तीन व्याहृतिमंत्रोंसें घृतकी तीन आहुतियोंकरके होम करना. पीछे सब व्याहृतियोंसें घृतकी चौथी आहुति सर्पके मुखमें देनी. और शेष रहे घृतकों स्रुवाकरके सर्पके देहपर छोड देना. यहां स्विष्टकृत् आदि होमशेष नहीं है. **चमस** पात्रमें पानी लेके तिस पानीसें, सब व्याहृतियोंसें हाथकरके वह सर्पकों धोना. पीछे तिसकों चितापर रखके तिसकों अग्नि लगाना. तिसका मंत्र—**“अग्ने रक्षाणो वसिष्ठोग्निर्गायत्री । सर्पायाग्निदाने विनियोगः ॥ अग्ने रक्षाणो अहंस० ऋक्,”** इन मंत्रोंसें अग्नि लगाके सर्पकी प्रार्थना करनी. उस प्रार्थनाका मंत्र—**“नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु ॥ ये अंतरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ ये दोरोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ॥ येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीँरनु ॥ ये वा वटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥ त्राहि त्राहि महाभोगिन् सर्पोपद्रवदुःखतः ॥ संततिं देहि मे पुण्यां निर्दुष्टां दीर्घदेहिनीम् ॥ प्रसन्नं पाहि मां भक्त्या कृपालो दीनवत्सल ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि कृतः सर्पवधो मया ॥ जन्मांतरे तथैतस्मिन् मत्पूर्वैरथवा विभो ॥ तत्पापं नाशय क्षिप्रमपराधं क्षमस्व मे,”** इस प्रकार सर्पकी प्रार्थना करके स्नान करना. फिर व्याहृतियोंकरके दूध और घृतसें अग्निकों प्रोक्षित करके सर्प दग्ध हो जावै तब जलसें अग्निकों सींचना. “सव्य रहके संपूर्ण सर्पसंस्कारकर्म करना, परंतु सर्पका अस्थिसंचयन अर्थात् सर्पकी हड्डियोंकों संचित नहीं करना. पीछे स्नान और आचमन करके घरकों जाना.” स्त्रीसहित यजमाननें तीन रात्रि आशौच पालके ब्रह्मचर्य पालना. चौथे दिन वस्त्रोंसहित स्नान करके घृत और खीरके भोजनसें आठ ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना. सो ऐसा- **“सर्पस्वरूपिणे ब्राह्मणाय इदं ते पाद्यम् ॥ अनंतस्वरूपिणे ब्राह्मणाय इदं ते पाद्यम् शेषस्वरूपि० कपिलस्वरूपि० नागस्वरूपि० कालिकस्वरूपि० शंखपालस्व० भूधरस्वरूपिणे ब्राह्मणाय इदं ते पाद्यम्”** इस प्रकार आठों ब्राह्मणोंकों पाद्य देके और अपने पैरोंकों धोके आचमन करना. पीछे आसन देना. तिसका मंत्र—**“सर्पस्वरूपिणे ब्राह्मणाय इदमासनमास्यताम्.”** ऐसेही अनंत आदिकोंभी आसन देना. पीछे क्षण देना. तिसका मंत्र—**“सर्पस्थाने क्षणः क्रियताम् इत्यादि ॐ तथा प्राप्नोतु भवान् प्राप्नुवानि” “भोः सर्परूप इदं ते गंधम्.”** ऐसेही अनंत आदिकोंभी क्षण, और गंध देना. इस प्रकार पुष्प, धूप, दीप, वस्त्र, इन आदि देके पीछे पात्रोंपर अन्नकों परोसके जलसें प्रोक्षण करके अन्न निवेदन (अर्पण) करना. तिसका मंत्र—**“सर्पाय इदमन्नं परिविष्टं परिवेक्ष्यमाणं च दत्तं च दास्यमानं चातृप्तेरमृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां न मम.”** ऐसेही अनंत आदि सातोंकों अन्न निवेदन करना. पीछे ब्राह्मणभोजन कराना. पीछे आचमन करके **“भो सर्प अयं ते बलिः”** इस आदि नाममंत्रोंसें बलिदान करना. और तिन पिंडोंकी वस्त्र आदिसें पूजा करनी. यहभी संपूर्ण कर्म सव्य होकेही करना. पीछे ब्राह्मणोंकों तांबूल और दक्षिणा आदि देके आचार्यकी पूजा करनी, और कलशपर सोनाके नागकी स्थापना करके आवाहन

आदि षोडशोपचारोंसें अच्छी तरह पूजा करके प्रार्थना करनी. तिसके मंत्र—"ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनागपुरोगमाः ॥ नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः संतु ते सदा ॥ विष्णुलोके च ये सर्पा वासुकिप्रमुखाश्च ये ॥ नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः संतु ते सदा ॥ रुद्रलोके च ये सर्पास्तक्षकप्रमुखास्तथा ॥ नमोस्तु० ॥ खांडवस्य तथा दाहे स्वर्गे ये च समाश्रिताः ॥ नमोस्तु० ॥ सर्पसत्रे च ये सर्पा आस्तिकेन च रक्षिताः ॥ नमोस्तु० ॥ मलये चैव ये सर्पाः कर्कोटप्रमुखाश्च ये ॥ नमोस्तु० ॥ धर्मलोके च ये सर्पा वैतरण्यां समाश्रिताः ॥ नमोस्तु० ॥ ये सर्पाः पार्वतीयेषु दरीसंधिषु संस्थिताः ॥ नमोस्तु० ॥ ग्रामे वा यदि वारण्ये ये सर्पाः प्रचरंति हि ॥ नमोस्तु० ॥ पृथिव्यां चैव ये सर्पा ये सर्पा बलिसंस्थिताः ॥ नमोस्तु० ॥ रसातले च ये सर्पा अनंताद्या महाबलाः ॥ नमोस्तु०" इस प्रकार प्रार्थना करनेके पीछे देश और कालका उच्चार करके कलशपर स्थापित किये हुए सर्पके दान करनेका संकल्प करके दान करना. तिसका मंत्र—"कृतस्य कर्मणः सांगतार्थमिमं हैमनागं सकलशं सवस्त्रं सदक्षिणं तुभ्यमहं संप्रददे न मम ॥ अनेन स्वर्णनागदानेन अनंतादयो नागदेवताः प्रीयंताम्," इस प्रकार दान करके आचार्यकों गौका दान देके कर्म समाप्त करना. तिसका मंत्र—"यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या० ॥ मया कृतं सर्पसंस्काराख्यकर्म तद्भवतां विप्राणां वचनात् परमेश्वरप्रसादात् सर्वं परिपूर्णमस्तु," इस प्रकार कर्मसमाप्तिके वाक्यका उच्चार किये पीछे ब्राह्मणोंनें "तथास्तु" ऐसा कहना. पीछे ब्राह्मणोंकों प्रसन्न करना. और कर्मकी सांगताके लिये ब्राह्मणोंकों भोजन देना. "इस विधिसें सर्पका संस्कार करनेसें मनुष्य रोगोंसें रहित हो जाता है और सुंदर संतानकों प्राप्त होता है," इस प्रकार करकेभी पुत्रकी उत्पत्ति नहीं होवै तौ कर्मविपाक ग्रंथमें कहा हुआ हरिवंशश्रवण आदि विधान करना. सो विधान षडब्द अर्थात् छह वर्षपर्यंत, चतुरब्द अर्थात् चार वर्षपर्यंत, त्र्यब्द अर्थात् तीन वर्षपर्यंत, सार्धाब्द अर्थात् डेढ वर्षपर्यंत, अब्द अर्थात् एक वर्षपर्यंत ऐसा प्रायश्चित्त करके पीछे हरिवंशश्रवण आदि करने.

तत्रत्रिंशत्कृच्छ्रात्मकोब्दः कृच्छ्रस्तुद्वादशदिनसाध्यः तथाहिप्रथमेदिनेमध्याह्नेहविष्यस्यैकभक्तस्यषड्विंशतिर्ग्रासाभोक्तव्याः द्वितीयेहनिनक्तंद्वाविंशतिर्ग्रासाः तृतीयेअयाचितस्यचतुर्विंशतिर्ग्रासाः चतुर्थेनिरशनं अयंपादकृच्छ्रःकथंचित्त्रिगुणीकृतोयंप्राजापत्यः कृच्छ्रः एकभक्तनक्तायाचितद्वयोपवासद्वयैरर्धकृच्छ्रः यद्वा त्र्यहमयाचितंत्र्यहमुपवासइत्यर्धकृच्छ्रःएकभक्तायाचितोपवासैःकथंचित्त्रिगुणैःपादोनकृच्छ्रःयेषुनवदिनेषुभोजनप्राप्तिस्तत्रग्रासानियमंत्यक्त्वापाणिपूरान्नभोजनेअतिकृच्छ्रःएकग्रासपर्याप्तस्यप्राणधारणपर्याप्तस्यवादुग्धस्यएकविंशतिदिनेषुभक्षणेकृच्छ्रातिकृच्छ्रःएकदिनेसकुशोदकमिश्रपंचगव्याशनंएकउपवासइतिद्वैरात्रिकःसांतपनकृच्छ्रःपंचगव्यकुशोदकानामामिश्राणामेकैकस्यैकैकदिनेऽशनमेकउपवासइतिसप्ताहसाध्योमहासांतपनःत्र्यहंमिश्रितपंगव्याशनेयतिसांतपनंतप्तानांदुग्धघृतजलानामेकैकस्यत्रिदिनेपानमुपवासत्रयंचेतितप्तकृच्छ्रः शीतानांपानेशीतकृच्छ्रःयद्वातप्तानांघृतादीनामेकैकदिनेऽशनंचतुर्थदिनेउपवासइतिदिनचतुष्टयसाध्यस्तप्तकृच्छ्रःद्वादशाहोपवासेनपराककृच्छ्रःशुक्लप

क्षेप्रतिपदादितिथिषुमयूरांडसमानैकैकग्रासान्वर्धयन्पूर्णिमायांपंचदशग्रासाःक्षयेचतुर्दशवृद्धौ षोडशसंपद्यंते कृष्णपक्षेएकैकग्रासऱ्हासेनामायामुपवासइतिमाससाध्यंयवमध्यसंज्ञंचांद्रायणंकृष्णपक्षेप्रतिपदिचतुर्दशग्रासान्भुक्त्वाएकैकग्रासऱ्हासेनदर्शेअनशनंशुक्लेवृद्धिरिति कृष्णादिशुक्लांतेतंपिपीलिकामध्यचांद्रायणं कृच्छ्रचांद्रायणादेःत्रिकालस्नानग्रासाभिमंत्रणादिविधियुतःप्रयोगःप्रायश्चित्तप्रकरणेज्ञेयः अतिकृच्छ्रादिलक्षणंप्रसंगादत्रोक्तं अब्दगणनातुप्राजापत्यकृच्छ्रैरेव ॥

अब कृच्छ्रोंके लक्षण कहताहुं.

तीस कृच्छ्रोंवाला अब्द होता है; कृच्छ्र प्रायश्चित्त बारह दिनोंमें होता है. सो दिखाते हैं.— प्रथम दिनमें मध्यान्हसमयमें हविष्यपदार्थके छव्वीस ग्रास बनाय एकही वख्त भोजन करना, दुसरे दिनमें नक्त करना, और तिसमें बाईस ग्रास लेने, तीसरे दिन याचना किये विना जो अन्न मिलैगा तिसके चौवीस चौवीस ग्रास लेने, और चौथे दिन भोजन नहीं करना, इसकों **पादकृच्छ्र** कहते हैं. और यह किसीक प्रकारसें तीनगुना किया **प्राजापत्यकृच्छ्र** कहाता है. पहले दिन दो पहरोंमें एक वार भोजन करना, दुसरे दिन रात्रिमें भोजन करना, तीसरे दिन तथा चौथे दिनमें अयाचित—अर्थात् नहीं मांगा हुआ भोजन करना; पांचमे और छठे दिनमें उपवास करना, इसकों **अर्धकृच्छ्र** कहते हैं, अथवा तीन दिन विना मांगे हुये अन्नका भोजन करना और तीन दिन उपवास करना, इसकोंभी **अर्धकृच्छ्र** कहते हैं. पहले दिन दुपहरकों एक काल भोजन करना और दूसरे दिन विना मांगे हुए अन्नका भोजन करना और तीसरे दिन उपवास करना इस प्रकार तीनगुना करनेकों **पादोनकृच्छ्र** कहते हैं. जिस नवमें दिनमें भोजन करनेका प्रसंग आता है तहां ग्रासके नियमकों त्यागके हाथमें रह सकै इस प्रमाण अन्नका भोजन करनेकों **अतिकृच्छ्र** कहते हैं. प्राणमात्र बच सकै इतना अथवा एक ग्रास परिमित दूध इक्कीस दिनपर्यंत पीना तिसकों **कृच्छ्रातिकृच्छ्र** कहते हैं. एक दिनमें कुशोदकसें मिश्रित किये पंचगव्यकों पीना और एक दिन उपवास करना ऐसे दो रात्रीकरके होनेवाला **सांतपनकृच्छ्र** होता है. एक दिन गोमूत्रकों पीना, दूसरे दिन गायके गोवरकों भक्षण करना, तीसरे दिन गायके दूधकों पीना, चौथे दिन गायकी दहीकों पीना, पांचमें दिन गायके घृतकों पीना, छठे दिन कुशोदक पीना और सातमे दिन उपवास करना इसकों **महासांतपनकृच्छ्र** कहते हैं. तीन दिनपर्यंत मात्र पंचगव्य पीना इसकों **यतिसांतपन** कहते हैं. प्रथम तीन दिनपर्यंत गरम दूध पीना, चौथे दिनसें आदि ले तीन दिन गरम घृत पीना और सातमे दिनसें अदि ले तीन दिनपर्यंत गरम पानी पीना और पीछे तीन दिन उपवास करना इसकों **तप्तकृच्छ्र** कहते हैं. दूध, घी और पानी ये पूर्व कहे हुए प्रकारसें शीतल पीने इसकों **शीतकृच्छ्र** कहते हैं, अथवा एक दिन गरम घृत पीना, पीछे दूसरे दिन गरम दूध पीना, पीछे तीसरे दिन गरम पानी पीना, पीछे चौथे दिन उपवास करना इसकों **तप्तकृच्छ्र** कहते हैं. बारह दिनपर्यंत उपवास करनेकों **पराककृच्छ्र** कहते हैं. शुक्लपक्षविषे प्रतिपदा आदि तिथियोंमें मोर पक्षीके अंडेके समान एक एक ग्रासकों बढाके पौर्णमासीकों पंदरह ग्रास लेने. शुक्ल पक्षमें किसीएक तिथीका क्षय हो जावै तब चौदह ग्रास होते हैं और

किसीक तिथीकी वृद्धि हो जावै तब सोलह ग्रास होते हैं. पीछे कृष्णपक्षमें एक एक ग्रास नित्यप्रति घटाना और अमावसमें उपवास करना. इस प्रकार एक महीना करनेसें **यवमध्यचांद्रायण** होता है. कृष्णपक्षकी प्रतिपदामें चौदह ग्रासोंका भोजन करके पीछे द्वितीयासें नित्यप्रति एक एक ग्रासकों घटाना और अमावसकों उपवास करना, पीछे शुक्लपक्षमें एक एक ग्रास नित्यप्रति बढाना. इस प्रकार कृष्णपक्षमें आरंभ और शुक्लपक्षमें समाप्ति करना इसकों **पिपीलिकामध्यचांद्रायण** कहते हैं. कृच्छ्रचांद्रायण आदि त्रिकाल स्नान और ग्रासोंकों अभिमंत्रित करना इस आदि विधिसें युत हुआ प्रयोग प्रायश्चित्तग्रंथमें देख लेना. अतिकृच्छ्र आदिका लक्षण प्रसंगसें यहांही कहा है. अब्दोंकी संख्या तौ प्राजापत्यकृच्छ्रोंसेंही करनी.

अथप्रत्याम्नाया:तत्रप्राजापत्यप्रत्याम्नाया:दशसहस्रगायत्रीजपः गायत्र्यासहस्रंतिलहोमः क्वचित्सहस्रंव्याहृत्यातिलहोमउक्तः शतद्वयंप्राणायामाः द्वादशब्राह्मणभोजनं यावत्केशशोषणंविरम्यतीर्थेद्वादशस्नानानि वेदसंहितापारायणं योजनयात्रा द्वादशसहस्रंनमस्काराः द्वात्रिंशदुत्तरशतंप्राणायामान्कृत्वाअहोरात्रमुपोषित:प्राङ्मुखस्तिष्ठेत् गोमूत्रेणयावकभक्षणे ऐकाहिककृच्छ्रं कश्चित्रुद्रैकादशिनीजपात्कृच्छ्रमाह पावकेष्टिः पावमानेष्टिःषडुपवासाः प्राजापत्यप्रत्याम्नायाः एकविप्रभोजनमुपवासस्य अत्यशक्तौसहस्रगायत्रीजपोद्वादशप्राणायामावेतिस्मृत्यर्थसारे प्राजापत्येष्वशक्तस्तुधेनुंदद्यात्पयस्विनीं धेनोरभावेनिष्कंस्यात्तदर्धंपादमेव या अशीतिगुंजात्मकःकर्षः चत्वारःकर्षानिष्कं निष्कनिष्कार्धनिष्कपादान्यतमप्रमाणंहेम रूप्यंवाधेनुमूल्यंदेयं अत्यशक्तेननिष्कपादार्धरजतंतत्समंधान्यादिवादेयं अतिकृच्छ्रेगोद्वयं सांतपनेगोद्वयं पराकेतप्तकृच्छ्रेचगोत्रयं कृच्छ्रातिकृच्छ्रेगोचतुष्टयंगोत्रयंवा चांद्रायणेअष्टौ पंचचतस्रस्तिस्रोवागावः मासंपयोव्रतेयावकव्रतेमासोपवासेचपंचगावः मासंगोमूत्रयावकव्रतेषट्गावः ॥

अब कृच्छ्रोंके प्रतिनिधि कहताहुं.

प्राजापत्यकृच्छ्रकी जगह दश हजार गायत्रीका जप करना. गायत्रीमंत्रसें एक हजार तिलकी आहुतियोंका हौम करना. कितनेक ग्रंथोंमें व्याहृतियोंकरके तिलोंकी हजार आहुति देनी ऐसा कहा है. दोसो प्राणायाम करने. बारह ब्राह्मणोंकों भोजन कराना. जितने कालतक वाल सूख जावै तबतक विराम करके तीर्थमें बारह स्नान करने. वेदकी संहिताका पारायण करना. चार कोशपर्यंत तीर्थयात्रा करनी. बारह हजार प्रणाम करने. १३२ प्राणायाम करके दिनरात्र उपवास करके पूर्वके तर्फ मुखवाला होके खडे रहना. गोमूत्रके संग जवोंकों भक्षण करनेसें ऐकाहिककृच्छ्र होता है. कोईक ग्रंथकार रुद्रमंत्रकी अग्यारह आवृत्ति करनेसें कृच्छ्र होता है ऐसा कहते हैं. पावकेष्टि करानी. पावमानेष्टि करानी. छह उपवास करने. ये प्रत्येक प्राजापत्यकृच्छ्रके प्रतिनिधी हैं. उपवासके स्थानमें एक ब्राह्मणभोजन कराना. अत्यंत अशक्ति होवै तौ एक हजार गायत्रीका जप करना, अथवा बारह प्राणायाम करने ऐसा **स्मृत्यर्थसार ग्रंथमें** लिखा है. “ प्राजापत्यकृच्छ्र करनेमें समर्थ नहीं होवै तौ बहुतसे दूधवाली गौका दान करना. गौके अभावमें एक निष्कपरिमित अथवा आधा निष्कप-

रिमित अथवा चौथाई निष्कपरिमित द्रव्य देना." अश्शी चिरमठियोंका कर्ष होता है और चार कर्षोंका निष्क कहाता है. एक निष्क, आधा निष्क, चौथाई निष्क इन्होंमांहसें एक कोईसे प्रमाणसें सोना अथवा चांदी गौका मूल्य देना. अत्यंत अशक्ति होवै तौ निष्कका आठमा हिस्सा प्रमाण चांदी अथवा तिसके मूल्यके समान अन्न आदि देना. अतिकृच्छ्रके स्थानमें दो गोदान करने. सांतपनके स्थानमें दो गोदान करने. पराककृच्छ्रके स्थानमें और तप्तकृच्छ्रके स्थानमें तीन गोदान करने. कृच्छ्रातिकृच्छ्रके स्थानमें चार गोदान अथवा तीन गोदान करने. चांद्रायणके स्थानमें आठ गोदान अथवा पांच गोदान अथवा चार गोदान अथवा तीन गोदान करने. एक महीनापर्यंत दूधका व्रत और एक महीनापर्यंत जवोंका व्रत और एक महीनापर्यंत उपवास करना इन सबोंके स्थानोंमें पांच गोदान करने. एक महीनापर्यंत गोमूत्रके साथ जवोंकों भक्षण करनेके व्रतके स्थानमें छह गोदान करने.

अथप्रायश्चित्तप्रयोगः सचैलंस्नात्वाशक्तौक्लिन्नवासाःपर्षदग्रेगोवृषप्रत्याम्नायंनिष्कादिप्रमाणंब्रह्मदंडंनिधायसाष्टांगंप्रणम्यपर्षदंप्रदक्षिणीकुर्यात् सर्वेधर्मविवेक्तारोगोप्तारःसकलाद्विजाः ममदेहस्यसंशुद्धिंकुर्वंतुद्विजसत्तमाः मयाकृतंमहाघोरंज्ञातमज्ञातकिल्बिषं प्रसादःक्रियतांमह्यंशुभानुज्ञांप्रयच्छथ पूज्यैःकृतपवित्रोहंभवेयंद्विजसत्तमाः मामनुगृह्णंतुभवंतइतिवदेत् विप्रैःकिंतेकार्यंमिथ्यामावादीःसत्यमेववदेतिपृष्टःस्वपापंख्यापयेत्मयाममपत्न्यावाइहजन्मनिजन्मांतरेवा अनपत्यत्वमृतापत्यत्वादिनिदानभूतबालघातविप्ररत्नापहारादिदुरितंतस्यनाशायकरिष्यमाणे हरिवंशश्रवणादौकर्मविपाकोक्तेविधानेऽधिकारार्थंदीर्घायुष्मत्पुत्रादिसंतति प्राप्तयेप्रायश्चित्तमुपदिशंतुभवंतइतिप्रार्थयेत् तेचपापिनापूजितानुवादकाग्रे षडब्दत्र्यब्दसार्धाब्दान्यतमप्रायश्चित्तेनपूर्वोत्तरांगसहितेनाचरितेनतवशुद्धिर्भविष्यति तेनत्वंकृतार्थोभविष्यसीतिवदेयुःअनुवादकःपापिनंवदेत् ततःकर्ताओमित्यंगीकृत्यपर्षदंविसृज्यदेशकालौसंकीर्त्यसभार्यस्यममैतज्जन्मजन्मांतरार्जितानपत्यत्वादिनिदानभूतबालघातविप्ररत्नापहारादिजन्यदुरितसमूलनाशकर्मविपाकोक्तविधिनाधिकारसिद्धिद्वारादीर्घायुष्मद्बहुपुत्रादिसंततिप्राप्तये षडब्दंत्र्यब्दंसार्धाब्दंवाप्रायश्चित्तंपूर्वोत्तरांगसहितममुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्यइतिसंकल्प्य दिनांतेकेशरोमनखादिवापयित्वास्नात्वा आयुर्बलंयशोवर्चःप्रजाःपशुवसूनिच ब्रह्मप्रज्ञांचमेधांच त्वंनोदेहिवनस्पतेइतिविहितकाष्ठेनदंतधावनंकुर्यात् ततोदशस्नानानि तत्रभस्मस्नानं ईशानायनमःशिरसि तत्पुरुषायनमःमुखे अघोरायनमःहृदये वामदेवायनमोगुह्ये सद्योजातायनमः पादयोः प्रणवेनसर्वांगेषुभस्मविलिंपेत् ईशानादिपदोपेतैर्मंत्रैर्वाभस्मलेपः ततःस्नात्वाचामेत्॥

अब प्रायश्चित्तका प्रयोग कहताहुं.

वस्त्रोंसहित स्नान करके और शक्ति होवै तौ गीले वस्त्रोंकों धारण करके ब्राह्मणोंकी सभाके आगे गौ और बैलका प्रतिनिधिरूप निष्क आदि प्रमाणसें युत ब्रह्मदंडकों स्थापित करके तिसकों साष्टांग प्रणाम करके सभाकों परिक्रमा करके प्रार्थना करनी. तिसका मंत्र—"सर्वे धर्मविवेक्तारो गोप्तारः सकला द्विजाः ॥ मम देहस्य संशुद्धिं कर्वंतु द्विजसत्तमाः ॥ मया

कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्बिषं ॥ प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छथ ॥ पूज्यैः कृतपवित्रोहं भवेयं द्विजसत्तमाः ॥” इस प्रकार ब्राह्मणोंकी प्रार्थना करके पीछे “**मामनुगृह्णंतु भवंतः**”—इस प्रकार कहना. “**विप्रैः किं ते कार्यं मिथ्या मा वादीः सत्यमेव वदेति पृष्टः स्वपापं ख्यापयेत्**” क्या तेरा कार्य है, झूठ मत बोल. सत्य कह. ऐसा पूछ्या हुआ उसनें अपने पापकों कहना. सो ऐसा. “**मया मम पत्न्या वा इह जन्मनि जन्मान्तरे वा अनपत्यत्वमृतापत्यत्वादिनिदानभूतबालघातविप्ररत्नापहारादि दुरितं कृतं तस्य नाशाय करिष्यमाणे हरिवंशश्रवणादौ कर्मविपाकोक्ते विधानेऽधिकारार्थं दीर्घायुष्मत्पुत्रादिसंततिप्राप्तये प्रायश्चित्तमुपदिशंतु भवंतः**” (मैनें अथवा मेरी पत्नीनें इस जन्ममें अथवा अन्य जन्ममें वांझपना, मृतसंततिपना, इन्होंकी कारणरूपी बालहत्या और ब्राह्मणोंके रत्नोंकों हरना इन आदि पाप किये होवैं तिन्होंके नाशके अर्थ कर्मविपाकमें कहे हुये हरिवंशश्रवण आदि विधानमें अधिकारके अर्थ और बहुत आयुवाले पुत्र आदि संततिकी प्राप्तिके अर्थ आप प्रायश्चित्तका उपदेश करौ. ऐसी प्रार्थना किये पीछे तिन ब्राह्मणोंनें)—पापीसें पूजित किये अनुवादकके आगे “**षडब्दत्र्यब्दसार्धाब्दान्यतमप्रायश्चित्तेन पूर्वोत्तरांगसहितेनाचरितेन तव शुद्धिर्भविष्यति तेन त्वं कृतार्थो भविष्यसि**” (छह वर्षपर्यंत, तीन वर्षपर्यंत और डेढ वर्षपर्यंत होनेवाले प्रायश्चित्तोंमांहसें एक कोईसे प्रायश्चित्तकों पूर्वोत्तरांगसहित करनेसें तेरी शुद्धि होवैगी. तिसकरके तूं कृतार्थ होवैगा) इस प्रकार कहना, सो अनुवादकनें पापीकों कहना. पीछे प्रायश्चित्त करनेवालेनें “**ॐम्**” (तथास्तु) ऐसा कहके अनुवादकनें कहेमुजब अंगीकार करना. पीछें ब्राह्मणोंकी सभाका विसर्जन करके देश और कालका उच्चार करके “**सभार्यस्य ममैतज्जन्मजन्मांतरार्जितानपत्यत्वादिनिदानभूतबालघातविप्ररत्नापहारादिजन्यदुरितसमूलनाशकर्मविपाकोक्तविधिनाधिकारसिद्धिद्वारा दीर्घायुष्मद्बहुपुत्रादिसंततिप्राप्तये षडब्दं त्र्यब्दं सार्धाब्दं वा प्रायश्चित्तं पूर्वोत्तरांगसहितममुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्ये**” ऐसा संकल्प करके मध्यान्हमें क्षौर करवायके स्नान करना. पीछे वनस्पतिकी प्रार्थना करनी. तिसका मंत्र—“**आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च ॥ ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वन्नो देहि वनस्पते**” इस मंत्रसें वनस्पतिकी प्रार्थना करके विहित काष्ठसें दंतधावन करना. पीछे दशवार स्नान करना. तिन स्नानोंमें पहले भस्मसें स्नान करना. सो ऐसा. भस्म हाथमें लेके “**ईशानाय नमः**” इस मंत्रसें शिरकों लगाना. “**तत्पुरुषाय नमः**” इस मंत्रसें मुखकों लगाना. “**अघोराय नमः**” इस मंत्रसें हृदयकों लगाना. “**वामदेवाय नमः**” इस मंत्रसें गुदाकों लगाना. “**सद्योजाताय नमः**” इस मंत्रसें पैरोंकों लगाना. पीछे “**ॐम्**” इस मंत्रसें भस्म सब अंगोंकों लीप देना. अथवा ईशान आदि पदोंसें युत हुये मंत्रोंकरके भस्मका लेप करना. पीछे स्नान करके आचमन करना.

अथगोमयस्नानं गोमयमादाय प्रणवेनदिक्षुदक्षिणभागंतीर्थेचोत्तरभागंप्रक्षिप्यशेषंमानस्तोकेत्यभिमंत्र्यगंधद्वारामितिसर्वांगमालिप्यहिरण्यशृंगमितिद्वाभ्यांप्रार्थ्ययाःप्रवतइतितीर्थमभिमृश्यस्नात्वाद्भिरामाचेत् ॥

अब गोमयस्नान कहताहुं.—गोवर लेके “**ॐम्**” इस मंत्रसें गोवरका दक्षिण

भाग चार दिशाओंमें फेंकना. और उत्तरभाग तीर्थमें फेंकना, और बाकी रहा गोवर “**मानस्तोके०**” इस मंत्रसें अभिमंत्रण करके “**गंधद्वाराम्०**” इस मंत्रसें संपूर्ण अंगोंकों गोवर लगाय “**हिरण्यशृंगम्**” इन दो मंत्रोंसें तीर्थकी प्रार्थना करके “**याःप्रवत०**” इस मंत्रसें तीर्थकों स्पर्श करके तिसमें स्नान करके दोवार आचमन करना.

अथमृत्तिकास्नानं अश्वक्रांतेरथक्रांतेविष्णुक्रांतेवसुंधरे शिरसाधारयिष्यामिरक्षस्वमांपदेपदेइतिमृत्तिकामभिमंत्र्य उद्धृतासिवराहेणकृष्णेनशतबाहुना मृत्तिकेहरमेपापंयन्मयादुष्कृतंकृतं इतितामादाय नमोमित्रस्येतिसूर्यायप्रदर्श्यगंधद्वारामितिमंत्रेणस्योनापृथिवीतिमंत्रेणवाइदंविष्णुरितिवाशिरःप्रभृत्यंगानिविलिंपेत्स्नात्वाद्विराचामेत् ॥

अब मृत्तिकास्नान कहताहुं.—“**अश्वक्रांते रथक्रांते विष्णुक्रांते वसुंधरे ॥ शिरसा धारयिष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे**” इस मंत्रसें मृत्तिकाकों अभिमंत्रित करके “**उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना ॥ मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्**” इस मंत्रसें मृत्तिका लेके “**नमोमित्रस्य०**” इस मंत्रसें सूर्यकों दिखाय, पीछे “**गंधद्वाराम्**” इस मंत्रसें अथवा “**स्योनापृथिवी०**” इस मंत्रसें अथवा “**इदंविष्णु०**” इस मंत्रसें मस्तक आदि सब अंगोंपर मृत्तिका लगाय स्नान करके दोवार आचमन करना.

अथवारिस्नानं आपोअस्मानित्युक्त्वाभास्कराभिमुखःस्थितः इदंविष्णुर्जपित्वाचप्रतिस्रोतोनिमज्जति ततःपंचगव्यकुशोदकैःपृथक्पृथक्स्नात्वास्नानांगतर्पणादिकुर्यात् विष्णुश्राद्धंपूर्वांगगोप्रदानंचकृत्वा अग्निंप्रतिष्ठाप्यपंचगव्यहोमंव्याहृतिभिरष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिंवाऽज्यहोमंचकृत्वाव्रतंग्रहीष्यइतिविप्रान्प्रार्थ्यहुतशेषंपंचगव्यंप्रणवेनपिबेत् ॥

अब पानीसें स्नान कहताहुं.— “**आपो अस्मान्०**” यह मंत्र कहके सूर्यके सन्मुख स्थित होके “**इदंविष्णु०**” इस मंत्रका जप करके पानीके प्रवाहके सन्मुख गोता मारना. पीछे पंचगव्य और कुशोदकसें पृथक् पृथक् स्नान करके स्नानके अंगरूपी तर्पण आदिकों करना. पीछे विष्णुश्राद्ध और पूर्वांगसंबंधी गोप्रदान करके और अग्निकों प्रतिष्ठापित करके पंचगव्यका होम और व्याहृतिमंत्रोंसें १०८ अथवा २८ घृतकी आहुतिरूप होम करके “**व्रतं ग्रहीष्ये,**” इस प्रकार ब्राह्मणोंकी प्रार्थना करके होमसें शेष रहे पंचगव्यकों “**ॐम्**” इस मंत्रसें पीना.

मुख्यप्रायश्चित्तकृच्छ्रान्संकल्पानुसारेणानुष्ठायव्याहृत्याज्यहोमविष्णुश्राद्धगोदानानिपूर्ववत्कुर्यात्आज्यहोमेपंचगव्यहोमेचइध्माधानादिस्थालीपाकेतिकर्तव्यतांकेचिन्नेच्छति व्याहृत्याज्यहोमेपापापहमहाविष्णुर्देवतेतिकेचित् ॥

मुख्य प्रायश्चित्तोंके कृच्छ्र संकलपके अनुसार करके व्याहृतिमंत्रोंसें घृतका होम, विष्णुश्राद्ध, गोदान इन्होंकों पहलेकी तरह करना. घृतके होमके और पंचगव्यके होमके स्थानमें इध्मास्थापन इत्यादिक स्थालीपाकका विधि नहीं करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. व्याहृतिमंत्रोंसें जो घृतका होम है तिसके स्थानमें पापोंका नाश करनेवाला विष्णु देवता है ऐसा कितनेक मुनि कहते हैं.

पंचगव्यविधिस्तुताम्रेपालाशेवापात्रेताम्रायागोर्मूत्रमष्टमाषप्रमाणंगायत्र्यादाय गंधद्वारामितिश्वेतगोशकृत्षोडशमाषमादायआप्यायस्वेतिपीतगोक्षीरंद्वादशमाषंदधिक्राव्णइतिनीलगोर्दधिदशमाषं तेजोसिशुक्रमसीतिकृष्णगोघृतमष्टमाषमादायतत्रदेवस्यत्वेतिकुशोदकंचतुर्माषंप्रक्षिप्यप्रणवेनालोडयेत् अत्रमाषःपंचगुंजात्मकः तत्सप्तपत्रैःसाग्रैःकुशैर्जुहुयात् इरावतीतिपृथ्वीं इदंविष्णुरितिविष्णुं मानस्तोकेतिरुद्रं शन्नोदेवीत्यपः ब्रह्मजज्ञानमितिब्रह्माणंवाअग्निंसोमंचनाम्नागायत्र्यासूर्यंप्रजापतेनत्वेतिसमस्तव्याहृतिभिर्वाप्रजापतिंप्रणवेनप्रजापतिंअग्निंस्विष्टकृतंचनाम्नेत्येताः पंचगव्येनाग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचेतिवामहाविष्णुंवाज्येनाष्टाविंशतिसंख्याहुतिभिरित्यन्वाधानं स्त्रीशूद्राणांहोमोनकार्यः केचिद्ब्राह्मणद्वाराहोमःकार्यइत्याहुः स्त्रीशूद्राणांपंचगव्यपानेविकल्पइतिमहार्णवः ॥

अब पंचगव्यका विधि कहताहुं.—तांबाके अथवा पलाशके पात्रमें लाल गौके आठ मासे परिमित मूत्रकों गायत्रीमंत्रसें डालके तिसमें सपेद गौका सोलह मासे परिमित गोवर—“गंधद्वाराम्” इस मंत्रसें डालना. पीले वर्णकी गौका बारह मासे परिमित दूध “आप्यायस्व०” इस मंत्रसें डालना. नीली गौका दश मासे परिमित दही लेके “दधिक्राव्ण०” इस मंत्रसें तिस पात्रमें डालना. काली गौका घृत आठ मासे परिमित लेके “तेजोसि शुक्रमसि०” इस मंत्रसें तिस पात्रमें डालना. “देवस्यत्वा०” इस मंत्रसें चार मासे परिमित कुशोदक डालके “ॐम्” इस मंत्रसें आलोडित करना. यहां पांच चिरमठियोंका मासा लेना. ऐसे पंचगव्यकों करके अग्रभागवाले सात कुशाओंसें पंचगव्यका होम करना. तिसका अन्वाधान—“इरावतीति पृथिवीम् इदंविष्णुरिति विष्णुं मानस्तोकेति रुद्रं शन्नोदेवीत्यपः ब्रह्मजज्ञानमिति ब्रह्माणं वा अग्निं सोमं च नाम्ना गायत्र्या सूर्यं प्रजापतेनत्वेति समस्तव्याहृतिभिर्वा प्रजापतिं प्रणवेन प्रजापतिं अग्निं स्विष्टकृतं च नाम्नेत्येताः पंचगव्येन अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं चेति वा महाविष्णुं वाज्येनाष्टाविंशतिसंख्याहुतिभिः०” इस प्रकार अन्वाधान करके तिसके अनुसार होम करना. स्त्रीनें और शूद्रोंनें होम नहीं करना. कितनेक ग्रंथकार कहते हैं की स्त्रियोंनें और शूद्रोंनें ब्राह्मणके द्वारा होम कराना. स्त्रियोंको और शूद्रोंको पंचगव्यके पानमें विकल्प है ऐसा **महार्णव ग्रंथमें** कहा है.

स्त्रीशूद्रौविप्रैःपंचगव्यंकारयित्वातूष्णींपिबतइतिस्मृत्यर्थसारः अयंप्रायश्चित्तविधिःकृच्छ्रन्यूनप्रायश्चित्तेषुनकार्यः कृच्छ्रप्रभृतिषुसर्वत्रप्रायश्चित्तेष्वनुष्ठेयः एवंकृच्छ्राद्यनुष्ठायसूर्यारुणसंवादमहार्णवादिकर्मविपाकग्रंथोक्तंहरिवंशादिश्रवणादिकर्मकुर्यात् तत्रशुभेदिनेदेशकालौ संकीर्त्य अनेकजन्मार्जितानपत्यत्वमृतापत्यत्वादिनिदानभूतबालघातनिक्षेपहरणविप्ररत्नापहरणादिजन्यदुरितसमूलनाशद्वारादीर्घायुष्मद्बहुपुत्रादिसंततिप्राप्तिकामोहरिवंशंश्रोष्यामीत्येकस्यकर्तृत्वे दंपत्योःकर्तृत्वेश्रोष्यावइतिसंकल्प्यगणेशपूजनस्वस्तिवाचननांदीश्राद्धानिविनायकशांतिंचकृत्वाहरिवंशश्रवणार्थंश्रावयितारंत्वांवृणे विप्रंवृत्वावस्त्रालंकारैःपूजयेत् वाचकंप्रत्यहंपायसादिनाभोजयेत् दंपतीप्रतिदिनंत्रायंतामित्यादिवैदिकैःसुरास्त्वामितिपौराणैश्चमंत्रैः सुस्नातावलंकृतौतदेकचित्तौशृण्वंतौतैलतांबूलक्षौरमैथुनखट्वाशयनानियावत्समाप्तिवर्जयंतौ

हविष्यंभुंजीयातां अंतेवाचकायगांसुवर्णत्रयमेकंवासुवर्णंदक्षिणांदत्वाप्रत्यवरोहमंत्रेणसहस्रं तिलाज्यंहुत्वा शतंविप्रान्चतुर्विंशतिमिथुनानिवापायसेनभोजयेदितिहरिवंशश्रवणप्रयोगः ॥

ब्राह्मणोंके द्वारा पंचगव्य बनवायके स्त्री और शूद्रोंनें मंत्ररहित पीना ऐसा **स्मृत्यर्थसार ग्रंथमें** कहा है. यह प्रायश्चित्तविधि कृच्छ्रसें न्यून अर्थात् कम होवै ऐसे प्रायश्चित्तोंमें नहीं करना, कृच्छ्र आदि सब प्रायश्चित्तोंमें करना. ऐसे कृच्छ्र आदि प्रायश्चित्त करके, **सूर्यारुणसंवाद** और **महार्णव** आदि कर्मविपाकके ग्रंथोंमें कहा हुआ हरिवंश आदि ग्रंथोंका सुनना आदि कर्म करना. तहां शुभ दिनमें देश और कालका उच्चार करके संकल्प करना. सो ऐसा—“ **अनेकजन्मार्जितानपत्यत्वमृतापत्यत्वादिनिदानभूतबालघातनिक्षेपहरणविप्ररत्नापहरणादिजन्यदुरितसमूलनाशद्वारा दीर्घायुष्मत्बहुपुत्रादिसंततिप्राप्तिकामो हरिवंशं श्रोष्यामि** ” इस प्रकार अकेला यजमान सुननेवाला होवै तौ संकल्प करना. स्त्रीसहित यजमान सुनने चाहै तौ—“ **श्रोष्यावः** ” ऐसा संकल्प करके गणेशपूजन, स्वस्तिवाचन, नांदीश्राद्ध और विनायकशांति करके हरिवंश श्रवण करनेके लिये कथा श्रवण करावनेवाले ब्राह्मणका वरण करना. सो ऐसा—“ **हरिवंशश्रवणार्थं श्रावयितारं त्वां वृणे** ” इस प्रकार ब्राह्मणका वरण करके वस्त्र और गहना आदिकरके पूजा करनी, और वाचनेवाले पंडितकों नित्यप्रति खीर आदिकरके भोजन करवाना. स्त्रीपुरुषनें नित्यप्रति—“ **त्रायंताम्०** ” इस आदि वेदके मंत्रोंसें अथवा—“ **सुरास्त्वा०** ” इस आदि पुराणके मंत्रोंसें स्नान करके गहनोंसें अलंकृत होके पीछे एकाग्रचित्तसें ग्रंथका श्रवण करना. जबतक ग्रंथकी समाप्ति नहीं होवै तबतक तेल, तांबूल, क्षौर, मैथुन और पलंगपर सोना इन्होंकों वर्ज देना. हविष्य अन्नका भोजन करना. ग्रंथके अंतमें गौ और तीन तोले अथवा एक तोला सोनाकी दक्षिणा वाचनेवाले पंडितकों देके “ **प्रत्यवरोह०** ” इस मंत्रसें तिल और घृतकी हजार हजार आहुति देके १०० ब्राह्मण अथवा स्त्रीपुरुषोंके चौवीस जोड़े इन्होंकों दूधकी खीरसें भोजन करवाना. इस प्रकार हरिवंशश्रवणका प्रयोग समाप्त हुआ.

अथविधानांतराणि सौवर्णंबालकंकृत्वादद्याद्दोलासमन्वितं अथवावृषभंदद्याद्विप्रोद्वाहनमेववा महारुद्रजपोवापिलक्षपद्मैःशिवार्चनं स्वर्णधेनुःप्रदातव्यासवत्सावायथाविधि घृतकुंभप्रदानंवासंक्षेपादिदमीरितं अथवाप्रत्यहंपार्थिवलिंगपूजांकृत्वाअभिलाषाष्टकजपंसंवत्सरंकुर्यात् अभिलाषाष्टकस्तोत्रंकौस्तुभेज्ञेयं एवमपिफलाप्राप्तौदत्तपुत्रोग्राह्यः ॥

अब दूसरे विधान (संतति होनेके) कहताहुं.

“ सोनाकी बालककी प्रतिमा वनाय दोला अर्थात् पालकीमें बैठाय दान करना अथवा बैलका दान करना, अथवा ब्राह्मणका विवाह करना. महारुद्रका जप अथवा लक्ष कमलोंकरके शिवकी पूजा करनी, अथवा विधिके अनुसार वछडासहित गौ देनी, अथवा घृतसें पूरित कलशका दान करना. इस तरह संक्षेपसें कहा है. ” अथवा नित्यप्रति पार्थिवलिंगकी पूजा करके अभिलाषाष्टक स्तोत्रका जप वर्षपर्यंत करना. अभिलाषाष्टक स्तोत्र **कौस्तुभग्रंथमें** कहा है सो देख लेना. इस प्रकार करनेसेंभी संततिकी प्राप्ति नहीं होवै तौ दत्तपुत्र ग्रहण करना.

अथदत्तकेग्राह्याग्राह्यविचारः ब्राह्मणानांसोदरभ्रातृपुत्रोमुख्यत्वात्प्रथमंग्राह्यः तदभावेसगोत्रसपिंडोयःकश्चित् सापत्नभ्रातृपुत्रोवा तदभावेत्वसगोत्रसपिंडोमातुलकुलजःपितृष्वस्रादिकुलजः तदभावेत्वसपिंडःसमानगोत्रःतदभावेत्वसपिंडःपृथक्गोत्रोपि असगोत्रसपिंडेषु भागिनेयदौहित्रौवर्ज्यौ एवंविरुद्धसंबंधापत्त्यापुत्रबुद्ध्यनर्होमातुलोपिनग्राह्यःअतएवसगोत्रसपिंडेषुभ्रातापितृव्योवानग्राह्यः विप्रादीनांवर्णानांसमानवर्णएव तत्रापिदेशभेदप्रयुक्तगुर्जरत्वांध्रत्वादिनासमानजातीयएव सर्वोपिसभ्रातृकएवग्राह्यः तत्रापिज्येष्ठपुत्रोनग्राह्योनदेयः शूद्रस्यदौहित्रभागिनेयावपिग्राह्यौ अत्रमूलं भ्रातृणामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान्भवेत् सर्वेतेतेनपुत्रेणपुत्रिणोमनुरब्रवीत् अनेनवचनेननापुत्रस्यलोकोस्तिजायमानोवैब्राह्मणस्त्रिभिर्ऋणवान्जायतइत्यादिशास्त्रबोधितस्याप्रजत्वप्रयुक्तदोषस्यनिवृत्तिर्विधिनाअस्वीकृतेनापिभ्रातृपुत्रेणपितृव्यस्यभवतीतिबोध्यते अतःपुत्रसदृशत्वात्ग्राह्येषुमुख्यइतिज्ञाप्यते मुख्याभावेतत्सदृशः प्रतिनिधिरितिन्यायात् नचास्मादेववाक्याद्विधिवत्प्रतिग्रहंविनैवतस्यपुत्रत्वमितिशंक्यं तथासतिऔरसदत्तकादिद्वादशविधपुत्रवदेतस्यपत्नीतःपूर्वमेवधनहारित्वपिंडदत्वौचित्येन पत्नीदुहितरश्चैवपितरौभ्रातरस्तथा तत्सुतागोत्रजाबंधुरितितत्क्रमवाक्येभ्रात्रनंतरंभ्रातृसुतनिवेशानुपपत्तेः तस्मात्पत्नीतःपूर्वंमदीयपिंडदानधनग्रहणेधिकारीकश्चिद्भवत्विति कामनायांविधिवत्स्वीकृतएवतथाधिकारीभवतिनान्यथा तादृशकामनायाअभावेतुपितृऋणापाकरणादिपारलौकिकमात्रार्थंदत्तपुत्रोनग्राह्यः भ्रातृपुत्रेणैवतत्सिद्धेरित्येवंवचनतात्पर्यं क्वचिद्देशेवैदिकविधिंविनापिदातृग्रहीतृसंमतिराजपुरुषाद्यनुमत्यादिलौकिकव्यापारमात्रेणोपनयनादिसंस्कारकरणमात्रेणचसगोत्रसपिंडेपुत्रत्वसिद्धिव्यवहारोदृश्यते तत्रमूलंनोपलभ्यते सर्वासामेकपत्नीनामेकाचेत्पुत्रिणीभवेत् सर्वास्तास्तेनपुत्रेणपुत्रिण्योमनुरब्रवीत्इतिवचनंतुसापत्नपुत्रस्यागृहीतस्यापिपुत्रत्वपिंडदानाद्यधिकारित्वविधायकं तेनैकसपत्न्याःसपुत्रत्वेन्यसपत्न्यापुत्रोनग्राह्यःदौहित्रोभागिनेयश्चशूद्राणांविहितःसुतः ब्राह्मणादित्रयेनास्तिभागिनेयःसुतःक्वचित् नत्वेवैकंपुत्रंदद्यात्प्रतिगृह्णीयाद्वेतिनज्येष्ठंपुत्रंदद्यादितिच अत्रौरसानेकपुत्रेणपुत्रदानंकार्यमितिविधीयते तेनपूर्वंदत्तकोगृहीतःततःऔरसोजातस्तादृशानेकपुत्रेणदत्तकएकलऔरसोवानदेयः सधवयास्त्रियापत्यनुज्ञयापुत्रोगृहीतव्योदातव्यश्च भर्त्रनुज्ञाभावेतुनग्राह्योनदेयः एवंविधवयापिस्त्रियात्वयापुत्रःस्वीकार्यइतिउक्त्वाभर्तरिमृतेग्राह्यःस्पष्टमीदृशानुज्ञाभावेभर्तृजीवनदशायांतन्मरणोत्तरमाप्तमुखाद्वापुत्रस्वीकारविषयकभर्त्रभिप्रायंज्ञातवत्यापिग्राह्यइतिसर्वसंमतं एतदुभयविधभर्त्रनुज्ञाभावेपि तत्तच्छास्त्रान्नित्यकाम्यव्रतादिधर्माचरणइवपुत्रप्रतिग्रहेपिनापुत्रस्यलोकोस्तीत्यादिसामान्यशास्त्रादेवविधवायाअधिकारः नस्त्रीपुत्रंदद्यात्प्रतिगृह्णीयाद्वान्यत्रभर्त्रनुज्ञानादितिवसिष्ठवाक्यंतुभर्त्रनुज्ञारहितांप्रतिपुत्राप्रतिग्रहाभ्यनुज्ञापरं नतुपुत्रप्रतिग्रहनिषेधपरं शास्त्रप्राप्तनिषेधायोगात् अतस्तादृशस्त्रियाःपुत्रप्रतिग्रहप्रतिबंधेनवृत्तिलोपपिंडविच्छेदादिकुर्वन्नरकभाग्भवति योब्राह्मणस्यवृत्तौतुप्रतिकूलंसमाचरेत् विट्भुजांतुकृमीणांस्यादितिशास्त्रादितिकौस्तुभेविस्तरः स्त्रीभिःपुत्रस्वीकारेव्रतादिवद्विप्रद्वाराहोमादिकंकार्यं एवंशूद्रेणापिविप्रः शूद्रदक्षिणामादायवैदिकमंत्रैस्तदीयहोमादिकरोतितत्रशूद्रःपुण्यफलभाग्भवति किंतुविप्रस्यैवप्रत्यवायः पुत्रंप्रतिगृह्यगृहीत्राजातकर्माद्याश्चूडाद्यावासंस्काराःकार्याइतिमुख्यःपक्षः असं

भवेसगोत्रसपिंडेषुकृतोपनयनोपिविवाहितोपिवादत्तकोभवति असंजातपुत्रएवविवाहितोग्राह्यइतिमेभाति असपिंडसगोत्रेषुकृतोपनयनएवेत्यपिभाति भिन्नगोत्रस्तुअकृतोपनयनएवग्राह्यः केचित्तुकृतोपनयनोपिभिन्नगोत्रोग्राह्यइत्याहुः इतिग्राह्याग्राह्यविवेकः ॥

अब दत्तपुत्रमें (गोद लेनेके पुत्रमें) ग्राह्य और अग्राह्यका निर्णय कहताहुं.

ब्राह्मणोंनें अपने सोदर भाईका पुत्र मुख्यपनेसें प्रथम गोद लेना उचित है. सोदर अर्थात् एक मातासें उपजे भाईके पुत्रके अभावमें अपने गोत्रका और अपनी सात पीढियोंके भीतर जो कोई होवै वह गोद लेना, अथवा सापत्न अर्थात् पितासें विवाही हुई दूसरी स्त्रीका पुत्र जो भाई है तिसका पुत्र गोद लेना उचित है. इसके अभावमेंभी भिन्न गोत्रवाला और मामाकी सात पीढियोंके भीतर होनेवाले कुलमें जन्मा हुआ ऐसा पुत्र अथवा पिताकी बहनके कुलमें जन्मनेवाला ऐसा पुत्र गोद लेना. इसके अभावमेंभी अपना सपिंड नहीं होवै और अपने गोत्रवाला होवै ऐसा पुत्र गोद लेना. इसके अभावमें अपना सपिंड नहीं होवै और पृथक् गोत्रवाला होवै ऐसा पुत्र गोद लेना. अपने गोत्रमें नहीं होवै ऐसे सपिंडरूपी संबंधियोंमें भानजा और दौहित्र वर्जित हैं. इसी प्रकार विरुद्धसंबंधकरके पुत्रबुद्धिके अयोग्य मामाभी गोद नहीं लेना. और इसी कारणसें अपने गोत्रमें होनेवाला और अपना सपिंडरूपी ऐसा भ्राता अर्थात् भाई और पितृव्य अर्थात् चाचा गोद नहीं लेना. ब्राह्मण आदि वर्णोंनें अपने अपने वर्णमें होनेवालेही गोद लेने. तहांभी देशभेदसें युक्त गुर्जर और आंध्र आदिकरके समान जातिमें होनेवालाही पुत्र लेना. भाईसें युक्त हुआ ऐसा गोद लेना उचित है. तहांभी ज्येष्ठ पुत्र गोद लेना नहीं, और देनाभी नहीं. शूद्रनें दौहित्र अर्थात् धेवता और भानजाभी गोद लेना उचित है. यहां मूलकों कहते हैं.—“एक मातासें उपजे भाइयोंमें जो एकभी पुत्रवान् भाई होवै तौ तिस पुत्रकरके सब भाई पुत्रवाले होते हैं ऐसा मनुजी कहते हैं,” इस वचनकरके “पुत्रसें रहित मनुष्यकों स्वर्ग नहीं है,” “उत्पन्न होताही ब्राह्मण तीन ऋण अर्थात् देवऋण, ऋषिऋण, पितृऋण इन्होंसें संयुक्त होता है,” इस प्रकार शास्त्रप्रयुक्त ऐसा जो चाचाकों अपुत्रत्वप्रयुक्त दोष तिसकी निवृत्ति, विधिपूर्वक नहीं अंगीकार किये सोदर भाईके पुत्रसें होती है, इस कारणसें पुत्रके सदृशपनेसें गोद लेनेके योग्योंमें भाईका पुत्र मुख्य है, ऐसा जानना. क्योंकी मुख्यके अभावमें तिसके समान प्रतिनिधि अर्थात् दूसरा पुत्र गोद लेना ऐसी युक्ति है. विधिपूर्वक प्रतिग्रहके विना, इसी वचनसें तिस भाईके पुत्रकों अपना पुत्र है ऐसी शंका नहीं करनी, क्योंकी ऐसा अंगीकार किया जावै तौ औरस और दत्तक आदि बारह प्रकारके पुत्रोंकी तरह इस भाईके पुत्रकों पत्नीके पहलेही धन ग्रहण करना और पिंडदानके करनेकों उचितपनेकरके “पत्नी, पुत्री, पिता, माता, भ्राता, भ्राताके पुत्र, गोत्री और भाई, मामा आदि बंधु” इस प्रकार क्रमकरके भ्राता अर्थात् भाईके पीछे भाईके पुत्रका अधिकार है, तिस कारणकरके पत्नीके पहले मेरे लिये पिंडदान और मेरे धनकों लेनेमें कोईक अधिकारी है इस कामनासें विधिपूर्वक अंगीकार कियाही अधिकारी होता है. अन्य तरह अधिकारी नहीं होता है. तादृश कामनाके अभावमें तौ पितृऋणका

दूरीकरण आदिक पारलौकिक कृत्योंके लिये दत्तपुत्र अर्थात् गोदपुत्र नहीं लेना. क्योंकी, भाईके पुत्रसेंही सब सिद्ध हो सक्ता है, इस प्रकार तात्पर्य है. कहींक देशमें वेदकी विधिके विनाभी गोद देनेवाले और गोद लेनेवालेकी संमतिकरके और राजपुरुष आदिकी अनुमति आदि लौकिक व्यापारमात्रकरके और यज्ञोपवीत आदि संस्कारमात्रकरके समान गोत्रवाला और सपिंड ऐसा जो पुत्र तिसकों अपना पुत्र ऐसा मानके सब व्यापार चलता दीखता है, तहां मूलवचनकी प्राप्ति नहीं होती है. "एक पुरुषकी बहुतसी स्त्रियोंमें एक स्त्रीभी पुत्रवाली होवै तौ तिस पुत्रकरके वे सब स्त्रियें पुत्रवाली हैं ऐसा मनुजीनें कहा है." यह वचन तौ सपत्नीका पुत्र जो विधिपूर्वक गोदमें लिया न होवै तौभी तिसकों पुत्रपना और पिंडदान आदिका अधिकार उत्पन्न करनेवाला है, तिस्सें ऐसा सिद्ध होता है की एक सपत्नीकों पुत्र होवै तब दूसरी सपत्नीनें पुत्र गोद नहीं लेना. "धेवता और भानजा शूद्रोंनें गोद लेना. क्षत्रिय और वैश्य इन्होंनें भानजा गोद नहीं लेना." "एकही पुत्र होवै वह दूसरेकों गोदमें देना नहीं और तिसकों गोद लेनेवालेनेंभी लेना नहीं. ज्येष्ठ अर्थात् बडे पुत्रकों गोद देना नहीं." जिसकों औरस पुत्र अनेक होवैं तिसनें पुत्रका दान करना उचित है. तौभी जिसनें पहले गोद पुत्र लेलिया होवै और पीछेसें औरस अर्थात् तिसकी स्त्रीकों तिसीके सकाशसें पुत्र उपजै, इस प्रकार अनेक पुत्रवालेनेंभी गोद लिया पुत्र अथवा औरस पुत्र किसीकों गोद नहीं देना. सुहागन स्त्रीनें पतिकी आज्ञा लेके पुत्र गोद देना और लेना उचित है. पतिकी आज्ञा नहीं होवै तौ पुत्र गोद देना नहीं और लेना नहीं. इस प्रकार विधवा स्त्रीनेंभी, 'तैनें पुत्र गोद लेना' ऐसा कहके पति मर जावै तब पुत्रकों गोद लेना उचित है. 'तैनें पुत्र गोदे लेना' इस प्रकारकी आज्ञाके अभावमें पतिके जीवते हुये अथवा तिसके मरने पीछेभी पतिके किसीककों गोद लेनेविषयक अभिप्रायकों जानती हुईनेंभी पुत्रकों गोद लेना उचित है, ऐसा बहुमत है. इन दोनों प्रकारोंमांहसें पतिकी कोईसीभी आज्ञाके अभावमें तिस तिस शास्त्रसें नित्य और काम्यव्रत आदि धर्मके आचरणकी तरह पुत्रकों गोद लेनेमेंभी "विनापुत्रवालेकों स्वर्ग आदि लोक नहीं मिलता," इस आदि सामान्य शास्त्रसेंही विधवा स्त्रीकोंभी पुत्र गोद लेनेका अधिकार है. "पतिकी आज्ञाके विना स्त्रीनें पुत्र देना नहीं और लेना नहीं," यह वसिष्ठजीका वचन तौ पतिकी आज्ञासें रहित स्त्रीकेप्रति पुत्रकों गोद लेनेमें आज्ञाविषयक है, दत्तक पुत्र अर्थात् गोदके पुत्रका निषेध नहीं करना. क्योंकी शास्त्रके अनुसार जो प्राप्त हुआ, तिसका निषेध नहीं संभवता है, इस कारणसें तिस प्रकारकी विधवा स्त्रीकों पुत्र गोद नहीं लेने देनेवाला, वृत्तिका नाश और पिंडके नाश आदिकों करनेवाला होके नरककों प्राप्त होता है. क्योंकी "जो ब्राह्मणकी वृत्तिमें प्रतिकूल आचरण अर्थात् वृत्तिके नाशनका उपाय करता है वह मनुष्य विष्ठा खानेवाले कीडोंकी योनिमें उत्पन्न होता है" ऐसा शास्त्र कहता है. इसका विस्तार कौस्तुभ ग्रंथमें है. स्त्रियोंनें पुत्र गोद लेनेके समय व्रत आदिकी तरह ब्राह्मणके द्वारा होम आदि कराना. ऐसेही शूद्रनेंभी करना. ब्राह्मण शूद्रसें दक्षिणा लेके वेदके मंत्रोंसें तिसका होम आदि करता है, तहां शूद्र पुण्यभागी होता है और ब्राह्मणकों पाप लगता है. पुत्रकों गोद लेके गोद लेनेवालेनें जातकर्म आदि अथवा चूडाकर्म आदि संस्कार करने यह मुख्य पक्ष

है. तिसके असंभवमें सगोत्र और सपिंड इन्होंमांहसें यज्ञोपवीत किया हुआ और विवाह किया हुआभी पुरुष गोद हो सक्ता है. विवाहित होवै तौभी जिसकों पुत्र हुआ नहीं होवै सोभी गोद लेना ऐसा मेरा मत है. असपिंड और असगोत्र इन्होंमांहसें गोद लेना होवै तौ यज्ञोपवीत हुआ होवै सोही लेना ऐसाभी मेरा मत है. दूसरे गोत्रवाला तौ विनायज्ञोपवीतवालाही गोद लेना उचित है. कितनेक ग्रंथकार तौ यज्ञोपवीतकर्मसें युक्त हुआ दूसरे गोत्रवालाभी गोद हो सक्ता है ऐसा कहते हैं. इस प्रकार ग्राह्य और अग्राह्यका निर्णय समाप्त हुआ.

अथऋग्वेदिनांपुत्रप्रतिग्रहप्रयोगः पूर्वेद्युःकृतोपवासःपवित्रपाणिःप्राणानायम्यदेशकालौ संकीर्त्य ममाप्रजस्त्वप्रयुक्तपैतृकऋणापाकरणपुंनामनरकत्राणद्वाराश्रीमरमेश्वरप्रीत्यर्थं शौनकोक्तविधिनापुत्रप्रतिग्रहंकरिष्ये तदंगत्वेनस्वस्तिवाचनमाचार्यवरणंविष्णुपूजनमन्नदानंचकरिष्ये आचार्यमधुपर्कांतेविष्णुंसंपूज्यब्राह्मणादिभोजनंसंकल्पयेत् आचार्यःयजमानानुज्ञयापुत्रप्रतिग्रहांगत्वेनविहितंहोमंकरिष्येइतिसंकल्प्यअग्निंप्रतिष्ठाप्यचक्षुषीआज्येनेत्यंतेसकृदग्निंसूर्यासावित्रींषड्वारंचरुणाअग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचाज्येन शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिअन्वाधाय अष्टाविंशतिमुष्टीस्तूष्णींनिरूप्यतथैवप्रोक्ष्याज्योत्पवनांतंकुर्यात् दातारंगत्वाएतस्मैपुत्रंदेहीति याचयेत्दातादेशकालौसंकीर्त्यश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंपुत्रदानंकरिष्येइतिसंकल्प्य गणपतिपूजनांतेप्रतिगृहीतारंयथाशक्त्यासंपूज्य येयज्ञेनेतिपंचानांनाभानेदिष्ठोमानवोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् पंचम्यनुष्टुप् पुत्रदानेविनियोगः येयज्ञेनेतिऋक्पंचकांतेइमंपुत्रंतवपैतृकऋणापाकरणपुन्नामनरकत्राणसिद्ध्यर्थंआत्मनःश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंतुभ्यमहंसंप्रददेनममप्रतिगृह्णातुपुत्रंभवान् इतिप्रतिग्रहीतृहस्तेजलंक्षिपेत् ग्रहीतादेवस्येतिहस्तद्वयेप्रतिगृह्यस्वांकेउपवेश्यअंगादंगात्संभवसीति मंत्रेणमूर्धनिजिघ्रेत् वस्त्रकुंडलाद्यलंकृतंगीतवाद्यैःस्वस्तिमंत्रैश्चस्वगृहमानीय पादौप्रक्षाल्याचम्याचार्यदक्षिणतःस्वयंस्वदक्षिणेभार्योत्संगेपुत्रइत्युपविशेत् आचार्योबर्हिरासादनाद्याज्यभागांतेचरुमवदाय यस्त्वाहृदेतिद्वयोरात्रेयोवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् पुत्रप्रतिग्रहांगहोमेविनियोगः यस्त्वाहृदेतिऋक्द्वयेनैकमेवावदानंजुहुयात् यजमानोग्नयइदंनमम तुभ्यमग्रेपर्यवहन्सूर्यासावित्रीसूर्यासावित्र्यनुष्टुप्तुभ्य० सूर्यासावित्र्याइदं सोमोदददितिपंचानांसूर्यासावित्रीसूर्यासावित्रीअनुष्टुभौजगतीत्रिष्टुप्अनुष्टुप् सोमो० पंचस्वपि सूर्यासावित्र्याइदं० एवंसप्तचर्वाहुतीर्हुत्वाज्यंव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिर्हुत्वास्विष्टकृदादिसमाप्याचार्यायधेनुंदत्वा विप्रान्भोजयेत् ॥

अब ऋग्वेदवालोंनें पुत्र गोद लेनेका प्रयोग कहताहुं.

पूर्व दिनमें उपवास करके दूसरे दिन नित्यकृत्यके अनंतर हाथमें पवित्र धारण करके आचमन और प्राणायाम करके देश और कालका उच्चार करके "ममाप्रजस्त्वप्रयुक्तपैतृकऋणापाकरणपुंनामनरकत्राणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शौनकोक्तविधिना पुत्रप्रतिग्रहं करिष्ये ॥ तदंगत्वेन स्वस्तिवाचनमाचार्यवरणं विष्णुपूजनमन्नदानं च करिष्ये" ऐसा संकल्प करके आचार्यकी मधुपर्कसें पूजा करके तिसके अनंतर विष्णुकी पूजा करके ब्राह्मणभोजन आदिका संकल्प करना. पीछे अचार्यनें "यजमानानुज्ञया पुत्रप्रतिग्रहांगत्वेन विहितं होमं करिष्ये" ऐसा संकल्प करके अग्निस्थापन करना. पीछे "चक्षुषी आज्येनेत्यंते सकृदग्निं सूर्यासावित्रीं

षड्वारं चरुणा अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं चाज्येन शेषेण स्विष्टकृतमित्यादि," ऐसा अन्वाधान करके चावलोंकी अठाईस मुष्टियोंकों पात्रमें मंत्रसें रहित प्राप्त करके और मंत्ररहित प्रोक्षण करके आज्योत्पवनांत कर्म करना. पीछे पुत्र देनेवालेके समीप जाके कहना की, इस मनुष्यके लिये पुत्र दे, ऐसी याचना करनी. पीछे पुत्र देनेवाले पुरुषनें देश और कालका उच्चार करके **"श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पुत्रदानं करिष्ये"** ऐसा संकल्प करके गणेशजीकी पूजाके अनंतर पुत्र लेनेवालेकी, शक्तिके अनुसार अच्छी तरह पूजा करके **"येयज्ञेनेतिपंचानांनाभानेदिष्टोमानवोविश्वेदेवास्त्रिष्टुप् ॥ पंचम्यनुष्टुप् ॥ पुत्रदाने विनियोगः ॥ येयज्ञेन०"** इन पांचऋचाओंकों पढके पीछे **"इमं पुत्रं तव पैतृकऋणापाकरणपुंनामनरकत्राणसिद्ध्यर्थमात्मनः श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं तुभ्यमहं संप्रददे न मम ॥ प्रतिगृह्णातु पुत्रं भवान्"** ऐसा संकल्प करके गोद लेनेवालेके हाथमें जल छोडना. गोद लेनेवाले पुरुषनें **"देवस्यत्वा०"** इस मंत्रकों बोलके पुत्रकों दोनों हाथोंसें प्रतिग्रहण करके अपने गोदमें वैठायके **"अंगादंगात्संभवसि०"** इस मंत्रसें मस्तक सूंघना. पीछे वस्त्र और कुंडल आदिसें अलंकृत किये हुये पुत्रकों गीत और बाजोंसें तथा स्वस्तिमंत्रोंसें अपने घरमें प्राप्त करके अपने पैरोंकों धोके और आचमन करके आचार्यके दक्षिणकी तर्फ आप वैठके अपनेसें दक्षिणकी तर्फ भार्याके गोदमें पुत्रकों बैठाय पीछे आचार्यनें कुशाग्रोंका आसादनसें आज्यभागपर्यंत कर्म करके पश्चात् चरु लेके होम करना. सो ऐसा:—**"यस्त्वाहृदेतिद्वयोरात्रेयोवसुश्रुतोग्निस्त्रिष्टुप् ॥ पुत्रप्रतिग्रहांगहोमे विनियोगः ॥ यस्त्वाहृदा०"** इन दो मंत्रोंसें एकही आहुति देनी. पीछे यजमाननें **अग्नयेदं न मम"** ऐसा त्यागका उच्चार करना. पीछे **"तुभ्यमग्नेपर्यवहन्सूर्यासावित्रीसूर्यासावित्र्यनुष्टुप् ॥ ॐतुभ्यमग्ने० ॥ सूर्यासावित्र्याइदं न मम ॥ सोमोददादितिपंचानां सूर्यासावित्री सूर्यासावित्री ॥ अनुष्टुभौ जगतीत्रिष्टुबनुष्टुप् ॥ ॐसोमोददत्०"** इन पांचऋचाओंका प्रत्येक ऋचाकरके होम करना. पांचों आहुतियोंका **"सूर्यासावित्र्या इदं न मम"** इस मंत्रसें त्याग करना. इस प्रकार चरुकी सात अहुति देके घृतका व्यस्त और समस्त व्याहृतियोंसें (**ॐ भूः स्वा० ॐ भुवः स्वा० ॐ स्वः स्वा० ॐ भूर्भुवः स्वः स्वा०**) होम करके और स्विष्टकृत् आदि कर्मकों समाप्त करके पीछे आचार्यकों गौका दान देके ब्राह्मणोंकों भोजन करना.

अथयजुर्वेदिनांबौधायनोक्तरीत्याप्रयोगः तत्रराज्ञःशिष्टानांवंधूनांचानुमतिंलब्ध्वासंकल्पादिआचार्यपूजांतंप्राग्वत्कुर्यात् ब्राह्मणभोजनसंकल्पांतेआचार्योदेवयजनोल्लेखनादिआप्रणीताभ्यःकुर्यात् ग्रहीतादातुःसमक्षंगत्वापुत्रंमेदेहीतिस्वयमेवभिक्षेत् दाताददामीत्याहदातुःसंकल्पादिपुत्रदानांतंपूर्ववत् ग्रहीताधर्मायत्वागृह्णामिसंतत्यैत्वागृह्णामीतिपरिगृह्यैनंपुत्रंवस्त्रकुंडलांगुलीयकैरलंकुर्यात् आचार्यःकुशमयंबर्हिःपालाशमयमिध्मंचसंपाद्यपरिधानप्रभृतिअग्निमुखंकृत्वाचरुश्रपणासादनांते पूर्वांगहोमंकृत्वायस्त्वाहृदाकीरिणेतिपुरोनुवाक्यामुक्त्वायस्मैत्वंसुकृतेइतियाज्ययाहुत्वाव्यस्तसमस्तव्याहृतीर्हुत्वास्विष्टकृदादिकुर्यात् आचार्यायदक्षिणावस्त्रकुंडलांगुलीयकंदद्यादिति ॥

अब यजुर्वेदवालोंका बौधायनकी कही हुई रीतिसें प्रयोग कहताहुं.

तहां राजा, शिष्ट, बांधव इन्होंकी संमति लेके संकल्पसें आदि ले आचार्यपूजापर्यंत कर्म पहलेकी तरह करना. पीछे ब्राह्मणभोजनके संकल्पके अंतमें आचार्यनें देवपूजन, स्थंडिलकरण इन आदि कर्मसें प्रणीताकर्मपर्यंत कर्म करना. पीछे गोद लेनेवालेनें गोद देनेवालेके समीप जाके 'पुत्र दे' ऐसी आपही याचना करनी. पीछे गोद देनेवालानें 'देताहुं' ऐसा कहना. गोद देनेवालेनें संकल्पसें पुत्रदानपर्यंत कर्म पहलेकी तरह करना. पीछे पुत्र गोदलेनेवालेनें **''धर्माय त्वा गृह्णामि संतत्यै त्वा गृह्णामि''** इस मंत्रसें पुत्रको ग्रहण करके वस्त्र, कुंडल, अंगूठी आदि गहना इन्होंसें अलंकृत करना. पीछे आचार्यनें कुशाओंका बर्हि और पलाशकी समिधोंकी इध्मा संपादित करके पात्रासादन आदि अग्निमुख करके और चरुश्रपण करके आसादनांत कर्म करके पीछे पूर्वांगहोम करके **''यस्त्वाहृदाकीरिणा०''** यह पुरोनुवाक्यामंत्र कहके **''यस्मै त्वं सुकृते०''** ऐसे आज्यमंत्रसें होम करके व्यस्त और समस्त व्याहृतिमंत्रोंसें होम करके स्विष्टकृत् इस आदि कर्म करना. पीछे आचार्यको दक्षिणा, वस्त्र, कुंडल, अंगूठी इन आदि देना.

परगोत्रोत्पन्नदत्तकस्योपनयनमात्रेपालकगोत्रेणकृतेउपनयनोत्तरंप्रतिग्रहेवादत्तकेनाभिवादनश्राद्धादिकर्मसुगोत्रद्वयोच्चारःकार्यः चूडादिसंस्कारेपालकेनकृतेपालकैकगोत्रएव विवाहेतुसर्वदत्तकेनजनकपालकयोरुभयोरपिपित्रोर्गोत्रप्रवरसंबंधिनीकन्यावर्जनीयानात्रसाप्तपुरुषंपांचपुरुषमित्येवंपुरुषनियमउपलभ्यते सापिंड्यंतुजनकगोत्रेणोपनयनेजनकपितृमात्रोःकुलेसाप्तपुरुषंपंचपुरुषं ग्रहीतृमातृपितृकुलेत्रिपुरुषं ग्रहीतृगोत्रेणोपनयनमात्रेकृतेउभयत्रपांचपुरुषंपितृकुलेमातृकुलेत्रिपुरुषं जातकर्माद्युपनयनांतसंस्कारेग्रहीत्राकृतेग्रहीतृकुलेसाप्तपुरुषं मातृतःपंचपुरुषं अतोन्यूनंजनककुलेकल्प्यं केचित्तुदत्तकप्रवेशेकुलद्वयेपिसर्वथान्यूनमेवसापिंड्यमित्याहुः एवंदत्तकसंततेरपिसापिंड्यंज्ञेयं दत्तकस्यमरणेपूर्वापरपित्रोस्त्रिरात्रंसपिंडानामेकाहमाशौचं उपनीतदत्तकमरणादौपालकसपिंडानांदशाहादीतिनीलकंठीयेदत्तकनिर्णये एवंदत्तकेनापिपूर्वापरपित्रोर्मृतौत्रिरात्रंपूर्वापरसपिंडानांमरणेएकाहं पित्रोरौर्ध्वदेहिककरणेतुकर्मांगंदशाहमेव दत्तकस्यपुत्रपौत्रादेर्जन्ममरणयोःसपिंडानामेकाहःसगोत्रसपिंडेदत्तीकृतेतुसर्वेषांदशरात्रमेव पत्नीदुहित्रादिसत्त्वेपिदत्तकएवपितृधनभागीभवतिदत्तकग्रहणोत्तरमौरसेजातेदत्तकश्चतुर्थांशभागीनसमंभागी केचित्तुप्रतिग्रहीत्राजाताद्युपनयनांतसंस्कारेविधानेचकृतेऔरससमानांशभागित्वं संस्कारमात्रकरणेविधानाभावेविवाहमात्रलाभोनान्यधनलाभः कतिपयसंस्कारकरणेचतुर्थांशलाभइत्याहुः दत्तकसत्त्वेप्यौरसस्यैवपित्रोःपिंडदानेधिकारः जनकस्यपिंडदानाभावेदत्तोजनकपालकयोरुभयोरपिश्राद्धंकुर्यात् धनंचोभयोर्गृह्णीयादितिनीलकंठीये एवंदत्तकन्यायाअपिस्वीकारउक्तविधिनाकार्यःतत्रपरगोत्रोत्पन्नायाग्रहणेविवाहेगोत्रद्वयवर्जनंप्राग्वत् पुत्रपत्न्योरभावेदत्तकन्यैवपितृधनभागिनी इति दत्तोपयोगिसर्वनिर्णयः ॥

दूसरे गोत्रमें उत्पन्न हुए ऐसे दत्तक पुत्रका पालकके गोत्रसें केवल यज्ञोपवीतकर्म हुआ

होवै अथवा यज्ञोपवीतसंस्कार हो चुका होवै तब गोद लेनेमें गोद हुये पुत्रनें अभिवादन और श्राद्ध आदि कर्मोंमें दो गोत्रोंका उच्चार करना. क्षौर आदि कर्म गोद देनेवाले पितानें किये होवैं तौ गोद देनेवाले पिताकेही गोत्रका उच्चार करना. विवाहमें तौ सब दत्तक अर्थात् गोद हुये पुत्रोंनें जन्मानेवाले और गोद लेनेवाले ऐसे दोनों पिताओंके गोत्र और प्रवरसंबंधी कन्या वर्जित करनी. यहां सात पीढीपर्यंत अथवा पांच पीढीपर्यंत वर्जित करना ऐसा नियम कहींभी नहीं है. **अब गोद हुये पुत्रके सापिंड्य अर्थात् सात पीढियोंकों कहताहुं.**—जन्मानेवाले पिताके गोत्रसें दत्तक पुत्रका यज्ञोपवीतसंस्कार किया गया होवै तौ जन्मानेवाले पिता और माताके कुलमें सात पीढीपर्यंत और पांच पीढीपर्यंत सपिंडता जाननी. गोद लेनेवालेके पिता और माताके कुलमें तीन पीढीपर्यंत सपिंडता जाननी. गोद लेनेवाले पिताके गोत्रसें यज्ञोपवीतसंस्कार किया जावै तौ दोनों पिताओंके कुलमें पांच पीढीपर्यंत सपिंडता जाननी. दोनों माताओंके कुलमें तीन पीढीपर्यंत सपिंडता जाननी. जातकर्मसें यज्ञोपवीतकर्मपर्यंत संस्कार गोद लेनेवालेनें किये होवैं तौ गोद लेनेवाले पिताके कुलमें सात पीढीपर्यंत और माताके कुलमें पांच पीढीपर्यंत सपिंडता जाननी. इस पिता और मातासें कम, जन्मानेवाले पिता और माताके कुलमें सपिंडता जाननी. कितनेक ग्रंथकार तौ गोंद हुए पुत्रके प्रवेश होनेमें दोनों कुलोंमें सब प्रकारसें कम सपिंडता होती है ऐसा कहते हैं. ऐसेही गोद हुए पुत्रके संतानकीभी सपिंडता जाननी. गोद हुए पुत्रके मरनेमें दोनों प्रकारके माता और पितानें तीन रात्रि आशौच पालना, और सात पीढियोंपर्यंत एक दिन आशौच पालना. जिसका यज्ञोपवीतसंस्कार हो चुका होवै ऐसा गोद लिया पुत्र मर जावै तौ गोद लेनेवाले पितानें और सात पीढीवालोंनें दश दिन आदि आशौच पालना ऐसा नीलकंठके बनाये दत्तकनिर्णयमें लिखा है. ऐसेही दोनों प्रकारके माता और पिताके मरनेमें दत्तकनें तीन रात्रि आशौच पालना और दोनों कुलोंके सात पीढीवालोंके मरनेमें दत्तकनें एक दिन आशौच पालना. पितामाताकी उत्तरक्रिया करनी होवै तौ कर्मविषयक आशौच दशदिनपर्यंतही पालना. दत्तक अर्थात् गोद लिये पुत्रके पुत्र और पौत्र आदिके जन्म और मरणमें सात पीढीवालोंनें एक दिन आशौच पालना. अपने गोत्रमें जन्मा होवै और सात पीढीके भीतर होवै ऐसे गोद लिये पुत्रके मरनेमें सबोंनें दश रात्रि आशौच पालना. पत्नी और पुत्री आदिके होनेमेंभी दत्तक पुत्रही धनकों ले सक्ता है. पुत्र गोद लिये पीछे औरस पुत्र उपजै तौ गोद लिया पुत्र चौथाई भागकों ले सक्ता है, बराबर भाग अर्थात् सरीखे हिस्सेकों नहीं ले सक्ता. कितनेक ग्रंथकार गोद लेनेवाले पितानें जातकर्मसें यज्ञोपवीतकर्मपर्यंत संस्कार किये होवैं ऐसा दत्तक पुत्रभी बराबर हिस्सेकों ले सक्ता है ऐसा कहते है. दत्तकका संस्कारमात्र किया होवै और विधान किया नहीं होवै तौ तिसका विवाह मात्र करना. अन्य धन तिसकों नहीं मिल सक्ता है. जातकर्मादिक वहोतसे संस्कारोंके करनेमें चौथा हिस्सा मिल सक्ता है. दत्तक पुत्रके होनेमेंभी औरस पुत्रकोंही पिंडदानका अधिकार है. जन्मानेवाले पिताकों कोईभी पिंड देनेवाला नहीं होवै तौ दत्तक पुत्रनें दोनों पिताओंकाभी श्राद्ध करना, और दोनोंके धनकोंभी लेना ऐसा नीलकंठीय ग्रंथमें लिखा है. ऐसेही उक्त विधिसें कन्याभी गोद लेनी. वह कन्या दूसरे गोत्रमेंसें लेनी होवै तौ तिसके विवाहमें पूर्वकी

तरह दोनों गोत्रोंकों वर्जना. पुत्र और पत्नीके अभावमें गोद लीनी कन्याही पिताके धनकों लेनेवाली है. इस प्रकार दत्तोपयोगी सब निर्णय समाप्त हुआ.

अथकन्यानामेवोत्पत्तौपुत्रार्थंपुत्रकामेष्टिः ऋतुकालात्षष्ठेदिनेसभार्यःकृताभ्यंगःप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्य पुत्रकामःपुत्रकामेष्टिंकरिष्यइतिसंकल्प्यस्वस्तिवाचनादिनांदीश्राद्धांतेग्निंप्रतिष्ठाप्य चक्षुषीआज्येनात्रप्रधानं अग्निंपंचवारंवरुणंपंचवारंविष्णुंपृथ्वींविष्णुंसोमंसूर्यासावित्रींपायसेनशेषेणस्विष्टकृतमित्यादिनिर्वापकालेतूष्णींषष्टिमुष्टीन्निरूप्य तथैवप्रोक्ष्यश्वेतवत्सश्वेतगोःक्षीरेणचरुंपक्त्वाज्यभागांते आतेगर्भंइतिअग्निरैतुइतिसूक्तद्वयस्यहिरण्यगर्भऋषिःक्रमेणाग्नीवरुणौदेवते अनुष्टप्जगत्यौछंदसी पायसचरुहोमेविनि० ॥ ॐआतेगर्भोयोनिमैतुपुमान्बाणइवेषुधिं आवीरोजायतांपुत्रस्तेदशमास्यःस्वाहा अग्नयइदं०करोमितेप्राजापत्यमागर्भोयोनिमैतुते अनूनःपुत्रोजायतामश्लोणोपिशाचधीतःस्वाहा अग्नय०पुमांस्तेपुत्रोनारीतंपुमाननुजायतां तानिभद्राणिबीजान्यृषभाजनयंतुनौस्वाहा अग्न०यानिभद्राणिबीजान्यृषभाजनयंतिनः तैस्त्वंपुत्रान्विंदस्वसाप्रसूर्धेनुकाभवस्वाहा अग्न०कामःसमृध्यतांमह्यमपराजितमेवमे यंकामंकामयेदेवतन्मेवायोसमर्धयस्वाहा अग्न०अग्निरैतुप्रथमोदेवतानांसोस्यैप्रजांमुंचतुमृत्युपाशात् तदयंराजावरुणोनुमन्यतांयथेयंस्त्रीपौत्रमघन्नरोदात्स्वाहा वरुणायेदं०इमामग्निस्त्रायतांगार्हपत्यःप्रजामस्यैनयतुदीर्घमायुः अशून्योपस्थाजीवतामस्तुमातापौत्रमानंदमभिप्रबुध्यतामियंस्वाहा वरु० मातेगृहेनिशिघोषउत्थादन्यत्रत्वद्रुदंत्यःसंविशंतु मात्वंबिकेश्युरआवधिष्ठाजीवपत्नीपतिलोकेविराजपश्यंतीप्रजांसुमनस्यमानास्वाहा वरु० अप्रजस्तांपौत्रमृत्युंपाप्मानमुतवाघं शीर्ष्णःस्रजमिवोन्मुच्यद्विषद्भ्यःप्रतिमुंचामिपाशंस्वाहा वरुणा० दैवकृतंब्राह्मणंकल्पमानंतेनहन्मियोनिषदःपिशाचान् क्रव्यादोमृत्युंनधरान्पातयामिदीर्घमायुस्तवजीवंतुपुत्राःस्वाहा वरु० नेजमेषेतितिसृणांविष्णुस्त्वष्टागर्भकर्ताविष्णुपृथ्वीविष्णवोनुष्टुप् ॥ पायसचरुहोमेवि० ॥ नेजमेष०विष्णव०यथेयंपृथिवी०पृथिव्याइ० विष्णोःश्रेष्ठेन० विष्णव०सोमोधेनुंराहूगणोगौतमःसोमस्त्रिष्टुप् पायसचरुहोमेवि० सोमोधेनुं० सोमायेदं० तांपूषन् सूर्यासावित्रीसूर्यासावित्रीत्रिष्टुप् पायसहोमेविं०तांपूषन्छिव० सूर्यासावित्र्याइदं० इतिपंचदशाहुतीर्हुत्वास्विष्टकृद्धोमंकृत्वा दंपतीअपश्यंत्वेतिद्वयोःप्रजावान्प्राजापत्यःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् हुतशेषचरुप्राशनेविनियोगः अपश्यंत्वेतिद्वाभ्यांप्राश्य पिशंगभृष्टिमित्यस्यदैवोदासिः परुच्छेपइंद्रोगायत्री नाभ्यालंभनेवि० पिशंगभृष्टि० इतिदंपतीनाभ्यालंभनंकुर्यातां यजमानःप्रायश्चित्तादिहोमशेषंसमाप्यविप्रेभ्योगांसुवर्णादिदक्षिणांचदत्वारात्रौदंपतीदर्भास्तरणेशयीयातां इतिपुत्रकामेष्टिप्रयोगः ॥

अब कन्याही जन्मती होवैं तब पुत्रकी प्राप्तिके लिये पुत्रकामेष्टि कहताहुं.

ऋतुकालसें छठे दिनमें भार्यासहित अभ्यंग स्नान करके प्राणायाम करके देश और कालका उच्चार करके "पुत्रकामः पुत्रकामेष्टिं करिष्ये" ऐसा संकल्प करके स्वस्तिवाचन

आदिसें नांदीश्राद्धपर्यंत कर्म किये पीछे अग्निस्थापन करके अन्वाधान करना. सो ऐसा:— **“चक्षुषी आज्येनात्र प्रधानं अग्निं पंचवारं वरुणं पंचवारं विष्णुं पृथ्वीं विष्णुं सोमं सूर्यासावित्रीं पायसेन शेषेण स्विष्टकृतमित्यादि”** इस प्रकार अन्वाधान करके पीछे निर्वापके समयमें चावलोंकी साठ मुष्टियोंकों मंत्रके विनाही पात्रमें डालके जलसें प्रोक्षित करके सुपेद बछडावाली सुपेद रंगकी गौके दूधकरके चरुकों पकाय आज्यभागके अंतमें चरुहोम करना. सो ऐसा:—**“आतेगर्भ इति अग्निरैतु इति सूक्तद्वयस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः ॥ क्रमेणाग्नीवरुणौ देवते अनुष्टुप्जगत्यौ छंदसी ॥ पायसहोमे विनियोगः ॥ आतेगर्भो० अग्नय इदं न मम ॥ करोमि ते० अग्नय इदम्० ॥ पुमांस्ते० अग्नय इदम्० ॥ यानि भद्राणि० अग्नय इदम्० ॥ कामः समृ० अग्नय इदम्० ॥ अग्निरैतु प्र० वरुणाय इदम्०॥ इमामग्निस्त्रायताम्० वरुणायेदम्० ॥ मा ते गृहे निशि० वरुणायेदम्० ॥ अप्रजस्तां पौत्र० वरुणायेदम्० ॥ देवकृतम् ब्राह्मणं० वरुणायेदम्० ॥ नेजमेषेति तिसृणां विष्णुस्त्वष्टा गर्भकर्ता विष्णुपृथ्वीविष्णवोनुष्टुप् ॥ पायसहोमे विनियोगः नेजमेष० विष्णव इदं न मम ॥ यथेयं पृथिवी० पृथिव्या इ० ॥ विष्णोः श्रेष्ठे० विष्णव इदं न मम ॥ सोमो धेनुं राहूगणो गौतमः सोमस्त्रिष्टुप् ॥ पायसहोमे विनियोगः ॥ सोमोधेनुं० सोमायेदम्० ॥ तांपूषन् सूर्यासावित्री सूर्यासावित्रीत्रिष्टुप् पायसहोमे विनियोगः० ॥ तां पूषन्छि० सूर्यासावित्र्या इ० ॥”** इस प्रकार पंदरह आहुतियोंसें होम करके स्विष्टकृत् होम करना. पीछे स्त्रीपुरुषोंनें **“अपश्यंत्वेति द्वयोः प्रजावान् प्राजापत्यः प्रजापतिस्त्रिष्टुप् हुतशेषपायसप्राशने विनियोगः अपश्यंत्वा०”** इन दो मंत्रोंसें होमशेष पायस भक्षण करके **“पिशंगभृष्टि०”** इस मंत्रसें स्त्रीपुरुषोंनें अपनीं अपनी नाभीकों स्पर्श करना. पीछे यजमाननें प्रायश्चित्त आदि होमशेषकी समाप्ति करके ब्राह्मणोंकों गोदान और सोना आदिकी दक्षिणा देके रात्रिमें स्त्रीपुरुषोंनें डाभकी शय्यापर शयन करना. इस प्रकार पुत्रकामेष्टिका प्रयोग समाप्त हुआ.

अथपुंसवनं तच्चव्यक्तेगर्भेद्वितीयेचतुर्थेषष्ठेष्टमेवामासेसीमंतेनसहवाकार्यं शुक्लपंचमीमारभ्यकृष्णपंचमीपर्यंतेचतुर्थीनवमीचतुर्दशीपंचदशीवर्जितेतिथौसूर्यभौमगुरुवारेषुप्रशस्तं क्वचिच्चंद्रबुधशुक्रवाराउक्ताः नक्षत्राणितुपुंनामकानिप्रशस्तानि तानिच पुष्यश्रवणहस्तपुनर्वसुमृगाभिजित्मूलानुराधाश्विनीत्येतानि अत्रपुष्योमुख्यः तदभावेश्रवणस्तदभावेहस्तादीनिश्रयमेवानवलोभनस्यापिकालः पुंसवनेनसहकरणीयत्वविधानात् पुंसवनानवलोभनेप्रतिगर्भेकार्ये गर्भसंस्कारत्वात् गर्भाधानसीमंतोन्नयनेतुस्त्रीसंस्कारत्वात्प्रतिगर्भेनावर्तेते किंतुप्रथमगर्भेएवकार्ये प्रथमगर्भेलोपेतुप्रतिगर्भेतयोर्लोपप्रायश्चित्तंआवश्यकं नचप्रथमापत्येतयोःप्रायश्चित्तेनद्वितीयादिगर्भाणांसंस्कारसिद्धिर्भवति प्रायश्चित्तेनहिप्रत्यवायपरिहारमात्रं नत्वपूर्वाख्यातिशयोत्पादनं तत्तुसंस्कारविधिनैवेतियुक्तंप्रतिगर्भेप्रायश्चित्तं पुंसवनानवलोभनयोस्तुप्रथमगर्भेनुष्ठानेपिप्रतिगर्भेतयोर्लोपेप्रायश्चित्तं तच्चपादकृच्छ्रंप्रतिसंस्कारंकार्यं बुद्धिकृतलोपेद्विगुणंपुंसवनेपातिःकर्तातदभावेदेवरादिः ॥

अब पुंसवनसंस्कार कहताहुं.

यह संस्कार जब गर्भका निश्चय ज्ञान होवै तब दूसरा, चौथा, छठा, आठमा इन महीनोंमेंसें एक कोईसे महीनेमें अथवा सीमंतसंस्कारके साथ करना. शुक्लपक्षकी पंचमीसें आरंभ करके कृष्णपक्षकी पंचमीपर्यंत कालमें चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी और पौर्णमासी इन्होंसें वर्जित तिथियोंमें और सूर्य, मंगल, बृहस्पति इन वारोंमें पुंसवनकर्म करना श्रेष्ठ है. और किसीक ग्रंथमें सोम, बुध, शुक्र ये वारोंमेंभी करना ऐसा कहा है. पुरुष नामवाले नक्षत्र श्रेष्ठ कहे हैं. वे दिखाये जाते हैं.—पुष्य, श्रवण, हस्त, पुनर्वसु, मृगशिर, अभिजित्, मूल, अनुराधा, और अश्विनी ये पुरुषनक्षत्र हैं, इन्होंमें पुष्य प्रधान है. पुष्यके अभावमें श्रवण लेना. श्रवणके अभावमें हस्त आदि लेने. यही **अनवलोभनसंस्कार**का काल है. क्योंकी, पुंसवनसंस्कारके साथ अनवलोभनसंस्कार करना ऐसा कहा है. **पुंसवन** और **अनवलोभनसंस्कार** प्रतिगर्भकों करने. क्योंकी, वे गर्भके संस्कार हैं. **गर्भाधान** और **सीमंतोन्नयनसंस्कार** तौ स्त्रीके संस्कार हैं, इसवास्ते प्रतिगर्भकों नहीं करने, किंतु प्रथम गर्भमेंही करने. प्रथम गर्भमें गर्भाधान और सीमंतोन्नयन नहीं किये जावैं तौ तिन दोनोंके लोपका प्रायश्चित्त प्रतिगर्भमें करना उचित है. क्योंकी, प्रथम गर्भके समय तिन दोनों संस्कारोंके प्रायश्चित्त करनेसें द्वितीय आदि गर्भोंके संस्कारकी सिद्धि नहीं होती है, किंतु प्रायश्चित्तके करनेसें पापका परिहार मात्र होता है. पुण्यका आधिक्य नहीं होता है. सो संस्कार विधिकरकेही उत्पन्न होता है, इस लिये प्रतिगर्भ प्रायश्चित्त करना उचित है. पुंसवन और अनवलोभनसंस्कार प्रथम गर्भमें किये होवैं और प्रतिगर्भ नहीं किये जावैं तौ तिसका प्रायश्चित्त करना उचित है. सो पादकृच्छ्र प्रायश्चित्त प्रतिसंस्कारकों करना. जानके नहीं करनेमें दुगुना प्रायश्चित्त करना. पुंसवनसंस्कार पतिनें करना. पतिके अभावमें देवर आदिनें करना.

अथसीमंतकालः तच्चतुर्थेष्टमेषष्ठेपंचमेमासिवाविहितं नवमेमासिवाकुर्यात्यावद्गर्भविमोचनं स्त्रीयद्यकृतसीमंताप्रसूयेतकदाचन गृहीतपुत्राविधिवत्सातंसंस्कारमर्हतिपक्षतिथिवारनक्षत्राणिपुंसवनोक्तान्येवप्रशस्तानि क्वचिद्दशमीपर्यंतंकृष्णोपिग्राह्यःषष्ठ्यष्टमीद्वादश्योरिक्ताः पंचदशीचवर्ज्याः तासुसंकटेचतुर्थीचतुर्दशीपौर्णमास्योग्राह्याःक्रमेणाष्टचतुर्दशदशनाडिका आद्यास्त्यक्त्वाषष्ठ्यष्टमीद्वादश्योपिग्राह्याःपुंनक्षत्राणामलाभेरोहिणीरेवत्युत्तरात्रयाणिग्राह्याणि उक्तनक्षत्राणांप्रथमांत्यपादौत्यक्त्वामध्यमपादद्वयंग्राह्यमित्युक्तं इदंकर्मसकृदेवकार्यमित्युक्तं कात्यायनानांतुगर्भसंस्कारत्वात्प्रतिगर्भमावर्तनीयं सीमंतोन्नयनेपतिरेवकर्ता गर्भाधानलोपेतत्प्रायश्चित्तार्थंविप्रायगांदत्वापुंसवनादिकार्यं तत्राश्वलायनानांदेशकालसंकीर्तनांतेममास्यां भार्यायामुत्पत्स्यमानगर्भस्यगार्भिकबैजिकदोषपरिहारपुंरूपतासिद्धिज्ञानोदयप्रतिरोधपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पुंसवनमनवलोभनंममास्यांभार्यायां गर्भाभिवृद्धिपरिपंथिपिशितरुधिरप्रियालक्ष्मीभूतराक्षसीगणदूरनिरसनक्षमसकलसौभाग्यनिदानमहालक्ष्मीसमावेशनद्वाराप्रतिगर्भबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वाराचश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं स्त्रीसंस्काररूपंसीमंतोन्नयनाख्यंकर्मचतंत्रेणकरिष्यइतिसंकल्पःसीमंतेनसहत्रयाणांकरणेज्ञेयः नांदीश्राद्धेक्रतुदक्षसं

ज्ञकाविश्वेदेवाः पुंसवनस्यपृथक्त्वेपवमानसंज्ञकमौपासनाग्निंप्रतिष्ठापयेत् त्रयाणांसहत्वेमंगलनामानंप्रतिष्ठापयेत् गृह्याग्निविच्छेदेसर्वाधानिनश्चाग्न्युत्पत्तिःपूर्ववत् पुंसवनेप्रजापतिंचरुणासीमंतेधातारंद्विःराकांद्विःविष्णुंत्रिःप्रजापतिंसकृदाज्येनजुहुयात् अवशिष्टःप्रयोगोन्यत्रज्ञेयः शाखान्तरेषुचतत्तद्ग्रंथेभ्योज्ञेयःअत्रप्रतिसंस्कारंदशदशत्रींस्त्रीन्वाब्राह्मणान्भोजयेत् शक्तेनशतंशतं सीमंतांगभोजनेप्रायश्चित्तंपारिजाते ब्रह्मौदनेचसोमेचसीमंतोन्नयनेतथा जातश्राद्धेतथाभुक्त्वाभोक्ताचांद्रायणंचरेत् यद्वाअराइवेतिमंत्रस्यशतवारंजपः एतच्चआधानांगब्रह्मौदनांगभोजनइवसीमंतांगभोजनेज्ञेयं नतुतद्दिनेतद्गृहेभोक्तृमात्रस्येतिपारिजातोक्तंयुक्तं ॥

अब सीमंतोन्नयनसंस्कारका काल कहताहुं.

सीमंतोन्नयनसंस्कार चौथा, आठमा, छठा, पांचमा इन्होंमेंसें एक कोईसे महीनेमें करना अथवा नवमे महीनेमें करना. जबतक गर्भका जन्म होवै तबतक तिसका समय होता है. जो सीमंतसंस्कारसें वर्जित हुई स्त्री कभीक बालककों जन्माती हैं तौ वह स्त्री पुत्रकों गोदमें लेके सीमंतसंस्कार करनेकों योग्य होती है. पुंसवनसंस्कारमें कहे तिथि, वार, नक्षत्र यहां सीमंतसंस्कारमेंभी श्रेष्ठ हैं, और कहींक दशमीपर्यंत कृष्णपक्षभी लेना ऐसा कहा है. षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी और पौर्णमासी ये तिथि वर्जित हैं. संकट होवै तौ चतुर्थी, चतुर्दशी, और पौर्णमासी लेनी. क्रमसें आठ, चौदह, दश ऐसी आदिकी घडियोंकों क्रमसें त्यागके षष्ठी, अष्टमी और द्वादशीभी लेनीं. पुरुष नक्षत्रोंके अलाभमें रोहिणी, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा ये नक्षत्र लेने. उक्त नक्षत्रोंके प्रथम और अंत्य पादकों त्यागकर मध्यके दो पाद लेने ऐसा कहा है. यह कर्म एकही वार करना ऐसा कहा है. कात्यायनोंनें तौ यह गर्भसंस्कार होनेसें प्रतिगर्भ करना उचित है. सीमंतसंस्कार पतिनेंही करना उचित है. गर्भाधानसंस्कारके लोपमें तिसके प्रायश्चित्तके अर्थ ब्राह्मणकों गोदान देके पुंसवन आदि संस्कार करने.. तहां आश्वलायनशाखावालोंनें देश और कालका उच्चार करके “ **ममास्यां भार्यायामुत्पत्स्यमानगर्भस्य गार्भिकबैजिकदोषपरिहारपुंरूपतासिद्धिज्ञानोदयप्रतिरोधपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पुंसवनमनवलोभनं ममास्यां भार्यायां गर्भाभिवृद्धिपरिपंथिपिशितरुधिरप्रियालक्ष्मीभूतराक्षसीगणदूरनिरसनक्षमसकलसौभाग्यनिदानमहालक्ष्मीसमावेशनद्वारा प्रतिगर्भं बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वारा च श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं स्त्रीसंस्काररूपं सीमंतोन्नयनाख्यं कर्म च तंत्रेण करिष्ये** ” ऐसा संकल्प, सीमंतसंस्कारके साथ तीनों संस्कार करने होवैं तब जानना. इस संस्कारके अंगभूत नांदीश्राद्धमें क्रतु और दक्षसंज्ञक विश्वेदेव लेने. पुंसवनसंस्कार पृथक् करना होवै तौ पवमानसंज्ञक औपासनाग्निसें स्थापना करनी. तीनों संस्कार साथ करने होवैं तौ मंगलनामवाले अग्निकी स्थापना करनी. गृह्याग्निके नाशमें सर्वाधानीनें अग्निकी उत्पत्ति पूर्ववत् कर लेनी. पुंसवनसंस्कारमें प्रजापतिके उद्देशकरके चरुका होम करना. सीमंतसंस्कारमें धातादेवताके उद्देशकरके दो आहुति देनी, और राका देवताके उद्देशकरके दो आहुति देनी. विष्णुके उद्देशकरके तीन आहुति देनी और प्रजापति देवताके उद्देशकरके एक आहुति देनी. इस प्रमाणसें घृतका होम करना. बाकी रहा प्रयोग अन्य ग्रंथमें देख लेना. अन्य

शाखाओंका प्रयोग तिस तिस ग्रंथोंमें देख लेना. यहां प्रतिसंस्कारकों दश दश अथवा तीन तीन ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना. समर्थ मनुष्यनें सौ सौ ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना. सीमंतसंस्कारसंबंधी भोजनका प्रायश्चित्त पारिजात ग्रंथमें लिखा है. "ब्रह्मौदन, सोमयज्ञ, सीमंतसंस्कार, और जातकर्मसंबंधी नांदीश्राद्ध इन्होंमें भोजन करनेसें भोक्ता पुरुषनें चांद्रायण प्रायश्चित्त करना." अथवा "अराइव०" इस मंत्रका सौ वार जप करना. यह प्रायश्चित्त आधानांग ब्रह्मौदनसंबंधी भोजनसरीखा सीमंतसंस्कासंबंधी भोजन करनेमें जानना. तिस दिनमें तिसके घरमें भोजन करनेवालोंकों प्रायश्चित्त नहीं है ऐसा पारिजात ग्रंथमें लिखा है वह योग्य है.

अथगर्भिणीधर्माः गर्भिणीकुंजराश्वादिशैलहर्म्यादिरोहणं व्यायामंशीघ्रगमनंशकटारोहणंत्यजेत् नभस्मादावुपविशेन्मुसलोलूखलादिषु त्यजेज्जलावगाहंचशून्यंसद्मतरोस्तलंकलहंगात्रभंगंचतीक्ष्णात्युष्णादिभक्षणं संध्यायामतिशीताम्लंगुर्वाहारंपरित्यजेत् व्यवायशोकासृङ्मोक्षंदिवास्वापंनिशिस्थितिं भस्मांगारनखैर्भूमिलेखनंशयनंसदा त्यजेदमंगलंवाक्यंनच हास्याधिकाभवेत् नमुक्तकेशानोद्विग्नाकुक्कुटासनगानच गर्भरक्षासदाकार्यानित्यंशौचनिषेवणात् प्रशस्तमंत्रलिखनाच्छस्तमाल्यानुलेपनात् विशुद्धगेहवसनाद्दानैःश्वश्र्वादिपूजनैः हरिद्राकुंकुमंचैवसिंदूरंकज्जलंतथा केशसंस्कारतांबूलंमांगल्याभरणंशुभं चतुर्थेमासिषष्ठेवाप्यष्टमेगर्भिणीवधूः यात्रांविवर्जयेन्नित्यमाषष्ठात्तुविशेषतः ॥

अब गर्भिणी स्त्रीके धर्म कहताहुं.

गर्भिणी स्त्रीनें हस्ती, घोडा आदिपर नहीं बैठना. पर्वत, हवेली आदि इन्होंपर चढना नहीं. कसरत अर्थात् परिश्रम, शीघ्र चलना, गाडीपर चढना इन्होंकों गर्भवाली स्त्रीनें त्यागना. भस्म आदि स्थलमें, मुसल, ऊखल इन आदिपर गर्भवाली स्त्रीनें नहीं बैठना. पानीमें गोता मारकर स्नान नहीं करना. शूना स्थान, और वृक्षकेतलमें गर्भिणी स्त्रीनें नहीं बैठना. कलह, गात्रभंग, तीक्ष्ण और अत्यंत गरम आदिका भक्षण, संध्यासमयमें अत्यंत शीतल और खट्टे भारी पदार्थका भोजन, इन्होंकों गर्भवाली स्त्रीनें वर्ज देना. मैथुन अर्थात् भोग, शोक, फस्तका कराना, दिनकों सोवना, रात्रिमें जागरण करना, भस्म, कोईला, नख इन्होंसें पृथिवीपर रेखा काढना, सब काल शयन करना और अमंगल वचनका कहना इन्होंकों गर्भवाली स्त्रीनें त्यागना. गर्भवाली स्त्रीनें अधिक हसना नहीं, और छुटे हुये बालोंवाली रहै नहीं. उद्विग्न नहीं रहना. कुक्कुटासन करके बैठना नहीं. स्वच्छता रखनी, अच्छे मंत्र लिखने, सुगंधित पुष्पोंकी माला और चंदनकों धारण करना, और विशेष करके शुद्ध घरमें रहना. दान करने. सासू आदिकी पूजा करनी, इन आदिसें गर्भका रक्षण करना. हलदी, रोली, सिंदूर कज्जल, बालोंकी शुद्धि, तांबूलका खाना और सुंदर गहनोंका धारण ये सब गर्भवती स्त्रीकों शुभ हैं. चौथे, छट्ठे, अथवा आठमें महीनेमें गर्भवाली स्त्रीनें यात्रा नहीं करनी. छट्ठे महीनेसें विशेषकरके नित्यप्रयाण वर्ज देना.

अथमर्भिणीपतिधर्माः गर्भिणीवांछितंद्रव्यंतस्यैदद्याद्यथोचितं सूतेचिरायुषंपुत्रमन्यथादोषमर्हति सिंधुस्नानंद्रुमच्छेदंवपनंप्रेतवाहनं विदेशगमनंचैवनकुर्याद्गर्भिणीपतिः वपनंमैथुनं तीर्थंश्राद्धभोजनमेवच वर्जयेत्सप्तमान्मासान्नावआरोहणंतथा युद्धादिवास्तुकरणंनखकेशविकर्तनं चौलंशवानुगमनंविवाहंचविवर्जयेत् मुंडनंपिडदानंचप्रेतकर्मचसर्वशः नजीवत्पितृकः कुर्याद्गुर्विणीपतिरेवच अत्रकर्तनमपिनिषिद्धयते वपनस्यनिषेधेपिकर्तनंतुविधीयतइतिवाक्यं तुजीवत्पितृकादीनांयोवपननिषेधस्तत्रकर्तनविधिपरं एतदपवादः क्षौरंनैमित्तिकंकुर्यान्निषेधेसत्यपिध्रुवं पित्रोःप्रेतविधानंचगर्भिणीपतिराचरेत् अन्वष्टक्याष्टकयोर्गर्भिणीपतिपिंडदानं कुर्यात् केचित्पित्रोःप्रतिसांवत्सरिकेपिंडदानंकुर्वंति दर्शमहालयादिषुनैवकार्यं ॥

अब गर्भिणीपतिके धर्म कहताहुं.

“गर्भवाली स्त्रीकी इच्छाके अनुसार पतिनें यथायोग्य पदार्थ गर्भिणीकों देना. तिसकरके बहुतसी आयुवाले पुत्रकों वह गर्भिणी जनती है. गर्भिणी स्त्रीकी इच्छा पूर्ण नहीं होनेसें पति दोषयुक्त होता है. समुद्रस्नान, वृक्षकों तोडना, क्षौर, मरे हुयेके कांधिया लगना और परदेशमें गमन करना इन सब कर्मोंकों गर्भिणीके पतिनें वर्जित करने. क्षौर, मैथुन, तीर्थयात्रा, श्राद्धभोजन और नावपर बैठना इन सबोंकों गर्भिणीके पतिनें वर्ज देना. युद्ध, घर बनवाना, नख और वालोंकों कटाना, चौलकर्म, मुरदाके संग गमन करना, और विवाह इन सबोंकों सातमे महीनेसें गर्भिणीपतिनें वर्जित करना. मुंडन, पिंडदान और सब प्रकारके प्रेतकर्म इन्होंकों जीवते हुये पितावालेनें और गर्भिणीके पतिनें वर्जित करना.” यहां नख और वालोंका छेदनाभी निषिद्ध कहा है. “क्षौरकर्मके निषेधमें बाल और नखोंकों काटना उचित है,” यह वाक्य तो जीवता हुआ पितावाला आदिकोंकों जो क्षौरकर्मका निषेध है तहां नख और वालोंकों कटानेकी विधिविषयक है. इस क्षौरके अपवाद कहताहुं—निषेधके होनेभी नैमित्तिक क्षौर कराना. पिता और माता मर जावे तो गर्भिणीके पतिनेंभी प्रेतकर्म करना. अन्वष्टक और अष्टक श्राद्धमें गर्भिणीपतिनें पिंडदान करना. कितनेक पिता और माताके क्षयाह श्राद्धमें पिंडदान करते हैं. दर्शश्राद्ध और महालय आदि श्राद्धोंमें पिंडदान नहीं करना.

अथगर्भस्रावहरंकांचनयज्ञोपवीतदानंमहार्णवे इदंस्त्रीकर्तृकं शुभदिनेस्त्रीआचम्यदेशकालौसंकीर्त्यममगर्भस्रावनिदानसकलदोषपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंवायुपुराणोक्तंसुवर्णयज्ञोपवीतदानविधिंकरिष्येइतिसंकल्प्य पलेनतदर्धेनतदर्धेनयथाशक्तिवाहैमंयज्ञोपवीतंग्रंथिप्रदेशेमौक्तिकयुतंकृत्वातथैववज्रमणियुतंराजतमुत्तरीयकंचकृत्वोभयंपंचगव्येन गायत्र्याप्रक्षाल्य ताम्रपात्रेद्रोणमितंदधिनिक्षिप्यतन्मध्येद्रोणमितमाज्यंनिक्षिप्याज्योपरितदुभयंसंस्थाप्यभर्ताब्राह्मणोवागायत्रीमंत्रेणगंधादिभिःपूजयेत् अष्टगुंजात्मकोमाषःदशमाषाःसुवर्णः पलकुडवप्रस्थाढकद्रोणाःसुवर्णादिपूर्वपूर्वचतुर्गुणाः दध्याज्ययोर्द्रोणपरिमाणाभावेशक्त्यनुसारिपरिमाणं ब्राह्मणद्वाराआज्यमधुमिश्रैस्तिलैरष्टोत्तरशतंगायत्र्याव्याहृतिभिर्वाहोमंकारयेत्त्यागंभर्तावास्त्रीवाकुर्यात् होमकर्तारंविप्रंवस्त्राद्यैःसंपूज्यप्राङ्मुखायतस्मैउदङ्मुखास्त्रीदानंकुर्यात् त

द्यथा उपवीतंपरिमितंब्रह्मणाविधृतंपुरा भवनौकास्यदानेनगर्भंसंधारयेह्यहंइतिमंत्रेणविप्रस्य नामगोत्रेउच्चार्यताम्रपात्रस्थदध्याज्यसंस्थंसुपूजितंसोत्तरीयकमिदं यज्ञोपवीतंगर्भस्रावनिदानदोषपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंतुभ्यमहंसंप्रददेनमम प्रतिगृह्यतां विप्रःप्रतिगृह्णामीत्यादि यथाशक्तिदक्षिणांदत्वान्येभ्योपियथाशक्तिदक्षिणांदत्वाप्रतिग्रहीतुरनुव्रज्यनमस्कारक्षमापनादिकृत्वाविप्रभोजनंसंकल्प्यकर्मेश्वरायार्पयेत् एतच्चस्रवद्गर्भाभवेत्सातुबालकंहंतियाविषैरित्युक्तेर्बालहत्याप्रायश्चित्तंकृत्वाकार्यं अन्यत्रतुस्वर्णधेनुदानहरिवंशश्रवणादीन्युक्त्वाघृतपूर्णताम्रकलशदानादिविधानानिउक्तानि ॥

इसके अनंतर गर्भस्रावकों हरनेवाले सोनासें वने हुए यज्ञोपवीतका दान **महार्णव** ग्रंथमें कहा है. यह दान स्त्रीनें करना. सो ऐसा.—शुभ दिनमें स्त्रीनें आचमन करके पीछे देश और कालका उच्चार करके "**मम गर्भस्रावनिदानसकलदोषपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं वायुपुराणोक्तं सुवर्णयज्ञोपवीतदानविधिं करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके एक पल, आधा पल अथवा पा पल अथवा अपनी शक्तिके अनुसार सोनाका यज्ञोपवीत अर्थात् जनेऊ बनवाय तिसकी ग्रंथियोंमें मोति लगाना. और तैसेही वज्रमणियुक्त रूपाकी उत्तरीयक बनानी. पीछे दोनों गायत्रीमंत्रद्वारा पंचगव्यसें प्रक्षालित करके तांबाके पात्रमें द्रोणपरिमित दही डालके तिसके मध्यमें द्रोणपरिमित घृत डालके तिस घृत उपर तिन दोनोंकों स्थापित करना. पीछे पति अथवा ब्राह्मणनें गायत्रीमंत्रसें तिन्होंकी गंध आदिकोंसें पूजा करनी. आठ चिरमठियोंका मासा होता है. दश मासोंका सुवर्ण होता है और चार सुवर्णोंका पल और चार पलोंका कुडव और चार कुडवोंका प्रस्थ और चार प्रस्थोंका आढक और चार आढकोंका द्रोण होता है. दही और घृत द्रोणपरिमित नहीं मिलै तौ अपनी शक्तिके अनुसार परिमाणसें लेने. पीछे ब्राह्मणके द्वारा घृत और शहदसें मिश्रित किये तिलोंकरके १०८ एक सौ आठ वार गायत्रीसें अथवा व्याहृतियोंसें होम करवाना. होमका त्याग पतिनें अथवा स्त्रीनें करना. होम करनेवाले ब्राह्मणकी वस्त्र आदिसें पूजा करके पूर्वके तर्फ मुखवाले ब्राह्मणकों उत्तरके तर्फ मुखवाली स्त्रीनें उत्तरीयसहित यज्ञोपवीतका दान करना. "**उपवीतं परिमितं ब्रह्मणा विधृतं पुरा ॥ भव नौकास्य दानेन गर्भं संधारये ह्यहम्,**" इस मंत्रसें ब्राह्मणके नाम और गोत्रका उच्चार करके दान करना. तिसका मंत्र—"**ताम्रपात्रस्थदध्याज्यसंस्थं सुपूजितं सोत्तरीयकमिदं यज्ञोपवीतं गर्भस्रावनिदानदोषपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं तुभ्यमहं संप्रददे न मम ॥ प्रतिगृह्यताम्**" ऐसा दातानें कहे पीछे "**प्रतिगृण्हामि**" ऐसा वाक्य ब्राह्मणनें बोलना. पीछे शक्तिके अनुसार दक्षिणा देके और अन्य ब्राह्मणोंकोंभी शक्तिके अनुसार दक्षिणा देके दान लेनेवालेके संग पीछे पीछे गमन करके नमस्कार और प्रार्थना आदि करके ब्राह्मणभोजनका संकल्प करके कर्म ईश्वरकों अर्पण करना. जो स्त्री बालककों विष अर्थात् जहर देके मारती है तिसके गर्भका स्राव होता है, ऐसा वचन है इस लिये बालहत्याका प्रायश्चित्त करके पीछे यह पूर्वोक्त दान करना. अन्य ग्रंथोंमें तौ सोनाकी धेनुका दान, हरिवंशश्रवण आदि कहके घृतसें पूरित तांबाके कलशका दान करना इस आदि विधान कहे हैं.

अथसूतिकागृहप्रवेशः गृहनैर्ऋत्यांसूतिकागृहंकृत्वा तत्राश्विनीरोहिणीमृगपुनर्वसुपुष्यत्र्युत्तराहस्तचित्रास्वात्यनुराधाधनिष्ठाशततारकानक्षत्रेषुरिक्तादिवर्ज्यतिथौ चंद्रानुकूल्येशुभलग्नेसूतिकाप्रवेशोगोविप्रदेवपूजनंकृत्वामंत्रवाद्यघोषेणसापत्यस्त्रीभिःसहकार्यः असंभवेसद्योवाप्रसवप्रतिबंधेऋग्विधाने प्रमंदिनेइत्यृचंविजिहीष्वेंतिसूक्तंवाजपेत् एताभ्यामभिमंत्रितजलंवापाययेत् तेनसुखप्रसवःशीघ्रप्रसवमंत्रस्तु हिमवत्युत्तरेपार्श्वेसुरथानामयक्षिणी तस्याःस्मरणमात्रेणविशल्यागर्भिणीभवेत् ॐक्षीं ॐस्वाहेतिमंत्रेणदूर्वांकुरेणतिलतैलंशतंसहस्रंवाऽभिमंत्र्यकिंचित्पाययेत्किंचिन्मात्रस्यगर्भेलेपश्च सम्यग्लेपेशीघ्रंसुखप्रसवः अस्थिमात्रावशिष्टगोमस्तकस्यसूतिकागृहोपरिनिधानेसुखप्रसवः वंशनिंबयोस्त्वक्तुलसीमूलंकपित्थपत्रंकरवीरबीजंचसमभागंमहिषीदुग्धेनपेषयित्वातेनसतैलेनयोनिलेपेसद्यःप्रसवः ॥

अब सूतिकाघरमें गर्भिणीका प्रवेश कहताहुं.

घरकी नैर्ऋत्य दिशामें सूतिकागृह बनाय तहां अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, और शतभिषा इन नक्षत्रोंमें और रिक्ता आदि तिथि वर्ज करके अन्य तिथियोंमें और चंद्रमाके अनुकूल शुभ लग्नमें गौ, ब्राह्मण और देवता इन्होंकी पूजा करके मंत्र और बाजाके शब्दपूर्वक संतानवाली स्त्रियोंके संग गर्भिणीनें प्रवेश करना. तिसके असंभवमें तत्कालही प्रवेश करना. बालककी उत्पत्ति होनेमें प्रतिबंध होवै तौ **ऋग्विधान** ग्रंथमें **“प्रमंदिने०”** इस ऋचाका अथवा **“विजिहीष्व०”** इस सूक्तका जप कराना ऐसा उपाय कहा है. अथवा वह ऋचा और वह सूक्त इन दोनोंकरके अभिमंत्रित किये जलका पान कराना. तिसकरके सुखपूर्वक संतान उपजता है. शीघ्र प्रसव होनेका मंत्र कहता हुं—**“हिमवत्युत्तरे पार्श्वे सुरथा नाम यक्षिणी ॥ तस्याः स्मरणमात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत् ॥ ॐ क्षीं ॐ स्वाहा”** इस मंत्रकों कहके दूवके अंकुरसें तिलोंके तेलकों १०० वार अथवा १००० वार अभिमंत्रित करके कछुक पान करवाना और कछुक तेलका गर्भ स्थानकों लेप करना. अच्छी तरह लेप करनेसें शीघ्रही सुखपूर्वक संतान उपजती है. हड्डी मात्र शेष रहे गौके मस्तककों सूतिकागृहके उपर रखना. तिस्सें सुखपूर्वक संतान उपजती है. वांश और नींबकी छाल, तुलसीकी जड, कैथका पत्ता और कनेरके बीज ये समभाग लेके भैंसके दूधमें पीसकर तिसमें तिलोंका तेल घाल योनिपर लेप करनेसें शीघ्र बालक जन्मता है.

अथजातकर्म मूलज्येष्ठाव्यतीपातादावनुत्पन्नस्यजातमात्रस्यपुत्रस्यपितामुखंकुलदेवतावृद्धप्रणामपूर्वकमवलोक्यनद्यादावुदङ्मुखःस्नायात् तदसंभवेगृहेआनीताभिःशीताभिःस्वर्णयुताभिरद्भिःस्नायात् एतच्चरात्रावपिनद्यादौकार्यं अशक्तोरात्रावग्निसन्निधौस्वर्णयुतशीतोदकैः मूलादिषुजननेतुमुखमदृष्ट्वैवस्नानं देशांतरगतेजनकेपुत्रजन्मश्रवणोत्तरंस्नानं सर्वत्रस्नानात्प्रागस्पृश्यत्वं एवंकन्योत्पत्तावपिस्नानंतत्प्राक्अस्पृश्यत्वंचज्ञेयं अन्यसपिंडाशौचमध्येजननेपिपितुस्तात्कालिकीस्नानदानादौजातकर्मणिचशुद्धिः केचिन्मृताशौचेपुत्रजननेजातकर्माशौचांतेकार्यमित्याहुः नालच्छेदनात्पूर्वंसंपूर्णसंध्यावंदनादिकर्मणिनाशौचं प्रथमदिनेपंचमषष्ठदश

मदिनेचदानप्रतिग्रहयोर्नदोषः शृतमन्नंनग्राह्यंज्योतिष्टोमादिदीक्षावतास्वयमन्येनवाजातकर्म नकार्यं किंतुअवभृथस्नानांतेदीक्षांविसृज्यस्वयंकार्यं श्रेष्ठःकनिष्ठेनपुंसवनादिकंनकारयेत् जातकर्मतुकारयेत् अतिक्रांतंतुस्वयमेवकुर्यात् महारोगार्तोजातकर्मस्वयंनकुर्यात् अच्छिन्ननाभिकर्तव्यंश्राद्धंवैपुत्रजन्मनि पुत्रपदेनकन्यापिगृह्यते तथाचसंस्कारांगभिन्नंकन्यापुत्रयोर्जन्मनिमित्तकंनांदीश्राद्धंविधीयते एतच्चरात्रावपिकार्यं तच्चहेम्नैवकार्यंनत्वन्नादिना तथाचस्नातोलंकृतः पिताअकृतनालच्छेदमपीतस्तन्यमन्यैरस्पृष्टंप्रक्षालितंकुमारंमातुरुत्संगेकारयित्वाचमनादिदेशकालादिकीर्तनांते अस्यकुमारस्यगर्भांबुपानजनितदोषनिबर्हणायुर्मेधाभिवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंजातकर्मकरिष्ये तदादौस्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनंचकरिष्ये हिरण्येनपुत्रजन्मनिमित्तकंजातकर्मांगंचनांदीश्राद्धंतंत्रेणकरिष्येइति संकल्प्ययथागृह्यंकुर्यात् ततोदद्यात्सुवर्णंचभूमिंगांतुरगंरथं छत्रंछागंचमाल्यंचशयनंचासनं गृहं तिलपूर्णानिपात्राणिसहिरण्यानिचैवहि भक्षयित्वातुपक्वान्नंद्विजश्चांद्रायणंचरेत् सूतकेतुसकुल्यानांनदोषोमनुरब्रवीत् ॥

अब जातकर्मसंस्कार कहताहुं.

मूल, ज्येष्ठा, और व्यतीपात इन आदि अशुभ कालमें उत्पन्न नहीं हुआ ऐसा पुत्र उत्पन्न होवै तब पितानें कुलदेवता और वृद्धोंकों पहले नमस्कार करके पीछे पुत्रका मुख देखके नदी आदिमें उत्तरके तर्फ मुखवाला होके स्नान करना. तिसके असंभवमें घरमें प्राप्त करे शीतल और सोनासें संयुत किये ऐसे पानीकरके स्नान करना. यह स्नान रात्रिमेंभी नदी आदिविषे करना. अशक्त मनुष्यनें रात्रिविषे अग्निके समीप सोनासें युत हुये शीतल पानीसें स्नान करना. मूल आदिमें बालक जन्मा होवै तब पुत्रका मुख देखे विना स्नान करना. देशांतरमें पिता होवै तब पुत्रके जन्मकों सुननेके उपरंत स्नान करना. स्नानके पहले किसकोंभी स्पर्श नहीं करना, ऐसा सब जगह जानना. ऐसेही कन्याकी उत्पत्तिमेंभी स्नान करना. तिसके पहले किसकोंभी स्पर्श नहीं करना. दूसरे सपिंड अर्थात् सात पीढियोंवालेके आशौचके मध्यमें पुत्रका जन्म होवै तबभी स्नान और दान आदि करनेविषे पिताकों तिस कालमें शुद्धि जाननी. मृताशौचमें पुत्रका जन्म होवै तौ सूतकके अंतमें जातकर्मसंस्कार करना, ऐसा कितनेक पंडित कहते हैं. नालच्छेदनके पहले संध्यावंदन आदि सब कर्मोंमें आशौच नहीं है. पहला, पांचमा, छठा और दशमा इन दिनोंमें दान देनेमें और दान लेनेमें दोष नहीं है. पकाया हुआ अन्न नहीं लेना. ज्योतिष्टोम आदि दीक्षावालेनें अपने हाथसें अथवा दूसरेके द्वारा जातकर्म नहीं करना; किंतु अवभृथसंज्ञक[1] स्नानके अंतमें दीक्षाकों दूर करके आपही जातकर्म करना. श्रेष्ठ मनुष्यनें कनिष्ठ मनुष्यसें पुंसवन आदि संस्कार नहीं करवाने. जातकर्म करवाना. उल्लंघित किये कर्मकों आपही करना. महारोगसें पीडित हुए मनुष्यनें जातकर्म आप नहीं करना. जबतक नाभिच्छेदन नहीं किया जावै तबतक पुत्रके जन्ममें नांदीश्राद्ध करना. पुत्रपदकरके कन्याकाभी ग्रहण करना. तैसेही संस्कारसंबंधी नांदीश्राद्धसें भिन्न ऐसा, कन्या और पुत्रके जन्मनिमित्तक नांदीश्राद्ध करना ऐसा

---

[1] यज्ञ समाप्त हुए पीछे जो स्नान किया जाता है तिसकों अवभृथस्नान कहते हैं.

विधि प्राप्त होता है. यह नांदीश्राद्ध रात्रिमेंभी करना. नांदीश्राद्ध द्रव्यद्वारा करना, अन्न आदिसें नहीं करना. तैसेही स्नान किये हुये और अलंकारोंसें युत हुए पितानें नहीं छेदित किये नालवाले और नहीं दूध पीनेवाले और दूसरोंसें नहीं छुहे हुए और पानीसें धोये हुए ऐसे बालककों माताकी गोदमें दिलवायके आप आचमन करके पीछे देश और कालका उच्चार करके "अस्य कुमारस्य गर्भांबुपानजनितदोषनिबर्हणायुर्मेधाभिवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं जातकर्म करिष्ये॥ तत्रादौ स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं च करिष्ये ॥ हिरण्येनपुत्रजन्मनिमित्तकं जातकर्मांगं च नांदीश्राद्धं तंत्रेण करिष्ये" ऐसा संकल्प करके गृह्यसूत्रके अनुसार प्रयोग करना. पीछे सोना, पृथिवी, गौ, घोडा, रथ, छत्र, बकरा अथवा मेंढा, पुष्पोंकी माला, पलंग, आसन, घर और सोनासहित तिलोंसें पूरित किये पात्र इन्होंका दान करना. आशौचवालेके घरमें पकाये हुए अन्नका ब्राह्मणनें भोजन किया होवै तौ तिसनें चांद्रायण प्रायश्चित्त करना. आशौचमें अपने गोत्रवाले और सात पीढियोंके भीतरके मनुष्योंकों भोजन करनेमें दोष नहीं है ऐसा मनुजी कहते हैं.

अथारिक्तपाणिर्ज्योतिर्विदंसंपूज्यतस्माज्जन्मलग्नगतशुभाशुभग्रहनिर्णयंज्ञात्वाप्रतिकूलग्रहानुकूल्यार्थंतत्तद्ग्रहप्रीत्यर्थंदानानिकुर्यात् ग्रहमंत्रजपादिशांतिसूक्तजपादिकर्मणिविप्रान्वानियोजयेत् ततोनालच्छेदंकारयित्वाहिरण्योदकेनमातुर्दक्षिणस्तनंप्रक्षाल्यमात्राकुमारंपाययेत् तत्रइमांकुमारइत्यादिमंत्रंविप्रादिःपठेत् जातकर्माद्यन्नप्राशनांतसंस्कारेषुआश्वलायनानांहोमः कृताकृतः होमपक्षेनांदीश्राद्धांतेजातकर्मांगहोमंकरिष्येइतिसंकल्प्यलौकिकाग्निंप्रतिष्ठाप्यान्वाधानाद्याज्यभागांते अग्निमिंद्रंप्रजापतिंविश्वान्देवान्ब्रह्माणमाज्येनजुहुयात् मधुसर्पिःप्राशनादिमूर्धाघ्राणांतेस्विष्टकृदादिकुर्यादितिक्रमः अन्येषांयथागृह्यंहोमादिज्ञेयं ॥

पीछे नारियल आदि हाथमें लेके ज्योतिषीकी पूजा करके तिस ज्योतषीसें जन्मलग्नगत शुभ और अशुभ ग्रहके निर्णयकों जान लेके प्रतिकूलकों अनुकूल करनेके अर्थ तिस तिस ग्रहकी प्रीतिके लिये दान करने. अथवा ग्रहोंके मंत्रोंका जप आदि तथा शांतिसूक्तका जप आदि कर्ममें ब्राह्मणोंकों योजित करने. पीछे नालच्छेदन कराय सोनासें युत पानीसें माताकी दाहिनी चूंचीकों धोय माता बालककों चूंची प्यावै. तहां चूंची पीनेके समय "इमां कुमार०" इस आदि मंत्र ब्राह्मण आदिनें पठण करना. जातकर्मसें अन्नप्राशनपर्यंत जो संस्कार हैं तिन्होंमें आश्वलायनशाखावालोंनें होम करना अथवा नहीं करना ऐसा कहा है. होम करनेके पक्षमें नांदीश्राद्धके अंतमें "जातकर्मांगहोमं करिष्ये"° ऐसा संकल्प करके लौकिकाग्नीकों स्थापित करके अन्वाधानकर्मसें आज्यभागपर्यंत कर्म करनेके पश्चात् अग्नि, इंद्र, प्रजापति, विश्वेदेव और ब्रह्मा इन्होंके उद्देशसें घृतका होम करना. पीछे शहद और घृतके प्राशनकर्मसें मूर्द्धाघ्राणकर्मपर्यंत कर्म किये पीछे स्विष्टकृत् आदि कर्म करना ऐसा क्रम है. आश्वलायनोंसें भिन्न शाखावालोंनें अपने अपने गृह्यसूत्रके अनुसार होम आदि प्रयोग जानना.

कुमार्याअपिजातकर्मादिसंस्काराश्चौलांताःसर्वेअमंत्रकंकार्याःविवाहस्तुसमंत्रकः अतः कन्यायाजातकर्मादिसंस्कारलोपेतत्तत्कालेविवाहकालेवाप्रायश्चित्तंकृत्वाविवाहःकार्यः अत्र

सर्वत्रजातकर्मनामकर्मादौमुख्यकालातिक्रमे गुर्वाद्यस्तरहितेशुभनक्षत्रादौजातकर्मादिकंकार्यं तत्रजातकर्मणिनक्षत्राणिरोहिणीत्र्युत्तराश्विनीहस्तपुष्यानुराधारेवतीमृगचित्राश्रवणादित्रयस्वातीपुनर्वसवः रिक्तापर्वरहितास्तिथयः भौमशनिभिन्नावाराः भद्रावैधृत्यादिशून्येसुकेंद्रलग्नेषुभं ॥

कन्याकेभी जातकर्मसें चौलसंस्कारपर्यंत सब कर्म मंत्रके विना करने. विवाह तौ मंत्रोंसहित करना. जो कन्याके जातकर्म आदि संस्कारोंका लोप हुआ होवै अर्थात् वे संस्कार नहीं हुए होवैं तौ जिस समयमें ये संस्कार करनेके होवैं तिस समयमें अथवा विवाहके समयमें तिन संस्कारोंके लोपका प्रायश्चित्त करके विवाह करना. यहां और सब जगह जातकर्म और नामकर्म आदि कर्मके मुख्य कालका अतिक्रम होवै तौ गुरु आदिके अस्तसें रहित शुभ नक्षत्र आदिमें जातकर्म आदि करना. तिस जातकर्मविषे नक्षत्र—रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, अश्विनी, हस्त, पुष्य, अनुराधा, रेवती, मृगशिर, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, स्वाती और पुनर्वसु ये नक्षत्र लेने. चतुर्थी, चतुर्दशी, नवमी, अमावस, पौर्णमासी इन्होंसें वर्जित तिथि लेनी. मंगल और शनैश्चरसें वर्जित वार लेने. भद्रा और वैधृति आदिसें वर्जित शुभ दिन होवै और सुंदर केंद्रलग्न होवै तब जातकर्म शुभ होता है.

अथपंचमषष्ठदिनयोर्जन्मदानांपूजनं रात्रेःप्रथमयामेपित्रादिःस्नात्वाचम्यदेशकालौसंकीर्त्यअस्यशिशोःसमातृकस्यायुरारोग्यप्राप्तिसकलानिष्टशांतिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंविघ्नेशस्यजन्मदानांजीवंत्यपरनाम्न्याःषष्ठीदेव्याः शस्त्रगर्भाभगवत्याश्चपूजनंकरिष्ये इतिसंकल्प्यतंडुलपुंजेषुविघ्नेशंजन्मदाश्चनाममंत्रेणावाह्य आयाहिवरदादेविमहाषष्ठीतिविश्रुते शक्तिभिःसह बालंमेरक्षजागरवासरे इतिषष्ठींदेवीमावाह्यनाम्नाभगवतीमावाह्यनामभिः शक्तिस्त्वंसर्वदेवानांलोकानांहितकारिणी मातर्बालमिमंरक्षमहाषष्ठिनमोस्तुते इतिमंत्रेणचषोडशोपचारैःसंपूज्यप्रार्थयेत् लंबोदरमहाभागसर्वोपद्रवनाशन त्वत्प्रसादादविघ्नेशचिरंजीवतुबालकः जननीसर्वभूतानांबालानांचविशेषतः नारायणीस्वरूपेणबालंमेरक्षसर्वदा प्रेतभूतपिशाचेभ्योशाकिनी डाकिनीषुच मातेवरक्षबालंमेश्वापदेपन्नगेषुच गौरीपुत्रोयथास्कंदःशिशुत्वेरक्षितःपुरा तथा ममाप्ययंबालःषष्ठिकेरक्ष्यतांनमः इतिविप्रेभ्यस्तांबूलदक्षिणादिदद्यात् रात्रौजागरणंकुर्यात् पंचमषष्ठदिनयोर्दानप्रतिग्रहेनदोषः दशमदिनेबलिदानंस्वीयेभ्योन्नदानंचकार्यं ॥

इसके अनंतर पांचमे और छठे दिनमें जन्मदा नामकी देवताका पूजन करना. सो ऐसा—रात्रिके प्रथम प्रहरमें पिता आदिनें स्नान और आचमन करके पीछे देश और कालका उच्चार करके “अस्य शिशोः समातृकस्यायुरारोग्यप्राप्तिसकलानिष्टशांतिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विघ्नेशस्य जन्मदानां जीवंत्यपरनाम्न्याः षष्ठीदेव्याः शस्त्रगर्भाभगवत्याश्च पूजनं करिष्ये,” ऐसा संकल्प करके चावलोंके समूहमें विघ्नेश और जन्मदा देवताका नाममंत्रसें आवाहन करके “आयाहि वरदा देवि महाषष्ठीति विश्रुते ॥ शक्तिभिःसह बालं मे रक्ष जागरवासरे,” इस मंत्रसें षष्ठी देवीका आवाहन करके और नाममंत्रसें भगवतीका आवाहन करके नाममंत्रसें पूजा करनी. तिसका मंत्र—“शक्तिस्त्वं सर्वदेवानां लोकानां हित-

कारिणी ॥ मातर्बालमिमं रक्ष महाषष्ठि नमोस्तु ते ” इस मंत्रसें षोडशोपचारोंसें पूजा करके प्रार्थना करनी. तिसका मंत्र–“ लंबोदर महाभाग सर्वोपद्रवनाशन ॥ त्वत्प्रसादादविघ्नेश चिरं जीवतु बालकः ॥ जननी सर्वभूतानां बालानां च विशेषतः ॥ नारायणीस्वरूपेण बालं मे रक्ष सर्वदा ॥ प्रेतभूतपिशाचेभ्यः शाकिनीडाकिनीषु च ॥ मातेव रक्ष बालं मे श्वापदे पन्नगेषु च ॥ गौरीपुत्रो यथा स्कंदः शिशुत्वे रक्षितः पुरा ॥ तथा ममाप्ययं बालः षष्ठिके रक्ष्यतां नमः ” इस प्रकार प्रार्थना करके ब्राह्मणोंकों तांबूल, दक्षिणा आदि देने और रात्रिमें जागरण करना. पांचमे और छठे दिनमें दान देनेमें और दान लेनेमें दोष नहीं है. दशमे दिनमें बलिदान और अपने मनुष्योंकों अन्नदान करना.

अथाशौचेकर्तव्यनिर्णयः सूतकेमृतकेकुर्यात्प्राणायाममममंत्रकं तथामार्जनमंत्रांश्चमनसोच्चार्यमार्जयेत् गायत्रींसम्यगुच्चार्यसूर्यायार्घ्यंनिवेदयेत् उपस्थानंनैवकार्यंमार्जनंतुकृताकृतंसूर्यंध्यायन्नमस्कुर्यात्गायत्रीजपोनकार्यः अर्घ्यांतामानसीसंध्येत्युक्तेः केचिन्मनसादशगायत्रीजपःकार्यइत्याहुः वैश्वदेवब्रह्मयज्ञादयःपंचमहायज्ञानकार्याः वेदाभ्यासोनकार्यः औपासनहोमपिंडपितृयज्ञावसगोत्रेणकारयेत् केचिच्छ्रौतकर्मणिसद्यःशुद्ध्युक्तेरग्निहोत्रहोमःस्वयंकार्यइत्याहुः अपरेतुसर्वस्याप्याशौचापवादस्यानन्यगतिकत्वात्सतिब्राह्मणेब्राह्मणद्वारैवकार्यः ब्राह्मणाभावेस्वयंकार्यइत्याहुः स्थालीपाकोनकार्यःआशौचांतेकार्यः सर्वथालोपप्रसक्तौस्थालीपाकोपिब्राह्मणद्वाराकार्यः अन्वाधानोत्तरंसूतकप्राप्तौब्राह्मणद्वाराश्रौतेष्टिस्थालीपाकौ होमादौत्यागःस्नात्वास्वयंकार्यः दर्शादिश्राद्धस्यलोपएव प्रतिसांवत्सरिकंश्राद्धंआशौचांतेएकादशाहे कार्यं तत्रासंभवेदर्शव्यतीपातादिपर्वणि एवंपत्न्यामृतुमत्यामपिपिंडयज्ञदर्शश्राद्धेकार्ये अन्वाधानोत्तरंरजोदोषेइष्टिस्थालीपाकौकार्यौ अन्यथाकालांतरे दानप्रतिग्रहाध्ययनानिवर्ज्यानि आशौचेन्यस्यान्नंनाश्नीयात् पितृयज्ञस्थालीपाकश्रवणाकर्मादिसंस्थानांप्रथमारंभोब्राह्मणद्वाराप्याशौचयोर्नभवति प्रथमारंभोत्तरंश्रवणाकर्मादिकंविप्रद्वाराशौचेपिपत्न्यार्तवेपिकार्यं आग्रयणंतुनभवति अग्निसमारोपप्रत्यवरोहौआशौचेनभवतः तेनसमारोपोत्तरमाशौचेतैत्तिरीयाणांत्रिदिनंहोमलोपेबह्वृचादीनांद्वादशदिनंहोमलोपेग्निनाशादाशौचांतेश्रौतस्मार्तयोःपुनराधानमेव समारोपप्रत्यवरोहयोरन्यकर्तृकत्वाभावात् अग्न्यनुगमेप्रायश्चित्तपूर्वकपुनरुत्पत्तिरन्यद्वाराभवति भोजनकालेआशौचप्राप्तौमुखस्थंग्रासंत्यक्त्वास्नायात् तद्ग्रासभक्षणेएकोपवासःसर्वान्नभक्षणेत्रिरात्रोपवासः सूतकेमृतकेचैवनदोषोराहुदर्शनइत्युक्तेर्ग्रहणेस्नात्वाश्राद्धदानजपादिकमाशौचेपिकार्यं एवंसंक्रांतिस्नानदानादिकमपि संकटेनांदीश्राद्धोत्तरंमौंजीविवाहयोर्नाशौचं संकटेमधुपर्कोत्तरमृत्विजांनाशौचं यजमानस्यदीक्षणीयोत्तरंप्रागवभृथान्नाशौचं अवभृथमाशौचोत्तरंकार्यं व्रतेषुनाशौचमित्युक्तेरनंतव्रतादिकमन्यैःकारयेत् प्रारब्धान्नसत्रस्यान्नदानादिषुनाशौचं पूर्वसंकल्पितान्नेषुनदोषःपरिकीर्तितः उदकदुग्धदधिघृतलवणफलमूलभर्जिताद्यन्नानांसूतकिगृहस्थितानांस्वयंग्रहणेदोषाभावः सूतकिहस्तात्तुनग्राह्यं केचित्तंडुलादिकमपक्वमन्नंग्राह्यमाहुः इतिसंक्षेपेणनिर्णयोविशेषस्तुवक्ष्यते ॥

अब आशौच अर्थात् सूतकमें करनेके योग्य और नहीं करनेके योग्य कर्मोंका

निर्णय कहताहुं.—सूकतमें मंत्रोंसें रहित प्राणायाम करना. तैसेही मार्जन करनेके मंत्रोंकों मनमें उच्चारण करके मार्जन अर्थात् शुद्धि करनी. गायत्रीका अच्छी तरहसें उच्चारण करके सूर्यकों अर्घ्य निवेदन करना. उपस्थान नहीं करना. मार्जन तौ करना अथवा नहीं करना. सूर्यका ध्यान करके प्रणाम करना. गायत्रीमंत्रका जप नहीं करना. क्योंकी, अर्घ्य देनेपर्यंत मनमें संध्या करनी ऐसा वचन है. कितनेक मुनि कहते हैं की, मनमें गायत्रीका दशवार जप करना. वैश्वदेव और ब्रह्मयज्ञ आदि पंचमहायज्ञ नहीं करने, और वेदका अभ्यास नहीं करना. औपासनहोम और पिंडपितृयज्ञ दूसरे गोत्रवालोंके द्वारा करवाने. कितनेक मुनि कहते हैं की, श्रौतकर्ममें तत्काल शुद्धि कही है, इस कारणसें अग्निहोत्रसंबंधी होम आपही करना उचित है. अन्य मुनि कहते हैं की, सूतकके अपवादकी दूसरी गति नहीं है, इस कारणसें ब्राह्मणके होनेमें ब्राह्मणके द्वाराही होम कराना उचित है, और ब्राह्मणके अभावमें आप करना ऐसा कहते हैं. स्थालीपाक सूतकमें करना नहीं. सूतकके अंतमें स्थालीपाक करना. सब प्रकारसें स्थालीपाकके लोपका प्रसंग होवै तौ स्थालीपाकभी ब्राह्मणके द्वारा करवाना. अन्वाधानके उपरंत सूतक प्राप्त होवै तौ ब्राह्मणके द्वारा श्रौतेष्टि और स्थालीपाक कराने. होम आदिमें त्याग करनेका सो स्नान करके आपही करना. दर्श आदि श्राद्धका लोपही करना. प्रतिसांवत्सरिक श्राद्ध अशौचके अंतमें ग्यारमे दिनमें करना. ग्यारमे दिन नहीं हो सकै तौ व्यतीपात, अमावस आदि पर्वके दिनमें करना. ऐसेही स्त्रीकों ऋतुकाल आ जावै तबभी पिंडयज्ञ और दर्शश्राद्ध पांचमे दिनमें करने. अन्वाधानके उपरंत रजोदोष अर्थात् ऋतुकाल आवै तौ इष्टि और स्थालीपाक करने. अन्वाधानके पहले ऋतुकाल प्राप्त होवै तौ अन्य समयमें करने. दान देना, दान लेना और अध्ययन करना इन्होंकों वर्ज देना. सूतकमें दूसरेका अन्न नहीं भक्षण करना. पिंडपितृयज्ञ, स्थालीपाक और श्रवणाकर्म इन आदि कर्मोंका प्रथम आरंभ ब्राह्मणके द्वाराभी जननाशौच और मृताशौचमें नहीं कराना. प्रथमारंभके उपरंत श्रावणाकर्म आदि सूतकमें और स्त्रीके ऋतुकाल आनेमेंभी ब्राह्मणके द्वारा करवाने. आग्रयण तौ नहीं होता है. आशौचमें अग्निका समारोप और प्रत्यवरोहभी नहीं होते हैं, तिसकरके ऐसा सिद्ध होता है की, अग्नीके समारोपके उपरंत आशौच प्राप्त होवै तौ तैत्तिरीयशाखावालोंका तीन दिन होमका लोप होनेसें और ऋग्वेदियोंका बारह दिनपर्यंत होमका लोप होनेसें अग्निका नाश होता है, इस लिये आशौचके अंतमें श्रौत और स्मार्तकर्मोंमें फिर अग्निका आधान करना. क्योंकी, समारोपकर्म और प्रत्यवरोहणकर्ममें दूसरा कर्ता नहीं बन सकता. अग्निका नाश होनेमें प्रथम प्रायश्चित्त करके फिर अग्निकी उत्पत्ति दूसरेके द्वारा करानी. भोजनसमयमें आशौच प्राप्त होवै तौ मुखमें स्थित हुये ग्रासकों त्यागकर स्नान करना. जो वह ग्रास भक्षण किया जावै तौ एक उपवास करना. पात्र उपरका संपूर्ण अन्न भक्षण करनेमें तीन रात्रि उपवास करना. “ जननाशौच और मृताशौचमें सूर्य और चंद्रमाका ग्रहण प्राप्त होवै तौ दोष नहीं है.” इस वचनसें ग्रहणमें स्नान करके श्राद्ध, दान, जप इन आदि कर्म आशौचमेंभी करने. ऐसेही संक्रांतिसंबंधी स्नान और दान आदिभी करने. संकटमें नांदीश्राद्धके उपरंत यज्ञोपवीतकर्म और विवाहकर्ममें आशौच नहीं लगता है. संकटमें, मधुपर्कके उपरंत ऋत्विजोंकों आशौच नहीं लगता है. यजमानकों दीक्षाके उपरंत

और अवभृथस्नानके पहले आशौच नहीं लगता है. अवभृथस्नान सूतकपातकके उपरंत करना. "व्रतोंमें आशौच नहीं लगता है." इस वचनसें अनंतव्रत आदि दूसरेके द्वारा कराने. पूर्व प्रारंभित किये अन्ययज्ञके अन्नदान आदिमें आशौच नहीं लगता है. "पूर्वसंकल्पित किये अन्नोंविषे आशौच नहीं लगता है." सूतकीके घरमें स्थित हुये पानी, दूध, दही, घृत, नमक, फल, मूल और भुना हुआ अन्न इन सबोंकों अपने हाथसें ग्रहण करनेमें दोष नहीं लगता है. सूतकीके हाथसें ये सब चीज नहीं ग्रहण करनी. कितनेक ग्रंथकार चावल आदि नहीं पकाये हुये अन्नकों ग्रहण करना ऐसा कहते हैं. इस प्रकार संक्षेपसें निर्णय कहा है. विशेष निर्णय आगे कहैंगे.

अथसूतिकाशुद्धिःदशाहांतेसूतिकायाअस्पृश्यत्वनिवृत्तिर्नामकर्मजातकर्मादिप्राप्तकर्माधिकारश्चजातेष्टिविवाहोपनयनादिकर्मसुतुपुत्रप्रसूनांविंशतिरात्रांतेऽधिकारः कन्याप्रसूनांमासांतेऽधिकारः ॥

अब सूतिकाकी शुद्धि कहताहुं.

दश दिनके उपरंत सूतिकाके अस्पर्शपनेकी निवृत्ति होती है, और नामकर्म और जातकर्म आदि प्राप्त हुये कर्मकों अधिकार प्राप्त होता है. जातेष्टि, विवाहकर्म और यज्ञोपवीतकर्म इन आदि कर्मोंमें पुत्र जननेवाली स्त्रियोंकों वीस रात्रिके अंतमें अधिकार प्राप्त होता है. कन्या जननेवाली स्त्रियोंकों एक महीनेके अंतमें अधिकार प्राप्त होता है.

अथजन्मनिदुष्टकालस्तच्छांतयश्चनिर्णीयंते तत्रादौगोप्रसवः यत्रजन्मकालेपितुर्मातुःसुतस्यचारिष्टमुक्तंतत्रगोप्रसवशांतिस्तत्तन्नक्षत्रादिशांतिश्चकार्या धनाद्यरिष्टेषुनकार्या मूलाश्लेषाज्येष्ठामघानक्षत्रेषुजननेचतुर्थपादादिषुपित्राद्यरिष्टाभावेपिगोप्रसवः अश्विनीरेवतीपुष्यचित्रासुनक्षत्रशांत्यभावेपिगोप्रसवशांतिरेवकार्या तत्रअस्यशिशोरमुकदुष्टकालोत्पत्तिसूचितारिष्टनिवृत्त्यर्थंगोमुखप्रसवशांतिंकरिष्येइतिसंकल्प्य गणेशपूजनमात्रंकृत्वाअंगादंगादितिमंत्रेण शिशुमूर्धावघ्राणांतेप्रयोगमध्यएवपुण्याहवाचनमितिकौस्तुभमयूखौ पुण्याहवाचनंशाखोक्तंकृत्वामूर्धावघ्राणांते अस्यगोमुखप्रसवस्यपुण्याहंभवंतोब्रुवंत्वित्येकवाक्यमेवत्रिर्वदेत् ऋत्विजश्चप्रतिब्रूयुर्नतुशाखोक्तमितिकमलाकरः नांदीश्राद्धंनकार्यं अग्निप्रतिष्ठांतेकस्मिंश्चित्पीठेनवग्रहान्अधिदेवतादिरहितान्प्रतिष्ठाप्यान्वाधानंकुर्यात् आज्यभागांतेअपःआपोहिष्ठेतित्र्यृचेनअप्सुमेसोमइतिगायत्र्याऋचाच मिलितदधिमध्वाज्येनप्रत्यृचंअष्टाष्टसंख्याहुतिभिर्विष्णुंतद्विष्णोरित्यृचामिलितदधिमध्वाज्येनाष्टाहुतिभिःयक्ष्महणंअक्षीभ्यामितिसूक्तेन प्रत्यृचमष्टाष्टमिलितदधिमध्वाज्याहुतिभिर्नवग्रहान्दधिमध्वाज्येनाष्टाष्टसंख्याहुतिभिःशेषेणेत्यादिमयूखादयः कमलाकरस्तुदधिमध्वाज्येनापश्चतुर्वारंविष्णुंसकृत्यक्ष्महणमक्षीभ्यामितिसूक्तेनप्रत्यृचमष्टाष्टसंख्याहुतिभिर्नवग्रहानेकैकयाहुत्याशेषेणस्विष्टकृतमित्याह आज्यभागहोमांतेएकस्मिन्कुंभेविष्णुवरुणौप्रतिमयोःसंपूज्यौ प्रतिमासु विष्णुवरुणयक्ष्महणःपूज्याइतिमयूखे ततो यथान्वाधानहोमइतिसंक्षेपः अवशिष्टप्रयोगःशांतिग्रंथेषु एवमग्रेपिदेवताद्रव्याहुतिसंख्यानिमित्तफलमात्रंलिख्यतेविस्तरोन्यत्रज्ञेयः ॥

अब जन्मसमयके दुष्ट काल और तिनकी शांतियोंकों कहताहुं.

तिन्होंमें प्रथम गोप्रसवशांति कहताहुं. जहां जन्मकालमें पिताकों, माताकों और पुत्रकों अरिष्ट कहा है, तहां गोप्रसवशांति और तिस नक्षत्र आदिकी शांति करनी. धन आदिके नाशके अरिष्टमें शांति नहीं करनी. मूल, आश्लेषा, ज्येष्ठा और मघा इन नक्षत्रोंके चतुर्थपाद आदिमें जन्म होवै तबभी गोप्रसवशांति करनी. अश्विनी, रेवती, पुष्य और चित्रा इन नक्षत्रोंमें नक्षत्रकी शांति नहीं, करनी तौभी गोप्रसवशांतिही करनी. वह गोप्रसव शांतिका संकल्प—“**अस्य शिशोरमुकदुष्टकालोत्पत्तिसूचितारिष्टनिवृत्त्यर्थं गोप्रसवशांतिं करिष्ये**” ऐसा संकल्प करके गणेशके पूजनमात्र करके “**अंगादंगा०**” इस मंत्रसें बालकके मस्तकका अवघ्राण किये पीछे प्रयोगके मध्यमेंही पुण्याहवाचन करना, ऐसा **कौस्तुभ** और **मयूख** ग्रंथमें कहा है. अपनी शाखाके अनुसार पुण्याहवाचन करके मूर्द्धावघ्राण करना. पीछे यजमाननें “**अस्य गोमुखप्रसवस्य पुण्याहं भवंतो ब्रुवंतु**” इस एकही वाक्यका तीन वार उच्चार करना. ऋत्विजोंनेंभी प्रतिवचन कहना. शाखाके अनुसार पुण्याहवाचन नहीं करना ऐसा **शांतिकमलाकरमें** कहा है. नांदीश्राद्ध नहीं करना. अग्निकी प्रतिष्ठाके अंतमें किसीक पीठपर अधिदेवता आदिसें रहित नवग्रहोंकों प्रतिष्ठापित करके अन्वाधान करना. पीछे आज्यभागके अंतमें प्रधानहोम करना. सो ऐसा—जलके देवताओंका “**आपोहिष्ठा०**” इन तीन ऋचाओंसें और “**अप्सुमे सोमो०**” इस ऋचासें और गायत्रीमंत्रसें दही, शहद और घृत इन तीनोंकों मिलाय एक एक ऋचाका आठ वार पाठ करके होम करना. विष्णुदेवताका “**तद्विष्णो०**” इस मंत्रसें दही, शहद और घृत इन्होंकों मिलाय आठवार होम करना. यक्ष्महण देवताका “**अक्षीभ्यां०**” इस सूक्तके एक एक ऋचाकरके आठ आठ वार मिश्रित किये दही, शहद, और घृत इन्होंका होम करना. नवग्रहोंका मिश्रित किये दही, शहद और घृत इन्होंकरके आठ आठ आहुतियोंसें होम करना. शेष रहे द्रव्यसें स्विष्टकृत आदि होम करना ऐसा मयूख आदि ग्रंथोंमें कहा है. **कमलाकर** ग्रंथमें तौ दही, शहद और घृतसें जलके देवताओंके अर्थ, चारवार विष्णु देवताके लिये, एकवार यक्ष्महण देवताके लिये “**अक्षीभ्यां०**” इस सूक्तकी एक एक ऋचासें आठ आठवार, और नवग्रहोंके लिये एकवार और शेषद्रव्यसें स्विष्टकृत करना ऐसा कहा है. आज्यभागहोमके अंतमें एक कलशमें दो प्रतिमाओंमें विष्णु और वरुणकी पूजा करनी. पीछे तीन प्रतिमाओंमें विष्णु, वरुण और यक्ष्महा ये तीनोंकी पूजा करनी. इस प्रकार मयूख ग्रंथमें कहा है. पीछे अन्वाधानके अनुसार होम करना. इस प्रकार संक्षेप कहा है. शेष रहा प्रयोग शांतियोंके ग्रंथोंमांहसें देख लेना. ऐसेही आगेभी देवता, द्रव्य, आहुतियोंकी संख्या और निमित्तका फल मात्र कहुंगा. विस्तार तौ अन्य ग्रंथसें जानना उचित है.

अथकृष्णचतुर्दशीजननशांतिः कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांप्रसूतेःषड्विधंफलं चतुर्दशींचषड्भागां कुर्यादादौशुभंस्मृतं द्वितीयेपितरंहंतितृतीयेमातरंतथा चतुर्थेमातुलंहंतिपंचमेवंशनाशनं षष्ठेतु

धनहानिःस्यादात्मनोवंशनाशनं तत्रचतुर्दश्याः षडंशानांमध्येद्वितीयतृतीयषष्ठांशेषुजननेगोमुखप्रसवपूर्वकंचतुर्दशीशांतिः अन्यभागेकेवलचतुर्दशीशांतिः अस्याशिशोःकृष्णाचतुर्दश्या अमुकांशजननसूचितसर्वारिष्टनिरासद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमित्यादिसंकल्पः आग्नेयादिचतुर्दिक्षुचत्वारः कुंभमध्येशतच्छिद्रकुंभेप्रतिमायांरुद्रावाहनं मयूखेतु पीठादौरुद्रप्रतिमांसंपूज्यतत्प्राच्यामुदीच्यांवाशतच्छिद्रादिपंचकलशस्थापनंपूजनं अन्वाधानेग्रहानष्टाष्टसंख्यसमिदाज्यचरुभिरधिदेवतादीन्एकैकसंख्यसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः रुद्रंअश्वत्थप्लक्षपलाशखदिरसमिद्भिश्चर्वाहुतिभिराज्याहुतिभिर्माषैस्तिलैःसर्षपैश्चप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशताष्टाविंशत्यन्यतरसंख्ययात्र्यंबकमितिमंत्रेणअग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचतिलाहुतिभिरमुकसंख्याभिःसकृद्वाव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिःयद्वाप्रजापतिमेवसमस्तव्याहृतिभिस्तिलैःशेषेणेत्यादि ॥

अब कृष्णपक्षकी चतुर्दशीकों जन्म होनेकी शांति कहताहुं.

कृष्णपक्षकी चतुर्दशीकों बालकका जन्म होनेमें छह प्रकारका फल है. चतुर्दशीके छह भाग करने, और तिसपरसें फल जान लेना. आदिके भागमें शुभ है. दूसरे भागमें पिताका नाश होता है. तीसरे भागमें माताका नाश होता है. चौथे भागमें मातुल अर्थात् मामाका नाश होता है. पांचमे भागमें वंशका नाश होता है और छठे भागमें धनकी हानि होती है और बालकके वंशका नाश होता है. तहां चतुर्दशीके छह अंशोंके मध्यमें दूसरा, तीसरा और छठा इन अंशोंमें अर्थात् भागोंमें बालक जन्मा होवै तौ गोमुखप्रसवशांति करके पीछे चतुर्दशीशांति करनी. अन्य भागमें बालक जन्मा होवै तौ केवल चतुर्दशीकी शांति करनी. "अस्य शिशोः कृष्णाचतुर्दश्याममुकांशजननसूचितसर्वारिष्टनिरासद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्" इस आदि संकल्प करना. पीछे आग्नेय आदि चार दिशाओंमें चार कलश स्थापित करके मध्यमें शतछिद्रोंवाला कलश स्थापित करके तिसमें प्रतिमा स्थापित करके तिस प्रतिमामें रुद्रदेवका आवाहन करना. मयूख ग्रंथमें तौ पीठ आदिविषे रुद्रदेवकी प्रतिमाका पूजन करके तिसकी पूर्व दिशामें अथवा उत्तर दिशामें शतछिद्रोंवाले पांच कलशोंकों स्थापित करके पूजन करना ऐसा है. अन्वाधानकर्म कैसा करना सो कहा जाता है. "ग्रहानष्टाष्टसंख्यसमिदाज्यचरुभिरधिदेवतादीन् एकैकसंख्यसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः रुद्रमश्वत्थप्लक्षपलाशखदिरसमिद्भिश्चर्वाहुतिभिराज्याहुतिभिर्माषैस्तिलैःसर्षपैश्च प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशताष्टाविंशत्यन्यतरसंख्यया त्र्यंबकमितिमंत्रेण अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं च तिलाहुतिभिरमुकसंख्याभिः सकृद्वा व्यस्तसमस्तव्याहृतिभिः यद्वा प्रजापतिमेव समस्तव्याहृतिभिस्तिलैः शेषेण स्विष्टकृतमित्यादि."

अथसिनीवालीकुहूदर्शजननशांतयः तत्रामावास्यायाःप्रथमोयामःसिनीवाली अंत्योपांत्ययामौकुहूः मध्यवर्तिपंचयामादर्शइतिकेचित् अपरेतुचतुर्दशीमात्रयुतेऽहोरात्रेवर्तमानाअमावास्यासिनीवाली प्रतिपन्मात्रयुतेऽहोरात्रेवर्तमानाकुहूः तेनामायावारत्रयस्पर्शित्वलक्षणदिनवृद्ध्यभावेसूर्योदयस्पर्शत्वाभावलक्षणक्षयाभावेचदर्शोनास्त्येव उदयात्पूर्वाहोरात्रेवर्तमा

नाया:सिनीवालीत्वात् उदयोत्तरंवर्तमानाया:कुहूत्वात् दिनक्षयेसर्वाप्यमादर्शसंज्ञा नतत्र सिनीवालीकुहूभागौ केवलचतुर्दशीकेवलप्रतिपद्युक्तत्वाभावात् एवंदिनवृद्धौत्रिदिनस्पर्शेमध्यदिनस्थाषष्टिनाडीमितामावास्यादर्शसंज्ञा चतुर्दश्यादियोगाभावात् पूर्वोत्तरदिनस्थौभागौ सिनीवालीकुहूसंज्ञावित्याहु:इदंमयूखेस्पष्टं सिनीवाल्यांप्रसूतास्याद्यस्यभार्यापशुस्तथा गजाश्व महिषीचैवशक्रस्यापिश्रियंहरेत् गोपक्षिमृगदासीनांप्रसूतिरपिवित्तहृत् कुहूप्रसूतिरत्यर्थंसर्वे दोषकरीस्मृता यस्यप्रसूतिरेतेषांतस्यायुर्धननाशनं शांत्यभावेहितित्यागमत्रजातोनसंशय: अत्यागेनाशयेत्किंचित्स्वयंवानाशमाप्नुयात् सिनीवालीजननसूचितारिष्टनाशेत्यादि:कुहूजननसूचितारिष्टनाशेत्यादिश्चसंकल्प: कुहूजननेगोप्रसवोपीतिकेचित् अत्रोभयत्रापिचतुर्दशीशांतिवच्छतच्छिद्रकलशसहिता:पंचकलशा: मध्येरुद्र:प्रधानदेवताइंद्र:पितरश्चपार्श्वदेवते इति प्रतिमात्रयं इंद्रस्यपितॄणांचप्रधानरुद्रन्यूनसंख्ययाप्रधानोक्तसर्वद्रव्यैर्होम: अवशिष्टान्वाधानदेवतोहश्चतुर्दशीशांतिवत् प्रधानदेवतापूजोत्तरंगोवस्त्रस्वर्णदानानिकृत्वा गोभूतिलहिरण्याज्यवासोधान्यंगुडानिच रौप्यंलवणमित्येतद्दशदानानिदापयेत् क्षीराज्यगुडदानंचकृत्वाहोमंसमारभेत् एतानिदानानिऋत्विग्भ्योदेयानि तेनांतेपृथक्दक्षिणादानंनकार्यं अतएवात्रगवादेदक्षिणारूपत्वात्सदक्षिणंदानंनभवति अन्यत्रदशदानादीनांसदक्षिणंदानंकार्यं ॥

अब सिनीवाली, कुहू और दर्श इन्होंमें जन्म हुआ होवै तौ तिसके फल और शांति कहताहुं.

तिन्होंमें अमावसका प्रथम प्रहर सिनीवाली कहाता है. अंतके दो प्रहर कुहूसंज्ञक हैं, और मध्यके पांच प्रहर दर्श कहाते हैं ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. अन्य ग्रंथकार तौ चतुर्दशीसें युत हुये दिनरात्रिमें वर्तमान हुई अमावस सिनीवाली कहाती है,और प्रतिपदासें युत हुये दिनरात्रमें वर्तमान हुई अमावस कुहू कहाती है. तिसकरके, अमावसके तीन वारोंकों स्पर्श करनेवाली ऐसी दिनवृद्धिके अभावमें अथवा सूर्योदयकों स्पर्श नहीं करनेवाले ऐसे दिनक्षयके अभावमें दर्श सर्वथा नहीं होता है; क्योंकी; सूर्योदयके पूर्वदिनरात्रिमें वर्तमान अमावस सिनीवाली होती है और सूर्योदयके उपरंत वर्तमान अमावस कुहू होती है. दिनके क्षयमें जो अमावस होती है सो दर्शसंज्ञक होती है. तहां सिनीवाली और कुहूका भाग नहीं होता है; क्योंकी, तिस दिनमें केवल चतुर्दशी और केवल प्रतिपदाके योगका योग नहीं है. ऐसेही दिनकी वृद्धिमें तीन दिनोंके स्पर्शमें मध्यदिनमें स्थित होनेवाली साठ घटिकापरिमित अमावस दर्शसंज्ञक होती है. क्योंकी, तिस दिनमें चतुर्दशी और प्रतिपदाका योग नहीं है. दिनवृद्धीके पूर्व और उत्तर दिनमें होनेवाले दो भाग सिनीवाली और कुहूसंज्ञक हैं ऐसा मुनियोंनें कहा है. इस प्रकार मयूख ग्रंथमें स्पष्ट है. "सो सिनीवालीसंज्ञक अमावसमें जिस मनुष्यकी भार्या, गौ, हथिनी, घोडी और भैंस ये प्रसूत अर्थात् व्यावैं तौ ये इंद्रकीभी लक्ष्मीकों हरती है, तौ मनुष्यकी कौन कथा है? गौ, पक्षी, मृग और दासी येभी प्रसूत अर्थात् व्यावैं तौ धनका नाश होता है. कुहूसंज्ञक अमावसमें हुई प्रसूती सब दोषोंकों करनेवाली है. जिस मनुष्यकी स्त्री और गौ आदि इस कुहूसंज्ञक अमावसमें व्यावैं तिसकी आयु और धनका नाश होता है. शांतिके अभावमें कुहू-

संज्ञक अमावसमें जन्मा हुआ पुत्र और पशु आदिका त्याग करना, इसमें संशय नहीं. जो नहीं त्याग करै तौ किसी तरह नाश होवैगा अथवा आप नाशकों प्राप्त होवैगा." तिस शांतिविषे संकल्प—"**सिनीवालीजननसूचितारिष्टनाशेत्यादिः, कुहूजननसूचितारिष्टनाशेत्यादिः**" इस प्रकार संकल्प करना. कुहूसंज्ञक अमावसमें जन्म होवै तौ गोमुखप्रसवशांतिभी करनी, ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. इन दोनों शांतिओंमेंसें सिनीवाली और कुहूसंज्ञक अमावसमें जन्म होनेविषे चतुर्दशीकी शांतिके तरह शतछिद्रोंवाले कलशसें सहित पांच कलशोंकों स्थापित करना. मध्यम कलशपर रुद्रनामक प्रधानदेवता, इंद्र और पितर ये दो पार्श्वदेवता इस प्रकार तीन प्रतिमाओंमें इन तीन देवतोंकों स्थापित करना. इंद्र और पितर इन देवतोंका होम, प्रधान रुद्रदेवताके होमकी संख्यासें कम संख्या करके करना, और वह प्रधानदेवताकों कहे हुए सब द्रव्योंकरके करना. और बाकी रहे अन्वाधानके मध्यमें देवताका ऊह करना होवै तौ चतुर्दशीकी शांतिकी तरह करना. प्रधानदेवताकी पूजाके उपरंत गौ, वस्त्र और सोना इन्होंके दान करके पीछे गौ, पृथिवी, तिल, सोना, घृत, वस्त्र, अन्न, गुड, चांदी और नमक ये दश दान देने. दूध, घृत और गुड इन्होंके दान देके होमका आरंभ करना; ये सब दान ऋत्विजोंकों देने, अंतमें पृथक् दक्षिणा देनी नहीं; इसही कारणसें यहां गौ आदि जो दान कहे हैं सो दक्षिणाके स्थानमें होनेसें दक्षिणासहित दानका संभव नहीं होता है. अन्य जगह दश दान दक्षिणासहित देने.

अथैतेषांमानं भुवोमानंगोचर्म सप्तहस्तोदंडः त्रिंशद्दंडावर्तनं दशवर्तनानिगोचर्म तिलानांद्रोणः सुवर्णरजतयोर्दशमाषतदर्धतदर्धान्यतमं आज्यस्यचत्वारिंशत्पलानि वाससस्त्रिहस्तत्वं धान्यस्यपंचद्रोणाःएवंगुडलवणयोः एतावत्प्रमाणाशक्तौनित्यनैमित्तिकेयथाशक्तिदेयानि यथाशक्तिहिरण्यंवातत्तत्प्रतिनिधित्वेनहिरण्यगर्भेतिमंत्रेणदेयं नैमित्तिकादेरकरणेप्रत्यवायात् अभ्युदयादिफलार्थंतुदशदानानिशक्तिंविनानकार्याणीतिभाति होमांतेबलिदानाभिषेकादि इतिसिनीवालीकुहूशांतिः

अब दश दानोंका प्रमाण कहताहुं—पृथिवीका मान अर्थात् प्रमाण **गोचर्म** है, सो ऐसा. [illegible] हाथका दंड है, तीस दंडोंका वर्तन, दश वर्तनोंका गोचर्म अर्थात् २१०० हाथ क्षेत्रफल होवै इतनी पृथिवी देनी. तिलोंका एक द्रोणपरिमित दान करना. सोना और चांदी दश मासे अथवा पांच मासे अथवा अढाई मासे इन्होंमेंसें एक कोईसे प्रमाणकरके दान करना. ४० पलपरिमित घृतका दान करना. तीन हाथपरिमित वस्त्रका दान करना. पांच द्रोणपरिमित अन्नका दान करना. ऐसेही प्रमाणसें गुड और नमकका दान करना. इस प्रमाणसें दान करनेकी शक्ति नहीं होवै तब नित्यनैमित्तिक कर्ममें शक्तिके अनुसार ये सब दान देने. अथवा अपनी शक्तिके अनुसार सोना अथवा तिसके प्रतिनिधिपनेकरके "**हिरण्यगर्भ०**" इस मंत्रसें देना. क्योंकी, नैमित्तिक आदि नहीं करनेसें दोष लगता है. पुण्यके अर्थ अपनी शक्तिके अभावमें दश दान नहीं करने ऐसा मेरा मत है. होमके अनंतर बलिदान और अभिषेक आदि करने. इस प्रकार सिनीवाली और कुहूकी शांति समाप्त हुई.

अथदर्शशांतिः अथातोदर्शजातानांमातापित्रोर्दरिद्रता तद्दोषपरिहारार्थंशांतिंवक्ष्यामितेसदा अस्यदर्शजननसूचितारिष्टनिरासार्थंशांतिंकरिष्येइतिसंकल्पः स्थंडिलात्पूर्वदेशेकलशंप्रतिष्ठाप्यकलशाग्न्योर्मध्येसर्वतोभद्रपीठेब्रह्मादिमंडलदेवताआवाह्य तन्मध्येस्वर्णप्रतिमायांयेचेहेतिमंत्रेणपितॄनावाहयेत् तद्दक्षिणेरजतप्रतिमायामाप्यायस्वेतिसोममुत्तरतस्ताम्रप्रतिमायांसवितापश्चातादितिसूर्यंचावाह्यसंपूज्याग्निंप्रतिष्ठाप्य सर्वतोभद्रैशान्यांग्रहस्थापनादि अन्वाधानेआदित्यादिग्रहान्अमुकसंख्याभिःसमिच्चर्वाज्याहुतिभिःपितॄन्अष्टाविंशतिसंख्याकाभिःसमिच्चरुभ्यांसोमंसूर्यंचप्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्यसमिच्चर्वाहुतिभिः शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिअत्रस्विष्टकृतः पूर्वंमातापितृशिशूनांकलशोदकेनाभिषेकस्ततःस्विष्टकृद्बलिदानादीतिविशेष इतिदर्शशांतिः ॥

अब दर्शशांति कहताहुं.

दर्श अर्थात् अमावसके दिन जो बालक जन्मते हैं तिन्होंके माता और पिताकों दरिद्रपना उपजता है. सो दरिद्रदोष दूर करनेके अर्थ शांति कहताहुं.—“अस्य शिशोः दर्शजननसूचितारिष्टनिरासार्थं शांतिं करिष्ये” ऐसा संकल्प करना. पीछे वेदीकी पूर्व दिशामें कलशकों स्थापित करके कलश और अग्नीके मध्यमें सर्वतोभद्रनामक पीठपर ब्रह्मा आदि मंडलदेवतोंका आवाहन करके तिस मंडलके मध्यमें सोनाकी प्रतिमाविषे—“येचेह०” इस मंत्रकरके पितरोंका आवाहन करना. तिसकी दक्षिण दिशामें चांदीकी प्रतिमामें “आप्यायस्व०” इस मंत्रसें सोमका आवाहन करके, पीछे उत्तरभागमें तांबाकी प्रतिमामें “सवितापश्चा०” इस मंत्रसें सूर्यका आवाहन करना. पीछे पूजा करके अग्नीकों प्रतिष्ठापित करना. पीछे सर्वतोभद्रकी ऐशानी दिशामें ग्रहोंकों स्थापन करना. पीछे अन्वाधान करना. सो ऐसा—“आदित्यादिग्रहानमुकसंख्याभिः समिच्चर्वाज्याहुतिभिः पितॄनष्टाविंशतिसंख्याकाभिः समिच्चरुभ्यां सोमं सूर्यं च प्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्यसमिच्चर्वाहुतिभिःशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि.” इस शांतिमें स्विष्टकृत् होमके पहले माता, पिता और बालक इन्होंपर कलशके पानीकरके अभिषेक करना. पीछे स्विष्टकृत होम और बलिदान आदि करने, यह विशेष है. इस प्रकार दर्शशांति समाप्त हुई.

अथनक्षत्रशांतिः तत्रमूलनक्षत्रफलं पिताम्रियेतमूलाद्येपादेपुत्रजनिर्यदि द्वितीयेजननी नाशोधननाशस्तृतीयके चतुर्थेकुलनाशोतःशांतिःकार्याप्रयत्नतःक्वचिच्चतुर्थचरणःशुभउक्तोमनीषिभिः एवंचदुहितुर्ज्ञेयंमूलजातफलंबुधैः केचित्तु नकन्याहंतिमूलर्क्षेपितरंमातरंतथा मूलजा श्वशुरंहंतिश्वश्रूमाश्लेषजासुता ज्येष्ठायांतुपतिज्येष्ठंविशाखोत्थातुदेवरं शांतिर्वापुष्कलास्याच्चेत्तर्हिदोषोनविद्यतइत्याहुः अभुक्तमूलसंभवंपरित्यजेत्तुबालकं समाष्टकंपिताथवानतन्मुखंविलोकयेत् ज्येष्ठांतेघटिकाचैकामूलादौघटिकाद्वयं अभुक्तमूलमथवासंधिनाडीचतुष्टयं वृषालिसिंहेषुघटेचमूलंदिविस्थितंयुग्मतुलांगनांत्ये पातालगंमेषधनुःकुलीरनक्रेषुमर्त्येष्विवितिसंस्मरंति एतल्लग्नफलं स्वर्गेमूलेभवेद्राज्यंपातालेचधनागमः मृत्युलोकेयदामूलंतदाशून्यंसमादिशेत् नवमासंसार्पदोषोमूलदोषोष्टवर्षकं ज्यैष्ठोमासान्पंचदशतावद्दर्शनवर्जनम् व्यतीपातेंगहा

निःस्यात्परिघेमृत्युमादिशेत् वैधृतौपितृहानिःस्यान्नष्टेंदावंधतांव्रजेत् मूलेसमूलनाशःस्यात्कुलनाशोधृतौभवेत् विकृतांगश्चहीनश्चसंध्ययोरुभयोरपि तद्वत्सदंतजातस्तुपादजातस्तथैवच तस्माच्छांतिंप्रकुर्वीतग्रहाणांक्रूरचेतसां व्यतीपातादौग्रहमखसहितातत्तच्छांतिरवश्यंकार्या इतरशांतिषुग्रहमखोनावश्यकइत्यर्थः ॥

अब नक्षत्रशांति और मूलनक्षत्रका फल कहताहुं.

“मूलनक्षत्रके प्रथम पादमें बालक जन्मै तौ पिता मरता है. दूसरे पादमें बालक जन्मै तौ माताका नाश होता है. तीसरे पादमें बालक जन्मै तौ धनका नाश होता है, और चौथे पादमें बालक जन्मै तौ कुलका नाश होता है. इस कारणसें जतनकरके शांति करनी उचित है. कितनेक पंडितोंनें मूलका चौथा पाद शुभ कहा है. ऐसेही कन्याके जन्ममेंभी मूलका फल जानना.” कितनेक पंडित कहते हैं की, मूलनक्षत्रमें जन्मी कन्या पिता और माताकों नहीं नाशती, किंतु मूलमें जन्मी कन्या सुसराकों नाशती है, और आश्लेषानक्षत्रमें जन्मी कन्या सासूकों नाशती है; ज्येष्ठामें जन्मी कन्या ज्येष्ठकों नाशती है; विशाखामें जन्मी कन्या देवरकों नाशती है इस लिये जो बडी शांति करनेमें आवै तब दोष नहीं है. अभुक्तमूलमें जन्मे हुये बालकका पितानें आठ वर्षोंतक त्याग करना अथवा आठ वर्षोंतक तिस बालकका मुख पितानें नहीं देखना. “ज्येष्ठाके अंतकी एक घडी और मूलके आदिकी दो घडी मिलके तीन घडी सो अभुक्तमूल कहते हैं. अथवा ज्येष्ठा और मूलकी संधिकी चार घडी अभुक्तमूल कहाता है. वृष, वृश्चिक, सिंह और कुंभ इन लग्नोंमें मूल स्वर्गलोकमें रहता है. मिथुन, तुला, कन्या और मीन इन लग्नोंमें मूल पाताललोकमें रहता है. मेष, धन, कर्क और मकर इन लग्नोंमें मूल मृत्युलोकमें रहता है, ऐसा कहते हैं” “स्वर्गलोकमें मूल होवै तब राज्य मिलता है, पाताल लोकमें मूल होवै तब धन मिलता है और जब मृत्युलोकमें मूल होवै तब शून्य अर्थात् नाश होता है.” “आश्लेषा नक्षत्रका दोष नव महीनोंतक रहता है. मूलका दोष आठ वर्षपर्यंत रहता है. ज्येष्ठानक्षत्रका दोष पंदरह महीनोंपर्यंत रहता है. इस लिये इतने कालपर्यंत बालकका मुख नहीं देखना.” व्यतीपातयोगमें बालक उपजै तौ अंगकी हानि होती है. परिघयोगमें बालक उपजै तौ बालककों मृत्यु होता है. वैधृतियोगमें बालक उपजै तौ मातापिताका नाश होता है. अमावसकों बालक उपजै तौ बालक अंधा होता है. मूलनक्षत्रमें बालक उपजै तौ मूलसहित नाश होता है. धृतियोगमें बालक उपजै तौ कुलका नाश होता है. दोनों संध्याओंमें बालक उपजै तौ विकृत अंगोंवाला और हीन ऐसा होता है. तैसेही दंतोंसहित बालक उपजै तथा पैरोंसें बालक उपजै तौभी विकृतअंगोंवाला और हीन ऐसा होता है, तिस कारणसें क्रूर ग्रहोंकी शांति करनी.” व्यतीपात आदिमें ग्रहयज्ञसें सहित तिस तिस अनिष्टकी शांति अवश्य करनी. अन्य शांतियोंमें ग्रहयज्ञ आवश्यक नहीं है.

मुख्यकालंप्रवक्ष्यामिशांतिहोमस्ययत्नतः जातस्यद्वादशाहेतुजन्मर्क्षेवाशुभेदिने जननाद्वादशाहेशांतिकरणेशांत्युक्तनक्षत्राहुतिवह्निचक्रावलोकनादिकंनावश्यकं कालांतरेआवश्यकं एवमन्यशांतिष्वपिज्ञेयं ॥

शांतिके होमका मुख्यकाल कहताहुं.—जन्मदिनसें बारमे दिनमें अथवा जन्मनक्षत्रमें अथवा शुभदिनमें शांति करनी. जन्मदिनसें बारमे दिनमें शांति करनी होवै तौ शांतिमें कहे नक्षत्र, आहुति और अग्निचक्र इन आदिकों देखनेकी आवश्यकता नहीं है. अन्य कालोंमें शांति करनी होवै तौ आवश्यकता है. ऐसेही अन्य शांतियोंमेंभी जानना उचित है.

तद्यथा शुक्लादितस्थितिःसैकावारयुक्ताब्धिशेषिता खेगुणेभुविवासोग्नेर्द्व्येकयोःस्यादधो दिवि भूमावग्निःशुभःहोमाहुतिःसूर्यभतस्त्रिभंत्रिभंगण्यंमुहुस्तत्रचचंद्रभावधिसूर्यज्ञशुक्रार्कजचंद्रभूमिजाजीवस्तमःकेतुरसत्यसन्मुखे संस्कारनित्यकर्मसुनिमित्ताव्यवहितनैमित्तिकेषु रोगातुरेचवह्निचक्रादिकंनापेक्षितं अग्नेःस्थापनवेलायांपूर्णाहुत्यामथापिवा आहुतिर्वह्निवासश्चविलोक्यौशांतिकर्मणि ॥

अग्निचक्र देखनेका प्रकार—“शुक्लपक्षके प्रतिपदासें वर्तमान तिथिपर्यंत तिथि गिनके तिस संख्यामें एक मिलाना. और जो वर्तमान वार होवै तितने अंक तिस संख्यामें मिलाय तिस संख्याकों चारका भाग देनेसें शून्य और तीन बाकी रहै तौ पृथिवीमें अग्निका वास होता है और एक बाकी रहै तौ स्वर्गमें अग्निका वास होता है और दो बाकी रहै तौ पातालमें अग्निका वास होता है ऐसा जानना.” पृथिवीमें अग्निका वास शुभ है. **होमकी आहुति देखनेका प्रकार.** जिस नक्षत्रपर सूर्य होवै तिस्सें दिवसनक्षत्रपर्यंत गिनके तीन तीन नक्षत्रकरके एक एक ग्रहके मुखमें आहुति होती है. जैसे, पहले तीन नक्षत्र सूर्यके मुखमें, दूसरे तीन बुधके मुखमें, तीसरे तीन शुक्रके मुखमें, चौथे तीन शनिके मुखमें, पांचमे तीन चंद्रमाके मुखमें, छठे तीन मंगलके मुखमें, सातमें तीन बृहस्पतिके मुखमें, आठमे तीन राहुके मुखमें और नवमें तीन नक्षत्रोंमें केतुके मुखमें आहुति होती है. सो जिस दिन पापग्रहके मुखमें आहुति जावै वह दिन अशुभ होता है, और जिस दिन शुभग्रहके मुखमें आहुति जावै वह दिन शुभ होता है. संस्कार, नित्यकर्म, नैमित्तिककर्म और रोगसें पीडित इन आदिमें अग्निचक्र देखनेकी आवश्यकता नहीं है. शांतिकर्ममें, अग्निस्थापन करनेके समयमें अथवा पूर्णाहुतिमें आहुति और अग्निचक्र देखना उचित है.

त्र्युत्तरारोहिणीश्रवणधनिष्ठाशततारकापुनर्वसुस्वातीमघाश्विनीहस्तपुष्यानुराधारेवतीनक्षत्रेषुगुरुशुक्रास्तमलमासरहितेशुभवारतिथ्यादौशांतिःकार्या निमित्ताव्यवहितनैमित्तिके रोगशांतौचअस्तादिविचारणानास्ति इतिप्रसंगात्सर्वशांत्युपयोगीशुभदिननिर्णयः ॥

उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा और उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाती, मघा, अश्विनी, हस्त, पुष्य, अनुराधा और रेवती इन नक्षत्रोंमें; बृहस्पति और शुक्रका अस्त, मलमास इन्होंसें रहित ऐसे शुभ वार, शुभ तिथि आदिमें शांति करनी. नैमित्तिक कर्ममें और रोगसंबंधी शांतिमें अस्त आदिका विचार नहीं करना. इस प्रकार शांतिके प्रसंगसें सर्व शांतिके उपयोगका शुभ निर्णय कहा है.

अभुक्तमूलोत्पत्तौवर्षाष्टकंशिशुत्यागः ततःशांतिः तदन्यमूलोत्पत्तौद्वादशाहेअव्यवहिता

गामिमूलयुतेशुभदिनेवान्यत्रशुभदिनेवा गोप्रसवशांतिंकृत्वास्यशिशोर्मूलप्रथमचरणोत्पत्तिसूचितारिष्टनिरासार्थंसग्रहमखांशांतिंकरिष्यइतिसंकल्पयेत् द्वितीयादिपादोत्पत्तौसंकल्पेतथोहः ब्रह्मसदस्यौकृताकृतौऋत्विजोष्टौचत्वारोवामध्यकलशेस्वर्णप्रतिमायांरुद्रावाहनादि तस्यचतुर्दिक्षुकुंभचतुष्टयेऽक्षतपुंजेषुवरुणपूजायद्वामध्येकुंभेप्रतिमायांरुद्रस्तदुत्तरकुंभेवरुणः पूज्यइतिकुंभद्वयं रुद्रकुंभोत्तरतःकुंभेप्रतिमासुनिर्ऋतिमिंद्रमपश्चावाह्य पद्मस्यचतुर्विंशतिदलेषुउत्तराषाढाद्यनुराधांतचतुर्विंशतिनक्षत्राणांविश्वेदेवादिचतुर्विंशतिदेवतास्तंडुलपुंजादिष्वावाह्य दिक्षुलोकपालांश्चावाह्यपूजयेत् अग्निग्रहस्थापनाद्यंतेऽन्वाधानेऽर्कादिग्रहान्समिच्चर्वाज्याहुतिभिः निर्ऋतिंप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याभिर्घृतमिश्रपायससमिदाज्यचर्वाहुतिभिः यद्वापायसेनाष्टोत्तरशतसंख्ययासमिदाज्यचरुभिरष्टाविंशतिसंख्यया इंद्रमपश्चप्रतिद्रव्यमष्टाविंशतिसंख्यपायससमिदाज्यचर्वाहुतिभिर्विश्वेदेवादिचतुर्विंशतिदेवताअष्टाष्टपायसाहुतिभिः रक्षोहणमग्निंकृणुष्वपाजेतिपंचदशऋग्भिःप्रत्यृचमष्टाष्टसंख्यकृसराहुतिभिः १२० सवितारंदुर्गांत्र्यंबकंकवीन्दुर्गांवास्तोष्पतिंअग्निंक्षेत्रपालंमित्रावरुणावग्निंचाष्टाष्टकृसराहुतिभिःश्रियं हिरण्यवर्णामितिपंचदशऋग्भिःप्रत्यृचमष्टाष्टसमिदाज्यचर्वाहुतिभिः सोमंत्रयोदशपायसाहुतिभिः रुद्रंस्वराजंचतुर्गृहीताज्येनाग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचाज्येनशेषेणास्विष्टकृतमित्यादिकवीनित्यत्रऋत्विक्स्तुतिमित्युद्देशोमयूखादौ शूर्पत्रयंनिर्वापः तत्रप्रथमेशूर्पेपायसार्थंतूष्णींद्वादशमुष्टीन्निर्ऋतिमिंद्रमपश्चोद्दिश्यनिरूप्य द्वितीयेचर्वर्थंतदेवत्रयमुद्दिश्यद्वादशमुष्टीन् पुनः प्रथमेषण्णवतिमुष्टीन्पायसार्थंतृतीयेशूर्पेकृसरार्थंचतुश्चत्वारिंशन्मुष्टीन्द्वितीयेपुनश्चतुरोमुष्टीन्प्रथमेपुनःसोमार्थंचतुर्मुष्टीन्निरूप्यततः शूर्पत्रयेआहुतिपर्याप्ततंडुलान्गृहीत्वानिर्वापसंख्ययाप्रोक्ष्यपात्रत्रयेहविस्त्रयंश्रपयेत्तिलमिश्रतंडुलपाकेनकृसरोभवति ग्रहार्थंगृहसिद्धान्नंग्राह्यं सर्वेग्रंथेषुनिर्ऋत्याद्यर्थंनिर्वापादिक्रमेणश्रपणमेवोक्तं अतोगृहसिद्धान्नएवतिलदुग्धमिश्रेणकृसरादिसंपादनंप्रमादालस्यादिकृतकर्मभ्रंशएव ततोहोमकालेयजमानस्त्यागंकुर्यात् तत्रएतावत्संख्याहुतिपर्याप्तंसमिदाज्यचरुद्रव्यमादित्यादिनवग्रहेभ्योनमम एवमधिदेवतादिभ्यः ततोष्टोत्तरशतसंख्याहुतिपर्याप्तंघृतमिश्रपायसंअष्टोत्तरशताहुतीनामष्टाविंशत्याहुतीनांवापर्याप्तंसमिदाज्यचर्वात्मकद्रव्यत्रयमिदंनिर्ऋतयेनममअष्टाविंशत्याहुतिपर्याप्तंपायससमिच्चर्वाज्यमिंद्रायनममएवमग्रथः अष्टाष्टाहुतिपर्याप्तंपायसंविश्वेभ्योदेवेभ्यो० १ विष्णवे २ वसुभ्यो ३ वरुणाय ४ अजैकपदे ५ अहयेबुध्न्याय ६ पूष्णे ७ अश्विभ्यां ८ यमाय ९ अग्नये १० प्रजापतये ११ सोमाय १२ रुद्राय १३ अदित्यै १४ बृहस्पतये १५ सर्पेभ्यः १६ पितृभ्यः १७ भगाय १८ अर्यम्णे १९ सवित्रे २० त्वष्ट्रे २१ वायवे २२ इंद्राग्निभ्यां २३ मित्राय २४ नमम विंशत्यधिकशताहुतिपर्याप्तंकृसरंरक्षोघ्नेऽग्नयेनमम अष्टाष्टाहुतिपर्याप्तंकृसरंसवित्रेदुर्गायैत्र्यंबकायकविभ्योदुर्गायैवास्तोष्पतयेऽग्नयेक्षेत्रपालायमित्रावरुणाभ्यामग्नयेचनमम प्रतिद्रव्यंविंशत्यधिकशताहुतिपर्याप्तानिसमिच्चर्वाज्यानिश्रियैनमम त्रयोदशाहुतिपर्याप्तंपायसंसोमायचतुर्गृहीताज्यंरुद्रायस्वराजे एकैकाहुतिपर्याप्तमाज्यंअग्नयेवायवेसूर्यायप्रजापतयेचनममएवंसविस्तरंतत्तद्द्रव्यसंख्यादेवतोच्चारेणत्यागःसर्वत्रज्ञेयः केचित्तुइदमुपकल्पितमन्वाधानोक्तद्रव्यजातमन्वाधानोक्ताहुतिसंख्यापर्याप्तमन्वाधानोक्ताभ्यो यक्ष्यमा

णाभ्योदेवताभ्योनममेतिसंक्षेपेणत्यागंकुर्वंति ततोग्रहमंत्रैर्निर्ऋत्यादिमंत्रैश्चयथायथंहोमांतेग्रहपूजास्विष्टकृन्नवाहुतिबलिदानपूर्णाहुतिपूर्णपात्रविमोकादिवह्निपूजांतेयजमानाद्यभिषेकेकृतेधृतशुक्लवस्त्रगंधोयजमानोमानस्तोकेतिविभूतिंधृत्वा मुख्यदेवतापूजनविसर्जनश्रेयोग्रहणदक्षिणादानानिकुर्यात् शतंतदर्धंदशवाब्राह्मणान्भोजयेदितिसंक्षेपः ॥

अभुक्तमूलकी उत्पत्तिमें आठ वर्षपर्यंत बालकका त्याग करके पीछे शांति करनी. अभुक्तमूलसें अन्य मूलनक्षत्रमें बालक उपजा होवै तौ बारमे दिन अथवा जो प्रथम मूलसें युत हुये शुभ दिनमें अथवा अन्य शुभ दिनमें गोप्रसवशांति करके—“**अस्य शिशोर्मूलप्रथमचरणोत्पत्तिसूचितारिष्टनिरासार्थंसग्रहमखां शांतिं करिष्ये**” ऐसा संकल्प करना. द्वितीय आदि चरणमें जन्म हुआ होवै तौ संकल्पमें तैसाही उच्चार करना. यहां ब्रह्मा और सादस्य करने अथवा नहीं करने. चार अथवा आठ ऋत्विज करने. मध्यके कलशमें सोनाकी प्रतिमाविषे रुद्रका आवाहन आदि करना. तिसकी चारों दिशाओंमें चार कलशोंमें चावलोंके समूहविषे वरुणकी पूजा करनी. अथवा मध्यके कलशमें प्रतिमाविषे रुद्र और तिस्सें उत्तरके कलशमें वरुणकी पूजा करनी. इस प्रकार दो कलशोंकों स्थापित करना. रुद्रके कलशसें उत्तरके कलशमें प्रतिमाओंविषे—निर्ऋति, इंद्र और अप इन देवतोंका आवाहन करके कमलके चौवीस दलोंमें उत्तराषाढासें अनुराधानक्षत्रपर्यंत चौवीस नक्षत्रोंके विश्वेदेवता आदि चोवीस देवतोंका चावलोंके समूह आदिमें आवाहन करके आठ दिशाओंमें इंद्रादि आठ लोकपालोंका आवाहन करके पूजा करनी. अग्नि और ग्रहोंके स्थापन आदि कर्मकों करनेके पश्चात् अन्वाधान करना. सो ऐसा—“**अर्कादि ग्रहान् समिच्चर्वाज्याहुतिभि निर्ऋतिंः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याभिर्घृतमिश्रपायससमिदाज्यचर्वाहुतिभिः यद्वा पायसेनाष्टोत्तरशतसंख्यया समिदाज्यचरुभिरष्टाविंशतिसंख्यया इंद्रमपश्च प्रतिद्रव्यमष्टाविंशति संख्यपायससमिदाज्यचर्वाहुतिभिर्विश्वेदेवादिचतुर्विंशतिदेवता अष्टाष्टपायसाहुतिभिः रक्षोहणमग्निंकृणुष्वपाजेति पंचदशऋग्भिः प्रत्यृचमष्टाष्टसंख्यकृसराहुतिभिः १२० सवितारं दुर्गां त्र्यंबकं कवीन् दुर्गां वास्तोष्पतिमग्निंक्षेत्रपालं मित्रावरुणावग्निंचाष्टाष्टकृसराहुतिभिः श्रियं हिरण्यवर्णामिति पंचदशऋग्भिः प्रत्यृचमष्टाष्टसमिदाज्यचर्वाहुतिभिः सोमं त्रयोदश पायसाहुतिभिः रुद्रं स्वराजं चतुर्गृहीताज्येनाग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं चाज्येन शेषेण स्विष्टकृतमित्यादि**” ऐसा अन्वाधान करना. इस मंत्रमें कवीन् इस पदके स्थानमें ‘ऋत्विक्स्तुतिं’ ऐसा उद्देश करना, ऐसा मयूख आदिमें है. तीन शूर्प अर्थात् तीन छाजोंमें निर्वाप अर्थात् चावल लेने. तिन्होंमांहसें पहले छाजमें पायस अर्थात् खीरकों मंत्ररहित बारह मुष्टि चावल निर्ऋति, इंद्र, अप् इन्होंके उद्देशकरके लेने. दूसरे छाजमें चरु करनेके अर्थ वही तीन देवतोंके उद्देशकरके बारह मूठी चावल लेने. फिर पहले छाजमें ९६ मूठी चावल खीर करनेके अर्थ लेने. तीसरे छाजमें कृसरके अर्थ ४४ मूठि लेने. दूसरे छाजमें फिर चार मूठि लेने. फिर पहले छाजमें सोमदेवताके अर्थ चार मूठि लेने. पीछे तीनों छाजोंमें सब आहुतियोंकों पूरनेके अर्थ चावल लेके पहले जितनी मूठी चावल लिये होवैं तिस तिस संख्याकरके पृथक् पृथक् धोके तीन पात्रोंमें तीन चरु पकाने. तिलोंसें मिले

हुये चावलोंके पाककों कृसर कहते हैं. ग्रहोंके होमके अर्थ घरमें पकाया हुआ चरु लेना. निर्ऋति आदि देवतोंके अर्थ जिस क्रमसें चावल लिये होवैं तिसी क्रमसें तिसकों पकाना ऐसा सब ग्रंथोंमें कहा है, इस लिये घरमें सिद्ध हुए अन्नमेंही तिल और दूधकों मिलाय कृसर और खीर संपादन करना ऐसा जो आलस्य आदिसें किया कर्म सो व्यर्थ होता है. पीछे यजमाननें द्रव्योंका त्याग करना. सो ऐसाः—"एतावत्संख्याहुतिपर्याप्तं समिदाज्यचरुद्रव्यमादित्यादिनवग्रहेभ्यो न मम ॥ एवमधिदेवतादिभ्यः॥ ततोऽष्टोत्तरशतसंख्याहुतिपर्याप्तं घृतमिश्रपायसं अष्टोत्तरशताहुतीनामष्टाविंशत्याहुतीनां वा पर्याप्तं समिदाज्यचर्वात्मकद्रव्यत्रयमिदं निर्ऋतये न मम ॥ अष्टाविंशत्याहुतिपर्याप्तं पायससमिच्चर्वाज्यमिंद्राय न मम ॥ एवमग्र्यः ॥ अष्टाहुतिपर्याप्तं पायसं विश्वेभ्यो देवेभ्यो १ विष्णवे २ वसुभ्यो ३ वरुणाय ४ अजैकपदे ५ अहयेबुध्न्याय ६ पूष्णे ७ अश्विभ्यां ८ यमाय ९ अग्नये १० प्रजापतये ११ सोमाय १२ रुद्राय १३ अदित्यै १४ बृहस्पतये १५ सर्पेभ्यः १६ पितृभ्यः १७ भगाय १८ अर्यम्णे १९ सवित्रे २० त्वष्ट्रे २१ वायवे २२ इंद्राग्निभ्यां २३ मित्राय २४ न मम ॥ विंशत्यधिकशताहुतिपर्याप्तं कृसरं रक्षोघ्नेऽग्नये न मम ॥ अष्टाष्टाहुतिपर्याप्तं कृसरं सवित्रे दुर्गायै त्र्यंबकाय कविभ्यो दुर्गायै वास्तोष्पतयेऽग्नये क्षेत्रपालाय मित्रावरुणाभ्यामग्नये च न मम ॥ प्रतिद्रव्यं विंशत्यधिकशताहुतिपर्याप्तानि समिच्चर्वाज्यानि श्रियै न मम ॥ त्रयोदशाहुतिपर्याप्तं पायसं सोमाय चतुर्गृहीताज्यं रुद्राय स्वराजे एकैकाहुतिपर्याप्तमाज्यं अग्नये वायवे सूर्याय प्रजापतये च न मम" ऐसे विस्तारसहित तिन द्रव्योंकी संख्या और देवतोंका उच्चारण करके सब जगह त्याग करना. कितनेक ग्रंथकार तौ संक्षेपसें त्याग करते हैं, सो ऐसा;—इदमुपकल्पितमन्वाधानोक्तद्रव्यजातमन्वाधानोक्ताहुतिसंख्यापर्याप्तमन्वाधानोक्ताभ्यो यक्ष्यमाणाभ्यो देवताभ्यो न मम" पीछे ग्रहमंत्रोंसें और नैर्ऋति आदि मंत्रोंसें यथायोग्य होम किये पीछे ग्रहपूजा, स्विष्टकृत, प्रायश्चित्तहोम, बलिदान, पूर्णाहुति, प्रणीताविमोक, अग्निपूजापर्यंत कर्म करके पीछे यजमानकों अभिषेक करना. पीछे यजमाननें सुपेद वस्त्र और चंदन धारण करके "मानस्तोके०" इस मंत्रसें विभूति धारण करके प्रधानदेवताका पूजन, विसर्जन, श्रेयोग्रहण और दक्षिणादान इन आदि कर्म करने और सौ, पंचास अथवा दश ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना. इस प्रकार संक्षेप कहा है.

तत्राश्लेषाफलं आश्लेषायाःक्रमेणपंचसप्तद्वित्रिचतुरष्टैकादशषट्नवपंचेतिदशधाविभक्तनाडीषुक्रमेणराज्यंपितृनाशोमातृनाशःकामभोगःपितृभक्तिर्बलंहिंसकत्वंत्यागोभोगोधनमितिफलानि अथपादविभागेनफलं तत्राद्यपादःशुभः द्वितीयेपादेधनस्यनाशः तृतीयेमातुःचतुर्थेपितुः आश्लेषांत्यपादत्रयजातकन्याश्वश्रूंहंति एवंवरोपिअंत्यपादत्रयजः स्वश्वश्रूंहंतिआश्लेषासर्वपादेषुशांतिःकार्याप्रयत्नतः जातस्यद्वादशाहेतुशांतिकर्मसमाचरेत् असंभवेतुजन्मर्क्षेअन्यस्मिन्वाशुभेदिने ॥

अब आश्लेषाशांति कहताहुं.

आश्लेषानक्षत्रका फल—आश्लेषानक्षत्रकी साठ घडियोंके दश भाग करने. सो ऐसे:—पहिला भाग पांच घडी, दूसरा भाग सात घडी, तीसरा भाग दो घडी, चौथा भाग तीन घडी, पांचमा भाग चार घडी, छठ्ठा भाग आठ घडी, सातमा भाग ग्यार घडी, आठमा भाग छह घडी, नवमा भाग नौ घडी—और दशमा भाग दश घडी. इन्होंमें क्रमकरके राज्य, पिताका नाश, माताका नाश, कामभोग, पितृभक्ति, बल, हिंसकपना, त्याग, भोग, और धन ये फल होते हैं. **अब पादके विभागसें फल.** तहां आश्लेषानक्षत्रका प्रथम पाद शुभ है, दूसरे पादमें धनका नाश होता है, तीसरे पादमें माताका नाश होता है, और चौथे पादमें पिताका नाश होता है. आश्लेषानक्षत्रके अंतके तीन पादोंमें जन्मी कन्या सासूका नाश करती है. ऐसेही अंतके तीन पादोंमें जन्मा हुआ पुत्रभी अपनी सासूका नाश करता है. "आश्लेषानक्षत्रके कोईभी पादमें जन्म हुआ होवै तौ तिसकी जन्मदिनसें बारमे दिनमें यतनसें शांति करनी उचित है. बारमे दिनमें शांतिका संभव नहीं होवै तौ जन्मनक्षत्रमें अथवा अन्य किसी शुभ दिनमें शांति करनी.

अथोक्तकालेगोमुखप्रसवंकृत्वाअस्यशिशोराश्लेषाजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारेत्यादिसंकल्पंकृत्वामूलशांतिवत्कुंभद्वयेरुद्रवरुणौद्वौसंपूज्य चतुर्विंशतिदलपद्मस्थकुंभेप्रतिमायामाश्लेषाधिपतीन्सर्वानावाह्यतद्दक्षिणेपुष्यदेवतांबृहस्पतिमुत्तरतोमघादेवतांपितृंश्चावाह्यदलेषुपूर्वदलमारभ्य प्रादक्षिण्येनपूर्वाधिपतिभगादिपुनर्वसुदेवतादितिपर्यंतचतुर्विंशतिदेवतावाहनादिकुर्यात् कौस्तुभेतुतैत्तिरीयकमंत्रैःपुष्यमघादिपूर्वादिनक्षत्राणामेवावाहनमुक्तंनतुनक्षत्रदेवतानां ततोलोकपालानावाह्यावाहितसर्वदेवताःसंपूज्याग्निंग्रहांश्चप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् आदित्यादिग्रहाद्युद्देशांते प्रधानदेवताःसर्पान्प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्यमष्टाविंशतिसंख्यंवाघृतामिश्रपायससमिदाज्यचर्वाहुतिभिःबृहस्पतिंपितृंश्चाष्टाविंशतिसंख्यमष्टसंख्यंवातैरेवद्रव्यैर्भगादि चतुर्विंशतिदेवताःअष्टाष्टपायसाहुतिभिः रक्षोहणमित्यादिशेषदेवतानिर्देशोमूलशांतिवत् तद्वदेवपायसकृसरचरूणांश्रपणंहविस्त्यागश्चकार्यः कौस्तुभोक्तप्रधानदेवतामंत्रैस्तत्तद्धोमःशेषंमूलशांतिवत् ॥

पीछे उक्त कालमें गोमुखप्रसवशांति करके "**अस्य शिशोराश्लेषाजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं**" इस आदि संकल्प करके मूलशांतिकी तरह दो कलशोंमें रुद्र और वरुणकी पूजा करके चौवीस दलोंवाले कमलपर कलश स्थापन करके तिसके उपर प्रतिमामें आश्लेषानक्षत्रके अधिपति सर्पोंका आवाहन करके तिसके दक्षिणमें पुष्यनक्षत्रकी देवता बृहस्पतिजीका आवाहन और उत्तरमें मघानक्षत्रकी देवता पितरोंका आवाहन करके चौवीस दलोंके मध्यमें प्रथम दलसें आरंभ करके प्रदक्षिणक्रमकरके पूर्वानक्षत्रकी देवता जो भग है तिस्सें आरंभ करके पुनर्वसुनक्षत्रकी देवता जो अदिति है तिसपर्यंत चौवीस देवतोंका आवाहन आदि करना. **कौस्तुभ** ग्रंथमें तौ तैत्तिरीय शाखाके मंत्रोंसें पुष्य, मघा इन आदिसें पूर्वा आदि नक्षत्रोंका आवाहन कहा है. नक्षत्रोंके देवतोंका आवाहन नहीं

कहा है. पीछे लोकपालोंका आवाहन करके आवाहित किये सब देवतोंकी पूजा करके अग्नि और ग्रहोंकी स्थापना करके अन्वाधान करना. सूर्य आदि ग्रहोंके अन्वाधानके उद्देशके अंतमें प्रधानदेवताका—“ **प्रधानदेवताः सर्पान् प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्यमष्टाविंशतिसंख्यं वा घृतमिश्रपायससमिदाज्यचर्वाहुतिभिः बृहस्पतिं पितृंश्चाष्टाविंशतिसंख्यमष्टसंख्यं वा तैरेव द्रव्यैर्भगादिचतुर्विंशतिदेवताः अष्टाष्टपायसाहुतिभिः रक्षोहणमित्यादि** ” इस मंत्रसें अन्वाधान करना. शेष रहे देवतोंका निर्देश मूलशांतिकी तरह करना. पायस, कृसर और चरु इन्होंकों पकाना और तिन्होंका त्यागभी तैसाही करना. **कौस्तुभमें** कहे प्रधानदेवताके मंत्रोंकरके तिस तिस देवताका होम करना. शेष रहा सब कर्म मूलशांतिके समान करना.

अथज्येष्ठानक्षत्रफलं ज्येष्ठायादशभागेषुआद्येमातामहीमृतिः मातामहंद्वितीयेचतृतीये हंतिमातुलं तुर्येजातोमातरंचहंत्यात्मानंतुपंचमे गोत्रजान्षष्ठभागेचसप्तमेतूभयंकुलं अष्टमे स्वाग्रजंहंतिनवमेश्वशुरंतथा दशमांशकजातस्तुसर्वंहंतिशिशुर्ध्रुवं ज्येष्ठर्क्षेतुपुमान्जातोज्येष्ठभ्रातुर्विनाशकः ज्येष्ठर्क्षेकन्यकाजाताहंतिशीघ्रंधवाग्रजं पादत्रयेजातनरोज्येष्ठोप्यत्रप्रजायते ज्येष्ठांत्यपादजातस्तुपितुःस्वस्यचनाशकः ॥

अब जन्मकालमें ज्येष्ठानक्षत्र होवै तिसका फल कहताहुं.

ज्येष्ठाकी साठ घडियोंमांहसें छह छह घडियोंके दश भाग करके जिस भागमें बालकका जन्म होवै तिसका फल कहताहुं—प्रथम भागमें बालक उपजै तौ नानीकी मृत्यु होती है. दूसरे भागमें नानाकी मृत्यु होती है. तीसरे भागमें मामाकी मृत्यु होती है. चौथे भागमें माताकी मृत्यु होती है. पांचमे भागमें तिस बालककी मृत्यु होती है. छठे भागमें गोत्रियोंकी मृत्यु होती है. सातमे भागमें माताके कुल और पिताके कुलका नाश होता है. आठमे भागमें बडे भाईका नाश होता है. नवमें भागमे सुसराका नाश होता है और दशमे भागमें सबोंका निश्चय करके नाश होता है. ज्येष्ठानक्षत्रमें जन्मा पुत्र अपने ज्येष्ठ भ्राताका नाश करता है. ज्येष्ठानक्षत्रमें जन्मी कन्या अपने जेष्ठका शीघ्रही नाश करती है. ज्येष्ठानक्षत्रके पहले तीन चरणोंमें जन्मा पुत्र श्रेष्ठ होता है. ज्येष्ठानक्षत्रके चौथे चरणमें जन्मा पुत्र पिताका और अपना नाश करनेवाला होता है.

द्वादशाहेशांत्युक्तशुभदिनेवा गोप्रसवशांतिंकृत्वास्याशिशोर्ज्येष्ठर्क्षजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वारेत्यादिसंकल्प्य मध्यकलशेसुवर्णप्रतिमायांशचीसहितमैरावतारूढमिंद्रं लोकपालां आवाह्यरक्तवस्त्रद्वयशष्कुलीनैवेद्यसहितषोडशोपचारैःपूजयेत् तस्यचतुर्दिक्षुकुंभचतुष्टयंतत्पूर्वमध्यमभागेशतच्छिद्रंचनिधायपूर्णपात्रयुतेषुफलादौवरुणावाहनपूजनादि अन्वाधानेग्रहान्वाधानांतेइंद्रंपलाशसमिदाज्यचरुद्रव्यैःप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्यया इंद्रायेन्दोमरुत्वतइति मंत्रेणप्रजापतिमष्टोत्तरशततिलाहुतिभिः समस्तव्याहृतिमंत्रेणशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि अष्टोत्तरशतंब्राह्मणान्भोजयेत् इतिज्येष्ठाशांतिसंक्षेपः ॥

अब ज्येष्ठानक्षत्रकी शांति कहताहुं.

बारमे दिनमें अथवा शांतिके लिये कहे हुए शुभ दिनमें गोप्रसवशांति करके **"अस्य शिशोर्ज्येष्ठर्क्षजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वारा०"** इत्यादिक संकल्प करके मध्यम कलशपर सोनाकी प्रतिमाविषे हस्तीपर आरूढ हुआ और इंद्राणीसहित ऐसे इंद्रका और लोकपालोंका आवाहन करके दो लाल वस्त्र और पूरीका नैवेद्य इन्होंसहित षोडशोपचारोंकरके पूजा करनी. तिस कलशकी चार दिशाओंमें चार कलश स्थापन करने और तिस्सें पूर्वप्रदेशविषे मध्यभागमें शतछिद्रोंवाले कलशकों स्थापित करके पीछे तिसके उपर पूर्णपात्रोंकों स्थापित करके फल आदिमें वरुणका आवाहन और पूजन आदि करना. अन्वाधानविषे ग्रहोंके अन्वाधानके पीछे **"इंद्रं पलाशसमिदाज्यचरुद्रव्यैः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्यया इंद्रायेंदोमरुत्वत इति मंत्रेण प्रजापतिमष्टोत्तरशततिलाहुतिभिः समस्तव्याहृतिमंत्रेण शेषेण स्विष्टकृतम्०"** इत्यादिक अन्वाधान करना. पीछे एकसौ साठ ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना. इस प्रकार ज्येष्ठाकी शांतिका संक्षेप समाप्त हुआ.

चित्राद्येर्धेपुष्यमध्येद्विपादेपूर्वाषाढाधिष्ण्यपादेतृतीये जातःपुत्रश्चोत्तराद्येविधत्तेपित्रोर्भ्रातुःस्वस्यचापिप्राणाशं उत्तराफल्गुन्याद्यपादेइत्यर्थः अत्रेत्थंभातिचित्रापूर्वार्धेजातस्यगोप्रसवंकृत्वानक्षत्राधिपतिप्रतिमांसंपूज्यअजादानंकार्यं एवंपुष्यद्वितीयतृतीयपादयोर्जननेगोप्रसवनक्षत्राधिपपूजागोदानानिकार्याणि उत्तराफल्गुनीप्रथमपादेजननेनक्षत्राधिपपूजांतिलपात्रदानंचकुर्यात् एवंपूर्वाषाढातृतीयपादेजननेनक्षत्रेशपूजाकांचनदानं मघाप्रथमपादजननेमूलवत्फलं तत्रगोप्रसवनक्षत्रेशपूजनग्रहमखाः कार्याः मघायाआद्यघटिद्वयजननेनक्षत्रगंडांतशांतिरपि रेवत्यंतघटिद्वयेश्विन्याद्यद्वयेजननेनक्षत्रगंडांतशांतिगोप्रसवग्रहमखाःकार्याः रेवत्यश्विन्योरितरभागेषुमघांतिमपादत्रयेचदोषविशेषानुक्तेर्नशांत्यादिकं एवंविशाखाचतुर्थपादजननेशालकदेवरनाशादिदुष्टफलोक्तेर्ग्रहमखःकार्यः यत्रकालेदुष्टफलमुक्तंशांतिर्नोक्तातत्रग्रहमखइतिकमलाकरोक्तेः एवमितरत्राप्यूह्यं इतिनक्षत्रशांतयः ॥

चित्रानक्षत्रके पूर्वार्धमें और पुष्यनक्षत्रके मध्यगत दो चरणोंमें और पूर्वाषाढानक्षत्रके तीसरे चरणमें और उत्तराके प्रथम चरणमें उपजा बालक पिता, माता, भाई, इन्होंका और आपका नाश करता है. यहां उत्तरापदसें उत्तराफाल्गुनीका प्रथम चरण ग्रहण करना. यहां ऐसा भान होता है की, चित्रानक्षत्रके पूर्वार्धमें जन्म हुआ होवै तौ गोप्रसव करके नक्षत्रके अधिपतिकी प्रतिमाका पूजन करके बकरीका दान करना. ऐसेही पुष्यके दूसरे और तीसरे चरणमें जन्म होवै तौ गोप्रसव, नक्षत्रके अधिपतिकी पूजा और गोदान करने. उत्तराफाल्गुनीके प्रथम चरणमें बालक उपजै तौ नक्षत्रके अधिपतिकी पूजा और तिलपात्रका दान करना. ऐसेही पूर्वाषाढाके तीसरे चरणमें बालक जन्मै तौ नक्षत्रके स्वामीकी पूजा और सोनाका दान करना. मघाके प्रथम चरणमें बालक जन्मै तौ मूलनक्षत्रकी तरह फल जानना. तहां गोप्रसव, नक्षत्रके स्वामीकी पूजा और ग्रहयज्ञ ये करने. मघाकी आदिकी दो घटीकाओंमें बालकका जन्म होवै तौ नक्षत्रगंडांतशांति करनी. रेवतीनक्षत्रकी अंतकी दो घटीकाओंमें

और अश्विनीनक्षत्रकी आदिकी दो घटीकाओंमें बालकका जन्म होवै तौ नक्षत्रगंडांतशांति, गोप्रसव और ग्रहयज्ञ ये करने. रेवती और अश्विनीके अन्य भागोंमें और मघाके अंतके तीन चरणोंमें दोषविशेष नहीं कहा है, इस कारणसें शांति आदि नहीं करनी. ऐसेही विशाखानक्षत्रके चौथे चरणमें बालक जन्मै तौ शाला और देवरका नाश आदि दुष्ट फल प्राप्त होता है, इस लिये ग्रहयज्ञ करना उचित है. जिस कालमें दुष्ट फल कहा है और शांति नहीं कही है तहां ग्रहयज्ञ करना ऐसा **कमलाकरका** वचन है. ऐसेही अन्य जगहभी जानना. इस प्रकार नक्षत्रोंकी शांति समाप्त हुई.

अथव्यतीपातवैधृतिसंक्रांतिशांतिः कुमारजन्मकालेतुव्यतीपातश्चवैधृतिः संक्रमश्चरवेस्तत्रजातोद्रारिद्र्यकारकः अश्रियंमृत्युमाप्नोतिनात्रकार्याविचारणा स्त्रीणांचशोकदुःखंचसर्वनाशकरोभवेत् गोमुखप्रसवंकुर्याच्छांतिंचसनवग्रहां उक्तकालेसंकल्पादिकंकृत्वापंचद्रोणपरिमितव्रीहिराशिंकृत्वा तदुपरिसार्धद्रोणद्वयमिततंडुलराशिंतदुपरिसपादद्रोणपरिमिततिलराशिंचकृत्वातिलराशौविधिनास्थापितकुंभे सौवर्णप्रतिमायांसूर्यमावाह्यतद्दक्षिणोत्तरयोरग्निरुद्रावावाह्यतिस्रोदेवताःव्यतीपातशांतौसंक्रांतिशांतौचपूजयेत् व्यतीपातसंक्रांत्योर्जननेव्यतीपातसंक्रांतिशांतिंतंत्रेणसंकल्प्यैकैवशांतिःकार्या अत्रपूजाहोमादेःप्रसंगसिद्धिःद्विगुणोवाप्रधानहोमइतिभाति ग्रहपीठदेवतान्वाधानांतेसूर्यंउत्सूर्योबृहदितिमंत्रेणसमिदाज्यचर्वाहुतिभिःप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याभिः अग्निंरुद्रंचतैरेवद्रव्यैः प्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्याहुतिभिरग्निंदूतमितित्र्यंबकमितिमंत्राभ्यांमृत्युंजयमष्टोत्तरशततिलाहुतिभिः शेषेणेत्यादि अभिषेकांतेगोवस्त्रस्वर्णादिदत्वाशतंब्राह्मणान्भोजयेत् इतिव्यतीपातवैधृतिसंक्रांतिशांतिः ॥

अब व्यतीपात, वैधृति और संक्रांति इन्होंके फल और शांति कहताहुं.

"बालकके जन्मकालमें व्यतीपात, वैधृति, और संक्रांति ये होवैं तौ तहां उपजा बालक दरिद्रताकों करता है और लक्ष्मीकों हरता है और मृत्युकों प्राप्त होता है, और स्त्रियोंकों शोक और दुःख उपजावनेवाला होता है, और सबोंका नाश करता है. इसमें गोमुखप्रसवशांति और नवग्रहोंसें युक्त शांति करनी." उक्त कालमें संकल्प आदि करके पांच द्रोणपरिमित व्रीहीका समूह करके तिसपर अढाई द्रोणपरिमित चावलोंका समूह और तिसपर सवा द्रोणपरिमित तिलोंका समूह करके तहां तिलोंके समूपर विधिपूर्वक स्थापित किये कलशपर सोनाकी प्रतिमाविषे सूर्यका आवाहन करके तिस्सें दक्षिण और उत्तरके तर्फ अग्नि और रुद्रका आवाहन करके तीनों देवतोंकी व्यतीपातकी शांतिमें और संक्रांतीकी शांतिमें पूजा करनी. व्यतीपात और संक्रांति अर्थात् सूर्यकी संक्रांतिके दिनमें बालक जन्मै तौ व्यतीपात और संक्रांतिकी शांतिका एकतंत्रसें संकल्प करके एकही शांति करनी. यहां पूजा और होम आदिके प्रसंगकी सिद्धि होती है; अर्थात् पूजा और होम इत्यादि दुगुना करनेका प्रयोजन नहीं है. अथवा प्रधानदेवताका दुगुना होम करना ऐसा भान होता है. ग्रहपीठस्थ

देवताका अन्वाधान किये पीछे "सूर्यं उत्सूर्यो बृहदिति मंत्रेण समिदाज्यचर्वाहुतिभिः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याभिः अग्निं रुद्रं च तैरेव द्रव्यैः प्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्याहुतिभिः अग्निं दूतमिति त्र्यंबकमिति मंत्राभ्यां मृत्युंजयमष्टोत्तरशततिलाहुतिभिः शेषेणेत्यादि" इस प्रकार अन्वाधान करना. पीछे अभिषेकके अंतमें गौ, वस्त्र, सोना इन्होंके दान करके सौ ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना. इस प्रकार व्यतीपात वैधृति और संक्रांति इन्होंकी शांति समाप्त हुई.

अथवैधृतिशांतौविशेषः पूर्ववत्व्रीहितंडुलतिलराशौस्थापितकुंभेमध्येत्र्यंबकमितिमंत्रेणरुद्रंदक्षिणतःउत्सूर्यइतिसूर्यंउत्तरतश्चाप्यायस्वेतिसोममावाह्यपूजयेत् अन्वाधानेरुद्रंसमिच्चर्वाज्यैःप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याहुतिभिः सूर्यसोमौप्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्यैस्तैरेवद्रव्यैर्मृत्युंजयमष्टोत्तरसहस्रशतान्यतरसंख्यतिलाहुतिभिः शेषेणेत्यादि अन्यत्पूर्ववत् संक्रांतिदिनेवैधृतिसत्त्वेदेवताभेदाच्छांतिद्वयंपृथक्कार्यं इतिवैधृतिशांतिः ॥

अब वैधृति शांतिका विशेष प्रकार कहताहुं.

पहलेकी तरह व्रीहि, चावल और तिल इन्होंके समूहोंपर स्थापित किये कलशमें "त्र्यंबकम्०" इस मंत्रसें मध्यविषे रुद्रदेवताका और तिसकी दक्षिणकों "उत्सूर्य०" इस मंत्रसें सूर्यका और तिसकी उत्तरकों "आप्यायस्व०" इस मंत्रसें सोमका आवाहन करके पूजा करनी. पीछे "रुद्रं समिच्चर्वाज्यैः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याहुतिभिः सूर्यसोमौ प्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्यैस्तैरेव द्रव्यैर्मृत्युंजयं अष्टोत्तरसहस्रशतान्यतरसंख्यतिलाहुतिभिः शेषेणेत्यादि" इस प्रकार अन्वाधान करके बाकी रहा कर्म पहलेकी तरह करना. संक्रांतिके दिन वैधृति होवै तौ देवताके भेदसें दोनों शांति पृथक् पृथक् करनी. इस प्रकार वैधृतिकी शांतिका प्रयोग समाप्त हुआ.

अथैकनक्षत्रजननशांतिः एकस्मिन्नेवनक्षत्रेभ्रात्रोर्वापितृपुत्रयोः प्रसूतिश्चेत्तयोर्मृत्युर्भवेदेकस्यनिश्चितः पितृनक्षत्रेमातृनक्षत्रेवाकन्यायाःपुत्रस्यवोत्पत्तौगोमुखप्रसवंकृत्वाशांतिःकार्यासोदरभ्रातृभगिन्योर्नक्षत्रेभ्रातुर्भगिन्यावोत्पत्तौगोप्रसवमकृत्वैवशांतिमात्रंकार्यं संकल्पेपित्रैकनक्षत्रोत्पत्तिसूचितसर्वारिष्टेत्याद्यूहः कलशेरक्तवस्त्रेयस्मिन्नक्षत्रेजन्मतन्नक्षत्रप्रतिमांतन्नक्षत्रदेवताप्रतिमांवाअग्निर्नःपातुकृत्तिकाइत्यादितैत्तिरीयमंत्रैःपूजयेत् अन्वाधानेइदंनक्षत्रंअमुकांनक्षत्रदेवतांवा समिच्चर्वाज्यैःप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्यंशेषेणेत्यादिअंतेययोरेकनक्षत्रेजन्मतयोरभिषेकः अत्रग्रहमखोनावश्यकः कचित्संपूजितहरिहरप्रतिमादानमप्युक्तं ॥

अब एक नक्षत्रमें जन्म होनेमें तिसके फल और शांति कहताहुं.

"दो भाई अथवा पितापुत्र इन्होंका एकही नक्षत्रमें जन्म होवै तौ तिनमांहसें निश्चयसें एककी मृत्यु होती है. पिता और माताके नक्षत्रमें कन्याकी अथवा पुत्रकी उत्पत्ति होवै तौ प्रथम गोमुखप्रसव करके एकनक्षत्रजननशांति करनी. एक पेटसें उपजे भाई और बहनके

नक्षत्रमें भाई अथवा बहनकी उत्पत्ति होवै तौ गोप्रसवशांतिके विनाही शांति करनी. संकल्पमें “ **पित्रैकनक्षत्रोत्पत्तिसूचितसर्वारिष्टनिरसन०** ” ऐसा उच्चार करना. कलशपर रक्त वस्त्रविषे जिस नक्षत्रमें जन्म हुआ होवै तिस नक्षत्रकी प्रतिमाकी अथवा तिस नक्षत्रके देवताकी प्रतिमाका “**अग्निर्नः पातुकृत्तिकाः**” इस आदि तैत्तिरीय मंत्रसें पूजा करनी. पीछे अन्वाधानमें “ **इदं नक्षत्रं अमुकां नक्षत्रदेवतां वा समिच्चर्वाज्यैः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्यं शेषेणेत्यादि** ” ऐसा उच्चार करना. पीछे जिन दोनोंका एक नक्षत्रमें जन्म हुआ होवै तिन दोनोंकों अभिषेक करना. इस शांतिमें ग्रहयज्ञकी आवश्यकता नहीं है. कहींक अच्छीतरह पूजित ऐसी हरिहरकी प्रतिमाका दान करना ऐसाभी कहा है.

अथग्रहणशांतिः ग्रहणेचंद्रसूर्यस्यप्रसूतिर्यदिजायते इत्थंसंजायतेयस्तुतस्यमृत्युर्नसंशयः व्याधिपीडाचदारिद्र्यंशोकश्चकलहोभवेत् अत्रगोमुखप्रसवःकार्यइतिभाति ग्रहमखःकृताकृतः संकल्पेसूर्यग्रहणकालिकप्रसूतिसूचितेत्याद्यूहः ग्रहणकालिकनक्षत्रस्यनक्षत्रदेवतायावाहेमप्रतिमांसूर्यग्रहेसूर्यस्यहेमप्रतिमां चंद्रग्रहेराजतंचंद्रबिंबंकृत्वोभयत्रसीसेनराहोर्नागाकृतिंकृत्वागोमयोपलिप्तेशुचिदेशेश्वेतवस्त्रोपरिदेवतात्रयपूजनं नात्रकलशस्थापनादि तत्रमध्येआकृष्णेनेतिसूर्यं दक्षिणतःस्वर्भानोरधइतिराहुं उत्तरतोनक्षत्रदेवतांपूजयेत् चंद्रग्रहेतुआप्यायस्वेति मध्येचंद्रःपूज्यः पार्श्वयोराहुनक्षत्रदेवतेपूर्ववत् अन्वाधानेसूर्यग्रहेसूर्यंअर्कसमिदाज्यचरुतिलैः प्रत्येकंअष्टोत्तरशतसंख्ययाराहुंदूर्वाज्यचरुतिलैस्तावत्संख्यैर्नक्षत्रदेवतांजलवृक्षसमिदाज्यचरुतिलैस्तावत्संख्ययाशेषेणेत्यादि चंद्रग्रहेचचंद्रंपालाशसमिदाज्यचरुतिलैःशेषंपूर्ववत् अंतेग्रहकलशोदकेनपंचगव्यपंचत्वक्पंचपल्लवादियुतलौकिकोदकेनचलौकिकेनैववाभिषेकः वेधकालेजन्मनिनैवशांतिः किंतुदुष्टकालत्वाद्रुद्राभिषेकःकार्यइतिभाति ॥

अब ग्रहणमें जन्म हुआ होवै तौ तिसका फल और शांति कहताहुं.

“ चंद्रमा और सूर्यके ग्रहणमें जो बालक उपजै तिसकी मृत्यु होती है इसमें संशय नहीं; और रोगपीडा, दरिद्रता, शोक, कलह येभी होते हैं. ” यहां गोमुखप्रसव करना ऐसा भान होता है. यहां ग्रहयज्ञ करना अथवा नहीं करना. संकल्पमें “ **सूर्यग्रहणकालिकप्रसूतिसूचित०** ” ऐसा उच्चार करना. ग्रहणसमयमें जो नक्षत्र होवै तिसकी अथवा नक्षत्रके देवताकी सोनाकी प्रतिमा करनी. सूर्यके ग्रहणमें सूर्यकी सोनाकी प्रतिमा, और चंद्रग्रहणमें चंद्रमाका चांदीका बिंब बनाय दोनोंमें सीसाकी राहुकी सर्पकी आकृतिकी प्रतिमा बनाय गोवरसें लिपी हुई पवित्र भूमिपर सुपेद वस्त्रके उपर तीनों देवतोंका पूजन करना. यहां कलशस्थापन आदि नहीं करना. तिस वस्त्रके उपर मध्यभागमें “ **आकृष्णेन०** ” इस मंत्रसें सूर्यकी और दक्षिण दिशामें “ **स्वर्भानोरध०** ” इस मंत्रसें राहु और उत्तरप्रदेशमें नक्षत्रदेवताकी आवाहन करके पूजा करनी. चंद्रमाके ग्रहणमें “ **आप्यायस्व०** ” इस मंत्रसें मध्यभागमें चंद्रमाकी पूजा करके दोनों पार्श्वभागोंमें राहु और नक्षत्रके देवताका पहलेकी तरह

आवाहन करके पूजा करनी. सूर्यके ग्रहणमें अन्वाधानविषे "सूर्यं अर्कसमिदाज्यचरुतिलैः प्रत्येकं अष्टोत्तरशतसंख्यया राहुं दूर्वाज्यचरुतिलैस्तावत्संख्यैर्नक्षत्रदेवताजलवृक्षसमिदाज्यचरुतिलैस्तावत्संख्ययाशेषेणेत्यादि" ऐसा उच्चार करना. चंद्रग्रहण होवै तौ "चंद्रं पालाशसमिदाज्यचरुतिलैः" ऐसा विशेष करना. शेष रहा कर्म पहलेकी तरह करना. अंतमें ग्रहोंके कलशके पानीसें अथवा पंचगव्य, पंचत्वचा, पंचपल्लव इन आदिसें युक्त हुये लौकिक पानीसें अथवा केवल लौकिक पानीसेंही अभिषेक करना. वेधसमयमें बालकका जन्म होवै तौ शांति नहीं करनी. किंतु दुष्ट काल होनेसें रुद्राभिषेक करना ऐसा भान होता है.

अथनक्षत्रगंडांतशांतिः रेवत्याश्लेषाज्येष्ठानक्षत्राणामंत्यघटिद्वयमश्विनीमघामूलानामाद्य घटिद्वयमितिघटिकाचतुष्टयमितंत्रिविधंनक्षत्रगंडांतं अश्विनीमघामूलानांपूर्वार्धेबाध्यतेपिता पूषाहिशक्रपश्चार्धेजननीबाध्यतेशिशोः सर्वेषांगंडजातानांपरित्यागोविधीयते वर्जयेद्दर्शनंयावत्तस्यषाण्मासिकंभवेत् शांतिर्वापुष्कलाकार्यासोममंत्रेणभक्तिमान् अस्यशिशोरेवत्यश्विनीसंध्यात्मकगंडांतजननसूचितारिष्टनिरासार्थंनक्षत्रगंडांतशांतिंकरिष्यइत्यादिसंकल्पःगोमुखप्रसवंकृत्वाषोडशपलमष्टपलंवाचतुःपलंवाकांस्यपात्रंविधाय तस्मिन्पायसंपयोवानिक्षिप्य तत्रनवनीतपूर्णंशंखंनिधायतस्मिन्राजतंचंद्रबिंबंसंस्थाप्य सोमोहमितिध्यानपूर्वकंचंद्रमाप्यायस्वेतिपूजयेत् पूजांतेआप्यायस्वेतिमंत्रस्यसहस्रंजपः ग्रहमखहोमःकार्यः नात्रप्रधानदेवताहोमः ग्रंथांतरेतुताम्रकलशेराजतप्रतिमायांबृहस्पतिमंत्रेणवागीश्वरंसंपूज्यतदुत्तरेकुंभचतुष्टयेपंचपल्लवादिकंकुंकुमचंदनकुष्ठगोरोचनानिक्षिप्त्वावरुणंपूजयेदित्युक्तं आचार्यायसशंखसमौक्तिकचंद्रदानं ग्रंथांतरपक्षेताम्रपात्रसहितवागीश्वरदानंआयुर्वृद्ध्यर्थंसहस्राक्षेणेतिमंत्रजपःदशावरब्राह्मणभोजनंचेति ॥

अब नक्षत्रगंडांत और तिसकी शांति कहताहुं.

रेवती, आश्लेषा, ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंकी अंतकी दो दो घडी, अश्विनी, मघा, और मूलकी आदिकी दो दो घडी ऐसा चार घडी प्रमाणसें तीन प्रकारका नक्षत्रगंडांत होता है. "अश्विनी, मघा और मूल इन्होंके पूर्वार्धमें पुत्रका जन्म होवै तौ पिताकों पीडा उपजती है. रेवती, आश्लेषा और ज्येष्ठा इन्होंके उत्तरार्धमें जन्म होवै तौ बालककी माताकों पीडा होती है. गंडांतमें जन्मे हुये सबोंका त्याग करना. वह बालक छह महीनोंका होवै तबतक तिसकों देखना नहीं अथवा भक्तिसें सोममंत्रसें श्रेष्ठ शांति करनी. तहां "अस्य शिशोरेवत्यश्विनीसंध्यात्मकगंडांतजननसूचितारिष्टनिरासार्थं नक्षत्रगंडांतशांतिं करिष्ये" ऐसा संकल्प करना. गोमुखप्रसव करके सोहल पल[1] आठ पल अथवा चार पलका, कांसीका पात्र बनाय तिसमें खीर अथवा दूध घालके और नौनीसें पूरित हुये शंखकों स्थापित करके और तिसमें चांदीसें बने चंद्रमाके बिंबकों स्थापित करके—"सोमोहम्" ऐसे भावसें ध्यान करके "आप्यायस्व०" इस मंत्रसें चंद्रमाकी पूजा करनी. पीछे "आप्यायस्व०" इस मंत्रका

---

[1] एक पल अर्थात् व्यवहारी ४० माष होते हैं. ८ चिरमठियोंका एक माष.

एक हजार जप करना, और ग्रहयज्ञसंबंधी होम करना. इस शांतिमें प्रधानदेवताका होम नहीं करना. दूसरे ग्रंथमें तांबाके कलशपर चांदीकी प्रतिमामें बृहस्पतिके मंत्रसें वागीश्वरकी पूजा करके तिसकी उत्तर दिशामें चार कलशोंमें पंचपल्लव आदि, केसर, चंदन, कूट, गोरोचन इन्होंकों डालके वरुणकी पूजा करनी ऐसा कहा है. पीछे आचार्यकों शंख और मोतियोंसहित चंद्रमाके बिंबका दान करना. उपरके ग्रंथके पक्षमें तांबाके पात्रसहित वागीश्वरकी प्रतिमाका आयुकी वृद्धिके अर्थ दान करना. "सहस्राक्षेण०" इस मंत्रका जप करना, और दशसें अधिक ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना.

अथतिथिगंडांतलग्नगंडांतशांतिः पंचमीषष्ठयोर्दशम्येकादश्योःपंचदशीप्रतिपदोःसंधिभूतंघटीद्वयंतिथिगंडांतं कर्कसिंहयोर्वृश्चिकधनुषोर्मीनमेषयोश्चलग्नयोःसंधिभूतैकाघटिकालग्नगंडांतं तत्रतिथिगंडांतेपूर्वार्धेजन्मनितत्वकालस्नातवृषभदानंतन्मूल्यदानंवाकृत्वासूतकांते शांतिःकार्या उत्तरार्धेजन्मनिशांतिमात्रं लग्नगंडांतपूर्वार्धेजन्मनिकांचनदानं उत्तरार्धेशांतिमात्रं कुंभेहेमप्रतिमायांवरुणंसंपूज्यवरुणोद्देशेनप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्ययासमिच्चर्वाज्यतिलयवानांहोमःकार्यः यवव्रीहिमाषतिलमुद्गानांदक्षिणात्वेनदानमिति ॥

अब तिथिगंडांत और लग्नगंडांतकी शांति कहताहुं.

पंचमी, षष्ठी, दशमी, एकादशी, पौर्णमासी अथवा प्रतिपदाकी संधीमें होनेवाली दो घडी तिथिगंडांत कहाती है. कर्क और सिंह; वृश्चिक और धन; मीन और मेष इन दो दो लग्नोंके संधिकी एक घडी लग्नगंडांत कहाती है. तिसमें तिथिगंडांतके पूर्वार्धमें जन्म होवै तब तत्काल स्नान करके बैलका दान अथवा बैलके मूल्यका दान करके आशौचके अंतमें शांति करनी. तिथिगंडांतके उत्तरार्धमें जन्म होवै तौ शांतिही करनी. लग्नगंडांतके पूर्वार्धमें जन्म होवै तौ सोनाका दान करना. लग्नगंडांतके उत्तरार्धमें शांतिही करनी. कलशपर सोनाकी प्रतिमामें वरुणका पूजन करके पीछे वरुणके उद्देशसें प्रत्येक द्रव्यका १०८ संख्या प्रमाणसें समिध, चरु, तिल और यव इन्होंका होम करना. यव, व्रीहि, तिल, मूंग इन्होंका दान दक्षिणाके स्थानमें देना.

अथदिनक्षयादिशांतिः दिनक्षयेचभद्रायांप्रसूतिर्यदिजायते यमघंटेदग्धयोगेमृत्युयोगेचदारुणे दुष्टयोगतिथीनांचनिषिद्धांशेषुचेत्तदा अतिदोषकरीप्रोक्तातस्मिन्पापयुतेसति यमघंटादयोज्योतिर्ग्रंथेप्रसिद्धाः दुर्योगतिथीनांनिषिद्धभागास्तु विष्कंभवज्रयोस्तिस्रःषट्चगंडातिगंडयोः परिघार्धंपंचशूलेव्याघातेंकघटीस्त्यजेत् चतुःषडष्टनिध्यर्कभूततिथ्याद्यनाडिकाः अष्टां ८ क ९ मनु १४ तत्त्वा २५ शा १० बाण ५ संख्याविवर्जयेदित्युक्ताज्ञेयाः दिनक्षयादिदोषेष्वेकैकदोषदूषितकालेजननेशिवेरुद्रैकादशिन्यभिषेकःकार्यः द्वित्रादिदोषसमुच्चयेग्रहयज्ञाश्वत्थप्रदक्षिणादिसमुच्चयः दीपंशिवालयेभक्त्याघृतेनपरिदापयेत् गाणपत्यंपुरुषसूक्तं सौरंमृत्युंजयंशुभम् शांतिजाप्यंरुद्रजाप्यंकृत्वामृत्युंजयीभवेदितिवाक्याद्बहुदोषेउक्तजपादिसमुच्चयोपि ॥

अब दिनक्षय आदिकी शांति कहताहुं.

“ दिनक्षय, भद्रा, यमघंटयोग, दग्धयोग, मृत्युयोग, दुष्टयोग, तिथिकी निषिद्ध घटीका और पापवारका योग इन्होंमें जो बालकका जन्म होवै तौ वह जन्म अतिदोषकारक होता है.” यमघंट आदि योग ज्योतिषके ग्रंथमें प्रसिद्ध हैं. **दुष्ट योग और दुष्ट तिथिकी निषिद्ध घटीकाओंकों कहताहुं.** “ विष्कंभ और वज्रयोगकी पहली तीन तीन घडी, गंड और अतिगंडकी पहली छह छह घडी, परिघयोगका आधा भाग, शूलयोगकी पांच घडी, व्याघातयोगकी नौ घडी इस प्रकारसें घडियोंकों त्यागना. चतुर्थीकी ८ घडी, षष्ठीकी ९ घडी, अष्टमीकी १४ घडी, नवमीकी २५ घडी, द्वादशीकी १० वडी और चतुर्दशीकी ५ घडी इस प्रकार तिथियोंकी पहली घडियोंकों त्यागना ” ऐसा कहा है. दिनक्षय आदि दोषोंमें दोषजनित कालविषे बालकका जन्म होवै तौ शिवपर रुद्रकी एकादशिनी करके अभिषेक करना. दो तीन दोषोंके समूहमें गृहयज्ञ और पिप्पलवृक्ष आदिकी परिक्रमा आदि करना उचित है. “ शिवके मंदिरमें भक्तिकरके घृतका दीपक लगाना. गणपतिसूक्त, पुरुषसूक्त, सौरसूक्त, मृत्युंजयजप, शांतिसूक्तका जप और रुद्रजप इन्होंकों करनेसें मनुष्य मृत्युकों जीतता है. ” इस वाक्यसें बहुतसे दोषोंमें उक्त जप आदि करने.

अथविषघटीशांतिः तत्रकौस्तुभेतिथिवानरनक्षत्राणांविषनाड्यउक्तास्तथापिज्योतिर्ग्रंथेषुनक्षत्रविषघटीनामेवमहादोषत्वेनोक्तेर्नक्षत्रविषघटीष्वेवजननेउक्तशांतिःकार्या तिथ्यादिविषघटीनामुपदोषत्वाद्रुद्राभिषेकादिकंकार्यं विषघटीलक्षणंकौस्तुभादौज्ञेयं विषनाडीषुसंजातः पितृमातृधनात्मनां नाशकृद्विषशस्त्रास्त्रैःक्रूरेलग्नेंशकेपिच एतद्विषनाडीषु शिशुजननसूचितारिष्टेत्यादिसंकल्पः एककुंभेप्रतिमाचतुष्टयेरुद्रयमाग्निमृत्युदेवताः कद्रुद्राययमायसोममग्निर्मूर्धापरंमृत्योरितिमंत्रैःसंपूजयेत् ग्रहान्वाधानांतेरुद्रयमाग्निमृत्यून्समिच्चरुघृततिलाहुतिभिःप्रतिदैवतंप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याभिःशेषेणेत्यादि गृहसिद्धान्नस्यहोमः ॥

अब विषघटीयोंकी शांति कहताहुं.

कौस्तुभ ग्रंथमें तिथि, वार और नक्षत्र इन्होंकी विषघटी कही हैं. तथापि ज्योतिषके ग्रंथोंमें नक्षत्रोंकीही विषघटीयोंमें महादोष है ऐसा कहा है, इस कारणसें नक्षत्रोंकी विषघटीयोंमेंही जन्म होवै तव उक्त शांति करनी. तिथि आदियोंकी विषघटीयोंमें जन्म होवै तब अल्प दोष लगता है इस कारणसें महादेवकों अभिषेक आदि करना. विषघटीका लक्षण कौस्तुभ आदि ग्रंथोंमें देखना. “ विषघटी और पापग्रहोंसें युत ऐसे लग्नमें जन्मा बालक पिता, माता, धन और आप इन्होंकों विष, शस्त्र, अस्त्र इन्होंकरके नाशकों प्राप्त करता है. ” “ **एतद्विषनाडीषु शिशुजननसूचितारिष्टेत्यादि** ” ऐसा संकल्प करके एक कलशपर चार प्रतिमाओंकों धरके तिन्होंमें रुद्र, यम, अग्नि और मृत्यु इन देवतोंकी “ **कद्रुद्राय० यमाय सोमं० अग्निर्मूर्धा० परंमृत्यो०** ” इन मंत्रोंसें पूजा करनी. ग्रहोंके अन्वाधानके अनंतर “ **रुद्रयमाग्निमृत्यून्समिच्चरुघृततिलाहुतिभिः प्रतिदैवतं प्रतिद्रव्यं अष्टोत्तरशतसंख्याभिः शेषेण०** ” ऐसा अन्वाधान करना. घरमें सिद्ध किये चरुका होम करना.

अथयमलजननशांतिः तत्रश्रौताग्निमतःसोग्नयेमरुत्वतेत्रयोदशकपालंपुरोडाशंनिर्वपेदितिऋग्वेदब्राह्मणोक्तेष्टिः यद्वाआश्वलायनसूत्रोक्तःकेवलमारुतयागः गृह्याग्निमतआश्वलायनस्यगृह्याग्नौमारुतश्चरुः अथयस्यवधूर्गौर्वाजनयेद्वेद्यमौततः समरुद्भ्यश्चरुंकुर्यात्पूर्णाहुतिमथापिवेतिकारिकोक्तेः गृह्याग्निशून्यबह्वृचःकात्यायनोक्तशांतिंलौकिकाग्नौकुर्यात् ममभार्यायमलजननसूचितसर्वारिष्टप्ररिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यंर्थंमारुतेष्ट्यायक्ष्यइतिसंकल्पः श्रौताग्निमतः स्मार्ताग्निमतस्तुमारुतस्थालीपाकेनयक्ष्यइतिसंकल्पःनिरग्निस्तुसग्रहमखांकात्यायनोक्तांशांतिंकरिष्येइतिसंकल्प्यस्वस्तिवाचनादिआचार्यवरणांतंकुर्यात् अष्टदिक्षुअष्टकलशान्विधिनासंस्थाप्यउदकपूरणादिसर्वौषधीप्रक्षेपांतेवरुणंपूजयेत् अष्टकलशोदकैर्दंपत्योरभिषेकःआपोहिष्ठेतितिसृभिःकयानइतिद्वेआनःस्तुतइतिपंचेतिसप्तभिरैंद्रीभिर्मोषुवरुणइतिपंचभिरिदमापइत्येकयाअपनइत्यष्टाभिराग्नेयीभिर्ऋग्भिःकार्यः अभिषिक्तौदंपतीधृतश्वेतवस्त्रचंदनौउदङ्मुखौतिष्ठेतां प्राङ्मुखआचार्योग्निग्रहस्थापनांतेअपस्तिसृभिराज्याहुतिभिरिंद्रंसप्तभिर्वरुणंपंचभिरपएकयाग्निमष्टाभिराज्याहुतिभिः पूर्वाभिषेकार्थमुक्तैश्चतुर्विंशतिमंत्रैरग्निंसोमंपवमानंपावकंमारुतंमरुतः यमंअंतकंमृत्युंचैकैकयाचर्वाहुत्यानाममंत्रैःशेषेणेत्यादिअन्वादध्यात् षट्त्रिंशद्वारंतूष्णींनिर्वापप्रोक्षणे अंतेग्रहकलशोदकादिनाभिषेकः दासीमहिषीवडवागोहस्तिनीनांयमलजननेपीयंशांतिःकार्या इयंशांतिर्ग्रहोत्पातेषुउलूककपोतगृध्रश्येनानांगृहप्रवेशेस्तंभप्ररोहेवल्मीकप्ररोहे मधुजनने आसनशयनयानभंगेपल्लीपतनेसरठारोहणेछत्रध्वजविनाशेषु अन्येषूत्पातेषुचकार्येतिचकात्यायनमतं साचसाग्निकैःकात्यायनैःस्वगृह्याग्नौकार्या निरग्निकैस्तैरन्यैश्चलौकिकाग्नौ इतियमलजननादिशांतिः ॥

अब यमल अर्थात् जोडले दो बालक जन्मनेकी शांति कहताहुं.

जिसकी स्त्री जोडलोंकों जन्मावै तिसनें शांति करनी. जो अग्निहोत्री होवै तौ “मरुत्वत् अग्निकों तेरह कपालोंसें युक्त पुरोडाश करना” ऐसी ऋग्वेदकी शाखावाले ब्राह्मणोंमें जैसी इष्टि करनी लिखी है तैसी करनी अथवा आश्वलायनसूत्रमें कहा केवल मारुतयज्ञ करना. गृह्याग्निसें युत आश्वलायनशाखी मनुष्य होवै तौ तिसनें मारुतस्थालीपाक करना. क्योंकी, “जिसकी स्त्री अथवा गौ दो वालकोंकों एकवार उपजावै तिस मनुष्यनें मरुत् देवतोंके अर्थ चरु अथवा पूर्णाहुति करनी” ऐसा कारिकाका वचन है. गृह्याग्निसें रहित आश्वलायनशाखीनें कात्यायननें कही शांति लौकिक अग्निमें करनी. अग्निहोत्री होवै तौ तिसनें, “**ममभार्यायमलजननसूचितसर्वारिष्टपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं मारुतेष्ट्या यक्ष्ये,**” ऐसा संकल्प करना. अग्निसें सहित मनुष्यनें, “**मारुतस्थालीपाकेन यक्ष्ये**” ऐसा संकल्प करना. गृह्याग्निसें रहित मनुष्यनें “**सग्रहमखां कात्यायनोक्तां शांतिं करिष्ये**” ऐसा संकल्प करके पुण्याहवाचनसें प्रारंभ करके आचार्यवरणपर्यंत कर्म करना. आठ दिशाओंमें आठ कलश विधिकरके स्थापित करके तिन कलशोंमें उदकपूरणसें आदि ले सर्वौषधी प्रक्षेपपर्यंत कर्म करके वरुणकी पूजा करनी. आठ कलशोंके पानीसें स्त्रीपुरुषोंकों अभिषेक

"आपोहिष्ठा० ३ ऋचा, कयान० २ ऋचा, आनःस्तुत० ५ ऋचा, सब मिलके ऐंद्री ऋचा ७, मोषुवरुण० ५ ऋचा, इदमापः १ ऋचा, अपनः० अग्नि ऋचा ८," इन ऋचाओंकरके करना. पीछे अभिषेकके अनंतर स्त्रीपुरुषोंनें सुपेद वस्त्र और चंदन धारण करके उत्तरकों मुखवाले होके बैठना. पूर्वकों मुखवाले आचार्यनें अग्नि और ग्रहकी स्थापना करके अन्वाधान करना, सो ऐसाः—**"अपस्तिसृभिराज्याहुतिभिरिंद्रं सप्तभिर्वरुणं पंचभिरपएकयाग्निमष्टाभिराज्याहुतिभिः पूर्वाभिषेकार्थमुक्तैश्चतुर्विंशतिमंत्रैरग्निं सोमं पवमानं पावकं मारुतं मरुतः यमं अंतकं मृत्युं चैकैकया चर्वाहुत्या नाममंत्रैः शेषेण०"** इत्यादि अन्वाधान करना. छत्तीस वार मंत्रसें रहित निर्वाप करके छत्तीस वारही चावलोंकों धोना. अंतमें ग्रहोंके कलशके पानीसें अभिषेक करना. दासी, भैंस, घोडी, गौ, हथिनी इन्होंकों दो बच्चे उपजैं तबभी यहही शांति करनी. ग्रहोंके उत्पातोंमें और उलूक, कपोत, गीध, शिकरा इन्होंका ग्रहमें प्रवेश होनेमें, स्तंभप्ररोहमें और डीमकके चढनेमें, आसन, पलंग, पालकी इन्होंके भंगमें और छिपकलीके पडनेमें और किरलियाके चढनेमें, छत्र और ध्वजाके विनाशमें और अन्य उत्पातोंमें यह शांति करनी उचित है. इस प्रकार कात्यायनका मत है. सो शांति अग्निहोत्री कात्यायनोंनें अपने गृह्याग्निमें करनी. अग्निरहित कात्यायनोंनें और अन्योंनें लौकिक अग्निमें करनी. ऐसी यमलजनन आदिकी शांति समाप्त हुई.

अथत्रिकप्रसवशांतिः सुतत्रयेसुताचेत्स्यात्तत्त्रयेवासुतोयदि मातापित्रोःकुलस्यापितदानिष्टंमहद्भवेत् ज्येष्ठनाशोवित्तहानिर्दुःखंवासुमहद्भवेत् गोप्रसवंकृत्वाममसुतत्रयजन्मानंतरंकन्याजननसूचितसर्वारिष्टेतिवाकन्यात्रयजन्मानंतरंपुत्रजननसूचितेतिवानिमित्तानुसारेण संकल्पः स्थंडिलपूर्वभागेग्रहस्थापनांतेतदुत्तरतःकलशपंचकेस्वर्णप्रतिमासुब्रह्मविष्णुमहेशेंद्ररुद्रानावाह्यपूजयेत् तत्रमंत्राः ब्रह्मजज्ञानं० इदंविष्णु० त्र्यंबकं० यतइंद्र० कद्रुद्रायेति ग्रहपीठदेवतान्वाधानांतेब्रह्माणंविष्णुंमहेशंइंद्रंरुद्रंचप्रत्येकंसमिदाज्यचरुतिलैः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरसहस्राष्टोत्तरत्रिशताष्टोत्तरशतान्यतमसंख्याहुतिभिःशेषेणेत्यादि ॥

अब तीन पुत्र होके चौथी कन्या होवै अथवा तीन कन्या होके चौथा पुत्र होवै तिसकी शांति कहताहुं.

"तीन पुत्र होके चौथी कन्या उपजै अथवा तीन कन्या होके चौथा पुत्र उपजैं तब माता, पिता और कुलकोंभी बहुत दुःख होता है. ज्येष्ठ पुत्रका नाश, धनकी हानि अथवा बहुत बडा दुःख ये प्राप्त होते हैं." गोप्रसव करके—**"ममसुतत्रयजन्मानन्तरं कन्याजननसूचितसर्वारिष्टेति"** अथवा **"कन्यात्रयजन्मानंतरं पुत्रजननसूचितेति"** ऐसा निमित्तके अनुसार संकल्प करना. स्थंडिलके पूर्वभागमें ग्रहोंका स्थापन करके पीछे ग्रहोंकी उत्तर दिशाविषे पांच कलश स्थापित करके तिन कलशोंपर सोनाकी प्रतिमाओंविषे ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, इंद्र और रुद्र इन्होंका आवाहन करके तिन्होंकी **"ब्रह्मजज्ञानं० इदंविष्णु० त्र्यंबकं० यतइंद्र० कद्रुद्राय०"** इन मंत्रोंसें पूजा करनी. ग्रहपीठस्थ देवताओंका अन्वाधान

करके पीछे "ब्रह्माणं विष्णुं महेशं इंद्रं रुद्रंच प्रत्येकं समिदाज्यचरुतिलैः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरसहस्राष्टोत्तरत्रिशताष्टोत्तरशतान्यतमसंख्याहुतिभिः शेषेण०" इत्यादि अन्वाधान करना.

अथसदंतजननशांतिः उपरिप्रथमंयस्यजायंतेथशिशोर्द्विजाः दंतैर्वासहयस्यस्याज्जन्म भार्गवसत्तम द्वितीयेचतृतीयेचचतुर्थेपंचमेतथा यदादंताश्चजायंतेमासेचैवमहद्भयं मातरंपितरंवाथखादेदात्मानमेवच बालानामष्टमेमासिषष्ठेमासिततःपुनः दंतायस्यचजायंतेमातावा म्रियतेपिता बालकःपीड्यतेवाचस्वयमेवनसंशयः केचित्तुअष्टमेमासिदंतजन्मशुभमाहुःतत्रास्यशिशोःप्रथममूर्ध्वदंतजननसूचितसर्वारिष्टेत्यादिसदंतजननसूचितेत्यादिवाद्वितीयमासे दंतजन्मसूचितेत्यादिवासंकल्पंयथानिमित्तंयोजयेत् स्थंडिलोत्तरभागेनौकायांस्वर्णपीठेवास्वस्तिकयुतेबालमुपवेश्य सर्वौषध्यादियुक्तजलैःस्नापयित्वा स्थंडिलपूर्वतःकलशेप्रतिमासुधातारंवह्निंसोमंवायुंपर्वतान्केशवंचेतिषट्देवताःसंपूज्य ग्रहान्वाधानांतेधातारंसक्तुचरुणावन्ह्यादिपंचदेवताएकैकयाज्याहुत्याशेषेणेत्यादिअन्वादध्यात् धात्रेत्वाजुष्टंनिर्वपामीत्यादिनिर्वापप्रोक्षणे नाम्नाचरुहोमः स्रुवेणवन्ह्यादिभ्यःपंचाज्यहुतयोपिनाम्नैव होमांतेदक्षिणांदत्वास्ततप्राहं यथाशक्तिब्राह्मणान्भोजयेम् अष्टमदिनेकांचनादिदत्वाकर्मेश्वरार्पणंकुर्यात् षष्ठाष्टममासयोर्दंतजननेतुएकस्याबृहस्पतिदेवतायाःपूजनं दधिमधुघृताक्तानामश्वत्थसमिधामष्टोत्तरशतंबृहस्पतिमंत्रेणहोमः आज्येनस्विष्टकृतादि इतिसदंतजननशांतिः ॥

अब दंतोंसहित बालक जन्मनेमें शांति कहताहुं.

" जिस बालककों प्रथम उपरके दंत उपजैं अथवा जिसका दंतोंसहित जन्म होवै अथवा हे भार्गवसत्तम, दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचमा इन महीनोंमें जिस बालककों दंत उपजैं तिसकों बहुत भय होता है. माताका, पिताका अथवा आपका वह बालक नाश करता है. आठमे और छट्ठे महीनेमें जिस बालककों दंत उपजते हैं तिसकी माता अथवा पिता मरता है अथवा आपही बालक पीडाकों प्राप्त होता है, इसमें संशय नहीं. " कितनेक ग्रंथकार तौ आठमे महीनेमें दंतोंके उपजनेकों शुभ कहते हैं. उपरकी पंक्तियोंमें प्रथम बालककों दंत उपजैं तौ " अस्य शिशोः प्रथममूर्ध्वदंतजननसूचितसर्वारिष्टेत्यादि " ऐसा संकल्प करना. दंतोंसहित बालक उपजा होवै तौ " सदंतजननसूचित० " इस प्रकार संकल्प करना. दूसरे महीनेमें दंत उपजैं तौ " द्वितीयमासे दंतजननसूचित० " ऐसा संकल्प करना. इस प्रकार जैसा निमित्त होवै तैसाही संकल्प करना. स्थंडिलके उत्तर भागमें नावसें अथवा स्वस्तिकसें युत हुई सोनाकी पीठपर बालककों बैठाके सर्वौषधी आदिसें युत हुये जलसें स्नान कराना. पीछे स्थंडिलके पूर्व भागमें कलशपर स्थित हुई छह प्रतिमाओंमें धाता, अग्नि, सोम, वायु, पर्वत और केशव इन छह देवतोंकी पूजा करके ग्रहोंके अन्वाधानके अंतमें " धातारं सक्तुचरुणा वन्ह्यादिपंचदेवता एकैकयाज्याहुत्या शेषेण० " इत्यादिक अन्वाधान करना. पीछे " धात्रे त्वा जुष्टं निर्वपामि० " इत्यादिक मंत्र कहके निर्वाप और प्रोक्षण करना. नाममंत्रोंसें चरुहोम करना. स्रुवाकरके अग्नि आदि पांच देवतोंके अर्थ घृतकी

पांच आहुतिभी नाममंत्रसेंही देनी. होमके अंतमें दक्षिणा देके सात दिनपर्यंत शक्तिके अनुसार ब्राह्मणोंकों भोजन कराना. पीछे आठमे दिनमें सोना आदिका दान करके कर्म ईश्वरकों अर्पण करना. छठे और आठमे महीनेमें दंतोंके उपजनेमें अकेले बृहस्पतिदेवताकी पूजा करनी. और दही, शहद, घृत इन्होंमें भिगोई हुई पिप्पलवृक्षकी समिधोंका बृहस्पतिके मंत्रसें १०८ होम करके घृतसें स्विष्टकृत् आदि होम करना. ऐसी दंतोंसहित उपजेकी शांति समाप्त हुई.

अथप्रसववैकृतशांतिः यत्रगर्भेविपर्यासोमानुषाणांगवामपि अद्भुतानिप्रसूयंतेतत्रदेशस्य विप्लवः मानुषामानुषाणांचगजाश्वमृगपक्षिणां जायंतेजातिभेदाश्चसदंताविकृतास्तथा बहु शीर्षाअशीर्षावाबहुकर्णाअकर्णकाः एकशृंगाद्वित्रिशृंगास्तथैवत्रिचतुर्भुजाः दीर्घकर्णामहाकर्णागजकर्णाश्चमानवाः राजश्रेष्ठेकुलेनाशोधनस्यचकुलस्यच अष्टोत्तरसहस्राणिचरुंवैजुहुयाद्घृतं समिधांतुपलाशानांतर्पयेत्पूर्ववद्विजान् अशिराजायतेजंतुस्तथाद्वित्रिशिरास्तथाअत्रसूर्याद्भुतेसूर्यपूजयेज्जुहुयादपि दध्याज्यमधुसंयुक्ताःसमिधस्त्वर्कसंभवाः मृगीजनयतेसर्पान्मंडूकांश्चैवमानुषान् अत्राद्भुतेगीष्पतयेपूजांहोमंचकारयेत् औदुंबरस्यसमिधोदधिसर्पिः समन्विताः स्त्रीगर्भपातोयमलंप्रसूयंतेथवास्त्रियः सदंताश्चैवजायंतेजातमात्राहसंतिच बुधाद्भुतेबुधायात्रपूजाहोमौसमाचरेत् ॥

अब विपरीत उत्पत्ति होनेकी शांति कहताहुं.

जहां मनुष्योंके और गायोंके गर्भमें विपरीतपना होके अद्भुत उत्पत्ति होवै तिस देशका नाश होता है. मनुष्य, पशु, हस्ती, घोडा, मृग, पक्षी इन्होंकों दूसरी जातिका और दंतोंसहित, विकराल, बहुत शिरोंवाले, शिरसें रहित, बहुत कानोंवाले, कानोंसें रहित, एक शींगवाले, दो शींगोंवाले, तीन शींगोंवाले, तीन और चार हाथोंवाले, लंबे कानोंवाले, बडे कानोंवाले, हस्तीके कानसरीखे कानोंवाले ऐसे मनुष्य जन्मते हैं तहां उत्तम राजकुलका और धनका नाश होता है, इस लिये चरु, घृत, पलाशकी समिधा इन्होंके प्रति द्रव्यका १००८ होम करना. ब्राह्मणोंकों भोजनादि दानोंसें तृप्त करना. शिरसें रहित तथा दो और तीन शिरोंवाला ऐसा प्राणी उपजै यह सूर्यसंबंधी अद्भुत होता है, इसलिये सूर्यकी पूजा करके दही, शहद, घृत इन्होंमें भिगोई हुई आककी समिधोंसें सूर्यके उद्देशकरके होमभी करना. सर्प, मेंडक, मनुष्य इन्होंकों हरणी जनै यह बृहस्पतिसंबंधी अद्भुत है. इसविषे बृहस्पतिकी पूजा करके दही, और घृतमें भीगोई हुई गूलरकी समिधोंका होम करना. स्त्रीका गर्भपात अथवा दो बालकोंका एकसाथ जन्म, दंतोंसहित बालकका जन्म, जन्मतेही बालक हंसै ये अद्भुत बुधसंबंधी होते हैं, इसविषे बुधके अर्थ पूजा और होम करने.

संक्षेपेणयथाप्राज्ञमित्थंजननशांतयः उक्ताजपाभिषेकार्थसूक्तादिबहुविस्तृताः
प्रयोगाःकौस्तुभादौचप्रसिद्धाबहुशःपराः अनेनप्रीयतांदेवोभगवान्विठ्ठलःप्रभुः ॥

इस प्रकार संक्षेपसें बुद्धिके अनुसार जन्मकी शांति कही हैं. जप, अभिषेकके अर्थ सूक्त

आदिसें बहुत विस्तृत ऐसे अन्य प्रयोग कौस्तुभ आदि ग्रंथोंमें बहुतसे कहे हैं. इस मेरी ग्रंथकी कृतीसें देव भगवान् विठ्ठलजी प्रसन्न हो.

अथनामकरणं तत्रजन्मदिनेजातकर्मानंतरंतत्कालःक्वचित् एकादशाहेद्वादशाहेवाविप्रस्यनामकर्मदशमदिने आशौचसत्त्वेपिवचनान्नामकर्मकार्यमितिकेचित् क्षत्रियाणांत्रयोदशे षोडशेवादिने वैश्यानांषोडशेविंशतितमेवादिने द्वाविंशेमासांतेवाशूद्राणां मासांतेशततमेदिनेवत्सरांतेंवेतिविप्रादीनांगौणकालः मुख्यकालेकुर्वन्विप्रादिःपुण्यतिथिनक्षत्रचंद्रानुकूल्यादिगुणादरंनकुर्यात् उक्तमुख्यकालातिक्रमेशुभनक्षत्रादिकमावश्यकं वैधृतिव्यतीपातसंक्रांतिग्रहणादिनामावास्याभद्रासुप्राप्तकालेपिनामकर्मादिशुभकर्मनकार्यं अत्रमलमासगुरुशुक्रास्तादिदोषोनास्तीत्युक्तं अपराह्णेरात्रौचनामकर्मवर्ज्यं ॥

अब नामकरणसंस्कार कहताहुं.

जन्मदिनमें जातकर्मके अनंतर तत्काल नामकरण करना ऐसा कितनेक ग्रंथोंमें कहा है. ग्यारमें दिन अथवा बारमे दिन ब्राह्मणका नामकर्मसंस्कार करना. दशमे दिन आशौचके होनेमेंभी वचन होनेसें नामकर्म करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. क्षत्रियोंका नामकर्मसंस्कार तेरमे दिन अथवा सोलमे दिन करना. वैश्योंका नामकर्मसंस्कार सोलमे दिन अथवा वीशमे दिन करना. शूद्रोंका बाईसमे दिन अथवा महीनेके अंतमें करना. महीनेके अंतमें ब्राह्मणोंका नामकर्मसंस्कार करना यह गौणकाल है. क्षत्रियोंका १०० सौमे दिन नामकर्मसंस्कार करना यह गौणकाल है. वैश्योंका वर्षके अंतमें नामकर्मसंस्कार करना यह गौणकाल है. ब्राह्मण आदिकों मुख्य कालमें नामकर्मसंस्कार करना होवै तौ तिसनें श्रेष्ठ तिथि, नक्षत्र अच्छा चंद्रमा इन आदिका विचार नहीं करना. पहले कहा हुआ मुख्य काल व्यतीत हो जावै तौ शुभ नक्षत्र आदिका अवश्य विचार करना. वैधृति, व्यतीपात, संक्रांति, ग्रहणदिन, अमावस, भद्रा इन्होंमें प्राप्तकालविषेभी नामकर्म आदि शुभकर्म नहीं करना. यह नामकर्ममें मलमास, बृहस्पति और शुक्रका अस्त आदिकोंका दोष नहीं है ऐसा कहा है. अपराण्हकालमें और रात्रिमें नामकर्म नहीं करना.

अथोक्तकालातिक्रमेऽपेक्षितशुभतिथ्यादि चतुर्थीषष्ठ्यष्टमीनवमीद्वादशीचतुर्दशीपंचदशीरहितास्तिथयःप्रशस्ताः चंद्रबुधगुरुशुक्रावासराः अश्विनीत्र्युत्तरारोहिणीमृगपुनर्वसुपुष्यहस्तस्वात्यनुराधाश्रवणधनिष्ठाशततारकारेवत्योनक्षत्राणि वृषभसिंहवृश्चिकलग्नानिप्रशस्तानि ॥

अब उक्त कालके अतिक्रममें अपेक्षित ऐसी शुभ तिथि आदि कहताहुं—चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवनी, द्वादशी, चतुर्दशी, पौर्णमासी, इन्होंसें अन्य तिथि श्रेष्ठ हैं. सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये वार श्रेष्ठ हैं. अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती ये नक्षत्र श्रेष्ठ हैं. वृष, सिंह और वृश्चिक ये लग्न श्रेष्ठ हैं.

तानिनामानिचतुर्विधानि देवतानाममासनामनाक्षत्रनामव्यावहारिकनामेति तत्रामुकदेवताभक्तइत्याकारकंदेवतानामप्रथमं चैत्रादिमासनामानिवैकुंठोथजनार्दनः उपेंद्रोयज्ञपुरुषो वासुदेवस्तथाहरिः योगीशःपुंडरीकाक्षःकृष्णोनंतोच्युतस्तथा चक्रीतिद्वादशैतानिक्रमादाहुर्मनीषिणइत्यनुसारेणमासनामद्वितीयकं मासाश्चचांद्राः तेचशुक्लादिकृष्णांताएव यस्मिन्नक्षत्रेजन्मतन्नक्षत्रवाचकशब्दात्तत्रजातइत्यधिकारोविहिततद्धितप्रत्ययेकृतेनिष्पन्नंनाक्षत्रनामतृतीयं तद्यथा आश्वयुक् आपभरणः कार्तिकः रौहिणः मार्गशीर्षः आर्द्रकः पुनर्वसुः तिष्यः आश्लेषः माघः पूर्वाफल्गुनः उत्तराफल्गुनः हस्तः चैत्रः स्वातिः विशाखः अनुराधः ज्यैष्ठः मूलकः पूर्वाषाढः उत्तराषाढः आभिजितः श्रावणः श्रविष्ठा शतभिषक् पूर्वाप्रौष्ठपादः उत्तराप्रौष्ठपादः रैवतइति केचित्तुचूचेचोलाश्विनीप्रोक्तेत्यादिज्योतिर्ग्रंथोक्तावकहडाचक्रानुसारेणाश्विन्यादेश्चतुर्षुचरणेषुचूडामणिश्चेदीशश्चोलेशोलक्ष्मणइत्यादिकानिनाक्षत्रनामानिकुर्वंति तन्नश्रौतग्रंथादिबुहुसंमतं शांखायनास्तुकृत्तिकोत्पन्नस्याग्निशर्मेतिनक्षत्रदेवतासंबद्धंनाक्षत्रंनामकुर्वंति एवंकातीयाअपि नाक्षत्रनामैवाभिवादनीयंगुप्तंचामौंजीबंधनात् मातापितरावेवजानीयातां व्यावहारिकंनामचतुर्थं तच्चकवर्गादिषुतृतीयचतुर्थपंचमवर्णहकारान्यतमवर्णाद्यावयवकं यरलवान्यतममध्यवर्णयुतंऋलवर्णरहितंविसर्गांतंपित्रादिपुरुषत्रयान्यतमवाचकं शत्रुवाचकभिन्नंतद्धितप्रत्ययरहितंकृत्प्रत्ययांतंयुग्माक्षरंपुंसांअयुग्माक्षरंस्त्रीणां कार्यंयथादेवइतिहरिरिति उक्तसर्वलक्षणाभावेसमाक्षरंपुंसांअयुग्माक्षरंस्त्रीणामित्येकलक्षणयुतमेव यथारुद्रइतिराजेत्यादि अक्षरमत्रस्वरः व्यंजनेषुनसंख्यानियमः अत्रविशेषः द्व्यक्षरंप्रतिष्ठाकामश्चतुरक्षरंब्रह्मवर्चसकामःअंत्यलकाररेफंवर्जयेदिति आपस्तंबहिरण्यकेशिसूत्रेतु प्रातिपदिकादिधात्वंतंयथाहिरण्यदाइतिउपसर्गयुतंवा सुश्रीरित्यादीतिविशेषउक्तः तच्चव्यावहारिकंनामशर्मपदांतंदेवपदांतंवाब्राह्मणस्यवर्मेतिराजेतिवापदयुतंक्षत्रियस्य गुप्तदत्तान्यतरांतंवैश्यस्य दासांतंशूद्रस्यकार्यं व्यावहारिकंनामप्रासादादीनामपिकार्यं देवालयगजाश्वानांवृक्षाणांवापिकूपयोः सर्वापणानांपण्यानांचिह्नानांयोषितांनृणां काव्यादीनांकवीनांचपश्वादीनांविशेषतः राजप्रासादयज्ञानांनामकर्मयथोदितमित्युक्तेः ॥

नाम चार प्रकारके कहे हैं—देवतानाम, मासनाम, नाक्षत्रनाम और व्यावहारिकनाम ऐसे हैं. अमुकदेवताभक्त (जैसे हरिभक्त) ऐसे आकारका जो देवतानाम सो प्रथम है. चैत्र आदि महीनाके अनुसार नाम करना होवै तौ वैकुंठ, जनार्दन, उपेंद्र, यज्ञपुरुष, वासुदेव, हरि, योगीश, पुंडरीकाक्ष, कृष्ण, अनंत, अच्युत, और चक्री इस प्रकारसें यह बारह नाम क्रमसें कहते हैं. इस प्रकार जो माससंबंधी नाम सो दूसरा है. यह नामप्रकरणमें मास लेने सो चांद्रमास लेने. वे शुक्लपक्षसें कृष्णपक्षपर्यंतही लेने. जिस नक्षत्रमें जन्म होवै तिस नक्षत्रवाचक शब्दसें तत्रजात इस अधिकारमें विहित तद्धित प्रत्यय करके सिद्ध हुआ नाम सो नाक्षत्रनाम तीसरा है. सो दिखाते हैं. आश्वयुक्, आपभरण, कार्तिक, रौहिण, मार्गशीर्ष, आर्द्रक, पुनर्वसु, तिष्य, आश्लेष, माघ, पूर्वाफल्गुन, उत्तराफल्गुन, हस्त, चैत्र, स्वाति, विशाख, अनुराध, ज्यैष्ठ, मूलक, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ, आभिजित, श्रावण, श्रविष्ठ, शतभिषक्, पूर्वाप्रौष्ठपाद, उत्तराप्रौष्ठपाद, रेवत इस प्रकार नाम जानने. कितनेक ग्रंथकार तौ चू, चे, चो, ल। अश्विनी इस आदि

ज्योतिष ग्रंथोंमें कहे अवकहडाचक्रके अनुसार अश्विनी इस आदिके चार चरणोंमें चूडामणि, चेदीश, चोलेश, लक्ष्मण इन आदि नाक्षत्रनाम रखते हैं; परंतु यह ठीक नहीं है. क्योंकी, वैदिक ग्रंथोंका मत नहीं है. शांखायन तौ कृत्तिकानक्षत्रमें उत्पन्न हुये बालकका अग्निशर्मा इस प्रकार नक्षत्रदेवतासंबंधी नाम रखते हैं. कात्यायनशाखावालेभी ऐसाही नाक्षत्रनाम रखते हैं. नाक्षत्रनामही अभिवादन करनेकों योग्य है, और वह यज्ञोपवीतकर्मपर्यंत गुप्त होवै. इस नामकों माता और पिताही जानते रहैं. व्यावहारिक नाम चौथा है. वह कवर्ग आदि वर्गोंमेंसें तीसरा चौथा और पांचमा और हकार इन्होंमेंसें एक कोईसे अक्षर आदि अवयववाला होवै. य, र, ल, व इन्होंमेंसें एक कोईसे मध्यवर्णसें युत होवै ॠ, ऌ, अक्षरोंसें रहित होवै और अंतमें विसर्गवाला होवै और पिता आदि तीन पुरुष अर्थात् पिता, पितामह, प्रपितामह इन्होंमेंसें एक कोईसेका वाचक होवै और शत्रुवाचकसें वर्जित होवै, और तद्धितके प्रत्ययसें रहित होवै और अंतमें कृदंतके प्रत्ययवाला होवै और पुरुषोंका युग्म अर्थात् पूरे अक्षरोंवाला होवै और स्त्रियोंका अयुग्म अर्थात् ऊरे अक्षरोंवाला होवै ऐसा नाम रखना उचित है. जैसे देव, हरि, ऐसे नाम रखने. उक्त किये सब लक्षणोंके अभावमें सम अक्षरोंवाला नाम पुरुषोंका और विषम अक्षरोंवाला नाम स्त्रियोंका ऐसे एक लक्षणमें युतही नाम रखना. जैसे रुद्र, राजा इस आदि नाम रखना. यहां अक्षरसें स्वर लेना. व्यंजन अक्षरोंमें संख्याका नियम नहीं है. **यहां विशेष कहताहुं**—प्रतिष्ठाकी इच्छावाले मनुष्यनें दो अक्षरोंवाला नाम रखना. ब्रह्मतेजकी कामनावालेनें चार अक्षरोंवाला नाम रखना. नामके अंतमें लकार और रकार वर्ज देने. आपस्तंब और हिरण्यकेशी सूत्रमें तौ प्रातिपदिक आदिमें होवै और धातु अंतमें होवै ऐसा नाम रखना ऐसा कहा है. जैसे—हिरण्यदा ऐसा होवै, अथवा उपसर्गसें युत नाम रखना. जैसे सुश्रीः—इस आदि विशेष कहा है. वह व्यावहारिक नाम ब्राह्मणका शर्मपदांत अथवा देवपदांत होवै. क्षत्रियका वर्मपदांत अथवा राजपदांत ऐसा नाम रखना. वैश्यका गुप्त और दत्त इन्होंमेंसें एक कोईसा अंतमें होवै ऐसा नाम रखना. दास है अंतमें जिसके ऐसा नाम शूद्रका रखना. व्यावहारिक नाम, स्थान आदिकेभी रखने उचित हैं. क्योंकी देवताका मंदिर, हस्ती, घोडा, वृक्ष, बावडी, कूवा, सब बाजार, बेचनेके योग्य पदार्थ, चिन्ह, स्त्री, पुरुष, काव्य आदि, कवि, पशु आदि इन्होंके और विशेषकरके राजाका स्थान और यज्ञोंके नाम यथायोग्य रखने ऐसा वचन है.

अथप्रयोगेविशेषः गर्भाधानादिसंस्कारलोपेप्रत्येकंपादकृच्छ्रंबुद्धिपूर्वकमकरणेप्रत्येकमर्धकृच्छ्रंप्रायश्चित्तंजातकर्मणःकालातिपत्तिनिमित्तकाज्यहोमपूर्वकंकार्यं तद्यथा जातकर्मणःकालातिपत्तिनिमित्तकदोषपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रायश्चित्तहोमंकरिष्यइतिसंकल्प्याग्निस्थापनेध्माधानादिपाकयज्ञतंत्रसहितंवह्निस्थापनाज्यसंस्कारमात्रसहितंवाभूर्भुवःस्वःस्वाहेतिसमस्तव्याहृत्याज्यहोमंकुर्यात् होमंसमाप्यगर्भाधानपुंसवनानवलोभनसीमंतोन्नयनलोपजनितदोषपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं एतावतः पादकृच्छ्रान्बुद्धिपूर्वकलोपेर्धकृच्छ्रान्तत्प्रत्याम्नायगोनिष्क्रयीभूतयथाशक्तिरजतद्रव्यदानेनाहमाचरिष्ये इतिसंकल्प्यद्रव्यंदद्यात् जातकर्मनाम्नोःसहचिकीर्षायांपूर्वोक्तजातकर्मसंकल्पवाक्यमुच्चार्यअस्यकुमारस्यायुरभिवृद्धिव्यव

हारसिद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंनामकर्मचतंत्रेणकरिष्यइतिसंकल्प्यस्वस्तिवाचनादिकुर्यात् तत्रजातकर्मनामकर्मणोः पुण्याहंभवंतोब्रुवंत्वित्युक्त्वाअस्यकुमारस्यजातकर्मणेएतन्नाम्नेअस्मैचस्वस्तिभवंतोब्रुवंत्वितिस्वस्तिपर्यायेवदेत् तदनुसारेणैवविप्रप्रतिवचनं केवलनामचिकीर्षायांनामकर्मणः पुण्याहंभवंतोब्रुवंत्वित्युक्त्वास्वस्तिपर्यायेअमुकनाम्नेअस्मैस्वस्तिभवंतोब्रुवंत्वितिवदेत् विप्राश्चामुकनाम्नेअस्मैस्वस्तीतिप्रतिब्रूयुः लेखनादौनामत्रयंशर्मादिपदरहितंकृत्वाव्यावहारिकंनामशर्माद्यंतंकुर्यात् अभिवादनेनाक्षत्रनामापिशर्माद्यंतंसर्वत्रोच्चारणीयं अवशिष्टःप्रयोगः प्रयोगग्रंथेषु ॥

अब प्रयोगका विशेष प्रकार कहताहुं.

गर्भाधान आदि संस्कारके नहीं करनेमें प्रत्येक संस्कारका पादकृच्छ्रप्रायश्चित्त कहा है. जानके नहीं करनेमें प्रत्येक संस्कारका अर्धकृच्छ्र प्रायश्चित्त करना. जातकर्मके कालके उल्लंघनमें तन्निमित्तक करनेका जो घृतका होम सो पहले करके पीछे करनेका सो दिखाते हैं. "**जातकर्मणः कालातिपत्तिनिमित्तकदोषपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रायश्चित्तहोमं करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके अग्निस्थापन, इध्मास्थापन आदि पाकयज्ञतंत्रसें युक्त अथवा अग्निस्थापन और आज्यसंस्कार, पात्रोंका संस्कार इन्होंसें युत ऐसा "**भूर्भुवःस्वाहा**" इन सब व्याहृतिमंत्रोंसें घृतका होम करना. होम समाप्त करके संस्कारलोपके प्रायश्चित्तका संकल्प करना. सो ऐसा- "**गर्भाधानपुंसवनानवलोभनसीमंतोन्नयनलोपजनितदोषपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं एतावतः पादकृच्छ्रान् बुद्धिपूर्वकलोपेऽर्धकृच्छ्रान् तत्प्रत्याम्नायगोनिष्क्रयीभूतयथाशक्तिरजतद्रव्यदानेनाहमाचरिष्ये**" ऐसा संकल्प करके द्रव्य देना. जातकर्म और नामकर्म साथ करनेकी इच्छा होवै तौ पूर्वोक्त जातकर्मके संकल्पका उच्चार करके एकतत्रका संकल्प करना. सो ऐसा—"**अस्य कुमारस्यायुरभिवृद्धिव्यवहारसिद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिवर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं नामकर्म च तंत्रेण करिष्ये,**" ऐसा संकल्प करके स्वस्तिवाचन आदि करना. स्वस्तिवाचनमें वाक्य कहना. सो ऐसा,—"**जातकर्मनामकर्मणोः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंतु**" ऐसा कहके "**अस्य कुमारस्य जातकर्मणे एतन्नाम्ने अस्मै च स्वस्ति भवंतो ब्रुवंतु**" ऐसा स्वस्तिशब्दके विषयमें कहना. तिसीके अनुसारकरके ब्राह्मणोंनें प्रतिवचन कहना उचित है. केवल नामकर्म करनेकी इच्छामें "**नामकर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंतु**" ऐसा कहके स्वस्तिशब्दके पर्यायमें "**अमुकनाम्ने अस्मै स्वस्ति भवंतो ब्रुवंतु**" ऐसा कहना. ब्राह्मणोंनें "**अमुकनाम्ने अस्मै स्वस्ति**" इस प्रकार प्रतिवचन कहना. नामके लेखन आदिमें शर्म आदि पदसें रहित तीन नामोंकों लिखके व्यावहारिक नाम शर्मादिपदांत लिखना. अभिवादन करनेमें नाक्षत्रनाम जो होवै तिसकाभी शर्मादिपदांत ऐसा सब जगह उच्चार करना. शेष रहा प्रयोग प्रयोगके ग्रंथोंमें देख लेना.

अथस्त्रीणांनामकर्म संकल्पेअस्याःकुमार्याइतिविशेषः स्वस्तिवाचनेएतन्नाम्न्यैअस्यैस्वस्तीत्यादि भक्तेत्यावंतंदेवतानाम मासनामसुचक्रिणीवैकुंठीवासुदेवीतित्रीणिङीबंतानिहरिरित्यविकृतंअवशिष्टानिअष्टावाबंतानि रौहिणीकृत्तिकेत्येवंयथायथंनाक्षत्रनामेतिमातृदत्तमते

आश्वलायनैर्नाक्षत्रनामस्त्रीणांनकार्यं व्यावहारिकंयज्ञदाशर्मेतिपुंवत् पूजादिकंवैदिकमंत्ररहितंपुंवत्कार्यं पितुरसन्निधौस्त्रीपुंसयोर्नामपितामहादिःकुर्यात् इतिनामकरणम् ॥

अब स्त्रियोंका नामकर्म कहताहुं.

संकल्पमें "अस्याः कुमार्याः" इतना विशेष है. स्वस्तिवाचनमें "एतन्नाम्न्यै अस्यै स्वस्ति" इत्यादि विशेष है. "भक्ता" ऐसा आप्प्रत्ययांत देवतानाम; चैत्र आदि माससंबंधी नामोंमें चक्रिणी, वैकुंठी, वासुदेवी ये तीनों ङीप् प्रत्ययांत हैं. हरि ये नाम कन्यापुत्रविषे समान है. शेष रहे आठ नाम (जनार्दना, उपेंद्रा, यज्ञपुरुषा, योगीशा, पुंडरीकाक्षा, कृष्णा, अनंता, अच्युता) आप्प्रत्ययांत जानने. रोहिणी, कृत्तिका, इस प्रकार यथायोग्य नाक्षत्रनाम रखना ऐसा मातृदत्तका मत है. आश्वलायनशाखावालोंनें स्त्रियोंका नाक्षत्रनाम नहीं रखना. स्त्रियोंका व्यावहारिकनाम 'यज्ञदाशर्मा' ऐसा पुरुषकी तरह रखना. वैदिकमंत्रोंसें रहित पूजा आदि कर्म पुरुषकी तरह करना. पिता समीपमें नहीं होवै तब कन्या और पुत्र इन्होंका नामकरणसंस्कार पितामह आदिनें करना. ऐसा नामकरणसंस्कार समाप्त हुआ.

अथांदोलारोहणं आंदोलाशयनेपुंसोद्वादशोदिवसःशुभः त्रयोदशस्तुकन्यायाननक्षत्रविचारणा अन्यस्मिन्दिवसेचेत्स्याच्छुभकालंविचारयेत् उत्तरात्रयरोहिणीहस्ताश्विनीपुष्यरेवत्यनुराधामृगचित्रापुनर्वसुश्रवणस्वातिनक्षत्रेषुशुभवारेरिक्तातिरिक्ततिथौचंद्रताराबलेकुलयोषिद्भिरांदोलाशयनंकार्यं ॥

अब बालककों पालनेमें सुवानेका विधि कहताहुं.

"पुत्रकों आंदोला अर्थात् पालनेमें सुवानेविषे बारमा दिन शुभ है; कन्याकों तेरहमा दिन शुभ है. इन दो दिनोंमें नक्षत्रका विचार नहीं करना. अन्य किसी दिनमें पालनेविषे सुवाना होवै तौ शुभ कालका विचार करना." उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, रेवती, अनुराधा, मृगशिर, चित्रा, पुनर्वसु, श्रवण और स्वाति इन नक्षत्रोंमें, शुभ वारोंमें (सोमवार, बुधवार, गुरुवार, और शुक्रवार इन वारोंमें) चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी इन्होंसें वर्जित तिथियोंमें चंद्रमा और ताराके बलमें कुलकी स्त्रियोंनें बालककों पालनेविषे शयन कराना.

एकत्रिंशेदिनेद्वितीयजन्मर्क्षेवांदोलारोहोक्तनक्षत्रैर्वापूर्वाह्णमध्याह्नयोःकुलदेवताविप्रयोःपूजांविधायशंखेनगोदुग्धंपाययेत् इतिदुग्धपानं ॥

जन्मदिनसें इकतीसमे दिनमें अथवा दूसरे वार आये जन्मनक्षत्रमें अथवा पालनेमें शयन करानेविषे कहे नक्षत्रोंमें पूर्वाह्ण और मध्यान्हविषे कुलदेवता और ब्राह्मणकी पूजा करके शंखसें बालककों दूधका पान करवाना. ऐसा दूधके पानका विधि समाप्त हुआ.

सूत्यामासोत्तरंबुधसोमगुरुवारेषुरिक्तान्यतिथौ श्रवणपुष्यपुनर्वसुमृगहस्तमूलानुराधानक्षत्रेषुजलस्थानंगत्वाजलपूजाकार्या अत्रगुरुशुक्रास्तचैत्रपौषमासाधिमासावर्ज्याः इतिजलपूजनं ॥

अब जलपूजा कहताहुं.

सूतिकानें एक महीना पूर्ण हो जावै तब बुध, सोम, बृहस्पति इन वारोंमें; चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी इन्होंसें वर्जित तिथियोंमें; श्रवण, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिर, हस्त, मूल, अनुराधा, इन नक्षत्रोंमें जलके स्थानके समीप जाके जलकी पूजा करनी. इस कर्ममें बृहस्पति और शुक्रका अस्त और चैत्र, पौषमास और अधिकमास ये वर्जित करने. ऐसा जलपूजन समाप्त हुआ.

तृतीयेमासिसूर्यावलोकनंचतुर्थेमासिअन्नप्राशनकालेवानिष्क्रमणं तत्रकाल: शुक्लपक्ष: शुभ:प्रोक्त:कृष्णश्चांत्यत्रिकंविना रिक्ताषष्ठयष्टमीदर्शद्वादशीचविवर्जिता गुरुशुक्रबुधवाराश्विनीरोहिणीमृगपुष्योत्तरात्रयहस्तधनिष्ठाश्रवणरेवतीपुनर्वसुअनुराधानक्षत्राणिचशस्तानि इदंनिष्क्रमणंनित्यंकाम्यं सूर्यावलोकननिष्क्रमणयोर्नांदीश्राद्धंकृताकृतं ॥

तीसरे महीनेमें बालककों सूर्यका दर्शन करवाना. चौथे महीनेमें अथवा अन्नप्राशनकालमें घरसें बाहिर निकासना. तिसका मुहूर्त—"शुक्लपक्ष शुभ है. अंतके पांच दिनोंकों वर्ज करके कृष्णपक्षभी शुभ है. रिक्ता, षष्ठी, अष्टमी, अमावस, द्वादशी ये तिथि वर्जित हैं." बृहस्पति, शुक्र, और बुध ये वार और अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, हस्त, धनिष्ठा, श्रवण, रेवती, पुनर्वसु, और अनुराधा ये नक्षत्र श्रेष्ठ हैं. यह निष्क्रमण नित्य और काम्य ऐसा है. सूर्यका दर्शन और निष्क्रमणकर्ममें नांदीश्राद्ध करना अथवा नहीं करना. ऐसा है.

अथभूम्युपवेशनकाल:पंचममासेनिष्क्रमोक्ततिथ्यादौभौमबलेसतिभूम्युपवेशनंकार्यं ॥

अब बालककों पृथिवीपर बैठानेका काल कहताहुं.

पांचमे महीनेमें पूर्व कहे बालककों बाहिर निकासनेविषे कही तिथि आदिमें मंगलका बल होवै तब पृथिवीपर बालककों बैठाना.

अथान्नप्राशनकाल: षष्ठेष्टमेदशमेद्वादशेवामासेपूर्णेवत्सरेवापुंसोन्नप्राशनं पंचमसप्तमनवममासेषुस्त्रीणां द्वितीयाचतृतीयाचपंचमीसप्तमीतथा त्रयोदशीचदशमीप्राशनेतिथय:शुभा: बुधशुक्रगुरुवारा:शुभा: रविचंद्रवारौक्वचित् अश्विनीरोहिणीमृगपुनर्वसुपुष्योत्तरात्रयहस्त चित्रास्वात्यनुराधाश्रवणधनिष्ठाशततारकारेवत्य:शुभा: जन्मनक्षत्रमशुभमितिकेचित् भद्रा वैधृतिव्यतीपातगंडातिगंडवज्रशूलपरिघावर्ज्या: विष्णुशिवचंद्रार्कदिक्पालभूमिदिशाब्राह्मणान्संपूज्यमातृत्संगगतस्यशिशो:कांचनेकांस्येवापात्रेस्थितंदधिमधुघृतमिश्रंपायसंसुवर्णयुत हस्तेनसमंत्रंप्राशयेत् सूर्यावलोकनादीन्यन्नप्राशनांतानिअन्नप्राशनकालेशिष्टा:सहैवानुतिष्ठंति एतेषांसहप्रयोगसंकल्पादिकंकौस्तुभादौज्ञातव्यं ॥

अब अन्नप्राशनका काल कहताहुं.

छठा, आठमा, दशमा और बारमा इन महीनोंमें अथवा वर्ष पूर्ण होवै तब पुरुषका अन्नप्राशनसंस्कार करना. पांचमा, सातमा नवमा इन महीनोंमें स्त्रियोंका अन्नप्राशनसंस्कार

करना. "द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, त्रयोदशी, दशमी ये तिथि अन्नप्राशनमें शुभ हैं." बुध, शुक्र, बृहस्पति ये वार शुभ हैं. कहींक रविवार और सोमवारभी शुभ कहे हैं. अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती ये नक्षत्र शुभ हैं. जन्मनक्षत्र अशुभ है ऐसा कितनेक पंडित कहते हैं. भद्रा, वैधृति, व्यतीपात, गंड, अतिगंड, वज्र, शूल, परिघ ये वर्जित करने. विष्णु, शिव, चंद्रमा, सूर्य, दशों दिक्पाल, पृथिवी, दिशा और ब्राह्मण इन्होंकी पूजा करके माताकी गोदमें स्थित हुये बालककों सोनाके पात्रमें अथवा कांसीके पात्रमें दही, शहद, घृत इन्होंसें मिश्रित खीर सोनासें युक्त हुये हाथकरके मंत्रोंसहित चटवाना. सूर्यदर्शनसें अन्नप्राशनपर्यंत सब कर्म अन्नप्राशनकालमें शिष्ट मनुष्य साथही करते हैं. और इन्होंके अन्नप्राशनके साथ करनेके प्रयोग और संकल्प आदि कौस्तुभ आदि ग्रंथोंमें देख लेने.

अथान्नप्राशनांतेकर्तव्यं अग्रतोऽथपरिन्यस्यशिल्पवस्तूनिसर्वशः शस्त्राणिचैववस्त्राणिततःपश्येत्तुलक्षणं प्रथमंयत्स्पृशेद्बालःपुस्तकादिस्वयंतदा जीविकातस्यबालस्यतेनैवतुभविष्यति अन्नप्राशनांतसंस्कारेषुमलमासगुरुशुक्रास्तादिदोषोनास्तिइत्युक्तंतच्छुद्धकालेष्वसंभवेज्ञेयं तेनषष्ठादिमासेअस्तादिदोषसत्त्वेऽष्टमादिमासेकार्यं इतिसूर्यावलोकननिष्क्रमणभूम्युपवेशनान्नप्राशनानि ॥

अब अन्नप्राशनकर्म करनेके पीछे कर्तव्य विधि कहताहुं.

बालकके आगे सब पदार्थ शस्त्र, वस्त्र आदि स्थापित करके पीछे तिस बालकका लक्षण देखना. "बालक प्रथम जिस पुस्तक आदि पदार्थकों आप छूहै तिस पदार्थसें तिस बालककी उपजीविका होवैगी." अन्नप्राशनपर्यंत संस्कारोंमें मलमास और बृहस्पति और शुक्रका अस्त आदिका दोष नहीं है, इस प्रकार जो कहा है सो जो शुद्ध कालोंमें नहीं बन सकै तब जानना. इसकरके छठा महीना आदिमें अस्त आदिका दोष होवै तब अन्नप्राशन, आठमा आदि महीनेमें करना. इस प्रकार सूर्यदर्शन, निष्क्रमण, भूम्युपवेशन, अन्नप्राशन ये संस्कार समाप्त हुए.

अथकर्णवेधः दशमेद्वादशेवाह्निषोडशेकर्णवेधनं मासेषष्ठेसप्तमेवाअष्टमेदशमेपिवा द्वादशेवाततोब्देचप्रथमेवातृतीयके नकर्तव्यंसमेवर्षेस्त्रीपुंसःश्रुतिवेधनं तृतीयादिवत्सरेमासाः कार्तिकेपौषमासेवाचैत्रेवाफाल्गुनेपिवा शुक्लपक्षःशुभःप्रोक्तोजन्ममासोनिषेधितः भद्रायांविष्णुशयनेकर्णवेधंविवर्जयेत् तेनकार्तिकमासविधिःशुक्लद्वादश्युत्तरंज्ञेयः केचिन्मीनस्थसूर्येचैत्रंधनुस्थेपौषंमासंवर्जयंति द्वितीयादशमीषष्ठीसप्तमीचत्रयोदशी द्वादशीपंचमीशस्तातृतीया कर्णवेधने चंद्रबुधगुरुशुक्रवाराःपुष्यपुनर्वसुमृगोत्तरात्रयहस्तचित्राश्विनीश्रवणरेवतीधनिष्ठाः शुभाः विष्णुरुद्रब्रह्मसूर्यचंद्रादिक्पालनासत्यसरस्वतीगोब्राह्मणगुरुपूजांकृत्वालक्तकरसांकितंकर्णंपुंसःपूर्वंदक्षिणंविध्येत्पश्चाद्वामं स्त्रीणांपूर्ववामं सौवर्णीराजपुत्रस्यराजतीविप्रवैश्य

योः शूद्रस्यचायसीसूचीबालकाष्टांगुलामता कर्णरंध्रेरवेश्छायाप्रविशेद्वर्धयेत्तथा अन्यथादर्शनेतस्यपूर्वपुण्यविनाशनं इतिकर्णवेधः ॥

अब कर्णवेध कहताहुं.

जन्मदिनसें "दशमा, बारमा, सोलमा इन दिनोंमें अथवा छट्ठा, सातमा, आठमा, दशमा, बारमा इन महीनोंमें अथवा पहले वर्षमें अथवा तीसरे वर्षमें कानोंका वींधना श्रेष्ठ है. सम वर्षमें कन्या और पुत्रके कानोंको नहीं वींधना." **तीसरे आदि वर्षमें कर्णवेध करना होवै तौ मास कहताहुंः**—कार्तिक, पौष चैत्र, फाल्गुन इन महीनोंमें शुक्लपक्षमें कर्णवेध करना शुभहै. कर्णवेधमें जन्मका महीना निषिद्ध है. भद्रामें और चातुर्मासमें कर्णवेध वर्जित करना. इस्सें कार्तिक मासमें शुद्ध द्वादशीके उपरंत कर्णवेध करना. कितनेक ग्रंथकार मीनराशिपर सूर्य होवै तब; चैत्र, और धन राशिपर सूर्य होवै तब; पौषमास कर्णवेधमें वर्जते हैं. "द्वितीया, दशमी, षष्ठी, सप्तमी, त्रयोदशी, द्वादशी, पंचमी, तृतीया, ये तिथि कर्णवेधमें श्रेष्ठ हैं." सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये वार और पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिर, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, हस्त, चित्रा, अश्विनी, श्रवण, रेवती, धनिष्ठा ये नक्षत्र शुभ हैं. विष्णु, रुद्र, ब्रह्माजी, सूर्य, चंद्रमा, दिक्पाल, अश्विनीकुमार, सरस्वती, गौ, ब्राह्मण और गुरु इन्होंकी पूजा करके लाखके रससें अंकित हुये कानकों वींधना, परंतु पुरुषका प्रथम दाहिना कान वींधना और स्त्रीका प्रथम वाम कान वींधना. कान वींधनेमें बालककी आठ अंगुल परिमित लंबी सूई लेनी. राजाके पुत्रका कान वींधनेकों सोनाकी सुई, ब्राह्मण और वैश्यके पुत्रोंके कान वींधनेकों चांदीकी सुई, और शूद्रके पुत्रके कान वींधनेकों लोहाकी सुई होनी उचित है. कानके छिद्रमें सूर्यकी छाया प्रविष्ट हो सकै इतना वींधना. कानके छिद्रके विना बालककों देखनेसें पूर्वपुण्यका नाश होता है. ऐसा कर्णवेध समाप्त हुआ.

अथबालस्यदुष्टदृष्टिदोषादौरक्षाविधिः वासुदेवोजगन्नाथःपूतनातर्जनोहरिः रक्षतुत्वरितोबालंमुंचमुंचकुमारकं कृष्णरक्षशिशुंशंखमधुकैटभमर्दन ॥ प्रातःसंगवमध्याह्नसायाह्नेषु चसंध्ययोः महानिशिसदारक्षकंसारिष्टनिषूदन यद्घोरजःपिशाचांश्चग्रहान्मातृग्रहानपि बालग्रहान्विशेषेणछिंधिछिंधिमहाभयान् त्राहित्राहिहरेनित्यंत्वद्रक्षाभूषितंशिशुं इतिभस्माभिमंत्र्यैवभूषयेत्तेनभस्मना शिरोललाटाद्यंगेषुरक्षांकुर्याद्यथाविधिइति प्रयोगसागरे रक्षरक्षमहादेवनीलग्रीवजटाधर ग्रहैस्तुसहितोरक्षमुंचमुंचकुमारकं अमुंमंत्रंभूर्जपत्रेविलिख्यतत्पत्रं भुजेबध्नीयात् बालरोदनपरिहारार्थयंत्रमुक्तंमयूखे षडस्रमध्येन्हींकारस्तन्मध्येशिशोर्नामविलिख्यषट्कोणेषु ॐलुलुवस्वाहेतिमंत्रषडक्षराणिविलिख्यतद्बहिर्नेमिवद्वृत्तद्वयंविलिख्यतद्बहिरधोमुखैरर्धचंद्रैरावेष्टयपंचोपचारैःसंपूज्यबालहस्तेबध्नीयादिति बालग्रहशांत्यादिकंबालग्रहस्तवश्चशांतिकमलाकरशांतिमयूखयोर्द्रष्टव्यं ॥

अब बालककों दुष्टदृष्टिदोष आदि हुआ होवै तौ तिसका रक्षाविधि कहताहुं.

"वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः रक्षतु त्वरितो बालं मुंच मुंच कुमारकम् ॥

कृष्ण रक्ष शिशुं शंखमधुकैटभमर्दन ॥ प्रातः संगवमाध्याह्नसायाह्नेषु च संध्ययोः ॥ महानिशि सदारक्ष कंसारिष्टनिषूदन ॥ यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥ बालग्रहान् विशेषेण छिंधि छिंधि महाभयान् ॥ त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्” ॥ “इस मंत्रसें भस्म अभिमंत्रित करके तिस भस्मसें बालककों भूषित करना, और बालकके शिर, मस्तक आदि अंगोंपर विधिके अनुसार लगाना.” प्रयोगसारमें दूसरा प्रकार लिखा है सो कहताहुं—“रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर ॥ ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुंच मुंच कुमारकम्” यह मंत्र भोजपत्रपर लिखके वह पत्र बालकके हाथपर बांधना. बालकके रोनेकों दूर करनेके लिये मयूख ग्रंथमें यंत्र कहा है सो ऐसा—छह कोनोंकी आकृतिका यंत्र बनाय तिन छह कोनोंके मध्यमें ‘ऱ्हीं’ यह अक्षर लिखके और यंत्रके मध्यभागमें बालकका नाम लिखके छह कोनोंमें ॐ “लुलुवस्वाहा” इस मंत्रके छह अक्षरोंकों एक एक कोनमें लिखके और तिसके बाहिरके जगहमें रथके चक्रसरीखे दो गोल मंडल लिखके तिसके बाहिर नीचे मुखवाले अर्धचंद्र लिखने. पीछे पंचोपचारोंसें यंत्रकी पूजा करके बालकके हाथपर वह यंत्र बांधना. बालग्रहकी शांति आदि और बालग्रहके स्तोत्र आदि **कमलाकर** और **शांतिमयूख** ग्रंथोंमें देखने.

अथवर्धापनविधिः सचवर्षपर्यंतंप्रतिमासंजन्मतिथौकार्यः वर्षोत्तरंप्रत्यब्दंजन्मातिथौकार्यः तिथिद्वैधेयत्रजन्मर्क्षयोगःसाग्राह्या दिनद्वयेजन्मनक्षत्रयोगसत्त्वासत्त्वयोरौदयिकीद्विमुहूर्ताधिकाग्राह्या द्विमुहूर्तेन्यूनत्वेपूर्वा जन्ममासस्यअधिमासत्वेशुद्धमासेप्रत्याब्दिकवर्धापनविधिर्नत्वाधिके ॥

अब वर्धापन अर्थात् बढा दिनका विधि कहताहुं.

यह कर्म वर्षपर्यंत प्रतिमासमें जन्मतिथिके दिन करना. एक वर्षके उपरंत प्रतिवर्ष जन्मकी तिथिमें करना. दो तिथि होवैं तौ जिसमें जन्मके नक्षत्रका योग होवै वह लेनी. दोनों दिन जन्मनक्षत्रका योग होवै अथवा नहीं होवै तौ उदयकालव्यापिनी दो मुहूर्तसें अधिक होवै वह तिथि लेनी. दो मुहूर्तसें कम होवै तौ पहले दिनकी लेनी. जन्ममास अधिकमास हुआ होवै तौ शुद्धमासमें प्रतिवर्षसंबंधी वर्धापनविधि करना, अधिकमासमें नहीं करना.

अथसंक्षेपतःप्रयोगः आयुरभिवृद्ध्यर्थंवर्षवृद्धिकर्मकरिष्यइतिसंकल्प्यतिलोद्वर्तनपूर्वकंतिलोदकेनस्नात्वाकृततिलकादिविधिर्गुरुंसंपूज्याक्षतपुंजेषुदेवताःपूजयेत् तत्रादौकुलदेवतायैनम इतिकुलदेवतामावाह्यजन्मनक्षत्रंपितरौप्रजापतिंभानुंविघ्नेशंमार्कंडेयंव्यासंजामदग्न्यरामं अश्वत्थामानंकृपंबलिंप्रह्लादंहनुमंतंबिभीषणंषष्ठींचनाम्नैवावाह्यपूजयेत् षष्ठ्यैदधिभक्तनैवेद्यः पूजांतेप्रार्थना चिरंजीवीयथात्वंभोभविष्यामितथामुने रूपवान्वित्तवांश्चैवश्रियायुक्तश्चसर्वदा मार्कंडेयनमस्तेस्तुसप्तकल्पांतजीवन आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थंप्रसीदभगवन्मुने चिरंजीवीयथात्वंतुमुनीनांप्रवरोद्विज कुरुष्वमुनिशार्दूलतथामांचिरजीविनं मार्कंडेयमहाभागसप्तकल्पांतजीवन आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थमस्माकंवरदोभव अथषष्ठीप्रार्थना जयदेविजगन्मातर्जगदानंदकारिणि प्रसीदममकल्याणिनमस्तेषष्ठिदेवते त्रैलोक्येयानिभूतानिस्थावराणिचराणिचब्रह्मवि

ष्णुशिवैःसार्धंरक्षांकुर्वंतुतानिमे ततास्तिलगुडमिश्रंपयःपिबेत् तत्रमंत्रः सतिलंगुडसंमिश्रमंजल्यर्धमितंपयःमार्कंडेयाद्वरंलब्ध्वापिबाम्यायुर्विवृद्धये क्वचित्पूजितषोडशदेवताभ्योनाम्ना प्रत्येकमष्टाविंशतिसंख्यातिलहोमउक्तः ततोविप्रभोजनंतद्दिनेनियमाः खंडनंनखकेशानांमैथुनाध्वागमौतथा आमिषंकलहंहिंसांवर्षवृद्धौविवर्जयेत् मृतेजन्मनिसंक्रांतौश्राद्धेजन्मदिने तथा अस्पृश्यस्पर्शनेचैवनस्नायादुष्णवारिणा ॥

अब संक्षेपसें वर्धापनका प्रयोग कहताहुं.

"**आयुरभिवृद्धयर्थं वर्षवृद्धिकर्म करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके प्रथम तिलोंका उवटना लगाके पीछे तिलोंसें मिश्रित हुये पानीसें स्नान करके तिलक आदि लगाके नित्यकर्म करना. पीछे गुरुकी पूजा करके चावलोंके समूहपर देवतोंकी पूजा करनी. तहां प्रथम "**कुलदेवतायै नमः**" इस मंत्रसें कुलदेवताका आवाहन करके जन्मनक्षत्र, मातापिता, प्रजापति, सूर्य, गणेश, मार्कंडेय, व्यास, परशुराम, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, बलि, प्रल्हाद, हनुमान्, बिभीषण और षष्ठी इन्होंका नाममंत्रोंसें आवाहन करके पूजा करनी. षष्ठी देवीकों दही और चावलोंका नैवेद्य अर्पण करना. पूजाके अनंतर प्रार्थना करनी.—प्रार्थनाका मंत्र—"**चिरंजीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने ॥ रूपवान् वित्तवांश्चैव श्रिया युक्तश्च सर्वदा ॥ मार्कंडेय नमस्तेस्तु सप्तकल्पांतजीवन ॥ आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं प्रसीद भगवन् मुने ॥ चिरंजीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरो द्विज ॥ कुरुष्व मुनिशार्दूल तथा मां चिरजीविनम् ॥ मार्कंडेय महाभाग सप्तकल्पांतजीवन ॥ आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थमस्माकं वरदो भव.**" इस प्रकार प्रार्थना करके पीछे षष्ठीदेवीकी प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—"**जय देवि जगन्मातर्जगदानंदकारिणि ॥ प्रसीद मम कल्याणि नमस्ते षष्ठिदेवते ॥ त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च ॥ ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्धं रक्षां कुर्वंतु तानि मे**" पीछे तिल और गुडसें मिश्रित किये दूधका पान करना. तिसका मंत्र—"**सतिलं गुडसंमिश्रमंजल्यर्धमितं पयः ॥ मार्कंडेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विवृद्धये.**" कितनेक ग्रंथोंमें पूजित किये सोलह देवतोंके अर्थ नाममंत्रोंसें एकएकके प्रति अठाईस अठाईस संख्यासें तिलोंका होम करना ऐसा कहा है. पीछे ब्राह्मणोंकों भोजन कराना. तिस दिनके नियमोंकों कहताहुं—नख और बाल इन्होंका छेदन, मैथुन, प्रयाण, मांसभक्षण, कलह और हिंसा इन्होंकों वर्षवर्धापनके दिन वर्जित करने. मरनेमें, जन्मनेमें, संक्रांतिमें, श्राद्धमें, जन्मदिनमें, और नहीं छूहनेके योग्यकों छूहनेमें मनुष्यनें गर्म पानीसें स्नान नहीं करना.

अथचौलं जन्मतोगर्भतोवाब्देप्रथमेथद्वितीयके तृतीयेपंचमेचापिचौलकर्मप्रशस्यते यद्वा सहोपनीत्यात्रकुलाचाराद्व्यवस्थितिः माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठेमासिशुभंस्मृतं जन्ममासेधिमासेनज्येष्ठेज्येष्ठस्यनोभवेत् शुक्लपक्षःशुभःप्रोक्तःकृष्णश्चांत्यत्रिकंविना द्वितीयाथतृतीयाचपंचमीसप्तमीशुभा दशम्येकादशीवापित्रयोदश्यपिशस्यते रविभौमार्किशनयोवाराविप्रादिवर्णातः गुरुशुक्रबुधाःशुक्लेसोमःसर्वशुभावहाः अश्विनीमृगपुनर्वसुपुष्यहस्तचित्रास्वातीज्येष्ठाश्रवणाधनिष्ठाशततारकारेवत्यःशुभाः क्षौरप्रयाणभैषज्येजन्मर्क्षंवर्जयेत्सदा आयुःक्षयोनुराधा

भित्र्युत्तरारोहिणीमघे सिंहस्थेगुरौचौलादिशुभकर्मनकार्यं सूनोर्मातरिगर्भिण्यांचूडाकर्मन कारयेत् पंचमाब्दात्प्रागूर्ध्वंतुगर्भिण्यामपिकारयेत् सहोपनीत्याकुर्याच्चेत्तदादोषोनविद्यते पृथक्चूडाकर्मपृथगुपनयनंचमातरिगर्भिण्यांनकार्यं उभयोःसहानुष्ठानेतुनदोषः गर्भिण्यामपि पंचममासपर्यंतंनदोषः पंचममासादधःकुर्यादतऊर्ध्वंनकारयेदित्युक्तेः ज्वरितस्यचौलादिमंगलंनकार्यं विवाहव्रतचूडासुमातायदिरजस्वला तस्याःशुद्धेःपरंकार्यंमंगलंमनुरब्रवीत् नांदीश्राद्धोत्तरंरजस्वलायांशांतिंकृत्वाकार्यं केचित्तुमुहूर्तांतराभावेप्रारंभात्प्रागपिरजोदोषेश्रीपूजनादिं विधिनाशांतिंकृत्वाकार्यमित्याहुः मातुलपितृव्यादौकर्तरितत्पत्न्यांरजस्वलायामपिमंगलंनेति सिंधुः त्रिपुरुषात्मककुलेषण्मासमध्येमौंजीविवाहरूपमंगलोत्तरंमुंडनाख्यंचूडाकर्मादिनकार्यं संकटेतुअब्दभेदेकार्यं चतुःपुरुषपर्यंतंकुलेसपिंडीकरणमासिकश्राद्धांतप्रेतकर्मसमाप्तेःप्राक् चूडाकर्मादिकमाभ्युदयिकंकर्मनकार्यं एकमातृजयोरेकवत्सरेपत्ययोर्द्वयोः नसंस्कारःसमानःस्यान्मातृभेदेविधीयते प्रारंभोत्तरंसूतकप्राप्तौकूष्मांडीभिर्ऋग्भिर्घृतंहुत्वागांदत्वाचूडोपनयनोद्वाहनादिकमाचरेत् अत्रविशेषोविवाहप्रकरणेवक्ष्यते मध्येमुख्याएकाशिखाअन्याश्चपार्श्वादिभागेष्वितियथाकुलाचारंप्रवरसंख्ययाशिखाश्चूडासमयेकार्याः उपनयनकालेमध्यशिखेतरशिखानांवपनंकृत्वामध्यभागेएवोपनयनोत्तरंशिखाधार्या चौलकर्मणिजातकर्मणिचभोजने सांतपनकृच्छ्रंप्रायश्चित्तं अन्येषुसंस्कारेषुउपवासेनशुद्धिः चूडांताःसर्वेसंस्काराःस्त्रीणाममंत्रकाःकार्याः होमस्तुसमंत्रकः होमोप्यमंत्रकःकार्योनवाकार्यइतिवृत्तिकृदादिमतं एवंशूद्रस्याप्यमंत्रकंचौलं इदानींशिष्टेषुस्त्रीणांचूडादिसंस्कारकरणंनदृश्यते विवाहकालेचूडादिलोपप्रायश्चित्तमात्रंकुर्वंति चौलोत्तरंमासत्रयपर्यंतंसपिंडैःपिंडदानंतिलतर्पणंचनकार्यं महालयेगयायांपित्रोःप्रत्यब्दश्राद्धेचपिंडदानादिकार्यं ॥

अब चौलसंस्कार कहताहुं.

“ जन्मसें अथवा गर्भसें पहला, दूसरा, तीसरा, पांचमा इन वर्षोंमें चौलकर्म अर्थात् क्षौर करना, अथवा यज्ञोपवीतकर्मके साथ करना. यहां कुलाचारके अनुसार व्यवस्था जाननी. माघ, फाल्गुन, वैशाख और ज्येष्ठ इन महीनोंमें क्षौरकर्म शुभ है. जन्ममास और अधिकमासमें चौलसंस्कार नहीं करना. ज्येष्ठ पुत्रका ज्येष्ठ महीनेमें क्षौरकर्म नहीं करना. इस कर्ममें शुक्लपक्ष शुभ कहा है. अंतके पांच दिन वर्जित करके कृष्णपक्षभी शुभ कहा है. द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी ये तिथि शुभ हैं. ब्राह्मण आदि चार वर्णोंको क्रमसें रविवार, मंगलवार, शनिवार, शनिवार ये शुभ हैं. अर्थात् ब्राह्मणको रविवार शुभ है, क्षत्रियको मंगलवार शुभ है, वैश्यको शनिवार शुभ है और शूद्रको शनिवार शुभ है. बृहस्पति, शुक्र, बुध ये वार सबोंको शुभ हैं. शुक्लपक्षमें सोमवार शुभ है. ” अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती ये नक्षत्र शुभ हैं. “ क्षौरकर्म, प्रयाण और ओषधिसेवन ” इन्होंमें जन्मनक्षत्र सदा वर्जित करना. “ अनुराधा, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, और मघा इन्होंमें क्षौरकर्म करनेसें आयुका नाश होता है. ” सिंहराशिके बृहस्पतिमें क्षौर आदि शुभ

कर्म नहीं करने. जिसका चौलकर्म करना होवै तिसकी माता गर्भवती होवै और तिस पुत्रकी उमर पांच वर्षके अंदर होवै तौ तिस बालकका क्षौरकर्म नहीं करना. पांच वर्षके उपरंत माता गर्भवती होवै तोभी क्षौरकर्म करना. यज्ञोपवीतकर्मके साथ क्षौरकर्म करनेमें दोष नहीं है. जो माता गर्भवती होवै तौ क्षौरकर्म और यज्ञोपवीतकर्म पृथक् पृथक् नहीं करने. दोनों साथ कियेसें दोष नहीं है. गर्भिणी होनेमेंभी पांच महीनोंपर्यंत दोष नहीं है. क्योंकी " पांचमे महीनेतक करना उपरंत नहीं करना " ऐसा वचन है. ज्वरसें पीडित बालकका क्षौर आदि कर्म नहीं करना. " विवाहकर्म, यज्ञोपवीतकर्म और क्षौरकर्म इन्होंमें जो माता रजस्वला होवै तौ तिसकी शुद्धिके उपरंत मंगल करना ऐसा मनुजीनें कहा है. " नांदीश्राद्धके उपरंत माता रजस्वला होवै तौ शांति करके मंगलकार्य करना. कितनेक ग्रंथकार तौ, दूसरे मुहूर्तके अभावमें प्रारंभके पहलेभी रजस्वला होवै तौ श्रीपूजन आदि विधिसें शांति करके मंगलकार्य करना ऐसा कहते हैं. मामा अथवा चाचा कर्म करनेवाले होवैं और तिन्होंकी स्त्री रजस्वला हो जावैं तौ मंगल नहीं करना ऐसा **निर्णयसिंधुका** मत है. तीन पीढियोंवाले कुलमें छह महीनोंके मध्यमें यज्ञोपवीत और विवाहरूपी मंगलके उपरंत मुंडन नामवाला चूडाकर्म आदि नहीं करना. संकटमें वर्षके भेदकरके करना उचित है, अर्थात् फाल्गुनमें विवाहकर्म हुआ होवै तौ चैत्रमें चौलकर्म करना. चार पीढीपर्यंत कुलमें सपिंडीकरण और मासिकश्राद्धपर्यंत प्रेतकर्मकी समाप्तिके पहिले चूडाकर्म आदि मांगलिक कर्म नहीं करना. " एक मातासें उपजे दो संतानोंका संस्कार एक वर्षमें करना नहीं, माताओंके भेदमें करना. " प्रारंभके उपरंत सूतक प्राप्त होवै तौ कूष्मांडी ऋचाओंसें घृतका होम और गौका दान करके क्षौरकर्म, यज्ञोपवीतकर्म, विवाहकर्म इन आदि कर्म करने. यहां विशेष निर्णय है सो विवाहप्रकरणमें कहेंगे. मध्यमें मुख्य एक शिखा अर्थात् चोटी और बाकी दोनों तर्फके भागोंमें ऐसी शिखाओंकों कुलके आचारके अनुसार, प्रवरकी संख्यासें क्षौरकर्मके समय करनी. यज्ञोपवीतकालमें मध्यकी शिखाकों वर्जित करके अन्य सब शिखाओंकों कटाके मध्यभागमेंही यज्ञोपवीतकर्मके उपरंत शिखा धारण करनी. क्षौरकर्ममें और जातकर्ममें भोजन किया जावै तौ सांतपनकृच्छ्र प्रायश्चित्त करना. अन्य संस्कारोंमें भोजन किया जावै तौ एक उपवाससें शुद्धि होती है. स्त्रियोंके क्षौरकर्मपर्यंत सब संस्कार मंत्रोंसें रहित करने. होम मात्र मंत्रोंसहित करना. होमभी मंत्रोंसें रहित करना अथवा नहीं करना ऐसा **वृत्तिकार** आदिका मत है. ऐसेही शूद्रकाभी चौलकर्म मंत्रोंसें रहित करना. वर्तमान कालमें शिष्ट जनोंमें स्त्रियोंका चौलकर्म आदि संस्कार देखनेमें नहीं आता है. विवाहकालमें चौल आदिके लोपका प्रायश्चित्त मात्र करते हैं. चौलकर्मके उपरंत तीन महीनोंपर्यंत सात पीढियोंवाले मनुष्योंनें पिंडदान और तिलोंका तर्पण नहीं करना. महालयश्राद्ध, गयाश्राद्ध, माता और पिताका प्रतिवार्षिक क्षयाहश्राद्ध इन्होंमें पिंडदान आदि करना.

अथविद्यारंभः पंचमेवर्षेऽक्षरलेखनारंभउत्तरायणेकार्यः अत्रकुंभस्थःसूर्योवर्ज्यःशुक्लपक्षःशुभःप्रोक्तःकृष्णश्चांत्यत्रिकंविना द्वितीयातृतीयापंचमीदशम्येकादशीद्वादशीत्रयोदश्यः श्रेष्ठाः अश्विनीमृगार्द्रापुनर्वसुपुष्यहस्तचित्रास्वात्यनुराधाश्रवणधनिष्ठाशततारकारेवत्योभौम

शनिभिन्नवाराश्चशुभाः विघ्नेशंलक्ष्मीनारायणौसरस्वतींस्ववेदंसूत्रकारंचपूजायित्वागुरुंब्राह्मणान्धात्रींचसंपूज्यनत्वासर्वांस्त्रिःप्रदक्षिणीकृत्यप्रणवपूर्वकमक्षरमारभेत् ततोगुरुंनत्वादेवताविसर्जयेत् ततोत्रभुवनमातःसर्ववाङ्मयरूपेणागच्छागच्छेतिसरस्वत्यावाहनमंत्रःप्रणवेनषोडशोपचारार्पणं ॥

अब विद्यारंभका काल कहताहुं.

पांचमे वर्षमे उत्तरायणमें अक्षर लिखनेका प्रारंभ करना. इस अक्षरलेखनमें कुंभराशिपर स्थित हुआ सूर्य वर्जित है, शुक्ल पक्ष शुभ कहा है. अंतके पांच दिनोंकों वर्जित करके कृष्णपक्षभी शुभ है. द्वितीया, तृतीया, पंचमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी और त्रयोदशी ये तिथि श्रेष्ठ हैं. अश्विनी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती ये नक्षत्र शुभ हैं. मंगल और शनिसें वर्जित सब वार श्रेष्ठ हैं. गणेशजी, लक्ष्मी, नारायण, सरस्वती, अपना वेद और सूत्रकार इन्होंकी पूजा करके और गुरु, ब्राह्मण, धाय, माता इन्होंकी पूजा और प्रणाम करके और सबोंकों तीन परिक्रमा करके प्रथम ओंकार लिखके पीछे दूसरे अक्षर लिखनेकों आरंभ करना. पीछे गुरुकों नमस्कार करके देवतोंका विसर्जन करना. पीछे “ अत्र भुवनमातः सर्ववाङ्मयरूपेणागच्छागच्छ, ” इस मंत्रसें सरस्वतीका आवाहन करना और प्रणवमंत्रसें सोलह उपचार अर्पण करने.

अथानुपनीतधर्माः प्रागुपनयनात्कामचारकामवादकामभक्षाः तेनमूत्रपुरीषोत्सर्गादावाचमनाद्याचारोनास्ति लघुपातकहेतुलशुनपर्युषितोच्छिष्टादिभक्षणेदोषाभावःएवमपेयपानेअनृतावाच्यभाषणेपि महादोषहेतुमांसांत्यजरजस्वलादिस्पृष्टान्नभक्षणेमद्यादिपानेचदोषोस्त्येव रजस्वलादिसंस्पर्शेस्नानमेवकुमारके शिशोरभ्युक्षणंप्रोक्तंबालस्याचमनंस्मृतं तत्राप्रागन्नप्राशनाच्छिशुसंज्ञा ततऊर्ध्वंप्राक्चौलात्त्रिवर्षाद्वाबालसंज्ञा ततआमौंजीबंधात्कुमारसंज्ञा अत्राचमनमितित्रिरुदकपानमेव नतुओष्ठमार्जनादिकल्पइतिज्ञेयं नचानुपनीतोवेदमुच्चारयेत् पित्रोरंत्यक्रियायांत्वनुपनीतेनापिमंत्रोच्चारःकार्यः सचद्वित्रिवर्षयोःकृतचूडस्यैवात्रिवर्षोर्ध्वंत्वकृतचूडस्यापि एतच्चौरसपुत्रविषयं पित्रोरनुपनीतोपिविदध्यादौरसःसुतः और्ध्वदेहिकमन्येतुसंस्कृताःश्राद्धकारकइतिस्कांदात् बालानामपथ्यंपित्रादिभिर्निवारणीयं तस्मात्सर्वप्रयत्नेन बालानग्रेतुभोजयेत् बालानांक्रीडनदानेस्वर्गसुखं तेषांभोज्यप्रदानेगोदानफलं ॥

अब नहीं यज्ञोपवीत हुये बालकके धर्म कहताहुं.

यज्ञोपवीतसंस्कारके पहले बालकनें अपनी इच्छापूर्वक विचरना, इच्छापूर्वक बोलना और इच्छापूर्वक भोजन करना इन आदिविषे दोष नहीं. इसकरके मूत्र और विष्ठाके त्याग आदिमें आचमन आदि आचार बालककों नहीं है. अल्पपातकके कारणरूपी लशन, वासी पदार्थ, उच्छिष्ट पदार्थ इन आदिके भक्षणमें बालककों दोषका अभाव है. ऐसेही नहीं पीनेके योग्यकों पीनेसें, झूठ और नहीं कहनेके योग्य वचनकों कहनेसेंभी दोष नहीं लगता है. महादोषके कारणरूपी मांस, नीच जाती और रजस्वला स्त्री आदिसें छूहे हुये अन्नकों खानेसें और मदिरा आदिके पीनेसें दोष लगताही है. “ रजस्वला आदिके स्पर्शमें कुमारनें

स्नान करना उचित है. शिशुकों रजस्वला आदिका स्पर्श होवै तौ जलसें सेचन करना. बालककों रजस्वला आदिका स्पर्श होवै तौ तिसनें आचमन करना. ” अन्नप्राशनके पहले शिशुसंज्ञा है. तिसके उपरंत क्षौरकर्मके पहले अथवा तीसरे वर्षके पहले बालकसंज्ञा है. यज्ञोपवीतकर्मके पहले कुमारसंज्ञा है. यहां आचमन करना अर्थात् तीनवार पानी पीनाही है, ओष्ठमार्जनादि नहीं ऐसा जानना. जिसका यज्ञोपवीतकर्म नहीं हुआ होवै तिसनें वेदका उच्चार नहीं करना. पिता और माताकी अंत्यक्रियामें नहीं धारन किये यज्ञोपवीतवाले पुत्रनेंभी वेदके मंत्रोंका उच्चार करना उचित है. वह मंत्रोच्चारका अधिकार दूसरे अथवा तीसरे वर्षमें जिसका क्षौरकर्म हो चुका होवै तिसकोंही है. तीन वर्षके उपरंत जिसका क्षौरकर्म नहीं हुआ होवै तिसनेंभी करना. यज्ञोपवीतकर्म नहीं हुए ऐसे पुत्रनेंभी माता और पिताकी क्रियाके निमित्तसें वेदके मंत्रोंका उच्चार करना ऐसा जो कहा है सो व्यवस्था औरस पुत्रके विषयमें है. क्योंकी “ यज्ञोपवीतकर्मसें रहित ऐसे औरस पुत्रनेंभी पिता और माताकी क्रिया करनी. अन्य क्रिया करनेवाले होवैं तौ जिनका यज्ञोपवीतसंस्कार हुआ होवै ऐसे वे श्राद्धाधिकारी होते हैं, ” ऐसा स्कंदपुराणका वचन है. बालकोंका अपथ्य पिता आदिनें दूर करना. “ अर्थात् सब प्रकारसें जतन करके पहले बालकोंकों भोजन करवाना.” बालकोंकों क्रीडाके पदार्थ देनेसें स्वर्गका सुख मिलता है. बालकोंकों भोजन करनेके योग्य पदार्थ देनेसें गोदानका फल मिलता है.

अथोपनयनं उपनयनंनाम आचार्यसमीपनयनांगकोगायत्र्युपदेशप्रधानकःकर्मविशेषकः उपनयनपदस्ययोगरूढत्वात् तत्राधिकारिणः पितैवोपनयेत्पुत्रंतदभावेपितुःपिता तदभावेपितुर्भ्रातातदभावेतुसोदरः तदभावेसगोत्रसपिंडाः तदभावेमातुलादयोऽसगोत्रसपिंडाःतदभावे असपिंडसगोत्रजाः एतेचकुमारापेक्षयावयोज्येष्ठाविवक्षिताः कनिष्ठकर्तृकोपनयनस्यनिषिद्धत्वात् सर्वाभावेश्रोत्रियः जन्मनाब्राह्मणोज्ञेयःसंस्कारैर्द्विजउच्यते विद्वत्त्वाच्चापिविप्रत्वंत्रिभिःश्रोत्रियउच्यते कृच्छ्रत्रयंचोपनेतात्रीन्कृच्छ्रांश्चबटुश्चरेत् गायत्र्याद्वादशाधिकसहस्रजपश्चोपनयनेत्राधिकारसिध्यर्थंकार्यः केचिद्द्वादशसाहस्रींजपंति ॥

अब उपनयन अर्थात् यज्ञोपवीतसंस्कार कहताहुं.

उपनयन अर्थात् कुमारकों आचार्यके समीप ले जाना यह अंगरूपी कर्म और गायत्रीमंत्रका उपदेश करना यह प्रधानकर्म, इन दोनोंसें युक्त जो विशेष कर्म है सो उपनयन कहाता है. क्योंकी, ‘उपनयन’ पद योगरूढ है. उपनयनकर्मके अधिकारी कहताहुं. पुत्रका यज्ञोपवीतकर्म पितानेंही करना. पिताके अभावमें पिताका पिता अर्थात् बाबानें करना. बाबाके अभावमें चाचा अथवा ताऊनें करना. चाचा और ताऊके अभावमें एक मातासें उपजे भ्रातानें करना. भ्राताके अभावमें अपने गोत्रमें जो सात पीढियोंमें होवैं तिन्होंनें करना. इनके अभावमें अपने नहीं गोत्री होवैं ऐसे सपिंड मातुल अर्थात् मामा आदिनें करना. मामा आदिके अभावमें अपनी सात पीढियोंमें नहीं होवैं ऐसे सगोत्रीनें करना. ये सब कुमारसें अवस्थामें बडे होवैं; क्योंकी, कुमारसें छोटी अवस्थावाले मनुष्यसें कराया यज्ञोपवीतसंस्कार निषिद्ध होता है. पूर्व कहे सब अधिकारीयोंके अभावमें श्रोत्रियनें

करना. “जन्मकरके ब्राह्मण जानना, संस्कारोंसें द्विज कहाता है; वेद पढनेसें विप्र कहाता है; जन्मसें ब्राह्मण होके संस्कारोंसें युक्त होवै और वेदका अध्ययन किया होवै वह श्रोत्रिय कहाता है.” “यज्ञोपवीतसंस्कार करनेवालेनें तीन कृच्छ्र प्रायश्चित्त करना.” कुमारनें तीन कृच्छ्र करने. यज्ञोपवीत करानेवालेनें अधिकारकी सिद्धिके अर्थ गायत्रीमंत्रका १०१२ जप करना. कितनेक गायत्रीका १२००० जप करते हैं.

अथोपनयनकाल: भर्गतोजन्मतोवापंचमेष्टमेवावर्षेब्राह्मणस्योपनयनं एकादशेद्वादशेवाक्षत्रियस्य द्वादशेषोडशेवावैश्यस्य षष्ठेतुधनकामस्यविद्याकामस्यसप्तमे अष्टमेसर्वकामस्यनवमेकांतिमिच्छत: केचित्तुविप्रस्यषष्ठंनमन्यंते आषोडशाद्द्वाविंशादाचतुर्विंशाच्चवर्षात्ब्राह्मणादेर्गौणकाल: अत्रगर्भादि:संख्या तथाचजन्मत:पंचदशवर्षपर्यंतंविप्रस्यनविशेषत:प्रायश्चित्तं शोषडवर्षेसशिखवपनमेकविंशतिरात्रंयावकाशनमंतेसप्तब्राह्मणभोजनमितिप्रायश्चित्तं सप्तदशादिवर्षेषुकृच्छ्रत्रयादिप्रायश्चित्तपूर्वकमुपनयनंबोध्यं विप्रक्षत्रिययोरुत्तरायणेमौंजीबंध: वैश्यस्यदक्षिणायनेपि वसंतेब्राह्मणमुपनयीतग्रीष्मेराजन्यंशरदिवैश्यं माघादिज्येष्ठांतकपंचमासा:साधारणावासकलद्विजानामितिगर्गोक्तेर्वसंतालाभेशिशिरग्रीष्मावपिग्राह्यौ वसंतविधिनोत्तरायणादिविधे:संकोचायोगात् एवंमाघादिमासपंचकनियमात्पौषाषाढयो:सत्यप्युत्तरायणेउपनयनंनकार्यं तत्रापिमीनार्कमारभ्ययावन्मिथुनप्रवेशंप्रशस्त:काल:मीनमेषयोस्तुप्रशस्ततर: मकरकुंभस्थेर्केमध्यमं मीनमेषस्थेउत्तमं वृषभमिथुनस्थेऽधममुपनयनमित्यभिधानात्मीनार्कविशिष्टश्चैत्रोऽनिष्टबृहस्पत्यादिबहुविधदोषापवादकतयाप्रशस्ततम: जीवभार्गवयोरस्तेसिंहस्थेदेवतागुरौ चंद्रसूर्येदुर्बलेपिगोचरेनिष्टदेगुरौ मेखलाबंधनंकार्यंचैत्रेमीनगतेरवावित्यर्थकस्मृते: अत्रगुरुशुक्रास्तदोषापवादोऽतिमहासंकटविषयत्वान्नकथनीय: मीनार्केचैत्रेजन्ममासनक्षत्रदोषोनास्तिजन्ममासजन्मनक्षत्रजन्मातिथिजन्मलग्नजन्मराशिलग्नेषुविप्राणामुपनयनंनदोषाय क्षत्रियवैश्ययोरप्रथमगर्भेदोषोन ज्येष्ठापत्यस्यज्येष्ठमासेमंगलंन शुक्लपक्ष:शुभ:प्रोक्त:कृष्णाश्चांत्यात्रिकंविनेतिगुरूक्ते:कृष्णपक्षेदशमीपर्यंतंसंकटेपिकृष्णपक्षेपंचमीपर्यंतमेवकुर्वंति ॥

अब यज्ञोपवीतसंस्कारका काल कहताहुं.

गर्भसें अथवा जन्मसें पांचमे अथवा आठमें वर्षमें ब्राह्मणका यज्ञोपवीतकर्म करना. ग्यारमे अथवा बारमे वर्षमें क्षत्रियका यज्ञोपवीतकर्म करना. बारमे अथवा सोलहमे वर्षमें वैश्यका यज्ञोपवीतकर्म करना. “धनकी इच्छावालेका छठे वर्षमें यज्ञोपवीतकर्म करना, विद्याकी इच्छावालेका सातमे वर्षमें यज्ञोपवीतसंस्कार करना, सबोंकी इच्छा करनेवालेका यज्ञोपवीतसंस्कार आठमे वर्षमें और तेजकी इच्छावालेका नवमे वर्षमें यज्ञोपवीतसंस्कार करना.” कितनेक ग्रंथकार ब्राह्मणके यज्ञोपवीतसंस्कारकों छठा वर्ष योग्य नहीं ऐसा कहते हैं. सोलह वर्षपर्यंत ब्राह्मणके यज्ञोपवीतसंस्कारका गौणकाल है. क्षत्रियके यज्ञोपवीतसंस्कारका बाईस वर्षपर्यंत गौणकाल है. वैश्यका चौवीस वर्षपर्यंत गौणकाल है. इस गौणकालविषे गर्भकालसें गिनती करनी. तैसेही जन्मकालसें पंदरह वर्षपर्यंत यज्ञोपवीतसंस्कारके न करनेमें ब्राह्मणकों प्रायश्चित्त नहीं. सो-

लहमा वर्ष होवै तौ शिखासहित वालोंका मुंडन कराय २१ रात्रिपर्यंत जव भक्षण करने. और अंतमें सात ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना, ऐसा प्रायश्चित्त है. सत्तरमा आदि वर्षमें यज्ञोपवीतसंस्कार करना होवै तौ तीन कृच्छ्र आदि प्रायश्चित्त प्रथम करके पीछे यज्ञोपवीतसंस्कार करना. ब्राह्मण और क्षत्रियका उत्तरायणमें यज्ञोपवीतसंस्कार करना. वैश्यका दक्षिणायनमेंभी यज्ञोपवीतसंस्कार करना. "वसंतऋतु अर्थात् चैत्र और वैशाखमें ब्राह्मणका यज्ञोपवीतसंस्कार करना, ग्रीष्मऋतु अर्थात् ज्येष्ठ और आषाढमें क्षत्रियका यज्ञोपवीतसंस्कार करना और शरदृऋतु अर्थात् आश्विन और कार्तिकमें वैश्यका यज्ञोपवीतसंस्कार करना." "माघसें ज्येष्ठपर्यंत पांच महीने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यकों समान हैं," ऐसे **गर्गजीके** वचनसें वसंतऋतुके अभावमें शिशिर और ग्रीष्मऋतुभी ग्रहण करना उचित है. क्योंकी, वसंतऋतुमें ब्राह्मणका यज्ञोपवीतकर्म करना ऐसा जो वसंतविधि कहा है तिस्सें उत्तरायण आदि विधिके संकोचका योग नहीं होता है. इस प्रकार माघ आदि पांच महिने लेने ऐसा नियम कहा है. इस कारणसें पौष और आषाढमें उत्तरायणके होनेमेंभी यज्ञोपवीत नहीं करना. तिसमेंभी मीनकी संक्रांतिसें प्रारंभ करके जबतक मिथुनकी संक्रांतिका प्रवेश होवै यह काल श्रेष्ठ है. मीन और मेषकी संक्रांतिसंबंधी महीनोंमें अतिश्रेष्ठ काल है. "मकर और कुंभराशिपर स्थित हुये सूर्यमें मध्यम काल है. मीन और मेषराशिपर स्थित हुये सूर्यमें उत्तम काल है. वृष और मिथुन राशिपर स्थित हुये सूर्यमें अधम काल है," ऐसा वचन होनेसें मीनके सूर्यसें युक्त हुये चैत्रमासमें अनिष्ट बृहस्पति आदि बहुत प्रकारके यदि दोष होवैं तौभी तिन्होंकेविषे अपवाद होनेसें वह चैत्रमास अत्यंत श्रेष्ठ है. क्योंकी, "गुरुशुक्रोंका अस्त होवै, सिंहराशिपर बृहस्पति होवै, चंद्रमा और सूर्य दुर्वल होवैं, गोचरमें गुरु दुष्ट फल देनेवाला होवै तौभी मीनराशिपर स्थित हुए सूर्यमें यज्ञोपवीतसंस्कार करना ऐसे अर्थकी स्मृति है." इस यज्ञोपवीतकर्मविषे बृहस्पति और शुक्रके अस्तदोषका जो अपवाद कहा है सो अत्यंत महासंकटविषयमें है, इसवास्ते वह कथन करना उचित नहीं. मीनराशिके सूर्यसें युत हुये चैत्रमासमें जन्ममास और जन्मनक्षत्रका दोष नहीं है. जन्ममास, जन्मनक्षत्र, जन्मतिथी, जन्मलग्न, जन्मराशि इन्होंमें ब्राह्मणोंका यज्ञोपवीतसंस्कार किया जावै तौ दोष नहीं है. क्षत्रिय और वैश्यकों दूसरा इत्यादि गर्भमें दोष नहीं है. ज्येष्ठ संतानका ज्येष्ठमासमें मंगल नहीं करना. "शुक्लपक्ष शुभ कहा है. अंतके पांच दिनोंकों वर्जित करके कृष्णपक्षभी शुभ है," ऐसा बृहस्पतिजीका वचन है इस लिये संकटमें कृष्णपक्षविषे दशमीपर्यंत यज्ञोपवीतसंस्कार करना. शिष्ट जन तौ कृष्णपक्षमें संकट होवै तौभी पंचमीपर्यंतही यज्ञोपवीतसंस्कार करते हैं.

अथतिथिविचारः द्वितीयातृतीयापंचमीषष्ठीदशम्येकादशीद्वादश्यःप्रशस्ताः क्वचित्सप्तमीत्रयोदशीकृष्णप्रतिपद्विधिः पुनरुपनयनमूकाद्युपनयनविषयः तिथौसोपपदाख्यायामनध्यायेगलग्रहे अपराह्णेचोपनीतःपुनःसंस्कारमर्हति सिताज्येष्ठेद्वितीयाचआश्विनेदशमीसिताचतुर्थीद्वादशीमाघेएताःसोपपदाःस्मृताः अनध्यायाःपौर्णमासीचतुर्दश्यष्टमीअमाप्रतिपत्सूर्यसंक्रांतिमन्वाद्याश्वयुगादयः कृष्णपक्षेद्वितीयाश्चकार्तिकाषाढफाल्गुने विषुवायनसंक्रांत्योः

पक्षिणीअनध्यायइतिपूर्वपरिच्छेदेउक्तं सोपपदानामनध्यायतिथीनांचदिनद्वयेसूर्योदयोत्तरं सूर्यास्तात्पूर्वंचत्रिमुहूर्तसत्त्वेदिनद्वयमनध्यायः शिष्टास्तुप्रतिपच्छेषेघटिकादिमात्रेपिव्रतबंधे ऽनध्यायंवदंति विषुनायनेतरसंक्रांतिमन्वादियुगादिषुतुप्रथमद्वितीयपरिच्छेदोक्तरीत्यायत्रादिनेसंक्रांतिपुण्यकालोयुगमन्वादिश्राद्धकालश्चतद्दिनेनध्यायः नतुतेषामस्तादौमुहूर्तत्रयेसत्त्वमनध्यायहेतुः त्रयोदश्यादिचत्वारिसप्तम्यादिदिनत्रयं चतुर्थीचैकतःप्रोक्ताअष्टावेतेगलग्रहाः अत्रचतुर्थीनवमीचव्रतकालेत्याज्येतिभाति केचिच्चतुर्थीशेषयुतपंचम्यांव्रतबंधंनकुर्वंतितत्रमूलंमृग्यं नवमीशेषयुतदशम्यांमौंजीनकार्येतिमयूखे अपराह्णस्त्रेधाविभक्तदिनतृतीयांशोव्रतबंधेवर्ज्यः दिनमध्यमभागोमध्यमः प्रथमभागोमुख्यः मन्वादियुगादयोद्वितीयपरिच्छेदेदर्शिताः तत्रोपनयनेचैत्रशुक्लतृतीयायाः मन्वादेर्वैशाखशुक्लतृतीयायायुगादेश्चप्रसक्तिः अन्येषांयुगादिमन्वादितिथीनांप्रसक्तिर्नास्तिअनयोरपवादःसिंधुकौस्तुभादौस्मर्यते याचैत्रवैशाखसितातृतीयामाघस्यसप्तम्यथफाल्गुनस्य कृष्णेद्वितीयोपनयेप्रशस्ताप्रोक्ताभरद्वाजमुनींद्रमुख्यैरिति अत्रमाघसप्तम्यामन्वादेरपवादः पुनरुपनयनादिविषयः फाल्गुनकृष्णद्वितीयायाश्चा तुर्मास्यद्वितीयात्वेनायध्यायत्वंप्राप्तंतस्यापवादोयं यत्तुअनध्यायस्यपूर्वेद्युरनध्यायात्परेहनि व्रतारंभंविसर्गंचविद्यारंभंचवर्जयेदितिस्मृत्यंतरं तद्द्वितीयाविध्यनुपपत्त्यागलग्रहत्वेनप्राप्तसप्तमीनवमीत्रयोदशीनिषेधानुवादकमितिभाति अप्राप्तनिषेधकत्वेमन्वादियुगादिसंक्रांत्यादिप्रत्युक्तानध्यायोपिपूर्वपरदिनयोर्निषेधापत्त्या चैत्रशुक्लद्वितीयादेरपिनिषिद्धत्वापातात् नचेष्टापत्तिः शिष्टाचारग्रंथेषुचानुपलंभात् मुहूर्तमार्तंडोक्त्यामाघेशुक्लद्वितीयाकृष्णद्वितीयावैशाखकृष्णद्वितीयाचेत्यनध्यायत्रयमुपनयनेधिकंप्राप्नोति एतदपरेनाद्रियंते बहुग्रंथेषुमूलानुपलंभात् मौंजीप्रकरणेमुहूर्तचिंतामण्यादिग्रंथेषुक्वाप्यनुक्तेश्च अतोमार्तंडोक्तानामतिरिक्तानध्यायानामुपनिषत्पाठादिविषयत्वंनतुमौंजीविषयत्वमितियुक्तंभातितत्रतृतीयाषष्ठीद्वादशीषुप्रदोषसत्त्वेमौंजीनकार्या रात्रेःप्रथमयामेचतुर्थीसार्धयामेसप्तमीयामद्वयेत्रयोदशीचेत्तदाप्रदोषः दिनद्वयेप्रथमयामादिषुचतुर्थ्यादिव्याप्तौपूर्वदिनेप्रदोषोनोत्तरदिनेइतिकौस्तुभे प्रदोषदिनेमंदवारेकृष्णपक्षांत्यत्रिकेचोपनयनेपुनरुपनयनमितिमयूखे एतेनित्यानध्यायाः ॥

अब यज्ञोपवीतकर्ममें कौनसी तिथि लेनी तिसका विचार कहताहुं.

द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, दशमी, एकादशी और द्वादशी ये तिथि श्रेष्ठ हैं. कितनेक ग्रंथोंमें सप्तमी, त्रयोदशी और कृष्णपक्षकी प्रतिपदा लेनी ऐसा कहा है; परंतु वह पुनरुपनयन और गूंगा आदिके यज्ञोपवीतसंस्कारविषे लेनी. “सोपपदा तिथि, अनध्याय, गलग्रह, और अपराण्हकाल इन्होंमें यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुआ मनुष्य फिर संस्कारके योग्य होता है.” “ज्येष्ठमासके शुक्लपक्षकी द्वितीया, आश्विनमासके शुक्लपक्षकी दशमी, माघमासकी चतुर्थी और द्वादशी ये सोपपदा तिथि कहाती हैं.” अब अनध्याय कहताहुं.—“पौर्णमासी; चतुर्दशी; अष्टमी; अमावस; प्रतिपदा; सूर्यसंक्रांति; मन्वादितिथि; युगादितिथि; कार्तिक, आषाढ, फाल्गुन इन महीनोंके कृष्णपक्षकी द्वितीया ये अनध्याय हैं. तुलाकी संक्रांति, मेषकी संक्रांति, कर्ककी और मकरकी संक्रांति इन्होंके बारह प्रहर अनध्याय है ऐसा प्रथम परिच्छेदमें कहा

है. सोपपदातिथि और अनध्यायतिथि इन दो दिनोंमें सूर्योदयके पश्चात् और सूर्यके अस्तके पहले छह घडीपर्यंत होवैं तौ दो दिनोंपर्यंत अनध्याय जानना. शिष्टजन तौ, एक दो घडी प्रतिपदा शेष होनेमेंभी यज्ञोपवीतविषे अनध्याय कहते हैं. तुला, मेष, कर्क, मकर इन्होंसें अन्य संक्रांति; मन्वादि और युगादि तिथि इन्होंविषे तौ प्रथम परिच्छेदमें कही रीतिकरके संक्रांतिका पुण्यकाल और युगादि और मन्वादि तिथियोंका श्राद्धकाल ये जिस दिनमें आवैं तिस दिनमें अनध्याय होता है, सो (तुला, मेष, अयन इन्होंसें अन्य संक्रांति; मन्वादि; युगादि) अस्त आदि समयमें छह घडी होवै तौभी वह अनध्याय है ऐसा नहीं जानना. त्रयोदशीसें प्रतिपदापर्यंत चार तिथि, और सप्तमी, अष्टमी, नवमी और चतुर्थी ये आठ तिथि **गलग्रहसंज्ञक** कहाती हैं. यहां यज्ञोपवीतकर्ममें चतुर्थी और नवमी त्यागनी ऐसा मेरा मत है. कितनेक पंडित चतुर्थीके शेषसें युत हुई पंचमीमें यज्ञोपवीतसंस्कार नहीं करते हैं, तहां मूलका चितवन करना उचित है. नवमीके शेषसें युत हुई दशमीमें यज्ञोपवीतसंस्कार नहीं करना ऐसा **मयूख** ग्रंथमें कहा है. तीन प्रकारसें विभक्त किया दिनका तृतीयांश अपराण्ह कहाता है, वह यज्ञोपवीतसंस्कारमें वर्जित करना. दिनका मध्यभाग मध्यम है, दिनका प्रथमभाग मुख्य है. मन्वादितिथि और युगादितिथि द्वितीय परिच्छेदमें कही हैं. चैत्र शुदि तृतीया मन्वादितिथि और वैशाख शुदि तृतीया युगादितिथि इन दोनों तिथियोंकी यज्ञोपवीतकर्मविषे प्राप्ति है. अन्य युगादि और मन्वादितिथियोंकी प्राप्ति नहीं है. चैत्र शुक्ल तृतीया और वैशाख शुक्ल तृतीया इन्होंका अपवाद **निर्णयसिंधु** और **कौस्तुभ** आदि ग्रंथोंमें कहा है. "चैत्र और वैशाखकी शुक्ल तृतीया, माघकी सप्तमी और फाल्गुनके कृष्णपक्षकी द्वितीया ये तिथि यज्ञोपवीतसंस्कारमें भरद्वाजमुनिंद्र आदिनें श्रेष्ठ कही हैं. यहां माघकी सप्तमी मन्वादितिथि है. तिसका अपवाद पुनरुपनयन आदि विषयक है. फाल्गुन वदि द्वितीयाकों चातुर्मास्यकी द्वितीयाके संबंधसें प्राप्त हुआ जो अनध्याय तिसका यह अपवाद जानना. जो ये "अनध्यायके पूर्व दिनमें और अनध्यायके पिछले दिनमें यज्ञोपवीतकर्म, यज्ञोपवीतविसर्गकर्म, विद्यारंभ इन्होंकों वर्ज करना," ऐसा दूसरी स्मृतिमें कहा है, सो द्वितीयाकी विधिकी असिद्धि करके गलग्रहपनेसें प्राप्त हुआ सो सप्तमी, नवमी और त्रयोदशी इन तिथियोंके निषेधका अनुवाद अर्थात् पुनरुक्ति है ऐसा मेरा मत है. जो कदाचित् यह अपूर्व निषेध माना जावै तौ मन्वादि, युगादि और संक्रांति इन्होंकरके प्रयुक्त अनध्यायोंसें पूर्व और परदिनमें निषेध प्राप्त होनेसें चैत्र शुदि द्वितीयाकोंभी निषेध प्राप्त होवैगा; इसलिये वह इष्टापत्ति नहीं है; क्योंकी, शिष्टाचारसंबंधी ग्रंथोंमें तिसका अभाव है और **मुहूर्तमार्तंड**के वचनसें माघकी शुक्ल द्वितीया और कृष्ण द्वितीया और वैशाख कृष्ण द्वितीया ये तीन यज्ञोपवीतसंस्कारमें अधिक अनध्याय प्राप्त होते हैं, परंतु अन्य ग्रंथकार ये तीन अनध्याय नहीं मानते हैं. क्योंकी, बहुतसे ग्रंथोंमें आधार नहीं मिलता. **मुहूर्तचिंतामणि** आदि ग्रंथोंमें यज्ञोपवीतसंस्कारमें कहींभी वचन नहीं मिलता है, इस कारणसें **मुहूर्तमार्तंड**में कहे अधिक अनध्याय उपनिषदोंके पाठ आदिमें मानने, यज्ञोपवीतसंस्कारमें नहीं, ऐसा मुझकों प्रतिभान होता है. तहां तृतीया, षष्ठी, द्वादशी इन तिथियोंमें प्रदोष होवै तौ यज्ञोपवीतकर्म नहीं करना. रात्रिके प्रथम प्रहरमें चतुर्थी होवै और रात्रिके डेढ प्रहरमें सप्तमी होवै और रात्रिके दो प्रहरोंमें त्रयोदशी होवै तब

प्रदोष जानना. दोनों दिनोंमें प्रथम प्रहर आदिविषे चतुर्थी आदिकी व्याप्ति होवै तौ पूर्व दिनमें प्रदोष जानना. परदिनमें नहीं ऐसा **कौस्तुभ**में लिखा है. प्रदोषदिनमें शनिवारविषे और कृष्णपक्षके पीछले पांच दिनोंविषे यज्ञोपवीतकर्म किया होवै तौ फिर यज्ञोपवीतकर्म करना ऐसा **मयूख** ग्रंथमें लिखा है. ये नित्य अनध्याय कहे.

अथनैमित्तिकाः विवाहप्रतिष्ठोद्यापनादिष्वासमाप्तेःसगोत्राणामनध्यायइतिस्मृत्यर्थसारोक्तेस्त्रिपुरुषसापिंडेषुब्रह्मयज्ञादिवर्जनात् मौंजीविवाहादिनिमित्तकमंडपप्रतिष्ठाद्युत्सवसमाप्तिपर्यंतमुपनयनंनकार्यमितिभाति विवाहादिमंगलकरणेदोषोन शोभनदिनेचानध्यायइत्युक्तेर्गर्भाधानादिशुभकार्यदिनेएककुलेएकगृहेवाव्रतबंधोनकार्यइतिभाति भूकंपेभूविदारणेवज्रपाते उल्कापातेधूमकेतूत्पत्तौग्रहणेचदशाहंसप्ताहंवाव्रतबंधादिमंगलंनकार्यं केचित्संकटेत्रिदिनमनध्यायमाहुः अकालवृष्टौत्रिरात्रंपक्षिणीवानध्यायः पौषादिचैत्रांतमकालवृष्टिः केचिदार्द्रादिज्येष्ठांतसूर्यनक्षत्रादन्यत्राकालवृष्टिरित्याहुः यस्मिन्देशेयोवर्षाकालस्ततोन्यत्राकालवृष्टिरितिसिद्धांतःअतिवृष्टौकरकावृष्टौरुधिरवृष्टौचत्र्यहं प्रातःसंध्यागर्जनेत्वहोरात्रं गुरुशिष्यऋत्विक्मरणेत्र्यहं पशुमंडूकनकुलश्वाहिमार्जारमूषकैरंतरागमनेहोरात्रं आरण्यमार्जारादिगमनेत्रिरात्रं सृगालवानरैर्द्वादशरात्रं श्रवणद्वादशीयमद्वितीयामहाभरण्यादयोऽन्येप्यनध्याया नित्यानैमित्तिकाश्चबहवोग्रंथेषूक्तास्तेषामुपनयनेप्रसक्त्यभावादत्रनोक्ताः व्रतबंधेनांदीश्राद्धोत्तरंपूर्वोक्तप्रातर्गर्जितादिनैमित्तिकानध्यायप्राप्तौज्योतिर्निबंधे नांदीश्राद्धंकृतंचेत्स्यादनध्यायस्त्वकालिकः तदोपनयनंकार्यंवेदारंभंनकारयेदिति वेदारंभंनकारयेदितिनिषेधोयाजुषादिविषयः बह्वृचानामुपाकर्मण्येववेदारंभोक्त्यामौंजीदिनेवेदारंभाप्रसक्तेः तदोपनयनंकार्यमिति बह्वृचादिसर्वसाधारणःयाजुषादिभिर्मौंज्युत्तरमपिअनध्यायप्राप्तौवेदारंभोवर्ज्यः नांदीश्राद्धात्प्राक्नैमित्तिकानध्यायेमुहूर्तांतरेकार्यं मौंज्युत्तरमनुप्रवचनीयात्प्राक्गर्जनेवक्ष्यते इति अनध्यायादिनिर्णयः ॥

अब नैमित्तिक अनध्याय कहताहुं.

विवाह, प्रतिष्ठा, उद्यापन इन आदि कर्मोंमें समाप्तिपर्यंत सगोत्रियोंको अनध्याय है, ऐसा **स्मृत्यर्थसार**में कहा है, इसवास्ते तीन पीढियोंके पुरुषोंनें ब्रह्मयज्ञ, वैश्वदेव इत्यादिक कर्म वर्जने. इसलिये यज्ञोपवीत और विवाह आदि निमित्तसें किये हुए मंडपप्रतिष्ठा आदिके उत्सवकी समाप्तिपर्यंत यज्ञोपवीतसंस्कार नहीं करना ऐसा भान होता है. विवाह आदि मंगलकार्यके करनेमें दोष नहीं है. 'मंगलकार्यके दिनमें अनध्याय' होता है ऐसा वचन है, तिस्सें गर्भाधान आदि शुभकार्यसंबंधी दिनमें एक कुलविषे अथवा एक घरविषे यज्ञोपवीतकर्म नहीं करना ऐसा भान होता है. भूमिकंप, भूमिविदारण, बिजलीका पडना, उल्कापात अर्थात् आकाशसें अग्निरूपी ताराका पडना, धूमकेतु अर्थात् पूछडेवाला तारा दीखना और ग्रहण इन आदि हुए होवैं तौ दश दिनपर्यंत अथवा सात दिनपर्यंत यज्ञोपवीत आदि मंगल कार्य नहीं करने. कितनेक ग्रंथकार संकटमें तीन दिन अनध्याय कहते हैं. अकालवृष्टिमें तीन रात्रि अथवा १२ प्रहर अनध्याय होता है. पौषसें चैत्रमासपर्यंत जो वृष्टि होती है सो अकालवृष्टि होती

है. कितनेक ग्रंथकार आर्द्रानक्षत्रसें ज्येष्ठानक्षत्रपर्यंत जो सूर्यनक्षत्र, तिन्होंके विना अन्यकालमें जो वृष्टि होती है तिसकों अकालवृष्टि कहते हैं. जिस देशमें जो वर्षाकाल है तिस्सें अन्यकालमें वृष्टि होवै तौ सो अकालवृष्टि होती है, ऐसा सिद्धांत जानना. अत्यंतवृष्टिमें और ओलोंकी वृष्टिमें और रक्तकी वृष्टिमें तीन दिन अनध्याय होता है. प्रातःसंध्यासमयमें मेघगर्जन होवै तौ एक दिनरात्र अनध्याय होता है. गुरु, शिष्य, ऋत्विक् इन्होंके मरनेमें तीन दिन अनध्याय होता है. गुरु और शिष्यके संथा लेनेके समय दोनोंके बीचमेंसें पशु, मेंडक, नौल, कुत्ता, सर्प, विलाव, और मूषा इन्होंका गमन होवै तौ एक दिनरात्रि अनध्याय होता है. वनमें रहनेवाले विलाव आदिका बीचमेंसें गमन होवै तौ तीन रात्रि अनध्याय रहता है. गीदड और वानरका बीचमेंसें गमन होनेमें बारह रात्रि अनध्याय रहता है. श्रवणद्वादशी, यमद्वितीया और महाभरणी इन आदि अन्यभी अनध्याय नित्य और नैमित्तिक बहुतसे ग्रंथोंमें कहे हैं; परंतु तिन्होंकी यज्ञोपवीतसंस्कारमें प्रवृत्ति नहीं, इसवास्ते यहां नहीं कहे हैं. यज्ञोपवीतसंस्कारमें नांदीश्राद्धके उपरंत पूर्वोक्त प्रातःकाल निमित्तवाले अनध्यायकी प्राप्तिमें ज्योतिर्निबंध ग्रंथमें लिखा है की, ''नांदीश्राद्ध किये पीछे जो अकालिक अनध्याय प्राप्त होवै तौ यज्ञोपवीतकर्म करना'' परंतु वेदारंभ नहीं करना. वेदारंभ नहीं करना ऐसा जो निषेध कहा है, सो यजुर्वेदीयोंके लिये है ऐसा जानना. क्योंकी, ऋग्वेदीयोंनें उपाकर्ममेंही वेदारंभ करना ऐसा कहा है, इसलिये तिनकों यज्ञोपवीतके दिन वेदकी प्राप्ति नहीं, इसलिये 'उपनयन करना, परंतु वेदारंभ नहीं करना' ऐसा जो निषेध पहले कहा है वह ऋग्वेदी आदि सबोंकों साधारण है. यजुर्वेदी आदियोंनें यज्ञोपवीतकर्मके उपरंतभी अनध्यायके होनेमें वेदकारंभ वर्जित करना. नांदीश्राद्धके पहले नैमित्तिक अनध्याय होवै तौ दूसरे मुहूर्तमें यज्ञोपवीतकर्म करना. यज्ञोपवीत होनेके उपरंत और अनुप्रवचनीय होमके पहले गर्जना होवै तौ तिस विषयविषे आगे कहैंगे. ऐसा अनध्याय आदिका निर्णय समाप्त हुआ.

इत्थंतिथिं तत्प्रसंगप्राप्तमनध्यायादिकंचविचार्यवारादिचिंत्यते गुरुशुक्रबुधवाराः श्रेष्ठाः सूर्यवारोमध्यमः चंद्रवारोधमः भौममंदवारौनिषिद्धौ सामवेदिनांक्षत्रियाणांचभौमवारः प्रशस्तः शाखाधिपतिवाराश्चशाखाधिपबलंतथा शाखाधिपतिलग्नंचदुर्लभंत्रितयंव्रते गुरुशुक्रौ भौमबुधावृग्वेदाद्यधिपाःस्मृताः पतीसितेज्यौविप्राणांनृपाणांकुजभास्करौ वैश्यानांशशभृत्सौम्याविितिवर्णाधिपाःस्मृताः पितुःसूर्यबलंश्रेष्ठंशाखावर्णेशयोर्बटोः पितुर्बटोश्चसर्वेषांबलंवाक्पतिचंद्रयोःबटुतत्पित्रोरुभयोर्गुरुचंद्रबलालाभेबटोरुभयबलमावश्यकंतत्रचंद्रबलंगर्भाधानप्रसंगेउक्तं द्विपंचसप्तनवैकादशस्थोगुरुःशुभफलप्रदःजन्मतृतीयषष्ठदशमस्थानेषुपूजाहोमात्मकशांत्याशुभः चतुर्थाष्टमद्वादशस्थानेषुदुष्टफलः कर्कधनुर्मीनराशिषुचतुर्थादिस्थानेपिनदोषः अतिसंकटेचतुर्थद्वादशस्थोद्विगुणपूजाहोमादिनाशुभः अष्टमस्तुत्रिगुणपूजादिनाशुभः केचिदनिष्टोवामवेधेशुभइत्याहुस्तन्नेतिराजमार्तंडः अष्टमवर्षादिमुख्यकालेगुरुबलाभावेपिमीनगतरवियुतचैत्रेवाशांत्यावाव्रतबंधःकार्योनतुमुख्यकालातिक्रमः नित्यकालस्यबलीयस्त्वात् ॥

ऐसा तिथि और तिथिके प्रसंगसें अनध्याय आदिके निर्णयका विचार करके अब

वार आदिके निर्णयकों कहते हैं:—बृहस्पति, शुक्र, बुध ये वार श्रेष्ठ हैं. रविवार मध्यम है. सोमवार अधम है. मंगल और शनिवार निषिद्ध हैं. सामवेदियोंकों और क्षत्रियोंकों मंगलवार श्रेष्ठ है. "शाखाके स्वामीका वार और शाखाके स्वामीका बल और शाखाके स्वामीका लग्न इन तीनोंका होना यज्ञोपवीतसंस्कारमें दुर्लभ है. ऋग्वेदका स्वामी बृहस्पति है, यजुर्वेदका स्वामी शुक्र है, सामवेदका स्वामी मंगल है और अथर्वण वेदका स्वामी बुध है. ब्राह्मणोंके स्वामी शुक्र और बृहस्पति हैं. क्षत्रियोंके स्वामी मंगल और सूर्य हैं. वैश्योंके स्वामी चंद्रमा और बुध हैं. ऐसे वर्णोंके स्वामी कहे. पिताकों सूर्यका बल श्रेष्ठ है. कुमारकों शाखाके स्वामीका और वर्णके स्वामीका बल श्रेष्ठ है." पिता, कुमार और अन्य सबोंकों बृहस्पति और चंद्रमाका बल श्रेष्ठ है. कुमारकों और तिसके मातापिताकों बृहस्पति और चंद्रमाके बलके अभावमें कुमारकों दोनों बल होने आवश्यक हैं. तिन दोनों बलोंमेंसें चंद्रबल गर्भाधानके प्रसंगमें कहा है. जन्मराशिसें दूसरा, पांचमा, सातमा, नवमा, ग्यारहमा इन स्थानोंपर स्थित हुआ बृहस्पति शुभ फलकों देता है. पहला, तीसरा, छठा, दशमा इन स्थानोंपर स्थित हुआ बृहस्पति पूजा और होमसें युक्त हुई शांतिसें शुभ होता है. जन्मराशिसें चौथा, आठमा, बारहमा इन स्थानोंपर स्थित हुआ बृहस्पति दुष्ट फलकों देता है. कर्क, धन, मीन इन राशियोंपर स्थित हुआ बृहस्पति चौथा, आठमा, बारहमा इन स्थानोंमेंभी होवै तबभी दोषकों नहीं देता है. अत्यंत संकटमें चौथे और बारहमे स्थानमें स्थित हुआ बृहस्पति दुगुनी पूजा और होम आदिसें शुभ होता है. आठमे स्थानमें स्थित हुआ बृहस्पति त्रिगुणी पूजासें शुभ होता हैं. कितनेक ग्रंथकार कहते हैं की, अनिष्ट बृहस्पति वामवेधसें शुभ होता है, परंतु **राजमार्तंड**में तिसका निषेध है. आठमा वर्ष आदि यज्ञोपवीतकर्मके मुख्यकालमें बृहस्पतिके बलका अभाव होवै तौ मीनराशिपर स्थित हुये सूर्यसें युत हुये चैत्रमें अथवा शांति करके यज्ञोपवीतसंस्कार करना उचित है; परंतु मुख्यकालकों टालना नहीं. क्योंकी नित्यकाल अत्यंत बलवाला होता है.

अथनक्षत्राणि पूर्वात्रयहस्तचित्रास्वातीमूलाश्लेषार्द्राश्रवणेषुऋग्वेदिनांमौंजीशस्तारोहिणीमृगपुष्यपुनर्वसुत्र्युत्तराहस्तानुराधाचित्रारेवतीषुयाजुषाणां अश्विनीपुष्योत्तरात्रयार्द्राहस्तधनिष्ठाश्रवणेषुसामगानां अश्विनीमृगानुराधाहस्तधनिष्ठापुनर्वसुरेवतीषुअथर्ववेदिनां एषां नक्षत्राणामसंभवेभरणीकृत्तिकामघाविशाखाज्येष्ठाशततारकावर्जयित्वा सर्वाणिसर्वेषांग्राह्याणि राजमार्तंडेपुनर्वसुनिषेधोनिर्मूलइतिबहवः केचिदृक्सामवेदविषयःपुनर्वसुनिषेधइत्याहुः व्यतीपातवैधृतिपरिघार्धेषुविष्कंभादीनांनिषिद्धनाडीषुभद्रायांग्रहणेचमौंजीवर्ज्या ॥

अब यज्ञोपवीतके नक्षत्र कहताहुं.

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, आश्लेषा, आर्द्रा, और श्रवण इन नक्षत्रोंमें ऋग्वेदियोंनें यज्ञोपवीत करना श्रेष्ठ है. रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, हस्त, अनुराधा, चित्रा, रेवती इन नक्षत्रोंमें यजुर्वेदियोंनें यज्ञोपवीत करना श्रेष्ठ है. अश्विनी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, आर्द्रा, हस्त, धनिष्ठा और श्रवण इन नक्षत्रोंमें सामवेदियोंनें यज्ञोपवीतकर्म करना.

अश्विनी, मृगशिर, अनुराधा, हस्त, धनिष्ठा, पुनर्वसु और रेवती इन नक्षत्रोंमें अथर्वणवेदियोंनें यज्ञोपवीतसंस्कार करना. इन पूर्वोक्त नक्षत्रोंके असंभवमें भरणी, कृत्तिका, मघा, विशाखा, ज्येष्ठा, शतभिषा इन नक्षत्रोंकों वर्जित करके सब नक्षत्र सबोंनें ग्रहण करने. राजमार्तंडग्रंथमें जो पुनर्वसुका निषेध कहा है वह निर्मूल है ऐसा बहुतसे ग्रंथकार कहते हैं. कितनेक ग्रंथकार पुनर्वसुका निषेध ऋक् और सामवेदके विषयक है, और व्यतीपात, वैधृति, परिघका आधा भाग और विष्कंभ[1] आदि योगोंकी निषिद्ध घडी; भद्रा, और ग्रहण इन्होंमेंसें एकके होनेमेंभी यज्ञोपवीतकर्म नहीं करना.

अथलग्नेग्रहबलं व्रतेग्राह्याद्वादशाष्टषट्वर्ज्याःशुभखेचराः खलास्त्र्यायारिगाश्चंद्रः शुक्लगोकर्कगस्तनौ क्वचित्सूर्यस्तनौश्रेष्ठोऽष्टमेवर्ज्योऽखिलोग्रहः लग्नेशःशुक्रचंद्रौचषष्ठेवर्ज्याःसितांत्यगः लग्नेचंद्रखलाश्चैवेंदुर्वर्ज्योद्वादशाष्टमे पंचेष्टग्रहहीनंचलग्नंसर्वत्रवर्जयेत् तुलामिथुनकन्याख्याधनुर्वृषझषाह्वयाः नवमांशाःशुभाःप्रोक्ताःकर्कांशंवर्जयेद्व्रते षड्वर्गशुद्ध्यादिकमिष्टकालसाधनादिविचारश्चज्योतिर्ग्रंथेभ्योज्ञातव्यःमातरिरजस्वलायांमातुलज्येष्ठभ्रात्रादीनांपित्रसान्निध्यात्कर्तॄणांपत्न्यांरजस्वलायांचमौंजीविवाहादिनकार्यं नांदीश्राद्धोत्तरंमातृरजसिभ्रात्रादिकर्त्रंतरसत्त्वेपिसन्निहितमुहूर्तांतरालाभेशांतिंकृत्वाकार्यं अन्यथामुहूर्तांतरेएव नांदीश्राद्धोत्तरंमातुलादिकर्तॄणांपत्नीरजोदोषेआरब्धत्वाच्छांतिंविनैवकार्यं मौंजीविवाहोत्तरंमंडपोद्वासनात्प्राक्मातृरजोदोषेपिशांतिःकार्या मंगलस्यासमाप्तत्वादितिमुहूर्तचिंतामणिटीकायां प्रारंभात्प्रागपिरजोदोषेमुहूर्तांतरालाभेशांतिंकृत्वातिसंकटेव्रतबंधादिकंकार्यमितिकौस्तुभे शांतिप्रकारश्च ममामुकमंगलेसंस्कार्यजननीरजोदोषजनिताशुभफलनिरासार्थंशुभफलावाप्त्यर्थं श्रीपूजनादिशांतिंकरिष्यइतिसंकल्प्यमाषसुवर्णनिर्मितांलक्ष्मींश्रीसूक्तेनषोडशोपचारैःसंपूज्य स्वगृह्योक्तविधिनाश्रीसूक्तेनप्रत्यृचंपायसंहुत्वाकलशोदकेनाभिषिच्यविष्णुंस्मृत्वाकर्मेश्वरार्पणं कुर्यादिति प्रारंभोत्तरंसूतकप्राप्तौएकोदरयोःसमानसंस्कारेप्रेतकर्मासमाप्तौचचौलप्रकरणेउक्तं विशेषस्तुवक्ष्यते ॥

अब लग्नविषे ग्रहबल कहताहुं.

वारहमा, छठा, आठमा इन स्थानोंसें वर्जित ऐसै शुभ ग्रह यज्ञोपवीतकर्ममें शुभ हैं. पापग्रह तीसरा, छठा, ग्यारहमा इन स्थानोंके शुभ होते हैं. शुक्ल पक्षमें प्राप्त हुआ कर्क और वृषभराशिका चंद्रमा लग्नमें स्थित होवै तौ वह शुभ होता है. कितनेक ग्रंथोंमें सूर्य लग्नमें होवै ये श्रेष्ठ है ऐसा कहा है. आठमे स्थानके सब ग्रह वर्जित हैं. लग्नका स्वामी, शुक्र और चंद्रमा ये छठे स्थानमें होवैं तौ वे वर्जित करने. वारहमें स्थानका शुक्र वर्जित करना. चंद्रमा और पापग्रह लग्नमें वर्जित करने. वारहमा और आठमा चंद्रमा वर्जित करना. पांच वांछित ग्रह जिस लग्नमें नहीं होवैं तिसकों सब जगह वर्ज देना. तुला, मिथुन, कन्या, धन, वृष, मीन ये नवमांश शुभ कहे हैं. कर्कांश यज्ञोपवीतकर्ममें वर्जित करना. षड्वर्गशुद्धि आदि

---

[1] विष्कंभकी ३ घडी, व्याघातकी ९, शूलकी ५, वज्रकी ९, गंडकी ६, अतिगंडकी ५, इस प्रकार यह पहली वर्ज करनी.

दर्ता नं. 23982

और इष्टकालसाधन आदिका विचार ज्योतिषग्रंथोंमेंसें जानना. जिसका यज्ञोपवीतकर्म करना होवै तिसकी माता रजस्वला होवै तौ और पिता संनिध नहीं होनेसें मामा और ज्येष्ठ भ्राता आदि यज्ञोपवीतसंस्कार करनेवाले होवैं और तिन्होंकी पत्नी रजस्वला हो जावैं तब यज्ञोपवीत और विवाह आदि कर्म नहीं करने. नांदीश्राद्ध उपरंत माता रजस्वला हो जावै और भ्राता आदि दूसरा कर्ता होवै तौ समीप दूसरा मुहूर्त नहीं मिलै तौ शांति करके यज्ञोपवीतकर्म करना उचित है. अन्यथा दूसरे मुहूर्तमेंही करना. नांदीश्राद्धके उपरंत मातुल आदि कर्ताओंकी पत्नी रजस्वला हो जावैं तौ आरंभ होनेसें शांतिके विनाही कर्म करना. यज्ञोपवीतकर्म और विवाहकर्मके उपरंत मंडपकों दूर करनेके पहिले माता रजस्वला हो जावै तौ मंगलकी समाप्ति नहीं होनेसें शांति करनी उचित है, ऐसा **मुहूर्तचिंतामणी**की टीकामें कहा है. प्रारंभके पहले माता आदि रजस्वला हो जावैं और दूसरा मुहूर्त नहीं मिलै तौ अत्यंत संकटमें शांति करके यज्ञोपवीत आदि कर्म करना ऐसा **कौस्तुभ** ग्रंथमें कहा है. **शांतिका प्रकार कहताहुं.—"ममामुकमंगले संस्कार्यजननीरजोदोषजनिताशुभफलनिरासार्थं शुभफलावाप्त्यर्थं श्रीपूजादिशांतिं करिष्ये,"** ऐसा संकल्प करके एक मासा सोनाकी लक्ष्मीजीकी मूर्ति बनाय तिस प्रतिमाकी श्रीसूक्तसें षोडशोपचार पूजा करके अपने गुह्यसूत्रमें कही विधिसें श्रीसूक्तकी प्रतिऋचासें खीरका होम करकें कलशके पानीसें अभिषेक करके और विष्णुका स्मरण करके कर्म ईश्वरकों अर्पण करना. प्रारंभके उपरंत सूतक प्राप्त होवै तब और एक पेटसें उपजे दो भ्राताओंका समान संस्कार होनेमें और प्रेतकर्मकी समाप्ति नहीं होनेमें, तिसका जो निर्णय है सो चौलप्रकरणमें कहा है. विशेष निर्णय आगे कहैंगे.

अथपदार्थसंपादनं कौपीनंप्रावारश्चकार्पासजमहतंसंपाद्यं ईषद्धौतंनवंश्वेतंसदशंवस्त्रमहतसंज्ञंप्रावारार्थमजिनंवा तच्चत्र्यंगुलंचतुरंगुलंवाबहिर्लोमाखंडंत्रिखंडंवाष्टाचत्वारिंशदंगुलंधार्यं त्रिखंडपक्षेचतुर्विंशत्यंगुलाष्टांगुलषोडशांगुलाःक्रमेणत्रयःखंडाः कार्पासंयज्ञोपवीतं ॥

अब यज्ञोपवीतकर्ममें कौनसे पदार्थ संपादनं करने सो कहताहुं.

लंगोटी, ओढनेका वस्त्र यह कपासका बना हुआ अहत ऐसा मिलाना. जो वस्त्र कछुक धोया हुआ होवै और नवीन होवै और सुपेद रंगका होवै और दशासें युक्त होवै वह अहतसंज्ञक होता है. अथवा ओढनेके लिये मृगछाला पैदा करनी. वह मृगछाला तीन अंगुल अथवा चार अंगुल जिसके बाहिर रोम होवैं ऐसा खंडित अथवा त्रिखंड होवै. वह मृगछाला ४८ अंगुल प्रमाणसें धारण करनी उचित है. त्रिखंडपक्षमें २४ अंगुल और ८ अंगुल और १६ अंगुल ऐसे क्रमसें तीन खंड करने. यज्ञोपवीत कपासका करना.

तन्निर्माणप्रकारः ब्राह्मणेनब्राह्मणस्त्रीभिर्विधवादिभिश्चानिर्मितंसूत्रंग्राह्यं संहतचतुरंगुलिमूलेषुषण्णवत्यासूत्रमावेष्ट्य तत्त्रिगुणीकृत्योर्ध्ववृत्तंवलितंकृत्वा पुनरधोवृत्तरीत्यात्रिगुणीकृतंतत्सूत्रंनवतंतुकंसंपद्यते तत्त्रिरावेष्ट्यदृढग्रंथिंकुर्यात् स्तनादूर्ध्वमधोनाभेर्नधार्यंतत्कथंचन वि

च्छिन्नंवाप्यधोयातंभुक्त्वानिर्मितमुत्सृजेत् सिद्धेमंत्राःप्रयोक्तव्याइतिन्यायेनसिद्धंयज्ञोपवीतं त्रिगुणीकरणादिमंत्रैरभिमंत्र्ययज्ञोपवीतंपरममितिमंत्रेणधारयेत् तद्यथा गायत्र्यात्रिगुणीकृत्यापोहिष्ठेतितिसृभिःप्रक्षाल्य पुनर्गायत्र्यात्रिगुणीकृत्यग्रंथौविष्णुब्रह्मरुद्रान्न्यसेत् केचिन्नवतंतुषुनवदेवतान्यासमाहुः ततोगायत्र्यादशवारमभिमंत्रिताभिरद्भिर्यज्ञोपवीतंप्रक्षाल्योदुत्यमितित्र्यृचेनसूर्यायप्रदर्श्ययज्ञोपवीतमितिमंत्रेणप्रथमंदक्षिणंबाहुमुद्धृत्यपश्चात्कंठेधारयेदिति उपवीतंब्रह्मसूत्रंप्रोद्धृतेदक्षिणेकरे प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतंकंठलंबितं चितिकाष्ठचितिधूमचंडालरजस्वलाशवसूतिकास्पर्शेस्नात्वायज्ञोपवीतत्यागःकंठलंबितत्वाद्यकृत्वामलमूत्रोत्सर्गेचत्यागःमासचतुष्टयोत्तरंचयज्ञोपवीतत्यागः केचिज्जननशावाशौचयोरंतेपितत्त्यागमाहुःसमुद्रंगच्छस्वाहेतिमंत्रेणसप्रणवव्याहृतिभिर्वाजीर्णयज्ञोपवीतत्यागः यज्ञोपवीतंप्रमादाद्गतंचेत्तूष्णींलौकिकंधृत्वामनोज्योतिरितिअग्नेव्रतपतेव्रतंचरिष्यामितच्छकेयंतन्मेराध्यतां वायोव्रतपपते०आदित्यव्रतपतेइत्यादिमंत्रचतुष्टयेनचतस्रआज्याहुतीर्हुत्वाविधिवन्नूतनंधारयेत् अथवा यज्ञोपवीतनाशजन्यदोषनिरासार्थंप्रायश्चित्तंकरिष्येइतिसंकल्प्य आचार्यवरणाग्निप्रतिष्ठादिआज्यभागांतेसवितारंगायत्र्यातिलैराज्येनचाष्टोत्तरशतंसहस्रंवाजुहुयात् नूतनंधृत्वातिक्रांतंसंध्याद्याचरेतइति यज्ञोपवीतहीनःक्षणंतिष्ठेच्चेच्छतगायत्रीजपः यज्ञोपवीतंविनाभोजनेविण्मूत्रकरणेवागायत्र्यष्टसहस्रंजपः वामस्कंधात्कूर्परेमणिबंधांतेवापतितेयथास्थानंधृत्वात्रीन्षड्वायथाक्रमंप्राणायामान्कृत्वानवंधारयेत् कोपादिनास्वयंयज्ञोपवीतत्यागेपूर्ववल्लौकिकंधृत्वाप्रायश्चित्तांतेनवंधारयेत् ब्रह्मचारिणएकंयज्ञोपवीतं स्नातकस्यद्वे उत्तरीयाभावेतृतीयकं जीवत्पितृकेणजीवज्ज्येष्ठभ्रातृकेणचोत्तरीयंतत्स्थानेतृतीयंयज्ञोपवीतंवानधार्यं आयुष्कामस्यत्र्यधिकानिबहूनियज्ञोपवीतानि अभ्यंगेचोदधिस्नानेमातापित्रोर्मृतेहनि तैत्तिरीयाःकठाःकण्वाश्चरकावाजसनेयिनः कंठादुत्तार्यसूत्रंतुकुर्युर्वैक्षालनंद्विजाः अन्ययाजुषैर्बह्वृचैःसामगैश्चकंठादुत्तारणेतत्त्यक्त्वानवंधार्यं ॥

अब यज्ञोपवीत बनानेका प्रकार कहताहुं.

ब्राह्मणनें ब्राह्मणकी स्त्री अथवा ब्राह्मणकी विधवा स्त्रीसें निर्मित हुआ सूत्र ग्रहण करना. एकत्र मिली हुई चार अंगुलियोंके मूलोंमें ९६ वार सूत्रकों वेष्टित कर फिर तिसकों तिगुना करके पहले उपरकों वल देके फिर तिगुना करके नीचेकों वल देना. ऐसा वह सूत्र ९ तंतुवाला होता है. पीछे तिसकों तीनवार आवेष्टित करके दृढ ग्रंथि देनी. “ चूंचियोंके उपर और नाभिके निचे कभीभी यज्ञोपवीत धारण नहीं करना. वीचसें टुट जावै अथवा नीचे गिर पडै अथवा भोजन करके वनाया जावै ऐसे जनेऊकों त्याग देना. ” “ सिद्धपदार्थमें मंत्रप्रयुक्त करने ” इस न्यायसें सिद्धरूपी यज्ञोपवीत अर्थात् जनेऊकों त्रिगुणीकरण आदि मंत्रोंसें अभिमंत्रित करके—“ यज्ञोपवीतं परमं० ” इस मंत्रसें धारण करना. सो ऐसा:—गायत्रीमंत्रसें त्रिगुणित करके “ आपोहिष्ठा० ” इन तीन ऋचाओंसें प्रक्षालित करके फिर गायत्रीमंत्रसें त्रिगुणित करके ग्रंथिविषे ब्रह्मा, विष्णु और महादेव इन्होंकों स्थापित करना. कितनेक मुनी ९ तारोंमें ९ देवतोंकों स्थापन करना ऐसा कहते हैं. पीछे गा-

यत्रीमंत्रसें दशवार अभिमंत्रित किये पानीसें यज्ञोपवीत धोके "**उदुत्यं०**" इन तीन ऋचाओंसें सूर्यको दिखाय "**यज्ञोपवीतम्०**" इस मंत्रसें प्रथम दाहिने बाहूकों उठाय कंठमें धारण करना. "दाहिने हाथकों उठाये हुये धारण किया ब्रह्मसूत्र उपवीत कहाता है. वामे हाथकों उठाये हुये धारण किया ब्रह्मसूत्र प्राचीनावीत कहाता है. और कंठमें लंबित हुआ ब्रह्मसूत्र निवीत कहाता है." चिताका काष्ठ; चिताका धूमा, चंडाल; रजस्वला; मुर्दा; सूतिका इन्होंके स्पर्श होनेमें स्नान करके यज्ञोपवीतका त्याग करना अर्थात् दूसरा धारण करना. निवीत कियेविना विष्टा और मूत्रके करनेमेंभी यज्ञोपवीतका त्याग करना. चार महीनोंके उपरंतभी जनेऊका त्याग करना. कितनेक मुनी आशौचके अंतमें जनेऊकों त्यागना ऐसा कहते हैं. "**समुद्रं गच्छ स्वाहा०**" इस मंत्रसें अथवा ओंकारसहित व्याहृतियोंसें पुराने जनेऊका त्याग करना. विस्मरणसें यज्ञोपवीत कंठसें दूर हो जावै तौ मंत्ररहित लौकिक जनेऊ धारण करके—"**मनोज्योतिः० अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयम् तन्मे राध्यताम्, वायो व्रतपते, आदित्य व्रतपते**" इन चार मंत्रोंसें घृतकी चार आहुतियोंका होम करके पीछे मंत्रोंसहित नवीन यज्ञोपवीत धारण करना. अथवा "**यज्ञोपवीतनाशजन्यदोषनिरासार्थं प्रायश्चित्तं करिष्ये,**" ऐसा संकल्प करके आचार्यवरण, अग्निस्थापन इत्यादि आज्यभागपर्यंत कर्म करके सूर्यदेवताके उद्देशसें गायत्रीमंत्रकरके तिलोंसहित घृतसें १०८ अथवा १००० आहुतियोंका होम करना. पीछे नवीन जनेऊ पहरके उल्लंघित किये संध्या आदि कर्मका आचरण करना. जनेऊसें हीन हुआ मनुष्य एक क्षणमात्र रहै तौ १०० वार गायत्रीका जप करना. जनेऊके विना भोजन करनेमें, विष्टा और मूत्रका त्याग करनेमें गायत्रीमंत्रका ८००० जप करना. वामा कंधासें कुहनीपर अथवा पौंहचाके अंतमें जनेऊ गिर पडै तौ यथास्थान धारण करके तीन अथवा ६ क्रमके अनुसार प्राणायाम करके नवीन जनेऊ धारण करना. कोप आदिसें आपही जनेऊका त्याग करै तौ पहलेकी तरह लौकिक यज्ञोपवीत धारण करके प्रायश्चित्तके अनंतर नवीन जनेऊ धारण करना. ब्रह्मचारीनें एक जनेऊ धारण करना. स्नातकनें दो जनेऊ धारण करने. अंगोछाके अभावमें तीसरा जनेऊ धारण करना. जीवते हुए पितावालेनें और जीवते हुए बडे भ्रातावालेनें अंगोछा अथवा तिसके स्थानमें तीसरा जनेऊ नहीं धारण करना. आयुकी कामनावालेनें बहुतसे जनेऊ धारण करने. "उवटना मलनेमें और समुद्रके स्नानमें और मातापिताके मृत दिनमें तैत्तिरीयशाखावाले, कठशाखावाले, कण्वशाखावाले, चरकशाखावाले और वाजसनेयिशाखावाले द्विजोंनें कंठसें जनेऊ उतारके निश्चयसें प्रक्षालन करना. यजुर्वेदी, ऋग्वेदी और सामवेदी इन्होंनें कंठसें जनेऊ उतारनेमें तिस जनेऊका त्याग करके नवीन जनेऊ धारण करना.

अथमेखला मौंजीत्रिवृत्समाश्लक्ष्णाकार्याविप्रस्यमेखला त्रिवृत्ताग्रंथितैकेनात्रिभिःपंचभिरेवच मुंजाभावेतुकर्तव्याकुशाश्मंतकबल्वजैः ब्राह्मणस्यभवेद्दंडःपालाशःकेशसंमितः सर्वेषांयज्ञियोवास्यादूर्ध्वनासाग्रसंमितः बटुहस्तेनचतुर्हस्ताहस्तोच्छ्रिताचतुरस्रासोपानांकिताप्रागुदक्प्रवणाकदलीस्तंभाद्यलंकृतावेदिः संपाद्या ॥

अब मेखला और दंड आदि कहताहुं.

“ब्राह्मणकी मेखला त्रिगुणी और सुखस्पर्शवाली मूंजकी करनी. तिस मेखलाकों तीन फेरे घालके पहली गांठ एक फेराकी, दूसरी गांठ तीन फेरोंकी और तीसरी गांठ पांच फेरोंकी इस प्रमाण बांधना. मूंज नहीं मिलैं तौ कुश, अश्मंतक, वल्वज आदि तृणोंकी करनी. ब्राह्मणकों वालोंपर्यंत उंचा पलाश अर्थात् ढाकका दंड होना चाहिये. अथवा सब वर्णोंकों यज्ञियवृक्षका नासिकाके अग्रभागपर्यंत ऊंचा ऐसा दंड होना चहिये.” कुमारके हाथसें चार हाथ लंवी और चार हात चौडी; और एक हाथ उंची और चौकुनी, पैडियोंसें सहित, पूर्व और उत्तरकों उंतरती और केलीके स्तंभोंसें अलंकृत हुई ऐसी वेदी करनी.

अथोपनयनांतर्गतपदार्थेषुविशेषउच्यते वासःपरिधानोत्तरंलौकिकमाचमनंयज्ञोपवीतधारणोत्तरंतुयथाविधि आचमनविधिर्वक्ष्यते एवमाज्यपात्रादुत्तरभागेबटुमाचमय्यप्रणीतापश्चिमदेशरूपतीर्थेनप्रवेश्याचार्याग्न्योर्मध्येननीत्वाचार्यदक्षिणउपवेशयेत् ततोबर्हिरास्तरणादिस्रुवसंमार्गांतेयज्ञोपवीतदानाद्याचमनांतं ततःशिष्यांजलौजलावक्षारणादिसमिदाधानांतंगायत्र्युपदेशांगंबटोःशुचित्वसिद्ध्येअग्नयेसमिधमितिमंत्रएकश्रुत्याप्रयोक्तव्यःततः परिदानाभिवादनांतेआचारप्राप्तंगायत्रीपूजनंकृत्वाऽग्नेरुत्तरदेशेगायत्र्युपदेशःकार्यः अवक्षारणमप्युत्तरदेशे उक्तं प्राङ्मुखआचार्यःप्रत्यङ्मुखायोपविष्टायबटवेगायत्रीमुपदिशेत् ॥

अब यज्ञोपवीतके अंतर्गत पदार्थोंमें विशेष कहताहुं.

वस्त्रोंकों धारण करनेके उपरंत लौकिक आचमन करना. जनेऊकों धारण करनेके उपरंत विधिके अनुसार आचमन करना. आचमनका विधि आगे कहैंगे. इस प्रकार आज्यपात्रके उत्तरप्रदेशमें कुमारसें आचमन कराय प्रणीतापात्रके पश्चिमप्रदेशरूपी तीर्थसें प्रवेश करवाय आचार्य और अग्निके मध्यमेंसें लेजाके आचार्यके दक्षिणतर्फ बैठाना. पीछे कुशाओंके आस्तरण आदिसें स्रुवसंमार्गपर्यंत कर्म करके पीछे जनेऊका दान आदिसें आचमनपर्यंत कर्म करना. पीछे शिष्यकी अंजलीमें जलावक्षारणकर्म आदिसें समिदाधानपर्यंत गायत्रीके उपदेशांगभूत कर्म करना. पीछे कुमारकों शुचित्वकी शुद्धिके अर्थ **“अग्नये समिधम्०”** इस मंत्रका एकवार उच्चार करना. पीछे परिदान और अभिवादनके अंतमें आचारसें प्राप्तरूपी गायत्रीका पूजन करके अग्निके उत्तरप्रदेशमें गायत्रीका उपदेश करना. अवक्षारणकर्मभी अग्नीके उत्तरप्रदेशमें करना ऐसा कहा है. पूर्वाभिमुख ऐसे आचार्यनें पश्चिमकों मुखवाले कुमारके अर्थ गायत्रीका उपदेश करना.

अथोपसंग्रहणप्रकारःउपसंग्रहणंनामामुकप्रवरान्वितामुकगोत्रोमुकशर्माहंभोअभिवादयइत्युक्त्वादक्षिणोत्तरकर्णौवामदक्षिणपाणिभ्यांस्पृष्ट्वा दक्षिणहस्तेनगुरोर्दक्षिणपादंवामेनवामंस्पृष्ट्वाशिरोवमनमिति एवंगुरुषुमातापित्रादिषुचअभिवादनपूर्वकपादस्पर्शात्मकमुपसंग्रहणं वृद्धतरेषुत्वभिवादनमात्रं वृद्धेषुनमस्कारः अशुचिंवमंतमभ्यक्तंस्नानंकुर्वंतंजपादिरतंपुष्पजलभैक्षादिभारवाहंननमेत् तन्नमनेउपवासः शूद्रनतौत्रिरात्रं अंत्यजेकृच्छ्रं देवतागुरुयतिनमनाकरणेउपवासः ॥

अब उपसंहरणप्रकार कहताहुं.

उपसंग्रहण अर्थात् “ अमुक प्रवरोंसें युक्त, अमुक गोत्रवाला और अमुक नामवाला मैं आपकों प्रणाम करता हुं ” ऐसा कहके कुमारनें अपने दाहिने और वाम कानकों वाम और दाहिने हाथसें स्पर्श करके पीछे दाहिने हाथसें गुरुके दाहिने पैरकों और वाम हाथसें गुरुके वाम पैरकों स्पर्श करके शिर नीचे करना इसकों उपसंहरण कहते हैं. ऐसेही गुरु, माता, पिता आदियोंके पैरोंकों अभिवादनपूर्वक स्पर्श करना सो उपसंग्रहण होता है. अत्यंत वृद्धोंकों तौ अभिवादनमात्र करना. वृद्धोंकों नमस्कार करना. अपवित्र, वमन करनेवाला, अभ्यंग किया हुआ, स्नान करनेवाला, जप आदिमें रत, और पुष्प, जल, भिक्षा इन आदिओंका भार वहनेवाला इन्होंकों तिस तिस कालमें प्रणाम नहीं करना. तिन्होंकों प्रणाम किया जावै तौ उपवास करना. शूद्रकों प्रणाम किया जावै तौ तीन रात्रि उपवास करना. नीच जातिकों प्रणाम किया जावै तौ कृच्छ्रप्रायश्चित्त करना. देवता, गुरु, संन्यासी इन्होंकों प्रणाम नहीं करनेमें उपवास करना.

अथप्रत्यभिवादनं तत्रांत्यस्वरःप्लुतःकार्यः तद्यथा आयुष्मान्भवसौम्यदेवदत्ता ३ एकारौकारांतेनाम्नि हरा ३ इ शंभा ३ उ इतिसंध्यक्षरविश्लेषेणपूर्वभागाकारः प्लुतइतिअनुप्रवचनीयार्थभिक्षायांभिक्षांभवान्ददातुभिक्षांभवतीददात्वितिवा भवच्छब्दमध्यमकोभिक्षावाक्य प्रयोगः अन्यभिक्षायामादावंतेवाभवच्छब्दइति ॥

अब प्रत्यभिवादन अर्थात् शिष्यनें नमस्कार किये पीछे गुरुनें तिसकों आशीर्वाद देना सो कहताहुं.

तिस प्रत्यभिवादनविषे अंत्यस्वर प्लुत करना उचित है. सो ऐसा—“आयुष्मान् भव सौम्य देवदत्ता” अर्थ—हे सौम्य देवदत्त, आयुष्मान् होहु. एकार और ऊंकार जिसके अंतमें होवै ऐसे नाममें “हरा ३—इ, शंभा ३—उ” अर्थात् हे हरे, हे शंभो. इस प्रमाण संधियोंके अक्षरोंके वियोगसें पूर्व भागका ‘आ’कार प्लुत होता है. अनुप्रवचनीय होमके अर्थ जो भिक्षा, तिस विषे “भिक्षां भवान् ददातु,” अथवा “भिक्षां भवती ददातु” ऐसा ‘भवत्’शब्द मध्यमें होवै ऐसा भिक्षावाक्य कहना. अनुप्रवचनीय विना दूसरी भिक्षामें आदिमें अथवा अंतमें ‘भवत्’शब्दका प्रयोग करना.

अथोपनयनविवाहादौनिर्विघ्नफलप्राप्त्यर्थमुपसर्गनिरासायवा सपिंडमरणादिनिमित्तकप्रतिकूलनिवृत्त्यर्थंवाविनायकशांतिःकार्या तत्रकालःशुक्लपक्षचतुर्थीगुरुवारःपुष्यश्रवणोत्तरारोहिणीहस्ताश्विनीमृगनक्षत्राणिशस्तानि उपनयनादौतुप्रधानकालानुरोधेनयथासंभवकालोग्राह्यः तत्रामुककर्मणोनिर्विघ्नफलसिद्ध्यर्थमितिवाउपसर्गनिवृत्त्यर्थमितिवामुकसपिंडमरणनिमित्तकाशुचित्वप्रातिकूल्यनिरासार्थमितिवासंकल्पऊह्यः अवशिष्टप्रयोगोन्यत्रज्ञेयः ॥

अब विनायकशांति कहताहुं.

यज्ञोपवीतकर्म और विवाह आदिमें निर्विघ्नरूपी फलकी प्राप्तिके लिये अथवा शुभ और

अशुभसूचक उपद्रवकों दूर करनेके लिये अथवा सपिंड मनुष्यके मरण आदि निमित्तवाले प्रतिकूलकों दूर करनेके लिये विनायकशांति करनी उचित है. **तिसविषे काल कहताहुं.**— शुक्लपक्षकी चतुर्थी, गुरुवार, पुष्य, श्रवण, उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी और मृगशिर ये नक्षत्र श्रेष्ठ हैं. यज्ञोपवीत आदिमें तौ मुख्य कालके अनुरोधसें जैसा मिलै तैसा काल लेना. **शांतिका संकल्प—"अमुककर्मणो निर्विघ्नफलसिद्ध्यर्थं,"** अथवा **"उपसर्गनिवृत्त्यर्थं,"** किंवा **"अमुकसपिंडमरणनिमित्तकाशुचित्वप्रातिकूल्यनिरासार्थं,"** इस प्रकार जैसा निमित्त होवै तिसके अनुसार संकल्पमें उच्चार करना. बाकी रहा प्रयोग दूसरे (कौस्तुभ आदि) ग्रंथमें देखना.

विवाहोपनयनादिष्वभ्युदयकर्मस्वादौग्रहयज्ञंकुर्यात् श्राद्धातिरिक्तेष्वनाभ्युदयिकेष्वपि शांत्यादिकर्मसुग्रहानुकूल्यकामोग्रहयज्ञंकुर्यात् अरिष्टनिरासार्थंउत्पातेषुशांतिस्थानेष्वप्रधानोपिग्रहमखउक्तःप्रधानकर्मणःपूर्वमव्यवहितेव्यवहितेवाकालेकुर्यात् व्यवहितपक्षेसप्तादिनाधिकव्यवधानंनकार्यं प्रतिग्रहंदशावरप्रधानाहुतिसंख्यायामेकएवऋत्विक् दशाधिकपंचाशत्पर्यंतसंख्यायांचत्वारऋत्विजः ततऊर्ध्वंशतावरहोमेष्टौऋत्विजोनवमआचार्यः तत्राचार्यआचार्यकर्मकृत्वाआदित्यायजुहुयात् अष्टभ्यःसोमादिभ्योष्टौऋत्विजोजुहुयुः ऋत्विक्चतुष्टयपक्षे द्वाभ्यांग्रहाभ्यांएकैकोजुहुयात् आचार्योर्कायताम्रादिमयीषुप्रतिमासुसर्वासुसौवर्णीषुवाफलेष्वक्षतपुंजेषुवाआदित्यादिपूजनं होमसंख्यानुसारेणकुंडस्यस्थंडिलस्यवाग्रहवेदेश्चहस्तादिमानं तत्रप्रधानांगाहुतीनांपंचाशदवरसंख्यत्वेरत्निमितंकुंडं शतावरत्वेअरत्निमितं सहस्रावरत्वेहस्तमितं अयुतादिहोमेहस्तद्वयं लक्षहोमेचतुर्हस्तं तत्रकृतमुष्टिःकरोरत्निः मुक्तकनिष्ठिकःकरः अरत्निः चतुर्विंशत्यंगुलोहस्तः यवोनचतुस्त्रिंशदंगुलानिहस्तद्वयं अष्टचत्वारिंशदंगुलानिहस्तचतुष्टयं कुंडेमेखलायोनिनाभिखातादिमानंग्रंथांतरेभ्योज्ञेयं इदंकुंडादिमानंसर्वत्रज्ञेयं समिच्चर्वाज्यंद्रव्यं अर्कःपलाशःखदिरश्चापामार्गोथपिप्पलः औदुंबरःशमीदूर्वाकुशोर्कादेःक्रमात्समित् केचित्तिलानपिआहुः अर्कादिप्रधानहोमसंख्यादशांशेनाधिदेवताप्रत्यधिदेवतानां होमः अधिदेवताद्यर्धसंख्ययाक्रतुसंरक्षकक्रतुसाद्गुण्यदेवतानां शांत्यंगभूतेग्रहयज्ञेबलिदानं कुर्वंतिअन्यत्रग्रहमखेबालिदानंनकुर्वीतिप्रधानभूतायाएकाहुतेरेकविप्रभोजनंश्रेष्ठं शताहुतेरेकविप्रभोजनंमध्यमं सहस्राहुतेरेकविप्रभोजनंजघन्यं सुविस्तरप्रयोगादिकमन्यत्रइतिग्रहयज्ञः॥

अब ग्रहमख (ग्रहयज्ञ) कहताहुं.

विवाह और यज्ञोपवीत आदि मंगलकर्मोंमें प्रथम ग्रहयज्ञ करना. श्राद्धसें वर्जित मंगलरहित शांति आदि कर्मोंमेंभी ग्रहोंके अनुकूलपनेकी कामनावाले मनुष्यनें ग्रहयज्ञ करना.. शांतिके स्थान ऐसे जो उत्पात आदि तिन्होंके होनेमें यद्यपि वह मुख्ये नहीं तौभी अरिष्टकों दूर करनेके लिये ग्रहयज्ञ करना ऐसा कहा है, इस लिये प्रधानकर्मके पहले अव्यवहित अथवा व्यवहित कालमें करना. व्यवहित पक्षमें सात दिनोंसें अधिक व्यवधान नहीं करना. प्रतिग्रहके मुख्य आहुतियोंकी संख्या दशके अंदर होवै तौ एकही ऋत्विज करना. दशसें अधिक और पंचाश आहुतिपर्यंत संख्यामें चार ऋत्विज करने. पंचाशसें उपर १००

आहुतियोंपर्यंत होम करनेमें आठ ऋत्विज और नवमा आचार्य करना. तिसमें आचार्यनें आचार्यकर्म करके सूर्यका होम करना. सोम आदि आठ ग्रहोंका होम आठ ऋत्विजोंनें करना. चार ऋत्विज होवैं तौ दो दो ग्रहोंका होम एक एक ऋत्विजनें करना, और आचार्यनें सूर्यका होम करना. तांवा आदिके प्रतिमाओंमें अथवा सोनाकी सब प्रतिमाओंमें अथवा फलोंमें अथवा चावलोंके समूहोंमें सूर्य आदि नवग्रहोंकी पूजा करनी. होमकी संख्याके अनुसार कुंड अथवा स्थंडिल अथवा ग्रहोंकी वेदिका इन आदिका हाथ आदिक प्रमाण लेना. प्रधानदेवताकी आहुति और अंगदेवताकी आहुति मिलकर ५० संख्या होवै तौ **रत्नि**परिमित कुंड बनाना. १०० आहुतियोंके अंदर होनेमें **अरत्नि**परिमित कुंड बनाना. हजार आहुतियोंके अंदर होनेमें एक हाथ परिमित कुंड बनाना. दश हजार आदि आहुतियोंके होममें दो हाथका कुंड बनाना. और लक्ष आहुतियोंके होममें चार हाथका कुंड बनाना. बंधी हुई मुष्टिवाला हाथ **रत्नि** कहाता है. छुटी हुई कनिष्ठिका अंगुली तिस्सें युक्त जो मुष्टि तिस मुष्टिसें युक्त ऐसा जो हाथ सो **अरत्नि** कहाता है. २४ अंगुलोंका हाथ होता है. एक जवसे कम ऐसे ३४ अंगुलोंके दो हाथ यहां लिये हैं. ४८ अंगुलोंवाले यहां चार हाथ हैं. कुंडकी मेखला, योनि, नाभि, खोदना इन आदिका प्रमाण दूसरे ग्रंथसें जानना. यह कुंड आदिका मान सब जगह जानना. समिध, चरु, घृत, ये द्रव्य हैं. आक, ढाक, खैर, ऊंगा, पीपल, गूलर, जांटी, दूब, डाभ ये नव समिध क्रमसें सूर्य आदि ग्रहोंकी हैं. कितनेक ग्रंथकार यहां तिलभी लेने ऐसा कहते हैं. सूर्य आदि प्रधानदेवतोंके होमकी संख्याके दशमे हिस्सेकरके अधिदेवता और प्रत्यधिदेवतोंका होम करना. अधिदेवता आदिके होमकी संख्यासें आधी संख्याकरके क्रतुसंरक्षक और क्रतुसाद्गुण्य देवतोंका होम करना. शांतिके अंगभूत ग्रहयज्ञमें बलिदान करना. शांतिसें व्यतिरिक्त ग्रहयज्ञमें बलिदान नहीं करना. प्रधानभूत ऐसी एक आहुति होवै तौ एक ब्राह्मणकों भोजन देना श्रेष्ठ है. १०० आहुति होनेमें एक ब्राह्मणकों भोजन देना मध्यम है. १००० आहुति होनेमें एक ब्राह्मणकों भोजन देना अधम है. विस्तारसहित प्रयोग आदिका प्रकार दूसरे ग्रंथमें देख लेना. ऐसा ग्रहयज्ञ समाप्त हुआ.

कुमारस्योपनयनकालेकन्यायाविवाहेवाबृहस्पत्यानुकूल्याभावेशौनकाद्युक्ताशांतिःकार्या अस्यकुमारस्योपनयनेअस्याःकन्यकायाविवाहेवाबृहस्पत्यानुकूल्यसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंबृहस्पतिशांतिंकरिष्यइतिसंकल्प्याचार्यंवृणुयात् स्थंडिलेईशान्यांयथाविधिस्थापितेश्वेतकलशे पंचगव्यकुशोदकविष्णुक्रांताशतावरीप्रमुखौषधिप्रक्षेपपूर्णपात्रनिधानांतेहरिताक्षतनिर्मितदीर्घचतुरस्रपीठेहैमींगुरुप्रतिमांप्रतिष्ठाप्यस्थंडिलेग्निस्थापनादि अन्वाधाने बृहस्पतिमश्वत्थसमिदाज्यसर्पिर्मिश्रपायसैःसाज्येनमिश्रितयवव्रीहितिलेनचप्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशताहुतिभिःशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि आज्यभागांतेप्रतिमायांषोडशोपचारैर्गुरुपूजा तत्रपीतवस्त्रयुग्म

---

१ सूर्यकी तांबाकी, चंद्रमाकी स्फटिक मणीकी, मंगलकी लाल चंदनकी, बुधकी सोनाकी, बृहस्पतिकी सोनाकी, शुक्रकी चांदीकी, शनिकी लोहाकी, राहुकी शीसाकी, केतुकी कांसीकी ऐसी ग्रहोंकी प्रतिमा बनानी.

पीतयज्ञोपवीतपीतचंदनपीताक्षतपीतपुष्पघृतदीपदध्योदननैवेद्यार्पणांते माणिक्यंसुवर्णंवा दक्षिणांदत्वाग्रहमखोक्तरीत्याकुंभानुमंत्रणांते बृहस्पतिमंत्रेणदधिमध्वाक्तसमिदाज्यगृहसिद्ध पायसमिश्रितयवाद्यैर्यथान्वाधानंहोमः होमशेषंसमाप्यगंधादिभिर्बृहस्पतिंसंपूज्यपीतगंधाक्षतपुष्पफलयुतताम्रपात्रस्थजलेनार्घ्यंदद्यात् तत्रमंत्रः गंभीरदृढरूपांगदेवेज्यसुमतेप्रभो नमस्तेवाक्पतेशांतगृहाणार्घ्यंनमोस्तुते प्रार्थयेत् भक्त्यायत्तेसुराचार्यहोमपूजादिसत्कृतं तत्त्वंगृहाणशांत्यर्थंबृहस्पतेनमोनमः जीवोबृहस्पतिःसूरिराचार्योगुरुरंगिराः वाचस्पतिर्देवमंत्रीशुभं कुर्यात्सदाममेति विसर्जनप्रतिमादानांतेकुमारादियुतयजमानाभिषेकः तत्रमंत्राःआपोहिष्ठेतितिस्रः तत्त्वायामि० ३ स्वादिष्ठया० ३ समुद्रज्येष्ठाः० ४ इदमापःप्रवह० १ तामग्निवर्णां० १ याओषधीः० १ अश्वावतीर्गोमतीर्न० १ यद्देवादेवहेडनमित्याद्याःकूष्मांडमंत्राः पुनर्मनःपुनरायुरित्यंतास्तैत्तिरीयशाखायांप्रसिद्धाःकौस्तुभादौलिखिताएतैरभिषिच्यविप्रान्भोजयेदिति इतिबृहस्पतिशांतिः ॥

अब बृहस्पतीकी शांति कहताहुं.

कुमारके यज्ञोपवीतकालमें अथवा कन्याके विवाहकालमें बृहसति अनुकूल नहीं होवै तौ शौनक आदिनें कही शांति करनी. सो ऐसी,–“**अस्य कुमारस्योपनयने अस्याः कन्यकाया विवाहे वा बृहस्पत्यानुकूल्यसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं बृहस्पतिशांतिं करिष्ये.**” ऐसा संकल्प करके आचार्यकों वरना. स्थंडिलसें ऐशानी दिशामें विधिके अनुसार स्थापित किये श्वेत कलशमें पंचगव्य, कुशोदक, विष्णुक्रांता, शतावरी इन आदि ओषधि डालके तिसपर पूर्णपात्र स्थापित करके पीछे पीले अक्षतोंसें रचे हुये लंबे चौकुंटे पीठपर सोनाकी बनाई ऐसी बृहसतिकी प्रतिमा स्थापित करके स्थंडिलपर अग्निस्थापन आदि कर्म करना. सो ऐसा:— “**बृहस्पतिमश्वत्थसमिदाज्यसर्पिर्मिश्रपायसैः साज्येनमिश्रितयवव्रीहितिलेन च प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशताहुतिभिः शेषेणस्विष्टकृतं**” इत्यादिक अन्वाधान करके आज्यभागपर्यंत कर्म करके प्रतिमामें षोडशोपचारोंसें बृहस्पतिकी पूजा करनी. तहां पीले दो वस्त्र, पीला जनेऊ, पीला चंदन, पीले अक्षत, पीले पुष्प, घृतका दीपक, दही चावलका नैवेद्य इन पदार्थोंकों अर्पण करके अंतमें माणिक्यकी अथवा सोनाकी दक्षिणा देके ग्रहयज्ञमें कही रीतिसें कलशका अभिमंत्रण किये पीछे बृहस्पतिके मंत्रसें दही और शहदमें भीजी हुई समिध, घृत, घरमें सिद्ध करी खीर इन्होंसें मिश्रित किये जव आदि करके अन्वाधानके अनुसार होम करना. पीछे होमशेष समाप्त करके चंदन आदिसें बृहस्पतिकी पूजा करके तांबाके पात्रमें उदक लेके तिसमें पीला चंदन, पीले चावल, पीले फूल, पीला फल डालके तिस जलसें अर्घ्य देना. तिसका मंत्र–“**गंभीरदृढरूपांग देवेज्य सुमते प्रभो ॥ नमस्ते वाक्पते शांत गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते.**” पीछे प्रार्थना करनी. तिसका मंत्र–“**भक्त्या यत्ते सुराचार्य होमपूजादि सत्कृतम् ॥ तत्त्वं गृहाण शांत्यर्थं बृहस्पते नमोनमः ॥ जीवो बृहस्पतिः सूरिराचार्यो गुरुरंगिराः ॥ वाचस्पतिर्देवमंत्री शुभं कुर्यात्सदा मम**” ऐसी प्रार्थना करके देवतोंका विसर्जन और प्रतिमाका दान करके पीछे कुमार आदिसें युत ऐसे यजमानपर अभिषेक करना. अभिषेकके मंत्र–“**आपोहिष्ठा० ऋचा ३, तत्त्वयामि० ऋचा ३, स्वादिष्ठया०**

ऋचा ३, समुद्रज्येष्ठा० ऋचा ४, इदमापःप्रवह० ऋचा १ तामग्निवर्णां० ऋचा १, या ओषधी० ऋचा १, अश्वावतीर्गोमतीर्न० ऋचा १, यद्देवादेवहेडनं० ” इस आदिसें कूष्मांडमंत्र “ पुनर्मनः पुनरायुः० ” इस मंत्रपर्यंत तैत्तिरीयशाखामें प्रसिद्ध हुये कौस्तुभ आदि ग्रंथोंमें लिखे हैं. इन मंत्रोंसें अभिषेक करके ब्राह्मणोंको भोजन करवाना. ऐसी बृहस्पतिकी शांति समाप्त हुई.

अथोपनयनादौसंकल्पाः तत्रोपनयनात्पूर्वेद्युराचार्यो ममोपनेतृत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थंकृच्छ्रत्रयंतत्प्रत्याम्नायगोनिष्क्रयीभूतयथाशक्तिरजतद्रव्यदानेनाहमाचरिष्ये तथाद्वादशाधिकसहस्रगायत्रीजपमुपनेतृत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थंकरिष्येइतिसंकल्पयेत् यदिपूर्वसंस्काराअतीतास्तदा अस्यकुमारस्यपुंसवनादीनामथवाजातकर्मादीनांचौलांतानांसंस्काराणांकालातिपत्तिजनितप्रत्यवायपरिहारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रतिसंस्कारमेकैकांभूर्भुवःस्वःस्वाहेतिसमस्तव्याहृत्याज्याहुतिंहोष्यामिइतिसंकल्प्याग्निस्थापनेध्माधानादिपाकयज्ञतंत्रसहितावह्निस्थापनाज्यसंस्कारपात्रसंमार्गमात्रसहितावाऽतीतसंस्कारसमसंख्यसमस्तव्याहृत्याज्याहुतीर्जुहुयात् ततोस्यकुमारस्यपुंसवनानवलोभनसीमंतोन्नयनजातकर्मनामकर्मसूर्यावलोकननिष्क्रमणोपवेशनान्नप्राशनचौलसंस्काराणांलोपनिमित्तप्रत्यवायपरिहारार्थं प्रतिसंस्कारंपादकृच्छ्रंप्रायश्चित्तंचौलस्याधंकृच्छ्रंबुद्धिपूर्वकलोपेप्रतिसंस्कारमर्धकृच्छ्रंचूडायाःकृच्छ्रंतत्प्रत्याम्नायगोनिष्क्रयीभूतयथाशक्तिरजतद्रव्यदानेनाहमाचरिष्ये चौलस्योपनीत्यासहकरणस्यकुलधर्मप्राप्तत्वेकालातिपत्तिहोमंचौललोपप्रायश्चित्तंचनकार्यं केचित्संस्कारलोपप्रायश्चित्तंबटुनाकारयंति ततोबटुर्ममकामचारकामवादकामभक्षादिदोषपरिहारद्वारोपनेयत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थं कृच्छ्रत्रयप्रायश्चित्तंतत्प्रत्याम्नायगोनिष्क्रयीभूतयथाशक्तिरजतदानद्वाराआचरिष्येइतिसंकल्पयेत् निष्कंनिकार्धंनिष्कपादंनिष्कपादार्धंवारजतंगोमूल्यंदेयंनतुन्यूनंअष्टगुंजमाषरीत्याचत्वारिंशन्माषोनिष्कइत्युक्तंततःप्रायश्चित्तेकृतेपश्चादतीतमपिकर्मवै कार्यमित्येकआचार्यानेत्यन्येपिविपश्चित इतिवचनाज्जातकर्मादिसंस्काराःकार्यानकार्याइतिपक्षद्वयंतत्रप्रायश्चित्तेनप्रत्यवायपरिहारेपिसंस्कारजन्यापूर्वोत्पत्त्यर्थंसंस्कारानुष्ठानपक्षेसंकल्पः पत्न्याकुमारेणचसहोपविश्यदेशकालौसंकीर्त्यास्यकुमारस्यगर्भांबुपानजनितदोषनिबर्हणायुर्मेधाभिवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवनोनिबर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंअतिक्रांतंजातकर्म तथाबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणायुरभिवृद्धिव्यवहारसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंनामकर्म आयुरभिवृद्धिद्वाराश्रीपर० सूर्यावलोकनं आयुःश्रीवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वाराश्रीपर० निष्क्रमणं आयुरभिवृद्धिद्वारा० उपवेशनंमातृगर्भमलप्राशनशुद्ध्यन्नाद्यब्रह्मवर्चसतेजइंद्रियायुरभिवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वाराश्रीपम० अन्नप्राशनंचाद्यकरिष्ये बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणेनबलायुर्वर्चोभिवृद्धिद्वाराश्रीप० चूडाकर्मद्विजत्वसिद्ध्यावेदाध्ययनाधिकारार्थंउपनयनंचश्वःकरिष्ये जातादिसर्वसंस्कारांगत्वेनपुण्याहवाचनंमातृकापूजनंनांदीश्राद्धंकरिष्ये उपनयनांगत्वेनमंडपदेवतास्थापनंकुलदेवतास्थापनंचकरिष्ये इतिस्वस्वगृह्यग्रंथानुसारेणसंकल्प्यनांदीश्राद्धांतंतंत्रेण अनेकोद्देशेनसकृदंगानुष्ठानंतंत्रं कृत्वामंडपदेवतास्थापनादिकंबटुपितृभ्यांसुहृत्कृतवस्त्रदानांतंकृत्वान्नप्राशनांताःसंस्कारायथा

गृह्यंपूर्वदिनेकार्याः चौलोपनयनेपरदिनेकार्ये सर्वेषांसद्यःकरणेपूर्वोक्तसर्वसंकल्पवाक्यांते
उपनयनंचाद्यकरिष्येइतिसंकल्पः संस्काराणामकरणपक्षेचूडाकर्मोपनयनेसंकल्प्योभयांगत्वेन
पुण्याहवाचनंनांदीश्राद्धंउपनयनांगत्वेनमंडपदेवतास्थापनंकुलदेवतास्थापनं करिष्ये इतिसं-
कल्पः नांदीश्राद्धांतेपूर्वपूजितमातृकासहितमंडपदेवतास्थापनं ततः पूर्वोक्तरीत्यावेदिनिर्माणं
इतिपूर्वदिनकृत्यं ॥

अब यज्ञोपवीत आदि संस्कारोंके समयमें संकल्प करनेका सो कहताहुं.

तहां यज्ञोपवीतकर्मके पहले दिन आचार्यनें **"ममोपनेतृत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थं कृच्छ्रत्रयं**
तत्प्रत्याम्नायगोनिष्क्रयीभूतयथाशक्तिरजतद्रव्यदानेनाहमाचरिष्ये," "तथा द्वादशाधिक-
सहस्रगायत्रीजपमुपनेतृत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थं करिष्ये," ऐसा संकल्प करना. जो पहले
संस्कार नहीं किये गये होवैं तौ **"अस्य कुमारस्य पुंसवनादीनामथवा जातकर्मादीनां चौलां-**
तानां संस्काराणां कालातिपत्तिजनितप्रत्यवायपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रतिसंस्कार-
मेकैकां भूर्भुवःस्वःस्वाहेति समस्तव्याहृत्याज्याहुतिं होष्यामि," ऐसा संकल्प करके अ-
ग्निस्थापन, इध्मास्थापन आदि पाकयज्ञके तंत्रसहित अथवा अग्निस्थापन, आज्यसंस्कार, पात्र-
संमार्ग इन्होंसें मात्र सहित ऐसे और प्रतिसंस्कारकी एक इस प्रकार जितने संस्कार अतीत हुए
होवैं तितनी संख्यावाली समस्तव्याहृतिमंत्रोंसें घृतकी आहुतियोंका होम करना. पीछे, **"अस्य**
कुमारस्य पुंसवनानवलोभनसीमंतोन्नयनजातकर्मनामकर्मसूर्यावलोकननिष्क्रमणोपवेशना-
न्नप्राशनचौलसंस्काराणां लोपनिमित्तप्रत्यवायपरिहारार्थं प्रतिसंस्कारं पादकृच्छ्रं प्रायश्चित्तं
चौलस्यार्धकृच्छ्रं बुद्धिपूर्वकलोपे प्रतिसंस्कारं अर्धकृच्छ्रं चूडाया, कृच्छ्रं तत्प्रत्याम्नायगो-
निष्क्रयीभूतयथाशक्तिरजतद्रव्यदानेनाहमाचरिष्ये." चौलसंस्कार यज्ञोपवीतसंस्कारके साथ
करनेका कुलधर्म होवै तौ कालके अतिक्रमणका होम और चौलकर्मके लोपसंबंधी प्रायश्चित्त
नहीं करना. कितनेक पंडित संस्कारलोपका प्रायश्चित्त कुमारकेद्वारा कराते हैं. पीछे कुमारनें,
"मम कामचारकामवादकामभक्षादिदोषपरिहारद्वारोपनेयत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थं कृच्छ्रत्रयप्रा-
यश्चित्तं तत्प्रत्याम्नायगोनिष्क्रयीभूतयथाशक्तिरजतदानद्वारा आचरिष्ये," ऐसा संकल्प क-
रना. निष्क, आधा निष्क, चौथाई निष्क अथवा निष्कका आठमा हिस्सापरिमित चांदी
गौका मोल देना, इस्सें कम नहीं देना. आठ चिरमठियोंके मासाकी रीतिसें ४० मासोंका
निष्क होता है, ऐसा कहा है. पीछे, "प्रायश्चित्त किया तौभी अतीतकर्मभी निश्चय करके
करना ऐसा कितनेक आचार्य कहते हैं. दूसरे आचार्य प्रायश्चित्त किये पीछे अतीत कर्म
नहीं करना ऐसा कहते हैं" इस वचनसें प्रायश्चित्त किया होवै तौ जातकर्म आदि संस्कार
करने अथवा नहीं करने ऐसे दो पक्ष हैं. तहां प्रायश्चित्त करके पापके दूर होनेमेंभी संस्कार-
जन्य पुण्य उत्पन्न होनेके लिये संस्कार करना होवै तौ तिस पक्षमें संकल्प करने. सो ऐसे;—
पत्नी और कुमारसहित यजमाननें बैठके देशकालका उच्चार करके, **"अस्य कुमारस्य ग-**
र्भाम्बुपानजनितदोषनिबर्हणायुर्मेधाभिवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्य-
र्थं अतिक्रांतं जातकर्म तथा बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणायुरभिवृद्धिव्यवहारसिद्धिद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं नामकर्म आयुरभिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सूर्यावलोकनं, आयुःश्रीवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं निष्क्रमणं आयुरभिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं उपवेशनं, मातृगर्भमलप्राशनशुद्ध्यन्नाद्यब्रह्मवर्चसतेज इन्द्रियायुरभिवृद्धिबीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अन्नप्राशनं चाद्यकरिष्ये, बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणबलायुर्वर्चोभिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं चूडाकर्म द्विजत्वसिद्ध्या वेदाध्ययनाधिकारार्थं उपनयनं च श्वः करिष्ये, जातादिसर्वसंस्कारांगत्वेन पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नांदीश्राद्धं च करिष्ये, उपनयनांगत्वेन मंडपदेवतास्थापनं कुलदेवतास्थापनं च करिष्ये,'' इस प्रकार अपने अपने गृह्यग्रंथके अनुसार संकल्प करके नांदीश्राद्धांत कर्म एकतंत्रसें करना. अनेकोंके उद्देशकरके एकहीवार अंगभूत कर्मका अनुष्ठान करना सो तंत्र होता है. मंडपदेवतास्थापन आदि ले कुमारके माता पिता और मित्रकृत वस्त्रदानपर्यंत कर्म करके अन्नप्राशनपर्यंत सब संस्कार अपने गृह्यसूत्रके अनुसार पूर्व दिनमें करने. क्षौरकर्म और यज्ञोपवीतकर्म दूसरे दिन करने. सब संस्कार यज्ञोपवीतसंस्कारके दिन करने होवैं तौ पहले कहे सब संकल्पोंके वाक्योंके अंतमें, **''उपनयनं चाद्य करिष्ये,''** ऐसा संकल्प करना. संस्कार नहीं करने ऐसा पक्ष होवै तौ चौलकर्म और यज्ञोपवीतका संकल्प करके **'' उभयांगत्वेन पुण्याहवाचनं नांदीश्राद्धं उपनयनांगत्वेन मंडपदेवतास्थापनं कुलदेवतास्थापनं च करिष्ये,''** ऐसा संकल्प करना. नांदीश्राद्धके अंतमें पूर्वपूजित मातृकासहित मंडपदेवताका स्थापन करना. पीछे पूर्वोक्त रीतिसें वेदि रचनी. ऐसा यज्ञोपवीत कर्मके पूर्व दिनका कृत्य समाप्त हुआ.

ततःपरद्दिनेतिक्रांतचौलंकृत्वापूर्वंजातचौलंत्वभ्यंगस्नानेनस्नापयित्वामात्रासहभोजयेत् तदाब्रह्मचारिभ्योभोजनंदेयमित्याचारः ततोदेशकालौसंकीर्त्यास्यकुमारस्यद्विजत्वसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंगायत्र्युपदेशंकर्तुंतत्प्राच्यांगभूतंवापनादिकरिष्यइतिसंकल्प्य वापनादिकुर्यात् मुख्यशिखान्यशिखानांचौलेधृतानामत्रवापनं ततःस्नातमहतवस्त्रंबद्धशिखंकृतमंगलतिलकंबटुंकुर्यः मौहूर्तिकंसंपूज्यतदुक्तेसुमुहूर्तेआचार्योवेद्यांप्राङ्मुखउपविष्टोंतःपटमपसार्यबटुमुखमीक्षेत कृतनमस्कारांतेस्वांकेकुर्वीत ततोविप्रायथाचारंमंत्रैरुभयोःशिरस्यक्षतान्क्षिपेयुः एवंयथागृह्यमुपनयनप्रयोगंज्ञात्वानुष्ठेयं सर्वत्रबटुनागायत्र्यादिमंत्रान्वाचयन्संधिकृतंवर्णविकारंनान्यथाकुर्यात् प्रयोगशेषंसमाप्यद्वेशतेशतंयथाशक्तिवाब्राह्मणभोजनंसंकल्प्यविप्रेभ्योभूयसींदक्षिणांदद्यात् ततोब्रह्मचारीनूतनभिक्षाभाजनेमातरंमातृष्वस्रादिकांवा भिक्षांभवतीददात्विति अनुप्रवचनीयार्थंतंडुलान्याचेत पितरंभिक्षांभवान्ददात्वितियाचेत भैक्ष्यमाचार्यायनिवेद्यमध्यान्हसंध्यामुपास्यगुरुसन्निधावहःशेषंनयेत् तद्दिनेमध्यान्हसंध्याविकल्पितेत्यन्ये ब्रह्मयज्ञस्तुद्वितीयदिनमारभ्यगायत्र्याकार्यःअनुप्रवचनीयहोमारंभात्पूर्वं गर्जितवृष्ट्यादिसंभावनायांदिवैवचरुअपणांतंकृत्वास्तमितेजुहुयात् पाकाभावेगर्जितादिनिमित्तेतुशांतिंकृत्वापाकःकार्यः ॥

इसके अनंतर दूसरे दिनमें अतिक्रांत हुआ चौलकर्म करना. और पूर्व दिनमें जो बटुका चौलसंस्कार हुआ होवै तौ तिसकों अभ्यंगस्नान करवाय माताके साथ भोजन करवाना. तिसी कालमें ब्रह्मचारियोंकों भोजन देना उचित है ऐसा आचार है. पीछे देश और का-

लका उच्चार करके **“ अस्य कुमारस्य द्विजत्वसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गायत्र्युपदेशं कर्तुं तत्प्राच्यांगभूतं वापनादि करिष्ये ”** ऐसा संकल्प करके मुंडन आदि करना. मुख्य शिखा धारण करके अन्य चौलकर्ममें धारण करी हुई शिखाओंका यहां मुंडन कराना. पीछे वटुकों स्नान करवायके और नूतन वस्त्र परिधान करवायके शिखाबंधन करके मांगलिक तिलक लगाना. पीछे ज्योतिषीकी पूजा करके तिसनें कहे हुये सुंदर मुहूर्तपर वेदीविषे पूर्वाभिमुख स्थित हुए आचार्यनें भीतरके वस्त्रकों दूर करके कुमारके मुखकों देखना. पीछे कुमारनें नमस्कार किये पीछे तिस कुमारकों अपने गोदपर बैठाना. पीछे ब्राह्मणोंनें आचारके अनुसार मंत्रोंसें दोनोंके शिरपर अक्षता डालनी. ऐसे गृह्यसूत्रके अनुसार यज्ञोपवीतका प्रयोग जानकर अनुष्ठान करना उचित है. सब जगह कुमारसें गायत्री आदि मंत्रोंका उच्चारण करायके संधिकृत वर्णविकारकों अशुद्ध नहीं उच्चारना. प्रयोगशेष समाप्त करके २०० अथवा १०० अथवा अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणभोजनका संकल्प करके ब्राह्मणोंकों भूयसी दक्षिणा देनी. पीछे ब्रह्मचारीनें नवीन भिक्षाके पात्रमें माता अथवा मावसी आदिके पास, **“ भिक्षां भवती ददातु ”** ऐसा वाक्य कहके अनुप्रवचनीय होमकेलिये चावलोंकी याचना करनी. पिताके आगे **“ भवान् भिक्षां ददातु ”** ऐसा वाक्य कहके याचना करनी. पीछे वह भिक्षा गुरुकों निवेदन करनी. पीछे मध्यान्हकी संध्या करके शेष रहा दिन गुरुके समीप व्यतीत करना. यज्ञोपवीतकर्मके दिन मध्यान्हकी संध्या करनी अथवा नहीं करनी ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. ब्रह्मयज्ञ तौ दूसरे दिनसें आरंभ करके गायत्रीसें करना. अनुप्रवचनीय होमके आरंभके पहले गर्जना, पर्जन्यवृष्टि आदिका संभव होवै तौ दिनमेंही चरुश्रपणपर्यंत कर्म करके सूर्यके अस्तके पीछे होम करना. पाकके अभावमें गर्जना आदि निमित्तविषे तौ शांति करके पाक करना उचित है.

अथशांतिप्रयोगः ब्रह्मौदनपाकात्पूर्वंगर्जितेनसूचितस्यब्रह्मचारिकर्तृकाध्ययनविघ्नस्यनिरासद्वाराश्रीपर०शांतिंकरिष्यइतिसंकल्प्यस्वस्तिवाचनाचार्यवरणेकृतेआचार्योग्निंप्रतिष्ठाप्य चक्षुषीआज्येनेत्यंते सवितारमष्टोत्तरशतसंख्यसाज्यपायसाहुतिभिर्गायत्रीमंत्रेणशेषेणस्विष्टकृतमित्यादिप्रायश्चित्तहोमांतेगायत्र्यासवितारमाज्येनेतिअन्वाधायगृहसिद्धपायसहोमांते बृहस्पतिसूक्तजपः अंतेआचार्यायधेनुंदत्वाशतंयथाशक्तिवाविप्रान्भोजयिष्येइतिसंकल्पयेत् ॥

अब शांतिका प्रयोग कहताहुं.

शांतिका संकल्प.—**“ ब्रह्मौदनपाकात्पूर्वं गर्जितेन सूचितस्य ब्रह्मचारिकर्तृकाध्ययनविघ्नस्य निरासद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शांतिं करिष्ये, ”** ऐसा संकल्प करके स्वस्तिवाचन और आचार्यवरण किये पीछे आचार्यनें अग्निस्थापन करके अन्वाधान करना. सो ऐसा,—**“ चक्षुषीआज्येनेत्यंते सवितारं अष्टोत्तरशतसंख्यसाज्यपायसाहुतिभिर्गायत्रीमंत्रेण शेषेण स्विष्टकृतं, ” “ प्रायश्चित्तहोमांते गायत्र्या सवितारमाज्येन, ”** इस प्रकार अन्वाधान करके घरमें सिद्ध किये खीरका होम किये पीछे बृहस्पतिसूक्तका जप करना. अंतमें आचार्यकों गोदान देके, **“शतं यथाशक्ति वा विप्रान् भोजयिष्ये, ”** ऐसा ब्राह्मणभोजनका संकल्प करना.

मेधाजननात्पूर्वकालिकाग्निकार्यंयावत्अग्निनाशेउपनयनाहुतिभिः कटिसूत्रधारणादिमाणवकसंस्कारावक्षारणाग्निकार्यगायत्र्युपदेशरहिताभिःपूर्वोत्तरतंत्रसहिताभिरग्निमुत्पाद्यतत्रानुप्रवचनीयपूर्वभाव्यग्निकार्यंकृत्वानुप्रवचनीयहोमंकृत्वा मेधाजननात्प्राक्तनान्यग्निकार्याणि कृत्वामेधाजननंकार्यमितिकौस्तुभेउपपादितं नष्टोपनयनाग्नेःपुनरुत्पत्तिहोमेविनियोगइतिविशेषइतिचोक्तं ममतुउपनयनाहुतिभिरग्निमुत्पाद्यतत्रमेधाजननपूर्वभाव्यग्निकार्याणिकृत्वामेधाजननंकार्यंअनुप्रवचनपूर्वभाव्यग्निकार्यमनुप्रवचनीयहोमश्चनकार्यइतिभाति गायत्र्युपदेशानुप्रवचनीयमेधाजननानांत्रयाणां समप्रधानभावेनाध्ययनांगत्वादग्नेस्त्रितयांगत्वात्कौस्तुभोक्तरीत्यागायत्र्युपदेशतत्पूर्वाग्निकार्यावृत्त्यभाववदनुप्रवचनीयतत्पूर्वाग्निकार्ययोरावृत्त्यभावौचित्यात्नह्यग्निष्टोमांगपशुत्रयस्यांगेयूपेपशुद्वयानुष्ठानानंतरंनष्टेतृतीयपश्वर्थंयूपोत्पादनेद्वितीयपश्वनुष्ठानमप्यावर्तते अत्रसदसत्सद्भिर्विचार्यानुष्ठेयं सायंसंध्याग्निकार्येकृतेनुप्रवचनीयहोमंब्रह्मचारी कुर्यात् बटोरशक्तौचरुश्रपणांतमन्यःकुर्यात् होममात्रंबटुःकुर्यात् हुतचरुशेषेणत्र्यवरब्राह्मणभोजनं ॥

मेधाजननके पूर्वकालमें होनेवाला जो अग्निकार्य तिसके होनेविना उपनयनाग्नि नष्ट होवै तौ कटिसूत्रधारण इत्यादिक कुमारके संस्कार, अवक्षारण, अग्निकार्य, गायत्र्युपदेश इन्होंके विना और पूर्वोत्तर तंत्रसहित यज्ञोपवीतसंबंधी आहुतियोंसें अग्नि उत्पन्न करके तिस अग्निपर अनुप्रवचनीयहोमके पहले होनेवाला अग्निकार्य करके पीछे अनुप्रवचनीयहोम करके मेधाजननके पहले अग्निकार्य करके मेधाजनन करना, ऐसा कौस्तुभमें कहा है. और **"नष्टोपनयनाग्नेः पुनरुत्पतिहोमे विनियोगः"** ऐसा होमविषे विशेषभी कहा है. मुझकों तौ यज्ञोपवीतसंबंधी आहुतियोंसें अग्नि उत्पन्न करके तिस अग्निपर मेधाजननके पूर्व होनेवाले अग्निकर्म करके मेधाजनन करना, और अनुप्रवचनीय होमके पहले होनेवाला अग्निकार्य और अनुप्रवचनीयहोम नहीं करना ऐसा प्रतिभान होता है. क्योंकी, गायत्र्युपदेश, अनुप्रवचनीयहोम और मेधाजनन ये तीनों कर्म समान प्रधान होनेसें अध्ययनके अंग होके अग्नि तिस तीन प्रधानकर्मोंका अंग है इसलिये कौस्तुभमें कही रीतिसें गायत्रीका उपदेश और तिसके पहले होनेवाला अग्निकार्य इनकी आवृत्तिका जैसा अभाव करना तैसा अनुप्रवचनीय होम और तिसके पहला अग्निकार्य इनकी आवृत्तिका प्रभाव मानना उचित है. अग्निष्टोमयज्ञके अंगरूपी ऐसे जो तीन पशुयज्ञ हैं तिन्होंके अंग जो यज्ञांगस्तंभ सो दो पशुयज्ञ किये पीछे नष्ट होवै तौ तीसरा पशुयाग करनेके लिये और नष्ट हुए यज्ञस्तंभकी उत्पत्ति करनेके लिये दूसरे पशुयज्ञका अनुष्ठानभी नहीं होता है. इसविषे विद्वानोंनें सत् असत्का विचार करके करनेका होवै सो करना उचित है. सायंसंध्या और अग्निकार्य करके ब्रह्मचारीनें अनुप्रवचनीयहोम करना. कुमारकी शक्ति नहीं होवै तौ चरुश्रपणपर्यंत कर्म अन्यनें करना. होम मात्र कुमारनें करना. होम करके शेष रहे भातसें तीनपर्यंत ब्राह्मणोंको भोजन करवाना.

अथबटुव्रतं क्षारादिवर्जमश्नीयाद्ब्रह्मचारीदिनत्रयं शयीताधश्चतुर्थेह्निमेधाजननमाचरेत् यद्वाद्वादशरात्रंस्यादब्दव्रतमथापिवा मेधाजननविधिरन्यत्र ॥

ब्रह्मचारीका व्रत कहताहुं.—"खारी, नमक आदि पदार्थोंसें वर्जित ऐसा भोजन ब्रह्मचारीनें तीन दिन करना. पृथिवीपर शयन करना. चौथे दिन मेधाजनन करना, अथवा बारह रात्रिपर्यंत किंवा एक वर्षपर्यंत पूर्वोक्त व्रत धारण करना." मेधाजननका विधि दूसरे ग्रंथमें देख लेना.

अथमंडपदेवतोत्थापनं तच्चस्थापनदिनात्समदिवसेपंचसप्तमदिनयोश्चशुभं षष्ठदिनेविषमदिनेचाशुभं ॥

अब मंडपदेवतोंका उत्थापन कहताहुं.—वह स्थापनदिनसें समदिनमें और पांचमा और सातमा इन दिनोंमें करना, सो शुभ है. छठे दिनमें और विषम दिनमें अशुभ है.

अथमंडपोद्वासनपर्यंतंनिषेधाः नांदीश्राद्धेकृतेपश्चाद्यावन्मातृविसर्जनं दर्शश्राद्धंक्षयश्राद्धंस्नानंशीतोदकेनच अपसव्यंस्वधाकारंनित्यश्राद्धंतथैवच ब्रह्मयज्ञंचाध्ययनंनदीसीमातिलंघनं उपवासव्रतंचैवश्राद्धभोजनमेवच नैवकुर्युःसपिंडाश्चमंडपोद्वासनावधि अत्रस्वधाकारग्रहणंतत्सहचरितवैश्वदेवनिषेधार्थं अत्रसपिंडास्त्रिपुरुषपर्यंताइतिपुरुषार्थचिंतामणौ अभ्यंगे सूतकेचैवविवाहेपुत्रजन्मनि मांगल्येषुचसर्वेषुनधार्यंगोपिचंदनं एतेषुभस्मधारणमपिनकुर्वंति जननाशौचेभस्मगोपीचदंनेनिषिद्धे मृतकेभस्मधार्यं ॥

अब मंडपदेवतोंके विसर्जनपर्यंत सपिंडोंनें जो कर्म नहीं करने सो कहताहुं—"नांदीश्राद्ध किये पीछे जबतक मातृकाविसर्जन होवै तबतक दर्शश्राद्ध, क्षयश्राद्ध, शीतल पानीसें स्नान करना, अपसव्य, स्वधाकार, नित्यश्राद्ध, ब्रह्मयज्ञ, पढना, नदीका उल्लंघन, सीमोल्लंघन, उपोषणव्रत, श्राद्धभोजन इन कर्मोंको सपिंडोंनें मंडपदेवताके विसर्जनपर्यंत नहीं करना. यहां स्वधाकारका जो ग्रहण किया सो स्वधाकारविशिष्ट जो वैश्वदेव तिसके निषेधके लिये है. यहां सपिंड लेनेके सो तीन पीढीके पुरुष लेने ऐसा पुरुषार्थचिंतामणिमें कहा है. "अभ्यंग, सूतक, विवाह, पुत्रजन्म और सब प्रकारके मंगलकार्योंमें गोपीचंदन नहीं लगाना." और इनही कर्मोंमें भस्मधारणभी नहीं करना. जन्मके आशौचमें भस्म और गोपीचंदन निषिद्ध है. मरनेके सूतकमें भस्म धारण करना.

षंढांधबधिरमूकपंगुकुब्जवामनादयःसंस्कार्याः मत्तोन्मत्तौनसंस्कार्यावित्येके पातित्यंतु नास्ति कर्मानधिकारात् तदपत्यंसंस्कार्यं ब्राह्मण्यांब्राह्मणादुत्पन्नोब्राह्मणएवेतिश्रुतेःअन्येतुमत्तोन्मत्तावपिसंस्कार्यावित्याहुः अत्रहोममाचार्यःकरोति उपनयनंचाचार्यसमीपनयनमाग्निसमीपनयनंवागायत्रीवाचनंवा विकलांगविषयेप्रधानं एतत्त्रयान्यतममात्रंविकलांगेसंपाद्यंअन्यदंगंयथासंभवंकार्यं मूकबधिरादेःसावित्रीवाचनासंभवेस्पृष्ट्वासावित्रीजपःकार्यः संस्कारमंत्रावासःपरिधानमंत्राश्चाचार्येणवाच्याः केचित्तूष्णींवासःपरिधानादिकमाहुः एवंविवाहेपि कन्यास्वीकरणादन्यत्सर्वंविप्रेणकारयेदित्यादिवचनात् इतिविकलांगोपनयनादिविचारः ॥

हीजडा, अंधा, बहरा, गूंगा, पांगला, कूबडा, वामना इन आदिकेभी संस्कार करने उचित हैं. मत्त और उन्मत्तका संस्कार नहीं करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. पतित-

पना तौ नहीं होता है; क्योंकी तिनकों कर्मका अधिकार नहीं है. मत्त और उन्मत्तके अपत्योंके संस्कार करने उचित हैं; क्योंकी, “ ब्राह्मणीमें ब्राह्मणसेंही उत्पन्न हुआ ब्राह्मण कहाता है ” ऐसी श्रुति है. दूसरे ग्रंथकार कहते हैं की, मत्त और उन्मत्तोंकेभी संस्कार करने उचित हैं. इन संस्कारोंमें होम करनेका सो आचार्यनें करना. आचार्यके समीप प्राप्त होना अथवा अग्निके समीप प्राप्त होना अथवा गायत्रीमंत्रका कहना ये तीन कर्म विकलोंके उपनयनविषयमें प्रधान हैं. इस लिये इन तीनोंमांहसें एक मात्र करना. दूसरे अंगरूपकर्म संभवके अनुसार करने. गूंगा और बहरा इन आदिकोंकों गायत्रीमंत्रके पठनका असंभव होनेसें तिनकों स्पर्श करके गायत्रीका जप करना उचित है. संस्कारके मंत्र और वस्त्र परिधान करनेके मंत्र आचार्यनें कहने. कितनेक ग्रंथकार कहते हैं की, वस्त्रपरिधान आदि कर्म मंत्रसें रहित करना. ऐसेही “विवाहमेंभी कन्याके अंगीकारविना अन्य सब कर्म ब्राह्मणके द्वारा कराने, ” ऐसा वचन है. इस प्रकार विकलांगोपनयन आदिका विचार समाप्त हुआ.

अमृतेजारजःकुंडोमृतेभर्तरिगोलकः एतयोःकुंडगोलकयोःसंस्कार्यत्ववचनंयुगांतरविषयं तस्यक्षेत्रजपुत्रविषयत्वात् कलियुगेदत्तौरसातिरिक्तपुत्राणांनिषेधात् ज्येष्ठेत्वकृतसंस्कारेगर्भाधानादिकर्मभिः कनिष्ठोनैवसंस्कार्यइतिशातातपोब्रवीत् इदंचौलोपनयनांतसंस्कार्यविषयं विवाहविषयेतुविकलांगेषुनायंनियमः कन्यास्वपिज्येष्ठाविवाहानंतरमेवकनिष्ठायाविवाहःज्येष्ठपुत्रविवाहाभावेपिकनिष्ठाकन्यासंस्कार्या ज्येष्ठस्योपनयनाभावेकनिष्ठानविवाह्या ॥

“पतिके जीवते हुये जार पुरुषसें उपजा पुत्र कुंड कहाता है और पतिके मरे पीछे जारसें उत्पन्न हुआ पुत्र गोलक कहाता है.” इन दोनों कुंड और गोलकके संस्कार करने ऐसा जो वचन है सो दूसरे युगविषे है; क्योंकी, वह वचन क्षेत्रजपुत्रविषयक है, और कलियुगमें दत्तक अर्थात् गोद लिया और औरस अर्थात् अपने शरीरसें अपनी स्त्रीमें उत्पन्न हुआ ऐसे दो पुत्रोंके विना अन्य पुत्रोंका निषेध है. “ ज्येष्ठ पुत्रके संस्कार नहीं हुए होवैं तौ कनिष्ठके गर्भाधान आदि संस्कार निश्चयकरके नहीं करने ऐसा शातातपजीनें कहा है,” यह वचन चौलकर्मसें आदि ले यज्ञोपवीतसंस्कारपर्यंतके संस्कारोंका निषेधविषयक है. विवाहके विषयमें तौ विकलांगोंविषे यह नियम नहीं है. कन्याओंमेंभी बडी कन्याका प्रथम विवाह करके पीछे छोटी कन्याका विवाह करना उचित है. ज्येष्ठ पुत्रके विवाहके अभावमेंभी छोटी कन्याका संस्कार अर्थात् विवाह करना. ज्येष्ठ पुत्रका यज्ञोपवीतसंस्कार नहीं हुआ होवै तौ कनिष्ठा अर्थात् छोटी पुत्रीका विवाह नहीं करना.

अथपुनरुपनयनं तच्चत्रिविधं प्रत्यवायनिमित्तकंप्रायश्चित्तभूतंपुनरुपनयनमाद्यं तच्चजातकर्मादिसहितंतद्रहितंप्रायश्चित्तांतरसहितंकेवलंचेत्यनेकविधं कृतस्योपनयनस्योक्तकालाद्यंगवैगुण्येनवैफल्यापत्तावपरं वेदांतराध्ययनार्थंविहितंतृतीयं तत्रप्रथमंयथा अमत्याऔषधांतरानाश्यरोगनाशार्थंपैष्ट्याःसुरायाःपानेत्रिमासंकृच्छ्राचरणंपुनरुपनयनंच मत्यापैष्ट्यन्यसुरायाऔषधार्थंपानेकृच्छ्रातिकृच्छ्रौपुनरुपनयनंच पैष्टीपानेद्वादशाब्दं अज्ञानाद्वारुणीगौडीमाध्वीसुरापीताचेत्पुनरुपनयनतंप्तकृच्छ्रंच अज्ञानाद्रेतोविण्मूत्राणामशनेसुरासंसृष्टान्नजलादिभक्ष

णेचपुनःसंस्कारस्तप्तकृच्छ्रंच ज्ञात्वाविण्मूत्राद्यशनेचांद्रायणपुनःसंस्कारौ लशुनपलांडुगृंजनविड्वराहग्रामकुक्कुटनरगोमांसभक्षणेद्विजातीनांतत्तत्प्रायश्चित्तांतेपुनरुपनयनं अविखरोष्ट्रमानुषीक्षीरपानेहस्तिनीवडवाक्षीरपानेचतप्तकृच्छ्रं पुनःसंस्कारःरासभोष्ट्राद्यारोहणेकृच्छ्रःपुनः संस्कारश्च इदंहेमाद्रिमतमितिसिंधौक्वचित् मिताक्षरास्मृत्यर्थसारादिमतेरासभोष्ट्रारोहेउपवासत्रयादिमात्रंनतुपुनःसंस्कारः कौस्तुभाशयोप्येवंवृषभारोहणेअमत्याकृच्छ्रंमत्याकृच्छ्रत्रयादि केचिद्वृषारोहेपुनःसंस्कारंकुर्वंतितत्रमूलंमृग्यं एवमजबस्तमहिषारोहेपि मांसभक्षकपशोर्विट्भक्षणेपुनरुपनयनमात्रं केचिन्मानुषमलभक्षणेपिपुनःसंस्कारमात्रमाहुः प्रेतशय्याप्रतिग्राहीपुनःसंस्कारमर्हति जीवतोमृतवार्तांश्रुत्वांत्यकर्मकरणे तंघृतकुंभेनिमज्योद्धृत्यस्नापयित्वा जातकर्माद्युपनयनांतसंस्कारान्कृत्वात्रिरात्रव्रतांते पूर्वभार्ययातस्यांमृतायामन्यभार्ययावाविवाहःकार्यः आहिताग्निश्चेत्पुनराधानायुष्मदिष्ट्यादितीर्थयात्रांविनाकलिंगांगवंगांध्रसिंधुसौवीरप्रत्यंतवासिदेशगमनेपुनःसंस्कारः चांडालान्नभक्षणेचांद्रायणं बुद्धिपूर्वभक्षणेकृच्छ्राब्दंउभयत्रपुनःसंस्कारःअजिनंमेखलादंडोभैक्ष्यचर्याव्रतानिच निवर्ततेद्विजातीनांपुनःसंस्कारकर्मणि वपनंमेखलेतिस्मृत्यंतरेपाठः ब्रह्मचारिणोमधुमांसाशनेपुनरुपनयनंप्राजापत्यंत्रिरात्रोपवासोवा मत्याभक्षणेपराकःअभ्यासेद्विगुणंपुनःसंस्कारश्च पितृमातृगुरुभ्योभिन्नस्यप्रेतस्यांत्यकर्मकरणेब्रह्मचारिणः पुनरुपनयनंहस्तमथितदधिभक्षणेबहिर्वेदिपुरोडाशाशने अभ्यासेकृच्छ्रःपुनःसंस्कारश्च यःसंन्यासंगृहीत्वाततोनिवृत्त्यगार्हस्थ्यंचिकीर्षतिसषण्मासंकृच्छ्रान्कृत्वाजातकर्मादिसंस्कारैःसंस्कृतःशुद्धोगार्हस्थ्यंकुर्यात् एवमनशनंमरणार्थंसंकल्प्यनिवृत्तोपि कुर्यात् कर्मनाशाजलस्पर्शात्करतोयाविलंघनात् गंडकीबाहुतरणात्पुनःसंस्कारमर्हति ॥

अब पुनरुपनयन कहताहुं.

वह पुनरुपनयन तीन प्रकारका है. दोषनिमित्तक प्रायश्चित्तभूत पुनरुपनयन प्रथम होता है. वह पुनरुपनयन जातकर्म आदि संस्कारयुक्त, जातकर्म आदि संस्कारसें रहित और अन्य प्रायश्चित्तसहित और केवलरूप इस रीतिसें अनेक प्रकारका होता है. प्रथम किये उपनयनमें उक्त काल आदिकोंका कमीपना प्राप्त होनेसें प्रथम किये हुएके व्यर्थपनेसें विफलपनेकी प्राप्तिमें दूसरा पुनरुपनयन होता है. एक वेदका अध्ययन करके दूसरे वेदके अध्ययनके लिये विहित हुआ तीसरा पुनरुपनयन होता है. **तहां प्रथम पुनरुपनयन कहताहुं.** अन्य औषधसें नाश नहीं हो सकै ऐसे रोगके नाशके लिये वैद्यके कहनेपरसें पैष्टी मदिराके पीनेमें तीन महीनेपर्यंत कृच्छ्र प्रायश्चित्त करके पुनरुपनयन करना. पैष्टी मदिराकेविना अन्य मदिरा अपनी बुद्धीसें ओषधके लिये पीनेमें कृच्छ्र और अतिकृच्छ्र प्रायश्चित्त करके पुनरुपनयन करना उचित है. पैष्टी मदिराके पीनेमें बारह वर्षपर्यंत प्रायश्चित्त करना. वारुणी, गौडी, माध्वी इन मदिराओंकों अज्ञानसें पीनेमें फिर यज्ञोपवीत और तप्तकृच्छ्र प्रायश्चित्त करने. अज्ञानसें वीर्य, विष्ठा, मूत्र इनका पान करनेमें और मदिरासें मिले हुये अन्न और जल आदिके भक्षणमें फिर यज्ञोपवीतसंस्कार और तप्तकृच्छ्र प्रायश्चित्त करना. जानके विष्ठा और मूत्र आदिका भक्षण किया जावे तौ चांद्रायणव्रत और फिर यज्ञोपवीतसंस्कार करना. ब्राह्मण, क्षत्रिय,

वैश्य इन्होंनें ल्हसन, प्याज, गाजर इन्होंके खानेमें और गामका शूर, गामका मुरगा, मनुष्य, गो इन्होंका मांस भक्षण किया होवै तौ वह वह प्रायश्चित्त करके फिर यज्ञोपवीतसंस्कार करना. भेड, गद्धी, ऊंटनी, नारी इन्होंका दूध पीनेमें और हथनी और घोडी इन्होंके दूधके पीनेमें तप्तकृच्छ्र और पुनःसंस्कार ये प्रायश्चित्त करना. गद्धा और ऊंट इन आदिके उपर बैठा होवै तौ कृच्छ्र और पुनःसंस्कार ये प्रायश्चित्त करना. यह **हेमाद्रीका** मत है ऐसा **निर्णयसिंधु** ग्रंथके किसीक पुस्तकमें मिलता है. **मिताक्षरा** और **स्मृत्यर्थसार** आदिके मतमें गद्धा और ऊंटपर बैठनेमें तीन उपवास आदि प्रायश्चित्त करना. फिर संस्कार नहीं करना. **कौस्तुभ** ग्रंथकाभी यहही आशय है. विना जाने बैलपर बैठनेमें एक कृच्छ्र प्रायश्चित्त करना. जानके बैलपर बैठनेमें तीन कृच्छ्र प्रायश्चित्त आदि करना. कितनेक ग्रंथकार बैलपर बैठनेमें फिर संस्कार करते हैं, तहां मूल चितवन करना. ऐसेही बकरा, भैंसा, मेंढा इन्होंपर बैठनेमेंभी यहही प्रायश्चित्त जानना. मांस खानेवाले पशूकी विष्ठा खानेमें फिर यज्ञोपवीतसंस्कार करना. कितनेक ग्रंथकार मनुष्यकी विष्ठा खानेमेंभी फिर संस्कार मात्र करना ऐसा कहते हैं. मरे हुएकी शय्या लेनेवाला मनुष्य फिर संस्कार करनेकों योग्य होता है. जीते हुए मनुष्यकी मृत हुआ ऐसी वार्ता सुनके तिसका अंत्यकर्म किया जावै तौ तिसकों घृतके कुंभमें डुबाय तिसमेंसें बाहिर काढके स्नान करवायके जातकर्मसें यज्ञोपवीतकर्मपर्यंत संस्कार करके तीन रात्रि व्रत करनेके अंतमें प्रथमकी स्त्रीके साथ अथवा पहली स्त्री मर गई होवै तौ दूसरी स्त्रीके साथ विवाह करना. अग्निहोत्री होवै तौ तिसनें पुनराधान आयुष्मत् इष्टि करनी. तीर्थयात्राके विना कालिंगदेश, अंगदेश, वंगदेश, आंध्रदेश, सिंधुदेश, सौवीरदेश, पश्चिमदेश, म्लेच्छदेश इन्होंमें गमन करनेमें फिर संस्कार करना. चांडालका अन्न खानेमें चांद्रायणव्रत करना. जानके चांडालका अन्न भक्षण करनेमें कृच्छ्राब्द प्रायश्चित्त करना, और इन दोनोंमें फिर संस्कार करना उचित है. मृगछाला, मेखला, दंड इन्होंका धारण; भिक्षा मांगनी और व्रत करना इतने प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यके फिर होनेवाले संस्कारमें वर्जित करने. दूसरी स्मृतिमें **'अजिनं, मेखला'** स्थानमें **'वपनं, मेखला'** ऐसा पाठ है. ब्रह्मचारीनें मदिरा और मांसके खानेमें पुनरुपनयन, प्राजापत्य, अथवा तीन रात्रि उपवास ये प्रायश्चित्त करने. बुद्धिपूर्वक भक्षण किया होवै तौ पराकसंज्ञक प्रायश्चित्त करना. वारंवार भक्षण करनेमें दुगुना प्रायश्चित्त करके फिर संस्कार करना. ब्रह्मचारीनें पिता, माता, गुरु इन्होंसें अन्य मरे मनुष्यका अंत्यकर्म किया होवै तौ तिसनें पुनरुपनयन करना. हाथसें मथित किया दही वारंवार भक्षण करनेमें और वेदिके बाहिर पुरोडाश वारंवार भक्षण करनेमें कृच्छ्रप्रायश्चित्त और फिर संस्कार करना. जो संन्यास ग्रहण करके पीछे संन्यासकों त्यागके गृहस्थाश्रम करनेकी इच्छा करता होवै तिस पुरुषनें छह महीनोंतक कृच्छ्रप्रायश्चित्त करके जातकर्म आदि संस्कारोंसें शुद्ध होके गृहस्थाश्रमसंबंधी कर्म करने. ऐसेही मरणके अर्थ अनशनव्रतका संकल्प करके निवृत्त हुए मनुष्यनेंभी करना. "कर्मनाशानदीके जलका स्पर्श करै तौ और करतोयानदीका उल्लंघन, तथा गंडकीनदीमें हाथोंकरके तिरनेसें तिस मनुष्यका फिर संस्कार होना उचित है.

अथ द्वितीयंपुनरुपनयनं प्रदोषेनिश्यनध्यायेमंदेकृष्णेगलग्रहे अपराह्णेचोपनीतःपुतःसं

स्कारमर्हेति अत्रप्रदोष:प्रदोषदिनंकृष्ण:कृष्णपक्षएकादश्यादिरंत्यत्रिकरूपोपराह्णश्चदिनतृतीयभागरूपइत्युक्तं अनध्यायाअपिनित्याएवपौर्णिमाप्रतिपदादय:पुनरुपनयतनिमित्तं नतुनैमित्तिकाअकालवृष्ट्यादिनिमित्तकत्रिरात्रादय: नैमित्तिकेषुप्रातर्गर्जितनिमित्तानध्यायएवपुन:संस्कारनिमित्तं अत्रविस्तर:कौस्तुभे अंसाभिमर्शपूर्वकंबटो:समीपमानयनंप्रधानकर्मतस्य विस्मरणेपुनरुपनयनं एवंगायत्र्युपदेशविस्मरणेपि ॥

अब दूसरा पुनरुपनयन कहताहुं.

"प्रदोष, रात्रि, अनध्याय, शनिवार, कृष्ण, गलग्रहतिथि और अपराण्हकाल इन्होंमें यज्ञोपवीतसंस्कार हुआ होवै तौ वह मनुष्य फिर संस्कार करनेकों योग्य होता है." यहां प्रदोषशब्दसें प्रदोषदिन लेना. कृष्णशब्दसें कृष्णपक्षकी एकादशी आदि लेके अमावसतककी तिथि समजनी. दिनके अंतका तीसरा भाग अपराण्ह है. अनध्यायोंमेंभी पूर्णिमा, प्रतिपदा आदि नित्यअनध्याय कहे हैं सो उपनयननिमित्तक हैं. अकालवृष्टि होना आदि निमित्तवाले त्रिरात्र आदि अनध्याय पुनरुपनयनके कारणरूप नहीं हैं. नैमित्तिक अनध्यायोंमें प्रात:कालिक गर्जनानिमित्तक अनध्यायही पुन:संस्कारमें निमित्त है. इस विषयका विस्तार कौस्तुभग्रंथमें कहा है. पहले कंधाकों स्पर्श किये हुए ऐसे कुमारकों गुरुके समीपमें प्राप्त करना ऐसा जो प्रधानकर्म है तिसका विस्मरण होनेमें पुनरुपनयनसंस्कार करना. ऐसेही गायत्रीके उपदेशके विस्मरणमेंभी फिर यज्ञोपवीतसंस्कार करना.

तृतीय:पुनरुपनयननिमित्तप्रकार: एकंवेदमधीत्यवेदांतराध्ययनचिकीर्षायांप्रतिवेदंपुनरुपनयनमित्येके अन्यवेदिनामृग्वेदाध्ययनार्थमुपनयनमित्यपरे अन्येतुएकेनैवोपनयनेनवेदत्रयाध्ययनाधिकार: अथर्ववेदाध्ययनार्थंद्वितीयमुपनयनमित्याहु: तेनऋगादिवेदत्रयाध्यायिनोमुंडमांडूक्याद्याथर्वणोपनिषदोविनापुन:संस्कारंपठंतितेचिंत्या: युगपदनेकवेदारंभे नोपनयनावृत्त्यपेक्षेतिसकृदुपनीत्यायुगपत्सकलवेदारंभ:सिद्ध्यतीतिपरे तत्रएकवेदाध्ययनानंतरंयद्वेदाध्ययनचिकीर्षातदेतिकर्तव्यताकंपुनरुपनयनं तत्रवपनंब्रह्मौदनंमेधाजननंदीक्षाचकृताकृतापरिदानरहिताक्रियाभवति अनध्यायादिकेद्वितीयेपुनरुपनयननिमित्तेसर्वमविकृतंयथोक्तकालेउपनयनं ॥

अब पुनरुपनयनका तीसरा प्रकार कहताहुं.

एक वेद पढके अन्य वेद पढनेकी इच्छा करनेमें, वेद वेदके प्रति फिर फिर यज्ञोपवीतसंस्कार करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. अन्य वेदवालोंकों ऋग्वेदका अध्ययन करना होवै तौ फिर यज्ञोपवीतसंस्कार करना ऐसा अन्य ग्रंथकार कहते हैं. और दूसरे ग्रंथकार तौ एकही यज्ञोपवीतसंस्कारसें तीन वेद पढनेकों अधिकार प्राप्त होता है, और अथर्वण वेद पढनेके लिये दूसरा यज्ञोपवीतसंस्कार करना उचित है ऐसा कहते हैं. तिसकरके ऋग्वेद आदि तीन वेदोंके पढनेवाले पुन:संस्कार किये विना मुंड और मांडूक्य आदि अथर्वण वेदके उपनिषदोंका पठण करते हैं वे चिंत्य हैं. एकही कालमें अनेक वेदोंका आरंभ करनेमें फिर यज्ञोपवीत करानेकी अपेक्षा नहीं है ऐसा है, इसपरसें एक उपनयनसें एकही कालमें सब

वेदोंका आरंभ हुआ ऐसा सिद्ध होता है, ऐसा अन्य ग्रंथकार कहते हैं. तहां एक वेद पढनेके पीछे जिस दूसरे वेदको पढनेकी इच्छा होवै तिस वेदमें जैसा विधि कहा होवै तिस विधिके अनुसार पुनरुपनयनसंस्कार करना. तहां मुंडन, ब्रह्मौदन, मेधाजनन, और दीक्षा ये करने अथवा नहीं करने. परिदानक्रिया नहीं होती है. दूसरे उपनयनके निमित्तक अनध्याय आदिक स्थानमें उपनयन किये पीछे जो फिर उपनयन करनेका सो कोईभी कर्म वर्जित किये-विना उक्त कालमें करना.

अथप्रायश्चित्तार्थेव्रतबंधेविशेषः तत्रनिमित्तानंतरमेवकरणेउदगयनपुण्यनक्षत्राद्युक्तकालोनापेक्ष्यते अन्यथातुयथोक्तकालापेक्षा तत्रकर्तापितातदभावेपितृव्यादिःसपिंडः तदभावेन्यःकश्चित् यत्रपुनरुपनयनंप्रायश्चित्तत्वेनोक्तंतत्रपर्षदुपदिष्टविधिनातदेवकार्यं यत्रतुप्रायश्चित्तांतरसहितंतत्रोक्तविधिनाप्रायश्चित्तं संस्कार्येणकारयित्वाचार्येणतस्योपनयनंकार्यं यत्रजातकर्मादिसंस्कारसहितमुपनयनंविहितंतत्रजातादिचौलांतसंस्कारान्कृत्वाकार्यं पुनरुपनयनेगायत्रीस्थाने तत्सवितुर्वृणीमहइत्यस्या उपदेशादाचार्येणास्याएवऋचोद्वादशोत्तरसहस्रजपःकृच्छ्रत्रयंचोपनेतृत्वाधिकारार्थंकार्यं तत्रास्यकृतौर्ध्वदैहिकस्यपुनःसंस्कारद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंजातकर्माद्युपनयनांतसंस्कारान्करिष्ये एवंनिमित्तांतरेपिसंकल्पऊह्यः सर्वसंस्कारोद्देशेनतंत्रेणनांदीश्राद्धादिश्मश्रुवपनानंतरंचौलकेशवपनं मनुष्यादिक्षीरपानादिनिमित्तांतरेतुसंस्कार्योमुकदोषपरिहारार्थंपर्षदुपदिष्टममुकप्रायश्चित्तंकरिष्यइतिसंकल्प्यतत्कुर्यात् आचार्यस्तुअस्यामुकदोषपरिहारार्थंपुनःसंस्कारसिद्धिद्वाराश्री० पुनरुपनयनंकरिष्यइतिसंकल्प्योपनयनमात्रंकुर्यात् यत्रोपनयनमात्रोक्तिस्तत्रसंस्कार्यस्यनसंकल्पः किंत्वाचार्यस्यैव पुनरुपनयनंग्रामाद्बहिःप्राच्यामुदीच्यांवागत्वाकार्यं नांदीश्राद्धांतेमंडपदेवतास्थापनं कृतमंगलस्नानं संस्कार्यंभोजयित्वावपनपक्षेवपनस्नानेकारयित्वा अस्यप्रायश्चित्तार्थंपुनरुपनयहोमेदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्ये अस्मिन्नन्वाहितेग्नावित्यादिनित्यवत् ब्रह्मचारिणःपुनरुपनयनेसमंत्रकंवासोधारणंनित्यं अन्यस्यवैकल्पिकं ब्रह्मसूत्रधारणादिसूर्येक्षणांतंनित्यवत् ततोयुवासुवासाइत्येतन्मंत्रकंप्रदक्षिणमावर्तनादिवासोबद्धांजलिग्रहणांते प्रणवव्याहृतीनांऋष्यादिस्मृत्वा तत्सवितुर्वृणीमहइत्यस्यश्यावाश्वःसवितानुष्टुप् पुनरुपनयनेउपदेशेविनियोगः पादशोर्धर्चशःसर्वामितित्रिर्वाचयेत् ब्रह्मचारिणोमेखलादानादिनित्यवत्ब्रह्मचर्योपदेशांतं अन्यस्यमेखलाजिनदंडधारणंपाक्षिकं ब्रह्मचर्योपदेशोदिवामास्वाप्सीरित्यंतः वेदमधीष्वेत्यादिकंन ततः स्विष्टकृतादिमेधाजननपक्षेतत्पर्यंताग्निधारणं भिक्षापूर्वकानुप्रवचनीयः गायत्र्याःस्थानेतत्सवितुर्वृणीमहइतिहोमः त्रिरात्रव्रतांतेयस्मिन्नाश्रमेपुनरुपनयनंतदाश्रमधर्मान्कुर्यात् यत्रपुनरुपनयनांनेपुनर्विवाहःकृतौर्ध्वदैहिकादेःश्रूयतेतत्रमेखलादिधारणपूर्वकं कतिचिद्दिनानि ब्रह्मचर्यं कृत्वोचितकालेसमाप्यपूर्वभार्ययान्ययावाविवाहंकुर्यात् इतिऋग्वेदिनांपुनःसंस्कारः॥

अब प्रायश्चित्तके लिये जो पुनरुपनयनसंस्कार तिसविषे विशेष कहताहुं.

निमित्तके पश्चात् तिस कालमेंही पुनरुपनयन करना होवै तौ उत्तरायण, पवित्र नक्षत्र

आदि उक्त कालकी अपेक्षा नहीं है. और तिस कालमें करना नहीं होवै तौ उक्त कालकी अपेक्षा है. तहां कर्ता पिता है, पिताके अभावमें पितृव्य आदि सपिंडनें करना. तिसके अभावमें अन्य किसीनें करना उचित है. जहां प्रायश्चित्तयुक्त पुनरुपनयन कहा है तहां सभानें कही विधिसें वहही करना. और जहां अन्य प्रायश्चित्तकेसाथ पुनरुपनयन कहा होवै तहां जिसका पुनरुपनयन करनेका होवै तिस्सें उक्त विधिसें प्रायश्चित्त करवाय आचार्यनें तिसका उपनयन करना. जहां जातकर्म आदि संस्कारयुक्त उपनयन कहा है तहां जातकर्मसें आदि ले चौलकर्मपर्यंत संस्कार करके पीछे करना उचित है. पुनरुपनयनमें गायत्रीके स्थानविषे "**तत्सवितुर्वृणीमहे.**" इस ऋचाका उपदेश करना ऐसा कहा है, इस लिये आचार्यनें इसी ऋचाका बारह हजार जप और उपनेतापनेका अधिकार प्राप्त होनेके लिये तीन कृच्छ्र प्रायश्चित्त करने. पीछे संकल्प करना. सो ऐसा "**अस्य कृतौर्ध्वदैहिकस्य पुनःसंस्कारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं जातकर्माद्युपनयनांतसंस्कारान् करिष्ये.**" ऐसा अन्य निमित्तोंमेंभी संकल्पका विचार करना. सब संस्कारोंके उद्देशकरके एकतंत्रसें नांदीश्राद्धादि कर्म करके श्मश्रुवपनकर्मके पीछे चौलसंबंधी वालोंका वपन अर्थात् मुंडन कराना. नारी आदिका दूध पीना आदि अन्य निमित्तोंमें तौ संस्कार्यनें "**अमुकदोषपरिहारार्थं पर्षदुपदिष्टं अमुकप्रायश्चित्तं करिष्ये,**" ऐसा संकल्प करके वह प्रायश्चित्त करना. आचार्यनें तौ, "**अस्यामुकदोषपरिहारार्थं पुनःसंस्कारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पुनरुपनयनं करिष्ये,**" ऐसा संकल्प करके यज्ञोपवीतकर्म मात्र करना. जहां यज्ञोपवीतकर्म मात्र कहा होवै तहां संस्कार्यनें नहीं, परंतु आचार्यनेंही संकल्प करना उचित है. फिर यज्ञोपवीतकर्म करना होवै तौ ग्रामके बाहिर पूर्व दिशामें अथवा उत्तर दिशामें जाके करना. नांदीश्राद्धपर्यंत कर्म किये पीछे मंडपदेवताका स्थापन करना. जिनें मंगलस्नान किया है ऐसे संस्कार्यकों भोजन करवाय वपन करनेके पक्षमें मुंडन और स्नान करवाय "**अस्य प्रायश्चित्तार्थं पुनरुपनयनहोमे देवतापरिग्रहार्थमन्वाधानं करिष्ये ॥ अस्मिन्नन्वाहितेऽग्नौ,**" ऐसा अन्वाधान नित्यकी तरह करना. ब्रह्मचारीनें पुनरुपनयनमें मंत्रोंसहित वस्त्रका धारण करना यह नित्य है, और दूसरे पुरुषनें मंत्रोंसहित वस्त्रका धारण करना अथवा नहीं करना. ब्रह्मसूत्रधारणसें सूर्यदर्शनपर्यंत कर्म नित्यकी तरह करना. पीछे "**युवासुवासा०**" यह है मंत्र जिसका ऐसी जो परिक्रमा करनी इस आदिसें वस्त्रसें अंजली बांधके वह ग्रहण करना, इस कर्मपर्यंत कर्म किये पीछे ॐकार और व्याहृतियोंके ऋषि देवता आदिका स्मरण करके उपदेश करना. सो ऐसा—"**तत्सवितुर्वृणीमहइत्यस्य श्यावाश्वः सवितानुष्टुप् ॥ पुनरुपनयने उपदेशे विनियोगः ॥ तत्सवि०**" इस प्रकार प्रथम चौथाई और दूसरीवार आधी और तीसरे वार समस्त ऋचा ऐसे तीन वार कहानी. ब्रह्मचारी होवै तौ तिसकों मेखलादान आदिसें ब्रह्मचर्यके उपदेशपर्यंत कर्म नित्य कहा है. अन्योंनें मेखला, मृगछाला, और दंड इन्होंका धारण करना अथवा नहीं करना. ब्रह्मचर्यका उपदेश "**दिवा मास्वाप्सीः**" (दिनमें मत सोना) इसपर्यंत करना. "**वेदमधीष्व**" (वेदका अध्ययन कर) आदि उपदेश नहीं करना. तिसके पीछे स्विष्टकृत्होम इत्यादिक कर्म करना. मेधाजनन करनेके पक्षमें मेधाजनन होवै तबलग अग्निकी रक्षा करनी. भिक्षा मांगके अनुप्रवचनीय होम करना. गायत्रीके

स्थानमें **“तत्सवितुर्वृणीमहे०”** इस मंत्रसें होम करना. तीन रात्रि व्रत धारण किये पीछे पहले आश्रमके मध्यमें जो धर्म थे तिन्होंकों पुनरुपनयन किये पीछे आचरण करना. किया है प्रेतकर्म जिसका ऐसा जो, तिसके पुनरुपनयनके पीछे तिसका फिर विवाह करना ऐसा जहां कहा होवै तहां मेखला आदि प्रथम धारण करके, कितनेक दिनोंपर्यंत ब्रह्मचर्य धारण करके और योग्य कालमें तिसकी समाप्ति करके पहली स्त्रीके साथ अथवा (वह मृत होवै तौ) अन्य स्त्रीके साथ विवाह करना. ऐसा ऋग्वेदियोंका पुनःसंस्कार समाप्त हुआ.

अथयजुर्वेदिनां तत्रबौधायनोब्रह्मचारिणःपितृज्येष्ठाभ्यामन्योच्छिष्टभक्षणेस्त्रियासहभोजने मधुमांसश्राद्धसूतकान्नगणान्नगणिकान्नाशनेपुनरुपनयनमित्यादिउक्त्वाअग्निमुखंकृत्वाज्याक्तपालाशसमिधमादायवाचयतिपुनस्त्वादित्या० कामाःस्वाहेतियन्मआत्मनोमिंदाभूदग्निः पुनरग्निश्चक्षुरदादितिद्वाभ्यांहुत्वाचरुंपक्त्वाजुहोति सप्तते‌अग्ने० घृतेनस्वाहेति ततोयेनदेवाः पवित्रेणेतितिसृभिरुपहोमस्ततः स्विष्टकृत्प्रभृतिसिद्धमाधेनुवरप्रदानात्अथापरमापरिधानात्कृत्वापालाशींसमिधमादाय व्रात्यप्रायश्चित्तंजुहोतिव्याहृतीर्जुहोतिअथापरोब्राह्मणवचनात्सावित्र्याशतकृत्वोभिमंत्रितंघृतंप्राश्यकृतप्रायश्चित्तोभवतीत्यादिकमवदत् अत्रोक्तपक्षाणांशक्ताशक्तभेदेनव्यवस्था इदंकौस्तुभेद्रष्टव्यं एवंशाखांतरेष्वपिवपनमेखलाजिनदंडभैक्ष्यचर्याव्रतादिकंवैकल्पिकव्यवस्थयानुष्ठायस्वस्वशाखोक्तोपनयनं कार्यं ॥

अब यजुर्वेदियोंका पुनःसंस्कार कहताहुं.

“ब्रह्मचारीनें पिता और ज्येष्ठ अर्थात् अपनेसें बडा होवै तिसके विना अन्यका उच्छिष्ट पदार्थ भक्षण करनेमें और स्त्रीके साथ भोजन किया होवै तौ और मदिरा, मांस, इन्होंका भक्षण किया होवै तौ और श्राद्धका अन्न, सूतकका अन्न, बहुतोंका अन्न और वेश्याका अन्न इन्होंका भोजन करनेमें फिर यज्ञोपवीतकर्म करना इस आदि कहके, स्थंडिलकरण आदि कर्म करके घृतसें भिगोई पलाशकी समिधाकों ग्रहण करके मंत्र कहने, सो ऐसे—**“पुनस्त्वा० कामाः स्वाहा” “यन्म आत्मनो मिंदाभूदग्निः, पुनरग्निश्चक्षुरदात्०”** ऐसे दो मंत्रोंसें होम करके चरु पकाय होम करना. होमका मंत्र—**“सप्तते अग्ने० घृतेन स्वाहा.”** पीछे **“येन देवाः पवित्रेण०”** इन तीन ऋचाओंसें उपहोम करने. पीछे स्विष्टकृत्होमसें गुरुकों गौका दान देनेपर्यंत कर्म करना. **दूसरा पक्ष**—वस्त्रधारणपर्यंत कर्म करके पलाशकी समिधा लेके व्रात्यप्रायश्चित्तका होम करके व्याहृतिमंत्रोंसें होम करना. **तीसरा पक्ष**—ब्राह्मणके द्वारा गायत्रीमंत्रसें १०० वार घृत अभिमंत्रित करवाय वह घृत प्राशन करनेसें मनुष्य शुद्ध होता है, ऐसा बौधायन कहते हैं. यहां कहे हुए पक्षोंकी शक्ताशक्त भेदोंसें व्यवस्था करनी, यह **कौस्तुभ** ग्रंथमें देखना उचित है. इस प्रकार अन्य शाखाओंमेंभी मुंडन, मेखला, मृगछाला, दंड, भिक्षा मागना, व्रत इन आदि कर्म वैकल्पित व्यवस्थासें करके अपनी शाखामें कही रीतिसें पुनरुपनयन करना उचित है.

अथब्रह्मचारिधर्माः तत्रसंध्यात्रयमग्निपरिचरणंभैक्षंचनित्यं तत्राग्निकार्यंप्रातःसायंचसायमेवसकृद्वा तत्रपालाशखदिराश्वत्थशमीसमिधःश्रेष्ठास्तदलाभेऽर्कवेतसां भवच्छब्दपूर्विका

भिक्षाविप्राणां साचविप्रगृहेष्वेव आपदिशूद्रगृहेषुआमान्नंगृण्हीयात् हव्येश्राद्धभिन्नकव्ये चाभ्यर्थितोभुंजीत अस्यब्रह्मयज्ञोपिनित्यः सचोपाकरणात्पूर्वंगायत्र्याकार्यः गुरूच्छिष्टंमध्वादिकंनिषिद्धमपितदन्यापरिहार्यरोगनिवृत्त्यर्थंभक्षणीयं निषिद्धान्यद्गुरूच्छिष्टंत्वनौषधमपिभक्ष्यं एवंज्येष्ठभ्रातुःपितुश्चोच्छिष्टेषुज्ञेयं दिवास्वापोनेत्रेकज्जलमुपानच्छत्रंमंचादौशयनंचवर्ज्यंतांबूलाभ्यंजनंचैवकांस्यपात्रेचभोजनं यतिश्चब्रह्मचारीचविधवाचविवर्जयेत् मधुसूतकान्नश्राद्धान्नादेर्निषेधाःपुनःसंस्कारप्रकरणोक्ताअनुसंधेयाः मेखलामजिनंदंडमुपवीतंचनित्यशः कौपीनंकटिसूत्रंचब्रह्मचारीविधारयेत् मेखलोपवीतादौत्रुटितेजलेप्रास्यान्यद्धारयेत् यज्ञोपवीतनाशेमनोज्योतिरित्यनेनव्रातपतिभिश्चेतिचतस्रआज्याहुतीर्जुहुयादित्युक्तं अस्यगुरुपरिचर्याप्रकारोऽन्यत्रज्ञेयः ॥

अब ब्रह्मचारीके धर्म कहताहुं.

तीन काल संध्या करनी, अग्निकी सेवा करनी, और भिक्षा मांगनी ये तीन कर्म ब्रह्मचारीकों नित्य हैं. तिन्होंमें अग्निकी सेवा प्रातःकाल और सायंकालमें करनी, अथवा सायंकालमें एकही वक्त करनी. ढाक, खैर, पीपल और जांट इन्होंकी समिधा होमकों श्रेष्ठ हैं. इन्होंके अभावमें आककी अथवा वेंतकी लेनी. "भवत्" शब्दपूर्वक भिक्षा ब्राह्मणोंनें मांगनी. वह भिक्षा ब्राह्मणोंके घरोंमेंही मांगनी. विपत्कालमें शूद्रके घरोंमेंभी सूके अन्नकी भिक्षा ग्रहण करनी. देवताके लिये तयार किये अन्नमें और श्राद्धसें वर्जित पितरोंसंबंधी अन्न भोजन करनेकों निमंत्रित किया होवै तौ भोजन करना. ब्रह्मचारीकों ब्रह्मयज्ञभी नित्य है. वह ब्रह्मयज्ञ उपाकर्मके पहले गायत्रीमंत्रसें करना. गुरुका उच्छिष्ट; मदिरा आदि निषिद्ध पदार्थ, जब अन्य किसी औषधसें रोग दूर नहीं हो सकै तब खाना उचित है. निषिद्ध पदार्थोंकों वर्जित करके औषधसें रहित भी गुरुका उच्छिष्ट खाना उचित है. ऐसेही बडा भाई और पिताके उच्छिष्ट पदार्थकोंभी खानेमें यहही निर्णय जानना. दिनकों सोना, नेत्रोंमें कज्जल घालना, जूतियोंका पहनना, और छत्रका धारण करना, पलंग आदिपर सोना ये वर्ज करने. और "नागरपान आदिका खाना, कज्जल घालना, कांसीके पात्रमें भोजन करना इन्होंकों संन्यासी, ब्रह्मचारी और विधवा स्त्री इन्होंनें वर्जित करना." मदिरा, सूतकका अन्न, श्राद्धका अन्न, इन आदिके निषेध पुनःसंस्कारप्रकरणमें कहे हुये ग्रहण करने. "मेखला, मृगछाला, दंड, जनेऊ, लंगोटी, कटिसूत्र, इन्होंकों ब्रह्मचारीनें नित्य धारण करना. मेखला, जनेऊ आदि तूट जावै तौ तूटे हुयेकों जलमें डालके दूसरे धारण करने. यज्ञोपवीतका नाश हो जावै तौ "मनोज्योति०" इस मंत्रसें और "व्रातपतिभिः०" इन तीन मंत्रोंसें घृतकी चार आहुति हवन करनी ऐसा कहा है. ब्रह्मचारीनें गुरुकी सेवा करनेका प्रकार अन्य ग्रंथमें देख लेना.

अथब्रह्मचारिव्रतलोपे संध्याग्निकार्यलोपेष्टसहस्रगायत्रीजपः क्वचित्सकृल्लोपेमानस्तोकेतिमंत्रस्यशतंजपउक्तः भिक्षालोपेऽष्टशतं अभ्यासेद्विगुणंपुनःसंस्कारश्च मधुमांसाद्यशनेउक्तं स्त्रीसंगेगर्दभपशुः एकानेकव्रतलोपसाधारणमृग्विधाने तंवोधियाजपेन्मंत्रंलक्षंचैवशिवालये ब्रह्मचारीस्वधर्मेषुन्यूनंचेत्पूर्णमेतितत् ॥

अब ब्रह्मचारीके व्रतोंका लोप होनेमें प्रायश्चित्त कहताहुं.

संध्या और होमके लोपमें ८००० गायत्रीका जप करना. किसीक ग्रंथमें लिखा है की, संध्याकर्म और होमकर्म एकभी वार नहीं किये जावैं तौ "मानस्तोके०" इस मंत्रका १०० वार जप करना. भिक्षाके लोपमें ८०० जप करना. वारंवार भिक्षा मांगनेमें वहही मंत्रका १६००० जप करके फिर संस्कार होना उचित है. मदिरा और मांस आदिके खानेमें प्रायश्चित्त पहले कह दिया है. स्त्रीसें भोग करनेमें ब्रह्मचारीनें गर्दभपशुयज्ञ करना. एक अथवा अनेक व्रतोंके लोपमें साधारण प्रायश्चित्त ऋग्विधानग्रंथमें कहा है. "ब्रह्मचारीनें अपने स्वधर्मविषे कुछभी न्यूनपना हुआ होवै तौ शिवके मंदिरमें बैठके "तं वोधिया०" इस मंत्रका एक लक्ष जप करना. इसके करनेसें पूर्णता हो जाती है.

उपाकर्मकृत्वाप्रागुक्तविद्यारंभकालेक्षरारंभोक्तविष्णवादिपूजाप्रकारेणवेदारंभःकार्यःद्विजस्त्रीणांयुगांतरेमौंजीबंधोवेदाध्ययनंचासीत्कलियुगेतुनैतद्द्वयं अतःस्त्रीणांवेदोच्चारादौदोषः ॥

उपाकर्म करके पहले कहे विद्यारंभकालमें अक्षरविद्याके आरंभमें जैसे विष्णु आदि देवतोंकी पूजा करनी कही है तिस प्रकारसें पूजा करके वेदके पढनेका आरंभ करना. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यकी स्त्रियोंकों अन्य युगोंमें यज्ञोपवीतकर्म और वेदोंका पढना उचित था, परंतु कलियुगमें यज्ञोपवीतका होना और वेदोंका पढना स्त्रियोंकों उचित नहीं है. इसकारणसें स्त्रियोंकों वेदके उच्चार आदिमें दोष है.

अथानध्यायाःतेचनित्यानैमित्तिकाश्चप्रायेणमौंजीप्रकरणेउक्ताःततोन्येपिउभयविधानध्यायाबहवोनिबंधेषूक्तास्तेत्रनप्रपंच्यंते कलिकालेस्मिंस्तावदनध्यायपालनस्यदुर्मेधसामशक्यत्वात् तथाचहेमाद्रौस्मृतिः चतुर्दश्यष्टमीपर्वप्रतिपत्स्वेवसर्वदा दुर्मेधसामनध्यायास्त्वंतरागमनेषुचेति अतःकलौप्रतिपद्द्वयमष्टमीद्वयंचतुर्दशीद्वयंपूर्णिमादर्शोऽयनसंक्रांतिरित्येतावतएवानध्यायांस्त्यक्त्वावेदशास्त्रादिकमध्येतव्यं पुंसांप्रायोल्पप्रज्ञत्वात् शिष्टाचारोप्येवमेव पूर्व दिनेसायंपरत्रप्रातश्चत्रिमुहूर्तानध्यायतिथिसत्त्वेउदयेस्तमयेवापीत्यनेनदिनद्वयेऽनध्यायप्राप्तौवचनांतरं केचिदाहुःक्वचिद्देशेयावत्तद्दिननाडिकाः तावदेवत्वनध्यायोनतन्मिश्रेदिनांतरइति इदमप्यल्पप्रज्ञविषयंचतुर्थीसप्तम्यादौप्रदोषनिर्णयउक्तःप्रदोषेषुनस्मरेन्नचकीर्तयेदित्युक्तेरितरानध्यायतोदोषाधिक्यं अनध्यायस्तुनांगेषुनेतिहासपुराणयोः नधर्मशास्त्रेष्वन्येषुपर्वण्येतानिवर्जयेत् नित्येजपेचकाम्येचक्रतौपारायणेपिच नानध्यायोस्तिवेदानांग्रहणेग्राहणेस्मृतः ॥

अब अनध्याय कहताहुं.

वे अनध्याय नित्य और नैमित्तिक भेदसें प्रायशः यज्ञोपवीत प्रकरणमें कहे हैं. तिस्सें अन्यभी दोनों प्रकारके बहुतसे अनध्याय ग्रंथोंमें कहे हैं, परंतु तिन्होंका यहां प्रपंच नहीं किया जाता है. क्योंकी, इस कलियुगमें वे सब अनध्यायोंके पालनेकों दुर्बुद्धिवाले मनुष्य समर्थ नहीं हैं. तैसाही हेमाद्रि ग्रंथमें स्मृतिवचन है—"चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस, पौर्ण-

मासी, प्रतिपदा, अध्ययनके समयमें बीचमेंसें किसीकका गमन इतने अनध्याय मंदमतियोंकों हैं." इस कारणसें कलियुगमें दोनों प्रतिपदा, दोनों अष्टमी, दोनों चतुर्दशी, पौर्णमासी, अमावस, कर्ककी संक्रांति और मकरकी संक्रांति इन अनध्यायोंकों त्यागकर वेद, शास्त्र आदिका पठन करना उचित है, क्योंकी पुरुषोंकी प्रायशः अल्पबुद्धि होती है, और शिष्टोंकाभी आचार ऐसाही है. पूर्व दिनमें सायंकालमें और परदिनमें प्रातःकालमें तीन मुहूर्त अनध्यायकी तिथिके होनेमें, "उदयकालमें अथवा अस्तकालमें" इस वचनसें दोनों दिनोंमें अनध्याय प्राप्त होनेमें दूसरा वचन है—कितनेक ग्रंथकार कहते हैं की, "जिस दिनमें जितनी अनध्यायतिथीकी घटीका होवैं तितनाही अनध्याय मानना. अनध्यायघटीकायुक्त परदिन अनध्याय नहीं है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं," यहभी वचन मंदबुद्धिविषयक है ऐसा जानना.. चतुर्थी और सप्तमी आदिविषे प्रदोष होता है. तिसका निर्णय पहले कहा है. "प्रदोषदिनमें स्मरण और पठन नहीं करना, इस वचनसें अन्य अनध्यायोंसें प्रदोषके अनध्यायकी अधिकता है ऐसा जानना." वेदके अंग, भारत आदि इतिहास, पुराण और धर्मशास्त्र और अन्य शास्त्र इन्होंविषे अनध्याय नहीं है. पर्वदिनमें इन सबोंकों पढना नहीं. नित्यकर्म, जप, काम्यकर्म, यज्ञ, पारायण इन्होंविषे अनध्याय नहीं है. वेदोंके पठन और पाठनमें अनध्याय है.

अथाध्ययनधर्माः वेदारंभेवसानेगुरोःपादोपसंग्रहणं आदौप्रणवमुच्चार्यवेदमधीत्यांतेप्रणवमुच्चार्यभूमिंस्पृष्ट्वाविरमेत् रात्रेःप्रथमयामेचरमयामेचवेदाध्ययनं यामद्वयंशयानस्तुब्रह्मभूयायकल्पते गुरुंपितरंमातरंचमन्येतकदापिनद्रुह्येत अध्यापितायेगुरुंनाद्रियंतेशिष्यावाचामनसाकर्मणावा यथैवतेनगुरोर्भोजनीयास्तथैवतान्नभुनक्तिश्रुतंतत् इत्यध्ययनधर्माः ॥

अब वेदोंका अध्ययन कैसा करना तिसके धर्म कहताहुं.

वेदाध्ययनके आरंभमें और अंतमें गुरुके चरणोंकों ग्रहण करना. प्रथम ॐकारका उच्चार करके पीछे वेदका अध्ययन करके अंतमें ॐकारका उच्चार करके पृथिवीकों स्पर्श करके विराम करना. रात्रिके प्रथम प्रहरमें और अंतके प्रहरमें वेदका अध्ययन करना. "बीचके दो प्रहरोंमें शयन करता हुआ मनुष्य ब्रह्मपनेकों प्राप्त होता है." गुरु, माता, पिता इन्होंका मान रखना. इन्होंका कभीभी द्रोह नहीं करना. "गुरुके पास पढे हुए ऐसे शिष्य वाणी, मन, कर्म इन्होंसें यदि गुरुका आदर नहीं करैं तो जैसे वे गुरुनें पालन करनेकों योग्य नहीं हैं तैसे वेदभी तिन्होंका पालन नहीं करते हैं; अर्थात् तिन शिष्योंकों वेद फल देनेहारे नहीं होते हैं." ऐसा अनध्यायधर्म समाप्त हुआ.

अथव्रतानि तानिमहानाम्नीव्रतमहाव्रतोपनिषद्व्रतगोदानव्रताख्यानिचत्वारिक्रमेणजन्मतस्रयोदशादिषुवर्षेषूत्तरायणेचौलोक्ततिथिनक्षत्रवारादिषुकार्याणि अत्रविस्तृतप्रयोगाःकौस्तुभादौस्वस्वगृह्येषुचद्रष्टव्याः एतेषांलोपेप्रत्येकमेकैककृच्छ्रंचरित्वागायत्र्याशताहुतीर्जुहुयात् त्रीन्षड्द्वादशवाकृच्छ्रान्कुर्यात्इत्यन्यत्र ॥

अब व्रत कहताहुं.

वे व्रत महानाम्नीव्रत, महाव्रत, उपनिषद्व्रत और गोदानव्रत ऐसे नामोंसें चार प्रकारके हैं. वे चार व्रत जन्मकालसें तेरहमा आदि वर्षमें उत्तरायणमें चौलकर्मविषे कहे तिथि, नक्षत्र और वार आदिकोंमें करने उचित हैं. इन व्रतोंका विस्तारपूर्वक प्रयोग कौस्तुभ आदि ग्रंथोंमें और अपने अपने गृह्यसूत्रमें देखना उचित है. इन्होंके लोपमें एक एकके प्रति कृच्छ्र प्रायश्चित्त करके गायत्रीमंत्रसें १०० आहुतियोंसें होम करना. तीन अथवा छह अथवा बारह कृच्छ्र प्रायश्चित्त करना ऐसा दूसरे ग्रंथमें कहा है.

अथसमावर्तनं गुरवेक्षेत्राद्यन्यतमंदत्वातदनुज्ञयास्नायात् स्नानंनामसमावर्तनं तानिच क्षेत्रंहेमगौरश्वश्छत्रोपानहौधान्यंवस्त्रत्रयंशाकमित्येतानि एषुयद्गुरोःप्रियंतद्देयंदानंविनैवगुरु प्रीतौतदनुज्ञयैवस्नायात् क्षेत्रादिनापिनविद्यानिष्क्रयः एकैकमक्षरंयस्तुगुरुःशिष्येनिवेदयेत् पृथिव्यांनास्तितद्द्रव्यंयद्दत्वात्वनृणीभवेदित्युक्तेः सचस्नातकस्त्रिविधःविद्यास्नातकोव्रतस्नातकोविद्याव्रतोभयस्नातकइति तत्रैकंद्वौत्रीन्‌चतुरोवावेदान्वेदैकदेशंवाधीत्यतदर्थंचज्ञात्वाद्वादशवर्षादिब्रह्मचर्यकालावधेःप्रागेवस्नातिसविद्यास्नातकः उपनयनव्रतसावित्रीव्रतवेदव्रतान्यनुष्ठायवेदसमाप्तेःपूर्वमेवस्नातोव्रतस्नातकः द्वादशवर्षादिब्रह्मचर्यसमाप्यावेदंसमाप्यस्नातोविद्याव्रतोभयस्नातकः तत्रोपनयनोत्तरंमेधाजननपर्यंतंत्रिरात्रद्वादशरात्रादिव्रतमुपनयनव्रतं मेधाजननोत्तरमुपाकर्मांतंब्रह्मचारिधर्मानुष्ठानंसावित्रीव्रतं तदुत्तरंवेदाध्ययनार्थंद्वादशवर्षादिकालावच्छिन्नव्रतंवेदव्रतं स्वाध्यायोध्येतव्यइतिविधेरर्थज्ञानपर्यंतत्वाद्वेदार्थज्ञानंविनावेदाध्ययनमात्रेणसमावर्तनेऽधिकारोनेतिपूर्वमीमांसकाः वेदग्रहणमेवविधिफलंपूर्वकांडार्थज्ञानंकर्मानुष्ठानाक्षिप्तं उत्तरकांडार्थज्ञानंकाम्यश्रोतव्याविधिप्राप्तमित्युत्तरमीमांसकाः तत्रसंहिताब्राह्मणं चमिलित्वैकोवेदः आरण्यकांडंब्राह्मणांतर्गतमेव संपूर्णैकवेदाध्ययनेष्वशक्तोवेदैकदेशंपठेत्त्रत्यशक्तेनसंहितायाःप्रथमचरमसूक्तेकतिपयसूक्तानांप्रथमाऋचः सर्वसूक्तानांप्रथमाऋचोवाध्येतव्याःएवंवेदैकदेशाध्ययनोत्तरंसमावृत्तोविवाहितोवाब्रह्मचर्योक्तनियमेनवेदाध्ययनंकुर्यात् तत्रऋतौभार्यागमनंकार्यं ब्रह्मचारीव्रतलोपप्रायश्चित्तंकृच्छ्रत्रयंकृत्वामहाव्याहृतिहोमंचकृत्वा समावर्तनंकार्यं एतच्चसंध्याग्निकार्यभिक्षालोपशूद्रादिस्पर्शकटिसूत्रमेखलाजिनत्यागदिवास्वापांजनपर्युषितभोजनादिव्रतभंगेषु अल्पकालमल्पव्रतभंगेज्ञेयम् बहुधर्मलोपेतुतंवोधियानव्यस्याशविष्ठमितिमंत्रस्यलक्षजपः शिवालयेइत्युक्तं एवंचमहानाम्न्यादिव्रतलोपस्यब्रह्मचर्यव्रत लोपस्यचप्रायश्चित्तोत्तरंसमावर्तनाधिकारः ॥

अब समावर्तन कहताहुं.

वेदाध्ययन हुए पीछे गुरुकों क्षेत्र आदिमांहसें एक कोईसा पदार्थ देके तिसकी आज्ञासें स्नान करना, इसकों समावर्तन कहते हैं. गुरुकों देनेके क्षेत्र आदि कहताहुं—खेत, सोना, गौ, घोडा, छत्र, जूतीजोडा, अन्न, तीन वस्त्र, और शाक इन्होंमांहसें जो गुरुकों प्रिय होवै वह देना उचित है. कुछ दिये विनाभी जो गुरु प्रसन्न होवै तौ गुरुकी आज्ञा लेकेही

स्नान करना. खेत आदिके देनेसेंभी विद्याका मूल्य नहीं होता है, क्योंकी, “जो गुरु शिष्यकों एक एक अक्षर निवेदन करता है तिस गुरुका अनृणी (जो पदार्थ गुरुकों देनेसें) होवै ऐसा पदार्थ पृथ्वीमें नहीं है” ऐसा वचन है. **वह स्नातक तीन प्रकारका है—विद्यास्नातक, व्रतस्नातक और विद्याव्रतोभयस्नातक** ऐसा तीन प्रकारका स्नातक जानना. तिन्होंमांहसें एक, दो, तीन अथवा चार वेद अथवा वेदका एक भाग इनका पठण करके और तिसका अर्थ जानके बारह वर्ष आदि ब्रह्मचर्यकालकी अवधिके पहलेही जो स्नान करता है अर्थात् समावर्तन करता है वह विद्यास्नातक है. **उपनयनव्रत, सावित्रीव्रत और वेदव्रत** इन्होंका अनुष्ठान करके वेदसमाप्तिके पहलेही स्नान करता है वह व्रतस्नातक कहाता है. बारह वर्ष आदिपर्यंत ब्रह्मचर्य धारण करके तिस ब्रह्मचर्यकी समाप्ति करके और वेदकी समाप्ति करके जो स्नान करता है वेंह विद्याव्रतोभयस्नातक कहाता है. उपनयनकर्म किये पीछे मेधाजननकर्मपर्यंत त्रिरात्र, बारह रात्र आदि व्रत धारण करना सो उपनयनव्रत कहता है. मेधाजननसें उपाकर्मपर्यंत जो ब्रह्मचारीके धर्म तिन्होंकों सावित्रीव्रत कहते हैं. उपाकर्मके उपरंत वेद पढनेके लिये बारह वर्ष आदि कालसें विशिष्ट हुआ व्रत वेदव्रत कहाता है. “वेदोंके अर्थोंका ज्ञान होनेपर्यंत वेदोंका अध्ययन करना.” ऐसा विधि है, इस कारणसें वेदोंके अर्थका ज्ञान हुएविना वेदोंके पठनमात्रसें समावर्तनमें अधिकार नहीं है, ऐसा पूर्वमीमांसावाले कहते हैं. आदिअंतसहित वेद पढना यह विधिका फल है, पूर्वकांडके अर्थका ज्ञान संपादन करनेका सो कर्मके अनुष्ठानके लिये उपयुक्त होता है. उत्तरकांडके अर्थका ज्ञान काम्यकर्मोंके श्रवणीय विधिसें प्राप्त होता है, ऐसा उत्तरमीमांसावाले कहते हैं. तहां संहिता और ब्राह्मण मिलके एक वेद होता है. अरण्यकाण्ड ब्राह्मणके अंतर्गतही है. संपूर्ण एक वेदका अध्ययन करनेमें जिसकों सामर्थ्य नहीं होवै तिसनें वेदके एक भागका अध्ययन करना. अत्यंत असमर्थ मनुष्यनें **संहिताका** प्रथम और **चरमसूक्त** अथवा कितनेक सूक्तोंकी पहली ऋचा अथवा सब सूक्तोंकी पहली ऋचा पठित करनी. इस प्रकार वेदके एक भागका पठन किये उपरंत समावृत हुआ अथवा विवाहित हुआ ऐसे मनुष्यनें ब्रह्मचर्यमें कहे नियमसें वेदका अध्ययन करना. तिस ब्रह्मचर्यमें ऋतुकालमें भार्यासें भोग करना. ब्रह्मचारी व्रतके लोपका प्रायश्चित्त तीन कृच्छ्र करके और महाव्याहृति होम करके समावर्तन करना. यह प्रायश्चित्त संध्या, अग्निकार्य, भिक्षा, इन्होंका लोप होनेमें; शूद्र आदिका स्पर्श होनेमें; कटिसूत्र, मेखला, मृगछाला इन्होंका त्याग होनेमें; दिनमें सोना, नेत्रोंमें कज्जल घालना, वासी अन्नका भक्षण इन आदि व्रतभंगोंमें अल्पदिनपर्यंत अल्पव्रतभंग हुआ होवै तौ यह प्रायश्चित्त करना. वडे धर्मके लोपमें तौ—“**तंवोधियानव्यस्याशविष्टं०**” इस मंत्रका लक्ष १००००० जप शिवालयमें करना ऐसा पहले कहा है. इस प्रकार महानाम्नी आदि व्रतोंके लोपमें तिनका और ब्रह्मचर्यव्रतके लोपका प्रायश्चित्त करके पीछे समावर्तनसंस्कारका अधिकार प्राप्त होता है.

अथसमावर्तनकालः तत्रोपनयनोक्तकालेसमावर्तनमितिबहवोज्योतिर्ग्रंथाःतेनानध्याये प्रदोषदिनेभौमशनिवारयोःपौषाषाढयोर्दक्षिणायनेचनभवति मार्गशीर्षेविवाहप्रसक्तौदक्षिणायनेपिभवति अन्यथाअनाश्रमीनतिष्ठेतदिनमेकमपिद्विजइतिनिषेधातिक्रमापत्तेःअन्येतुमौं

ज्युक्तकालोपादानेमूलाभावात् रिक्तात्रयपूर्णिमामावास्याष्टमीप्रतिपद्भिन्नतिथिषुशुक्लेंत्यत्रिकभिन्नकृष्णेचगुरुशुक्रास्तादिदिनक्षयभद्राव्यतीपातादिदोषशून्येशुभवारेसमावर्तनंकार्यं नात्र प्रदोषसोपपदादितिथिवर्जनमावश्यकमित्याहुः पुष्यपुनर्वसुमृगरेवतीहस्तानुराधोत्तरात्रयरोहिणीश्रवणविशाखाचित्राःश्रेष्ठाः एतदलाभेमौंज्युक्तभानि क्वचिद्भौमशनिवारौसिंधावुक्तौ॥

अब समावर्तनका काल कहताहुं.

यज्ञोपवीतकर्मकों जो काल कहा है तिस कालविषे समावर्तनकर्म करना ऐसा बहुतसे ज्योतिषग्रंथोंमें कहा है. तिसपरसें अनध्याय, प्रदोषदिन, मंगलवार, शनिवार, पौषमहीना, आषाढमहीना और दक्षिणायन इन्होंमें समावर्तन नहीं करना. मंगशिरके महीनेमें तिसका विवाह करना होवै तौ तिसका समावर्तन दक्षिणायनमेंभी होता है. विवाहके विना समावर्तन करनेमें “ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यनें आश्रमके विना एक दिनभी रहना नहीं,” ऐसा जो निषेध कहा है तिसका उल्लंघन होवैगा. दूसरे ग्रंथकार तौ यज्ञोपवीतकर्मकों जो काल कहा है वह काल समावर्तनकों लेना ऐसा मूलप्रमाण कहींभी मिलता नहीं है, इसलिये चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, पौर्णमासी, अमावस, अष्टमी और प्रतिपदा इन्होंसें वर्जित तिथियोंमें, शुक्ल पक्षमें और अंतके पांच दिनोंसें वर्जित कृष्णपक्षमें और बृहस्पति शुक्रका अस्त आदि, दिनक्षय, भद्रा, व्यतीपात इन आदि दोषरहित शुभवारमें समावर्तन करना. इस समावर्तनविषे प्रदोष और सोपपदा आदि तिथि वर्जित करनी आवश्यक नहीं है ऐसा कहते हैं. पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिर, रेवती, हस्त, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, श्रवण, विशाखा और चित्रा ये नक्षत्र श्रेष्ठ हैं. इन्होंके अलाभमें यज्ञोपवीतकर्ममें कहे नक्षत्र लेने. कहींक शनिवार और मंगलवारभी लेने ऐसा **निर्णयसिंधुमें** कहा है.

अथमणिकुंडलवस्त्रयुगच्छत्रोपानद्युगदंडस्रगुन्मर्दनानुलेपांजनोष्णीषाणिआत्मनेआचार्यायचसंपाद्यालाभेआचार्यायैववासंपादयेत् देशकालौसंकीर्त्यममब्रह्मचर्यनियमलोपजनितसंभावितदोषपरिहारेणसमावर्तनाधिकारसंपादनद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमाज्यहोमपूर्वकंकृच्छ्रत्रयं महानाम्न्यादिव्रतचतुष्टयलोपजनितप्रत्यवायपरिहारार्थंप्रतिसंस्कारमेकैकंकृच्छ्रंचगायत्र्याज्यहोमपूर्वकंतंत्रेणाहमाचरिष्ये इतिसंकल्प्याग्निप्रतिष्ठादिचक्षुषीआज्येनात्रप्रधानंअग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचचतसृभिराज्याहुतिभिःअग्निंपृथिवींमहांतमेकयाज्याहुत्यावायुमंतरिक्षंमहांतमेकया०आदित्यंदिवंमहांतमेकया०चंद्रमसंनक्षत्राणिदिशोमहांतमेकया० अग्निंद्विः विभावसुंशतक्रतुंअग्निंअग्निंअग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचेत्यष्टावेकैकयाज्याहुत्याशेषेणेत्यादि आज्यभागांते व्यस्तसमस्तव्याहृतिभिर्हुत्वा भूरग्नयेचपृथिव्यैचमहतेचस्वाहा अग्नयेपृथिव्यैमहतेइदमित्यादियथान्वाधानंत्यागःभुवोवायवेचांतरिक्षायचमहतेचस्वाहा सुवरादित्यायचदिवेचमहतेचस्वाहा भूर्भुवःसुवश्चंद्रमसेचनक्षत्रेभ्यश्चदिग्भ्यश्चमहतेचस्वाहा चंद्रमसेनक्ष०पाहिनोअग्नएनसेस्वाहा पाहिनोविश्ववेदसेस्वाहा यज्ञंपाहिविभावसोस्वाहा सर्वंपाहिशतक्रतोस्वाहापुनरूर्जानिवर्तस्वपुनरग्नइहायुषा पुनर्नःपाह्यंहसःस्वाहासहरय्यानिवर्तस्वाग्नेपिन्व

स्वधारयाविश्वप्स्नियाविश्वतस्परिस्वाहा पुनर्व्यस्तसमस्तव्याहृतिचतुष्टयं ततःव्रतचतुष्टयार्थं गायत्र्याज्यहोमःकृच्छ्रत्रयगोनिष्क्रयंदत्वाहोमशेषंसमापयेत् महानाम्न्यादिलोपेप्रत्येकमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौवागायात्र्याज्याहुतीर्हुत्वाएकैकंकृच्छ्रंचरेत् इतिप्रायश्चित्तप्रयोगः ॥

पीछे मणि, कुंडल, दो वस्त्र, छत्री, जूतीजोडा, दंड, माला, उवटना, अनुलेपन, अंजन और पगडी ये पदार्थ अपने लिये और आचार्यके लिये संपादन करने. अथवा अलाभमें आचार्यके अर्थही संपादन करने. पीछे देश और कालका उच्चार करके "मम ब्रह्मचर्यनियमलोपजनितसंभावितदोषपरिहारेण समावर्तनाधिकारसंपादनद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमाज्यहोमपूर्वकं कृच्छ्रत्रयं महानाम्न्यादिव्रतचतुष्टयलोपजनितप्रत्यवायपरिहारार्थं प्रतिसंस्कारमेकैकं कृच्छ्रं च गायत्र्याज्यहोमपूर्वकं तंत्रेणाहमाचरिष्ये," ऐसा संकल्प करके अग्निस्थापन आदि कर्म करके पीछे अन्वाधान करना. सो ऐसा—"चक्षुषी आज्येनात्र प्रधानं अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं च चतसृभिराज्याहुतिभिः अग्निं पृथिवीं महांतमेकयाज्याहुत्या वायुमंतरिक्षंमहांतमेकयाज्याहुत्या आदित्यं दिवं महांतमेकयाज्याहुत्या चंद्रमसं नक्षत्राणि दिशो महां तमेकयाज्याहुत्या अग्निं द्विः विभावसुं शतक्रतुं अग्निं अग्निं अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं चेत्यष्टावेकैकयाज्याहुत्या शेषेण स्विष्टकृतं०" इत्यादिक अन्वाधान करके आज्यभागपर्यंत कर्म करके पीछे व्यस्त और समस्त व्याहृतियोंसें होम करके फिर होम करना. तिसके मंत्र—"भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा अग्नये पृथिव्यै महते इदं न मम," इस आदि जैसा अन्वाधान किया होवै तैसाही त्याग करना. "भुवो वायवे चांतरिक्षाय च महते च स्वाहा ॥ सुवरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा॥ भूर्भुवःस्वश्चंद्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा ॥ चंद्रमसे नक्ष० ॥ पाहि नो अग्नएनसेस्वाहा ॥ पाहिनो विश्ववेदसे स्वाहा ॥ यज्ञं पाहि विभावसो स्वाहा॥ सर्वं पाहि शतक्रतो स्वाहा ॥ पुनरूर्जानिवर्तस्व पुनरग्नइइहायुषा ॥ पुनर्नः पाह्यंहसः स्वाहा ॥ सहरय्यानिवर्तस्वाग्ने पिन्वस्वधारया ॥ विश्वप्स्निया विश्वतस्परिस्वाहा," इस प्रकार होम करके फिर व्यस्त और समस्त व्याहृतिमंत्रोंसें चार आहुति देनी. पीछे चार व्रतोंके अर्थ गायत्रीमंत्रसें घृतका होम करना. तीन कृच्छ्र गौकी किंमत देके होमशेष समाप्त करना. महानाम्नी आदि व्रतोंके लोपमें एक एक व्रतके प्रति १०८ अथवा अठाईस अथवा आठ आहुति गायत्रीमंत्रसें घृतकी देके एक एक कृच्छ्र प्रायश्चित्त करना. इस प्रकार प्रायश्चित्तका प्रयोग समाप्त हुआ.

अथसमावर्तनसंकल्पादि ममगृहस्थाश्रमार्हतासिद्धिद्वाराश्रीपर० समावर्तनंकरिष्यइति संकल्प्यनांदीश्राद्धांतंबटुरेवकुर्यात् ब्रह्मचारीजीवत्पितृकश्चेत्पितुर्मात्राद्युद्देशः ब्रह्मचार्यशक्तश्चेत्पित्रादिस्तत्प्रतिनिधित्वेननांदीश्राद्धंकुर्यात् समावर्तनउपनयनादाविवपित्रादिरेवनांदीश्राद्धकर्तेतिमतांतरेणप्रागुक्तं अवशिष्टप्रयोगःस्वस्वगृह्यानुसारेण दशत्रीन्वाविप्रान्भोजयेत् दास्यंति मधुपर्कयेतत्रैतांरजनींवसेत् ततोव्रतानिसंकल्पयेत् तानिचस्वसूत्रोक्तानिस्मृत्युक्तानिचेतिद्विविधानि सर्वाण्यपिपुरुषार्थान्येवनतुसमावर्तनांगानितत्राशक्तःसूत्रोक्तान्येवव्रतानिकुर्यात् शक्तस्तुस्मृत्युक्तान्यपि तानियथा निमित्तंविनाननक्तंस्नास्यामि ननग्नःस्नास्यामि ननग्नःशयिष्ये

ननग्नांस्त्रियमीक्षिष्येन्यत्रमैथुनात् वर्षतिनधाविष्ये नवृक्षमारोहिष्ये नकूपमवरोहिष्ये नबाहुभ्यांनदींतरिष्यामि नप्राणसंशयमभ्यापत्स्ये इतिसूत्रोक्तानि ॥

अब समावर्तनका संकल्प इत्यादि कहताहुं.

पीछे समावर्तनका संकल्प इत्यादि करना. सो ऐसा—“**मम गृहस्थाश्रमार्हतासिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं समावर्तनं करिष्ये,**” ऐसा संकल्प करके नांदीश्राद्धपर्यंत कर्म कुमारनेंही करना. जीवते हुये पितावाला ब्रह्मचारी होवै तौ नांदीश्राद्धमें पिताकी माता आदिका उद्देश करना. ब्रह्मचारीकों सामर्थ्य नहीं होवै तौ तिसके स्थानमें पिता आदिनें नांदीश्राद्ध करना. यज्ञोपवीत आदि संस्कारोंमें जैसा नांदीश्राद्ध करनेवाला पिता आदिही अधिकारी होता है तैसा समावर्तनमेंभी नांदीश्राद्ध करनेवाला पिता आदिही है, ऐसा मतांतर करके पहले कह दिया है. शेष रहा प्रयोग अपने अपने गृह्यसूत्रके अनुसार करना. दश अथवा तीन ब्राह्मणोंकों भोजन देना. जो मधुपर्क देते हैं अर्थात् मधुपर्कसें पूजा करते हैं तहां तिस रात्रिमें वास करना. पीछे व्रतोंका संकल्प करना. वे व्रत अपने सूत्रमें कहे हुए और स्मृतिमें कहे हुए ऐसे दो प्रकारके हैं. वे सबही व्रत पुरुषार्थरूप हैं, समावर्तनके अंगरूप नहीं हैं. तिनमेंसें अशक्त मनुष्यनें सूत्रमें कहे हुए व्रत मात्र करने. शक्तिवाले मनुष्यनें सूत्रमें कहे हुए व्रत करके स्मृतीमें कहे हुए व्रतभी करने. वे व्रत दिखाये जाते हैं—निमित्तके विना रात्रिमें मैं स्नान नहीं करूंगा. नग्न होके स्नान नहीं करूंगा. नग्न होके शयन नहीं करूंगा. भोग करनेविना अन्य कालमें नंगी स्त्रीकों नहीं देखूंगा. वर्षामें जलदी नहीं चलूंगा. वृक्षपर नहीं चढूंगा. कूपमें नहीं उतरूंगा. बाहुओंसें नदीकों नहीं तिरूंगा. जिस्सें प्राणोंके रहने और जानेमें संशय होवै तैसा कर्म नहीं करूंगा. ऐसे सूत्रमें कहे व्रत जानने.

अथस्मृत्युक्तानि नित्यंयज्ञोपवीतद्वयंधारयिष्ये सोदककमंडलुंछत्रमुष्णीषंपादुकेउपानहौसुवर्णकुंडलेदर्भमुष्टिंचधारयिष्ये कर्तनेनऽन्हस्वीकृतकेशश्मश्रुनखःस्यां निमित्तंविनामुंडनंनकरिष्यइत्यर्थः नसमावृत्तामुंडेरन्नितितिनिषेधात् नित्यमध्ययनरतःस्यां स्वशरीरादुद्धृतंस्वनिर्माल्यंपुष्पचंदनादिपुनर्नधारयिष्ये शुक्लांबरधरःस्यां सुगंधीप्रियदर्शनःस्यां विभवेसतिजीर्णवासामलवद्वासाश्चनस्यां रक्तंवासःशरीरपीडावहंवावस्त्रंनधारयिष्ये गुरुंविनान्यैर्धृतंवस्त्रमलंकारंस्रजंचनधारयिष्ये अशक्तस्तुअन्यधृतमपिवस्त्रादिप्रक्षाल्यधारयेत् अन्यधृतोपवीतमुपानहौचनधारये कंथांनधारयिष्ये नस्वरूपमुदकेनिरीक्षिष्ये नभार्ययासाकमेकपात्रेएककालेवाश्नीयां एतद्विवाहभिन्नविषयं शूद्रायधर्मज्ञानंनीतिज्ञानंव्रतकल्पंचनोपदिशामि एतत्साक्षादुपदेशपरं कृत्वाब्राह्मणमग्रतइतिब्राह्मणद्वारकोपदेशेदोषाभावात् गृहमेधिशूद्रायस्वोच्छिष्टंनदास्ये शूद्रायहोमशेषंनदास्ये उद्धृतोदकेनतिष्ठन्नाचमनंनकरिष्ये जानुमात्रेतदधिकेवाजलेतिष्ठदाचमनेदोषाभावात् अशुचिनाएकहस्तेनवाआनीतजलैर्नाचामिष्ये पादेनपादधावनंनक

रिष्ये अकल्पांस्त्रियंनगमिष्यामि नप्रावृतमस्तकोहनिपर्यटिष्यामि रात्रौमलमूत्रोत्सर्गेचप्रावृताशिराःस्यां सोपानत्कोशनाभिवादननमस्कारान्नकरिष्ये पादेनासनंनापकर्षिष्यामि एवमन्यान्यपिस्मृत्युक्तानिज्ञेयानि एतेषुव्रतेषुयानिकर्त्तुंशक्नुयात्तावंत्येवसंकल्पयेत् अत्रसंकल्पितव्रतोल्लंघनेमत्याकृतेत्र्यहमभोजनं अमत्याकृतेएकरात्रमभोजनंप्रायश्चित्तं अशक्तस्त्रीनेकंवाविप्रंभोजयेत् इतिस्नातकव्रतानि ॥

अब स्मृतिमें कहे व्रतोंकों कहताहुं.—नित्य दो जनेउओंकों धारण करूंगा. पाणीसें भरा लोटा, छत्री, पगडी, दो खडाऊं, जूतीजोडा, सोनाके दो कुंडल, डाभोंकी मुष्टि इन्होंकों धारण करूंगा. काटनेकरके छोटे वाल, छोटी डाढी, छोटे नख इन्होंवाला रहूंगा. अर्थात् निमित्तके विना मुंडन नहीं कराऊंगा. क्योंकी "जिसका समावर्तनकर्म हो चुका होवै तिसकों मुंडन करानेका अधिकार नहीं है," ऐसा निषेध है. नित्यप्रति पढनेमें रत रहूंगा. अपने शरीरसें उतारी हुई पुष्पोंकी माला और चंदन आदिकों फिर धारण नहीं करूंगा. सफेद वस्त्रोंकों धारण करूंगा. सुगंधयुक्त और प्रीतिकारक जिसका दर्शन ऐसा होऊंगा. सामर्थ्य होवै तौ पुराना और मैला वस्त्र धारण नहीं करूंगा, लाल वस्त्र और शरीरकों दुःख देनेवाले वस्त्र धारण नहीं करूंगा. गुरुके विना अन्य पुरुषनें धारण किये वस्त्र, गहना, माला धारण नहीं करूंगा. असमर्थ होवै तौ दूसरेनें धारण किये वस्त्र आदि धोके धारण करने. दूसरेनें धारण किये यज्ञोपवीत और जूतीजोडाकों धारण नहीं करूंगा. कंथाकों अर्थात् गूदडीकों नहीं धारण करूंगा. अपने स्वरूपकों जलमें नहीं देखूंगा. अपनी स्त्रीके साथ एकपात्रमें अथवा एककालमें भोजन नहीं करूंगा; यह विवाहसें भिन्न जानना. शूद्रकों धर्मज्ञान, नीतिज्ञान और व्रतका उपदेश नहीं करूंगा; यह साक्षात् उपदेश करनेविषे जानना. क्योंकी, "ब्राह्मणकों आगे करके शूद्रकों उपदेश करना," ऐसा वचन है, इस लिये ब्राह्मणके द्वारा उपदेश करनेमें दोष नहीं लगता है. गृहस्थी शूद्रकों अपना उच्छिष्ट पदार्थ नहीं देऊंगा. शूद्रकों होमशेष नहीं देऊंगा. कूप आदिसें काढे हुये पानीसें खडा रहके आचमन नहीं करूंगा; गोडापर्यंत अथवा तिस्सेंभी अधिक ऐसे जलमें स्थित होके आचमन करनेमें दोष नहीं है. अशुद्ध मनुष्यनें अथवा एक हाथसें काढे हुए पानीसें आचमन नहीं करूंगा. पैरसें पैरकों नहीं धोऊंगा. रोगसें असमर्थ हुई स्त्रीसें भोग नहीं करूंगा. मस्तककों कपडासें आच्छादित करके दिनमें नहीं विचरूंगा. रात्रिविषे, विष्ठा और मूत्रके त्यागनेमें वस्त्रसें आच्छादित किये शिरवाला रहूंगा. जूतियोंकों धारण करके भोजन, नामगोत्रका उच्चारणपूर्वक नमस्कार और प्रणाम इन्होंकों नहीं करूंगा. पैरकरके आसन नहीं उलटूंगा. ऐसे अन्यभी स्मृतिमें व्रत कहे हैं सो देख लेने. इन व्रतोंमेंसें जितनें करनेकों सामर्थ्य होवै तितनोंहीका संकल्प करना. यहां संकल्पित किये व्रतके बुद्धिपूर्वक उल्लंघनमें तीन उपवास करने. विना जानेंसें संकल्पित व्रतके उल्लंघनमें एक रात्र उपवास करना यह प्रायश्चित्त है. उपवास करनेकों सामर्थ्य नहीं होवै तौ तीन अथवा एक ब्राह्मणकों भोजन करवाना. ऐसे स्नातकके व्रत समाप्त हुये.

आतुरदशायांयथोक्तसमावर्तनासंभवेसंक्षेपतस्तत्कार्यं तत्प्रयोगःसंकल्प्यब्रह्मचारीलिंगानिमेखलादीनित्यक्त्वावपनंकृत्वातीर्थेस्नात्वा वासःपरिधानाचमनतिलकधारणानिकृत्वाऽग्निं प्रतिष्ठाप्यतत्रप्रजापतिंमनसाध्यायंस्तूष्णींसमिधमादध्यात् अन्यदपिअविरोधितूष्णीमेवकर्तव्यमिति इतिसमावर्तनानुकल्पः ॥

आतुर अवस्थामें विधिके अनुसार समावर्तन नहीं हो सकै तौ संक्षेपसें समावर्तन करना. **तिसका प्रयोग कहताहुं.**—संकल्प करके ब्रह्मचारीनें मेखला आदि चिन्होंका त्याग करके क्षौर कराय तीर्थमें स्नान करना. पीछे वस्त्रोंका धारण, आचमन, तिलक इन्होंकों करके अग्निकी स्थापना करनी. पीछे वह अग्नीमें ब्रह्माजीका मनसें ध्यान करता हुआ मंत्ररहित समिध देनी. अन्यभी विरोध नहीं होवै तौ वह मंत्ररहितही करना. ऐसा समावर्तनका गौणपक्ष समाप्त हुआ.

ब्रह्मचर्यदशायांदशाहाशौचहेतुसपिंडमरणेसमावर्तनोत्तरमुदकदानपूर्वकंत्रिरात्रमतिक्रांताशौचंकार्यं अनुपनीतसपिंडेमातुलादौचमृतेऽतिक्रांताशौचंन एवंजननाशौचेप्यतिक्रांताशौचंन ततश्चदशाहाशौचापादकसपिंडकमृतौसमावर्तनोत्तरंत्रिरात्रमध्येविवाहोनकार्यः कस्यचिन्मरणाभावेतुनविवाहेदोषः ॥

ब्रह्मचर्यदशामें दश दिन आशौच पालना चाहिये ऐसे सपिंडमनुष्यके मरनेमें समावर्तनके उपरंत मृत मनुष्यकों तिलांजलि देके तीन दिन अतिक्रांत आशौच मानना उचित है. नहीं संस्कार हुये सपिंडके और मामा आदिके मरनेमें अतिक्रांतसंज्ञक आशौच नहीं होता है. ऐसेही जन्मके सूतकमेंभी अतिक्रांताशौच नहीं होता है. तिसपरसें जिसका दश दिन आशौच लगता होवै ऐसे सपिंड पुरुषके मरनेमें समावर्तनके उपरंत तीन दिनपर्यंत विवाह नहीं करना, कोईभी नहीं मरै तौ विवाहमें दोष नहीं है.

इत्थंव्रतांतकर्माण्यनंतोपाध्यायसूनुना निर्णीयश्रीविठ्ठलांघ्र्योर्वाग्विलासःसमर्पितः ॥

मैं अनंत उपाध्यायके पुत्रनें इस प्रकार स्नातकव्रतपर्यंत सब कर्मोंका निर्णय करके अपनी वाणीका शृंगार श्रीविठ्ठलजीके चरणोंमें समर्पित किया है.

अथश्रीभगवत्पादौपुंडरीकवरप्रदौ श्रीगुरून्पितरौनत्वाविवाहंवक्तुमुद्यतः ॥ १ ॥

अब पुंडरीककों वर देनेवाले श्रीविठ्ठलजीके चरणारविंद और श्रीगुरुजी, पिता और माता इन्होंकों प्रणाम करके विवाह कहनेमें उद्युक्त होताहुं.

उद्वहेत्तुद्विजोभार्यांसवर्णांलक्षणैर्युतां अव्यंगांगींसौम्यनाम्नींमृद्वंगींचमनोहरां भाविशुभाशुभज्ञानहेतुलक्षणविचारोष्टौमृत्पिंडान्कृत्वेत्यादिरूपआश्वलायनसूत्रेउक्तः ज्योतिःशास्त्रोक्त

राशिनक्षत्रादिघटितविचारोपिशुभादिज्ञानहेतुः सचसंक्षेपेणोच्यते तत्रमेषादिराशिस्वामिनः भौमःशुक्रोबुधश्चंद्रः सूर्यःसौम्योभृगुःकुजः ॥ गुरुःशनैश्चरोमंदःसुरेज्योराशिपाःस्मृताः ॥

अब विवाहसंस्कार कहताहुं.

द्विजनें अपनी जातिकी, अच्छे लक्षणोंसें संयुक्त, व्यंगरहित अंगोंवाली, सौम्य नामवाली, कोमल अंगोंवाली और सुंदर ऐसी स्त्री विवाहनी उचित है. आगे होनेवाले शुभाशुभके जो लक्षण हैं तिनका विचार, “ माटीके आठ पिंड करने, ” इस आदि आश्वलायनसूत्रमें कहा है. ज्योतिषशास्त्रमें कहे राशि, नक्षत्र आदिके घटितका विचार शुभ आदिकों कारण है इस लिये वह संक्षेपसें कहताहुं. तहां प्रथम मेष आदि राशियोंके स्वामी कहताहुं.— “ मंगल, शुक्र, बुध, चंद्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनैश्चर, शनैश्चर, और बृहस्पति ये क्रमसें मेष आदि वारह राशियोंके स्वामी कहे हैं. ”

अथग्रहाणांशत्रुमित्रादि रवेर्गुरुभौमचंद्रामित्राणि शनिशुक्रौशत्रू बुधःसमः इंदोःसूर्यबुधौमित्रे भौमगुरुशुक्रशनयःसमाः अस्यशत्रुर्न कुजस्यबुधोरिपुः सूर्यगुरुचंद्रामित्राणि शनिशुक्रौसमौ बुधस्यार्कशुक्रौमित्रे चंद्रोरिः शनिभौमगुरवःसमाः गुरोःसूर्यभौमचंद्रामित्राणि शुक्रबुधौशत्रू शनिःसमः शुक्रस्यशनिबुधौमित्रे सूर्यचंद्रावरी भौमगुरूसमौ शनेःशुक्रबुधौमित्रे कुजसूर्यचंद्राअरयः गुरुःसमः अत्रगुणविचारः राश्योरेकाधिपत्वेराशिपत्योर्मित्रत्वेचपंचगुणाः राशिपयोःसमत्वशत्रुत्येऽर्धोगुणः समत्वमित्रत्वेचत्वारः शत्रुत्वमित्रत्वेएकः द्वयोःसमत्वेत्रयः द्वयोःशत्रुत्वेगुणाभावः ॥

अब ग्रहोंके मित्र, सम, और शत्रु कहताहुं.

सूर्यके बृहस्पति, मंगल, चंद्रमा ये मित्र हैं; शनि और शुक्र ये शत्रु हैं; बुध सम है. चंद्रमाके सूर्य और बुध मित्र हैं; मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि ये सम हैं; इसकों शत्रु नहीं है. मंगलका बुध शत्रु है; सूर्य, बृहस्पति, चंद्रमा ये मित्र हैं; शनि और शुक्र ये सम हैं. बुधके सूर्य और शुक्र मित्र हैं; चंद्रमा शत्रु है; शनि, मंगल, बृहसति सम हैं. बृहस्पतिके सूर्य, मंगल और चंद्र मित्र हैं; शुक्र और बुध शत्रु हैं; शनि सम है. शुक्रके शनि और बुध मित्र हैं; सूर्य और चंद्रमा शत्रु हैं; मंगल और बृहस्पति सम हैं. शनैश्चरके शुक्र और बुध मित्र हैं; मंगल, सूर्य और चंद्रमा शत्रु हैं; बृहस्पति सम है. **यहां गुणविचार कहताहुं.**— कन्या और वरकी राशिका स्वामी एक होवै अथवा आपसमें मित्र होवै तौ पांच गुण जानने. राशियोंके स्वामियोंका समपना और शत्रुपना होवै तौ आधा गुण जानना. राशियोंके स्वामियोंका समपना और मित्रपना होवै तौ चार गुण जानने. राशियोंके स्वामियोंका शत्रुपना और मित्रपना होवै तौ एक गुण जानना. राशिके दोनों स्वामियोंका समपना होवै तौ तीन गुण जानने. दोनों राशियोंके स्वामियोंका शत्रुपना होवै तौ गुणका अभाव जानना.

अथगणः पूर्वात्रयोत्तरात्रयभरणीरोहिण्यार्द्रामनुष्यगणः हस्तरेवतीपुनर्वसुपुष्यस्वातीमृगश्रवणाश्विन्यनुराधादेवगणः कृत्तिकाश्लेषामघाचित्राविशाखाज्येष्ठामूलधनिष्ठाशततारकाराक्षसगणः गणैक्येशुभं देवमनुष्ययोर्मध्यमं देवरक्षसोर्वैरं राक्षसमनुष्ययोर्मरणं अतोमनुष्यराक्षसयोर्विवाहोनकार्यः अत्रगुणाःगणैक्येषट्गुणाःवरोदेवोनृगणाकन्यात्रापिषट् वैपरीत्येपंच वरोराक्षसःकन्यादेवगणाअत्रैकः वैपरीत्येगुणाभावः मनुष्यराक्षसत्वेपिगुणाभावः॥

अब गणमैत्री कहताहुं.

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, भरणी, रोहिणी, आर्द्रा ये नक्षत्र जिसके जन्मसमयमें होवैं तिसका मनुष्यगण जानना. हस्त, रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाती, मृगशिर, श्रवण, अश्विनी, और अनुराधा इन नक्षत्रोंमें जिसका जन्म होवै तिसका देवगण जानना. कृत्तिका, आश्लेषा, मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, शतभिषा, इन नक्षत्रोंमें जिसका जन्म होवै तिसका राक्षसगण जानना. गणोंकी एकतामें शुभ जानना. देव और मनुष्यगण होवै तौ मध्यम फल जानना. देव और राक्षसगण होवै तौ वैर जानना. राक्षस और मनुष्यगण होवै तौ मृत्यु जानना. इस कारणसें मनुष्य और राक्षसगणवाले कन्यावरोंका विवाह नहीं करना. **गणमैत्रीके गुण कहताहुं.**—कन्या और वरका एक गण होवै तौ छह गुण जानने. वरका देवगण और कन्याका मनुष्यगण होवै तब छह गुण जानने. पुरुषका मनुष्यगण होवै और स्त्रीका देवगण होवै तौ पांच गुण जानने. वरका राक्षसगण होवै और कन्याका देवगण होवै तौ एक गुण जानना. वरका देवगण होवै और कन्याका राक्षसगण होवै तौ गुणका अभाव जानना. एकका मनुष्यगण होवै और दूसरेका राक्षसगण होवै तौभी गुणका अभाव जानना.

अथराशिकूटं द्विर्द्वादशकेनिर्धनत्वं नवपंचमत्वेनिःपुत्रता षट्काष्टकेमरणंविपत्तिर्वा उभयसप्तमेतृतीयैकादशेचतुर्थेदशमेचशुभं नक्षत्रैक्येचरणभेदेशुभं अत्रराश्यैक्येतिशुभं राशिभेदेपिकूटदोषोन नक्षत्रभेदेराश्यैक्येचशुभं अत्रनाडीगणादिदोषोन चरणैक्यंषट्काष्टकंचवर्ज्यं द्विर्द्वादशकेनवपंचमेचमध्यमं शेषेशुभं अत्रगुणाःसत्कूटेसप्त दुःकूटेग्रहमैत्रीसत्त्वेचत्वारः अन्यथाएकः चरणैक्येगुणाभावः ॥

अब राशिकूट कहताहुं.—वधूकी राशिसें वरकी राशि, अथवा वरकी राशिसें वधूकी राशि बारहमी तथा दूसरी होवै तौ निर्धनपना होता है. पांचमी अथवा नवमी होवै तौ पुत्रका अभाव होता है. छठी अथवा आठमी होवै तौ मृत्यु अथवा दुःख होता है. दोनोंकी राशियोंसें सातमी, तीसरी, ग्यारहमी, चौथी, दशमी राशि होवै तौ शुभ जानना. वधूका और वरका चरणभेदसें एक नक्षत्र होवै तौ शुभ होता है. दोनोंकी एक राशि होवै तौ अत्यंत शुभ होता है. राशिके भेदमेंभी कूटदोष नहीं. नक्षत्रका भेद होवै और राशिकी एकता होवै तौभी शुभ जानना. इस राशिकूट विषे नाडी, गण, ग्रहमैत्री इत्यादि दोष नहीं है. चरणकी एकता, छठी और आठमी राशि वर्जित करना. दूसरी, बारहमी, नवमी और पां-

चमी राशि होवै तौ मध्यम फल जानना. शेष रही राशियोंका शुभ फल जानना. **यहां गुण कहताहुं.**—शुभ कूट होवै तौ सात गुण जानने. दुष्ट कूट द्विर्द्वादशादिक होवै और ग्रहमैत्री होनेमें चार गुण जानने. इन दोनोंमेंसें एक होवै तौ एक गुण जानना. वधू और वरका एक चरण होवै तौ गुण नहीं.

अथनाडी अश्विन्यार्द्रापुनर्वसूत्तराफल्गुनीहस्तज्येष्ठामूलशततारकापूर्वाभाद्रपदेतिप्रथम नाडी भरणीमृगपुष्यपूर्वाफल्गुनीचित्रानुराधापूर्वाषाढाधनिष्ठोत्तराभाद्रपदेतिमध्यमनाडी कृत्तिकारोहिण्याश्लेषामघास्वातीविशाखोत्तराषाढाश्रवणरेवतीतिचरमनाडी अत्रनाड्यैक्येमृत्युः नाडीभेदेष्टौगुणाः नाड्यैकंसर्वथावर्ज्यं शूद्रादौपार्श्वैकनाडीद्वयंसंकटेशुभं अत्रवर्णवश्यभकूटयोनिकूटानामल्पगुणत्वात्विवाहविघटकत्वाभावाच्चस्वरूपंनोक्तं अत्रसर्वगुणमेलनेनविंशतिगुणसंभवेमध्यमं विंशत्यधिकगुणत्वेऽतिशुभं विंशत्यूनत्वेत्वशुभं इतिनक्षत्रादिघटित विचारः ॥

अब नाडी कहताहुं.

अश्विनी; आर्द्रा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा और पूर्वाभाद्रपदा इन्होंकी आद्यनाडी होती है. भरणी, मृगशिर, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा अनुराधा, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा और उत्तराभाद्रपदा इन्होंकी मध्यनाडी होती है. कृत्तिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाती, विशाखा, उत्तराषाढा, श्रवण, और रेवती इन्होंकी अंत्यनाडी होती है. वधूवरकी नाडीकी एकतामें मृत्यु होता है. नाडीके भिन्नपनेमें आठ गुण जानने. नाडीकी एकता सब प्रकारसें वर्जित करनी. शूद्र आदि वर्णोंकों आद्यनाडी और अंत्यनाडी संकटमें शुभ होती है. वर्ण, वश्य, नक्षत्रकूट, योनिकूट इन्होंके गुण अल्प होनेसें वे विवाहकों बाधक नहीं इसवास्ते तिन्होंका यहां स्वरूप नहीं कहा है. सब गुणोंका मेलन करके वीस गुणोंके संभवमें मध्यम फल है. वीससें अधिक गुणोंके संभवमें अत्यंत शुभ फल होता है. वीससें कमती गुणोंमें अशुभ फल है. ऐसे नक्षत्र आदि घटितका विचार समाप्त हुआ.

अनन्यपूर्विकांकांतामसपिंडांयवीयसीं अरोगिणींभ्रातृमतीमसमानार्षगोत्रजामितियाज्ञवल्क्याद्युक्तकन्याविशेषणेषु कांतत्वनीरोगत्वभ्रातृमत्त्वभिन्नविशेषणानामभावेइहपरत्रपातित्यात्तानिप्रपंच्यंते तत्रान्यपूर्विकाःपुरुषांतरपूर्विकाःमनोदत्तावाचादत्ताग्निपरिगतासप्तमंपदंनीताभुक्तागृहीतगर्भाप्रसूतेतिसप्तविधपुनर्भवास्तदभिन्नामनन्यपूर्विकां सप्तपदीविधेःपूर्वमाद्यानांतिसृणांसंकटेन्येनविवाहोभवति सप्तपदीविधौजातेबलाद्विवाहितापिनान्यत्रदेया असपिंडां समानःएकःपिंडः पिंडदानक्रियामूलपुरुषशरीरंवायस्याःसासपिंडातद्भिन्नां तत्रलेपभाजश्चतुर्थाद्याःपित्राद्याःपिंडभागिनः पिंडदःसप्तमस्तेषांसापिंड्यंसाप्तपौरुषमितिमात्स्योक्तेरेकस्यांपिंडदानक्रियायांदातृत्वपिंडभाक्त्वलेपभाक्त्वान्यतमसंबंधेनप्रवेशोनिर्वाप्यसापिंड्यमिति केषांचिन्मतं अत्रस्त्रीणामपिपतिभिःसहकर्तृत्वात्सापिंड्यसिद्धिः मूलपुरुषैकशरीरावयवा

न्वयेनावयवसापिंड्यमित्यपरंमतं यद्यपिभ्रातृपत्नीनांपरस्परंनैतत्संभवतितथाप्याधारत्वेनैकशरीरान्वयः एकमूलपुरुषावयवानांपुत्रद्वारास्वाधानादितिज्ञेयं उभयत्रापिगयादौमित्रादेरपिपिंडभाक्त्वादेकशरीरान्वयस्यसप्तमात्परेषुपरःशतेष्वपिसत्त्वाच्चातिप्रसंगप्राप्तेर्वध्वावरस्यवातातः कूटस्थाद्यादिसप्तमः पंचमीचेत्तयोर्मातातत्सापिंड्यंनिवर्ततइत्यादिवचनैर्निरासः मातृत्वपितृत्वादिसंबंधेसत्येवपंचमसप्तमपर्यंतमेवेत्युभयनियमस्वीकारात् तथाचपितृद्वारकसापिंड्यविचारेसप्तमादूर्ध्वसापिंड्यनिवृत्तिः मातृद्वारकसापिंड्याविचारेतुपंचमादूर्ध्वंतन्निवृत्तिरितिनिर्णयः।

अब सापिंड्यनिर्णय कहताहुं

अनन्यपूर्विका अर्थात् दान और उपभोग करके जिसका ग्रहण दूसरे पुरुषनें नहीं किया होवै ऐसी और वरके मनकों और नेत्रोंकों आनंद देनेवाली और अपने सपिंडोंमें नहीं उपजी हुई ऐसी और वरसें अवस्थामें और शरीरसें छोटी और रोगोंसें रहित हुई और भाइयोंवाली और वरसें भिन्न प्रवर और गोत्रमें उत्पन्न हुई ऐसी स्त्री विवाहनी," इस प्रकार याज्ञवल्क्य आदिके कहे कन्याके विशेषणोंमें वरके मनकों और नेत्रोंकों आनंद देनेवाली और रोगसें रहित हुई और भाइयोंवाली इन विशेषणोंके विना जो अन्य विशेषण हैं सो जिस कन्याके अंगमें नहीं होवैं, तैसी कन्याके साथ विवाह करनेसें इहलोकमें और परलोकमें पतितपना प्राप्त होता है, इस लिये वे लक्षण विस्तारसें कहताहुं. तहां प्रथम अनन्यपूर्विकाका लक्षण कहताहुं. अन्य पुरुषकों मनसें दीई हुई, वाणीसें दीई हुई, विवाहहोमपर्यंत संस्कारसें युक्त कीई हुई, सप्तपदीकर्म पूर्ण हुई, उपभोग कीई हुई, गर्भवाली और बालककों उपजानेवाली ऐसे सात प्रकारसें पुनर्भू होती है. एतद्भिन्न ऐसी अनन्यपूर्विका होती है. सो मनसें दीई हुई, वाणीसें दीई हुई और विवाहहोमपर्यंत प्राप्त हुई इन्होंका संकटमें दूसरे पुरुषसें विवाह हो सकता है. सप्तपदी हुये पीछे बलसें विवाहित हुईभी अन्य जगह नहीं देनी. समान है एकपिंडदानक्रिया अथवा मूलपुरुषशरीरावयवसंबंध जिसका वह सपिंडा होती है और तिस्सें भिन्न असपिंडा होती है. तहां चौथी पिढीसें आदि ले लेपभाज कहाते हैं. और पितासें आदि ले तीन पिढीतक पिंडभागी कहाते हैं. तिन्होंमें सातमा आप पिंडद कहाता है; इसलिये सात पुरुषपर्यंत सापिंड्या होता है; ऐसा मत्स्यपुराणका वचन है; इसवास्ते एक पिंडदानकी क्रियामें दातापना, पिंडभागीपना और लेपभागीपना इन्होंके एक कोईसे संबंधकरके जो प्रवेश है तिसका नाम निर्वाप्यसापिंड्य है, ऐसा कितनेक ग्रंथकारोंका मत है. यहां स्त्रियोंकोंभी पतियोंकेसाथ कर्तृत्व होनेसें तिनकों सापिंड्यकी सिद्धि होती है. मूलपुरुषके शरीरसंबंधी अवयवोंके अस्तित्वसें तिनकों अवयवसापिंड्य होता है यह दूसरा मत है. जोभी भाईयोंकी पत्नियोंकों आपसमें यह सापिंड्यका संभव नहीं होता; तथापि आधारत्वसें एकशरीरका अन्वय होता है. कारण, भ्राताओंका जो एक मूलपुरुष है तिसके अवयवोंका पुत्रद्वारा स्थापन होनेसें भ्राताओंकी स्त्रियोंमें सापिंड्य होता है ऐसा जानना. दोनों तरहके सापिंड्यलक्षणोंमेंभी गया आदिविषे मित्र आदिकोंभी पिंड प्राप्त होता है, इस्सें और एकशरीरका अवयवसंबंध सातमे पुरुषसें परै सैंकडों पिढीपर्यंत होनेसें तिनकोंभी सापिंड्यप्राप्ति होवैगी और तैसा होनेसें अनवस्था-

प्रसंग प्राप्त हुआ, तिसका निरसन “कन्याका अथवा वरका पिता कूटस्थपुरुषसें आदि ले सातमा होवै और वह कन्या और वरकी माता मूलपुरुषसें पांचमी होवै तब वह सापिंड्य निवृत्त होता है,” इस आदि वचनोंसें तिसका निरास होता है. क्योंकी, मातृत्व और पितृत्व इत्यादि संबंध होवै तब माता पांचमी और पिता सातमा इहांतक सापिंड्य ऐसी रीतिसें दोनों नियमोंका अंगीकार किया है, इसलिये पितासें सापिंड्यके विचारमें सातमे पुरुषके उपरंत सापिंड्यकी निवृत्ति होती है और मातासें सापिंड्यके विचारमें पांचमे पुरुषके उपरंत सापिंड्यकी निवृत्ति होती है. इसप्रकार निर्णय जानना.

अत्रोदाहरणानि.

विष्णुर्मुलभूतः	विष्णुर्मूलभूतः	विष्णुर्मूलभूतः	विष्णुर्मूलभूतः
कांतिः २ गौरी २	दत्तः २ चैत्रः २	दत्तः २ चैत्रः २	दत्तः २ चैत्रः २
सुधीः ३ हरः ३	सोम ः ३ मैत्रः ३	सोमः ३ मैत्रः ३	सोमः ३ मैत्रः ३
बुधः ४ मैत्रः ४	सुधीः ४ बुधः ४	सुधीः ४ बुधः ४	सुधीः ४ बुधः ४
चैत्रः ५ शिवः ५	श्यामा ५ रतिः ५	श्यामा ५ नर्मदा ५	श्यामा ५ शिवः ५
गणः ६ भूपः ६	शिवः ६ गौरी ६	शिवः ६ कामः ६	कांतिः ६ हरः ६
मृडः ७ अच्युतः ७		रमा ७ कविः ७	
रतिः ८ कामः ८			
अत्र रतिकामयोरष्टमयोर्विवाहः पितृद्वारकत्वात् ॥	अत्रगौरीशिवयोः षष्ठयोर्विवाहः मातृद्वारकत्वात् ॥	अत्र रमाकव्योर्नविवाहः मंडूकप्लुत्यासापिंड्यानुवृत्तेः ॥	अत्रकांतिहरयोर्न विवाहः एकतोनिवृत्तावपिअन्यतोनुवृत्तेः ॥

यहां उदाहरणोंकों कहते हैं.

विष्णु मूलपुरुष.			
कांति.	२	गौरी.	२
सुधी.	३	हर.	३
बुध.	४	मैत्र.	४
चैत्र.	५	शिव.	५
गण.	६	भूप.	६
मृड.	७	अच्युत.	७
रति.	८	काम.	८

यहां रति और कामका विवाह होता हैं, क्योंकी पितासें दोनों आठमी पीढीमें हैं.

विष्णु मूलपुरुष.			
दत्त.	२	चैत्र.	२
सोम.	३	मैत्र.	३
सुधी.	४	बुध.	४
श्यामा.	५	रति.	५
शिव.	६	गौरी.	६

यहां गौरी और शिवका विवाह होता है, क्योंकी मातासें दोनों छठी पीढीमें हैं.

विष्णु मूलपुरुष.			
दत्त.	२	चैत्र.	२
सोम.	३	मैत्र.	३
सुधी.	४	बुध.	४
श्यामा.	५	नर्मदा.	५
शिव.	६	काम.	६
रमा	७	कवि.	७

यहां रमा और कवीका विवाह नहीं होता, क्योंकी मंडूकप्लुतिसें इन दोनोंका सापिंड्य है. एक पिढीकों छोडके पिछली पिढीमें सापिंड्य होवै तिसकों मंडूकप्लुतिसापिंड्य कहते हैं. इस उदाहरणमें शिव और कामका आपसमें सापिंड्य निवृत्त हुआ, क्योंकी, मातासें पांच पुरुषपर्यंत सापिंड्य होता है, शिव और कामदेव दोनों मूलपुरुषसें छठी पिढीमें हैं.

विष्णु मूलपुरुष.			
दत्त.	२	चैत्र.	२
शर्म.	३	मैत्र.	३
सुधी.	४	बुध.	४
श्यामा.	५	शिव.	५
कांति.	६	हर.	६

यहां कांति और हरका विवाह नहीं होता. क्योंकी एक पक्षसें सापिंड्य नहीं है; परंतु दूसरे पक्षसें सापिंड्य है,क्योंकी, कांतिसें मातृद्वारा सापिंड्य है और हरसें पितृद्वारा सापिंड्य है.

विष्णोर्मूलात्कांतिगौर्यौजातौताभ्यांसुधीहरौ बुधमैत्रौचैत्रशिवौगणभूपौमृडाच्युतौ १
तज्जातयोरष्टमयोर्विवाहोरतिकामयोः ॥

"मूलपुरुष विष्णुसें एक कांति और दूसरी गौरी ऐसी दो कन्या उपजी. तिन्होंमेंसें कांतिका पुत्र सुधी, सुधीका पुत्र बुध, बुधका पुत्र चैत्र, चैत्रका पुत्र गण, गणका पुत्र मृड, मृडकी कन्या रति सो मूलपुरुष विष्णुसें आठमी पिढीमें है. दूसरी कन्या गौरीका पुत्र हर, हरका पुत्र मैत्र, मैत्रका पुत्र शिव, शिवका पुत्र भूप, भूपका पुत्र अच्युत, अच्युतका पुत्र काम सो मूलपुरुष विष्णुसें आठमी पिढीमें हुआ, इसवास्ते इन दोनोंका विवाह होता है."

विष्णोर्मूलाद्दत्तचैत्रौसोममैत्रौसुधीबुधौ २ ताभ्यांश्यामारतीतज्जशिवगौर्योःकरग्रहः ॥

“मूलपुरुष विष्णुके एक दत्त और दूसरा चैत्र ऐसे दो पुत्र हुये. दत्तका पुत्र सोम, सोमका पुत्र सुधी, सुधीकी कन्या श्यामा, श्यामाका पुत्र शिव, सो मूलपुरुष विष्णुसें छठी पिढीमें हुआ. दूसरा पुत्र चैत्र, तिसका पुत्र मैत्र, मैत्रका पुत्र बुध, बुधकी कन्या रति, रतिकी कन्या गौरी, सो मूलपुरुष विष्णुसें छठी पिढीमें हुई, इसवास्ते शिव और गौरीका विवाह होता है.”

विष्णोर्मूलाद्दत्तचैत्रौसोममैत्रौसुधीबुधौ ॥ ३ ॥ ताभ्यांश्यामानर्मदाचशिवकामौरमाकवी ॥ मंडूकप्लुतिसापिंड्यंरमाकव्योर्विवाहहृत् ॥ ४ ॥

“मूलपुरुष विष्णुके दत्त और चैत्र नामके दो पुत्र हैं. दत्तका पुत्र सोम, सोमका पुत्र सुधी, सुधीकी कन्या श्यामा, श्यामाका पुत्र शिव, शिवकी कन्या रमा, सो मूलपुरुष विष्णुसें सातमी पिढीमें हुई. दूसरा चैत्र जो है तिसका पुत्र मैत्र, मैत्रका पुत्र बुध, बुधकी कन्या नर्मदा, नर्मदाका पुत्र काम, कामका पुत्र कवि सो मूलपुरुष विष्णुसें सातमी पिढीमें हुआ. यहां मंडूकप्लुतिसापिंड्य होता है; इसलिये रमा और कविका विवाह नहीं होता.”

विष्णोर्मूलाद्दत्तचैत्रौसोममैत्रौसुधीबुधौ ॥ श्यामाशिवौकांतिहरौहरकांतीनदंपती ॥ ५ ॥
निवृत्तमप्येकतस्तदन्यतस्त्वनुवर्तते दिङ्मात्रेणोदाहृतात्रसेयंसापिंड्यपद्धतिः ॥ ६ ॥

“मूलपुरुष विष्णुके एक दत्त और दूसरा चैत्र ऐसे दो पुत्र हैं. दत्तका पुत्र सोम, सोमका पुत्र सुधी, सुधीकी कन्या श्यामा, श्यामाकी कन्या कांति, सो मूलपुरुष विष्णुसें छठी पिढीमें हुई. दूसरा पुत्र चैत्र, तिसका पुत्र मैत्र, मैत्रका पुत्र बुध, बुधका पुत्र शिव, शिवका पुत्र हर, सो मूलपुरुष विष्णुसें छठी पिढीमें हुआ; परंतु कांति और हरका विवाह नहीं होता. क्योंकी, माताकेद्वारा सापिंड्य होनेसें सापिंड्यनिवृत्ति होती है; परंतु पिताकेद्वारा सापिंड्य बन रहा है, इसलिये निवृत्ति नहीं होती. ऐसे यहांभी सापिंड्यपद्धतिदिशामात्रके दिखानेकरके कही है.”

कूटस्थात्पंचम्योःकन्ययोःसंततौमातृद्वारकत्वात्सापिंड्यनिवृत्तिः पंचम्योःकन्ययोर्यौ पुत्रौतयोःसंततौपितृद्वारकत्वात्सापिंड्यमनुवर्ततइतीदंमंडूकप्लुतिसापिंड्यं ॥

मूलपुरुषसें पांचमी पिढीमें होनेवाली दो कन्याओंकी संतानमें माताकेद्वारा जो सापिंड्य था तिसकी निवृत्ति हुई. और मूलपुरुषसें पांचमी कन्याके पुत्रकी संततिमें पिताकेद्वारा सापिंड्य वर्तता है. इसकों मंडूकप्लुतिसापिंड्य कहते हैं.

पंचम्याःकन्यायाःपुत्रस्यषष्ठस्यकूटस्थात्पंचमादिःसपिंडोनभवतितथापिद्वितीयसंततिपंक्तौपंचमषष्ठादेःपितृद्वारकत्वादिनासापिंड्यसत्त्वादेकतोनिवृत्तावप्यन्यतोनुवृत्त्यापंचमषष्ठादिनापंचम्याःकन्यायाःसंततिर्नविवाह्या एवंकूटस्थमारभ्याष्टमादेःकूटस्थमारभ्यद्वितीयतृतीयादेश्चैकतोनिवृत्तिपरतोनुवृत्त्योःसत्त्वमूह्यं एवमाशौचविषयकसापिंड्येपिएकतोनुवृत्त्यादिकंयथासंभवंसर्वमूह्यं ॥

मूलपुरुषसें पांचमी पिढीमें जो कन्या है तिसका पुत्र छठी पिढीमें है, तिसका मूलपु-

रुषसें पांचमा आदि करके जो पुरुष है वह सपिंड नहीं होता; तथापि दूसरी संतानकी पंक्तिमें पांचमी और छठी आदि पिढीवालेकों पिताकेद्वारा सापिंड्य वन रहा है, इसलिये एक तरफसें अर्थात् माताकेद्वारा सापिंड्य नहीं रहा है, तथापि दूसरी तरफसें अर्थात् पितृद्वारा है; इसलिये पांचमी और छठी आदि पिढीवाले पुरुषनें पांचमी पिढीकी कन्याकी संतानकी साथ विवाह नहीं करना. ऐसेही मूलपुरुषसें आरंभ करके आठमा आदि पुरुषकों और मूलपुरुषसें आदि ले दूसरा और तीसरा आदि पुरुषकों एक प्रकारसें सापिंड्य दूर हुआ है और दूसरे प्रकारसें सापिंड्य बन रहा है ऐसी योजना करनी. ऐसेही आशौचसंबंधी सापिंड्यविषयमेंभी एक प्रकारसें निवृत्ति और दूसरे प्रकारसें प्रवृत्ति संभवके अनुसार जाननी.

एवंपितृद्वारकसापिंड्यंसप्तमादूर्ध्वंनिवर्ततेमातृद्वारकंतुपंचमादूर्ध्वमितिमुख्यकल्पेनवर्जनीयानांकन्यानांसंख्याचेत्थंसंपद्यते पितृकुलेषोडशाधिकद्विसाहस्री २०१६ मातृकुलेपंचोत्तरशतं १०५ कुलद्वयेमेलनेनैकविंशत्युत्तरशताधिकसहस्रद्वयसंख्या २१२१ कन्यावर्ज्याः संपद्यंतें अत्रगणनाप्रकारस्तत्रमूलश्लोकास्तद्व्याख्याचकौस्तुभेस्पष्टाः बालानांदुर्बोधतयानेहोच्यते तथाचमुख्यकल्पेनकुलद्वयेएतावत्यःवर्जनीयाएव नत्वनुकल्पानुसरणेनसप्तमात्पंचमादर्वाग्विवाहःकार्यः पंचमेसप्तमेचैवयेषांवैवाहिकीक्रिया क्रियापराअपिहितेपतिताःशूद्रतांगताः सप्तमात्पंचमाद्धीमान्यःकन्यामुद्वहेद्दिजः गुरुतल्पीसविज्ञेयःसगोत्रांचैवमुद्वहन्इत्यादि स्मृतिभ्यः यानितु चतुर्थीमुद्वहेत्कन्यांचतुर्थःपंचमोवरः तृतीयांवाचतुर्थींवापक्षयोरुभयोरपि इत्यादिवचनानितेषुकानिचिन्निर्मूलानिकानिचिद्दत्तकसापत्न्यादिसंबंधविषयतयाविप्राणांक्षत्रियादिषुसापिंड्यविषयतयावानेयानिइतिनिर्णयसिंधुमतं कौस्तुभेतु उद्वहेत्सप्तमादूर्ध्वंतदभावेतुसप्तमीं पंचमींतदभावेतुपितृपक्षेप्ययंविधिः ॥

इस प्रकार पिताके द्वारा सापिंड्य मूलपुरुषसें सातमा पुरुषके उपरंत दूर होता है, और माताके द्वारा सापिंड्य तौ मूलपुरुषसें पांचमे पुरुषके उपरंत दूर होता है, इसलिये मुख्यपक्षकरके वर्जनेके योग्य कन्याओंकी संख्या इस प्रकार होती है, सो ऐसी. पिताके कुलमें २०१६ पिढी होवैं और माताके कुलमें १०५ पिढी होवैं और दोनों कुलोंके मेलनेसें २१२१ कन्या वर्जित होती हैं. यहां गणनाप्रकार और मूलश्लोक और तिन्होंकी व्याख्या कौस्तुभ ग्रंथमें स्पष्ट है. जिनकों शास्त्रव्युत्पत्ति नहीं तिनकों वह दुर्बोध होनेसें वह यहां नहीं कही है. ऐसे मुख्य पक्षकरके दोनों कुलोंमें २१२१ कन्या वर्जित हैं. गौणपक्षके अनुसार सातमा और पांचमा पुरुषसें पहले विवाह करना नहीं. क्योंकी, “जिन पुरुषोंका विवाह पांचमी, और सातमी सपिंडाके साथ होता है वे पुरुष क्रियामें तत्पर हुए भी शूद्रपनेकों प्राप्त होके पतित होते हैं.” “जो बुद्धिमान् द्विज सातमी और पांचमी पिढीकी कन्याकों विवाहता है अथवा अपने गोत्रकी कन्याकों विवाहता है वह पुरुष गुरुकी स्त्रीसें भोग करनेवाला जानना,” इन आदि स्मृतिवचन हैं. “मूल पुरुषसें चौथे वरनें चौथी पिढीकी कन्या विवाहनी. पांचमी पिढीके वरनें तिसरी अथवा चौथी पिढीकी कन्या विवाहनी. इस प्रकार दोनों पक्षमें अर्थात् माताके पक्षमें अथवा पिताके पक्षमें जानना” इन आदि वचन हैं. तिन्होंमें कितनेक वचन निर्मूल हैं और कितनेक वचन दत्तक और सा-

पत्त आदि संबंधकी विषयतासें ब्राह्मणोंके विषयमें योजने अथवा क्षत्रिय आदियोंमें सापिंड्यकी विषयतामें ग्रहण करने ऐसा **निर्णयसिंधु**का मत है. कौस्तुभ ग्रंथमें तौ, "मूलपुरुषसें सात पिढीके उपरंतकी विवाहनी और तिसके अभावमें सातमी, तिसके अभावमें पांचमी पिढीकी विवाहनी. और यह विधि मातृपक्षमें होके पितृपक्षमेंभी है.

सप्तमींचतथाषष्ठींपंचमींचतथैवच एवमुद्वाहयेत्कन्यांनदोषःशाकटायनः तृतीयांवाचतुर्थींवापक्षयोरुभयोरपि विवाहयेन्मनुःप्राहपाराशर्योयमोंगिराः यस्तुदेशानुरूप्येणकुलमार्गेण चोद्वहेत् नित्यंसव्यवहार्यःस्याद्वेदाचैतत्प्रतीयतइत्यादिवचनानांचतुर्विंशतिमतषट्त्रिंशन्मतादिषूपलभ्यमानत्वात्सापिंड्यसंकोचेनाविवाहस्यबहुदेशेषुदर्शनाच्चयेषांकुलेदेशेचानुकल्पत्वेन सापिंड्यसंकोचः परंपरयासमागतस्तेषांसापिंड्यसंकोचेनविवाहोनदोषायस्वकुलदेशविरुद्धेन सापिंड्यसंकोचेनविवाहेदोषोभवत्येव जनपदधर्माग्रामधर्माश्चतान्विवाहेप्रतीयात् येनास्यपितरोयातायेनयाताःपितामहाः तेनयायात्सतांमार्गंतेनगच्छन्नदुष्यतिइत्यादिवाक्यैःस्वकुलदेशाचाराविरुद्धस्यैवशास्त्रस्याविवाहेनुसर्तव्यत्वात्एवंमातुलकन्यापरिणयनेपि तृप्तांजुहुर्मातुलस्येवयोषाभागस्तेपैतृष्वसेयीवपामिवेतिमंत्रलिंगैःमातुलस्यसुतामूढ्वामातृगोत्रांतथैवच समानप्रवरांचैवत्यक्त्वाचांद्रायणंचरेत्इत्यादिस्मृतीनांबाधात्येषांकुलेमातुलकन्यापरिणयः परंपराप्राप्तस्तैःसकार्यःगोत्रान्मातुःसपिंडाच्चविवाहोगोवधस्तथेतिमातुलकन्याविवाहस्यकलिवर्ज्यत्ववचनमपियेषांकुलेदेशेमातुलकन्याविवाहोनास्तितत्परं मातुलकन्यापरिणयनस्यानेकश्रुतिस्मृतिसिद्धत्वात् अतएवमातुलकन्योद्वाहिनांश्राद्धेनिमंत्रणनिषेधोपिस्वकुलाचारादिविरोधेनतदुद्वाहिपरः उक्तविधसापिंड्यसंकोचेनविवाहंकुर्वतांशिष्टैःश्राद्धादौभोजनाद्याचारादिबहूपपादितं परंतुसापिंड्यसंकोचस्वीकारेपिकतिथींकन्याकतिथेनपुरुषेणविवाह्याकतिथेननाविवाह्येतिव्यवस्थानोपपादिता ॥

"सातमी, छठी, और पांचमी ऐसी कन्याकों विवाहनी. ऐसे विवाहके होनेमें दोष नहीं है, ऐसा **शाकटायन** कहते हैं." ""पितापक्षमें और मातापक्षमें तीसरी अथवा चौथी पिढीकी कन्याकों विवाहनी ऐसा मनुजी, वेदव्यास, यम और अंगिरा ये कहते हैं. जो पुरुष देशाचार और कुलाचारके अनुसार विवाह करता है वह नित्यप्रति व्यवहारके योग्य होता है ऐसा वेदमेंभी कहा है," इस आदि वचन चतुर्विंशतिमत और षट्त्रिंशन्मत इन आदिग्रंथोंमें मिलते हैं; और, सापिंड्यके संकोचकरके बहुत देशोंमें विवाह करनेका आचार दिखता है इसलिये जिन्होंके कुलमें और देशमें अनुकूलपनेसें सापिंड्यका संकोच परंपराकरके प्राप्त हुआ है, तिन्होंनें सापिंड्यके संकोचकरके विवाह किया होवै तौ दोष नहीं है. अपना कुल और देशके विरुद्ध ऐसे सापिंड्यके संकोचकरके विवाहमें दोष होताही है. क्योंकी, "देशाचार, कुलाचार और गामका आचार ये विवाहमें करने," ऐसा **आश्वलायन** कहते हैं. "जिस आचारसें अपना पिता और पितामह आदि चले होवैं तिस आचारसें चलनेवाला मनुष्य दोषकों प्राप्त नहीं होता," इस आदि वचनोंसें अपने देश और कुलके आचारसें विरुद्ध नहीं ऐसा जो शास्त्र सो विवाहमें योग्य होता है. ऐसेही मातुल अर्थात् मामाकी कन्यासें विवाह करनेमेंभी देशाचार और कुलाचार इनकों अविरुद्ध ऐसा शास्त्र देखके तैसा

करना. “यज्ञमें जैसी वपा इंद्रका भाग होनेसें ऋत्विक् तिसका होम करते हैं, तिस प्रकार मामाकी पुत्री, पिताके भगिनीकी कन्या ये भागरूप होनेसें इनकाभी ग्रहण करते हैं,” ऐसे मंत्रप्रमाणसें मामाकी कन्या, मामाके गोत्रकी कन्या और अपने समान है प्रवर जिसका, इन कन्याओंमेंसें कोईसीभी कन्याके साथ विवाह किया होवै तौ तिसका त्याग करके चांद्रायण प्रायश्चित्त करना. इस आदि स्मृतियोंके वचन मामाकी कन्यासें विवाह करनेसें बाधक हैं, इसलिये जिन्होंके कुलमें परंपरासें मामाकी पुत्रीसें विवाह होता है तिन्होंनें वह करना. “पिताके भगिनीकी कन्या और मामाकी कन्या इन्होंके साथ विवाह करना, गोवध करना” ये कलियुगमें वर्ज्य करने ऐसा जो कलिवर्ज्यप्रकरणमें मामाकी कन्याके साथ विवाह न करनेके विषयमें वचन है सोभी जिनके कुलमें और देशमें मामाकी कन्याके साथ विवाह नहीं करते तिन्होंविषे जानना. क्योंकी, मामाकी कन्यासें विवाहका होना अनेक श्रुति और स्मृतियोंसें सिद्ध होता है, इसी कारणसें “मामाकी पुत्रीसें विवाह किये हुएकों श्राद्धमें निमंत्रित नहीं करना ऐसा जो निषेध सोभी अपने कुलाचारके विरुद्ध ऐसा जो मामाकी कन्याके साथ विवाह करनेवाला तिसविषे जानना. पहले कहा हुआ सापिंड्य, तिसका संकोच करके विवाह करनेवाले पुरुषोंकों श्राद्धादिकमें भोजनादिकों निमंत्रित करनेका शिष्टोंका आचार है, इस आदि बहुत कहा है; परंतु सापिंड्यके संकोचका अंगीकार करनेमेंभी कितनी कन्या कितने पुरुषोंनें विवाहनी और कितने पुरुषोंनें नहीं विवाहनी ऐसी व्यवस्था नहीं कही है.

सापिंड्यदीपिकाकारादयोर्वाचीनास्तुचतुर्थीमुद्वहेत्कन्यांचतुर्थः पंचमोवरः पराशरमतेषष्ठीं पंचमोनतुपंचमीमित्यादिवचनानांसमूलत्वंनिश्चित्यअशक्तैः संकटेसमाश्रयणीयस्यसापिंड्यसंकोचस्यव्यवस्थामूचुः तथाहिचतुर्थीकन्यापितृपक्षेमातृपक्षेचचतुर्थेनपंचमेनवापुंसाविवाह्याद्वितीयतृतीयषष्ठाद्यैश्चतुर्थीनोद्वाह्या पराशरमतेपंचमःषष्ठीमुद्वहेत् द्वितीयतृतीयचतुर्थादिःषष्ठींनोद्वहेत् पंचमःपंचमींनोद्वहेत् मातृतःपितृतश्चापिषष्ठः षष्ठींसमुद्वहेदितिवचनांतरात्षष्ठेनापि षष्ठीविवाह्या पंचमषष्ठभिन्नैःषष्ठीनविवाह्येतिपर्यवसन्नं तथापितृपक्षेसप्तमीमातृपक्षेपंचमीचतृतीयाद्यैःसर्वैःपरिणेया पितृपक्षाच्चसप्तमींमातृपक्षात्तुपंचमीमितिव्यासवचनात् उद्वहेत्सप्तमादूर्ध्वंतदभावेतुसप्तमीं पंचमींतदभावेतुपितृपक्षेप्ययंविधिरितिचतुर्विंशतिमतोक्तेश्चपितृपक्षेपिपंचमीतृतीयाद्यैःपरिणेया तत्रापिमातृपक्षेपितृपक्षेपिपंचमेनपंचमीनोद्वाह्या पंचमोनतुपंचमीमितिसर्वत्रनिषेधात् तृतीयांवाचतुर्थींवापक्षयोरुभयोरपीतिवचनात्तुतृतीयाविवाह्याप्राप्नोतितत्र व्यवस्थोच्यते मातृपक्षेतावत्तृतीयामातुलकन्यामातृष्वसृकन्यावासंभवतिपितृपक्षेतुतृतीयापितृव्यकन्यापितृष्वसृकन्यावा तत्रपितृव्यकन्यासगोत्रत्वात्त्याज्या पैतृष्वसेयींभगिनींस्वस्रीयां मातुरेवच एतास्तिस्रस्तुभार्यार्थेनोपयच्छेतबुद्धिमानितिमनूक्तेः पितृष्वसृमातृष्वसृकन्येअपि त्याज्ये पितृष्वसृकन्यांमातुर्भगिनींमातृष्वसारंमातुःस्वस्रीयांमातृष्वसृकन्यामेतास्तिस्रोनोद्वहेदितितदर्थात् मातुलकन्यैवतृतीयापूर्वोक्तरीत्याकुलपरंपरागतत्वेपरिणेयाएवंचतृतीयापितृतीयेनैवमातुलकन्यैवपरिणेयानचतुर्थादिनाकेनापि केचित्संकटेपितृष्वसृकन्यापरिणयनमाहुः तत्रदेशकुलाचाराद्व्यवस्थाज्ञातव्या अत्रायंसापिंड्यदीपिकादिसिद्धार्थसंग्रहः तृतीयामातुलकन्यैवोद्वाह्या चतुर्थीचतुर्थपंचमाभ्यामेव पंचमीपंचमभिन्नैःतृतीयाद्यैः सप्तमांतैःषष्ठीपंचम

षष्ठाभ्यामेव सप्तमीतृतीयाद्यैःसप्तमांतैरिति अयंसापिंड्यसंकोचेनविवाहःसंकटेष्वशक्तेन कार्यः कन्यांतरलाभेशक्तैर्नकार्यःगुरुतल्पादिदोषस्मृतेः सापिंड्यसंकोचवाक्यानामशक्ताविषयत्वस्यस्पष्टत्वात् प्रभुःप्रथमकल्पस्ययोनुकल्पेनवर्तते सनाप्नोतिफलंचेहेतिशक्तैरनुकल्पस्वीकारेदोषोक्तेः दत्तकसापिंड्यंदत्तकनिर्णयेप्रागेवोक्तं ॥

सापिंड्यदीपिकाकार आदि नवीन ग्रंथकार तौ "चौथे अथवा पांचमे पुरुषनें चौथी कन्यासें विवाह करना और पराशरके मतमें छठी कन्यासें पांचमे पुरुषनें विवाह करना; परंतु पांचमे पुरुषनें पांचमी कन्याके साथ विवाह नहीं करना," इस आदि वचन प्रमाणभूत हैं ऐसा निश्चय करके असमर्थ मनुष्योंनें संकटविषे अंगीकार करनेकों योग्य ऐसा जो सापिंड्यका संकोच तिसकी व्यवस्था कहते हैं. सो ऐसी—पितृपक्षमें और मातृपक्षमें चौथी कन्या चौथे अथवा पांचमे पुरुषनें विवाहित करनी. दूसरा, तीसरा और छठा इन आदि पुरुषोंनें चौथी कन्या नहीं विवाहनी. **पराशरके** मतमें पांचमे पुरुषनें छठी कन्या विवाहनी. दूसरा, तीसरा और चौथा आदि पुरुषनें छठी कन्या नहीं विवाहनी. पांचमें पुरुषनें पांचमी कन्या नहीं विवाहनी. "मातासें अथवा पितासें छठे पुरुषनें छठी कन्या विवाहनी," इस अन्य वचनसें छठे पुरुषनेंभी छठी कन्या विवाहनी. पांचमा और छठासें भिन्न पुरुषनें छठी कन्याके साथ विवाह नहीं करना यह सिद्धांत है. तैसेही पितृपक्षमें सातमी और मातृपक्षमें पांचमी ऐसी कन्या तीसरा आदि सब पुरुषोंनें विवाहनी. क्योंकी, "पितृपक्षसें सातमी और मातृपक्षसें पांचमी ऐसी कन्या वरनी ऐसा वेदव्यासका वचन है." मूलपुरुषसें सातमे पुरुषके उपरंतकी और तिसके अभावमें सातमी और तिसके अभावमें पांचमी कन्या विवाहित करनी, और यह विधि मातृपक्षमें होके पितृपक्षमेंभी है ऐसा **चतुर्विंशतिस्मृतियोंमें** वचन है; इसलिय पितृपक्षमेंभी पांचमी कन्या तीसरा आदि पुरुषोंनें विवाहनी. तहांभी मातृपक्षमें और पितृपक्षमेंभी पांचमे पुरुषनें पांचमी कन्या नहीं विवाहनी. क्योंकी, "पांचमे पुरुषनें पांचमी कन्याकों नहीं विवाहनी." इस प्रकार सब ग्रंथोंमें निषेध है. "मातृपक्षमें और पितृपक्षमें तीसरी अथवा चौथी कन्या विवाहनी," यह वचन है, इस्सें तौ तीसरी कन्या विवाहके योग्य प्राप्त होती है. तहां व्यवस्था कहते हैं. मातृपक्षमें तीसरी मामाकी पुत्री, अथवा मावसीकी पुत्री इन्होंका संभव होता है. पितृपक्षमें तौ तीसरी चाचाकी पुत्री अथवा भूवाकी पुत्री ये कन्या संभवती हैं. तहां चाचाकी पुत्री अपने गोत्रकी होनेसें त्यागनी. क्योंकी "भूवाकी बेटी बहन, माताकी बहन (मावसी) और मावसीकी बेटी इन तीन कन्याओंसें बुद्धिमान् पुरुषनें विवाह नहीं करना, ऐसा मनुजीनें वचन कहा है; इसलिये पिताकी बहनकी पुत्री और माताकी बहनकी पुत्रीभी विवाहनी नहीं. पिताकी बहनकी कन्या, मावसी और माताकी बहनकी कन्या इन तीनोंकों नहीं विवाहनी ऐसा वाक्यार्थ है; इसलिये मामाकी कन्याही तीसरी पूर्वोक्त रीतिकरके और कुलकी परंपरासें विवाहनी उचित होवै तौ वरनी. ऐसेही तीसरे पुरुषनें तीसरी पीढीवाली मामाकी कन्याही विवाहनी, चौथा आदि पुरुषनें नहीं विवाहनी. कितनेक ग्रंथकार संकटमें पिताकी बहनकी पुत्रीसें विवाह करना ऐसा कहते हैं, तहां देशाचार और कुलाचारसें व्यवस्था जाननी. यहां **सापिंड्यदीपिका** आदि ग्रंथोंमें सिद्ध किये अर्थका संग्रह कहा है. तीसरी

पीढीवाली मामाकीही पुत्री विवाहनी योग्य है. चौथा और पांचमा पुरुषनें चौथीही विवाहनी. पांचमासें भिन्न तीसरासें आदि ले सातमापर्यंत पुरुषोंनें पांचमी विवाहनी उचित है. पांचमा और छठ्ठा पुरुषनेंही छठ्ठी कन्या विवाहनी उचित है. तीसरासें आदि ले सातमापर्यंत पुरुषोंनें सातमी कन्या विवाहनी उचित है. इस प्रकार सापिंड्यका संकोच करके यह विवाह संकटमें असमर्थ पुरुषनें करना. दूसरी कन्या मिल सकती होवै तौ शक्तिमाननें यह विवाह नहीं करना. क्योंकी, इस विवाहमें गुरुकी स्त्रीसें भोग करनेका जो दोष है वह लगता है; और सापिंड्यसंकोचविषयकवाक्य असमर्थ पुरुषके विषयमें हैं यह स्पष्टही है. क्योंकि "जो मुख्य पक्षका स्वामी गौणपक्षसें वर्तता है तिसकों इस लोकमें कर्मका फल प्राप्त नहीं होता है" ऐसा वचन होनेसें जो समर्थ हैं तिन्होंकों गौणपक्षके अंगीकारमें दोष लगता है ऐसा कहा है. दत्तक अर्थात् गोद लिये पुत्रके सापिंड्यका निर्णय दत्तकके निर्णयमें पहलेही कह दिया है.

अथसापत्नमातृकुलेसापिंड्यप्रकारंसुमंतुराह पितृपत्न्य:सर्वामातर: तद्भ्रातरोमातुला: तद्भगिन्योमातृष्वसार: तद्दुहितरश्चभगिन्य: तदपत्यानिभागिनेयानि अन्यथासंकरकारिण: स्युरिति अत्रलक्षणयासापत्नमातृकुलेचतु:पुरुषसापिंड्यंविवाहनिषेधायविधीयतइतिकेचित् अपरेतुविवाहमात्रविषयत्वेमानाभावादाशौचादिविषयकत्वस्यापिसंभवात् यावद्वाचनिकंप्रमाणमितिन्यायेनपरिगणितेष्वेवसापिंड्यमितिवदंति तथाचसुमंतुवाक्येवाक्यभेदाश्रयणेनैवं वाक्यार्था:पर्यवस्यंति पितृपत्न्य:सर्वामातरइतिप्रथमवाक्येसापत्नमातरिमुख्यमातृवत्संमाननंतद्वधेमातृवधप्रायश्चित्तंतद्गमनेमातृगमनप्रायश्चित्तादिकंचातिदिश्यतेनात्रातिक्रांतविषयेदशाहाशौचातिदेश: त्रिरात्रविधिनाबाधात् तद्भ्रातरोमातुलाइत्यत्रमातुलत्वप्रयुक्तमाशौचादिकं मातुलस्यस्वभगिनीसपत्न्या: कन्योद्वाहनिषेधश्च अत्रमातुलत्वातिदेशेपिनतत्पुत्रादिषुमातुलपुत्रत्वाद्यतिदेश: तेनबंधुत्रयत्वप्रयुक्तमाशौचंन मातुलकन्यादौविवाहविधिनिषेधावपिन एवं मातुलकन्यादौपितुर्भगिनीत्वातिदेशाभावेनतत्पुत्रंप्रत्यपिपितृष्वसृत्वाद्यतिदेशोनभवति तद्भगिन्योमातृष्वसारइत्यत्राशौचंविवाहनिषेधश्च मातृष्वसृपुत्रेबंधुत्रयत्वंचन सापत्नमातृष्वसृकन्याविवाहनिषेधस्तुविरुद्धसंबंधत्वादेववक्ष्यते तदपत्यानिभगिन्यइत्यत्राशौचंसंमाननादिकंच नात्रविवाहप्रसक्ति:सगोत्रत्वात् अत्रसापत्नमातुलसापत्नभ्रातृसापत्नमातृष्वसृसापत्नभगिनीनां स्वमातुलसोदरभ्रात्राद्यनंतरंतर्पणंमहालयादावुद्देशोप्यतएववचनादावश्यकइतिभाति तदपत्यानिभागिनेयानिइत्यत्राशौचंविवाहनिषेधश्च भागिनेयीत्वातिदेशेपितत्कन्यासुभागिनेयीकन्यात्वातिदेशोनयावदुक्तंप्रमाणमितिन्यायादितिदिक् ॥

अब पितानें जो दूसरी विवाही होवै तिस माताके कुलमें सापिंड्यनिर्णयका प्रकार सुमंतुमुनि कहते हैं.—पिताकी सब पत्नी पुत्रकी माता कहाती हैं. पिताकी सब पत्नियोंके भाई मामे कहाते हैं. पिताकी सब स्त्रियोंकी बहन मावसी होती हैं. पिताकी सब पत्नियोंकी पुत्री बहन होती हैं. तिन बहनोंकी संतान भाणजे और भाणजी कहाते हैं. ऐसे नहीं मानेंगे सो संकर करनेवाले हो जावैंगे." यहां लक्षणाकरके सापत्न माताके कुलमें

---

१ तद्दुहीतरश्च ॥

चार पुरुषपर्यंत सापिंड्यविवाहके निषेधके अर्थ कहा है, ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. अन्य ग्रंथकार तौ विवाहमात्रके विषयमें इन चार पुरुषोंका सापिंड्य माननेमें प्रमाण नहीं इसलिये आशौच आदि विषयमें सापिंड्यका संभव होनेसें जितनेका उच्चार करके कहा तितनाही प्रमाण ऐसा न्याय है, इसलिये पिताकी सब स्त्री पुत्रकी माता हैं इन आदि जो गिनती करी हुई पिढियोपर्यंत सापिंड्य है ऐसा कहा है. 'जितना गिनती करके कहा तितना प्रमाण, ऐसा गृहीत किया है इसलिये सुमंतुमुनिके वाक्यमें वाक्यका भेद करके अर्थ करनेमें, आगल कहताहुं इसप्रमाण वाक्यके अर्थका संभव होता है. "पिताकी सब स्त्री पुत्रकी माता हैं," इस प्रथम वाक्यमें सापत्न माता अर्थात् मावसीकों मुख्य माताके समान मानना उचित है. और तिस मावसीका वध करनेमें माताके मारनेका प्रायश्चित्त है, और तिस मावसीसें भोग करनेमें मातासें भोग करनेका आदि प्रायश्चित्त है. "पिताकी सब पत्नी पुत्रकी माता हैं," इस वाक्यसें अतिक्रांत आशौचविषे दशदिनपर्यंत आशौचका अतिदेश नहीं होता हैं; क्योंकी, मावसीका अतिक्रांतरूपी आशौच तीन रात्रि लगता है, ऐसा विशेषवचन होनेसें बाध है. "मावसीके भाई मामा हैं," इस वाक्यसें 'मातुल' यह निमित्तसें जो आशौच आदि प्राप्त होता है सो और मामाकों अपनी बहनकी सपत्नी अर्थात् सोकको कन्यासें विवाहका निषेध सूचित होते हैं. यहां मामापनेका यदि अतिदेश प्राप्त होता है तथापि सापत्न मामाके पुत्र आदिकोंमें मामाके पुत्रपनेका अतिदेश नहीं होता, इसलिये बंधुत्रयसंबंधी आशौच नहीं लगता. सापत्न मामाकी कन्या आदिके साथ विवाहका विधि और निषेधभी नहीं है. ऐसेही सापत्न मामाकी कन्या आदि विषे 'पिताके मामाकी कन्या, ऐसा अतिदेश नहीं होता इसलिये वह पुत्रकोंभी पितृष्वसृत्वादिका अतिदेश नहीं होता है. "सापत्न माताकी सब बहन मावसी होती हैं," इस वाक्यसें मावसीके संबंधसें आशौच और विवाहका निषेध प्राप्त होता है. सापत्न मावसीके पुत्रोंमें बंधुत्रयपना नहीं है. "सापत्न माताकी बहनकी पुत्रीसें विवाहका निषेध कहा है सो वह विरुद्धसंबंध होता है, इसलिये वह विरुद्धसंबंध आगे कहेंगे. "सापत्न माताकी बनहकी पुत्री बहन लगती है" इस वाक्यसें सापत्न बनहका आशौच पालना और तिसका सन्मान करना यह प्राप्त होता है. सापत्न बनहके साथ विवाह नहीं हो सक्ता है. क्योंकी, गोत्र समान है. यहां अपने मातुल और अपने सोदर भाई इन्होंका उच्चार किये पीछे सापत्न मामा, सापत्न भाई, सापत्न मावसी और सापत्न बहनका तर्पण करना. महालय श्राद्ध आदिमेंभी उच्चार करनेका सो इसी वाक्यसें करना आवश्यक है ऐसा प्रतिभान होता है. "सापत्न बहनके संतान भाणजे हैं." इस वाक्यसें सापत्न बहनके संतानका आशौच और तिनके साथ विवाहका निषेध प्राप्त होता है. भाणजीपनेका यदि अतिदेश है तथापि सापत्न भाणजीयोंके कन्याकेविषे भाणजियाकी कन्याका अतिदेश नहीं होता है. क्योंकी 'जितना कहा है तितनाही प्रमाण है' इस न्यायसें दिक्प्रदर्शन मात्र किया है.

क्वचित्सापिंड्याभावेपिवचनादविवाहः अविरुद्धसंबंधामुपयच्छेत दंपत्योर्मिथःपितृमातृ साम्येविरुद्धसंबंधः यथाभार्यास्वसुर्दुहितापितृव्यपत्नीस्वसाचेतिपरिशिष्टोक्तेः बौधायनः मातुःसपत्न्याभगिनींतत्सुतांचविवर्जयेत् पितृव्यपत्नीभगिनींतत्सुतांचविवर्जयेत् केचिज्ज्ये

ष्ठभ्रातापितुःसमइत्युक्तेर्ज्येष्ठभातृपत्न्याभगिनीमातृष्वसृतुल्यत्वान्नविवाह्येत्याहुः यवीयसीं स्वापेक्षयावयसावपुषाचन्यूनामुद्वहेत् असमानार्षगोत्रजां आर्षप्रवरःस्वसमानेआर्षगोत्रेयस्य तज्जानभवतियातां असमानगोत्रामसमानप्रवरांचोद्वहेदित्यर्थः ॥

कहींक सापिंड्यके अभावमेंभी विशेषवचन होनेसें विवाह नहीं होता है ऐसा कहा है. “जिसका विरुद्धसंबंध नहीं होवै तिस कन्यासें विवाह करना.” जिन्होंका आपसमें विवाह करना होवै ऐसे वर और कन्यामें वरकों कन्यासें पिताका समानपना नहीं होवै, तैसेही कन्याकों वरकी माताका समानपना नहीं होवै तौ वह अविरुद्धसंबंध कहाता है. और तैसा नहीं होवै तौ विरुद्धसंबंध कहाता है. सो ऐसा—“अपनी स्त्रीकी बहनकी पुत्री, और चाचाकी स्त्रीकी बहन” ऐसा परिशिष्टम कहा है. यहां अपनी स्त्रीकी बहनकी कन्याके साथ पितृपना होता है. चाचाकी स्त्रीकी बहन अपनेकों माताके समान होनेसें मातृसाम्य प्राप्त होता है. इस प्रकार विरुद्धसंबंध जानना. बौधायन दूसरे प्रकारसें विरुद्धसंबंध कहते हैं.—“सापत्न माताकी बहन और तिसकी पुत्री वर्जना; चाचाकी पत्नीकी बहन और तिसकी पुत्री वर्जना.” कितनेक ग्रंथकार “बडा भाई पिताके समान है” इस वचनसें ज्येष्ठ भाईके पत्नीकी बहन मावसीके समान होती है इसवास्ते तिसके संग विवाह नहीं करना ऐसा कहते हैं. अपनेसें आयुसें और शरीरसें कमती होवै ऐसी कन्याके साथ विवाह करना. और असमानार्षगोत्रजा अर्थात् अपनेसें भिन्न हैं गोत्र और प्रवर जिनके ऐसे कुलमें उत्पन्न हुई ऐसी अर्थात् भिन्न गोत्र और भिन्न प्रवरवाली कन्याके साथ विवाह करना ऐसा तात्पर्य जानना.

अथसंक्षेपतोगोत्रप्रवरनिर्णयःतत्रगोत्रलक्षणं विश्वामित्रोजमदग्निर्भरद्वाजोथगौतमः अत्रिर्वसिष्ठःकश्यपइत्येतेसप्तऋषयः सप्तानामृषीणामगस्त्याष्टमानांयदपत्यंतद्गोत्रमित्याचक्षते यद्यपिकेवलभार्गवेष्वार्ष्टिषेणादिषुकेवलांगिरसेषुहारीतादिषुचनैतल्लक्षणं भृग्वंगिरसोरष्टऋषिष्वनंतर्गतत्वात् तथाप्यत्रप्रवरैक्यादेवाविवाहः यद्यपिगोत्राणिअनंतानि गोत्राणांतुसहस्राणिप्रयुक्तान्यर्बुदानिचेत्युक्तेस्तथापिऊनपंचाशदेवगोत्रभेदाः व्यावर्तकप्रवरभेदानांतावतामेव दर्शनात् प्रवरलक्षणंतुगो[१]त्रवंशप्रवर्तकऋषीणांव्यावर्तकाऋषिविशेषाः प्रवराइत्येवसंक्षेपतो ज्ञेयं समानगोत्रत्वंसमानप्रवरत्वंचपृथक्पृथक्विवाहप्रतिबंधकं तत्रप्रवरसाम्यंद्विविधं एकप्रवरसाम्यंद्वित्रिप्रवरसाम्यंच तत्रभृग्वंगिरोगणेतरेषुएकप्रवरसाम्यमपिविवाहप्रतिबंधकंकेवलभृगुगणेषुकेवलांगिरोगणेषुचैकप्रवरसाम्यंनविवाहबाधकं किंतुत्रिप्रवरेषुद्विप्रवरसाम्यमेवपंचप्रवरेषुत्रिप्रवरसाम्यमेवचविवाहबाधकं पंचानांत्रिषुसामान्यादविवाहस्त्रिषुद्वयोः भृग्वंगिरोगणेष्वेवंशेषेष्वेकोपिवारयेदित्यादिवचनात् जामदग्न्यभृगुगणेषुगौतमांगिरसेषुभरद्वाजांगिरसेषुचैकप्रवरसाम्येपिक्वचित्प्रवरसाम्याभावेपिचसगोत्रत्वादेवाविवाहः ॥

अब संक्षेपसें गोत्र और प्रवरका निर्णय कहताहुं.

तहां गोत्रका लक्षण कहते हैं.—“विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, अत्रि, वसिष्ठ,

---

[१] गोत्रप्रवर्तकानांविश्वामित्रादीनांवंशप्रवर्तकानांभृग्वादीनांचऋषीणामित्यर्थः।

और कश्यप ये सात ऋषि और अठमा अगस्त्यऋषि है. इन्होंके वंशकों गोत्र कहते हैं. जो की केवल भार्गव जो आर्ष्टिषेणादिक हैं और केवल अंगिरस हैं, और केवल हारीत आदिक हैं, इन्होंमें यह गोत्रका लक्षण नहीं है; क्योंकी भृगु और अंगिरा ये दो ऋषि पूर्वोक्त आठ ऋषियोंके वंशोंमें नहीं हैं, तथापि यहां प्रवरकी एकतासें विवाह नहीं होता है. यद्यपि सहस्र, प्रयुत, अर्बुद ऐसी गोत्रोंकी संख्या अनंत है ऐसा वचन है, तथापि उन्नंचाश ४९ ही गोत्रोंके भेद हैं. क्योंकी भिन्न भिन्न प्रवरोंके भेदभी ४९ उन्नंचाशही प्रतीत होते हैं. **प्रवरका लक्षण**—गोत्रोंके और वंशोंके प्रवर्तक जो ऋषि तिन्होंके भेद दिखानेवाले जो तिन्होंके वंशके मुख्य ऋषि तिन्होंकों प्रवर ऐसे संक्षेपसें कहते हैं. एक गोत्रपना और एक प्रवरपना ये भिन्न भिन्न विवाहके प्रतिबंधक हैं. तहां प्रवरका समानपना दो प्रकारका है. कहां एक प्रवरका समानपना और कहां दो और तीन प्रवरोंका समानपना होता है. तहां भृगु और अंगिरोगणविना अन्य गणोंमें एक प्रवरका समानपना आवै तौ वह भी विवाहका बाधक है. केवल भृगुगण और केवल अंगिरोगणमें एक प्रवरका समानपना है, तौभी वह विवाइका बाधक नहीं है. किंतु तीन प्रवरोंमें दो प्रवरोंका समानपना होवै और जिनके पांच प्रवर होवैं तिन्होंके तीन प्रवरोंका समानपना होवै तौ वहही विवाहका बाधक है. क्योंकी "भृगुगण और अंगिरोगणमें पांच प्रवरोंमें तीन प्रवरोंके समानपनेसें और तीन प्रवरोंमें दो प्रवरोंके समानपनेसें विवाह नहीं करना, और शेष रहे गणोंमें जो एक प्रवरका समानपना होवै तौभी विवाह करना नहीं." इस आदि वचन है. जामदग्न्यभृगुगण, गौतमांगिरस और भारद्वाजांगिरस इन्होंमें एक प्रवरका समानपना होवै और कहींक प्रवरका समानपना नहीं होवै तौभी एक गोत्र है इस लिये इन्होंका परस्पर विवाह नहीं होता है.

गोत्राणांप्रवराणांचगणनाप्रोच्यतेधुना संक्षेपात्सुखबोधायभगवत्प्रीतयेपिच सप्तभृगवः सप्तदशांगिरसः चत्वारोत्रयः दशविश्वामित्राः त्रयःकश्यपाः चत्वारोवसिष्ठाः चत्वारोगस्त्य इत्येकोनपंचाशद्गणास्तथापिसर्वग्रंथमतसंग्रहेणाधिकास्तत्रतत्रवक्ष्यंते तत्रसप्तभृगुगणाःवत्साः विदाः एतौजामदग्न्यौ आर्ष्टिषेणाः यस्काः मित्रयुवः वैन्याः शुनकाः एतेचपंचकेवलभृगवः एवंसप्त तत्र वत्साः मार्कंडेयाः मांडूकेयाः इत्यादयःशतद्वयाधिकावत्सगोत्रभेदाः एतेषांपंचप्रवराः भार्गवच्यावनाप्नवानौर्वजामदग्न्येति भार्गवौर्वजामदग्न्येतित्रयोवा भार्गवच्यावनाप्नवानेतित्रयोवा विदाः शैलाः अवटाइत्यादयोविंशत्यधिकाविदाः तेषांपंचप्रवराः भार्गवच्यावनाप्नवानौर्ववैदेति भार्गवौर्वजामदग्न्येतिवाआर्ष्टिषेणाः नैर्ऋतयः ग्राम्यायणः इत्यादयो विंशत्यधिकाआर्ष्टिषेणाः एषांभार्गवच्यावनाप्नवानार्ष्टिषेणानूपेतिपंच भार्गवार्ष्टिषेणानूपेतित्रयोवा एतेषांत्रयाणांवत्सविदार्ष्टिषेणानांपरस्परमविवाहः द्वित्रिप्रवरसाम्यात् आद्ययोर्जामदग्न्यत्वेनसगोत्रत्वाच्च यद्यपित्रिप्रवरार्ष्टिषेणानांवत्सविदैःसहनद्विप्रवरसाम्यंनापिसगोत्रत्वं जामदग्न्यत्वाभावात् तथापिपंचप्रवरपक्षगतमपित्रिप्रवरसाम्यंविवाहबाधकं एवमग्रेपिज्ञेयं वात्स्यानांभार्गवच्यावनाप्नवानेतित्रयः वत्सपुरोधसोभार्गवच्यावनाप्नवानवत्सपौरोधसेतिपंचबैजमथितयोर्भार्गवच्यावनाप्नवानबैजमथितेतिपंचएतेत्रयः क्वचित् एतेषांपरस्परंपूर्वोक्तैश्चत्रिभिर्नविवाहः त्रिप्रवरसाम्यात् यस्काःमौनाःमूकाइत्यादयस्त्रिपंचाशदधिकायस्काः एषांभार्गववै

तद्दव्यसावेतसेतित्रय:मित्रयुव: रौष्ठयायना: सापिंडिना: इत्यादयस्त्रिंशदधिकामित्रयुव: तेषांभार्गववाध्र्यश्वादिवोदासेतित्रय: भार्गवच्यावनदैवोदासेतिवा वाध्र्यश्वेत्येकोवा वैन्या: पार्था: बाष्कला: इत्येताइत्येतेवैन्या: एषांभार्गववैन्यपार्थेतित्रय: शुनका: गार्त्समदा: यज्ञपतय: इत्यादय:सप्तदशाधिका:शुनका: एषांशौनकेत्येक: गार्त्समदेतिवा भार्गवगार्त्समदेति द्वौवा भार्गवशौनहोत्रगार्त्समदेतित्रयोवा यस्कादीनांचतुर्णांस्वस्वगणंहित्वापरस्परंपूर्वैर्जामदग्न्यवत्सादिभिश्चसहविवाहोभवति एकप्रवरसाम्येपिद्वित्रिप्रवरसाम्याभावात् भृगुगणेषुएकप्रवरसाम्यस्यदूषकत्वाभावात् अजामदग्न्यत्वेनासगोत्रत्वात् मित्रयूनांपाक्षिकद्विप्रवरसाम्यात्त्रिप्रवरैर्वत्सादिभि:सहनविवाहइतिकेचित् तत्प्रवरपक्षग्राहिणामविवाह: पक्षांतरग्राहिणांमित्रयूनांविवाहएवेत्यन्ये क्वचिदधिकंगणद्वयमुक्तं वेदविश्वज्योतिषांभार्गववेदवैश्वज्योतिषेतित्रय: शाठरमाठराणांभार्गवशाठरमाठरेतित्रय: अनयो:परस्परंपूर्वैश्चसर्वैर्विवाह: इति भृगुगण: ॥

अब संक्षेपसें सुखबोधके अर्थ और भगवान्‌की प्रीतिके अर्थ गोत्रोंकी और प्रवरोंकी गिनती कहताहुं. ७ भृगुगण, १७ अंगिरसगण, ४ अत्रिगण, १० विश्वामित्रगण, ३ कश्यपगण, ४ वसिष्ठगण और ४ अगस्तिगण ये सब मिलकर उन्नंचास गण होते हैं. तथापि सब ग्रंथोंके मतोंका संग्रह करके देखा होवै तौ इस्सें अधिक गण मिलते हैं, वे तहां तहां कहैंगे. **तिह्नोंके मध्यमें प्रथम भृगुगण कहताहुं.**—वत्स और विद ये दो जागदग्न्यभृगु हैं. आर्ष्टिषेण, यस्क, मित्रयु, वैन्य और शुनक ये पांच केवल भृगु हैं. इस प्रमाणसें पहले कहे दो जामदग्न्यभृगु और ये पांच केवलभृगु मिलकर सात भृगुगण जानने. तिन्होंके मध्यमें, **१ वत्स,** मार्कंडेय और मांडूकेय इत्यादिक २०० सें अधिक वत्सगोत्रके भेद हैं. इन वत्सगोत्रवालोंके भार्गव, च्यावन, आप्नवान, और्व और जामदग्न्य एसे पांच प्रवर जानने. अथवा भार्गव, और्व और जामदग्न्य ऐसे तीन प्रवर हैं. अथवा भार्गव, च्यावन और आप्नवान ऐसे तीन प्रवर हैं. **२ विद,** शैल और अवट इस आदि २० सें अधिक विद गोत्रके भेद हैं. **इन्होंके प्रवर—**भार्गव, च्यावन, आप्नवान, और्व और वैद इस प्रकार पांच प्रवर जानने. अथवा भार्गव, और्व और जामदग्न्य ऐसे तीन प्रवर जानने. **३ आर्ष्टिषेण,** नैर्ऋति, ग्राम्यायण इत्यादिक २० सें अधिक आर्ष्टिषेण जानने. **इन्होंके प्रवर**–भार्गव, च्यावन, आप्नवान, आर्ष्टिषेण और अनूप इस प्रकार ५ जानने. अथवा भार्गव, आर्ष्टिषेण अनूप ऐसे तीन प्रवर होते हैं. वत्स, विद और आर्ष्टिषेण इन तीनोंका आपसमें विवाह नहीं होता है. क्योंकी, इन दोनोंके दो तीन प्रवर समान हैं. और आदिके जो दो वत्स और विद ये दोनों जामदग्न्य होनेसें इन्होंका एकगोत्रपना है. तीन हैं प्रवर जिनके ऐसे जो आर्ष्टिषेण तिन्होंके यदि वत्स और विदकी साथ दो प्रवर समान नहीं होते, और समानगोत्रपनाभी नहीं है, क्योंकी वे दोनों जामदग्न्य नहीं हैं, तौंभी पंचप्रवरपक्षगतभी तीन प्रवरका समानपना होनेसें वे तीन प्रवर विवाहको बाधक होते हैं. ऐसा आगेभी जानना. **४ वात्स्योंके प्रवर**–भार्गव, च्यावन, आप्नवान ऐसे तीन प्रवर हैं. **५ वत्सपुरोधाके प्रवर**–भार्गव, च्यावन, आप्नवान, वत्स और पौरोधस् ऐसे पांच प्रवर हैं. **६,७ बैज और मथितके प्रवर**–भार्गव, च्यावन, आप्नवान, बैज और मथित ऐसे पांच प्र-

वर जानने. कितनेक ग्रंथमें ये तीन प्रवर कहे हैं. इन्होंका (वात्स्य, वत्स, पुरोधा, बैज, मथित) इन्होंका आपसमें विवाह नहीं होता है, और पहले कहे जो तीन (वत्स, विद, आर्ष्टिषेण), गण तिन्होंके साथभी इन वात्स आदिकोंका विवाह नहीं होता है. क्योंकी, तीन प्रवर समान हैं. **८ यस्क**, मौन, मूक इत्यादिक ९३ संख्यासें अधिक यस्क हैं. **इह्नोंके प्रवर**–भार्गव, वैतहव्य, सावेतस इस प्रकार तीन प्रवर जानने. **९ मित्रयु**, रौक्षायन, सापिंडिन इत्यादिक ३० संख्यासें अधिक मित्रयु हैं. **इह्नोंके प्रवर**–भार्गव, वाध्र्यश्व, दिवोदास इस प्रकार तीन प्रवर जानने. अथवा भार्गव, च्यावन, दैवोदास इस प्रकार तीन प्रवर जानने, अथवा वाध्र्यश्व, ऐसा एकही प्रवर जानना. **१० वैन्य**, पार्थ, बाष्कल और श्येत ऐसे वैन्य हैं. **इह्नोंके प्रवर**–भार्गव, वैन्य, पार्थ इस प्रकारसें तीन प्रवर जानने. **११ शुनक**, गार्त्समद, यज्ञपति इत्यादिक सत्तरह संख्यासें अधिक शुनक हैं. **इह्नोंके प्रवर**–शौनक. यह एक प्रवर है, अथवा गार्त्समद यह एक प्रवर जानना. अथवा भार्गव, गार्त्समद इस प्रकारसें दो प्रवर जानने. अथवा भार्गव, शौनहोत्र, गार्त्समद ऐसे तीन प्रवर जानने. यस्क आदि चारोंका अपने अपने गणोंकों त्यागकर आपसमें विवाह होता है, और पहले कहे जामदग्न्य, वत्स आदिके साथभी इन यस्क आदि चारोंका विवाह होता है. क्योंकी, एक प्रवरका यदि समानपना है तौभी दो तीन प्रवर समान नहीं हैं, और भृगुगणोंमें यदि एक प्रवर समान है तौभी वह विवाहकों बाधक नहीं है, और वे जामदग्न्य नहीं होनेसें समानगोत्री नहीं हैं. मित्रयुओंके एक पक्षसें दो प्रवर समान होते हैं, इसलिये तीन प्रवरोंवाले वत्स आदियोंके साथ मित्रयुओंका विवाह नहीं होता ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. वत्स आदिकोंके प्रवरोंका पक्ष ग्रहण करनेवाले जो मित्रयु तिन्होंका विवाह नहीं होता, और दूसरे प्रवरोंका पक्ष ग्रहण करनेवाले मित्रयुओंका विवाह होता है ऐसा दूसरे ग्रंथकार कहते हैं. कहींक ग्रंथमें दो गण अधिक कहे हैं. सो ऐसे–एक वेद और दूसरा **विश्वज्योतिष**. **इह्नोंके प्रवर**–भार्गव, वेद, वैश्वज्योतिष इस प्रकार तीन प्रवर जानने. **१ शाठर और माठर. इह्नोंके प्रवर**–भार्गव, शाठर, माठर इस प्रकार तीन प्रवर जानने. इन दोनोंका आपसमें विवाह होता है और पहले कहे सबोंके साथभी इन्होंका विवाह होता है. इस प्रकार भृगुगण कहा.

अथांगिरसः तेत्रिविधाः गौतमाः भरद्वाजाः केवलाश्चेति तत्रगौतमांगिरसोदश अयास्याः १ शारद्वताः २ कौमंडाः ३ दीर्घतमसः ४ करेणुपालयः ५ वामदेवाः ६ औशनसाः ७ राहूगणाः ८ सोमराजकाः ९ बृहदुक्थाश्चेति १० तत्रआयास्याः ओणिवेधाः मूढरथाइत्यादयोष्टादशाधिकाआयास्याः तेषामांगिरसायास्यगौतमेतित्रयः शारद्वताः अभिजिताः रौहिण्याइत्यादयःसप्तत्यधिकाः शारद्वतास्तेषामांगिरसगौतमशारद्वतेतित्रयः कौमंडाः मामंथरेषणाः मासुराक्षाइत्यादयोदशाधिकाःकौमंडास्तेषामांगिरसौतथ्यकाक्षीवतगौतमकौमंडेतिपंच आंगिरसौतथ्यगौतमौशिजकाक्षीवतेतिवा आंगिरसायास्यौशिजगौतमकाक्षीवतेतिवा आंगिरसौशिजकाक्षीवतेतित्रयोवा आंगिरसौतथ्यकाक्षीवतेतिवा औतथ्यगौतमकौमंडेतिवा अथदीर्घतमसोगौतमास्तेषामांगिरसौतथ्यकाक्षीवतगौतमदैर्घतमसेतिपंच आंगिरसौतथ्यदैर्घतमसेतित्रयोवा करेणुपालयः वास्तव्याः श्वेतायीइत्यादयः सप्ताधिकाःकर

णुपालयस्तेषामांगिरसगौतमकरेणुपालेतित्रयः वामदेवानामांगिरसवामदेव्यगौतमेतित्रयः आंगिरसवामदेव्यबार्हदुक्थेतिवा औशनसाःदिश्याःप्रशस्ताःइत्यादिकानवाधिकाऔशनसास्तेषामांगिरसगौतमौशनसेतित्रयः राहूगणानामांगिरसराहूगणगौतमेतित्रयः सोमराजकानांआंगिरससोमराजगौतमेतित्रयः बृहदुक्थानामांगिरसबार्हदुक्थगौतमेतित्रयः १० क्वचिद्गणद्वयमधिकं उतथ्यानामांगिरसौतथ्यगौतमेति राघुवानामांगिरसराघुवगौतमेति गौतमानांसर्वेषामविवाहःसगोत्रत्वात्प्रायेणद्वित्रिप्रवरसाम्याच्च ॥

अब आंगिरसगण कहताहुं.—वे आंगिरस तीन प्रकारके हैं, सो ऐसे—गौतम, भरद्वाज और केवल आंगिरस. तिन्होंमें गौतम नामवाले आंगिरस दश प्रकारके हैं. सो ऐसे—१ आयास्य, २ शारद्वत, ३ कौमंड, ४ दीर्घतमस, ५ करेणुपाली, ६ वामदेव, ७ औशनस, ८ राहूगण, ९ सोमराजक और १० बृहदुक्थ ऐसे दश प्रकारके जानने. तिन्होंमें **१ आयास्य,** श्रोणिवेध, मूढरथ, इत्यादिक अठारहसें अधिक आयास्य जानने. **इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, आयास्य, गौतम इस प्रकारसें तीन प्रवर जानने. **२ शारद्वत,** अभिजित, रौहिण्य इत्यादिक सत्तरहसें अधिक शारद्वत हैं. **इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, गौतम, शारद्वत इस प्रकारसें तीन प्रवर जानने. **३ कौमंड,** मामंथरेषण, मासुराक्ष इत्यादिक दशसें अधिक कौमंड हैं. **इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, औतथ्य, काक्षीवत, गौतम और कौमंड इस प्रकारसें पांच प्रवर जानने. अथवा आंगिरस, औतथ्य, गौतम, औशिज और काक्षीवत ऐसे पांच प्रवर जानने. अथवा आंगिरस, आयास्य, औशिज, गौतम, और काक्षीवत, ऐसे पांच प्रवर जानने. अथवा आंगिरस, औशिज काक्षीवत ऐसे तीन प्रवर जानने. अथवा आंगिरस, औतथ्य काक्षीवत ऐसे तीन प्रवर जानने. अथवा औतथ्य, गौतम, कौमंड ऐसे तीन प्रवर जानने. ४ इसके अनंतर **दीर्घतमस्,** गौतम. **इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, औतथ्य, काक्षीवत, गौतम दैर्घतमस् ऐसे पांच प्रवर जानने. आंगिरस, औतथ्य, दैर्घतमस् ऐसे तीन प्रवर जानने. **५ करेणुपालि,** वास्तव्य, श्वेतीय इत्यादिक सातसें अधिक करेणुपालि जानने. **इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, गौतम, करेणुपाल ऐसे तीन प्रवर जानने. **६ वामदेव. इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, वामदेव्य, गौतम, इस प्रकार तीन प्रवर जानने. अथवा आंगिरस, वामदेव्य, बार्हदुक्थ इस प्रकार तीन प्रवर जानने. **७ औशनस,** दिश्य, प्रशस्त इत्यादिक नवसें अधिक औशनस होते हैं. **इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, गौतम, औशनस ऐसे तीन प्रवर जानने. **८ राहूगण. इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, राहूगण, गौतम ऐसे तीन प्रवर जानने. **९ सोमराजक. इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, सोमराज, गौतम ऐसे तीन प्रवर जानने. **१० बृहदुक्थ. इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, बार्हदुक्थ, गौतम ऐसे तीन प्रवर जानने. इस प्रकार दश जो गौतमांगिरस तिनके प्रवर कहे. किसीक ग्रंथमें दो गण अधिक कहे हैं. सो ऐसे—एक उतथ्य और दूसरा राघुव. **उतथ्योंके प्रवर**—आंगिरस, औतथ्य, गौतम ऐसे तीन प्रवर जानने. **राघुवोंके प्रवर**—आंगिरस, राघुव, गौतम ऐसे तीन प्रवर जानने. पूर्व कहे जो दश प्रकारके गौतमांगिरस तिन्होंका आपसमें विवाह नहीं होता है. क्योंकी, इन सबोंका एक गोत्र है, और विशेष करके दो तीन प्रवर समान हैं. इस प्रकार आंगिरसगणके पहले दश गौतमांगिरस कहे.

अथभरद्वाजाः तेचत्वारः भारद्वाजाःगर्गाःऋक्षाःकपयश्चेति भरद्वाजाः क्षाम्यायणाः देवाश्वाइत्यादयः षष्ट्युत्तरशताधिकाभरद्वाजास्तेषामांगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजेतित्रयः गर्गाः सांभरायणाः सखीनयः इत्यादयःपंचाशदधिकागर्गास्तेषामांगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजशैन्य गार्ग्येतिपंच आंगिरसशैन्यगार्ग्येतित्रयोवा अंत्ययोर्व्यत्ययोवा भारद्वाजगार्ग्यशैन्येतिवा गर्गभेदानामांगिरसतैत्तिरिकापिभुवेति ऋक्षाः रौक्षायणाः कपिलाः इत्यादयोनवाधिकाऋक्षास्तेषामांगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजवांदनमातवचसेतिपंच आंगिरसवांदनमातवचसेतित्रयोवा कपयःस्वस्तितरयः दंडिनइत्यादयःपंचविंशत्यधिकाः कपयस्तेषामांगिरसामहय्यौरुक्षय्येतित्रयः आंगिरसामहीयवौरुक्षयसेत्याश्वलायनपाठः आत्मभुवामांगिरसभारद्वाजबार्हस्पत्यवरात्मभुवेतिपंच अयंगणःक्वचित् भरद्वाजानांसर्वेषांपरस्परमविवाहः सगोत्रत्वात् प्रायेण द्वित्रिप्रवरसाम्याच्च ऋक्षांतर्गतानांकपिलानांविश्वामित्रैरप्यविवाहः इतिभरद्वाजांगिरसः ॥

अब आंगिरसगणमें कहे भरद्वाज कहताहुं.—वे भरद्वाज चार.— १ भारद्वाज, २ गर्ग, ३ ऋक्ष, ४ कपि इस प्रमाणसें चार प्रकारके हैं. **१ भरद्वाज**, क्षाम्यायण, देवाश्व इत्यादिक एकसौ साठसें अधिक भरद्वाज हैं. **तिन्होंके प्रवर**—आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज ऐसे तीन प्रवर हैं. **२ गर्ग**, सांभरायण, सखीनि इत्यादिक पंचाससें अधिक गर्ग जानने. **इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज, शैन्य, गार्ग्य ऐसे पांच प्रवर जानने. अथवा आंगिरस, शैन्य, गार्ग्य ऐसे तीन प्रवर जानने. अथवा अंत्योंका व्यत्यय करना. अथवा भारद्वाज, गार्ग्य, शैन्य ऐसे तीन प्रवर जानने. **गर्गोंके भेदोंके प्रवर**—आंगिरस, तैत्तिरि, काकापिभुव ऐसे तीन प्रवर जानने. **३ ऋक्ष**, रौक्षायण, कपिल इत्यादिक नवसें अधिक ऋक्ष जानने. **तिन्होंके प्रवर**—आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज, वांदन, मातवचस ऐसे पांच प्रवर जानने. अथवा आंगिरस, वांदन, मातवचस ऐसे तीन प्रवर जानने. **४ कपि**, स्वस्तितरि, दंडी इत्यादिक पंचीससें अधिक कपि जानने. **इन्होंके प्रवर**— आंगिरस, आमहय्य, औरुक्षय्य इस प्रकार तीन प्रवर जानने. 'आंगिरस, आमहीयव, औरक्षयस' ऐसा आश्वलायनसूत्रमें पाठ है. **आत्मभू. इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, भारद्वाज, बार्हस्पत्य, वर, आत्मभुव ऐसे पांच प्रवर जानने. यह गण किसीक ग्रंथमें कहा है. सब भरद्वाजोंका आपसमें विवाह नहीं होता है. क्योंकी, सब भरद्वाजोंका गोत्र एक है और प्रायशः दो तीन प्रवर सबोंके समान हैं. ऋक्षोंके अंतर्गत जो कपिल तिन्होंका विश्वामित्रोंके साथभी विवाह नहीं होता है. इस प्रकार भरद्वाज आंगिरस कहे.

अथकेवलांगिरसः तेचषट् हारीताः कुत्साः कण्वाः रथीतराः विष्णुवृद्धाःमुद्गलाश्चेतिहारीताः सौभगाः नैय्यगवाइत्यादयोद्वात्रिंशदधिकाहारीतास्तेषामांगिरसांबरीषयौवनाश्वेतिआद्योमांधातावा कुत्सानामांगिरसमांधात्रकौत्सेतित्रयः कण्वाःऔषमर्कटाःबाष्कलायनाःइत्यादयएकविंशत्यधिकाःकण्वास्तेषामांगिरसाजमीढकाण्वेतित्रयः आंगिरसधौरकाण्वेतिवारथीतराःहस्तीदाः नैतिरक्षयः इत्यादयश्चतुर्दशाधिकारथीतरास्तेषामांगिरसवैरूपरथीतरेतित्रयः आंगिरसवैरूपपार्षदश्वेतिवा अष्टादंष्ट्रवैरूपपार्षदश्वेतिवा अंत्ययोर्व्यत्ययोवा विष्णुवृद्धाः शठाः भरणाइत्यादयःपंचविंशत्यधिकाविष्णुवृद्धास्तेषामांगिरसपौरुकुत्स्यत्रास

स्यवेतित्रयः मुद्गलाः सात्यमुग्रियः हिरण्यस्तंबयःइत्यादिकाअष्टादशाधिकास्तेषामांगिरसभार्म्याश्वमौद्गल्येतित्रयः आद्यस्तार्क्ष्योवा आंगिरसताविमौद्गल्येतिवाएषांषण्णांकेवलांगिरसानांस्वस्वगणंहित्वापरस्परंपूर्वैश्चसर्वैर्विवाहोभवति अंगिरसोगस्त्याष्टमसप्तर्षिभिन्नत्वेनतदपत्यानांसगोत्रत्वाभावात् द्वित्रिप्रवरसाम्याभावाच्च हारीतकुत्सयोस्तुनविवाहः पाक्षिकद्विप्रवरसाम्यात् ॥

अब केवल आंगिरस कहताहुं.—वे केवल आंगिरस छह हैं. १ हारीत, २ कुत्स, ३ कण्व, ४ रथीतर, ५ विष्णुवृद्ध, ६ मुद्गल इन भेदोंसें छह प्रकारके हैं. **१ हारीत**, सौभग, नैय्यगव इत्यादिक बत्तीससें अधिक हारीत कहे हैं. **इह्नोंके प्रवर**—आंगिरस, आंबरीष, यौवनाश्व, ऐसे तीन प्रवर जानने. अथवा इन तीन प्रवरोंमें पहला मांधाता प्रवर जानना. **२ कुत्सके प्रवर**—आंगिरस, मांधात्र, कौत्स ऐसे तीन प्रवर जानने. **३ कण्व**, औषमर्कट, बाष्कलायन इत्यादिक इक्कीससें अधिक कण्व हैं. **इह्नोंके प्रवर**—आंगिरस, आजमीढ; काण्व ऐसे तीन प्रवर होते हैं. अथवा आंगिरस, घौर, काण्व ऐसे तीन प्रवर होते हैं. **४ रथीतर**, हस्तीद, नैतिरक्षि इत्यादिक चौदासें अधिक रथीतर हैं. **इह्नोंके प्रवर**—आंगिरस, वैरूप, रथीतर ऐसे तीन प्रवर होते हैं. अथवा आंगिरस, वैरूप, पार्षदश्व ऐसे तीन प्रवर होते हैं. अथवा अष्टादंष्ट्र, वैरूप, पार्षदश्व ऐसे तीन प्रवर होते हैं. अथवा अंत्योंका व्यत्यय करना. **५ विष्णुवृद्ध**, शठ, भरण इत्यादिक पच्चीससें अधिक विष्णुवृद्ध हैं. **इह्नोंके प्रवर**—आंगिरस, पौरुकुत्स्य, त्रासदस्यु ऐसे तीन प्रवर हैं. **६ मुद्गल**, सात्यमुग्रि, हिरण्यस्तंबि इत्यादिक अठारहसें अधिक मुद्गल हैं. **इह्नोंके प्रवर**—आंगिरस, भार्म्याश्व, मौद्गल्य ऐसे तीन प्रवर हैं. अथवा तार्क्ष्य, भार्म्याश्व, मौद्गल्य ऐसे तीन प्रवर हैं. अथवा आंगिरस, तावि, मौद्गल्य ऐसे तीन प्रवर हैं. इन छह केवल आंगिरसोंका विवाह अपने अपने गणका त्याग करके आपसमें होता है, और पहले कहे सबोंके साथ आपसमें विवाह होता है, क्योंकी अगस्ति है आठमा जिन्होंमें ऐसे जो सात ऋषि तिन्होंसें आंगिरस यह भिन्न होनेसें इसके पुत्रोंका एक गोत्र नहीं है, और दो तीन प्रवरभी समान नहीं हैं. हारीत और कुत्सका आपसमें विवाह नहीं होता है; क्योंकी, पक्षमें दो प्रवर समान होते हैं.

अथअत्रयः तेचत्वारः अत्रयः गविष्ठिराः वाद्धुतकाः मुद्गलाश्चेति अत्रयोभूरयःछांदयइत्यादयश्चतुर्नवत्याधिकाअत्रयस्तेषामात्रेयार्चनानसश्यावाश्वेतित्रयः १ गविष्ठिराः दक्षयः भलंदनाइत्यादयश्चतुर्विंशत्यत्रिकागविष्ठिरास्तेषामात्रेयार्चनानसगाविष्ठिरेतित्रयः आत्रेयगाविष्ठिरपौर्वातिथेतिवा २ वाद्धुतकानामात्रेयार्चनानसवाद्धुतकेतित्रयः ३ मुद्गलाः शालिसंधयः अर्णवाः इत्यादयोदशावरामुद्गलास्तेषामात्रेयार्चनानसपौर्वातिथेतित्रयः४कचित्अतिथयोवामरथ्याःसुमंगलाबीजवापाधनंजयाश्चेतिपंचगणाअधिकाः तत्राद्यचतुर्णामात्रेयार्चनानसातिथेतित्रयः आत्रेयार्चनानसगाविष्ठिरेतिवासुमंगलानामत्रिसुमंगलश्यावाश्वेतिवा धनंजयानामात्रेयार्चनानसधानंजयेति वालेयाः कौंद्रेयाः शौभ्रेयाः वामरथ्याःइत्यादयःअत्रेःपुत्रिकापुत्रास्तेषामात्रेयवामरथ्यपौत्रिकेतित्रयः अत्रीणांसर्वेषामविवाहः सगोत्रत्वात्सप्रवरत्वाच्च अत्रेःपुत्रिकापुत्राणांवामरथ्यादीनांचवसिष्ठविश्वामित्राभ्यामप्यविवाहः इत्यत्रयः ॥

अब अत्रिगण कहताहुं—वे अत्रि, चार—१ अत्रि, २ गविष्ठिर, ३ वाद्भुतक, ४ मुद्गल इन भेदोंसें चार अत्रि हैं. **१ अत्रि**, भूरि, छांदि इत्यादिक चुरानवसें अधिक अत्रि हैं. **तिन्होंके प्रवर**—आत्रेय, आर्चनानस, श्यावाश्व ऐसे तीन हैं. **२ गविष्ठिर**, दक्षि, भलंदन इत्यादिक चौवीससें अधिक गविष्ठिर हैं. **तिन्होंके प्रवर**—आत्रेय, आर्चनानस, गाविष्ठिर ऐसे तीन हैं. अथवा आत्रेय, गाविष्ठिर, पौर्वातिथ ऐसे तीन हैं. **३ वाद्भुतक. इन्होंके प्रवर**—आत्रेय, आर्चनानस, वाद्भुतक ऐसे तीन प्रवर हैं, **४ मुद्गल**, शालिसंधि, अर्णप इत्यादिक दशसें कम मुद्गल हैं. **इन्होंके प्रवर**—आत्रेय, आर्चनानस, पौर्वातिथ ऐसे तीन हैं. कितनेक ग्रंथोंमें अतिथि, वामरथ्य, सुमंगल, बीजवाप, धनंजय ऐसे पांच गण अधिक कहे हैं. तिन्होंमें पहले जो चार **तिन्होंके प्रवर**—आत्रेय, आर्चनानस, आतिथ ऐसे तीन प्रवर. अथवा आत्रेय, आर्चनानस, गाविष्ठिर ऐसे तीन हैं. **सुमंगलके प्रवर**—अत्रि, सुमंगल, श्यावाश्व, ऐसे तीन प्रवर हैं. **धनंजयके प्रवर**—आत्रेय, आर्चनानस, धानंजय ऐसे तीन प्रवर हैं. वालेय, कौंद्रेय, शौभ्रेय, वामरथ्य, इत्यादिक अत्रिकी कन्याके पुत्र हैं. **इन्होंके प्रवर**—आत्रेय, वामरथ्य, पैत्रिक ऐसे तीन प्रवर हैं. सब अत्रियोंका आपसमें विवाह नहीं होता हैं; क्योंकी, सब अत्रियोंका गोत्र एक है, और प्रवरभी सबोकें समान हैं. अत्रिकी पुत्रीके पुत्र वामरथी आदिकोंका वसिष्ठ और विश्वामित्रोंके साथ विवाह नहीं होता है. इस प्रकार अत्रिगण समाप्त हुआ.

अथविश्वामित्राः तेदश कुशिकाः लोहिताः रौक्षकाः कामकायनाः अजाः कताः धनंजयाः अघमर्षणाः पूरणाः इंद्रकौशिकाश्चेति कुशिकाःपर्णजंघाः वारक्याइत्यादयःसप्तत्यधिकाःकुशिकास्तेषांविश्वामित्रदेवरातौदलेतित्रयः १ लोहिताःकुडक्याश्चाक्रवर्णायनाइत्यादयः पंचाधिकालोहिताः रोहिताइतिकेचित् तेषांवैश्वामित्राष्टकलौहितेतित्रयः अंत्ययोर्व्यत्ययोवा वैश्वामित्रमाधुच्छंदसाष्टकेतिवा विश्वामित्राष्टकेतिद्वौवा २ रौक्षकाणांविश्वामित्रगाथिनरेवणेतित्रयः विश्वामित्ररौक्षकरैवणेतिवा एतेरेवणावा ३ कामकायनाः देवश्रवसाः देवतरसाइत्यादयःपंचावराःकामकायनाः औमतावा तेषांवैश्वामित्रदेवश्रवसदैवतरसेतित्रयः ४ अजानांवैश्वामित्रमाधुच्छंदसाजेतित्रयः ५ कताःऔदुंबरयः शैशिरयःइत्यादयोविंशत्यधिकाःकतास्तेषांवैश्वामित्रकात्याक्षीलेतित्रयः ६ धनंजयाः पार्थिवाः बंधुलाःइत्यादयःसप्तावराधनंजयास्तेषांवैश्वामित्रमाधुच्छंदसधानंजयेतित्रयः वैश्वामित्रमाधुच्छंदसाघमर्षणेतिवा ७ अघमर्षणानांवैश्वामित्राघमर्षणकौशिकेतित्रयः ८ पूरणानांवैश्वामित्रपूरणेतिद्वौ वैश्वामित्रदेवरातपौरणेतिवा ९ इंद्रकौशिकानांवैश्वामित्रेंद्रकौशिकेतिद्वौ १० क्वचिदन्येप्येकादशोक्ताः आश्मरथ्याः१साहुलाः २ गाथिनाः ३ वैणयाः ४ हिरण्यरेतसः ५ सुवर्णरेतलः ६ कपोतरेतसः ७ शालंकायनाः ८ घृतकौशिकाः ९ कथकाः १० रौहिणाइति ११ आश्मरथ्यानांवैश्वामित्राश्मरथ्यवाधुलेतित्रयः १ साहुलानांवैश्वामित्रसाहुलमाहुलेतित्रयः २ गाथिनानांवैश्वामित्रगाथिनरैणवेतित्रयः ३ वेणुवेतिक्वचित्पाठः एतएवरेणवइतिउदवेणवइतिचोच्यंते ३ वैणवानांवैश्वामित्रगाथिनवैणवेति ४ हिरण्यरेतसांवैश्वामित्रहैरण्यरेतसेतिद्वौ ५ सुवर्णरेतसांवैश्वामित्रसौवर्णरेतसेतिद्वौ ६ कपोतरेतसांवैश्वामित्रकापोत

रेतसेतिद्वौ ७ शालंकायनानांवैश्वामित्रशालंकायनकौशिकेतित्रयः एतेएवकौशिकाइतिजह्नवइतिचोच्यंते ८ घृतकौशिकानांवैश्वामित्रघृतकौशिकेतिद्वौ ९ कथकानांवैश्वामित्रकाथकेति १० रौहिणानांवैश्वामित्रमाधुच्छंदसरौहिणेतित्रयः ११ वैश्वामित्रगणानांसर्वेषांपरस्परमविवाहः सगोत्रत्वात्सप्रवरत्वाच्च कुशिकानां देवरातप्रवरसाम्येनदेवरातात्द्वेदानिर्णयाद्वक्ष्यमाणदेवरातवदेवजामदग्न्यैरप्यविवाहइतिभाति धनंजयानांविश्वामित्रैरत्रिभिश्चाविवाहः कतानांभरद्वाजैर्विश्वामित्रैश्चाविवाहः द्विगोत्रत्वात् इतिविश्वामित्राः ॥

अब विश्वामित्रगण कहताहुं.—वे विश्वामित्र दश प्रकारके हैं—१ कुशिक, २ लोहित, ३ रौक्षक, ४ कामकायन, ५ अज, ६ कत, ७ धनंजय, ८ अघमर्षण, ९ पूरण और १० इंद्रकौशिक ऐसे हैं. **१ कुशिक,** पर्णजंघ, वारक्य इत्यादिक सत्तरहसें अधिक कुशिक हैं. **इन्होंके प्रवर**—विश्वामित्र, देवरात, औदल ऐसे तीन हैं. **२ लोहित,** कुडक्य, चाक्रवर्णायन इत्यादिक पांचसें अधिक लोहित हैं. 'लोहित' इसके स्थानमें कितनेक ग्रंथकार 'रोहित' ऐसा कहते हैं. **इन्होंके प्रवर**—वैश्वामित्र, आष्टक, लौहित ऐसे तीन प्रवर हैं. अथवा अंत्योंका व्यत्यय करना. अथवा वैश्वामित्र, माधुच्छंदस, आष्टक ऐसे तीन प्रवर हैं. अथवा विश्वामित्र, आष्टक ऐसे दो प्रवर हैं. **३ रौक्षकके प्रवर**—विश्वामित्र, गाथिन, रेवण ऐसे तीन हैं. अथवा विश्वामित्र, रौक्षक रैवण ऐसे तीन हैं. अथवा ये रेवण जानने. **४ कामकायन,** देवश्रवस, देवतरस इत्यादिक पांचपर्यंत कामकायन अथवा गौमत हैं. **इन्होंके प्रवर**—वैश्वामित्र, देवश्रवस, दैवतरस ऐसे तीन हैं. **५ अजके प्रवर**—वैश्वामित्र, माधुच्छंदस, आज ऐसे तीन हैं. **६ कत,** औदुंबरि, शैशिरि इत्यादिक वीससें अधिक कत हैं. **इन्होंके प्रवर**—वैश्वामित्र, कात्य, आक्षील ऐसे तीन हैं. **७ धनंजय,** पार्थिव, बंधुल इत्यादिक सातपर्यंत धनंजय हैं. **इन्होंके प्रवर**—वैश्वामित्र, माधुच्छंदस, धानंजय ऐसे तीन हैं, अथवा वैश्वामित्र, माधुच्छंदस, अघमर्षण ऐसे तीन प्रवर हैं. **८ अघमर्षणके प्रवर**—वैश्वामित्र, अघमर्षण, कौशिक ऐसे तीन प्रवर हैं. **९ पूरणके प्रवर**—वैश्वामित्र, पूरण ऐसे दो प्रवर हैं. अथवा वैश्वामित्र, देवरात, पौरण ऐसे तीन प्रवर हैं. **१० इंद्रकौशिकके प्रवर**—वैश्वामित्र, इंद्रकौशिक ऐसे दो प्रवर हैं. किसीक ग्रंथमें अन्यभी ग्यारह गण कहे हैं. सो ऐसे,—१ आश्मरथ्य, २ साहुल, ३ गाथिन, ४ वैणाय, ५ हिरण्यरेतस ६ सुवर्णरेतस, ७ कपोतरेतस, ८ शालंकायन, ९ घृतकौशिक, १० कथक और ११ रौहिण ऐसे एकादश गण हैं. **१ आश्मरथ्यके प्रवर**—वैश्वामित्र, आश्मरथ्य, वाधुल ऐसे तीन प्रवर हैं. **२ साहुलके प्रवर**—वैश्वामित्र, साहुल, माहुल ऐसे तीन प्रवर हैं. **३ गाथिनके प्रवर**—वैश्वामित्र, गाथिन, रैणव ऐसे तीन हैं. 'रैणव'के स्थानमें 'वैणुव' ऐसा किसीक ग्रंथमें पाठ है. इन्होंकोंही 'रेणव' 'उदवेणव' ऐसाभी कहते हैं. **४ वैणवोंके प्रवर**—वैश्वामित्र, गाथिन, वैणव ऐसे तीन हैं. **५ हिरण्यरेतसोंके प्रवर**—वैश्वामित्र, हैरण्यरेतस ऐसे दो हैं. **६ सुवर्णरेतसोंके प्रवर**—वैश्वामित्र, सौवर्णरेतस ऐसे दो हैं. **७ कपोतरेतसोंके प्रवर**—वैश्वामित्र, कपोतरेस ऐसे दो हैं. **८ शालंकायनोंके प्रवर**—वैश्वामित्र, शालंकायन, कौशिक ऐसे तीन हैं. इन्होंकोंही 'कौशिक' और 'जन्हव' ऐसाभी कहते हैं. **९ घृतकौशिकोंके प्रवर**—वैश्वामित्र, घृतकौशिक ऐसे दो हैं. **१० कथकोंके प्र-**

वर—वैश्वामित्र, काथक ऐसे दो हैं. **११ रौहिणोंके प्रवर**—वैश्वामित्र, माधुच्छंदस, रौहिण ऐसे तीन हैं. सब विश्वामित्रगणोंका आपसमें विवाह नहीं होता है, क्योंकी, ये सब विश्वामित्रगण समानगोत्री और समानप्रवरवाले हैं. कुशिकोंके और देवतोंके प्रवर समान हैं इसलिये कुशिक देवरातोंसें भिन्न अथवा उन्होंमेंकेही हैं, तिसका निर्णय न होनेसें वक्ष्यमाण देवरातकी तरह जामदग्न्योंके साथ तिनका विवाह नहीं होता है; तैसा कुशिकोंकाभी विवाह जामदग्न्यके साथ नहीं होता है ऐसा भासमान होता है. धनंजयोंका विश्वामित्रोंके साथ और अत्रियोंके साथ विवाह नहीं होता है. कतोंका विश्वामित्रोंसें और भरद्वाजोंसें विवाह नहीं होता है. क्योंकी, कतोंकों दो गोत्र होते हैं. इस प्रकार विश्वामित्रगण कहा है.

अथकश्यपाः तेत्रयः निध्रुवाः रेभाः शंडिलाश्चेति तत्रनिध्रुवाःकश्यपाःअष्टांगिरसः इत्यादयश्चत्वारिंशदधिकशतावरानिध्रुवास्तेषांकाश्यपावत्सारनैध्रुवेतित्रयः निर्णयसिंधौतुनिध्रुवगणोत्तरंकश्यपगणमुक्त्वाकश्यपानांकाश्यपावत्सारासितेतिहिप्रवरत्रयमुक्तं अत्रशिष्टाचारोपिदृश्यते १ रेभाणांकाश्यपावत्साररैभ्येतित्रयः २ शंडिलाः कोहलाःउदमेधाइत्यादयः षष्ट्यवराःशंडिलास्तेषांकाश्यपावत्सारशांडिल्येतित्रयः अंत्यस्थानेदेवलोवाअसितोवा काश्यपासितदेवलेतिवा अंत्ययोर्व्यत्ययोवा देवलासितेतिद्वौवा एषांकश्यपानांपरस्परमविवाहः सगोत्रत्वात्सप्रवरत्वाच्च ॥

अब कश्यपगण कहताहुं.—वे कश्यप तीन हैं. १ निध्रुव, २ रेभ, ३ शंडिल ऐसे तीन प्रकारके हैं. तिन्होंमै **१ निध्रुव**, कश्यप, अष्टांगिरस इत्यादिक चालीससें अधिक १०० पर्यंत निध्रुव हैं. **तिन्होंके प्रवर**—काश्यप, अवत्सार, नैध्रुव ऐसे तीन हैं. **निर्णयसिंधुमें** तौ निध्रुवगणके उपरंत कश्यपगण कहके कश्यपोंके 'काश्यप, अवत्सार, असित' ऐसे तीन प्रवर कहे हैं. यहां शिष्टाचारभी दीखता है. **२ रेभोंके प्रवर**—काश्यप, अवत्सार, रैभ्य ऐसे तीन हैं. **३ शंडिल**, कोहल, उदमेध इत्यादिक साठपर्यंत शंडिल हैं. **इन्होंके प्रवर**—काश्यप, अवत्सार, शांडिल्य ऐसे तीन हैं. 'शांडिल्यके' स्थानमें 'देवल' अथवा 'असित' ऐसे प्रवर हैं. अथवा काश्यप, असित, देवल ऐसे तीन हैं. अथवा अंत्योंका व्यत्यय करना. अथवा देवल, असित ऐसे दो हैं. इन कश्यपोंका आपसमें विवाह नहीं होता है; क्योंकी, ये कश्यप एक गोत्रवाले और समान प्रवरोंवाले हैं.

अथवसिष्ठाः तेचत्वारः वसिष्ठाः १ कुंडिनाः २ उपमन्यवः ३ पराशराश्च ४ वसिष्ठा वैतालकवयः रकयइत्यादयःषष्ट्यधिकाः वसिष्ठास्तेषांवासिष्ठेंद्रप्रमदाभरद्वस्वितित्रयः वासिष्ठेत्येकोवा १ कुंडिनाः लोहितायनाः गुग्गुलयः इत्यादयः पंचविंशत्यवराःकुंडिनास्तेषांवासिष्ठमैत्रावरुणकौंडिण्येतित्रयः २ उपमन्यवः औदलयः मांडलेखयइत्यादयःसप्तत्यवराःउपमन्यवस्तेषांवासिष्ठेंद्रप्रमदाभरद्वस्वितित्रयः आभरद्वसव्येतिपाठांतरं वासिष्ठाभरद्वस्विंद्रप्रमदेतिवा आद्ययोर्व्यत्ययोवा ३ पराशराः कांडुशयाः वाजयइत्यादयःसप्तचत्वारिंशदवराःपराशरास्तेषांवासिष्ठशाक्त्यपराशर्येतित्रयः ४ एषांवसिष्ठानांपरस्परमविवाहः इति वसिष्ठाः ॥

अब वसिष्ठगण कहताहुं.—वे वसिष्ठ चार प्रकारके हैं. १ वसिष्ट, २ कुंडिन, ३ उपमन्यु, ४ पराशर ऐसे चार हैं. **१ वसिष्ठ**, वैतालकवि, रकि इत्यादिक साठसें अधिक वसिष्ठ हैं. **इन्होंके प्रवर**—वासिष्ठ, इंद्रप्रमद, आभरद्वसु ऐसे तीन हैं. अथवा वासिष्ट ऐसा एक प्रवर है. **२ कुंडिन**, लोहितायन, गुग्गुलि इत्यादिक पच्चीसपर्यंत कुंडिन हैं. **इन्होंके प्रवर**–वासिष्ठ, मैत्रावरुण, कौंडिण्य ऐसे तीन हैं. **३ उपमन्यु**, औदलि, मांडलेखि इत्यादिक ७० पर्यंत उपमन्यु हैं. **इन्होंके प्रवर**—वासिष्ठ, इंद्रप्रमद, आभरद्वसु ऐसे तीन हैं. 'आभरद्वसु' इसके स्थानमें 'आभरद्वसव्य' ऐसा दूसरा पाठ है. अथवा वासिष्ठ, आभरद्वसु, इंद्रप्रमद ऐसे तीन हैं. अथवा आद्योंका व्यत्यय करना. **४ पराशर**, कांडुशय, वाजि इत्यादिक सहंतालीसपर्यंत पराशर हैं. **इन्होके प्रवर**—वासिष्ठ, शात्त्य, पराशर्य ऐसे तीन प्रवर हैं. इन चारों वासिष्ठोंका आपसमें विवाह नहीं होता है. ऐसा वसिष्ठगण समाप्त हुआ.

अथागस्त्याः तेदश इध्मवाहाः १ सांभवाहाः २ सोमवाहाः ३ यज्ञवाहाः ४ दर्भवाहाः ५ सारवाहाः ६ अगस्तयः ७ पूर्णमासाः ८ हिमोदकाः ९ पाणिकाश्चेति १० इध्मवाहाः विशालाद्याः स्फालायनाःइत्यादयः पंचाशदधिकाइध्मवाहास्तेषामागस्त्यदार्ढ्यच्युतेध्मवाहेतित्रयः आगस्त्येत्येकोवा १ सांभवाहानामागस्त्यदार्ढ्यच्युतसांभवाहेतित्रयः २ सोमवाहानांसोमवाहोंत्यःआद्यौपूर्वोक्तात्रेव ३ एवंयज्ञवाहानांयज्ञवाहोंत्यः ४ दर्भवाहानांदर्भवाहोंत्यः ५ सारवाहानांसारवाहोंत्यः ६ अगस्तीनामागस्त्यमाहेंद्रमायोभवेति ७ पूर्णमासानामागस्त्यपौर्णमासपारणेतित्रयः ८ हिमोदकानामागस्त्यहैमवर्चिहैमोदकेतित्रयः ९ पाणिकानामागस्त्यपैनायकपाणिकेतित्रयः १० अगस्तीनांसर्वेषामविवाहः सगोत्रत्वात्सप्रवरत्वाच्च इत्यगस्तयः ॥

अब आगस्त्यगण कहताहुं.—वे आगस्त्य दश प्रकारके हैं. १ इध्मवाह, २ सांभवाह ३ सोमवाह, ४ यज्ञवाह, ५ दर्भवाह, ६ सारवाह, ७ अगस्ति, ८ पूर्णमास, ९ हिमोदक और १० पाणिक ऐसे दश आगस्त्यगण हैं. **१ इध्मवाह**, विशालाद्य, स्फालायन इत्यादिक पंचाससें अधिक इध्मवाह हैं. **इन्होंके प्रवर**—आगस्त्य, दार्ढ्यच्युत, इध्मवाह ऐसे तीन प्रवर हैं. अथवा आगस्त्य ऐसा एक प्रवर है. **२ सांभवाहके प्रवर**—आगस्त्य, दार्ढ्यच्युत, सांभवाह ऐसे तीन हैं. **३ सोमवाहोंके प्रवर**—आगस्त्य, दार्ढ्यच्युत, सोमवाह ऐसे तीन हैं. **४ यज्ञवाहके प्रवर**—आगस्त्य, दार्ढ्यच्युत, यज्ञवाह ऐसे तीन प्रवर हैं. **५ दर्भवाहके प्रवर**—आगस्त्य, दार्ढ्यच्युत, दर्भवाह ऐसे तीन हैं. **६ सारवाहके प्रवर**—आगस्त्य, दार्ढ्यच्युत, सारवाह ऐसे तीन हैं. **७ अगास्तिके प्रवर**—आगस्त्य, माहेंद्र, मायोभव ऐसे तीन प्रवर हैं. **८ पूर्णमासके प्रवर**—आगस्त्य, पौर्णमास, पारण ऐसे तीन हैं. **९ हिमोदकके प्रवर**—आगस्त्य, हैमवर्चि, हैमोदक ऐसे तीन हैं. **१० पाणिकके प्रवर**—आगस्त्य, पैनायक, पाणिक ऐसे तीन हैं. इन आगास्तियोंका आपसमें विवाह नहीं होता है; क्योंकी, इन सब अगास्तियोंके गोत्र और प्रवर समान हैं. ऐसा अगस्तिगण कहा.

अथद्विगोत्राः तत्रभारद्वाजाच्छुंगात्वैश्वामित्रस्यशैशिरेःक्षेत्रेजातःशौंगशैशिरिर्नामऋषिः

तस्यगोत्रलक्षणाक्रांतत्वाद्गोत्रत्वं तद्गोत्राणामांगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजशौंगशैशिरेतिपंच आंगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजकात्याक्षीलेतिवा आंगिरसकात्याक्षीलेतित्रयोवा अद्योभरद्वाजोवा एषांसर्वभरद्वाजैःसर्वैर्विश्वामित्रैश्चाविवाहः संकृतयः पूतिमाषाः तंडयइत्यादयोष्टाविंशत्यवराःसंकृतयस्तेषामांगिरसगौरिवीतिसांकृत्येतित्रयः शाक्त्यगौरिवीतिसांकृत्येतिवा अंत्ययोर्व्यत्ययोवा एषांस्वगणस्थैःपूतिमाषादिभिःसर्ववसिष्ठगणैश्चाहर्वसिष्ठसंज्ञकवक्ष्यमाणलौगाक्षिभिश्चाविवाहः केवलांगिरोगणैस्तुविवाहोभवत्येव आंगिरसत्वेपिसगोत्रत्वाभावात्द्वित्रिप्रवरसाम्याभावाच्च केचिद्भारद्वाजांगिरसत्वमाश्रित्यभारद्वाजशौंगशैशिरैःसहाविवाहमाहुः तन्न भारद्वाजत्वेदृढप्रमाणाभावात् प्रयोगपारिजातेकाश्यपैःसहैषामविवाहइत्युक्तंतत्रहेतुश्चिंत्यइतिकौस्तुभे लौगाक्षयः दार्भायणाः इत्यादयोष्टत्रिंशदधिकालौगाक्षयस्तेषांकाश्यपावत्सारवासिष्ठेतित्रयःकाश्यपावत्सारासितेतिवा एतेअहर्वसिष्ठाःनक्तंकाश्यपाः दिनकर्मणिवासिष्ठत्वप्रयुक्तकार्यभाजः रात्रिकर्मणिकाश्यपत्वप्रयुक्तकार्यभाजइत्यर्थः एतेषांसर्वैःकाश्यपैः सर्वैश्चवसिष्ठैःसंकृतिभिश्चाविवाहः ॥

अब द्विगोत्र कहताहुं.

तहां भरद्वाजके कुलमें उत्पन्न हुए शुंगसें वैश्वामित्र जो शैशिरि, तिसकी स्त्रीमें उत्पन्न हुआ शौंगशैशिरी नामवाला ऋषि, तिसके गोत्र लक्षणसें युक्त होनेसें तिसकों गोत्रता है. **तिसके गोत्रोंके प्रवर**—आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज, शौंग, शैशिर ऐसे पांच हैं. अथवा आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज, कात्य, आक्षील ऐसे पांच प्रवर हैं. अथवा आंगिरस, कात्य, आक्षील ऐसे तीन प्रवर हैं. अथवा भारद्वाज, कात्य, आक्षील ऐसे तीन प्रवर हैं. इन्होंका विवाह सब भरद्वाजोंसें और सब विश्वामित्रोंसें होता नहीं है. संस्कृति, पूतिमाष, तंडि इत्यादिक अठाईसपर्यंत संस्कृति हैं. **इन्होंके प्रवर**—आंगिरस, गौरिवीति, सांकृत्य ऐसे तीन हैं. अथवा शाक्त्य, गौरिवीति, सांकृत्य ऐसे तीन हैं. अथवा अंत्योंका व्यत्यय करना. इन्होंका विवाह अपने अपने गणमें स्थित पूतिमाष आदिक सब वसिष्ठगण और अहर्वसिष्ठसंज्ञक वक्ष्यमाण लौगाक्षि इन सबोंके साथ नहीं होता है. केवल आंगिरोगणवालोंके साथ तौ इन्होंका विवाह होताही है; क्योंकी, वे यदि आंगिरस हैं तथापि समानगोत्रपनेके अभावसें तिन्होंके दो तीन प्रवरभी समान नहीं. कितनेक ग्रंथकार भारद्वाजोंकों आंगिरसपना आश्रित करके भारद्वाज, शौंग, शैशिरि इन्होंके साथ इन्होंका विवाह नहीं होता ऐसा कहते हैं; परंतु वह ठीक नहीं है. क्योंकी, इन्होंकों भारद्वाजत्व है इसविषे प्रबल प्रमाण नहीं है. **प्रयोगपारिजात** ग्रंथमें काश्यपोंके साथ इन्होंका विवाह नहीं होता ऐसा कहा है; परंतु तिसका कारण उचित नहीं ऐसा **कौस्तुभ**में कहा है. **लौगाक्षि**, दाभार्यण, इत्यादिक अठतीससें अधिक लौगाक्षि हैं. **इन्होंके प्रवर**—काश्यप, अवत्सार, वासिष्ठ ऐसे तीन हैं. अथवा काश्यप, अवत्सार, असित ऐसे तीन प्रवर हैं. इन्होंकों अहर्वसिष्ठ और नक्तंकाश्यप ऐसा कहते हैं, अर्थात् दिनकर्मके स्थानमें वासिष्ठत्वप्रयुक्त जो कार्य सो करनेवाले और रात्रिकर्मके स्थानमें काश्यपत्वप्रयुक्त जो कार्य सो करनेवाले ऐसा अर्थ होता है. इन्होंका विवाह सब काश्यप, सब वसिष्ठ और संकृति इन्होंसें नहीं होता है.

अथस्मृत्यर्थसाराद्युक्ताद्विगोत्राः देवरातानांवैश्वामित्रदेवरातौदलेतित्रयः एतेषांसर्वैर्जामदग्न्यैर्विश्वामित्रैश्चाविवाहः १ धनंजयानांविश्वामित्रमाधुच्छंदसधानंजयेतित्रयः एषांसर्वैर्विश्वामित्रैरत्रिभिश्चाविवाहः अयंविश्वामित्रगणेप्रागुक्तः २ जातूकर्ण्यानांवासिष्ठात्रेयजातूकर्ण्येति एषांवसिष्ठैरत्रिभिश्चाविवाहः अयंवसिष्ठगणेसिंधावुक्तः ३ पूर्वमत्रिगणेषूक्तानां वामरथ्यादीनामत्रिपुत्रिकापुत्राणांचवसिष्ठात्रिभ्यामविवाहः अत्रिविश्वामित्राभ्यामितिकेचित् ४ पूर्वंभरद्वाजगणस्थऋक्षांतरगणत्वेनोक्तानांकपिलानामांगिरसबार्हस्पत्यभारद्वाजवांदनमातवचसेतिपंचप्रवराणांविश्वामित्रभरद्वाजाभ्यामविवाहः ५ पूर्वंविश्वामित्रेषूक्तानांकतानांवैश्वामित्रकात्याक्षीलेतित्रिप्रवराणांविश्वामित्रभरद्वाजाभ्यामविवाहः ६ अनेनैवन्यायेनपरगोत्रोत्पन्नदत्तकादीनामिदानींतनानामपिद्विगोत्रत्वात् जनकप्रतिग्रहीतृपित्रोर्द्वयोरपिसगोत्रैःसहअविवाहोज्ञेयः नात्रपुरुषसंख्या तेनशतपुरुषोत्तरमपिद्विगोत्रत्वंनापैति क्षत्रियवैश्यौतुपुरोहितगोत्रप्रवराविितिसर्वसिद्धांतः ॥

अब स्मृत्यर्थसार आदि ग्रंथोंमें कहे हुये द्विगोत्र कहताहुं—१ देवरातके प्रवर— वैश्वामित्र, देवरात, औदल ऐसे तीन हैं. इन देवरातोंका विवाह सब जामदग्न्योंके साथ और सब विश्वामित्रोंके साथ नहीं होता है. **२ धनंजयके प्रवर—**विश्वामित्र, माधुच्छंदस, धानंजय ऐसे तीन हैं. इन धनंजयोंका विवाह सब विश्वामित्र और अत्रियोंसें नहीं होता है. यह गण विश्वामित्रगणमें पहले कह दिया है. **३ जातूकर्ण्यके प्रवर—**वासिष्ठ, आत्रेय, जातूकर्ण्य ऐसे तीन प्रवर हैं. इन जातूकर्ण्योंका विवाह वसिष्ठ और अत्रिसें नहीं होता है. यह गण वसिष्ठगणमें **निर्णयसिंधु** ग्रंथविषे कहा है. ४ पहले अत्रिगणमें कहे ऐसे अत्रिकी कन्याके पुत्र जो वामरथ्यादिक हैं इन्होंका विवाह वसिष्ठ और अत्रियोंके साथ नहीं होता है. विश्वामित्र और अत्रिगणसें विवाह नहीं होता है. ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. ५ पहले भरद्वाजगणमें स्थित ऋक्षांतर्गत गणकरके कहा, तिसमें कहे जो आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज, वांदन, मातवचस इन पांच प्रवरोंसें युक्त जो कपिल हैं तिन्होंका विवाह विश्वामित्र और भरद्वाजके साथ नहीं होता है. ६ पहले विश्वामित्रगणोंमें कहे वैश्वामित्र, कात्य, आक्षील इन तीन प्रवरोंसें युक्त जो कत तिन्होंका विवाह विश्वामित्र और भरद्वाजके साथ नहीं होता है. इस न्यायकरके दूसरे गोत्रमें उत्पन्न हुये विद्यमान कालके जो दत्तक आदि पुत्र हैं तिन्होंकोंभी दो गोत्र हैं. इस लिये तिन्होंका विवाह जन्म देनेवाले और गोदमें लेनेवाले ऐसे दोनों पिताओंके सगोत्रियोंसें नहीं होता ऐसा जानना. इस विषयमें अमुक पुरुषपर्यंत विवाह नहीं होना चाहिये ऐसी पुरुषसंख्या जिस अर्थसें कहांभी कही नहीं है तिस अर्थसें १०० पिढीपर्यंतभी दत्तकका द्विगोत्रत्व दूर नहीं होता है. क्षत्रिय और वैश्य तौ पुरोहितके गोत्र और प्रवरवाले हैं, ऐसा सबोंका सिद्धांत है.

अथस्वगोत्राज्ञानेउपनयनेयआचार्यस्तद्गोत्रप्रवरैरेवकर्माणिविवाहाविवाहौचेति आचार्यगोत्राज्ञानेतु दत्वात्मानंतुकस्मैचित्तद्गोत्रप्रवरोभवेत् ॥

अब अपना गोत्र नहीं मालूम होवै तिसका निर्णय कहताहुं.

अपना गोत्र मालूम नहीं होवै तौ यज्ञोपवीतसंस्कारमें जो आचार्य होवै तिसका गोत्र और प्रवर ग्रहण करके कर्म करने. विवाह होवै अथवा न होवै ये सब आचार्यके गोत्र प्रवरउपरसें देखना. आचार्यका गोत्र नहीं मालूम होवै तौ " किसी पुरुषकों अपने शरीरका दान करके दान लेनेवालेका गोत्र और प्रवर ग्रहण करना.

अथमातृगोत्रवर्जननिर्णयः तत्रमातृगोत्रपदेनमातामहगोत्रमेववर्ज्यं तच्चगांधर्वादिविवाहोढापुत्राणांसर्वेषांवर्ज्यं 'ब्राह्मविवाहोढापुत्राणांतुसर्वेषांमातामहगोत्रंनवर्ज्यं' किंतुमाध्यंदिनानामेव मातृगोत्रंमाध्यंदिनीयानामितिसत्याषाढवचनात् तथैवसर्वत्रशिष्टाचाराच्च ॥

अब विवाहमें माताके गोत्रकों वर्जनेका निर्णय कहताहुं.

तहां मातृगोत्रपदकरके मातामहकाही गोत्र वर्जित करना. मातामहगोत्र वर्जित करनेका सो गांधर्व आदि विवाहोंसें विवाही हुई स्त्रियोंके सब पुत्रोंकों वर्जित है. ब्राह्मविवाहसें विवाही हुई स्त्रीके सब पुत्रोंकों मातामहका गोत्र वर्जित नहीं है. किंतु माध्यंदिनशाखावालोंकों मातामहका गोत्र वर्जित है. क्योंकी, " मातामहगोत्र वर्ज करना सो माध्यंदिनशाखावालोंनें वर्ज करना " ऐसा सत्याषाढका वचन है और तैसाही सब जगह शिष्टोंका आचारभी है.

अथसगोत्रादिविवाहादौप्रायश्चित्तं तत्राज्ञानतःसगोत्रसप्रवरविवाहेकन्यांत्यक्त्वाचांद्रायणंप्रायश्चित्तंकार्यं ज्ञानतोद्विगुणं एवंकन्यायाएतदर्धं एवंसपिंडायाविवाहेपि त्यागश्चब्राह्मण्याःसंभोगधर्मकार्ययोरेव मातृवत्परिपालयेदित्यन्नादिनापालनोक्तेः यस्तुसगोत्रादिकांविवाह्योपगच्छतितस्याज्ञानेविवाहप्रयुक्तचांद्रायणंसगोत्रागमनप्रयुक्तंचांद्रायणद्वयाधिकं ज्ञानतस्तुअधिकंकल्प्यमितिकेचित् अन्येतुगुरुतल्पव्रताच्छुद्धयेदितिगुरुतल्पसाम्योक्तेःषडब्दंप्रायश्चित्तं अज्ञानतस्त्र्यब्दंचांद्रायणत्रयंवेत्याहुः अज्ञानतःसगोत्रादिषूत्पन्नानांजनकप्रायश्चित्तोत्तरंकाश्यपगोत्रेणव्यवहारःकार्योनतुत्यागः ज्ञानतस्तुसगोत्राद्युत्पन्नानांचांडालत्वमेवआरूढपतितापत्यंब्राह्मण्यांयश्चशूद्रजः सगोत्रोढासुतश्चैवचांडालास्त्रयईरिताइतियमस्मृतेः ॥

अब एक गोत्रसें विवाह हो जावै तौ प्रायश्चित्त कहताहुं.

तहां विनाजाने समान गोत्र और समान प्रवरमें विवाह हो जावै तौ वह कन्याका त्याग करके चांद्रायण प्रायश्चित्त करना. जानके समान गोत्र और समान प्रवरमें विवाह होवै तौ पहलेसें दुगुना प्रायश्चित्त करना. ऐसाही कन्यानें इससें आधा प्रायश्चित्त करना. ऐसाही सपिंडा कन्याके विवाहमेंभी प्रायश्चित्त करना. ब्राह्मणी स्त्रीका त्याग करनेका सो संभोग और धर्मकार्यमें करना. पालनाविषयमें त्याग नहीं करना. क्योंकी, "माताके समान तिस स्त्रीकी पालना करनी," ऐसा वचन होनेसें तिसकों अन्नवस्त्र आदि देके तिसकी रक्षा करनी चाहिये. जो पुरुष समानगोत्रकी कन्याकेसाथ विनाजाने विवाह करके तिस्सें भोग करता

है तिसनें समानं गोत्रकी कन्याके साथ विवाह हुआ इसलिये तत्प्रयुक्त चांद्रायण प्रायश्चित्त करके सगोत्रा कन्यासें भोग किया इसलिये दो चांद्रायणोंसें अधिक प्रायश्चित्त करना. जानके जो अपने गोत्रकी कन्यासें विवाह करके भोग करै तौ पूर्वसें अधिक प्रायश्चित्त करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. अन्य ग्रंथकार तौ "गुरुतल्पव्रत अर्थात् गुरुकी पत्नीसं भोग करनेवालेकों जो प्रायश्चित्त है तिस्सें वह शुद्ध होता है," ऐसा वचन है इसलिये गुरुकी पत्नीके समान सगोत्रा कन्या होती है, इस कारणसें षडब्द प्रायश्चित्त करना; और विनाजाने करनेमें त्र्यब्द प्रायश्चित्त अथवा तीन चांद्रायण प्रायश्चित्त करने ऐसा कहते हैं. विनाजाने सगोत्रा इत्यादि कन्यासें विवाह होकर तिसमें जो बालक उत्पन्न होवैं तिन्होंका सब व्यवहार पिताके प्रायश्चित्त होने पीछे काश्यप गोत्रसें करना. परंतु तिन बालकोंका त्याग नहीं करना. जानके सगोत्रा इत्यादिमें उत्पन्न हुये बालक चांडालही होते हैं. क्योंकी, "आरूढपतितका संतान, ब्राह्मणीमें शूद्रसें उपजा पुत्र, और अपने गोत्रकी स्त्रीसें उपजा पुत्र ये तिनों चांडाल कहे हैं," ऐसा **यमस्मृतिमें** कहा है.

अथान्येपिविवाहेनिषेधाः प्रत्युद्वाहोनैवकार्योनैकस्मैदुहितृद्वयं नचैकजन्ययोःपुंसोरेकजन्येतुकन्यके अत्रापवादः सोदरयोःसोदरकन्यकेवत्सरादिकालव्यवधानेमहानद्यादिव्यवधानेवादेये पूर्वकन्यायादत्तायाःमृतौतस्यैववरस्यद्वितीयाकन्यादेया प्रत्युद्वाहोदारिद्रादिसंकटेकार्यः सोदराणांतुल्यसंस्कारोवर्षमध्येनिषिद्धः गृहनिर्माणविवाहौवर्षांतर्नकार्यौ गृहप्रवेशस्यनिषेधाभावाद्गृहप्रवेशोत्तरंविवाहःकार्यः सोदरयोःपुत्रयोःकन्यापुत्रयोर्वाकन्ययोर्वाविवाहौषण्मासाभ्यंतरेविशेषतोनिषिद्धौ पुरुषत्रयात्मककुलेविवाहान्मौंजीबंधःषण्मासेनिषिद्धः षण्मासेशुभकार्यत्रयंनकार्यं अत्रशुभकार्यपदेनमौंजीविवाहावेव तेनगर्भाधाननामकर्मादिसंस्काराणांनत्रित्वनिषेधः नवागर्भाधानादिनाचतुष्ट्वादिसंपादनं नाग्निकार्यत्रयंभवेदित्यनेनैकवाक्यतालाघवादितिभाति भिन्नोदराणामग्निकार्यत्रयंनदोषायेतिकश्चित् केचिन्नकुर्यान्मंगलत्रयमित्यस्यभिन्नार्थत्वंस्वीकृत्ययत्किंचिच्छुभकार्याणामपित्रित्वंनशुभमित्याहुः पुरुषोद्वाहात्स्युद्वाहःषण्मासाभ्यंतरेनिषिद्धः ज्येष्ठमंगलाल्लघुमंगलंनकार्यं बहिर्मंडपेविहितंज्येष्ठमंगलं तद्भिन्नंलघु गर्भाधानादिकस्यप्राप्तकालस्यननिषेधःएवंशांत्यादेरपिनैमित्तिकस्यप्राप्तकालस्यननिषेधः अतिपन्नस्यत्वयंनिषेधः एवंव्रतोद्यापनादीनांवास्तुप्रवेशादीनांचलघुत्वादेवविवाहाद्युत्तरंनिषेधः इदंनिषेधचतुष्टयंत्रिपुरुषात्मककुलेषण्मासाभ्यंतरएव एवंमुंडनद्वयनिषेधंव्रतबंधाच्चौलनिषेधंचकेचिदाहुः ॥

अब विवाहमें अन्यभी निषेध कहताहुं.

"अपनी कन्या जिसके पुत्रकों दी होवै तिसकी कन्या अपने पुत्रकों करनी इसकों प्रत्युद्वाह अर्थात् सांटा नहीं करना. एक वरकों दो सोदर पुत्री नहीं विवाहनी. एक मातासें उपजे दो पुत्रोंकों एक मातासें उपजी दो कन्या नहीं देनी." **इस विषयमें अपवाद**—एक मातासें उपजे दो भाइयोंकों एक मातासें उपजी दो बहन देनी होवै तौ विवाहमें एक वर्ष आदि कालके व्यवधानसें देनी. अर्थात् एक कन्याका विवाह हुए पीछे दूसरी कन्या तिस

वरके सोदर भाईकों देनी होवै तौ एकवर्षके अनंतर देनी. अथवा महानदीके अंतरमें देनी. पहले दी हुई कन्या मर जावै तौ तिसी वरकों दूसरी कन्या देनी. प्रत्युद्वाह अर्थात् सांटा करनेका सो दारिद्र्य आदि संकटमें करना उचित है. एक मातासें उपजे पुत्र अथवा कन्याओंके एक वर्षके मध्यमें समान संस्कार नहीं करने. घर बनाना और विवाह करना ये दो एक वर्षके भीतर नहीं करने. घरमें प्रवेश करनेकों निषेध नहीं है इस लिये घरमें प्रवेश किये उपरंत विवाह करना. एक मातासें उपजे दो पुत्रोंके अथवा एक मातासें उपजे कन्या और पुत्रके अथवा एक मातासें उपजी दो कन्याओंके दो विवाह छह महीनोंके भीतर विशेषकरके निषिद्ध हैं. तीन पुरुषपर्यंत कुलमें विवाहसें छह महीनेपर्यंत यज्ञोपवीतसंस्कार निषिद्ध है. छह महीनोंमें तीन शुभकार्य नहीं करने. यहां **'शुभकार्य'** इस पदकरके यज्ञोपवीतकर्म और विवाहही लेने. तिसकरके गर्भाधान और नामकर्म आदि संस्कार तीन करनेका निषेध नहीं है. अथवा गर्भाधान आदि करके चार कार्योंकी पूर्ति नहीं करनी. "तीन अग्निकार्य नहीं होते हैं" ऐसा जो वचन है तिस्सें एकवाक्यताका लाघव होता है; इसलिये तैसा नहीं ऐसा भासमान होता है. भिन्न भिन्न माताओंसें उपजे भाइयोंके तीन अग्निकार्य होनेमें दोष नहीं है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. कितनेक ग्रंथकार, "तीन मंगलकार्य नहीं करने," इस वाक्यके निराले अर्थका अंगीकार करके तीन शुभकार्य नहीं करने ऐसा कहते हैं. १ पुत्रके विवाहसें छह महीनोंके मध्यमें कन्याका विवाह नहीं करना. २ ज्येष्ठमंगलके पीछे लघुमंगल नहीं करना. बाहिर मंडपमें विहित जो होवै वह ज्येष्ठमंगल होता है, और तिस्सें भिन्नलघुमंगल होता है. गर्भाधान आदि जो प्राप्तकाल हैं तिन्होंका निषेध नहीं है. नैमित्तिक प्राप्त काल है जिनका ऐसे शांति आदि नैमित्तिक कर्मका निषेध नहीं है. ३ जिसका काल टल गया है तिसका निषेध जानना. ४ ऐसे व्रतके उद्यापन आदि और वास्तुप्रवेश आदि लघुमंगल होनेसें विवाहके उपरंत इनका निषेध है. ये चारों निषेध तीन पुरुषरूप कुलमें और छह महीनोंके भीतरही जानने. ऐसे दो मुंडनकर्मोंका निषेध और यज्ञोपवीतसंस्कारके उपरंत चौलसंस्कारका निषेध ये दो निषेध कितनेक ग्रंथकार कहते हैं.

अथैषामपवादाः सोदराणामपिसमानसंस्कारौविवाहौचसंकटेअब्दभेदात्कार्यौ चतुर्दिनव्यवधानादेकदिनव्यवधानाद्वाकार्यौ अतिसंकटेएकदिनेकर्तृभेदेनमंडपभेदेनवाकार्यौ द्वाभ्यांकर्तृभ्यांएकस्मिन्नपिलग्नेएकस्मिन्नपिगृहेभिन्नोदरयोर्विवाहःकार्यः एवंपूर्वोक्तनिषेधचतुष्टयेपिवर्षभेदेदोषाभावः यमलयोरेककालेएकमंडपेवासमानसंस्काराणांनदोषःएवंमातृभेदेपिषण्मासाभ्यंतरेसमानसंस्कारेदोषोन मातृभेदेएकजातकन्ययोरेकदिनेएकमंडपेपिवेदीभेदेनविवाहोनदोषायेतिकेचित् पुरुषत्रयात्मककुलेमंगलकार्योत्तरंषण्मासाभ्यंतरे मुंडनयुक्तकर्मनकार्यं अत्रसर्वत्रपुरुषत्रयगणनाप्रकारः प्रतिकूलविचारेस्पष्टीकरिष्यते मुंडनकर्मतुचौलंनांगसंस्कारादिकमाधानादिकमभ्युदयार्थमैच्छिकसर्वप्रायश्चित्तादिकंक्षौरप्रापकतीर्थयात्रादिकंचोह्यं व्रतबंधस्तुकात्यायनमतेमंगलरूपत्वाद्विवाहाद्युत्तरंकार्यः अन्येषांमतेमुंडनरूपत्वान्नकार्यः पित्रोरंत्यक्रियादिप्राप्तमुंडनमाकस्मिकप्राप्तप्रायश्चित्तमुंडनमासन्नमरणेनसर्वप्रायश्चि

त्तीयमुंडनंचकर्तव्यमेव नित्यत्वाद्दर्शपूर्णमासचातुर्मास्यादिमुंडनेपिनदोषः नचमुंडनंचौलमित्युक्तंव्रतोद्वाहौतुमंगलमितिवचसामंडनमुंडनयोः परिगणनादाधानादीनांनदोषइतिवाच्यं वाक्यस्योदाहरणार्थत्वात् अन्यथाव्रतोद्वाहान्नचौलकमित्येववक्तव्येमंडनान्नतुमुंडनमितिसामान्येनवचनरचनानर्थक्यापातात् तस्माद्गर्भाधानादिलघुमंगलादुद्वाहादिज्येष्ठमंगलाच्चाधानादिमुंडनमपिवर्ज्यमितिभाति एवंसतिकुलेबहुकर्मोपरोधःस्यादितिचेत् विवाहव्रतचूडोत्तरमंगलेषुपिंडदानादौ मासाद्यल्पकालप्रतिबंधवत्पित्राद्यन्यमरणेल्पकालप्रतिकूलनिर्णयवच्चलघुमंगलोत्तरंमासाद्यल्पकालमुंडननिषेधकल्पनंयुक्तिबलादाश्रयणीयमितिभाति अत्रविषयेप्राचीननिबंधेषुविशेषोनदृश्यतेतथापिधाष्टर्येनमयोक्तोविशेषोयुक्तश्चेद्ग्राह्यः इतिमंडनमुंडननिर्णयः ॥

अब इन निषेधोंके अपवाद कहताहुं.

एक मातासें उपजे दो भाइयोंके समानसंस्कार और विवाह संकटमें वर्षके भेदसें करने. अथवा चार दिनके व्यवधानसें अथवा एक दिनके व्यवधानसें करने. अत्यंत संकटविषे एक दिनमें कर्ताके भेदकरके अथवा मंडपके भेदकरके करने. दो करनेवाले होवैं तौ एक लग्नमें और एक घरमें अलग अलग मातावाले भाइयोंका विवाह करना. ऐसेही पूर्वोक्त चारों निषेधोंमेंभी वर्षके भेदमें दोष नहीं लगता है. जोडले दो भाइयोंका एक मंडपमें समानसंस्कार करनेमें दोष नहीं है. ऐसेही माताके भेदकरके छह महीनोंके भीतर समानसंस्कार करनेमें दोष नहीं है. माताके भेदमें एक पितासें उपजी दो कन्याओंके एक दिनमें एक मंडपमें वेदीके भेदकरके विवाह करनेमें दोष नहीं है, ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. तीन पुरुषरूप कुलमें मंगलकार्यके उपरंत छह महीनोंके भीतर मुंडनसें युक्त कर्म नहीं करना. यहां सब जगह तीन पुरुषोंकी गणनाका प्रकार प्रतिकूलविचारमें प्रकट करेंगे. **मुंडनकर्म कहताहुं.**—चौल, सर्पसंस्कार इत्यादिक, आधान आदि, अपना उत्कर्ष होनेके लिये इच्छाके अनुसार सब प्रायश्चित्त आदि और क्षौरका कारण तीर्थयात्रा आदि ये सब मुंडनकर्म होते हैं. यज्ञोपवीतकर्म तौ कात्यायनके मतमें मंगलरूप है, इसवास्ते विवाह आदिके उपरंत करना. दूसरोंके मतमें यज्ञोपवीतकर्म मुंडनरूप है इसलिये वह नहीं करना. पिता और माताकी अंत्यक्रियासंबंधी प्राप्त हुआ मुंडन, और विनाकारण प्राप्त हुआ प्रायश्चित्तसंबंधी मुंडन और मरणसमय समीप होनेसें कर्तव्य जो सर्वप्रायश्चित्त तत्संबंधी मुंडन ये करने उचित हैं. दर्श, पौर्णमास और चातुर्मास्य इन आदि संबंधी मुंडन करनेमें दोष नहीं है. क्योंकी, वह दर्शपूर्णमासादिसंबंधी मुंडन नित्य है. "चौलसंस्कार यह मुंडन होता है ऐसा कहा है. यज्ञोपवीतकर्म और विवाह यह मंगल होता है," इस वचनसें मंडन और मुंडन ये भिन्न दर्शित किये हैं, इसलिये आधान आदि करनेमें दोष नहीं है ऐसा नहीं कहना; क्योंकी, वचन जो कहा है सो मात्र उदाहरण दिखानेके लिये है ऐसा नहीं मानेंगे तौ 'यज्ञोपवीत, विवाहके उपरंत चौलकर्म नहीं करना' इस प्रकार कहना योग्य था, तैसा कहेविना 'मंडनके उपरंत मुंडन नहीं करना' ऐसा जो सामान्य करके वचन कहा है तिस वचनकों व्यर्थता प्राप्त होवैगी, इसलिये गर्भाधान आदि लघुमंगल और विवाह आदि ज्येष्ठमंगल

ये मंगलकार्य किये होवैं तब आधान आदि मुंडनभी वर्जित करना उचित है ऐसा भासमान होता है. ऐसा होनेमें बहुतसे कर्म बंद हो सकते हैं. ऐसा जो होवै तौ विवाह, यज्ञोपवीत, चौल इन्होंके उपरंत मंगलकार्य हुए होवैं तौ जैसा पिंडदान आदिविषे एक महीना आदि अल्प कालका प्रतिबंध, और पिता, माता आदिसें दूसरेके मरनेमें अल्पकालपर्यंत प्रतिकूल होता है, ऐसा जिस रीतिसें निर्णय कहा तैसे लघुमंगलके उपरंत महीना आदि अल्पकालपर्यंत मुंडनके निषेधकी कल्पना करनी ऐसा युक्तिके बलसें ग्रहण करना ऐसा मुझकों प्रतिभान होता है. इसविषे प्राचीन ग्रंथोंमें विशेष नहीं दीख जाता है, तथापि धार्ष्टर्यतासें मेरा कहा विशेष युक्त होवै तौ ग्रहण करना. ऐसा मंडन और मुंडनका निर्णय समाप्त हुआ.

अथप्रतिकूलविचारः विवाहनिश्चयोत्तरंवरस्यकन्यायावासगोत्रत्रिपुरुषात्मककुलेकस्यचिन्मरणेप्रतिकूलदोषः विवाहनिश्चयश्चवैदिकोलौकिकोवाग्राह्यः तत्रवैदिकोवाग्दानाख्यविधिनाकृतोमुख्यः लौकिकोलग्नतिथिनिश्चयादिर्वरवध्वोःशुल्कभाषाबंधपूगीफलदानादिश्चसगोत्रत्रिपुरुषेत्युक्त्यामातामहकुलादिव्यावृत्तिः तथाचवरस्तत्पूर्वपत्नीवरमातापितरौवरपितामहपितामह्यावनूढापितृष्वसाचेतिपूर्वत्रिपुरुषी वरस्तस्यभ्रातापत्नीपुत्रानूढकन्यासहितोवरस्यानूढाभगिनीवरस्यस्नुषापुत्रौअनूढाकन्याचपौत्रस्तद्भार्याचानूढापौत्रीचेतिपरत्रिपुरुषी पितृव्यतत्पत्न्यौपितृव्यपुत्रस्तत्पत्न्यावनूढापितृव्यकन्याचेतिसंतानभेदेत्रिपुरुषीचेति सगोत्रत्रिपुरुषीपुरुषपरिगणना एतेषामन्यतममरणेप्रतिकूलमितिपर्यवसितोर्थः अत्रभ्रातापुत्रपौत्रादिश्चानुपनीतोपित्रिवर्षाधिकवयाःग्राह्यः एवमनूढभगिन्यादेरपित्रिवर्षाधिकत्वंयुक्तंभाति एवंवधूकुलेप्यूह्यं एवमेवमंडनमुंडनादावपित्रिपुरुषगणनोह्या ॥

अब प्रतिकूलका निर्णय कहताहुं.

विवाहके निश्चयके उपरंत वरके अथवा कन्याके अपने गोत्रसंबंधी तीन पिढीपर्यंत कुलमें किसीकका मरण होवै तौ प्रतिकूलदोष होता है. विवाहका निश्चय लौकिक अथवा वैदिक ग्रहण करना उचित है. तिन दोनोंमें वाग्दानसें विधिकरके किया निश्चय वैदिक होता है. लग्न, तिथि इन्होंका निश्चय आदि, कन्या और वरकों गहना आदि देना और तिन्होंका आपसमें भाषाबंध और सुपारी देना इस आदि लौकिकनिश्चय होता है. 'अपने गोत्रसंबंधी तीन पिढीपर्यंत' इस उक्तिसें मातामह अर्थात् नानाके कुलकी व्यावृत्ति हुई. **अब त्रिपुरुषीकों कहताहुं.**—वर, तिसकी पहली स्त्री, वरकी माता और पिता और वरका पितामह और पितामही और नहीं विवाहित हुई ऐसी पिताकी बहन इन्होंकों **पूर्वत्रिपुरुषी** कहते हैं. पिछली तीन पिढीकों कहते हैं.—वर, वरका भाई, तिस भाईकी पत्नी, भाईका पुत्र, और नहीं विवाही हुई भाईकी पुत्री और नहीं विवाही हुई वरकी बहन, वरके पुत्रकी स्त्री और वरका पुत्र, और नहीं विवाही वरकी कन्या और वरका पौत्र, पौत्रकी स्त्री, और नहीं विवाही पौत्री ऐसी यह **परत्रिपुरुषी** होती है. वरका चाचा, अथवा ताऊ और तिसकी स्त्री और चाचाका तथा ताऊका पुत्र, तिसकी स्त्री, और नहीं विवाही चाचा तथा ताऊकी पुत्री, और संतानभेद होवै तौ वह त्रिपुरुषी, इस प्रकार समानगोत्र त्रिपुरुषीके पुरुषोंकी

संख्या जाननी. इन्होंमांहसें एक कोईसेके मरणमें प्रतिकूलदोष होता है ऐसा सिद्धांत है. यह प्रतिकूलविषे भाई, पुत्र और पौत्र आदि जिनका यज्ञोपवीतसंस्कार नहीं हुआ होवै तौभी तीन वर्षसें अधिक अवस्थावाले ग्रहण करने. ऐसे नहीं विवाही हुई कन्या वह भी तीन वर्षसें अधिक अवस्थाकी लेनी ऐसा योग्य लगता है. ऐसेही कन्याके कुलमेंभी विचार लेना. ऐसेही मंडन, और मुंडन आदिविषे तीन पुरुषोंकी संख्या योजनी.

अत्रविशेषः पितामातापितामहः पितामहीपितृव्यःपूर्वपत्नीपूर्वस्त्रियाः पुत्रोभ्रातानूढाभगिनीचैतेषांमरणेविशेषतः प्रतिकूलदोषौन्नवकर्तव्योविवाहः एतदन्यत्रिपुरुषसपिंडमरणेशांत्यादिनादोषंपरिहृत्यविवाहःकार्यः संकटेतुपित्रादिमरणेपिकालप्रतीक्षाशांतिभ्यांदोषंनिर्हृत्यविवाहःकार्यः तत्रव्यवस्था निश्चयोत्तरंमातापित्रोर्द्वयोरपिमरणेकालप्रतीक्षाशांतिभ्यामपिदोषशांत्यभावान्नकार्योविवाहः मातापित्रोरेकैकमरणेतुशांत्यादिनाविवाहः तत्रपितुरब्दमिहाशौचंतदर्धंमातुरेवच मासत्रयंतुभार्यायास्तदर्धंभ्रातृपुत्रयोः अन्येषांतुसपिंडानामाशौचंमाससंमितं तदंतेशांतिकंकृत्वाततोलग्नंविधीयते प्रतिकूलेनकर्तव्यंलग्नंयावदृतुत्रयं प्रतिकूलेसपिंडस्यमासमेकंविवर्जयेदित्यादिवाक्याश्रयेणव्यवस्थोच्यते अत्राशौचपदेनप्रतिकूलकृतंविवाहानधिकारमात्रंकालप्रतीक्षार्थमुच्यते अतःपितृमरणेवर्षोत्तरंविनायकशांतिंकृत्वासंकटेविवाहःकार्यः अतिसंकटेषण्मासोत्तरंविनायकशांतिंश्रीपूजनादिशांतिंचकृत्वाविवाहः ततोप्यतिसंकटेमासोत्तरंशांतिद्वयांतेविवाहइतिसंकटतारतम्येनपक्षत्रयं मातुर्मरणेषण्मासांतेविनायकशांत्याविवाहः अतिसंकटेमासांतेशांतिद्वयंकृत्वोद्वाहः यत्तुप्रमीतौपितरौयस्यदेहस्तस्याशुचिर्भवेत् नदैवंनापिवापित्र्यंयावत्पूर्णोनवत्सरइतिपित्रोर्मृतौवर्षपर्यंतंसर्वशुभकर्मनिषेधवचनंतत्प्राङ्निश्चयात्पित्रोर्मृतौसंकटाभावेवाज्ञेयं भार्यामरणेमासत्रयांतेमासांतेवाश्रीपूजनादिशांतिः भ्रातृमरणेसार्धमासांतेमासांतेवाविनायकशांतिः पुत्रमृतौसार्धमासंमासंवाप्रतीक्ष्यश्रीपूजनादिशांतिः पितृव्यमरणेमासांतेविनायकशांतिः पितामह्यात्रनूढभगिन्याश्चमरणेमासांतेश्रीपूजनादिशांतिः एतदन्यत्रिपुरुषसपिंडमरणेमासांतेश्रीपूजनादिशांतिः ततोविवाहः गुणवत्तरमातुर्मृतौषण्मासेनमनःखेदानपगमेवर्षप्रतीक्षा एवंगुणवत्तरभार्यायाःषण्मासपर्यंतंप्रतीक्षा ज्योतिःप्रकाशेतुअतिसंकटवशेनमात्रादिमरणेमासाधिकप्रतीक्षायाअसंभवेमासमध्येपिदशाहोत्तरंकंचित्कालंप्रतीक्ष्योक्तव्यवस्थयाविनायकशांतिंश्रीपूजनादिशांतिंचकृत्वागांदत्वापुनर्वाग्दानादिचरेदित्युक्तं सर्वोप्ययमपवादःसंकटेषुतारतम्येनबुधैर्योज्यः अल्पसंकटविषयेमहासंकटविषयकविधिकथनेवक्तुःकर्तुश्चदोषएव दुर्भिक्षराष्ट्रभंगादिभयेपित्रोर्मरणाशंकायांचनप्रतिकूलं दीर्घरोगिदूरदेशस्थविरक्तानांकन्यायाःप्रौढत्वेचप्रतिकूलदोषोनेत्यपवादः ॥

अब प्रतिकूलके विषयमें विशेष कहताहुं.—पिता, माता, पितामह, पितामही, चाचा, पहली स्त्री, पहली स्त्रीका पुत्र, भाई, नहीं विवाही बहन, इन्होंमांहसें कोईभी मर जावै तौ विशेषकरके प्रतिकूल होता है इस लिये विवाह नहीं करना. इन्होंसें अन्य तीन पुरुषरूपी सपिंड मर जावै तौ शांति आदिसें दोष दूर करके विवाह करना. संकटमें तौ पिता आदिके मरनेमेंभी कालप्रतीक्षा और शांतिसें दोष दूर करके विवाह करना. तिसविषे व्यवस्था क-

हताहुं.—विवाहके निश्चयके उपरंत मातापिताओंका मरण होवै तौ कालप्रतीक्षा और शांतिसेंभी दोष दूर नहीं होता है इस कारणसें विवाह नहीं करना. माता अथवा पिता इन्होंमेंसें हर कोई एकका मरण होवै तौ शांति आदि करके विवाह होता है.—तिसमें "विवाहविषे पिताका आशौच एक वर्षपर्यंत रहता है. माताका छह महीनेपर्यंत आशौच रहता है, अपनी स्त्रीका आशौच तीन महीनेपर्यंत रहता है, भाई और पुत्रका डेढ महीनापर्यंत आशौच रहता है, अन्य सपिंडोंका आशौच एक महीनापर्यंत रहता है. तिस आशौचके अंतमें शांति करके पीछे विवाह करना. प्रतिकूलदोषमें छह महीनेतक विवाह नहीं करना. सपिंड मनुष्यके मरनेमें एक महीनापर्यंत विवाह करना नहीं," इस आदि वाक्यके आश्रयसें इसकी व्यवस्था कहताहुं,—यहां 'आशौच' पदकरके प्रतिकूलकृत विवाहका अनधिकार मात्र कालप्रतीक्षाके अर्थ कहा है, इस कारणसें पिताके मरनेमें एक वर्षके उपरंत विनायकशांति करके संकटविषे विवाह करना. अत्यंत संकटमें छह महीनोंके उपरंत विनायकशांति और श्रीपूजनादि शांति करके विवाह करना. तिस्सें अत्यंत संकटमें एकमहीनेके उपरंत दो शांति विनायकशांति और श्रीपूजनादिक शांति करके पीछे विवाह करना. ऐसे संकटके तारतम्यसें तीन पक्ष कहे हैं. माताके मरनेमें छह महीनेके अंतमें विनायकशांति करके विवाह करना. अत्यंत संकटमें एक महीनेके उपरंत दो शांति करके विवाह करना. "जिसकी माता और पिता मर जावै तिसका शरीर एक वर्षपर्यंत अपवित्र रहता है, इसलिये एक वर्षपर्यंत देवसंबंधी अथवा पितृसंबंधी कर्म नहीं करना." ऐसा मातापिताके मरनेमें एक वर्षपर्यंत सब शुभकर्मोंका निषेध करनहारा जो वचन है, वह विवाहके निश्चयके पहले पिता और माताके मरनेविषे अथवा संकटके अभावमें जानना. भार्याके मरनेमें तीन महीनोंके अंतमें अथवा एक महीनेके अंतमें श्रीपूजनादिक शांति करनी. भाईके मरनेमें डेढ महीनेके अंतमें अथवा एक महीनेके अंतमें विनायकशांति करनी. पुत्रके मरनेविषे डेढ महीनाके अंतमें अथवा एक महीनाके अंतमें श्रीपूजनादि शांति करनी. चाचाके मरनेविषे एक महीनेके अंतमें विनायकशांति करनी. दादीके और विनाविवाही बहनके मरनेमें एक महीनेके पीछे श्रीपूजनादिक शांति करनी. इन्होंसें अन्य सपिंडसंज्ञक तीन पुरुषपर्यंत मरनेविषे एक महीनेके अंतमें श्रीपूजनादि शांति करनी, और पीछे विवाह करना. अत्यंत गुणवाली माताके मरनेविषे और छह महीनेमें खेद दूर नहीं हो सकै तौ एक वर्षपर्यंत प्रतीक्षा करनी. ऐसेही अत्यंत गुणवाली भार्याके मरनेमें छह महीनेपर्यंत प्रतीक्षा करनी. **ज्योतिःप्रकाश** ग्रंथमें तौ, माता आदिके मरनेमें, अत्यंत संकटमें और एक महीनासें अधिक प्रतीक्षा करनेका असंभव होवै तौ एक महीनाके मध्यमेंभी दशदिनोंके उपरंत कछुक काल प्रतीक्षा करके पूर्व कही व्यवस्थासें विनायकशांति और श्रीपूजनादि शांति करके और गौका दान देके पुनर्वाग्दान आदि करना ऐसा कहा है. सब प्रकारका जो यह अपवाद कहा सो अतिसंकटमें तारतम्यतासें पंडितोंनें समझ लेना. अल्प संकटके विषयमें महासंकटविषयक विधिके कहनेमें वक्ता और कर्ता इन दोनोंकोभी दोष लगता है. दुर्भिक्ष अर्थात् काल और देशका भंग आदि भयमें, पिता और माताके मरनेकी आशंकाविषे प्रतिकूलदोष नहीं है. कन्याके प्रौढपनेमें

दीर्घरोगी, दूरदेशमें स्थित, और विरक्त इन्होंविषे प्रतिकूलदोष नहीं है. ऐसा प्रतिकूलका अपवाद समाप्त हुआ.

श्रीपूजनादिशांतिश्चश्रियेजातइतिश्रियंइदंविष्णुरितिविष्णुंगौरीर्मिमायेतिगौरींत्र्यंबकमितिरुद्रंपरंमृत्योरितियमंचसंपूज्याष्टोत्तरशततिलाज्यंजुहुयात् भूःस्वाहामृत्युर्नश्यतांस्नुषायैसुखंवर्धतांस्वाहेति ततोहोमंसमाप्याथगोद्वयंदक्षिणाभवेदितिकौस्तुभेद्रष्टव्या इतिप्रतिकूलविचारः ॥

अब श्रीपूजनादि शांति कहताहुं.

"श्रियेजात०" इस मंत्रसें श्रीकी पूजा, इदंविष्णु०" इस मंत्रसें विष्णुकी पूजा, "गौरीर्मिमाय०" इस मंत्रसें गौरीकी पूजा, "त्र्यंबकं०" इस मंत्रसें रुद्रकी पूजा, "परंमृत्यो०" इस मंत्रसें यमकी पूजा करके तिल और घृतकी १०८ आहुति देनी. "भूःस्वाहा मृत्युर्नश्यतां स्नुषायै सुखं वर्धतां स्वाहा," इस मंत्रसें होम करना. "पीछे होमकी समाप्ति करके दो गौदान दक्षिणा देनी." इस प्रकार कौस्तुभ ग्रंथमें शांति देख लेनी. ऐसा प्रतिकूलविचार समाप्त हुआ.

प्रेतकर्माण्यनिर्वृत्यचरेन्नाभ्युदयक्रियां आचतुर्थंततःपुंसिपंचमेशुभदंभवेत् अत्रप्रेतकर्मपदेनसपिंडीकरणात्पूर्वभाविकर्माणिसपिंडीकरणंचसपिंडीकरणोत्तरंपार्वणविधिनोक्तानिमासिकानिचोच्यंते सपिंडीकरणादर्वागपकृष्यकृतान्यपि पुनरप्यपकृष्यंतेवृद्ध्युत्तरनिषेधनादित्यनुमासिकानामप्यपकर्षोक्तेः अभ्युदयपदेननांदीश्राद्धयुक्तकर्ममात्रंग्राह्यं कैश्चिद्विवाहाद्येव ग्राह्यमित्युक्तं आचतुर्थमितिनांदीश्राद्धकर्तारंपुरुषमारभ्यजनकचतुःपुरुषीजन्यचतुःपुरुषीसंतानभेदेचचतुःपुरुषीसगोत्रागृह्यते तथाचनांदीश्राद्धकर्तुः पितृपितामहप्रपितामहाः पत्नीसहिताः कर्तुर्भार्यापुत्रपौत्रप्रपौत्रास्तद्भार्याश्चभ्रातातत्पुत्रपौत्रास्तद्भार्याः पितृव्यतत्पुत्रपौत्रस्तद्भार्याश्चप्रपितामहस्यपुत्रपौत्रप्रपौत्रास्तद्भार्याश्चैतेषांमृतानामनुमासिकांतप्रेतकर्माकरणेमंगलंनकार्यमित्यर्थः नांदीश्राद्धकर्तात्रमुख्यएवग्राह्योनतुमातुलादिर्गौणः मृतपितृकस्योपनयनादौ संस्कार्यमारभ्यैवचतुःपुरुषीगणना मातामहादे[1]र्भिन्नगोत्रत्वेपिनांदीश्राद्धदेवतात्वात्प्रेतकर्माभावेमंगलंनभवति मातामह्यादेः[2]स्वातंत्र्येणदेवतात्वाभावात्दशाहांत्यकर्माभावेपिमंगलप्रतिबंधोनास्ति इत्यंतकर्माभावनिमित्तकमंगलप्रतिबंधनिर्णयः ॥

"प्रेतकर्म समाप्त किये विना चार पुरुष सापिंड्यपर्यंत अभ्युदयकर्म अर्थात् मंगलकर्म नहीं करना. पीछे पांचमी पिढीसें किया मंगलकर्म शुभकों देता है." इस वाक्यमें 'प्रेतकर्म' इस पदकरके सपिंडीकरणके पहले होनेवाले कर्म लिये जाते हैं. सपिंडीकरण और सपिंडीकरणके उपरंत पार्वणविधिकरके करनेके मासिक आदि कहाते हैं; क्योंकी "सपिंडीकरणके पहले अपकर्ष करके किये कर्मोंका फिर अपकर्षकरके करने. क्योंकी, वृद्धिश्राद्ध किये पीछे प्रेतकर्म करनेका निषेध है," ऐसा अनुमासिकोंके अपकर्ष करनेविषे वचन है.

---

[1] मातामहमातृपितामहप्रपितामहानामित्यर्थः । [2] सपत्नीकानामेवनांदीश्राद्धेदेवतात्वात्स्वातंत्र्याभावः ।

'अभ्युदय' पदकरके नांदीश्राद्धसें युक्त कर्म मात्र ग्रहण करना. कितनेक ग्रंथकारोंनें विवाह आदिमेंही ग्रहण करना ऐसा कहा है. 'चार पिढीपर्यंत' इस पदकरके नांदीश्राद्धके कर्ता पुरुषनें आरंभमें पिता आदि चार पुरुष और संतानभेद होवै तौ वे चार पुपुरुष सगोत्री लेने. सो ऐसे—नांदीश्राद्ध करनेवालाके पिता, पितामह और प्रपितामह, सपत्नीक, स्त्री, पुत्र, पौत्र, और प्रपौत्र, और तिन्होंकी स्त्री; तैसेही भाई, भाईका पुत्र, भाईका पौत्र, और तिन्होंकी स्त्री; चाचा, तिसका पुत्र, तिसका पौत्र, तिन्होंकी स्त्री; प्रपितामहके पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र और तिन्होंकी स्त्री इन्होंमांहसें एक कोईसेके मरनेमें तिन्होंके अनुमासिकपर्यंत प्रेतकर्म नहीं किया होवै तौ मंगलकार्य नहीं करना. यहां मुख्य नांदीश्राद्धका कर्ताही लेना. मामा आदि गौण कर्ता नहीं लेना. मरा हुआ है पिता जिसका तिसके यज्ञोपवीत आदि संस्कारमें संस्कार्य जो, तिस्सेंही आरंभ करके चार पुरुषनकी संख्या ग्रहण करनी. मातामह, मातृपितामह, और मातृप्रपितामह ये यदि भिन्न भिन्न गोत्रके हैं तौभी वे नांदीश्राद्धदेवता होनेसें इन्होंके प्रेतकर्मके अभावमें मंगल नहीं होता है. मातामही, मातृपितामही और मातृप्रपितामही ये स्वतंत्रतासें नांदीश्राद्धदेवता नहीं हैं, इसलिये इन्होंके दशाहांत कर्मके नहीं होनेमेंभी मंगलका प्रतिबंध नहीं है. ऐसा अंत्यकर्मभावनिमित्तक प्रतिबंधका निर्णय समाप्त हुआ.

मौंजीविवाहयोर्नांदीश्राद्धमारभ्यमंडपोद्वासनपर्यंतंमध्येदर्शदिनंयथानपतेत्तथाकार्यंदर्शान्यत्पित्रोःक्षयाहादिश्राद्धदिनंयदिज्ञानादज्ञानाद्वापतततितदात्रिपुरुषसपिंडैर्विवाहादिमंगलसमाप्त्युत्तरंश्राद्धंकार्यं एवंचदर्शान्यश्राद्धस्यैवस्वरूपतोविवाहमध्येनिषेधः नतुदर्शवच्छ्राद्धरहितस्यापिश्राद्धतिथिमात्रस्य वृत्तेविवाहेपरतस्तुकुर्याच्छ्राद्धमित्याद्युक्तेः एतेनसंक्रांतिमन्वाद्यष्टकादिदिनानांश्राद्धदिनत्वाद्दर्शवन्मध्येपातोनिषिद्धइतिशंकानिरस्ता तेनषण्णवतिश्राद्धकर्तृभिःसपिंडैर्मध्यपतितमन्वादेःप्रायश्चित्तादिनासंपत्तिःसंपाद्या इतिचतुर्थीकर्ममध्येदर्शादिनिर्णयः ॥

यज्ञोपवीतकर्ममें और विवाहमें नांदीश्राद्धका आरंभ करके मंडप दूर करनेपर्यंत मध्यमें जैसे अमावसका दिन नहीं पडै तैसे करना. अमावससें अन्य दिन, पितामाताका क्षयाह आदि श्राद्धका दिन जो जानके अथवा विनाजाने आके प्राप्त होवै तब तीन पिढीपर्यंत सपिंड पुरुषोंनें, विवाह आदि मंगलकी समाप्तिके उपरंत श्राद्ध करना उचित है. इस उपरसें ऐसा होता है की, अमाश्राद्धके विना दूसरे श्राद्धकाही स्वरूपसें विवाहमें निषेध कहा है. अमाश्राद्धका जैसा निषेध कहा है तैसा श्राद्धसें रहित श्राद्धकी तिथिमात्रका निषेध नहीं कहा है; क्योंकी, "विवाहके पीछे श्राद्ध करना," इस आदि वचन है. इस करके संक्रांति, मन्वादि, अष्टकादिक ये श्राद्धदिन होनेसें अमावसकी तरह विवाहके मध्यमें प्राप्त होवैं तौ वे निषिद्ध हैं ऐसी जो शंका सो दूर हुई, और इसके उपरसें षण्णवतिश्राद्ध करनेवाले सपिंड होवैंगे और वह षण्णवतिश्राद्धके संबंधमें मन्वादि दिन विवाहके मध्यमें प्राप्त होवैं तौ तिस श्राद्धका प्रायश्चित्त आदि करके तिसकी सिद्धि करनी, प्रत्यक्ष श्राद्ध नहीं करना. इस प्रकार विवाहसंबंधी चार दिनोंमें दर्श आदि प्राप्त होवैं तौ तिन्होंका निर्णय कहा.

प्रारंभात्प्रागारंभोत्तरंवामातुः पितृव्यादेःकर्त्रंतरस्यपत्न्यावारजोदोषेयद्वक्तव्यंतद्व्रतबंधप्रकरणेविस्तरेणोक्तंततएवज्ञेयं ॥

प्रारंभके पहले अथवा प्रारंभके उपरंत वरकी अथवा कन्याकी माताकों अथवा चाचा आदि अन्य नांदीश्राद्धकर्ता होके तिसकी स्त्रीकों रजके दीखनेमें जो निर्णय कहना योग्य है सो व्रतबंधप्रकरणमें विस्तारकरके कहा है, सो तहां देख लेना.

रजोदोषजननाशौचादिसंभावनायानांदीश्राद्धस्यापकृष्यानुष्ठानेदिनावधिः एकविंशत्यहर्यज्ञेविवाहेदशवासराः त्रिषट्चौलोपनयनेनांदीश्राद्धंविधीयते दशदिनाद्यतिक्रमेपुनर्नांदीश्राद्धमित्यर्थात्सिद्धं नांदीश्राद्धोत्तरंसूतकमृतकयोःप्राप्तौनविवाहादिप्रतिबंधः विवाहव्रतयज्ञेषु श्राद्धेहोमेर्चनेजपे आरब्धेसूतकंनस्यादनारब्धेतुसूतकं प्रारंभोवरणंयज्ञेसंकल्पोव्रतसत्रयोः नांदीमुखंविवाहादौश्राद्धेपाकपरिक्रियेत्युक्तेः इदंसन्निहितमुहूर्तांतराभावादिसंकटेएवज्ञेयं संकटाभावेतुनांदीश्राद्धेजातेपिसूतकांतेमुहूर्तांतरेएवमंगलं सर्वोप्याशौचापवादोऽनन्यगतित्वे आर्तौचज्ञेयइतिसिंधूक्तेः तेनव्रतेसंकल्पोत्तरमाशौचेपिविप्रद्वारैवपूजादि यज्ञादौमधुपर्कविधिनावरणोत्तरमपिऋत्विगंतरालाभादिकेनन्यगतौसंकटेएवचमधुपर्कविधिनावृतस्याशौचाभावः एवंजपहोमादावप्यूह्यं श्राद्धेपाकपरिक्रियापाकप्रोक्षणं एतदप्यार्तिसत्त्वे महासंकटे प्रारंभात्प्रागपिसूतकप्राप्तौकूष्मांडमंत्रैर्घृतहोमंकृत्वापयस्विनींगांदत्वापंचगव्यंप्राश्यशुद्धश्शूद्रोपनयनोद्वाहप्रतिष्ठादिकमाचरेत् उपकल्पितबहुसंभारस्यसन्निहितलग्नांतराभावेननाशाद्यापत्तावप्येवंशुद्धिः इदंजननाशौचमात्रविषयमितिमार्तंडादौ ॥

रजका दीखना, बालकके जन्मका आशौच आदि प्राप्त होनेके संभवमें नांदीश्राद्ध अपकर्ष करके पहले करनेमें दिनोंकी अवधि कहते हैं.—“यज्ञमें २१ दिन, विवाहमें १० दिन, चौलकर्ममें ३ दिन, यज्ञोपवीतकर्ममें ६ दिन ऐसा प्रथम नांदीश्राद्ध करना.” दश दिन आदि जो मर्यादा कही तिसके उल्लंघनमें फिर नांदीश्राद्ध करना ऐसा अर्थसें सिद्ध है. नांदीश्राद्धके उपरंत आशौचकी प्राप्ति होवै तौ विवाह आदिका प्रतिबंध नहीं है. क्योंकी, “विवाह, व्रत, यज्ञ, श्राद्ध, होम, पूजा, जप इन्होंका पहले प्रारंभ किया गया होवै तौ आशौच नहीं लगता है. पहले प्रारंभ नहीं किया होवै तौ आशौच लगता है.” **प्रारंभका लक्षण कहताहुं.**—यज्ञमें ऋत्विजोंका वरण होना प्रारंभ है. व्रत और सत्रमें संकल्पका होना प्रारंभ है. विवाह आदिमें नांदीमुखश्राद्धका होना प्रारंभ है. श्राद्धमें पाकपरिक्रिया (पाकका प्रोक्षण) आरंभ है, ऐसा वचन है. यह निर्णय, समीपमें दूसरा मुहूर्त नहीं मिलता होवै तब जानना. संकटके अभावमें तौ नांदीश्राद्ध हुआ होवै तौभी आशौचके अंतमें दूसरे मुहूर्तविषेही मंगल करना. क्योंकी, सब जो आशौचका अपवाद कहा है सो अनन्यगतित्व अर्थात् दूसरी गतिके अभावमें और पीडामें जानना, ऐसा निर्णयसिंधुमें कहा है. इस उपरसें व्रतमें संकल्पके उपरंत आशौचके होनेमेंभी ब्राह्मणके द्वाराही पूजा आदि करानी. यज्ञ आदिमें मधुपर्कविधिकरके ऋत्विजवरणके अनंतर भी दूसरे ऋत्विजोंके अलाभमें अनन्यगतिक संकटमेंही मधुपर्कविधिकरके आवृतकों आशौचका अभाव है. ऐसा जप और होम आदिमें विचार करना उचित है. श्राद्धमें पाकपरिक्रिया अर्थात् पाकका प्रोक्षण करना; यह

भी निर्णय पीडाके होनेमें जानना. महासंकटविषे प्रारंभके पहलेभी आशौचकी प्राप्तिमें कूष्मांडसंज्ञक मंत्रोंसें घृतका होम करके दूध देनेवाली गौका दान करके पंचगव्य प्राशन करके शुद्ध हुए ऐसे मनुष्यनें चौलकर्म, यज्ञोपवीतकर्म, विवाह और प्रतिष्ठा आदि करना. समीपमें दूसरे मुहूर्तके अलाभमें सिद्ध किये हुए सब पदार्थोंका नाश हो सकै आदि आपत्तिकालमेंभी शुद्धि हो जाती है. यह निर्णय जननाशौचविषे मात्र जानना ऐसा मार्तंड आदि ग्रंथोंमें कहा है.

कूष्मांडहोमादिना शुद्धिपूर्वकं सूतकमृतकयोर्मध्यआरब्धेविवाहादौ विप्राणांपूर्वसंकल्पितान्नभोजनेदोषोन पाकपरिवेषणादिकमपिसूतकिभिःकार्यंहोमादिविधिनाशुद्धिसंपादनादितिकौस्तुभेस्थितं नैतद्युक्तं लोकविद्विष्टत्वादतःपरगोत्रैरेवान्नदानंयुक्तंभाति नांदीश्राद्धोत्तरं सूतकमृतकयोःप्राप्तौपूर्वमन्नसंकल्पाभावेपिविवाहोत्तरकालसंकल्पितान्नभोजनंविप्रैः कार्यं अत्रापिपरैरन्नंप्रदातव्यंभोक्तव्यंचद्विजोत्तमैरितिसर्वसंमतं परैरसगोत्रैरितिसिंधुमयूखादौव्याख्यानात् पूर्वसंकल्पितान्नस्यापिभोजनसमयेसूतकप्राप्तौभोक्तृभिर्भुक्तशेषंत्यक्त्वापरगृहोदकैराचांततादिविधेयं पाकशेषःसूतकिभिर्भोक्तव्यः भुंजानेषुचविप्रेषुत्वंतरामृतसूतके अन्यगेहोदकाचांताइतिस्मृतेः नांदीश्राद्धोत्तरंभोजनादन्यकालेसूतकप्राप्तौसूतकिगृहेभोक्तव्यं भुंजानेषुसूतकप्राप्तौभोक्तृभिःपात्रस्थमप्यन्नंत्याज्यमितिवाचनिकएवविशेषः नहिवचनस्यातिभारइतिन्यायात् ममतुभुंजानेष्वितिवाक्यमारब्धानारब्धसर्वकर्मसुअसंकल्पितान्नविषयमितिभाति इतिविवाहादौरजोदोषसूतकप्राप्तिनिर्णयः ॥

कूष्मांडमंत्रोंसें होम आदि करके पहले शुद्धि किये पीछे जननाशौच और मृताशौचमें आरंभित किये विवाह आदिमें आशौचकी प्राप्ति होवै तौ ब्राह्मणोंकों पूर्वसंकल्पित किये अन्नके भोजनमें दोष नहीं है. पाक अर्थात् भोजनके योग्य पदार्थका परोसना आदिभी सूतकियोंनें करना; क्योंकी, होम आदि विधि करके शुद्धि हो जाती है ऐसा कौस्तुभमें लिखा है; तथापि यह ठीक नहीं है; क्योंकी, संसारमें वह विद्विष्ट अर्थात् निंदास्पद होता है, इस कारणसें दूसरे गोत्रवालोंनेंही अन्न परोसना ऐसा प्रतीत होता है. नांदीश्राद्धके उपरंत आशौचकी प्राप्तिमें नांदीश्राद्धके पहले यदि अन्नका संकल्प नहीं किया होवै तौभी विवाहके उपरंत पूर्व कालमें संकल्पित किया अन्न ब्राह्मणोंनें भोजन करना. यहां भी, "पर अर्थात् दूसरे गोत्रवालोंनें अन्न परोसना और वह ब्राह्मणोंनें भोजन करना" ऐसा सबोंका मत है; क्योंकी, पर अर्थात् दूसरे गोत्रवाले ऐसा निर्णयसिंधु और मयूख आदि ग्रंथमें परशब्दका अर्थ किया है. पूर्व संकल्पित किये अन्नके भोजनसमयमें सूतककी प्राप्ति होवै तौ भोजन करनेवालोंनें भोजनके शेषका त्याग करके दूसरे गोत्रवालोंके घरके पानीसें आचमन आदि करना. क्योंकी, ब्राह्मणोंको भोजन करनेके समय तत्काल मृताशौच अर्थात् सूतक होवै तौ दूसरे गोत्रवालोंके घरसें पानी मंगायकर आचमन आदि करना ऐसी स्मृति है." पाकका शेष सूतकियोंनें भोजन करना उचित है. नांदीश्राद्धके उपरंत भोजनकालसें अन्यकालमें सूतक प्राप्त होवै तौ सूतकीके घरमें भोजन करना. ब्राह्मणोंका भोजन होता होवै और तिस कालमें सूतककी प्राप्ति होवै तब भोजन करनेवाले ब्राह्मणोंनें पात्रमें स्थित

हुआभी अन्न त्याग देना, ऐसा वचनकाही विशेष निर्णय है. क्योंकी वचनकों अतिभार नहीं ऐसा न्याय है. "जिस कालमें ब्राह्मण भोजन करते होवैं . तिस कालमें मृताशौचकी प्राप्ति होवै तौ दूसरेके घरसें पानी मंगाके उस्सें आचमन आदि करना," इत्यादि जो वाक्य कहा है सो आरंभित अथवा अनारंभित ऐसे सब कर्मोंमें असंकल्पित ऐसे अन्नविषे है ऐसा मुझकों प्रतिभान होता है. इस प्रकार विवाह आदि मंगलकार्यके समयमें रजोदर्शन और आशौच प्राप्त होवै तौ तिसका निर्णय कहा.

विवाहात्पूर्वकन्यायारजोदर्शनेमातृपितृभ्रातॄणांनरकपातः कन्यायाःवृषलीत्वंतद्भर्तुर्वृषलीपतित्वं अत्रशुद्धिप्रकारः कन्यादाताऋतुसंख्ययागोदानानिएकंवागोदानंयथाशक्तिब्राह्मणभोजनंवाकृत्वाकन्यादानेयोग्योभवेत् कन्यातूपवासत्रयांतेगव्यपयःपानंकृत्वाविप्रकुमार्यैसरत्नभूषणंदत्वोद्वाहयोग्याभवति वरश्चकूष्मांडहोमपूर्वकंतामुद्वहन्नदोषीस्यादिति विवाहहोमकालेरजोदोषेतांस्नापयित्वायुंजानेतितैत्तिरीयमंत्रेणप्रायश्चित्तंहुत्वाहोमतंत्रंसमापयेत् यदातुदात्रभावाद्रजोदर्शनंतदाकन्यावर्षत्रयंप्रतीक्ष्यस्वयंवरंवृणुयात् नात्रवरस्यापिदोषः इतिकन्यारजोदोषनिर्णयः ॥

विवाहके पहले कन्याकों ऋतुकाल अर्थात् रज दीख जावै तौ तिस्सें वह कन्याके मातापिता और भ्राता इन्होंका नरकमें वास होता है. कन्याकों वेश्यापना और तिसके पतिकों वेश्यापतित्व प्राप्त होता है. **इसविषे शुद्धिप्रकार कहताहुं.**—कन्याका दान करनेवालेनें ऋतुसंख्या जितने गोदान अथवा एक गोदान अथवा शक्तिके अनुसार ब्राह्मणभोजन इन्होंमांहसें कोईसाभी करनेसें वह कन्यादानमें योग्य होता है. कन्यानें तौ तीन दिन उपवास किये पीछे गौके दूधका पान करके ब्राह्मणकी कुमारीकों अर्थात् कन्याकों रत्नयुक्त गहनोंका दान करना. तिस्सें वह विवाहकों योग्य होती है. वरनें कूष्मांडमंत्रोंसें घृतका होम करके तिस कन्याकों विवाहनेमें दोषभागी नहीं है. विवाहके होमकालमें कन्याकों रजदोषकी प्राप्ति होवै तौ तिस कन्याकों स्नान कराय "युंजान०" इस तैत्तिरीयशाखाके मंत्रसें प्रायश्चित्तहोम करके होमतंत्र समाप्त करना. जब कन्याका दान देनेवाला नहीं होनेसें तिसकों रजका दर्शन होवै तब कन्यानें तीन वर्षपर्यंत प्रतीक्षा करके आपही वरकों वरना. यहां वरकोंभी दोष नहीं है. इस प्रकार कन्याके रजोदोषका निर्णय समाप्त हुआ.

पक्षमध्येतिथिद्वयस्यक्षयेणयस्त्रयोदशदिनात्मकःपक्षःसक्षयपक्षः तदाबहुप्रजासंहारोराजसंहारोवा क्षयपक्षेचौलोपनयनोद्वाहादिवास्तुकर्मादिशुभंनकार्यं क्षयमासाधिमासगुरुशुक्रास्तादौविवाहनिषेधःप्रथमपरिच्छेदे एवंसिंहस्थगुरुनिषेधनिर्णयोपिप्रथमपरिच्छेदेद्रष्टव्यःक्षयसंवत्सरोपिनिषिद्धः शीघ्रगत्यापूर्वराशिशेषमतिक्रम्यराश्यंतरसंचारोतिचारस्तंप्राप्तोगुरुः पुनःपूर्वराशिंवक्रगत्यायदिनायातितदासक्षयसंवत्सरःसर्वकर्मसुवर्ज्यः तत्रमेषवृषभवृश्चिककुंभमीनराशिषुनदोषः केचिद्गोदादक्षिणदेशेकोप्यतिचारादिगुरुदोषोनेत्याहुः इतिक्षयपक्षादिविचारः ॥

अब क्षयपक्षादिकोंका निर्णय कहताहुं.

एक पक्षके मध्यमें दो तिथियोंके क्षयकरके १३ दिनोंवाला जो पक्ष है वह क्षयपक्ष होता है. और तिस कालमें बहुतसी प्रजाका और राजाका संहार होता है. क्षयपक्षमें चौलकर्म, यज्ञोपवीतकर्म, विवाह आदि और वास्तु आदि शुभकर्म नहीं करने. क्षयमास, अधिकमास, गुरु और शुक्रका अस्त आदि इन्होंमें विवाहका निषेध प्रथमपरिच्छेदमें कहा है. ऐसेही सिंहराशिपर स्थित हुये बृहस्पतिके निषेधका निर्णयभी प्रथम परिच्छेदमें कहा है सो देख लेना. क्षयसंवत्सरभी शुभकार्यकों निषिद्ध है. शीघ्र गतिकरके पूर्वराशिके शेषकों उल्लंघन करके दूसरी राशिपर जो संचार होवै तिसकों अतिचार कहते हैं, तिस अतिचारकों प्राप्त हुआ बृहस्पति फिर पूर्वराशिपर वक्रगतिकरके नहीं प्राप्त होता तब वह क्षयसंवत्सर होता है. यह सब कर्मोंमें वर्जित करना. तहां मेष, वृष, वृश्चिक, कुंभ और मीन इन राशियोंपर बृहस्पति होवै तब दोष नहीं है. कितनेक ग्रंथकार गोदावरीके दक्षिण प्रदेशमें अतिचार आदि बृहस्पतिका कोईभी दोष नहीं ऐसा कहते हैं. ऐसा क्षयपक्ष आदिका विचार समाप्त हुआ.

मुख्यंगुरुबलंवध्वावरस्येष्टंरवेर्बलं द्विपंचसप्तनवैकादशस्थोगुरुःकन्यायाःशुभः जन्मतृतीयषष्ठदशमस्थानेषुपूजाहोमात्मकशांत्याशुभः चतुर्थाष्टमद्वादशस्थानेषुदुष्टफलः कर्कधनुर्मीनगश्चतुर्थादिस्थानेपिनदुष्टः संकटेचतुर्थद्वादशस्थोद्विवारमष्टमस्त्रिवारंहोमादिरूपपूजयार्चितः शुभः ॥

अब गुरुबलका निर्णय कहताहुं.

कन्याकों गुरुका बल मुख्य है. वरकों सूर्यका बल वांछित है. कन्याकी जन्मराशिसें दूसरा, पांचमा, सातमा, नवमा, ग्यारहमा इन स्थानोंमें स्थित हुआ बृहस्पति शुभ है. कन्याकी जन्मराशिसें तीसरा, छठा, दशमा इन स्थानोंमें स्थित हुआ गुरु पूजा और होमरूप शांति करनेसें शुभ होता है. कन्याकी जन्मराशिसें चौथा, आठमा, बारहमा इन स्थानोंमें स्थित हुआ बृहस्पति दुष्ट फलकों देता है. कर्क, धन, मीन इन राशियोंमें स्थित हुआ बृहस्पति चौथे, आठमे, बारहमे, स्थानोंमें स्थित हुआ भी दुष्ट नहीं है. संकटमें चौथे और बारहमे स्थानमें स्थित हुआ बृहस्पति दोवार होमरूपी पूजासें शुभ है. आठमे स्थानमें स्थित हुआ बृहस्पति तीन वार होमरूपी पूजा करनेसें शुभ होता है.

वरराशेस्त्रिषट्दशैकादशस्थानेरविःशुभः अन्यत्रग्रहमखोक्तपूजयाशुभः गुरुपूजाप्रकार उपनयनप्रकरणेउक्तः ॥

वरकी राशिसें तीसरा, छठा, दशमा और ग्यारहमा इन स्थानोंमें सूर्य शुभ है. अन्य स्थानोंमें ग्रहयज्ञमें कही पूजा करनेसें शुभ होता है. गुरुकी पूजाका प्रकार यज्ञोपवीतप्रकरणमें कहा है.

जन्मतोगर्भतोवापंचमवर्षप्रभृतिअष्टमवर्षपर्यंतंकन्याविवाहेउचितःकालः षड्वर्षोत्तरंवर्षे

द्वयंप्रशस्ततरः षडब्दमध्येनोद्वाह्याकन्यावर्षद्वयंयतः सोमोभुंक्तेततस्तद्वद्गंधर्वश्चततोनलःइत्युक्तेः नवमदशमयोर्मध्यमः एकादशवर्षेधमः द्वादशादौप्रायश्चित्तावहः ॥

अब कन्याके विवाहका काल कहताहुं.

जन्मसें अथवा गर्भसें पांचमे वर्षसें आठमे वर्षपर्यंत कन्याका विवाहके उचित काल है. छह वर्षके उपरंत सातमा और आठमा वर्ष अत्यंत श्रेष्ठ है. क्योंकी, "छह वर्षके मध्यमें कन्याका विवाह नहीं करना. क्योंकी, जन्मसमयसें दो वर्षपर्यंत कन्याकों चंद्रमा भोगता है, पीछे दो वर्ष गंधर्व भोगता है, पीछे दो वर्ष अग्नि भोगता है, इस प्रकार छह वर्षपर्यंत देवता कन्याकों भोगते हैं," ऐसा वचन है. नवमे और दशमें वर्षमे कन्याके विवाहका काल मध्यम है. ग्यारहमे वर्षमे कन्याके विवाहका काल अधम है. बारहमे आदि वर्षमें कन्याका विवाह किया होवै तौ वह प्रायश्चित्तकारक होता है.

ब्राह्मोदैवआर्षःप्राजापत्यआसुरोगांधर्वोराक्षसःपैशाचइत्यष्टौविवाहाः योग्यवरमाहूयालंकृत्यकन्यादानविधिनातस्मैदानंब्राह्मोविवाहःयज्ञेऋत्विक्कर्मकुर्वतेऽलंकृत्यकन्यार्पणंदैवः वरादेकंगोमिथुनंद्वेवागृहीत्वातस्मैकन्यार्पणमार्षः इदंगोमिथुनग्रहणंननिंदितं तस्यकुमारीपूजनार्थत्वेनकन्याविक्रयाभावात् त्वयैतयैवसहगृहधर्मआचरणीयएतस्याजीवनपर्यंतंविवाहांतरंचतुर्थाश्रमोवानकार्यइत्याभाष्यकन्यादानंप्राजापत्यः ज्ञातिभ्योयथेच्छंधनंदत्वाविवाहआसुरः वरवध्वोरिच्छयान्योन्यसंयोगोगांधर्वः युद्धादिनाबलाद्धरणंराक्षसःचौर्येणकन्याहरणंपैशाचः पूर्वचतुर्षुपूर्वःपूर्वःश्रेष्ठः उत्तरेषूत्तरउत्तरोनिंद्यः तत्रविप्रस्यब्राह्मदैवौप्रशस्तौ क्षत्रियस्यगांधर्वराक्षसौ आसुरोवैश्यस्य आर्षप्राजापत्यपैशाचाःसर्वेषां संकटेराक्षसभिन्नाःसप्तविप्रस्य ब्राह्मदैवेतरेषट्क्षत्रियस्य वैश्यशूद्रयोर्ब्राह्मदैवराक्षसभिन्नाःपंच सर्वेष्वपिविवाहेषुतत्तत्प्रकारैः कन्यापरिग्रहोत्तरंस्वस्यगृह्यरीत्याविवाहहोमादिविधिरावश्यकःदानविधिनादानंसर्वत्रनभवति पैशाचादौसप्तपदीविधेःपूर्वमन्यस्मैकन्यादेया ब्राह्मादिष्वपिकन्यादानोत्तरमपिसप्तपदीविधेःपूर्ववरस्यषंढत्वादिदोषज्ञानेवरमतौवाकन्यान्यस्मैदेया ब्राह्मविवाहोढायांजातःपुत्रोदशपूर्वान्दशपरान्पितॄंस्तारयेत् दैवोढापुत्रःसप्तसप्त प्राजापत्योढापुत्रःषट्षट् आर्षोढापुत्रस्त्रींस्त्रीन् आश्वलायनसूत्रेतुब्राह्मादिषुद्वादशदशाष्टौसप्तचपूर्वान्परांश्चपुत्रस्तारयतइत्युक्तं अन्येषुदुर्विवाहेषुब्रह्मधर्मद्विषःसुताः वाग्दानोत्तरंवरस्यदेशांतरगमनेषण्मासंप्रतीक्ष्यान्यस्मैदेया कन्यायाःशुल्कंप्रदायगमनेवर्षप्रतीक्षा यत्तुबलाद्विवाहेसगोत्रत्वक्लीबत्वादिवरदोषेवाकन्यासप्तपदीविध्युत्तरमपिअन्यस्मैदेयेतितत्कलियुगेनिषिद्धं वाग्दानोत्तरंपातित्यादिदोषाभावेपिकन्यामदातुर्दंडउक्तःएवंकन्यायाअपस्मारदोषमनुक्त्वादातापिदंड्यः अधर्म्योद्वाहेषुद्विजैर्भोजनादौकृतेआसुरेएकरात्रंउपवासोगांधर्वेत्रिरात्रंराक्षसपैशाचयोश्चांद्रायणंप्रायश्चित्तं इतिविवाहभेदाः ॥

अब विवाह कितने प्रकारके हैं सो कहताहुं.

ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच ऐसे आठ प्रकारके वि-

वाह हैं. योग्य वरकों सत्कारपूर्वक बुलायके गहनोंसें युक्त ऐसी कन्याका दान कन्यादानकी विधिसें वरकों देना यह **ब्राह्मविवाह** है. यज्ञविषे ऋत्विक्कर्मकों करते हुये ब्राह्मणकों गहनोंसें युक्त करि कन्याकों देना यह **दैवविवाह** है. वरसें एक गौ और एक बैल अथवा दो गौ और दो बैलकों लेके तिस वरकों कन्या देनी यह **आर्षविवाह** है. यह गौ और बैलका लेना निंदित नहीं है; क्योंकी, गौ और बैलका लेना कुमारीकी पूजाके लिये है. इस लिये तिस्सें कन्याका विक्रय नहीं होता है. हे वर, तैंनें इसी कन्याके साथ गृहस्थधर्म आचरण करना और इस कन्याके जीवनेपर्यंत दूसरा विवाह अथवा संन्यास नहीं करना ऐसा कहके कन्याका दान करना **प्राजापत्यविवाह** है. जातिके मनुष्योंकों इच्छाके अनुसार धन देके विवाह करना सो **आसुरविवाह** है. वर और कन्याकी इच्छासें आपसमें संयोग होता है सो **गांधर्वविवाह** है. युद्ध आदि करके बलसें कन्याकों हरना **राक्षसविवाह** है. चोरीसें कन्याकों हरना **पैशाचविवाह** है. तिन्होंमें प्राजापत्यविवाहसें आर्षविवाह श्रेष्ठ है, आर्षविवाहसें दैवविवाह श्रेष्ठ है, और दैवविवाहसें ब्राह्मविवाह श्रेष्ठ है ऐसा जानना. आसुरविवाहसें गांधर्वविवाह बुरा है, गांधर्वविवाहसें राक्षसविवाह बुरा है और राक्षसविवाहसें पैशाचविवाह बुरा है. ब्राह्मणकों ब्राह्मविवाह और दैवविवाह श्रेष्ठ हैं. क्षत्रियकों गांधर्वविवाह और राक्षसविवाह श्रेष्ठ हैं. वैश्यकों आसुर विवाह श्रेष्ठ है. आर्षविवाह, प्राजापत्यविवाह, और पैशाचविवाह सब वर्णोंकों श्रेष्ठ हैं. संकटमें ब्राह्मणनें राक्षसविवाहसें रहित सातों विवाह करने. संकटमें क्षत्रियनें ब्राह्मविवाह और दैवविवाहसें वर्जित छह प्रकारके विवाह करने. संकटमें वैश्यनें और शूद्रनें ब्राह्मविवाह, दैवविवाह और राक्षसविवाह इन्होंसें वर्जित पांच प्रकारके विवाह करने. सब प्रकारके विवाहोंमें तिस तिस प्रकारोंसें कन्याके ग्रहणके उपरंत अपने अपने गृह्यसूत्रके अनुसार विवाहहोम आदि विधि करना आवश्यक है. दानके विधिसें सब विवाहोंमें दान नहीं होता है. पैशाच आदि विवाहमें सप्तपदीके विधिके पहले दूसरे पुरुषकों कन्या देनी. ब्राह्म आदि विवाहोंमें कन्यादानके उपरंतभी सप्तपदी विधिके पहले वरका नपुंसकपना आदि दोष जाना जावै अथवा वर मर जावै तौ वह कन्या दूसरे वरकों देनी. ब्राह्मविवाहसें विवाही हुई स्त्रीमें उत्पन्न हुआ पुत्र दश पहले और दश पिछले पितरोंकों तारता है. दैवविवाहसें विवाही स्त्रीका पुत्र सात पहले और सात पिछले पुरुषोंकों तारता है. प्राजापत्यविवाहसें विवाही स्त्रीका पुत्र छह पहले और छह पिछले पुरुषोंकों तारता है. आर्षविवाहसें विवाही स्त्रीका पुत्र तीन पहले और तीन पिछले पुरुषोंकों तारता है. आश्वलायनगृह्यसूत्रमें तौ ब्राह्मविवाह, दैवविवाह, आर्षविवाह और प्राजापत्यविवाह इन चार विवाहोंसें विवाही हुई स्त्रियोंके पुत्र १२।१०।८।७ ऐसे क्रमसें पहले और पिछले पुरुषोंकों तारते हैं ऐसा कहा है. “इन चार विवाहोंसें अन्य जो चार दुष्ट विवाह हैं तिन्होंसें विवाही हुई स्त्रियोंमें ब्राह्मणोंके धर्मोंसें वैर करनेवाले पुत्र उपजते हैं.” वाग्दान करके पीछे वर देशांतरमें चला जावै तौ छह महीने वाट देखके दूसरे वरकों कन्या देनी. कन्याका मौल्य देके वर देशांतरमें चला गया होवै तौ एक वर्षपर्यंत वाट देखनी. जो बलसें विवाह हुआ होवै, अथवा समानगोत्रपना, और नपुंसकपना आदि दोष वरमें प्रतीत होवैं तब सप्तपदीकी विधिके उपरंतभी कन्या दूसरे वरकों देनी ऐसा जो कहा सो कलि-

युगमें निषिद्ध है. वाग्दान अर्थात् सगाई करनेके उपरंत पतितपना आदि दोषके अभावमें कन्या नहीं देनेवालेकों दंड करना ऐसा कहा है. ऐसेही कन्याकों अपस्मार अर्थात् मृगीरोग होवै और इस दोषकों कहेविना कन्याका दान करनेवाला दंडके योग्य है. अधर्म्यविवाहोंमें ब्राह्मणोंनें भोजन किया होवै तौ, आसुरविवाहमें एक रात्र उपवास, गांधर्वविवाहमें तीन रात्र उपवास करना. राक्षस और पैशाचविवाहोंमें चांद्रायणप्रायश्चित्त करना. ऐसे विवाहके भेद समाप्त हुए.

दाराग्निहोत्रसंयोगंकुरुतेयोग्रजेस्थिते सकनिष्ठःपरिवेत्ता ज्येष्ठःपरिवित्तिः एवंज्येष्ठायामनूढायांकनिष्ठकन्योद्वाहेज्येष्ठाकन्यादिधिषूः कनिष्ठाग्रेदिधिषू अत्रप्रायश्चित्तं अज्ञानतः पित्रादिदत्तोद्वाहेभ्रात्रोःपरिवेत्तृपरिवित्तिसंज्ञयोःकृच्छ्रद्वयंकन्यायाः कृच्छ्रंदातुरतिकृच्छ्रंयाजकस्यचांद्रायणं ज्ञानतः पित्राद्यदत्तोद्वाहेसर्वेषांवत्सरंकृच्छ्राचरणं कामंतःपित्रादिदत्तोद्वाहेत्रैमासिकं अज्ञानेनादत्तोद्वाहेचांद्रायणादि दिधिष्वादिपतेरतिकृच्छ्रकृच्छ्रौ अत्रापवादः सापत्नेदत्तकेवाज्येष्ठेकनिष्ठस्यदाराग्निहोत्रग्रहणेदोषोन सोदरेपिक्लीबेमूकबधिरवामनभग्नपादत्वादिदोषयुतेदेशांतरस्थे वेश्यासक्ते पतितेमहारोगिण्यतिवृद्धेकृषिसक्तेधनवृद्धिराजसेवादिव्यापारासक्तेचौर्यासक्तेउन्मत्तेविवाहाग्निहोत्रेच्छानिवृत्तेचज्येष्ठे कनिष्ठस्यदाराग्निहोत्रग्रहणेदोषोन देशांतरगतंज्येष्ठमष्टौद्वादशवावर्षाणिकनिष्ठःप्रतीक्षेत् एवंकन्यायाअपिज्येष्ठायाभिन्नमातृजत्वेकनिष्ठाविवाहेदोषोन एवंमूकत्वादिदोषयुतायांज्येष्ठायामूह्यं इतिपरिवेत्रादिनिर्णयः॥

“ भ्राता अर्थात् बडे भाईका विवाह हुएविना जो छोटा भाई विवाह और अग्निहोत्र धारण करता है तिसकों **परिवेत्ता** और बडे भाईकों **परिवित्ति** कहते हैं. ” ऐसेही बडी कन्याका विवाह कियेविना छोटी कन्याका विवाह किया जावै तौ बडी कन्या **दिधिषू** होती है और छोटी कन्या **अग्रेदिधिषू** होती है. **इसविषे प्रायश्चित्त कहताहुं.**—पिता आदिकोंनें दीई हुई जो कन्या तिसकेसाथ जानेविना विवाह हुआ होवै तौ परिवेत्ता और परिवित्तिसंज्ञक दोनों भाइयोंकों दो दो कृच्छ्र प्रायश्चित्त है. और कन्याकों एक कृच्छ्र प्रायश्चित्त है, और कन्याके दाताकों अतिकृच्छ्र प्रायश्चित्त है, कर्म करानेवालेकों चांद्रायण प्रायश्चित्त है. पिता आदिनें न दीई ऐसी कन्याके साथ जानके विवाह करनेमें सबोंकों एक वर्षपर्यंत कृच्छ्रप्रायश्चित्त है. इच्छासें पिता आदिनें दीई ऐसे विवाहमें तीन महीनेपर्यंत कृच्छ्र प्रायश्चित्त है. पिता आदिनें दिये विना अज्ञानसें विवाह होनेमें चांद्रायण आदि प्रायश्चित्त है. इस प्रकार दिधिषू और अग्रेदिधिषूके पतियोंनें अतिकृच्छ्र और कृच्छ्र प्रायश्चित्त करने. **इसविषे अपवाद कहताहुं.**—सापत्न अथवा गोद लिया बडा भाई होवै तौ छोटे भाईका प्रथम विवाह करनेमें और अग्निहोत्र लेनेमें दोष नहीं है. सोदर भाई नपुंसक अर्थात् हीजडा, गूंगा, बहरा, वामना, लंगडा आदि दोषोंसें युक्त; देशांतरमें रहनेवाला; वेश्यामें आसक्त; पतित; महारोगी; अत्यंतवृद्ध; खेतीमें आसक्त; धनवृद्धि, राजसेवा आदि व्यापारमें आसक्त; चोरीमें आसक्त; उन्मत्त अर्थात् पागल; विवाहकी और अग्निहोत्रकी इच्छासें निवृत्त हुआ ऐसा बडा भाई होवै तौ छोटे भाईकों विवाह करनेमें और अग्निहोत्र लेनेमें दोष नहीं है. देशांतरमें गये बडे भाईकी आठ वर्ष अथवा बारह वर्षपर्यंत छोटे भाईनें वाट देखनी. ऐसेही ज्येष्ठ क-

न्याकी भिन्न माता होनेमें छोटी कन्याके विवाहमें दोष नहीं है. ऐसेही गूंगापना आदि दोषोंसें युत हुई बडी कन्याके होनेमेंभी ऐसाही निर्णय जानना. इस प्रकार परिवेत्ता आदिका निर्णय समाप्त हुआ.

अथकन्यादातृक्रमः पितापितामहोभ्रातापितृकुलस्थपितृव्यादिर्मातृकुलस्थोमातामहमातुलादिःसर्वाभावेजननीत्येवंपूर्वाभावेपरःपरः भ्रातॄणामुपनीतानामेवाधिकारः अनुपनीतभ्रातुर्मात्रादेश्चसत्त्वेमात्रादेरेवाधिकारोनत्वनुपनीतभ्रातुः सर्वाभावेकन्यास्वयंवरंवृणुयात् कन्यास्वयंवरेमातुर्दातृत्वेचताभ्यामेवनांदीश्राद्धंकार्यं तत्रमाताकन्यावास्वयंप्रधानसंकल्पमात्रं कृत्वान्यद्ब्राह्मणद्वाराकारयेत् वरस्तुसंस्कृतभ्रात्राद्यभावेस्वयमेवनांदीश्राद्धंकुर्यान्नमाता उपनयनेनकर्माधिकारस्यजातत्वात् द्वितीयादिविवाहेवरःस्वयमेवनांदीश्राद्धंकुर्यात् परकीयकन्यादानेविशेषः आत्मीकृत्यसुवर्णेनपरकीयांतुकन्यकां धर्मेणविधिनादानमसगोत्रेपियुज्यते इति दातृनिर्णयेवरवध्वोरपिनांदीश्राद्धकर्तृत्वनिर्णयः ॥

अब कन्याका दान करनेवालोंका अनुक्रम कहताहुं.

कन्याका दान पितानें करना. पिताके अभावमें पितामहनें अर्थात् बाबानें करना. तिसके अभावमें भाईनें करना. भाईके अभावमें पिताके कुलके चाचा आदिनें करना. तिन्होंके अभावमें मातामह अर्थात् नाना और मातुल अर्थात् मामा आदिनें करना. इन सबोंके अभावमें मातानें कन्याका दान करना. कन्यादानमें यज्ञोपवीतसंस्कारसें युत हुए भाइयोंकोंही कन्यादानका अधिकार है. विनायज्ञोपवीतवाला भाई और माता आदिके होनेमें माताकोंही अधिकार है. विनायज्ञोपवीत हुये भाईकों अधिकार नहीं है. सबोंके अभावमें कन्यानें आपही वरकों वरना. कन्या आपही अपना स्वयंवर करै और माता दान करनेवाली होवै तौ कन्यानें अथवा मातानें नांदीश्राद्ध करना. तहां मातानें अथवा कन्यानें प्रधान संकल्पमात्र करके अन्य सब कर्म ब्राह्मणके द्वारा करवाना. वरनें तौ संस्कारवाले भाईके अभावमें आपही नांदीश्राद्ध करना. मातानें नहीं करना. क्योंकी यज्ञोपवीतकर्मकरके वरकों कर्मका अधिकार प्राप्त हुआ है. द्वितीय आदि विवाहमें वरनें आपही नांदीश्राद्ध करना. **पराई कन्याके दानविषे विशेष कहताहुं.**—" पराई कन्या सोना देके अपनी बनाय पीछे तिसका धर्मविधिकरके दान करनेका सो दूसरे गोत्रकी कन्याके होनेमेंभी युक्त होता है." इस प्रकार कन्याका दान करनेवालोंके निर्णयमें वर और वधू इन्होंकाभी नांदीश्राद्धके कर्तृत्वका निर्णय कहा है.

मूलनक्षत्राद्यपादत्रयजातौवधूवरौस्वस्वश्वशुरंनाशयतः आश्लेषांत्यपादत्रयजातौश्वश्रूं ज्येष्ठांत्यपादजातावन्योन्यज्येष्ठभ्रातरं विशाखांत्यपादजावन्योन्यकनिष्ठभ्रातरं मघाप्रथमपादेमूलवत्फलंकेचिदाहुः केचिदुपनयनस्यद्वितीयजन्मरूपत्वात्तेनचद्वितीयजन्मनापूर्वजन्मसंभवमूलादिदोषस्यनिरस्तत्वाद्वरस्यश्वशुरघातित्वादिदोषोनेत्यपवादंसंकटेवदंति श्वशुराद्यभावे वध्वाअपिनदोषः नर्क्षवृक्षनदीनाम्नींनांत्यपर्वतनामिकां नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नींनविभीषणनामिकामुद्वहेदिति वरायपुंस्त्वंपरीक्ष्यकन्यादेया यस्याप्सुप्लवतेबीजंह्लादिमूत्रंचफेनिलमित्यादि

पुंस्त्वपरीक्षा कुलंचशीलंचवपुर्वयश्चविद्यांचवित्तंचसनाथतांच एतान्गुणान्सप्तपरीक्ष्यदेया कन्याबुधैःशेषमचिंतनीयं इतिवधूवरयोर्मूलजातत्वादिगुणदोषनिर्णयः ॥

मूलनक्षत्रके आदिके तीन पादोंमें उत्पन्न हुये वधू और वर अपने अपने श्वशुरोंका नाश करते हैं. आश्लेषानक्षत्रके अंतके तीन पादोंमें उत्पन्न हुये वधू और वर अपनी अपनी सासूका नाश करते हैं. ज्येष्ठाके अंतके तीन पादोंमें उत्पन्न हुये वर और वधू आपसमें बडे भाईका नाश करते हैं. विशाखाके अंतके पादमें उत्पन्न हुये वर और वधू आपसमें छोटे भाईका नाश करते हैं. मघाके प्रथम पादमें उपजे वर और वधूका मूलकी तरह फल होता है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. कितनेक ग्रंथकार यज्ञोपवीतकर्मका होना दूसरा जन्म होनेसें तिस उपनयनरूप दूसरे जन्मकरके पूर्वजन्ममें उत्पन्न हुआ मूल आदिके नक्षत्रका दोष दूर होता है इस लिये "मूलनक्षत्रपर उत्पन्न हुआ वर श्वशुरघातक होता है इत्यादि दोष नहीं," ऐसा अपवाद संकटमें कहते हैं. श्वशुर आदिके अभावमें वधूकोंभी दोष नहीं है. रीछ, वृक्ष, नदी चांडाल, पर्वत, पक्षी, सर्प और दास इन्होंके नामोंवाली और भयंकर नामवाली कन्याकों नहीं विवाहनी." वरकी पुरुषपनेकी परीक्षा करके कन्या देनी. "जिस पुरुषका वीर्य पानीपर तिरै, शब्दसहित और झागोंवाला मूत्र उतरै इस आदि पुरुषत्वकी परीक्षा है. "कुल, शील, शरीर, अवस्था, विद्या, धन, पालकपना इन सात गुणोंकी परीक्षा करके बुद्धिमानोंनें वरकों कन्या देनी. बाकी रहे गुणोंका चितवन नहीं करना. इस प्रकार वधू और वरका मूलमें जन्म हुआ होवै तौ तिसके गुणदोषका निर्णय समाप्त हुआ.

अथविवाहेमासादिनिर्णयः माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठमासाःशुभप्रदाः मार्गशीर्षोमध्यमः स्यात्कचिदाषाढकार्तिकौ अत्रमिथुनेर्केआषाढोवृश्चिकेकार्तिकश्चदेशाचारानुरोधेनग्राह्योन सर्वदेशे एवंमकरस्थपौषोमेषस्थचैत्रोपि ज्येष्ठयोर्वधूवरयोर्ज्येष्ठेमासिविवाहोनशुभः मासांतरेमध्यमः नज्येष्ठयोर्विवाहःस्याज्ज्येष्ठेमासिविशेषतः द्वौज्येष्ठौमध्यमौप्रोक्तावेकज्यैष्ठ्यं सुखावहं ज्येष्ठत्रयंनकुर्वीतविवाहेसर्वसंमतमित्युक्ते तथाचज्येष्ठमासोज्येष्ठगर्भस्यमंगले मध्यमः जन्ममासजन्मनक्षत्रादिकंज्येष्ठापत्यस्यनिषिद्धं सार्वकालमेकेविवाहमितित्वासुराद्यधर्मविवाहविषयं ॥

अब विवाहमें महीना आदिका निर्णय कहताहुं.

माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ ये महीने विवाहकों शुभप्रद हैं. मंगशिर महीना मध्यम है. किसीक ग्रंथमें आषाढ और कार्तिक भी कहे हैं." विवाहविषे मिथुनके सूर्यमें आषाढ और वृश्चिकके सूर्यमें कार्तिक देशाचारके अनुसार ग्रहण करने. सब देशोंमें नहीं ग्रहण करने. ऐसेही मकरके सूर्यमें पौष और मेषके सूर्यमें चैत्र भी लेना. वधू और वर दोनों ज्येष्ठ होवैं तब तिन्होंका ज्येष्ठ महीनेमें विवाह शुभकारक नहीं है. ज्येष्ठ वरका ज्येष्ठ कन्याके साथ विवाह ज्येष्ठसें अन्य महीनोंमें मध्यम है. क्योंकी, "विशेषकरके ज्येष्ठ वर और ज्येष्ठ कन्याका विवाह ज्येष्ठके महीनेमें नहीं करना. दो ज्येष्ठ मध्यम हैं. ज्येष्ठ कन्या, ज्येष्ठ वर और ज्येष्ठ मास इन्होंमेंसें एक ज्येष्ठका होना सुखकारक है. विवाहमें तीन ज्येष्ठ (अर्थात् ज्येष्ठ

कन्या, ज्येष्ठ वर और ज्येष्ठ मास) नहीं करना ऐसा सर्वसंमत वचन है." तैसेही ज्येष्ठ कन्या अथवा ज्येष्ठ वर इन्होंके मंगलकार्यविषे ज्येष्ठ महीना मध्यम है. जन्ममास और जन्मका नक्षत्र आदि ज्येष्ठ संतानके संस्कारकों निषिद्ध है. "कोईक ग्रंथकार सब कालमें विवाह करना ऐसा कहते हैं," सो वचन तौ आसुर आदि विवाहके विषयमें है.

मयूखेआर्द्रादिदशनक्षत्रेषुसूर्याधिष्ठितेषु विवाहमौंज्यादिकंवसिष्ठादिभिर्निषिद्धमित्युक्तं नैतत्कौस्तुभसिंध्वादिग्रंथेमार्तंडादिज्योतिर्ग्रंथेपीतिबहवः शिष्टाःआर्द्रादिप्रवेशदोषंनमन्यंते अमावास्यानिषिद्धा रिक्ताष्टमीषष्ठ्योल्पफलाः अन्यास्तिथयोबहुफलाः शुक्लपक्षःश्रेष्ठः कृष्णस्त्रयोदशीपर्यंतोमध्यमः सोमबुधशुक्रवाराःशुभाः अन्येमध्यमाः रोहिणीमृगमघास्तिस्रउत्तराहस्तस्वातीमूलानुराधारेवत्यःसर्वसंमतनक्षत्राणि हरदत्तमतेचित्राश्रवणधनिष्ठाश्विन्यइत्यधिकानिचत्वारि तत्रापिखलग्रहयुतंनक्षत्रंवर्ज्यं चंद्रताराबलंकन्यावरयोरुभयोरपि अन्यतरस्यचंद्रबलाभावेरजतादिदानंकार्यं ॥

आर्द्रा आदि दश नक्षत्रोंपर सूर्य स्थित होवै तब विवाह और यज्ञोपवीतकर्म इत्यादिक मांगलिक कर्म निषिद्ध हैं ऐसा **मयूख**में वसिष्ठ आदि मुनियोंनें कहा है; परंतु यह **कौस्तुभ** और **निर्णयसिंधु** आदि ग्रंथोंमें और **मुहूर्तमार्तंड** आदि ज्योतिषके ग्रंथोंमें भी नहीं है, इसलिये बहुतसे शिष्ट पंडित आर्द्रा आदि नक्षत्रोंके प्रवेशका दोष नहीं मानते हैं. अमावस विवाहविषे निषिद्ध है. रिक्ता (चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी), अष्टमी और षष्ठी ये तिथि विवाहमें अल्प फल देती हैं. इन्होंसें शेष रही तिथि बहुतसे उत्तम फलकों देती हैं. शुक्लपक्ष श्रेष्ठ है. कृष्णपक्ष त्रयोदशीपर्यंत मध्यम है. सोम, बुध, बृहस्पति और शुक्र ये वार विवाहकों शुभ हैं. इन्होंसें शेष रहे वार मध्यम हैं. रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, हस्त, स्वाती, मूल, अनुराधा और रेवती ये नक्षत्र विवाहकों सबोंके मतसें शुभ हैं. हरदत्तके मतमें चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा और अश्विनी ये चार नक्षत्र अधिक भी शुभ हैं. ये जो विवाहके नक्षत्र कहे तिन्होंमें भी जो नक्षत्र पापग्रहसें युक्त होवै सो वर्ज्य देना. चंद्रमा और ताराका बल कन्या वर दोनोंकों होना उचित हैं. एक कोईसेकों चंद्रमाका बल नहीं होवै तौ चांदी आदिकका दान करना उचित है.

मेषःकन्याघटःसिंहोनक्रंयुग्मंधनुर्वृषः मीनःसिंहोधनुःकुंभोजादीनांघातचंद्रमाः यात्रायांयुद्धकार्येषुघातचंद्रंविवर्जयेत् विवाहेसर्वमांगल्येचौलादौव्रतबंधने घातचंद्रोनैवचिंत्योयज्ञेसीमंतजातयोः मृत्युयोगेपारिघार्धेभद्रायांपातवैधृतौ विष्कंभादेर्दुष्टभागेतिथिवृद्धिक्षयेपिच यामार्धकुलिकादौचगंडांतेरविसंक्रमे केतूद्गमेभूमिकंपेविवाहाद्यंविवर्जयेत् ग्रहणेपादादिग्रासेत्रिचतुःषडष्टदिवसाः प्रागर्धितावर्ज्याः भूकंपेउल्कापातेचत्रिदिनंवज्रपातेचैकंदिनंवर्ज्यं यावत्केतूद्गमस्तावदशुभःसमयोभवेत् अस्यापवादः भूकंपादेर्नदोषोस्तिवृद्धिश्राद्धेकृतेसति दिवाविवाहःप्रशस्तः रात्रावपिकन्यादानंहेमाद्र्यादिमतेप्रशस्तंभवति ॥

घातचंद्र कहताहुं.—मेष राशिवालेकों पहला, वृष राशिवालेकों पांचमा, मिथुन राशिवालेकों नवमा, कर्क राशिवालेकों दूसरा, सिंह राशिवालेकों छठा, कन्या राशिवालेकों दश-

मा, तुला राशिवालेकों तीसरा, वृश्चिक राशिवालेकों सातमा, धन राशिवालेकों चौथा, मकर राशिवालेकों आठमा, कुंभ राशिवालेकों ग्याहरमा और मीन राशिवालेकों बारहमा ऐसा घातचंद्र होता है. प्रयाणमें और युद्धके कार्यमें घातचंद्रमा वर्जित करना. विवाह, सब प्रकारके मंगलकर्म, चौल आदि संस्कार, यज्ञोपवीतसंस्कार, यज्ञ, सीमंतसंस्कार और जातकर्म इन्होंमें घातचंद्रमा नहीं चितवन करना. मृत्युयोगमें, परिघके पूर्व भागमें, भद्रामें, व्यतीपात और वैधृतिमें, विष्कंभ आदिक दुष्ट घडियोंमें, तिथिकी वृद्धिमें, तिथिके क्षयमें, यामार्ध और कुलिकयोगमें, तीन प्रकारके गंडांतोंमें, सूर्यकी संक्रांतिमें, केतुके ऊगनेमें, भूमिकंपमें विवाह आदि मंगलकार्य नहीं करने." एक चरण ग्रास होवै तौ ग्रहणदिनसें तीन दिन, दो चरण ग्रास होवै तौ चार दिन, तीन चरण ग्रास होवै तौ छह दिन और चार चरण ग्रास होवै तौ आठ दिन इन्होंमांहसें आधे पहले और आधे पीछेके वर्जित करने. भूमिकंप और उल्कापात अर्थात् आकशसें अग्निरूपी ताराका टूटना इन निमित्तोंके होनेमें तीन दिन, वज्रपात अर्थात् बिजलीके पडनेमें एक दिन वर्जित करना. "जबतक केतु अर्थात् पूंछडवाला तारा दीखता रहै तबतक अशुभ समय जानना. इसलिये तितने दिनतक शुभकार्य नहीं करना." **इसका अपवाद कहताहुं.**—"नांदीश्राद्ध किये पीछे भूमिकंप आदिका दोष नहीं है." दिनमें विवाह श्रेष्ठ है. रात्रिविषे भी हेमाद्रि आदिके मतमें कन्याका दान श्रेष्ठ है.

अथलग्नेग्रहबलं त्रि ३ षष्ठा ६ ष्ट ८ स्वर्कस्त्रि ३ जल ४ धन २ गोब्जःक्षितिसुत
स्त्रि ३ षष्ठ ६ स्थोज्ञेज्यौव्ययनिधन १२।८ वर्ज्यौभृगुसुतः द्वितीयाब्धीष्वंकाभ्रतनुषु २।
४।५।९।१०।१ रिपु ६ त्र्य ३ ष्ट ८ सुशनिस्तमःकेतुश्चाये ११ भवतिसुखहेतुश्चसकलः ॥

अब विवाहलग्नविषे ग्रहबल कहताहुं.

जिस लग्नमें विवाह करना होवै तिस्सें तीसरा, छठा, आठमा इन स्थानोंमें सूर्य; तीसरा, चौथा, दूसरा इन स्थानोंमें चंद्रमा; तीसरा और छठा इन स्थानोंमें मंगल; बुध और बृहस्पति बारमा और आठमा इन स्थानोंमें वर्ज्य; दूसरा, चौथा, पांचमा, नवमा, दशमा इन स्थानोंमें शुक्र; छठा, तीसरा, आठमा इन स्थानोंमें शनि, राहु, और केतु; ग्यारहमे स्थानमें सब ग्रह ये विवाहमें शुभ हैं.

अथलग्नेवर्ज्यग्रहाः रविर्लग्ने १ चंद्रस्तनुरिपुमृति १।६।८ स्थःक्षितिसुतोष्टलग्नाभ्रे ८।
१।१० ज्ञेज्यौनिधन ८ उशनात्र्य ३ ष्ट ८ रिपु ६ षु शनिःशेषौलग्ने १ तनुपतिरथार्ये ६
ष्टम ८ गृहेविवाहेस्युःसर्वेमदनसदने ७ नैवशुभदाः शेषौराहुकेतू अन्येद्वादशगं १२ चंद्रं
दृक्केशनवमांशपौ षष्ठाष्ट ६।८ गौबुधंचाभ्रे १० वर्ज्यानाहुर्मनीषिणः ॥

अब लग्नमें वर्जित ग्रहोंकों कहताहुं.

लग्नमें सूर्य नहीं होवै; लग्न, छठा, आठमा इन स्थानोंमें चंद्रमा नहीं होवै, आठमा, लग्न और दशमा इन स्थानोंमें मंगल नहीं होवै; आठमे स्थानमें बुध और बृहस्पति नहीं होवैं; तीसरा, छठा, आठमा इन स्थानोंमे शुक्र नहीं होवै; लग्नमें शनि और शेष रहे ग्रह; लग्नका स्वामी छठा,

४८

और आठमे स्थानमें नहीं होवै और सातमे स्थानमें सब ग्रह नहीं होवैं. क्योंकी इन पूर्वोक्त स्थानोंमें ये ग्रह शुभ देनेवाले नहीं हैं. शेषपदसें राहु और केतु लेने. दूसरे ग्रंथकार बारमे स्थानमें चंद्रमा; द्रेष्काणका स्वामी और नवमांशका स्वामी ये छठे और आठमे; दशम स्थानमें बुध वर्जित करने ऐसा कहते हैं.

मेषान्नक्रात्तुलात्कर्काद्विगण्यानवमांशकाः शस्तावृषनृयुक्कर्ककन्यातूलधनुर्झषाः ॥

अब नवांशप्रवृत्ति कहताहुं.—मेष, सिंह, धन इन्होंकी मेषसें प्रवृत्ति होती है. वृष, कन्या, मकर इन्होंकी मकरसें प्रवृत्ति होती है. मिथुन, तुला, कुंभ इन्होंकी प्रवृत्ति तुलासें होती है. कर्क, वृश्चिक, मीन इन्होंकी प्रवृत्ति कर्कसें होती है. इस प्रमाणसें तीन तीन वार गिननेसें नवमांश होते हैं. तिन नवांशोंमें वृष, मिथुन, कर्क और कन्या, तुला और धन और मीन ये नवांश शुभ होते हैं.

अथैकविंशतिमहादोषाः दुःपंचांग्यष्टमोसृक्सविधुखलतनुःषण्मृतींदुःसितोरौसंक्रांति गंडदोषःसखलभदिनजौचक्रचक्रार्धपातौ रंध्रंलग्नंकुवर्गोस्तगखलउदयास्ताशुचिःक्रूरवेधःकर्तर्येकार्गलांघ्रिर्ग्रहणभकुलवौदुःक्षणोत्पातभेच ॥

अब इक्कीस महादोष कहताहुं.

१ दुःपंचांग अर्थात् जिस कार्यकों तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण ये पांच दुष्ट और वर्जित होवैं सो कार्यमें वर्ज्य देना. २ अष्टमोऽसृक् अर्थात् लग्नसें आठमे स्थानमें मंगल होवै. ३ सविधुखलतनुः अर्थात् चंद्रमा और पापग्रहसें युत लग्न होवै. ४ षण्मृतींदुः अर्थात् लग्नसें छठे और आठमे स्थानमें चंद्रमा होवै. ५ सितोरौ अर्थात् लग्नसें छठे स्थानमें शुक्र होवै. ६ संक्रांतिः अर्थात् सूर्य एक राशिकों छोडके दूसरी राशिपर गमन करै वह दिन होवै. ७ गंडदोषः अर्थात् लग्नगंडांत, तिथिगंडांत, नक्षत्रगंडांत ये होवैं. ८ सखलभ अर्थात् पापग्रहसें युत नक्षत्र होवै. ९ दिनज अर्थात् वारसें उत्पन्न हुए ऐसे कुलिक और अर्धयाम आदि दोष. १० चक्रचक्रार्धपातौ अर्थात् वैधृतिव्यतीपातसंज्ञक चंद्रसूर्यका क्रांतिसाम्य लक्षण. ११ रंध्रलग्न अर्थात् जन्मराशि और जन्मलग्नसें आठमा लग्न. १२ कुवर्ग अर्थात् षड्वर्गोंके मध्यमें पापग्रहवर्ग अधिक होवै. १३ अस्तगखल अर्थात् लग्नसें सातमें स्थानमें पापग्रह होवै. १४ उदयास्ताशुचि अर्थात् लग्न और नवांश अपने अपने पतिसें युक्त अथवा दृष्ट होवैं यह उदयशुद्धि होती है, और लग्नांशसें सातमा लग्न और नवांश अपने अपने पतिसें युक्त अथवा दृष्ट होवै यह अस्तशुद्धि होती है, इस प्रमाणसें उदयशुद्धि और अस्तशुद्धि नहीं होवै सो. १५ क्रूरवेध अर्थात् पापग्रहसें विद्ध नक्षत्र होवै. १६ कर्तरीदोष अर्थात् चंद्रमासें अथवा लग्नसें २, १२ इन दोनों स्थानोंमें पापग्रह होवै. १७ एकार्गलांघ्रिः अर्थात् विष्कंभ, अतिगंड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिघ, वैधृति, शूल, और गंड ये नव दुष्ट योग होनेमें दिनके नक्षत्रसें अभिजित्सहित गिनके विषम नक्षत्रपर सूर्य नहीं होवै तब एकार्गल योग होता है. इस एकार्गलसें विद्ध नक्षत्रचरण होवै. १८ ग्रहणभ अर्थात् जिस नक्षत्रपर ग्रहण हुआ होवै वह नक्षत्र होवै. १९ कुलव अर्थात् अनुक्तनवांश होवै. २०

दुःक्षण अर्थात् दुष्ट मुहूर्त होवै. सो ऐसेः—शुक्रवारकों नवमा मुहूर्त, सोमवारकों नवमा मुहूर्त, गुरुवारकों बारहमा मुहूर्त, शनिवारकों पहला मुहूर्त ये दिनमें होनेवाले; और मंगलवारकों सातमा मुहूर्त रात्रिमें होनेवाला; ये दुष्ट मुहूर्त होते हैं. २१ उत्पातभ अर्थात् जिस नक्षत्रपर भूमिकंप आदि उत्पात होवैं वह नक्षत्र. इस प्रकार ये इक्कीस महादोष कहे. इन्होंमांहसें एकभी दोष विवाहमें नहीं होना चाहिये.

अथसंकटेगोधूलं गोधूलंपदजादिकेशुभकरंपंचांगशुद्धौरवेरर्धास्तात्परपूर्वतोर्धघटिकंतत्रेंदुमष्टारिगं सोग्रांगंकुजमष्टमंगुरुयमाहःपातमर्कक्रमंजह्याद्विप्रमुखेतिसंकटइदंसद्यौवनाढ्ये क्वचित् ॥

अब संकटमें गोधूल मुहूर्त कहताहुं.

सायंकालमें सूर्यके अर्धास्तके पहले १९ पल और पीछे १९ पल मिलके जो आधी घटीका हुई तिसकों गोधूलमुहूर्त कहते हैं. विवाहविषयमें उक्त जो पंचांगशुद्धि वह होवै तौ यह गोधूललग्न शूद्र जातिकों विवाहविषे शुभ होता है. छठा और आठमा चंद्रमा, पापग्रहसें युत लग्न, आठमा मंगल, बृहस्पति और शनिवार, महापात (सिद्धांतशिरोमणिमें कहा हुआ,) सूर्यकी संक्रांतिका दिन, ये दोष गोधूल लग्नमें वर्जित करने. अन्य दोष त्याज्य नहीं हैं. ब्राह्मण आदिकोंनें संकटसमयमें अथवा कन्याकी तरुण अवस्थामें गोधूललग्न विवाहमें लेना, ऐसा किसीक ग्रंथमें कहा है.

यथोक्तचंद्रताराद्यभावेदानानि चंद्रेचशंखंलवणंचतारेतिथौविरुद्धेत्वथतंडुलांश्च धान्यंचदद्यात्करणेचवारेयोगेविरुद्धेकनकंचदेयं ॥

यथोक्त चंद्रमा और तारा आदिके अभावमें दान कहताहुं.—चंद्रमा अशुभ होवै तौ शंखका दान करना. तारा अशुभ होवै तौ नमकका दान करना. अशुभ तिथि होवै तौ चावलोंका दान करना. अशुभ करण होवै तौ अन्नका दान करना. व्यतीपात आदि दुष्ट योग और दुष्ट वार होवैं तौ सोनाका दान करना.

षड्वर्गशुद्धयादिविचारः कालसाधनादिप्रकारः कुलिकादिस्वरूपाणिचज्योतिर्गंथेभ्यो ज्ञातव्यानि विस्तरभयान्नेहोच्यंते इतिमुहूर्तविचारसंक्षेपः मंडपनिर्माणाद्यंगजातमंगिनो विवाहादेरुक्तनक्षत्रादौकार्यं कंडनदलनयवारकमंडपमृद्वेदिवर्णकाद्यखिलं तत्संबंधिगतागतमृक्षेवैवाहिकेकुर्यादित्युक्तेः यवारकंचिकसाइतिभाषायां एवंहरिद्रादिषुअंगेषुचंद्रबलं नापेक्ष्यं विवाहांगंविवाहात्प्राक्तृतीयषष्ठनवमादिनेषुनकार्यं तत्रमंडपः षोडशद्वादशदशाष्टान्यतमसंख्यहस्तश्चतुर्द्वारःकार्यः मंडपेचतुर्वरकरांपंचवधूकरांवावेदींचतुरस्रांसोपानयुतांप्राक्प्रवणां रंभास्तंभादिभिःसर्वतःसुशोभितांगृहनिर्गमाद्वामभागेकुर्यात् ॥

गृह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिंशांश ये षड्वर्ग हैं. इन्होंकी शुद्धि आदिका निर्णय, लग्नवेलासाधन आदि प्रकार और कुलिक आदिके स्वरूप ये सब ज्योतिषके ग्रंथोंसें जानने उचित है. ग्रंथविस्तारके भयसें यहां नहीं कहे हैं. ऐसा मुहूर्तका विचार संक्षे-

पसें कहा. विवाहके अंगभूत मंडपकी रचना आदि विवाह आदिकों उक्त नक्षत्रोंविषे करना. क्योंकी, धान्योंका छडना, गेहूं आदिकों पिसवाना, यवारक, मंडपका रचना, माटीसें वेदीका बनाना, घर और भींतपर रंग लगाना इत्यादि संपूर्ण, विवाहके पहले और पीछले विवाहके अंगभूत कर्म विवाहकों कहे नक्षत्रमें करने ऐसा वचन है." यहां "**यवारककों**" भाषामें चिकसा कहते हैं, अर्थात् मंगलकलशका धरना. ऐसेही वरकों हलद लगाना आदि अंगभूत कर्मोंमें चंद्रमाके बलकी अपेक्षा नहीं है. विवाहके अंगभूत कर्म विवाहके दिनके पहले तीसरा, छठा, नवमा इन दिनोंमें नहीं करना. विवाहका मंडप करनेका सो सोलह, बारह, दश, आठ हाथ इन्होंमांहसें एक कोईसी संख्याके अनुसार हाथोंसें युत और चार द्वारोंसें युत ऐसा करना. और तिस मंडपमें वरके चार हाथ परिमाणसें अथवा वधूके पांच हाथ परिमाणसें चौंकूटी और पैडियोंसें युत हुई, पूर्वकी तर्फ उतरती और चारों तर्फ केलाके स्तंभोंसें अच्छी तरह शोभित हुई ऐसी वेदी घरसें बाहिर निकसनेका जो द्वार तिसके वामभागविषे करनी.

अथकन्यायाजन्मकालीनग्रहादियोगसूचितवैधव्यपरिहारोपायःतत्रमूर्तिदानं कन्यादेशकालौसंकीर्त्य वैधव्यहरंश्रीविष्णुप्रतिमादानंकरिष्यइतिसंकल्प्यपलतदर्धतदर्धान्यतमप्रमाणहेमनिर्मितांविष्णुप्रतिमांचतुर्भुजां सायुधांवृतेनाचार्येणाग्न्युत्तारणादिपूर्वकंषोडशोपचारैः पूजयेत् वस्त्रार्पणकालेपीतवस्त्रेपुष्पार्पणकालेकुमुदोत्पलमालांचदद्यात् पूजांतेकन्यादेवंप्रणम्यमंत्रेणदद्यात् यन्मयाप्रांचिजनुषिघ्नंत्यापतिसमागमं विषोपविषशस्त्राद्यैर्हतोवापिविरक्तया प्राप्यमाणंमहाघोरंयशःसौख्यधनापहं वैधव्याद्यतिदुःखौघंतन्नाशयसुखाप्तये बहुसौभाग्यवृद्ध्यैचमहाविष्णोरिमांतनुं सौवर्णीनिर्मितांशक्त्यातुभ्यंसंप्रददेद्विजेतिततोयथाशक्तिहेमदक्षिणांदत्वा अनघाद्याहमस्मीतित्रिर्वदेत् एवमस्त्वितिविप्रोपित्रिः ततोविप्रभोजनं ॥

अब कन्याकों जन्मकालमें ग्रह आदिके योगसें सूचित विधवापनेके परिहारका उपाय कहताहुं.—तहां मूर्तिका दान करना. सो ऐसा—कन्यानें देश और कालका उच्चार करके "वैधव्यहरं श्रीविष्णुप्रतिमादानं करिष्ये" ऐसा संकल्प करके ४० मासे अथवा २० मासे अथवा १० मासे इन्होंमांहसें एक कोईसे तोलसें सोनाकी बनी हुई और चार हाथोंवाली और शस्त्रोंकों धारण करनेवाली ऐसी विष्णुके मूर्तिकी अग्न्युत्तारणपूर्वक षोडशोपचार पूजा पूर्ववृत हुये आचार्यके द्वारा करवानी. पूजामें वस्त्र अर्पण करनेके कालमें पीले दो वस्त्र और पुष्प चढानेके कालमें कुमुद और कमलके फूलोंकी माला अर्पण करनी. इस प्रकार पूजाके अंतमें कन्यानें मूर्तिकों प्रणाम करके "**यन्मया प्रांचि जनुषि घ्नंत्या पतिसमागमम् ॥ विषोपविषशस्त्राद्यैर्हतो वापि विरक्तया ॥ प्राप्यमाणं महाघोरं यशःसौख्यधनापहम् ॥ वैधव्याद्यतिदुःखौघं तन्नाशय सुखाप्तये ॥ बहुसौभाग्यवृद्ध्यै च महाविष्णोरिमां तनुम् ॥ सौवर्णी निर्मितां शक्त्या तुभ्यं संप्रददे द्विज**" ऐसा मंत्र कहके मूर्तिका दान करना. पीछे अपनी शक्तिके अनुसार सोनाकी दक्षिणा देके "**अनघाद्याहमस्मि**" ऐसा कन्यानें तीन वार कहना. "**एवमस्तु**" ऐसा ब्राह्मणनें भी तीन वार कहना. पीछे ब्राह्मणभोजन करवाना.

अथवैधव्यहरःकुंभविवाहः विवाहकर्तापित्रादिःकन्यावैधव्यहरंकुंभविवाहंकरिष्यइति संकल्प्य नांदीश्राद्धांतंकृत्वामहीद्यौरित्यादिनाकुंभस्थापनांतेतत्रवरुणप्रतिमायांवरुणंसंपूज्यतत्रकलशमध्येविष्णुप्रतिमायांविष्णुंषोडशोपचारैःसंपूज्यप्रार्थयेत् वरुणांगस्वरूपायजीवनानां समाश्रय पतिंजीवयकन्यायाश्चिरंपुत्रसुखंकुरु देहिविष्णोवरंदेवकन्यांपालयदुःखतइति ततोविष्णुरूपिणेकुंभायेमांकन्यांश्रीरूपिणींसमर्पयामीतिसमर्प्य परित्वेत्यादिमंत्रैरधस्तादुपरिचकुंभंकन्यांच मंत्रावृत्त्यापरिवेष्टय ततः कुंभंनिःसार्य जलाशयेप्रभज्यशुद्धजलेनसमुद्रज्येष्ठेत्यादिमंत्रैः पंचपल्लवैःकन्यामभिषिच्यविप्रान्भोजयेदिति इतिकुंभविवाहः ॥

अब विधवापना हरनेवाला कुंभविवाह कहताहुं.

विवाह करनेवाले पिता आदिनें, “कन्यावैधव्यहरं कुंभविवाहं करिष्ये,” ऐसा संकल्प करके नांदीश्राद्धपर्यंत कर्म करके “महीद्यौः०” इत्यादि विधिसें कुंभ स्थापन किये पीछे तिस कुंभपर वरुणकी प्रतिमाविषे वरुणकी पूजा करके तिस कलशके मध्यमें विष्णुकी प्रतिमा स्थापके तिस प्रतिमाविषे विष्णुकी षोडशोपचारोंसें पूजा करके प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—“वरुणांगस्वरूपाय जीवनानां समाश्रय ॥ पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्रसुखं कुरु ॥ देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखतः,” इस प्रकार प्रार्थना करके पीछे “विष्णुरूपिणे कुंभायेमां कन्यां श्रीरूपिणीं समर्पयामि” ऐसा वाक्य कहके कन्या कुंभकों देके “परित्वा०” इस आदि मंत्रोंसें नीचे और उपर कुंभ और कन्याकों मंत्रकी आवृत्तिसें सूत्र परिवेष्टित करके पीछे कुंभकों निकासके वह जलाशयमें डाल देना. पीछे शुद्ध पानीसें “समुद्रज्येष्ठा०” इस आदि मंत्रोंसें पंचपल्लवोंके द्वारा कन्याकों अभिषेक करके ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना. ऐसा कुंभविवाह समाप्त हुआ.

अथवरस्यमृतभार्यात्वपरिहारोपयः तत्रपरिवेत्तृत्वपापात्मृतभार्यात्वंतत्पापपरिहारायप्राजापत्यत्रयंचांद्रायणत्रयंकृत्वाअसकृन्मृतभार्यात्वयोगेतदुभयत्रयमावृत्त्याकृत्वा मृतभार्यात्वनिरासद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंअयुतसंख्यचर्वाज्यहोमंकरिष्यइति संकल्प्याग्निस्थापनांतेऽन्वाधानं दुर्गाग्निविष्णून्अष्टाधिकायुतसंख्याभिश्चर्वाज्याहुतिभिः शेषेणस्विष्टकृतमित्यादिप्रतिदैवतंतूष्णींनिरूप्यप्रोक्ष्यचत्यागकालेअष्टोत्तरायुतसंख्याहुतिपर्याप्तंचर्वाज्यद्रव्यंयथामंत्रलिंगं दुर्गायैअग्नयेविष्णवेचनममेतित्यजेत् जातवेदसेइत्यनुवाकस्यउपनिषदऋषयः दुर्गाग्निविष्णवोदेवताः त्रिष्टुप्छंदः चर्वाज्यहोमेविनियोगः अनुवाकानुवृत्त्याप्रत्यृचंहोमः तत्रप्रथमंचतुरधिकपंचसहस्रसंख्यश्चरुहोमस्ततश्चतुरधिकपंचसहस्राज्यहोमइत्येवमयुतहोमः होमशेषंसमाप्यदशविप्रान्भोजयेदिति अथवाकस्यचिद्ब्राह्मणस्यविवाहंकुर्यात् ॥

अब वरके मृतभार्यात्वदोषके परिहारका उपाय कहताहुंः—तहां परिवेत्तापनाके पापसें भार्या मरती है, तिसके परिहारार्थ तीन प्राजापत्य और तीन चांद्रायण प्रायश्चित्त करने. वारंवार मृतभार्यात्वदोष होवै तौ तीन प्राजापत्य और तीन चांद्रायण प्रायश्चित्त आवृत्तिसें करके “मृतभार्यात्वनिरासद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अयुतसंख्यचर्वाज्यहोमं करिष्ये” ऐसा संकल्प करके अग्निस्थापनपर्यंत कर्म किये पीछे अन्वाधान करना. सो ऐसा,—“दु-

र्गाग्निविष्णून् अष्टाधिकायुतसंख्याभिश्चर्वाहुतिभिः शेषेण स्विष्टकृतमित्यादि," ऐसा अन्वाधान करके पीछे प्रत्येक देवताकों मंत्रसें रहित चार वार निर्वाप करके अर्थात् चरु शिजानेके लिये स्थालीमें चार वार चावल लेके धोने, पीछे त्यागकालमें "**अष्टोत्तरायुतसंख्याहुतिपर्याप्तं चर्वाज्यद्रव्यं यथामंत्रलिंगं दुर्गायै अग्नये विष्णवे च न मम**" ऐसा त्याग करना. पीछे होम करना सो ऐसा—"**जातवेदसे इत्यनुवाकस्य उपनिषद ऋषयः ॥ दुर्गाग्निविष्णवो देवताः ॥ त्रिष्टुप्छंदः ॥ चर्वाज्यहोमे विनियोगः**" वारंवार वहही अनुवाक कहके प्रति ऋचासें होम करना. तहां प्रथम ५००४ चरुहोम करके पीछे ५००४ घृतका होम करना. इस प्रकार दश हजार होम करना. पीछे होमशेष समाप्त करके ब्राह्मणोंको भोजन देना, अथवा किसीक ब्राह्मणका विवाह करना.

अथमृतपुत्रत्वदोषेब्राह्मणोद्वाहनंहरिवंशश्रवणंमहारुद्रजपश्चेति त्रीण्यन्यस्तानिसमस्तानि वाशक्त्यपेक्षयाकुर्यात् रुद्रजपेदशांशेनाज्याक्तदूर्वाहोमः हरिवंशश्रवणविधिरन्येपिविधयो विस्तरेणप्रागुक्ताः ॥

इसके अनंतर **मृतपुत्रत्वदोषका परिहार**—पुत्र जन्मके मर जाते हैं, ऐसे दोषमें ब्राह्मणका विवाह, हरिवंशग्रंथका सुनना और महारुद्रका जप ये तीन उपाय हैं. इन्होंमांहसें एक कोईसा अथवा तीनों अपनी शक्तिके अनुसार करने. रुद्रजपमें जपके दशांशसें घृतमें भिगोई दूर्वाका होम करना. हरिवंशश्रवणविधि और अन्यभी विधि विस्तारसें पहले कहे हैं.

यथाशक्तिभूषणालंकृतकन्याप्रदाताश्वमेधयाजीभयेषुप्राणदाताचेतित्रयःसमपुण्याः श्रुत्वाकन्याप्रदातारंपितरःसपितामहाः विमुक्ताःसर्वपापेभ्योब्रह्मलोकंव्रजंतिते इतिकन्यादानप्रशंसा ॥

शक्तिके अनुसार गहनोंसें कन्याकों अलंकृत करके तिस कन्याका दान करनेवाला, अश्वमेधयज्ञ करनेवाला, और प्राणांत भयमें अन्यके प्राणोंका रक्षण करनेवाला ये तीनों समानपुण्यवाले हैं. "पितामहसहित सब पितर कन्याके दाताकों सुनके सब पातकोंसें विमुक्त होके ब्रह्मलोककों गमन करते हैं." इस प्रकार कन्यादानकी प्रशंसा समाप्त हुई.

विष्णुंजामातरंमत्वातस्यकोपंनकारयेत् अप्रजायांतुकन्यायांनाश्नीयात्तस्यवैगृहे इतिकन्यागृहेपित्रोर्भोजननिषेधः विवाहमध्येस्त्रियासहभोजनेपिनदोषः अन्यदापत्न्यासहभोजनेचांद्रायणप्रायश्चित्तं ॥

"जामाता अर्थात् जमाई विष्णुरूप मानके तिसपर कोप नहीं कराना. कन्याकों संतान नहीं उपजै तबतक कन्याके घरमें तिसके पितानें और मातानें भोजन नहीं करना." इस प्रकार कन्याके घरमें पितामाताकों भोजन करनेका निषेध कहा है. विवाहमें स्त्रीके साथ भोजन करनेमें भी दोष नहीं है. विवाहके विना अन्यकालमें स्त्रीके साथ भोजन करनेमें चांद्रायण प्रायश्चित्त करना.

अथवाग्दानादिविचारःविवाहनक्षत्रादियुतेसुदिनेवरस्यपित्रादिः कन्यागृहंगत्वाकन्यापूजनंकरिष्ये तदंगत्वेनगणपतिपूजनंवरुणपूजनंचकरिष्यइतिसंकल्पयेत् कन्यापितातुकरिष्यमाणकन्यादानांगभूतंवाग्दानंकरिष्ये तदंगगणपतिपूजनंवरुणपूजनंचकरिष्ये इतिसंकल्पयेत् अवशिष्टप्रयोगोन्यत्रज्ञेयः ॥

अब वाग्दान आदिका निर्णय कहताहुं.

विवाहसंबंधी नक्षत्र आदिसें युत हुये शुभ दिनमें वरका पिता आदिनें कन्याके घरकों जाके “ कन्यापूजनं करिष्ये, तदंगत्वेन गणपतिपूजनं वरुणपूजनं च करिष्ये,” ऐसा संकल्प करना. पीछे कन्याके पितानें “ करिष्यमाणकन्यादानांगभूतं वाग्दानं करिष्ये, तदंगगणपतिपूजनं वरुणपूजनं च करिष्ये,” इस प्रकार संकल्प करना. शेष रहा प्रयोग दूसरे ग्रंथमें देख लेना.

अथ विवाहदिनेतत्पूर्वदिनेवावध्वाहरिद्रातैलादिनामंगलस्नानंकारयित्वातच्छेषहरिद्रादिनावरस्यमंगलस्नानंकारणीयमित्याचारः ॥

पीछे विवाहके दिनमें अथवा विवाहके पूर्वदिनमें वधूकों हलदी, तैल आदि लगाके तिसकों मंगलस्नान करवायके तिसकी शेष रही हलदी आदिसें वरकों मंगलस्नान करवाना ऐसा आचार है.

एवंवरस्यपित्रादिः पत्न्यासंस्कार्येणचसहकृताभ्यंगस्नानोऽहतवासाःप्राङ्मुखउपविश्य स्वदक्षिणेपत्नींतद्दक्षिणेसंस्कार्यमुपवेश्यदेशकालौसंकीर्त्य ममास्यपुत्रस्यदैवपित्र्यऋणापाकरणहेतुधर्मप्रजोत्पादनसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंविवाहाख्यंसंस्कारकर्मकरिष्ये तदंत्वेन स्वस्तिवाचनंमातृकापूजनंनांदीश्राद्धंनंदिन्यादिमंडपदेवतास्थापनंचकरिष्ये तदादौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंगणपतिपूजांकरिष्ये इतिपुत्रविवाहेसंकल्पः कन्याविवाहेतुजातकर्मादिलोपे ममास्याः कन्यायाः जातकर्मनामकर्मसूर्यावलोकननिष्क्रमणोपवेशनान्नप्राशनचौलसंस्काराणांबुद्धिपूर्वकलोपजन्यप्रत्यवायपरिहारार्थंप्रतिसंस्कारमर्धकृच्छ्रंचूडायाः कृच्छ्रंतत्प्रत्याम्नायगोनिष्क्रयीभूतयथाशक्तिरजतदानेनाहमाचरिष्ये गर्भाधानसीमंतयोर्लोपेतयोरप्यूहःतमोममास्याः कन्यायाः भर्त्रासहधर्मप्रजोत्पादनद्रव्यपरिग्रहधर्माचरणेष्वधिकारसिद्धिद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंविवाहाख्यंसंस्कारंकरिष्यइतिविशेषः शेषंपूर्ववत् भ्राताममभ्रातुरितिभगिन्याइतिवा पितृव्यादिःकर्ताममभ्रातृसुतस्यभ्रातृकन्यायाइतिवासंकल्पोहंकुर्यात् वरवध्वोःस्वयंकर्तृत्वेमम दैवपित्र्यऋणेत्यादिममभर्त्रासहेत्यादिचसंकल्पः केचित्स्वस्तिवाचनकालेकन्यादानादिकालेवा प्रधानविवाहसंस्कारसंकल्पंनकुर्वंतिसप्रमादइतिबहवः अन्येतुकन्यादानविवाहहोमादिसंकल्पएवप्रधानसंकल्पस्तदतिरिक्तविवाहपदार्थाभावादित्याहुः मातृकापूजांतेमृतपितृमातृमातामहोवरवध्वोः पितास्वपित्राद्युद्देश्यकपार्वणत्रययुतंनांदीश्राद्धंकुर्यादित्यसंदिग्धं मातर्येवजीवंत्यांतत्पार्वणलोपः मातामहमात्रजीवनेतत्पार्वणमात्रलोपः तथाचोभयत्रपार्वणद्वयेनैवनांदीश्राद्धसिद्धिः मातृमातामहयोर्जीवनेपितृपार्वणेनैवतत्सिद्धिः पितृप्रपितामहमृतौपिता

**महजीवनेचपितृप्रपितामहतात्पितॄनुद्दिश्यपितृपार्वणं तथाचपितृप्रपितामहतात्पितरोनांदीमुखा
इदंव:पाद्यमित्यादिप्रयोग: प्रपितामहमातृजीवनेपितृपितामहतात्पितामहाइत्युद्देश:पितृमृतौ
पितामहप्रपितामहजीवनेपितु:पितामहस्यपितामहप्रपितामहौचनांदीमुखाइत्युच्चार: एवंमा
तृमरणेपितामहीमात्रजीवनेमात:पितु: पितामहीप्रपितामह्यौचनांदीमुखाइत्युच्चार: प्रपिताम
हीमात्रजीवनेमातृपितामह्यौपितु: प्रपितामहीचनांदीमुखाइत्युच्चार: पितामहीप्रपितामह्योर्जी
वनेमात: पितामहस्यपितामहीप्रपितामह्यौचेत्युच्चार: मुख्यमातृजीवनेसपत्नमातृमरणेपिनमा
तृपार्वणं एवंमुख्यपितामहीजीवनेपितामह्या: सपत्नीमृतावपितयासहनमातृपार्वणं किंतुपू
र्वोक्तएवोच्चार:एवंप्रपितामहीसपत्नीविषयेपि एवंमुख्यमातामहीजीवनेतत्सपत्न्यादिमरणेपि
नमातामहादीनांसपत्नीकत्वेनोच्चार:किंतुकेवलानामेव दर्शादौमातृजीवनेसापत्नमातुर्मृतौकेव
लानामेवपित्रादीनामुद्देशइतिसिद्धांतात् ॥**

इस प्रकार वरका पिता आदिनें पत्नी और संस्कार्यके साथ अभ्यंग और स्नान करके नवीन वस्त्रोंकों धारण करके पूर्वके तर्फ मुखवाला होके अपनी दक्षिणमें पत्नी और तिसकी दक्षिणमें संस्कार्यकों वैठायके देश और कालका उच्चार करके “ **ममास्य पुत्रस्य दैवपित्र्यऋणापाकरणहेतुधर्मप्रजोत्पादनसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विवाहाख्यं संस्कारकर्म करिष्ये ॥ तदंगत्वेन स्वस्तिवाचनं मातृकापूजनं नांदीश्राद्धं नंदिन्यादिमंडपदेवतास्थापनं च करिष्ये ॥ तदादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपतिपूजां करिष्ये,** ” इस प्रकार पुत्रके विवाहमें संकल्प करना. कन्याके विवाहमें तौ जातकर्म आदिके लोपमें “ **ममास्या: कन्याया: जातकर्मनामकर्मसूर्यावलोकननिष्क्रमणोपवेशनान्नप्राशनचौलसंस्काराणां बुद्धिपूर्वकलोपजन्यप्रत्यवायपरिहारार्थं प्रतिसंस्कारमर्धकृच्छ्रं चूडाया: कृच्छ्रं तत्प्रत्याम्नायगोनिष्क्रयीभूतयथाशक्तिरजतदानेनाहमाचरिष्ये.** ” गर्भाधान और सीमंतसंस्कारके लोप हो जानेमें तिन दोनोंका ऊह संकल्पमें करना; पीछे “ **ममास्या: कन्याया: भर्त्रासह धर्मप्रजोत्पादनद्रव्यपरिग्रहधर्माचरणेष्वधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं विवाहाख्यं संस्कारं करिष्ये** ” इस प्रकार संकल्पमें विशेष जानना. शेष रहा पहलेकी तरह जानना. भाई कर्म करनेवाला होवै तौ ‘**मम भ्रातु:**’ अथवा ‘**मम भगिन्या:**’ ऐसा, अथवा चाचा आदि कर्म करनेवाला होवै तौ तिसनें ‘**मम भ्रातृसुतस्य**’ अथवा ‘**मम भ्रातृकन्याया:**’ ऐसा संकल्पमें ऊह करना. वर और कन्या आपही विवाह करनेवाले होवैं तौ वरनें “ **मम दैवपित्र्यऋण०** ” इत्यादि और कन्यानें “ **मम भर्त्रा सहेत्यादिक** ” ऐसा संकल्प करना. कितनेक ग्रंथकार, स्वस्तिवाचनकालमें अथवा कन्यादान आदि कालमें प्रधानरूपी विवाहसंस्कारका संकल्प नहीं करते हैं, परंतु यह तिनका प्रमाद है ऐसा बहुतसे ग्रंथकार कहते हैं. दूसरे ग्रंथकार तौ कन्यादान, विवाहहोम आदिका संकल्पही प्रधानसंकल्प है ऐसा कहते हैं. क्योंकी, कन्यादान, विवाहहोम इन्होंकेविना अन्य कर्मकों ‘ विवाह ’ ऐसी संज्ञा नहीं ऐसा कहते हैं. मातृकापूजनके अंतमें नांदीश्राद्ध करनेका सो—जिसके माता, पिता और मातामह ये मृत हुये होवैं ऐसा जो वरका अथवा कन्याका पिता तिसनें अपना पिता आदिकोंके उद्देशसें तीन पार्वणोंसें युत नांदीश्राद्ध करना. इसमें

संदेह नहीं है. माताही जीवती होवै तौ माताके पार्वणका लोप करना. केवल मातामह मात्र जीवता होवै तौ तिसके पार्वणका लोप करना. अर्थात् दोनों जगह दो दो पार्वणोंसें नांदीश्राद्धकी सिद्धि होती है. माता और मातामह जीवते होवैं तौ केवल पिताका पार्वण करनेसेंही नांदीश्राद्धकी सिद्धि होती है. पिता और प्रपितामह मर गये होवैं और पितामह जीवता होवै तब पिता, प्रपितामह और प्रपितामहका पिता इन्होंके उद्देशसें पितृपार्वण करना, अर्थात् "**पितृप्रपितामहतत्पितरो नांदीमुखा इदं वः पाद्यम्**" इस आदि प्रयोग करना. प्रपितामह जीवता होवै तौ "**पितृपितामह तत् पितामहाः**" ऐसा उच्चार करना. पिता मर गया होके पितामह और प्रपितामह जिवते होवैं तब "**पितुः प्रपितामहस्य पितामहप्रपितामहौ च नांदीमुखाः**" ऐसा उच्चार करना. ऐसेही माता मर गई होवै, और पितामही अकेली जीवती होवै तौ "**मातः पितुः पितामहीप्रपितामह्यौ च नांदीमुखाः**" ऐसा उच्चार करना. प्रपितामही अकेली जीवती होवै तौ "**मातृपितामह्यौ पितुः प्रपितामही च नांदीमुखाः**" ऐसा उच्चार करना. पितामही और प्रपितामही ये दोनों जीवती होवैं तौ "**मातः पितामहस्य पितामही प्रपितामह्यौ च नांदीमुखाः**" ऐसा उच्चार करना. मुख्य माता जीवती होके सापत्न माता मर गई होवै तब भी मातृपार्वण करना नहीं. ऐसेही मुख्य पितामही जीवती होके पितामहकी दूसरी स्त्री मर गई होवै तब भी तिसके साथ मातृपार्वण नहीं करना, किंतु पूर्वोक्तही उच्चार करना. ऐसेही प्रपितामही जीवती होवै और प्रपितामहकी दूसरी स्त्री मर गई होवै तब भी मातृपार्वण नहीं होता है. ऐसेही मुख्य मातामही जीवती होवै और मातामहकी दूसरी स्त्री आदि मर गई होवै, तब भी मातामह आदिकोंका सपत्नीकपनेसें उच्चार नहीं करना, किंतु केवल मातामहादिकोंकाही उच्चार करना. क्योंकी, दर्श आदि श्राद्धमें माता जीवती होके सापत्नमाता मर गई होवै तब पिता आदिकोंकाही केवल उच्चार करना ऐसा सिद्धांत है.

अथमातामहमृतौमातुःपितामहजीवनेमातामहतत्पितामहप्रपितामहाइत्युच्चारः मातुः प्रपितामहमात्रजीवनेमातामहमातृपितामहौमातामहस्यप्रपितामहश्चनांदीमुखाइत्युच्चारः द्वयोर्जीवनेमातामहमातुःपितामहस्यपितामहप्रपितामहौचनांदीमुखाइत्युच्चारः ॥

अब मातामह अर्थात् नाना मर गया होवै और माताका पितामह अर्थात् बाबा जीवता होवै तब "**मातामह तत् पितामहप्रपितामहाः**" ऐसा उच्चार करना. माताका प्रपितामहही जीवता होवै तौ "**मातामहमातृपितामहौ मातामहस्य प्रपितामहश्च नांदीमुखाः**" ऐसा उच्चार करना. दोनों जीवते होवैं तौ "**मातामहमातुःपितामहस्य पितामहप्रपितामहौ च नांदीमुखाः**" ऐसा उच्चार करना.

अथजीवत्पितृकोमृतमातृमातामहश्चविवाहोपनयनजातकर्मादिषुपुत्रसंस्कारेषुमातृमातामहपार्वणद्वयमेवकुर्यात् मातर्यपिजीवत्यांमातामहपार्वणमेव मातामहजीवनेमातृमरणेजीवत्पितृकः सुतसंस्कारेमातृपार्वणमेवदेवरहितंकुर्यात् त्रिष्वपिजीवत्सुसुतसंस्कारेपितुःपित्रादीनुद्दिश्यपार्वणत्रयंकुर्यात् त्रिष्वपिजीवत्सु सुतसंस्कारे नांदीश्राद्धलोपएवेतिपक्षांतरंग्रंथांतरेउक्तं ॥

अब पिता जीवता होके माता और मातामह मर गये होवैं ऐसे पुरुषनें विवाह, यज्ञोपवीत और जातकर्म आदि पुत्रके संस्कारोंमें नांदीश्राद्धमें मातृपार्वण और मातामहपार्वण ये दोही पार्वण करने. माताही जीवती होवै तौ मातामहपार्वणही लेना. जीवते हुए पितावाले मनुष्यनें माता मृत होके मातामह जीवता होवै तौ पुत्रके संस्कारोंमें देवतोंसें वर्जित मातृपार्वणयुक्तही नांदीश्राद्ध करना. माता, पिता और मातामह ये तीनों जीवते होके पुत्रके संस्कारोंमें पिताके पिता आदिकोंके उद्देशसें तीन पार्वणोंकों करके नांदीश्राद्ध करना. पिता, माता और मातामह जीवते होवैं तौ पुत्रसंस्कारमें नांदीश्राद्धका लोपही होता है. ऐसा दूसरा पक्ष इस ग्रंथके तृतीय परिच्छेदके आरंभमें कहा है.

द्वितीयविवाहसमावर्तनाधानादिषुस्वसंस्कारेषुनांदीश्राद्धंकुर्वन्जीवत्पितृकः पितुःपित्रादीनुद्दिश्यपार्वणत्रयंकुर्यात् पितुर्मातृपितामहीप्रपितामह्यः पितुःपितृपितामहप्रपितामहाः पितुर्मातामहमातुःपितामहमातुःप्रपितामहानांदीमुखाइतितत्रोच्चारः अत्रपितुर्मात्रादिजीवनेतत्पार्वणलोपः मृतपितृकस्तुस्वपित्रादीनुद्दिश्येतित्वसंदिग्धं पितृपितामहयोर्जीवनेपितामहस्यमात्रादिपार्वणत्रयोद्देशः त्रयाणांजीवनेपिपार्वणलोपः तत्रसुतसंस्कारइवस्वसंस्कारेमातृमातामहयोःपार्वणाभ्यामेवनांदीश्राद्धसिद्धिः पित्रादित्रयजीवनेमातृमातामहयोश्चजीवनेप्रपितामहस्यपित्रादिपार्वणत्रयोद्देशेननांदीश्राद्धं एवंप्रथमविवाहेपिकर्त्रंतराभावात्वरएवनांदीश्राद्धंकुर्वन्मृतपितृकः स्वपित्रादीनुद्दिश्यजीवत्पितृकस्तुपितुःपित्रादीनुद्दिश्यकुर्यात् जीवत्पितृपितामहस्तुपितामहस्यपित्रादिपार्वणत्रयोद्देशेनप्रपितामहस्यापिजीवने प्रपितामहस्यपित्रादिपार्वणत्रयोद्देशेनवापितृपार्वणलोपेनवानांदीश्राद्धं अत्रसर्वत्रपितुःपितामहादेर्वापित्रादिपार्वणोद्देशपक्षेस्वमातृमातामहयोर्मरणेपिनस्वमातृमातामहयोः पार्वणं किंतुपित्रादेर्मातृमातामहयोरेवेतिज्ञेयं इतिजीवत्पितृकनांदीश्राद्धप्रयोगः ॥

जीवते हुए पितावाले मनुष्यनें द्वितीय विवाह, समावर्तन और आधान आदि अपने संस्कारोंमें नांदीश्राद्ध करनेका सो अपने पिताके पिता आदिकोंके उद्देशसें तीन पार्वणोंसें युक्त करना. और "पितुर्मातृपितामहीप्रपितामह्यः ॥ पितुः पितृपितामहप्रपितामहाः ॥ पितुर्मातामहमातुःपितामहमातुःप्रपितामहाः नांदीमुखाः" इस प्रकार तहां उच्चार करना. यहां पिताकी माता आदि जीवती होवै तौ तिस पार्वणका लोप करना. मृत हुए पितावालेनें अपना पिता आदिकोंके उद्देश करके नांदीश्राद्ध करना. इसमें संशय नहीं है पिता और पितामहके जीवनेमें पितामहकी माता आदि तीन पार्वणोंके उद्देशसें करना. पिता आदि तीनोंके जीवनेमें तिस पार्वणका लोप करना. तहां पुत्रके संस्कारमें मातृपार्वण और मातामहपार्वणोंसें नांदीश्राद्धकी सिद्धि होती है. तैसे अपने संस्कारविषे मातृपार्वण और मातामहपार्वण इन दो पार्वणोंसेंही नांदीश्राद्धकी सिद्धि होती है. पिता आदि तीनोंके जीवनेमें, माता और मातामहके जीवनेमें प्रपितामहके पिता आदि तीन पार्वणोंके उद्देशसें नांदीश्राद्ध करना. ऐसेही प्रथम विवाहमें भी दूसरे कर्ताके अभावसें वरही नांदीश्राद्ध करनेवाला होवै तौ मृत पितावालेनें अपना पिता आदिकोंके उद्देशसें नांदीश्राद्ध करना. जीवता हुआ पितावाला वर नांदीश्राद्धकर्ता होवै तौ तिसनें पिताके पिता आदिकोंके उद्देशसें नांदीश्राद्ध करना. जी-

वते हुये पिता और पितामहवाले मनुष्यनें पितामहके पिता आदि तीन पार्वणोंके उद्देशसें नांदीश्राद्ध करना. प्रपितामहके भी जीवनेमें प्रपितामहके पिता आदि तीन पार्वणोंके उद्देशसें अथवा पिताके पार्वणका लोप करके नांदीश्राद्ध करना. यहां सब जगह पिताके पिता आदि अथवा पितामहके पिता आदिके पार्वणके उद्देशसें नांदीश्राद्ध करना, ऐसा पक्ष होवै तौ अपनी माता और मातामहके मरनेमें भी अपनी माता और मातामहका पार्वण नहीं लेना; किंतु अपने पिता आदिकी माता और मातामहकाही पार्वण लेना ऐसा जानना उचित है. इस प्रकार जीवत्पितृकके नांदीश्राद्धका प्रयोग समाप्त हुआ.

यदातुकन्याविवाहंपुत्रस्योपनयनंप्रथमविवाहंच पितृव्यमातुलादिःकरोतितदासंस्कार्यस्य मृतपितृकत्वेअस्यसंस्कार्यस्यपितृपितामहप्रपितामहाइत्यादिप्रयोगंकुर्यात् सोदरभ्रातुर्नोच्चारे विशेषः भ्रातुः पित्रादीनांसंस्कार्यपित्रादीनांचैक्यात् सापत्नभ्रातातुसंस्कार्यस्यमातृपितामही प्रपितामह्यइत्याद्युच्चारयेत् संस्कार्यमात्रजीवनेतत्पार्वणलोपः संस्कार्यस्यजीवत्पितृकत्वेमातुलादिः कर्तासंस्कार्यपितुः मातृपितामहीप्रपितामह्यः संस्कार्यपितुः पितृपितामहप्रपितामहा इत्याद्युच्चार्यतत्पितुः पित्रादिपार्वणत्रयंकुर्यात् संस्कार्यस्यपितृपितामहयोर्जीवनेमातुलादिः संस्कार्यपितुर्मात्रादीन्मातामहादींश्चोद्दिश्यपार्वणद्वयंकुर्यात् पितुर्वर्गद्वयाद्यजीवनेएकैकवर्गपार्वणे पितुर्वर्गत्रयाद्यजीवनेमातुलादिः पितामहस्यमात्रादिपार्वणत्रयोद्देशंकुर्यात् पितामहस्य मात्रादिजीवनेतत्पार्वणलोपःपूर्ववत् पितृव्येजीवत्पितृकसंस्कारकर्तरिनोच्चारेविशेषः संस्कार्यपितुःपित्रादीनांपितृव्यस्यपित्रादीनांचैक्यात् पितामहस्यसंस्कर्तृत्वेसंस्कार्यपितृमरणेसंस्कार्यस्यपितः ममपितृपितामहौचनांदीमुखाः संस्कार्यस्यमात्रादयोमातामहादयश्चेत्याद्युच्चारःसंस्कार्यपितृजीवनेपितामहः कर्तास्वमातृपितृमातामहपार्वणानिममेतिपदरहितानितत्सहितानिवोच्चारयेत् एवंप्रपितामहेकर्तर्यपियोज्यं ॥

जिस समयमें कन्याका विवाह, पुत्रका यज्ञोपवीत और प्रथम विवाह इन्होंका कर्ता चाचा और मामा आदि होवै और संस्कार्यका पिता मर चुका होवै तौ तिस संस्कारकर्तानें “**अस्य संस्कार्यस्य पितृपितामहप्रपितामहाः**” इस आदि प्रयोग करना. एक मातासें उपजनेवाला भाई संस्कार करनेवाला होवै तौ तिसकों उच्चार करनेमें विशेष नहीं है. क्योंकी, सोदर भाईके पिता आदि और संस्कार्यके पिता आदि एकही हैं. सापत्न भाई संस्कार करनेवाला होवै तौ तिसनें “ **संस्कार्यस्य मातृपितामहीप्रपितामह्यः** ” इत्यादिक उच्चार करना. संस्कार्यकी माता जीवती होवै तौ मातृपार्वणका लोप करना. जिसका संस्कार किया जावै तिसका पिता जीवता होवै और मातुल अर्थात् मामा आदि संस्कार करनेवाला होवै तौ तिसनें “ **संस्कार्यपितुःमातृपितामहीप्रपितामह्यः ॥ संस्कार्यपितुः पितृपितामहप्रपितामहाः** ” इत्यादि उच्चार करके संस्कार्यके पिताके पिता आदि तीन पार्वण लेने. संस्कार्यका पिता और पितामह जीवते होवैं और मामा आदि संस्कार करनेवाला होवै तब संस्कार्यके पिताके माता आदि और मातामह आदिकोंके उद्देशसें दो पार्वण करने. पिताके दो वर्गोंकी (मातृवर्ग और पितृवर्ग) आदिके पहले अर्थात् मातृवर्गकी पहली अर्थात् माता, और पितृवर्गका पहला अर्थात् पिता और मातामहवर्गका पहला अर्थात् मातामह इन्होंमांहसें कोईसे भी दो

वर्गोंके आद्य जीवते होवैं तब एक एक वर्गका पार्वण करना. पिताके तीनों वर्गोंके आदिके जीवते होवैं और मामा आदि कर्ता होवै तौ तिसनें संस्कार्यके पितामहकी माता आदि तीन पार्वणोंका उदेश करना. पितामहकी माता आदि जीवते होवैं तौ तिस पार्वणका लोप पहलेकी तरह करना. जिसका पिता जीवता होवै और तिसका संस्कारकर्ता चाचा होवै तौ पार्वणके उच्चारविषे विशेष नहीं है; क्योंकी, जिसका संस्कार किया जावै तिसके पिताके पिता आदि और चाचाके पिता आदि एकही हैं. संस्कार्यका पिता मर गया होवै और पितामह संस्कारकर्ता होवै तब तिसनें **“ संस्कार्यस्य पितः मम पितृपितामहौ च नांदीमुखाः ।। संस्कार्यस्य मातृपितामहीप्रपितामह्यः ।। संस्कार्यस्य मातामहमातुःपितामहमातुःप्रपितामहाः ”** इस आदि उच्चार करना. संस्कार्यका पिता जीवता होवै और पितामह संस्कार करनेवाला होवै तौ तिसनें अपनी माता, पिता और मातामह ये पार्वणोंका ‘मम’ इस पदसें रहित अथवा तिस्सें सहित ऐसा उच्चार करना. इसी प्रकार प्रपितामह संस्कार करनेवाला होवै तब भी ऐसीही योजना करनी.

दातुमशक्नुवताकन्यादानाधिकारिणात्वंकन्यादानंकुर्वितिप्रार्थितोयः परकीयकन्यांदातुमिच्छतियश्चसुवर्णेनात्मीयांकृत्वाअनाथांज्ञात्वावान्यकन्यांदातुमिच्छतिसोपि संस्कार्यायाः कन्यायाःपित्रादीनुच्चारयेत् तस्याः पितृजीवनेतदीयंमात्रादीन्तस्यावर्गत्रयाद्यजीवनेपितुःपित्रादीनितियथासंभवमूह्यं इतिपित्रन्यकर्तृकनांदीश्राद्धप्रयोगः ।।

कन्यादान करनेमें असमर्थ ऐसे कन्यादानके अधिकारीनें ‘तूं कन्यादान कर’ ऐसी प्रार्थना कियेसें जो मनुष्य पराई कन्याकों देनेकी इच्छा करता होवै तिसनें अथवा जो सोना देके दूसरेकी कन्याकों अपनी कन्या बनाके तिसका दान करता होवै तिसनें अथवा दूसरेकी कन्याकों अनाथ जानके तिसका दान करनेकी इच्छा करता होवै, तिसनें भी संस्कार्य ऐसी कन्याके पिता आदिकोंका उच्चार करना. तिस कन्याका पिता जीवता होवै तौ तिस कन्याके मातृपार्वण और मातामहपार्वण ये दोनों पार्वणोंका उच्चार करना. तिस कन्याके तीनों वर्गोंके आदिके जीवते होवैं तब पिताका जो पिता इत्यादिक तीन पार्वण तिनका उच्चार करना. इस प्रकार जैसा संभव होवै तैसी कल्पना करके उच्चार करना. इस प्रकार पितासें दूसरेनें नांदीश्राद्ध करना होवै तौ तिसका प्रयोग कहा है.

दत्तकन्यायाविवाहंकुर्वन्प्रतिग्रहीतापितास्वपित्रादीनुद्दिश्यैवकुर्यात् दत्तकस्तुपुत्रोयदि अधिकार्यंतराभावाल्लब्धजनकपितृधनस्तदाजनकपित्रादीन् प्रतिग्रहीतृपित्रादींश्चपितरौपितामहौप्रपितामहौचनांदीमुखाइत्येवमुच्चार्यश्राद्धंकुर्यात् एवंमातृपार्वणेमातामहपार्वणेचद्विवचनप्रयोगऊह्यः यदितुजनकधनग्रहणेधिकार्यंतरसत्त्वादलब्धजनकधनस्तदाप्रतिगृहीतृपित्रादीनेवोदिश्यकुर्यान्नपितृद्वयोद्देशेन अत्रसर्वत्रसंभ्रमेणक्वचित्मातृपार्वणपितृपार्वणयोः क्रमवैपरीत्यपातेपिसक्रमोनविवक्षितः सर्वत्रनांदीश्राद्धेषुपूर्वंमातृपार्वणंततः पितुःपार्वणंततोमातामहस्येतिक्रमस्यनिश्चितत्वात् बह्वृचकात्यायनैर्मातृपितामहीप्रपितामह्यइत्यादिनानुलोम्ये

---

१ मातृमातामहपार्वणद्वयमेवेत्यर्थः.

नपार्वणत्रयेप्युच्चारः तैत्तिरीयादिभिस्तुप्रपितामहपितामहपितरइत्येवमादिनाव्युत्क्रमेणोच्चारःकार्यः एकसंस्कार्यस्यानेकसंस्काराणांसहानुष्ठानेनांदीश्राद्धंसकृदेव एवंयमलयोर्द्वयोःपुत्रयोःकन्ययोर्वाविवाहोपनयनादिसंस्काराणांसहैवानुष्ठानेपिनांदीश्राद्धंसकृदेव यमलयोःसंस्काराणामेकमंडपेएककालेएकेनकर्त्रासहकरणेदोषोनेत्युक्तं नांदीश्राद्धेअन्नाभावेआममामाभावेहिरण्यंदद्यात् हिरण्याभावेयुग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तान्ननिष्क्रयीभूतंयथाशक्तिकिंचित्द्रव्यंस्वाहानममेतिवदेत् अन्यःसर्वोपिविशेषोगर्भाधानप्रकरणेविस्तरेणोक्तस्ततएवानुसंधेयःइति नांदीश्राद्धं ॥

दत्तक अर्थात् गोद ली कन्याका विवाह गोद लेनेवाला पिता करता होवै तौ तिसनें अपने पिता आदि तीन पार्वणोंके उद्देशसें नांदीश्राद्ध करना. दत्तक पुत्र होके जन्म देनेवाले पिताका कोई दूसरा अधिकारी नहीं होवै और तिस जनक पिताका धन यही दत्तक पुत्रकों मिला होवै तौ तिस दत्तक पुत्रनें जन्म देनेवाले पिता आदिका और गोद लेनेवाले पिता इन दोनोंके पिता आदिकोंका **“पितरौ पितामहौ प्रपितामहौ च नांदीमुखाः”** इस प्रकार उच्चार करके नांदीश्राद्ध करना. ऐसेही मातृपार्वण और मातामहपार्वणविषे भी द्विवचनके प्रयोगका उच्चार करना. अर्थात् **“मातरौ पितामह्यौ प्रपितामह्यौ च नांदीमुखाः ॥ मातामहौ मातुः पितामहौ मातुः प्रपितामहौ च नांदीमुखाः”** ऐसा उच्चार करना. जन्म देनेवाले पिताके धनकों लेनेवाला दूसरा अधिकारी होवै तौ गोद लेनेवाले पिताके उद्देशसें नांदीश्राद्ध करना. दोनों पिताओंके उद्देशकरके नहीं करना. यहां सब नांदीश्राद्धप्रकरणमें संभ्रमकरके किसीक स्थलमें मातृपार्वण और पितृपार्वणके कहनेमें विपरीत क्रम कहा गया होवै तथापि वह क्रम विवक्षित नहीं है. कारण, सब जगह नांदीश्राद्धोंमें प्रथम मातृपार्वण, पीछे पिताका पार्वण और पीछे मातामहका पार्वण करना ऐसाही क्रम निश्चित है. ऋग्वेदी और कात्यायनोंनें **“मातृपितामहीप्रपितामह्यः”** इत्यादिक क्रमसें तीनों पार्वणोंमें अनुलोम उच्चार करना. तैत्तिरीय शाखावालोंनें तौ **“प्रपितामहपितामहपितरः”** इस रीतिसें विपरीत क्रमसें उच्चार करना. एक संस्कार्यके अनेक संस्कार एकही समयमें किये जावैं तौ नांदीश्राद्ध एकहीवार करना. ऐसेही जौडले दो पुत्रोंके अथवा जौडली दो कन्याओंके विवाह, यज्ञोपवीत आदि संस्कार साथही करने होवैं तौ भी नांदीश्राद्ध एकहीवार करना. जौडलोंके संस्कार एक मंडपमें और एक कालमें और एक कर्तानें साथही करनेमें दोष नहीं है ऐसा कहा है. नांदीश्राद्धमें सिद्ध अन्नके अभावमें कच्चा अन्न और कच्चा अन्नके अभावमें सोना, और सोनाके अभावमें दो ब्राह्मणोंका भोजन होवै इतने अन्नका मूल्य देना. तिसका उच्चार ऐसा—**“युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तान्ननिष्क्रयीभूतं यथाशक्ति किंचित् द्रव्यं स्वाहा न मम,”** इस प्रकार उच्चार करके देना. अन्य सब विशेष निर्णय गर्भाधानप्रकरणमें विस्तारकरके कहा है सो देख लेना. इस प्रकार नांदीश्राद्ध कहा.

ततोमंडपदेवतास्थापनंग्रहयज्ञश्चस्वस्तिवाचनात्पूर्वंनांदीश्राद्धोत्तरंवाकार्यः ॥

तदनंतर मंडपदेवताका स्थापन और ग्रहयज्ञ ये कर्म पुण्याहवाचनके पहले अथवा नांदीश्राद्धके उपरंत करने.

अथकन्यादातावरगृहंगतः करिष्यमाणकन्याविवाहांगत्वेनवरस्यसीमांतपूजांकरिष्यइतिसंकल्प्यगणेशवरुणौसंपूज्यवरंपादप्रक्षालनवस्त्रगंधपुष्पनीराजनैःसंपूज्य यथाचारंदुग्धादि प्राशयेत् ततोवरोमंगलघोषैःवाहनारूढोवधूगृहंगच्छेत्वरपितावधूंवस्त्रादिनापूजयेदितियथाचारं लग्नदिनेकन्यापिताकन्यावाअन्योन्यालिंगितगौरीहरयोः प्रतिमासुवर्णरौप्यादिनिर्मितांकात्यायनीमहालक्ष्मीशचीभिःसहपूजयेत् तत्रकोणचतुष्टयस्थापितकलशश्रेणीनांमध्येउपलयुतदृषदिवस्त्रेवातंडुलपूर्णेगौरीहरौमंत्रेणपूजयेत् तत्र सिंहासनस्थांदेवेशींसर्वालंकारसंयुतां पीतांबरधरंदेवंचंद्रार्धकृतशेखरं करेणाधःसुधापूर्णंकलशंदक्षिणेनतु वरदंचाभयंवामेनाश्लिष्यचतनुप्रियामितिध्यानमंत्रः गौरीहरमहेशानसर्वमंगलदायक पूजांगृहाणदेवेशसर्वदामंगलंकुरु इतिपूजामंत्रः कन्यादेहप्रमाणेनसप्तविंशतितंतुभिः कृतयावर्तिकयादीपंप्रज्वाल्यसुवासिनीब्राह्मणान्भोजयेत् इतिगौरीहरपूजा ॥

अब सीमांतपूजाका विधि कहताहुं.

इसके अनंतर कन्याके दातानें वरके घरकों जाके “ करिष्यमाणकन्याविवाहांगत्वेन वरस्य सीमांतपूजां करिष्ये ” ऐसा संकल्प करके गणेश और वरुणकी पूजा करके और वरके पैरोंकों धोके वस्त्र, गंध, पुष्प और आरती इन्होंसें पूजा करके पीछे अपने अपने आचारके अनुसार दूध आदिका वरकों प्राशन करवाना. पीछे वरनें वाहनउपर बैठके मंगल शब्दोंसहित वधूके घरकों गमन करना. पीछे अपने आचारके अनुसार वरके पितानें वस्त्र आदिकोंसें कन्याकी पूजा करनी. विवाहके दिन कन्याके पितानें अथवा कन्यानें आपसमें आलिंगित ऐसी सोना अथवा चांदीकी बनाई गौरीहरकी प्रतिमाका कात्यायनी, महालक्ष्मी और शची इन्होंके साथ पूजन करना. तहां चार कोनोंमें स्थापित किये कलशोंकी पंक्तियोंके मध्यमें चावलोंसें परिपूर्ण ऐसे पत्थरके बर्तनपर अथवा वस्त्रपर गौरी और हरके मंत्रकरके पूजा करनी, तिन्होंके ध्यानके मंत्र—“ सिंहासनस्थां देवेशीं, सर्वालंकारसंयुताम् ॥ पीतांबरधरं देवं चंद्रार्धकृतशेखरम् ॥ करेणाधः सुधापूर्णं, कलशं दक्षिणेन तु ॥ वरदं चाभयं वामेनाश्लिष्य च तनुप्रियाम् ” ऐसा ध्यान करके पूजा करनी. पूजका मंत्र—“गौरीहर महेशान, सर्वमंगलदायक ॥ पूजां गृहाण देवेश, सर्वदा मंगलं कुरु, ” ये मंत्र कहके पूजा करनी. पीछे कन्याके देहके प्रमाण जितने लंबे सताईस सूतके तारोंकी बत्ती बनाय तिस्सें दीपक प्रकाशित करके सुहागन स्त्री और ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना. इस प्रकार गौरीहरकी पूजा कही.

पंचविंशतिदर्भाणांवेण्यग्रग्रंथिसंयुतोलंबाग्रोविष्टरःसंपाद्यः वरस्ययाभवेच्छाखातच्छाखागृह्यचोदितः मधुपर्कःप्रदातव्योह्यन्यशाखेपिदातरि दधिमधुमिश्रंमधुपर्कःतत्रदध्यलाभेपयोजलंवा मध्वलाभेसर्पिर्गुडोवाप्रतिनिधिः गृहागतंस्नातकंवरंमधुपर्केणार्हयिष्यइतिसंकल्पः

वरस्यद्वितीयोद्वाहेतुस्नातकमितिपदलोपः ततोयथागृह्यंमधुपर्कप्रयोगोज्ञातव्यः एवंगुरुःश्रेष्ठ विप्राःराजाचेतिगृहागतायज्ञेवृताऋत्विजश्चमधुपर्केणपूजनीयाः ऋत्विगादीनामपिअर्च्यशाखयैवमधुपर्कोनतुदातृशाखया जयंतस्तुसर्वत्रयजमानशाखयैवमधुपर्कइत्याहअत्रगंधपुष्पधूपदीपपूजांतेउपहारोमाषविकारसहितोभोजनार्थदेयः एवंमधुपर्कतत्पूर्ववाकृतभोजनायैववरायोपोषितोदाताकन्यांदद्यात् ॥

अब मधुपर्कका विधि कहताहुं.

पचीस डाभ लेके तिन्होंकी वेणी बनाय तिसके अग्रभागमें गांठसें संयुत और अग्रभाग लंबा है जिसका ऐसा विष्टर बनाना. "कन्यादाता भिन्नशाखावाला भी होवै तौभी वरकी जो शाखा होवै तिस शाखाके गृह्यसूत्रमें जैसा विधि कहा होवै तैसा मधुपर्क करना." दही और शहद मिश्र करना तिसकों मधुपर्क कहते हैं. तहां दही नहीं मिलै तौ दूध अथवा जल लेना. शहद नहीं मिलै तौ तिसकी जगह घृत अथवा गुड लेना. "**गृहागतं स्नातकं वरं मधुपर्केणार्हयिष्ये,**" ऐसा मधुपर्कका संकल्प करना. वरका दूसरा विवाह होवै तौ संकल्पमें '**स्नातक**' इस पदका लोप करना. पीछे गृह्यसूत्रके अनुसार मधुपर्कका प्रयोग जानना. इस प्रकार गुरु, श्रेष्ठ विप्र और राजा ये अपने घरकों आके प्राप्त होवैं तौ तिनकी मधुपर्ककरके पूजा करनी. और यज्ञमें वृत ऋत्विज आदिकोंकीभी मधुपर्कसें पूजा करनी. ऋत्विज आदिकोंकों मधुपर्क करनेका सो ऋत्विजादिकोंकी शाखाके अनुसारही करना, दाताकी शाखाके अनुसार नहीं करना. **जयंत** ग्रंथकार तौ, सब जगह यजमानकी शाखाके अनुसारही मधुपर्क करना ऐसा कहता है. यह मधुपर्कपूजामें गंध, पुष्प, धूप, दीपकपर्यंत पूजा किये पीछे उडदके दालके लड्डू इत्यादिक उपहार वरकों भोजनके अर्थ देना. इस प्रकार मधुपर्क किये पीछे अथवा तिसके पहले भोजन किये हुये ऐसे वरकों दातानें उपवासी रहके कन्या देनी.

अथलग्नघटीस्थापनं दशपलमितताम्रघटितंषडंगुलोन्नतंद्वादशांगुलविस्तृतंघटीयंत्रंकुर्यादितिसिंधुः द्वादशार्धदलोन्मानंचतुर्भिश्चतुरंगुलैः स्वर्णमाषैःकृतच्छिद्रंयावत्प्रस्थजलप्लुतमितितुश्रीभागवतेतृतीयस्कंधेउक्तं अस्यार्थः अशीतिगुंजात्मकःकर्षःअस्यैवसुवर्णसंज्ञा कर्षचतुष्टयंपलं तथाचषट्पलताम्रविरचितंपात्रंविंशतिगुंजोन्मितसुर्णनिर्मितचतुरंगुलदीर्घशलाकयामूलेकृतच्छिद्रंकुर्यात् तेनछिद्रेणयावत्प्रस्थपरिमितंजलंप्रविशतितेनचप्रस्थजलपूरणेनतत्पात्रंजलेमग्नंभवतितत्पात्रंघटीकालप्रमाणं तत्रप्रस्थमानंतुषोडशपलात्मकं पलंसुवर्णाश्चत्वारःकुडवःप्रस्थमाढकं द्रोणंचखारिकाचेतिपूर्वपूर्वंचतुर्गुणमित्युक्तेः ग्रंथांतरेचतुर्मुष्टिःकुडवश्चत्वारःकुडवाःप्रस्थइति केचित्षष्टिसंख्याकगुरुवर्णोच्चारेपलसंज्ञःकालःषष्टिपलकालानाडिकेत्याहुः एवंप्रमाणीकृतंघटीयंत्रंसूर्यमंडलस्यार्धोदयेर्धास्तेवाजलपूर्णेताम्रपात्रेमृत्पात्रेवाक्षिपेत् तत्रमंत्रःमुख्यंत्वमसियंत्राणांब्रह्मणानिर्मितंपुरा भवभावायदंपत्योःकालसाधनकारणं अनेनमंत्रेणगणेशवरुणपूजनपूर्वकंघटीयंत्रंस्थापयेत् एवंस्थापिताघटीआग्नेययाम्यनैर्ऋतवायव्यदिग्गतानशुभा मध्यस्थितान्यदिग्गताचशुभाएवमाग्नेयादिपंचदिक्षुपूर्णानशभा इतिघटीविचारः ॥

अब लग्नघटीके स्थापनका विधि कहताहुं.

व्यावहारिक ३३ तोले चार मासे तांबा लेके तिसका छह अंगुल ऊंचा और वारह अंगुल विस्तारवाला ऐसा घटीयंत्र करना ऐसा निर्णयसिंधुमें कहा है. “ **द्वादशार्धपलोन्मानं चतुर्भिश्चतुरंगुलैः ॥ स्वर्णमाषैः कृतच्छिद्रं यावत्प्रस्थजलप्लुतम्**, ” ऐसा तौ श्रीमद्भागवतके तृतीय स्कंधमें कहा है. इसका अर्थ अश्शी ८० चिरमठियोंका कर्ष होता है. इसीकोंही सुवर्ण ऐसी संज्ञा है. चार कर्षोंका पल होता है. इस प्रमाणसें छह पल परिमित तांबा लेके तिसकी घटीका वनानी, और २० चिरमठि परिमित सोनाकी शलाई चार अंगुल लंवी करके तिस शलाईसें घटीकाके मूलविषे छिद्र करना. पीछे तिस छिद्रसें तिस घटीकापात्रमें एक प्रस्थ परिमित जल प्रवेश करता है. तिस जलसें पूरित हुआ पात्र जलमें डूब जाता है. वह पात्र एक घटी कालका प्रमाण है. तहां सोलह पलकों प्रस्थ कहते हैं. क्योंकी, “ चार सुवर्णोंका पल, और चार पलोंका कुडव और चार कुडवोंका प्रस्थ और चार प्रस्थोंका आढक और चार आढकोंका द्रोण और चार द्रोणोंकी खारीका, ” ऐसा वचन है. दूसरे ग्रंथमें चार मुष्टियोंका कुडव और चार कुडवोंका प्रस्थ होता है ऐसा कहा है. कितनेक ग्रंथकार, साठ वार गुरु अक्षर उच्चारनेमें जितना काल लगता है सो काल पलसंज्ञक होता है और साठ पलोंकी घडी होती है ऐसा कहते हैं. इस प्रमाणसें किया घटीयंत्र सूर्यमंडलके अर्धोदयमें अथवा अर्धास्तमें जलसें पूरित हुये तांबाके अथवा माटीके पात्रमें छोडना. तिसका मंत्र—“ **मुख्यं त्वमसि यंत्राणां ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥ भव भावाय दंपत्योः कालसाधनकारणम्**, ” इस मंत्रसें गणेश और वरुणकी पूजा पहले करके घटीयंत्रकों स्थापित करना. इस प्रकार स्थापित करी घटी आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य और वायव्य इन दिशाओंमें प्राप्त हुई शुभ नहीं है. मध्यमें स्थित हुई और अन्य दिशाओंमें स्थित हुई घटी शुभ है. ऐसेही आग्नेय आदि पांच दिशाओंमें पूर्ण हुई घटी शुभ नहीं है. इस प्रकार घटीविचार समाप्त हुआ.

अथज्योतिर्विदादिष्टेशुभकालेहस्तांतरालेतंदुलराशीपूर्वापरौकृत्वा पूर्वराशौप्रत्यङ्मुखंवरं अपरस्मिन्प्राङ्मुखींकन्यांअवस्थाप्यतयोर्मध्येकुंकुमादिकृतस्वस्तिकांकितमंतःपटमुदग्दशंधारयेयुः कन्यावरयोःपित्रादिर्ज्योतिर्विदंसंपूज्यतद्दत्ताक्षताःफलयुताः कन्यावरयोरंजलौदद्यात् कन्यावरौसाक्षतहस्तौस्वस्तिकालोकनपरौअमुकदेवतायैनमइतिस्वस्वकुलदेवतांध्यायंतौतिष्ठतः ज्योतिर्विदामंगलपद्याष्टकपाठांतेस्वोक्तकालेतदेवलग्नमितिपठित्वा सुमुहूर्तमस्तुॐप्रतिष्ठेत्युक्तेअंतःपटमुत्तरतोपसारयेयुः ततःकन्यावरौपरस्परशिरसोरक्षतप्रक्षेपंपरस्परेक्षणंचकुर्यातां वरोवध्वाभ्रूमध्येदर्भाग्रेणॐभूर्भुवःस्वरितिपरिमृज्यदर्भंनिरस्यापःस्पृशेत् वैदिकैःपठ्यमानब्राह्मणखंडवाक्यांतेकन्यापूर्वकंताभ्यामक्षतारोपणंप्रतिवाक्यंकार्यं ततःप्राङ्मुखंवरंप्रत्यङ्मुखींकन्यांकृत्वादातादक्षिणेसपत्नीकउपदिश्यवरदत्तालंकारादिरहितामहतवस्त्रस्वदेयालंकारमात्रयुतां कनकयुक्तांजलिं वरपूजावशिष्टगंधलिप्तहस्तपादांकन्यामेवंदद्यात् कुशहस्तोदेशकालौसंकीर्त्य अमुकप्रवरामुकगोत्रोमुकशर्माहंममसमस्तपितॄणांनिरतिशयानंदब्रह्मलोकावाप्त्यादिकन्यादानकल्पोक्तफलावाप्तयेअनेनवरेणास्यांकन्यायामुत्पादयिष्यमाणसंतत्या द्वाद

शावरान्द्वादशपरान् पुरुषांश्चपवित्रीकर्तुमात्मनश्चश्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये ब्राह्मविवाहविधिनाकन्यादानंकरिष्ये इतिकुशाक्षतजलेनसंकल्प्यउत्थायकन्यांसंप्रगृह्य कन्यांकनकसंपन्नांकनकाभरणैर्युतां दास्यामिविष्णवेतुभ्यंब्रह्मलोकजिगीषया विश्वंभरःसर्वभूतःसाक्षिण्यःसर्वदेवताः इमांकन्यांप्रदास्यामिपितॄणांतारणायचेत्युक्त्वाकांस्यपात्रस्थकन्यांजलेरुपरिवरांजलिं निधायदक्षिणस्थितपत्न्या संततांक्रियमाणांशुद्धोदकधारांसहिरण्येवरहस्तेनिक्षिपेत् कन्या तारयतु पुण्यंवर्धतां शांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु पुण्याहंभवंतोब्रुवंतुइत्यादिवाक्यचतुष्टयांतेअमुकप्रवरामुकगोत्रोमुकशर्माहं ममसमस्तेत्यादिप्रीतयेइत्यंतमुक्त्वाअमुकप्रवरोपेतामुकगोत्रायामुकशर्मण.प्रपौत्रायामुकशर्मणःपौत्रायामुकशर्मणःपुत्रायामुकशर्मणेश्रीधररूपिणेवरायअमुकप्रवरामुकगोत्रामुकशर्मणःप्रपौत्रींअमुकशर्मणःपौत्रींअमुकशर्मणःममपुत्रीं अमुकनाम्नीं कन्यांश्रीरूपिणींप्रजापतिदैवत्यांप्रजोत्पादनार्थंतुभ्यमहंसंप्रददे इतिसहिरण्यहस्तेसाक्षतजलंक्षिपेत् प्रजापतिःप्रीयतां कन्यांप्रतिगृह्णातुभवानितिवदेत् एवंत्रिवारंकन्यातारयत्वित्यादिनाकन्यादानंकार्यं वरःॐस्वस्तिइत्युक्त्वाकन्यादक्षिणांसंस्पृष्ट्वा कइदंकस्माअदात्० पृथिवीप्रतिगृह्णात्वितित्रिरुक्त्वाधर्मप्रजासिद्ध्यर्थंप्रतिगृह्णामीतिवदेत् दाता गौरींकन्यामिमांविप्रथाशक्तिविभूषितां गोत्रायशर्मणेतुभ्यंदत्तांविप्रसमाश्रय कन्येममाग्रतोभूयाःकन्येमेदेविपार्श्वयोःकन्येमेपृष्ठतोभूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयाम् ममवंशकुलेजातापालितावत्सराष्टकं तुभ्यंविप्रमयादत्तापुत्रपौत्रप्रवर्धिनी धर्मेचार्थेचकामेचनातिचरितव्यात्वयेयं वरोनातिचरामीति दाताउपविश्यकन्यादानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थंइदंसुवर्णमग्निदैवत्यंदक्षिणात्वेनसंप्रददे ॐस्वस्तीतिवरः ततोभोजनपात्रजलपात्रादिदानानि पितामहोदानकर्ताचेत्पौत्रीमित्यतःपूर्वंममेतिवदेत् पुत्रीमित्यतःपूर्वंनवदेत् भ्रात्रादिःपुरुषत्रयकीर्तनमेवकुर्यात्क्वापिममेतिनवदेत् प्रपितामहः प्रपौत्रीमित्यत्रममेतिवदेत् मातुलादिरन्योवादातास्वगोत्रंस्वविशेषणत्वेनोक्त्वामुकशर्मणःसमस्तपितॄणामितिकन्यापितृनामषष्ठ्यंतमुक्त्वाकन्याविशेषणत्वेनतद्गोत्रादिवदेत् ममवंशकुलेजातेत्यत्रममेतिस्थानेकन्यापितृनामवदेत् दत्तककन्यादानेममवंशकुलेदत्तेतिऊहः ॥

इसके अनंतर ज्योतिषीनें कहे शुभ कालमें एक हाथ मध्यमें जगा छोडके पूर्वकी तर्फ एक और पश्चिमकी तर्फ एक ऐसे चावलोंके दो राशि करके पूर्वराशिपर पश्चिमको मुखवाले वरकों और पश्चिमराशिपर पूर्वकों मुखवाली कन्याकों स्थापित करके तिन दोनोंके मध्यमें रोली आदिसें किया जो स्वस्तिक तिस्सें चिन्हित और उत्तरके तर्फ दशावाला ऐसा अंतःपट धारण करना. कन्या और वरके पिता आदिनें ज्योतिषीकी पूजा करके ज्योतिषीनें दिये चावलोंके अक्षत फलसहित कन्या और वरकी अंजलीमें देना. चावलोंके अक्षत हैं हाथोंमें जिन्होंके ऐसे कन्या और वर अंतःपटके उपरका स्वस्तिक देखते हुये “**अमुक देवतायै नमः,**” इस प्रकार अपनी अपनी कुलदेवताकों ध्यावते हुये स्थित रहैं. मंगलाष्टकके पाठके अंतमें ज्योतिषीनें, आपने कहा जो मुहूर्त तिस समयमें “**तदेव लग्नं०**” यह वाक्य कहके “**सुमुहूर्तमस्तु ॐप्रतिष्ठा**” ऐसा कहे पीछे अंतःपट उत्तरकी तर्फ लेना. पीछे कन्या और वरनें परस्परोंके मस्तकपर अक्षता डालनी और आपसमें देखना. वरनें वधूकी भृकुटियोंके मध्यमें डाभके अग्रभागसें “**ॐभूर्भुवः स्वः**” इस मंत्रसें रेखा करके

डाभ डाल देके जलकों स्पर्श करना. वैदिक ब्राह्मणोंनें पठन करनेके जो ब्राह्मणखंडके वाक्य, तिन्होंके अंतमें अर्थात् प्रतिवाक्यके अंतमें प्रथम कन्यानें वरके मस्तकपर अक्षता डालना, पीछे वरनें कन्याके मस्तकपर अक्षता डालना, इस प्रकार प्रतिवाक्यके अंतमें वधूवरनें परस्परोंपर अक्षता डालना. पीछे वरकों पश्चिमाभिमुख और कन्याकों पूर्वाभिमुख बैठायके वधूवरकी दक्षिणकों अपनी स्त्रीसहित दातानें बैठके वरदत्त अलंकारादिसें वर्जित और नवीन वस्त्र तथा अपने देनेके गहनोंसें युत हुई और सोनासें युत हुई अंजलीवाली और वरकी पूजा करके शेष रहे गंधसें लिपे हुये हाथ और पैरोंवाली ऐसी कन्या देनी. दातानें हाथमें डाभ लेके देश और कालका उच्चार करके कन्यादानका संकल्प करना. सो ऐसा,—“अमुकप्रवरामुकगोत्रोमुकशर्माहं मम समस्तपितॄणां निरतिशयानंदब्रह्मलोकावाप्त्यादि कन्यादानकल्पोक्तफलावाप्तये अनेन वरेणास्यां कन्यायामुत्पादयिष्यमाणसंतत्या द्वादशावरान् द्वादश परान् पुरुषांश्च पवित्रीकर्तुमात्मनश्च श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये ब्राह्मविवाहविधिना कन्यादानं करिष्ये,” ऐसा संकल्प करके डाभ और अक्षतोंसें युत पानी छोडना. पीछे ऊठके कन्याकों लेके “कन्यां कनकसंपन्नां कनकाभरणैर्युताम् ॥ दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोकजिगीषया ॥ विश्वंभरः सर्वभूतः साक्षिण्यः सर्वदेवताः ॥ इमां कन्यां प्रदास्यामि पितॄणां तारणाय च,” ये मंत्र कहके कांसीके पात्रमें कन्याकी अंजलीपर वरकी अंजली स्थापित करके दक्षिणकी तर्फ स्थित हुई दाताकी स्त्रीनें निरंतर ऐसी शुद्ध जलकी धारा सोनासहित वरके हाथपर छोडनी. पीछे “कन्या तारयतु ॥ पुण्यं वर्धतां ॥ शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु पुण्याहं भवंतो ब्रुवंतु,” इत्यादिक चार वाक्योंका उच्चारण करके पीछे “अमुकप्रवरामुकगोत्रोमुकशर्माहं मम समस्त इत्यादि प्रीयते” इस पर्यंत वाक्य कहके, “अमुकप्रवरोपेताममुकगोत्रायामुकशर्मणः प्रपौत्रायामुकशर्मणः पौत्रायामुकशर्मणः पुत्रायामुकशर्मणे श्रीधररूपिणे वराय ॥ अमुकप्रवरामुकगोत्रामुकशर्मणः प्रपौत्रीं अमुकशर्मणः पौत्रीं अमुकशर्मणः मम पुत्रीं अमुकनाम्नीं कन्यां श्रीरूपिणीं प्रजापतिदैवत्यां प्रजोत्पादनार्थं तुभ्यमहं संप्रददे,” ऐसा वाक्य कहके सोनासें युत वरके हाथमें अक्षतोंसहित जल छोडना, “और प्रजापतिः प्रीयताम् ॥ कन्यां प्रतिगृह्णातु भवान्” ऐसा कहना. इस प्रकार तीनवार “कन्या तारयतु” इत्यादिक पूर्वोक्त प्रकारसें कन्यादान करना. पीछे वरनें “ॐ स्वस्ति” ऐसा कहके कन्याके दाहिने कंधाकों स्पर्श करके, “क इदं कस्मा अदात्० पृथिवी प्रतिगृह्णातु,” यह मंत्र तीनवार कहके “धर्मप्रजासिद्ध्यर्थं प्रतिगृह्णामि” ऐसा वाक्य कहना. पीछे दातानें “गौरीं कन्यामिमां विप्र यथाशक्ति विभूषिताम् ॥ गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां विप्र समाश्रय ॥ कन्ये ममाग्रतो भूयाः कन्ये मे देवि पार्श्वयोः ॥ कन्ये मे पृष्ठतो भूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयाम् ॥ मम वंशकुले जाता पालिता वत्सराष्टकम्॥ तुभ्यं विप्र मया दत्ता पुत्रपौत्रप्रवर्धिनी ॥ धर्मे चार्थे च कामे च नातिचरितव्या त्वयेयम्” ऐसा वाक्य कहे पीछे वरनें “नातिचरामि” ऐसा वाक्य कहना. पीछे दातानें बैठके कन्यादानकी सांगताकेलिये वरकों सुवर्णदक्षिणा देनी, और दक्षिणा देनेका वाक्य कहना. सो ऐसा, “कन्यादानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदं सुवर्णं अग्निदैवत्यं दक्षिणात्वेन संप्रददे,” ऐसा वाक्य कहके सोनाकी दक्षिणा देनी. पीछे वरनें “ॐस्वस्ति” ऐसा

कहके दक्षिणा लेनी. पीछे भोजनपात्र और जलपात्र आदिके दान करने. जो पितामह दान करनेवाला होवै तौ दानवाक्यमें 'पौत्रीम्' इस वचनके पहले 'मम' ऐसा उच्चार करना, 'पुत्रीम्' इस वचनके पहले 'मम' ऐसा उच्चार नहीं करना. भाई आदि दान करनेवाला होवै तौ तिसनें तीन पुरुषोंका उच्चारही करना. 'मम' ऐसा उच्चार कहींभी नहीं करना. प्रपितामह दान करनेवाला होवै तौ तिसनें 'प्रपौत्रीम्' इस वचनके पहले 'मम' ऐसा वचन कहना. मामा आदि अथवा अन्य कोई दाता होवै तौ तिसनें अपने विशेषणसें अपने गोत्रका उच्चार करके "अमुकशर्मणः समस्तपितॄणाम्०" ऐसा कन्याके पिताका नाम षष्ठ्यंत कहते कन्याके विशेषणसहित तिसके पिताके गोत्र आदिकों कहना. 'मम वंशकुले जाता' इस जगह 'मम' इसके स्थानमें कन्याके पिताके नामका उच्चार करना. दत्तक कन्याके दानमें 'मम वंशकुले जाता' इस जगह 'मम वंशकुले दत्ता' ऐसा उच्चार करना.

अथकन्यादानांगत्वेनगवादिदानमंत्राः यज्ञसाधनभूतायाविश्वस्यावौघनाशिनी विश्वरूपधरोदेवःप्रीयतामनयागवा हिरण्यगर्भसंभूतंसुवर्णंचांगुलीयकं सर्वप्रदंप्रयच्छामिप्रीणातु कमलापतिःइत्यंगुलीयस्य क्षीरोदमथनेपूर्वमुद्धृतंकुंडलद्वयं श्रियासहसमुद्भूतंददेश्रीःप्रीयतामितिकुंडलयोः कांचनंहस्तवलयंरूपकांतिसुखप्रदं विभूषणंप्रदास्यामिविभूषयतुमेसदेतिवलययोः परापवादपैशून्यादभक्ष्यस्यचभक्षणात् उत्पन्नपापंदानेनताम्रपात्रस्यनश्यतु इतिताम्रजलपात्रस्य यानिपापानिकाम्यानिकामोत्थानिकृतानिच कांस्यपात्रप्रदानेनतानिनश्यंतुमेसदा इतिभोजनार्थकांस्यपात्रस्य अगम्यागमनंचैवपरदाराभिमर्शनं रौप्यपात्रप्रदानेन तानिनश्यंतुमेसदेतिजलार्थस्यभोजनार्थस्यचरौप्यपात्रस्य पूरितंपूगपूगेननागवल्लीदलान्वितं पूर्णेनचूर्णपात्रेणकर्पूरपिष्टकेनच सपूगखंडनंदिव्यंगंधर्वाप्सरसांप्रियं ददेदेवनिरातंकंत्वत्प्रसादात्कुरुष्व मामितितांबूलस्य एवंदासीमहिषीगजाश्वभूमिस्वर्णपात्रपुस्तकशय्यागृहरजतवृषभानांदानमंत्राःकौस्तुभेद्रष्टव्याः ॥

अब कन्यादानके अंगत्वसें गौ आदिके दानके मंत्र कहताहुं. गोदानका मंत्र—"यज्ञसाधनभूताया विश्वस्याघौघनाशिनी ॥ विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा." अब अंगुठी आदि गहनोंके दानका मंत्र कहताहुं. "हिरण्यगर्भसंभूतं सुवर्णं चांगुलीयकम् ॥ सर्वप्रदं प्रयच्छामि प्रीणातु कमलापतिः." अब कुंडलोंका मंत्र कहताहुं. "क्षीरोदमथने पूर्वमुद्धृतं कुंडलद्वयम् ॥ श्रियासह समुद्भूतं ददे श्रीः प्रीयतामिति." अब कंकणका मंत्र कहताहुं. "कांचनं हस्तवलयं रूपकांतिसुखप्रदम् ॥ विभूषणं प्रदास्यामि विभूषयतु मे सदा." अब तांबाके पात्रोंका मंत्र कहताहुं. "परापवादपैशून्यादभक्ष्यस्य च भक्षणात् ॥ उत्पन्नपापं दानेन ताम्रपात्रस्य नश्यतु." अब भोजनके कांसीके पात्रका मंत्र कहताहुं. "यानिं पापानि काम्यानि कामोत्थानि कृतानि च ॥ कांस्यपात्रप्रदानेन तानि नश्यंतु मे सदा." अब जलके लिये और भोजनके लिये चांदीके पात्रका मंत्र कहताहुं. "अगम्यागमनं चैव परदाराभिमर्शनम् ॥ रौप्यपात्रप्रदानेन तानि नश्यंतु मे सदा." अब तांबूलका मंत्र कहताहुं. "पूरितं पूगपूगेन नागवल्लीदलान्वितम् ॥ पूर्णेन चूर्णपात्रेण क-

पूरपिष्टकेन च ॥ सपूगखंडनं दिव्यं गंधर्वाप्सरसां प्रियम् ॥ ददे देव निरातंकं त्वत्प्रसादात्कुरुष्व माम्.” दासी, भैंस, हस्ती, घोडा, पृथिवी, सोनाका पात्र, पुस्तक, शय्या, घर, चांदी, बैल, इन्होंके दानोंके मंत्र कौस्तुभमें देखने.

अंत:पटधारणादिकन्यादानांतंकेचिदग्निप्रतिष्ठापनोत्तरंकुर्वंति केचित्पूर्वांगहोमोत्तरंकेचिदाज्यसंस्कारोत्तरमित्यनेकेपक्षास्तत्रस्वस्वगृह्यानुसारेणाचारानुसारेणचव्यवस्था ततोवधूवराभिषेकः ततःकंकणबंधनं अथाक्षतारोपणं वधूवराभ्यांअन्योन्यतिलककरणंमालाबंधनं अष्टपुत्रीकंचुकीमांगल्यतंत्वादिदानं गणेशपूजा लड्डुकबंधनं उत्तरीयवस्त्रांतग्रंथियोजनंलक्ष्म्यादिपूजादि इतिकन्यादानानुक्रमःप्रायोबह्वृचानामन्येषांचयथागृह्यंज्ञेयः ॥

अंत:पटधारण आदिसें कन्यादानपर्यंत कर्म कितनेक लोक अग्निस्थापनके उपरंत करते हैं, कितनेक पूर्वांग होमके उपरंत करते हैं, और कितनेक आज्यसंस्कारके उपरंत करते हैं, इस प्रकार अनेक पक्ष हैं. तिन्होंमें अपने अपने गृह्यसूत्रके अनुसार और जिसका जैसा आचार होवै तिसके अनुसार व्यवस्था जाननी. पीछे वधू और वरके उपर अभिषेक करना. पीछे कंकणबंधन करना, पीछे अक्षतारोपण, वधू और वरनें आपसमें तिलक करना. आपसमें दोनोंनें गलोंमें मालाका बंधन करना. अष्टपुत्री, कंचुकी, मंगलसूत्र इन आदि वरनें कन्याकों देना. पीछे गणेशजीकी पूजा, लाडू बांधना, अंगउपरके वस्त्रके अंतमें ग्रंथियोजन, लक्ष्मी आदिकी पूजा इत्यादि करना. इस प्रकार प्रायशः ऋक्शाखियोंके कन्यादानका अनुक्रम है, और अन्योंका अनुक्रम तिन्होंके गृह्यसूत्रके अनुसार जानना.

अथविवाहहोमःवधूवरौपूर्वोक्तलक्षणांवेदींमंत्रघोषेणारुह्य वरःस्वासनेउपविश्यवधूंदक्षिणतउपवेश्यदेशकालौसंकीर्त्यप्रतिगृहीतायामस्यांवध्वांभार्यात्वसिद्धयेविवाहहोमंकरिष्ये इति संकल्प्ययथागृह्यंविवाहहोमंकुर्यात् एतदादिविवाहाग्निंरक्षेत् रक्षितोग्निश्चतुर्थीकर्मपर्यंतंगृहप्रवेशनीयहोमात्पूर्वमनुगतश्चेद्विवाहहोमःपुनःकार्यः गृहप्रवेशनीयोत्तरंगतौहोमद्वयमपिपुनःकार्यं केचित्तुद्वादशरात्रपर्यंतंवृत्त्युक्तायाश्चेत्याज्याहुतेः सार्वत्रिकत्वमाश्रित्यात्रापिअयाश्चेत्याहुतिमेवाहुः ॥

अब विवाहहोम कहताहुं.

वधू और वरनें पूर्वोक्त लक्षणोंवाली वेदीपर मंत्रोंके घोषसें चढके पीछे वरनें अपने आसनपर बैठके और वधूकों अपनी दाहिनी तर्फ बैठाके देश और कालका उच्चारण करके संकल्प करना. सो ऐसा—“प्रतिगृहीतायामस्यां वध्वां भार्यात्वसिद्धये विवाहहोमं करिष्ये,” इस प्रकार संकल्प करके अपने गृह्यसूत्रके अनुसार विवाहहोम करना. इस वख्तसें विवाहाग्निकी रक्षा करनी. रक्षित किया अग्नि चतुर्थीकर्मपर्यंत रखना. वह अग्नि गृहप्रवेशनीयहोमके पहले नष्ट होवै तौ विवाहहोम फिर करना उचित है. गृहप्रवेशनीय होमके उपरंत अग्नि नष्ट होवै तौ दोनोंभी होम फिर करने उचित हैं. बारह रात्रिपर्यंत गृह्याग्नि नष्ट होवै तौ वृत्तिमें कही “अयाश्चा०” इस मंत्रसें घृतकी आहुति देनी ऐसा सब जगह निर्णय कहा

है, इसलिये तिसका आश्रय करके इस स्थलमेंभी “अयाश्चा०” यह आहुतिही देनी ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं.

अथगृहप्रवेशनीयहोमः सचवध्वासहस्वगृहंगतस्यविहितस्तथापिशिष्टाःश्वशुरगृहेएवकुर्वंति तत्रार्धरात्रोत्तरंविवाहहोमेपरेद्युःप्रातस्तिथ्यादिसंकीर्त्यममाग्नेर्गृह्याग्नित्वसिद्धिद्वाराश्रीपरमे०र्थं गृहप्रवेशनीयाख्यंहोमंकरिष्यइतिसंकल्पःकार्यः अर्धरात्रात्पूर्वंविवाहहोमेतदैवहोमोत्तरंपुनस्तिथ्यादिसंकीर्त्य संकल्पपूर्वकंरात्रावपिगृहप्रवेशनीयहोमकरणेदोषोन यत्तुविवाहहोमगृहप्रवेशनीयहोमयोरेकतंत्रेणानुष्ठानंकुर्वंतितन्नयुक्तं विवाहाग्नेरेवगृहप्रवेशनीयहोमोत्तरंगृह्यत्वसिद्धिराश्वलायनतैत्तिरीयादीनांभवति तैत्तिरीयकात्यायनादीनांपुनराधानेप्रकारांतरमस्ति यदिरात्रौषट्घटीमध्येग्न्युत्पत्तिस्तदागृहप्रवेशनीयाभावेपिव्यतीपातादिसंभवेपितदैवोपासनहोमारंभः तदुत्तरंचेत्परदिनेसायमौपासनारंभः सचेत्थं सायंसंध्यामुपास्यविवाहाग्निंप्रज्वाल्य प्राणानायम्य देशकालौसंकीर्त्यास्मिन्विवाहाग्नौयथोक्तकालेश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं यावज्जीवमुपासनंकरिष्यइतिसंकल्प्य पुनर्देशकालौसंकीर्त्यश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंसायंप्रातरौपासनहोमौकरिष्ये तत्रेदानींसायमौपासनहोमंकरिष्ये प्रातस्तुपूर्वसंकल्पितप्रातरौपासनहोमंकरिष्ये इतिसंकल्प्यहोमःकार्यः ॥

अब गृहप्रवेशनीयहोम कहताहुं.

वह होम वधूके साथ अपने घरमें प्राप्त हुये पीछे वरनें अपने घरमें करना ऐसा कहा है, तथापि शिष्ट लोक शुशराके घरमेंही करते हैं. वह विवाहहोम अर्धरात्रके उपरंत हुआ होवै तौ पर दिनमें प्रातःकालमें तिथि, वार आदिका उच्चार करके “**ममाग्नेर्गृह्याग्नित्वसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गृहप्रवेशनीयाख्यं होमं करिष्ये,**” ऐसा संकल्प करना. अर्धरात्रके पहले विवाहहोम हुआ होवै तौ विवाहहोमके उपरंत तत्कालमेंही फिर तिथि, वार आदिका उच्चार करके संकल्पपूर्वक रात्रिमेंभी गृहप्रवेशनीयहोम करनेमें दोष नहीं है. विवाहहोम और गृहप्रवेशनीयहोमका एकतंत्रसें अनुष्ठान करते हैं वह ठीक नहीं है. आश्वलायन और तैत्तिरीय आदिकोंके गृह्याग्निकी सिद्धि गृहप्रवेशनीयहोमके उपरंत और विवाहाग्निसेंही होती है. तैत्तिरीय और कात्यायन इन्होंके पुनराधनमें दूसरा प्रकार है. जो रात्रिमें छह घडीके मध्यमें अग्निकी उत्पत्ति होवै तौ गृहप्रवेशनीयहोमके अभावमेंभी व्यतीपात आदि कुयोगका संभव होवै तौभी तिसी कालमेंही औपासनहोमका आरंभ करना. छह घडीयोंके उपरंत अग्निकी उत्पत्ति होवै तौ परदिनमें सायंकालमें औपासनहोमका आरंभ करना. सो ऐसा.—सायंकालकी संध्या करके पीछे विवाहाग्नि प्रज्वलित करके और प्राणायाम करके देश और कालका उच्चार करके संकल्प करना. सो ऐसा—“**अस्मिन् विवाहाग्नौ यथोक्तकाले श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं यावज्जीवमुपासनं करिष्ये**” इस प्रकार संकल्प करके फिर देश और कालका उच्चार करके “**श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सायंप्रातरौपासनहोमौ करिष्ये ॥ तत्रेदानीं सायमौपासनहोमं करिष्ये,**” ऐसा संकल्प करना. प्रातःकालमें संकल्प करनेका सो तौ, “**पूर्वसंकल्पितप्रातरौपासनहोमं करिष्ये,**” ऐसा संकल्प करक होम करना.

अथत्रिरात्रंवधूवरौब्रह्मचारिणावलंकुर्वाणावधःशायिनावक्षारालवणाशिनौतिष्ठेतां ॥

इसके अनंतर तीन रात्रपर्यंत वधू और वरनें ब्रह्मचारी, गहनोंसें अलंकृत हुये, पृथिवीपर शयन करनेवाले और खारा तथा नमक नहीं खानेवाले ऐसे होके स्थित रहना.

अथचतुर्थदिवसेऐरिणीदानं तच्चवधूपितृभ्यामुपोषिताभ्यामुपोषितायैवरमात्रेकार्यं वरमातूरजोदोषेतस्याःशुद्धिप्रतीक्षाकरणासंभवेमनसापात्रमुद्दिश्येतिरीत्यातांमनसोद्दिश्यैरिणीदानं वधूवरमात्रोर्विवाहोत्तरंदेवकोत्थापनात्प्राक्रजोदोषेपूर्वोक्तांशांतिंकृत्वाशुद्ध्यंतेसंकटेशुद्धेः प्रागपिदेवकोत्थापनंकार्यं मातुलादेःकर्त्रंतरस्यपत्न्यारजसिमौंजीप्रकरणेउक्तं एवंविवाहोत्तरमाशौचपातेचतुर्थीकर्मपर्यंतंप्राप्तकर्मकरणेदातुर्वरस्यकन्यायाश्चनाशौचं आशौचांतेदेवकोत्थापनं असंभवेआशौचमध्येएवदेवकोत्थापनंकृत्वाआशौचंकार्यं विवाहात्पूर्वमाशौचरजोदोषयोस्तुप्रागुक्तं चतुर्थीकर्महोमःकौस्तुभेउक्तः एतंकेचित्ऋक्शाखिनोनकुर्वंति मंडपोद्वासनदिननिर्णयोमंडपोद्वासनपर्यंतंकर्तव्याकर्तव्यनिर्णयश्चोपनयनप्रकरणेउक्तस्तत्रैवद्रष्टव्यः नस्नायादुत्सवेतीतेमंगलंविनिवर्त्यच अनुव्रज्यसुहृद्बंधूनर्चयित्वेष्टदेवतां स्नानंसचैलंतिलमिश्रकर्म प्रेतानुयानंकलशप्रदानं अपूर्वतीर्थामरदर्शनंचविवर्जयेन्मंगलतोऽब्दमेकं मासषट्कंविवाहादौव्रतप्रारंभणेपिच जीर्णभांडादिनत्याज्यंगृहसंमार्जनंतथा ऊर्ध्वंविवाहात्पुत्रस्यतथाचव्रतबंधनात् आत्मनोमुंडनंचैववर्षंवर्षार्धमेवच मासमन्यत्रसंस्कारेत्रिमासंचौलकर्मणि पिंडदानं मृदास्नानंनकुर्यात्तिलतर्पणं अयंविवाहव्रतबंधचौलोत्तरंवर्षषण्मासत्रिमासेषु अन्यवृद्धिश्राद्धयुतमंगलोत्तरंचमासमेकंपिंडदानतिलतर्पणनिषेधस्त्रिपुरुषसपिंडानामेव एवंमुंडननिषेधोपि व्रतोद्वाहौतुमंगलमितिपक्षेमौंज्युत्तरंमुंडननिषेधः व्रतबंधस्यमुंडनरूपत्वपक्षेतुननिषेधः आत्मनोमुंडनमितिकर्मांगतयाप्राप्तंरागप्राप्तंचमुंडनंनिषिध्यते अत्रापवादः गंगायांभास्करक्षेत्रेमातापित्रोर्मृताहनि आधानेसोमयागादौदर्शादौक्षौरमिष्यते महालयेगयाश्राद्धेपित्रोःप्रत्याब्दिकेतथा सपिंड्यंतप्रेतकर्मश्राद्धषोडशकेष्वपि कृतोद्वाहादिकःकुर्यात्पिंडदानंचतर्पणं केचिद्भ्रातृपितृव्यादेराब्दिकेप्येवमूचिरे एवंपिंडपितृयज्ञेअष्टकान्वष्टकापूर्वेद्युःश्राद्धेषुनपिंडदाननिषेधः दर्शश्राद्धंत्वपिंडकमेव तेनबव्हृचानांव्यतिषंगोन इतिमंडपोद्वासनोत्तरंकार्याकार्यनिर्णयः ॥

अब इसके अनंतर चौथे दिनमें ऐरिणीदान करना. वह ऐरणीदान वधूके उपोषित मातापितानें उपोपित ऐसी जो वरकी माता तिसकों देना. वरकी माताकों ऋतुकाल आया हुआ होवै तौ तिसके शुद्ध होनेपर्यंत प्रतीक्षा करनेके असंभवमें (किसकों दान करनेमें, जिसकों देनेका तिसके अभावमें मनसें तिस पात्रका उद्देश करके जैसा दान करते हैं, तिस रीतिसें) वरमाताका मनमें उद्देश करके ऐरिणीदान करना. विवाहके उपरंत और देवकोत्थापनके पहले वधू और वरकी माताओंकों रजोदोष दीख जावै तौ शुद्धीके अनंतर पूर्वोक्त श्रीशांति करके देवकोत्थापन करना. संकटविषे शुद्धिके पहलेभी शांति करके देवकोत्थापन करना उचित है. मामा आदि अन्य कर्ता होके तिसकी स्त्रीकों रजोदोष दीख जावै तौ तिसका निर्णय यज्ञोपवीतके प्रकरणमें कहा है. इस प्रकार विवाहके उपरंत आशौचकी प्राप्ति-

होवै तौ चतुर्थीकर्मपर्यंत प्राप्त हुआ कर्म करनेमें दाता, वर और कन्याको आशौच नहीं लगता है. आशौचके उपरंत देवकोत्थापन करना. आशौचके अनंतर देवकोत्थापनके असंभवमें आशौचके मध्यविषेही देवकोत्थापन करके आशौच पालना उचित है. विवाहके पहले आशौच और रजोदोष प्राप्त होवैं तौ तिन्होंका निर्णय पहले कह दिया है. चतुर्थीकर्मसंबंधी होम कौस्तुभग्रंथमें कहा है. कितनेक ऋक्शाखी यह चतुर्थीकर्मसंबंधी होम नहीं करते हैं. मंडपोद्वासनके दिनका निर्णय और मंडपोद्वासनपर्यंत कर्तव्य, अकर्तव्यका निर्णय यज्ञोपवीतप्रकरणमें कहा है. तहां देख लेना उचित है. उत्सव समाप्त हुए पीछे; और मंगलकार्य समाप्त हुए पीछे मित्र और बांधवके पश्चात् गमन करके इष्टदेवताकी पूजा किये पीछे स्नान नहीं करना. मंगलकार्यके उपरंत एक वर्षपर्यंत सचैलस्नान, तिलतर्पण, प्रेतके संग गमन, कुंभदान, अपूर्व तीर्थयात्रा, अपूर्व देवका दर्शन ये कर्म नहीं करने. विवाह आदिमें और व्रतका आरंभ करनेमें छह महीनोंपर्यंत पुराने पात्र आदिकों त्यागना नहीं, और घरको साफ करना नहीं. पुत्रके विवाहके उपरंत एक वर्षपर्यंत तथा पुत्रके यज्ञोपवीतके उपरंत छह महीनोंपर्यंत (कर्तानें) अपना मुंडन नहीं कराना. क्षौरकर्म संस्कारसें अन्य संस्कारमें एक महीनापर्यंत, क्षौरसंस्कारमें तीन महीनेपर्यंत पिंडदान, मृत्तिकास्नान और तिलतर्पण इन्होंकों नहीं करना. विवाह, यज्ञोपवीत, क्षौरकर्म इन्होंके उपरंत क्रमसें वर्ष, छह महीने, तीन महीनेपर्यंत और अन्य नांदीश्राद्धसें युत हुये मंगल कर्मके उपरंत एक महीनापर्यंत पिंडदान और तिलतर्पण नहीं करने ऐसा जो यह निषेध कहा है सो त्रिपुरुषसपिंडविषयकही है. इसी प्रकार मुंडनका निषेधभी त्रिपुरुषसापिंडविषयक है. यज्ञोपवीत और विवाह मंगल है, इस पक्षमें यज्ञोपवीतकर्मके उपरंत मुंडनका निषेध है. यज्ञोपवीतकर्म मुंडनरूप है. इस पक्षमें तौ मुंडनका निषेध नहीं है. अर्थात् अपना मुंडन करानेमें दोष नहीं है. ‘अपना मुंडन नहीं कराना ऐसा जो कहा है तिस्सें कर्मके अंगत्वसें प्राप्त हुआ मुंडन और प्रीतिसें प्राप्त हुए मुंडनका निषेध है. **यहां अपवाद कहताहुं.**—“ गंगा, भास्करक्षेत्र, माता और पिताका मृतदिन, आधान, सोमयज्ञ और दर्श आदिमें क्षौर कराना उचित है. ” विवाह आदि किया होवै तौभी तिसनें महालय, गयाश्राद्ध, मातापिताका प्रतिसांवत्सरिकश्राद्ध, सपिंडीपर्यंत मृतकी क्रिया और षोडश मासिकश्राद्ध इन्होंके मध्यमें पिंडदान और तिलतर्पण करना. कितनेक ग्रंथकार भाई, चाचा, इन आदिके आब्दिकश्राद्धमेंभी पिंडदान और तिलतर्पण करनेकों कहते हैं. ऐसेही पिंडपितृयज्ञ, अष्टकाश्राद्ध, अन्वष्टकाश्राद्ध, और पूर्वेद्युःश्राद्ध इन्होंमें पिंडदानका निषेध नहीं है. दर्शश्राद्ध तौ अपिंडकही करना, और इसउपरसें ऋग्वेदियोंको दोनोंका बराबर प्रयोग नहीं है. इस प्रमाण मंडपोद्वासनके उपरंत करनेके योग्य और नहीं करनेके योग्य कार्योंका निर्णय समाप्त हुआ.

अथवंधूप्रवेशः विवाहात्षोडशदिनांतःसमदिनेषुपंचमसप्तमनवमदिनेषुचरात्रौस्थिरलग्ने नूतनभिन्नग्रहेवधूप्रवेशःशुभः प्रथमदिनेपिकेचित् षष्ठदिनेनिषेधःप्रयोगरत्नोक्तोनिर्मूलःषोडशदिनमध्येपूर्वोक्तदिनेषुप्रवेशोक्तनक्षत्रतिथिवारगोचरस्थचंद्रबलाद्यभावेपि गुरुशुक्रास्तादावपिनदोषः व्यतीपातेक्षयतिथौग्रहणेवैधृतौतथा अमासंक्रांतिविष्टयादौप्राप्तकालेपिनाचरेत्प्र

थमनववधूप्रवेशेविवाहार्थगमनेचप्रतिशुक्रदोषोनास्ति द्विरागमनेएवसंमुखशुक्रदोषः षोडशदिनोत्तरंमासपर्यंतंविषमदिनेषुमासोत्तरंविषममासेषुवर्षोत्तरंविषमवर्षेषुवधूप्रवेशःशुभःसमेष्वेतेषुवैधव्यादिदोषः पंचमवर्षोत्तरंसमविषमविचारोनास्ति षोडशदिनोत्तरंवधूप्रवेशेनक्षत्राणि अश्विनीरोहिणीमृगपुष्यमघोत्तरात्रयहस्तचित्रास्वात्यनुराधामूलश्रवणधनिष्ठारेवत्यः शुभाः मासोत्तरंमार्गशीर्षमाघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठमासाःशुभाः चतुर्थीनवमीचतुर्दशीपंचदश्यमावास्याभिन्नतिथयोरविभौमेतरवाराश्चशुभाः इतिनववधूप्रवेशः ॥

अब वधूप्रवेशका निर्णय कहताहुं.

विवाहके दिनसें सोलह दिनके भीतर सम दिनोंमें और पांचमा, सातमा, नवमा इन विषम दिनोंमें रात्रिमें, स्थिर लग्नविषे नवीन घरसें भिन्न घरमें वधूप्रवेश शुभ है. प्रथम दिनमेंभी वधूप्रवेश शुभ है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. प्रयोगरत्नमें छठे दिनमें वधूप्रवेशका निषेध कहा है परंतु वह निर्मूल है. सोलह दिनके मध्यमें पूर्वोक्त दिनोंमें प्रवेशोक्त नक्षत्र, तिथि, वार, गोचरमें स्थित हुआ चंद्रबल इन आदिके अभावमेंभी दोष नहीं है और बृहस्पति और शुक्रके अस्त आदिकाभी दोष नहीं है. व्यतीपात, क्षयतिथि, ग्रहण, वैधृति, अमावस, संक्रांतिदिन और भद्रा आदि कुयोग होवै तौ प्राप्तकालमेंभी वधूप्रवेश शुभ नहीं है. प्रथम वधूप्रवेशमें और विवाहके अर्थ गमनमें सन्मुख शुक्रका दोष नहीं है. द्विरागमनमेंही सन्मुख शुक्रका दोष है. सोलह दिनोंके उपरंत महीनापर्यंत विषम दिनोंमें और महीनाके उपरंत विषम महीनोंमें और वर्षके उपरंत विषम वर्षोंमें वधूप्रवेश शुभ है. सोलह दिनोंके उपरंत सम दिन, सम महीना और सम वर्षमें किया वधूप्रवेश वैधव्य आदि दोषकों करता है. पांचमे वर्षके उपरंत वधूप्रवेशमें सम और विषमका विचार नहीं है. **अब सोलह दिनोंके उपरंत वधूप्रवेशमें नक्षत्रोंकों कहताहुं**—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूळ, श्रवण, धनिष्ठा, और रेवती ये नक्षत्र शुभ हैं. एक महीनेके उपरंत मंगशिर, माव, फाल्गुन, वैशाख, और ज्येष्ठ ये महीने शुभ हैं. चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, पौर्णिमा और अमावस इन तिथियोंसें अन्य तिथि, रविवार और मंगलवारसें अन्य वार शुभ हैं. इस प्रकार नवीन वधूका प्रवेश समाप्त हुआ.

अथद्विरागमनं तत्रमाघफाल्गुनवैशाखाःशुक्लपक्षश्चशुभाः अश्विनीरोहिणीपुनर्वसुपुष्योत्तरात्रयानुराधाज्येष्ठाहस्तस्वातीचित्राश्रवणशततारकानक्षत्रेषुचंद्रबुधगुरुशुक्रवारेगुरुशुक्रास्तादिरहितेस्थिरलग्नादिशुभकालेद्वितीयवधूप्रवेशःशुभः ॥

अब द्विरागमन कहताहुं.

तहां माघ, फाल्गुन, वैशाख ये मास और शुक्लपक्ष ये शुभ हैं. अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, अनुराधा, ज्येष्ठा, हस्त, स्वाती, चित्रा, श्रवण और शतभिषा इन नक्षत्रोंमें और सोम, बुध, बृहस्पति और शुक्र इन वारोंमें, बृहस्पति और शुक्रका अस्त आदिसें रहित ऐसे स्थिर लग्न आदि शुभ कालमें दूसरेवार वधूप्रवेश शुभ है.

द्विरागमनेधिमासविष्णुशयनमासाःसमवत्सराःप्रतिशुक्रादिदोषाश्चवर्ज्याः द्विरागमोपि यदिविवाहमारभ्यषोडशदिनमध्येक्रियतेतदाप्रतिशुक्रादिदोषोस्तादिदोषश्चनास्ति द्विरागमे षोडशवासरांतरेकादशाहेसमवासरेषु नचात्रऋक्षंनतिथिर्नयोगोनवारशुद्ध्यादिविचारणीयं केवलांगिरसकेवलभृगुभरद्वाजवसिष्ठकश्यपात्रिवत्सगोत्राणांप्रतिशुक्रदोषोन रेवत्यश्विनीभरणीकृत्तिकाद्यचरणेषुचंद्रेसतिशुक्रस्यांधत्वात्प्रतिशुक्रदोषोन दुर्भिक्षेदेशविप्लवेविवाहेतीर्थगमनेएकनगरग्रामयोश्चप्रतिशुक्रदोषोन इतिद्विरागमः ॥

द्विरागमनविषे अधिकमास, विष्णुशयनमास अर्थात् आषाढ शुदि एकादशीसें कार्तिक शुदि ११ पर्यंत चार महीने, सम वर्ष, और प्रतिशुक्रादि दोष वर्जने उचित है. द्विरागमनभी जो विवाहकें आरंभसें सोलह दिनोंके मध्यमें करना होवै तौ तिसविषे प्रतिशुक्रादि दोष और अस्तादि दोष नहीं है. “ द्विरागमन विवाहके दिनसें सोलह दिनोंके भीतर ग्यारहमे दिनमें और सम दिनोंमें करनेमें नक्षत्र, तिथि, योग और वारकी शुद्धि आदिका विचार नहीं है. ” केवलांगिरस, केवलभृगु, भरद्वाज, वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि और वत्स इन गोत्रवालोंकों प्रतिशुक्रका दोष नहीं है. रेवती, अश्विनी, भरणी और कृत्तिकाका पहला चरण इन्होंपर चंद्रमा होवै तब शुक्र अंधा रहता है इसवास्ते तिस समयमें प्रतिशुक्रका दोष नहीं है. दुर्भिक्ष, देशोपद्रव, विवाह, तीर्थयात्रा, एक नगर, और एक ग्राम इन्होंविषे प्रतिशुक्रका दोष नहीं है. इस प्रकार द्विरागमन समाप्त हुआ.

उद्वाहात्प्रथमेशुचौयदिवसेद्भर्तुर्गृहेकन्यकाहन्यात्तज्जननींक्षयेनिजतनुंज्येष्ठेपतिज्येष्ठकं पौषेचश्वशुरंपतिंचमलिनेचैत्रेस्वपित्रालयेतिष्ठंतीपितरंनिहंतिनभयंतेषामभावेभवेत् इतिवध्वाःप्रथमाब्देनिवासविचारः ॥

पति आदिके घरमें प्रथम वर्षविषे वासका निषेध कहताहुं.

विवाहसें पहले वर्षमें आषाढ महीनाविषे कन्या पतिके घरमें वसै तौ वरकी माताकों नाशै. क्षयमासमें कन्या वसै तौ अपने शरीरकों नाशै. ज्येष्ठ मासमें कन्या वसै तौ अपने ज्येष्ठकों नाशै. पौष मासमें वसै तौ पतिके पिताकों नाशै. अधिक मासमें वसै तौ अपने पतिकों नाशै. जो कन्या चैत्रमासमें अपने पिताके घरमें वसै तौ पिताका नाश करै. इसलिये इन महिनोंमें कन्यानें तिस घरमें नहीं रहना. यदि वरकी माता आदि नहीं होवैं तौ रहनेमें भय नहीं है. इस प्रकार वधूके प्रथम वर्षमें वासका विचार समाप्त हुआ.

अथपुनर्विवाहः दुष्टलग्नेयथोक्तग्रहताराद्यभावेऽन्यत्रापिदुष्टयोगाद्यशुभकालेकूष्मांडीघृतहोमादियथोक्तविधिंविनासूतकादौचविवाहेजातेतयोरेवदंपत्योःसुमुहूर्तेपुनर्विवाहः कर्तव्यः सुरापीव्याधिताधूर्तावंध्यार्थघ्न्यप्रियंवदा स्त्रीप्रसूश्चाधिवेत्तव्यापुरुषद्वेषिणीतथा अधिवेदनं भार्यांतरकरणं अप्रजांदशमेवर्षेस्त्रीप्रजांद्वादशेत्यजेत् मृतप्रजांपंचदशेसद्यस्त्वप्रियवादिनीं अत्राप्रियवादोव्यभिचारः प्रतिकूलभाषणरूपस्यतस्यप्रायःकलौसार्वत्रिकत्वात् आज्ञासंपादिनीं दक्षांवीरसूंप्रियवादिनीं पत्नींत्यक्त्वाभोगार्थमन्योद्वाहीपूर्वभार्यायैस्वधनस्यतृतीयांशंदद्यात् नि

र्धनश्चेत्तांपोषयेत् मनुः अधिविन्नातुयानारीनिर्गच्छेद्रोषितागृहात् सासद्यःसन्निरोद्धव्यात्याज्यावाकुलसन्निधौ अग्निशुश्रूषादिधर्माचरणंज्येष्ठयासहकार्यं नतुकनिष्ठया इदंज्येष्ठायाआज्ञासंपादिनीत्वे यदितुरोषादिशीलेनसमनंतरोक्तमनुवाक्याज्ज्येष्ठाकुलसन्निधौत्यागार्हा गृहांतरेनिरोधार्हावातर्हिकनिष्ठयापिसहधर्मंचरेदन्यथाधर्मभ्रंशापातात् तथावीरसुतायास्यादाज्ञासंपादिनीचया दक्षाप्रियंवदाशुद्धातामत्रविनियोजयेदितिमाधवीयेस्मृतेश्चद्वितीयविवाहहोमः पूर्वविवाहसंबंधिगृह्याग्नावेवकार्यः तदसंभवेलौकिकाग्नौकार्यः लौकिकाग्नौकरणपक्षेद्वितीयविवाहहोमादिनोत्पन्नाग्नेर्गृह्याग्निस्वाह्वयोर्गृह्याभ्योःसंसर्गःकार्यः ॥

अब पुनर्विवाह कहताहुं.

दुष्ट लग्न, यथोक्त ग्रह और ताराका नहीं होना और अन्य भी दुष्ट योग आदि अशुभ कालमें विवाह किया गया होवै तौ अथवा कूष्मांडीशंतिपूर्वक घृतहोम आदि यथोक्त विधि किये विना और आशौच आदिमें विवाह किया गया होवै तौ तिन दोनों स्त्रीपुरुषोंका सुंदर मुहूर्तमें पुनर्विवाह करना. “मदिरा पीनेवाली, व्याधिवाली, दुष्ट, वंध्या, अर्थनाश करनेवाली, अप्रिय वचनवाली, कन्याओंकों उपजानेवाली और पतिसें वैर करनेवाली ऐसी जो स्त्री सो अधिवेत्तव्या.” अधिवेदन अर्थात् पुरुषनें दूसरा विवाह करके दूसरी स्त्री बनानी उचित है. “जिस स्त्रीकों संतान नहीं होवै तिसकों दशमें वर्षमें त्यागना. जिस स्त्रीकों कन्याओंकी संतान उपजती होवै तिस स्त्रीकों बारहमे वर्षमें त्यागना. जिस स्त्रीके संतान उपज उपजके मर जाते होवैं तिस स्त्रीकों पंदरहमे वर्षमें त्यागना. अप्रिय वचनवाली स्त्रीकों तत्काल त्यागना.” यहां अप्रियवचनसें व्यभिचार ग्रहण करना. क्योंकी, प्रतिकूल बोलना तौ विशेषकरके कलियुगमें सब जगह है. आज्ञा पालनेवाली, घरके काममें चतुर, वीर पुत्रोंकों उपजानेवाली और प्रिय बोलनेवाली ऐसी पत्नीका त्याग करके भोगके अर्थ दूसरी स्त्रीकेसाथ विवाह करनेमें तिस पुरुषनें पहली पत्नीकों अपने धनका तृतीय भाग देना. निर्धन पुरुषनें तिस स्त्रीकीं अन्न वस्त्र देके पालना करनी. मनुजी कहते हैं.—“एक पुरुषनें विवाहित करी दो स्त्री हैं. तिन्होंमांहसें पहली स्त्री रोषकों प्राप्त हुई घरसें निकसै तौ तिसकों तत्कालही दूसरे गृहमें बंदोवस्तसें रखनी, अथवा अपने कुलके समीपमें त्यागनी अर्थात् अपने कुलके श्रेष्ठ पुरुषोंके आधीन रखनी उचित है.” अग्निहोत्र आदि धर्मका आचरण पहली स्त्रीके संग करना. छोटी स्त्रीके संग नहीं करना. ज्येष्ठ स्त्रीके संग धर्माचरण करना ऐसा जो कहा सो, पहली स्त्री आज्ञा पालनेवाली होवै तब करना. जो रोषवाले स्वभावकी होनेसें पूर्व कहे मनुवाक्यसें पहली स्त्री अपने कुलके श्रेष्ठ पुरुषोंके आधीन करनेके योग्य होवै, अथवा अन्य गृहमें निरोध करके रखनेके योग्य होवै तौ पिछलीं स्त्रीके संगभी धर्मका आचरण करना. अन्यथा धर्मका नाश हो जाता है. तैसेही वीरपुत्रकी माता, आज्ञा पालनेवाली, गृहकार्यमें चतुर, प्रिय वचन कहनेवाली, और शुद्ध आचरणवाली ऐसी कनिष्ठ स्त्री होवै तौ वह धर्मकार्यमें योजनी, ऐसी माधवग्रंथमें स्मृति कही है. द्वितीय विवाहसंबंधी होम करनेका सो पूर्वविवाहसंबंधी गृह्याग्निमेंही करना. पूर्वविवाहसंबंधी अग्निके अभा-

वमें लौकिक अग्निमें होम करना. लौकिकाग्निमें होम करना इस पक्षमें द्वितीय विवाहका जो विवाहहोमादिक तिस्सें सिद्ध हुआ जो अग्नि सो गृह्याग्नि होनेसें दो गृह्याग्नियोंका संसर्ग करना.

अथाग्निद्वयसंसर्गप्रयोगः देशकालौसंकीर्त्यममद्वाभ्यांभार्याभ्यांसहनिष्पन्नगृह्याग्न्योःताभ्यांसहाधिकारसिद्धिद्वाराश्री० र्थेसंसर्गंकरिष्यइतिसंकल्प्यस्वस्तिवाचनंकृत्वाउदगपवर्गेस्थंडिलेकृत्वादक्षिणेस्थंडिलेज्येष्ठायागृह्याग्निमुत्तरेकनिष्ठायागृह्याग्निंप्रतिष्ठाप्य प्रथमाग्नौज्येष्ठपत्न्यान्वारब्धोन्वाधानंकुर्यात् अग्निद्वयसंसर्गार्थेप्रथमाग्निहोमकर्मणिदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्येचक्षुषीआज्येनेत्यंतेअग्निंनवभिराज्याहुतिभिःशेषेणेत्यादि अग्निमीळेइतिनवानांमधुच्छंदाअग्निर्गायत्री अग्निद्वयसंसर्गार्थंप्रथमाग्नौप्रधानाज्यहोमेवि० अग्निमीळेइत्यादिनवभिर्ऋग्भिःप्रत्यृचंस्रुवेणनवाज्याहुतीर्जुहुयात् अग्नयइदमितिसर्वत्रत्यागः होमशेषंसमाप्य अयंतेयोनिरितिमंत्रेणज्येष्ठाग्निंसमिधिसमारोप्यप्रत्यवरोहेतिमंत्रेणतंद्वितीयाग्नौप्रत्यवरोह्य ध्यात्वापत्नीद्वयान्वारब्धोन्वाधानंकुर्यात् अग्निद्वयसंसर्गार्थेप्रथमसंसृष्टद्वितीयाग्नौविहितहोमेदेवतापरिग्रहार्थमन्वाधानंकरिष्ये आज्यभागांतेअग्निंप्रधानंषड्वारमाज्येनशेषेणेत्यादिप्रोक्षणींकुशान्दर्वींस्रुवौप्रणीताज्यपात्रेइध्माबर्हिषीत्यष्टौपात्राणि स्रुचिचतुर्गृहीतमाज्यंगृहीत्वापत्नीद्वयान्वारब्धोजुहुयात् अग्नावग्निरित्यस्याहिरण्यगर्भोग्निरष्टी अग्निद्वयसंसर्गार्थेसंसृष्टाग्नौप्रधानाज्यहोमेविनि० अग्नावग्निश्चरतिप्रविष्टऋषीणांपुत्रोअधिराजएषः तस्मैजुहोमिहविषाघृतेनमादेवानांमोमुहद्भागधेयंस्वाहा अग्नयइदं०एवमग्रेपि आज्यस्यस्रुचिचतुर्ग्रहणंविनियोगस्त्यागश्चअग्निनाग्निर्मेधातिथिःकाण्वोग्निर्गायत्री अग्निनाग्निःसमिध्यते० अस्तीदमितितिसृणां विश्वामित्रोग्निरनुष्टुप्अंत्येत्रिष्टुभौ अस्तीदमधि० अरण्यो० उत्तानायाम० पाहिनोअग्नइत्यस्यभर्गःप्रगाथोग्निर्बृहती पाहिनो०भिर्वसो०होमशेषंसमाप्याहिताग्नयेगोयुग्मंदत्वाविप्रान्भोजयेत् इत्यग्निद्वयसंसर्गप्रयोगः ॥

अब दो अग्नियोंका संसर्गप्रयोग कहताहुं.

देश और कालका उच्चारण करके "मम द्वाभ्यां भार्याभ्यां सह निष्पन्नगृह्याग्न्योः ताभ्यां सहाधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं संसर्गं करिष्ये," ऐसा संकल्प करके स्वस्तिवाचन करना. पीछे दक्षिण दिशाकों एक स्थंडिल और उत्तर दिशाकों दूसरा स्थंडिल बनाके दक्षिण दिशाके स्थंडिल अर्थात् वेदीपर बडी स्त्रीका गृह्याग्नि और उत्तरवेदीपर छोटी स्त्रीका गृह्याग्नि, ऐसे दो गृह्याग्नि स्थापित करके ज्येष्ठ पत्नीसें अन्वारब्ध हुए ऐसे पतिनें प्रथम अग्निमें अन्वाधान करना. सो ऐसा—"अग्निद्वयसंसर्गार्थे प्रथमाग्निहोमकर्मणि देवतापरिग्रहार्थमन्वाधानं करिष्ये ॥ चक्षुषी आज्येनेत्यंते अग्निं नवभिराज्याहुतिभिः शेषेणेत्यादि" इस प्रकार अन्वाधान करके चक्षुषीपर्यंत कर्म किये पीछे प्रधानहोम करना. तिसके मंत्र—"अग्निमीळे इतिनवानां मधुच्छंदा अग्निर्गायत्री ॥ अग्निद्वयसंसर्गार्थप्रथमाग्नौ प्रधानाज्यहोमे विनियोगः अग्निमीळे०" इस आदि नव ऋचाओंकरके प्रतिऋंचासें स्रुवापात्रकरके नव घृतकी आहुतियोंसें होम करना, और "अग्नय इदं नमम" इस प्रकार सब जगह त्याग करना. इस प्रकार प्रधानहोम करके और होमशेष समाप्त करके "अयंतेयोनिः०"

इस मंत्रसें ज्येष्ठाग्निका समिधामें समारोप करके, "**प्रत्यवरोह०**" इस मंत्रसें वह ज्येष्ठाग्नि दूसरे अग्निमें प्रत्यवरोहित करना, अर्थात् अग्निसमारोपित किई समिधा दूसरे अग्निमें हवन करनी, पीछे अग्निका ध्यान करना. पीछे दोनों स्त्रियोंसें अन्वारब्ध हुआ अन्वाधान करना. सो ऐसा—"**अग्निद्वयसंसर्गार्थे प्रथमसंसृष्टद्वितीयाग्नौ विहितहोमे देवतापरिग्रहार्थमन्वाधानं करिष्ये ॥ आज्यभागांते अग्निं प्रधानं षड्वारमाज्येन शेषेणेत्या०**" इस प्रमाण अन्वाधान करना. प्रोक्षणी, कुशा, दर्वी, स्रुवा, प्रणीता, आज्यपात्र, इध्मा, बर्हि इस प्रमाण आठ पात्र स्थापित करने. आज्यभागपर्यंत कर्म किये पीछे दर्वीपात्रविषे स्रुवपात्रसें चारवार घृत लेके दोनों पत्नियोंसें अन्वारब्ध हुआ होम करना. होमके मंत्र—"**अग्नावग्निरित्यस्य हिरण्यगर्भोग्निरष्टी ॥ अग्निद्वयसंसर्गार्थे संसृष्टाग्नौ प्रधानाज्यहोमे विनियोगः अग्नावग्निश्चरतिप्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अधिराज एषः ॥ तस्मै जुहोमि हविषा घृतेन मादेवानां मोमुहद्भागधेयं स्वाहा**" इस प्रमाण आहुति देके "**अग्नय इदं नमम,**" ऐसा त्याग करना. इसी प्रकार त्याग भी जानना. प्रत्येक आहुतिके समय दर्वीपात्रमें चारवार घृत लेना, विनियोग करना और त्यागका उच्चार करना, ये सब पहलेकी तरह करना. हूयमान आहुयोंके मंत्र—"**अग्निनाग्निर्मेधातिथिः काण्वोग्निर्गायत्री ॥ अग्निनाग्निःसमि० ॥ अस्तीदमिति तिसृणां विश्वामित्रोग्निरनुष्टुप् ॥ अंत्येत्रिष्टुभौ ॥ अस्तीदमधि० ॥ अरण्यो० ॥ उत्तानाया० ॥ पाहिनो अग्नइत्यस्य भर्गः प्रगाथोग्निर्बृहती ॥ पाहिनो० ॥ भिर्वसो०,**" इस प्रकार प्रधानहोम करके और होमशेष समाप्त करके अग्निहोत्री ब्राह्मणोंकों दो गौवोंके दान देके ब्राह्मणोंकों भोजन कराना. इस प्रमाण दोनों अग्नियोंका संसर्गप्रयोग समाप्त हुआ.

पत्न्योरेकायदिमृतादग्ध्वातेनैवतांपुनः आदधीतान्ययासार्धमाधानविधिनागृही ॥

"दो स्त्रियोंमेंसें जो एक स्त्री मर जावै तौ तिस संसर्गाग्निसेंही तिसका दहन करके गृहस्थाश्रमीनें दूसरी स्त्रीके साथ आधानविधिसें अग्नि उत्पन्न करके धारण करना."

द्वितीयादिविवाहकालः प्रमदामृतिवासरादितःपुनरुद्वाहविधिर्वरस्यच्च विषमेपरिवत्सरेशुभोयुगुलेचापिमृतिप्रदोभवेत् संकटेमहारुद्राभिषेकंमृत्युंजयमंत्रजपंवाकृत्वाविवाहःकार्य इतिभाति तृतीयामानुषीकन्यानोद्वाह्याम्रियतेहिसा विधवावाभवेत्तस्मात्तृतीयेर्कंसमुद्वहेत् ॥

अब द्वितीय आदि विवाहका काल कहताहुं.—"वरनें फिर विवाह करनेका सो पहली स्त्रीके मृतदिनसें विषम वर्षमें करना. वह शुभ होता है. सम वर्षमें किया जावै तौ मृत्युकों देता है." संकटमें तौ महारुद्रका अभिषेक अथवा मृत्युंजय मंत्रका जप करके विवाह करना ऐसा मुझकों प्रतिभान होता है. तीसरी मनुष्यकन्यासें विवाह नहीं करना, क्योंकी, वह मर जाती है, अथवा विधवा हो जाती है, तिस कारणसें तीसरे विवाहमें प्रथम आकके संग विवाह करना.

अथार्कविवाहः रविशन्योर्वारेहस्तर्क्षेवान्यत्रशुभदिनेवापुष्पफलयुतमर्कंगत्वाअर्ककन्यादातारमाचार्यंवृत्वारक्तगंधादिभूषितोदेशकालौस्मृत्वा ममतृतीयमानुषीविवाहजन्यदोषपरि

हारार्थंतृतीयमर्कविवाहंकरिष्ये आचार्यंवृत्वानांदीश्राद्धांतंकुर्यात् दातामधुपर्कयज्ञोपवीतवस्त्रगंधमाल्यादिभिर्वरंपूजयेत् अर्कस्यपुरतःस्थित्वा त्रिलोकवासिन्सप्ताश्वछाययासहितोरवे तृतीयोद्वाहजंदोषंनिवारयसुखंकुरुइतिप्रार्थ्य छायायुतंरविमर्केध्यात्वाब्लिंगैरभिषिच्यवस्त्रादिभिराकृष्णेनेतिमंत्रेणसंपूज्य श्वेतवस्त्रेणसूत्रेणचावेष्ट्यगुडौदनंनिवेद्यतांबूलंदद्यात् ममप्रीतिकरायेयंमयास्पृष्टापुरातनी अर्कजाब्रह्मणासृष्टाद्यास्मान्संप्रतिरक्षतुइत्यर्कंप्रदक्षिणीकृत्य नमस्तेमंगलेदेविनमःसवितुरात्मजे त्राहिमांकृपयादेविपत्नीत्वंमइहागता अर्कत्वंब्रह्मणासृष्टः सर्वप्राणिहितायच वृक्षाणामधिभूतस्त्वंदेवानांप्रीतिवर्धन तृतीयोद्वाहजंपापंमृत्युंचाशुविनाशयेतिचप्रदक्षिणीकुर्यात् अंतःपटधारणादिकन्यादानपर्यंतंविधिंकृत्वा कन्यादातादित्यस्यप्रपौत्रींसवितुःपौत्रीमर्कस्यपुत्रींकाश्यपगोत्रामर्ककन्याममुकगोत्रायवरायतुभ्यंसंप्रददे अर्ककन्यामिमांविप्रयथाशक्तिविभूषितां गोत्रायशर्मणेतुभ्यंदत्तांविप्रसमाश्रय दक्षिणांदत्वागायत्र्यावेष्टितसूत्रेणबृहत्सामेतिमंत्रेणअर्कवरयोःकंकणंबध्वार्कस्यचतुर्दिक्षुकुंभेषुविष्णुंनाममंत्रेणषोडशोपचारैःसंपूज्यअर्कस्योत्तरेर्कपत्न्यान्वारब्धोवरःअस्याःसम्यक्भार्यात्वसिद्ध्यर्थंपाणिग्रहहोमंकरिष्ये आघारदेवतेआज्येनेत्यंतेबृहस्पतिंअग्निंअग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचाज्यद्रव्येणशेषेणस्विष्टकृतं आघारांतंकृत्वासंगोभिरित्यस्यांगिरसोबृहस्पतिस्त्रिष्टुप् आज्यहोमेविनियोगः संगोभिरांगिरसो०बृहस्पतयइदं० यस्मैत्वेतिवामदेवोग्निस्त्रिष्टुप् यस्मैत्वांकामकामायवयंसम्राड्यजामहे तमस्मभ्यंकामंदत्वाथेदंत्वंघृतंदिवस्वाहा अग्नयइदं० ततोव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिर्हुत्वाहोमशेषंसमाप्यमयाकृतमिदंकर्मस्थावरेषुजरायुणा अंर्कापत्यानिनोदेहितत्सर्वंक्षंतुमर्हसि इतिप्रार्थ्यशांतिसूक्तपाठांतेगोयुग्ममाचार्यायदत्वास्वधृतवस्त्राणिगुरवेदत्वान्यानिधारयेत् दशत्रयोवाविप्राभोज्याः इत्यर्कविवाहः ॥

अब अर्कविवाह कहताहुं.

कर्तानें रविवार, शनिवार हस्तनक्षत्र अथवा अन्य किसीक शुभ दिनमें फूल और फलोंसें युत हुये आकके समीप जाके आकवृक्षरूपी कन्याकों देनेवाले आचार्यका वरण करके लाल चंदन, रोली आदिसें अलंकृत हुए वरनें देश और कालका स्मरण करके “**ममतृतीयमानुषीविवाहजन्यदोषपरिहारार्थं तृतीयमर्कविवाहं करिष्ये,**” ऐसा संकल्प करके आचार्यका वरण करके नांदीश्राद्धपर्यंत कर्म करना. दातानें मधुपर्क, यज्ञोपवीत, वस्त्र, गंध और पुष्पोंकी माला इत्यादिक उपचारोंसें वरकी पूजा करनी. पीछे आकवृक्षके आगे स्थित होके प्रार्थना करनी. तिसका मंत्र—“**त्रिलोकवासिन् सप्ताश्व छायया सहितो रवे ॥ तृतीयोद्वाहजं दोषं निवारय सुखं कुरु,**” ऐसी प्रार्थना करके छायासें युत हुये सूर्यका आकमें ध्यान करके जलदेवतामंत्रोसें (समुद्रज्येष्ठा०) इस आदि मंत्रसें अभिषेक करके पीछे वस्त्र आदि करके “**आकृष्णेन०**” इस मंत्रसें पूजा करके सुपेद वस्त्रसें अथवा सुपेद सूत्रसें वृक्षकों आवेष्टित करके गुडचावलोंकों निवेदन करके तांबूल देना. पीछे, “**ममप्रीतिकरायेयं मया स्पृष्टा पुरातनी ॥ अर्कजा ब्रह्मणा सृष्टाद्यास्मान् संप्रति रक्षतु,**” इस मंत्रसें आकवृक्षकों परिक्रमा करके फिर “**नमस्ते मंगले देवि नमः सवितुरात्मजे ॥ त्राहि मां कृ-**

पया देवि पत्नी त्वं म इहागता ॥ अर्के त्वं ब्रह्मणा सृष्टः सर्वप्राणिहिताय च ॥ वृक्षाणामधिभूतस्त्वं देवानां प्रीतिवर्धन ॥ तृतीयोद्वाहजं पापं मृत्युं चाशु विनाशय,” इस मंत्रसें परिक्रमा करनी. पीछे अंतःपटधारणसें कन्यादानपर्यंत विधि करके दातानें “आदित्यस्य प्रपौत्रीं सवितुः पौत्रीं अर्कस्य पुत्रीं काश्यपगोत्रामर्ककन्याममुकगोत्राय वराय तुभ्यं संप्रददे ॥ अर्ककन्यामिमां विप्र यथाशक्ति विभूषिताम् ॥ गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां विप्र समाश्रय,” इस मंत्रसें अर्ककी कन्याका दान करना. पीछे दक्षिणा देके गायत्री मंत्रसें अर्क और वरकों सूतसें आवेष्टित करके तिस सूत्रसें “बृहत्साम०” इस मंत्रसें आकवृक्ष और वरकों कंकण बांधके आकवृक्षकी चार दिशाओंमें चार कलश स्थापित करके प्रतिकलशपर नाममंत्रसें विष्णुकी षोडशोपचार पूजा करके आकवृक्षकी उत्तरकों अर्कपत्नीसें अन्वारब्ध हुए वरनें “अस्याः सम्यक्भार्यात्वसिद्ध्यर्थं पाणिग्रहहोमं करिष्ये,” ऐसा संकल्प करके अन्वाधान करना. सो ऐसा—“आघारदेवते आज्येनेत्यंते बृहस्पतिं अग्निं अग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं चाज्यद्रव्येण शेषेण स्विष्टकृतम्,” इस प्रमाण अन्वाधान करके आघारांत कर्म करके प्रधानहोम करना. पीछे “संगोभिरित्यस्यांगिरसो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप् ॥ आज्यहोमेविनियोगः ॥ संगोभिरांगिरसो० ॥ बृहस्पतय इदं नमम ॥ यस्मैत्वेति वामदेवोग्निस्त्रिष्टुप् ॥ यस्मै त्वां कामकामाय वयं सम्राड्यजामहे ॥ तमस्मभ्यं कामं दत्वाथेदं त्वं घृतं पिब स्वाहा ॥ अग्नय इदं नमम,” इन मंत्रोंसें होम करके पीछे व्यस्त और समस्त व्याहृतिमंत्रोंसें होम करके होमशेष समाप्त करके, “मया कृतमिदं कर्म स्थावरेषु जरायुणा ॥ अर्कापत्यानि नो देहि तत्सर्वं क्षंतु मर्हसि,” इस मंत्रसें प्रार्थना करके शांतिसूक्तका पाठ किये पीछे दो गौ आचार्यकों देके अपने धारण किये वस्त्र आचार्यकों देके पीछे दूसरे वस्त्रोंकों धारण करना. दश अथवा तीन ब्राह्मणोंकों भोजन देना. इस प्रमाण अर्कविवाह समाप्त हुआ.

श्रीमन्नाथांघ्रिकमलंदीनानाथदयार्णवं स्मारंस्मारंकामपूरमाह्निकाचरणंब्रुवे ॥

अब आन्हिकविधि कहताहुं.

दीन, अनाथ इन्होंकेविषे दयाके सागर और भक्तोंके मनोरथ पूर्ण करनेवाले ऐसे जो श्रीमान् लक्ष्मीपति तिन्होंके चरणकमलका वारंवार स्मरण करके आन्हिक आचरण कहताहुं.

प्रथमोक्तोबह्वृचानांप्रकारःसतुयाजुषैः ग्राह्योयत्रस्वसूत्रोक्तोविशेषःस्यान्नबाधकः ॥

ऋक् शाखियोंका पूर्व जो निर्णय कहा है तिसकों अपने सूत्रके मध्यमें कहा विशेष निर्णय नहीं बाधै तो यजुःशाखियोंनेंभी वही ग्रहण करना.

ब्राह्मेमुहूर्तेउत्थायश्रीविष्णुंस्मृत्वागजेंद्रमोक्षादिपठित्वाइष्टदेवतादिस्मरेत् समुद्रवसनेदेविपर्वतस्तनमंडिते विष्णुपत्निनमस्तुभ्यंपादस्पर्शंक्षमस्वमइतिभूमिंप्रार्थ्यगवादिमंगलानिपश्येत् ॥

ब्राह्ममुहूर्तमें उठके श्रीविष्णुका स्मरण करके गजेंद्रमोक्ष आदिक स्तोत्रोंका पाठ करके इष्टदेव आदिका स्मरण करना. पीछे “समुद्रवसनेदेवि पर्वतस्तनमंडिते ॥ विष्णुपत्नि न-

मस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे” इस प्रकार पृथिवीकी प्रार्थना करके गौ आदि मंगलपदार्थोंका दर्शन करना.

अथमूत्रपुरीषोत्सर्गादिविधिः तृणाद्यंतर्हितभूमौशिरः प्रावृत्ययज्ञोपवीतंनिवीतंपृष्ठतः कर्णेवाकृत्वाघ्राणपिधानंकृत्वादिवासंध्ययोरुदङ्मुखोरात्रौदक्षिणामुखोमौनी अनुपानत्कआसीनोमूत्रपुरीषोत्सर्गंकुर्यात् यज्ञोपवीतस्यनिवीतत्वंविनैवकर्णेधारणमनाचारः मार्गजलदेवालयनदीतीरादौमलोत्सर्गोनिषिद्धः हस्तान्द्वादशसंत्यज्यमूत्रंकुर्याज्जलाशयात् अवकाशेषोडशेवापुरीषेतुचतुर्गुणं प्रत्यर्कादिमेहनेस्वशकृद्दर्शनेचसूर्यंगांवापश्येत् ततोगृहीतशिश्नउत्थायशौचंकुर्यात् मूत्रोत्सर्गेशुद्धमृदंसकृत्लिंगेत्रिवारंवामकरेद्विवारमुभयोःकरयोर्दत्वातावद्वारंजलेनक्षालयेत् मूत्रात्तुद्विगुणंशुक्रेमैथुनेत्रिगुणंस्मृतं पुरीषेतु एकालिंगेगुदेतिस्रस्तथावामकरेदशउभयोः करयोःसप्तसप्तत्रिर्वापिपादयोः द्विगुणंब्रह्मचर्येस्याद्यतीनांचचतुर्गुणं एवंमृद्भिर्जलैःशौचंतदर्धं निशिकीर्तितं तदर्धमातुरेशूद्रस्त्रीबालानांतदर्धतः उक्तसंख्ययागंधलेपक्षयाभावेयावतातत्क्षयस्तावच्छौचं मृदार्द्रामलकमात्रा जलालाभेनशौचविलंबेसचैलंस्नानं यथोक्तशौचाकरणेतु गायत्र्यष्टशतंजप्त्वाप्राणायामत्रयंचरेत् अथमूत्रेचत्वारोगंडूषाःपुरीषेद्वादशाष्टौवाभोजनांतेषोडशकार्याः ॥

अब मूत्र आदि त्यागनेका विधि कहताहुं.

तृण आदिसें आच्छादित हुई पृथिवीपर शिरकों वस्त्र वेष्टित करके, यज्ञोपवीत कंठलंबित करके अथवा पृष्ठभागमें अथवा कानपर स्थापित करके और नासिकाकों आच्छादित करके दिनमें और प्रातःसंधिमें और सायंसंधिमें उत्तरकों मुखवाला और रात्रिविषे दक्षिणाकों मुखवाला, मौनी, जूतीजोडाकों नहीं पहना हुआ और बैठा हुआ ऐसा होके मूत्र और विष्ठाका त्याग करना. कंठलंबित किये विनाही यज्ञोपवीत कानपर धारण करना यह अनाचार होता है. रास्ता, पानी, देवताका मंदिर नदीका तीर इन आदिविषे मलका त्याग करना निषिद्ध है. जलके स्थानसें बारह हाथ जमीन त्यागके मूत्र करना. अवकाश होवै तौ सोलह हाथ जमीन त्यागकर मूत्र करना. जलके स्थानसें चौंसठ हाथ जमीन त्यागके विष्ठाकों त्यागना. सूर्य आदिके सन्मुख मूत्र करनेमें और अपनी विष्ठा देखनेमें सूर्य अथवा गौका दर्शन करना. पीछे लिंग हाथमें ग्रहण करके ऊठके शौच करना. मूत्र करनेमें शुद्ध माटी लेके एकवार लिंगकों, तीनवार वाम हाथकों और दोवार दोनों हाथोंकों लगाके तितनेवार पानीसें धोना. “वीर्यके निकसनेमें मूत्रके दुगुनी और मैथुन किये पीछे तिगुनी शुद्धि करनी ऐसा कहा है.” “विष्ठाके त्यागनेमें लिंगकों एकवार और गुदाकों तीनवार, वाम हाथकों दशवार और दोनों हाथोंकों सातसातवार और दोनों पैरोंकों सातसातवार अथवा तीनतीनवार इस प्रकार मृत्तिका लगानी. मृत्तिका लगायेपीछे पानीसें प्रक्षालन करना. गृहस्थाश्रमीसें ब्रह्मचारीनें दुगुना शौच करना और संन्यासीनें चौगुना करना. ऐसा माटी और पानीसें शौच करना. दिनका जो शुद्धिका प्रकार कहा है तिस्सें आधी शुद्धि रात्रिमें करनी. रोगीनें रात्रिके शौचसें आधा शौच करना. शूद्र, स्त्री और बालक इन्होंनें

रोगीसें आधा शौच करना. ” पहले मृत्तिका आदिकी जो संख्या कही है तिस्सें गंध और लेपका नाश नहीं होवै तौ जितनी वार माटी पानी करके गंध और लेपका नाश होवै तितनी वार लगाके शौच करना. शौच करनेमें ओली माटी आंवलाके प्रमाणसें लेनी. पानीके नहीं मिलनेसें शौच करनेमें विलंब होवै तौ वस्त्रोंसहित स्नान करना. यथोक्त शौच नहीं करनेमें गायत्रीमंत्रका आठसौ जप करके तीन प्राणायाम करने. केवल मूत्र किये पीछे चार कुल्ले करने. विष्ठाका त्याग किये पीछे बारह कुल्ले करने अथवा आठ कुल्ले करने. भोजनके अंतमें सोलह कुल्ले करने.

अथाचमनविधिः अप्रावृतशिरःकंठउपविष्ट उपवीतीप्राङ्मुखोवाअंगुष्ठमूलेनमुक्तांगुष्ठकनिष्ठहस्तेनानुष्णंफेनादिरहितंजलंहृदयंगतंत्रिःपिबेत् केशवाद्यैस्त्रिभिःपीत्वैकेनदक्षकरंमृजेत् द्वाभ्यामोष्ठौचसंमृज्यएकेनोन्मार्जयेच्चतौ जलमेकेनसंमंत्र्यैकेनवामकरंमृजेत् एकेनदक्षिणंपादंवाममेकेनचैवहि संप्रोक्ष्यैकेनमूर्धानमूर्ध्वोष्टंनासिकाद्वयं नेत्रयुग्मंश्रोत्रयुग्मंदक्षिणोपक्रमंक्रमात् नाभिंहृदयमूर्धानौदक्षवामभुजौस्पृशेत् ॥

अब आचमनका विधि कहताहुं.

शिरपर और कंठपर वस्त्र नहीं वेष्टन किया हुआ, बैठा हुआ, यज्ञोपवीत वाम कंधापर धारण किया है ऐसा पूर्वको मुखवाला अथवा उत्तरको मुखवाला होके मुक्त हैं अंगुठा और कनिष्ठिका जिसकी ऐसे हस्तसें फेन और बुद्बुदसें रहित, शीत और हृदयको स्पर्श कर सके ऐसा जल अंगुष्ठमूलसें तीनवार पीना. “ **केशवायनमः, नारायणायनमः, माधवायनमः,** इन तीन नामोंसें प्रत्येक नामकरके जल पीना. ” “ **गोविंदायनमः,** इस मंत्रसें दाहिने हाथको धोना. “ **विष्णवेनमः, मधुसूदनायनमः** ” इन दो मंत्रोंसें दोनों होठोंको धोना. “ **त्रिविक्रमायनमः** ” इस एक मंत्रसें दोनों होठोंके अंसोंको प्रोक्षण करना. “ **वामनायनमः** ” इस एक मंत्रसें जल अभिमंत्रित करके “ **श्रीधरायनमः** ” इस एक मंत्रसें वामे हाथको धोना. “ **हृषीकेशायनमः** ” इस एक मंत्रसें दाहिने पैरको धोना. “ **पद्मनाभायनमः** ” इस एक मंत्रसें वामे पैरको धोना. “ **दामोदरायनमः** ” इस एक मंत्रसें मस्तकपर प्रोक्षण करना. “ **संकर्षणायनमः** ” इस मंत्रसें ऊपरके होठका प्रोक्षण करना. “ **वासुदेवायनमः** ” इस मंत्रसें नासिकाके दाहिने छिद्रको स्पर्श करना. “ **प्रद्युम्नायनमः** ” इस मंत्रसें नासिकाके वाम छिद्रको स्पर्श करना. “**अनिरुद्धायनमः**” इस मंत्रसें दाहिने नेत्रको स्पर्श करना. “ **पुरुषोत्तमायनमः** ” इस मंत्रसें वाम नेत्रको स्पर्श करना. “ **अधोक्षजायनमः** ” इस मंत्रसें दाहिने कानको स्पर्श करना. “ **नारसिंहायनमः** ” इस मंत्रसें वाम कानको स्पर्श करना. इस प्रमाण दक्षिणोपक्रमसें क्रमकरके जानना. “ **अच्युतायनमः** ” इस मंत्रसें नाभीको स्पर्श करना. “ **जनार्दनायनमः** ” इस मंत्रसें हृदयको स्पर्श करना. “ **उपेंद्रायनमः** ” इस मंत्रसें मस्तकको स्पर्श करना. “**हरयेनमः**” इस मंत्रसें दक्षिण भुजाको स्पर्श करना. “ **श्रीकृष्णायनमः** ” इस मंत्रसें वामभुजाको स्पर्श करना.

केचित्केशवाद्यैस्त्रिभिःपीत्वाद्वाभ्यांप्रक्षालयेत्करा गंडोष्ठौमार्जयेद्द्विर्द्विरेकैकंपाणिपादयोः यद्वा ओष्ठमार्जोन्मृजेद्द्विर्द्विरेकैकंपाणिपादयोः शेषंप्राग्वदित्याहुः तत्रोर्ध्वोष्ठस्यांगुल्यग्रैः स्पर्शः अंगुष्ठतर्जनीभ्यांनासिकयोः अंगुष्ठानामिकाभ्यांनेत्रयोःअंगुष्ठकनिष्ठिकाभ्यांकर्णयोर्नाभेश्च तलेनहृदयस्य पाणिनामूर्ध्नःअंगुल्यग्रैर्भुजयोः एतावदाचमनविधावशक्तस्त्रिःपीत्वा करंप्रक्षाल्यदक्षिणकर्णंस्पृशेत् कांस्यायःसीसत्रपुपित्तलपात्रैर्नाचामेत् श्रौताचमनंतुदेव्यास्त्रयःपादाआपोहिष्ठेतिनवपादाः सप्तव्याहृतयोदेवीपादत्रयंद्वेधाविभक्तंदेवीशिरश्चेतिचतुर्विंशतिस्थानानि ॥

कितनेक ग्रंथकार केशव आदि तीन नामोंसें प्रतिनामकों आचमन करना, गोविंद, विष्णु इन दो नामोंसें दोनों हाथोंका प्रक्षालन करना, मधुसूदन, त्रिविक्रम इन दो नामोंसें कपोलोंकों मार्जन करना, वामन, श्रीधर इन दो नामोंसें होठोंकों मार्जन करना, हृषीकेश इस एक नामसें हाथकों मार्जन करना, पद्मनाभ इस एक नामसें पैरकों मार्जन करना, अथवा दो दो नामोंसें ओष्ठप्रांतकों मार्जन अथवा प्रक्षालन करना, हाथ और पैरकों एक एक नामसें मार्जन करना, और शेष रहे नाम पहलेके प्रमाण जानने ऐसा कहते हैं. **तिन्होंमें स्पर्श कैसा करनेका सो कहते हैं.**—अंगुलीके अग्रभागसें ऊपरके होठकों स्पर्श करना. अंगूठा और तर्जनी अंगुलीसें नासिकाके छिद्रकों स्पर्श करना. अंगूठा और अनामिका अंगुलीसें नेत्रोंकों स्पर्श करना. अंगूठा और कनिष्ठिका अंगुलीसें कान और नाभीकों स्पर्श करना. पसारे हुये हाथसें हृदयकों स्पर्श करना. हाथोंसें मस्तककों स्पर्श करना. अंगुलियोंके अग्रभागोंसें भुजाओंकों स्पर्श करना. पूर्वोक्त यह आचमनका विधि करनेमें असमर्थ होवै तौ तिसनें केशवादिक तीन नामोंसें तीन वार जल पीके हाथ धोके दाहिने कानकों स्पर्श करना. कांसी, लोह, सीसा, रांग और पित्तल इन्होंके पात्रोंसें आचमन नहीं करना. **अब श्रौताचमन कहते हैं.**—गायत्रीमंत्रके तीन चरण; **“ आपोहिष्ठा० ”** इन तीन ऋचाओंके नव चरण; सात व्याहृतिमंत्र; गायत्रीके तीन चरण; और शिरोमंत्रके दो भाग इस प्रमाण चौवीस स्थान जानने.

अथाचमननिमित्तानि कर्मकुर्वन्नधोवायुनिःसरणेश्रुपातेक्रोधेमार्जारस्पर्शेक्षुतेवस्त्रपरिधानेरजकाद्यंत्यजदर्शनेआचामेत् स्नात्वापीत्वाभुक्त्वासुप्त्वाचाचामेत् विण्मूत्ररेतःशौचांतेआचामेत् सर्वत्राचमनासंभवेदक्षिणकर्णस्पर्शः दंतलग्नान्नंमृदूपायेननिर्हरेत् रक्तनिर्गमेदोषोक्तेः दंतलग्नंचदंतवत् तस्यान्नस्यकालांतरेनिर्गमेआचमनं वामहस्तस्थितेदर्भेदक्षिणेननचाचामेत् करद्वयस्थितेदर्भेआचामेत्सोमपोभवेत् नचोच्छिष्टंपवित्रंतद्भुक्तेपित्र्येचसंत्यजेत् विण्मूत्रोत्सर्गेचत्यजेत् ॥

अब आचमनके निमित्तोंको कहताहुं.—कर्मकालमें अधोवायुके निकसनेमें, आंशूके निकसनेमें, क्रोधमें, बिलावके स्पर्शमें, छीकके आनेमें, वस्त्रके परिधानमें, धोबी और चांडालके दर्शनमें आचमन करना. स्नान किये पीछे, पान किये पीछे, भोजन किये पीछे, शयनके अनंतर आचमन करना. विष्ठा, मूत्र और वीर्य इन्होंके शौचके अंतमें आचमन क-

रना. सब जगहमें आचमनके असंभवमें दाहिने कानकों स्पर्श करना. दंतोंमें लगे अन्नकों कोमल उपायसें निकासना; क्योंकी रक्तके निकसनेंमें दोष कहा है. दंतोंमें लगा अन्न दंतकी तरह होता है. दंतोंमें लगा अन्न तीसी कालमें नहीं निकसके दूसरे कालमें निकसै तौ तिसही कालमें आचमन करना. “वाम हाथमें डाभ लेके दाहिने हाथसें आचमन नहीं करना. दोनों हाथोंमें डाभोंका पवित्र धारण करके आचमन करना. तिस्सें वह सोमपान करनेवाला मनुष्य होवैगा. वह डाभोंका पवित्र उच्छिष्ट नहीं होता है. भोजन और पित्र्यकर्म किया होवै तौ उस पवित्रका त्याग करना.” विष्ठा और मूत्रके त्यागनेमें पवित्रका त्याग करना.

अथदंतधावनं कंटकीक्षीरवृक्षापामार्गादिकाष्ठैःकार्यं काष्ठालाभेश्राद्धोपवासादिनिषिद्ध दिनेचपर्णादिनाप्रदेशिनीवर्ज्यांगुल्यावाद्वादशगंडूषैर्वादंतान्शोधयेत् ॥

अब दंतधावन कहताहुं.

खदिरादि कंटकीवृक्ष, आक आदि दूधवाले वृक्ष और ऊंगा आदि काष्ठ इन्होंसें दंतून करना. काष्ठ नहीं मिलै तिस दिनमें और श्राद्ध तथा उपवासके दिनमें पत्ता आदिकरके अथवा प्रदेशिनीसें वर्जित अंगुलीकरके अथवा बारह कुल्लोंकरके दंतून करना.

अथसंक्षेपतःस्नानविधिः नद्यादौगत्वाशिखांबध्वाजानूर्ध्वजलेतिष्ठन्नन्यथातूपविश्याचम्यममकायिकवाचिकमानसिकदोषनिरसनपूर्वकंसर्वकर्मसुशुद्धिसिद्ध्यर्थं प्रातःस्नानंकरिष्ये इतिसंकल्प्यजलंनत्वाप्राङ्मुखः प्रवाहाभिमुखोवात्रिरवगाह्यांगानिनिमृज्यस्नात्वा द्विराचम्यापोहिष्ठेतिमार्जनंकृत्वाइमंमेगंगेइतित्रिर्जलमालोड्याघमर्षणंत्रिरावृतेन ऋतंचेतिसूक्तेन कात्यायनैर्द्रुपदेतिऋचाजलनिमग्नतयाकृत्वाप्लुत्याचम्यजलतर्पणंकुर्यान्नवा तदित्थंउपवीतीब्रह्मादयोयेदेवास्तान्देवान्०भूर्देवानित्यादि निवीतीकृष्णद्वैपायनादयोयेऋषयः तानित्यादि प्राचीनावीतीसोमःपितृमान्यमोंगिरस्वानग्निष्वात्तादयोयेपितरस्तानित्यादि एकनद्यांस्नानेअन्यांनदींनस्मरेत् अत्रतैत्तिरीयादिभिस्तर्पणेऋष्यादीनांनामांतराण्युक्तानितानिसंक्षेपविधौतस्यतर्पणस्यकृताकृतत्वान्नोक्तानि ॥

अब संक्षेपसें स्नानविधि कहताहुं.

नदी आदि तीर्थविषे जाके शिखा अर्थात् चोटी बांधके गोडापर्यंत पानीमें स्थित होके और कम पानी होवै तौ बैठके आचमन करके संकल्प करना. तिसका मंत्र.—“**मम कायिकवाचिकमानसिकदोषनिरसनपूर्वकं सर्वकर्मसु शुद्धिसिद्ध्यर्थं प्रातःस्नानं करिष्ये,**” ऐसा संकल्प करके जलकों नमस्कार करना. पीछे पूर्वके तर्फ मुखवाला अथवा प्रवाहके सन्मुख मुखवाला होके तीन वार गोते मारके सब अंगोंकों धोके स्नान करना. पीछे दो वार आचमन करके “**आपोहिष्ठा०**” इन तीन ऋचाओंसें मार्जन करके “**इमंमे गंगे०**” इस मंत्रसें तीन वार जलकों आलोडित करके “**ऋतंच०**” इस सूक्तकों तीन वार पढके अघमर्षण करना. कात्यायनोंनें “**द्रुपदा०**” इस ऋचासें अघमर्षण करना. जलके मध्यमें

निमग्न होके स्नान करके और आचमन करके जलतर्पण करना अथवा नहीं करना. सो ऐसा—उपवीती होके “ **ब्रह्मादयो ये देवास्तान्देवांस्तर्पयामि ।। भूर्देवानित्यादि.** ” पीछे निविती अर्थात् कंठमें जनेऊकों करके “ **कृष्णद्वैपायनादयो ये ऋषयस्तानृषींस्तर्पयामि** ” ऐसा तर्पण करना. पीछे अपसव्य होके “ **सोमः पितृमान्यमोंगिरस्वानग्निष्वात्तादयोयेपितरः तान्पितॄंस्तर्पयामि** ” ऐसा तर्पण करना. एक नदीमें स्नान करनेके समयमें दूसरी नदीका स्मरण नहीं करना. यह जलतर्पणके समयमें तैत्तिरीयशाखी आदिकोंनें तर्पणमें ऋषि आदि अन्य देवता कही हैं; परंतु संक्षेपविधिमें वह जलतर्पण कृताकृत होनेसें वे ऋषि और देवता नहीं कहे हैं.

अथगृहेउष्णोदकेनस्नानंनतुशीतोदकेन तद्विधिश्चपात्रेशीतोदकंप्रक्षिप्यतदुपरिउष्णोदकेनापूर्यशंनोदेवी०आपःपुनंतु०द्रुपदादिवे०ऋतंच०आपोहिष्ठेतिपंचभिर्ऋग्भिरभिमंत्र्य इमंमे इत्यादिनातीर्थानिस्मरन्स्नायात् गृहस्नानेसंकल्पआचमनंअघमर्षणंतर्पणंचन अंतेआचमनं मार्जनंचकार्यं एवंस्नात्वावस्त्रेणपाणिनावाजलापनयनमकृत्वाशुष्कंशुभ्रकार्पासवस्त्रंपरिधायस्नानार्द्रवस्त्रमूर्ध्वतउत्तारयेत् विकच्छोनुत्तरीयश्चानग्नश्चावस्त्रएवच श्रौतस्मार्तंनैवकुर्यात् द्विगुणवस्त्रोदग्धवस्त्रःस्यूतग्रथितवस्त्रःकाषायवस्त्रादयोदिगंबरश्चनग्नाः निष्पीडितंवस्त्रंनस्कंधेक्षिपेत् चतुर्गुणीकृत्यवस्त्रंगृहेऽधोदशंनद्यामूर्ध्वदशंस्थलेनिष्पीडयेत् नतुत्रिगुणं उत्तरीयंजीवत्पितृकजीवज्ज्येष्ठभ्रातृकैर्नधार्यं प्रावारवस्त्रंतुसर्वैर्धार्यं इतिप्रातर्नित्यं[1]स्नानं ।।

अब गृहस्नान कहताहुं.—घरमें गरम पानीसें स्नान करना. शीतल पानीसें नहीं. तिसकी विधि—पात्रमें शीतल पानी डालके तिसके उपर गरम पानी पूरित करना. पीछे “ **शंनोदेवी०, आपःपुनंतु०, द्रुपदादिवे०, ऋतंच०,** और **आपोहिष्ठा०** ” इन पांच ऋचाओंसें वह पानी अभिमंत्रित करके “ **इमंमे गंगे०** ” इत्यादिक मंत्रोंसें तीर्थका स्मरण करके स्नान करना. घरविषे स्नान करनेमें संकल्प, आचमन, अघमर्षण और तर्पण ये नहीं करने. स्नान किये पीछे आचमन और मार्जन करना. इस प्रकार स्नान करके वस्त्रसें अथवा हाथोंसें अंगोंके उपरके पानीकों दूर किये विना सूखा, और सुपेद ऐसा रुईका वस्त्र धारण करके स्नानसें गीले हुए वस्त्रकों उपरसें उतारना. “कच्छ अर्थात् धोतीकी लांगडसें रहित और उत्तरीयवस्त्र अर्थात् अंगोछा दुपट्टाविशेषसें रहित, नग्न और वस्त्रसें रहित ऐसे मनुष्यनें श्रौत और स्मार्त कर्म नहीं करने.” दुगुना वस्त्र धारण करनेवाला, दग्धवस्त्रवाला, सीवन किया और ग्रंथिसें युत वस्त्रवाला, काषायवस्त्रवाला और दिगंबर ये सब नग्न कहाते हैं. निचोडे हुये वस्त्रकों कंधापर नहीं धारण करना. वस्त्रकों चौगुना करके घरमें नीचे दशा करके और नदीमें उपरकों दशा करके भूमीपर निचोडना. वस्त्रकों तिगुना करके नहीं निचोडना. जीवता हुआ पितावालेनें और जीवता हुआ बडे भाईवालेनें उत्तरीयवस्त्र नहीं धारण करना. अंगवस्त्र तौ सबोंनें धारण करना. इस प्रकार प्रातःकालका नित्य[2]स्नान समाप्त हुआ.

चंडालसूतकिसूतिकोदक्याचितिकाष्ठशवचंडालछायादिस्पर्शेस्नानं चांडालादिस्पर्शेन

---

[1] मध्याह्नस्नानमपिनित्यमित्यन्य । [2] मध्याह्नस्नान यह भी नित्यस्नान है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं.

मारभ्यतत्स्पृष्टस्पृष्टेषुतृतीयपर्यंतंसचैलंस्नानं चतुर्थस्याचमनमात्रं तदूर्ध्वंप्रोक्षणंद्वितीयादेर्दंडतृणाद्यंतरितस्पर्शेत्वाचमनमेव वस्त्रांतरितःसाक्षात्स्पर्शएवेतितत्रचतुर्थस्यैवाचमनं नैमित्तिकस्नानंरात्रावपि मृतेजन्मनिसंक्रांतौश्राद्धेजन्मादिनेतथा अस्पृश्यस्पर्शनेचैवनस्नायादुष्णवारिणा नैमित्तिकेजलतर्पणादिविधिर्न नित्यस्नानमकृत्वाभुक्तौउपवासःग्रहसंक्रांत्यादिनैमित्तिकस्नानमकृत्वाभोजनेपानेअष्टसहस्रजपः शूद्रादिस्पर्शनिमित्तेउपवासः श्वकाकचंडालादिस्पर्शेस्नानमकृत्वाभुक्तौपानेचत्रिरात्रं रजकादिस्पर्शेतदर्धं इतिनैमित्तिकस्नानं ॥

चांडाल, सूतकी, सूतिका स्त्री, रजस्वला स्त्री, चिताका काष्ठ, मुरदा, चांडालकी छाया इन आदिके स्पर्शमें वस्त्रसहित स्नान करना. चांडाल आदिकों स्पर्श करनेवालेसें आरंभ करके तिसनें दूसरेकों स्पर्श किया और दूसरेनें तीसरेकों स्पर्श किया इस प्रमाण स्पर्श करनेमें तीसरेपर्यंत वस्त्रोंसहित स्नान करना. चौथेनें आचमन मात्र करना. तिस्सें उपरंत प्रोक्षण करना. दूसरा आदिकों दंड और तृण आदिके अंतरित स्पर्श होनेमें तौ आचमनही करना. वस्त्रसें अंतरित स्पर्श हुआ होवै तौ साक्षात् स्पर्शही है इसलिये तिसविषे चौथेनें आचमन करना. नैमित्तिक स्नान रात्रिमेंभी करना. “ मरना, जन्मना, संक्रांति, श्राद्धदिन, जन्मदिन, और नहीं स्पर्श करनेकों योग्य ऐसी वस्तुका स्पर्श यह निमित्त होवै तौ गरम पानीसें स्नान नहीं करना. ” नैमित्तिक स्नानमें जलसें तर्पण करना इत्यादिक विधि नहीं है. नित्यस्नान कियेविना भोजन करनेमें उपवास करना. ग्रहण और संक्रांति आदि नैमित्तिक प्राप्त होके स्नान कियेविना भोजन और पान करै तौ आठ हजार गायत्रीका जप करना. शूद्र आदिका स्पर्श हुये पीछे स्नान कियेविना भोजन करै तौ उपवास करना. कुत्ता, काक और चांडाल आदिके स्पर्शमें स्नान नहीं करके भोजन और पान करै तौ तीन रात्रि व्रत करना. धोबी आदिके स्पर्शमें स्नान नहीं करके भोजन आदि करै तौ अर्धप्रायश्चित्त करना. इस प्रकार नैमित्तिक स्नान कहा.

दर्शव्यतीपातरथसप्तम्यादौस्नानंकार्तिकस्नानंमाघस्नानादिकंचकाम्यं इतिजलावगाहादिरूपवारुणस्नानानि ॥

अमावस, व्यतीपात, रथसप्तमी इन आदिविषे स्नान, कार्तिकस्नान, और माघस्नान आदि ये काम्यस्नान हैं. इस प्रकार जलमें गोता मारके स्नान करना इत्यादि वारुणस्नान कहे.

अथगौणस्नानानि आपोहिष्ठादिभिर्मंत्रैःप्रोक्षणंमंत्रस्नानं गायत्र्यादशकृत्वोजलमभिमंत्र्यतेनसर्वांगप्रोक्षणंगायत्र्यं भस्मस्नानमाग्नेयं आर्द्रवस्त्रेणांगमार्जनंकापिलं विष्णुपादोदकविप्रपादोदकप्रोक्षणविष्णुध्यानादिभिश्चस्नानांतराणि गौणस्नानैर्जपसंध्यादौशुद्धिर्नतुश्राद्धदेवार्चनादौ ब्रह्मयज्ञेविकल्पः ॥

अब गौणस्नान कहते हैं.—“ आपोहिष्ठा० ” इत्यादिक मंत्रोंसें अंगोंपर प्रोक्षण करना, वह मंत्रस्नान होता है. गायत्रीमंत्रसें दशवार जल अभिमंत्रित करके तिस्सें सब अंगोंपर प्रोक्षण करना, गायत्र्यस्नान होता है. भस्मसें स्नान करना आग्नेयस्नान होता है. ओला वस्त्रसें अंगोंकी शुद्धि करनी कापिलस्नान होता है. विष्णुका चरणतीर्थ और ब्राह्म-

णका चरणतीर्थ इन्होंसें प्रोक्षण और विष्णुका ध्यान आदिसें अनेक स्नान कहे हैं. गौणस्नानोंसें जप, संध्या इत्यादिकमें शुद्धि होती है; परंतु श्राद्ध और देवताका पूजन आदिमें नहीं होती है. गौणस्नान किये पीछे ब्रह्मयज्ञ करना अथवा नहीं करना.

अथतिलकविधिः प्रातःपुंड्रंमृदाकुर्याद्धुत्वाचैवतुभस्मना मृदश्चगोपीचंदनतुलसीमूलसिंधुतीरजान्हवीतीरवल्मीकादिस्थाः ललाटोदरहृदयकंठेदक्षिणपार्श्वबाहुकर्णदेशेवामपार्श्वबाहुकर्णदेशेपृष्ठेककुदिचेतिद्वादशस्थानेषुशुक्लेकेशवादिनामभिःकृष्णपक्षेसंकर्षणादिनामभिः शिरसिवासुदेवेतिमृदातिलकोविधेयः ॥

अब तिलकविधि कहताहुं.

"प्रातःकालका स्नान किये पीछे मृत्तिकासें (उभा) तिलक करना. नित्यहोम किये पीछे भस्मसें (आडा) तिलक करना. गोपीचंदन, तुलसीकी जडकी माटी, समुद्रके तीरकी माटी, गंगाजीके तीरकी माटी और बंबी आदिकी माटी ये सब स्थलोंकी मृत्तिका लेनी." इस माटीसें मस्तक, पेट, हृदय, कंठ, दाहिनी पसली, दाहनी बाहु, दाहिना कान, वामी पसली, वामी बाहु, वामा कान, मगर और ग्रीवाका पृष्ठभाग इन बारह स्थानोंमें शुक्लपक्षविषे केशव आदि बारह नामोंसें और कृष्णपक्षविषे संकर्षण आदि बारह नामोंसें और मस्तकमें वासुदेव इस नामसें मृत्तिकाका तिलक करना.

अथभस्मत्रिपुंड्रः श्राद्धेयज्ञेजपेहोमेवैश्वदेवेसुरार्चने भस्मत्रिपुंड्रैःपूतात्मामृत्युंजयतिमानवः भस्मगृहीत्वाअग्निरितिभस्मवायुरितिभस्मजलमितिभस्मस्थलमितिभस्मव्योमेतिभस्मसर्वंहवाइदंभस्ममनएतानिचक्षूंषिभस्मानीतिमंत्रेणाभिमंत्र्य जलमिश्रितेनमध्यमांगुलित्रयगृहीतेनललाटहृदयनाभिगलांसबाहुसंधिपृष्ठशिरःस्थानेषुशिवमंत्रेणनारायणाष्टाक्षरेणवागायत्र्यावाप्रणवेनवात्रिपुंड्रान्कुर्यात् ॥

अब भस्मके त्रिपुंड्रकों कहताहुं.—"श्राद्ध, यज्ञ, जप, होम, वैश्वदेव और देवपूजा इन्होंमें भस्मका त्रिपुंड्र लगाना. तिस्सें मनुष्य पवित्र होके मृत्युकों जीतता है." भस्म हाथमें लेके—"**अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वं हवा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंषि भस्मानि**" इन मंत्रोंसें तिस भस्मकों अभिमंत्रित करके तिसमें पानी मिलाके दाहिने हाथके मध्यकी तीन अंगुलियोंसें भस्म लेके मस्तक, हृदय, नाभि, कंठ, कंधा, बाहुकी संधि, मगर और शिर इन स्थानोंमें शिवमंत्रसें अथवा नारायणके अष्टाक्षरमंत्रसें अथवा गायत्रीमंत्रसें अथवा प्रणवमंत्रसें त्रिपुंड्र करने.

अथसंध्याकालः उत्तमातारकोपेतामध्यमालुप्ततारका अधमासूर्यसहिताप्रातःसंध्यात्रिधामता उत्तमासूर्यसहितामध्यमालुप्तभास्करा अधमातारकोपेतासायंसंध्यात्रिधामता अध्यर्धयामादासायंसंध्यामाध्याह्निकीष्यते सर्वेषांसंध्यात्रयंनद्यादौबहिरेवप्रशस्तं साग्निकस्यतुप्रादुष्करणाद्यनुरोधेनसायंप्रातःसंध्येगृहेकर्तव्ये ॥

अब संध्याकालकों कहताहुं.

तारे दीखते होवैं ऐसे प्रातःकालमें करी संध्या उत्तमकाल, तारे नहीं दीखते होवैं ऐसे प्रातःकालमें करी संध्या मध्यमकाल, और सूर्यसें युत हुये प्रातःकालमें करी संध्या अधमकाल है. इस प्रकार प्रातःसंध्याकाल तीन प्रकारका जानना. सूर्यसें युत हुये सायंकालमें करी संध्या उत्तम काल, सूर्य नहीं दीखता होवै ऐसे सायंकालमें करी संध्या मध्यमकाल और तारे दीखने लग जावैं ऐसे सायंकालमें करी संध्या अधमकाल है. इस प्रकार सायंसंध्याकाल तीन प्रकारका जानना. डेढ प्रहर दिन चढेसें प्रारंभ करके सायंकालपर्यंत मध्यान्हकी संध्याका काल है. नदी आदि तीर्थ होवै तौ सब शाखियोंनें तीनों संध्या तिस तिस तीर्थपर जाके बाहिर करनी श्रेष्ठ है. अग्निहोत्रीनें तौ अग्नि प्रदीप्त करना इत्यादिके अनुरोधसें सायंकाल और प्रातःकालकी संध्या घरमें करनी उचित है.

अथसंक्षेपतःसंध्याप्रयोगोबह्वृचानां दर्भद्वयकृतेपवित्रेग्रंथियुतेग्रंथिरहितेवाहस्तयोर्धृत्वाद्विराचम्यप्राणायामंकुर्यात् प्रणवस्यपरब्रह्मऋषिःपरमात्मादेवतादेवीगायत्रीच्छंदः सप्तानांव्याहृतीनांविश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवसिष्ठकश्यपाऋषयः अग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेंद्रविश्वेदेवादेवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्बृहतीपंक्तित्रिष्टुप्जगत्यश्छंदांसिगायत्र्याविश्वामित्रऋषिःसवितादेवतागायत्रीच्छंदः गायत्रीशिरसःप्रजापतिर्ऋषिःब्रह्माग्निवाय्वादित्यादेवताःयजुश्छंदः प्राणायामेविनियोगः सर्वांगुलीभिस्तर्जनीमध्यमाभिन्नाभिर्वानासांधृत्वादक्षिणेनवायुमाकृष्यरोधयेत् ओंभूः ओंभुवः ओंस्वः ओंमहः ओंजनः ओंतपः ओंसत्यं ओंतत्सवितुर्वरेण्यं०यात् ओंआपोज्योतीरसोमृतंब्रह्मभूर्भुवःसुवरोम् इतिसप्रणवसप्तव्याहृतिगायत्रीशिरस्कं.पठित्वावामनासयावायुंविसृजेदितिप्राणायामःसर्वशाखासाधारणः ममोपात्तदुरितक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातःसंध्यामुपासिष्येआपोहिष्ठेतितृचस्यांबरीषःसिंधुद्वीपऋषिःआपोगायत्री मार्जनेविनि० आपोहिष्ठेतिनवभिः पादैःसप्रणवैः कुशोदकेनमूर्ध्निनवकृत्वोमार्जयेत् यस्यक्षयायेत्यधोमार्जयेत् नद्यादौतीर्थस्थंताम्रमृन्मयादिभूमिष्ठपात्रस्थंवावामकरस्थंवाजलंदर्भादिनादायमार्जनंसर्वत्र नतुधाराच्युतजलेन ॥

अब संक्षेपसें ऋक्शाखियोंके संध्याप्रयोगकों कहताहुं.

ग्रंथिसें युत अथवा ग्रंथिसें रहित ऐसे दो दो डाभोंके पवित्रोंकों हाथोंमें धारण करके दोवार आचमन करके प्राणायाम करना. सो ऐसा—**प्रणवस्य परब्रह्मऋषिः परमात्मा देवता ॥ देवी गायत्रीच्छंदः ॥ सप्तानां व्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयः ॥ अग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेंद्रविश्वेदेवा देवताः ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्बृहतीपंक्तित्रिष्टुप्जगत्यश्छंदांसि ॥ गायत्र्या विश्वामित्रऋषिः ॥ सवितादेवता ॥ गायत्रीच्छंदः ॥ गायत्रीशिरसः प्रजापतिर्ऋषिः ॥ ब्रह्माग्निवाय्वादित्यादेवताः ॥ यजुश्छंदः प्राणायामेविनियोगः”** सब अंगुलियोंसें अथवा तर्जनी और मध्यमासें रहित अंगुलियोंसें नासिकाकों ग्रहण करके नासिकाके दाहिने छिद्रसें वायुकों खेंचके निरोधित करना. पीछे **“ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम् ॐतत्सवितुर्वरेण्यं०**

यात् ॐआपोज्योतीरसोमृतंब्रह्मभूर्भुवःसुवरोम्" इस प्रकार प्रणव, सात व्याहृति, गायत्री और शिर इन मंत्रोंका तीन वार उच्चार करके वाम नासिकाके छिद्रसें रोके हुये यह वायुकों छोडना. इस प्रकार सब शाखावालोंका साधारण प्राणायाम जानना. इस रीतिसें प्राणायाम किये पीछे "**ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातःसंध्यामुपासिष्ये**" ऐसा संकल्प करके मार्जन करना. मार्जनका मंत्रः—"**आपोहिष्ठेतितृचस्यांबरीषः सिंधुद्वीपआपोगायत्री मार्जने विनियोगः आपोहिष्ठा०**" इन तीन ऋचाओंके ॐकारयुक्त नव पादोंसें कुशोदकसें मस्तकपर नववार मार्जन करना, और "**यस्य क्षयाय०**" इस पादसें अधोभागमें मार्जन करना. नदी आदि स्थानोंमें तीर्थका जल अथवा तांबाका अथवा माटीका पात्र पृथिवीपर धरके तिस पात्रमें स्थित हुआ जल अथवा वाम हाथमें स्थित हुआ जल डाभ आदिसें लेके मार्जन करना. धारासें च्युत हुये जलकरके मार्जन नहीं करना. इस प्रकार सब जगह मार्जनका निर्णय जानना.

अथमंत्राचमनं सूर्यश्चेतिमंत्रस्ययाज्ञवल्क्यउपनिषदऋषिः सूर्यमन्युमन्युपतयोरात्रिश्चदेवताःप्रकृतिश्छंदःमंत्राचमनेविनियोगः सूर्यश्चमामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षंतां यद्रात्र्यापापमकार्षं मनसावाचाहस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणशिश्ना रात्रिस्तदवलुंपतु यत्किंचदुरितंमयि इदमहंमाममृतयोनौसूर्येज्योतिषिजुहोमिस्वाहेतिजलंपिबेत् आचम्य आपोहिष्ठेतिनवर्चस्यांबरीषःसिंधुद्वीपआपोगायत्रीअंत्येद्वेअनुष्टुभौ मार्जनेविनियोगः प्रणवेनव्याहृतिभिर्गायत्र्याप्रणवांतया आपोहिष्ठेतिसूक्तेनमार्जनंचचतुर्थकं ऋगंतेर्धर्चांतेवापादांतेवापि मार्जयेत् गायत्रीशिरसाचांतेमार्जयित्वाघमर्षणं ऋतंचेतितृचस्यमाधुच्छंदसोघमर्षणोभाववृत्तमनुष्टुप् अघमर्षणेविनि० दक्षिणहस्तेजलंकृत्वाऋतंचेतिऋक्त्रयंद्रुपदेतिऋचंवाजप्त्वा दक्षिणनासयापापपुरुषंनिरस्य तज्जलंनावलोक्यवामभागेक्षितौक्षिपेत् आचम्य गायत्र्याविश्वामित्रःसवितागायत्री श्रीसूर्यायार्घ्यदानेवि० प्रणवव्याहृतिपूर्वयागायत्र्यातिष्ठन्सूर्योन्मुखःजलांजलिंत्रिःक्षिपेत् कालातिक्रमेप्रायश्चित्तार्थंचतुर्थं असावादित्योब्रह्मेतिप्रदक्षिणंभ्रमन् जलंसिंचेत् अर्घ्यांजलौतर्जन्यंगुष्ठयोगोनकार्यः इममर्घ्यदानंप्रधानमित्येके अंगमितिपरे ॥

अब मंत्राचमन कहताहुं.

"**सूर्यश्चेतिमंत्रस्य याज्ञवल्क्यउपनिषदऋषिः सूर्यमन्युमन्युपतयोरात्रिश्चदेवताः ॥ प्रकृतिश्छंदः ॥ मंत्राचमनेविनियोगः ॥ सूर्यश्चमामन्युश्चमन्युपतयश्चमन्युकृतेभ्यः ॥ पापेभ्योरक्षंतां ॥ यद्रात्र्यापापमकार्षं ॥ मनसावाचाहस्ताभ्यां ॥ पद्भ्यामुदरेणशिश्ना ॥ रात्रिस्तदवलुंपतु यत्किंचदुरितंमयि ॥ इदमहंमाममृतयोनौसूर्येज्योतिषिजुहोमिस्वाहा.**" इस मंत्रकों कहके जल प्राशन करना. पीछे आचमन करके मार्जन करना. मार्जनका मंत्र—"**आपोहिष्ठेतिनवर्चस्यांबरीषः सिंधुद्वीपआपोगायत्री ॥ अंत्येद्वेअनुष्टुभौ मार्जनेविनियोगः ॥ आपोहिष्ठा०**" प्रणवमंत्रसें पहिला, समस्त व्याहृतिमंत्रोंसें दूसरा, प्रणवांत गायत्रीमंत्रसें तीसरा और "**आपोहिष्ठा०**" इस सूक्तसें चौथा ऐसे मार्जन करने. "**आपोहिष्ठा०**" इस सूक्तकी प्रत्येक ऋचा अथवा ऋचाका प्रत्येक अर्ध अथवा ऋचाका प्रत्येक चरण क-

हके मार्जनके अर्थ मस्तकपर जलका सिंचन करना. गायत्रीशिरोमंत्रसें मार्जन करके पीछे अघमर्षण करना. अघमर्षणका मंत्र.—“ ऋतंचेति तृचस्य माधुच्छंदसोऽघमर्षणो भाववृत्तमनुष्टुप् ॥ अघमर्षणे विनियोगः” दाहिने हाथमें जल लेके “ ऋतंच० ” इन तीन ऋचा अथवा “ द्रुपदा० ” इस ऋचाका जप करके नासिकाके दाहिने छिद्रकरके उच्छ्वासरूपसें पापपुरुषकों तिस जलपर निकासके तिस जलकों नहीं देखके वामभागविषे पृथिवीपर डाल देना. पीछे आचमन करके अर्घ्यप्रदान करना. सो ऐसा.—**गायत्र्याविश्वामित्रःसविता गायत्री ॥ श्रीसूर्यायार्घ्यप्रदाने विनियोगः** ” ऐसा कहके सूर्यके सन्मुख खडा रहके प्रणवव्याहृतिपूर्वक गायत्रीमंत्रसें जलकी तीन अंजलि छोड देनी. संध्याके कालका अतिक्रम हुआ होवै तौ प्रायश्चित्तके अर्थ चौथी अंजलि देनी. पीछे “असावादित्योब्रह्म” इस मंत्रसें परिक्रमा करता हुआ जल सिंचन करना. अर्घ्यकी अंजलीमें तर्जनी अंगुली और अंगूठाका योग नहीं करना. यह अर्घ्यदान प्रधानकर्म है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. दूसरे ग्रंथकार इस अर्घ्यदानकों अंगभूत ऐसा कहते हैं.

अथगायत्रीजपः प्राणायामंकृत्वा गायत्र्याविश्वामित्रःसवितागायत्रीजपेवि०तत्सवितुर्हृदयायनमः वरेण्यंशिरसेस्वाहा भर्गोदेवस्यशिखायैवषट् धीमहिकवचायहुं धियोयोनोनेत्रत्रयायवौषट् प्रचोदयात्अस्त्रायफट् इतिषडंगन्यासःकार्यः नवाकार्योन्यासविधेरवैदिकत्वादितिगृह्यपरिशिष्टेस्पष्टं एतेनाक्षरन्यासपादन्यासादीनांमुद्रादिविधेःशापमोचनादिविधेश्चतांत्रिकत्वेनावैदिकत्वादनावश्यकत्वंवेदितव्यं मंत्रदेवतांध्यायेत् केचिद्गायत्र्यादिध्यानंवदंति आगच्छवरदेदेविजपेमेसन्निधौभव गायंतंत्रायसेयस्माद्गायत्रीत्वंततःस्मृतेति तामावाह्य यो देवःसवितास्माकंधियोधर्मादिगोचरे प्रेरयेत्तस्यतद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे इतिमंत्रार्थंचिंतयन् मौनीप्रातःसूर्याभिमुखस्तिष्ठन्नामंडलदर्शनात्सप्रणवव्याहृतिकायागायत्र्या अष्टशतमष्टाविंशतिंदशकंवाजपेत् सायंवायव्याभिमुखआनक्षत्रदर्शनादितिविशेषः अनध्यायेष्टाविंशतिंप्रदोषेदशैवजपेदितिकारिकायां रुद्राक्षविद्रुमादिमालाभिरंगुलीपर्वभिर्वाजपः अष्टशतंचतुःपंचाशत्सप्तविंशतिर्वामालामणयः उत्तरन्यासंकृत्वोपस्थानं जातवेदसे०तच्छंयो०नमोब्रह्मण इतिमंत्रैःसायंप्रातश्चोपतिष्ठेदितिपरिशिष्टमतं स्मृत्यंतरेमित्रस्यचर्षणीत्यादिमित्रदेवताकैःप्रातःइमंमेवरुणेत्यादिभिर्वरुणपदोपेतैः सायंसूर्योपस्थानमुक्तं प्राच्यैदिशेनमइंद्रायनमःआग्नेय्यैदिशेनमोग्नयेनमःइत्यादिनादशदिग्वंदनांते संध्यायैनमःगायत्र्यैनमःसावित्र्यै०सरस्वत्यै०सर्वाभ्योदेवताभ्योनमइतिनत्वा उत्तमेशिखरेजातेभूम्यांपर्वतमूर्धनि ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञातागच्छदेवियथासुखमितिविसृज्यभद्रंनोअपिवातयमनःइतित्रिरुक्त्वाप्रदक्षिणंभ्रमन्नासत्यलोकादापातालादालोकालोकपर्वतात् येसंतिब्राह्मणादेवास्तेभ्योनित्यंनमोनमइतिभूम्युपसंग्रहंनमस्कृत्य द्विराचामेदिति ॥

अब गायत्रीमंत्रका जप कहताहुं.—प्राणायाम करके “ **गायत्र्याविश्वामित्रः सविता गायत्री जपेविनियोगः ॥ तत्सवितुर्हृदयायनमः वरेण्यं शिरसेस्वाहा ॥ भर्गोदेवस्य शिखायै वषट् ॥ धीमहि कवचायहुं ॥ धियोयोनो नेत्रत्रयायवौषट् ॥ प्रचोदयात् अस्त्रा-**

यफट् ” इस प्रकार षडंगन्यास करना, अथवा नहीं करना; क्योंकी, न्यासका विधि वेदोंमें नहीं कहा है ऐसा **गृह्यपरिशिष्ट** ग्रंथमें स्पष्ट है. इस उपरसें अक्षरन्यास, पादन्यास आदि मुद्रादिक विधि और मंत्रोंका शापविमोचन आदि विधि ये प्रकार तंत्रग्रंथोंमें कहे हैं, वेदमें कहे नहीं हैं, इस उपरसें इन्होंकी आवश्यकता नहीं है. पीछे मंत्रदेवताका ध्यान करना. कितनेक ग्रंथकार गायत्री आदि देवतोंका ध्यान करना ऐसा कहते हैं. पीछे “ **आगच्छ वरदे देवि जपे मे सन्निधौ भव ॥ गायंतं त्रायसे यस्मात् गायत्री त्वं ततः स्मृता** ” इस मंत्रसें गायत्रीका आवाहन करके पीछे “ **यो देवः सविताऽस्माकं धियो धर्मादिगोचरे ॥ प्रेरयेत्तस्य तद्भर्गस्तद्वरेण्यमुपास्महे** ” इस प्रकार मंत्रके अर्थका चितवन करता हुआ मौनी होके प्रातःकालमें सूर्यके सन्मुख खडा रहके सूर्यमंडलका दर्शन होवै तबतक, प्रणव और व्याहृतियोंसहित गायत्रीमंत्रका १०८ अथवा २८ अथवा १० जप करना. सायंकालमें वायव्यदिशाके सन्मुख होके नक्षत्र दीखने लगैं तबतक जप करना, यह विशेष जानना. अनध्यायके दिनमें २८ और प्रदोषदिनमें १० जप करना ऐसा **कारिका** ग्रंथमें कहा है. रुद्राक्ष और मूंगा आदिकी मालाकरके अथवा अंगुलियोंके पर्वोंकरके जप करना. १०८ अथवा ५४ अथवा २७ इस प्रकार मालाकों मणि होने उचित हैं. उत्तरन्यास करके उपस्थान करना. सो ऐसा.—“**जातवेद० तच्छंयो० नमोब्रह्मणे०** ” इन मंत्रोंसें सायंकालमें और प्रातःकालमें उपस्थान करना, ऐसा **गृह्यपरिशिष्टका** मत है. दूसरी स्मृतिमें सूर्य है देवता जिन्होंकी ऐसे “ **मित्रस्यचर्षणी०** ” इत्यादिक मंत्रोंसें प्रातःकालमें और वरुणपदोंसें युक्त “ **इमंमेवरुण०** ” इत्यादिक मंत्रोंसें सायंकालमें सूर्योपस्थान करना ऐसा कहा है. उपस्थानके अनंतर **प्राच्यै दिशेनम इंद्रायनमः, आग्नेय्यैदिशेनमोग्नये नमः**” इस आदि प्रकारसें दश दिशाओंका वंदन किये पीछे “ **संध्यायैनमः, गायत्र्यैनमः, सावित्र्यैनमः, सरस्वत्यैनमः, सर्वाभ्योदेवताभ्योनमः** ” ऐसे नमस्कार करके “ **उत्तमे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतमूर्धनि ॥ ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्** , ” इस मंत्रसें संध्याका विसर्जन करके “ **भद्रंनोअपिवातयमनः** ” इस मंत्रकों तीनवार कहके परिक्रमा करके “ **आसत्यलोकादापातालादालोकालोकपर्वतात् ॥ ये संति ब्राह्मणा देवास्तेभ्यो नित्यं नमोनमः** ” इस मंत्रसें पृथिवीकों स्पर्शपूर्वक प्रणाम करके दोवार आचमन करना. इस प्रकार ऋक्शाखियोंका संध्याविधि संक्षेपसें कहा.

अथतैत्तिरीयाणांसंकल्पांतंपूर्ववत् गायत्रींध्यात्वा आयातुवरदादेवीअक्षरंब्रह्मसंमितं गायत्रींछंदसांमातेदंब्रह्मजुषस्वमे सर्ववर्णेमहादेविसंध्याविद्येसरस्वति अजरेअमरेदेविसर्वदेविनमोस्तुते ओजोसिसहोसिबलमसिभ्राजोसिदेवानांधामनामासि विश्वमसिविश्वायुःसर्वमसिसर्वायुरभिभूरोम्गायत्रीमावाहयामि सावित्रीमावाहयामि सरस्वतीमावाहया० छंदऋषीनावाह० श्रियं०ह्रियमावाहयामि इत्यावाह्यमार्जनंपूर्ववत् आपोवाइदꣳसर्वंविश्वाभूतान्यापःप्राणावाआपःपशवआपोन्नमापोमृतमापःसम्राडापोविराडापः स्वराडापश्छंदाꣳस्यापोज्योतीꣳष्यापोयजूꣳष्यापः सत्यमापः सर्वादेवताआपोभूर्भुवःसुवरापॐमितिजलमभिमंत्र्यसूर्यश्चेतिपूर्ववन्मंत्राचमनं दधिक्राव्णोअकारिषमितिऋचमुक्त्वा आपोहिष्ठेतितिसृभिःहिरण्यवर्णाइतिपवमानःसुवर्जनइत्यनुवाकेनचऋगंतेमार्जनांतेऽघमर्षणंकृत्वा नकृत्वावाघ्र्यदानादि

गायत्रीजपांतमावाहनंमंत्रवर्ज्यंपूर्ववत् न्यासविधेरवैदिकत्वमुक्तमेव जपांतेउपस्थानं मित्रस्यचर्षणी० मित्रोजना० प्रसमित्र० यच्चिद्धिते० यत्किंचेदं० कितवासोयद्रि० इतिषड्भिरुपस्थाय प्राच्यैदिशेयाश्चदेवताएतस्यांप्रतिवसंत्येताभ्यश्चनमोनमइत्यादिना अधरांताः षट्नत्वाअवांतरायैदिशेयाश्चदेवताइतिचनत्वानमोगंगायमुनयोर्मध्येइत्यादिनामुनिदेवान्नत्वा सꣳस्रवंतुदिशोइतिमंत्रंपठित्वा गोत्राद्युच्चार्यपूर्ववद्भूम्युपसंग्रहंनत्वापूर्ववत्संध्यांविसृजेदिति ॥

अब तैत्तिरीयशाखियोंका संध्याप्रयोग कहताहुं.

आचमनसें संकल्पपर्यंत प्रयोग पूर्व रीतिसें तैत्तिरीयशाखियोंनें करके गायत्रीका ध्यान करके आवाहन करना. आवाहनके मंत्र—“ **आयातु वरदा देवी अक्षरं ब्रह्मसम्मितम् ॥ गायत्रीं छंदसां मातेदं ब्रह्म जुषस्व मे ॥ सर्ववर्णे महादेवि संध्याविद्ये सरस्वति ॥ अजरे अमरे देवि सर्वदेवि नमोस्तुते ॥ ओजोसि सहोसि बलमसि भ्राजोसि देवानां धामनामासि विश्वमसि विश्वायुः सर्वमसि सर्वायुरभिभूरोम् ॥ गायत्रीमावाहयामि ॥ सावित्रीमावाहयामि ॥ सरस्वतीमावाहयामि ॥ छंदऋषीनावाहयामि ॥ श्रियमावाहयामि ॥ ह्रियमावाहयामि,** ” इन मंत्रोंसें संध्याका आवाहन करके पूर्व रीतिसें मार्जन करना. मार्जन किये पीछे हाथमें जल लेके “ **आपोवाइदꣳ सर्वं विश्वाभूतान्यापः प्राणावा आपः पशवआपोन्नमापोमृतमापः सम्राडापोविराडापः स्वराडापश्छंदाꣳस्यापोज्योतीꣳष्यापोयजूꣳष्यापः सत्यमापः सर्वादेवता आपो भूर्भुवः सुवरापॐम्,** ” इन मंत्रोंसें जल अभिमंत्रित करके “ **सूर्यश्च०** ” इस मंत्रसें पूर्वकी तरह मंत्राचमन करना. पीछे “ **दधिक्राव्णो०** ” यह ऋचा कहके “ **आपोहिष्ठा०** ” इन तीन ऋचा “ **हिरण्यवर्णाः०** ” और “ **पवमानः सुवर्जनः०** ” यह अनुवाक, इस मंत्रकरके प्रतिऋचाके अंतमें मार्जन करना. तिसके अंतमें अघमर्षण करके अथवा नहीं करके अर्घ्यदानसें गायत्रीजपपर्यंत कर्म करना. गायत्रीका आवाहन मंत्रसें वर्जित पूर्वकी तरह करना. न्यासविधि वेदमें नहीं कहा है ऐसा पहलेही कह चुके हैं. गायत्रीजपके अंतमें उपस्थान करना. सो ऐसा—“ **मित्रस्यचर्षणी० मित्रोजनान्० प्रसमित्र० यच्चिद्धिते० यत्किंचेदं० कितवासोयद्रि०** ” इन छह ऋचाओंको कहके उपस्थान करना. पीछे—“**प्राच्यै दिशे याश्च देवता एतस्यां प्रतिवसंत्येताभ्यश्च नमोनमः** ” इत्यादिक मंत्रोंसें पूर्व आदि चार दिशा, ऊर्ध्वदिशा और नीचेकी दिशा इन छह दिशाओंकों प्रणाम करके “ **अवांतरायै दिशे याश्च देवता एतस्यां प्रतिवसंत्येताभ्यश्च नमोनमः** ” इत्यादिक मंत्रोंसें विदिशाओंकों प्रणाम करना. पीछे “ **नमो गंगायमुनयोर्मध्ये०** ” इत्यादिक मंत्रसें ऋषि और देवतोंको प्रणाम करके “ **सꣳस्रवंतु दिशो०** ” इस मंत्रका पाठ करके और गोत्र, प्रवर, नाम इन्होंका उच्चारण करके पूर्वोक्त रीतिसें पृथिवीकों स्पर्शपूर्वक प्रणाम करके पहले कहेकी तरह संध्याका विसर्जन करना. इस प्रणाम तैत्तिरीयशाखियोंका संध्याप्रयोग समाप्त हुआ.

अथकात्यायनानांसंध्याप्रयोगः आचम्यभूःपुनातुभुवःपुनातुस्वःपुनातुभूर्भुवःस्वःपुनात्वित्यादिनापावनंकृत्वा अपवित्रःपवित्रोवेतिविष्णुंस्मृत्वाआसनादिविधिंकृत्वाद्भिराचम्यप्राणानायम्यपूर्ववत्संकल्प्य गायत्रींत्र्यक्षरांबालांसाक्षसूत्रकमंडलुं रक्तवस्त्रांचतुर्वक्त्रांहंसवाहनसं

स्थितां ब्रह्माणींब्रह्मदैवत्यांब्रह्मलोकनिवासिनीं आवाहयाम्यहंदेवीमायांतींसूर्यमंडलात् आगच्छवरदेदेवित्र्यक्षरेब्रह्मवादिनि गायत्रींछंदसांमातर्ब्रह्मयोनेनमोस्तुतेइत्यावाह्यपूर्ववत्आपोहिष्ठेतितृचेनमार्जयेत् सूर्यश्चेतिमंत्रस्यनारायणऋषिःसूर्योदेवताअनुष्टुप्छंदः आचमनेविनियोगःसूर्यश्चेति०जलंप्राश्याचम्य आपोहिष्ठेतिनवऋक्मार्जनंकुर्यादितिकेचिदाहुः बहवस्तुसंकल्पाद्यंतेसूर्यश्चेतिमंत्राचमनंकृत्वापोहिष्ठेतितिसृभिःप्रतिपादंमार्जनांतेऽघमर्षणंकार्यं नतुमार्जनद्वयमित्याहुः सुमित्र्यादुर्मित्र्याइतिद्वयोःप्रजापतिर्ऋषिःआपोदेवतायजुश्छंदःआदानप्रक्षेपे०सुमित्र्यानआपओषधयःसंतुइतिजलमादायदुर्मित्र्यास्तस्मैसंतुयोस्मान्द्वेष्टियंचवयंद्विष्म इतिवामभुविक्षिपेत् ततऋतंचेतितृचेनद्रुपदेतित्रिरुक्तऋचावाघमर्षणंपूर्ववत् सायंप्रातश्च त्रिरर्घ्यदानंपुष्पयुतजलेनपूर्ववत् मध्यान्हेसकृत्गायत्र्यापरितउक्षणं अथोपस्थानं उद्वयमुदुत्यमितिद्वयोःप्रस्कण्वःसूर्योनुष्टुप्गायत्र्यौ चित्रंदेवानामांगिरसःकुत्सःसूर्यस्त्रिष्टुप् तच्चक्षुर्देध्यङ्ङाथर्वणःसूर्यःपुरउष्णिक् उपस्थाने०उद्वयंतमस० १ उदुत्यंजा० १ चित्रंदे०१ तच्चक्षुर्देवहितंइतिऊर्ध्वबाहुःसूर्यमुदीक्षमाणोयथाशाखंपठेत् प्राणायामादित्रिधायन्यासमुद्रार्पणादिविधिः कृताकृतः तेजोसीतिपरमेष्ठीप्रजापतिराज्यंयजुःआवाहने० तेजोसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामासिप्रियंदेवानामनाधृष्टंदेवयजनमसि परोरजसइतिविमलःपरमात्मानुष्टुप्गायत्र्युपस्था० गायत्र्यस्येकपदीद्विपदीत्रिपदीचतुष्पद्यपदसिनहिपद्यसेनमस्तेतुरीयायदर्शनायपदायपरोरजसेसावदोम् ततोगायत्रीजपांतंपूर्ववत् ततःशक्तेनविभ्राडित्यनुवाकेनपुरुषसूक्तेनवाशिवसंकल्पेनवामंडलब्राह्मणेनवोपस्थानंकार्यं अत्रऋक्शाखोक्तवत्दिग्वंदनंकेचित्कुर्वंति ततउत्तमेशिखरे० देवागातुविदोगातुमितिमंत्राभ्यांविसर्जनं भूम्युपसंग्रहंनमस्कारादिपूर्ववत् इतिकात्यायनसंध्या ॥

अब कात्यायनोंका संध्याप्रयोग कहताहुं.

आचमन करके "भूःपुनातु भुवःपुनातु स्वःपुनातु भूर्भुवःस्वःपुनातु" इत्यादिक मंत्रविधिसें शुद्धि करके "अपवित्रः पवित्रोवा०" इस मंत्रसें विष्णुका स्मरण करना. पीछे आसन आदि विधि करके और दोवार आचमन करके प्राणायाम करना, और पूर्वकी तरह संकल्प करके गायत्री देवीका आवाहन करना. आवाहनका मंत्र—"गायत्रीं त्र्यक्षरां बालां साक्षसूत्रकमंडलुम् ॥ रक्तवस्त्रां चतुर्वक्त्रां हंसवाहनसंस्थिताम् ॥ ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम् ॥ आवाहयाम्यहं देवींमायांतीं सूर्यमंडलात् ॥ आगच्छ वरदे देवि अक्षरे ब्रह्मवादिनि ॥ गायत्रीं छंदसां मातर्ब्रह्मयोने नमोस्तु ते," ये मंत्र कहके गायत्रीका आवाहन करके पूर्व कहेकी तरह "आपोहिष्ठा०" इन तीन ऋचाओंसें मार्जन करना. "सूर्यश्चेतिमंत्रस्य नारायण ऋषिः ॥ सूर्यो देवता ॥ अनुष्टुप् छंदः ॥ आचमनेविनियोगः ॥ सूर्यश्च०" ये मंत्र कहके जल प्राशन करके पीछे आचमन करना. "आपोहिष्ठा०" इन नव ऋचाओंसें मार्जन करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. बहुतसे ग्रंथकार तौ संकल्प आदि किये पीछे "सूर्यश्चेति०" इस मंत्रसें मंत्राचमन करके "आपोहिष्ठा०" इन तीन ऋचाओंसें प्रत्येक चरणके अंतमें मार्जन करके पीछे अघमर्षण करना,

दो मार्जन नहीं करने ऐसा कहते हैं. "सुमित्र्या दुर्मित्र्या इतिद्वयोः प्रजापतिर्ऋषिः आपोदेवता ॥ यजुश्छंदः आदानप्रक्षेपेविनियोगः ॥ सुमित्र्या न आप ओषधयः संतु" इस मंत्रसें हाथमें जल लेके, "दुर्मित्र्यास्तस्मै संतु योस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः" यह मंत्र कहके वामभागमें पृथिवीपर तिस जलकों त्यागना. पीछे "ऋतंच०" इन तीन ऋचाओंकों कहके अथवा "द्रुपदा०" इस ऋचाकों तीन वार कहके पूर्वोक्त रीतिसें अघमर्षण करना. सायंकालमें और प्रातःकालमें पुष्पयुक्त पानीसें तीन वार अर्घ्य देना. मध्यान्हमें एकही अर्घ्य देना. गायत्रीमंत्रसें चारों तर्फ जलकों सिंचता हुआ परिक्रमा करनी. अब उपस्थान कहते हैं. उपस्थानके मंत्र—"उद्वयमुदुत्यमिति द्वयोः प्रस्कण्वः सूर्योनुष्टुप्गायत्र्यौ ॥ चित्रंदेवानामांगिरसः कुत्सः सूर्यस्त्रिष्टुप् ॥ तच्चक्षुर्दध्यङ्ङाथर्वणः सूर्यः पुरउष्णिक् ॥ उपस्थाने विनियोगः ॥ उद्वयंतमस० १ उदुत्यंजा० १ चित्रंदेवा० १ तच्चक्षुर्देवहितं०" ये ऋचा उपरकों बाहु करके सूर्यके सन्मुख होके कहनी. पीछे प्राणायाम आदि करना. न्यास, मुद्रा, तर्पण इत्यादिक विधि करना अथवा नहीं करना. "तेजोसीति परमेष्ठी प्रजापतिराज्यं यजुः आवाहने विनियोगः ॥ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमासि धामनामासि प्रियंदेवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥ परोरजस इतिविमलः परमात्मानुष्टुप् ॥ गायत्र्युपस्थाने विनियोगः ॥ गायत्र्यस्येकपदीद्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहिपद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शनाय पदाय परोरजसे सावदोम्" इन मंत्रोंसें उपस्थान किये पीछे गायत्रीजपपर्यंत कर्म पूर्वकी तह करना. पीछे शक्तिमा होवै तौ तिसनें "विभ्राट्०" यह अनुवाक अथवा **पुरुषसूक्त** अथवा **शिवसंकल्पसूक्त** अथवा **मंडलब्राह्मण** इन्होंसें उपस्थान करना. ऋक्शाखावालोंकों जैसा दिशाओंका वंदन कहा है तैसाही यहांभी दिशाओंका वंदन कितनेक करते हैं. पीछे "उत्तमे शिखरे०" "देवागातुविदोगातुं०" इन मंत्रोंसें संध्याका विसर्जन करना. पृथिवीकों नमस्कार आदि पूर्वोक्त रीतिसें करना. इस प्रकार कात्यायनोंकी संध्या कही.

संध्यामुपासतेयेतेनिष्पापाब्रह्मलोकगाः अन्यकर्मफलंनास्तिसंध्याहीनेशुचित्वतः जीवमानोभवेच्छूद्रोमृतःश्वाजायतेध्रुवं ॥

"जो द्विज नियमसें संध्याकी उपासना करते हैं वे पापोंसें रहित होके अंतमें ब्रह्मलोककों प्राप्त होते हैं." संध्या नहीं करनेवाला द्विज अपवित्र होता है, और वह अपवित्र होनेसें तिसकों अन्य कर्मका फल नहीं मिलैगा, और जो संध्या नहीं करता है वह जीवता हुआ शूद्र है और मृत हुए पीछे निश्चय करके कुत्ता हो जाता है.

संध्यात्रयेकालातिक्रमेप्रायश्चित्तार्थमेकमर्घ्यमधिकंदत्वारात्रौप्रहरपर्यंतंदिनोक्तकर्माणिकुर्यात् ब्रह्मयज्ञंसौरंचवर्जयेत् सर्वथासंध्यालोपेप्रतिसंध्यमेकोपवासोयुतमष्टोत्तरसहस्रंवागायत्रीजपः अत्यशक्तौप्रतिसंध्यालोपेशतगायत्रीजपः द्व्यहंत्र्यहंलोपेतदावृत्तिःततःपरंकृच्छ्रादिकल्प्यं ॥

प्रातःसंध्या, माध्यान्हसंध्या और सायंसंध्या इन्होंके मुख्यकालका अतिक्रम होवै तौ प्रायश्चित्तके अर्थ एक अर्घ्य अधिक देना, और रात्रिमें प्रहरपर्यंत दिनविषे कहे कर्म करने, अ-

ह्मयज्ञ, और सौरसूक्त रात्रिमें नहीं पढना. सब प्रकारसें संध्याका लोप हो जावै तौ संध्यासंध्याके प्रति एक एक उपवास, और १०००० अथवा १००८ गायत्रीजप करना. अति असामर्थ्यसें संध्या नहीं करी जावै तौ प्रति संध्याकों १०० गायत्रीजप करना. दो दिन अथवा तीन दिन संध्या नहीं करी जावै तौ गायत्रीजपकी आवृत्ति करनी, और तिस्सें अधिक दिन संध्याका लोप होवै तौ कृच्छ्र आदि प्रायश्चित्त करना उचित है.

अथौपासनहोमः स्वयंहोमोमुख्यः अशक्तौपत्नीपुत्रःकुमारीभ्राताशिष्योभागिनेयोजामाताऋत्विग्वा पुत्रादिर्दंपत्योःसंनिधानेएकतरसंनिधानेवाजुहुयात् त्यागंयजमानः पत्नीवाकुर्यात् तस्याअसंनिधौतदाज्ञयाऋत्विगादिरपि पत्न्याऋतुप्रसवोन्मादादिदोषेतुतदाज्ञांविनापि ऋत्विगादिस्त्यागंकुर्यात् स्वयंहोमेफलंयत्स्यादन्यैर्होमेतदर्धकं पर्वणितुस्वयमेवजुहुयात् तत्रप्रातःसूर्योदयात्प्राक्अग्नीनांगृह्याग्नेर्वाप्रादुष्करणंकृत्वासूर्योदयास्तोत्तरंहोमःकार्यः प्रादुष्करणकालातिक्रमे ॐभूर्भुवःस्वःस्वाहेतिमंत्रेणस्रुवाज्याहुतिरूपंसर्वप्रायश्चित्तमाज्यसंस्कारपूर्वकंकृत्वाहोमः सूर्योदयोत्तरंदशघटिकापर्यंतंप्रातर्होमकालोमुख्यः ततआसायंगौणः सायंनवनाडिकापर्यंतंमुख्यः ततआप्रातर्गौणः मुख्यकालातिक्रमेकालातिक्रमनिमित्तप्रायश्चित्तपूर्वकममुकहोमंकरिष्यइति संकल्प्याज्यंसंस्कृत्यस्रुचिचतुर्गृहीतंगृहीत्वासायंकालेदोषावस्तर्नमःस्वाहेतिहुत्वा प्रातस्तुप्रातर्वस्तर्नमःस्वाहेतिहुत्वाहौम्यंसंस्कृत्यानित्यहोमः श्रौतहोमंकृत्वास्मार्तहोमः केचित्स्मार्तहोमंपूर्वमाहुः आधानेपुनराधानेसायमुपक्रमोहोमः सायंप्रातर्होमयोर्द्रव्यैक्यं कर्त्रैक्यंच प्रातर्यजमानःकर्ताचेत्कर्तृभेदोनदोषाय ॥

अब औपासनहोम कहताहुं.

सायंकालमें और प्रातःकालमें अग्निविषे होम करनेका सो आप करना मुख्य होता है. अपनेकों सामर्थ्य नहीं होवै तौ स्त्री, पुत्र, कुमारी, भ्राता, शिष्य, भानजा, जमाई अथवा ऋत्विक् इन्होंमांहसें एक कोईसेनें देना. स्त्री और पतिके सन्निधानमें अथवा एक कोईसेके सन्निधानमें पुत्र आदिनें होम देना, और त्याग यजमान अथवा स्त्रीनें कहना. यजमानकी स्त्री समीपमें नहीं होवै तौ तिसकी आज्ञासें ऋत्विक् आदिनें भी त्याग कहना. यजमानकी स्त्री रजस्वला, प्रसव, उन्माद इन आदि दोषसें युक्त होवै तौ तिसकी आज्ञाविना भी ऋत्विक् आदिनें त्याग कहना. “ आपनें किये होममें जो फल होता है तिस्सें दूसरेसें कराये होममें आधा फल है. ” पर्वकालमें तौ आपही होम करना. प्रातःकालमें सूर्योदयके पहले और सायंकालमें सूर्यास्तके पहले अग्नि (दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य और आहवनीय) अथवा गृह्याग्निकों प्रज्वलित करके प्रातःकालमें सूर्योदयके उपरंत और सायंकालमें सूर्यके अस्तके पीछे होम देना. प्रज्वलित करनेके कालका अतिक्रम होवै तौ “ **ॐभूर्भुवःस्वःस्वाहा** ” इस मंत्रसें आज्यसंस्कारपूर्वक स्रुवापात्रसें घृतकी आहुति देनी. यह सब प्रायश्चित्त करके पीछे होम देना. सूर्यके उदयके उपरंत दश घडीपर्यंत प्रातर्होमका मुख्यकाल है. तिस्सें अनंतर सायंकालपर्यंत गौणकाल जानना. सायंकालमें नव घडीपर्यंत मुख्यकाल है. तिस्सें उपरंत प्रातःकालपर्यंत गौणकाल है. होमके मुख्यकालके अतिक्रममें “ **कालातिक्रमनिमित्तप्राय-**

श्चित्तपूर्वकममुकहोमं करिष्ये," ऐसा संकल्प करके आज्यसंस्कार करना. पीछे स्रुचिपात्रमें चारवार घृत लेके सायंकालविषे "**दोषावस्तर्नमः स्वाहा**" इस मंत्रसें आहुति देनी. प्रातःकालमें होवै तौ "**प्रातर्वस्तर्नमः स्वाहा**" इस मंत्रसें आहुति देनी. इस प्रकार प्रायश्चित्ताहुति देके होमद्रव्यका संस्कार करके नित्यहोम करना. पहले श्रौतहोम करके पीछे स्मार्तहोम करना. कोईक ग्रंथकार स्मार्तहोम पहले करना ऐसा कहते हैं. आधान और पुनराधानके स्थानमें सायंकालविषे होमका आरंभ करना. सायंकालमें और प्रातःकालमें होमद्रव्य और कर्ता एकही होना चाहिये. जो प्रातःकालमें होम देनेवाला यजमान होवै तौ कर्ता भिन्न हुआ ऐसा दोष नहीं है.

अथाश्वलायनस्मार्तहोमः आचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्यश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंसायमौपासनहोमंप्रातरौपासनहोमंवामुकद्रव्येणकरिष्ये चत्वारिशृंगेतिध्यात्वासोदकहस्तेनत्रिःपरिसमुह्यपरिस्तीर्यत्रिःपर्युक्ष्य होमद्रव्यंसमिद्युतमुत्तरतःस्थितंदर्भेणावज्वाल्यप्रोक्ष्यत्रिःपर्यग्निकृत्वाग्नेः पश्चिमतोदर्भेनिधायविश्वानिनइत्यभ्यर्च्यप्रजापतिंमनसाध्यायन्समिधमग्नौप्रक्षिप्यतथैवत्यक्त्वासमिधिप्रदीप्तायांशततंडुलैरग्नयेस्वाहेतिसायंप्रथमाहुतिःसूर्यायस्वाहेतिप्रातःप्रथमाहुतिःशताधिकतंडुलैः प्रजापतयइतिमनसोच्चार्यहोमत्यागाभ्यांद्वितीयाहुतिरुभयकाले परिस्तरणंविसृज्यपरिसमूहनपर्युक्षणेकृत्वोपस्थानं अग्नआयूंषीतितिसृणांशतंवैखानसाग्निःपवमानोगायत्री अग्न्युपस्थानेविनियोगः अग्नेत्वन्नइतिचतसृणांगौपायनाबंधुःसुबंधुःश्रुतबंधुर्विप्रबंधुश्चाग्निर्द्विपदाविराट् अग्न्युपस्थानेवि० प्रजापतेहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् प्रजापत्युपस्थानेविनियोगः तंतुंतन्वन्देवाअग्निर्जगती यद्वादेवाप्रजापतिर्जगती उपस्थानेविनियोगःहिरण्यगर्भोहिरण्यगर्भःप्रजापतिस्त्रिष्टुप् प्रजापत्युप० इतिवायव्यदेशेतिष्ठन्नुपस्थायउपविश्यमानस्तोकइत्यादिनाविभूतिधारणंकचिदुक्तं विष्णुंस्मृत्वा अनेनहोमकर्मणाश्रीपरमेश्वरःप्रीयतामित्यर्पयेत् प्रातस्तुसूर्योनोदिवःसूर्यश्चक्षुःसूर्योगयत्री सूर्योप० उदुत्यंकाण्वःप्रस्कण्वःसूर्योगायत्रीसूर्योप० चित्रंदेवानामांगिरसःकुत्सःसूर्यस्त्रिष्टुप् सूर्योप०नमोमित्रस्यसूर्योभितपाःसूर्योजगती सू० इतिचतुर्भिःपूर्वोक्तैस्त्रिभिःप्राजापत्यैश्चौपस्थानं केचित्प्रातस्तंतुंतन्वन्नितिनपठंतिपत्नीकुमारीकर्तृकहोमेध्यानोपस्थानादौमंत्रावर्ज्याः ॥

अब आश्वलायनोंके स्मार्तहोमका प्रयोग कहताहुं.

कर्तानें आचमन और प्राणायाम करके देश और कालका उच्चार किये पीछे "**श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सायमौपासनहोमं प्रातरौपासनहोमंवामुकद्रव्येणकरिष्ये,**" ऐसा संकल्प करके "**चत्वारिशृंगा०**" इस मंत्रकों कहके अग्निका ध्यान करना. पीछे हाथमें जल लेके तीन वार कुंडकी अथवा वेदीकी सब तर्फ सेचन करना. तैसेही डाभोंका परिस्तरण करना. और तीन वार जल प्रोक्षण करना. पीछे कुंडकी उत्तरकी तर्फ रखे हुए समिधोंसें युक्त होमद्रव्य प्रज्वलित किये डाभसें प्रकाशित करके और जलसें प्रोक्षित करके वह डाभकों होमद्रव्यके सब तर्फ तीन वार फिरवायके त्यागना, और अग्निसें पश्चिमकी तर्फ होमद्रव्य डाभपर स्थित करके "**विश्वानिनो०**" इस मंत्रसें अग्नीकी गंध आदिसें पूजा करके और

प्रजापतिका मनमें ध्यान करके समिधकों अग्निमें देके और तिसही प्रकार त्याग मनमें कहके समिध प्रज्वलित हुये पीछे शतसंख्याक चावल लेके तिस चावलोंकी “ **अग्नयेस्वाहा** ” इस मंत्रसें सायंकालमें पहली आहुति और “ **सूर्यायस्वाहा** ” इस मंत्रसें प्रातःकालमें पहली आहुति और सौसें अधिक चावल लेके तिन्होंसें “ **प्रजापतये०** ” ऐसा मनमें उच्चारण करके होम और त्याग इन्होंसें दूसरी आहुति सायंकालमें और प्रातःकालमें देनी. परिस्तरणके डाभोंका विसर्जन करके पहलेकी तरह उदकसें सिंचन और प्रोक्षण करके अग्निका उपस्थान करना. उपस्थानके मंत्र—“ **अग्नआयूंषीतितिसृणांशतंवैखानसाग्निःपवमानोगायत्री ॥ अग्न्युपस्थाने विनियोगः ॥ अग्नेत्वन्न इति चतसृणां गौपायनाबंधुःसुबंधुः श्रुतबंधुर्विप्रबंधुश्चाग्निर्द्विपदाविराट् ॥ अग्न्युपस्थानेविनियोगः ॥ प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप् प्रजापत्युपस्थाने विनियोगः ॥ तंतुंतन्वन्देवाग्निर्जगती ॥ यद्वादेवाप्रजापतिर्जगती ॥ उपस्थाने विनियोगः ॥ हिरण्यगर्भो हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप् ॥ प्रजापत्युपस्थाने विनियोगः** ” इस प्रकार मंत्र कहके उपस्थान करके और बैठके “ **मानस्तोके०** ” इत्यादिक मंत्रसें विभूतिकों धारण करना, ऐसा किसीक ग्रंथमें कहा है. विष्णुका स्मरण करके, “ **अनेन होमकर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम्,** ” ऐसा वाक्य कहके कर्म ईश्वरकों अर्पण करना. प्रातःकालमें उपस्थान करनेका तिसके मंत्र—“ **सूर्योनोदिवःसूर्यश्चक्षुःसूर्योगायत्री ॥ सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ उदुत्यंकाण्वः प्रस्कण्वः सूर्योगायत्री सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ चित्रंदेवानामांगिरसःकुत्सःसूर्यस्त्रिष्टुप् ॥ सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ नमो मित्रस्यसूर्योभितपाः सूर्यो जगती ॥ सूर्योपस्थाने विनियोगः,** ” ये चार मंत्र और पहले कहे प्रजापति है देवता जिन्होंकी ऐसे तीन मंत्रोंकरके प्रातःकालमें सूर्योपस्थान करना. कितनेक ग्रंथकार प्रातःकालमें “ **तंतुंतन्व०** ” यह मंत्र नहीं पढते हैं. पत्नी अथवा कुमारीकों होम करना होवै तौ ध्यान और उपस्थान आदि कर्ममें मंत्र वर्जित करने उचित है. इस प्रकार आश्वलायनोंका स्मार्तहोमप्रयोग कहा.

अथहिरण्यकेशीयानांपूर्वोक्तसंकल्पाद्यंते यथाहतद्वसवइतिपरिसमुह्यपरिस्तीर्य अदितेनुमन्यस्वेतिदक्षिणतःप्राचीनंपर्युक्षेत् अनुमतेनुमन्यस्वेतिपश्चादुदीचीनं सरस्वतेनुमन्यस्वेति उत्तरतःप्राचीनंदेवसवितःप्रसुवेतिसर्वतः तूष्णींसमिधमाधायहोमादिप्राग्वत् अदितेन्वमꣳस्थाः अनुमतेन्व० सरस्वतेन्व० देवसवितःप्रासावीरितिपूर्ववत्परिसेचनंउदुत्यंचित्रंदेवानामितिप्रातरुपस्थानं अग्निर्मूर्धादिवइतित्वामग्नेपुष्करादधीतिद्वाभ्यांसायमुपस्थानं आपस्तंबानां सायमग्नयेस्वाहाग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहेतिद्वेआहुतीप्रातस्तुसूर्यायस्वाहाग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहेतिविशेषःशेषंहिरण्यकेशीयवत् ॥

अब हिरण्यकेशियोंके स्मार्तहोमका प्रयोग कहताहुं.

हिरण्यकेशियोंनें पूर्वोक्त संकल्प करके पीछे “ **यथाहतद्वसव०** ” इस मंत्रसें कुंडकी चारों तर्फ पानी सिंचके और सब तर्फ डाभ घालके “ **अदितेनुमन्यस्व** ” इस मंत्रसें दक्षिणकी तर्फ पश्चिमसें पूर्वपर्यंत और “ **अनुमतेनुमन्यस्व** ” इस मंत्रसें पश्चिमकी तर्फ दक्षिणसें उत्त-

रपर्यंत और "**सरस्वतेनुमन्यस्व**" इस मंत्रसें उत्तरकी तर्फ पश्चिमसें पूर्वपर्यंत और "**देवसवितःप्रसुव०**" इस मंत्रसें सब तर्फ ईशानीसें ईशानीपर्यंत पानी सिंचन करना. पीछे अग्निपर मंत्रसें रहित समिध देके होम आदिक कर्म पहलेकी तरह करना. पीछे "**अदितेन्वमꣳस्थाः ॥ अनुमतेन्व० ॥ सरस्वतेन्व० ॥ देवसवितःप्रासावीः०**" ये चार मंत्र कहके पहले कहेके प्रमाण जलका सिंचन करना. "**उदुत्यं०, चित्रंदेवानां०**" ये दो मंत्र कहके प्रातःकालमें उपस्थान करना. और "**अग्निर्मूर्धादिवः०**" यह और "**त्वामग्नेपुष्करादधि०**" यह ऐसे दो मंत्र कहके सायंकालमें उपस्थान करना. आपस्तंबोंकी सायंकालकी "**अग्नयेस्वाहा० अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा,**" ऐसी दो आहुति होती हैं. प्रातःकालमें तौ, "**सूर्याय स्वाहा अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा**" ये दो आहुति होती हैं. यह विशेष जानना. शेष रहा कर्म हिरण्यकेशियोंके समान करना.

अथकात्यायनानांसायमस्तमितेहोमः प्रातःसूर्येऽनुदितेहोमः तत्रप्रातरुपस्थानांतांसंध्यांकृत्वाहोमांतेगायत्रीजपादिसंध्यासमापनं तत्रपूर्ववत्संकल्पांतेउपयमनान्कुशानादायसव्येकृत्वादक्षिणकरेणतिस्रःसमिधोग्नावाधाय मणिकोदकेनपर्युक्ष्याग्निमर्चयित्वाग्नयेस्वाहाप्रजापतयेस्वाहेतिसायंदध्नातंडुलैर्वाहुत्वाप्रातस्तथैवसूर्यायप्रजापतयेचजुहुयात् समास्त्वेत्यनुवाकेन सायमुपस्थानंप्रातस्तुविभ्राडित्यनुवाकेन अत्रदधिहोमादौसंस्रवप्राशनमाहुः होमलोपेष्टोत्तरसहस्रगायत्रीजपः मुख्यकालातिक्रमेअनादिष्टहोमः ॥

अब कात्यायनोंके स्मार्तहोमका प्रयोग कहताहुं.

कात्यायनोंनें सायंकालविषे सूर्यके अस्तके उपरंत होम करना. प्रातःकालमें सूर्योदयके पहले होम करना. सो ऐसा—प्रातःकालमें उपस्थानपर्यंत संध्या करके होम देना. पीछे गायत्रीजप आदि शेष संध्या समाप्त करनी. तिस होमविषे पहले कही रीतिसें संकल्प करना. पीछे उपयमनसंज्ञक डाभ लेके वे वाम हाथमें लेके हाथसें तीन समिध अग्निमें देके कलशके पानीसें कुंडकी सब तर्फ प्रोक्षण करके और अग्निका पूजन करके सायंकालमें "**अग्नयेस्वाहा, प्रजापतयेस्वाहा**" इन दो आहुतियोंसें दही अथवा चावलोंका होम करना, और प्रातःकालमें सायंकालके होमकी तरह "**सूर्याय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा**" इन दो आहुतियोंसें होम करना. "**समास्त्व०**" इस अनुवाकसें सायंकालमें उपस्थान करना, और प्रातःकालमें तौ "**विभ्राट्०**" इस अनुवाकसें उपस्थान करना. दही आदि द्रव्योंका होम किया होवै तौ यह स्थलमें संस्रवका प्राशन करना ऐसा कहते हैं. होमका लोप हो जावै तौ १००८ गायत्रीजप करना. मुख्य होमकालका अतिक्रम हुआ होवै तौ अनादिष्ट होम करना.

अथहोमद्रव्याणि व्रीहिश्यामाकयवानांतंडुलाःपयोदधिसर्पिर्यवव्रीहिगोधूमप्रियंगवःस्व

---

[१] संपूर्ण कर्म मात्र कहके जहां होमका आदेश नहीं होवै तहां अनादिष्ट (अनादेश) होम करना, अर्थात् अग्नि १, वायु २, सूर्य ३, प्रजापति ४, अग्नीवरुण ५, अग्नीवरुण ६; अयाअग्नि ७, वरुण, सविता, विष्णु, विश्वेदेव, मरुत्, स्वर्क ८, वरुण, आदित्य अदिति ९, ऐसी नव आहुतियोंसें उक्त देवतोंके उद्देशसें होम करना.

रूपेणापिहोम्या: तिलास्तुस्वरूपेणैव तंडुलादय:शतसंख्याहस्तेनहोतव्या: दध्यादिद्रवद्रव्यं स्रुवेण सर्वत्रोत्तराहुति:पूर्वतोभूयसी समिधश्चार्कपलाशखादिरापामार्गपिप्पलोदुंबरशमीदूर्वादर्भमयादशद्वादशांगुला:सत्वच: वटप्लक्षबिल्वादिजाहेमाद्रौ होमाहुत्यो:संसर्गेयत्रवेत्थेतिमंत्रेणाग्नयेसमिद्धोम: नित्यहोमेत्वतिक्रांतेआज्यंसंस्कृत्यचतुर्गृहीत्वामनोज्योतिर्जुषतामितिजुहुयात् द्वादशदिनपर्यंतंहोमलोपेइदमेवप्रायश्चित्तंतत:परमग्निनाश: एवंहोमपेलोप्रायश्चित्तंकृत्वातिक्रांतहोमार्थंद्रव्यंसंस्कृत्यसायंप्रात:क्रमेणद्वेद्वेआहुतीदिनगणनयाजुहुयात् अग्निसूर्यप्रजापतीनुपतिष्ठेन्नवाजुहुयात्प्रायश्चित्तेनचारितार्थ्यात् सूतकादिनाहोमलोपेप्येवं हिरण्यकेशीयानामप्येवंआपस्तंबादीनांत्रिरात्रात्परमग्निनाशोभवतीतिसूतकेपिस्वयंहोम:कार्य: समारोपोत्तरंसूतकपातेप्रत्यवरोहासंभवेनात्रिरात्रंहोमलोपेपुनराधानं ॥

अब होमके द्रव्योंकों कहताहुं.—व्रीहि, शामक, जव इन्होंके चावल लेने. अथवा दूध, दही, घृत, जव, व्रीहि, गेहूं, कांगनी ये सब द्रव्य अपने रूपकरकेभी होम करनेकों उचित हैं. अर्थात् इन्होंके चावल बनाये विनाभी इन्होंके होम करना. तिल तौ जैसे होवैं तैसेही होमके योग्य हैं. चावल आदि होमके लिये लेनेके सो प्रति आहुतिकों १०० संख्याक लेके हाथसें तिन्होंका होम करना. दही आदि पतला द्रव्य स्रुवा पात्रसें हवन करना. जहां दो आहुति कही होवैं तहां पहली आहुतिसें दूसरी आहुति परिमाणसें कछुक अधिक देनी, ऐसा सब जगह नियम है. **समिध**—आक, ढाक, खैर, ऊंगा, पीपल, गूलर, जांटी, दूब और डाभ इन वृक्षोंकी दश अथवा बारह अंगुलोंवाली और छालसें सहित ऐसी समिध लेनी. वट, प्लक्षवृक्ष, बेलवृक्ष, इन आदिकी समिध लेनी ऐसा हेमाद्रि ग्रंथमें कहा है. दो आहुतियोंका संसर्ग होवै तौ **"यत्रवेत्थ०"** इस मंत्रसें अग्निके उद्देशसें समिधका होम करना. नित्यहोमका अतिक्रम हो जावै तौ घृतका संस्कार करके वह घृत स्रुवके मध्यमें चारवार लेके **"मनोज्योतिर्जुषतां०"** इस मंत्रसें होम करना. बारह दिनपर्यंत होमका लोप होवै तौ यही प्रायश्चित्त करना. बारह दिनोंसें अधिक दिनोंतक होमका लोप होनेसें अग्नि नष्ट होता है. इस प्रकार होमके लोपका प्रायश्चित्त करके अतिक्रांत हुआ होम करनेके लिये होमद्रव्यका संस्कार करके सायंकालमें और प्रात:कालमें क्रमकरके दो दो आहुति, इस प्रमाणसें जितने दिन होमका लोप हुआ होवै तितने दिनकी गिनती करके तिस प्रकार होम करना, और अग्नि, सूर्य, प्रजापति इन्होंका उपस्थान करना. अथवा अतिक्रांतहोम नहीं करना; क्योंकी, प्रायश्चित्त करनेसें होमका फल मिलता है. आशौच आदिके होनेसें होमका लोप होवै तौ ऐसाही निर्णय जानना. हिरण्यकेशियोंकाभी ऐसाही निर्णय जानना. आपस्तंब आदिकोंका होमलोप होनेमें तीन रात्रिसें परे अग्निका नाश हो जाता है, इसलिये आशौचमेंभी तिन्होंनें आपही होम करना. अग्निके समारोप पीछे आशौच प्राप्त होवै और तिस्सें प्रत्यवरोहका संभव नहीं होनेसें त्रिरात्रि होमका लोप होवै तौ पुनराधान करना.

अथसमस्यहोम: सायंप्रातर्होमौसमस्यकरिष्ये पूर्ववत्सायंकालहोमांतंकृत्वापर्युक्ष्यपुनर्द्रव्यंसंस्कृत्यसमिधंप्रक्षिप्यसूर्यप्रजापत्याहुतीदत्वाहविष्पांतमित्युपतिष्ठेत् हविष्पांतमितिपंचर्चस्यवामदेव: सूर्यवैश्वानरौत्रिष्टुप् नित्यवत्प्रजापत्युपस्थनं ॥

अब समस्यहोम कहताहुं.

(किसीक आपत्तिकालमें सायंहोम और प्रातःकालीन होम ऐसे दो होम सायंकालमें करना तिसकों समस्यहोम कहते हैं.) **तिसका प्रयोग.—" सायंप्रातर्होमौ समस्य करिष्ये,"** ऐसा संकल्प करके पूर्व कहे सायंकालहोमपर्यंत कर्म करके जलसें प्रोक्षण करके और फिर द्रव्यका संस्कार करके अग्निमें समिध देके सूर्य और प्रजापतिके उद्देशसें एक एक आहुति देके " हविष्पांतं०" इन पांच ऋचाओंसें उपस्थान करना. **" हविष्पांतमितिपंचर्चस्य वामदेवः सूर्यवैश्वानरौ त्रिष्टुप्,"** नित्यकी तरह प्रजापतिमंत्रसें उपस्थान करना.

अथपक्षहोमः प्रतिपदि अद्यसायमारभ्यचतुर्दशीसायमवधिकान्पक्षहोमान्तंत्रेणकरिष्ये सायंतंडुलान्पात्रद्वयेवृद्धिक्षयानुसारेणचतुर्दशादिवारंगृहीत्वाहोमकालेग्नयेस्वाहेतिसर्वान्पूर्वपात्रस्थानेकदैवहुत्वाद्वितीयपात्रस्थान्प्रजापतयेतथैवजुहुयात् एवंद्वितीयायांप्रातरद्यावधिपर्वप्रातरवधिकान्पक्षहोमान्तंत्रेणकरिष्यइत्यादिसायंवत् विशेषस्तुप्रथमपात्रस्थान्सूर्यायस्वाहेतिजुहुयात् द्वितीयपात्रस्थान्प्रजापतयेस्वाहेतिहुत्वोभयत्रसमिदेकोपस्थानादिसकृत् पक्षमध्येआपत्प्राप्तौतत्सायंकालाच्चतुर्दशीसायंपर्यंतान्शेषहोमान्सायंपक्षहोमवद्धुत्वा पर्वप्रातर्होमांतान्प्रातर्जुहुयात् सर्वथापर्वसायंहोमःप्रतिपत्प्रातर्होमश्चपृथगेव इतिपक्षहोमशेषहोमौ पक्षमध्येआपन्निवृत्तावपकृष्टाहोमाःपुनःकार्याः संततपक्षहोमत्रयेग्निनाशात्तृतीयेपक्षेप्रतिदिनंहोमः सर्वथापन्निवृत्त्यभावेयावज्जीवंपक्षहोमाः ॥

अब पक्षहोम कहताहुं.

(अत्यंत आपत्तिकालमें प्रतिपदासें चतुर्दशीपर्यंत चौदह दिनोंके सायंप्रातर्होम अपकर्षसें करने, तिसकों पक्षहोम कहते हैं.) **तिसका विधि.**—प्रतिपदाके दिन **" अद्य सायमारभ्य चतुर्दशीसायमवधिकान् पक्षहोमान् तंत्रेण करिष्ये,"** ऐसा संकल्प करके वृद्धि अथवा क्षय जैसा होवै तिसके अनुसार (चौदहवार, तेरहवार अथवा पंदरहवार) सायंकालके होमके चावल दो पात्रोंमें लेके होमकालविषे **" अग्नये स्वाहा "** इस मंत्रसें, पूर्व गृहीत पात्रस्थ चावलोंका एक कालमेंही होम करके अन्य पात्रस्थ चावलोंका होम **" प्रजापतये स्वाहा "** इस मंत्रसें पूर्वकी तरहही करना. इस प्रमाण द्वितीयाके दिनमें, **" प्रातरद्यावधि पर्वप्रातरवधिकान् पक्षहोमान् तंत्रेण करिष्ये,"** इत्यादिक सायंहोमकी तरह कर्म करना. विशेष विधि तौ पहले पात्रमें स्थित किये चावलोंका होम **" सूर्याय स्वाहा "** इस मंत्रसें करना, और दूसरे पात्रमें स्थित किये चावलोंका होम **" प्रजापतये स्वाहा "** इस मंत्रसें करना. दोनों दिन अग्निमें समिध देनेकी सो एकवार देनी, और उपस्थानभी एकवार करना. पक्षमें कोई आपत्ति प्राप्त होवै तौ तिस सायंकालसें चतुर्दशीदिनके सायंकालपर्यंत जो शेषहोम सो सायंपक्षहोमकी तरह करके पर्वके प्रातःकालीन होमपर्यंत प्रातःकालमें होम करना. पर्वका सायंहोम और प्रतिपदाका प्रातर्होम अलग अलग करने. इस प्रमाण पक्षहोम और शेषहोम, पक्षके मध्यमें आपत्काल दूर हो चुकै तब अपकर्षसें किये होम फिर करने. निरंतर तीन पक्षहोम करनेसें अग्नि नष्ट होता है, इसलिये तीसरे पक्षमें प्रतिदिन होम देना. सब प्रकारसें आपत्ति दूर नहीं होवै तौ जबतक जीवै तबतक पक्षहोम करना.

अथसमारोपः अयंतेयोनिरित्यस्यविश्वामित्रोग्निरनुष्टुप् अग्निसमा० अनेनमंत्रेणहोमोत्तरमरणीमश्वत्थसमिधंवाप्रताप्याग्निसमारोहंतत्रभावयेत् होमादिकालेअरणींनिर्मथ्यप्रत्यवरोहेतिमंत्रेणस्थंडिलेग्निंप्रतिष्ठापयेत् समित्समारोपेश्रोत्रियागारादग्निंप्रतिष्ठाप्यप्रत्यवरेहेतिमंत्रेणतांसमिधमग्नावादध्यात् सूत्रांतरेआजुह्वानउद्बुध्यस्वेतिमंत्राभ्यांप्रत्यवरोहणंप्रत्यहंसमारोपादिद्वादशदिनमेव पर्वणिसायंहोमकालपर्यंतंप्रत्यवरोहणाभावेग्निनाशइतिकेचित् समारोपप्रत्यवरोहौयजमानकर्तृकावेव तेनसमारोपोत्तरंपर्वण्याशौचप्राप्तौप्रत्यवरोहासंभवादग्निनाशः इदमापस्तंबादिपरं आश्वलायनानांतुद्वादशरात्रमध्येपर्वणिप्रत्यवरोहाभावेपिनाग्निनाशः किंतुद्वादशरात्रोत्तरंहोमलोपएवेत्यपरे राजक्रांत्यादिसंकटेऋत्विग्द्वारापिसमारोपादिकेचिदृत्विगाद्यभावेनानन्यगतिकत्वेआशौचपातात्पूर्वंपर्वहोमसहितानपिहोमानपकृष्यकृत्वानकृत्वावा समारोपंकृत्वासूतकांतेप्रत्यवरोहःकार्योनात्रपर्वोल्लंघनदोषइत्याहुः ॥

अब अग्निसमारोप कहताहुं.

(जिसका अग्नि होवै तिसनें अरणीमें अथवा समिधमें अग्नि प्राप्त हुआ ऐसी जो विधिपूर्वक भावना करनीं तिसकों अग्निसमारोप कहते हैं,) तिसका विधि.—“ अयंतेयोनिरित्यस्य विश्वामित्रोग्निरनुष्टुप् ॥ अग्निसमारोपेविनियोगः ” यह मंत्र कहके होमके पीछे अरणी अथवा पीपलकी समिध अग्निपर तपाय वह अग्नि अरणीमें अथवा समिधमें आया ऐसी भावना करनी, पीछे फिर होम आदिका समय होवै तब तिस अरणीका मंथन करके ले आयके अग्नि उत्पन्न करके, “ प्रत्यवरोह० ” इस मंत्रसें स्थंडिलमें तिस अग्निकी स्थापना करनी. समिधमें समारोप किया होवै तौ, श्रोत्रियके घरसें अग्नि प्राप्त करके तिसकी स्थंडिलमें स्थापना करके “ प्रत्यवरोह० ” इस मंत्रसें वह समिध अग्निमें हवन करनी. दूसरे सूत्रमें “ आजुह्वान० उद्बुध्यस्व० ” इन दो मंत्रोंसें प्रत्यवरोहण करना ऐसा कहा है. प्रतिदिन समारोप आदि करना होवै तौ बारह दिनपर्यंतही करना. पर्वदिनमें सायंहोमकालपर्यंत करना. प्रत्यवरोहणके अभावमें अग्निका नाश होता है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. समारोप और प्रत्यवरोह यजमाननेंही करने उचित हैं. इस उपरसें समारोप किये उपरंत पर्वदिनमें आशौच प्राप्त होवै तौ प्रत्यवरोहके असंभवसें अग्निका नाश होता है; परंतु यह निर्णय आपस्तंब आदि शाखावालोंके विषयमें है. बारह रात्रियोंमें पर्व प्राप्त होवै तौ तिस दिनमें प्रत्यवरोहका अभाव होनेमेंभी अग्निका नाश नहीं होता है. किंतु बारह रात्रियोंसें परे होमका लोपही होता है, इस प्रकार दूसरे ग्रंथकार कहते हैं. राज्यक्रांति आदि संकट प्राप्त होवै तब ऋत्विज आदिसेंभी समारोप आदि कराने. कितनेक ग्रंथकार, ऋत्विक् आदिके अभावकरके दूसरी गति नहीं होवै तब आशौच प्राप्त होनेके पहले पर्वहोमसहित भी होमोंका अपकर्षसें होम करके अथवा नहीं करके समारोप करके आशौचके अनंतर प्रत्यवरोह करना उचित है, इस विषयमें पर्वके उल्लंघनका दोष नहीं है ऐसा कहते हैं.

समारोपोत्तरंदंपत्योःप्रवासेसीमानद्योरुल्लंघनकालेउभाभ्यामन्यतरेणवासमिदाद्यन्वारंभः कार्यः अन्यथाग्निनाशःयजमानस्यैवप्रवासेकृत्यं अभयंवोभयंमेस्त्वितिअग्निमुपस्थायप्रवासं

गच्छेत् ततआगत्यगृहामाबिभीतोपव:स्वस्त्येवोस्मासुचप्रजायध्वंमाचवोगोपतीरिषदितिमंत्रेणस्वगृहंनिरीक्ष्य गृहानहंसुमनस:प्रपद्येवीरघ्नोवीरवत:सुवीरान् इरांवहंतोघृतमुक्षमाणास्तेष्वहंसुमना:संविशामीतिगृहंप्रविश्यशिवंशग्मंशंयो:शंयोरितिपुनस्त्रिरनुवीक्ष्यनित्यहोमांते अभयंवोभमंमेस्त्वित्यग्निमुपतिष्ठेत् ज्येष्ठपुत्रशिर:पाणिभ्यांपरिगृह्यअंगादंगात्संभवसीतिमंत्रंजपित्वामूर्धानंत्रिर्जिघ्रेत् एवमितरपुत्राणांप्रत्तकन्यानांतूष्णींजिघ्रेत् प्रवासादागतंप्रतिज्ञातमपिअप्रियंतद्दिनेनवदेयु: ॥

समारोपके उपरंत स्त्रीपुरुष गमन करैंगे और ग्रामकी सीम और नदीके उल्लंघनसमयमें दोनोंनें अथवा एक कोईसेनें समारोपित ऐसी वह समिधकों अथवा अरणीकों स्पर्श करना. स्पर्श नहीं करनेमें अग्नि नष्ट होता है. यजमानके गमन करनेमें विधि—“**अभयं वोभयंमेस्तु०**” इस मंत्रसें अग्निका उपस्थान करके गमन करना. पीछे तहांसें आके “**गृहा मा विभीतोपव: स्वस्त्येवोस्मासु च प्रजायध्वं मा च वो गोपतीरिषत्**” इस मंत्रकों कहके अपने घरकों देखना. पीछे, “**गृहानहं सुमनस: प्रपद्ये वीरघ्नो वीरवत: सुवीरान्॥ इरां वहंतो घृतमुक्षमाणास्तेष्वहं सुमना: संविशामि,**” इस मंत्रकों कहके घरमें प्रवेश करके “**शिवं शग्मं शंयो: शंयो:,**” इस मंत्रकों कहके तीन वार पीछे देखके नित्यहोम किये पीछे “**अभयं वोभयं मेस्तु**” इस मंत्रसें अग्निका उपस्थान करना. ज्येष्ठ पुत्रका शिर दोनों हाथोंसें ग्रहण करके “**अंगादंगात्संभवसि०**” इस मंत्रका जप करके मस्तक तीनवार सूंघना. इस प्रकार अन्य पुत्र और विवाहित कन्या इन्होंके मस्तक मंत्ररहित सूंघने. प्रवाससें आये हुयेके साथ तिस दिनमें प्रतिज्ञातभी अप्रिय नहीं बोलना.

प्रोषितेपत्यौपत्नीस्मार्तहोमौस्वयंकृत्वादर्शपूर्णमासस्थालीपाकपिंडपितृयज्ञान्विप्रेणकारयेत् अनुगतप्रायश्चित्तादिपत्न्यांरजस्वलायामपिऋत्विक्कुर्यात् पुन:संधानंतुपत्यौप्रोषितेनभवेत् नैमित्तिकाजातेष्टिगृहदाहेष्टयोपिनभवंतिप्रायश्चित्तेष्टे:पूर्णाहुति: ॥

पति प्रवासमें गया होवै तब पत्नीनें स्मार्तहोम आप स्वत: करके दर्शपूर्णमासस्थालीपाक, पिंडपितृयज्ञ ब्राह्मणके द्वारा करवाने. पति प्रवासकों गये पीछे अग्नि नष्ट हो जावै तौ प्रायश्चित्त आदि करनेका सो स्त्री रजस्वला हो जावै तौभी ऋत्विक्नें करना. पुन:संधान तौ पतिके प्रवासमें होनेमें नहीं होता है. नैमित्तिक इष्टि, जातेष्टि और गृहदाहेष्टि पति प्रवासमें होवै तब नहीं करनी. प्रायश्चित्तेष्टिकी पूर्णाहुति नहीं करनी.

अथौपासनाग्न्यनुगमनेगृह्याग्नेरनुगमप्रायश्चित्तंकरिष्ये इतिसंकल्प्यआयतनस्थंभस्मदूरीकृत्योपलेपादिकृत्वाग्निंप्रतिष्ठाप्याज्यंसंस्कृत्य अयाश्चेतिमंत्रेणैकामाज्याहुतिंसर्वप्रायश्चित्तंचहुत्वादंपत्योरन्यतरेणापरहोमकालपर्यंतमुपोषितेनस्थातव्यं एवंद्वादशरात्रपर्यंतं केचिदुपवासमयाश्चेतिहोमंवाकुर्यात्नद्वयमित्याहु: एतद्वृत्तिकारमतं केचित्तुयद्यग्न्यनुगमनेहोमकालद्वयातिक्रमस्तदानष्टाग्निसंधानं तत्रत्रिरात्रमग्निनाशेप्राणायामशतं ततआविंशतिरात्रमेकदिनोपवास: ततआमासद्वयंत्रिरात्रोपवास: ततऊर्ध्वंसंवत्सरपर्यंतंप्राजापत्यकृच्छ्रं तत:प्रतिवर्षंकृच्छ्रावृत्ति: एवंप्रायश्चित्तंकृत्वाआधानोक्तसंभाराग्निधायनष्टस्यगृह्याग्ने:प्रायश्चित्तंकरिष्येइति

संकल्प्यायाश्चेत्याज्येनस्रुवाहुतिपत्न्युपवासादिपूर्ववत् लाजहोमादिकंवा एवंद्वादशरात्रपर्यंत मग्न्युत्पत्तिरित्याहुः द्वादशदिनोत्तरंविच्छेदप्रायश्चित्तंहोमादिद्रव्यदानंचकृत्वाविवाहहोमादि विधिनायथास्वस्वगृह्यंपुनःसंधानं ॥

अब औपासन अग्नि नष्ट होनेमें कर्तव्य विधि.—औपासन अग्नि नष्ट हो जावै तौ “ **गृह्याग्नेरनुगमप्रायश्चित्तं करिष्ये** ” ऐसा संकल्प करके कुंडके भस्मकों दूर करके और गोवरसें कुंडका लेपन आदि करके तहां अग्निकों स्थापित करना. पीछे घृतका संस्कार करके “ **अयाश्चा०** ” इस मंत्रसें एक घृतकी आहुति और सर्वप्रायश्चित्ताहुतिहोम करके स्त्रीपुरुषमांहसें एक कोईसेनें दूसरे होमकालपर्यंत उपवास करना. ऐसे बारह रात्रिपर्यंत होनेमें यह निर्णय जानना. कितनेक ग्रंथकार उपवास अथवा “ **अयाश्चा०** ” इस मंत्रसें होम, इन दोनोंमांहसें एक कोईसेकों करना, दोनों नहीं करने ऐसा कहते हैं, और यह वृत्तिकारका मत है. कितनेक ग्रंथकार तौ, जो अग्नि नष्ट होके दो होमोंका काल अतिक्रांत हो जावै तौ नष्ट अग्नि सिद्ध करना. तहां तीन रात्रिपर्यंत अग्निका नाश होवै तौ १०० प्राणायाम करने और तिस्सें वीस रात्रिपर्यंत एक दिन उपवास करना, और तिस्सें दो महीनेपर्यंत तीन रात्रि उपवास करना और तिस्सें उपरंत एक वर्षपर्यंत प्राजापत्यकृच्छ्र करना और तिस्सें उपरंत प्रतिवर्षमें कृच्छ्रकी आवृत्ति करनी. इस प्रमाण प्रायश्चित्त करके पीछे आधानमें कही सामग्री संपादित करके, “ **नष्टस्य गृह्याग्नेः प्रायश्चित्तं करिष्ये,** ” ऐसा संकल्प करके, “ **अयाश्चा०** ” इस मंत्रसें घृतकी स्रुवासें आहुति देनी और स्त्रीनें उपवास करना, इस आदि कर्म पहले कहेके प्रणाम करना, अथवा धानकी खीलोंका होम आदि करना. इस प्रकार बारह रात्रिपर्यंत अग्निकी उत्पत्ति करनी ऐसा कहते हैं. बारह दिनके पीछे अग्निनाशका प्रायश्चित्त और होम आदिक द्रव्योंका दान करके विवाहहोम आदि विधिसें अपने अपने गृह्यसूत्रके अनुसार पुनःसंधान करना.

अथान्वाहिताग्नेःप्राक्यागादनुगतौ अयाश्चेतिपूर्ववदग्निमुत्पाद्य पुनरन्वाधानंकृत्वाभूर्भुवः स्वरित्युपस्थायसर्वप्रायश्चित्तंहुत्वास्थालीपाकंकुर्यात् अन्वाधानोत्तरंप्रयाणप्राप्तौतुभ्यंताअंगिरस्तमइत्याज्याहुतिमग्नयेहुत्वासर्वप्रायश्चित्तंहुत्वाग्निंसमारोप्यगच्छेत् समारूढसमिन्नाशेपुनराधेयमिष्यते उपलेपादिकंकृत्वानष्टाग्निप्रायश्चित्तंपुनराधेयंसंकल्प्यआधानोक्तसंभारान्निधायाग्निंप्रतिष्ठाप्यअयाश्चेतिस्रुवाज्याहुतिंसर्वप्रायश्चित्तंचजुहुयादितिपुनराधेयं स्वाग्निभ्रमेणान्याग्नौस्वयंयजनेस्वाग्नावन्ययजनेवापथिकृत्स्थालीपाकंकरिष्येइतिसंकल्प्यचरुःकार्योथवापथिकृत्स्थानेपूर्णाहुतिंहोष्यामीतिसंकल्प्यस्रुचिद्वादशवारंचतुर्वारंवाज्यंगृहीत्वाअग्नयेपथिकृते स्वाहेतिजुहुयात् विवाहोत्तरमाधानोत्तरंवापौर्णमास्यांस्थालीपाकारंभःप्रतिपदियागोतिक्रांतश्चेदागामिपर्वपूर्वतिथिषुचतुर्थीनवमीचतुर्दशीद्वितीयापंचम्यष्टमीर्विहायकार्यः नात्रकालातिक्रमप्रायश्चित्तं अन्वाधानोत्तरंप्रतिपदीष्टयकरणेतृतीयादितिथिषुसर्वप्रायश्चित्तंहुत्वापुनरन्वाधाययागः द्वितीयपर्वप्राप्तौअतीतेष्टिःपथिकृच्चरुपूर्वकंपर्वणिकार्या तत्राप्यतिक्रमेद्वितीयप्रतिपदिलुप्तेष्टेःपादकृच्छ्रंकृत्वाप्राप्तकालयागः द्वितीययागस्यापिआगामितिथिषुलोपेतत्पर्वणिपादकृच्छ्रपथिकृत्पूर्वकंद्वितीययागः तत्राप्यतिक्रमेतृतीयप्रतिपदिअर्धकृच्छ्रंयागद्वयस्यकृत्वाप्रा

त्तयागः तृतीययागस्योक्ततिथावर्धकृच्छ्रपथिकृत्पूर्वकंचतुर्थपर्वणिवाअकरणेअग्निनाशात्पुनराधेयंअत्रपुनराधेयस्वरूपंसंभारनिधानपूर्वकमयाश्चेतिस्रुवाज्याहुतिरित्यन्वारूढसमिन्नाशस्थले उक्तमेव पुनराधानंतुविवाहहोमादिरूपंपुनराधेयाद्भिन्नं आयतनाद्बहिःशम्यापरासात्प्राक्वह्निपातेइदंतएकमित्यृचातमायतनेप्रक्षिप्यसर्वप्रायश्चित्तंजुहुयात् पर्वणिव्रतलोपेग्नयेव्रतपतयेचरुःपूर्णाहुतिर्वा पर्वणिदंपत्योरन्यतराश्रुपातेग्नयेव्रतभृतेचरुः पूर्णाहुतिर्वा पवित्रनाशेग्नयेपवित्रवतेचरुःपूर्णाहुतिर्वा अन्वाधानेष्टिमध्येचंद्रग्रहणेअत्राहगोरितिचंद्रायाज्यंहुत्वानवोनवोइत्युपस्थायेध्माधानादियागः सूर्योपरागेउद्वयमितिसूर्यायाज्यंहुत्वाचित्रंदेवानामित्युपस्थानं अन्वाधानोत्तरंस्वप्नेरेतोविसर्गेइमंमेवरुणतत्त्वायामीतिवरुणायद्वेआज्याहुतीरविपूजापुनर्मामेतिसौत्रमंत्रयोर्जपश्च बुद्ध्यारेतोविसर्गेग्निव्रतपतिचरुः अन्यदास्वप्नेरेतोविसर्गेसूर्यनमस्कारत्रयं इध्माधानोत्तरंहविर्दोषेदुष्टस्थानेआज्यंप्रतिनिधिंकृत्वा यागंसमाप्यदुष्टंजलेत्यक्त्वान्वाधानादिस्तद्देवताकःपुनर्यागः इध्माधानात्पूर्वंहविर्दोषेतद्देवताकंहविःपुनरुत्पाद्ययागः स्विष्टकृदर्थहविर्दोषेआज्येनस्विष्टकृतंकुर्यात् अंगहविर्दोषेतदाज्यंपुनरुत्पादयेत् ॥

इसके अनंतर यज्ञके पहले अन्वाधान किया हुआ अग्नि नष्ट होवै तौ "अयाश्चा०" इस मंत्रसें पूर्वोक्त प्रकारसें अग्नि उत्पन्न करके फिर अन्वाधान करके "भूर्भुवः स्वः" इस मंत्रसें उपस्थान करके सब प्रायश्चित्ताहुति देके स्थालीपाक करना. अन्वाधान किये पीछे गमन करना प्राप्त होवै तौ "तुभ्यं ता अंगिरस्तम०" इस मंत्रसें घृतकी आहुति अग्निके उद्देशसें देके सर्वप्रायश्चित्ताहुतिहोम करके अग्निका समारोप करके गमन करना. "अग्निसमारोप किये समिधका नाश होवै तौ पुनराधेय करना." **सो पुनराधेय ऐसा.**—कुंडकों गोवरसें लीपना आदि करके नष्ट हुए अग्निके प्रायश्चित्तका और पुनराधेयका संकल्प करके आधानमें कहे पदार्थ संपादन करके और अग्निकी स्थापना करके "अयाश्चा०" इस मंत्रसें स्रुवासें घृतकी आहुति एक और सर्वप्रायश्चित्ताहुति इन्होंका होम करना, यह पुनराधेय है. यह स्वकीय अग्नि है ऐसे भ्रमसें दूसरेके अग्निमें अपना होम किया जावै, अथवा अपने अग्निमें दूसरा अपना होम करै तब "**पथिकृत् स्थालीपाकं करिष्ये,**" ऐसा संकल्प करके चरु करना. अथवा "**पथिकृत्स्थाने पूर्णाहुतिं होष्यामि,**" ऐसा संकल्प करके स्रुक् पात्रमें वारहवार अथवा चारवार घृत लेके, "**अग्नये पथिकृते स्वाहा**" इस मंत्रसें आहुति देनी. स्थालीपाकका आरंभ करनेका सो विवाहके उपरंत अथवा आधानके उपरंत पौर्णमासीमें करना. प्रतिपदाके दिनमें याग नहीं किया गया होवै तौ आवनेवाले पर्वके पूर्वतिथियोंमें (चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, द्वितीया, पंचमी और अष्टमी इन्होंकों त्यागके) यज्ञ करना. यहां, कालके अतिक्रमका प्रायश्चित्त नहीं है. अन्वाधानके उपरंत प्रतिपदाके दिन इष्टि करनी, वह नहीं करी गई होवै तौ तृतीया आदि उक्त तिथियोंमें सब प्रायश्चित्तहोम करके फिर अन्वाधान करके यज्ञ करना. दूसरा पर्व प्राप्त होवै तौ पहली नहीं करी इष्टि पथिकृत् स्थालीपाक पहले करके पर्वदिनमें करनी. तिस पर्वदिनमेंभी नहीं हो सकै तौ दूसरी प्रतिपदाके दिन इष्टिलोपका पादकृच्छ्र प्रायश्चित्त करके प्राप्त हुये कालमें यज्ञ करना. दूसरे यज्ञकाभी आवनेवाली तिथियोंमें लोप किया जावै तौ तिस पर्वमें पादकृच्छ्र और पथिकृत् चरु करके दूसरा यज्ञ करना. तहांभी यज्ञ नहीं किया जावै तौ तीसरी प्रतिपदाके दिन दो यज्ञोंका

अर्धकृच्छ्र प्रायश्चित्त करके प्राप्त हुआ यज्ञ करना. अर्धकृच्छ्र और पथिकृत् स्थालीपाकपूर्वक तीसरा यज्ञ उक्त तिथिके दिनमें अथवा चतुर्थपर्वके दिनमें करना, नहीं किया जावै तौ अग्निका नाश होता है, इस लिये पुनराधेय करना. **यहां पुनराधेयका स्वरूप.**—आधानोक्त पदार्थोंका संपादन करके “ **अयाश्चा०**” इस मंत्रसें स्रुवाके द्वारा घृतकी आहुति देनी. यह तौ समारोप करी समिधके नाशके निर्णयके स्थलमें कहा है. यहां पुनराधान तौ विवाहहोम आदिरूप पुनराधेयसें भिन्न है. कुंडसें बाहिर और शम्यापरासके मध्यमें अग्निके पातमें “ **इदंत एकं०** ” इस ऋचासें वह अग्नि कुंडमें डालके सब प्रायश्चित्तहोम करना. पर्वदिनमें व्रतका लोप हो जावै तौ व्रतका पति जो अग्नि तिसके उद्देशसें चरु अथवा पूर्णाहुति करनी. पर्वदिनमें स्त्रीपुरुषमांहसें एक कोईकों अश्रुपात होवै तौ, व्रतधारी जो अग्नि तिसके उद्देशसें चरु अथवा पूर्णाहुति करनी. पवित्रका नाश हो जावै तौ पवित्रवान् अग्निके उद्देशसें चरु अथवा पूर्णाहुति करनी. अन्वाधानेष्टिके मध्यमें चंद्रग्रहण प्राप्त होवै तौ “ **अत्राहगो०** ” इस मंत्रसें चंद्रमाके उद्देशसें घृतकी आहुति देके “ **नवोनवो०** ” इस मंत्रसें उपस्थान करके इध्मास्थापन आदि यज्ञ करना. सूर्यग्रहण प्राप्त होवै तौ “ **उद्वयं०** ” इस मंत्रसें सूर्यके उद्देशसें घृतकी आहुति देके “ **चित्रं देवानां०** ” इस मंत्रसें उपस्थान करना. अन्वाधान किये पीछे स्वप्नमें वीर्य छूट जावै तौ “ **इमंमे वरुण० तत्त्वायामि०**” इन दो मंत्रोंसें वरुणकों दो घृतकी आहुति देके सूर्यकी पूजा और “ **पुनर्माम०** ” इस सूत्रोक्त मंत्रका जप करना. जानके वीर्य छूट जावै तौ व्रतपति जो अग्नि तिसके उद्देशसें चरु करना. अन्य समयमें स्वप्नमें वीर्य छूट जावै तौ सूर्यकों तीन प्रणाम करने. इध्माधानके उपरंत होमके द्रव्यमें कोई दोष उत्पन्न होवै तौ दुष्ट हुये होमद्रव्यके स्थानमें घृतप्रतिनिधि करके और यज्ञ समाप्त करके दुष्ट हुये होमके द्रव्य जलमें त्यागके अन्वाधान आदि तद्देवताक (वही है देवता जिसकी ऐसा) पुनर्योग करना. इध्माके स्थापनके पहले होमके द्रव्यमें दोष उत्पन्न होवै तौ वही है देवता जिसकी तिसके होमके द्रव्यकों फिर अन्य लेके यज्ञ करना. स्विष्टकृत्के अर्थ लिये हुये होमके द्रव्यमें दोष उत्पन्न होवै तौ घृतकरके स्विष्टकृत् करना. अंगभूत होमद्रव्यमें दोषकी प्राप्ति होवै तौ तिस कालमें फिर आज्य ग्रहण करना.

हविर्दोषास्तु प्रच्युतनखकेशैःकीटैरक्तास्थिविएमूत्रश्लेष्माद्यैर्बीभत्सितैश्चमार्जारनकुलकाकैर्मुखजलबिंदुघर्मनासिकामलाश्रुकर्णमलैः सूतिकारजस्वलाचांडालादिदृष्टिभिश्चसंसर्गाः देवताहविर्मंत्रादिविपर्यासेयद्वोदेवाइतिमरुद्वयआज्यहोमः कृत्स्नहविर्दाहेतद्धविरुत्पाद्यसएवयागोनतुपुनर्योगः पूर्वादिचतुर्दिक्षुचरूत्सेकेअग्नयेयमायवरुणायसोमायेतिक्रमेणहुत्वासर्वतउत्सेकेचतुर्भ्योपिहुत्वाकोणेषूत्सेकेव्याहृतीर्हुत्वा चरुमाप्यायस्वसंतेपयांसीतिमंत्राभ्यामाज्येनाप्यायति अग्नौमिंदाहुतींचद्वेइतिकेचित् स्वगृह्याग्नेरन्यगृह्याग्निनासंसर्गेउभौयजमानौयुगपत्तमग्निंसमारोप्योभौप्रत्यवरोहणंकृत्वाऽग्नयेविविचयेचरुंकुर्यातां शवाग्निनासंसर्गेऽग्नयेशुचयेचरुः पचनाग्निनासंसर्गेसंवर्गायाग्नयेचरुः सर्वत्रसंसर्गेसमारोपप्रत्यवरोहणोत्तरंचरुः स्वयमग्निप्रज्वलनेउद्दीप्यस्वजातवेदो० मानोहिंसीर्जातवेदोगामश्वंपुरुषंजगत् आविभ्रदग्नआगहिश्रियामापरिपातयेतिद्वाभ्यांद्वेसमिधावग्नयेजुहुयात् सर्वत्रविध्यपराधेसांगतार्थंसर्व

प्रायश्चित्तं गृहदाहेग्नयेक्षामवतेचरुः एवमन्यान्यपिप्रायश्चित्तानिबह्वृचब्राह्मणादिषूक्तानि ज्ञेयानि यत्रतुप्रायश्चित्तविशेषोनोक्तस्तत्रसर्वप्रायश्चित्तं भूर्भुवःस्वरित्यनेनाज्याहुतेः सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञा ॥

होमके द्रव्योंके दोषोंको कहताहुं.—प्रच्युत हुये नख और वाल, कीडा, लोहू, हड्डी, विष्ठा, मूत्र, कफ, इन आदि बुरे पदार्थ, विलाव, नौल, काक, मुखके थूककी बूंद, नासिकाका मैल, आंशू, कानोंका मैल, और सूतिका, रजस्वला, और चांडाल इन आदियोंकी दृष्टिकरके दोष होता है. देवता, होमद्रव्य और मंत्र आदिके विपरीतपनेमें **“यद्वोदेवा०”** इस मंत्रसें मरुत्‌देवताके उद्देशसें घृतका होम करना. सब होमद्रव्य जल जावै तौ वह होमद्रव्य उत्पन्न करके वही यज्ञ करना. पुनर्यज्ञ नहीं करना. पूर्व आदि चार दिशाओंमें चरुका उत्सेक होवै तौ क्रमकरके पूर्वदिशामें अग्निके उद्देशसें, दक्षिणदिशामें यमके उद्देशसें, पश्चिम दिशामें वरुणके उद्देशसें और उत्तर दिशामें सोमके उद्देशसें होम करना. चारोंतर्फ उत्सेक होनेमें चारों देवतोंके उद्देशसें होम करना. कोणोंमें उत्सेक होवै तौ व्याहृतियोंसें होम करके **“आप्यायस्व० संतेपयांसि०”** इन दो मंत्रोंसें चरु घृतसें भिगोवना. कितनेक ग्रंथकार अग्निमें दो मिंदाहुति देनी ऐसा कहते हैं. अपने गृह्याग्निका अन्य गृह्याग्निसें संसर्ग होवै तौ दोनों यजमानोंनें एक कालमें तिस अग्निका समारोप करके दोनोंनें प्रत्यवरोहणकर्म करके विविचिनामक जो अग्नि है तिसके उद्देशसें चरु करना. मुरदाके अग्निके संसर्गमें शुचिनामक अग्निके उद्देशसें चरु करना. पाकाग्निका संसर्ग होवै तौ संवर्ग अग्निके उद्देशसें चरु करना. सब जगह संसर्गके स्थानमें समारोप और प्रत्यवरोहण किये पीछे चरु करना. आपही आप अग्नि प्रज्वलित होवै तौ **“उद्दीप्यस्व जातवेदो०, मानोहिंसीर्जातवेदो०”** इन दो मंत्रोंसें दो समिधोंका अग्निके उद्देशसें होम करना. सब जगह अनुष्ठानकी विधिमें चूक हो जावै तौ सांगताके अर्थ सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञक आहुति देनी. घर दग्ध हो जावै तौ क्षामवान् अग्निके उद्देशसें चरु करना. इसी प्रकार अन्य भी प्रायश्चित्त ऋग्वेदके ब्राह्मण आदि ग्रंथोंमें कहे हैं. वे जानने उचित हैं. जहां विशेष प्रायश्चित्त नहीं कहा होवै तहां सर्वप्रायश्चित्त करना. **“भूर्भुवःस्वः”** इस मंत्रसें जो घृतकी आहुति है तिसको सर्वप्रायश्चित्त ऐसी संज्ञा है.

अथाग्न्युपघातनिमित्तानि श्वशूकररासभकाकसृगालमर्कटशूद्रांत्यजपतितकुणपसूतिकारजस्वलाभिः पुरीषमूत्ररेतोश्रुपूयश्लेष्मशोणितास्थिमांसादिभिरन्यैर्वाजुगुप्सितैरारोपितारणि स्पर्शेग्नेःस्पर्शेवाग्निनाशः तत्रारणिगतेवन्हौनष्टेपुनराधेयमग्नेःस्पर्शेपुनराधानं यद्वापुनस्त्वादित्यारुद्रावसवःसमिंधतांपुनर्ब्रह्माणोवसुनीथयज्ञैः घृतेनत्वंतन्वंवर्धयस्वसत्याःसंतुयजमानस्य कामाःस्वाहा आदित्यरुद्रवसुभ्यइदंनममेतिसमिद्धोमःस्रुवेणाज्याहुतिर्वाअग्नौजलोपघातेपीदमेव स्वस्यजीविनोमृतशब्दश्रवणेग्नयेसुरभिमतेचरुःपूर्णाहुतिर्वा प्रधानाहुतीनांस्विष्टकृतासंसर्गेसर्वप्रायश्चित्तं पिंडपितृयज्ञेअतिप्रणीतनाशेतत्राहोमपक्षेसर्वप्रायश्चित्तं होमपक्षेपुनःप्रणयनमपि आपस्तंबानांप्रायश्चित्तांतेप्रणयनमेवनित्यं पिंडपितृयज्ञलोपेवैश्वानरश्चरुःसप्तहोत्राख्यमहाहविर्होतेत्यादिमंत्रैःपूर्णाहुतिर्वा श्रवणाकर्मसर्पबल्याश्वयुजाग्रयणप्रत्यवरोहणकर्म

णामन्यतमलोपेप्राजापत्यकृच्छ्रं अकृताग्रयणस्यनवान्नभक्षणेग्नयेवैश्वानरायचरुः अष्टकालोपेउपवासः पूर्वेद्युःश्राद्धलोपेप्युपवासः उपवासप्रत्याम्नायएकविप्रभोजनंवा अन्वष्टक्यलोपेएभिर्द्युभिःसुमनाएभिरिंदुभिरितिऋचःशतंजपःसर्वत्रचरुस्थानेपूर्णाहुतिः दर्शपूर्णमासानारंभेआलस्यादिनापूर्णाहुतिकारणेतुयागपर्याप्तंव्रीह्याज्यंदेयमितिगृह्याग्निसागरे निषिद्धतिथ्यादौस्वभार्यागमनेअयाज्ययाजनेलशुनादिगणिकान्नाद्यभोज्यभोजनेनिषिद्धप्रतिग्रहेपुनर्मामैत्विंद्रियं इमेयेधिष्ण्यासइतिद्वाभ्यामाज्यहोमःसमिद्धोमोवाजपोवा गृहोपरिकपोतोपवेशनेदेवाःकपोतइतिपंचर्चसूक्तजपःप्रत्यृचमाज्यहोमोवापाकयज्ञतंत्रेण दुःस्वप्नदर्शनेयोमेराजन्युज्योवेतिऋचासूर्योपस्थानं आतुरत्वनाशाययक्ष्मरोगनाशायवामुंचामित्वेतिसूक्तेनप्रत्यृचंचरोर्होमः यक्ष्मनाशायेदंनममेतिपंचसुत्यागः षष्ठंस्विष्टकृदिति प्रोक्षणीप्रणीतास्थजलानांबिंदुपातेस्रावेवाआपोहिष्ठेतितृचेनपुनःपूरणंततंमेअपस्तदुतायतेइत्यृचाज्याहुतिः इध्माधानलोपेतस्याज्यभागोत्तरंस्मरणेविपर्यासप्रायश्चित्तंकृत्वेध्माधानंचकृत्वाप्रधानयागः प्रधानयागोत्तरंस्मरणेग्निसमिंधनरूपद्वारस्याभावाल्लोपएवेतिप्रायश्चित्तेनैवसिद्धिःअन्यांगेष्वप्येवमूह्यं ॥

अब अग्निका नाश होनेके निमित्तोंको कहताहुं.

कुत्ता, शूर, गद्धा, काक, सृगाल, वानर, शूद्र, अंत्यज, पतित, मुर्दा, सूतिका, रजस्वला, विष्ठा, मूत्र, वीर्य, आंशु, राद, कफ, रक्त, हड्डी, मांस इन आदि और निंदित पदार्थोंका स्पर्श, आरोपित (जिस अरणीपर अग्निसमारोप किया होवै तिस) अरणीकों स्पर्श अथवा साक्षात् अग्निकों स्पर्श हो जावै तब अग्नि नष्ट होता है. तिसके मध्यमें अरणीसंबंधी अग्नि नष्ट होवै तौ पुनराधेय करना, साक्षात् अग्निकों स्पर्श होनेमें पुनराधान करना. अथवा "**पुनस्त्वादित्या०**" इस मंत्रसें समिधका होम करके "**आदित्यरुद्रवसुभ्यइदं न मम**" ऐसा त्याग करना. अथवा स्रुवासें घृतकी आहुति देनी. अग्निमें जलका उपघात होवै तौभी यही प्रायश्चित्त करना. आप जीवता होके अपने मरनेका शब्द सुना जावै तौ सुरभिमान् जो अग्नि तिसके उद्देशसें चरु अथवा पूर्णाहुति करनी. प्रधानआहुतियोंका स्विष्टकृत्के संग संसर्ग होवै तौ सर्वप्रायश्चित्त आहुति देनी. पिंडपितृयज्ञमें अतिप्रणीत नामक अग्निका नाश हो जावै तौ होमपक्षके नहीं होनेमें तिसविषे सर्वप्रायश्चित्त करना. होमपक्षमें पुनःप्रणयनपूर्वक सर्वप्रायश्चित्त करना. आपस्तंबोंकों प्रायश्चित्ताहुति दिये पीछे प्रणयनही अवश्य कहा है. पिंडपितृयज्ञके लोप हो जानेमें वैश्वानर चरु करना. अथवा, "**सप्तहोत्राख्यमहाहविर्होता०**" इत्यादि मंत्रोंसें पूर्णाहुति करनी. श्रवणाकर्म, सर्पबलि, आश्वयुजीकर्म, आग्रयण और प्रत्यवरोहण इन कर्मोंमांहसें एक कोईसे कर्मका लोप हो जावै तौ प्राजापत्यकृच्छ्र करना. आग्रयण किये विना नवीन अन्न भक्षण करनेमें वैश्वानर अग्निके उद्देशसें चरु करना. अष्टकाश्राद्धका लोप हो जावै तौ उपवास करना. पूर्वेद्युःश्राद्धका लोप हो जावै तौ उपवास करना. अथवा उपवासके स्थानमें एक ब्राह्मणकों भोजन कराना. अन्वष्टक्यश्राद्धके लोपमें "**एभिर्द्युभिः सुमना०, एभिरिंदुभिः,**" इस मंत्रका १०० वार जप करना. जिस जिस स्थलमें चरु करना ऐसा कहा होवै तिस तिस स्थलमें दर्शपौर्णमासका आरंभ किया नहीं जावै तौ पूर्णाहुति करनी. आलस्य आदिकरके पूर्णाहुतिके करनेमें यज्ञकी समाप्ति होनेपर्यंत

चावल और घृतका दान करना ऐसा गृह्याग्निसागरमें कहा है. निषिद्ध तिथि आदिमें अपनी स्त्रीसें भोग करनेमें, अयोग्यके घरमें होम करनेमें, लसन आदि और वेश्याका अन्न आदि अभक्ष्य भोजन करनेमें और निषिद्ध प्रतिग्रहमें **‘‘पुनर्मामैत्विन्द्रियं० इमेयेधिष्णास:०’’** इन दो मंत्रोंसें घृतका होम अथवा समिधका होम अथवा जप करना. कपोत पक्षी घरपर वैठे तौ **‘‘ देवाः कपोत० ’’** इन पांच ऋचाओंके सूक्तका जप अथवा पाकयज्ञतंत्रसें प्रत्येक ऋचासें घृतका होम करना. दुष्ट स्वप्न दीखनेमें **‘‘ योमे राजन्युज्योवा० ’’** इस ऋचाकरके सूर्यका उपस्थान करना. रोगके नाशके अर्थ अथवा क्षयरोगके नाशके अर्थ **‘‘मुंचामि त्वा०’’** इस सूक्तकी प्रत्येक ऋचासें चरुका होम करना, और पांच ऋचाओंके स्थानमें **‘‘ यक्ष्मनाशायेदं न मम ’’** ऐसा त्याग करना. छठी स्विष्टकृत् आहुति देनी. प्रोक्षणी और प्रणीता इन पात्रमें स्थित हुये पानीकी बूंद बाहिर पडै अथवा झिरै तौ **‘‘ आपोहिष्ठा० ’’** इन तीन ऋचाओंका पाठ करके फिर तिस पात्रमें पानी डालना, और **‘‘ततं मे अपस्तदुतायते०’’** इस ऋचासें घृतकी आहुति देनी. इध्मास्थापनका लोप हो जावै और आज्यभागके उपरंत तिसका स्मरण होवै तौ विपरीतपना होनेका प्रायश्चित्त करके और इध्मा स्थापन करके प्रधानयज्ञ करना. प्रधानयज्ञके उपरंत तिसका स्मरण होवै तौ अग्निप्रज्वलनरूप द्वारका अभाव होनेसें लोपही है और प्रायश्चित्तकरके तिस इध्माकी सिद्धि होती है. अन्य अंगोंमेंभी ऐसाही निर्णय जानना.

अथाग्निनाशकानि दंपत्योरन्यतरोग्निसमीपेउदयास्तमयकालेवसेत् उभौदंपतीगृहसीमांग्रामसीमांवानदींवोल्लंघ्यहोमकालेबहिर्वसेतांतदापुनराधानं अग्नीनामजस्रहरणेशम्यापरासात्प्रागुच्छ्वासेग्निनाशः कर्मार्थंहरणेग्नीनांनानुच्छ्वासादिचोद्यते आत्मसमारोपणपक्षेप्सुमज्जने मैथुनेशूद्रादिस्पर्शनेग्निनाशः पत्न्यनेकत्वेपिएकस्यामपिहोमकालेगृहसीम्नोबहिर्गतायामग्निनाशः ॥

अब अग्निका नाश करनेवाले निमित्तोंकों कहताहुं.

स्त्रीपुरुषमांहसें एक कोईसेनें अग्निके समीप उदय और अस्तकालमें वास करना. दोनों स्त्रीपुरुष घरकी सीम अथवा गामकी सीम अथवा नदी इन्होंका उल्लंघन करके होमकालविषे वाहिर वास करैं तब पुनराधान करना चाहिये. कुंडसें सब अग्निकों बाहिर ले जाना, इस पक्षमें अग्नि ले जानेमें शम्यापरासके मध्यमें उच्छ्वास होवै तौ अग्निका नाश होता है. किसीक कर्मके अर्थ अग्निके ले जानेमें उच्छ्वासका रोध करना चाहिये ऐसा नहीं है. अपनेविषे अग्निसमारोप किया है इस पक्षमें तिसनें जलमें गोता मारनेमें, मैथुन करनेमें और शूद्र आदिके स्पर्शमें अग्निका नाश होता है. बहुतसी पत्नियोंके होनेमेंभी तिन्होंमांहसें एकभी स्त्री होमकालमें घरकी सीमके वाहिर जानेमें अग्नि नष्ट होता है.

ज्येष्ठायामग्निसमीपस्थायांकनिष्ठयासहयजमानप्रवासोनदोषाय दंपतीउभावपिग्रामगृहयोःसीम्नोर्बहिर्गत्वाहोमकालात्पूर्वमागतौचेन्नदोषः यजमानेग्निसमीपस्थेपिहोमकालेपत्न्याग्रामांतरस्थितौपुनराधानमाहुः प्रवासेन्यतरेणसमारूढाग्नेरन्वारंभासत्त्वेनदीसीम्नोरुल्लंघनेपुन

राधानं अग्निंविहाययजमानस्यशतयोजनगमनेवर्षपर्यंतंस्वयंहोमाभावेवाग्निनाशःतत्रपुनराधानंपवित्रेष्टिर्वा विनाग्निभिर्यदापत्नीनदीमंबुधिगामिनीं अतिक्रमेत्तदाग्नीनांविनाशःस्यादिति श्रुतिः अग्निसमीपेपत्यौपत्न्यंतरेवापत्न्यानदीलंघनेदोषोन पतिप्रवासेपत्न्याअग्निभिःसहसीमोल्लंघनेग्निनाशः एवंपत्युरपिपत्नीप्रवासे जलेनहेतुनाग्निरुपशांतश्चेत्पुनराधेयं तदेवपुनराधेयमग्नावंनुगतेसति असमाधायचेत्स्वामीसीमामुल्लंघ्यगच्छतिसमारोपणंविनाशम्यापरासादूर्ध्वमग्नीनांहरणेनाशः रजोदोषेसमुत्पन्नेसूतकेमृतकेपिवा प्रवसन्नाग्निमान्विप्रःपुनराधानमर्हति बह्वीनामपिचैकस्यामुदक्यायांनतुव्रजेत् एकादशेचतुर्थेह्निगंतुमिच्छेन्निमित्ततः नचाग्निहोमवेलायांप्रवसेन्नचपर्वणि होमद्वयात्ययेदर्शपूर्णमासात्ययेपुनराधेयमापस्तंबादिविषयं पचनाग्नौ पचेदन्नंसूतकेमृतकेपिवा अपक्त्वातुवसेद्रात्रिंपुनराधानमर्हतीदंकात्यायनादिपरं पत्नीप्रवासे पुनराधानमुक्तंतदेकभार्यस्य बहुभार्यस्यतुज्येष्ठाप्रवासएवपुनराधानमितिकेचित् एतेषुनिमित्तेषुस्थितानग्नीनुत्सृज्यान्येषामाधानंआरादुपकारकांगलोपेकर्मसमाप्तेःप्राक्प्रायश्चित्तंकृत्वातदंगंकुर्यात् कर्मसमाप्तौप्रायश्चित्तमेवनांगावृत्तिः सन्निपत्यौपकारकांगस्यद्रव्यसंस्काररूपस्यलोपे प्रधानात्प्राक्तत्कार्यं प्रधानोत्तरंप्रायश्चित्तमेवनावृत्तिः ॥

बडी स्त्री अग्निके समीप स्थित होवै तब छोटी स्त्रीके साथ यजमानका प्रवास दोषकारक नहीं होता है. दोनोंही यजमान और पत्नी ग्राम और घरकी सीमके बाहिर जाके होमकालके पहले घरमें आगमन करैंगे तौ दोष नहीं है. होमकालविषे स्त्री अन्य ग्राममें होवै और यजमान अग्निके समीपमें स्थित होवै तबभी पुनराधान करना ऐसा कहते हैं. प्रवासमें नदी और गामकी सीमके उल्लंघनके समयमें स्त्रीपुरुषमांहसें एक कोईसा समारोपित किये अग्निकों स्पर्श नहीं करै तौ पुनराधान करना चाहिये. यजमान अग्निका त्याग करके चारसौ कोशपर्यंत गमन करै अथवा एक वर्षपर्यंत आप होम नहीं करै तब अग्निका नाश होता है, और तैसा होनेमें पुनराधान अथवा पवित्रेष्टि करनी. "अग्निके विना जो पत्नी समुद्रकों मिलनेवाली ऐसी नदीका उल्लंघन करै तब अग्निका नाश होता है ऐसा श्रुतिप्रमाण है." अग्निके समीपमें पति अथवा दूसरी पत्नी होवै तब स्त्रीनें नदीकों उल्लंघनेमें दोष नहीं है. पति प्रवासमें होके पत्नीनें अग्निके साथ सीमकों उल्लंघन करनेमें अग्निका नाश होता है. इसी प्रमाण पत्नी प्रवासमें होवै तब पतिनें अग्निके साथ सीमकों उल्लंघनेमें अग्निका नाश होता है. पानीसें अग्नि नष्ट हो जावै तौ पुनराधान करना. अग्नि नष्ट होनेमें यजमान अग्निका उपस्थान किये विना सीमका उल्लंघन करै तौ पुनराधेय करना. समारोपके विना छत्तीस अगुलप्रमाण शम्यापरासके उपरंत अग्नि ले जानेमें वह अग्नि नष्ट हो जाता है. स्त्री रजस्वला होवै तब अथवा आशौचमें अग्निमान् ऐसा ब्राह्मण प्रवास करै तौ वह पुनराधानकों योग्य होता है. बहुतसी स्त्रियोंमांहसें एकभी स्त्री रजस्वला हो जावै तौ भी प्रवास नहीं करना. निमित्तसें ग्यारहमे दिनमें और चौथे दिनमें प्रवास करनेकी इच्छा करनी. अग्निके होमके समयमें और पर्वदिनमें गमन नहीं करना. दो होमोंका नाश हो जानेमें अथवा दर्शपौर्णमासस्थालीपाकोंका नाश हो जानेमें पुनराधेय करना ऐसा जो कहा है सो आपस्तंब आदि शाखाविषयक है. "सूतकमें अथवा जननाशौचमें पचनाग्निकेंविषे पाक करना. तिस पचनाग्निपर

पाक नहीं करके एक रात्रि तैसाही रहैगा तौ पुनराधान करना ऐसा जो कहा सो कात्यायन आदि शाखाविषयक है. पत्नीके प्रवासमें पुनराधान कहा है वह एकपत्नीवालेके विषयमें है. बहुतसी स्त्रियोंवाले पुरुषनें बडी स्त्री प्रवास करै तौ पुनराधान होता है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. इन पूर्वोक्त निमित्तोंके होनेमें प्रथम अग्नियोंकों त्यागके अन्य अग्नियोंका आधान करना. साक्षात् उपकार करनेवाले जो अंगभूत कर्म तिन्होंका लोप होनेमें कर्मकी समाप्ति होनेके पहले प्रायश्चित्त करके लुप्त हुआ अंगभूत कर्म करना. कर्मकी समाप्ति हुए पीछे लोप हुआ होवै तौ प्रायश्चित्तही करना. अंगभूत कर्मकी आवृत्ति नहीं करनी. परंपरासंबंधसें द्रव्यसंस्काररूप उपकारक अंगके लोपमें प्रधानकर्मके पहले वह अंगभूत कर्म करना. प्रधानके उपरंत लोप होनेमें प्रायश्चित्तही करना, आवृत्ति नहीं करनी.

मृतायैपत्न्यैदाहायार्धाग्निंदत्वावशिष्टाग्नौसायंप्रातर्होमस्थालीपाकाग्रयणानिकुर्यात् कौस्तुभेतुअर्धाग्निदानादिकमुक्त्वा विधुरस्यापूर्वाधानप्रकारस्तस्याविच्छेदेपुनराधानप्रकारश्चोक्तःतत्राधानप्रकारोवशिष्टाग्नेःप्राक्होमान्नाशपरः यद्वाश्रौताग्निषुभार्यायैअर्धाग्निदानंकृत्वाउत्सर्गेष्ट्यापूर्वाग्नीन्परित्यज्य पुनराधानंकृत्वाग्निहोत्रंकार्यमित्युक्तंतद्वदत्रापिउत्सर्गेष्ट्यापूर्वाग्नित्यागोत्तरमपूर्वाधानंकौस्तुभेउक्तमितियोज्यमितिभाति ॥

मृत हुई पत्नीके दाहके अर्थ आधा अग्नि देके शेष रहे अग्निमें सायंप्रातर्होम, स्थालीपाक और आग्रयण ये करने. **कौस्तुभ**ग्रंथमें तौ आधा अग्नि देना आदि कहके मृत हुई पत्नीवालेनें अपूर्वाधान करना और वह शेष रहा अग्नि नष्ट हो जावै तौ पुनराधान करना ऐसा कहा है. तहां आधान करनेके विषयमें जो प्रकार कहा है सो शेष रहा अग्नि होमके पहले नष्ट होवै तौ तद्विषयक जानना. अथवा श्रौताग्निमांहसें स्त्रीके दाहके अर्थ आधा अग्नि देके उत्सर्गेष्टि करके पहले अग्निकों त्यागके पुनराधान करके अग्निहोत्र करना ऐसा कहा है, तैसा यहां भी उत्सर्गेष्टि करके पहले अग्निका त्याग किये पीछे अपूर्वाधान करनेकेविषे **कौस्तुभ** ग्रंथमें कहा है, इसी प्रकार यहां भी योजना करनी ऐसा प्रतिभान होता है.

अरणिस्रुवादिपात्राणांलक्षणवृक्षादिविचारोन्यत्रज्ञेयः एतेषांविधीनांसंकल्पादिविस्तरयुक्ताःप्रयोगागृह्याग्निसागरे प्रायश्चित्तादिविधयःप्रायःसर्वसूत्रेषुसमानाएव क्वचित्क्वचित्स्वस्वसूत्रोक्ताविशेषाऊह्याः विवाहहोमोगृहप्रवेशनीयहोमेनसमानतंत्रोनुष्ठीयमानोबह्वृचानांपुनराधानं अन्येषांविवाहहोमाद्भिन्नमेवेतिविशेषः ॥

अरणी, स्रुवा इत्यादिक पात्रोंके लक्षण और वृक्ष आदिका विचार दूसरे ग्रंथमें जानना. इन पूर्वोक्त सब विधियोंके संकल्प आदि विस्तारयुक्त प्रयोग **गृह्याग्निसागरमें** कहे हैं. प्रायश्चित्त आदिके विधि प्रायशःकरके सब सूत्रोंमें समानही हैं. कहीं कहीं अपने अपने सूत्रके अनुसार कहे विशेष विचार लेने. विवाहहोम गृहप्रवेशनीय होमके साथ एकतंत्रसें करनेका सो ऋग्वेदियोंका पुनराधान होता है. अन्य शाखावालोंनें विवाहहोमसें पृथक्ही पुनराधान करना यह विशेष जानना.

अथकात्यायनोपयोगिकिंचिदुच्यते पराग्निपक्वंनाश्नीयाद्रुडगोरसमंतरा आहिताग्नेरयंध

मोंयाज्ञिकानांतुसंमतः इक्षुक्षीरविकाराश्चभ्राष्ट्रभृष्टयवाअपि पराग्निपक्वंनज्ञेयंप्रवासेचाग्निहोत्रिणः यदन्नंवारिहीनंचपक्वंकेवलपावके तदन्नंफलवत्ग्राह्यमन्नदोषोनविद्यते प्रातर्होमंतुनिर्वर्त्यसमुद्धृत्यहुताशनात् शेषंमहानसेकृत्वातत्रपाकंसमाचरेत् पूर्वेणयोजयित्वातंतस्मिन्होमोविधीयते अतोस्मिन्वैश्वदेवादिकर्मकुर्यादतंद्रितः ॥

अब कात्यायनोंके उपयोगका कछुक निर्णय कहताहुं.

“ गुड और गोरस इन्होंके विना अन्य पदार्थ दूसरेके अग्निपर पकाये हुए भक्षण नहीं करने. अग्निहोत्रीका यह धर्म याज्ञिकोंकों मान्य है. ईखके और दूधके पदार्थ, भांडमें भुने जव ये पदार्थ दूसरेके अग्निपर पकाये होवैं तौभी प्रवासमें अग्निहोत्रीनें दूसरेके अग्निपर पकाये ऐसा नहीं जानना. केवल लौकिकाग्निपर पानीसें रहित पकाया अन्न फलकी तरह ग्रहण करना. तिसके ग्रहण करनेमें अन्नका दोष नहीं है. प्रातःकालका होम समाप्त करके पीछे तिस अग्निमांहसें थोडासा अग्नि लेके वह अपनी रसोईके स्थानमें प्रज्वलित करके तिसपर सब पाक बनाना. पीछे फिर तिस अग्निकों कुंडकी अग्निमें मिलाके तिसमें होम करना, ऐसा है इसलिये आलस्यसें रहित होके वैश्वदेव आदि कर्म गृह्याग्निविषे करने.

बह्वृचकारिकायां नित्यंपाकायशालाग्नेरेकदेशस्यकार्यतः पाकार्थमुल्मुकंहृत्वातत्रपक्वामहानसे वैश्वदेवोऽग्न्यगारेस्यात्पाकार्थोग्निश्चलौकिकः भूरिपाकोभवेद्यत्रश्राद्धादावुत्सवेषुच कृतेचवैश्वदेवेथलौकिकोनैवकार्यतः दीपकोधूपकश्चैवतापार्थयश्चनीयते सर्वेतेलौकिकाज्ञेयास्तावन्मात्रापवर्गतः बहुधाविहृतोह्यग्निरावसथ्यात्कथंचन यावदेकोपितिष्ठेततावदन्योनमथ्यते वैश्वदेवात्तथाहोमात्प्राक्ज्ञेयंनैवमंथनं पचनाग्नावपक्वाहःपुनराधानमर्हति आरोपितारणीचोभेएकावायदिनश्यति तत्राग्न्याधेयमिच्छंतिपुनराधेयमेववा अथानारोपितारण्योःक्षयेग्राह्येनवेपुनः तदलाभेयदोद्वाहादत्रस्यात्पुनराहितिः शूद्रोदक्यांत्यजैश्चैवपतितामेध्यरासभैः अनारूढारणिस्पर्शेतेविहायान्ययोर्ग्रहः आरूढारणिस्पर्शेपुनराधेयमुक्तं भवतंनःसमेत्यप्सुमज्जयेद्दूषितारणीएकारण्येवदुष्टाचेत्तामेवाप्सुनिमज्जयेत् तत्रान्यारणिलाभात्प्रागुद्वातेपुनराहितिःउद्वातेअग्नौनष्टे नष्टायामरणौयावदग्निस्तिष्ठतिवेश्मनि तावद्धोमादिकंकृत्वातन्नाशेपुनराहरेत् अत्रैकारणिनाशेन्यामेकांमंत्रेणोपादायोभाभ्यांमंथनमितिकेचित् अवशिष्टांतामेवछित्वामंथनमित्यपरे एकस्याःदोषेप्यरणिद्वयंत्यक्त्वानूतनद्वयोपादानमितिनारायणवृत्त्याशयःअयमरणिविचारःश्रौतस्मार्तसाधारणःसर्वशाखासाधारणश्च ॥

बह्वृचकारिकाग्रंथमें कहा है की—“ प्रतिदिन पाक बनानेके लिये गृह्याग्निके एकभागसें पाक करना यहही है प्रयोजन जिसका ऐसे उल्मुक अर्थात् प्रज्वलित हुई लकडीकों लेके तिसकों अपनी रसोईके स्थानमें ले जाके तहां अग्नि प्रज्वलित करना, और तिसपर सब पाककी निष्पत्ति करनी. पाककी निष्पत्ति जिसपर कीई वह लौकिक अग्नि कहाता है, इसलिये वैश्वदेव करनेका सो गृह्याग्निमें करना. श्राद्ध इत्यादिक निमित्त, और उत्सवके दिनमें जिस अग्निपर बहुतसा पाक बनाया जावै तिसमें वैश्वदेवकर्म करना; क्योंकी, कार्यके अनुरोधसें वह लौकिक अग्नि नहीं है. दीपक जलानेमें, धूप देनेमें और गरमाई करनेमें

गृह्याग्निसें लिये जो अग्नि ये सब लौकिक अग्नि जानने. क्योंकी, कार्य किये पीछे तिस तिस अग्निका गृह्याग्निपना नष्ट हो जाता है. गृह्याग्निसें पृथक् पृथक् कार्य करनेके लिये बहुतवार अग्नि ग्रहण किया जावै तौ तिस ग्रहण किये अग्निमांहसें जबतक एक अग्नि स्थित रहै तितने कालपर्यंत अरणी मंथन करके दूसरा अग्नि नहीं लेना. वैश्वदेव तथा होम करनेके पहले अग्नि मंथन नहीं करना. पाकनिष्पत्ति करनेके लिये गृह्याग्निसें जो अग्नि लिया जावै सो पचनाग्नि कहाता है. तिस पचनाग्निपर दिनमें पाक नहीं किया जावै तौ तिसनें पुनराधान करना. अग्निसमारोपित करी ऐसी दो अरणी, तिन्होंमेंसें दोनों अथवा एक नष्ट हो जावै तौ तहां अग्निका आधेय अथवा पुनराधानही करना ऐसा कहा है. अग्निसमारोपित करी ऐसी अरणी नष्ट हो जावै तौ फिर दूसरी नवीन अरणी लेनी. दूसरी नवीन अरणी नहीं मिलै और अग्नि नष्ट हो जावै तौ पुनराधान करना. "शूद्र, रजस्वला, अंत्यज, पतित, अपवित्र और गद्धा इन आदिकोंका समारोप नहीं करी अरणीकों स्पर्श होनेमें तिस अरणीका त्याग करके दूसरी अरणी लेनी." समारोप करी अरणीकों शूद्र आदि स्पर्श करै तौ पुनराधेय करना ऐसा कहा है. समारोप करी अरणी दूषित हो जावै तौ तिस अरणीकों **" भवतं नःसम० "** इस मंत्रसें जलमें डाल देना. एकही अरणी दूषित हो जावै तौ वहही पानीमें डाल देनी. दूषित हुई अरणी पानीमें डाल दिये पीछे और दूसरी अरणी मिलनेके पहले अग्नि नष्ट होवै तौ पुनराधान करना. अरणी नष्ट होनेमें जितना कालपर्यंत अग्नि घरके मध्यमें रहै तितना कालपर्यंत होम आदिक करना, और अग्निके नाश होनेमें पुनराधान करना. इस स्थलमें एक अरणीका नाश होवै तौ दूसरी एक अरणी समंत्रक ग्रहण करके पीछे दोनों अरणियोंका मंथन करके अग्नि उत्पन्न करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. दूसरे ग्रंथकार तौ शेष रही जो अरणी तिसकों तोडके दो अरणी बनाय तिन्होंका मंथन करना ऐसा कहते हैं. दोनों अरणियोंमांहसें जो एक अरणी दूषित होवै तौभी दोनों अरणियोंका त्याग करके नवीन दो अरणी लेनी, ऐसा **नारायणवृत्तिका** अभिप्राय है. यह अरणीका निर्णय श्रौतकर्म और स्मार्तकर्म इन्होंका साधारण और सब शाखाओंका साधारण कहा है.

अग्निसमारोपेकातीयैर्वैश्वदेवःपाकश्चलौकिकेग्नौकार्यइत्याहुः यस्यवेदश्चवेदीचविच्छिद्येतेत्रिपूरुषं सवैदुर्ब्राह्मणोज्ञेयःसर्वकर्मसुगर्हितः अग्निहोत्रंप्रकुर्वीतज्ञानवान्छ्रद्धयान्वितः अग्निहोत्रात्परोधर्मोनभूतोनभविष्यति श्रौतेकर्मणिनोशक्तोज्ञानद्रव्याद्यभावतः स्मार्तंकुर्याद्यथाशक्तोत्राप्याचारंलभेत्सदा कृतदारोनतिष्ठेतक्षणमप्यग्निनाविना तिष्ठेतचेद्द्विजोव्रात्यस्तथाचपतितोभवेत् नगृह्णीयाद्विवाहाग्निंगृहस्थइतिमन्यते अन्नंतस्यनभोक्तव्यंवृथापाकोहिसस्मृतः योदद्यात्कांचनंमेरुंपृथिवींचससागरां तत्सायंप्रातर्होमस्यतुल्यंभवतिवानवा इतिहोमप्रकरणं ॥

अग्निका समारोप किया होवै तौ कात्यायनशाखावालोंनें वैश्वदेव और पाक लौकिक अग्निपर करना ऐसा कहते हैं. जिसके कुलमें तीन पुरुषपर्यंत वेदाध्ययन और अग्निहोत्र ग्रहण नहीं किया होवै वह दुर्ब्राह्मण जानना. और वह दुर्ब्राह्मण होनेसें कोईभी सत्कर्मकों योग्य नहीं ऐसा जानना. अग्निहोत्रके समान उत्तम धर्म पहले हुआ नहीं, और होवैगाभी

नहीं, इस लिये ज्ञानवान् और भक्तिमान् ऐसे पुरुषनें अग्निहोत्र धारण करना. ज्ञान और द्रव्यके अभावसें श्रौतकर्ममें जो समर्थ नहीं होवै तिसनें अपनी शक्तिके अनुसार स्मार्तकर्म करना. तहांभी सब कालमें आचार मनुष्यकों प्राप्त होता है. जिस ब्राह्मणनें यथाविधि विवाह करके स्त्रीपरिग्रह किया होवै तिस पुरुषनें एक क्षणभी अग्निके विना नहीं रहना. कदाचित् द्विज अग्निके विना एक क्षणभरभी रहै तौ वह व्रात्य, संस्कारहीन और पतित होता है. जो ब्राह्मण विवाहके अग्निकों धारण नहीं करता होवै और आपकों गृहस्थाश्रमी मानता होवै तिसका अन्न भोजन नहीं करना. क्योंकी, तिसका वह पाक पतित होनेसें पंचमहायज्ञोंके विषयमें अयोग्य है, इस लिये वृथा होता है. जो मनुष्य सोनाके सुमेरु पर्वतका और समुद्रोंसहित पृथ्वीका दान करता है और तिसकों जो दानका फल मिलता है सो, सायंकालमें और प्रातःकालमें जो अग्निमें होम दिया जावै तिसके फलके समान हो सक्ता है अथवा नहीं हो सक्ता अर्थात् सुवर्णका सुमेरु और पृथ्वीका दान करनेसें जो फल प्राप्त होता है तिस्सें होमका फल विशेष है, यह तात्पर्य जानना. इस प्रकार होमका प्रकरण समाप्त हुआ.

अथनित्यदानं एकस्मिन्नप्यतिक्रांतेदिनेदानविवर्जिते दस्युभिर्मुषितस्येवयुक्तमाक्रंदितुंभृशम् तस्माद्विभवानुसारेणधनधान्यादिदेयमसंभवेपूगीफलादिकमपिप्रत्यहंदेयं ततोगोब्राह्मणादिमंगलदर्शनं इत्यष्टधाविभक्तदिनस्यप्रथमभागकृत्यं ॥

अब नित्यदान कहताहुं.

दानविना एक दिनभी व्यतीत हो जावै तौ चोरोंनें घर लूटके सर्वस्व हर लिया होवै तब जैसा वह दिन अत्यंत दुःखकों पात्र होता है, तैसा दानसें रहित दिन दुःखकों पात्र होता है. इस लिये अपने ऐश्वर्यके अनुसार धन और अन्न आदि कुछ अल्पभी दान करना. असंभवमें सुपारी आदिकाभी दान नित्यप्रति करना. पीछे गौ और ब्राह्मण आदि मंगल पदार्थोंका दर्शन लेना. इस प्रकार आठ प्रकारसें विभक्त किये दिनके प्रथम भागका कृत्य कहा है.

द्वितीयभागेवेदशास्त्राभ्यासः पठेदध्यापयेद्वेदान्जपेच्चैवविचारयेत् अवेक्षेतचशास्त्राणि धर्मादीनिद्विजोत्तमः देवार्चनमपिप्रातर्होमोत्तरंवाचतुर्थभागेब्रह्मयज्ञोत्तरंवाकार्यं विधायदेवतापूजांप्रातर्होमादनंतरं कुर्वीतदेवतापूजांजपयज्ञादनंतरमित्यादिद्विविधस्मृतेः देवार्चनं प्रकर्तव्यंत्रिकालेपियथाक्रमं अशक्तौविस्तरात्प्रातर्मध्यान्हेगंधमादितः सायंनीराजनंकुर्यात् त्रिकालेतुलसीदलं यथासंध्यातथापूजात्रिकालेमोक्षदास्मृतेतिकमलाकरः तत्रविष्णुशिवब्रह्मसूर्यशक्तिविनायकादिष्वभिमतांदेवतामर्चयेत् तत्रापिकलौहरिहरयोःपूजाप्रशस्ता नविष्णवाराधनात्पुण्यंविद्यतेकर्मवैदिकं तस्मादनादिमध्यांतंनित्यमाराधयेद्धरिं अथवादेवमीशानंभगवंतंसनातनं प्रणवेनाथवारुद्रगायत्र्यात्र्यंबकेनवा तथोन्नमःशिवायेतिमंत्रेणानेनवा यजेत् तत्रापिप्रतिमास्थंडिलादिभ्यःशालिग्रामेबाणलिंगेचप्रशस्ता आवाहनादिकंविनासदा

देवतासन्निधानात् श्रीमद्भागवते उद्वासावाहनेनस्तःस्थिरायामुद्धवार्चनेअस्थिरायांविकल्पः स्यात्स्थंडिलेतुभवेद्द्वयं ॥

दिनके दूसरे भागमें वेदशास्त्रका अभ्यास करना. “ब्राह्मणनें वेदशास्त्रका पठन करना, अन्यकों वेद पढाने, जप करना, वेदके अर्थका विचार करना और धर्मशास्त्र आदिके अर्थोंका विचार करना.” प्रातःकालसंबंधी होम दिये पीछे देवताकी पूजा करनी अथवा दिनके चौथे भागमें ब्रह्मयज्ञ किये पीछे देवपूजा करनी. क्योंकी, “प्रातःकालीन होम दिये पीछे देवपूजा करनी अथवा ब्रह्मयज्ञ किये पीछे देवपूजा करनी,” इस आदि दो प्रकारका स्मृतिवचन है. “तीनों कालोंमें क्रमके अनुसार देवपूजा करनी. तीनों कालोंमें विस्तारपूर्वक पूजा करनेकी शक्ति नहीं होवै तौ प्रातःकालमें विस्तारपूर्वक देवपूजा करनी, और मध्यान्हकालमें गंध आदि उपचारोंसें देवपूजा करनी, और सायंकालमें धूप, दीप, आरती इन आदि उपचारोंसें पूजा करनी.” त्रिकाल तुलसीपत्रोंसें पूजा करनी. जैसी त्रिकाल संध्या मोक्ष देनेवाली है तैसी त्रिकालपूजा मोक्ष देनेवाली होती है ऐसा **कमलाकर** कहता है. तहां विष्णु, शिव, ब्रह्मा, सूर्य, शक्ति और गणेशजी इन आदि देवतोंमांहसें अपने इष्ट देवकी पूजा करनी. तिन्होंमांहसेंभी कलियुगमें विष्णु और शिवकी पूजा करनी श्रेष्ठ है. “विष्णुके आराधनसें पुण्यकारक ऐसा वैदिक कर्म कोइसाभी नहीं है, इस लिये जिसकों आदि, मध्य और अंत नहीं है ऐसे संसारदुःख हरण करनेवाले विष्णुकी आराधना नित्यप्रति करनी. अथवा प्रकाशरूप, छह गुण और ऐश्वर्यसें संपन्न, शाश्वत ऐसे शिवजीकी पूजा ओंकारमंत्रसें अथवा रुद्रगायत्रीमंत्रसें अथवा त्र्यंबकमंत्रसें, अथवा “**ओंनमः शिवाय**” इस षडक्षरमंत्रसें करनी. तहांभी मूर्ति, स्थंडिल इस आदिसें शालग्राम और बाणलिंग इन्होंकी पूजा करनी अति श्रेष्ठ है; क्योंकी, आवाहन आदिके विना सब कालमें देवताका सन्निधान शालिग्राम और बाणलिंग इन्होंकेविषे नित्य रहता है. **श्रीमद्भागवतमें** कहा है की, हे “उद्धव, स्थिर मूर्तिकी पूजा करनेमें आवाहन और विसर्जन नहीं करने.” अस्थिर मूर्तिकी पूजा करनेमें आवाहन और विसर्जन करना अथवा नहीं करना. स्थंडिलमें पूजा करनी होवै तौ आवाहन और विसर्जन दोनों करने.

तत्रसंक्षेपतः पूजाप्रयोगउच्यते विशेषविचारस्तुमूर्तिप्रतिष्ठाप्रसंगेनवक्ष्यते तत्रोदयात्पूर्वंनिर्माल्यमपसार्ययथाकालेपूजारंभः येभ्योमाता० एवापित्रे० इतिपठन्घंटानादंकृत्वाचम्यप्राणानायम्यदेशकालादिसंकीर्तनांतेश्रीमहाविष्णुपूजांकरिष्यइति पंचायतनपक्षेश्रीरुद्रविनायकसूर्यशक्तिपरिवृतश्रीमहाविष्णुपूजांकरिष्यइतिसंकल्प्यासनादिविधाय सहस्रशीर्षेतिषोडशर्चस्यसूक्तस्यनारायणःपुरुषोनुष्टुप्अंत्यात्रिष्टुप्न्यासेपूजायांचविनि० ततःप्रथमामृचंवामेकरेद्वितीयांदक्षिणेन्यसेत् तृतीयांवामेपादेचतुर्थींदक्षिणेपंचमींवामेजानुनिषष्ठींदक्षिणेसप्तमींवामकटौअष्टमींदक्षिणेनवमींनाभौदशमींहृदि एकादशींकंठेद्वादशींवामबाहौत्रयोदशींदक्षिणेचतुर्दशींमुखेपंचदशीमक्ष्णोःषोडशींमूर्ध्नि एवंदेहेचदेवेचन्यासंकुर्याद्विधानतःअंत्याभिःपंचभिर्ऋग्भिर्हृदयाद्यंगपंचके कलशंशंखघंटेचपाद्यार्घ्याचमनीयकं संपूज्यप्रोक्ष्यचात्मानंपूजासंभारमेवच ध्यायेदभिमतांविष्णुमूर्तिंसंपूजयेत्ततः प्रथमयापुरुषसूक्तस्यऋचावा

हनंशालग्रामादौआवाहनाभावान्मंत्रपुष्पं ऋगंतेश्रीमहाविष्णवेश्रीकृष्णायेत्येवमभिमतमूर्ति चतुर्थ्योद्दिश्यसर्वोपचारार्पणं पंचायतनेतुश्रीविष्णवेशिवविनायकसूर्यशक्तिभ्यश्चेत्येवंयथोपास्यमुच्चारः नैवेद्यादौपार्थक्याभावेयथांशतइतिवदेत् द्वितीययाऽऽसनं दद्यात् तृतीययापाद्यं चतुर्थ्यार्घ्यं पंचम्याऽऽचमनं षष्ठ्यास्नानं संभवेपंचामृतस्नानान्याप्यायस्वेत्यादिमंत्रैः चंदनोशीरकर्पूरकुंकुमागरुवासितजलैःसुवर्णघर्मानुवाकमहापुरुषविद्यापुरुषसूक्तराजनसामभिरभिषेकः सप्तम्यावस्त्रं अष्टम्यायज्ञोपवीतं नवम्यागंधं दशम्यापुष्पाणि एकादश्याधूपं द्वादश्यादीपं स्नानेधूपेचदीपेचघंटादेर्नादमाचरेत् त्रयोदश्यानैवेद्यं संभवेतांबूलफलदक्षिणा नीराजनंच चतुर्दश्यानमनं पंचदश्याप्रदक्षिणाः षोडश्याविसर्जनंपुष्पांजलिर्वा स्नानेवस्त्रेच नैवेद्येदद्यादाचमनंतथा दत्वाषोडशभिर्ऋग्भिःषोडशान्नस्यचाहुतीः सूक्तेनप्रत्यृचंपुष्पंदत्वासूक्तेनसंस्तुयात् ततःपौराणैःप्राकृतैश्चस्तुत्वा शिरोमत्पादयोःकृत्वाबाहुभ्यांचपरस्परं प्रपन्नंपाहिमामीशभीतंमृत्युग्रहार्णवात् इतिवदन्नमेत् निर्माल्यंदेवदत्तंभावयित्वाशिरसिधारयेत् विष्णुमूर्ध्निस्थितंपुष्पंशिरसानवहेन्नरः शंखोदकंशिरसिधृत्वादेवतीर्थंपूजांतेवैश्वदेवांतेवाशिरसिधार्यपेयंच तत्रक्रमः विप्रपादोदकंपीत्वाविष्णुपादोदकंपिबेत् शालग्रामशिलातोयमपीत्वायस्तु मस्तके प्रक्षेपणंचकुरुतेब्रह्महासनिगद्यते पात्रांतरेणवैग्राह्यंनकरेणकदाचनेतिकमलाकरः क्षालनेनएकस्यैववस्त्रस्यप्रतिदिनेदानेदोषोन एवंस्वर्णादिभूषणानामपि सुवर्णमययज्ञोपवीतेप्येवमाचरः एवंपूजायाःफलंस्कांदे कामासक्तोथवाक्रुद्धःशालग्रामशिलार्चनात् भक्त्यावायदि वाऽभक्त्याकलौमुक्तिमवाप्नुयात् कथांयःकुरुतेविष्णोःशालग्रामशिलाग्रतः वैवस्वतभयंनास्तितथाचकलिकालजं प्रायश्चित्तंहिपापानांकलौपादोदकंहरेः धृतेशिरसिपीतेचसर्वास्तुष्यंति देवताः बौधायनोक्तोहरिहरयोःपूजाविधिःपराशरमाधवे मयातुशिवपूजाविधिःशिवरात्रिप्रकरणेद्वितीयपरिच्छेदेउक्तइतिनेहोच्यते कौर्मे योमोहादथवालस्यादकृत्वादेवतार्चनं भुंक्तेसयातिनरकंसूकरेष्वभिजायते एवंदेवंसंपूज्यमातापितृप्रमुखान्गुरून्पूजयेत् यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरावितिश्रुतेरितिमाधवः ॥

अब संक्षेपसें देवपूजाका प्रकार कहताहुं.

इस स्थलमें देवपूजाका प्रयोग संक्षेपसें कहते हैं. विशेष विचार तौ मूर्तिकी प्रतिष्ठाके प्रसंगसें आगे कहेंगे. तिसमें सूर्योदयके पहले देवताके निर्माल्यकों दूर करके विहित कालमें पूजाका आरंभ करना. **“येभ्यो माता०, एवापित्रे०”** इन मंत्रोंका पाठ करके घंटा बजानी. पीछे आचमन और प्राणायाम करके देशकालका उच्चारण किये पीछे **“श्रीमहाविष्णुपूजां करिष्ये,”** ऐसा संकल्प करना. पंचायतनकी पूजा करनी इस पक्षमें **“श्रीरुद्रविनायकसूर्यशक्तिपरिवृतश्रीमहाविष्णुपूजां करिष्ये,”** ऐसा संकल्प करके आसन आदि विधिकरके पुरुषसूक्तसें न्यास करना. सो ऐसा.—**“सहस्रशीर्षेति षोडशर्चस्य सूक्तस्य नारायणः पुरुषोऽनुष्टुप् ॥ अंत्या त्रिष्टुप् ॥ न्यासे पूजायां च विनियोगः”** इसके अनंतर पहली ऋचाकों कहके वामहाथपर न्यास करना. दूसरी ऋचाकों कहके दाहिने हाथपर न्यास करना. तीसरी ऋचाकों कहके वामे पैरपर न्यास करना. चौथी ऋचाकों कहके दाहिने

पैरपर न्यास करना. पांचमी ऋचाकों कहके वाम गोडेपर न्यास करना. छठी ऋचा कहके दाहिने गोडेविषे न्यास करना. सातमी ऋचाकों कहके वामे तर्फ कटिमें न्यास करना. आठमी ऋचाकों कहके दाहिने तर्फ कटिमें न्यास करना. नवमी ऋचाकों कहके नाभिस्थानमें, दशमी ऋचाकों कहके हृदयस्थानमें, ग्यारहमी ऋचासें कंठस्थानमें, बारहमी ऋचासें वामे बाहुमें, तेरहमी ऋचासें दाहिने बाहुमें, चौदहमी ऋचासें मुखमें, पंदरहमी ऋचासें दोनों नेत्रस्थानोंमें और सोलहमी ऋचासें मस्तकमें न्यास करना. इस प्रकार पुरुषसूक्तकी सोलह ऋचाओंकों कहके अपने देहमें और देवताके देहमें न्यास करना, और फिर अंतकी पांच ऋचाओंसें अर्थात् “**ब्राह्मणो०, चंद्रमा०, नाभ्या० सप्तास्या० यज्ञेन०**” इन ऋचाओंका क्रमकरके हृदय, मस्तक, शिखा, कवचरूप, अस्त्ररूप न्यास करना. पीछे कलश, शंख और घंटा इन्होंकी पूजा करके पाद्योदक, अर्घ्योदक और आचमनीयोदक इन्होंकी पूजा करके शंखके पानीसें अपने अंगोंपर और पूजाके पदार्थोंपर प्रोक्षण करना. पीछे अपनी इष्ट जो विष्णुकी मूर्ति तिसका ध्यान करके तिस मूर्तिकी पूजा करनी. पुरुषसूक्तकी पहली ऋचासें आवाहन करना. शालग्राम आदि देवतोंका आवाहन नहीं होनेसें मंत्रपुष्प समर्पण करना. प्रतिसूक्तकी ऋचाके अंतमें “**श्रीमहाविष्णवे, श्रीकृष्णाय**” इस प्रकार अपनी जो इष्ट देवता है तिसका चतुर्थी विभक्तिसें उद्देश करके सब सामग्री समर्पण करनी. पंचायतनपूजा करनी होवै तौ “**श्रीविष्णवे शिवविनायकसूर्यशक्तिभ्यश्च**” इस प्रकार जो जो उपास्य देवता होवै तिसका उद्देश पहले करके पीछे अन्य देवतोंका उद्देश करना. नैवेद्य आदि उपचार पृथक् पृथक् नहीं होवैं तौ “**यथांशतः**” ऐसा कहना. दूसरी ऋचासें आसन देना. तीसरी ऋचासें पाद्य देना. चौथी ऋचासें अर्घ्य देना. पांचमी ऋचासें आचमन देना. छठी ऋचासें स्नान कराना. संभव होवै तौ “**आप्यायस्व०**” इस आदि मंत्रकरके पंचामृतस्नान कराना. चंदन, खस, कपूर, केशर, और कृष्णागर इन पदार्थोंसें सुगंधित किये पानीसें और “**सुवर्णघर्मानुवाक**, (सुवर्णं घर्मं परिवेदनं इत्यादि) **महापुरुषविद्या** (जितं ते पुंडरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन इत्यादि श्लोक) **पुरुषसूक्त**, (सहस्रशीर्षेत्यादि), और राजनसाम (इंद्रंनरोनेमधिताहवंत इस ऋचामें कहा हुआ) इन मंत्रोंसें अभिषेक करना. सातमी ऋचासें वस्त्र देना. आठमी ऋचासें यज्ञोपवीत देना, नवमी ऋचासें गंध और दशमी ऋचासें पुष्प देने. ग्यारहमी ऋचासें धूप और बारहमी ऋचासें दीपक निवेदन करना. “स्नान, धूप और दीप ये उपचार अर्पण करनेके समयमें घंटा आदिका शब्द करना.” तेरहमी ऋचासें नैवेद्य देना. संभव होवै तौ तांबूल, फल, दक्षिणा और आरती येभी समर्पण करने. चौदहमी ऋचासें प्रणाम करना. पंदरहमी ऋचासें परिक्रमा करनी. सोलहमी ऋचासें विसर्जन करना, अथवा पुष्पांजलि अर्पण करनी. स्नानके अंतमें, वस्त्र और यज्ञोपवीत अर्पण किये पीछे, और नैवेद्यके अनंतर आचमन देना. पुरुषसूक्तकी सोलह ऋचाओंसें चरुकी सोलह आहुतियोंसें होम करके फिर तिसही पुरुषसूक्तकी सोलह ऋचाओंसें सोलह पुष्प अर्पण करने, और फिर पुरुषसूक्तसेंही स्तुति करनी. पीछे पुराणोंके स्तोत्रोंसें और प्राकृत स्तोत्रोंसें स्तुति करके प्रणाम करना. सो ऐसा—“देवताके चरणोंपर अपना शिर धरके अपने दाहिने और

वामे हाथोंसें देवताके दाहिने और वामे पैरोंकों ग्रहण करके अथवा अपने पृष्ठभागमें परस्पर हस्त निबद्ध करके कृतापराधसरीखा होके हे ईश, मृत्युग्रहरूप समुद्रसें भीते हुए और शरणागत हुए ऐसे मुझकों रक्षित करना," इस प्रकार प्रार्थना करके नमस्कार करना. पीछे देवतानें निर्माल्य दिया ऐसी भावना करके शिरपर धारण करना. विष्णुके मस्तकपर स्थित हुये पुष्पकों मनुष्यनें अपने मस्तकपर नहीं धारण करना. "शंखके पानीकों मस्तकपर धारण नहीं करना," देवतीर्थ पूजाके अंतमें अथवा वैश्वदेवके अंतमें शिरपर धारण करना और प्राशनभी करना. तहां क्रम—"ब्राह्मणके चरणोंका जल पान करके पीछे विष्णुके चरणोंका जल पीना. जो मनुष्य शालग्राम शिलाके जलकों प्राशन किये विना अपने मस्तकपर प्रक्षेप करैगा सो ब्रह्महत्यारा होता है. यह चरणतीर्थ दूसरे पात्रसें ग्रहण करना, हाथकरके कभीभी ग्रहण नहीं करना," इस प्रकार **कमलाकर** कहता है. देवताकों अर्पण किया हुआ एकही वस्त्र पानीसें धोके वहही प्रतिदिन देवतापर चढानेमें दोष नहीं है. ऐसेही सोना आदिके गहनोंकाभी निर्णय जानना. सोनाके यज्ञोपवीतोंकाभी यही निर्णय है. इस प्रकार शालग्रामके पूजाका फल **स्कंदपुराणमें** कहा है. "कामसें आसक्त हुआ अथवा क्रोधकों प्राप्त हुआ मनुष्य भक्तिकरके अथवा भक्तिविनाभी कलियुगमें शालग्रामकी शिलाके पूजनसें मुक्तिकों प्राप्त होता है. शालग्रामकी शिलाके आगे जो मनुष्य विष्णुकी कथाकों करता है तिसकों यमका और कलिकालका भय नहीं है. कलियुगमें विष्णुके चरणोंका जल पापोंकों शुद्ध करता हैं. इस चरणामृतकों शिरपर धारण करनेसें और पान करनेसें सब देवता प्रसन्न होते हैं." बौधायनका कहा हुआ विष्णु और शिवकी पूजाका विधि **पराशरमाधवमें** देख लेना. मैंनें तौ शिवपूजाविधि द्वितीय परिच्छेदमें शिवरात्रिके प्रकरणमें कहा है, इसवास्ते यहां नहीं कहा है. **कूर्मपुराणमें** कहा है की "जो मनुष्य मोहसें अथवा आलस्यसें देवताकी पूजा कियेविना भोजन करता है वह नरककों प्राप्त होता है, और सूकरोंकी योनिमें जन्मता है." इस प्रकार देवताकी पूजा करके माता, पिता आदि गुरुओंकी पूजा करनी. क्योंकी, "जिसकी जैसी परमभक्ति देवतामें होती है तैसी गुरुमेंभी करनी उचित है," ऐसी श्रुति है. ऐसा **माधव** कहते हैं.

तृतीयभागेपोष्यवर्गार्थंधनार्जनं यजनाध्ययनदानयाजनाध्यापनप्रतिग्रहाःषट्विप्रकर्माणि षण्णांतुकर्मणामस्यत्रीणिकर्माणिजीविका याजनाध्यापनेचैवविशुद्धाच्चप्रतिग्रहःश्रीभागवते प्रतिग्रहंमन्यमानस्तपस्तेजोयशोनुदं अन्याभ्यामेवजीवेतशिलैर्वादोषदृक्तयोरिति तथावार्ताविचित्राशालीनयायावरशिलोंछनं विचित्रावार्ताकृष्यादिः शालीनमयाचितं यायावरंप्रत्यहंधान्यायाञ्चाकणिशोपादानंकणोपादानंचशिलोंछनं अत्रोत्तरोत्तराप्रशस्ता शिलोंछनं कलौनिषिद्धं कुसूलकुंभीधान्योवात्र्याहिकोश्वस्तनोपिवा कुटुंबपोषणेद्वादशाहपर्याप्तधान्यः कुसूलधान्यःषडहपर्याप्तधान्यःकुंभीधान्यःनकुर्यात्कृषिवाणिज्यंसेवावृत्तिंतथैवच ब्राह्मण्याद्धीयतेतेनतस्मात्तानिविवर्जयेदित्युक्तेर्वार्तावृत्तिरापद्विषया पुत्रमांसंवरंभोक्तुंनतुराजप्रतिग्रह इतिवाक्यमधर्मवर्तिराजप्रतिग्रहविषयं वृद्धौचमातापितरौसाध्वीभार्याशिशुःसुतश्चायाज्ययाजनशूद्रप्रतिग्रहादिनापिपोषणीयाइत्यप्यापदि शाकपयोदधिपुष्पजलकुशभूमयःकुलटाषंढप

तितभिन्नात् नीचादप्ययाचितप्राप्ताग्राह्या: ब्रह्मचारीयतिश्चैवविद्यार्थीगुरुपोषकः अध्वगःक्षीणवृत्तिश्चषट्पक्वान्नस्यभिक्षुकाः शूद्रस्यद्विजशुश्रूषावृत्तिः आपदिकृष्यादिः ॥

दिनके तीसरे भागमें अपने पोष्यवर्ग अर्थात् माता, पिता, गुरु, वृद्धजन, भार्या, पुत्र आदि, अनाथ, आश्रित, और पहले कभीभी नहीं आया ऐसा पाहवणा, एकत्र रहनेवाला पाहवणा और गृह्याग्नि इन आदिके अर्थ धन संचित करना. यज्ञ करना, वेद आदिका अध्ययन करना, दान देना, ऋत्विक्कर्म करना, शिष्योंसें वेद आदिका अध्ययन कराना, और दान लेना ये छह कर्म ब्राह्मणकों विहित हैं. "इन यज्ञादि छह कर्मोंमांहसें ऋत्विक् कर्मसें धन संपादित करना. धर्मबुद्धिसें शिष्योंकों पढाके वे कृतविद्य हुए पीछे प्रत्युपकारबुद्धिसें जो धन देवैंगे सो लेना, और न्यायसें धन संपादित करनेवाले यजमानसें प्रतिग्रह लेना ये तीन कर्म ब्राह्मणके उदरपोषणके अर्थ साधनभूत हैं." **श्रीमद्भागवतमें** कहा है की, तप, ब्रह्मतेज, कीर्ति इन्होंकों नष्ट करनेवाला प्रतिग्रह है, ऐसा मानते हुए ब्राह्मणनें ऋत्विक्कर्मसें धन संपादित करके अथवा शिष्योंकों पढाके अपनी आजीविका करनी. उक्त दो आजीविकाओंमें कृपणता आदि दोष होवैं तौ शिलोंछन वृत्तिसें अपनी आजीविका करनी तैसेही वार्ताविचित्रा, शालीन, यायावर और शिलोंछन ये चार उपजीविका हैं. वार्ताविचित्रा अर्थात् खेती करना आदि, शालीन अर्थात् याचनाके विना जो कुछ मिलै वह ग्रहण करना, यायावर अर्थात् नित्यप्रति अन्न मांगना और शिलोंछन अर्थात् स्वामिनें त्यक्त ऐसे क्षेत्रस्थ अन्नका ग्रहण करना. इन चार उपजीविकाओंमें उत्तरोत्तर क्रमसें श्रेष्ठ हैं. कलियुगमें शिलोंछनवृत्ति निषिद्ध है. कुसूलधान्य, कुंभीधान्य, त्र्याहिक, श्वस्तन ऐसा रहना. कुटुंबके पोषणके अर्थ वारह दिनतक पुरा होवै इतना अन्न जिसके पास होवे तिसकों कुसूलधान्य कहते हैं. छह दिनपर्यंत पुरा होवै इतना अन्न जिसके पास होवै तिसकों कुंभीधान्य कहते हैं. "कृषिकर्म, व्यापार और चाकरी ये ब्राह्मण करै तौ वह ब्राह्मणपनेसें भ्रष्ट होता है. तिस कारणसें इन कर्मोंकों वर्जित करना," इस वचनसें कृषिकर्मवृत्ति आपत्कालमें करनी. "पुत्रके मांसकों खाना श्रेष्ठ है परंतु राजासें प्रतिग्रह लेना उत्तम नहीं है," यह वचन अधर्ममें वर्तनेवाले राजासें प्रतिग्रह लेनेके विषयमें है ऐसा जानना. होम आदि करनेमें अनधिकारीके घरमें होम आदि करके और शूद्रसें प्रतिग्रह आदिभी लेके वृद्ध हुये माता और पिता, साध्वी भार्या, वालक पुत्र, इन्होंका पोषण करना ऐसा जो कहा है वहभी आपत्कालमें करना. जारिणी स्त्री, हीजडा और पतित इन्होंसें भिन्न नीचसें याचनाके विना प्राप्त हुए ऐसे शाक, दही, दूध, पुष्प, पानी, कुश और पृथिवी आदि पदार्थ ग्रहण करने उचित हैं. "ब्रह्मचारी, संन्यासी, विद्यार्थी, गुरु और वृद्ध मातापिता आदिकोंका पोषक, मार्गमें गमन करनेवाला, और क्षीणवृत्तिवाला ऐसे ये छह पक्के हुये अन्नके भिक्षुक हैं, अर्थात् इन्होंकों पकाया हुआ अन्न देना." द्विजोंकी टहल करनी यह शूद्रकी वृत्ति है. आपत्कालमें शूद्रनें कृषिकर्म आदि वृत्ति करनी. इस प्रकार तीसरे विभागका कृत्य समाप्त हुआ.

चतुर्थभागेमध्यान्हस्नानं प्रातर्गोमयस्नानं मध्यान्हेमृत्तिकास्नानं अनयोर्विधिःप्रायश्चित्ते उक्तः शेषविधिःप्रातःस्नानवत् ब्रह्मयज्ञांगतर्पणात्प्राक्वस्त्रंननिष्पीड्यमितिविशेषः ततोधृत

पुंड्रोमध्यान्हसंध्यांकुर्यात् अध्यर्धयामादासायंसंध्यामाध्यान्हिकीष्यते तत्रविशेषः सूर्यश्चेतिस्थानेआपःपुनंत्वितिमंत्राचमनं आपःपुनंत्वित्यस्यनारायणयाज्ञवल्क्यआपः पृथिवी ब्रह्मणस्पतिरष्टी मंत्राचमनेविनियोगः ओंआपःपुनंतुपृथिवींपृथिवीपूतापुनातुमां पुनंतुब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूतापुनातुमां यदुच्छिष्टमभोज्यंयद्वादुश्चरितंमम सर्वंपुनंतुमामापोसतांचप्रतिग्रहंस्वाहेतिपिबेत् अघमर्षणांतेतिष्ठन् हंसःशुचिषदित्यस्यगौतमःसूर्योजगतीअर्घ्यदानेविनियोगः ॐहंसःशुचिष० एकार्घ्यं अर्घ्यांतेउपस्थानं ऊर्ध्वबाहुःउदुत्यमितित्रयोदशर्चस्यप्रस्कण्वः सूर्योगायत्री अंत्याश्चतस्रोनुष्टुभः सूर्योपस्थाने० केचित्चित्रंदेवानामितिषड्भिरप्युपातिष्ठंते शेषमुपस्थानवर्ज्यंप्रातःसंध्यावत् रात्रौमध्याह्नसंध्यायांआकृष्णेनेत्यर्घ्यदानं गायत्र्याप्रायश्चित्तार्थंद्वितीयंदत्वा हविष्पांतमितिपंचर्चोपस्थानं ॥

दिनके चौथे भागमें मध्यान्हस्नान करना. प्रभातमें गोवरसें स्नान करना. मध्यान्हमें मृत्तिकासें स्नान करना. इन दो स्नानोंका विधि प्रायश्चित्तप्रकरणमें कहा है. शेष रहा विधि प्रातःस्नानकी तरह जानना. ब्रह्मयज्ञसंबंधी तर्पण करनेके पहले वस्त्र नहीं निचोडना, यह विशेष है. मध्यान्हस्नान किये पीछे तिलक धारण करके मध्यान्हसंध्या करनी. “ डेढ प्रहर दिनके उपरंत सायंकालपर्यंत मध्यान्हसंध्या करनी. ” मध्याह्नकी संध्याके विषयमें विशेष विधि “ **सूर्यश्च०.** ” इस मंत्रके स्थानमें “ **आपः पुनंतु०** ” इस मंत्रसें मंत्राचमन करना. सो ऐसा—“ **आपः पुनंत्वित्यस्य नारायणयाज्ञवल्क्य आपः पृथिवी ब्रह्मणस्पतिरष्टी मंत्राचमने विनियोगः ॐ आपःपुनंतु०** ” इस मंत्रकों कहके हाथमें पानी लेके आचमन करना. अघमर्षणकर्म किये पीछे खडा रहके “ **हंसःशुचिषदित्यस्य गौतमः सूर्यो जगती अर्घ्यदाने विनियोगः ॐ हंसः शुचिष०** ” यह मंत्र कहके एक अर्घ्य देना. अर्घ्य दिये पीछे उपस्थान करना. सो ऐसा—ऊर्ध्वबाहु स्थित होके “ **उदुत्यमिति त्रयोदशर्चस्य प्रस्कण्वः सूर्योगायत्री ॥ अंत्याश्चतस्रोऽनुष्टुभः ॥ सूर्योपस्थाने विनियोगः.** ” कितनेक शिष्ट “ **चित्रंदेवानां०** ” इन छह ऋचाओंसेंभी उपस्थान करते हैं. उपस्थान वर्जित करके शेष कर्म प्रातःसंध्याकी तरह करना. रात्रिमें मध्यान्हसंध्या करनी होवै तो “ **आकृष्णेन०** ” इस मंत्रसें अर्घ्य देना, और गायत्रीमंत्रसें प्रायश्चित्तार्थ दूसरा अर्घ्य देके “ **हविष्पांतम्०** ” इन पांच ऋचाओंसें उपस्थान करना. ”

अथतैत्तिरीयाणां आपःपुनंत्वित्यपःपीत्वादधिक्राव्णेतिपूर्ववत्कृत्वासूर्यायैकमर्घ्यंगायत्र्यादत्वोर्ध्वबाहुस्तिष्ठन्नुपतिष्ठेत् उद्वयं० १ उदुत्यंजातवेदसं० १ चित्रंदेवाना० १ तच्चक्षुर्देवहितंपुरस्तात्० १ यउदगान्महतो० १ ततोजपादिउपस्थानवर्ज्यंप्राग्वत् ॥

अब तैत्तिरीयशाखियोंकी मध्याह्नसंध्या कहताहुं.—“ **आपःपुनंतु०** ” इस मंत्रसें मंत्राचमन करके “ **दधिक्राव्णो०** ” इस मंत्रसें पूर्व कही रीतिसें मार्जन करके सूर्यकों एक अर्घ्य गायत्रीमंत्रसें देके उपरकों बाहुवाला स्थित होके उपस्थान करना. उपस्थानके मंत्र—“ **उद्वयं० १, उदुत्यंजातवेदसं० १, चित्रंदेवानां० १, तच्चक्षुर्देवहितंपुरस्तात्० १, यउदगान्महतो० १.** ” इस प्रकार उपस्थान किये पीछे जप आदि उपस्थान वर्ज करके पूर्वकी तरह करना.

अथकातीयानां आपःपुनंत्वितिप्राग्वत् गायत्र्याएकार्घ्यं उद्वयमित्यादिचतुर्भिरुपस्थानंज पांतेशक्तस्यपूर्वोक्तैर्विभ्राडित्यनुवाकादिभिरुपस्थानं शेषंप्राग्वत् ॥

इसके अनंतर कात्यायनशाखियोंकी मध्याह्नसंध्या कहताहुं.—" आपःपुनंतु " इस मंत्रसें पूर्वकी तरह मंत्राचमन करना, और गायत्रीमंत्रसें एक अर्घ्य देके " उद्वयं० " इन आदि चार ऋचाओंसें उपस्थान करना. जप किये पीछे सशक्त मनुष्यनें पूर्व कहे जो "विभ्राट्०" ऐसे अनुवाक आदि हैं तिन्होंसें उपस्थान करना. शेष रहा कर्म पूर्वकी तरह करना.

अथब्रह्मयज्ञः सचप्रातर्होमोत्तरंवामध्याह्नसंध्योत्तरंवावैश्वदेवांतेवासकृदेवकार्यः भट्टोजिदीक्षितीयेतुप्रातराहुतेरनंतरकालःशाखांतरविषयः आश्वलायनैस्तुमध्याह्नसंध्योत्तरमेवानुष्ठेयइत्युक्तं शुष्कंवासस्तदभावेआर्द्रंत्रिर्विधुन्वन्परिधायाचम्यप्राणानायम्यश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंब्रह्मयज्ञंकरिष्ये तदंगतयादेवऋष्याचार्यतर्पणंकरिष्ये मृतपितृकैःपितृतर्पणंचकरिष्येइति संकल्प्यदर्भेषुदर्भपाणिःप्राङ्मुखएवोपविश्य वामजंघोपरिमूलदेशेदक्षिणपादंनिधायाथवावामपादांगुष्ठोपरिदक्षिणपादांगुष्ठंनिधायैवमुपस्थंकृत्वा दक्षिणजानुस्थेवामेकरेउत्तानेप्रागग्रांगुलौप्रागग्रेद्वेपवित्रेधृत्वादक्षिणकरेणतथैवसंपुटीकृत्यद्यावापृथिव्योः संधिमीक्षमाणोनिमीलिताक्षोवाॐकारव्यहृतीःसकृदुच्चार्यगायत्रींपच्छोर्धर्चशःसर्वामनवानामितित्रिर्जपेत् ततोग्निमीळइतिसूक्तंपठित्वासंहिताब्राह्मणषडंगानिएकंसमाप्यापरमिति अध्यायंसूक्तमृचंवायथाशक्तिक्रमशःपठेत् मंत्रब्राह्मणादीनिभागशःसर्वाणियथाशक्तिप्रतिदिनंपठेदितिकेचित् एवंचतुर्वेदाध्यायीक्रमशश्चतुर्वेदान्भागशःसर्वानेववाऋग्वेदपूर्वकान्पठेत् एकैकशाखाध्यायीतुस्वशाखामेव शाखाध्ययनाभावेसूक्तमृचंवापठित्वैकंयजुः सामचोपनिषदश्चेतिहासपुराणादींश्च पठेत् पुरुषसूक्तमुक्त्वानमोब्रह्मणेनमोअस्त्वग्नयइतिऋचंत्रिःपठेत् नात्रऋष्यादिस्मरणं विद्युदसीत्यादेराद्यंतेपाठस्तैत्तिरीयविषयः उपविश्यपाठाशक्तस्तिष्ठन्व्रजन्शयानोवापठेदित्याश्वलायनः अनध्यायेष्वल्पंपठेत् ॥

अब ब्रह्मयज्ञविधि कहताहुं.

वह ब्रह्मयज्ञ प्रातर्होमके उपरंत अथवा मध्यान्हसंध्या किये पीछे अथवा वैश्वदेव किये पीछे एकही वार करना. भट्टोजिदीक्षितके आन्हिकग्रंथमें तौ, प्रातःकालसंबंधी होम किये पीछे ब्रह्मयज्ञका जो काल कहा है, वह अन्य शाखाके विषयमें है. आश्वलायनशाखियोंनें तौ मध्यान्हसंध्या किये पीछे ब्रह्मयज्ञ करना ऐसा कहा है. सूखा वस्त्र परिधान करना. तिसके अभावमें गीला वस्त्र तीनवार झाडके पहनना. पीछे आचमन और प्राणायाम करके संकल्प करना. सो ऐसा.—" श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं ब्रह्मयज्ञं करिष्ये, तदंगतया देवऋष्याचार्यतर्पणं करिष्ये " जिसका पिता मर गया होवै तिन्होंनें " पितृतर्पणं च करिष्ये " ऐसा संकल्प करके डाभका आसन घालके तिन डाभोंपर डाभके पवित्रोंकों हाथमें धारण करनेवाला होके और पूर्वके तर्फ मुखवाला होके नाभी जंघाके उपर मूलदेशमें दाहिने पैरकों स्थापित करके अथवा वामे पैरके अंगूठाके उपर दाहिने पैरके अंगूठेकों स्थापित करके इस प्रमाण उपस्थ

करके बैठना. पीछे जिसकी अंगुली पूर्वकी तर्फ है ऐसा वाम हाथ दाहिने गोठण उपर सीधा रखके तिसमें पूर्वके तर्फ अग्रभागवाले दो डाभके पवित्रकों धारण करके और दाहिने हाथसें तैसेही संपुटित करके आकाश और पृथिवीके मध्यभागमें दृष्टि करके अथवा नेत्र मीचके "ॐकार" सहित तीन व्याहृतियोंका एकवार उच्चारण करके पादशः, अर्धशः, और पृथक् पादरहित ऐसी सब ऋचाओंका तीनवार जप करना. पीछे "**अग्निमीळेपु०**" इस सूक्तका पाठ करके संहिता, ब्राह्मण, षडंग अर्थात् शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष इन सबोंमांहसें एक समाप्त करके दूसरा इस प्रकार अध्याय अथवा सूक्त, अथवा एक ऋचा जैसी शक्ति होवै तिसके अनुरूप क्रमकरके पठन करना. मंत्र और ब्राह्मण आदि पढने होवैं तौ विभागके अनुसार सब, जैसी शक्ति होवै तिसके अनुसार प्रतिदिन पठन करना ऐसा कितनेक ग्रंथकारं कहते हैं. इस प्रकार चार वेदोंका अध्ययन किया होवै तौ तिसनें क्रमसें चार वेद पृथक् पृथक् अथवा सब ऋग्वेदपूर्वक पठन करने. एक शाखाका अध्ययन किया होवै तौ तिसनें अपनी शाखाही पठन करनी. सब शाखाओंका अध्ययन नहीं किया होवै तौ सूक्त अथवा ऋचा पठन करके एक यजुर्वेदका मंत्र, एक साम, एक उपनिषद् और इतिहास, पुराण इस आदि पठन करने. पीछे पुरुषसूक्त कहके "**नमोब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये०**" यह ऋचा तीन वार कहनी. इस ब्रह्मयज्ञमें मंत्रके छंद और ऋषि आदिका स्मरण नहीं करना. "**विद्युदसि०**" इस आदि मंत्रका आदिमें और अंतमें जो पाठ है सो तैत्तिरीयशाखाविषयक है. बैठके पाठ करनेमें समर्थ नहीं होवै तौ खडा रहके, चलता हुआ और सोता हुआ होके ब्रह्मयज्ञका पाठ करना. ऐसा आश्वलायन कहते हैं. अनध्यायोंमें अल्प पाठ करना.

अथतर्पणं तत्रसव्येनदेवतीर्थेनदर्भाग्रैर्देवतर्पणं तद्यथा साक्षतजलैर्देवर्षितर्पणं सातिलजलैराचार्यपितृतर्पणं प्रजापतिस्तृप्यतु १ ब्रह्मातृ० २ वेदास्तृ० ३ देवास्तृ० ४ ऋषयस्तृ० ५ सर्वाणिछंदांसि० ६ ओंकार० ७ वषट्कार० ८ व्याहृतय० ९ सावित्री तृ० १० यज्ञा० ११ द्यावापृथिवीतृप्यतां १२ अंतरिक्षं० १३ अहोरात्राणितृप्यंतु १४ सांख्या० १५ सिद्धा० १६ समुद्रा० १७ नद्य० १८ गिरय० १९ क्षेत्रौषधिवनस्पतिगंधर्वाप्सरस० २० नागा० २१ वयांसि० २२ गाव० २३ साध्या० २४ विप्रा० २५ यक्षा० २६ रक्षांसि० २७ भूतानि० २८ एवमंतानितृप्यंतु० २९ अथऋषयः निवीती कनिष्ठिकामूलेनदर्भमध्यैः शतर्चिनस्तृ० माध्यमास्तृ० गृत्समद० विश्वामित्र० वामदेव० अत्रि० भरद्वाज० वसिष्ठ० प्रगाथा० पावमान्य० क्षुद्रसूक्ता० महासूक्ता० १२ एकत्वद्वित्वबहुत्वेषुतृप्यतुतृप्यतांतृप्यंतुइतियथायथंवदेत् अथप्राचीनावीती पितृतीर्थेनद्विगुणीकृतदर्भमूलाग्रैः सुमंतुजैमिनिवैशंपायनपैलसूत्रभाष्यभारतमहाभारतधर्माचार्यास्तृप्यंतु १ जानंतिबाहविगार्ग्यगौतमशाकल्यबाभ्रव्यमांडव्यमांडूकेयास्तृप्यंतु २ गर्गीवाचक्नवी० ३ वडवाप्रातीथेयी० ४ सुलभामैत्रेयी० ५ कहोळंत० ६ कौषीतकं० ७ महाकौषीतकं० ८. पैंग्यं ९९ महापैंग्यं० १० सुयज्ञंतर्पया० ११ सांख्यायनंत० १२ ऐतरेयंत० १३ महैतरेयंत० १४ शाकलं० १५ बाष्कलं० १६ सुजातवक्रं० १७ औदवाहिं० १८ महौदवाहिं० १९ सौ

जार्मिं० २० शौनकं० २१ आश्वलायनं० २२ येचान्येआचार्यास्तेसर्वेतृप्यंतु २३ ततो मृतपितृकः पितृत्रयींमातृत्रयींसापत्नमातरंसपत्नीकमातामहत्रयींपत्न्याद्येकोद्दिष्टगणांश्चमहालयप्रकरणोक्तान्मृतांस्तर्पयेत् संबंधंप्रथमंब्रूयान्नामगोत्रमनंतरं पश्चाद्रूपंविजानीयात्क्रमएषसनातनः एकैकमंजलिंदेवेभ्योद्वौद्वौऋषिभ्यस्त्रींस्त्रीन्पितृभ्यइतिसंख्याविशेषःआश्वलायनानांवैकल्पिकः तत्सूत्रेसंख्याऽनुक्तेः येषांसूत्रेसंख्योक्तिस्तेषांनित्यइतिमाधवः मातृत्रयीभिन्नस्त्रीभ्यएकांजलिः एतावद्भिस्तृततर्पणाशक्तौ आब्रह्मस्तंबपर्यंतंदेवर्षिपितृमानवाः तृप्यंतुपितरःसर्वेमातृमातामहादयः अतीतकुलकोटीनांसप्तद्वीपनिवासिनां आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तुतिलोदकमितित्रिस्त्रिर्दद्यात् ततोयेकेचास्मत्कुलेजाताअपुत्रागोत्रिणोमृताः तेगृह्णंतुमया दत्तंवस्त्रनिष्पीडनोदकमितिपरिधानवस्त्रंभूमौनिष्पीड्यदद्यात् अत्रबह्वृचानांप्राचीनावीतीअन्येषांनिवीती इदंगृहेनिषिद्धंब्रह्मयज्ञोग्रामाद्बहिरुदकसमीपेविहितोग्रामेमनसाधीयीत सव्यान्वारब्धदक्षिणेनवाअंजलिनावातर्पणं तर्पणंबर्हिषाच्छन्नेस्थलेकार्यंनतुजले पात्राद्वाजलमादायशुभेपात्रांतरेक्षिपेत् जलपूर्णेथवागर्तेनस्थलेतुविबर्हिषि हेमरौप्यताम्रकांस्यमयेपात्रेनमृन्मये यत्राशुचिस्थलंतत्रतर्पणंस्यान्नदीजले अनामिकाधृतंहेमतर्जन्यांरौप्यमेवच कनिष्ठिका धृतंखड्गंतेनपूतोभवेन्नरःअंगुल्यग्रेतीर्थंदैवंस्वल्पांगुल्योर्मूलेकायं मध्येंगुष्ठांगुल्योःपित्र्यंमूलेत्वंगुष्ठस्य ब्राह्मं उद्धृतजलेनपितृतर्पणेतिलान्संमिश्रयेज्जले अनुद्धृतजलेनतर्पणेवामहस्तेतिलाग्राह्याः तिलतर्पणंगृहेनिषिद्धंरविभृगुवारेसप्तमीनंदासुकृत्तिकामघाभरणीषुमन्वादौयुगादौच पिंडदानंमृदास्नानंनकुर्यात्तिलतर्पणं पित्रोःश्राद्धदिनेनित्यतर्पणेतिलानिषिद्धाः पर्वदिनेनिषिद्धतिथिवारादिष्वपितिलतर्पणं विकिरेपिंडदानेचतर्पणेस्नानकर्मणि आचांतःसन्प्रकुर्वीतदर्भसंत्याजनंबुधः दर्भत्यागमंत्रस्तु येषांपितानभ्रातानपुत्रोनान्यगोत्रिणः तेसर्वेतृप्तिमायांतु मयोत्सृष्टैःकुशैस्तथेति ॥

अब तर्पण कहताहुं.—तहां सव्य होके देवतीर्थ अर्थात् अंगुलियोंके अग्रभागसें और डाभोंके अग्रभागसें देवतोंका तर्पण करना. सो ऐसा.—चावलोंसहित पानीसें देवता और ऋषियोंका तर्पण करना. तिलोंसहित पानीसें आचार्य और पितरोंका तर्पण करना. देवतर्पण कहताहुं.—१ प्रजापतिस्तृप्यतु, २ ब्रह्मातृप्यतु, ३ वेदास्तृप्यंतु, ४ देवास्तृप्यंतु, ५ ऋषयस्तृप्यंतु, ६ सर्वाणिछंदांसितृप्यंतु, ७ ॐकारस्तृप्यतु, ८ वषट्कारस्तृप्यतु, ९ व्याहृतयस्तृप्यंतु, १० सावित्रीतृप्यतु, ११ यज्ञास्तृप्यंतु, १२ द्यावापृथिवीतृप्यताम्, १३ अंतरिक्षंतृप्यतु, १४ अहोरात्राणितृप्यंतु, १५ सांख्यास्तृप्यंतु, १६ सिद्धास्तृप्यंतु, १७ समुद्रास्तृप्यंतु, १८ नद्यस्तृप्यंतु, १९ गिरयस्तृप्यंतु, २० क्षेत्रौषधिवनस्पतिगंधर्वाप्सरसस्तृप्यंतु, २१ नागास्तृप्यंतु, २२ वयांसितृप्यंतु, २३ गावस्तृप्यंतु, २४ साध्यास्तृप्यंतु, २५ विप्रास्तृप्यंतु, २६ यक्षास्तृप्यंतु, २७ रक्षांसि तृप्यंतु, २८ भूतानि तृप्यंतु, २९ एवमंतानि तृप्यंतु.” इस प्रकार देवतर्पण करके पीछे निवीती अर्थात् कंठमें लंबित यज्ञोपवीत करके कनिष्ठिका अंगुलिके मूलसें डाभके मध्यभागसें ऋषियोंका तर्पण करना, ऋषितर्पण कहताहुं.—“१ शतर्चिनस्तृप्यंतु, २ माध्यमास्तृप्यंतु, ३ गृत्समदस्तृप्यतु, ४ विश्वामित्रस्तृप्यतु, ५ वामदेवस्तृप्यतु, ६ अत्रिस्तृप्यतु,

७ भरद्वाजस्तृप्यतु, ८ वसिष्ठस्तृप्यतु, ९ प्रगाथास्तृप्यंतु, १० पावमान्यस्तृप्यंतु, ११ क्षुद्रसूक्तास्तृप्यंतु, १२ महासूक्तास्तृप्यंतु, १३ एकवचन, द्विवचन और बहुवचन इन्होंके स्थानोंमें क्रमसें "**तृप्यतु, तृप्यतां, और तृप्यंतु**" इस प्रकार जैसा योग्य होवै तैसा उच्चार करना. पीछे प्राचीनावीती अर्थात् अपसव्य होके पितृतीर्थकरके द्विगुनी किये डाभके मूलाग्रभागसें तर्पण करना. सो ऐसा—"**१ सुमंतुजैमिनिवैशंपायनपैलसूत्रभाष्यभारतमहाभारतधर्माचार्यास्तृप्यंतु, २ जानंतिबाहविगार्ग्यगौतमशाकल्यबाभ्रव्यमांडव्यमांडूकेयास्तृप्यंतु, ३ गर्गीवाचक्नवीतृप्यतु, ४ वडवाप्रातीथेयी तृप्यतु, ५ सुलभामैत्रेयी तृप्यतु, ६ कहोळं तर्पयामि, ७ कौषीतकं तर्पयामि, ८ महाकौषीतकं तर्पयामि, ९ पैंग्यं तर्पयामि, १० महापैंग्यं तर्पयामि, ११ सुयज्ञं तर्पयामि, १२ सांख्यायनं तर्पयामि, १३ ऐतरेयं तर्पयामि, १४ महैतरेयं तर्पयामि, १५ शाकलं तर्पयामि, १६ बाष्कलं तर्पयामि, १७ सुजातवक्रं तर्पयामि, १८ औदवाहिं तर्पयामि, १९ महौदवाहिं तर्पयामि, २० सौजामिं तर्पयामि, २१ शौनकं तर्पयामि, २२ आश्वलायनं तर्पयामि, २३ ये चान्ये आचार्यास्ते सर्वे तृप्यंतु,**" इस प्रकार आचार्यतर्पण करके पीछे जिसका पिता मर गया होवै तिसनें पितृत्रयी, मातृत्रयी, सापत्न माता, सपत्नीक मातामहत्रयी और महालयप्रकरणमें कहे मृत हुये पत्नी आदि एकोद्दिष्टगण तिन्होंका तर्पण करना. "जिन पितरोंका तर्पण करना होवै तिनके और अपने संबंधका प्रथम उच्चार करके पीछे नाम और गोत्रका उच्चार करना. पीछे तिन पितरोंका जो वस्वादिक रूप, त्रयी होवै तौ वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः, एकोद्दिष्ट होवै तौ वसुरूपः ऐसा उच्चार करना. इस प्रकार यह निर्बाध अनुक्रम जानना. तर्पणमें देवतोंके अर्थ एक एक अंजलि देनी, ऋषियोंके अर्थ दो दो अंजलि देनी और पितरोंके अर्थ तीन तीन अंजलि देनी, ऐसा जो संख्याका विशेष कहा है सो आश्वलायनोंको वैकल्पिक जानना; क्योंकी, तिन्होंके सूत्रमें अंजलियोंकी संख्या नहीं कही है. जिन्होंके सूत्रमें अंजलियोंकी संख्या कही है तिन्होंको वह नित्य है, ऐसा माधवजी कहते हैं. मातृत्रयीके विना अन्य स्त्रियोंको एक एक अंजली देनी. इतना विस्तारवाला तर्पण करनेकी शक्ति नहीं होवै तौ "**आब्रह्मस्तंबपर्यंतं देवर्षिपितृमानवाः ॥ तृप्यंतु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥ अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ॥ आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तुतिलोदकं,**" ये मंत्र कहके तीन तीन अंजलि देनी. पीछे "**येकेचास्मत्कुलेजाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः ॥ तेगृह्णंतुमयादत्तंवस्त्रनिष्पीडनोदकं,**" यह मंत्र कहके परिधान किया वस्त्र पृथिवीपर निचोडके जल देना. यह कर्म आश्वलायनशाखियोंनें अपसव्य होके करना. अन्य शाखियोंनें निवीती करनी. वस्त्र निचोडके उदक देना यह कर्म घरमें निषिद्ध है. ग्रामसें बाहिर जलके समीपमें ब्रह्मयज्ञ करना उचित है. ग्राममें ब्रह्मयज्ञ करना होवै तौ सब अध्ययन मनमें करना. दाहिने हाथपर वामे हाथकों लगायके तिस दाहिने हाथसें अथवा दोनों हाथोंकी अंजली करके तिस अंजलीसें तर्पण करना. "डाभोंसें आच्छादित हुई पृथिवीपर तर्पण करना. पानीमें तर्पण नहीं करना. अथवा पात्रमांहसें जल लेके दूसरे शुद्ध पात्रमें तर्पणके जलकों छोडना अथवा जलसें पूरित हुये गढेमें तर्पण करना; परंतु डाभसें नहीं आच्छादित हुई पृथिवीपर तर्पण नहीं करना. तर्पण करनेमें सोनाका, चांदीका, तांबाका अथवा कांसीका पात्र लेना, माटीके पात्रमें तर्पण नहीं करना.

जिस समयमें तर्पण करना होवै तिस समयमें वह पृथिवी अशुद्ध होवै तौ नदीपर जाके तिसके जलमें तर्पण करना. अनामिकामें सोना धारण करना. तर्जनीमें चांदी धारण करनी और कनिष्ठिकामें खड्ग अर्थात् गेंडाकी अंगुठी धारण करनी. तिस्सें मनुष्य पवित्र होता है. अंगुलियोंके अग्र देवतीर्थ हैं. अनामिका और कनिष्ठिका अंगुलियोंका जो मूल सो कायतीर्थ है. अंगूठा और तर्जनीका जो मध्यभाग सो पितृतीर्थ है. "अंगूठाके मूलमें ब्राह्मतीर्थ है." वहार काढे हुये जलसें तर्पण करना होवै तौ तिस जलमें तिल मिलाके तर्पण करना. वहार नहीं काढे हुये जलसें तर्पण करना होवै तौ वाम हाथमें तिल ग्रहण करने. घरमें तिलोंसें तर्पण नहीं करना. रविवार, शुक्रवार, सप्तमी, नंदा तिथि, कृत्तिका, मघा, भरणी, मन्वादि तिथि और युगादि तिथि, इन्होंमें पिंडदान, माटीसें स्नान और तिलतर्पण ये नहीं करने. मातापिताके श्राद्धदिनमें जो नित्यतर्पण है तिसमें तिलोंका निषेध है. पर्वदिनमें निषिद्धरूप तिथि और वार आदि होवैं तौभी तिलतर्पण करना. 'ज्ञाता पुरुषनें विकिर, पिंडदान, तर्पण और स्नानकर्म किये पीछे आचमन करके धारण किये डाभ त्यागने." डाभकों त्यागनेका मंत्र—"**येषां पिता न न भ्राता न पुत्रो नान्यगोत्रिणः ॥ ते सर्वे तृप्तिमायांतु मयोत्सृष्टैः कुशैस्तथा**" इस प्रकार तर्पण कहा है.

अथहिरण्यकेशीयानांसंकल्पादित्रिर्गायत्रीजपांतंप्राग्वत् ततइषेत्वोर्जेतिअध्यायानुवाकंवायथाशक्तिपठित्वाऋचंसामषडंगेतिहासपुराणादीनिपठित्वानमोब्रह्मणइत्येतयात्रिःपरिद्धाति ॥

अब हिरण्यकेशियोंका ब्रह्मयज्ञविधि कहताहुं.

हिरण्यकेशियोंका, संकल्पसें आदि तीनवार गायत्रीजपपर्यंत कर्म पूर्वकी तरह जानना. पीछे "**इषेत्वोर्जेत्वा०**" इत्यादिक अध्याय अथवा अनुवाक अपनी शक्तिके अनुसार पठण करके ऋचा, साम, षडंग, इतिहास और पुराण इन आदिका पाठ करके "**नमोब्रह्मणे**" इस ऋचाकों तीन वार पढना.

अथतर्पणं तच्चतैत्तिरीयाणांब्रह्मयज्ञांगंनभवति तेनब्रह्मयज्ञोत्तरंव्यवहितकालेपिब्रह्मयज्ञात्प्रागपिभवति एवंकाण्वमाध्यंदिनानामपि अतोदेवर्ष्याचार्यपितृतृप्तिद्वाराश्रीपरमेश्वर० देवर्ष्याचार्यपितृतर्पणंकरिष्येइतिपृथगेवसंकल्पःपूर्ववदेकैकांजलिनादेवतर्पणं ब्रह्माणंतर्पयामि प्रजापतिंतर्प० बृहस्पतिं० अग्निं० वायुं० सूर्यं० चंद्रमसं० नक्षत्राणि० इंद्रꣳराजानं० यमꣳराजानं० वरुणꣳराजानं० सोमꣳराजानं० वैश्रवणꣳराजानं० वसून् ०रुद्रान्०आदित्यान्०विश्वान्देवान्०साध्यान्०ऋभून् ०भृगून् ०मरुतः०अथर्वणः ०अंगिरसस्तर्पयामीति निवीती उदङ्मुखः विश्वामित्रं०जमदग्निं०भरद्वाजं० गौतमं० अत्रिं०वसिष्ठं० काश्यपं० अरुंधतीं० अगस्त्यं० कृष्णद्वैपायनं० जातूकर्ण्यं० तरुक्षं०तृणबिंदुं० वर्मिणं० वरूथिनं० वाजिनं० वाजिश्रवसंतर्पयामि सत्यश्रवसंत० सुश्रवसंत ०सुतश्रवसं० सोमशुष्मायणं०सत्ववंतं० बृहदुक्थं० वामदेवं० वाजिरत्नं० हर्यज्वायनं० उदमयं० गौतमं० ऋणंजयं० ऋतंजयं० कृतंजयं० धनंजयं० बभ्रुं० त्र्यरुणं० त्रिवर्षं० त्रिधातुं० शिबिं० पराशरं०

विष्णुंत० रुद्रं० स्कंदं० काशीश्वरं० ज्वरंत० धर्मं०अर्थं० कामं०क्रोधं ०वसिष्ठं ०इंद्रं० त्वष्टारंत० कर्तारं० धर्तारं धातारं० मृत्युं० सवितारंत० सावित्रींतर्प० ऋग्वेदंत० यजुर्वेदं० सामवेदं० अथर्ववेदं० इतिहासपुराणंत० ६१ इतिद्वौद्वावंजली प्राचीनावीती दक्षिणामुखः वैशंपायनं० पिलिंगुं० तित्तिरंत० उखंत०आत्रेयंपदकारं० कौंडिण्यंवृत्तिकारं० सूत्रकारान्० सत्याषाढंत० प्रवचनकर्तॄन्०आचार्यान्० ऋषीन्० वानप्रस्थान्०ऊर्ध्वरेतसः० एकपत्नीस्तर्पयामीतित्रींस्त्रीनंजलीनितिविशेषः शेषंपितृतर्पणादिसर्वंप्रागुक्तमेव ॥

अब तर्पणका विधि कहताहुं.—वह तर्पण तैत्तिरीयशाखियोंकों ब्रह्मयज्ञांगतर्पण नहीं होता है, इसलिये ब्रह्मयज्ञके (अध्ययनके) उपरंत कितनाक काल व्यतीत करके अथवा ब्रह्मयज्ञके पहलेभी तर्पण होता है. इसही प्रकार काण्व और माध्यंदिन शाखियोंकाभी यही निर्णय है, इसलिये "देवर्ष्याचार्यपितृतृप्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देवर्ष्याचार्यपितृतर्पणं करिष्ये," ऐसा पृथक्‌ही संकल्प करना, और पहलेकी तरह एक एक अंजलि देके देवतर्पण करना. तिस देवतर्पणकी देवता—"१ ब्रह्माणं तर्पयामि, २ प्रजापतिं तर्पयामि, ३ बृहस्पतिं तर्पयामि, ४ अग्निं त०, ५ वायुं त०, ६ सूर्यं त०, ७ चंद्रमसं त०, ८ नक्षत्राणि त०, ९ इंद्रꣳराजानं त०, १० यमꣳराजानं त०, ११ वरुणꣳराजानं त०, १२ सोमꣳराजानं त०, १३ वैश्रवणꣳराजानं त०, १४ वसून् त०, १५ रुद्रान् त०, १६ आदित्यान् त०, १७ विश्वान्देवान् त०, १८ साध्यान् त०, १९ ऋभून् त०, २० भृगून् त०, २१ मरुतस्त०, २२ अथर्वणस्त०, २३ अंगिरसस्त०." इस प्रकार देवतर्पण करके यज्ञोपवीतकों कंठमें लंबित करके और उत्तरके तर्फ मुखवाला होके ऋषितर्पण करना. तिसकी देवता—"१ विश्वामित्रं त०, २ जमदग्निं त०, ३ भरद्वाजं त०, ४ गौतमं त०, ५ अत्रिं त०, ६ वसिष्ठं त०, ७ कश्यपं त०, ८ अरुंधतीं त०, ९ अगस्त्यं त०, १० कृष्णद्वैपायनं त०, ११ जातूकर्ण्यं त०, १२ तरुक्षं०, १३ तृणबिंदुं०, १४ वर्मिणं०, १५ वरूथिनं, १६ वाजिनं०, १७ वाजिश्रवसं०, १८ सत्यश्रवसं०, १९ सुश्रवसं०, २०, सुतश्रवसं०, २१ सोमशुष्मायणं०, २२ सत्ववंतं० २३ बृहदुक्थं०, २४ वामदेवं०, २५ वाजिरत्नं०, २६ हर्यज्वायनं०, २७ उदमयं०, २८ गौतमं०, २९ ऋणंजयं०, ३० ऋतंजयं०, ३१ कृतंजयं०, ३२ धनंजयं०, ३३ बभ्रुं०, ३४ अरुणं०, ३५ त्रिवर्षं०, ३६ त्रिधातुं०, ३७ शिबिं०, ३८ पराशरं०, ३९ विष्णुं०, ४० रुद्रं०, ४१ स्कंदं०, ४२ काशीश्वरं०, ४३ ज्वरं०, ४४ धर्मं०, ४५ अर्थं०, ४६ कामं०, ४७ क्रोधं०, ४८ वसिष्ठं०, ४९ इंद्रं०, ५० त्वष्टारं०, ५१ कर्तारं०, ५२ धर्तारं०, ५३ धातारं०, ५४, मृत्युं०, ५५ सवितारं०, ५६ सावित्रीं०, ५७ ऋग्वेदं०, ५८ यजुर्वेदं, ५९ सामवेदं०, ६० अथर्ववेदं०, ६१ इतिहासपुराणं०," इस प्रकार एक एककों दो दो अंजलि देके तर्पण किये पीछे अपसव्य होके दक्षिणके तर्फ मुख करके आचार्यतर्पण करना. तिसकी देवता—"१ वैशंपायनं त०, २ पिलिगुं त०, ३ तित्तिरं०, ४ उखं०, ५ आत्रेयं पदकारं०, ६ कौंडिण्यं वृत्तिकारं० ७ सूत्रकारान्०, ८ सत्याषाढं०, ९ प्रवचनकर्तॄन्०, १० आचार्यान्०, ११ ऋषीन्०

१२ वानप्रस्थान्०, १३ ऊर्ध्वरेतसस्त०, १४ एकपत्नीस्त०, ” इस प्रकार एक एककों तीन तीन अंजली देके तर्पण करना, यह विशेष जानना. शेष रहा पितृतर्पण आदि सब कर्म पूर्वकी तरह करना.

अथापस्तंबादीनांब्रह्मादयोयेदेवास्तान्दे० सर्वान्दे० सर्वान्देवगणान्० सर्वादेवपत्नीः० सर्वान्पुत्रां० सर्पान्पौत्रान्० भूर्देवां० भुवर्देवां० सुवर्देवा० भूर्भुवःसुवर्देवां० कृष्णद्वैपायनादयोयेऋषयः तानृषीं० सर्वानृषीं० सर्वानृषिगणां० सर्वाऋषिपत्नीः० सर्वानृषिपुत्रां० सर्वानृषिपौत्रां०६ भूर्ऋषीं०४ एवंसोमःपितृमान्यमोंगिरस्वानग्निष्वात्ताः० तान्पितॄनित्यादयोदशपितृपर्यायाऊह्याः एवमन्येषामप्यूह्यं ॥

अब आपस्तंब आदिकोंके तर्पणका विधि कहताहुं.—तिसकी देवता–“ १ ब्रह्मादयोयेदेवास्तान्देवान्०, २ सर्वान्देवान्०, ३ सर्वान्देवगणांस्तर्प०, ४ सर्वादेवपत्नीस्त०, ५ सर्वान्पुत्रांस्तर्पयामि, ६ सर्वान्पौत्रांस्तर्प०, ७ भूर्देवांस्त०, ८ भुवर्देवांस्त०, ९ सुवर्देवांस्त०, १० भूर्भुवसुवर्देवांस्त०, ११ कृष्णद्वैपायनादयोयेऋषयःतानृषींस्त०, १२ सर्वानृषींस्त०, १३ सर्वानृषिगणांस्त०, १४ सर्वाऋषिपत्नीस्त०, १५ सर्वानृषिपुत्रांस्त०, १६ सर्वानृषिपौत्रांस्त०, १७ भूर्ऋषींस्त०, १८ भुवर्ऋषींस्त०, १९ सुवर्ऋषींस्त०, २० भूर्भुवःसुवर्ऋषींस्त० एवंसोमःपितृमान्यमोंगिरःस्वानग्निष्वात्ताःकव्यवाहनादयोयेपितरः, २१ तान्पितॄंस्त० ” इस आदि दश पितृपर्यायोंका ऊह करना, और इसही प्रकार अन्योंनेंभी जानना.

अथकात्यायनानां प्राङ्मुखआचम्यपवित्रेधृत्वाप्राणानायम्यश्रीपर० र्थंब्रह्मयज्ञेनयक्ष्ये दर्भानंजलौधृत्वादक्षिणजानौधृत्वासूत्रांतराद्गायत्रींत्रिरुच्चार्य इषेत्वेत्यादिआरभ्यसंहितांब्राह्मणंचपूर्वोक्तरीत्यापठेत् अंतेउपनिषदितिहासपुराणादिपठित्वाअंतेओंस्वस्तीतिवदेत् सूत्रांतरोक्तत्वात्नमोब्रह्मणइतित्रिःपठंतिकेचित् ॥

अब कात्यायनशाखियोंका ब्रह्मयज्ञविधि कहताहुं.—पूर्वके तर्फ मुख करके और आचमन और प्राणायाम करके संकल्प करना. सो ऐसा—“श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं ब्रह्मयज्ञेन यक्ष्ये, ” इस प्रकार संकल्प किये पीछे अंजलीमें डाभ धारण करके और वह अंजलि दाहिने गोडेपर धरके दूसरे सूत्रमें कही हुई गायत्रीका तीनवार जप करके “ इषेत्वा० ” इस आदिसें आरंभ करके संहिता और ब्राह्मणग्रंथका पूर्व कही रीतिसें अध्ययन करना. पीछे उपनिषद, इतिहास, पुराण इन आदिकोंका पठण करके अंतमें “ ॐ स्वस्ति ” ऐसा कहना. अन्य सूत्रमें कही है इसवास्ते “ नमोब्रह्मणे० ” इस ऋचाका तीनवार पाठ कहींक करते हैं.

अथतर्पणं एतच्चप्रातःसंध्योत्तरंवामध्याह्नेब्रह्मयज्ञोत्तरंवासकृदेवकार्यं ब्रह्मयज्ञस्यवैकल्पिकंकालत्रयमुक्तं तत्रदेवर्षिपितृतर्पणंकरिष्येइतिसंकल्प्यादौपूर्वोक्तधर्मेणदेवतर्पणंभूमौताम्रादिपात्रेवादर्भानास्तीर्यविश्वेदेवासआगतेतिदेवानावाह्यविश्वेदेवाःशृणुतेममितिजपित्वात्रीन्प्रागग्रान्दर्भान्धृत्वादेवतीर्थेन ओंब्रह्मातृप्यतां विष्णुस्तृप्य० रुद्र० प्रजापति० देवास्तृ० छं

दांसि० वेदा० ऋषय० पुराणाचार्या० गंधर्वा० इतराचार्या० संवत्सरःसावयव० देव्यस्तृप्यंतां० अप्सरसस्तृ० देवानुगा० नागा० सागरा० पर्वता० सरित० मनुष्या० यक्षा० रक्षांसि० पिशाचा० सुपर्णा० भूतानितृ० पशव० वनस्पतय० ओषधय० भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यतामितिसर्वत्रसप्रणवंप्रथमांतंनामोच्चार्यतर्पयेत् २९ सप्तऋषयइतिमंत्रेणर्षीनावाह्यनिवीतीद्विर्द्विः सनकस्तृप्यतु सनंदन० सनातन० कपिल० असुरी० वोढुस्तृ० पंचशिख० अपसव्यं उशंतस्त्वेतिपितॄनावाह्य आयंतुनःपितरइतिजपित्वापितृतीर्थेनत्रिस्त्रिः कव्यवाडनलस्तृप्यतां० सोम० यम० अर्यमा० अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यंतां सोमपाःपितरस्तृ० बर्हिषदस्तृ० यमायनमस्तर्पयामि धर्मराजाय० मृत्यवे० अंतकाय० वैवस्वताय० कालाय० सर्वभूतक्षयाय० औदुंबराय० दध्नाय० नीलाय० परमेष्ठिने० वृकोदराय० चित्राय० चित्रगुप्ताय० २१ यमतर्पणंवैकल्पिकं सूत्रेएकेइत्युक्तेःजीवत्पितृकस्यमणिबंधपर्यंतमपसव्यंसर्वत्र ततोमृतपितृकः पित्रादित्रयींमात्रादित्रयींचतर्पयित्वा उदीरतामितिनवभिर्ऋग्भिस्तर्पणंजलस्थानेअंजलिनाधारांनिषिंचेत् उदीरतां० १ अंगिरसोनःपितरो० २ आयंतुनः० ३ ऊर्जंवहंतिरमृतं० ४ पितृभ्यः स्वधानमः ५ येचेह० ६ मधुवाताइतितिस्रइति ९ प्रत्यृचंप्रत्येकंकुर्यात्तृप्यध्वमितिचत्रिःसिंचेत् ततोनमोवः पितरइत्यष्टौयजूंषिपठित्वामातामहादीनेकोद्दिष्टगणांश्चतर्पयेत् देवागातुविदइतिविसर्जयेत् स्नानवस्त्रनिष्पीडनोदकदानादि प्राग्वत् प्रातर्होमोत्तरंदेवतार्चनंनकृतंचेच्चतुर्थभागेब्रह्मयज्ञोत्तरंकार्यं ॥

इसके अनंतर तर्पण कहताहुं.—यह तर्पण प्रातःसंध्या किये पीछे अथवा मध्यान्हकालका ब्रह्मयज्ञ किये पीछे एकवारही करना. ब्रह्मयज्ञके काल विकल्पकरके तीन कहे हैं. तिन्होंके मध्यमें “ **देवार्षिपितृतर्पणं करिष्ये,** ” ऐसा संकल्प करके पूर्व कही रीतिसें प्रथम देवतर्पण करना. पृथिवी अथवा तांबा आदिके पात्रविषे डाभ बिछाके “ **विश्वेदेवासआगत०** ” इस मंत्रकों कहके और देवतोंका आवाहन करके “ **विश्वेदेवाः शृणुतेमं०** ” इस मंत्रका जप करके पूर्व दिशाके तर्फ अग्रभागवाले तीन डाभ धारण करके अंगुलियोंके अग्रभागसें तर्पण करना. देवतर्पणकी देवता—“**ॐ ब्रह्मातृप्यताम्, विष्णुस्तृप्यताम्, रुद्रस्तृ०, प्रजापतिस्तृ०, देवास्तृ०, छंदांसितृ०, वेदास्तृ०, ऋषयस्तृ०, पुराणाचार्यास्तृ०, गंधर्वास्तृ०, इतराचार्यास्तृ०, संवत्सरः सावयवस्तृ०, देव्यस्तृ०, अप्सरसस्तृप्यं०, देवानुगास्तृप्यं०, नागास्तृप्यं०, सागरास्तृप्यं०, पर्वतास्तृप्यं०, सरितस्तृप्यं०, मनुष्यास्तृप्यं०, यक्षास्तृप्यं०, रक्षांसि तृप्यंताम्, पिशाचास्तृप्यं०, सुपर्णास्तृप्यं०, भूतानि तृप्यं०, पशवस्तृप्यं०, वनस्पतयस्तृप्यं०, ओषधयस्तृप्यं०, भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम् २९**” इस प्रकार सब जगह ओंकारसहित प्रथमाविभक्त्यंत नामका उच्चारण करके तर्पण करना. पीछे “ **सप्तऋषयः०** ” इस मंत्रसें ऋषियोंका आवाहन करके यज्ञोपवीत कंठमें लंबित करके एक एक ऋषिकों दो दो अंजलि ऐसा तर्पण करना. ऋषितर्पणकी देवता—“ **सनकस्तृप्य०, सनंदनस्तृप्य०, सनातनस्तृप्यतु, कपिलस्तृप्यतु, आसुरीतृप्यतु, वोढुस्तृप्यतु, पंचशिखस्तृप्यतु** ” इस प्रकार तर्पण करके पीछे अपसंव्य होके “**उशंतस्त्वा०**” इस मंत्रसें पितरोंका आवाहन करके “ **आयंतुनःपितरः०** ” इस मंत्रका जप करके पितृ-

तीर्थसें एक एक पितरकों तीन तीन अंजलि ऐसा तर्पण करना. पितृतर्पणकी देवता—“कव्यवाडनलस्तृप्यताम्, सोमस्तृप्य०, यमस्तृप्य०, अर्यमातृप्य०, अग्निष्वात्ताःपितरस्तृप्यंताम्, सोमपाःपितरस्तृप्यं०, बर्हिषदस्तृप्यं०, यमायनमस्तर्पयामि, धर्मराजायनमस्तर्पयामि, मृत्यवे०, अंतकाय०, वैवस्वताय०, कालाय०, सर्वभूतक्षयाय०, औदुंबराय०, दध्नाय०, नीलाय०, परमेष्ठिने०, वृकोदराय०, चित्राय०, चित्रगुप्ताय० २१” इस प्रकार तर्पण करना. यह यमतर्पण करना अथवा नहीं करना. क्योंकी, सूत्रमें “एक” ऐसा वचन है अर्थात् कोईक आचार्य करना चाहिये ऐसा कहते हैं. जिसका पिता जीवता होवै तिसनें मणिबंधपर्यंत अपसव्य करना ऐसा सब जगह निर्णय जानना. पीछे जिंसका पिता मृत हुआ होवै तिसनें पितृत्रयी और मातृत्रयीका तर्पण करके “उदीरता०” इन नव ऋचाओंसें तर्पण करना, और जहां जल होवै तहां अंजलिसें उदकधारा छोडनी. सो ऋचा—“उदीरता० १, अंगिरसोनःपितरो० २, आयंतुनः ३, ऊर्जंवहंतिरमृतं० ४, पितृभ्यःस्वधानमः ५, येचेह० ६, मधुवाता० तीन ऋचा,” इन नव ऋचाओंसें एक एक ऋचासें एक एकवार “तृप्यध्वं” ऐसा कहके अंजलिसें तीनवार पानीकी धारा छोडनी. पीछे “नमोवः पितरः०” इन आठ यजुर्मंत्रकों कहके मातामह आदि तीन और एकोद्दिष्टगणका तर्पण करना. पीछे “देवागातुविदः०” यह मंत्र कहके विसर्जन करना. स्नान किया हुआ वस्त्र निचोडके जल देना आदि शेषकर्म पहलेकी तरह जानना. प्रातःकालीन होम किये पीछे देवपूजा नहीं करी होवै तौ चौथे भागमें ब्रह्मयज्ञ किये पीछे करनी.

अथपंचमभागकृत्यं वैश्वदेवःप्रकर्तव्यःपंचसूनापनुत्तये कंडणीपेषणीचुल्लीजलकुंभोपमार्जनीतिपंचहिंसास्थानानिपंचसूनाः वैश्वदेवस्यप्रातरेवप्रारंभोनत्वग्निहोत्रादिवत्सायं तेनप्रातःसायंवैश्वदेवेत्यादिरेवसंकल्पः पंचमहायज्ञाअहरहःकर्तव्याः तेचब्रह्मयज्ञदेवयज्ञभूतयज्ञपितृयज्ञमनुष्ययज्ञाख्याः तत्रब्रह्मयज्ञउक्तः बह्वृचादीनांवैश्वदेवोदेवयज्ञादियज्ञत्रयरूपः मनुष्ययज्ञस्तुमनुष्येभ्योन्नदानं गृहपक्वहविष्यान्नैस्तैलक्षारादिवर्जितैः जुहुयात्सर्पिषाभ्यक्तैर्गृह्येग्नौ लौकिकेपिवा यस्मिन्नग्नौपचेदन्नंतस्मिन्होमोविधीयते वैश्वदेवांतर्गतपितृयज्ञेनैवनित्यश्राद्धसिद्धेर्ननित्यश्राद्धार्थंविप्रभोजनं अनेनैवदर्शश्राद्धस्यापिसिद्ध्यादर्शश्राद्धमप्यशक्तैःसंवत्सरमध्येसकृदेवकार्यमितिभट्टोजीये सूतकेपंचमहायज्ञानांलोपइत्युक्तं सचायंवैश्वदेवआत्मसंस्कारार्थोन्नसंस्कारार्थश्चतेनाविभक्तानांपाकैक्येपृथग्वैश्वदेवोन विभक्तानांतुपाकैक्येपिहविष्यांतरेणपृथगेव अविभक्तानांपाकभेदेपृथक्वैश्वदेवःकृताकृतइतिभट्टोजीये पाकासंभवेएकादश्यादौतंडुलैर्वापयोदधिघृतफलोदकादिभिर्वाकार्यः हस्तेनान्नादिभिःकुर्यादद्भिरंजलिना जले कोद्रवंचणकंमाषंमसूरंचकुलित्थकं क्षारंचलवणंसर्वंवैश्वदेवेविवर्जयेत् प्रवसतागृहेपुत्रर्त्विगादिद्वारावैश्वदेवःकारयितव्यः गृहेकर्त्रंतराभावेप्रवासेस्वयंकार्यः वैश्वदेवोबह्वृचैस्तैत्तिरीयैश्चदिवारात्रौचेतिद्विवारंकार्यः अशक्तैस्त्वेककालेएवद्विरावृत्त्यासहवाकार्यः बह्वृचतैत्तिरीययोर्लौकिकाग्नौपाकोवैश्वदेवश्चेतिप्रायेणाचारः ॥

अब पांचमे भागका कृत्य कहताहुं.

गृहस्थीकों सब कालमें पंचसूना दोष लगता है, तिसकों दूर करनेके अर्थ प्रतिदिन वैश्वदेव करना उचित है. कंडणी अर्थात् ऊखल, मूसल आदि; पेषणी अर्थात् चाकी, चकला, सिलवट्टा इन आदि; चुल्ली अर्थात् चुल्हा, भट्टी आदि; जलकुंभ अर्थात् घट, हांडा आदि; और मार्जनी अर्थात् बुहारी, कुंची आदि घरकी शुद्धि करनेका साधन; ये पांच हिंसाके स्थान पंचसूना कहाते हैं. वैश्वदेवका प्रातःकालमेंही प्रारंभ होता है. अग्निहोत्र आदिकी तरह सायंकालमें नहीं होता है. इस लिये संकल्प करनेका सो, **"प्रातःसायंवैश्वदेव०"** इस आदिही करना. पंचमहायज्ञ नित्यप्रति करने. वे ऐसे,—ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ और मनुष्ययज्ञ इस प्रकार पंचमहायज्ञ होते हैं. तिन्होंमांहसें ब्रह्मयज्ञ कहा गया है. ऋक्शाखियोंका वैश्वदेव देवयज्ञ, भूतयज्ञ और पितृयज्ञ ये तीन यज्ञ मिलके होता है, और मनुष्योंकों अन्न देना यह मनुष्ययज्ञ होता है. "घरमें पकाया हुआ तेल और खार पदार्थ आदिसें रहित और घृतसें युक्त ऐसे हविष्य अन्नोंका होम गृह्याग्निमें अथवा लौकिकाग्निमें करना. जिस अग्निविषे अन्न पकाया जावै तिसी अग्निमें वैश्वदेव करना." वैश्वदेवसंबंधी पितृयज्ञ करनेसें नित्यश्राद्धकी सिद्धि होती है. नित्यश्राद्धके लिये ब्राह्मणभोजन नहीं कराना. वैश्वदेवसंबंधी पितृयज्ञसेंही दर्शश्राद्धकीभी सिद्धि होती है, इस लिये प्रतिमासमें दर्शश्राद्ध करनेका सामर्थ्य नहीं होवै तिन मनुष्योंनें वर्षके मध्यमें एकही वार करना ऐसा भट्टोजिदीक्षितके किये **आह्निकग्रंथमें** कहा है. आशौचमें पंचमहायज्ञ नहीं करने ऐसा कहा है. वैश्वदेव यह शरीरसंस्कार और अन्नसंस्कारका प्रयोजक है. नहीं विभक्त हुये भाईयोंका एक पाक होवै तौ पृथक् वैश्वदेव नहीं करना. विभक्त हुये भाईयोंका एक पाक होवै तबभी तिन्होंनें अन्य हविष्य द्रव्यसें पृथक्ही वैश्वदेव करना. भाई विभक्त नहीं हुये होके पाक अलग अलग बनै तब पृथक् वैश्वदेव करना अथवा नहीं करना ऐसा भट्टोजिदीक्षितकृत **आह्निकग्रंथमें** कहा है. पाकका संभव नहीं होवै तब एकादशी आदि तिथियोंमें चावल, दूध, दही, घृत, फल अथवा जल इन आदिसें वैश्वदेव करना. अन्न आदि हवनीय द्रव्योंका वैश्वदेव हाथसें करना, और जलकरके अंजलीसें जलमें करना. कोदू अन्न, चना, उडद, मसूर, कुलथी, सब खार और सब नमक ये पदर्थ वैश्वदेवविषे वर्जित करने. जो गृहस्थ प्रवासी होवै तिसनें अपने घरमें पुत्र और ऋत्विक् आदिके द्वारा वैश्वदेव कराना. अपने घरमें वैश्वदेव करनेवाला दूसरा कोई नहीं होवै तौ प्रवासके मध्यमें आप वैश्वदेव करना. ऋग्वेदी और तैत्तिरीयशाखियोंनें दिनमें और रात्रिमें ऐसा दोवार वैश्वदेव करना. दिनमें और रात्रिमें ऐसा दोवार वैश्वदेव करनेकी जिनकों शक्ति नहीं होवै तिन्होंनें एककालमेंहीं द्विरावृत्तिकरके अथवा एक तंत्रकरके करना. ऋग्वेदी और तैत्तिरीयशाखियोंका बहुत प्रकारसें पाक और वैश्वदेव ये लौकिक अग्निमें करनेका आचार है.

अथप्रातःसायंवैश्वदेवस्यसहकरणपक्षेतंत्रप्रयोगः तत्रवैष्णवैर्भगवतेषोडशोपचारेषुदीपांतानुपचारान्समर्प्यसर्वान्नात्पुरुषाहारपर्याप्तंनैवेद्यंसमर्प्यशेषान्नेनवैश्वदेवःकार्यः वैष्णवभिन्नैस्तुवैश्वदेवांतेतच्छेषेणनैवेद्यःकार्यः विष्णोर्निवेदितान्नेनयष्टव्यंदेवतांतरं पितृभ्यश्चापितद्देयं

तदानंत्यायकल्पतइत्यादिवचनानांवैष्णवविषयकत्वस्यनिबंधकारैरुक्तत्वात् अत्रवैष्णवानारायणाष्टाक्षरादिवैष्णवमंत्रदीक्षोपदेशजपवंतोमुख्याः उपदेशःकलौयुगइतिस्मृत्योपदेशमात्रस्यापिदीक्षासमफलत्वात् गौणाश्चपारंपर्यागतारुणोदयविद्धैकादश्यनुपवासशुक्लकृष्णैकादश्युपवासादियत्किंचिद्धर्ममात्रपरामंत्रोपदेशादिरहिताः ननुपांचरात्राद्यागमोक्तदीक्षांप्राप्तोहिवैष्णवइत्युक्तेःकिंचिद्धर्ममात्रानुष्ठानेनकथंवैष्णवत्वमितिचेत् गायत्र्यध्ययनादिक्षत्रियवैश्यसाधारणधर्मवतांयाजनाध्यापनप्रतिग्रहरूपासाधारणधर्मशून्यानांपित्रादिपरंपरया वैश्यादिवृत्तिपराणामप्यव्यभिचरितैकगोत्रत्वादियत्किंचिद्ब्राह्मणधर्ममात्रेणयथाब्राह्मणत्वंतदुचितसूतकाद्याचारश्चतथाकलियुगेकिंचिद्धर्मेणापिवैष्णवत्वंतदुचिताचारश्चयुज्यते क्षत्रियाणांहिपुरोहितभेदेनगोत्रभेदस्तेनयदुवंशेषुपरस्परंविवाहोनैवंब्राह्मणेष्वितिस्पष्टं एवंश्राद्धेपिनैवेद्यंसमर्प्यपितृभ्योन्ननिवेदनंज्ञेयं ममात्मान्नसंस्कारपंचसूनाजनितदोषपरिहारद्वाराश्रीपर० प्रातर्वैश्वदेवंसायंवैश्वदेवंचसहतंत्रेणकरिष्ये कुंडेस्थंडिलादौवापचनाग्निंव्याहृतिभिः पावकनामानंप्रतिष्ठाप्यचत्वारिशृंगेतिध्यात्वापरिसमुह्यपर्युक्ष्यविश्वानिनइत्यर्चनादिविधाय घृताक्तमन्नमग्नावधिश्रित्य प्रोक्ष्योद्वास्याग्नेःपश्चान्निधायत्रिधाविभज्यप्रथमभागंदेवेभ्योजुहुयात् तद्यथाहृदिसव्यंकरंनिधायोत्तानहस्तेनसूर्यायस्वाहासूर्यायेदंनमम प्रजापतये० सोमायवनस्पये० अग्नीषोमाभ्यां० इंद्राग्निभ्यां० द्यावापृथिवीभ्यां० धन्वंतरये० इंद्राय० विश्वेभ्योदेवेभ्यः० ब्रह्मणे० इतिदशप्रातर्वैश्वदेवाहुतयः ॥

अब प्रातःकालीन और सायंकालीन ऐसे दो वैश्वदेव बरोबर करनेके पक्षमें एकतंत्रप्रयोग कहताहुं.—तहां विष्णुके भक्तोंनें विष्णुकों षोडशोपचारोंके मध्यमांहसें दीपकपर्यंत उपचार अर्पण करके सब अन्नमांहसें एक पुरुषके आहारकी पर्याप्ति हो सकै इतना नैवेद्य विष्णुकों अर्पण करके शेष रहे पाकसें वैश्वदेव करना. वैष्णवोंसें भिन्न लोकोंनें तो पहले वैश्वदेव करके शेष रहे पाकसें नैवेद्य अर्पण करना. क्योंकी, “विष्णुकों अर्पण किया अन्न लेके तिस अन्नसें दूसरे देवताका यज्ञ (वैश्वदेवादि) करना और पितरोंकोंभी वह अन्न देना अर्थात् तिस अन्नसें श्राद्ध करना. यह कर्म अनंत फलकों देता है,” इस आदि वचन वैष्णवविषयक है ऐसा **निबंधकारनें** कहा है. यहांही वैष्णवविषयमें विचार करनेसें ऐसा सिद्ध होता है की, नारायणके अष्टाक्षर आदि वैष्णवमंत्रके दीक्षाका उपदेश लेके जप करनेवाले मुख्य वैष्णव होते हैं; क्योंकी, “कलियुगमें उपदेश ग्रहण करना,” ऐसे स्मृतिवचनसें उपदेशमात्रकाभी दीक्षाके फलसरीखा फल है. परंपरागत अरुणोदयसें विद्ध हुई एकादशीका उपोषण नहीं करके शुक्ल कृष्ण एकादशीका उपोषण करना इत्यादिक जो कछु धर्ममात्र है तिसकों पालनेवाले होके मंत्रके उपदेशसें वर्जित ऐसे गौण वैष्णव होते हैं. शंका—“पांचरात्र आदि वैष्णवशास्त्रमें कही दीक्षाकों प्राप्त हुआ वैष्णव होता है,” इस वचनसें कछुक वैष्णवधर्म आचरण करनेसें कैसा वैष्णवपना प्राप्त होवैगा? **समाधान**—गायत्रीका अध्ययन करना आदि जो क्षत्रियवैश्योंका साधारण धर्म वह मात्र पालनेवाले, दूसरेके घरमें ऋत्विक्कर्म करना, वेदका अध्ययन कराना और दान लेना ऐसा जो विशेष धर्म तिसकरके शून्य रहनेवाले, पिता और पितामह आदिकी परंपराकरके वैश्य आदिकी वृत्तिमें तत्पर हुये

ब्राह्मणोंकों तिन्होंका और अपना एक गोत्र और एक जाति इत्यादि अल्प ब्राह्मणके धर्ममात्रकरके जैसा ब्राह्मणपना और तदुचित आशौच आदिका आचार है तैसा कलियुगमें कछुक धर्मकरके वैष्णवपना और तदुचित आचार ये माने जाते हैं. क्षत्रियोंकों शुद्ध गोत्र नहीं होनेसें तिन्होंके पुरोहितका जो गोत्र सोही तिन्होंका गोत्र ऐसे नियमसें क्षत्रियोंके पुरोहित अनेक होनेसें क्षत्रियोंके गोत्रभी अनेक हुए हैं, और तिस्सेंही यदुवंशमें आपसमें विवाह हुआ, तैसा ब्राह्मणोंमें नहीं होता है यह स्पष्ट है. इसी प्रकार श्राद्धमेंभी नैवेद्य समर्पित करके पितरोंकों अन्न निवेदन करना उचित है ऐसा जानना. वैश्वदेवका संकल्प—"**ममात्मान्नसंस्कारपंचसूनाजनितदोषपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातर्वैश्वदेवं सायंवैश्वदेवं च सह तंत्रेण करिष्ये,**" इस प्रकार संकल्प करके कुंडमें अथवा स्थंडिल आदिमें पचनाग्निका व्याहृतिमंत्रोंसें पावकनामा ऐसा स्थापन करके, "**चत्वारिशृंगा०**" इस मंत्रसें अग्निका ध्यान करके परिसमुह्य अर्थात् अग्निके सब तर्फ जल सिंचन करके और पर्युक्ष्य अर्थात् चारों तर्फ जल सिंचन करके "**विश्वानिनो०**" इन मंत्रोंसें पूजा और स्तुति करके घृतसें युक्त हुये अन्नकों अग्निमें कछुक शिजाय वह जलसें प्रोक्षित करके अग्निकी उत्तर तर्फसें लेके अग्निके पश्चिमभागमें स्थापन करना. पीछे तिसके तीन भाग करके पहले भागका देवताके उद्देशसें होम करना. सो ऐसा—हृदयपर वाम हस्त स्थापित करके उत्तान ऐसे सव्य हाथसें "**सूर्याय स्वाहा सूर्यायेदं नमम, प्रजापतये०, सोमायवनस्पतये०, अग्नीषोमाभ्याम्०, इंद्राग्निभ्यां०, द्यावापृथिवीभ्यां०, धन्वंतरये०, इंद्राय०, विश्वेभ्योदेवेभ्यः०, ब्रह्मणे०**" इस प्रकार दश आहुति प्रातःकालीन वैश्वदेवकी हैं.

अथसायंवैश्वदेवीयाः अग्नयेस्वाहेतिहुत्वाप्रजापतयइत्यादिपुनर्नवजुहुयात् एवंविंशत्याहुतीर्हुत्वाप्रायश्चित्तार्थंव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिर्हुत्वानहुत्वावापरिसमूहनपर्युक्षणेकुर्यात् ॐच मइत्युपतिष्ठेत् इतिदेवयज्ञः ॥

अब सायंकालीन वैश्वदेवकी आहुति कहताहुं.—"**अग्नये स्वाहा,**" यह आहुति देके "**प्रजापतये स्वाहा**" इस आदि पुनः नव आहुतियोंसें होम करना. इस प्रकार वीस आहुतियोंसें होम करना. प्रायश्चित्तके अर्थ व्यस्त समस्त व्याहृतियोंसें होम करनेका सो करना अथवा नहीं करना. पीछे पहले कहेकी तरह कुंडके सब तर्फ जलसंस्कार करना. और "**ॐचमे०**" इस मंत्रसें उपस्थान करना. इस प्रकार देवयज्ञ कहा.

अथबलिहरणाख्योभूतयज्ञः द्वितीयभागाद्गृहीत्वाशुद्धभूमौसूर्यायस्वाहासूर्यायेदंनममेत्येवं दशाहुतीःप्राक्संस्थानिरंतराहुत्वामध्येंतरालंत्यक्त्वा अद्भ्यःस्वाहा ओषधिवनस्पतिभ्यः० गृहा० गृहदेवताभ्यः० वास्तुदेव० इतिप्राक्संस्थाहुत्वा अद्भ्यआहुतेःपश्चात्इंद्राय० तदुत्तरे इंद्रपुरुषेभ्यः० अंतरालस्यदक्षिणेयमाय० तदुत्तरेयमपुरुषेभ्यः० ब्रह्मणआहुतेःप्राक् वरुणाय० तदुत्तरेवरुणपुरुषेभ्यः० अंतरालस्योत्तरेसोमाय० तदुत्तरंसोमपुरुषेभ्यः० अंतराले ब्रह्मणे० ब्रह्मपुरुषे० विश्वेभ्योदेवेभ्यः० सर्वेभ्योभूतेभ्यः० दिवाचारिभ्यः सोमपुरुषोत्तरंरक्षोभ्यः० एवमेवसूर्यस्थानेप्रथममग्नयेहुत्वाप्रजापतयइत्यादिपूर्ववत्सायंवैश्वदेवसंब

धिद्वितीयबलिहरणंकुर्यात् तत्रदिवाचारिभ्यइत्यस्यस्थानेनक्तंचारिभ्यः स्वाहेतिजुहुयात् इति विशेषः इतिभूतयज्ञः ॥

अब बलिहरणनामक भूतयज्ञ कहताहुं.—अन्नके दूसरे भागसें अन्न ग्रहण करके शुद्ध पृथिवीपर “ **सूर्याय स्वाहा सूर्यायेदं नमम,** ” इस प्रकार दश आहुति एकके पीछे दूसरी इस प्रकारसें मध्यमें अंतर नहीं रखके पूर्वकी तर्फ देते जाना. पीछे मध्यमें कछुक अंतर रखके “ **अद्भ्यः स्वाहा, ओषधिवनस्पतिभ्यः०, गृहाय०, गृहदेवताभ्यः०, वास्तुदेवताभ्यः स्वाहा** ” ऐसी पूर्वसंस्थ आहुति देके ‘ **अद्भ्यः** ’ इस आहुतिके पृष्ठभागमें “ **इंद्राय०** ” यह आहुति देनी, और तिस्सें उत्तरमें “ **इंद्रपुरुषेभ्यः०** ” यह आहुति देनी. अंतरालके दक्षिणमें “ **यमाय०** ” यह आहुति देके तिस्सें उत्तरके तर्फ “ **यमपुरुषेभ्यः०** ” यह आहुति देनी. ‘ **ब्रह्मणे०** ’ इस आहुतिकी पूर्वकी तर्फ “ **वरुणाय०** ” यह आहुति देके तिसके उत्तरमें “ **वरुणपुरुषेभ्यः०** ” यह आहुति देनी. अंतरालके उत्तरमें “ **सोमाय०** ” यह आहुति देके तिसके उत्तरमें “ **सोमपुरुषेभ्यः** ” यह आहुति देनी. मध्यभागमें “**ब्रह्मणे०, ब्रह्मपुरुषेभ्यः०,**” “**विश्वेभ्योदेवेभ्यः०, सर्वेभ्योभूतेभ्यः०, दिवाचारिभ्यः०** ” इस प्रकार आहुति देके ‘ **सोमपुरुष०** ’ ऐसी जो आहुति है तिसके उत्तरमें “ **रक्षोभ्यः०** ” यह आहुति देनी. इस प्रमाण सूर्यके स्थानमें प्रथम “**अग्नये०**” यह आहुति देके “ **प्रजापतये०** ” इस आदि पूर्व कहेकी तरह सायंकालीन वैश्वदेवसंबंधी दूसरा बलिदान करना. तिस सायंकालके बलिदानमें “ **दिवाचारिभ्यः०** ” इस आहुतिके स्थानमें “ **नक्तंचारिभ्यः स्वाहा** ” यह आहुति देनी, यह विशेष है. इस प्रकार भूतयज्ञ समाप्त हुआ.

प्राचीनावीती तृतीयभागादादायस्वधापितृभ्यः इतियमबलेर्दक्षिणतोदत्वापितृभ्यइदंनममेतित्यक्त्वाद्वितीयबलेर्दक्षिणतःद्वितीयपितृयज्ञमेवकुर्यात् इतिपितृयज्ञः ॥

इसके अनंतर अपसव्य होके अन्नके तीसरे भागसें अन्न लेके “ **स्वधापितृभ्यः** ” ऐसी आहुति यमकी आहुतिके दक्षिणभागमें देके “ **पितृभ्यइदंनमम** ” ऐसा त्याग कहके दूसरी आहुतिके दक्षिणभागमें दूसरा पितृयज्ञही करना. इस प्रकार पितृयज्ञ कहा.

अपरेचक्राकारंबलिमाहुः बलावनुद्धृतेनाद्यान्नोद्धरेच्चस्वयंबलिं ततोगृहांगणेभूमावपआसिच्य ऐंद्रवारुणवायव्यांयाम्यांनैर्ऋतिकाश्चये तेकाकाःप्रतिगृण्हंतुभूम्यांपिंडंमयोज्झितं इतिपितृयज्ञशेषेणदत्वा वैवस्वतकुलेजातौद्वौश्यामशबलौशुनौ ताभ्यांपिंडोमयादत्तोरक्षेतांपथिमांसदा येभूताःप्रचरंति० इतिद्वयंभूतयज्ञशेषेणदद्यात् येभूताइतिमंत्रेतंत्रेणवैश्वदेवप्रयोगे दिवानक्तंबलिमितिपाठः अह्निरात्रौचपृथक्प्रयोगेदिवाबलिमिच्छंतोनक्तंबलिमिच्छंतइतिविभागेनपाठः प्रक्षालितपाणिपादआचम्यगृहंप्रविश्यशांतापृथिवीत्यादिजपित्वाविष्णुंस्मृत्वाकर्मार्पयेत् ॥

कितनेक दूसरे ग्रंथकार चक्रकी तरह अर्थात् वर्तुल बलिहरण करना ऐसा कहते हैं. “ बलिहरण काढ डाले विना भोजन नहीं करना, और कर्तानें बलिहरण नहीं काढना.

पीछे घरके अंगनमें पृथिवीपर जल सिंचन करके, “ ऐंद्रवारुणवायव्यां याम्यां नैर्ऋतिकाश्च ये ॥ ते काकाः प्रतिगृण्हंतु भूम्यां पिंडं मयोज्झितम् ” यह मंत्र कहके पितृयज्ञशेष रहे अन्नका पिंड देके “ वैवस्वतकुले जातौ द्वौ श्यामशबलौ शुनौ ॥ ताभ्यां पिंडो मया दत्तो रक्षेतां पथि मां सदा ॥ ये भूताः प्रचरंति० ” इन दो मंत्रोंसें दो पिंड भूतयज्ञशेष अन्नके देने. एकतंत्रसें वैश्वदेवका प्रयोग करना होवै तौ “ ये भूताः० ” इस मंत्रके स्थानमें ‘ दिवानक्तं ’ ऐसा पाठ जानना. दिनमें और रात्रिमें पृथक् पृथक् वैश्वदेवका प्रयोग करना होवै तौ “ दिवाबलिमिच्छंतो० नक्तंबलिमिच्छंतो ” ऐसे विभागकरके पाठ जानना. पीछे हाथ और पैरोंकों धोके और आचमन करके और घरमें प्रवेश करके “ शांतापृथिवी० ” इस आदि मंत्रोंका जप करके विष्णुका स्मरण करके कर्म ईश्वरकों अर्पण करना.

अथमनुष्ययज्ञः अतिथिभोजनपर्याप्तंवाषोडशग्रासमितंवाग्रासचतुष्टयंवाग्रासमितंवान्नंसनकादिमनुष्येभ्योहंतइदंनममेतिदद्यात् बहुषुभिक्षुकेष्वागतेष्वशक्तेनात्रिभ्योग्रासत्रयंदेयं ॥

अब मनुष्ययज्ञ कहताहुं.—अतिथिका भोजन हो सकै इतना अन्न अथवा सोलह ग्रासपरिमित अथवा चार ग्रासपरिमित अन्न “ **सनकादिमनुष्येभ्यो हंत इदं नमम,** ” ऐसा वाक्य कहके देना. बहुतसे भिक्षुक आके प्राप्त हुए होवैं तब असमर्थ मनुष्यनें तीन भिक्षुकोंको तीन ग्रास देने.

अथतैत्तिरीयाणां श्राद्धदिनेभिन्नपाकेनादौवैश्वदेवःदेवयज्ञादिचतुष्टयंचभवति अपरेआदौवैश्वदेवांतेतुपंचमहायज्ञाइत्याहुः याजुषाःसामगाः पूर्वंमध्येकुर्वंत्यथर्वणाः बह्वृचाःश्राद्धशेषेणतत्राप्यादौतुसाग्निकाः स्वर्गपुष्ट्यर्थमात्मसंस्कारार्थंप्रातःसायंवैश्वदेवौतंत्रेणकरिष्ये औपासनाग्निंपचनाग्निंवाप्रतिष्ठापितमौपासनहोमवत्परिसमुह्यपरिषिच्यान्नमग्नावधिश्रित्य प्रोक्ष्योद्वास्याभिघार्याग्निंसंपूज्यान्नंत्रेधाविभज्य हस्तेनजुहुयात् अग्नयेस्वाहा विश्वेभ्योदेवेभ्यः० ध्रुवायभूमाय० ध्रुवक्षितये० अच्युतक्षितये० अग्नयेस्विष्टकृते० परिसमुह्यपर्युक्ष्य अग्नेःपश्चादेकत्रैवदेशेव्यजनाकारश्चक्राकारोवाबलिः तत्रदेवताः धर्मायस्वाहा धर्मायेदं० अधर्माय० अद्भ्यः० ओषधिवनस्पतिभ्यः रक्षोदेवजनेभ्यः० गृह्याभ्यः० अवसानेभ्यः० अवसानपतिभ्यः० सर्वभूतेभ्यः० कामाय० अंतरिक्षाय० यदेजतिजगतियच्चचेष्टतिनाम्नोभागोयन्नाम्नेस्वाहा नाम्नइदं० केचिद्वायवइदमितित्यागमाहुः पृथिव्यैस्वाहा अंतरिक्षाय० दिवे० सूर्याय० चंद्रमसे० नक्षत्रेभ्यः० इंद्राय० बृहस्पतये० प्रजापतये० ब्रह्मणे० सर्वान्सकृत्परिषिच्य पृथक्पृथक्परिषेचनपक्षे द्वावेकंद्वेचचत्वारिप्रत्येकंत्रीणिचैवहि पृथिव्यादिदशस्येकमतऊर्ध्वंपृथक्क्रमादितिज्ञेयं प्राचीनावीती तद्दक्षिणतः स्वधापितृभ्यःस्वाहा तदुत्तरतउपवीती नमोरुद्रायपशुपतयेस्वाहा पितृरुद्रबलीपृथक्परिषिंचेत् इतिवैश्वदेवः ॥

अब तैत्तिरीयशाखियोंका वैश्वदेवप्रयोग कहताहुं.

तैत्तिरीयशाखियोंनें श्राद्धदिनमें अलग पाक करके श्राद्धके पहले वैश्वदेव और देवयज्ञ आदि चार यज्ञ करने. दूसरे ग्रंथकार पहले वैश्वदेव किये पीछे पंचमहायज्ञ करने ऐसा

कहते हैं. “ यजुःशाखी और सामवेदियोंनें श्राद्धके पहले वैश्वदेव करना. अथर्वणवेदियोंनें श्राद्धके मध्यमें वैश्वदेव करना और ऋग्वेदियोंनें श्राद्ध करके श्राद्धशेष रहे अन्नसें वैश्वदेव करना. तहांभी साग्निक ऋग्वेदियोंनें श्राद्धके पहले वैश्वदेव करना.” **वैश्वदेवका संकल्प.—“स्वर्गपुष्ट्यर्थं आत्मसंस्कारार्थं प्रातःसायंवैश्वदेवौ तंत्रेण करिष्ये** ” ऐसा संकल्प करके औपासनाग्नि अथवा स्थापित किये पचनाग्निका औपासनहोमकी तरह परिसमूहन, परिसिंचन (उदकसंस्कार) करके और अन्न अग्निपर थोडा गरम करके जलसें प्रोक्षण करके और अग्निपरसें उतारके तिसमें घृत डालके वह अन्न अग्निके पश्चिमतर्फ स्थापित करना. पीछे अग्निकी पूजा करके तिस अन्नके तीन विभाग करके प्रथम भागके अन्नका हाथसें होम करना. तिस होमके मंत्र “ **अग्नयेस्वाहा, विश्वेभ्योदेवेभ्यः०, ध्रुवायभूमाय०, ध्रुवक्षितये०, अच्युताक्षितये०, अग्नयेस्विष्टकृते०** ” इस प्रकार होम करके परिसमूहन और पर्युक्षण करके अग्निकी पश्चिम तर्फ एकही प्रदेशमें वीजणाके आकारका अथवा चक्रके आकारका वलिहरण करना. वलिहरणकी देवता—“**धर्मायस्वाहा धर्मायेदंनमम, अधर्माय० अद्भ्यः०, ओषधिवनस्पतिभ्यः० रक्षोदेवजनेभ्यः०, गृह्याभ्यः०, अवसानेभ्यः०, अवसानपतिभ्यः०, सर्वभूतेभ्यः०, कामाय०, अंतरिक्षाय०, यदेजतिजगतियच्चचेष्टतिनाम्नोभागोयन्नाम्नेस्वाहा नाम्नइदंन०**” यहां कितनेक ग्रंथकार “**वायव इदं०**” ऐसा त्याग करना ऐसा कहते हैं. “ **पृथिव्यैस्वा०, अंतरिक्षाय०, दिवे०, सूर्याय०, चंद्रमसे०, नक्षत्रेभ्यः० इंद्राय०, बृहस्पतये०, प्रजापतये०, ब्रह्मणे०** ” इस प्रकार आहुति देके सब आहुतियोंकों एकवार जलसें सिंचन करना. अलग अलग सिंचन करना इस पक्षमें “**धर्म और अधर्म**” ये दो आहुति मिलके एकवार सिंचन; ‘**अद्भ्यः**’ इस आहुतीकों सिंचन; ‘**ओषधिवनस्पति और रक्षोदेवजन**’ ये दो आहुति मिलके सेचन; ‘ **गृह्याभ्य०, अवसान०, अवसानपति० और सर्वभूत०,**’ ये चार आहुति मिलके सिंचन करना. ‘ **काम०, अंतरिक्ष०, यदेर्जति०,**’ इन तीन आहुतियोंकों पृथक् पृथक् सिंचन करना. पृथिवीसें ब्रह्मपर्यंत दश आहुति मिलके एकवार सिंचन करना. इसके उपरंत जो आहुति हैं तिन्होंके प्रत्येकको अलग अलग सिंचन, इस क्रमसें उदकका सिंचन है ऐसा जानना. “ पीछे अपसव्य होके पृथिवी आदि दश आहुतियोंके दक्षिणप्रदेशमें “ **स्वधापितृभ्यः स्वाहा** ” यह आहुति देनी और तिसके उत्तरप्रदेशमें उपवीती होके “ **नमोरुद्राय पशुपतये स्वाहा** ” यह आहुति देके पितर और रुद्र इन्होंकी आहुतियोंपर अलग अलग सिंचन करना. इस प्रकार वैश्वदेव कहा.

अथदेवयज्ञादिचतुष्टयं देवयज्ञेनयक्ष्येइतिसंकल्प्याग्निंपरिषिच्यदेवेभ्यः स्वाहेत्यग्नौहुत्वोत्तरपरिषेकः प्राचीनावीती पितृयज्ञेनयक्ष्ये दक्षिणतोभूमौपितृभ्यः स्वधास्तुइतिदत्वात्यक्त्वा परिषिच्य यज्ञोपवीतीअपःस्पृष्ट्वा भूतयज्ञेनयक्ष्ये भूतेभ्योनमइतिभूमौदत्वापरिषिच्य निवीतीमनुष्ययज्ञेनयक्ष्ये उक्तप्रमाणमन्नंमनुष्येभ्योहंतेतिदद्यात् सर्वयज्ञेषुआद्यंतयोः क्रमेणविद्युदसिवृष्टिरसीतिमंत्रयोःपाठःप्रायेणैषां वलिशिष्टमन्नंयेभूताःप्रचरंतीतिगृहांगणेगत्वाकाशेउत्क्षिपेत् ततोयथाचारंश्ववायसादिवलिः ॥

अब देवयज्ञ आदि चार यज्ञ कहताहुं.—“**देवयज्ञेन यक्ष्ये**” इस प्रकार संकल्प करके

अग्निकी चारों तर्फ जल सिंचन करके "देवेभ्यः स्वाहा," इस मंत्रसें अग्निमें आहुति देके उत्तर अभिषेक करना. पीछे अपसव्य होके "पितृयज्ञेन यक्ष्ये" ऐसा संकल्प करके दक्षिणप्रदेशमें पृथिवीवर "पितृभ्यः स्वधास्तु" इस मंत्रसें आहुति देके त्यागका उच्चार करके जलका परिषेक करना. पीछे सव्य होके और जलकों स्पर्श करके "भूतयज्ञेन यक्ष्ये" ऐसा संकल्प करना. पीछे "भूतेभ्योनमः" इस मंत्रसें पृथिवीपर आहुति देके जलका परिषेक करना. पीछे यज्ञोपवीतकों कंठमें लंबित करके "मनुष्ययज्ञेन यक्ष्ये" ऐसा संकल्प करके पूर्व कहे प्रमाणसें अन्न "मनुष्येभ्योहंत" इस मंत्रसें देना. तैत्तिरीयशाखी, सब यज्ञोंके आदिमें और अंतमें क्रमसें "विद्युदसि० और वृष्टिरसि०" इन मंत्रोंका पाठ बहुधा करते हैं. बलिहरण किये पीछे शेष जो अन्न रहा होवै तिसकों ग्रहण करके घरके आंगनके मध्यमें जाके "ये भूताः प्रचरंति दिवा०" यह मंत्र कहके वह उपर आकाशमें फेंकना. पीछे जैसा आचार होवै तिसके अनुसार कुत्ता और काक आदियोंकों बलि देना.

अथकातीयानां तत्रसाग्निकानामेकपाकेनैवश्राद्धदिनेआदौवैश्वदेवः अन्येषामंते आवसथ्योल्मुकंमहानसेकृत्वातत्रपाकंविधायमहानसस्थांगारान्गृह्याग्नौनिधाय पाकादन्नंघृताक्तमादायपूर्ववदात्मा०र्थं वैश्वदेवाख्यंकर्मकरिष्यइतिसंकल्पः अथवादेवभूतपितृमनुष्यान्वैश्वदेवान्नेनयक्ष्ये गृह्याग्निंमणिकोदकेनपर्युक्ष्यहस्तेनाग्नौजुहुयात् ब्रह्मणेस्वाहाइदंब्रह्मणेनममएवमग्रेपि प्रजापतये० गृह्याभ्यः० कश्यपाय० अनुमतये० इतिदेवयज्ञः ततोमणिकसमीपेबलित्रयमुदक्संस्थं पर्जन्यायनमःस्वाहाइदंपर्जन्यायनमम अद्भ्योन० पृथिव्यै० अथद्वायशाखयोःप्राक्संस्थंबलिद्वयं धात्रे० विधात्रे०उदकेनचतुरस्रंकृत्वातत्रपूर्वेवायवे० दक्षिणेवायवे० पश्चिमेवायवे० उत्तरेवायवे० प्रागादिषुवायुबलेःप्रागुदग्वाप्राच्यैदिशे० दक्षिणस्यैदि० प्रतीच्यैदि० उदीच्यैदि० मध्येप्राक्संस्थं ब्रह्मणे० अंतरिक्षाय० सूर्याय० एषामुत्तरेविश्वेभ्योदेवेभ्यो० विश्वेभ्योभूतेभ्यो० अनयोरुत्तरेउषसे० भूतानांचपतये० इतिभूतयज्ञः प्राचीनावीतीब्रह्मादिबलित्रयस्यदक्षिणेपितृतीर्थेन पितृभ्यःस्वधानमइदंपितृभ्योनममेतिदद्यात् इतिपितृयज्ञः ॥

अब कात्यायनशाखियोंका वैश्वदेवप्रयोग कहताहुं.

कात्यायनशाखियोंमें जो साग्निक होवैं तिन्होंनें एक पाकसें श्राद्धके दिनमें श्राद्धके पहल वैश्वदेव करना. जो साग्निक नहीं होवैं तिन्होंनें श्राद्धके पश्चात् तिसी पाकसें वैश्वदेव करना. गृह्याग्निमांहसें प्रज्वलित काष्ठ ग्रहण करके तिसकों अपने पाकघरमें प्रदीप्त करके तिसपर सब पाक बनाय अपने पाकघरका अग्नि तिस गृह्याग्निविषे मिलाना. पीछे सिद्ध किये पाकमांहसें घृतयुक्त अन्न ग्रहण करके पहलेकी तरह "आत्मान्नसंस्कारार्थं वैश्वदेवाख्यं कर्म करिष्ये" ऐसा संकल्प करना. अथवा "देवभूतपितृमनुष्यान् वैश्वदेवान्नेन यक्ष्ये" ऐसा संकल्प करना. पीछे कलशके पानीसें गृह्याग्निके सब तर्फ प्रोक्षण करके हाथसें अग्निमें होम करना, तिसकी देवता—"ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे न मम" इस प्रकार आगेभी जानना. "प्रजापतये०, गृह्याभ्यः०, कश्यपाय०, अनुमतये०," इस प्रकार देवयज्ञ

कहा. पीछे कलशके समीप उत्तरके तर्फ जानेवाली ऐसी तीन आहुति एक पीछे एक इस प्रकार देनी. सो ऐसी—**पर्जन्याय नमः स्वाहा इदं पर्जन्याय न मम, अद्भ्यो न० पृथिव्यै०''** इसके अनंतर द्वारकी शाखाके पास पूर्वके तर्फ जानेवाली **''धात्रे०, विधात्रे०,''** ऐसी दो आहुति देनी. पीछे जलसें चौकूटा मंडल करके तिसके पूर्वप्रदेशमें **''वायवे०''** दक्षिणप्रदेशमें **''वायवे०''** पश्चिम प्रदेशमें **''वायवे०''** और उत्तरप्रदेशमें **''वायवे०''** इस प्रकार आहुति देके फिर पूर्व आदि दिशासें वायुबलिकी पूर्वके तर्फ अथवा उत्तरके तर्फ **''प्राच्यै दिशे०, दक्षिणस्यै दिशे०, प्रतीच्यैदिशे०, उदीच्यै दिशे०''** ये आहुति देनी. पीछे मध्यभागमें पूर्वसंस्थ **''ब्रह्मणे०, अंतरिक्षाय०, सूर्याय०''** ये आहुति देनी. पीछे इन्होंकी उत्तरकी तर्फ **''विश्वेभ्यो देवेभ्यः०, विश्वेभ्यो भूतेभ्यो०''** ऐसी आहुति देनी. इन आहुतियोंकी उत्तरकी तर्फ **''उषसे०, भूतानां च पतये०''** ये आहुति देनी. इस प्रकार भूतयज्ञ कहा. पीछे अपसव्य होके ब्रह्मा आदि तीन आहुतियोंके दक्षिणप्रदेशमें पितृतीर्थसें **''पितृभ्यः स्वधा नम इदं पितृभ्यो न मम''** ऐसा मंत्र कहके आहुति देनी. इस प्रकार पितृयज्ञ कहा.

पात्रंप्रक्षाल्यसव्येनब्रह्मादिबलितोवायव्यांयक्ष्मैतत्तेनिर्णेजनमितितज्जलंनिनयेत् पूर्ववन्मनुष्ययज्ञः निरग्निकस्तु लौकिकाग्निमाहृत्यपृष्ठोदिवीतिप्रतिष्ठाप्यतत्सवितु० ताꣳसवितु० विश्वानिदेव० इतित्रिभिःसावित्रैःप्रज्वाल्यतत्रनित्यौपासनहोमंकृत्वापाकंपचेद्वैश्वदेवंचकुर्यादितिगदाधरः अत्राप्यशक्तौबह्वृचाद्युक्तरीत्यापचनाग्निंप्रतिष्ठाप्यध्यात्वासंपूज्यतत्रपूर्वोक्तरीत्यावैश्वदेवस्तत्रअग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहेतिपंचाहुतीनामुत्तरंहोमःसर्वत्रनिरग्नेरितिविशेषः शेषंप्राग्वत् कात्यायनानांदिवैवैकोवैश्वदेवोनद्वितीयोरात्रौ सामगाथर्वणैरपिस्वगृह्योक्तरीत्यापंचमहायज्ञाःकार्याःस्वगृह्यानुपलंभेबह्वृचोक्तरीत्योपनयनादिसंस्काराःपंचमहायज्ञादयश्चकार्याः ।

चरूका पात्र धोके डाबी तर्फसें ब्रह्मा आदिकी आहुतिके वायव्यप्रदेशमें **''यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं०''** इस मंत्रसें वह जल देना. पीछे पहले कहेकी तरह मनुष्ययज्ञ करना. निरग्निक होवै तौ लौकिक अग्निकों प्राप्त करके **''पृष्ठोदिवि०''** इस मंत्रसें तिस अग्निकी स्थापना करके **''तत्सवि०, ताꣳसवितु०, विश्वानिदेव०''** इन तीन सावित्रमंत्रोंसें प्रदीप्त करके तिस अग्निमें नित्यका औपासनहोम करके तिस अग्निपर पाक करके वैश्वदेव करना, ऐसा गदाधरनें कहा है. इस विषयमेंभी सामर्थ्य नहीं होवै तौ ऋग्वेदी आदिकोंकों जो रीति कही है तिस रीतिसें पचनाग्निका स्थापन करके और ध्यान करके पूजा करनी. पीछे तिस अग्निमें पूर्व कही रीतिके अनुसार वैश्वदेव करना. तिसके मध्यमें पहली पांच आहुति दिये पीछे **''अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा०''** इस मंत्रसें आहुति देनी. इस प्रकार निरग्निकोंका सब जगह विशेष जानना. शेष कर्म पूर्वकी तरह करना. कात्यायनशाखियोंनें दिनमेंही एक वैश्वदेव करना, रात्रिमें दूसरा वैश्वदेव नहीं करना. सामवेदियोंनें और अथर्वणवेदियोंनेंभी अपने अपने गृह्यसूत्रमें कही रीतिसें पंचमहायज्ञ करने. तिन्होंकों अपना अपना गृह्यसूत्र नहीं मिलै तौ ऋग्वेदियोंकों कही रीतिसें तिन्होंनें उपनयन आदि संस्कार और पंचमहायज्ञ करने.

शाखांतरमतंसम्यगनालोच्यस्वधाष्ट्र्यत: शाखांतराह्निकंप्रोक्तंज्ञात्वाशोध्यंस्वशाखिभि: इति ॥

अन्य शाखाओंके मत यथार्थ जान लिये विना अपने धैर्यसें यथामति अन्य शाखाओंका आन्हिकप्रकरण मैंनें कहा है, ऐसा जानके स्वशाखियोंनें शोध लेना.

इक्षूनप:फलंमूलंतांबूलंपयऔषधं भक्षयित्वापिकर्तव्या:स्नानदानादिका:क्रिया: पंचमहायज्ञेष्वन्यतमस्यलोपेउपवास: धनिकस्यातुरस्यचप्रतियज्ञंकृच्छ्रार्धं अन्येत्वेकाहंलोपेमनस्वत्याहुतिद्व्यहंत्र्यहंलोपेतिसृभिस्तंतुमतीभिर्होमोवारुणीनांचतसृणांजपोद्वादशाहंलोपेतंतुमतीस्थालीपाकोवारुणीभिराज्यहोमश्चेत्याहु: ॥

"ईष, पानी, फल, मूल, नागरपान दूध और औषध इन्होंकों भक्षण करकेभी स्नान दान आदि क्रिया करनी." पंचमहायज्ञोंमांहसें एक कोईसा यज्ञ नहीं किया जावै तौ उपवास करना. धनवान और रोगीनें प्रत्येक यज्ञके लोपमें अर्धकृच्छ्र प्रायश्चित्त करना. दूसरे ग्रंथकार तौ एक दिनमें पंचमहायज्ञोंका लोप हो जानेमें "मनस्वति०" इस आहुतिका होम, दो दिन, तीन दिन पंचमहायज्ञका लोप हो जावै तौ तीन "तंतुमती०" इन आहुतियोंसें होम, और चार वारुणी ऋचाओंका जप करना; बारह दिनपर्यंत लोप हो जावै तौ तंतुमतीस्थालीपाक और वारुणी ऋचाओंसें घृतका होम करना ऐसा कहते हैं.

अथसर्वसाधारणोभोजनादिविधि: हैमेराजतेपात्रेआम्रादिपत्रेवाभोजनंशस्तं एकएवतु भुंजीतकांस्यपात्रेनान्योच्छिष्टे तांबूलाभ्यंजनंचैवकांस्यपात्रेचभोजनं यतिश्चब्रह्मचारीचविधवाचविवर्जयेत् पलाशपर्णेषुयत्यादे:प्रशस्तं गृहिणस्तुचांद्रायणं इदंवल्लीपलाशविषयमितिस्मृत्यर्थसारे कदलीकुटजमधुजंबूपनसाम्रचंपकोदुंबरपत्राणिशस्तानि अर्काश्वत्थवटादिपत्राणि निषिद्धानि ॥

अब सब शाखियोंकों साधारणपनेसें भोजन आदिका विधि कहताहुं.

सोनाके पात्रमें, चांदीके पात्रमें अथवा आंब आदिके वृक्षके पत्तोंपर भोजन करना श्रेष्ठ है. कांसीके पात्रमें भोजन करना होवै तौ कांसीके पात्रमें एकनेंही भोजन करना. जिस कांसीके पात्रमें एकनें भोजन किया होवै तिसमें वह पात्र उच्छिष्ट होनेसें अन्योंनें भोजन नहीं करना. "नागरपान आदिका खाना, उवटना आदिका मलना और कांसीके पात्रमें भोजन करना इन्होंकों विशेष करके संन्यासी, ब्रह्मचारी और विधवा स्त्री इन्होंनें वर्जित करना." ढाकके पत्तोंपर संन्यासी आदिकोंनें भोजन करना श्रेष्ठ है. गृहस्थीनें ढाकके पत्तोंपर भोजन नहीं करना और जो करै तौ तिसनें चांद्रायण प्रायश्चित्त करना. यह चांद्रायण, वेलरूपी जो ढाकका वृक्ष है तिसविषयक जानना ऐसा स्मृत्यर्थसारमें कहा है. केला, कूडा, महुआ, जामन, फणस, आंब, चंपा और गूलर इन्होंके पत्तोंमें भोजन करना श्रेष्ठ होता है. आक, पीपल और वड इन आदि वृक्षोंके पत्तोंमें भोजन करना निषिद्ध है.

चतुरस्रमंडलेप्रक्षालितपात्रंनिधायपंचयज्ञावशिष्टंघृतादियुतंपरिविष्टमन्नमस्माकं नित्यमस्त्वेतदितिवदन्नत्वाग्रंथिरहितपवित्रयुतदक्षिणपाणिः पादाभ्यांपादेनवाभुवंस्पृशन्व्याहृतिभिर्गायत्र्याचाभिमंत्र्यसत्यंत्वर्तेनपरिषिंचामिइतिदिवा ऋतंत्वासत्येनपरिषिंचामीतिरात्रौपरिषेचनंकृत्वा अंतश्चरतिभूतेषुगुहायांविश्वतोमुखः त्वंयज्ञस्त्वंवषट्कारस्त्वंविष्णुः पुरुषःपरः पात्राद्दक्षिणेभूमौ भूपतयेनमःभुवनपतयेनमःभूतानांपतये० इतित्रीन्बलीन्दद्यात् यद्वाचित्राय चित्रगुप्ताययमायमयधर्मायसर्वभूतेभ्यइतिवा व्यस्तसमस्तव्याहृतिभिर्वाचत्वारः धर्मराजाय चित्रगुप्तायेतिद्वौवा भूपत्यादित्रययुतावेतावितिपंचवादेयाः हस्तपादमुखार्द्रः आपोशनार्थं जलमादाय अन्नंब्रह्मरसोविष्णु० अहंवैश्वानरोभूत्वेत्यर्थंध्यात्वावामकरेणपात्रंधृत्वाअमृतोपस्तरणमसीत्यपःप्राश्यमौनी ॐप्राणायस्वाहा ॐअपानायस्वाहा ॐव्यानाय० ॐउदानाय० ॐसमानाय० इतिसघृताःसक्षीरावापंचाहुतीःसर्वांगुलिभिःसर्वग्रासंग्रसन्मुखेजुहुयात् ब्रह्मणेस्वाहेतिषष्ठींक्वचित् प्राणाहुतिपर्यंतंपात्रालंभोमौनंचनियतमग्रेऐच्छिकंद्वयं भोजनंप्राङ्मुखंप्रत्यङ्मुखंवाशस्तं दक्षिणामुखंयशःफलंकाम्यं उदङ्मुखमधमं विदिङ्मुखंनिषिद्धं कृत्स्नंग्रासंग्रसन्द्वात्रिंशदादिनियतग्रासमनियतग्रासंवाभुक्त्वा अमृतापिधानमसीतिगंडूषार्धं पीत्वार्धंभूमौनिनीय पवित्रंत्यक्त्वा मुखहस्तोच्छिष्टंसम्यक्प्रक्षालयेत् तर्जन्यामुखंनशोधयेत् किंचित्गंडूषोत्तरंहस्तप्रक्षालनंषोडशगंडूषांतेद्विराचामेत् भोजनगृहेचनाचामेत् अनाचांतोमूत्रपुरीषेनकुर्यात् उत्तरापोशनमकृत्वोत्थानेस्नात्वाशुद्धिः हस्तौसंमृज्यप्रस्राव्यांगुष्ठेननेत्रयोर्निषिंच्येष्टदेवतांस्मरेत् नांजलिनापिबेत् पालाशंदग्धमयोबद्धंचपीठंवर्जयेत् नशिशुभिःसह भुंजीत भार्ययासहविवाहवर्ज्यंनभुंजीत बालवृद्धेभ्योन्नमदत्वानभुंजीत नप्रौढपादोनासनारूढपादोनप्रसारितपादोनविदिक्तुंडोनदुष्टैकपंक्तौ नशून्याग्निपाकगृहेनदेवालयेभुंजीत नसंध्ययोर्नमहानिशायांनयज्ञोपवीतहीनोनवामहस्तेननशूद्रशेषंभुंजीत आदौमधुरंमध्येलवणाम्लमंतेतिक्तादिपूर्वंद्रवंमध्येकठिनमंतेद्रवं अष्टौग्रासायतेःषोडशद्वात्रिंशद्वागृहिणोवनस्थस्यषोडश यथेष्टंब्रह्मचारिणः सर्वंसशेषमश्नी यान्निःशेषंघृतपायसं क्षीरंदधिमधुभुंजीत दिवारात्रौचेति द्विवारमेवनांतराभोजनम् ॥

चौकुंटा मंडल बनाय तिस मंडलपर धोये हुये पात्रकों स्थापित करके पंचयज्ञसें शेष रहा और घृत आदिसें युत हुआ और पात्रमें परोसा हुआ ऐसा अन्न हमकों नित्यप्रति प्राप्त हो इस प्रकार कहके नमस्कार करके दाहिने हाथमें ग्रंथिसें रहित हुये पवित्रासें युत हुए मनुष्यनें दोनों पैरोंसें अथवा एक पैरसें पृथिवीकों स्पर्श करके व्याहृति और गायत्रीसें पात्रस्थ अन्नकों अभिमंत्रित करके “ सत्यंत्वर्तेनपरिषिंचामि,” इस मंत्रसें दिनमें और “ ऋतंत्वासत्येनपरिषिंचामि,” इस मंत्रसें रात्रिमें पात्रके सब तर्फ जलका सिंचन करना. पीछे “ अंतश्चरतिभूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः ॥ त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वं विष्णुः पुरुषः परः ” इस मंत्रसें प्रार्थना करके पात्रके दाहिने तर्फ पृथिवीपर “ भूपतये नमः, भुवनपतये नमः, भूतानांपतये नमः ” ऐसे तीन मंत्रोंसें तीन आहुति देनी. अथवा “ चित्राय०, चित्रगुप्ताय०, यमाय०, यमधर्माय०, सर्वभूतेभ्यः० ” इन मंत्रोंसें पांच आहुति देनी. अथवा व्यस्त समस्तव्याहृतिमंत्रोंसें चार आहुति देनी. अथवा “धर्मराजाय०, चित्र-

गुप्ताय० " ऐसी दो देनी. अथवा भूपति आदि तीन आहुति और धर्मराज, चित्रगुप्त ये दो आहुति मिलकें पांच आहुति देनी. हाथ, पैर और मुख ये जिसके गीले हैं ऐसा होके आपोशनके अर्थ जल हाथमें ग्रहण करके "**अन्नं ब्रह्म रसो विष्णुर्भोक्ता०, अहं वैश्वानरो भूत्वा०**" इन मंत्रोंकों कहके और इन्होंका अर्थ[1] ध्यानमें लेके और वाम हाथसें पात्र धारण करके "**अमृतोपस्तरणमसि**" इस मंत्रसें हाथमें ग्रहण किया जल प्राशन करना. पीछे मौनी होके "**ॐप्राणायस्वा०, ॐअपानायस्वा०, ॐव्यानायस्वा०, ॐउदानायस्वा०, ॐसमानायस्वा०**" इन मंत्रोंकों कहके प्रत्येक मंत्रसें एक एक ऐसी घृतसें युक्त अथवा दूधसें युक्त पांच आहुति सब अंगुलियोंसें, सब ग्रासकों भक्षण करते हुए मनुष्यनें मुखमें हवन करना. "**ब्रह्मणे स्वाहा०**" यह छठी आहुति कितनेक ग्रंथमें कही है. पात्र हाथसें ग्रहण करना और मौन ये प्राणाहुतिपर्यंत नित्य हैं, प्राणाहुतिके अनंतर ये दो ऐच्छिक हैं. पूर्वके तर्फ अथवा पश्चिमके तर्फ मुख करके भोजन करना श्रेष्ठ है. दक्षिणके तर्फ मुख करके भोजन करनां काम्य है. तिसका फल यश है. उत्तरके तर्फ मुख करके भोजन करना निंद्य है. विदिशाओंके तर्फ मुख करके भोजन करना निषिद्ध है. अन्नका समग्र ग्रास भोजन करता हुआ बत्तीस आदि ग्रास परिमित अथवा यथेच्छ ग्रास भोजन करके हाथमें जल लेके "**अमृतापिधानमसि**" इस मंत्रसें आधे जलका पान करके शेष रहे जलकों पृथिवीपर त्यागना. पीछे हाथोंमांहसें पवित्रोंकों त्यागके मुख और हाथोंकों अच्छी तरह धोना. तर्जनी अंगुलीसें मुख प्रक्षालन नहीं करना. पहले कछुक कुरले करके पीछे हाथ धोने. सोलह कुरलोंकों किये पीछे दोवार आचमन करना. भोजन करनेके घरमें आचमन नहीं करना. आचमन कियेविना मूत्र और विष्ठाकों नहीं त्यागना. उत्तरापोशन कियेविना उठनेमें स्नान किये विना शुद्धि नहीं होती है. हाथमें जल लेके और वह नीचे गिरायके तिस जल करके अंगूठासें नेत्रोंपर सिंचन करके इष्टदेवताका स्मरण करना. अंजलिकरके जल नहीं पीना. ढाककी लकडीसें बना हुआ, दग्ध हुआ, लोहासें जटित हुआ ऐसे पीठ अर्थात् बैठनेके आसनकों वर्जित करना. शिशु अर्थात छोटे बालकोंकों साथ लेके भोजन नहीं करना. अपनी स्त्रीके साथ विवाह समयके भोजनविना फिर भोजन नहीं करना. बालक और वृद्धोंकों अन्न दियेविना आप भोजन नहीं करना. जांघके उपर पैरकों स्थापित करके, पीठपर पैरकों स्थापित करके, अथवा पैरोंकों पसारके और विदिशामें मुख करके भोजन नहीं करना. दुष्टके साथ एकपंक्तिमें बैठके भोजन नहीं करना. अग्नि और पाकनिष्पत्तिसें हीन ऐसे घरमें और देवताके मंदिरमें भोजन नहीं करना. प्रातःसंधिमें, सायंसंधिमें, और अर्धरात्रमें भोजन नहीं करना. यज्ञोपवीतसें रहित और वाम हाथकरके भोजन नहीं करना. शूद्रनें भोजन करके शेष रहे अन्नका भोजन नहीं करना. भोजन करनेका सो आदिमें मधुर, मध्यमें सलोना तथा खट्टा और अंतमें कडुआ आदि पदार्थ, इस रीतिसें भोजन करना.

---

[1] सो अर्थ ऐसा–" अन्न यह ब्रह्मरस है, मैं भोजन करनेवाला यह साक्षात् विष्णु, इस अन्नसें द्योतमान्, महेश्वर, षट्गुणैश्वर्यसंपन्न, सबोंका नियामक ऐसा परमात्मा सदाशिव संतुष्ट हो. मैं जठराग्नि होके प्राणियोंके देहका आश्रय करता हुआ प्राणवायु और अपानवायु, इन्होंसें प्रदीप्त होके चार प्रकारके (लेह्य, चोष्य, खाद्य और पेय) अन्नोंका पाक करताहुं. "

पहले पतला पदार्थ, मध्यमें करडा और अंतमें पतला पदार्थ इस प्रकार भोजन करना. संन्यासीनें आठ ग्रास; गृहस्थाश्रमीनें सोलह अथवा बत्तीस ग्रास; वानप्रस्थनें सोलह ग्रास; और ब्रह्मचारीनें इच्छाके अनुसार ग्रास भोजन करने. सब पदार्थोंकों शेष रखके भोजन करना. घृत और खीरका भोजन करनेमें शेष नहीं रखना. भोजनके अंतमें दूध, दही और शहद ये पदार्थ भोजन करने. दिन और रात्रि मिलके दो वारही भोजन करना. बीचमें तीसरीवार भोजन नहीं करना.

अर्कपर्वद्वयेरात्रौचतुर्दश्यष्टमीदिवा एकादश्यामहोरात्रंभुक्त्वाचांद्रायणंचरेत् यस्तुपाणितलेभुंक्तेयश्चफूत्कारसंयुतं प्रसृतांगुलिभिर्यश्चतस्यगोमांसवच्चतत् नाजीर्णेभोजनंकुर्यात्कुर्यान्नातिबुभुक्षितः नार्द्रवासानार्द्रशिरानपादारोपितेकरे ग्रासशेषंचनाश्नीयात्पीतशेषंपिबेन्नच शाकमूलफलादीनिदंतच्छेदैर्नभक्षयेत् नोच्छिष्टोघृतमादद्यान्नपदाभाजनंस्पृशेत् पिबतोयत्पतेत्तोयंभाजनेमुखनिःसृतं अभोज्यंतत् पीतावशिष्टतोयपानेचांद्रायणं हस्तनखस्पृष्टजलपानेवामहस्तोद्धृतजलपानेचसुरापानसमं एकपंक्त्युपविष्टानांविप्राणांभुंजानानामेकस्मिन्नप्युत्थितेआचांतेवान्यैर्नभोज्यं अत्रोत्थितस्यभोक्तुश्चदोषः गुरोर्नदोषः लवणंव्यंजनंचैवघृतंतैलंतथैवच लेह्यंपेयंचविविधंहस्तदत्तंनभक्षयेत् ताम्रेगव्यंकांस्येनारीकेलेक्षुरसौसगुडंदधिसगुडमार्द्रकंचमद्यसमं सैंधवसामुद्रभिन्नप्रत्यक्षलवणभक्षणंमृद्भक्षणंचगोमांससमं उदक्यामपिचांडालंश्वानंकुक्कुटमेवच भुंजानोयदिपश्येत्तुतदन्नंतुपरित्यजेत् भुंजानस्यगुदस्रावेउपवासःपंचगव्यंच आपोशनोत्तरंप्राणाहुतेःप्राक्तत्स्रावेस्नानंषट्प्राणायामाः भुंजानस्याशौचप्राप्तौग्रासंत्यक्त्वास्नानंग्रासाशनेउपवासः सर्वाशनेत्रिरात्रं विष्ठादिस्पर्शेस्नानंप्राणायामत्रयंच चांडालपतितोदक्यावाक्यंश्रुत्वाभोजनेएकोपवासःस्नात्वाशतगायत्रीजपोवा कलहघरटोलूखलमुसलानांयावच्छब्दस्तावदभोजनं अप्येकपंक्त्यानाश्नीयाद्ब्राह्मणैःस्वजनैरपि कोपिजानातिकिंकस्यप्रच्छन्नंपातकंभवेत् ततोग्निनाभस्मनाचस्तंभेनसलिलेनच द्वारेणैवचमार्गेणपंक्तिभेदंचरेद्बुधः केशपिपीलिकामक्षिकाभिःसहपक्वमन्नंत्यजेदेव पाकोत्तरंकेशपिपीलिकादिकीटकमक्षिकासंसृष्टेगवाघ्रातेवान्ने सलिलंभस्ममृद्वापिप्रक्षेप्तव्यंविशुद्धये इतिविज्ञानेश्वरः शूद्रान्नंशूद्रदत्तब्राह्मणान्नंरात्रिपर्युषितंरजस्वलाचांडालपतितादिदृष्टंकाकादिपक्ष्युच्छिष्टमभोज्यं स्नेहपक्वमंडकादिचपर्युषितंग्राह्यं अवत्सायागोरनिर्दशानांगोमहिष्यजानांगर्भिण्याएककालांतरितदोहायायमलसूस्रवत्स्तन्योरजवर्जंद्विस्तनीनामुष्ट्रीवडवयोरारण्यकमृगादेरवेश्चक्षीराणिवर्ज्यानि शिग्रुहिंगुवर्ज्यं रक्तंवृक्षनिर्यासंपुरीषस्थानोत्पन्नतंडुलीयकादिकंदेवाद्युद्देशंविनाकृतं संयावपायसापूपशष्कुलीकृसरंवर्जयेत् शणकुसुंभालाबुवार्ताककोविदारवटादिफलानिमातुलिंगंचवर्ज्यं पलांडुलशुनगृंजनभक्षणेचांद्रायणं भुंजानेषुपरस्परस्पर्शेअन्नत्यागः पात्रस्थान्नभक्षणेस्नात्वाष्टोत्तरशतगायत्रीजपः अधिकभोजनेसहस्रं भुंजानस्याशुचिनाविप्रेणस्पर्शेन्नत्यागः भुक्तोच्छिष्टस्पर्शेसवर्णेस्नानंजपोवा असवर्णेतूपवासः भक्तोच्छिष्टस्यश्वशूद्रादिस्पर्शेउपोष्यपंचगव्यं रजकादिस्पर्शेत्रिरात्रं परिवेषणंकुर्वन्नुच्छिष्टस्पर्शेपयोदधिघृतादिलघुद्रव्यमत्यजन्नाचांतःशुचिः भक्ष्याद्यन्नस्यत्यागएव वस्त्रेविकल्पः परिवेषणादिकालेरजोदृष्टौतत्स्पृष्टान्नत्यागः ॥

" रविवार, पौर्णमासी और अमावस इन्होंमें रात्रिविषे भोजन नहीं करना; चतुर्दशी और अष्टमीकों दिनमें भोजन नहीं करना; एकादशीकों दिनरात्रिमें भोजन नहीं करना; क्योंकी, तिस दिनमें भोजन किया होवै तौ चांद्रायणव्रत करना चाहिये ऐसा कहा है. " जो मनुष्य हाथपर अन्न धरके भोजन करता है, जो मनुष्य गरम अन्नपर फूक मारके भोजन करता है, जो मनुष्य पसारी हुई अंगुलियोंकरके भोजन करता है तिस मनुष्यका वह भोजन गौमांसके भोजन बराबर है. अजीर्णमें, और अत्यंत भोजन करनेकी इच्छा होवै तब तत्कालमें गीले वस्त्रकों धारण करके, गीले शिरवाला होके, पैरपर हाथ स्थापित करके भोजन नहीं करना. ग्रासका शेष नहीं खाना. जल पीके शेष रहे जलकों फिर नहीं पीना. शाक, मूल और फल आदि दंतोंसें छेदित करके नहीं खाना. उच्छिष्ट हुए मनुष्यनें घृत ग्रहण नहीं करना. पैरसें पात्रकों स्पर्श नहीं करना. जलकों पान करते हुये जो मुखसें निकसा हुआ जल पात्रमें पडै तौ तिस पात्रस्थ अन्नका भोजन नहीं करना. पान किये पीछे शेष रहे जलकों पीनेमें चांद्रायण प्रायश्चित्त करना. हाथोंके नखोंसें स्पर्शित हुआ जल पीनेमें और वाम हाथसें लिये हुये जलकों पीनेमें वह जल मदिराके समान हो जाता है. एक पंक्तिमें बैठके भोजन करते हुये ब्राह्मणोंमांहसें एक ब्राह्मण उठैगा अथवा उत्तरापोशन लेवैगा तौभी अन्योंनें शेष रहे अन्नका भोजन करना उचित नहीं है. यहां उठनेवालेकों और भोजन करनेवालेकों दोष है. गुरुकों दोष नहीं है. नमक, व्यंजन, घृत, तेल, अनेक प्रकारके लेह्य और पेय पदार्थ ये हाथसें दिये हुये नहीं भक्षण करने. तांबाके पात्रमें गौका दूध आदि, कांसीके पात्रमें नारियलका जल और ईखका रस, गुडसें मिली हुई दही, गुडसें मिला अदरक ये सब मदिराके समान हैं. सेंधानमक और समुद्रसें उत्पन्न हुआ नमक इन्होंके विना जो प्रत्यक्ष नमक है तिसकों भक्षण करना, और मृत्तिका भक्षण करनी, ये गौके मांसके भक्षणके तुल्य होते हैं. भोजन करनेके समयमें रजस्वला, चांडाल, कुत्ता और मुरगा इन्होंका दर्शन होवै तौ वह अन्न त्याग देना. भोजन करनेवालेकी गुदाका स्राव होवै तौ तिस मनुष्यनें एक उपवास करके पंचगव्य ग्रहण करना. आपोशन किये पीछे प्राणाहुतिके पहले गुदाका स्राव अर्थात् गुदा झिरै तौ स्नान करके छह प्राणायाम करने. भोजन करतेसमयमें तत्कालही आशौच प्राप्त होवै तौ मुखस्थ ग्रासका त्याग करके स्नान करना. मुखस्थ ग्रासकों भक्षण कर लेवै तौ स्नान करके उपवास करना. संपूर्ण अन्नकों भक्षण कर लेवै तौ तीन रात्रि उपवास करना. भोजन करते हुये विष्ठा आदिकोंका स्पर्श होवै तौ स्नान करके तीन प्राणायाम करने. चांडाल, पतित और रजस्वला इन्होंका शब्द सुनते हुये भोजन करनेमें एक उपवास करना, अथवा स्नान करके १०० गायत्रीजप करना. कलह, अरहट, ऊखल, मूसळ इन्होंका शब्द जहांपर्यंत सुना जाता है तितने कालपर्यंत भोजन नहीं करना. " ब्राह्मणोंनें अपने मित्रोंके साथभी एक पंक्तिमें बैठके भोजन नहीं करना; क्योंकी, कौन जानै की, किसका कैसा छिपा हुआ पातक होवै, इस कारणसें ज्ञानी पुरुषनें अग्नि, भस्म, स्तंभ, पानी, द्वार अथवा रास्ता इन्होंमांहसें एक कोईसेकरके पंक्तिभेद करना उचित है. " बाल, कीडी और माखी इन्होंके साथ पका हुआ अन्न त्यागना उचित है. पाक बननेके उपरंत वाल, कीडी, कीडा, माखी इन्होंसें मिला हुआ होवै अथवा गौनें सूंघा हुआ होवै तौ तिस अन्नकी शुद्धिके लिये

तिसपर जल, भस्म अथवा माटी डालनी " ऐसा **विज्ञानेश्वर** कहते हैं. शूद्रका अन्न, शूद्रका दिया ब्राह्मणका अन्न, रात्रिका वासी अन्न, रजस्वला, चांडाल, पतित आदिकोंनें देखा हुआ अन्न, काक आदि पक्षियोंसें उच्छिष्ट हुआ अन्न ये भोजनके योग्य नहीं हैं. घृत और तेल आदिमें पके हुये पूरी आदि पदार्थ रात्रिके वासीभी ग्रहण करने. जिसकों बछडा नहीं होवै ऐसी गौ, दश दिनके भीतर व्याई हुई गौ, भैंस, बकरी, और गर्भिणी; एकांतरमें दूध देनेवाली, दो वच्छोंकों जननेवाली, झिरते हुये थनोंवाली; मेंढी, बकरी इन्होंसें अन्य दो स्तनोंवाली; ऊंटनी; घोडी; वनमें रहनेवाली मृगी आदि; और भेड इन्होंके दूध वर्जित करने उचित है. सहोंजना और हींग वर्जित करके लाल ऐसा वृक्षका गूंद; विष्ठाके स्थानमें उत्पन्न हुये चौलाई आदि; देवताके उद्देशके विना किया मोहनभोग, खीर, मालपुआ, पूरी, कंसार इन्होंकों वर्जित करना. शण, करड, तूंबी, बैंगन अथवा कटेहलीका फल विशेष, कोरल, वड इन्होंके फल और बिजोराका फल भक्षण नहीं करना. प्याज, ल्हसन और गाजर इन्होंकों भक्षण करनेमें चांद्रायण करना. भोजन करनेके समयमें आपसमें स्पर्श होवै तौ तिस अन्नका त्याग करना. पात्रमें परोसा हुआ अन्न भक्षण किया जावै तौ स्नान करके १०८ गायत्रीजप करना. पात्रमें परोसे हुये अन्नकों भक्षण करके पीछे और अन्नकों भक्षण करै तौ स्नान करके १००० गायत्रीजप करना. भोजन करनेवालेकों अशुद्ध ब्राह्मण छूह लेवै तौ वह अन्न त्याग देना. उच्छिष्ट अवस्थासें स्पर्श होवै और स्पर्श करनेवाला अपने वर्णका होवै तब स्नान अथवा जप करना. स्पर्श करनेवाला अपने वर्णका नहीं होवै तौ उपवास करना. भोजनके उपरंत उच्छिष्ट अवस्थामें मनुष्यकों कुत्ता और शूद्र आदिकोंका स्पर्श होवै तौ उपवास करके पंचगव्यका पान करना. धोबी आदिका स्पर्श होवै तौ तीन रात्रि उपवास करना. परोसते हुए मनुष्यकों उच्छिष्ट मनुष्यका स्पर्श होवै तौ दूध, दही, घृत इत्यादिक हलके पदार्थोंकों नहीं त्यागना. हाथ और पैरोंकों धोके आचमन करनेसें शुद्ध होता है. भक्ष्य, भोज्य पदार्थकों त्यागनाही उचित है. वस्त्रका त्याग करना अथवा नहीं करना. परोसनेके समयमें स्त्री रजस्वला हो जावै तौ तिस स्त्रीसें छूहे हुए अन्नकों त्यागना.

भोजनांतेउच्छिष्टशेषान्नं रौरवेपूयनिलयेपद्मार्बुदनिवासिनां प्राणिनांसर्वभूतानामक्षय्यमुपतिष्ठत्वितिदद्यात् आचांतोप्यशुचिस्तावद्यावत्पात्रमनुद्धृतं उद्धृतेप्यशुचिस्तावद्यावन्नोन्मृज्यतेमही पर्णस्याग्रंचमूलंचाशिरांचैवविशेषतःचूर्णपर्णंवर्जयित्वातांबूलंखादयेद्बुधः अनिधायमुखेपर्णंपूगंवैभक्षयेन्नच इतिपंचमभागकृत्यं ॥

भोनन किये पीछे उच्छिष्ट जो शेष अन्न तिसकों लेके " **रौरवे पूयनिलये पद्मार्बुदनिवासिनाम् ॥ प्राणिनां सर्वभूतानामक्षय्यमुपतिष्ठतु,** " यह मंत्र कहके देना. " जबपर्यंत भोजनपात्र नहीं उठाया जावै तबपर्यंत '(हाथ, पैर और मुख' धोके आचमन किया होवै तौभी) वह अशुद्ध होता है. " पात्र उठाये पीछेभी जबपर्यंत पृथिवी साफ नहीं किई जावै तबपर्यंत मनुष्य अशुद्ध है. " " नागरपानके अग्रभागकों, जडकों और शिराकों विशेषकरके निकासके चूनाके पानकों वर्ज करके तांबूल भक्षण करना. मुखमें पान रखे विना सुपारी

भक्षण नहीं करनी; अर्थात् पहले पान और पीछेसें सुपारी भक्षण करनी. " इस प्रकार पंचमभागका कृत्य समाप्त हुआ.

इतिहासपुराणाद्यैःषष्ठसप्तमकौनयेत् अष्टमेलोकयात्रातुबहिःसंध्याततःपुनः सायंसंध्याप्रातःसंध्यावत् अग्निश्चमामन्युश्च० यदह्नापापमकार्षं० अहस्तदवलुंपतु० सत्येज्योतिषिजुहोमिस्वाहेतिमंत्राचमनेविशेषः पश्चिमाभिमुखस्तिष्ठन् अर्घ्यंदद्यात् ऊर्ध्वजानुरुपविश्यप्रत्यङ्मुखएवगायत्रींजपेत् सायंहोमस्तूक्तएव सायंवैश्वदेवेपुनःपाकः अतिथिंसंपूज्यघटित्रयानंतरंसार्धयामाव्प्राक्भुक्त्वाशयीत ॥

" दिनके छट्ठे और सातमे भागोंकों भारत आदि इतिहास, पुराण इन आदिकोंके वाचनपूर्वक अर्थविचारमें व्यतीत करने, और दिनके आठमे भागमें अपने इष्ट मित्र आदिकों मिलना, संभाषण करना आदि संसारसंबंधी कर्म करके योग्यकालमें ग्रामकी वाहिर नदी आदिके उपर सायंसंध्या करनी. " सायंकालकी संध्या प्रातःकालकी संध्याकी तरह करनी. प्रातःसंध्यासें सायंसंध्याका कछुक विशेष प्रकार है, सो ऐसा—**" अग्निश्च मामन्युश्च०, यदह्ना पापमकार्षं०, अहस्तदवलुंपतु०, सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा "** इस प्रकार मंत्राचमनमें विशेष जानना. पश्चिम दिशाके तर्फ मुखवाला होके अर्घ्य देना. ऊर्ध्व जानु होवैंगे ऐसा पश्चिमके तर्फ मुखवाला स्थित होके गायत्रीका जप करना. सायंकालका होम पहले कह दिया है तिसी प्रकार करना. सायंकालमें वैश्वदेव करना होवै तौ फिर पाक बनाना. अतिथिकी पूजा करके तीन घडी रात्रि व्यतीत हुए पीछे और डेढ प्रहर रात्रिके पहले भोजन करके शयन करना.

भोजनकालेदीपनाशेपात्रमालभ्यसूर्यंस्मृत्वापुनर्दीपंदृष्ट्वापात्रस्थंभुंजीतनान्यत् श्राद्धतत्पूर्वदिनेपातधृतिसंक्रांत्यादिषुननिशिभोजनं चतुर्थप्रथमौयामौविद्याभ्यासैर्नयेन्निशि प्रहरद्वयशायीतुब्रह्मभूयायकल्पते प्राक्प्रत्यक्दक्षिणस्यांशिरःकृत्वाशयीतनकदाचिदुदक्शिराःरात्रिसूक्तंजप्त्वासुखशायिनःस्मृत्वाविष्णुंनत्वास्वप्यात् अगस्तिर्माधवश्चैवमुचुकुंदोमहामुनिः कपिलोमुनिरास्तीकः पंचैतेसुखशायिनः ॥

भोजन करनेके समयमें दीपकका नाश होवै तौ भोजनपात्र हाथसें ग्रहण करके सूर्यका स्मरण करके फिर दीपककों प्रकाशित किये पीछे सो देखके पात्रमें स्थित हुये अन्नकों भोजन करना, दूसरा अन्न नहीं भक्षण करना. श्राद्धका पूर्व दिन, श्राद्धका दिन, व्यतीपात, वैधृति, संक्रांति इन आदि दिनोंमें रात्रिविषे भोजन नहीं करना. " रात्रिके प्रथम और चौथे प्रहरकों विद्याके अभ्यासमें व्यतीत करने, अर्थात् इन प्रहरोंमें अभ्यास करना. बीचके दो प्रहरोंमें शयन करनेवाला मनुष्य ब्रह्मत्वके लिये योग्य होता है. " पूर्व, पश्चिम और दक्षिण इन दिशाओंमें शिर करके शयन करना, कभीभी उत्तरकों शिर करके शयन नहीं करना. रात्रिसूक्तकी **"रात्रीव्यख्यदायती०"** इन आदि ८ ऋचाओंका जप करके, सुखशायियोंका स्मरण करके, और विष्णुकों नमस्कार करके शयन करना. **सुखशायी**—अगस्ति, माधव,

मुचुकुंद, महामुनि, कपिल और आस्तिक ये पांच सुखशायी हैं, इस लिये निद्रासमयमें इन्होंका स्मरण कियेसें निद्रा सुखकारक होती है.

नसंध्यायांनधान्येनगोगृहेनदेवविप्रगुरूणामुपरिनोच्छिष्टोनदिवाननग्नःशयीत निद्राकालेतांबूलंमुखात्स्त्रियंशयनाद्भालात्तिलकंशिरसःपुष्पंत्यजेत् गर्भाधानप्रकरणोक्तकालेसार्धयामोत्तरंदीपेसत्यसतिवानिवीतंयज्ञोपवीतंकंठादौकृत्वापत्नींगच्छेत् अष्टम्यांचचतुर्दश्यांदिवापर्वणिमैथुनं कृत्वासचैलंस्नात्वातुवारुणीभिश्चमार्जयेत् पुनर्मामैत्वितिजपश्चोक्तएव ॥

संध्यासमयमें; अन्नमें; गोशालामें; देव, ब्राह्मण और गुरु इन्होंके उपरकी जगहमें; उच्छिष्ट हुआ; दिनमें और नग्न होके शयन नहीं करना. नींदके समय मुखसें तांबूल, शय्यासें स्त्री, मस्तकके गंधका तिलक, और रतिसमयमें शिरपर धारण किये पुष्प इन्होंकों त्याग देना. गर्भाधानप्रकरणविषे कहे हुये कालमें डेढ प्रहरके उपरंत दीपकके होनेमें अथवा नहीं होनेमें यज्ञोपवीतकों कंठमें लंबा करके भार्यासें भोग करना. “अष्टमी, चतुर्दशी, दिन, पर्व इन्होंमें भोगकर्तानें वस्त्रोंसहित स्नान करके वारुणीऋचाओंसें मार्जन करना, और “पुनर्मामैत्वि०” इस मंत्रका जप करना, और वह पहले कहाही है.

एवंस्नानभोजनादिकेबहुविधविधिनिषेधाकुलेआह्निककर्मणिन्यूनाधिकदोषविधिनिषेधातिक्रमदोषपरिहारार्थं प्रायश्चित्ताज्ञानेतत्सांगतार्थंप्रायश्चित्तसांगतार्थंच श्रीविष्णुनामोच्चारणादिकंकार्यं प्रायश्चित्तान्यशेषाणितपःकर्मात्मकानिच यानितेषामशेषाणांकृष्णानुस्मरणंपरं यस्यस्मृत्याचनामोक्त्यातपोयज्ञक्रियादिषु न्यूनंसंपूर्णतांयातिसद्योवंदेतमच्युतं नाम्नोस्तियावतीशक्तिःपापनिर्हरणेहरेः तावत्कर्तुंनशक्नोतिपातकंपातकीजनः लौकिकंवैदिकंकर्मेश्वरेर्पणीयं यत्करोषियदश्नासियज्जुहोषिददासियत् यत्तपस्यसिकौंतेयतत्कुरुष्वमदर्पणमित्युक्तेः युगपत्सर्वकर्मार्पणेमंत्रः कामतोकामतोवापियत्करोमिशुभाशुभं तत्सर्वंत्वयिसंन्यस्तंत्वद्युक्तःकरोम्यहं ॥

इस प्रकार अनेक प्रकारके विधिनिषेधोंसें युक्त ऐसे स्नान, भोजन आदि आन्हिककर्ममें न्यूनाधिक दोष, विधिनिषेधका उल्लंघनरूपी दोष, इन सब दोषोंकों दूर करनेके अर्थ, प्रायश्चित्तका ज्ञान नहीं होवै तौ कर्मकी सांगताके अर्थ और प्रायश्चित्तकी सांगताके अर्थ श्रीविष्णुके नामका उच्चारण आदि करना. “तपोरूप और कर्मरूप ऐसे जो सब प्रकारके प्रायश्चित्त हैं तिन सबोंमें उत्तम प्रायश्चित्त कृष्णका स्मरण है. जिसके स्मरणमात्रसें और नामोच्चारणमात्रसें तप, यज्ञयागादि कर्म, इन्होंमें जो कछु न्यून होता है सो संपूर्णताकों प्राप्त होता है तिस विष्णुकों अब मैं प्रणाम करता हुं. विष्णुके नामकी शक्ति जितनी पापोंकों हर सक्ती है तितने पाप करनेकों पातकी मनुष्य समर्थ नहीं है.” लौकिक, और वैदिक कर्म ईश्वरकों समर्पण करना उचित है; क्योंकी गीतामें श्रीकृष्णनें कहा है की, हे कुंतीके पुत्र अर्जुन, स्वभावतः और शास्त्रविधिसें जो तूं कर्म करता है, जो तूं भोजन करता है, जो तूं होम करता है, जो तूं दान करता है और जो तूं तप करता है वह सब कर्म मेरे अर्थ अर्पण करना” ऐसा वचन है. एककालमें सब कर्मोंको ईश्वरके लिये अर्पण करनेका

मंत्र—" कामतोऽकामतो वापि यत्करोमि शुभाशुभम् ॥ तत्सर्वं त्वयि संन्यस्तं त्वत्प्रयुक्तः करोम्यहम्. "

अपारमाह्निकंकर्मगहनंबहुभेदयुक् निःशेषमक्षमोवक्तुंयथामत्यवदल्लघु अनंतोपाध्यायजनिःकाशीनाथाभिधःसुधीः तुष्यतांतेनभगवांछ्रीनाथोविठ्ठलःप्रभुः इत्यनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेतृतीयपरिच्छेदेआह्निकाचारप्रकरणंसमाप्तं ॥

शाखापरत्वसें अनेक प्रकारके जिसमें भेद हैं ऐसा यह अपार आन्हिक कर्म अत्यंत गहन होनेसें वह समस्त आन्हिककर्म कहनेकों अनंतोपाध्यायका पुत्र काशीनाथनामवाला पंडित मैं असमर्थ हुं; परंतु जैसी बुद्धि है तिसके अनुसार संक्षेपसें कहा है. तिसकरके श्रीरुक्मिणीपति भगवान् प्रभु विठ्ठलजी प्रसन्न हो. " इति धर्मसिंधुसारभाषाटीकायां तृतीयपरिच्छेदे आह्निकाचारप्रकरणं समाप्तम् ॥

आवश्यंप्रत्यहंकृत्यमुक्त्वातच्छेषउच्यते काम्यंनैमित्तिकंचापिप्रायःसिंधुक्रमादथ ॥

प्रतिदिन करनेका ऐसा आवश्यक जो आन्हिकर्म है तिसकों कहके तिसका शेष रहा हुआ, काम्य और नैमित्तिक कर्म प्रायशः निर्णयसिंधुके क्रमसें कहताहुं.

अथाधानविचारः तत्राधाननक्षत्रादिकालविचारः प्रथमपरिच्छेदेउक्तः आवसथ्याधानंतुदारकालेदायविभागकालेवा अग्निर्वैवाहिकोयेननगृहीतःप्रमादिना पितर्युपरतेतेनगृहीतव्यःप्रयत्नतः गृह्याग्निहीनस्यान्नमभोज्यं पितरिज्येष्ठभ्रातरिवासाग्निकेकनिष्ठादेरविभक्तस्य निरग्नित्वदोषोन एवंज्ञानाध्ययनादिनिष्ठस्यापिनदोषः गृहस्थस्याप्यध्ययनोक्तेःस्मार्ताधानमपिज्येष्ठेभ्रातरिअकृताधानेसतिनकार्यमितिनिर्णयसिंध्वादौगार्ग्योक्तिः अत्रैवंनिर्णयोभातियत्रज्येष्ठेनदायाद्यपक्षमवलंब्यविवाहकालेयावज्जीवमौपासनंकरिष्येइत्येवंसंकल्पपूर्वकंविवाहाग्निर्नगृहीतस्तद्विषयोयंकनिष्ठस्यनिषेधः येनज्येष्ठेनविवाहकालेतथासंकल्पपूर्वकमग्निःपरिगृहीतः सपश्चात्परिचरणाभावेनाविद्यमानाग्निकोपिउच्छिन्नाग्निरेवनत्वकृताधानइतितत्रकनिष्ठस्याधानेदोषोनेति अत्राधिकारिणोपिभ्रातुरनुज्ञयाकनिष्ठस्याधानंभवति विवाहस्तुअनुज्ञयापिन एवंपितुरनुज्ञयाप्याधानं संन्यस्तोच्छिन्नहस्तादौयद्वाषंढादिदूषणे जनकेसोदरेज्येष्ठेकुर्यादेवेतरःक्रियामित्यादिविशेषः विवाहप्रकरणेपरिवेत्तृप्रसंगेउक्तः ॥

अब आधानका निर्णय कहताहुं.

तहां आधानके नक्षत्र, और कालका निर्णय प्रथम परिच्छेदमें कहा है. गृह्याग्निका आधान करनेका सो तौ विवाहकालमें पिता आदिकोंसें प्राप्त होनेवाला जो दाय तिसके विभागकालमें करना. "जिस मनुष्यनें प्रमाद आदिकरके वैवाहिक अग्नि नहीं ग्रहण किया होवै तिसनें पिताके मरनेके पीछें प्रयत्नसें धारण करना." गृह्याग्निसें रहित मनुष्यके अन्नका भोजन नहीं करना. पिता अथवा बडा भाई साग्निक होवै और नहीं विभक्त हुआ छोटा भाई आदि निरग्निक होवै तब दोष नहीं है. इसी प्रकार ज्ञान और अध्ययन आदिविषे नैष्ठिक होवैं तिन्होंकोंभी अग्निके नहीं धारण करनेमें दोष नहीं है. क्योंकी, गृहस्थी-

नेंभी वेदका अध्ययन करना ऐसा वचन है. बडे भाईनें आधान नहीं किया होवै तौ छोटे भाईनें स्मार्ताग्निकाभी आधान नहीं करना, ऐसा **निर्णयसिंधु** आदिविषे गर्गमुनिका वचन है. यहां मुझकों ऐसा निर्णय प्रतिभान होता है—जहां बडे भाईनें दायका पहला पक्ष अंगीकार करके विवाहकालमें, **“ यावज्जीवमौपासनं करिष्ये ”** ऐसा संकल्प पहले करके वैवाहिक अग्नि नहीं ग्रहण किया होवै तद्विषयक यह निषेध छोटे भाईकों कहा है. जिस बडे भाईनें विवाहकालमें तैसा संकल्प पहले करके विवाहाग्निका ग्रहण किया है और पीछे तिसप्रमाण अग्नि धारण नहीं किया होवै इस कारणसें वह बडा भाई अविद्यमान अग्निवाला हुआ तौभी वह उच्छिन्न अग्निवाला हुआ है, आधान नहीं किया होवै ऐसा नहीं, इस लिये ऐसे स्थलमें छोटे भाईकों आधान करनेमें दोष नहीं है. इस आधानविषे छोटा भाई अधिकारी है तौभी बडे भाईकी आज्ञा लेके आधान करना; विवाह, बडे भाईकी आज्ञा होवै तौभी नहीं होता है. इसी प्रकार पिताकी आज्ञा लेके पुत्रनें आधान करना. “ पिता अथवा बडा भाई संन्यासी हो गया होवै अथवा टूटा हो गया होवै अथवा नपुंसक आदि दोषसें दूषित होवै तब छोटे भाईनेंही सब कर्म करना, ” इस आदि विशेष निर्णय विवाहप्रकरणविषे परिवेत्ताके प्रसंगमें कहा है.

अथशूद्रसंस्कारविचारः गर्भाधानपुंसवनानवलोभनसीमंतोन्नयनजातकर्मनामकर्मनिष्क्रमणान्नप्राशनचौलोपनयनमहानाम्न्यादिव्रतचतुष्टयसमावर्तनविवाहाइति षोडशसंस्कारा द्विजानां जातकर्मनामकर्मनिष्क्रमणान्नप्राशनचूडाविवाहाइतिषट्द्विजस्त्रीणां तत्रविवाहः समंत्रकोन्येमंत्ररहिताः गर्भाधानसीमंतौस्त्रीपुरुषसाधारणौ चूडांतानवविवाहश्चेतिदशामंत्रकाःशूद्राणामितिबहुसंमतं शूद्रकमलाकरेशूद्राणांपंचमहायज्ञाअप्युक्ताःकेचिदवैदिकमंत्रेणोपनयनमप्याहुः ब्राह्मेतुविवाहमात्रंसंस्कारंशूद्रोपिलभतांसदेत्युक्तं अत्रसदसच्छूद्रगोचरत्वेनवापरंपराप्राप्तप्रकारेणवाव्यवस्था अस्यद्विजसेवावृत्तिः आपदिवाणिज्यशिल्पादिशूद्रेणलवणादिविक्रेयं मद्यमांसंचन कापिलाक्षीरपानेनब्राह्मणीगमनेनच वेदाक्षरविचारेणशूद्रश्चांडालतांव्रजेत् शूद्रोवर्णश्चतुर्थोपिवर्णत्वाद्धर्ममर्हति वेदमंत्रस्वधास्वाहावषट्कारादिभिर्विना स्त्रीशूद्रधर्मेषुव्रतादिषुसर्वत्रविप्रेणमंत्रःपठनीयः सोपिपौराणएव भारतपुराणयोःश्रवणेस्त्रीशूद्रयोरधिकारोनत्वध्ययने श्रावयेच्चतुरोवर्णान्कृत्वाब्राह्मणमग्रतःशूद्रस्यपंचयज्ञश्राद्धादिकर्माणिकातीयसूत्रानुसारेणेतिमयूखे आगमोक्ताविष्णुशिवादिमंत्राःनमोंताःप्रणवरहिताः पुराणादिनाश्रवणनिदिध्यासनादिकृत्वाब्रह्मज्ञानमपिस्त्रीशूद्रैःसंपाद्यं उपनिषच्छ्रवणेतुनाधिकारइतिशूद्रस्यतदनादरश्रवणादित्यधिकरणे शूद्रस्यसर्वश्राद्धान्यामेनैव केचित्सर्वप्रजानांकाश्यपत्वात्सर्वशूद्राणांकाश्यपगोत्रंतच्चश्राद्धएवकीर्तनीयंनान्यत्रेत्याहुः एवंशांतिकादावधिकारोविप्रद्वारैव यदिविप्रःशूद्रदक्षिणामादायवैदिकमंत्रैस्तदीयहोमाभिषेकादिकरोति तदातत्रशूद्रस्तत्पुण्यफलभाक्विप्रस्तुमहाप्रत्यवायीतिमाधवः ॥

अब शूद्रोंके संस्कारोंका निर्णय कहताहुं.

गर्भाधान, पुंसवन, अनवलोभन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्रा-

शन, चौलकर्म, यज्ञोपवीतकर्म, महानाम्नी आदि चार व्रत, समावर्तन और विवाह इस प्रमाण यह सोलह संस्कार द्विजोंके हैं. जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण, चौल, अन्नप्राशन और विवाह ये छह संस्कार द्विजोंकी स्त्रियोंके हैं. तिन्होंके मध्यमें स्त्रियोंका विवाह समंत्रक करना और अन्य संस्कार अमंत्रक करने. गर्भाधान और सीमंतोन्नयन ये संस्कार स्त्रीपुरुषोंको साधारण हैं. गर्भाधान, पुंसवन, अनवलोभन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन और चौलकर्म ये नव और विवाह ऐसे दश संस्कार शूद्रोंके अमंत्रक हैं ऐसा बहुसंमत मत है. **शूद्रकमलाकर** ग्रंथमें शूद्रोंको पंचमहायज्ञभी कहे हैं. कितनेक ग्रंथकार, पुराणोक्त मंत्रोंसें शूद्रोंका यज्ञोपवीतसंस्कारभी करना ऐसा कहते हैं. **ब्रह्मपुराणमें** तौ "शूद्रका विवाहसंस्कार मात्र सब काल करना" ऐसा कहा है, इस लिये तहां सज्जन शूद्र और दुष्ट शूद्रके विचारकरके अथवा परंपरासें प्राप्त हुये प्रकारकरके व्यवस्था जाननी. यह शूद्रकी वृत्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय आर वैश्यकी सेवा करनी यह है. आपत्कालमें शूद्रनें व्यापार और शिल्प आदि करना. शूद्रनें नमक आदिका विक्रय करना, मदिरा और मांसका नहीं करना. "कपिला गौके दूधकों पीना, ब्राह्मणीसें भोग करना और वेदके अक्षरोंका विचार ये करनेसें शूद्र चांडालपनेकों प्राप्त होता है." "शूद्र चौथा वर्ण है, परंतु मुख्य वर्णका होनेसें वेदमंत्र, स्वधाकार, स्वाहाकार और वषट्कार इन आदिसें वर्जित कर्मकों योग्य है." स्त्री और शूद्रके व्रत आदि धर्मोंमें सब जगह ब्राह्मणनें मंत्र पढना उचित है, और वह मंत्रभी पुराणोक्त होना उचित है. भारत और पुराण ये सुननेका स्त्री और शूद्रकों अधिकार है, पढनेका अधिकार नहीं है. "वक्तानें ब्राह्मण श्रोताकों आगे करके चार वर्णोंको भारत और पुराणोंका श्रवण कराना." शूद्रके पंचमहायज्ञ और श्राद्ध आदि कर्म **कातीयसूत्रके** अनुसार होते हैं, ऐसा **मयूख** ग्रंथमें कहा है. **आगममें** (शिवविष्णुप्रतिपादक ग्रंथविशेषमें) कहे होके जिन्होंके अंतमें नमःशब्द है ऐसे विष्णु, शिव आदिके मंत्र ओंकारसें वार्जित ऐसे शूद्रोंनें पठण करने. स्त्री और शूद्रोंनें पुराण आदिसें श्रवण, निदिध्यासन आदि करके ब्रह्मज्ञानभी संपादित करना. उपनिषद्के सुननेमें तौ अधिकार नहीं है. क्योंकी, '**तदनादरश्रवणात्**' इस अधिकरणमें शूद्रकों उपनिषदोंका श्रवण नहीं है ऐसा कहा है. शूद्रनें सब श्राद्ध कच्चे अन्नसेंही करने. कितनेक ग्रंथकार कहते हैं की, सब प्रजा कश्यपकी है इस लिये सब शूद्रोंका काश्यपगोत्र है; परंतु यह काश्यपगोत्र शूद्रोंनें श्राद्धमेंही कहना उचित है, अन्य जगह नहीं कहना. इस प्रकार शूद्रकों शांति आदिमें जो अधिकार कहा है सो ब्राह्मणके द्वाराही है ऐसा जानना. जो ब्राह्मण शूद्रसें दक्षिणा लेके वैदिकमंत्रोंसें शूद्रका होम और अभिषेक आदि करै तौ शूद्रही तिस होमादिकके पुण्यके फलकों भोगता है, और ब्राह्मण तौ महादोषका अधिकारी होता है ऐसा **माधव** ग्रंथमें कहा है.

अहिंसासत्यास्तेयशौचेंद्रियनिग्रहदानशमदमक्षमादयः शूद्रादिसर्वसाधारणाधर्माःपरपदप्रापकाः स्वस्तिवाचनादिशूद्रकर्मणांप्रयोगास्तुशूद्रकमलाकरेज्ञेयाः ॥

हिंसा नहीं करनी, सत्य बोलना, चोरी नहीं करनी, पवित्र रहना, इंद्रियोंका निग्रह करना और दान, शम, दम, क्षमा इत्यादिक शूद्र आदि सबोंके साधारण धर्म हैं, और

ईश्वरपदकी प्राप्तिकों देनेवाले हैं. पुण्याहवाचन आदि शूद्रोंके कर्मोंके प्रयोग शूद्रकमलाकर ग्रंथमें देख लेने.

अथवापीकूपाद्युत्सर्गादि गृहग्रामयोराग्नेयदक्षिणनैर्ऋत्यवायव्येषुमध्येचदुष्टफलःकूपः शेषदिक्षुशुभः वापीकूपतडागाद्युत्सर्गउत्तरायणेमाघादिमासषट्कस्यशुक्लपक्षेषुप्रशस्तः जल क्षयसंभावनायांकार्तिकमार्गशीर्षयोरपि नकालनियमस्तत्रसलिलंकारणंपरमित्युक्तेः चतुर्षु विष्णुशयनमासेषुशुक्रास्तादौचवर्ज्यं ॥

अब बावडी, कूवा आदिका उत्सर्ग आदि कहताहुं.

घर अथवा गामके आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य और वायव्य इन दिशाओंमें अथवा घर अथवा ग्रामके मध्यमें जो बावडी, कूवा आदि सो दुष्ट फलकों देता है. शेष रही दिशाओंमें शुभ है. बावडी, कूवा और तलाव इन आदिका उत्सर्ग उत्तरायणमें और माघ आदि छह महीनोंके शुक्लपक्षोंमें श्रेष्ठ है. माघ आदि महीनोंमें जल सूक जावैगा ऐसा संभव होवै तौ कार्तिक और मंगशिरमेंभी उत्सर्ग करना योग्य है. क्योंकी, " उत्सर्ग करनेका मुख्य कारण जल है कालका नियम नहीं है " ऐसा वचन है. विष्णुके शयनके चार महीनोंमें और शुक्रके अस्त आदिमें उत्सर्ग नहीं करना.

अश्विनीरोहिणीमृगपुष्यमघात्र्युत्तरामूलश्रवणादित्रयहस्तज्येष्ठानुराधारेवतीषुद्वितीयातृतीयापंचमीसप्तमीदशम्येकादशीत्रयोदशीतिथिषुबुधगुरुशुक्रसोमवारेषुजलोत्सर्गःशुभः उत्सर्गाभावेजलंनग्राह्यं वापीकूपतडागादौयज्जलंस्यादसंस्कृतं नस्पृष्टव्यंनपेयंचपीत्वाचांद्रायणंचरेत् उत्सर्गप्रयोगोन्यतोज्ञेयः ॥

जलके उत्सर्गके नक्षत्र.—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, ज्येष्ठा, अनुराधा और रेवती ये नक्षत्र; द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी ये तिथि; बुध, बृहस्पति, शुक्र और सोम ये वार; इन्होंमें जलका उत्सर्ग शुभ है. जिस जलका उत्सर्गसंस्कार नहीं किया होवै तिस जलकों नहीं लेना. " बावडी, कूवा, तलाव इन आदिके जलका संस्कार नहीं किया जावै तौ वह असंस्कृत जल होता है, तिस जलकों स्पर्शभी नहीं करना और पान नहीं करना. पान किया जावै तौ चांद्रायण प्रायश्चित्त करना. " उत्सर्गका प्रयोग दूसरे ग्रंथसें जानना.

अथवृक्षादिरोपणं अश्विनीरोहिणीमृगपुष्यमघोत्तरात्रयहस्तचित्राविशाखानुराधामूलशततारकारेवतीषुसत्तिथिवारेषुवृक्षलतारोपःशस्तः आश्लेषायांसोमवारःसोमोलग्नेबलान्वितः योगेस्मिन्रोपयेदिक्षुकदलीक्रमुकादिकान् नारीकेलान्वपेद्भूमावश्विन्यांलग्नगेरवौ नागवल्लीं गुरौलग्नेचंद्रेस्वांशस्थितेसति ॥

अब वृक्ष आदिकोंका रोपण कहताहुं.

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा,

हस्त, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, मूल, शतभिषा और रेवती ये नक्षत्रमें; शुभ तिथि और शुभ वार ऐसे दिनमें वृक्ष और वेल आदिकों रोपण करना श्रेष्ठ है. आश्लेषानक्षत्र, सोमवार, और लग्नमें बलवान् चंद्रमा होवै ऐसे योगमें ईख, केलाका वृक्ष, सुपारीका वृक्ष इन आदिकों रोपण करना श्रेष्ठ है. अश्विनीनक्षत्र होवै और लग्नमें सूर्य होवै ऐसे योगमें पृथिवीविषे नारियलके वृक्षोंकों रोपण करना. चंद्रमा अपने अंशमें स्थित होवै और लग्नमें वृहस्पति होवै ऐसे समयमें नागरपानकी वेलकों लगाना.

अथमूर्तिप्रतिष्ठा प्रतिष्ठासर्वदेवानांवैशाखज्येष्ठफाल्गुने चैत्रेतुस्याद्विकल्पेनमाघेविष्णन्यमूर्तिषु सौम्यायनेशुभाप्रोक्तानिंदितादक्षिणायने मातृभैरववाराहनरसिंहत्रिविक्रमाः दक्षिणेप्ययनेस्थाप्यादेव्यश्चेत्यूचिरेपरे विष्णोःशस्ताश्चैत्रमासाश्विनश्रावणकाअपि माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढसहःसुच श्रावणेचनभस्येचलिंगस्थापनमुत्तमं देव्यामाघेश्विनेमासेप्युत्तमासर्वकामदा अश्विनीरोहिण्युत्तरात्रयमृगपुनर्वसुपुष्यहस्तचित्रास्वात्यनुराधाश्रवणात्रयरेवतीषुशनिभौमान्यवासरेदर्शरिक्तान्यतिथौसर्वदेवप्रतिष्ठाशुभा श्रवणेकृत्तिकादिविशाखांतेषु चद्वादश्यांचविष्णोःप्रशस्ता चतुर्थीगणेशस्योक्तानवमीमूलभंचदेव्याः तथास्वस्वनक्षत्राणिसर्वेषां यथार्द्राशिवस्यहस्तःसूर्यस्येत्यादि ॥

अब मूर्तिप्रतिष्ठाका काल कहताहुं.

वैशाख, ज्येष्ठ और फाल्गुन इन महीनोंमें सब देवतोंकी प्रतिष्ठा करर्नी. चैत्र महीनेंमें विकल्पसें होती हैं अर्थात् प्रतिष्ठा करनी अथवा नहीं करर्नी. विष्णुकी मूर्तिकी प्रतिष्ठाके विना अन्य देवतोंकी मूर्तियोंकी प्रतिष्ठा माघमहीनेमें करनी. उत्तरायणमें प्रतिष्ठा शुभ होती है. दक्षिणायनमें प्रतिष्ठा निंद्य होती है. कितनेक ग्रंथकार, मातृका, भैरव, वाराह, नृसिंह, त्रिविक्रम और देवी इन्होंकी स्थापना दक्षिणायनमेंभी करनी ऐसा कहते हैं. चैत्र, आश्विन और श्रावण इन महीनोंमें विष्णुकी प्रतिष्ठा करनी. माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ट, आषाढ, मंगशिर, श्रावण और भाद्रपद इन महीनोंमें महादेवके लिंगका स्थापन करना उत्तम है. माघमें और आश्विनमें देवीकी प्रतिष्ठा करनी. वह उत्तम और सब कामनाओंकों देती है." अश्विनी, रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती ये नक्षत्रोंमें; शनिवार और मंगलवारसें वर्जित अन्य वारोंमें; अमावस, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी इन्होंसें वंर्जित अन्य तिथियोंमें सब देवतोंकी प्रतिष्ठा शुभ होती है. श्रवण, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा और द्वादशीतिथि इन्होंमें विष्णुकी प्रतिष्ठा शुभ होती है. गणेशकी प्रतिष्ठामें चतुर्थी शुभ है. देवीकी प्रतिष्ठामें नवमी तिथि और मूलनक्षत्र शुभ है. तैसेही जिस देवताका जो नक्षत्र होवै तिस नक्षत्रमें तिस तिस देवताकी प्रतिष्ठा करनी. जैसे, आर्द्रानक्षत्रमें शिवकी और हस्तनक्षत्रमें सूर्यकी प्रतिष्ठा करनी इस आदि जानना.

हंत्यर्थहीनाकर्तारंमंत्रहीनातुऋत्विजं स्त्रियंलक्षणहीनातुनप्रतिष्ठासमोरिपुः ब्रह्मातुब्राह्मणैःस्थाप्योगायत्रीसहितःप्रभुः सर्ववर्णैस्तथाविष्णुःप्रतिष्ठाप्यःसुखार्थिभिः मातृभैरवाद्याः सर्वैः शिवलिंगंयतिनापि पुराणप्रसिद्धजीर्णलिंगंस्त्रीशूद्रैरपिपूज्यं नूतनस्थापितंलिंगंस्त्रीशूद्रो वापिनस्पृशेत् शिवादिप्रतिष्ठायांस्त्रीशूद्रादेर्नाधिकारः शूद्रोवानुपनीतोवास्त्रियोवापतितोपि वा केशवंवाशिवंवापिस्पृष्ट्वानरकमश्नुते स्थिरप्रतिमाःप्राङ्मुखीरुदङ्मुखीर्यजेत् चलप्रतिमासुप्राङ्मुखः सौवर्णीराजतीताम्रीमृन्मयीप्रतिमाभवेत् पाषाणधातुमुक्तावाकांस्यपित्तलयोरपि अंगुष्ठपर्वमानात्सावितस्तियावदेवतु गृहेषुप्रतिमाकार्यानाधिकाशस्यतेबुधैः मृद्दारुलाक्षा गोमेदमधूच्छिष्टेनचक्वचित् श्रीमद्भागवते शैलीदारुमयीलौहीलेप्यालेख्याचसैकती मनोमयीमणिमयीप्रतिमाष्टविधास्मृता लौहीसौवर्णीदारुमधूकवृक्षस्यैव सप्तांगुलाधिकाद्वादशांगुलपर्यंतागृहेप्रतिमेतिदेवीपुराणे अर्चकस्यतपोयोगादर्चनस्यातिशायनात् आभिरूप्याच्चबिंबानां देवःसान्निध्यमृच्छति प्रतिमापट्टयंत्राणांनित्यंस्नानंनकारयेत् कारयेत्पर्वदिवसेयदाचमलधारणं पार्थिवलिंगपूजादिविचारोद्वितीयपरिच्छेदेउक्तः ॥

“द्रव्यसें रहित प्रतिष्ठा कर्ताका नाश करती है, मंत्रसें रहित प्रतिष्ठा ऋत्विजका नाश करती है और लक्षणोंसें रहित प्रतिष्ठा यजमानकी स्त्रीका नाश करती है, इसवास्ते प्रतिष्ठाके समान अन्य वैरी नहीं है. गायत्रीसहित ब्रह्माजीकी स्थापना ब्राह्मणोंनें करनी और सुखकी इच्छावाले सब वर्णोंनें विष्णुकी स्थापना करनी उचित है.” मातृका, भैरव आदि देवतोंकी स्थापना सबोंनें करनी. शिवके लिंगकी स्थापना संन्यासीनेंभी करनी. पुराणप्रसिद्ध ऐसे प्राचीन लिंगकी पूजा स्त्री और शूद्रोंनेंभी करनी. “नवीन स्थापित किये लिंगकों स्त्री अथवा शूद्रनें स्पर्श नहीं करना.” शिव आदिकी प्रतिष्ठा करनेमें स्त्री और शूद्र आदिकों अधिकार नहीं है. “शूद्र अथवा यज्ञोपवीतसंस्कारसें रहित, स्त्री अथवा पतित ये मनुष्य शिवजीकों अथवा विष्णुकों स्पर्श करै तौ नरककों भोगनेवाले होवैंगे.” पूर्वकों मुखवाली स्थिर प्रतिमाओंकी उत्तरके तर्फ मुखवाला मनुष्य होके पूजा करनी. चल प्रतिमाओंकी पूर्वके तर्फ मुखवाला होके पूजा करनी. “सोनाकी, चांदीकी, तांबाकी अथवा माटीकी प्रतिमा अर्थात् मूर्ति होनी उचित है. अथवा पत्थरकी, धातुकी, मोतीकी, कांसीकी अथवा पितलकी प्रतिमा होनी उचित है. घरमें पूजा करनेके लिये अंगूठाके पर्वके परिमाणसें एक वितस्तिपर्यंत ऊंची प्रतिमा करनी सो शुभ है, इस्सें अधिक परिमाणकी प्रतिमा अच्छी नहीं होती है ऐसा शास्त्र जाननेवाले कहते हैं.” “माटी, लाष, गोमेदमणि, मोम इन्होंकी प्रतिमा बनानी ऐसा कितनेक ग्रंथोंमें कहा है.” श्रीमद्भागवतमें “पत्थरकी, काष्ठकी, लौही, लिखी हुई, माटीकी, वालूकी, और मनसें बनाई हुई और मणिसें बनाई हुई इस प्रकार आठ प्रकारकी मूर्ति करनी ऐसा कहा है,” यहां लौही, अर्थात् सोनासें बनी प्रतिमा, काष्ठकी इस्सें महुवा वृक्षके काष्ठकी बनी प्रतिमा लेनी. सात अंगुल परिमाणसें अधिक और बारह अंगुल परिमाणपर्यंत ऊंची प्रतिमा घरमें पूजा करनेके लिये बनानी ऐसा देवीपुराणमें कहा है. “पूजा करनेवालेके तपके योगसें, पूजाके भक्तिविशेषसें और मूर्तिके सुंदरपनेसें देवताका पूजाकालमें सान्निध्य होता है. प्रतिमा; पट्ट, यंत्र इन्होंकों नित्यस्नान नहीं कराना, किंतु पर्वदिनमें स्नान कराना

अथवा मूर्ति मलिन होवै तौ स्नान कराना.” पार्थिवलिंगकी पूजा आदिका विचार द्वितीय परिच्छेदमें कहा है.

अथपंचसूत्रीनिर्णयः लिंगोच्चतालिंगविस्तारोलिंगस्थौल्यंपीठविस्तारःप्रनालिकामानंचेति पंचसूत्राणि तत्रलिंगमस्तकविस्तारंलिंगोच्चतातुल्यंकृत्वातद्द्विगुणसूत्रवेष्टनार्हंलिंगस्थौल्यंकृत्वालिंगात्सर्वतोलिंगसमविस्तारंपीठंवर्तुलंकुर्यात् पीठोच्चतालिंगोच्चद्विगुणा पीठाद्बहिःपीठोत्तरभागेलिंगसमदीर्घामूलेदैर्घ्यसमविस्ताराअग्रेतदर्धविस्ताराप्रनालिका लिंगोच्चत्वत्रिगुणापीठोच्चतेतिकेचित् अथपीठमध्यभागेलिंगात्द्विगुणस्थूलं पीठोच्चतातृतीयांशेनकंठंकुर्यात् कंठस्योर्ध्वाधोभागयोःसमवप्रद्वयंकृत्वा पीठोपरिलिंगविस्तारषष्ठांशेनमेखलांकृत्वा तदंतःसंलग्नंतत्समंखातंकुर्यात् प्रनालिकायामपिविस्तारतृतीयांशेनखातःपीठवन्मेखलाचकार्येति ॥

अब पंचसूत्रीनिर्णय कहताहुं.

लिंगका ऊंचापना, लिंगका विस्तार, लिंगकी मुटाई, पीठका विस्तार और प्रनालिकाका परिमाण ये पांच सूत्र हैं. तहां लिंगके ऊंचेपनेके प्रमाणसें लिंगके मस्तकका विस्तार करके तिस ऊंचेपनेसें दुगुना सूत्र वेष्टन करनेसें पूर्तता होवै इतनी लिंगकी मुटाई करके लिंगके सब तर्फ लिंगके विस्तारके प्रमाणमें विस्तारयुक्त ऐसा वर्तुलाकार पीठ करना. पीठका ऊंचापना लिंगकी ऊंचाईसें दुगुना करना. पीठके बाहिर पीठके उत्तरभागमें लिंगके समान लंबी होके मूलमें लंबापनाके समान विस्तारवाली और अग्रभागमें तिस्सें आधे विस्तारवाली ऐसी प्रनालिका बनानी. लिंगकी ऊंचाईसें तिगुनी पीठकी ऊंचाई करनी, ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. पीछे पीठके मध्यभागमें लिंगसें दुगुनी मुटाईवाला ऐसा, पीठकी उंचाईके तृतीय भाग जितना कंठ करना. कंठके उपरके और नीचले भागोंमें समान परिमाणवाली दो मेखला बनाके पीठके उपर लिंगका जो व्यास होवै तिसके विस्तारके छठे भागकरके मेखला बनाके तिस मेखलाके भीतर संलग्न ऐसी तिसके समान गर्ता बनानी. प्रनालिकामेंभी विस्तारके तृतीयांशकरके गर्ता करके पीठके प्रमाणसें मेखला करनी. ऐसा पंचसूत्रीका प्रकार जानना.

गृहेलिंगद्वयंनार्च्यंशालग्रामद्वयंतथा द्वेचक्रेद्वारकायास्तुनार्च्येसूर्यद्वयंतथा शक्तित्रयंत्रिविघ्नेशंद्वौशंखौनार्चयेत्सुधीः अन्यत्रतु चक्रांकमिथुनंपूज्यंनैकंचक्रांकमर्चयेदित्युक्तंतेनविकल्पः नार्चयेच्चतथामत्स्यकूर्मादिदशकंगृहे अग्निदग्धाश्चभग्नाश्चनपूज्याःप्रतिमागृहे भग्नावास्फुटितावापिशालग्रामशिलाशुभा शालग्रामाःसमाःपूज्याःसमेषुद्वितयंनहि विषमानैवपूज्यंतेविषमेष्वेकएवहि ससुवर्णशालग्रामदानेपृथ्वीदानफलं शतशालग्रामपूजनेऽनंतफलंअविभक्तानामपिभ्रातॄणांदेवतार्चनमग्निहोत्रंसंध्याब्रह्मयज्ञश्चपृथगेव स्त्रीशूद्रोवास्पर्शसहितंशालग्रामचक्रांकितबाणलिंगानिनार्चयेत् शूद्रोवानुपनीतोवासधवाविधवांगना दूरादेवास्पृशन्पूजांप्रकुर्याच्छिवकृष्णयोः शालग्रामबाणयोरेवस्पर्शननिषेधोनतुप्रतिमादौ सर्ववर्णैस्तुसंपूज्याःप्रतिमाःसार्वदेवताः लिंगान्यपितुपूज्यानिमणिभिःकल्पितानिचेत्युक्तेः शालग्रामशिलाक्रीतामध्यमायाचिताधमा उक्तलक्षणसंपन्नापारंपर्यक्रमागता उत्तमासातुविज्ञेयागुरुदत्तातुतत्समा

तत्राप्यामलकीतुल्यापूज्यासूक्ष्मैवयाभवेत् यथायथाशिलासूक्ष्मातथास्यात्तुमहत्फलं यवमात्रं तुगर्तःस्याद्यवार्धंलिंगमुच्यते शिवनाभिरितिख्यातस्त्रिषुलोकेषुदुर्लभः शालग्रामशिलायास्तु प्रतिष्ठानैवविद्यते महापूजांतुकृत्वादौपूजयेत्तांततोबुधः बाणलिंगानिराजेंद्रख्यातानिभुवनत्रये नप्रतिष्ठानसंस्कारस्तेषामावाहनंतथा वासुदेवसंकर्षणप्रद्युम्नानिरुद्धाविप्राद्यैःक्रमेणपूज्याः तल्लक्षणंतु पंचचक्रोवासुदेवः षड्भिश्चक्रैःप्रद्युम्नः सप्तभिःसंकर्षणः एकादशभिरनिरुद्धइति प्रणवोच्चारणाच्चैवशालग्रामशिलार्चनात् ब्राह्मणीगमनाच्चैवशूद्रश्चांडालतांव्रजेत् दीक्षायुक्तैस्तथाशूद्रैर्मद्यपानविवर्जितैः कर्तव्यंब्राह्मणद्वाराशालग्रामशिलार्चनम् विष्णुप्रीतिकरंनित्यंतुलसीकाष्ठचंदनम् कार्तिकेकेतकीपुष्पंयेनदत्तंहरेःकलौ दीपदानंचदेवर्षेतारितंतेन वैकुलं शालग्रामसंबंधितोयवच्चक्रांकशिलातोयस्यापिपानविधानात्सापिशालग्रामसन्निधौपूज्या अग्राह्यंशिवनिर्माल्यंपत्रंपुष्पंफलंजलं शालग्रामस्यसंस्पर्शात्सर्वंयातिपवित्रतां मध्यमानामिकामध्येपुष्पंसंगृह्यपूजयेत् अंगुष्ठतर्जन्यग्राभ्यांनिर्माल्यमपनोदयेत् विनाभस्मत्रिपुंड्रेणविना रुद्राक्षमालया पूजितोपिमहादेवोनस्यात्तस्यफलप्रदः विनामंत्रंनबिभृयाद्रुद्राक्षान्भुविमानवः पंचामृतंपंचगव्यंस्नानकालेप्रयोजयेत् रुद्राक्षस्यप्रतिष्ठायांमंत्रंपंचाक्षरंतथा त्र्यंबकादिकमंत्रंचतथातत्रप्रयोजयेत् अष्टोत्तरशतंकुर्याच्चतुःपंचाशदेवतु सप्तविंशतिमानावामालाहीनानयुज्यते सप्तविंशतिरुद्राक्षमालयादेहसंस्थया यःकरोतिनरःपुण्यंसर्वंकोटिगुणंभवेत् ॥

"घरमें दो लिंग, दो शालग्राम, दो द्वारकाके चक्र, दो सूर्य, तीन शक्ति, तीन गणपति और दो शंख इन्होंकी पूंजा नहीं करनी." अन्य ग्रंथमें तौ "दो चक्रोंकी पूजा करनी, एक चक्रकी पूजा नहीं करनी" ऐसा कहा है, और पहले दो चक्रोंकी पूजाका निषेध किया है इस उपरसें ऐसा सिद्ध होता है की, दो चक्रोंकी पूजा करनेमें विकल्प है. तैसेही घरमें मत्स्य, कूर्म आदि दशअवतारोंकी मूर्तियोंका पूजन नहीं करना. अग्निसें दग्ध हुई, टूटी हुई ऐसी मूर्ति घरमें नहीं पूजनी. टूटी हुई अथवा फूटी हुई शालग्रामकी शिला पूजामें शुभ है. समसंख्यावाले शालग्रामोंकी पूजा करनी. समसंख्यावाले शालग्रामोंमें दो शालग्रामोंकी पूजा नहीं करनी. विषम संख्यावाले शालग्रामोंकी पूजा नहीं करनी; परंतु विषम संख्यावाले शालग्रामोंमें एक शालग्रामकी पूजा करनी." सोनासहित शालग्रामके दानमें पृथिवीके दानका फल मिलता है. सौ शालग्रामोंके पूजनमें अनंत फल मिलता है. नहीं विभक्त हुये भाईयोंनें देवताकी पूजा, अग्निहोत्र, संध्या और ब्रह्मयज्ञ ये अलग अलग करने. स्त्री अथवा शूद्रोंनें शालग्राम, चक्रांक और बाणलिंग इन्होंकी स्पर्शसहित पूजा नहीं करनी. "क्योंकी शूद्र, नहीं हुआ यज्ञोपवीतसंस्कारवाला, सुहागन स्त्री; विधवा स्त्री इन्होंनें स्पर्श कियेविना दूरसें शिव और विष्णुकी पूजा करनी" ऐसा वचन है. शालग्राम और बाणलिंग इन्होंकेही स्पर्शका निषेध है; प्रतिमा आदिकोंके स्पर्शविषे निषेध नहीं है; "क्योंकी, सब वर्णोंनें सब देवतोंकी प्रतिमा पूजनी, और मणिसें बनाये हुये लिंगोंकीभी पूजा सब वर्णोंनें करनी" ऐसा वचन है. "खरीदी हुई शालग्रामकी शिला मध्यम होती है और याचना करके लीई हुई शालग्रामकी शिला अधम होती है. उक्त लक्षणोंसें संयुक्त और परंपरासें प्राप्त हुई शालग्रामकी शिला उत्तम जाननी और अपने गुरुनें दीई हुई

शालग्रामकी शिला उत्तम होती है. तहांभी जो शिला आंवलाके फलके समान सूक्ष्म होवै वहही पूजाके योग्य है; जैसी जैसी शालग्रामकी सूक्ष्म मूर्ति होवै तैसी तैसी वह बहुत फलकों देती है. जिस शालिग्राममें एक यव परिमित गर्ता होके यवार्ध परिमित लिंग होवै तिसकों शिवनाभि ऐसा कहते हैं. यह तीनों लोकोंमें दुर्लभ है. शालग्रामकी शिलाकी निश्चयकरके प्रतिष्ठा नहीं करनी; परंतु आदिमें महापूजा करके पीछे तिस शालग्रामकी शिलाकी पूजा करनी. हे राजेंद्र, तीनों लोकोंमें बाणलिंग विख्यात है. तिन्होंके प्रतिष्ठासंस्कार और आवाहन ये नहीं करने." वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध इन्होंकी क्रमकरके ब्राह्मण आदिकोंनें पूजा करनी, अर्थात् ब्राह्मणनें वासुदेवकी, क्षत्रियनें संकर्षणकी, वैश्यनें प्रद्युम्नकी और शूद्रनें अनिरुद्धकी पूजा करनी. तिन्होंके लक्षण—पांच चक्रोंवाला वासुदेव कहाता है, छह चक्रोंवाला प्रद्युम्न होता है, सात चक्रोंवाला संकर्षण कहाता है और ग्यारह चक्रोंवाला अनिरुद्ध कहाता है. "ॐकारका उच्चार, शालग्राम शिलाका पूजन, और ब्राह्मणीसें भोग इन्होंकों करनेसें शूद्र चांडालपनेकों प्राप्त होता है. विष्णुदीक्षासें युक्त और मदिराके पानसें वर्जित ऐसे शूद्रोंनें ब्राह्मणके द्वारा शालग्रामशिलाका पूजन कराना. हे नारदजी, विष्णुकों नित्यप्रति संतोष करनेवाला ऐसा तुलसीकाष्ठका चंदन, कार्तिकके महीनेमें विष्णुके अर्थ केतकीका फूल और दीपदान ये कलियुगमें जिस मनुष्यनें अर्पण किये तिसनें कुलका तारण किया ऐसा होता है." शालग्रामसंबंधी तीर्थकी तरह चक्रांकितसंबंधी तीर्थ प्राशन करना ऐसा विधि है इस लिये शालग्रामशिलाके साथ चक्रांकितकीभी पूजा करनी. "शिवनिर्माल्य ऐसे पत्र, फूल, फल और जल ये अग्राह्य हैं, इसलिये शालग्रामके स्पर्शसें सब शिवनिर्माल्य पवित्रताकों प्राप्त होता है. मध्यमा और अनामिका अंगुलीके मध्यमें फूल ग्रहण करके देवपर चढाना. अंगूठा और तर्जनी अंगुलीसें देवके उपरसें निर्माल्य उतार लेना. भस्मके त्रिपुंड्रके विना और रुद्राक्षकी मालाके विना जो मनुष्य महादेवकों पूजित करता है तिसकों फलकी प्राप्ति नहीं होती है. मंत्रके विना पृथिवीमें रुद्राक्षोंकों धारण नहीं करना. पंचामृत और पंचगव्यकों रुद्राक्षके स्नानकालमें योजित करने. रुद्राक्षकी प्रतिष्ठामें पंचाक्षरमंत्र अर्थात् **'नमः शिवाय'** यह मंत्र योजित करना अथवा **'त्र्यंबकंयजामहे'** इस आदि मंत्र योजने. एकसौ आठ दानोंकी अथवा चम्मन दानोंकी अथवा सताईस मणियोंकी माला बनानी. इस्सें हीन दानोंकी माला नहीं करनी. सताईस रुद्राक्षोंकी माला कंठमें धारण करके जो मनुष्य जप इत्यादि पुण्यकर्म करता है तिसका वह सब कोटिगुना होता है."

अथरुद्राक्षतुलस्यादिसर्वजपमालानांसंस्कारः कुशोदकसहितैःपंचगव्यैर्मालांप्रक्षाल्य ॐ ह्रींअंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअः कंखंगंघंङं चंछंजंझंञं टंठंडंढंणं तंथंदंधंनं पंफं बंभंमं यंरंलंवंशंषंसंहंक्षंइत्येतानिपंचाशन्मातृकाक्षराणि अश्वत्थपत्रस्थापितमालायांविन्यस्य ॐसद्योजातं० वामदेवाय० अघोरेभ्यो० तत्पुरुषाय० ईशानःसर्वविद्याना० इतिपंचमंत्रान्जपित्वा सद्योजातेतिमंत्रेणमालांपंचगव्येनप्रोक्ष्यशीतजलेनप्रक्षाल्यवामदेवेतिचंदनेनाघृष्याघोरेतिमालांधूपयित्वातत्पुरुषेतिचंदनकस्तूर्यादिनालेपयित्वेशानइतिमंत्रेण प्रतिमणिंशतवारं

दशवारंवाभिमंत्र्यअघोरइतिमंत्रेणमेरुंशतवारमभिमंत्रयेत् ततएतैरेवपंचभिर्मंत्रैर्मालांपंचोपचारैःपूजयेदिति ॥

अब रुद्राक्ष, तुलसी आदि सब प्रकारकी जप करनेकी मालाओंका संस्कार कहताहुं.

कुशोदकसहित पंचगव्योंसें मालाकों धोके और यह मालाकों पीपलके पत्रपर स्थापित करके और उसके उपर हाथ रखके "ॐ ह्रीं अंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअः कंखंगंघंङं चंछंजंझंञं टंठंडंढंणं तंथंदंधंनं पंफंबंभंमं यंरंलंवं शंषंसंहंक्षं" इस प्रकार पंचास मातृका अक्षरोंका मालापर न्यास करना. पीछे "**सद्योजातं०, वामदेवाय०, अघोरेभ्यो०, तत्पुरुषाय०, ईशानःसर्व०**" इन पांच मंत्रोंका जप करके "**सद्योजातं०**" इस मंत्रसें पंचगव्यकरके मालाका प्रोक्षण करके शीतल जलसें वह मालाकों प्रक्षालन करना. पीछे "**वामदेवाय०**"इस मंत्रसें मालाकों चंदनसें घसके "**अघोरे०**" इस मंत्रसें मालाकों धूप देके "**तत्पुरुषाय०**" यह मंत्र कहके चंदन और कस्तूरी आदिसें लिप्त करके "**ईशानःस०**" इस मंत्रसें मालाके एक एक मणिकों १०० वार अथवा दशवार अभिमंत्रित करके "**अघोरे०**" इस मंत्रकों कहके मालाके सुमेरुकों १०० वार अभिमंत्रित करना. पीछे इनही पांच मंत्रोंसें मालाकी गंध आदि पंच उपचारोंसें पूजा करनी. इस प्रकार मालासंस्कारविधि कहा है.

बोपदेवः रुद्राक्षान्कंठदेशेदशन ३२ परिमितान्मस्तकेविंशतीद्वे ४० षट्षट्कर्णतदेशेकरयुगुलकृतेद्वादशद्वादशैव बाह्वोरिंदोःकलाभि १६ र्नयनयुगकृतेएकमेकंशिखायांवक्षस्यष्टाधिकंयःकलयतिशतकंसस्वयंनीलकंठः रुद्रक्षदानाद्रुद्रपदप्राप्तिः ॥

बोपदेव रुद्राक्ष धारण करनेकी संख्या कहता है.—"कंठमें ३२, मस्तकपर ४०, एक एक कानपर छह छह, दोनों हायोंपर बारह बारह, दोनों बाहुओंपर सोलह, दोनों नेत्रोंपर एक एक, शिखामें एक और छातीपर १०८, इस प्रकार जो मनुष्य रुद्राक्ष धारण करता है वह साक्षात् महादेव है." रुद्राक्षके दानसें शिवलोककी प्राप्ति होती है.

पंचविंशत्पलंलिंगेष्वभ्यंगंकारयेदथ स्नापयेत्तिलतैलैश्चकरयंत्रोद्भवैःशिवं स्नानंपलशतंज्ञेयमभ्यंगःपंचविंशतिः पलानांद्विसहस्रेणमहास्नानंजलेनतत् पयोदधिघृतक्षौद्रशर्कराद्यैस्ततःक्रमात् शिवस्यसर्पिषास्नानंप्रोक्तंपलशतेनवै तावतामधुनाचैवदध्नाचपयसापिच पलसार्धसहस्रेणरसेनैवैक्षवेणच भक्त्याचोष्णोदकैःशीतोदकैःसंस्नापयेच्छिवं श्रीविष्णुंक्षीरदध्याद्यैः क्रमादशगुणोत्तरैः स्नापयेत्केचिदूचुश्चक्षीराद्यैःपंचभिःसमैः ॥

महादेवके लिंगकों अभ्यंग करनेका सो पंचविंशति[१]पलपरिमित कराना. हाथोंके यंत्रोंसें निकासे हुये तिलोंके तेलसें शिवकों स्नान कराना. १०० पल जलसें महादेवका स्नान जा-

---

[१] एक पल अर्थात् शास्त्रीय चार तोले, अर्थात् ३२० चिरमठियोंके शास्त्रीय माष ६४ और प्रस्तुत लौकिक रीतिके ४० माष होते हैं.

नना. अभ्यंग तौ पचीस पलपरिमित करना. दो सहस्र पलपरिमित जल लेके महादेवजीका महास्नान होता है. पीछे क्रमसें दूध, दही, शहद, और खांड इन्होंकरके क्रमसें स्नान कराना. महादेवकों सौ पलपरिमित घृतसें स्नान कराना ऐसा कहा है. शहद, दही और दूध ये सौ सौ पलपरिमित लेके स्नान कराना. पंदरहसौ पलपरिमित ईखके रससें महादेवजीकों स्नान कराना. महादेवजीकों शीतल जलसें और गरम जलसें भक्तिपूर्वक स्नान कराना. श्रीविष्णुकों दूध, दही आदि पंचामृतसें स्नान कराना होवै तौ दशगुणित क्रमसें अर्थात् दूधसें दशगुना दही और दहीसें दशगुणित घृत इस प्रकार लेना. कितनेक ग्रंथकार दूध आदि पंचामृत समान लेके स्नान कराना ऐसा कहते हैं."

अथश्रीविष्णवादिपंचायतनानि विष्णुर्मध्येशिवेभास्यसूर्योयोईशदिक्क्रमात् शंभौमध्ये विष्णुसूर्यगजास्यार्यास्तथाक्रमात् १ रवौमध्यगतेरुद्रगणेशाच्युतशक्तयः मध्येदेवीविष्णुशिवगणेशरवयः क्रमात् २ मध्येगणपतिर्विष्णुशिवसूर्याबिकास्तथा ऐशान्यादिक्रमेणैवपंचायतनपंचकं ३ ॥

अब विष्णु आदिके पंचायतन स्थापन करनेकी रीति कहताहुं.

विष्णुपंचायतन.—मध्यमें विष्णु, ऐशानीमें शिव, आग्नेयीमें गणेश, नैर्ऋत्यमें सूर्य और वायव्यमें देवी इस प्रकार स्थापना करनी. **शिवपंचायतन.**—मध्यमें शिव, ऐशानीमें विष्णु, आग्नेयीमें सूर्य, नैर्ऋत्यमें गणेश और वायव्यमें देवी इस प्रकार स्थपना करनी. **सूर्यपंचायतन.**—मध्यमें सूर्य, ऐशानी आदि दिशाओंमें क्रमसें शिव, गणेश, विष्णु और देवी इस प्रकार स्थापना करनी. **देवीपंचायतन.**—मध्यमें देवी, ऐशानी आदि दिशाओंमें क्रमसें विष्णु, शिव, गणेश और सूर्य इस प्रकार स्थापना करनी. **गणेशपंचायतन.**—मध्यमें गणेश, पीछे क्रमसें विष्णु, शिव, सूर्य और देवी इन्होंकी ऐशानी आदि दिशाओंमें क्रमसें स्थापना करनी. इस प्रकार ऐशानी आदिके क्रमसें पांच पंचायतन स्थापन करनेका क्रम जानना.

पंचायतन.

उत्तरदिशा.	शंकर	गणेश	विष्णु	सूर्य	शंकर	गणेश	विष्णु	शंकर	विष्णु	शंकर	दक्षिणदिशा.
	२	३	२	३	२	३	२	३	२	३	
	विष्णु		शंकर		सूर्य		देवी -		गणेश		
	१		१		१		१		१		
	देवी	सूर्य	देवी	गणेश	देवी	विष्णु	सूर्य	गणेश	देवी	सूर्य	
	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	

अथकेशवादिचतुर्विंशतिमूर्तिनिर्णायकबोपदेवश्लोकःसिंधौव्याख्यातः तस्यायंसंग्रहः केशवादेश्चतुर्बाहोर्दक्षिणोर्ध्वकरक्रमात् शंखचक्रगदापद्मायुधैःकेशवउच्यते १ नारायणःपद्मगदाचक्रशंखायुधैःक्रमात् माधवश्चक्रशंखाभ्यांपद्मेनगदयाभवेत् २ गोविंदोगदयापद्मशंखचक्रैःक्रमाद्भवेत् विष्णुःपद्मेनशंखेनचक्रेणगदयाक्रमात् ३ शंखपद्मगदाचक्रैर्मधुसूद

नईरितः त्रिविक्रमोगदाचक्रशंखपद्मैरनुक्रमात् ४ वामनःशंखचक्राभ्यांपद्मेनगदयापिच चक्रेणगदयाशंखपद्माभ्यांश्रीधरःस्मृतः ५ हृषीकेशःस्मृतश्चक्रपद्मशंखगदायुधैः पद्मनाभः पद्मचक्रगदाशंखैःक्रमात्स्मृतः ६ दामोदरःशंखगदाचक्रपद्मैरुदीर्यते संकर्षणःशंखपद्मच क्रायुधगदायुधैः ७ वासुदेवश्चक्रगदापद्मशंखाख्यलक्षणैः प्रद्युम्नःस्याच्छंखगदापद्मचक्रैः क्रमाद्धृतैः ८ अनिरुद्धोगदाशंखपद्मचक्रैरनुक्रमात् पद्मशंखगदाचक्रायुधैःस्यात्पुरुषोत्तमः ९ अधोक्षजोगदाशंखचक्रपद्मैःकरस्थितैः नरसिंहःपद्मगदाशंखचक्रायुधैर्भवेत् १० अच्युतः पद्मचक्राभ्यांशंखेनगदयाक्रमात् जनार्दनश्चक्रशंखगदापद्माद्यबाहुभिः ११ उपेंद्रोगदयाचक्रपद्मशंखान्वितैःकरैः चक्रपद्मगदाशंखैःकरस्थैःस्यात्क्रमाद्धरिः १२ श्रीकृष्णाख्यो गदापद्मचक्रशंखैर्मतोविभुः इतिप्रोक्ताःकेशवादिचतुर्विंशतिमूर्तयः १३ ॥

अब केशव आदि चौवीस मूर्तियोंके निर्णयका श्लोक बोपदेवनें निर्णयसिंधुमें कहा है तिसका यहां संग्रह करताहुं.—चार भुजाओंवाली जो केशव आदिक चौवीस मूर्ति हैं तिन्होंके चार हाथोंमें जो चार शस्त्र हैं तिन्होंके उलटपलटपनेसें वह वह मूर्ति जाननी, और वह आयुधोंका क्रम उपरके दाहिने बाहुसें समजना. १ जिसके उपरके दाहिने हाथमें शंख होवै और नीचेके दाहिने हाथमें चक्र होवै, नीचेके वामे हाथमें गदा होवै और उपरके वामे हाथमें पद्म होवै तिसकों **केशव** जानना. २ जिसके उपरके दाहिने हाथमें पद्म, नीचेके दाहिने हाथमें गदा होवै और नीचेके वामे हाथमें चक्र और उपरके वामे हाथमें शंख होवै तिसकों **नारायण** जानना. ३ चक्र, शंख, पद्म और गदा ऐसे आयुधोंसें सहित होवै तिसकों **माधव** जानना. ४ गदा, पद्म, शंख और चक्र इन्होंकरके युक्त होवै तिसकों **गोविंद** जानना. ५ पद्म, शंख, चक्र और गदा इस क्रमसें जो युक्त होवै तिसकों **विष्णु** जानाना. ६ शंख, पद्म, गदा, चक्र इन्होंकरके युक्त होवै तिसकों **मधुसूदन** जानना. ७ गदा, चक्र, शंख और पद्म इन्होंकरके युक्त होवै तिसकों **त्रिविक्रम** जानना. ८ शंख, चक्र, पद्म और गदा ऐसे क्रमसें जो युक्त होवै तिसकों **वामन** जानना. ९ चक्र, गदा, शंख और पद्म इन्होंकरके युक्त होवै तिसकों **श्रीधर** जानना. १० चक्र, पद्म, शंख और गदा इन्होंकरके युक्त होवै तिसकों **हृषीकेश** जानना. ११ पद्म, चक्र, गदा और शंख इन्होंकरके युक्त होवै तिसकों **पद्मनाभ** जानना. १२ शंख, गदा, चक्र और पद्म इन्होंसें युक्त होवै तिसकों **दामोदर** जानना. १३ शंख, पद्म, चक्र और गदा इन्होंसें युक्त होवै तिसकों **संकर्षण** जानना. १४ चक्र, गदा, पद्म और शंख ऐसे आयुधोंसें युक्त **वासुदेव** जानना. १५ शंख, गदा, पद्म और चक्र इन आयुधोंसें युक्तकों **प्रद्युम्न** जानना. १६ गदा, शंख, पद्म और चक्र इन्होंसें युक्तकों **अनिरुद्ध** जानना. १७ पद्म, शंख, गदा और चक्र इन्होंसें युक्तकों **पुरुषोत्तम** जानना. १८ गदा, शंख, चक्र और पद्म इस क्रमसें हाथोंमें धारण करनेवाला **अधोक्षज** जानना. १९ पद्म, गदा, शंख और चक्र इन आयुधोंसें युक्त **नरसिंह** जानना. २० पद्म, चक्र, शंख और गदा इस क्रमसें युक्तकों **अच्युत** जानना. २१ चक्र, शंख, गदा और पद्म इन आयुधोंकों दाहिने आदि बाहुओंमें धारण करनेवाला **जनार्दन** जानना. २२ गदा, चक्र, पद्म और शंख इन्होंसें युक्त बाहुओंवालेकों **उपेंद्र** जानना. २३ चक्र, पद्म, गदा और

शंख इन आयुधोंकों इसी क्रमसें धारण करनेवालेकों हरि जानना. २४ गदा, पद्म, चक्र और शंख इस क्रमसें इन्होंकों धारण करनेवालेकों श्रीकृष्ण जानना. इस प्रकार आयुधोंके धारणपरसें केशवादि चौवीस मूर्ति कही हैं.

अथसिंध्वनुसारेणदेवप्रतिष्ठाप्रयोगः यजमानोद्वादशादिहस्तंमंडपंकृत्वाआग्नेयेपूर्वतोवाहस्तमात्रंकुंडंस्थंडिलंवाकृत्वामध्येवेदींतदुपरिसर्वतोभद्रंग्रहचिकीर्षायांपूर्वतःईशान्यांवाग्रहवेदीं प्रासादसंस्कारेमंडपसंस्कारेवाचिकीर्षितेनैर्ऋतेवास्तुपीठंकृत्वाअस्यांमूर्तौ लिंगेवादेवतासान्निध्यार्थं दीर्घायुर्लक्ष्मीसर्वकामसमृद्ध्यक्षय्यसुखकामोमुकदेवमूर्तिप्रतिष्ठांकरिष्येइतिसंकल्प्य स्वस्तिवाचनादिनांदीश्राद्धांतेआचार्यवृत्वाष्टौचतुरोवाऋत्विजोवृत्वापूजयेत् आचार्योयदत्रेति सर्षपान्विकीर्यापोहिष्ठेतिकुशोदकैर्भूमिंप्रोक्ष्य देवाआयांतुयातुधानाअपयांतुविष्णोदेवयजनंरक्षस्वेतिभूमौप्रादेशंकृत्वा मंडपप्रतिष्ठांकृत्वानकृत्वावा मूर्तिंपंचगव्यंहिरण्ययवदूर्वाश्वत्थपलाशपर्णान्युदकुंभेप्रक्षिप्य ताभिरद्भिरापोहिष्ठेतितिसृभिर्हिरण्यवर्णाःशुचयःपावकायासुजातः कश्यपोयास्विंद्रः अग्निंयागर्भंदधिरेविरूपास्तानआपःशꣳस्योनाभवंतु १ यासाꣳराजावरुणोयातिमध्येसत्यानृतेअवपश्यंजनानां मधुश्चुतःशुचयोयाःपावकास्ता० २ यासांदेवादिविकृण्वंतिभक्षंयाअंतरिक्षेबहुधाभवंति याःपृथिवींपयसोंदंतिशुक्रास्तान० ३ शिवेनमाचक्षुषापश्यतापःशिवयातनुवोस्पृशतत्वचंमे सर्वाꣳअग्निꣳरप्सुषदोहुवेवोमयिवर्चोबलमोजोनिधत्त ४ पवमानःसुवर्जनः पवित्रेणविचर्षणिः यःपोतासपुनातुमा पुनंतुमादेवजनाः पुनंतुमनवोधिया पुनंतुविश्वआयवः जातवेदःपवित्रवत् पवित्रेणपुनाहिमा शुक्रेणदेवदीद्यत् अग्नेक्रत्वाक्रतूꣳरनु १ यत्तेपवित्रमर्चिषि अग्नेविततमंतरा ब्रह्मतेनपुनीमहे उभाभ्यांदेवसवितः पवित्रेणसवेनच इदंब्रह्मपुनीमहे वैश्वदेवीपुनतीदेव्यागात् यस्यैबह्वीस्तनुवोवीतपृष्ठाः तयामदंतःसधमाद्येषु वयꣳस्यामपतयोरयीणां २ वैश्वानरोरश्मिभिर्मापुनातु वातःप्राणेनेषिरोमयोभूः द्यावापृथिवीपयसापयोभिः ऋतावरीयज्ञियेमापुनीतां बृहद्भिःसवितस्तृभिः वर्षिष्ठैर्देवमन्मभिः अग्नेदक्षैःपुनाहिमा येनदेवाअपुनत येनापोदिव्यंकशः तेनदिव्येनब्रह्मणा ३ इदंब्रह्मपुनीमहे यःपावमानीरध्येति ऋषिभिःसंभृतꣳरसं सर्वꣳसपूतमश्नाति स्वदितंमातरिश्वनापावमानीर्योअध्येति ऋषिभिः संभृतꣳरसं तस्मैसरस्वतीदुहे क्षीरꣳसर्पिर्मधूदकं पावमानीःस्वस्त्ययनीः ४ सुदुघाहिपयस्वतीः ऋषिभिःसंभृतोरसः ब्राह्मणेष्वमृतꣳहितं पावमानीर्दिशंतुनः इमंलोकमथोअमुं कामान्समर्धयंतुनः देवीर्देवैःसमाभृताः पावमानीःस्वस्त्ययनीःसुदुघाहिघृतश्चुतः ऋषिभिः संभृतोरसः ५ ब्राह्मणेष्वमृतꣳहितं येनदेवाःपवित्रेण आत्मानंपुनतेसदा तेनसहस्रधारेण पावमान्यःपुनंतुमा प्राजापत्यंपवित्रं शतोद्यामꣳहिरण्मयं तेनब्रह्मविदोवयं पूतंब्रह्मपुनीमहे इंद्रःसुनीतीसहमापुनातु सोमःस्वस्त्यावरुणःसमीच्या यमोराजाप्रमृणाभिःपुनातुमा जातवेदामूर्जयंत्यापुनातु ६ इत्यनुवाकेनचाभिषिच्यव्याहृतिभिरिदंविष्णुरितिचफलयवदूर्वाःसमर्प्यरक्षोहणमितिदेवहस्तेकंकणंबध्वावाससाच्छाद्यअवतेहेळोउदुत्तममितिजलेधिवासयेत् ॥

अब निर्णयसिंधुमें कही रीतिके अनुसार देवप्रतिष्ठाका प्रयोग कहताहुं.

यजमाननें बारह हाथ आदि परिमाणसें मंडप बनायके आग्नेयीदिशामें अथवा पूर्वदिशामें एक हाथपरिमित कुंड अथवा स्थंडिल बनायके और मध्यभागमें वेदी करके तिस वेदीपर सर्वतोभद्र मंडल करना. ग्रह करनेकी इच्छा होवै तौ पूर्व दिशामें अथवा ईशान्य दिशामें ग्रह स्थापन करनेकी वेदी बनानी. देवताके मंदिरका संस्कार अथवा मंडपका संस्कार करना होवै तौ, नैर्ऋत्य दिशामें वास्तुपीठ बनायके यजमाननें संकल्प करना. सो ऐसा.—“ **अस्यां मूर्तौ लिंगे वा देवतासान्निध्यार्थं दीर्घायुर्लक्ष्मीसर्वकामसमृद्ध्यक्षय्यसुखकामोऽमुकदेवमूर्तिप्रतिष्ठां करिष्ये** ” ऐसा संकल्प करके पुण्याहवाचन और नांदीश्राद्ध किये पीछे आचार्यका वरण करके आठ अथवा चार ऋत्विजोंकों वरके तिन्होंकी पूजा करनी. पीछे आचार्यनें “ **यदत्र०** ” इस मंत्रका पाठ करके पूर्व आदि आठ दिशाओंमें सरसोंके दाने वखेरके “ **आपोहिष्ठा०** ” इन मंत्रोंसें कुशोदककरके पृथिवीपर प्रोक्षण करके “ **देवा आयांतु, यातुधाना अपयांतु, विष्णो देवयजनं रक्षस्व** ” ऐसे वाक्य कहके पृथिवीपर प्रादेश करना. पीछे मंडपकी प्रतिष्ठा करके अथवा कियेविना मूर्तिकों पंचगव्य, सोना, जव, दूर्वा, पीपल, और ढाकके पत्ते ये पदार्थ जलके कलशमें डालके पीछे तिस जलसें स्नान कराना. स्नानके मंत्र—“ **आपोहिष्ठा ऋचा ३, हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकायासुजातःकश्यपोयास्विंद्रः अग्नियागर्भंदधिरेविरूपास्तानआपःशꣳस्योनाभवंतु १ यासाꣳराजावरुणोयातिमध्ये सत्यानृतेअवपश्यंजनानां मधुश्चुतःशुचयोयाःपावकास्ता० २ यासांदेवादिविकृण्वंतिभक्षं याअंतरिक्षेबहुधाभवंति याःपृथिवींपयसोंदंतिशुक्रास्तान० ३ शिवेनमाचक्षुषापश्यतापः शिवयातनुवोपस्पृशतत्वचंमे सर्वाꣳअग्निꣳरप्सुषदोहुवेवोमयिवर्चोबलमोजोनिधत्त ४ पवमानःसुवर्जनः पवित्रेणविचर्षणिः यःपोतासपुनातुमा पुनंतुमादेवजनाः पुनंतुमनवोधिया पुनंतुविश्वआयवः जातवेदःपवित्रवत् पवित्रेणपुनाहिमा शुक्रेणदेवदीद्यत् अग्नेक्रत्वाक्रतूꣳरनु १ यत्तेपवित्रमर्चिषि अग्नेविततमंतरा ब्रह्मतेनपुनीमहे उभाभ्यांदेवसवितः पवित्रेण सवेनच इदंब्रह्मपुनीमहे वैश्वदेवीपुनतीदेव्यागात् यस्यैबह्वीस्तनुवोवीतपृष्ठाः तयामदंतःसधमाद्येषु वयꣳस्यामपतयोरयीणाम् २ वैश्वानरोरश्मिभिर्मापुनातु वातःप्राणेनेषिरोमयोभूः द्यावापृथिवीपयसापयोभिः ऋतावरीयज्ञियेमापुनीतां बृहद्भिःसवितस्तृभिः वर्षिष्ठैर्देवमन्मभिः अग्नेदक्षैःपुनाहिमा येनदेवाअपुनत येनापोदिव्यंकशः तेनदिव्येनब्रह्मणा ३ इदंब्रह्मपुनीमहे यःपावमानीरध्येति ऋषिभिःसंभृतꣳरसं सर्वꣳसपूतमश्नाति स्वदितंमातरिश्वना पावमानीर्योअध्येति ऋषिभिःसंभृतꣳरसं तस्मैसरस्वतीदुहे क्षीरꣳसर्पिमधूदकं पावमानीःस्वस्त्ययनीः ४ सुदुघाहिपयस्वतीः ऋषिभिःसंभृतोरसः ब्राह्मणेष्वमृतꣳहितं पावमानीर्दिशंतुनः इमंलोकमथोअमुं कामान्समर्धयंतुनः देवीर्देवैःसमाभृताः पावमानीःस्वस्त्ययनीः सुदुघाहिघृतश्चुतः ऋषिभिःसंभृतोरसः ५ ब्राह्मणेष्वमृतꣳहितं येनदेवाःपवित्रेण आत्मानंपुनतेसदा तेनसहस्रधारेण पावमान्यःपुनंतुमां प्रजापत्यंपवित्रं शतोद्यामꣳहिरण्मयं तेनब्रह्मविदोवयं पूतंब्रह्मपुनीमहे इंद्रःसुनीतीसहमापुनातु सोमःस्वस्त्याव-**

रुणः समीच्या यमोराजाप्रमृणाभिः पुनातुमा जातवेदामूर्जयंत्यापुनातु " इस अनुवाकसें अभिषेक करके व्याहृति मंत्रसें और " इदंविष्णु० " इस मंत्रसें फल, जव, दूर्वा ये पदार्थ देवताकों अर्पण करने. पीछे " रक्षोहणं० " यह मंत्र कहके देवताके हाथमें कंकण बांधके वस्त्रसें देवताकों आच्छादित करना. पीछे " अवतेहेळो० उदुत्तमं० " इन मंत्रोंकों कहके देवताकों जलमें डुबाके रखना.

अथचलप्रतिष्ठायामग्निंप्रतिष्ठाप्यध्यात्वाग्रहादिपक्षेग्रहान्वास्तुदेवताश्चप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् चक्षुषीआज्येनेत्यंतेग्रहादिहोमपक्षेग्रहानधिदेवतादींश्चसमिच्चर्वाज्येनवास्तुपीठदेवताश्चान्वाधानेउद्दिश्य इंद्रंपृथिवींशर्वंअग्निंअग्निमूर्तिंपशुपतिंयमंयजमानमूर्तिंउग्रंनिर्ऋतिंसूर्यमूर्तिंरुद्रंवरुणंजलमूर्तिंभवंवायुंवायुमूर्तिंईशानंकुबेरंसोममूर्तिंमहादेवंईशानंआकाशंभीमंएताः लोकपालमूर्तिमूर्तिपतिदेवताःपलाशोदुंबराश्वत्थशम्यपामार्गसमिद्भिःआज्याहुतिभिस्तिलाहुतिभिश्चप्रतिदैवतंप्रतिद्रव्यमष्टाष्टसंख्याकाभिःस्थाप्यदेवताममुकां पलाशोदुंबराश्वत्थशम्यपामार्गसमित्तिलचर्वाज्यैः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिसंख्ययावाअग्निर्युजुर्भिरित्यनुवाकेनविश्वान्देवांस्तिलाज्याभ्यांदशदशाहुतिभिः एवंद्वितीयेपर्यायेएताएवदेवतास्तत्तत्संख्याकैस्तैरेवद्रव्यैरेवंतृतीये पर्याये एताएवदेवतास्तत्तत्संख्याकैस्तैरेवद्रव्यैर्ब्रह्मादिमंडलदेवतास्तिलाज्याहुतिभिः प्रतिदैवतंदशदशसंख्याकाभिःशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि शूर्पप्रधानदेवतार्थंतूष्णींचतुरोमुष्टीन्निरूप्यहोमपर्याप्तंगृहीत्वातथैवप्रोक्ष्यगोक्षीरेनीवारचरुंश्रपयेदाज्यभागांतेयजमानः इदमुपकल्पितमन्वाधानोक्तद्रव्यजातमन्वाधानोक्ताहुतिसंख्यापर्याप्तमन्वाधानोक्ताभ्योयक्ष्यमाणाभ्योदेवताभ्योस्तुनममेति त्यागंकुर्यात् गृहसिद्धान्नादिनाग्रहादिहोमंविधाय लोकपालमूर्तिमूर्तिपतिभ्यः समित्पंचकंतिलाज्येचजुहुयात् प्रतिद्रव्यहोमांतेदेवंपादनाभिशिरसिस्पृशेत् आज्यहोमेचोत्तरतःसजलकुंभेसंपातान्नयेत् तेषांमंत्राःइंद्रायेंदोइतींद्रस्यस्योनेतिपृथिवीमूर्तेः अघोरेभ्यइतितत्पतेःशर्वस्य अग्नआयाहीत्यग्नेः अग्निंदूतमित्यग्निमूर्तेः नमःशर्वायचपशुपतयेचेतिपशुपतेः यमायसोममितियमस्य असिहिवीरेतियजमानमूर्तेः स्तुहिश्रुतमितितत्पतेरुग्रस्य असुन्वंतमितिनिर्ऋतेः आकृष्णेनेतिसूर्यमूर्तेः योरुद्रोअग्नावितितत्पतेरुद्रस्य इमंमे० वरुणस्य शन्नोदेवी० जलमूर्तेः नमोभवायचेतिभवस्य आनोनियुद्भिः० वायोःवात आवातु०वायुमूर्तेः तमीशानं० ईशानस्य आप्यायस्व०कुबेरस्य वयंसोम० सोममूर्तेः तत्पुरुषाय० महादेवस्य अभित्वादे० ईशानस्य आदित्प्रत्नस्य० आकाशस्य नमउग्रायचेतिभीमस्य ततःस्थाप्यदेवमंत्रेणसमित्पंचकपायसचरुतिलाज्यहोमः प्रतिद्रव्यहोमांतेदेवेपादनाभिशिरःस्पर्शः देवमंत्रश्चतांत्रिकोमूलमंत्रोदेवगायत्रीवावैदिकोवाग्राह्यः अग्निर्यजुर्भिः सविता स्तोमैः इंद्रउक्थामदैः मित्रावरुणावाशिषा अंगिरसोधिष्ण्यैरंगिभिः मरुतःसदोहविर्धाभ्यां आपःप्रोक्षणीभिः ओषधयोबर्हिषा अदितिर्वेद्या सोमोदीक्षया त्वष्टेध्मेन विष्णुर्यज्ञेन वसवआज्येन आदित्यादक्षिणाभिः विश्वेदेवाऊर्जा पूषास्वगाकारेण बृहस्पतिःपुरोधसा प्रजापतिरुद्गीथेन अंतरिक्षंपवित्रेण वायुःपात्रैः अहꣳश्रद्धयास्वाहेत्यनुवाकेनतिलाज्ययोर्दशदशाहुतयःततोदेवस्यपादौस्पृशेत् संपातजलेनदेवमभिषिंचेत् ॥

अब कर्तव्यविधि.—चलप्रतिष्ठा करनी होवै तौ अग्नि स्थापन करके और अग्निका ध्यान करके ग्रहस्थापन आदि पक्षमें नवग्रह और वास्तुदेवतोंकी स्थापना करके “**चक्षुषी आज्येन**” इस मंत्रसें अन्वाधान करना. इसके पीछे ग्रह आदिका होम करना इस पक्षमें ग्रह और तिन्होंकी अधिदेवता इत्यादिक देवता और समिध, चरु, घृत ये तिन्होंके द्रव्य और वास्तुपीठदेवता इन सबोंका अन्वाधानमें उद्देश करके पीछे “**इंद्रं, पृथिवीं, शर्वं, अग्निं अग्निमूर्तिं पशुपतिं, यमं यजमानमूर्तिं उग्रं निर्ऋतिं सूर्यमूर्तिं रुद्रं वरुणं जलमूर्तिं भवं वायुं वायुमूर्तिं ईशानं कुबेरं सोममूर्तिं महादेवं ईशानं आकाशं भीमं एताः लोकपालमूर्तिमूर्तिपतिदेवताः पलाशोदुंबराश्वत्थशम्यपामार्गसमिद्भिः आज्याहुतिभिस्तिलाहुतिभिश्च प्रतिदैवतं प्रतिद्रव्यमष्टाष्टसंख्याकाभिः स्थाप्यदेवताममुकां पलाशोदुंबराश्वत्थशम्यपामार्गसमित्तिलचर्वाज्यैः प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरसहस्रमष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिसंख्यया वा अग्निर्यजुर्भिरित्यनुवाकेन विश्वान्देवांस्तिलाज्याभ्यां दशदशाहुतिभिः एवं द्वितीये पर्याये एताएवदेवतास्तत्तत्संख्याकैस्तैरेवद्रव्यैरेवं तृतीये पर्याये एताएवदेवतास्तत्तत्संख्याकैस्तैरेवद्रव्यैर्ब्रह्मादिमंडलदेवतास्तिलाज्याहुतिभिः प्रतिदैवतं दशदशसंख्याकाभिः शेषेण स्विष्टकृतमित्यादि**” इस प्रकार अन्वाधान करना. पीछे छाजमें प्रधानदेवताके अर्थ मंत्ररहित चावलोंकी चार मुष्टियोंकों घालके पीछे होमकों चरु पूरा हो सकै इतने ग्रहण करके मंत्ररहित प्रोक्षण करके गौके दूधमें नीवारनामक चावलोंके चरुकों पकाना. आज्यभागपर्यंत कर्म किये पीछे यजमाननें त्यागका उच्चार करना. सो ऐसा—“**इदमुपकल्पितमन्वाधानोक्तद्रव्यजातमन्वाधानोक्ताहुतिसंख्यापर्याप्तमन्वाधानोक्ताभ्यो यक्ष्यमाणाभ्यो देवताभ्योस्तु न मम**” इस प्रकार त्याग किये पीछे घरमें सिद्ध किये अन्न आदिसें ग्रह आदिकोंका होम करके लोकपाल, मूर्ति और मूर्तिपति इन्होंके उद्देशसें ढाक, गूलर, पीपल, जांटी, ऊंगा इन समिधोंका और तिल, और घृतका होम करना. प्रत्येक द्रव्यका होम और घृतहोम किये पीछे देवताके चरण, नाभि, मस्तक इन्होंकों स्पर्श करना. पीछे उत्तरभागमें जो स्थापित किया जलसें भरा कलश, तिसमें संपातोदक डालना. संपातोदक डालनेके मंत्र—“**इंद्रायेंदो०**” यह मंत्र इंद्रका. “**स्योना०**” यह मंत्र पृथिवीकी मूर्तिका है. “**अघोरेभ्यो०**” यह मंत्र तत्पति जो शिव तिसका है. “**अग्नआयाहि०**” यह मंत्र अग्निका है. “**अग्निंदूतं०**” यह मंत्र अग्निकी मूर्तिका है. “**नमः शर्वाय च पशुपतये च**” यह मंत्र पशुपतिका है. “**यमायसोमं०**” यह मंत्र यमका है. “**असिहिवीर०**” यह मंत्र यजमानकी मूर्तिका है. “**स्तुहिश्रुतं०**” यह मंत्र तत्पति जो उग्र तिसका है. “**असुन्वंत०**” यह मंत्र निर्ऋतिका है. “**आकृष्णेन०**” यह मंत्र सूर्यकी मूर्तिका है. “**योरुद्रोअग्नौ०**” यह मंत्र तत्पति जो रुद्र तिसका है. “**इमंमे०**” यह मंत्र वरुणका है. “**शंनोदेवी०**” यह मंत्र जलकी मूर्तिका है. “**नमोभवायच०**” यह मंत्र भवका है. “**आनोनियुद्भिः०**” यह मंत्र वायुका है. “**वातआवातु०**” यह मंत्र वायुकी मूर्तिका है. “**तमीशानं०**” यह मंत्र ईशानकी मूर्तिका है. “**आप्यायस्व०**” यह मंत्र कुबेरका है. “**वयंसोम०**” यह मंत्र सोमकी मूर्तिका है. “**तत्पुरुषाय०**” यह मंत्र महादेवका है. “**अभित्वादे०**” यह मंत्र ईशानका है. “**आदित्प्रत्न०**” यह मंत्र आकाशका है. “**नमउग्रायच०**” यह मंत्र भीमका है.

इस प्रकार तिस तिस देवताके मंत्रसें तिस तिस देवताके संपातोदकके कलशमें डालना. पीछे जो देवता स्थापित करनी होवै तिस देवताके मंत्रसें पांच प्रकारकी, ढाक आदिकी लडकी, खीर, चरु, तिल और घृत इन्होंका होम करना. प्रत्येक द्रव्यका होम किये पीछे देवताके चरण, नाभि और शिर इन्होंकों स्पर्श करना. स्थापित करनेके देवताका मंत्र लेनेका सो तांत्रिक, मूलमंत्र, देवगायत्रीमंत्र अथवा वैदिकमंत्र ग्रहण करना. पीछे "अग्निर्यजुर्भिः सवितास्तोमैः इंद्रउक्थामदैः मित्रावरुणावाशिषा अंगिरसोधिष्ण्यैरंगिभिः मरुतःसदोहविर्धानाभ्यां आपःप्रोक्षणीभिः ओषधयोबर्हिषा अदितिर्वेद्या सोमोदीक्षया त्वष्ट्रेध्मेन विष्णुर्यज्ञेन वसवआज्येन आदित्यादक्षिणाभिः विश्वेदेवाऊर्जा पूषास्वगाकारेण बृहस्पतिःपुरोधसा प्रजापतिरुद्गीथेन अंतरिक्षंपवित्रेण वायुःपात्रैः अहंश्रद्धयास्वाहा" इस प्रकार यह अनुवाक कहके तिलोंकी दश और घृतकी दश आहुति देनीं, और देवताके चरणोंकों स्पर्श करना और संपातोदकसें देवताकों अभिषेक करना.

एवमेवद्वितीयपर्यायेणहुत्वादेवस्यनाभिंस्पृशेत् तृतीयपर्यायेणहुत्वाशिरःस्पृशेत् प्रतिपर्यायंसंपाताभिषेकः एकपर्यायेआहुतिसंख्या पलाशसमिधः १९२ औदुंबर १९२ अश्वत्थ १९२ शमी १९२ अपामार्ग १९२ आज्य १९२ तिल १८२ स्थाप्यदेवस्याष्टाविंशतिपक्षेसमित्पंचकं १४० चर्वाज्यतिलाः ८४ अनुवाक २० मिलिताः १५८८ पर्यायत्रये ४७६४ एवंहुत्वार्चांशोधयेत् देवंनत्वा स्वागतंदेवदेवेशविश्वरूपनमोस्तुते शुद्धेपित्वदधिष्ठानेशुद्धिंकुर्मःसहस्वतामितिप्रार्थ्यउत्तिष्ठब्रह्मणस्पतइतिसर्त्विगुत्थाप्याग्न्युत्तारणंकुर्यात् अग्निः सप्तिमितिसूक्तमग्निपदहीनंपठित्वातत्सहितंपुनःपठेत् एवमष्टशतमष्टाविंशतिवारंवापठन्जलंपातयेत् ततोर्चांद्वादशवारंमृदाजलेनचप्रक्षाल्यमंत्रैःपंचगव्यंकृत्वा पयःपृथिव्यांपयओषधीषुपयोदिव्यंतरिक्षेपयोधाः पयस्वतीःप्रदिशःसंतुमह्यं आवोराजानमितिचसंस्नाप्यआप्यायस्वेतिपंचमंत्रैःपंचामृतेनसंस्नाप्य लिंगंचेन्नमस्तेरुद्रइत्यष्टाभिःसंस्नाप्यघृताभ्यंगमुद्वर्तनमुष्णोदकेनक्षालनंचकृत्वागंधंदत्वासंपातोदकैरभिषिच्य सपल्लवैश्चतुर्भिःकुंभैःक्रमेणापोहिष्ठा०योव० तस्मा०आकलशेषु० इतिसंस्नाप्यसमुद्रज्येष्ठेतिचतसृभिराकलशेष्वितिचमिलितचतुःकुंभैःसंस्नाप्य औदुंबरादिपीठेर्चामुपवेश्यपरितोष्टदिक्षुसजलकुंभेषुगंधपुष्पदूर्वाःक्षिप्त्वाद्यकुंभेसप्तमृदःद्वितीयेपुष्करपर्णशमीविकंकताश्मंतकत्वचः पल्लवांश्चतृतीयेसप्तधान्यं चतुर्थेपंचरत्नं पंचमेफलपुष्पाणि षष्ठेकुशदूर्वालोचनाः सप्तमेसंपातोदकं अष्टमेसर्वौषधीःक्षिप्त्वाक्रमेणापोहिष्ठेतित्रिभिः हिरण्यवर्णाःशुचयइतिचतुर्भिः पवमानानुवाकेनचाभिषिच्य एककुंभेशमीपलाशवटखदिरबिल्वाश्वत्थविकंकतपनसाम्रशिरीषोदुंबराणांपल्लवान्कषायांश्चाक्षिप्त्वाश्वत्थेवइत्यभिषिच्य पंचरत्नोदकेनहिरण्यवर्णाःशुचयइतिसंस्नाप्यवाससीदत्वोपरिवितानंबध्नंतिकेचित्॥

इसही प्रकार दूसरे पर्यायसें होम करके देवताकी नाभीकों स्पर्श करना. तिसरे पर्यासें होम करके देवताके मस्तककों स्पर्श करना. प्रत्येक पर्यायमें संपातोदकसें देवताकों अभिषेक करना. एक पर्यायविषे आहुतियोंकी संख्या–ढाककी समिध १९२, गूलरकी समिध १९२, पीपलवृक्षकी समिध १९२, जांटीकी समिध १९२, ऊंगाकी समिध १९२, घृतकी आ-

हुति १९२, तिलोंकी आहुति १९२, स्थापित करनेके देवताके अठाईस होम करनेकें पक्षमें आहुतियोंकी संख्या ढाक आदि पांच प्रकारकी समिंधोंकी आहुति १४०; चरु, घृत और तिल इन्होंकी प्रत्येक २८ प्रमाणसें ८४, अनुवाक २०, सब मिलके १५८८. तीन पर्याय मिलके आहुति ४७६४, इस प्रकार होम करके मूर्तिकी शुद्धि करनी. देवताकों नमस्कार करके प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—"**स्वागतं देवदेवेश विश्वरूप नमोस्तुते ॥ शुद्धेपि त्वदधिष्ठाने शुद्धिं कुर्मः सहस्वताम्**" इस प्रकार प्रार्थना करके ऋत्विजोंसहवर्तमान आचार्यनें "**उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते०**" इस मंत्रसें देवताकी मूर्तिकों उठायके अभ्युत्तारण करना. सो ऐसा—"**अग्निःसप्तिं०**" यह सूक्त अग्निपदसें हीन पठण करके फिर अग्निपदसहित पठण करना. इस प्रकार एकसौ आठ किंवा अठाईस वार पठण करके जल देवतापर डालना. पीछे माटी और जलसें मूर्तिकों बारहवार धोके समंत्रक पंचगव्यकरके "**पयः पृथिव्यां पयओषधीषु पयो दिव्यंतरिक्षे पयोधाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः संतु मह्यं ॥ आवो राजानं०**" इन मंत्रोंसें स्नान करायके "**आप्यायस्व०**" इस आदि पांच मंत्रोंसें पंचामृतस्नान कराना. लिंग होवै तौ "**नमस्तेरुद्र०**" इन आठ ऋचाओंसें स्नान करायके घृतका अभ्यंग, उटवना लगाके गर्म जलसें स्नान करायके गंध लगायके संपातोदकोंसें अभिषेक करके पत्तोंसहित चार कलशोंसें क्रमकरके "**आपोहिष्ठा० योव० तस्मा० आकलशेषु०**" इन मंत्रोंसें स्नान करायके, पीछे "**समुद्रज्येष्ठा०**" ये चार ऋचा और "**आकलशे०**" यह एक ऋचा मिलके चार कलशोंसें स्नन कराना. पीछे गूलर आदिसें बने हुये पीठपर मूर्तिकों बैठायके देवताके सब तर्फ पूर्व आदि आठ दिशाओंमें जलसें युक्त किये कलशोंकों धरके तिन कलशोंमें गंध, फूल, दूध ये पदार्थ डालके पहले कलशमें सप्तमृत्तिका; दूसरे कलशमें कमलपत्र, जांटीके पत्ते, वेहकल वृक्ष और आपटा वृक्ष इन्होंके छाल और पत्ते; तीसरे कलशमें सप्तधान्य अर्थात् जव, गेहूं, चावल, तिल, कांगनी, सांवा और चना; चौथे कलशमें पंचरत्न अर्थात् सोना, हीरा, नीलम, पन्ना और मोती; पांचमे कलशमें फल और फूल; छठे कलशमें डाभ, दूर्वा, गोरोचन; सातमे कलशमें संपातोदक; आठमे कलशमें सर्वौषधी अर्थात् कूट, वालछड, हलदी, दारुहलदी, मोरमांसी, शिलाजीत, चंदन, वच, चंपा और नागरमोथा इस प्रकार आठ कलशोंमें पदार्थ डालके क्रमसें "**आपोहिष्ठा०**" मंत्र ३ "**हिरण्यवर्णाः शुचयः०**" मंत्र ४ और **पवमानानुवाक** १ इस प्रकार आठ मंत्रोंसें आठ कलशोंके जलसें अभिषेक करके एक कलशमें शमी, पलाश, वट, खदिर, बिल्व, पीपल, विकंकत, फनसवृक्ष, आंबका वृक्ष, सरसीका वृक्ष और गूलर इन्होंके पल्लव और कषाय डालके "**अश्वत्थवो०**" इस मंत्रसें अभिषेक करके पंचरत्नोंके जलसें "**हिरण्यवर्णाःशुचयः०**" इन मंत्रोंसें स्नान करायके देवताकों दो वस्त्र देने. कितनेक जन देवतापर चंदोवा वांधते हैं.

यज्ञोपवीतगंधपुष्पधूपदीपान्दत्वा हिरण्यगर्भः० १ यआत्मदा० २ यःप्राणतो० ३ यस्येमे० ४ येनद्यौ० ५ यंक्रंदसी० ६ आपोहयत्० ७ यश्चिदापो० ८ इत्यष्टौपीठदीपान्दत्वासुवर्णशलाकयातैजसपात्रस्थंमधुघृतंचगृहीत्वाचित्रंदेवाना० तेजोसिशुक्रमस्यमृ

तमसिधामनामासिप्रियंदेवानामनाधृष्टंदेवयजनइतिमंत्राभ्यां ओंनमोभगवतेतुभ्यंशिवायहरयेनमः हिरण्यरेतसेविष्णोविश्वरूपायतेनमइतिचदक्षिणसव्येदेवनेत्रेमंत्रावृत्त्यालिखेत् अंजंतित्वेत्यंजनेनाङ्क्त्वा देवस्यत्वासवितुःप्रसवे० इंद्रस्येंद्रियेणानज्मीतिमध्वाज्यशर्कराभिरङ्क्त्वाअंजनेनपुनरंजयेत् ततआदर्शभक्ष्यादिदर्शयेत् अत्रकर्ताचार्यायगामृत्विग्भ्योदक्षिणांदद्यात् आचार्यःप्रत्यृचमादौप्रणवंवदन्पुरुषसूक्तेनस्तुत्वावंशपात्रस्थपंचवर्णौदनेनदेवंनीराजयित्वा रुद्रायचतुष्पथादौदद्यात् मंत्रस्तुॐनमोरुद्रायसर्वभूताधिपतयेदीप्तशूलधरायोमादयितायविश्वाधिपतयेरुद्रायवैनमोनमः शिवमगर्हितंकर्मास्तुस्वाहेति अश्वत्थपर्णेभूतेभ्योनमइति ॥

पीछे जनेऊ, गंध, फूल, धूप और दीप अर्पण करके "हिरण्यगर्भः० १, यआत्मदा० २, यः प्राणतो० ३, यस्येमे० ४, येनद्यौ० ५, यंक्रंदसी० ६, आपोहयत्० ७, यश्चिदापो० ८," इस प्रकार आठ मंत्रोंसें आठ दीप देवताके पीठपर लगाके सोनाकी शलाईसें धातुके पात्रमेंसें शहद और घृत लेके "चित्रंदेवा०, तेजोसि०" ये दो मंत्र और "ॐ नमोभगवतेतुभ्यंशिवायहरयेनमः ॥ हिरण्यरेतसेविष्णोविश्वरूपायतेनमः" यह मंत्र ऐसे तीन मंत्रोंसें देवताके दाहिने और वाम नेत्रोंपर मंत्रकी आवृत्तिसें लेखन करना. "अंजंतित्वा०" इस मंत्रकों कहके जलसें नेत्र अंकित करके "देवस्यत्वा० इंद्रस्येंद्रियेणानज्मि" इस मंत्रसें शहद, घृत और खांड इन्होंकरके अंकित करके फिर काजल नेत्रमें घालना. पीछे आदर्श दिखाना और भक्ष्य पदार्थ अर्पण करने. इस अर्चामें कर्तानें आचार्यकों गोप्रदान और ऋत्विजोंकों दक्षिणा देनी. आचार्यनें ऋचाऋचाके प्रति प्रथम ॐकारका उच्चार करके पुरुषसूक्तसें स्तुति करके वांशके पात्रमें पांच वर्णका भात घालके तिसकरके देवताकी आरती करके वह अन्न रुद्रके अर्थ चौराहा आदिविषे देना, (रखना.) तिसका मंत्र—"ॐनमोरुद्रायसर्वभूताधिपतयेदीप्तशूलधरायोमादयितायविश्वाधिपतयेरुद्रायवैनमोनमः ॥ शिवमगर्हितंकर्मास्तुस्वाहा." पीपलके पत्तेपर "भूतेभ्योनमः" ऐसा कहके देना.

अथाचार्यः सर्वतोभद्रेदेवताआवाहयेत् मध्येब्रह्माणं पूर्वादिदिक्षुइंद्रादिलोकपालान् ईशानेंद्राद्यंतरालेषुवसून् १ रुद्रान् २ आदित्यान् ३ अश्विनौ ४ विश्वान्देवान् ५ पितॄन् ६ नागान् ७ स्कंदवृषौ ८ ब्रह्मेशानाद्यंतरालेषु दक्षं १ विष्णुं २ दुर्गां ३ स्वधाकारं ४ मृत्युरोगान् ५ समुद्रान्सरितः ६ मरुतः ७ गणपतिं ८ मध्येपृथिवींमेरुंस्थाप्य देवंचावाह्य प्रागादिषु वज्रंशक्तिंदंडंखड्गंपाशंअंकुशंगदांशूलं तद्बाह्येगौतमंभरद्वाजंविश्वामित्रंकश्यपंजमदग्निंवसिष्ठमत्रिंअरुंधतींच तद्बाह्ये नवग्रहान् तद्बाह्येऐंद्रींकौमारींब्राह्मींवाराहींचामुंडांवैष्णवींमाहेश्वरींवैनायकींएतानामभिरावाह्यसंपूज्य प्रतिमायांदेवंतन्मंत्रेणावाह्यमंडलमध्येप्रतिमांसुप्रतिष्ठितोभवेतिनिवेश्य संपूज्यवह्नौमंडलदेवतानांनामभिस्तिलाज्येनदशदशाहुतीर्हुत्वापुष्पांजलिंसमर्प्यनमोमहदितिदेवंनत्वामंडलादुत्तरतः स्वस्तिकेमंचकंतदुपरिशय्यांकृत्वाउत्तिष्ठेतिदेवमुत्थाप्यमंगलघोषैःशय्यायांदेवमुपवेश्य पुरुषसूक्तोत्तरनारायणाभ्यां स्तुत्वादेवेन्यासंकुर्यात् तथाहि पुरुषात्मनेनमः प्राणात्मने० प्रकृतितत्वाय० बुद्धितत्वाय० अहंकारतत्वाय० मनस्तत्वाय० इतिसर्वांगेषु प्रकृतितत्वाय० बुद्धितत्वाय० हृदि शब्दत

त्वाय० शिरसि स्पर्शतत्वाय० त्वचि रूपतत्वाय० हृदि एवंहृद्येवरसगंधश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशसत्वरजस्तमोदेहतत्वानिविन्यसेत् ततः पुरुषसूक्ताद्यंऋक्द्वयंकरयोः तदुत्तरद्वयंजानुनोः तदुत्तरद्वयंकट्योः ततःतिस्रोनाभिहृत्कंठेषु ततोद्वयंबाह्वोः ततोद्वयंनासयोः ततोद्वयमक्ष्णोः अंत्यांशिरसि ततःसुखशायीभवेतिशय्यायांदेवंस्वापयित्वामंडलशय्ययोरंतरानगंतव्यमितिप्रैषंदत्वा स्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यमंडलदेवताभ्योनामभिश्चरुणाबलीन्दद्यात् नीवारचरुशेषेणदिग्बलिं ततोधामंतइतिपूर्णाहुतिं जुहुयात् इत्यधिवासनं ॥

इसके अनंतर आचार्यनें सर्वतोभद्रमंडलमें देवताका आवाहन करना. सो ऐसा.—"मध्यभागमें ब्रह्माजी; पूर्व आदि आठ दिशाओंमें इंद्र आदि आठ लोकपाल; ईशान, इंद्र इत्यादिक जो आठ हैं तिन्होंके मध्यभागमें वसु, रुद्र, आदित्य, दोनों अश्विनीकुमार, विश्वेदेवता, पितर, नाग, और स्कंदवृष, ब्रह्मा, ईशान इन आदिकोंके जो आठ मध्यप्रदेश हैं तिन्होंके स्थानमें, दक्ष, विष्णु, दुर्गा, स्वधाकार, मृत्यु, रोग, समुद्र, सरित्, मरुत्, गणपति, मध्यभागमें पृथिवी, मेरु और स्थाप्यदेव इस प्रकार आवाहन करके पूर्व आदि आठ दिशाओंमें वज्र, शक्ति, दंड, तलवार, पाश, अंकुश, गदा और शूल इन्होंकी स्थापना करनी. तिन्होंके बाहिरके प्रदेशमें गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, कश्यप, जमदग्नि, वसिष्ठ, अत्रि और अरुंधती इन्होंकी स्थापना करनी. तिन्होंके बाहिरके प्रदेशमें नवग्रहोंकी स्थापना करनी. तिसके बाहिरके प्रदेशमें ऐंद्री, कौमारी, ब्राह्मी, वाराही, चामुंडा, वैष्णवी, माहेश्वरी और वैनायकी इन्होंका नाममंत्रसें आवाहन करके पूजा करनी. पीछे मूर्तिमें देवताका आवाहन तिस तिस देवताके मंत्रसें करके तिस मूर्तिकों मंडलके मध्यभागमें "सुप्रतिष्ठितो भव" ऐसा कहके स्थापित करनी, और तिसकी पूजा करके मंडलदेवताके नाममंत्रोंसें तिल और घृत यह प्रत्येक द्रव्यकी दश दश आहुतियोंकरके अग्निमें होम करना. पीछे देवताकों पुष्पांजलि समर्पण करके "नमोमहत्०" इस मंत्रसें देवताकों नमस्कार करके मंडलके उत्तरप्रदेशमें स्वस्तिकपर मंचककों स्थापित करके तिस मंचकपर शय्या बनायके "उत्तिष्ठब्र०" यह मंत्र कहके देवताकों उठाय मंगलवाद्योंके शब्दोंसें देवताकों तिस शय्यापर बैठाना. पीछे पुरुषसूक्त और उत्तरनारायण इन्होंसें देवताकी स्तुति करके देवताविषे न्यास करना. सो ऐसा.—"पुरुषात्मने नमः, प्राणात्मने०, प्रकृतितत्वाय०, बुद्धितत्वाय०, अहंकारतत्वाय०, मनस्तत्वाय०" इस प्रकार सब अंगोंमें न्यास करके "प्रकृतितत्वाय०, बुद्धितत्वाय० हृदि, शब्दतत्वाय० शिरसि, स्पर्शतत्वाय० त्वचि, रूपतत्वाय० हृदि," इस प्रकार न्यास करके हृदयके स्थानमें "रस, गंध, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जीभ, नासिका, वाणी, हाथ, पैर, गुदा, लिंग, पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, सत्व, रज, तम," इन देहतत्वोंका न्यास करना. पीछे पुरुषसूक्तका न्यास करना. सो ऐसा—पहली दो ऋचाओंका दाहिने वामे हाथमें न्यास करना. तिन्होंसें आगली दो ऋचाओंसें दाहिने वामे गोडेपर न्यास करना. तिन्होंसें आगली दो ऋचाओंसें दाहिनी वाम तर्फकी कटिपर न्यास करना. तिन्होंसें आगली तीन ऋचाओंका नाभि, हृदय और कंठ इन्होंके स्थानमें न्यास करना. तिन्होंसें आगली दो ऋचाओंसें दाहिने वाम बाहुपर न्यास करना.

तिन्होंसें आगली दो ऋचाओंका दोनों नासिकाओंके छिद्रोंमें न्यास करना. तिन्होंसें आगली दो ऋचाओंका दाहिने वाम नेत्रपर न्यास करना. अन्तकी एक ऋचासें मस्तकपर न्यास करना. इस प्रकार न्यास किये पीछे "**सुखशायीभव**" ऐसा कहके शय्यापर देवताकों शयन करवायके मंडल और शय्याके बीचमांहसें गमन नहीं करना ऐसा कहके स्विष्टकृत् आदि होमशेष समाप्त करके मंडलदेवतोंकों नाममंत्रोंसें भातके बलि देने. नीवारसंज्ञक चरुशेषसें दिग्बली देना. पीछे "**धामंते०**" इस मंत्रसें पूर्णाहुतिहोम करना. इस प्रकार अधिवासनका प्रयोग कहा.

अथस्थिरार्चायांक्रमोविशेषश्च संकल्पादिजलाधिवासांतंकृत्वादेवंनत्वास्वागतंदेवदेवेशेत्यादिप्रार्थनोत्थापनाग्न्युत्तारणादिनेत्रोन्मीलनांतंपूर्ववत् तत्रस्थिरेशिवलिंगेस्वर्णसूच्यागंधेन ॐनमोभगवतेरुद्रायहिरण्यरेतसेपरायपरमात्मनेविश्वरूपायोमाप्रियायनमइत्युक्त्वा अंजनादिनांजयेदितिनेत्रोन्मीलनेलिंगेविशेषः ततःसूक्तस्तुत्यादिमंडलदेवतास्थापनांतं ततोमंडलेमूर्तिनिवेशस्ततःशय्यायांदेवतारोहणंततःस्तुतिःपूर्वोक्तन्यासः ततःशय्यायांदेवशयनं ततोग्निस्थापनादि पूर्वोक्तान्वाधानेविष्णौनारायणंषोडशाज्याहुतिभिः शिवश्चेत्यातइषुःद्रापेसहस्राणीत्यनुवाकस्थऋग्भीरुद्रमाज्येनेतिप्रधानोत्तरमूहइतिविशेषः लोकपालमूर्तिमूर्तिपतिहोमांतं पूर्ववत् स्थाप्यदेवताहोमेनैवारश्चरुर्नास्ति सप्तैवहवींषि ततश्चविष्णोःस्थिरार्चायांपूर्वोक्तसमित्तिलाज्यहोमोत्तरंपुरुषसूक्तेनप्रत्यृचमाज्यंहुत्वाइदंविष्णुरितिपादौस्पृष्ट्वापुनस्ताएवहुत्वाअतोदेवेतिशिरःस्पृष्ट्वा पुनस्ताएवहुत्वापुरुषसूक्तेनसर्वांगंस्पृशेत् स्थिरंलिंगंचेत्समिदाज्यतिलहोमांतेयातइषुइत्यनुवाकांतेनद्रापेइतिसहस्राणीत्यनुवाकाभ्यांचप्रत्यृचमाज्यंहुत्वा सर्वोवैरुद्रइतिमूलं स्पृशेत् पुनस्ताएवहुत्वाकद्रुद्रायेतिमध्यंपुनस्ताएवहुत्वानमोहिरण्यबाहवइत्यग्रंस्पृशेत् पुनस्ताएवहुत्वा सर्वरुद्रेणसर्वांगंस्पृशेत् इत्यधिवासनेविशेषः ॥

अब स्थिरप्रतिष्ठाके विषयमें अनुष्ठानक्रम और विशेष कहताहुं.

संकल्प आदिसें जलाधिवासपर्यंत कर्म करके "**स्वागतं देवदेवेश०**" इत्यादिक प्रार्थना, उत्थापन, अग्न्युत्तारण इत्यादिक नेत्रोन्मीलनपर्यंत कर्म पहलेकी तरह करना. तिसमें स्थिर जो शिवलिंग तिसके विषयमें सोनाकी शलाईसें गंध लेके तिस गंधसें "**ओंनमोभगवते रुद्राय हिरण्यरेतसे पराय परमात्मने विश्वरूपायोमाप्रियाय नमः**" ऐसा मंत्र कहके काजल आदिसें नेत्र चिन्हित करने. इतना नेत्रोन्मीलनका लिंगविषयमें विशेष जानना. पीछे पुरुषसूक्तसें स्तुति आदिक मंडलदेवतास्थापनपर्यंत कर्म किये पीछे मंडलके स्थानमें मूर्तिकों स्थापित करना. और पीछे शय्यापर देवताकों स्थापित करके पीछे स्तुति और पूर्वकी तरह न्यास करने. पीछे शय्यापर देवताकों शयन कराना, पीछे अग्निस्थापन आदि करना. पूर्व कहा अन्वाधान करनेके समयमें विष्णु देवता होवै तौ "**नारायणं षोडशाज्याहुतिभिः**" और शिव देवता होवै तौ, "**यात इषुः० द्रापे० सहस्राणीत्यनुवाकस्थऋग्भीरुद्रमाज्येन**" ऐसा प्रधानदेवताके पीछे अन्वाधानमें उच्चार करना, इतना विशेष जानना. लोकपालमूर्ति और मूर्तिपति इन्होंके होमपर्यंत कर्म पहलेकी तरह करना. स्थाप्यदेवताके होमके स्थानमें नीवारसंज्ञक चावलोंका चरु नहीं करना. सातही होमद्रव्य लेने. पीछे विष्णुकी स्थिर प्रतिष्ठामें

पूर्वोक्त ऐसा समिध, तिल और घृत इन्होंका होम किये पीछे पुरुषसूक्तकी प्रत्येक ऋचासें घृतका होम करके “ इदं विष्णु० ” यह मंत्र कहके देवताके चरणोंकों स्पर्श करके फिर तिसही पुरुषसूक्तकी ऋचाओंसें होम करके “ अतोदेवा० ” यह मंत्र कहके देवताके मस्तककों स्पर्श करके फिर तिनही ऋचाओंसें होम करके और पुरुषसूक्त कहके सब अंगोंकों स्पर्श करना. स्थिरलिंगकी प्रतिष्ठा करनी होवै तौ समिधा, घृत और तिल इन्होंका होम किये पीछे “ यात इषुः० ” यह अनुवाक, “ द्रापे० ” यह अनुवाक और “ सहस्राणि० ” यह अनुवाक ऐसे तीन अनुवाकोंकी प्रत्येक ऋचासें घृतका होम करके “ सर्वो वैरु० ” इस मंत्रसें लिंगके मूलकों स्पर्श करना. फिर तिनही ऋचाओंसें होम करके “ कद्रुद्राय० ” इस मंत्रसें लिंगके मध्यभागकों स्पर्श करना. पीछे फिर तिनही ऋचाओंसें होम करके “नमो हिरण्यबाहवे०” इस अनुवाकसें लिंगके अग्रभागकों स्पर्श करना. पीछे फिर तिनही ऋचाओंसें होम करके रुद्रका सब पाठ करके सब अंगोंकों स्पर्श करना. इस प्रकार अधिवासनका विशेष जानना.

परेद्युःपीठिकांस्नापयित्वामहीमूष्वित्यावाह्यअदितिर्द्यौरितिस्तुत्वा ह्रींनमइतिसंपूज्य तेनैवपूर्णाहुतिंहुत्वाउत्तिष्ठब्रह्मणइतिदेवमुत्थाप्यपुष्पांजलिंदत्वापुरुषसूक्तेनस्तुत्वाउदुत्यमित्युत्थाप्यकनिक्रददितिसूक्तेनविष्णुंसद्योजातमितिपंचानुवाकैर्लिंगंगृहंप्रवेश्य पीठिकायामिंद्रादिनामभिरष्टरत्नानिक्षिप्त्वासप्तधान्यरौप्यमनःशिलाःक्षिप्त्वा पायसेनसंलिप्यप्रणवेनांगन्यासंकृत्वा सुवर्णशलाकामंतरितांकृत्वा सुलग्नेप्रतितिष्ठपरमेश्वरेतिउक्त्वातोदेवेतिविष्णुंरुद्रेणलिंगंच स्थापयेत् ततश्चरुहोमप्राणप्रतिष्ठादिततःस्थिरार्चायामधिवासनेपरेद्युःकृत्येचविशेषोन्यत्सर्वमुक्तवक्ष्यमाणचलार्चावदेव ॥

दूसरे दिन पीठिकाकों स्नान करायके “ महीमूषु० ” यह मंत्र कहके और आवाहन करके “ अदितिर्द्यौ० ” इस मंत्रसें स्तुति करके “ ह्रीं नमः ” इस मंत्रसें पूजा करके तिसही मंत्रसें पूर्णाहुतिहोम करके “ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पते० ” इस मंत्रसें देवताकों उठाय पुष्पांजलि देके पुरुषसूक्तसें स्तुति करके “ उदुत्यं० ” इस मंत्रसें देवताकों उठाय “ कनिक्रद० ” इस सूक्तसें विष्णुकी मूर्तिका और “ सद्योजातं० ” इन पांच अनुवाकोंसें लिंगका घरमें प्रवेश करायके पीठपर इंद्र आदि नामोंसें आठ रत्नोंकों घालके सात अन्न, चांदी, मनशील ये पदार्थ घालके खीरसें लिप्त करके ॐकारमंत्रसें अंगन्यास करके सोनाकी शलाई मध्यमें घालके “ सुलग्ने प्रतितिष्ठ परमेश्वर ” ऐसा वाक्य कहके “ अतो देवा० ” इस सूक्तसें विष्णुकी और रुद्रसें शिवके लिंगकी स्थापना करनी. पीछे चरुहोम, प्राणप्रतिष्ठा इस आदि कर्म करने. पीछे स्थिरप्रतिष्ठामें अधिवासनके मध्यविषे और दूसरे दिनके कृत्यके मध्यमें जो विशेष प्रकार और अन्य सब कर्म पूर्वोक्त रीतिसें और आगे कहनेकी जो चलप्रतिष्ठा है तिसकी तरह करना.

अथचलप्रतिष्ठायामधिवासनांतेपरेद्युरेकाहपक्षेसद्योवाउत्तिष्ठब्रह्मणइतिदेवमुत्थाप्यपुरुषं सूक्तोत्तरनारायणाभ्यांस्तूयात् ॥

पीछे चलप्रतिष्ठामें अधिवासन किये पीछे दूसरे दिनमें, अथवा एकाह अर्थात् एक दिनका पक्ष होवै तब तत्कालमें " उत्तिष्ठब्रह्मणस्पते० " इस मंत्रसें देवताकों उठायके पुरुषसूक्त और उत्तरनारायण इन्होंसें स्तुति करनी.

अथप्रायःस्थिरचलार्चयोःसाधारणःप्रयोगः प्रतिष्ठांगंपरेद्युर्होमंकरिष्यइतिसंकल्प्यचक्षुषीआज्येनेत्यंतेस्थाप्यदेवंतन्मंत्रेण घृतपक्वव्रीहिचरुणादशाहुतिभिरग्निसोमंधन्वंतरिंकुहूमनुमतिंप्रजापतिंपरमेष्ठिनंब्रह्माणमग्निंसोमंअग्निमन्नादंअग्निमन्नपतिंप्रजापतिंविश्वान्देवान्सर्वान्देवानग्निंस्विष्टकृतंपूजांगहोमेविष्णुश्चेत्संकर्षणादिद्वादशदेवताःशार्ङ्गिणंश्रियंसरस्वतींविष्णुंकृसरेणैकैकयाहुत्याविष्णुंषड्वारंकृसरेण शिवश्चेद्भवंशर्वंईशानंपशुपतिंरुद्रमुग्रंभीमंमहांतंकृसरेणैकैकया भवस्यदेवस्यपत्नीमित्याद्यष्टौगुडौदनेनैकैकया० भवस्यदेवस्यसुतमित्यादि ८ हरिद्रोदनेएकै० रुद्रंसप्तदशवारंशिवंशंकरं सहमानंशितिकंठंकपर्दिनंताम्रमरुणमपगुरमाणंहिरण्यबाहुंसस्पिंजरंबभ्लुशंहिरण्यमेताःकृसरेणैकैकया० शेषेणस्विकृतमित्यादि शूर्पेतूष्णींस्थाप्यदेवतायैचतुर्मुष्टीनग्न्यादिषोडशदेवताभ्योनाम्नाचतुश्चतुर्मुष्टीन्निरूप्यतथैवप्रोक्ष्यसघृतजलेश्रपयित्वा स्रुच्यावदानधर्मेणस्थाप्यदेवमंत्रेणदशदशाहुतीर्हुत्वानामभिर्जुहुयात् अग्नयेस्वाहा १ सोमाय० २ धन्वंतरये० ३ कुह्वै० ४ अनुमत्यै० ५ प्रजापतये० ६ परमेष्ठिने० ७ ब्रह्मणे० ८ अग्नये० ९ सोमाय० १० अग्नयेन्नादाय० ११ अग्नयेन्नपतये० १२ प्रजापतये० १३ विश्वेभ्योदेवेभ्यः० १४ सर्वेभ्योदेवेभ्यः० १५ भूर्भुवःस्वरग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा १६ इति सप्ततेअग्नेसमिधःसप्तजिह्वाःसप्तऋषयःसप्तधामप्रियाणि सप्तहोत्राःसप्तधात्वायजंतिसप्तयोनीरापृणस्वाघृतेन पुनस्त्वादित्यारुद्रावसवःसमिंधतांपुनर्ब्रह्माणोवसुनीथयज्ञैः घृतेनत्वंतन्वंवर्धयस्वसत्याःसंतुयजमानस्यकामाइतिमंत्रभ्यांपूर्णाहुतिंकृत्वाचार्यो याओषधीरितिपुष्पफलसर्वौषधीःसमर्प्यसंपातोदकंताम्रपात्रेआदायदेवमंत्रेणशतवारमभिमंत्र्यतेनदेवशिरसिसिंचेत् ततउत्तिष्ठब्रह्मणइतिदेवमुत्थाप्याविश्वतश्चक्षुरित्युपतिष्ठेत् एतेउत्थापनोपस्थानेचलार्चायामेव एवंध्यात्वाजपेत् ब्रह्मणेनमःविष्णवेनमःरुद्राय० इंद्रादीनष्टौ० ८ वसुभ्यो० रुद्रेभ्यो० आदित्येभ्यो० अश्विभ्यां० मरुद्भ्यो० कुबेराय० गंगादिमहानदीभ्यो० अग्नीषोमाभ्यां० इंद्राग्निभ्यां० द्यावापृथिवीभ्यां० धन्वंतरये० सर्वेशाय० विश्वेभ्योदेवेभ्यो० ब्रह्मणइति ततःसंपातोदकेनयजमानाभिषेकः देवंध्यात्वाप्रतितिष्ठपरमेश्वरेतिपुष्पांजलिंदत्वासच्चिदानंदंब्रह्मैवभक्तानुग्रहायगृहीतविग्रहं स्वायुधाढ्यंनिजवाहनाद्युपेतंनिजहृत्कमलेवस्थितंसर्वलोकसाक्षिणमणीयांसंपरमेष्ठ्यसिपरमांश्रियंगमयेतिमंत्रेण पुष्पांजलावागतंविभाव्यार्चायांविन्यस्यप्राणप्रतिष्ठांकुर्यात् यथा अस्यश्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्यब्रह्माविष्णुरुद्राऋषयः ऋग्यजुःसामानिछंदांसि क्रियामयवपुःप्राणाख्यदेवता आंबीजं क्रौंशक्तिःप्राणप्रतिष्ठायांविनियोगः ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्योनमःशिरसि ऋग्यजुःसामछंदोभ्यो० मुखे प्राणाख्यदेवतायै० हृदि आंबीजाय० गुह्ये क्रौंशक्त्यै पादयोः ॐकंखंगंघंङंअंपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मनेआं हृदयाय० ॐचंछंजंझंञंइंशब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मनेईंशिरसेस्वाहा ॐ टंठंडंढंणंउंश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मनेऊंशिखायैवषट् ॐतंथंदंधंनंएंवाक्पाणिपादपायूपस्थात्मनेऐंकवचायहुं

ॐपंफंबंभंमंॐवचनादानविहरणोत्सर्गानंदात्मनेऔंनेत्रत्रयायवौषट् ॐयंरंलंवंशंषंसंहंक्षंअं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मनेअः अस्त्रायफट्एवमात्मनिदेवेचकृत्वादेवंस्पृष्ट्वाजपेत् ॐआंह्रींक्रौं यंरंलंवंशंषंसंहंसः देवस्यप्राणाइहप्राणाः ॐ आँह्रीं० हंसःदेवस्यजीवइहस्थितः ॐ आंह्रीं० हंसःदेवस्य सर्वेंद्रियाणि० ॐआंह्रीं० हंसः देवस्यवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणाइहागत्यस्वस्तयेसुखेनसुचिरंतिष्ठंतुस्वाहा अर्चाहृद्यंगुष्ठंदत्वाजपेत् अस्यैप्राणाः प्रतिष्ठंतु अस्यैप्राणाःक्षरंतुच अस्यैदेवत्वमर्चायैमामहेतिचकश्चन प्रणवेनसंरुध्यसजीवंध्यात्वाध्रुवा द्यौरितित्यृचंजप्त्वाकर्णेगायत्रींदेवमंत्रंचजप्त्वापुरुषसूक्तेनोपस्थाय पादनाभिशिरःस्पृष्ट्वा इहैवैधीतितिर्जपेत् ततःकर्ता स्वागतंदेवदेवेशमद्भाग्यात्त्वमिहागतः प्राकृतंत्वमदृष्ट्वामांबालवत्परिपालय धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थंस्थिरोभवशिवायनः सान्निध्यंतुतदादेवस्वार्चायापरिकल्पय यावच्चंद्रावनीसूर्यास्तिष्ठंत्यप्रतिघातिनः तावत्त्वयात्रदेवेशस्थेयंभक्तानुकंपया भगवन्देवदेवेशत्वंपितासर्वदेहिनां येनरूपेणभगवंस्त्वयाव्याप्तंचराचरं तेनरूपेणदेवेशस्वार्चायांसन्निधौभवेतिनमेत् ॥

अब बहुधा स्थिरप्रतिष्ठा और चलप्रतिष्ठाका साधारण प्रयोग कहताहुं.

"प्रतिष्ठांगं परेद्युर्होमं करिष्ये," ऐसा संकल्प करके अन्वाधान करना. सो ऐसा—"चक्षुषीआज्येनेत्यंतेस्थाप्यदेवं तन्मंत्रेणघृतपक्वव्रीहिचरुणादशाहुतिभिरग्निंसोमंधन्वंतरिंकुहूमनुमतिं प्रजापतिंपरमेष्ठिनंब्रह्माणमग्निंसोमंअग्निमन्नादंअग्निमन्नपतिंप्रजापतिंविश्वान्देवान्सर्वान्देवान्अग्निंस्विष्टकृतं." विष्णु देवता होवै तौ पूजांगहोमके मध्यमें "संकर्षणादिद्वादशदेवताःशार्ङ्गिणंश्रियंसरस्वतींविष्णुंकृसरेणैकैकयाहुत्याविष्णुंषड्वारंकृसरेण." शिव देवता होवै तौ "भवंशर्वंईशानंपशुपतिंरुद्रमुग्रंभीमंमहांतं कृसरेणैकैकयाहुत्या भवस्यदेवस्यपत्नीमित्याद्यष्टौगुडौदनेनैकैकया० भवस्यदेवस्यसुतमित्याद्यष्टौ हरिद्रौदनेनएकै० रुद्रंसप्तदशवारंशिवंशंकरंसहमानंशितिकंठंकपर्दिनंताम्रमरुणमपगुरमाणंहिरण्यबाहुंसस्पिंजरंबभ्लुशंहिरण्यमेताःकृसरेणैकैकया० शेषेणस्विष्टकृतमित्यादि," इस प्रकार अन्वाधान करना. आजके मध्यमें स्थाप्यदेवताके अर्थ मंत्ररहित चार मुष्टि और अग्नि आदि सोलह देवतोंके अर्थ तिस तिस देवताके नामसें चार चार मुष्टि चावलोंकों लेके, तैसेही प्रत्येक देवताके नामसें प्रोक्षण करके घृतयुक्त जलसें चरु सिजायके स्रुचीकरके आहुतिके नियमके प्रमाणसें स्थाप्यदेवताके मंत्रकरके दश आहुति देके नाममंत्रोंसें होम करना. सो ऐसा—"अग्नयेस्वाहा १, सोमाय० २, धन्वंतरये० ३, कुह्वै० ४, अनुमत्यै० ५, प्रजापतये० ६, परमेष्ठिने० ७, ब्रह्मणे० ८, अग्नये० ९, सोमाय० १०, अग्नयेऽन्नादाय० ११, अग्नयेऽन्नपतये० १२, प्रजापतये० १३, विश्वेभ्योदेवेभ्यः० १४, सर्वेभ्योदेवेभ्यः० १५, भूर्भुवःस्वरग्नये स्विष्टकृते स्वाहा १६," इस प्रकार नाममंत्रोंसें होम करना. "सप्तते अग्ने० १, पुनस्त्वादित्या० " इन दो मंत्रोंसें पूर्णाहुतिहोम करके आचार्यनें "या ओषधी० " इस मंत्रसें फूल, फल और सर्वौषधी इन्होंकों समर्पण करके संपातोदक तांबाके पात्रमें लेके वह जल

देवताके मंत्रसें १०० वार अभिमंत्रित करके वह तिस मंत्रसें देवताके मस्तकपर सिंचन करना. पीछे—“ उत्तिष्ठ ब्रह्मण० ” इस मंत्रसें देवताकों उठायके “ विश्वतश्चक्षु० ” इस मंत्रसें उपस्थान करना. उत्थापन और उपस्थान ये चलप्रतिष्ठा होवै तौही करना. इस प्रकार ध्यान करके जप करना. सो ऐसा—“ ब्रह्मणे नमः, विष्णवे नमः, रुद्राय०, इंद्राय०, अग्नये०, यमाय०, निर्ऋतये०, वरुणाय०, वायवे०, सोमाय०, ईशानाय०, वसुभ्यो०, रुद्रेभ्यो०, आदित्येभ्यो०, अश्विभ्यां०, मरुद्भ्यो०, कुबेराय०, गंगादिमहानदीभ्यो०, अग्निषोमाभ्यां०, इंद्राग्निभ्यां०, द्यावापृथिवीभ्यां०, धन्वंतरये०, सर्वेशाय०, विश्वेभ्योदेवेभ्यो०, ब्रह्मणे० ” इस प्रकार जप किये पीछे संपातोदकसें यजमानपर अभिषेक करना. पीछे देवताका ध्यान करके “ प्रतितिष्ठ परमेश्वर. ” ऐसा कहके पुष्पांजलि समर्पण करके हाथमें फूल लेके अंजलि करनी. पीछे “सच्चिदानंदं ब्रह्मैव भक्तानुग्रहाय गृहीतविग्रहं स्वायुधाढ्यं निजवाहनाद्युपेतं निजहृत्कमलेऽवस्थितं सर्वलोकसाक्षिणमणीयांसं परमेष्ठ्यसि परमां श्रियं गमय ” इस प्रकार मंत्र कहके पुष्पांजलिके मध्यमें देव आये ऐसी भावना करके वे पुष्प मूर्तिपर समर्पण करके प्राणप्रतिष्ठा करनी. सो ऐसी—“अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः ॥ ऋग्यजुःसमानि छंदांसि ॥ क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता आं बीजं क्रौं शक्तिः प्राणप्रतिष्ठायांविनियोगः ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्योनमः शिरसि ऋग्यजुःसामछंदोभ्यो० मुखे ॥ प्राणाख्यदेवतायै० हृदि ॥ आंबीजाय० गुह्ये ॥ क्रौंशक्त्यै० पादयोः ॐ कंखंगंघंङंअंपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आंहृदयाय० ॐ चंछंजंझंञंइं शब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मने ई शिरसे स्वाहा ॥ ॐ टंठंडंढंणं उं श्रोत्रत्वकूचक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं शिखायैवषट् ॥ ॐ तंथंदंधंनं एं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचायहुं ॥ ॐ पंफंबंभंमं ॐ वचनादानविहरणोत्सर्गानंदात्मने ॐ नेत्रत्रयायवौषट् ॥ ॐ यंरंलंवंशंषंसंहंक्षं अं मनोबुद्ध्यहंकारचित्तात्मने अः अस्त्रायफट्.” इस प्रकार अपने शरीरमें और देवताके शरीरमें न्यास करके देवताकों स्पर्श करके आगे कहताहुं तैसा जप करना. सो ऐसा—“ॐ आंह्रींक्रौंअंयंरंलंवंशंषंसंहंसः देवस्य प्राणा इह प्राणाः ॥ ॐ आंह्रीं० हंसः देवस्य जीव इह स्थितः ॐ आंह्रीं० हंसः देवस्य सर्वेंद्रियाणि० ॐ आंह्रीं० हंसः देवस्य वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहागत्य स्वस्तये सुखेन सुचिरं तिष्ठंतु स्वाहा ” इस प्रकार जप किये पीछे मूर्तिके हृदयपर अंगूठाकों रखके जप करना. सो ऐसा—“अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठंतु अस्यै प्राणाः क्षरंतु च ॥ अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेतिच कश्चन ” इस प्रकार जप करके ओंकारसें वायुकों रोकके सजीव ऐसा ध्यान करके “ ध्रुवाद्यौ० ” इस ऋचाका जप करके देवताके कानमें गायत्री और देवमंत्रका जप करके पुरुषसूक्तसें स्तुति करके देवताके चरण, नाभि और मस्तक इन्होंकों स्पर्श करके “ इहैवैधि० ” इस मंत्रका तीन वार जप करना. पीछे कर्तानें “स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वामां बालवत् परिपालय ॥ धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थं स्थिरो भव शिवाय नः ॥ सान्निध्यं तु तदा देव स्वार्चायां परिकल्पय ॥ यावच्चंद्रावनीसूर्यास्तिष्ठंत्यप्रतिघातिनः ॥ तावत्त्वयात्र देवेश स्थेयं भक्तानुकंपया ॥ भगवन् देवदेवेश त्वं पिता सर्व-

देहिनाम् ॥ येन रूपेण भगवन् त्वया व्याप्तं चराचरम् ॥ तेन रूपेण देवेश स्वार्चायां सन्निधौ भव ” ये मंत्र कहके नमस्कार करना.

अथाचार्यःकर्तावालिंगमर्चांवाभूःपुरुषमावाहयामि भुवःपुरुषमा०स्वःपुरुष० भूर्भुवःस्वः पुरुष० इत्यावाह्यप्रणवेनासनंदत्वादूर्वाश्यामाकविष्णुक्रांतापद्ममिश्रंपाद्यंॐइमाआपःशिवतमाःपूताःपूततमामेध्यामेध्यतमाअमृताअमृतरसाःपाद्यास्ताजुषतांप्रतिगृह्यतां प्रतिगृण्हातुभवान्महाविष्णुर्विष्णवेनमइतिपाद्यं भगवान्महादेवोरुद्रायनमइतिलिंगे एवंदेवतांतरेषूह्यंइमाआपःशिव० आचमनीयास्ताजुषतांप्रतिगृह्य० इमाआ० अर्घ्यास्ताइत्यर्घ्यं पंचामृतस्नानंदेवमंत्रैःसंस्नाप्यइदंविष्णुरितिविष्णौनमोअस्तुनीलग्रीवायेतिलिंगेकंकणंविसृज्यवस्त्रंयज्ञोपवीतंचदत्वा इमेगंधाःशुभादिव्याःसर्वगंधैरलंकृताः पूताब्रह्मपवित्रेणपूताःसूर्यस्यरश्मिभिः पूताइत्यादिपूर्ववदितिगंधं इमेमाल्याःशुभादिव्याःसर्वमाल्यैरलंकृताः पूताइत्यादिइतिमालाः इमेपुष्पाइतिपुष्पं वनस्पतिरसोधूपो० धूपोयंप्रतिगृह्यतांप्रतिगृण्हातुभवानित्यादिज्योतिःशुक्रंच तेजश्चदेवानांसततंप्रियं प्रभाकरःसर्वभूतानांदीपो०तां प्रतिगृण्हातुभवानितिदीपंदत्वाविष्णौ संकर्षणादिद्वादशनामभिःपुष्पाणिसमर्प्य तैरेवतर्पणंकृत्वापायसगुडौदनचित्रौदनानिपवित्रं तेविततमितिनिवेद्यसंकर्षणादिनामभिर्द्वादशगृहसिद्धान्नकृसराहुतीर्हुत्वा कृसरेणैवशार्ङ्गिणे० श्रियै० सरस्वत्यै० विष्णवे० इतिहुत्वा विष्णोर्नुकं० तदस्यप्रियम० प्रतद्विष्णु० परोमात्राया० विचक्रमे० त्रिर्देवः पृथिवीं० इतिमंत्रैःषट्जुहुयात् लिंगेतुदीपांतंकृत्वाभवाय देवाय० शर्वायदेवाय० ईशानायदेवाय० पशुपतयेदेवा० रुद्रायदेवा० उग्रायदेवाय० भीमायदेवाय० महतेदेवायनमइतिपुष्पाणिदत्वातैरेवतर्पणंकृत्वापवित्रंतेइतिपायसंगुडौदनंचानिवेद्यभवायदेवायस्वाहेत्याद्यष्टभिःकृसरंजुहुयात् तिलमिश्रौदनःकृसरः भवस्यदेवस्यपत्न्यैस्वाहेत्याद्यष्टभिर्गुडौदनंहुत्वा भवस्यदेवस्यसुतायस्वाहेत्याद्यष्टभिर्हरिद्रोदनंहुत्वा त्र्यंबकं० मानोमहांत० मानस्तोके० आरात्ते० विकिरिद० सहस्राणिसहस्र० इतिद्वादशऋचःएतैः कृसरंहुत्वा शिवाय० शंकराय० सहमानाय० शितिकंठाय० कपर्दिने० ताम्राय० अरुणाय० अपगुरमाणाय० हिरण्यबाहवे० सस्पिंजराय० बभ्लुशाय० हिरण्यायेतिद्वादशनामभिर्जुहुयात् स्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यपूर्वोक्तसर्वहविर्भिर्विष्णवेलिंगायवाबलिंदद्यात् मंत्रस्तु त्वामेकमाद्यंपुरुषंपुरातनंनारायणंविश्वसृजंयजामहे त्वमेवयज्ञोविहितोविधेयस्त्वमात्मनात्मन्प्रतिगृण्हीष्वहव्यं लिंगेतुनारायणपदेरुद्रंशिवमितिवदेत् अश्वत्थपर्णेभूर्भुवःस्वरोमिति हुतशेषंनिधायप्रदक्षिणीकृत्य विश्वभुजेसर्वभुजेआत्मनेपरमात्मनेनमइतिनत्वाचार्यायद्वादशतिलएकांवागांदत्वाऋत्विग्भ्योदक्षिणांदत्वाशतंद्वादशवाविप्रान्भोजयेदिति प्रासादेनूतनेजलाशयोक्तप्रतिष्ठाविधिःकार्यः तत्रगोरुत्तारणपात्रीप्रक्षेपादिनकुर्यात् वारुणहोमस्थानेवास्तुहोमः इतिस्थिरार्चाचलार्चयोःप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥

इसके अनंतर आचार्य किंवा यजमाननें लिंग अथवा मूर्तिकेविषे आवाहन करना. सो ऐसा—“ भूःपुरुषमावाहयामि भुवःपुरुषमावाह० स्वःपुरुषमा० भूर्भुवःस्वःपुरुष० ” इस प्रकार आवाहन करके प्रणवमंत्रसें आसन देके दूर्वा, सांवा, विष्णुक्रांता, काली गो-

कर्णी, शंखपुष्पी और कमल इन्होंसें मिश्रित पाद्योदक करके “**ॐइमाआपःशिवतमाःपूताः पूततमा मेध्या मेध्यतमा अमृता अमृतरसाः पाद्यास्ता जुषतां प्रतिगृह्यतां प्रतिगृण्हातु भवान् महाविष्णुर्विष्णवेनमः**” इस मंत्रसें वह पाद्योदक समर्पण करना. लिंग होवै तौ “**भगवान् महादेवो रुद्राय नमः**” ऐसा मंत्रके अंतके भागमें ऊह करना. इस प्रकार अन्य देवताके विषेभी ऊह करना. “**इमाआपःशिव० आचमनीयास्ताजुषतां प्रतिगृह्य० इमाआपः० अर्घ्यास्ताः**” इस प्रकार आचमन और अर्घ्य देना. पीछे पंचामृतसें स्नान करायके देवताकों मंत्रोंसें शुद्धस्नान कराना. “**इदंविष्णु०**” इस मंत्रसें विष्णुकों, “**नमोअस्तु नीलग्रीवाय०**” इस मंत्रसें लिंगकों. पीछे कंकणका विसर्जन करके वस्त्र और जनेऊ देके “**इमे गंधाः शुभा दिव्याः सर्वमाल्यैरलंकृताः ॥ पूता ब्रह्मपवित्रेण पूताः सूर्यस्य रश्मिभिः**” इस मंत्रसें और “**पूताः०**” इस आदि पूर्वोक्त मंत्रसें गंध समर्पण करना. “**इमे माल्याः शुभा दिव्याः सर्वमाल्यैरलंकृताः ॥ पूता०**” इस आदि मंत्रसें माला अर्पण करनी. “**इमे पुष्पाः शुभा०**” इस मंत्रसें पुष्प समर्पण करने. “**वनस्पतिरसोधूपो० धूपोयं प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्णातुभवान्**” इस मंत्रसें धूप, “**ज्योतिः शुक्रं च तेजश्च देवानां सततं प्रियम् ॥ प्रभाकरः सर्वभूतानां दीपो० प्रतिगृह्णातु भवान्**” इस प्रकार दीप देना, और विष्णु देवता होवै तौ तिसकों संकर्षण आदि बारह नामोंकरके पुष्प समर्पण करके तिनही बारह नामोंसें तर्पण करके खीर, गुडमिश्रित अन्न और चित्रविचित्र अन्न ये सब “**पवित्रंते विततं०**” इस मंत्रसें निवेदन करके संकर्षण आदि बारह नामोंसें घरमें सिद्ध किये कृसरान्नकी दश दश आहुतियोंसें होम करके कृसर अन्नसेंही “**शार्ङ्गिणे० श्रियै० सरस्वत्यै० विष्णवे०**” इस प्रकार होम करके “**विष्णोर्नुकं० तदस्यप्रिय० प्रतद्विष्णु० परोमात्रया० विचक्रमे० त्रिर्देवः पृथिवी०**” इन छह मंत्रोंसें होम करना. लिंग देवता होवै तौ दीपकपर्यंत पूजा करके “**भवाय देवाय० शर्वाय देवाय० ईशानाय देवाय० पशुपतये देवाय० रुद्राय देवाय० उग्राय देवाय० भीमाय देवाय० महते देवाय०**” इस प्रकार पुष्प अर्पण करके तिनही नाममंत्रोंसें तर्पण करके “**पवित्रंते०**” इस मंत्रसें खीर, और गुडचावल निवेदन करके “**भवाय देवाय स्वाहा**” इत्यादिक आठ नाममंत्रोंसें कृसर अन्नका होम करना. तिलोंसें मिले हुये चावल, कृसर होता है. “**भवस्य देवस्य पत्न्यै स्वाहा**” इस आदि आठ नाममंत्रोंसें गुडमिश्रित चावलका होम करके “**भवस्य देवस्य सुताय स्वाहा**” इत्यादिक आठ नामोंसें हलदीसहित चावलोंका होम करना. पीछे “**त्र्यंबकं० मानोमहांतं० मानस्तोके० आरात्ते० विकिरिद० सहस्राणि०**” इन बारह ऋचाओंसें कृसर अन्नका होम करके “**शिवाय० शंकराय० सहमानाय० शितिकंठाय० कपर्दिने० ताम्राय० अरुणाय० अपगुरमाणाय० हिरण्यबाहवे० सस्पिंजराय० बभ्लुशाय० हिरण्याय०**” ऐसे बारह नामोंकरके होम करना. पीछे स्विष्टकृत आदि होमशेष समाप्त करके पूर्व कहे सब होमके द्रव्योंसें विष्णु अथवा लिंग जो देवता होवै तिसकों बलिदान समर्पण करना. बलिदानका मंत्र.—“**त्वामेकमाद्यं पुरुषं पुरातनं नारायणं विश्वसृजं यजामहे ॥ त्वमेव यज्ञो विहितो विधेयस्त्वमात्मनात्मन् प्रतिगृह्णीष्व हव्यम्.**” लिंग होवै तौ “**नारायणं**” इस पदके स्थानमें ‘**रुद्रं, शिवं**’ ऐसा पाठ कहना. पीपलके

पत्तेपर **“ भूर्भुवःस्वरोम् ”** इस मंत्रसें हुतशेष स्थापित करके परिक्रमा करके **“ विश्वभुजे सर्वभुजे आत्मने परमात्मने नमः ”** इस मंत्रसें नमस्कार करके आचार्यकों बारह, तीन अथवा एक गोप्रदान देके ऋत्विजोंकों दक्षिणा देके १०० अथवा बारह ब्राह्मणोंकों भोजन देना. नवीन देवताका मंदिर होवै तौ जलाशयकों कहा जो प्रतिष्ठाविधि है वह करना. तिस प्रासादविधिमें गौका उत्तारणविधि और पात्रीप्रक्षेप आदि विधि नहीं करने. वारुणहोमके स्थानमें वास्तुदेवताके उद्देशसें होम करना. इस प्रकार स्थिर मूर्तिकी प्रतिष्ठा और चल मूर्तिकी प्रतिष्ठाका प्रयोग कहा है.

अथातोपिसंक्षिप्तएकाध्वरविधानेनचलप्रतिष्ठाप्रयोगः संकल्पादिनांदीश्राद्धांतंप्राग्वत् एकमाचार्यंवृणुयात् आचार्योमुकदेवप्रतिष्ठाकर्मकरिष्येइत्यादिसर्षपविकिरणांतं सर्वतोभद्रमंडलेप्राग्वन्नामभिर्ब्रह्मादिमंडलदेवताआवाह्यसंपूज्य यथागृह्यमग्निंप्रतिष्ठाप्यान्वादध्यात् आज्यभागांतेस्थाप्यदेवतांसहस्रमष्टोत्तरशतंवासमिदाज्यचरुतिलद्रव्यैर्ब्रह्मादिमंडलदेवताः प्रत्येकंदशदशतिलाज्याहुतिभिःशेषेणेत्यादि तूष्णींनिर्वापप्रोक्षणे आज्यभागांते तडागनदीतीरगोष्ठचत्वरपर्वतगजाश्वह्रदवल्मीकसंगमेतिदशमृद्भिरष्टवारंदेवंसंस्नाप्यपंचगव्यैःक्रमेणस्नापयित्वादूर्वासिद्धार्थपल्लवोपेतैरष्टकलशैरापोहिष्ठादिमंत्रैरभिषिच्याग्न्युत्तारणंकुर्यात् सर्वतोभद्रस्थपीठेदेवमुपवेश्यनाम्नावस्त्रगंधधूपादिदत्वाष्टदिक्षुपल्लवादियुतोदकुंभानष्टौदीपांश्च संस्थाप्यप्राग्वन्नेत्रोन्मीलनंचित्रान्नेनबलिंदत्वापुरुषसूक्तेनस्तुत्वोक्तद्रव्यचतुष्टयंस्थाप्यदेवमंत्रेण हुत्वाएकैकद्रव्यहोमांतेदेवंस्पृशेत् आज्यहोमेकुंभेसंपातान्क्षिपेत् मंडलदेवताभ्योहुत्वाहोमशेषंसमाप्यपूर्णाहुतिंकुर्यात् ॥

अब इसके अनंतर संक्षिप्त ऐसा एकाध्वरविधि करके चलप्रतिष्ठाका प्रयोग कहताहुं.— संकल्पसें नांदीश्राद्धपर्यंत कर्म पहलेकी तरह करना. एक आचार्य वरना. पीछे एक आचार्यनें **“ अमुकदेवताप्रतिष्ठाकर्म करिष्ये ”** ऐसा संकल्प आदिसें सर्षपविकिरणपर्यंत कर्म करना. पीछे सर्वतोभद्रमंडलमें पूर्वोक्त रीतिसें नाममंत्रसें ब्रह्मा आदि मंडलदेवतोंका आवाहन और पूजा करके अपने गृह्यसूत्रके अनुसार अग्निकी स्थापना करके अन्वाधान करना. आज्यभागपर्यंत कर्म हुए पीछे अन्वाधान करना. सो ऐसा.—**“ स्थाप्यदेवतां सहस्रमष्टोत्तरशतं वा समिदाज्यचरुतिलद्रव्यैर्ब्रह्मादिमंडलदेवताः प्रत्येकं दशदश तिलाज्याहुतिभिः शेषेण इत्यादि. ”** चरु करना होवै तौ प्रत्येक देवताकों चार चार मुष्टि चावल छाजमें लेना, और तिन्होंका प्रोक्षण करना, ये कर्म मंत्रसें रहित करने. आज्यभागपर्यंत कर्म किये पीछे तलाव, नदीका तीर, गोशाला, आंगण, पर्वत, हस्तिशाला, अश्वशाला, ऱ्हद, वंबी और चौटा इन स्थानोंकी दश माटियोंसें आठ वार देवताकों स्नान करायके पंचगव्यका क्रमसें स्नान कराय दूर्वा, सरसों और पंचपल्लव इन्होंसें युक्त हुये आठ कलश, तिन्होंसें **“ आपोहिष्ठा० ”** इस आदि मंत्रोंसें अभिषेक करके अग्न्युत्तारण करना. सर्वतोभद्रके उपरके पीठपर देवताकों बैठायके नाममंत्रसें वस्त्र, गंध, धूप आदि समर्पण करके आठ दिशाओंमें पंचपल्लव आदिसें युक्त ऐसे आठ जलकुंभ और आठ दीपक स्थापन करके पूर्वकी तरह नेत्रोन्मीलन करना. चित्रविचित्र अन्नसें बलिदान करके पुरुषसूक्तसें स्तुति करके पूर्व कहे चार द्रव्योंका, स्था-

ध्यदेवताके मंत्रसें होम करके एक एक द्रव्यका होम किये पीछे देवताकों स्पर्श करना. और घृतके होमके पीछे कलशमें संपातोदक डालना. मंडलदेवताका होम करके होमशेष समाप्त करके पूर्णाहुतिहोम करना.

ततःपूर्वोक्तरीत्यासूक्तन्यासावाहनप्राणप्रतिष्ठांतंकृत्वा इहैवैधीतितृचंपुरुषसूक्तंचजप्त्वा मूलमंत्रादिनावाहनादिपंचामृतस्नानांतेसंपातोदकैरिमाआपःशिवतमाइत्यादिनाभिषेकः वस्त्रादिनैवेद्यांतंप्राग्वत् तांबूलफलदक्षिणानीराजननमस्कारप्रदक्षिणादिविधाय पुष्पांजलिं दत्वासाचार्यःकर्तादेवंनत्वाक्षमाप्याचार्यदक्षिणांतेऽष्टकुंभोदकैर्यजमानाभिषेकःविष्णुंस्मृत्वा कर्मेश्वरेर्पयेदितिसंक्षेपः ॥

इसके पीछे पूर्व कही रीतिसें सूक्तका न्यास, आवाहन, प्राणप्रतिष्ठापर्यंत कर्म करके “ इहैवैधि० ” ये तीन ऋचा और पुरुषसूक्तका जप करके मूलमंत्र आदिकरके आवाहन आदिसें पंचामृतस्नानपर्यंत कर्म हुए पीछे संपातोदकसें “ इमा आपः शिवतमा० ” इत्यादिक मंत्रोंसें अभिषेक करना. पीछे वस्त्र आदिसें नैवेद्यपर्यंत पूजा पूर्वकी तरह करनी. पीछे तांबूल, फल, दक्षिणा, नीराजन अर्थात् आरती, नमस्कार, परिक्रमा इत्यादिक करके और पुष्पांजलि समर्पण करके आचार्यसहित कर्तानें देवताकों नमस्कार करके प्रार्थना करके आचार्यकों दक्षिणा दिये पीछे आचार्यनें आठ कलशोंके जलसें यजमानपर अभिषेक करना और विष्णुका स्मरण करके कर्म ईश्वरकों अर्पण करना. इस प्रकार संक्षेप जानना.

अथपुनःप्रतिष्ठा मद्यचांडालस्पृष्टावह्निदग्धाविप्ररक्तदूषिताशवपापिस्पृष्टाचप्रतिमापुनःसंस्कार्या खंडितेस्फुटितेस्थानभ्रंशेपूजनाभावेश्वगर्दभादिस्पर्शेपतितरजस्वलाचोरैःस्पर्शेचपुनःप्रतिष्ठा खंडितांभग्नांविधिनोद्धृत्यान्यांस्थाप्य अर्चायाभंगचौर्यादौतद्दिनेउपवासः ताम्रादिधातुमूर्तीनांचोरचांडालादिस्पर्शेताम्रादिधातूक्तशुद्धिंकृत्वापुनःप्रतिष्ठापूर्वंप्रतिष्ठितायाअबुद्धिपूर्वकमेकरात्रमेकमासंद्विमासंवार्चनादिविच्छेदेशूद्ररजस्वलाद्युपस्पर्शनेवाजलाधिवासंकृत्वा कलशेनस्नपयेत् ततःपंचगव्येनस्नापयित्वाऽष्टसहस्रमष्टशतमष्टाविंशतिसंख्यंवाकलशैःशुद्धोदकेनपुरुषसूक्तेनस्नपयेत् गंधपुष्पादिनापूजयित्वागुडौदनंनिवेदयेदितिशुद्धिः ॥

अब पुनःप्रतिष्ठा कहताहुं.

मदिरा, चांडालका स्पर्श जिसकों हुआ होवै ऐसी, अग्निसें दग्ध हुई, ब्राह्मणके रक्तसें दूषित हुई, मुरदा और पापीसें छूही ऐसी प्रतिमाकी फिर प्रतिष्ठा करनी. खंडित, फूट गई, स्थानसें भ्रष्ट, जिसकी पूजा नहीं की गई ऐसी, कुत्ता और गद्धा आदिसें छूही और पतित, रजस्वला, चोर इन आदिसें छूही ऐसी मूर्तिकी फिर प्रतिष्ठा करनी. खंडित हुई अथवा फूटी हुई मूर्तिकों विधिसें निकासके तहां दूसरी मूर्ति स्थापित करनी. मूर्तिका नाश हो जावै किंवा मूर्ति चोरी गई होवै तिस दिनमें उपवास करना. तांबा आदि धातुकी मूर्तियोंकों चोर और चांडाल आदि स्पर्श करैं तौ तांबा आदि धातुकी कही हुई रीतिसें शुद्धि करके फिर प्रतिष्ठा करनी. पूर्वप्रतिष्ठित करी मूर्तिकी विना जाने एक रात्रि, एक महीना अथवा दो महीनोंपर्यंत पूजा आदि नहीं करी गई होवै अथवा शूद्र और रजस्वला आदिसें छूही गई होवै

तव जलमें अधिवास करके कलशसें स्नान कराना. पीछे पंचगव्यसें स्नान करायके आठ हजार, आठसौ अथवा अठाईस कलशोंसें शुद्धजलकरके पुरुषसूक्तसें स्नान कराना. पीछे गंध, पुष्प आदि उपचारोंसें पूजा करके गुड और भात समर्पण करना. इस प्रकार मूर्तिकी शुद्धि करनी.

बुद्धिपूर्वंपूजनविच्छेदेशूद्रस्पर्शादौचपुनःप्रतिष्ठयैवशुद्धिः अन्येतु एकाहपूजाविहतौकुर्याद्द्विगुणमर्चनं द्विरात्रेतुमहापूजांसंप्रोक्षणमतःपरं मासादूर्ध्वंपूजाविहतौपुनःप्रतिष्ठाप्रोक्षणविधिर्वाकार्यइत्याहुः पुनःप्रतिष्ठादिमलमासशुक्रास्तादावपिकार्यं देवालयवापीकूपतडागभेदनेआरामसेतुसभाभंगेइदंविष्णुर्मानस्तोकेविष्णोःकर्माणिपादोस्येतिचतस्रआज्याहुतीर्हुत्वाब्राह्मणान्भोजयेदिति ॥

बुद्धिपूर्वक पूजाका नाश अथवा शूद्रका स्पर्श आदि हो गया होवै तब फिर प्रतिष्ठा करनेसें शुद्धि होती है. दूसरे ग्रंथकार तौ मूर्तिकी एक दिन पूजा नहीं करी गई होवै तौ दुगुनी पूजा करनी, दो दिन पूजा नहीं करी गई होवै तौ महापूजा करनी, दो दिनसें अधिक दिन पूजा नहीं करी जावै तौ संप्रोक्षणविधि करना, एक महीनासें अधिक दिन पूजा नहीं करी गई होवै तौ फिर प्रतिष्ठा अथवा प्रोक्षणविधि करना ऐसा कहते हैं. फिर प्रतिष्ठा आदि करनी सो मलमास, शुक्रके अस्त आदिमेंभी करनी. देवताका मंदिर, बावडी, कूवा, तलाव इन आदिका भेद होनेमें; बाग, पूल, सभा इन्होंका नाश होनेमें "इदंविष्णु० मानस्तोके० विष्णोः कर्माणि० पादोस्य०" इन चार ऋचाओंकरके चार घृतकी आहुतियोंसें होम करके ब्राह्मणोंकों भोजन देना.

अथप्रोक्षणविधिः देवमुद्वास्यपंचवारंमृज्जलैःप्रक्षाल्यपंचगव्यैःस्नापयित्वाकुशोदकैर्विशोध्यमूलेनाष्टोत्तरशतवारंप्रोक्ष्यमूलेनमूर्धादिपीठांतंसंस्पृश्य तत्त्वन्यासलिपिन्यासमंत्रन्यासपूर्वकंप्राणप्रतिष्ठांकृत्वामहापूजांकुर्यात् पूजाहीनादिषुह्येषसंप्रोक्षणविधिःस्मृतः ॥

अब प्रोक्षणका विधि कहताहुं.

देवताका विसर्जन करके माटी और जलसें देवताकों पांचवार प्रक्षालन करके और पंचगव्यकरके स्नान कराय कुशोदकसें देवताकी शुद्धि करके मूलमंत्रसें १०८ वार प्रोक्षण करके मूलमंत्रसें मस्तकसें आदि ले पीठपर्यंत स्पर्श करना. पीछे तत्त्वन्यास, लिपिन्यास और मंत्रन्यास इन्होंकों करके और प्राणप्रतिष्ठा करके महापूजा करनी. पूजासें हीन आदि मूर्तिविषे यह प्रोक्षणविधि कहा है.

अथजीर्णोद्धारः सचलिंगादौभग्नेदग्धेचलितेवाकार्यः अयंचानादिसिद्धप्रतिष्ठितलिंगादौभंगादिदोषेपिनकार्यः तत्रतुमहाभिषेकःकार्यः ॥

अब जीर्णोद्धारका विधि कहताहुं.

जीर्णोद्धार करनेका सो लिंग आदि टूटे, किंवा दग्ध, अथवा चलित हो गये होवैं तब

करना. अनादिसिद्ध और प्रतिष्ठित लिंग आदिकों भंग आदि दोष होवै तौ भी यह जीर्णोद्धार नहीं करना, किंतु तहां महाभिषेक करना.

कर्तामुकदेवस्यजीर्णोद्धारंकरिष्येइत्युक्त्वा नांदीश्राद्धांतंकृत्वाचार्यंवृत्वा पीठेमंडलदेवताआवाह्यलिंगेव्यापकेश्वरहृदयायनमः ॐव्यापकेश्वरशिरसेस्वाहेत्यादिषडंगंकृत्वादेवतांतरेमूलमंत्रेणषडंगंकृत्वार्चयेत् अघोरेतिमंत्रमष्टोत्तरशतंजप्त्वाग्निंप्रतिष्ठाप्यअघोरेणघृताक्तसर्षपैःसहस्रंहुत्वेंद्रादिभ्योनाम्नाबलिंदत्वाजीर्णदेवं प्रणवेनसंपूज्यसाज्यतिलैर्मंडलदेवताहोमंकृत्वाप्रार्थयेत् जीर्णभग्नमिदंचैवसर्वदोषावहंनृणां अस्योद्धारेकृतेशांतिःशास्त्रेस्मिन्कथितात्वया जीर्णोद्धारविधानंचनृपराष्ट्रहितावहं तदधिष्ठायतांदेवप्रहरामितवाज्ञया क्षीराज्यमधुदूर्वासमिद्भिर्देवमंत्रेणाष्टोत्तरशतंहुत्वातिलैःसहस्रंहुत्वापायसेनशतंहुत्वालिंगं प्रार्थयेत् लिंगरूपंसमागत्ययेनेदंसमधिष्ठितं यायास्त्वंसंमितंस्थानंसंत्यज्यैवशिवाज्ञया अत्रस्थानेचयाविद्यासर्वविद्येश्वरैर्युताः शिवेनसहसंतिष्ठेतिमंत्रितजलेनाभिषिच्याविसर्जयेत् अस्त्रमंत्रितेनखनित्रेणखात्वालिंगमादायवामदेवमंत्रेणनद्यादौक्षिपेत् मूर्तिंप्रणवेनक्षिपेत् दारुजंमधुनाभ्यज्याघोरेणदहेत्हेमादिमयंयोग्यंकृत्वातत्रैवस्थापयेत् ततःशांत्यर्थमघोरेणघृतक्षीरमध्वक्तैस्तिलैःसहस्रंहुत्वाप्रार्थयेत् भगवन्भूतभव्येशलोकनाथजगत्पते जीर्णलिंगसमुद्धारःकृतस्तवाज्ञयामया अग्निनादारुजंदग्धंक्षिप्तंशैलादिकंजले प्रायश्चित्तायदेवेशअघोरास्त्रेणतार्पितं ज्ञानतोज्ञानतोवापियथोक्तंनकृतंयदि तत्सर्वंपूर्णमेवास्तुत्वत्प्रसादान्महेश्वर अथयजमानःप्रार्थयेत् गोविप्रशिल्पिभूपानामाचार्यस्यचयज्वनः शांतिर्भवतुदेवेशअच्छिद्रंजायतामिदं मूर्तौतुविशेषः त्वत्प्रसादेननिर्विघ्नंदेहंनिर्मापयत्यसौ वासंकुरुसुरश्रेष्ठतावत्त्वंचाल्पकेगृहे वसक्लेशंसहिस्वेहमूर्तिवैतवपूर्ववत् यावत्कारयतेभक्तःकुरुतस्यचवांछितं ततोनवांमूर्तिलिंगंवाकृत्वोक्तविधिनाप्रतिष्ठाकालानपेक्षयामासादर्वाक्स्थापयेत् इतिजीर्णोद्धारः ॥

कर्तानें “ अमुकदेवस्य जीर्णोद्धारं करिष्ये ” ऐसा संकल्प करके नांदीश्राद्धपर्यंत कर्म किये पीछे आचार्यवरण करके सर्वतोभद्रपीठपर मंडलदेवतोंका आवाहन करके लिंगके स्थानमें “ व्यापकेश्वरहृदयाय नमः ॐ व्यापकेश्वरशिरसे स्वाहा ” इस आदि षडंगन्यास करके पूजा करनी. “ अघोरे० ” इस मंत्रका १०८ जप करके अग्निकी स्थापना करके “ अघोरेभ्यो० ” इस मंत्रसें घृतसें भिगोये हुये सरसोंका सहस्र होम करके इंद्र आदि देवतोंकों नाममंत्रोंसें बलि देके प्रणवमंत्रसें जीर्ण देवताकी पूजा करके घृतसें युक्त तिलोंसें मंडलदेवताका होम करके प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—“ जीर्णभग्नमिदं चैव सर्वदोषावहं नृणाम् ॥ अस्योद्धारे कृते शांतिः शास्त्रेऽस्मिन् कथिता त्वया ॥ जीर्णोद्धारविधानं च नृपराष्ट्रहितावहम् ॥ तदधिष्ठायतां देव प्रहरामि तवाज्ञया” इस प्रकार प्रार्थना करके दूध, घृत, शहद, दूर्वा, और समिध इन्होंकरके देवताके मंत्रसें १०८ होम करके और तिलोंका १००० होम करके, खीरका १०० होम करके लिंगकी प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—“लिंगरूपं समागत्य येनेदं समधिष्ठितम् ॥ यायास्त्वं संमितं स्थानं संत्यज्यैव शिवाज्ञया ॥ अत्रस्थाने च या विद्या सर्वविद्येश्वरैर्युताः ” इस प्रकार प्रार्थना करके “ शिवेन सह सं-

तिष्ठ" इस मंत्रसें अभिमंत्रित जलसें अभिषेक करके विसर्जन करना. अस्त्रमंत्रसें मंत्रित किया जो कुदाल तिस्सें खोदके वह लिंग ग्रहण करके "वामदेव०" इस मंत्रसें नदी आदिमें डालना. मूर्ति होवै तौ वह प्रणवमंत्रसें डालनी. काष्ठकी मूर्ति होवै तौ शहदमें भिगोयके "अघोरेभ्यो०" इस मंत्रसें दहन करनी. सोना आदि धातुकी मूर्ति होवै तौ दुरुस्त करके तहांही स्थापन करनी. पीछे शांतिके लिये "अघोरे०" इस मंत्रसें घृत, दूध, शहद इन्होंसें भिगोये हुये तिलोंका हजार होम करके प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—"भगवन् भूतभव्येश लोकनाथ जगत्पते ॥ जीर्णलिंगसमुद्धारः कृतस्तवाज्ञया मया ॥ अग्निना दारुजं दग्धं क्षिप्तं शैलादिकं जले ॥ प्रायश्चित्ताय देवेश अघोरास्त्रेण तर्पितम् ॥ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यथोक्तं न कृतं यदि ॥ तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वर." इसके अनंतर यजमाननें प्रार्थना करनी. सो ऐसी—गोविप्रशिल्पिभूपानामाचार्यस्य च यज्वनः ॥ शांतिर्भवतु देवेश अच्छिद्रं जायतामिदम्." मूर्ति होवै तौ प्रार्थनामें विशेष—"त्वत्प्रसादेन निर्विघ्नं देहं निर्मापयत्यसौ ॥ वासं कुरु सुरश्रेष्ठ तावत्त्वं चाल्पके गृहे ॥ वस क्लेशं सहित्वेह मूर्तिर्वै तव पूर्ववत् ॥ यावत्कारयते भक्तः कुरु तस्य च वांछितम्." पीछे नवीन मूर्ति अथवा लिंग बनायके पूर्वोक्त विधिसें, प्रतिष्ठाके कालकी अपेक्षा कियेविना एक महीनाके पहले स्थापना करनी. इस प्रकार जीर्णोद्धार समाप्त हुआ.

प्रतिमाशिवलिंगप्रासादकलशादिभंगेस्वामिनोमरणंभवेत् तत्रशांतिः कुंडंकृत्वाविधानेन ततोहोमंसमाचरेत् चरुंचयमदैवत्यंसाधयित्वाविधानतः दधिक्षौद्रघृताक्तानामश्वत्थसमिधां ततः जुहुयादष्टशतंप्राज्ञइमारुद्रेतिमंत्रवित् माषैर्मुद्गैस्तिलैश्चैवघृतेनमधुनापिच एभिःपंचसहस्राणिशक्तिबीजेनहोमयेत् शक्तिबीजंह्रींबीजं भूमिंधेनुमनड्वाहंस्वर्णंधान्यंसदक्षिणं दत्वाथपंचगव्येनस्नायाद्देवालयेद्विजः बलिंदद्याद्यमायाथकृसरैः पायसैस्तथा ईशानायबलिंदत्वाकृतकृत्योभवेन्नरः अत्रमूलंकमलाकरे ॥

मूर्ति, शिवलिंग, देवताका मंदिर, देवताके मंदिरका कलश इन आदिका नाश हो जानेमें स्वामीकों मरण प्राप्त होता है, इसलिये तिसकी शांति करनी. सो ऐसी.—विधियुक्त कुंड बनायके पीछे होम करना. यम है देवता जिसकी ऐसा चरु विधानसें सिद्ध करके तिस चरुका; और दही, शहद, घृत इन्होंमें भिगोई हुई पीपलकी समिधोंका "इमारुद्रा०" इस मंत्रसें मंत्रज्ञ और विद्वान् ऐसे आचार्यनें १०८ होम करना. उडद, मूंग, तिल, घृत और शहद इन्होंकरके प्रत्येकका हजार प्रमाणसें शक्तिबीजमंत्रसें होम करना. शक्तिबीज अर्थात् 'ह्रीं' बीज जानना. ब्राह्मणनें पृथिवी, गौ, बैल, सोना और अन्न इन्होंके दक्षिणासहित दान करके देवताके मंदिरमें पंचगव्यसें स्नान करना. पीछे कृसर अन्नका बलि यमके अर्थ देके ईशानकों खीरका बलि देना. तिसकरके वह मनुष्य कृतकृत्य होता है. इस विषयमें मूलप्रमाण कमलाकर ग्रंथमें कहा है.

अपर्युषितनिच्छिद्रैःप्रोक्षितैर्जंतुवर्जितैः आत्मा[१]रामोद्भवैर्मुख्यैर्भक्त्यासंपूजयेत्सुरान् त्य

---

[१] स्वकीयपुष्पवाटिकोत्थपुष्पाणांमुख्यत्वं परारामोद्भवानांवनस्थानांचमध्यमत्वं याचितानामधमत्वमितिग्रंथांतरे ॥

जेत्कीटावपन्नानिशीर्णपर्युषितानिच स्वयंपतितपुष्पाणिमलाद्युपहतानिच मुकुलैर्नार्चयेद्देवमपक्वैःकृमियुक्फलैः पुष्पाभावेपत्रपूजा पत्रालाभेफलैरपि निवेदयेत्फलालाभेतृणगुल्मौषधीरपि समित्पुष्पकुशादीनिब्राह्मणःस्वयमाहरेत् शूद्रानीतैःक्रयक्रीतैःकर्मकुर्वन्पतत्यधः लक्षपुष्पार्चनंक्रयक्रीतैरपि केचिद्धर्मार्जितधनक्रीतैर्यःकुर्यात्केशवार्चनम् नपर्युषितदोषोस्तिमालाकारगृहेषुचेत्याद्युक्तेर्मालाकारानीतैःक्रयक्रीतैरपिपुष्पपत्रैःपूजयंति नित्यपूजार्थपरोपवनादेरपिपुष्पादिग्रहेचौर्यदोषोन पूजार्थपुष्पादिनयाचेत् समित्पुष्पकुशादीनिवहंतंनाभिवादयेत् तद्धारीचैवनान्यान्हिनिर्माल्यंतद्भवेत्तयोः देवोपरिधृतंवामहस्तेधोवस्त्रेचधृतंजलेंतःक्षालितंचपुष्पंनिर्माल्यं वर्ज्यंपर्युषितंपुष्पंवर्ज्यंपर्युषितंजलं नवर्ज्यंतुलसीपत्रंनवर्ज्यंतीर्थजंजलं प्रहरंतिष्ठतेजातीकरवीरमहर्निशं नैवपर्युषितंपद्मंतुलसीबिल्वपत्रकं कुंदंचदमनंचैवागस्त्यंचकलिकातथा ॥

अब देवताकी पूजाकों पुष्प कैसे होंने चाहियें सो कहताहुं.

नवीन, छिद्रसें वर्जित, प्रोक्षण किये हुये, कीडोंसें वर्जित, अपने बाग[1]में उत्पन्न हुये जो पुष्प, सो मुख्य हैं. ऐसे पुष्पोंकरके भक्तिसें देवतोंकी पूजा करनी. कीडोंनें भक्षण किये हुये, गले हुये, खंडित हुये, पहले दिन तोडे हुये, आपही पतित हुये और मल आदिसें उपहत हुये ऐसे पुष्पोंकों पूजाके विषयमें नहीं ग्रहण करना. नहीं पकी हुई ऐसी कलिकाओंसें, नहीं पके हुए और कीडोंसें युक्त ऐसे फल और पुष्पोंसें देवताकी पूजा नहीं करनी.” पुष्पोंके अभावमें पत्तोंसें पूजा करनी. पत्तोंके अभावमें फलोंसेंभी पूजा करनी. “फलभी नहीं मिलैं तौ दूर्वा आदि तृण, वल्लिके तंतुओंके गुच्छ, और व्रीहि, यव आदि ओषधी इन्होंसें पूजा करनी. समिध, पुष्प, कुश इन आदिकों ब्राह्मणनें आपही लाना, शूद्रके द्वारा मंगाये हुये और खरीद लिये हुये समिध, पुष्प, कुश इन्होंसें पूजा करनेवाला अधमयोनिकों प्राप्त होता है.” लक्ष पुष्पोंसें पूजा करनी होवै तौ खरीद्दे हुये पुष्पोंसेंभी करनेमें दोष नहीं है. कितनेक मनुष्य “न्यायसें संचित किये द्रव्यसें खरीदे हुये पुष्पोंकरके विष्णुका पूजन करते हैं तिन्होंकों दोष नहीं है, और मालीके घरमें जो पहले दिनके टूटे हुये पुष्प हैं तिन्होंमें पर्युषित दोष नहीं है,” ऐसा वचन है, इस लिये माली आदिसें खरिदे हुये पुष्पोंसें पूजा करते हैं. नित्यपूजाके लिये दूसरेके बाग आदिसें भी पुष्प और पत्तोंकों ग्रहण करनेमें चोरी करनेका दोष नहीं हैं. पूजाके अर्थ पत्र और पुष्प आदिकी याचना नहीं करनी. “समिध, पुष्प, कुश इन आदि पूजासाहित्य वहनेवालेकों नमस्कार नहीं करना. और समिध आदिकों ले जानेवालेनें भी दूसरोंकों प्रणाम नहीं करना. जो कदाचित् आपसमें नमस्कार किया जावै तौ पूजाकी समिध आदि सामग्री निर्माल्य अर्थात् पूजाकों निरुपयोगी होती है.” देवताके उपर धारण किया, वाम हाथमें धारण किया, धोती आदि पहरे हुए वस्त्रमें धारण किया और जलके भीतर धोया हुआ ऐसा पुष्प निर्माल्य होता है. “पर्युषित अर्थात् वासी पुष्प और वासी जल वर्जित करना योग्य है. तुलसीका पत्ता और तीर्थका जल वासीभी वर्जित नहीं करने. जूईका पुष्प एक प्रहरपर्यंत पर्युषित नहीं होता

---

[1] अपनी पुष्पवाटिकामें उत्पन्न हुए पुष्प मुख्यत्वकरके लेने. अन्यकी पुष्पवाटिकामें और वनमें उत्पन्न हुए पुष्प मध्यम, और याचना करके गृहीत किये पुष्प अधम ऐसा अन्य ग्रंथोंमें कहा है.

है. कनेरका पुष्प एक दिनरात्रिपर्यंत वासी नहीं होता है. कमल, तुलसी, बेलपत्र, कुंदपुष्प, दमना, अगस्तिपुष्प, कली ये वासी नहीं होते हैं.

बिल्वादेरपर्युषितत्वदिनसंख्या बिल्वः ३० अपामार्गः ३ जाती १ तुलसी ६ शमी ६ शतावरी ११ केतकी ४ भृंगराजः ९ दूर्वा ८ मंदारः १ पद्मं १ नागकेसरः २ दर्भाः ३० अगस्त्यः ३ तिलः १ मल्लिका ४ चंपकः ९ करवीरं ८ एतेषामेतद्दिनोत्तरंपर्युषितत्वं ॥

बेल आदि पत्र और पुष्प आदि कितने दिनपर्यंत वासी नहीं होते हैं तिन दिनोंकी संख्या.—बेलपत्र ३० दिन पीछे पर्युषित हो जाता है. ऊंगा ३ दिनके पीछे, जातीपुष्प १ दिन पीछे, तुलसी ६ दिन पीछे, जांटी ६ दिन पीछे, शतावरी ११ दिन पीछे, केतकी ४ दिन पीछे, भंगरा ९ दिन पीछे, दूर्वा ८ दिन पीछे, मंदार १ दिन पीछे, कमल १ दिन पीछे, नागकेसर २ दिन पीछे, डाभ ३० दिन पीछे, अगस्तिपुष्प ३ दिन पीछे, तिलका फूल १ दिन पीछे, चमेली ४ दिन पीछे, सुनहरी चंपा ९ दिन पीछे, कनेर ८ दिन पीछे, इस प्रमाणसें ये सब वासी हो जाते हैं.

तुलसीग्रहणकालः वैधृतौचव्यतीपातेभौमभार्गवभानुषु पर्वद्वयेचसंक्रांतौद्वादश्यांसूतकद्वये तुलसींयेविचिन्वंतितेछिंदंतिहरेःशिरः नैवछिंद्याद्रवौदूर्वांतुलसींनिशिसंध्ययोः धात्रीपत्रंकार्तिकेचपुण्यार्थीमतिमान्नरः द्वादश्यांचदिवास्वापस्तुलस्यवचयस्तथा विष्णोश्चैवदिवास्नानंवर्जनीयंसदाबुधैः अत्रदिवानिषेधाद्रात्रौस्नानादिषोडशोपचारैःपूजाकार्या दिवातुगंधादिपुष्पांजल्यंताएवोपचाराइतिकमलाकराह्निके विष्णोर्द्वादश्यांनिर्माल्यापनयनमपिनकार्यमिति तंत्रांतरेस्मर्यते एतदपवादःपुरुषार्थचिंतामणौनारदीये पंचामृतेनसंस्नाप्यएकादश्यांजनार्दनं द्वादश्यांपयसास्नाप्यहरिसायुज्यमश्नुतोति देवार्थेतुलसीछेदोहोमार्थेसमिधांतथा इंदुक्षयेनदुष्येतगवार्थंतुतृणस्यच तुलसीग्रहणमंत्रः तुलस्यमृतनामासिसदात्वंकेशवप्रिये केशवार्थंविचिन्वामिवरदाभवशोभने जातिमल्लिकाकरवीराशोकोत्पलचंपकबकुलबिल्वशमीकुशाएतानिसर्वदेवतानांविहितानि ॥

अब तुलसीके ग्रहणविषे काल कहताहुं.—“ वैधृति, व्यतीपात, मंगलवार, शुक्रवार, रविवार, पौर्णमासी, अमावस, संक्रांति, द्वादशी, जननाशौच और मृताशौच इन्होंके होनेमें तुलसीकों जो तोडते हैं वे मनुष्य विष्णुके शिरकों छेदते हैं, इसलिये इन दिनोंमें तुलसीका छेद नहीं करना. पुण्येच्छु बुद्धिमान् मनुष्यनें रविवारमें दूर्वाकों नहीं छेदित करना. रात्रिविषे और दोनों संधिकालोंविषे तुलसीकों नहीं छेदित करना. कार्तिक महीनेमें आंवलाके पत्तेकों नहीं छेदित करना. द्वादशीकों दिनमें शयन करना, तुलसीकों तोडना और दिनमें विष्णुकों स्नान कराना ये सब कर्म विद्वानोंनें वर्जित करने उचित हैं. ” इस वाक्यमें दिनमें स्नानका निषेध कहा है इसलिये रात्रिविषे स्नान आदि षोडशोपचारोंसें पूजा करनी. दिनमें तौ गंधसें आदि ले पुष्पांजलिपर्यंतही उपचार अर्पण करने ऐसा **कमलाकरके** आन्हिकमें कहा है. द्वादशीविषे विष्णुके निर्माल्यकों भी दूर नहीं करना ऐसा अन्य तंत्रोंमें कहा है. इसका अ-

पवाद पुरुषार्थचिंतामणिमें नारदीयपुराणवचनमें कहा है. सो ऐसा—"एकादशीतिथिविषे विष्णुकों पंचामृतसें स्नान करानेसें और द्वादशीविषे दूधसें स्नान करानेसें मनुष्य विष्णुके स्थानमें सायुज्य मुक्तिकों प्राप्त होता है." "अमावसतिथिविषे विष्णुपूजाके अर्थ तुलसीकों तोडना, होमके अर्थ समिधोंकों तोडना और गौवोंके अर्थ तृणकों छेदित करना ये दोषकारक नहीं होते हैं." तुलसीग्रहणका मंत्र.—"**तुलस्यमृतनामासि सदा त्वं केशवप्रिये ॥ केशवार्थं विचिन्वामि वरदा भव शोभने.**" जूई, मोगरी, कनेर, अशोक, कमल, चंपक, बकुल, जांटी और कुश ये सब देवतोंकों अर्पण करनेविषे श्रेष्ठ हैं.

अथविहितप्रतिषिद्धत्वाद्वैकल्पिकानि पाटलाशमीपत्रंचदुर्गायाः कुंदपलाशबकुलदूर्वाः शिवस्य कुमुदतगरेसूर्यस्य तुलसीभृंगराजतमालपत्राणिशिवदुर्गयोः अगस्तिमाधवीलतालोध्रपुष्पंविष्णुशिवयोः धत्तूरमंदारौविष्णुसूर्ययोः इतिविकल्पितानि ॥

अब विहित और निषिद्ध होनेसें जो वैकल्पिक हैं तिन्होंकों कहताहुं.—पाटला, जांटीके पत्ते देवीपर चढाने अथवा नहीं चढाने. कुंद, केशू, बकुल इन्होंके पुष्प, दूर्वा शिवपर चढाना अथवा नहीं चढाना. कुमुदिनी और तगर सूर्यपर चढाना अथवा नहीं चढाना. तुलसी, भंगरा, तेजपात ये शिव और दुर्गापर चढाने अथवा नहीं चढाने. अगस्ति, माधवीलता, धायके फूल ये शिव और विष्णुपर चढाने अथवा नहीं चढाने. धतूरा और मंदार विष्णु और सूर्यपर चढाने अथवा नहीं चढाने. इस प्रकार वैकल्पिक निर्णय समाप्त हुआ.

अथ विष्णोःप्रियाणि मालतीजातीकेतकीमल्लिकाशोकचंपकपुन्नागबकुलोत्पलकुंदकरवीरपाटलातगरपुष्पाणि अन्यानिचसुरभीणिविष्णोःप्रियाणि अपामार्गभृंगराजखदिरशमीदूर्वाकुशदमनकबिल्वतुलसीपत्राण्युत्तरोत्तराधिकप्रियाणितुलसीसर्वाधिका जातिपुष्पसहस्रेणमालार्पणेकल्पकोटिसहस्रंविष्णुपुरेवासः आम्रमंजर्यापूजनेगोकोटिदानफलं ॥

अब विष्णुके प्रिय पुष्पोंकों कहताहुं.—चमेली, जूई, केतकी, मोगरी, अशोक, चंपा, उंडिणी, बकुल, कमल, कुंद, कनेर, पाटला, तगर ये पुष्प और अन्यभी सुगंधित पुष्प विष्णुकों प्रिय हैं. ऊंगा, भंगरा, खैर, जांटी, दूर्वा, कुश, दमना, बेलपत्र और तुलसी इन्होंके पत्ते एकसें एक अधिक प्रिय हैं. सबोंसें तुलसी अधिक प्रिय है. जूईके अथवा चमेलीके हजार पुष्पोंकी माला बनायके विष्णुकों अर्पण करनेमें कल्पकोटिसहस्रवर्षपर्यंत विष्णुके पुरमें वास होता है. आंबकी मंजरियोंसें पूजन करनेसें किरोड गौओंके दानका फल मिलता है.

अथशिवस्य चतुर्णांपुष्पजातीनांगंधमाघ्रातिशंकरः अर्कस्यकरवीरस्यबिल्वस्यचबकस्यच दशसुवर्णदानफलंश्वेतार्कपुष्पं ततःसहस्रगुणंबकपुष्पं एवंधत्तूरशमीपुष्पद्रोणपुष्पनीलोत्पलानामुत्तरोत्तराणांसहस्रगुणत्वं मणिमुक्ताप्रवालैस्तुरत्नैरप्यर्चनंकृतं नगृह्णामिविनादेविबिल्वपत्रैर्वरानने सर्वकामप्रदंबिल्वंदारिद्र्यस्यविनाशनं नीलोत्पलसहस्रेणमालार्पणेकल्पकोटिसहस्रंशिवपुरेवासः धत्तूरैर्बृहतीपुष्पैश्चपूजनेगोलक्षफलं पाटलामंदारापामार्गजातीचंपकोशीरत

गरनागकेसरपुन्नागजपामल्लिसहकारकुसुंभपुष्पाणिशिवप्रियाणि धत्तूराणिकदंबानिरात्रौदेयानिशंकरे मदनरत्ने केतकानिकदंबानीतिपाठः अभावेपुष्पपत्राणामन्नाद्येनाभिपूजयेत् शालितंडुलगोधूमयवैर्वापिसमाचरेत् ॥

अब शिवजीकों जो जो पुष्प प्रिय हैं तिन्होंकों कहताहुं.—आक, कनेर, बेल, और वकपुष्प इन चार जातीके पुष्पोंकी गंधकों महादेवजी ग्रहण करते हैं. सुपेद आकके पुष्पसें महादेवकी पूजा करनेमें दशतोले सोनाके दानका फल मिलता है. आकके पुष्पसें हजार गुणा बकपुष्प प्रिय है. इस प्रकार धतूरा, जांटीका पुष्प, द्रोणपुष्प, नीला कमल ये एकसें दूसरा अधिक इस प्रकार सहस्रगुण प्रिय होते हैं. “ हे पार्वति, बेलपत्रके विना हीरा, मोती, मूंगा, और रत्न इन्होंकरकेभी करी पूजाकों मैं ग्रहण नहीं करूंगा. ” बेलपत्र दरिद्रका नाश करनेवाला और सब कामनाओंकों देनेवाला है. नीले कमलके हजार पुष्पोंकी माला अर्पण करनेसें कल्पकोटिसहस्रवर्षपर्यंत शिवपुरमें वास होता है. धतूराके पुष्प और बडी कटेलीके पुष्पोंकरके पूजन करनेमें लक्ष गौओंके दानका फल मिलता है. पाटला, मंदार, ऊंगा, जुई, चंपक, खस, तगर, नागकेसर, पुन्नाग, जासवंद, मोगरी, आंबा, कुसुंभा इन्होंके पुष्प महादेवकों प्रिय होते हैं. धतूरा और कदंबके फूल शंकरकों रात्रिविषे अर्पण करने. **मदनरत्नग्रंथमें** ‘धतूरा और कदंब’ के स्थानमें ‘केतकी और कदंब’ ऐसा पाठ कहा है. पुष्प और पत्ते नहीं मिलैं तौ अन्न आदिसें पूजा करनी. अथवा शालिचावल, गेहूं, अथवा जव इन्होंसेंभी शंकरकी पूजा करनी.

अथनिषिद्धानि बंधूककुंदातिमुक्तकेतकीकपित्थबकुलशिरीषनिंबानि पुष्पपत्रादिकंस्वाभिमुखमुत्तानमर्पयेत् पत्रंपुष्पंफलंचैवयथोत्पन्नंतथार्पयेदितिवचनात् बिल्वपत्रंतुस्वाभिमुखाग्रंन्युब्जमर्पयेत् पक्काम्रफलस्यशिवार्पणेवर्षायुतंशिवपुरेवासः सव्यंव्रजेत्ततोसव्यंप्रणालींनैवलंघयेदित्यादिस्थिरलिंगेप्रदक्षिणाप्रकारः चरेतुसव्येनैव देव्याअपिबकुलकुंदादिसहितान्येतान्येवप्रियाणि धान्यानांसर्वपत्रैश्चपुष्पैर्देवींप्रपूजयेत् दूर्वाकुंदैःसिंधुवारैर्बंधूकागस्तिसंभवैःबिल्वपत्रैःपूजनेराजसूयफलं करवीरस्रजाग्निष्टोमस्य बकुलस्रजावाजपेयस्य द्रोणस्रजाराजसूयस्येति एवंसूर्यविघ्नेशादेरपिप्रायोविष्णुवत्ज्ञेयानि ॥

इसके अनंतर निषिद्ध पुष्पोंकों कहताहुं.—बंधूक, कुंद, कस्तूरमोगरी, केतकी, कैथ, वकुल, शिरस, और नीव इन्होंके पुष्प शिवजीकों निषिद्ध हैं. पुष्प और पत्ते आदि अपने सन्मुख और सीधे करके अर्पण करने, क्योंकी, “ पत्र, पुष्प और फल ये जैसे उत्पन्न होते हैं तैसे अर्पण करने ” ऐसा वचन है. बेलपत्र तौ अपने सन्मुख और मूंधा करके अर्पण करना. पके हुये आंबके फलकों महादेवकों अर्पण करनेसें दशसहस्रवर्षपर्यंत शिवके पुरमें वास होता है. “ शिवकी परिक्रमा करनी होवै तौ प्रथम वामे हाथके प्रदेशसें प्रणालीपर्यंत करनी. पीछे तहांसें फिरके दाहिने हाथके प्रदेशसें प्रणालीपर्यंत करनी. परंतु प्रणालीका अर्थात् मोरीका उल्लंघन नहीं करना, ” इस आदि प्रकार स्थिरलिंगकी परिक्रमामें जानना. चलरूपी लिंगकी परिक्रमा तौ वामहाथके अनुसार करनी. वकुल, कुंद आदिसहित येही पुष्प देवीकोंभी प्रिय हैं. “ अन्नोंके वृक्षोंके सब पत्ते, और पुष्प, दूर्वा, कुंद, संभालू, बंधूक

अर्थात् दुपहरिया और अगस्ति इन्होंके पुष्पोंसें देवीकी पूजा करनी." बेलपत्रोंसें पूजा करनेसें राजसूययज्ञका फल मिलता है. कनेरके पुष्पोंकी मालासें अग्निष्टोमका फल प्राप्त होता है. बकुल पुष्पोंकी मालासें वाजपेययज्ञका फल मिलता है. द्रोण अर्थात् केवडाविशेषके पुष्पोंकी माला अर्पण करनेसें राजसूययज्ञका फल मिलता है. इस प्रकार सूर्य, गणपति आदि देवतोंकों प्रिय पुष्प बहुधा विष्णुकी तरह जानने, अर्थात् विष्णुकों जो प्रिय पुष्प हैं वेही सूर्यकों और गणेशकोंभी प्रिय होते हैं ऐसा तात्पर्य जानना.

अथशिवनिर्माल्यग्रहणविचारः अग्राह्यंशिवनैवेद्यंपत्रंपुष्पंफलंजलं शालग्रामशिलासंगात्सर्वंयातिपवित्रतां शैवसौरनैवेद्यभक्षणेचांद्रायणंअभ्यासेद्विगुणं मत्याभ्यासेसांतपनं अन्यनिर्माल्येप्यनापद्येवं इदंचज्योतिर्लिंगस्वयंभूलिंगसिद्धप्रतिष्ठापितलिंगातिरिक्तस्थावरलिंगविषयं ज्योतिर्लिंगादौतुपूजकेनदत्तंफलतीर्थादिकंभक्त्याशुद्धयर्थंग्राह्यंनलोभेन पंचायतनस्थितलिंगेषुचरेषुप्रतिमासुचान्नादेरपिस्वयंग्रहणेपिनदोषः ज्योतिर्लिंगाद्यन्यस्थिरलिंगेषुतीर्थोदकचंदनमात्रंश्रद्धावद्भिःशिवोपासकैरेवग्राह्यं ज्योतिर्लिंगादौपूजकदत्तमन्नमपिभक्ष्यमितिकेचित्॥

अब शिवनिर्माल्यग्रहणका निर्णय कहताहुं.

"शिवकों अर्पण किये नैवेद्य, पत्र, पुष्प, फल, जल ये अग्राह्य हैं; परंतु शालग्रामकी मूर्तिके संपर्कसें शिवके सब नैवेद्यादि पदार्थ पवित्र होते हैं." शिव और सूर्यकों अर्पण किये नैवेद्य भक्षण करनेमें चांद्रायण करना. नित्यप्रति भक्षण करनेका अभ्यास होवै तौ दुगुना प्रायश्चित्त करना. बुद्धिपूर्वक भक्षण करनेमें सांतपन करना. आपत्कालके विना दूसरे कालमें अन्य देवतोंके नैवेद्यकों भक्षण करनेमें इसी प्रकार प्रायश्चित्त जानना. ज्योतिर्लिंग, स्वयंभूलिंग और सिद्ध पुरुषोंनें स्थापित किया लिंग इन्होंसें दूसरे स्थावर लिंगोंके विषयमें यह शिवनिर्माल्यग्रहणका निषेध जानना. ज्योतिर्लिंग आदिविषे तौ, पूजा करनेवालेनें दिया फल और तीर्थोदक आदि भक्तिकरके शुद्धिके अर्थ ग्रहण करना, लोभसें नहीं ग्रहण करना. पंचायतनस्थ चरबाणलिंग और प्रतिमा इन्होंका अन्न आदि नैवेद्यभी आप ग्रहण करै तौभी दोष नहीं है. ज्योतिर्लिंग आदिसें अन्य जो स्थिरलिंग हैं तिन्होंका तीर्थोदक और चंदन मात्र भक्तिवाले शिवोपासकोंनेंही ग्रहण करना. ज्योतिर्लिंग आदिके विषयमें पूजा करनेवालेनें दिया अन्नभी भक्षण करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं.

त्र्युत्तरारोहिणीध्रुवं मघाभरणीपूर्वात्रयंक्रूरं श्रवणत्रयपुनर्वसुस्वात्यश्चरं अश्विनीहस्तपुष्यंक्षिप्रं अनुराधारेवतीमृगचित्रंमृदु कृत्तिकाविशाखेमिश्रं मूलाश्लेषाज्येष्ठार्द्रास्तीक्ष्णं इति नक्षत्रसंज्ञाः ॥

अब नक्षत्रोंकी संज्ञा कहताहुं.

उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा और रोहिणी ये नक्षत्र ध्रुवसंज्ञक हैं. मघा, भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा ये नक्षत्र क्रूरसंज्ञक हैं. श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु और स्वाती ये नक्षत्र चरसंज्ञक हैं. अश्विनी, हस्त, पुष्य ये नक्षत्र क्षिप्रसं-

ज्ञक हैं. अनुराधा, रेवती, मृगशिर, चित्रा ये नक्षत्र मृदुसंज्ञक हैं. कृत्तिका, विशाखा ये नक्षत्र मिश्रसंज्ञक हैं. मूल, आश्लेषा, ज्येष्ठा, आर्द्रा ये नक्षत्र तीक्ष्णसंज्ञक हैं. इस प्रकार नक्षत्रोंकी संज्ञा कही.

यत्रनोक्तातिथिस्तत्रग्राह्यारिक्तामसमांविना वारोपियत्रनप्रोक्तस्तत्रार्कार्किकुजान्विना चर मृदुक्षिप्रध्रुवमूलविशाखामघासुसकुजेशुभवारेभूकर्षणंहितं सूर्यत्यक्तनक्षत्रात्त्र्यष्टनवाष्टसु अशुभंशुभमशुभंशुभमितिहलचक्रं अत्रैवनक्षत्रेशनिभौमभिन्नवारेबीजवापः सस्यारोपणंच धान्यच्छेदश्च क्षीरवृक्षजन्यःखलमध्येस्तंभः धान्यानांमर्दनंज्येष्ठामूलमघाश्रवणरेवतीरोहिण्यनुराधाफल्गुनीद्वयेशुभं धान्यसंग्रहःक्षिप्रध्रुवचरमृदुमूलेषुज्ञगुरुशुक्रेषुचरभिन्नलग्नेशुभः ॐधनदायसर्वलोकहितायदेहिमेधान्यंस्वाहेतिमंत्रंलिखित्वाधान्यागारेक्षिपेत्तेनधान्यवृद्धिः बुधमंददिनेनैवधनधान्यव्ययःशुभः अद्यान्नवान्नंसद्वारेमृदुक्षिप्रचरेदिवा ॥

जिस विषयमें तिथि नहीं कही होवै तिस विषयमें चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी और अमावस इन तिथियोंकों वर्ज करके अन्य तिथि लेनी. जहां वार भी नहीं कहा होवै तहां रविवार, शनिवार, मंगलवार इन्होंकों वर्जित करके अन्य वार लेने. श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाती, अनुराधा, रेवती, मृगशिर, चित्रा, अश्विनी, हस्त, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, मूल, विशाखा, मघा इन नक्षत्रोंमें और मंगलवार, सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार इन वारोंमें पृथिवीकर्षण शुभ होता है. सूर्यसें त्यागे हुये नक्षत्रसें अर्थात् जिस नक्षत्रपर सूर्य होवै तिस्सें पूर्वनक्षत्रसें ३, ८, ९, ८ ऐसे नक्षत्र क्रमसें अशुभ, शुभ, अशुभ, शुभ, इस प्रकार हलचक्र जानना. ये जो हलचक्रके नक्षत्र कहे हैं इन नक्षत्रोंमें शनिवार और मंगलवारसें वर्जित अन्य वारोंमें बीजका बोवना, खेतीका रोपणा, और खेतीका काटने लगना ये शुभ होते हैं. वडवृक्षका तिरछा लगाना. ज्येष्ठा, मूल, मघा, श्रवण, रेवती, रोहिणी, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी इन नक्षत्रोंमें अन्नोंका मर्दन शुभ है. हस्त, अश्विनी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाती, मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मूल इन नक्षत्रोंमें और बुध, बृहस्पति, शुक्र इन वारोंमें और चरलग्नसें वर्जित अन्य लग्नमें अन्नका संग्रह शुभ है. अन्नसंग्रहकालमें “ ॐधनदायसर्वलोकहितायदेहिमेधान्यंस्वाहा ” इस प्रकार मंत्र लिखके कोठामें धरना, तिसकरके अन्नकी वृद्धि होती है. बुधवार और शनिवारकों व्याजपर रुपये लगाने और सवाया तथा डोढा भावके अर्थ अन्न देना ये दोनों कर्म नहीं करने. मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु और स्वाती इन नक्षत्रोंमें और शुभ वारोंमें दिनविषे नवीन अन्नकों भक्षण करना.

अथवस्त्रादि वस्त्रभूषणविधिर्ध्रुवाश्विनीहस्तपंचकपुनर्वसुद्वये पौष्णवासवभयोश्चसत्तिथौ मंदभौमशशिवासरान्विना अनुक्तेपीष्टदंवस्त्रंविप्राज्ञोत्सवलब्धिषु ध्रुवपुष्यादितौयोषिद्धत्तेया वस्त्रभूषणे नप्राप्नोतिपतिप्रीतिंस्वातिवारुणभेचया पादुकासनशय्यादेर्भोगःसत्तिथिवासरे ध्रुव

क्षिप्रमृदुश्रोत्रभरणीषुपुनर्वसौ चेन्नव्यवस्त्रंमध्यांशेदग्धस्फुटितपंकितं तत्त्यजेच्छांतिकंकुर्यात्त्यजेदेवांत्यभागयोः विज्ञेयमेतच्छय्यायामास्तृतौपादुकास्वपि सूचीकर्मानुराधाश्विचित्रामृगपुनर्वसौ वस्त्रंक्षाल्यंधारणोक्तेकालेबुधदिनंविना भोजनंभाजनेरौप्यस्वर्णकांस्यादिनिर्मिते कुर्यादमृतयोगेषुचरक्षिप्रमृदुध्रुवैः स्याद्भूषणानांघटनंचराक्षिप्रमृदूद्भवैः शुभवासरेरत्नवतांमिश्रभेपिरवौकुजे इतिवस्त्रादिविचारः ॥

अब वस्त्रादि धारणका मुहूर्त कहताहुं.

उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, अश्विनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती और धनिष्ठा इन नक्षत्रोंमें; शुभ तिथिके दिनमें मंगल, शनि और सोम इन वारोंसें अन्य वारोंमें वस्त्र और गहना धारण करना. ब्राह्मणोंकी आज्ञा, विवाह आदि उत्सव, लाभका होना इनोंविषे निंद्य वारमेंभी वस्त्रका धारण करना वांछित फलदायक होता है. उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, पुष्य, पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें जो स्त्री वस्त्रकों और गहनाकों धारण करती है और शतभिषानक्षत्रमें स्नान करती है वह स्त्री पतिकी प्रीतिकों पात्र नहीं होती है. शुभ तिथि और शुभ वार होवैं ऐसे दिनमें; ध्रुव, क्षित्र, मृदु, श्रवण, भरणी, पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें खडाऊं, आसन, शय्या इन आदिकोंका उपभोग करना. नवीन वस्त्रके नव भाग मानके मध्यके तीन भागोंमें नवीन वस्त्र जल जावै अथवा फट जावै अथवा कीचडसें युक्त हो जावै तौ तिस वस्त्रकों त्यागके शांति करनी. दोनों तर्फके अंशोंमें नवीन वस्त्र जल जावै अथवा फट जावै किंवा कीचड आदिसें युक्त हो जावै तौ केवल वस्त्रकों त्याग देना, शांति नहीं करनी. यह निर्णय शय्या, आसन, खडाऊं इन्होंके जल जाने और टूट फूट जाने आदिके विषयमें जानना. अनुराधा, अश्विनी, चित्रा, मृगशिर, पुनर्वसु, इन नक्षत्रोंमें सूचीकर्म अर्थात् शिवणाकर्म करना. वस्त्र धारण करनेके मुहूर्तमें बुधवारकों त्यागकर वस्त्रोंकों धोवना शुभ है. चांदी, सोना, कांसी इन आदि धातुओंके बनाये जो पात्र तिन्होंमें भोजन करनेका सो अमृतयोगमें और चर, क्षिप्र, मृदु और ध्रुवसंज्ञक नक्षत्रोंमें करना. चर, क्षिप्र, मृदु और ध्रुवनक्षत्रोंमें और शुभ वारोंमें अलंकार घडाने शुभ है. मित्र नक्षत्रोंमें और रवि, मंगल इन वारोंमें रत्नजडित गहनोंकों घडाना शुभ है. इस प्रकार वस्त्र आदि धारणका विचार समाप्त हुआ.

शस्त्राणांघटनंक्रूरमिश्राश्विमृगतीक्ष्णभे शस्त्रंधार्यंध्रुवक्षिप्रमृदुज्येष्ठाविशाखके सेवाकार्याक्षिप्रमैत्रध्रुवैर्ज्ञेज्यार्कभार्गवे मंदेपिचेत्सेवकर्क्षंस्वामिभान्नद्वितीयकं हस्तषट्कध्रुवश्रोत्ररेवती पुष्यभेशुभं पुनर्वसौचशिबिकागजाश्वादिषुरोहणं राज्ञांविलोकनंक्षिप्रश्रुतिद्वयमृदुध्रुवे नृत्यारंभःपुष्यमृगध्रुवज्येष्ठाधनिष्ठयोः अनुराधाशतभिषग्घस्तेस्याच्छुभवासरे विपणिःस्यान्मृदुक्षिप्रध्रुवैरिक्ताकुजान्विना क्रयःकार्योश्विनीस्वातीश्रवश्चित्राशतांत्यभे विक्रयोभरणीपूर्वात्रयाश्लेषासुमिश्रभे सेतुबंधोध्रुवेस्वात्यांजीवार्कशनिवासरे नानापशुक्रियाहस्तपुष्याद्रामृगमिश्रभे पुनर्वसौधनिष्ठाश्विपूर्वाज्येष्ठाशतांत्यभे त्यक्त्वार्कभौमेंदुशनीन्श्रुतिचित्राध्रुवाणिच अमा

रिक्ताष्टमीश्चापिगतिंक्रयमुखाःशुभाः द्रव्यंलघुचरैर्योज्यंवृद्ध्यर्थंचरलग्नके ऋणंभौमेनगृणहीयाद्वृद्धियोगेर्कसंक्रमे धनिष्ठापंचकेहस्तेत्रिपुष्करद्विपुष्करे भौमादिषुऋणच्छेदंकुर्याच्चधनसंग्रहं बुधेधनंनप्रदेयंसंग्रहस्तुबुधेशुभः शन्यर्कारैस्त्रिपादर्क्षैर्भद्रातिथ्यात्रिपुष्करः मृगचित्राधनिष्ठासुतत्तिथ्यह्निद्विपुष्करः शुभाशुभेषुत्रिगुणंद्विगुणंचफलंक्रमात् मिश्रक्रूरेषुतीक्ष्णेषुस्वात्यांद्रव्यंनलभ्यते दत्तंप्रयुक्तंनिक्षिप्तंनष्टंचेत्याहनारदः ॥

क्रूर, मिश्र, अश्विनी, मृगशिर और तीक्ष्ण इन नक्षत्रोंमें तलवार आदि शस्त्रोंकों घडवाना. ध्रुव, क्षिप्र, मृदु, ज्येष्ठा और विशाखा इन नक्षत्रोंमें शस्त्र धारण करना. क्षिप्र, मैत्र, और ध्रुव इन नक्षत्रोंमें; बुध, बृहस्पति, रवि और शुक्र इन वारोंमें और स्वामीके नक्षत्रसें सेवकका नक्षत्र दूसरा नहीं होवै तौ शनिवारमेंभी स्वामीकी सेवा करनी, अर्थात् चाकरीकों रहना. हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, ध्रुवसंज्ञक, श्रवण, रेवती, पुष्य और पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें पालकी, हस्ती, घोडा इन आदिपर चढना शुभ है. क्षिप्र, श्रवण धनिष्ठा, मृदु, और ध्रुव इन नक्षत्रोंमें राजाका दर्शन करना. पुष्य, मृग, ध्रुव, ज्येष्ठा, अनुराधा, शतभिषा और हस्त इन नक्षत्रोंमें और शुभ वारमें नृत्य अर्थात् नाचनेकों आरंभ करना शुभ है. मृदु, क्षिप्र, ध्रुव इन नक्षत्रोंमें; रिक्ता तिथि, और मंगलवार इन्होंसें वर्जित दिनमें विपणि अर्थात् व्यापारके वास्ते दुकान खोलना शुभ है. अश्विनी, स्वाती, श्रवण, चित्रा, शतभिषा और रेवती इन नक्षत्रोंमें क्रय अर्थात् मोल देकर वस्तु खरीदना शुभ है. भरणी, पूर्वा, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, आश्लेषा और मिश्रसंज्ञक नक्षत्र इन नक्षत्रोंमें मोल लेके वस्तु वेचना शुभ है. ध्रुवसंज्ञक, स्वाती, इन नक्षत्रोंमें; बृहस्पति, रवि और शनि इन वारोंमें पूलका बांधना शुभ है. हस्त, पुष्य, आर्द्रा, मृगशिर, मिश्रसंज्ञक नक्षत्र, पुनर्वसु, धनिष्ठा, अश्विनी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, ज्येष्ठा, शतभिषा और रेवती इन नक्षत्रोंमें और रविवार, मंगलवार, सोमवार, शनिवार, श्रवण, चित्रा, और ध्रुवनक्षत्र, अमावस, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी इन्होंकों वर्जित करके पशुका गमन अर्थात् पशुकों खरीदना आदि और पशुसंबंधी कर्म शुभ होता है. लघुचरसंज्ञक नक्षत्रोंमें, चर लग्नमें वृद्धिके अर्थ द्रव्यका व्यापार करना. मंगलवार, वृद्धियोग, सूर्यकी संक्रांति इन दिनोंमें करजा नहीं लेना. धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती, हस्त, त्रिपुष्कर, द्विपुष्कर, मंगलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार और शनिवार इन्होंमें कर्जा देना और धनका संग्रह करना ये करने. बुधवारमें कर्जा नहीं देना. बुधवारमें धनसंग्रह करना शुभ है. शनिवार, रविवार, मंगलवार ये वार; कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तरा, विशाखा, उत्तराषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, ये नक्षत्र और द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी ये तिथि, इन्होंका योग **त्रिपुष्करयोग** कहाता है. मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा ये नक्षत्र; भद्रा तिथि; शनिवार, मंगलवार, और रविवार ये तीनोंका योग होनेमें **द्विपुष्करयोग** होता है. ये त्रिपुष्कर और द्विपुष्कर योग शुभ और अशुभ कर्मविषे क्रमसें तिगुना और दुगुना फल देनेवाले होते हैं. अर्थात् इस त्रिपुष्कर योगमें जो किसीका मृत्यु होवै तौ तीन मृत्यु होवैंगे ऐसा जानना. इस त्रिपुष्करमें चीज नष्ट होवै तौ तिससहित तीन चीज नष्ट होवैंगी ऐसा जानना. तैसेही इस त्रिपुष्कर योगमें

---

१ पशुगमनंपशुक्रयादिकमित्यर्थः ॥

लाभ होवै तौ तिगुना लाभ होवैगा ऐसा जानना. द्विपुष्करयोगकाभी फल इसही प्रकार जानना. मिश्र, क्रूर, तीक्ष्ण और स्वाती इन नक्षत्रोंमें दिया, गाडके धरा और नष्ट हुआ ऐसा द्रव्य नहीं मिलता है ऐसा नारदमुनि कहते हैं.

अंधंमंदंचचिविटंसुलोचनमितिक्रमात् गणनीयंरोहिणीभादंधेनष्टंलभेद्द्रुतं मंदेयत्नाल्लभेतै वचिबिटस्वर्क्षयोर्नहि अन्विष्यंपूर्वतोंधेषुमंदसंज्ञेषुदक्षिणे प्रतीच्यांचिविटाख्येषुसुलोचनउदग्दिशि राजाभिषेकः श्रवणेध्रुवर्क्षेज्येष्ठामृदुक्षिप्रउदग्रवौस्यात् त्यक्त्वाररिक्ताधिकचैत्ररात्रीश्चंद्रेज्यशुक्राभ्युदयेशुभाय जलाशयानांखननंमघापुष्यध्रुवेमृगे पूर्वाषाढानुराधांत्यधनिष्ठाशतहस्तभे जलराशिगतेचंद्रेलग्नस्थेचबुधेगुरौ क्षौरंचौलोक्तनक्षत्रवारादिषुशुभंजगुः पंचमेपंचमे राज्ञांदिनेन्येषांयदृच्छया श्मश्रुकर्मभवेन्नैवनवमेदिवसेकाचित् क्षौरंभूतेरतंदर्शेवर्जयेच्चजिजीविषुः क्षौरंनकुर्युरभ्यक्तभुक्तस्नातविभूषिताः प्रयाणसमरारंभेनरात्रौनचसंध्ययोः आद्धाह प्रतिपाद्रिक्तव्रताह्निचनवैधृतौ प्रशस्तंजन्मनक्षत्रंसर्वेकर्मसुकीर्तितं क्षौरप्रयाणभैषज्यंविवादेषु नशोभनं षष्ठ्यमापूर्णिमापातचतुर्दश्यष्टमीतथा आशुसन्निहितंपापंतैलेषुस्त्रीभगेक्षुरे राजकार्ये नियुक्तानांनराणांभूपजीविनां श्मश्रुलोमनखच्छेदेनास्तिकालविशोधनं क्षौरंनैमित्तिकंकार्यं निषेधेसत्यपिध्रुवं यज्ञेमृतौबंधमोक्षेनृपविप्राज्ञयापिच प्राग्वयस्कैःसपितृकैर्नकार्यंमुंडनंसदा मुंडनस्यनिषेधेपिकर्तनंतुविधीयते उदङ्मुखःप्राङ्मुखोवावपनंकारयेत्सुधीः केशश्मश्रुलोम नखान्युदक्संस्थानिवापयेत् आनर्तोहिच्छत्रःपाटलिपुत्रोदितिर्दितिःश्रीशः क्षौरेस्मरणादेषांदोषानश्यंतिनिःशेषाः ॥

रोहिणीनक्षत्रसें आदि ले चार चार नक्षत्र गिनके क्रमसें अंध, मंद, चिबिट और सुलोचनसंज्ञक होते हैं. अर्थात् रोहिणी अंध; मृगशिर मंद; आर्द्रा चिबिट और पुनर्वसु सुलोचन, इस प्रकारसें आगेभी जान लेना. अंध नक्षत्रमें गई वस्तु शीघ्र मिलती है. मंद नक्षत्रमें गई वस्तु जतनसें मिलती है. चिबिट और सुलोचन नक्षत्रोंमें गई वस्तु नहीं मिलैगी. अंधनक्षत्रमें गई वस्तु पूर्वदिशामें खोजनी, मंदनक्षत्रमें गई वस्तु दक्षिणदिशामें खोजनी, चिबिट नक्षत्रमें नष्ट हुई वस्तु पश्चिम दिशामें, और सुलोचननक्षत्रमें नष्ट हुई वस्तु उत्तरदिशामें शोधनी. श्रवण, ध्रुवसंज्ञक, ज्येष्ठा, मृदु, क्षिप्र इन नक्षत्रोंमें; उत्तरायणके सूर्यमें; सोमवारमें; बृहस्पति और शुक्रके उदयमें; मंगलवार, रिक्ता तिथि, अधिकमास, चैत्रमास, रात्रि इन्होंको वर्जित करके राजाभिषेक करना शुभ है. मघा, पुष्य, ध्रुव, मृगशिर, पूर्वाषाढा, अनुराधा, रेवती, धनिष्ठा, शतभिषा और हस्त इन नक्षत्रोंमें; और जलराशिपर चंद्रमा होके बुध और बृहस्पति लग्नमें स्थित होवै तब बावडी, कुवा, तलाव आदि खोदना. चौलकर्ममें कहे नक्षत्र और वार तिन्होंपर क्षौर कराना शुभ है. पांच पांच दिनमें राजाओंनें क्षौर कराना. अन्य पुरुषोंनें उक्त दिनमें क्षौर कराना. नवमे दिनमें श्मश्रुकर्म कभीभी नहीं कराना. प्राणोंको बचानेकी इच्छा करनेवाले मनुष्यनें चतुर्दशीकों क्षौर और अमावसकों स्त्रीसंग नहीं करना. अभ्यंगसें युक्त, भोजन किया हुआ, स्नान किया हुआ, और गहना आदिसें भूषित ऐसे मनुष्यनें क्षौर नहीं कराना. प्रयाण दिन, युद्धके आरंभका दिन, रात्रि,

संधिकाल, श्राद्धका दिन, प्रतिपदा, रिक्ता तिथि, व्रतका दिन, वैधृति इन दिनोंमें श्मश्रुकर्म
नहीं कराना. सब कर्म करनेमें जन्मनक्षत्र प्रशस्त है; परंतु श्मश्रुकर्म, गमन, औषधिसेवन
और वादविवाद इन्होंविषे प्रशस्त नहीं है. षष्ठी, अमावस, पूर्णिमा, व्यतीपात, चतुर्दशी और
अष्टमी इन दिनोंमें तेलका सेवन, स्त्रीसंभोग, श्मश्रुकर्म ये नहीं करने. राजकार्यमें नियुक्त,
राजाके योगसें उपजीविका करनेवाले इन मनुष्योंनें श्मश्रु अर्थात् डाढी मूंछके क्षौरमें, रोम
और नखोंके छेदनमें कालकी शुद्धिका विचार नहीं करना. क्षौर करानेका निषेध होवै तौ-
भी नैमित्तिक, और यज्ञ, मृत्यु, बंधमोक्ष, राजाकी आज्ञा, ब्राह्मणकी आज्ञा इन्होंके होनेमें
क्षौर निश्चयकरके कराना. जिसका पिता जीवता होवै तिस पुरुषनें पूर्व अवस्थामें मुंडन नहीं
कराना. मुंडन नहीं कराना, ऐसा निषेध कहा है तथापि बालोंका काटना सर्वकाल करना.
बुद्धिमान् मनुष्यनें उत्तरके तर्फ मुख करके किंवा पूर्वके तर्फ मुख करके श्मश्रुकर्म कराना.
बाल, श्मश्रु, लोम और नख इन्होंका छेद उदक्संस्थ कराना. निंद्य वार आदि दिनमें ह-
जामत करानी होवै तौ दोषकों दूर करनेका उपाय—"**आनर्तोहिच्छत्रः पाटलिपुत्रो-
ऽदितिर्दितिः श्रीशः ॥ क्षौरे स्मरणादेषां दोषा नश्यंति निःशेषाः**" अर्थ—आनर्त, अ-
हिच्छत्र, पाटलिपुत्र, अदिति, दिति, और श्रीश इन्होंका स्मरण श्मश्रुकालमें करनेसें सब
दोष दूर होते हैं.

अथरोगोत्पत्तौनक्षत्रफलं अश्विन्यांरोगोत्पत्तौएकाहंनवदिनानिवापंचविंशतिदिनानिवा
पीडा १ भरण्यामेकादशैकविंशतिर्वामासंवामृत्युर्वा २ कृत्तिकायांदशनवैकविंशतिर्वा ३
रोहिण्यांदशवानववासप्तवात्रीणिवाहानि ४ मृगेपंचनववात्रिंशद्वा ५ आर्द्रायांमृत्युर्वाद
शाहंवामासंवा ६ पुनर्वसौसप्तनववामृत्युर्वा ७ पुष्येसप्तवामृत्युर्वा ८ आश्लेषायांमृत्युर्विंश
तिस्त्रिंशद्वानववादिनानिपीडा ९ मघायांमृत्युर्वासार्धमासंवामासंवाविंशतिदिनानिवापीडा
१० पूर्वाफल्गुन्यांमृत्युर्वाब्दंमासंवापीडापंचदशवाषष्टिर्वादिनानि ११ उत्तरायांसप्तविंशतिः
पंचदशसप्तवादिनानि १२ हस्तेमृत्युरष्टवानववासप्तवापंचदशवाहानि १३ चित्रायांपक्षम
ष्टवादशवाएकादशवाहानि १४ स्वात्यांमृत्युर्वैकद्वित्रिचतुःपंचमासैर्वादशदिनैर्वारोगनाशः
१५ विशाखायांमासंवापक्षंवाष्टदिनंविंशतिदिनंवापीडा १६ अनुराधायांदशरात्रमष्टाविंश
तिरात्रंवा १७ ज्येष्ठायांमृत्युर्वापक्षंवामासंवैकविंशतिरात्रंवापीडा १८ मूलेमृत्युःपक्षंनवरा
त्रंविंशतिरात्रंवापीडा १९ पूर्वाषाढायांमृत्युर्वाद्वित्रिषडादिमासैर्विंशतिदिनैःपक्षेणवारोग
नाशः २० उत्तराषाढायांसार्धमासंविंशतिरात्रंवामासंवा २१ श्रवणेपंचविंशतिर्दशवाएका
दशवाषष्टिर्वाहानि २२ धनिष्ठायांदशरात्रंपक्षंमासंत्रयोदशरात्रंवा २३ शततारकायांद्वाद
शैकादशवा २४ पूर्वाभाद्रायांमृत्युर्वाद्वित्र्यादिमासंवादशरात्रंवा २५ उत्तराभाद्रायांसार्ध
मासंपक्षंसप्ताहंदशाहंवा २६ रेवत्यांज्वराद्युत्पत्तौदशाहमष्टाविंशतिरात्रंवापीडा २७ जन्म
नक्षत्रेजन्मराशौअष्टमचंद्रेरोगोत्पत्तौमृत्युः २८ अर्कादिवारेक्रमेणमघाद्वादश्यौविशाखैका
दश्यौपंचम्यार्द्रे तृतीयोत्तराषाढे शततारषष्ठ्यौ अष्टम्यश्विन्यौ पूर्वाषाढानवम्यौचेतित्रया
णांयोगेमृत्युः एवमर्कादौअनुराधाभरण्यौआर्द्रोत्तराषाढेमघाशततारेविशाखाश्विन्यौज्येष्ठाम्

गौश्रवणाश्लेषेपूर्वाभाद्रपदाहस्तौचेन्मृत्युयोगः अत्रोक्तास्तिथिवारनक्षत्रशांतयोविस्तृताःकार्याःयेषुनक्षत्रेषुमरणमुक्तंतत्रशांतिरावश्यकीअन्यत्रकृताकृता ॥

अब रोगकी उत्पत्ति होनेमें नक्षत्रोंके फल कहताहुं.

१ अश्विनी नक्षत्रमें ज्वर आदि रोगकी उत्पत्ति होवै तौ १ दिन किंवा ९ दिन किंवा २५ दिनपर्यंत पीडा रहती है. २ भरणी नक्षत्रमें रोगकी उत्पत्ति होवै तौ ११ दिन किंवा २१ दिन किंवा एकमहीनापर्यंत पीडा रहती है अथवा मृत्यु हो जाता है. ३ कृत्तिका नक्षत्रमें रोग उपजै तौ १० दिन, ९ दिन किंवा इक्कीस दिनपर्यंत पीडा रहती है. ४ रोहिणीनक्षत्रमें रोग उपजै तौ १० दिन किंवा ९ अथवा ७ दिनपर्यंत पीडा रहती है. ५ मृगशिरनक्षत्रमें रोग उपजै तौ ५ दिन किंवा ९ दिन अथवा ३० दिनपर्यंत पीडा रहती है. ६ आर्द्रा नक्षत्रमें रोग उपजै तौ मृत्यु अथवा १० दिन किंवा १ महीनापर्यंत पीडा रहती है. ७ पुनर्वसु नक्षत्रमें रोग उपजै तौ ७ दिन, अथवा ९ दिन पीडा रहती है, अथवा मृत्यु हो जाता है. ८ पुष्य नक्षत्रमें रोग उपजै तौ ७ दिन पीडा रहती है अथवा मृत्यु हो जाता है. ९ आश्लेषा नक्षत्रमें रोग उपजै तौ मृत्यु होता है अथवा २० दिन, ३० दिन किंवा ९ दिनपर्यंत पीडा रहती है. १० मघा नक्षत्रमें रोग उपजै तौ मृत्यु होता है अथवा १॥ महीना किंवा एक महीना अथवा २० दिनपर्यंत पीडा रहती है. ११ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें रोग उपजै तौ मृत्यु, अथवा एक वर्ष किंवा एक महीना, किंवा १५ दिन अथवा ६० दिनपर्यंत पीडा रहती है. १२ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें २७ दिन किंवा १५ दिन अथवा ७ दिनपर्यंत पीडा रहती है. १३ हस्त नक्षत्रमें रोग उपजै तौ मृत्यु हो जाता है, अथवा ८ किंवा ९ किंवा ७ किंवा १५ दिनपर्यंत पीडा रहती है. १४ चित्रा नक्षत्रमें रोग उपजै तौ १५ दिन किंवा ८ दिन किंवा १० किंवा ११ दिनपर्यंत पीडा रहती है. १५ स्वाती नक्षत्रमें रोग उपजै तौ मृत्यु हो जाता है, अथवा १, २, ३, ४, ५, ऐसे महीनोंकरके अथवा १० दिनोंकरके रोगका नाश होता है. १६ विशाखा नक्षत्रमें रोग उपजै तौ १ महीना किंवा एक पक्ष किंवा ८ दिन किंवा २० दिनपर्यंत पीडा रहती है. १७ अनुराधानक्षत्रमें रोग उपजै तौ १० रात्रि किंवा अठाईस रात्रिपर्यंत पीडा रहती है. १८ ज्येष्ठानक्षत्रमें रोग उपजै तौ मृत्यु अथवा पक्ष किंवा एक महीना किंवा २१ दिनपर्यंत पीडा रहती है. १९ मूल नक्षत्रमें रोग उपजै तौ मृत्यु होता है, किंवा पक्ष, किंवा ९ रात्रि किंवा २० रात्रिपर्यंत पीडा रहती है. २० पूर्वाषाढा नक्षत्रमें रोग उपजै तौ मृत्यु होता है, किंवा २, ३, ६ महीनोंकरके किंवा २० दिन किंवा १५ दिनकरके रोगका नाश होता है. २१ उत्तराषाढा नक्षत्रमें रोग उपजै तौ १॥ महीना किंवा २० रात्रि किंवा एक महीनापर्यंत पीडा रहती है. २२ श्रवण नक्षत्रमें रोग उपजै तौ २५ दिन किंवा १० दिन किंवा ११ दिन किंवा ६० दिनपर्यंत पीडा रहती है. २३ धनिष्ठा नक्षत्रमें रोग उपजै तौ १० रात्रि किंवा १५ दिन किंवा एक महीना अथवा १३ दिनपर्यंत पीडा रहती है. २४ शतभिषानक्षत्रमें रोग उपजै तौ १२ दिन किंवा ११ दिनपर्यंत पीडा रहती है. २५ पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रमें रोग उपजै तौ मृत्यु होता है अथवा दो तीन महीने, किंवा १० रात्रिपर्यंत पीडा

रहती है. २६ उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रमें रोग उपजै तौ १॥ महीना किंवा १९ दिन किंवा ७ दिन किंवा १० दिनपर्यंत पीडा रहती है. २७ रेवती नक्षत्रमें रोग उपजै तौ १० दिन अथवा २८ दिनपर्यंत पीडा रहती है. २८ जन्मनक्षत्र, जन्मराशि और आठमा चंद्रमा इन्होंविषे रोग उपजै तौ मृत्यु होता है. रविवार आदि वारोंमें क्रमकरके मघा और द्वादशी, विशाखा और एकादशी, पंचमी और आर्द्रा, तृतीया और उत्तराषाढा, षष्ठी और शतभिषा, अष्टमी और अश्विनी, पूर्वाषाढा और नवमी इस प्रकार वार, तिथि, नक्षत्र, इन तीनोंका योग होनेमें रोग उत्पन्न होवै तौ मृत्यु प्राप्त होता है. इस प्रकार रविवार आदि वारोंमें अनुराधा और भरणी, आर्द्रा और उत्तराषाढा, मघा और शतभिषा, विशाखा और अश्विनी, ज्येष्ठा और मृगशिर, श्रवण और आश्लेषा पूर्वाभाद्रपदा और हस्त इन नक्षत्रोंके होनेमें रोग उपजै तौ मृत्यु होता है. इसविषयमें कही तिथि, वार और नक्षत्र इन्होंकी विस्तारयुक्त शांति करनी. जिस नक्षत्रमें मरण कहा है तिस नक्षत्रकी शांति अवश्य करनी. अन्य नक्षत्रोंकी शांति करनी अथवा नहीं करनी.

अथसर्वनक्षत्रसाधारणःशांतिप्रयोगः देशकालौसंकीर्त्यममोत्पन्नव्याधेर्जीवच्छरीराविरोधेनसमूलनाशार्थममुकनक्षत्रशांतिंकरिष्यइतिसंकल्प्य गणेशपूजादिआचार्यंवृत्वाकुंभोपरिपूर्णपात्रेद्वादशदलेनक्षत्रदेवताप्रतिमांसौवर्णींसंपूज्य द्वादशदलेषुसंकर्षणादिद्वादशमूर्तीर्द्वादशादित्यान्वासंपूज्यदूर्वासमित्तिलक्षीराज्यैर्गायत्र्यातत्तद्देवतायै अष्टोत्तरशतंहुत्वामरणादिपीडाधिक्योक्तौसहस्रंहुत्वादध्योदनबलिंदत्वाचार्यायगांप्रतिमांचदद्यादितिसंक्षेपः शांतिमयूखादौनक्षत्रभेदेनहविर्मंत्रबलिधूपादिभेदस्तिथिवारदेवतामंत्रादिभेदविस्तारोत्रद्रष्टव्यः कर्मविपाके जातवेदसइत्यृचोयुतंलक्षंवाजपोरुद्रैर्नमकानुवाकैःसहस्रकमलशस्नानंवाविष्णौसहस्रावृत्तपुरुषसूक्तेनसहस्रघटस्नानंवाज्वरनाशकं यद्वाश्रीभागवतस्थज्वरस्तोत्रजपः ॥

अब सब नक्षत्रोंका साधारण शांतिप्रयोग कहताहुं.

देश और कालका उच्चार करके “ममोत्पन्नव्याधेर्जीवच्छरीरानुरोधेनसमूलनाशार्थं अमुकनक्षत्रशांति करिष्ये” ऐसा संकल्प करके गणेशकी पूजा आदि करनी. पीछे आचार्यका वरण करके कलशपर पूर्णपात्रके मध्यमें बारह दलोंके मध्यमें संकर्षण आदि बारह मूर्ति अथवा बारह आदित्य इन्होंकी पूजा करके दूर्वा, समिध, तिल, दूध और घृत इन्होंकरके गायत्रीमंत्रसें तिस तिस देवताके उद्देशसें १०८ होम करना. मरण आदि बहुतसी पीडा प्राप्त होवैगी ऐसा कहा होवै तिस विषयमें हजार होम करके दहीभातका बलि देके आचार्यकों गोदान और प्रतिमादान देना. इस प्रकार संक्षेप जानना. शांतिमयूख आदि ग्रंथोंमें नक्षत्रोंके भेदसें होमद्रव्य, मंत्र, बलिदान, धूप आदि इन सबोंके अलग अलग प्रकार और तिथि, वार इन्होंकी देवता और मंत्र आदि इन सबोंके अलग अलग प्रकार आदिका विस्तार देख लेना. कर्मविपाक ग्रंथमें “जातवेदसे०” इस ऋचाका दश हजार किंवा एक लक्ष जप करना अथवा महादेवकों नमकानुवाकोंसें हजार कलशोंसें स्नान किंवा विष्णुकों

पुरुषसूक्तके हजार आवर्तनोंसें हजार घटोंकरके स्नान करानेसें ज्वरका नाश होता है ऐसा कहा है. श्रीमद्भागवतमें कहे ज्वरस्तोत्रका जप करना.

अथसर्वरोगनाशकानि रोगानुसारेणलघुरुद्रमहारुद्रातिरुद्राणांजपोभिषेकोवा विष्णुसहस्रनामस्तोत्रस्यशतंसहस्रमयुतंवाजपः सौरंजपःसूर्यनमस्कारार्घ्यदानानिमुंचामित्वेतिसूक्तजपोऽच्युतानंतगोविंदेतिनामत्रयजपोमृत्युंजयजपश्चरोगानुसारेणेति सर्वरोगहराणि ॥

अब सर्वरोगनाशक विधि कहताहुं.

छोटा, बडा, जैसा रोग होवै तिसके अनुसार लघुरुद्र, महारुद्र, अथवा अतिरुद्र इन्होंका जप अथवा अभिषेक करना. विष्णुसहस्रनामस्तोत्रका १०० किंवा १००० किंवा १०००० जप करना. अथवा सौरकी ‘उद्यंनद्य०’[1] इस ऋचाका जप, सूर्यकों प्रणाम और सूर्यकों अर्घ्यदान, “मुंचामित्वा०” इस सूक्तका जप, “अच्युतानंतगोविंद०” इन तीन नामोंका जप, और मृत्युंजयजप ये सब रोगके अनुसार किये हुये सब रोगोंकों हरते हैं.

ज्येष्ठामूलश्रुतिस्वातीमृदुक्षिप्रपुनर्वसौ गुरुशुक्रेंदुवारेषुशस्तंभेषजभक्षणं रिक्तायांचरलग्ने मिश्रक्षिप्रेंद्रमूलपूर्वासु चित्राभरणीश्रवणत्रयभेरविकुजबुधार्कजेस्नायात् वैधृतौचव्यतीपाते भद्रायांसंक्रमेतथा रोगमुक्तस्नानमत्रचंद्रताराबलंनवा ॥

ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, स्वाती, मृदुसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक और पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें; बृहस्पति, शुक्र और सोम इन वारोंमें औषध भक्षण करना श्रेष्ठ है. रिक्ता तिथि, चरलग्न, मिश्रसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, चित्रा, भरणी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा इन नक्षत्रोंमें; रविवार, मंगलवार, बुधवार और शनिवार इन वारोंमें स्नान करना. वैधृति, व्यतीपात, भद्रा, संक्रांति इन दिनोंमें रोगमुक्त स्नान करना. इस विषयमें चंद्रबल और ताराबल होवै अथवा नहीं होवै.

अथाभ्यंगः भद्रासंक्रमपातवैधृतिसितेज्यार्कारषष्ठयादिषुश्राद्धाहेप्रतिपत्द्वयेपरिहरेद्धेतुं विनाभ्यंजनं मांगल्यंविजयोत्सवोब्दवदनंदीपावलीहेतवोभ्यंगस्याथबुधांबुपर्क्षपितृभाभ्यंगात्पतिद्व्यंगना अथापवादः सार्षपंगंधतैलंचयत्तैलंपुष्पवासितं द्रव्यांतरयुतंतैलंपक्वतैलंनदुष्यति किंचिद्गोघृतयुक्तंवाविप्रपादरजोन्वितं नित्याभ्यंगेचनोदुष्टंतैलंनिंद्योन्हिसर्वदा रवौपुष्पंगुरौदूर्वांभौमवारेचमृत्तिकां भार्गवेगोमयंक्षिप्त्वातैलस्नानंसुखावहं ॥

अब अभ्यंगकों निषिद्ध काल कहताहुं.—भद्रा, संक्रांति, व्यतीपात, वैधृति, शुक्र, बृहस्पति, रवि मंगल ये वार; षष्ठीसें १० तिथि; श्राद्धका दिन; प्रतिपदा; द्वितीया इन दिनोंमें कारणके विना अभ्यंगस्नान नहीं करना. विवाह आदि मंगल कार्य; आश्विन शुदि दशमी; वर्षके आरंभका दिन; प्रतिपदा; दिवाली ये अभ्यंग करनेके कारणरूपी दिन हैं. इन दिनोंमें पूर्वोक्त निषिद्ध दिन होवै तौभी अभ्यंग करना. बुधवार, शतभिषा, मघा इन

---

[1] उद्यंनद्येतिद्वृचमात्रजपः ॥

नक्षत्रोंमें अभ्यंग करके स्त्री स्नान करै तौ वह स्त्री पतिका नाश करती है. **इसके अनंतर इसका अपवाद कहताहुं.**—सरसोंका तेल, सुगंधि तेल अथवा पुष्पोंकरके सुवासित किया तेल अथवा दूसरे पदार्थके मिलापसें काढे हुये तेल अथवा गायके घृतसें युक्त किया तेल किंवा ब्राह्मणोंके पैरोंके रजसें युक्त किया तेल इन तेलोंसें निषिद्ध दिनमें अभ्यंग किया जावै तौ दोष नहीं है. नित्यप्रति अभ्यंग करनेमें दोष नहीं है. रविवारकों तेलमें पुष्प डालने, बृहसतिवारकों तेलमें दूर्वा डालनी, मंगलवारकों तेलमें माटी डालनी, शुक्रवारकों तेलमें गोवर डालना. इस प्रकार तेलमें द्रव्य मिलाके निषिद्ध दिनविषे वह तेल लगाके स्नान किया होवै तौ वह सुखकों देता है.

वैशाखेफाल्गुनेपौषेश्रावणेमार्गशीर्षके गृहारंभप्रवेशौस्तःस्तंभोच्छ्रायश्चशस्यते ज्येष्ठकार्तिकमाघांश्चशुभदान्प्राहनारदः तृणगेहंसर्वमासेपौषेमुख्यगृहंनहि हस्तत्रयध्रुवमृदुधनिष्ठाद्वयपुष्यभे रिक्ताअर्ककुजौत्यक्त्वागृहंकुर्याद्विशेदपि शिलान्यासंचखातंचश्रुत्यश्विक्रूरमित्रभैःआश्लेषामूलपुष्यार्कमृगांत्यध्रुवभैरपि केंद्राष्टमेपापहीनेवेश्मकृत्यंस्थिरोदये धनिष्ठापंचकेवर्ज्यः स्तंभोच्छ्रायःसदाबुधैः नेष्टानिसप्तसूर्यर्क्षाद्दिष्टान्येकादशाष्टमात् दशशिष्टानिनेष्टानिचक्रेस्युर्वृषवास्तुनि यद्वातुर्यात्पंचदशात्त्रयोविंशतिसंख्यकात् वेदाब्धिपंचनेष्टानिगृहारंभप्रवेशयोः स्नानंपाकस्वापवस्त्रभुजीनांपशुकोशयोः देवानांचगृहान्कुर्यात्पूर्वादौमुख्यवेश्मनः उदग्दिशं ध्रुवमुखाज्ज्ञात्वाप्राचींप्रसाधयेत् कोणाध्वभ्रमकूपद्वाःपंकस्तंभद्रुमामरैः विद्धादुष्टाद्वार्नदोषो गृहोच्चद्विगुणांतरे सूत्रंभिंत्तिशिलान्यासंस्तंभस्यारोपणंतथा आग्नेयींदिशमारभ्यकुर्यादित्याह कश्यपः अन्यवेश्मस्थितंदारुनान्येवेश्मनियोजयेत् नूतनेनूतनंकाष्ठंजीर्णेजीर्णंप्रशस्यते द्वात्रिंशाधिकहस्तेचतृणागारेचतुर्मुखे नतत्रचिंतयेद्धीमान्गुणानायव्ययादिकान् ॥

अब गृहारंभकों मुहूर्त कहताहुं.—वैशाख, फाल्गुन, पौष, श्रावण और मंगशिर इन महीनोंमें घरका आरंभ, घरमें प्रवेश और स्तंभोंका लगाना शुभ होता है. ज्येष्ठ, कार्तिक और माघ ये महीने गृहकर्मविषे शुभ हैं ऐसा नारदजीनें कहा है. तृणका घर सब महीनोंमें बनाना. पौषमहीनेमें मुख्य घर नहीं बनाना. हस्त, चित्रा, स्वाती, ध्रुवसंज्ञक, मृदुसंज्ञक, धनिष्ठा, शतभिषा, पुष्य इन नक्षत्रोंमें; रिक्ता तिथि, रविवार और मंगलवार इन्होंसें वर्जित दिनमें घरकों प्रारंभ करना और घरमें प्रवेशभी करना. श्रवण, अश्विनी, क्रूरसंज्ञक, अनुराधा, आश्लेषा, मूल, पुष्य, हस्त, मृगशिर, रेवती, ध्रुवसंज्ञक इन नक्षत्रोंमें शिलान्यास और खात करना. केंद्र अर्थात् १, ४, ७, १०, इन स्थानोंमें और अष्टम स्थानमें पाप ग्रह नहीं होवै और स्थिर लग्न होवै तब गृहकृत्य करना. धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती इन नक्षत्रोंविषे घरके स्तंभका पूरण वर्जित करना. **वृषवास्तुचक्र कहताहुं.**—सूर्यके नक्षत्रसें दिननक्षत्रपर्यंत नक्षत्र गिनने, पहले ७ नक्षत्र अशुभ, आठमासें ११ नक्षत्रपर्यंत शुभ, और शेष रहे १० नक्षत्र अशुभ इस प्रकार वृषवास्तुचक्र देखके जिस दिनमें शुभ नक्षत्र होवै तिस दिनमें आरंभ करना. अथवा चौथे नक्षत्रसें, पंदरहमे नक्षत्रसें और तेईशमे नक्षत्रसें क्रमसें चार, चार, पांच ऐसे नक्षत्र घरके आरंभमें और प्रवेशमें अशुभ हैं. मुख्य गृहकी पूर्व आदि दिशासें स्नान घर, रसोईका घर, और शयनका घर, और वस्त्रोंका घर,

भोजनका घर, पशुओंका घर, धनका घर अर्थात् खजाना और देवतोंका मंदिर इस प्रकार घर बनाने उचित है. ध्रुवमुखपरसें उत्तर दिशा जानके प्राची दिशाका साधन करना. कोण, मार्ग, घरट, कुलालचक्र आदि यंत्र, कूप, अन्यद्वार, कीचड, स्तंभ, वृक्ष, देव इन्होंसें विद्ध हुआ घरका द्वार दुष्ट होता है. घरकी उंचाईसें दुगुना कोण आदिका अंतर होवै तौ वेधदोष नहीं है. सूत्रन्यास, भीतका आरंभ, शिलान्यास, और स्तंभोंका पूरण इन्होंका आरंभ आग्नेयी दिशासें लेके करना ऐसा कश्यपजीनें कहा है. एक घरकों लगाया काष्ठ दूसरे घरकों नहीं लगाना. नवीन घरकों नवीन काष्ठ लगाने और पुराने घरकों पुराने काष्ठ लगाने श्रेष्ठ हैं. बत्तीस हाथसें अधिक घर चार द्वारोंवाला होना चाहिये. तृणसें बने हुए घरोंके विषयमें बुद्धिमान् मनुष्यनें आय और व्यय आदि गुणोंका विचार नहीं करना.

अथगृहप्रवेशः वास्तुपूजाविधिःकार्यःपूर्वमेवप्रवेशतः मैत्रध्रुवक्षिप्रचरमूलभैर्धनपुत्रकृत् वास्तुशांतिप्रयोगोन्यतोज्ञेयः वास्तुशांतिर्दिवैवोक्ताप्रवेशस्तुनिशिक्कचित् गृहप्रवेशःप्रारंभोदित मासादिकैःशुभः क्वचिन्माघोर्जशुक्रेषुकैश्चिदुक्तोमृदुध्रुवे श्रेष्ठःक्षिप्रैश्चरैर्मध्योनिंद्यस्तीक्ष्णोग्रामिश्रभैः त्रिषडायेखलैःसद्भिःषडष्टव्ययवर्जितैः शुद्धेंबुरंध्रेचतनौविजनुर्लग्नभाष्टमे ऋक्षाणिपंचसूर्यर्क्षान्नेष्टान्यत्रचतुर्दशात् शेषभानिशुभान्येवंप्रवेशेघटचक्रकं इतिवास्तुप्रकरणं ॥

अब गृहप्रवेश कहताहुं.—नवीन घरमें प्रवेश करनेके पहले वास्तुपूजाविधि अर्थात् वास्तुशांति मैत्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, क्षिप्रसंज्ञक, चरसंज्ञक, और मूल इन नक्षत्रोंमें वास्तुशांति करनी. तिस्सें धन और पुत्र प्राप्त होते हैं. वास्तुशांतिका प्रयोग दूसरे ग्रंथोंसें देख लेना. वास्तुशांति दिनमेंही करनी ऐसा कहा है. कहींक ग्रंथमें घरविषे प्रवेश तौ रात्रिमेंभी कहा है. घरका आरंभ करनेमें जो जो महीने और जो जो नक्षत्र कहे हैं तिन्होंमें गृहप्रवेश करना शुभ है. कहींक ग्रंथमें माघ, कार्तिक, ज्येष्ठ इन महीनोंमें; मृदुसंज्ञक और ध्रुवसंज्ञक इन नक्षत्रोंमें गृहप्रवेश शुभ ऐसा कहा है. क्षिप्र और चर इन नक्षत्रोंमें गृहप्रवेश मध्यम कहा है. तीक्ष्ण, उग्र और मिश्र इन नक्षत्रोंमें गृहप्रवेश निंदित है. **गृहप्रवेशमें लग्नशुद्धि**—जिस लग्नमें प्रवेश करना होवै तिस लग्नसें तृतीय, एकादश और षष्ठ इन स्थानोंमें पापग्रह शुभ होता है. षष्ठ, अष्टम और द्वादश इन स्थानोंमें शुभ ग्रह नहीं होवैं. चतुर्थ और अष्टम इन स्थानोंमें कोई ग्रह नहीं होवै. जन्मराशिसें और जन्मलग्नसें आठमा लग्न नहीं होवै. सूर्यनक्षत्रसें पांच नक्षत्र अशुभ हैं. चौदहमे नक्षत्रसें आठ नक्षत्र अशुभ हैं, अर्थात् १, २, ३, ४, ५, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २० और २१ इन नक्षत्रोंमें प्रवेश नहीं करना. शेष रहे नक्षत्र शुभ हैं. यह कलशचक्र. इस प्रकार वास्तुप्रकरण समाप्त हुआ.

अथधनाद्यर्थगमनं श्रुतिद्वयाश्विपुष्यांत्यानुराधामृगहस्तभे पुनर्वसौगोचरेष्टप्रदवारेव्रजेन्नरः अभिजिद्गंगमेश्रेष्ठंदक्षिणाशांविनाक्षणः मघाचित्रात्रयाश्लेषाभरण्यार्द्राःसकृत्तिकाः पूर्वाभाद्राचनेष्टाःस्युःप्रयाणेजन्मभंतथा त्यजेद्रिक्तांपर्वषष्ठ्यष्टमीद्वादशिकास्तिथीः कृत्तिका भरणीपूर्वामघानांघटिकाःक्रमात् एकविंशतिसप्ताथषोडशैकादशत्यजेत् ज्येष्ठाश्लेषाविशाखा

सुस्वात्यांचापिचतुर्दश भृगोर्मतेसंकटेपिसर्वांस्वातींमघांत्यजेत् स्वातीपित्र्याग्निपूर्वार्धंचित्राश्लेषांतकोत्तरं ॥

अब धनसंपादन आदि कार्यके उद्देशसें गमन.—श्रवण, धनिष्ठा, अश्विनी, पुष्य, रेवती, अनुराधा, मृगशिर, हस्त और पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें; गोचरमें वांछित फलकों देनेवाले वारमें मनुष्यनें गमन करना उचित है. गमन करनेमें अभिजित् नक्षत्र और अभिजित् मुहूर्त दक्षिण दिशाके विना प्रयाणमें श्रेष्ठ है. मघा, चित्रा, स्वाती, विशाखा, आश्लेषा, भरणी, आर्द्रा, कृत्तिका, पूर्वाभाद्रपदा और जन्मनक्षत्र ये नक्षत्र गमनमें अशुभ हैं. रिक्ता तिथि, पर्व, षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी ये तिथि गमनमें वर्जित हैं. कृत्तिका, भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, मघा इन नक्षत्रोंकी पहली घटीका क्रमकरके २१, ७, १६ और ११ ऐसी त्यागनी. ज्येष्ठा, आश्लेषा, विशाखा और स्वाती इन नक्षत्रोंकी चौदह चौदह घटीका त्यागनी. भृगुजीके मतमें स्वाती और मघा ये नक्षत्र सब त्यागने. स्वाती, मघा और कृत्तिका इन्होंका पूर्वार्ध; चित्रा, आश्लेषा और भरणी इन्होंका उत्तरार्ध त्यागना.

वारशूलःसोमशनीप्राच्यामीज्यस्तुदक्षिणे रविशुक्रौप्रतीच्यांस्यादुदीच्यांबुधमंगलौ पूर्वादिदिक्षुमेषाद्याःक्रमात्त्रिश्चंद्रराशयः संमुखोदक्षिणोब्जःसन्पृष्ठेवामेतिनिंदितः दिशियत्रोदेतिशुक्रस्तांदिशंनव्रजेन्नरः नव्रजेत्संमुखेज्ञेपिशुभंपृष्ठोपिवामतः रेवतीमेषगेचंद्रेशुक्रांध्यात्संमुखंव्रजेत् ॥

वारशूल.—पूर्वदिशाविषे प्रयाणमें सोमवार और शनिवार; दक्षिणदिशामें गुरुवार; रविवार और शुक्रवार पश्चिम दिशामें; उत्तरदिशामें मंगलवार और बुधवार ये वर्जित करने. पूर्व आदि दिशाओंमें क्रमकरके मेष आदि चंद्रमाकी राशि तीनवार गिनके चंद्रमाका वासा प्रकट होता है. सन्मुख और दाहिने तर्फ चंद्रमा होवै तौ शुभ है. पृष्ठभागमें और वामभागमें चंद्रमा होवै तौ अशुभ है. जिस दिशामें शुक्र उदय होवै तिस दिशामें गमन नहीं करना. बुध सन्मुख होवै तौभी गमन नहीं करना. पृष्ठ भागमें और वामभागमें बुध शुभ होता है. रेवतीनक्षत्र और मेषराशिपर चंद्रमा होवै तब शुक्र अंधा होता है इसलिये तिस समयमें शुक्रके सन्मुख गमन करना शुभ होता है.

प्रयाणेशुभाःकेंद्र १ । ४ । ७ । १० कोणेषु । ९ । ५ शस्ताःखलास्त्र्यायषट्खेष्वनिष्टः ३ । ११ । ६ । १० शनिःखे कविःसप्तमेग्लौःषडष्टांत्यलग्नेविलग्नेश्वरोप्यस्तषष्ठाष्टमांत्ये केंद्रेवक्रीवक्रिवर्गोलग्नेवारश्चवक्रिणः कुंभःकुंभनवांशश्चलग्नेत्याज्याःप्रयत्नतः मीनलग्नेतदंशेवायातुर्मार्गोतिदुःखदः शत्रुंलग्नभतःषष्ठंतत्पतिर्वामृतिप्रदः शत्रुक्षेत्रेतदंशेवातदृष्टेगमनंनसत् लग्नेस्तंगतराशिश्चजन्मराशिश्चनोशुभः शशीवर्गोत्तमेलग्नेवर्गोत्तमयुतेजयः ॥

अब गमनसमयमें लग्नकी शुद्धि.—जिस लग्नमें गमन करना होवै तिस लग्नसें १, ४, ७, १०, ९, ५ इन स्थानोंमें शुभ ग्रह श्रेष्ठ होता है. ३, ११, ६, १० इन स्थानोंमें पापग्रह शुभ होता है. १० मे स्थानमें शनि अशुभ होता है. ७ मे स्थानमें शुक्र अशुभ है. ६, ८, १२ और १ इन स्थानोंमें चंद्रमा अशुभ है. यात्रालग्नका स्वामी ७, ६, ८, १२ इन स्थानोंमें

अशुभ है. केंद्र अर्थात् १, ४, ७, १० इन स्थानोंमें वक्रीग्रह अशुभ होता है. लग्नमें वक्रीग्रहका वर्ग, वक्रीग्रहका वार, कुंभलग्न, कुंभलग्नका नवांशक, ये गमनसमयमें प्रयत्नसें वर्जित करने. मीनलग्नमें किंवा मीनके नवांशकमें गमन करनेवालेकों मार्ग अत्यंत दुःखदायी होता है. अपना जन्मलग्न अथवा जन्मराशीके स्वामीका शत्रु; अथवा जन्मलग्न किंवा जन्मराशिसें छठा राशि अथवा तिसका स्वामी ये लग्नमें होवैं तब मृत्यु देनेवाला होता है. शत्रुके घरमें किंवा तिसके अंशमें तिसकी दृष्टि लग्नमें होवै तौ गमन करना शुभ नहीं होता है. अस्त हुआ राशि और जन्मका राशि लग्नमें शुभ नहीं है. वर्गोत्तममें अथवा वर्गोत्तमयुक्त लग्नमें चंद्रमा होवै तौ जयकी प्राप्ति होती है.

शुक्लादितिथिवारर्क्षयोगोश्वैरष्टभिस्त्रिभिः त्रिस्थस्तष्टोवशिष्टश्चेत्सर्वोकःसार्वकामिकः त्रिषुक्रमाद्भवेच्छून्यंदुःखदारिद्र्यमृत्युदं यद्येकस्मिन्नेवदिनेपुराद्गच्छेत्पुरांतरे प्रावेशिकीकालशुद्धिस्तदाज्ञेयानयात्रिकी प्रवेशान्निर्गमोनेष्टःप्रवेशोनिर्गमादपि जिष्णोःकदापिनवमेधिष्ण्येवारेतिथौतथा याम्यादिग्गमनंशय्यावितानंछादनंगृहे नकुंभमीनगेचंद्रेतृणकाष्ठस्यसंग्रहः तर्पिताग्निसुहृद्विप्रभार्यादिस्तृप्तिमान्व्रजेत् स्वकीयांपरकीयांवास्त्रियंपुरुषमेववा ताडयित्वातुयोगच्छेद्ब्राह्मणानवमान्यच व्याधितःक्षुधितोवापितदंतंतस्यजीवितं ॥

शुक्लपक्षसें तिथि, वार, और नक्षत्र इन्होंकों गिनके और तिन्होंका योग करके ७, ८, ३ इन अंकोंसें भागके सबोंमांहसें जो शेष अंक बचै तौ वह सब कामोंकों देता है. तीनों जगह शून्य शेष रहै तौ क्रमकरके दुःख, दरिद्रपना और मृत्यु इन्होंकों देनेवाला होता है. जो एक दिनमें एक नगरसें दूसरे नगरमें गमन करना होवै तौ प्रवेशकालकी शुद्धि देखनी, गमनकालकी शुद्धि नहीं देखनी. जयकी इच्छा करनेवालेनें गमन दिनसें नवमे वारमें, नवमी तिथिमें और नवमे नक्षत्रमें अपने घरविषे प्रवेश नहीं करना. और प्रवेश किये दिनसें नवमे दिनमें, नवमी तिथिमें और नवमे नक्षत्रमें गमन नहीं करना. कुंभ और मीन राशिपर चंद्रमा होवै तब दक्षिण दिशामें गमन, पलंग आदिकों बुणना, घरमें छात आदिका देना, तृण और काष्ठका संग्रह नहीं करना. अग्नि, मित्र, विप्र, भार्या इन्होंकी तृप्ति करके और आप तृप्त होके गमन करना. अपनी स्त्रीकों किंवा दूसरेकी स्त्रीकों अथवा पुरुषकों ताडन करके और ब्राह्मणोंका अपमान करके जो मनुष्य गमन करता है और रोगकों प्राप्त हुआ किंवा भूखकों प्राप्त हुआ जो मनुष्य गमन करता है तिस मनुष्यका मृत्यु हो जाता है.

क्रोधंक्षौरंतथावांतिंतैलाभ्यंगाश्रुमोचनं मद्यंमांसंगुडंतैलंसितान्यतिलकंतथा श्वेतभिन्नंचवसनंप्रयाणेपरिवर्जयेत् क्षौरंपंचदिनंदुग्धंत्रिदिनंसप्तरात्रकं मैथुनंचापरंतैलंमध्वाज्यंतद्दिनेत्यजेत् स्त्र्यार्तवंबीजदानांतंतथाकुशकुनांस्त्यजेत् सुमुहूर्तेस्वयंगमनासंभवेप्रस्थानंकार्यं प्रस्थानंनामाभीष्टवस्तुचालनं यज्ञोपवीतकंशस्त्रंमधुचस्थापयेत्फलं विप्रादिःक्रमतःसर्वैःस्वर्णधान्यांबरादिकं राजादशाहंपंचाहमन्योनप्रस्थितोवसेत् स्वयंगमनाद्वस्तुस्थापनाख्यप्रस्थानेर्धफलं ॥

गमनसमयमें नियम.—क्रोध, हजामत, वमन, तेलकी मालिस, अश्रुपात, शहद, मांस,

गुड, तेल, सुपेद तिलकसें अन्य तिलक, सुपेद वस्त्रसें दूसरे रंगके वस्त्र ये पदार्थ गमनसमयमें वर्जित करने. गमन करनेके दिनसें पांच दिन पहले क्षौर नहीं कराना. तीन दिन पहले दूध नहीं पीना, सात रात्रि पहले स्त्रीसंग नहीं करना और शहद, तेल, और घृत इन्होंकों गमन करनेके दिनमें त्यागना. गमनसमयमें भोगदानपर्यंत स्त्रीका आर्तव और तैसेही कुत्सित शकुनोंकों त्यागना. सुंदर मुहूर्तमें अपने गमनका संभव नहीं होवै तौ प्रस्थान करना. प्रस्थान अर्थात् वांछित वस्तुका चलन कराना सो ब्राह्मणनें यज्ञोपवीत अर्थात् जनेऊ, क्षत्रियोंनें शस्त्र, वैश्यनें शहद, और शूद्रनें फल इन्होंकों गमनके मुहूर्तमें दूसरेके घरमें रखना. सोना, वस्त्र, अन्न इत्यादिक पदार्थ सबोंनें प्रस्थानमें रखने. प्रस्थान किये पीछे राजानें १० दिन और अन्य पुरुषोंनें पांच दिन घरमें रहना. प्रस्थान किये पीछे पूर्वोक्त कालसें अधिक कालपर्यंत नहीं रहना. अपने गमनसें यज्ञोपवीत आदि वस्तुके स्थापनरूप प्रस्थानमें आधा फल है.

प्रस्थानदेशावधिः गेहाद्गेहांतरंगर्गःसीम्नःसीमांतरंभृगुः बाणक्षेपंभरद्वाजोवसिष्ठोनगराद्बहिः प्रस्थानेपिकृतेनेयान्महादोषान्वितेदिने प्रस्थानदिनेपिक्रोधादिकंवर्जयेत् शकुनापशकुनप्रपंचोन्यत्रइतियात्राप्रकरणं ॥

अब प्रस्थानके विषयमें देशमर्यादा.—अपने घरसें दूसरेके घरमें जाना ऐसा गर्गजीका मत है. अपने ग्रामकी सीमका उल्लंघन करके दूसरे ग्रामकी सीममें जाना ऐसा भृगुजी कहते हैं. अपने बलसें छोडा हुआ बाण जितनी दूर जाके पडै तावन्मात्र दूर जाना ऐसा भरद्वाज कहते हैं. अपने नगरसें बाहिर जाना ऐसा वसिष्ठजी कहते हैं. प्रस्थान किये पीछेभी महादोषसें युक्त हुये दिनमें गमन नहीं करना. प्रस्थान करनेके दिनमेंभी क्रोध आदिकों त्याग देना. शकुन और अपशकुनोंका विस्तार दूसरे ग्रंथमें देख लेना. इस प्रकार यात्राप्रकरण समाप्त हुआ.

अथगोचरप्रकरणं जन्मराशेःक्रूरचंद्रास्त्रिषट्दशमगाःशुभाः सप्ताद्यगश्चापिचंद्रः शुक्ले द्विनवपंचसु बुधोऽव्यंत्यसमे २ । ४ । ६ । ८ । १० जीवोद्विपंचनवसप्तसु जन्मादिपंचसुतथानवाष्टद्वादशेभृगुः एकादशेसर्वखेटाःशुभाःस्युरितिसंग्रहः जन्मसंपद्विपत्क्षेमंप्रत्यरिःसाधिकावधः मैत्रातिमैत्राःस्युस्तारास्त्रिरावृत्त्यास्वजन्मभात् क्रमतःसूर्यादिबलं नृपदर्शनसर्वकार्ययुद्धेषु शास्त्रकरग्रहयात्रादीक्षासूह्यंविशेषेण अनिष्टसूर्यादीनांदानानिद्वितीयपरिच्छेदांते ॥

अब गोचरप्रकरण कहताहुं.

जन्मराशिसें क्रूरग्रह और चंद्रमा ३, ६, १० इन स्थानोंमें शुभ होते हैं. ७, १ इन स्थानोंमें चंद्रमा शुभ है. शुक्लपक्षमें चंद्रमा २, ९, ५, इन स्थानोंमें शुभ है. बुध २, ४, ६, ८, १०, इन स्थानोंमें शुभ है. बृहस्पति २, ५, ९, ७, इन स्थानोंमें शुभ है. शुक्र १, २, ३, ४, ५, ९, ८, १२ इन स्थानोंमें शुभ है. ग्याहरमे स्थानमें सब ग्रह शुभ हैं. अपने जन्मनक्षत्रसें दिनके नक्षत्रपर्यंत त्रिरावृत्तीसें नक्षत्र गिनने. पीछे नव नव नक्षत्रोंविषे जन्म,

संपत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधिका, वध, मैत्र, और अतिमैत्र ऐसी संज्ञा हैं. क्रमसें सूर्य आदि ग्रहोंका बल देखना उचित है. राजाके दर्शनमें सूर्यका बल देखना. सब कर्मोंमें चंद्रमाका बल देखना. युद्धमें मंगलका बल देखना. शास्त्रका अभ्यास करनेमें बुधका बल देखना. विवाहमें बृहस्पतिका बल देखना. प्रयाणमें शुक्रका बल देखना और मंत्रकी दीक्षामें शनिका बल देखना. इस प्रकार विशेषकरके तिस तिस ग्रहका बल देखके तिसके अनुसार कार्य करना.'' अनिष्ट जो सूर्य आदि ग्रह तिन्होंके दान दूसरे परिच्छेदके अंतमें कहे हैं.

दक्षांगोदरनाभिहृत्सुपतितापल्लीवरांगेहनुंमुक्त्वानुःशुभदास्त्रियाःफलमिदं वामेतरव्यत्ययात् इत्याहुःसरठप्ररोहणफलंपातेन्यथैकेवृथापल्ल्यारोहणेकेपिवस्त्रसहितंस्नात्वाचरेच्छांतिकं इति ॥

पल्ली अर्थात् छिपकलीका पतन कहताहुं.—पुरुषका दाहिना अंग और ठोडीके विना उदर, नाभि, हृदय, मस्तक इन स्थानोंमें पल्लीका पतन होवै तौ शुभ होता है. यहही स्त्रीके वामे अंगमें शुभ होता है. किरलिया शरीरपर चढ जावै तबभी यही फल जानना. पल्ली शरीरपर चढ जावै और किरलियाका शरीरपर पतन होवै तब विपरीत फल जानना. छिपकली और किरलियाके आरोहण और पतनमें शुभ अशुभ फल व्यर्थ (नहीं है) ऐसा कोईक आचार्य कहते हैं. छिपकली और किरलियाके पतन और आरोहण होनेमें वस्त्रोंसहित स्नान करके शांति करनी.

अथपल्लीसरठशांतिः तयोःस्पर्शमात्रेस्नानंकृत्वापंचगव्यंप्राश्याज्यमवलोक्याशुभनाशार्थंशुभवृद्ध्यर्थंवाशांतिःकार्या पल्ल्याःसरठस्यवाहेम्नाप्रतिमांकृत्वारक्तवस्त्रेणसंवेष्ट्यसंपूज्यकलशेरुद्रंसंपूज्य मृत्युंजयमंत्रेणखादिरसमिद्भिरष्टोत्तरशतंतिलैर्व्याहृतिभिरष्टोत्तरसहस्रंशतंवाहुत्वा स्विष्टकृदाद्यभिषेकांतेस्वर्णवस्त्रतिलदानं ॥

अब छिपकली और किरलियाकी शांति कहताहुं.

छिपकली और किरलियाके स्पर्शमात्र होनेमें स्नान करके और पंचगव्य प्राशन करके और घृतकों देखके अशुभके नाशके अर्थ अथवा शुभकी वृद्धिके अर्थ शांति करनी. छिपकलीकी अथवा किरलियाकी सोनाकी प्रतिमा बनायके तिस प्रतिमाकों लाल वस्त्रसें वेष्टित करके पूजा करनी. पीछे कलशपर रुद्रकी पूजा करके मृत्युंजयमंत्रसें खैरकी समिधोंका १०८ व्याहृतिमंत्रोंसें, तिलोंका १,००८ किंवा १०० होम करके स्विष्टकृतसें अभिषेकपर्यंत कर्म किये पीछे सोना, वस्त्र और तिल इन्होंके दान करने.

अथकपोतप्रवेशमधुवल्मीकोत्पत्तिपिंगलास्वरकाकवैकृतग्राम्यारण्यादिमृगपक्षिविकारे शांतिः देवाःकपोतइतिपंचर्चंसूक्तंसहस्रंशतंवाजपित्वा यतइंद्रभयामहेस्वस्तिदाविशत्र्यंबकमितिमंत्रैर्हुत्वाव्याहृतिभिरष्टोत्तरशतंतिलहोमंकुर्यात् अथवापंचविप्रैःक्रमेणदेवाःकपोतइतिसूक्तंसुदेवोअसीत्यृचंकनिक्रददितिशाकुंतसूक्तंनमोब्रह्मणेनमइतिमंत्रंचसहस्रादिसंख्ययाजस्वोपनिषदश्चपठित्वाव्याहृतिभिस्तिलहोमंकुर्यात् ॥

इसके अनंतर घरमें कपोत पक्षीका प्रवेश, महालकी माखियोंकी उत्पत्ति, वल्मीकका होना, पिंगला अर्थात् कोतरी पक्षीका शब्द, काकवैकृत, ग्राममें रहनेवाले और बनमें रहनेवाले आदि मृगपक्षियोंका विकार इन्होंके होनेमें शांति करनी. "देवाःकपोत०" इन पांच ऋचाओंके सूक्तका हजार किंवा १०० जप करके "यतइंद्रभयामहे० स्वस्तिदाविशः० त्र्यंबकं०" इन मंत्रोंसें होम करके व्याहृतिमंत्रोंसें १०८ तिलोंका होम करना. अथवा पांच ब्राह्मणोंके द्वारा क्रमसें "देवाःकपोत०" यह सूक्त, "सुदेवोअसि०" यह एक ऋचा, "कनिक्रदत्०" यह शाकुंतसूक्त और "नमोब्रह्मणेनम०" यह मंत्र, इन्होंका हजार आदि संख्यासें जप करके और उपनिषदोंका पठन करके व्याहृतिमंत्रोंसें तिलोंका होम करना.

अथकाकस्पर्शमैथुनादिशांतिः संकल्पाग्निप्रतिष्ठापनांतेकुंभेसौवर्णमिंद्रंलोकपालांश्चसंपूज्याग्नौचरुंश्रपयित्वा पलाशसमिच्चर्वाज्यव्रीहिभिःप्रत्येकमष्टोत्तरसहस्रंशतंवायतइंद्रेतिमंत्रेण हुत्वालोकपालेभ्यस्तैरेवद्रव्यैर्दशकृत्वोहुत्वा लोकपालबलिंकुंभाग्रेवायसेभ्यो बलिमैंद्रवारुणेतिमंत्रेणदत्वायजमानोभिषेकांतेशतंदशवाविप्रान्भोजयेत् ॥

अब काकका स्पर्श और काकमैथुन देखना आदिकी शांति कहताहुं.

संकल्प और अग्निस्थापनपर्यंत कर्म किये पीछे कलशपर सुवर्णमय इंद्र और लोकपालोंकी पूजा करके अग्निपर चरु सिजाय ढाककी समिध, चरु, घृत और व्रीहि इन द्रव्योंका प्रत्येकका १,००८ किंवा १०० "यतइंद्र०" इस मंत्रसें होम करके लोकपाल देवतोंके उद्देशसें तिसतिसही द्रव्योंकी दश दश आहुतियोंसें होम करके कुंभके अग्रभागमें लोकपालोंका बलिप्रदान और काकोंकों बलिप्रदान "ऐंद्रवारुण०" इस मंत्रसें किये पीछे अभिषेकके अनंतर यजमाननें १०० किंवा दश ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना.

घरट्टोलूखलमुसलदृषदासनमंचकादेरकस्मात्स्फोटनेघृताक्तमधुयुताश्वत्थसमिधः प्रजापतयेहुत्वागायत्र्यष्टोत्तरसहस्रेणाभिमंत्रयेत् ॥

घरट, ऊखल, मूसल, शिला, आसन, पलंग, खाट, इन आदि आपही आप कारणके विना टूट फूट जावैं तौ घृतसें भिगोई हुई और शहदसें युक्त करी ऐसी पीपलकी समिधोंका प्रजापतिके उद्देशसें होम करके १,००८ गायत्रीमंत्रसें अभिमंत्रण करना.

नानाविधदिव्यभौमांतरिक्षोत्पातेषुशांतिः संकल्पादिकृत्वाकुंभेइंद्ररुद्रौसंपूज्ययतइंद्रस्वस्तिदाविशस्पातिःअघोरेभ्योथेतिमंत्रैः समिदाज्यचरुव्रीहितिलान्प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतंहुत्वाव्याहृतिभिःकोटिहोमंलक्षहोममयुतहोमंतत्पादहोमंवातिलैर्वित्तानुसारेण निमित्तानुसारेणचसप्तरात्रंत्रिरात्रमेकरात्रंवाकृत्वा सूर्यगणेशक्षेत्रपालदुर्गामंत्राणांजपंकृत्वापायसादिनाब्राह्मणभोजनंकार्यं यद्वाचंडीसप्तशतीजपः अथवारुद्रैर्जपोभिषेकोवा अश्वत्थप्रदक्षिणाशिवपूजागोविप्रपूजादिवेतिनानोत्पातसामान्यशांतयः ॥

अनेक प्रकारके दिव्य अर्थात् केतु आदि, भौम अर्थात् भूकंप आदि और आंतरिक्ष अर्थात् गंधर्वनगर आदि ये उत्पात होनेमें तिन्होंकी शांति कहताहुं.—संकल्प आदि करके कलशपर इंद्र और रुद्रकी पूजा करके "यतइंद्र०, स्वस्तिदाविशस्पतिः०, अघोरेभ्योथ०" इन मंत्रोंसें समिध, घृत, चरु, व्रीहि और तिल इन प्रत्येक द्रव्यका १०८ इस प्रकार होम करके व्याहृतिमंत्रोंसें तिलोंका कोटिहोम, लक्षहोम, दशसहस्रहोम अथवा अढाई सहस्र होम कराना, अथवा अपनी शक्तिके अनुसार होम करना अथवा जैसा निमित्त होवै तिसके अनुसार सात रात्रि, तीन रात्रि अथवा एक रात्रि होम करके सूर्य, गणेश, क्षेत्रपाल, दुर्गा इन्होंके मंत्रोंका जप करके खीर आदि पदार्थसें ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना. अथवा दुर्गापाठके ७०० मंत्रोंका जप करना, अथवा रुद्रका जप अथवा अभिषेक करना, अथवा पीपलवृक्षकी परिक्रमा, शिवकी पूजा, गौब्राह्मणोंकी पूजा इत्यादिक करने. इस प्रमाण अनेक प्रकारके उत्पातोंकी सामान्य शांति कही.

अथगायत्रीपुरश्चरणप्रयोगः देशकालौसंकीर्त्यकरिष्यमाणगायत्रीपुरश्चरणेधिकारसिद्ध्यर्थंकृच्छ्रत्रयममुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्येइतिसंकल्प्यहोमादिप्रत्याम्नायविधिनाकृच्छ्राण्यनुष्ठायामुकशर्मणोमम गायत्रीपुरश्चरणेनेनकृच्छ्रत्रयानुष्ठानेनाधिकारसिद्धिरस्त्वितिविप्रान्वदेत् विप्राअधिकारसिद्धिरस्त्वितिब्रूयुःततःकरिष्यमाणपुरश्चरणांगत्वेनविहितं गायत्रीजपादिकरिष्ये इतिसंकल्प्यस्वयंविप्रद्वारावाकुर्यात् तद्यथा सप्रणवव्याहृतिगायत्र्याअयुतंजप्त्वाआपोहिष्ठेतिसूक्तंएतोन्विंद्रमितितिस्रःऋतंचेतिसूक्तंस्वस्तिनइत्याद्याःस्वस्तिमतीःस्वादिष्ठयेत्याद्याःपावमानीश्चसर्वाःप्रत्येकंदशवारंस्वयमन्यद्वारावाजपित्वा तत्सवितुरित्यस्याचार्यमृषिंविश्वामित्रं तर्पयामि गायत्रीछंदस्त० सवितारंदेवतां० इतितर्पणंकृत्वारुद्रंनमस्कृत्यकद्रुद्रायेत्यादीनिरुद्रसूक्तानिजपेत् ॥

अब गायत्रीपुरश्चरणका प्रयोग कहताहुं.

देश और कालका उच्चार करके संकल्प करना. सो ऐसा.—"करिष्यमाणगायत्रीपुरश्चरणेऽधिकारसिद्ध्यर्थं कृच्छ्रत्रयममुकप्रत्याम्नायेनाहमाचरिष्ये" ऐसा संकल्प करके होम आदिका जो प्रत्याम्नायविधि, तिसकरके तितने कृच्छ्रोंका अनुष्ठान करके "अमुकशर्मणो मम गायत्रीपुरश्चरणेऽनेन कृच्छ्रत्रयानुष्ठानेनाधिकारसिद्धिरस्तु" ऐसा ब्राह्मणोंके प्रति बोलना. पीछे ब्राह्मणोंनें "अधिकारसिद्धिरस्तु" ऐसा बोलना. तदनंतर, "करिष्यमाणपुरश्चरणांगत्वेन विहितं गायत्रीजपादि करिष्ये" ऐसा संकल्प करके आप अथवा ब्राह्मणके द्वारा जप कराना. सो ऐसा—प्रणव और व्याहृतियोंसें युक्त गायत्रीका दश हजार जप करके "आपोहिष्ठा०" यह सूक्त, "एतोन्विंद्रम्०" ये तीन ऋचा, "ऋतं च०" यह सूक्त, "स्वस्तिनो०" इस आदि स्वस्तिमती ऋचा और "स्वादिष्ठया०" इत्यादिक पावमानी ऋचा इन सब ऋचाओंमांहसें प्रत्येक ऋचाका दशवार आप अथवा दूसरेके द्वारा जप करवायके "तत्सवितुरित्यस्याचार्यमृषिंविश्वामित्रं तर्पयामि ॥ गायत्रीछंदस्तर्प० स-

वितारंदेवतां० " इस प्रकार तर्पण करके और रुद्रकों प्रणाम करके " कद्रुद्राय० " इस आदि रुद्रसूक्तका जप करना.

ततोदिनांतरेदेशकालौसंकीर्त्यममसकलपापक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थंचतुर्विंशतिलक्षात्मकगायत्रीपुरश्चरणंस्वयंविप्रद्वारावाकरिष्ये तदंगत्वेनस्वस्तिवाचनंमातृकापूजनंनांदीश्राद्धंविप्रद्वाराजपेजपकर्तृवरणंचकरिष्यइतिसंकल्पः संकल्पस्यापित्र्ऋत्विक्कर्तृकत्वेमुकशर्मणोयजमानस्यसकलपापक्षयेत्यादियजमानानुज्ञयाकरिष्ये एवंपूर्वत्रापिसंकल्पऊह्यःनांदीश्राद्धांतेसविता प्रीयतामिति गायत्रीपुरश्चरणेजपकर्तारंत्वांवृणेइतिविप्रमेकैकंवृणुयात् वस्त्रादिभिःपूजयेत् ॥

तदनंतर दूसरे दिनमें देश और कालका उच्चार करके " मम सकलपापक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं चतुर्विंशतिलक्षात्मकगायत्रीपुरश्चरणं स्वयं विप्रद्वारा वा करिष्ये, तदंगत्वेन स्वस्तिवाचनं मातृकापूजनं नांदीश्राद्धं (ब्राह्मणके द्वारा जप करवाना होवै तौ) जपकर्तृवरणं च करिष्ये " ऐसा संकल्प करना. ऋत्विक्नें संकल्प करना होवै तौ " अमुकशर्मणो यजमानस्य सकलपापक्षयेत्यादि० यजमानानुज्ञया करिष्ये " इस प्रकार पहलेभी संकल्प जानना. नांदीश्राद्धके अंतमें " सविता प्रीयताम् " ऐसा कहना. " गायत्रीपुरश्चरणे जपकर्तारं त्वां वृणे " ऐसा वाक्य कहके एक एक ब्राह्मणकों वरना, और वस्त्र आदिसें तिन्होंकी पूजा करनी.

अथनित्यकर्म एकैकोविप्रःस्वयंवाकुशाद्यासनोपविष्टःपवित्रपाणिराचम्यप्राणानायम्यदेवताःप्रार्थयेत् सूर्यःसोमोयमःकालःसंध्येभूतान्यहःक्षपा पवमानोदिक्पतिर्भूराकाशंखेचरामराः ब्रह्मशासनमास्थायकल्पध्वमिहसंनिधिमिति ततोदेशकालौसंकीर्त्यप्रात्यहिकजपंसंकल्प्य गुरवेनमः गणपतये० दुर्गायै० मातृभ्यो० इतिनत्वात्रिःप्राणानायम्य तत्सवितुरितिगायत्र्याविश्वामित्रऋषिः सवितादेवतागायत्रीछंदःजपेवि० विश्वामित्रऋषयेनमःशिरसि गायत्रीछंदसेनमोमुखे सवितृदेवतायैनमोहृदि इतिन्यस्य तत्सवितुरंगुष्ठाभ्यां० वरेण्यंतर्जनी० भर्गोदेवस्यमध्यमा० धीमह्यनामिका० धियोयोनःकनिष्ठिकाभ्यां० प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यांनमइतिकरन्यासंकृत्वैवंहृदयादिषडंगन्यासंकुर्यात् पूर्वोक्तरीत्यासंस्कृतांजपमालांपात्रेनिधायसंप्रोक्ष्य ओंमहामायेमहामालेसर्वशक्तिस्वरूपिणि चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मां सिद्धिदाभवेतिप्रार्थ्य ॐअविघ्नंकुरुमालेत्वमितितामादाय मंत्रदेवतांसवितारंध्यायन् हृदयेमालांधारयन्मंत्रार्थंस्मरन्मध्यंदिनावधिजपेत् अतित्वरायांसार्धत्रयप्रहरावधि जपांतेपुनः प्रणवमुक्त्वा त्वंमालेसर्ववेदानांप्रीतिदाशुभदाभव शिवंकुरुष्वमेभद्रेयशोवीर्यंचसर्वदाइतिमालांशिरसिनिधायत्रिःप्राणानायम्यन्यासत्रयंकृत्वाजपमीश्वरार्पणंकुर्यात् प्रत्यहंसमानसंख्यएवजपोनतुन्यूनाधिकः एवंपुरश्चरणजपसमाप्तौहोमः पुरश्चरणसांगतासिद्ध्यर्थंहोमविधिंकरिष्यइतिसंकल्प्याग्निंप्रतिष्ठाप्यपीठेसूर्यादिनवग्रहपूजनादिकलशस्थापनांतेअन्वादध्यात् चक्षुषी आज्येनेत्यंते ग्रहपीठदेवतान्वाधानं अर्कादिसमिच्चर्वाज्याहुतिभिःकृत्वाप्रधानदेवतांसवितारं चतुर्विंशतिसहस्रतिलाहुतिभिः त्रिसहस्रसंख्याकाभिः पायसाहुतिभिर्घृतमिश्रतिलाहुतिभिर्दूर्वाहुतिभिःक्षीरद्रुमसमिदाहुतिभिश्चशेषेणस्विष्टकृतमित्यादि चरुपायसतिलैःसहाज्यस्यपर्य

भिकरणादि आज्यभागांतेइदंहवनीयद्रव्यंअन्वाधानोक्तदेवताभ्यःअस्तुनममेतियजमानस्त्यागंकुर्यात् होमेसप्रणवाव्याहृतिरहितास्वाहांतागायत्री दूर्वात्रयस्यैकाहुतिःदूर्वासमिधांदधिमध्वाज्यांजनं स्विष्टकृदादिबलिदानांतेसमुद्रज्येष्ठाइत्यादिभिर्यजमानाभिषेकः प्रतिलक्षंसुवर्णनिष्कत्रयंतदर्धंवाशक्त्यावादक्षिणा होमांतेजलेदेवंसवितारंसंपूज्यहोमसंख्यादशांशेन २४०० गायत्र्यंतेसवितारंतर्पयामीत्युक्त्वातर्पणंकार्यं तर्पणदशांशेन २४० गायत्र्यंतेआत्मानमभिषिंचामिनमइतिमूर्ध्न्यभिषेकः होमतर्पणाभिषेकाणांमध्येयदेवनसंभवतितत्स्थानेतत्तद्द्विगुणोजपः कार्यः अभिषेकसंख्यादशांशेनाधिकंवाविप्रभोजनं पुरश्चरणंपूर्णमस्त्विति विप्रान्वाचयित्वेश्वरार्पणंकार्यं प्रत्यहंयज्जाग्रतइतिशिवसंकल्पमंत्रस्यत्रिःपाठः कर्ताब्राह्मणैःसहहविष्याशीसत्यवागधःशायीपरिगृहीतभूप्रदेशानतिचारीचभवेत् इत्यनंतदेवीयानुसारेणचतुर्विंशतिलक्षपुरश्चरणप्रयोगः ॥

अब नित्यकर्म कहताहुं.—एक एक ब्राह्मण अथवा आप कुशके आसन आदिपर बैठके औेर हाथोंमें डाभके पवित्रोंकों धारण करके आचमन और प्राणायाम करके देवतोंकी प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र.—"सूर्यः सोमो यमः कालः संध्ये भूतान्यहः क्षपा ॥ पवमानो दिक्पतिर्भूराकाशं खेचरामराः ॥ ब्रह्माशासनमास्थाय कल्पध्वमिह संनिधिम्" इस प्रकार प्रार्थना किये पीछे देशकालका उच्चार करके नित्यप्रति करनेके योग्य जपका संकल्प करके "गुरवे नमः गणपतये० दुर्गायै० मातृभ्यो०" इस प्रकार नमस्कार और तीन प्राणायाम करके "तत्सवितुरिति गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः ॥ सविता देवता ॥ गायत्री छंदः ॥ जपे विनियोगः ॥ विश्वामित्रऋषये नमः शिरसि ॥ गायत्रीछंदसे नमो मुखे ॥ सवितृदेवतायै नमो हृदि" ऐसा न्यास करके "तत्सवितुरंगुष्ठाभ्यां० वरेण्यं तर्जनीभ्यां० भर्गोदेवस्य मध्यमाभ्यां० धीमह्यनामिकाभ्यां० धियोयोनः कनिष्ठिकाभ्यां० प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां०" इस प्रकार करन्यास करके इसी प्रकार हृदय आदि षडंगन्यास करना. पीछे पूर्वोक्त रीतिसें संस्कार किई हुई जपमाला पात्रमें स्थापित करके पीछे प्रोक्षण करके मालाकी प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र.—"ॐ महामाये महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मां सिद्धिदा भव" ऐसी प्रार्थना करके "ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं" इस मंत्रसें तिस मालाकों हाथमें लेके मंत्रदेवता सविताका ध्यान करता हुआ मालाकों हृदयमें धारण करके मंत्रके अर्थका स्मरण करता हुआ मध्यान्हसमयपर्यंत जप करना. अति त्वरा होवै तौ साढेतीन प्रहरपर्यंत जप करना. जपके अंतमें फिर प्रणव कहके "त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा भव ॥ शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा" इस मंत्रसें मालाकों मस्तकपर स्थापित करके पीछे तीन प्राणायाम और तीन न्यास करके जप ईश्वरकों अर्पण करना. नित्यप्रति समान संख्या अर्थात् समान गिनतीसें जप करना, न्यून अधिक जप नहीं करना. इस प्रकार पुरश्चरणकी समाप्ति हो चुकै तब होम करना. होमका विधि कहताहुं.—"पुरश्चरणसांगतासिद्ध्यर्थं होमविधिं करिष्ये" ऐसा संकल्प करके पीछे अग्निकी स्थापना करके पीठपर सूर्य आदि नवग्रहोंकी पूजासें कलशस्थापनपर्यंत कर्म किये पीछे अन्वाधान करना. सो ऐसा—"चक्षुषीआज्येन" इतना कहे पीछे ग्रहपी-

ठदेवतोंका अन्वाधान आक आदिकी समिध, चरु, घृतकी आहुति इन्होंसें करके प्रधान अन्वाधान करना. सो ऐसा—“ **प्रधानदेवतां सवितारं चतुर्विंशतिसहस्रतिलाहुतिभिस्त्रिसहस्रसंख्याकाभिः पायसाहुतिभिर्घृतमिश्रतिलाहुतिभिर्दूर्वाहुतिभिः क्षीरद्रुमसमिदाहुतिभिश्च शेषेण स्विष्टकृतमित्यादि,** ” इस प्रकार अन्वाधान करना. चरु, खीर और तिल इन्होंके साथ घृतका द्रव्यसंस्कार करना. आज्यभागपर्यंत कर्म हुए पीछे “ **इदं हवनीयद्रव्यं अन्वाधानोक्तदेवताभ्यः अस्तु न मम,** ” ऐसा यजमाननें त्याग करना. होमके स्थानमें ॐकारसहित व्याहृतियोंसें वर्जित और स्वाहाकारपर्यंत गायत्री कहनी. तीन दूर्वोंकी एक आहुति देनी. दूर्वा और समिध ये द्रव्य दही, शहद और घृतमें भिगोवना. स्विष्टकृत्सें बलिदानपर्यंत कर्म किये पीछे “ **समुद्रज्येष्ठा०** ” इन आदि मंत्रोंसें यजमानपर अभिषेक करना. प्रत्येक लक्षसंख्याके जपकों तीन निष्क, डेढ निष्क अथवा अपनी शक्तिके अनुसार सुवर्णदक्षिणा देनी. होम किये पीछे जलमें सविता देवताकी पूजा करके होमसंख्याकी दशांशसंख्याकरके (२४००) गायत्रीमंत्रके अंतमें “ **सवितारं तर्पयामि** ” ऐसा कहके तर्पण करना. तर्पणकी संख्याकी दशांशसंख्याकरके (२४०) गायत्रीमंत्रके अंतमें “ **आत्मानमभिषिंचामि नमः** ” ऐसा कहके अपने मस्तकपर अभिषेक करना. होम, तर्पण अभिषेक इन्होंमांहसें जो नहीं हो सकता होवै तिस तिसके स्थानमें दुगुना जप करना. अभिषेककी संख्याके दशमे हिस्सेकरके अथवा अधिक ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना. “ **पुरश्चरणं पूर्णमस्तु** ” ऐसा ब्राह्मणोंके द्वारा कहवायके कर्म ईश्वरकों अर्पण करना. नित्यप्रति “ **यज्जाग्रतो०** ” इस शिवसंकल्पमंत्रका तीनवार पाठ करना. ब्राह्मणोंके साथ यजमाननें हविष्य पदार्थका भोजन, सत्य वाणी, पृथिवीपर शयन और परिगृहीत करी पृथिवीके बाहिर गमन नहीं करना. इस प्रकार अनंतदेवके ग्रंथमें कही रीतिके अनुसार चौवीसलक्ष पुरश्चरणका प्रयोग कहा.

ऋग्विधानेतु मध्यान्हेमितभुङ्मौनीत्रिःस्नानार्चनतत्परः लक्षत्रयंजपेद्धीमानितित्रिलक्षं पुरश्चरणमुक्तं जपशतांशस्त्रिसहस्रंहोमः कलौचतुर्गुणंप्रोक्तमितिपक्षेद्वादशलक्षजपः द्वादश सहस्रहोमइत्याद्यूह्यं विष्णुशयनमासेषुपुरश्चरणंनकार्यं तीर्थादौशीघ्रंसिद्धिःबिल्ववृक्षाश्रयेणजपेएकाहात्सिद्धिरितिसर्वमंत्रप्रक्रिया इतिगायत्रीपुरश्चरणं ॥

“ ऋग्विधानग्रंथमें तौ मध्यान्हसमयमें प्रमाणित भोजन करनेवाला और मौनकों धारण करनेवाला और तीनों काल स्नान तथा पूजाकों करनेवाला और बुद्धिमान् ऐसे मनुष्यनें मंत्रका तीन लक्ष जप करना ” ऐसा तीन लक्ष जपका पुरश्चरण कहा है. जपके सौमे हिस्सेसें तीन हजार होम करना. “ कलियुगमें चौगुना जप करना ऐसा कहा है, ” इस पक्षमें बारह लक्ष जप करना और १२ हजार होम करना इस आदि जानना. आषाढ शुदि एकादशीसें कार्तक शुदि एकादशीपर्यंत पुरश्चरण नहीं करना. तीर्थ आदि स्थानोंमें पुरश्चरण करनेसें शीघ्र सिद्धि होती है. बेलवृक्षके आश्रयसें जप करनेमें एक दिनमें सिद्धि होती है. ऐसी सब जगह मंत्रप्रक्रिया जाननी. इस प्रकार गायत्रीमंत्रका पुरश्चरण कहा.

अथपूर्तकमलाकरे अश्वत्थोपनयनंतत्त्ववर्णैः क्रमेणवृक्षस्थापनादष्टमैकादशेद्वादशेत्र्वर्षेउपनयनोक्तमुहूर्तेपूर्वाह्णेकार्यं शूद्रस्थापिताश्वत्थेपौराणिकमंत्रैरारामप्रतिष्ठामात्रंकार्यंनोपनयनं॥

इसके अनंतर पूर्तकमलाकर ग्रंथमें जो पीपलवृक्षका उपनयन कहा है सो कहताहुं.

सो पीपलका उपनयन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन वर्णोंनें क्रमकरके वृक्ष लगानेके समयसें आठमे, ग्यारहमे और बारहमे वर्षमें उपनयनसंस्कार करनेके वास्ते कहे मुहूर्तविषे पूर्वाह्णमें करना. शूद्रनें स्थापित किये पीपलवृक्षकी पुराणोक्त मंत्रोंसें आरामप्रतिष्ठा मात्र करनी. उपनयनसंस्कार नहीं करना.

अथप्रयोगः कर्तादेशकालौसंकीर्त्यसर्वपापक्षयकुलकोटिसमुद्धरणपूर्वकविष्णुसायुज्यप्राप्तिकामोश्वत्थोपनयनंकरिष्येइतिसंकल्प्यनांदीश्राद्धांतेआचार्यंवृणुयात् आचार्यःपंचामृतैःशुद्धोदकैःसर्वौषधिजलैश्चाश्वत्थमभिषिच्य पिष्टातकेनालंकृत्यतत्पूर्वेस्थंडिलेग्निंप्रतिष्ठाप्यान्वाधाने अग्निंवायुंसूर्यंत्रिरग्निंपवमानंप्रजापतिंद्विरोषधीर्वनस्पतिंपिप्पलंप्रजापतिंचपलाशसमिच्चर्वाज्यैःप्रत्येकमेकैकयाहुत्याशेषेणेत्यादि अष्टचत्वारिंशन्मुष्टीनांतूष्णींनिर्वापप्रोक्षणेश्रपणाद्याज्यभागांते युवंवस्त्राणीत्यश्वत्थंवस्त्रयुग्मेनावेष्टययज्ञोपवीतमितियज्ञोपवीतंदत्वा प्रावेपामेतिमेखलांत्रिरावेष्ट्यअजिनंदंडंचतूष्णींदत्वाअश्वत्थेवइत्यृचागंधपुष्पैःसंपूज्यदेवस्यत्वेतिमंत्रांते हस्तंगृह्णाम्यश्वत्थेतिस्पृष्ट्वासप्रणवव्याहृतिकांगायत्रींत्रिर्जपित्वा अश्वत्थेवोनिषदनमितिसूक्तेन व्याहृतिभिश्चाश्वत्थंस्थापयामीतिस्वर्णशलाकयास्पृष्ट्वाज्यपलाशसमिच्चरुभिः प्रत्येकंद्वादशमंत्रैर्द्वादशाहुतीर्जुहुयात् मंत्रास्तु भूःस्वा० अग्नय० भुवःस्वा० वायव० स्वःस्वा० सूर्यायै० अग्नआयूंषि० अग्निर्ऋषिः० अग्नेपवस्वेतित्रिभिरग्नयेपवमानायेदं० प्रजापतेनत्व० प्रजापतय० ओषधयःसंवदंते० अश्वत्थेवो० ओषधीभ्यइदं वनस्पतेशत० वनस्पतयइ० द्वासुपर्णा० पिप्पलायेदं० समस्तव्याहृतिभिः प्रजापतयइदं० स्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्याश्वत्थेवइति गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यफलतांबूलाद्यैःसंपूज्याश्वत्थंस्पृष्ट्वाचार्यायगामन्येभ्यो दक्षिणांदत्वाश्वत्थवस्त्रादिकमाचार्यायदत्वाष्टौविप्रान्भोजयेदिति ॥

अब प्रयोग कहताहुं.—कर्तानें देश और कालका उच्चार करकें "सर्वपापक्षयकुलकोटिसमुद्धरणपूर्वकविष्णुसायुज्यप्राप्तिकामोऽश्वत्थोपनयनं करिष्ये," ऐसा संकल्प करके नांदीश्राद्धपर्यंत कर्म किये पीछे आचार्यका वरण करना. पीछे आचार्यनें पंचामृतोंसें और शुद्ध जलसें और सर्वौषधियुक्त जलसें पीपलवृक्षकों स्नान वालके पिष्टातकसें अर्थात् सुवासिक चूर्णविशेषसें पीपलकों शोभित करके पीपलकी पूर्वदिशामें स्थंडिलपर अग्निस्थापन करके अन्वाधान करना. सो ऐसा—" अग्निं वायुं सूर्यं त्रिरग्निं पवमानं प्रजापतिं द्विरोषधीर्वनस्पतिं पिप्पलं प्रजापतिं च पलाशसमिच्चर्वाज्यैः प्रत्येकमेकैकयाहुत्या शेषेणेत्यादि" ऐसा अन्वाधान करना. अठतालीस मूठी चावल मंत्ररहित लेके मंत्ररहित प्रोक्षण करके चरुश्रपणसें आज्यभागपर्यंत कर्म किये पीछे "युवंवस्त्राणि०" इस मंत्रसें दो वस्त्र पीपलवृक्षकों सब तर्फ वेष्टित करके "यज्ञोपवीतं०" इस मंत्रसें यज्ञोपवीत देके "प्रावेपा०"

इस मंत्रसें मेखलाका तीनवार वेष्टन करके मृगछाला और दंड मंत्ररहित देने. पीछे “ अश्वत्थे० ” इस ऋचाकरके गंधपुष्पोंसें पूजा करके “ देवस्यत्वा० ” यह मंत्र कहके पीछे “ **हस्तंगृह्णाम्यश्वत्थ** ” ऐसा वाक्य कहके पीपलवृक्षकों स्पर्श करके ॐकार और व्याहृतियोंसें युक्त हुये गायत्रीमंत्रका तीनवार जप करना. “ अश्वत्थेवोनिषदनं० ” इस सूक्तसें और व्याहृतिमंत्रोंसें “ **अश्वत्थंस्थापयामि,** ” ऐसा वाक्य कहके सुवर्णकी शलाकासें स्पर्श करके घृत, ढाककी समिध और चरु इन द्रव्योंका प्रत्येकको बारह आहुति इस प्रमाणसें बारह मंत्रोंसें होम करना. होमके मंत्र—“ **भूःस्वाहा अग्नय०, भुवःस्वाहा वायव०, स्वःस्वाहा सूर्याय० अग्नआयूंषि०, अग्निर्ऋषिः०, अग्नेपवस्व०** (इन तीन ऋचाओंका प्रत्येक ऋचासें होम करना.) **अग्नयेपवमानायेदं०, प्रजापतेनत्व०, प्रजापतय०, ओषधयःसंवदंते०, अश्वत्थेवो०, ओषधीभ्यइदं०, वनस्पतयेशत० वनस्पतइ०, द्वासुपर्णा० पिप्पलाये०, समस्तव्याहृतिभिः प्रजापतयइ०** ” इस प्रकार होम करके स्विष्टकृत् आदि होमशेष समाप्त करके “ अश्वत्थेवो० ” इस मंत्रसें गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, नागरपान इत्यादिक उपचारोंसें पूजा करके पीछे पीपलकों स्पर्श करके आचार्यकों गोप्रदान और अन्य ब्राह्मणोंकों दक्षिणा देके पीपलकों अर्पण किये वस्त्र आदि आचार्यकों देके आठ ब्राह्मणोंकों भोजन देना. इस प्रकार प्रयोग कहा.

अपुत्रेणपुंसास्त्रियावावटप्लक्षाम्रादेः पुत्रत्वेनप्रतिग्रहःकार्यःदेशकालौसंकीर्त्यमहापापक्षयकुलत्रयसमुद्धरणप्रजापतिपुरगमननिरयस्थपित्रुद्धारमधुधारातृप्तिसिद्ध्यर्थं सत्पुत्रत्वसिद्ध्यर्थं अमुकवृक्षंप्रतिगृहीष्येइतिसंकल्प्योपवासंकृत्वा रात्रौअष्टविप्रानाहूयचंद्रंसंपूज्यजागरंभूशयनंवाकृत्वाप्रातर्वृक्षंसंपूज्यतच्छायायांविप्रान्संभोज्यपुण्याहंवाचयित्वाप्रार्थयेत् अपुत्रोभगवंतोत्र पुत्रप्रतिकृतिंतरुं गृहीष्यामिममानुज्ञांकर्तुमर्हथसत्तमाः ताम्रपात्रेपंचसौवर्णफलानिबीजपंचरत्नयुतान्यधिवास्यलोकपालबलीन्दद्यात् ॥

पुत्ररहित स्त्रीनें अथवा पुरुषनें वट, पिलषन, आंब इत्यादिक वृक्षोंकों पुत्र ऐसा मानके तिन्होंका प्रतिग्रह करना. तिसका विधि—देश और कालका उच्चार करके “ **महापापक्षयकुलत्रयसमुद्धरणप्रजापतिपुरगमननिरयस्थपित्रुद्धारमधुधारातृप्तिसिद्ध्यर्थं सत्पुत्रत्वसिद्ध्यर्थं अमुकवृक्षं प्रतिगृहीष्ये** ” ऐसा संकल्प करके और उपवास करके रात्रिविषे आठ ब्राह्मणोंकों बुलायके चंद्रमाकी पूजा करके जागरण अथवा पृथिवीपर शयन करके पीछे प्रातःकालमें वृक्षकी पूजा करके तिस वृक्षकी छायामें ब्राह्मणोंकों भोजन करायके “**पुण्याहं०**” ऐसा बोलके ब्राह्मणोंकी प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—“**अपुत्रो भगवंतोत्र पुत्रप्रतिकृतिं तरुम् ॥ गृहीष्यामि ममानुज्ञां कर्तुमर्हथ सत्तमाः** ” इस मंत्रसें प्रार्थना करके तांबाके पात्रमें बीजरूप पंचरत्नोंसें संयुक्त ऐसे पांच सोनाके फलोंकों स्थापित करके लोकपालोंकों बलि देना.

परेद्युस्तिलाज्यचरुभिरष्टशतंवनस्पतिमंत्रेणहुत्वाजातकर्मादिविवाहांतसंस्कारान्कृत्वाभिषिक्तःकर्तापुष्पांजलिमादायप्रार्थयेत् येशाखिनःशिखरिणांशिरसांविभूषायेनंदनादिषुवनेषुकृतप्रतिष्ठाः येकामदाःसुरनरोरगकिन्नराणांतेमेनतस्यदुरितार्तिहराभवंतु एतेद्विजाविधिवदत्र

हुतोहुताशः पश्यत्यसौचहिमदीधितिरंतरस्थः त्वंवृक्षपुत्रपरिकल्प्यमयावृतोसिकार्यंसदैवभवताममपुत्रकार्यं अंगादंगादितिस्पृष्ट्वाविप्रेभ्योदक्षिणांदत्वाविसृजेत् इतिवटादितरुपुत्रविधिः॥

इसके अनंतर दूसरे दिनमें तिल, घृत और चरु इन्होंका वनस्पतिमंत्रसें ८०० होम करके जातकर्मसें विवाहपर्यंत संस्कार करके अभिषेक किये हुए ऐसे कर्तानें पुष्पांजलि ग्रहण करके प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—**"ये शाखिनः शिखरिणां शिरसां विभूषा ये नंदनादिषु वनेषु कृतप्रतिष्ठाः ॥ ये कामदाः सुरनरोरगकिन्नराणां ते मे नतस्य दुरितार्तिहरा भवंतु ॥ एते द्विजा विधिवदत्र हुतो हुताशः पश्यत्यसौ च हिमदीधितिरंतरस्थः ॥ त्वं वृक्षपुत्र परिकल्प्य मया वृतोसि कार्यं सदैव भवता मम पुत्रकार्यम्"** इन मंत्रोंसें प्रार्थना करके "अंगादंगात्सं०" इस मंत्रसें वृक्षकों स्पर्श करके ब्राह्मणोंकों दक्षिणा देके विसर्जन करना. इस प्रकार वट आदि वृक्षोंका पुत्रविधि कहा.

अथसकलकर्मसाधारणपरिभाषा सर्वेषुपाकयज्ञेषुभवेद्ब्रह्माकृताकृतः पात्रासादनमिच्छातत्राज्यादिश्रपणादिच स्रुवादिमार्जनंचेध्मरज्जुप्रहरणंतथा पूर्णपात्रंभवेन्नित्यमाज्यस्योत्पवनेतथा व्रीहीणामवघातश्चतंडुलेषुकृताकृतः द्रवीभूतघृतस्यापिविलापनविधिस्तथा प्रतिपदोक्ताज्यहोमेपरिस्तरणंविकल्पितं अनादिष्टाज्यहोमेतुनित्यं आज्यभागसहिततद्रहितकर्मणोस्तंत्रप्रयोगेआज्यभागाननुष्ठानमेवयुक्तं सर्वत्राज्यभागयोर्विकल्पात् अनेकपाकयज्ञानामेककालानुष्ठानेसमानतंत्रता तेनस्विष्टकृदाद्येकमेव यत्रद्रव्यंनोक्तंतत्राज्यंग्राह्यं मंत्रांतेकर्मकर्तव्यं मंत्रस्यकरणत्वतः कर्मावृत्तौतुमंत्रस्याप्यावृत्तिर्गृह्यकर्मणि समंत्रकहोमेतूष्णींनिर्वापः नाम्ना होमेनाम्नैवनिर्वापादि यत्रमंत्रेणनाम्नावाहोमोनोक्तस्तत्रनाम्नैवहोमः समंत्रकहोमेसहैवानेक दैवत्यचरुपाकेपिनविभागोनाभिमर्शश्च अनुक्तौदक्षिणाकरः दिशामनुक्तौप्राच्युदीचीशान्यः तिष्ठन्नासीनइत्याद्यनुक्तावासीनतैव अनादेशेस्वयंकर्ता अविज्ञातस्वरोमंत्रःसौत्रएकश्रुतिर्भवेत् होमेषुमंत्रंस्वाहांतंप्रणवाद्यंचकारयेत् विप्रादीनांद्विदर्भस्यात्पवित्रंग्रथितंनवा ॥

अब सब कर्मोंकी साधारण परिभाषा कहताहुं.

सब प्रकारके पाकयज्ञोंमें ब्रह्माजी करना अथवा नहीं करना. पात्रासादन, घृत आदि द्रव्यका श्रपण इत्यादिक ये ऐच्छिक होते हैं. स्रुव आदि पात्रोंका संमार्जन, इध्माका रज्जुप्रहरण, पूर्णपात्र, आज्योत्पवन ये नित्य हैं. चावलोंके स्थानमें व्रीहीका कंडन करना अथवा नहीं करना. ताया हुआ जो घृत तिसका विलापनविधिभी करना अथवा नहीं करना. प्रतिपदोक्त जो घृतहोम तिसमें परिस्तरण करना अथवा नहीं करना. अनादिष्ट जो घृतका होम है तिसमें परिस्तरण नित्य है. आज्यभागसहित और आज्यभागरहित जो कर्म तिन्होंके तंत्रप्रयोगमें आज्यभाग नहीं देना यहही योग्य है. क्योंकी, सब जगह आज्यभागोंका विकल्प कहा है. अनेक तरहके पाकयज्ञोंका एककालमें अनुष्ठान करना होवै तौ समानतंत्र करना ऐसा कहा है, इसकरके स्विष्टकृत् इत्यादिक एकही करना. जहां द्रव्य नहीं कहा होवै तहां घृत ग्रहण करना. मंत्र यह कर्मका साधन होनेसें मंत्रके अंतमें कर्म करना. गृह्यकर्ममें कर्मकी आवृत्ति करनी होवै तौ मंत्रकीभी आवृत्ति करनी. समंत्रक होममें मंत्ररहित निर्वाप

करना. नाममंत्रसें होम करना होवै तौ नाममंत्रसेंही निर्वाप आदि करना. जहां मंत्रसें अथवा नाममंत्रसें होम नहीं कहा होवै तहां नाममंत्रसेंही होम करना. समंत्रक होममें साथही अनेक देवतोंवाले चरुके श्रपणमें विभाग और अभिमर्श नहीं करना. जहां हाथका निर्देश नहीं कहा होवै तहां दाहिने हाथसें कर्म करना. जहां दिशा नहीं कही होवै तहां पूर्व, उत्तर अथवा ईशानी ये दिशा ग्रहण करनी. जहां स्थित होके अथवा बैठके आदि नहीं कहा होवै तहां बैठके कर्म करना. जहां कर्ता नहीं कहा होवै तहां यजमान कर्ता जानना. जिसके स्वर नहीं जाने गये ऐसा और सूत्रोक्त ये मंत्र एकश्रुतिसें सरल कहने. होमके मंत्रका उच्चार करनेका सो ओंकार है पूर्वमें जिसके और स्वाहाकार है अंतमें जिसके ऐसा मंत्र कहना. ब्राह्मण आदिकोंनें दो डाभोंका पवित्रा धारण करना; सो पवित्रा ग्रंथियुक्त करना अथवा नहीं करना.

आहुतिप्रमाणं कर्षप्रमाणमाज्यादिलाजामुष्टिमितामताः अन्नंग्राससमंग्राह्यंकंदानामष्टमोंशकः तिलसक्तुकणादीनांमृगीमुद्राप्रमाणतः ॥

आहुतिका प्रमाण.—प्रति आहुतिकों घृत आदि पतला पदार्थ एक कर्ष अर्थात् एक तोलापरिमित, भुना धान्य एक मुष्टिपरिमित, और चरु ग्रासपरिमित लेना; कंदका आठमा भाग; तिल और सत्तु आदि इन्होंकी आहुति मृगीमुद्राप्रमाण लेनी. इस प्रकार आहुतिका प्रमाण जानना.

ताम्रपात्रेणपिहितेताम्रपात्रादिकेशुभे अग्निप्रणयनंकार्यंमृन्मयेराजतादिके उत्तमःश्रोत्रियागारान्मध्यमःस्वगृहादितः नाप्रोक्षितमिंधनमग्नावादध्यात् सदोपवीतिनाभाव्यंसदाबद्धशिखेनच सदेतिकर्मांगतापुरुषार्थताच तेनकर्मकालेशिखाबंधाद्यभावेप्रायश्चित्तद्वयमन्यदैकमेव दशविधादर्भाउक्ताः वटप्लक्षबिल्ववैकंकतचंदनदेवदारुसरलवृक्षजाअपिक्वचित्समिधः प्रभुःप्रथमकल्पस्ययोनुकल्पेनवर्तते सनाप्नोतिफलंतस्यपरत्रेतिश्रुतिःस्मृतिः बह्वल्पंवा स्वगृह्योक्तंयस्ययत्कर्मचोदितं तस्यतावतिशास्त्रार्थेकृतेसर्वःकृतोभवेत् ॥

“चांदीके पात्रमें, तांबाके पात्रमें अथवा माटीके पात्रमें अग्नि घालके तिस पात्रकों तांबाके पात्रसें ढकके अग्नि लाना उचित है. श्रोत्रिय अर्थात् वेदपाठी ब्राह्मणके घरसें लाया हुआ अग्नि उत्तम, और अपने घर आदिसें लाया हुआ अग्नि मध्यम है.” जलसें नहीं प्रोक्षित किये काष्ठ अग्निमें नहीं डालने. सब काल पुरुषनें उपवीती, और बंधी हुई शिखा अर्थात् चोटीवाला रहना चाहिये. ‘सदा’ ऐसा जो पद है तिस्सें शिखाबंधन यह कर्मका अंग होके पुरुषार्थपना है ऐसा सूचित किया है. इस उपरसें ऐसा सिद्ध होता है की, कर्ममें शिखाबंध आदिके अभावमें दो प्रायश्चित्त करने, अन्यथा एकही प्रायश्चित्त करना. दश प्रकारके डाभ कहे हैं. वड, पिलषन, बेलपत्र, बेहकल, चंदन, देवदार और सरलवृक्ष इन वृक्षोंकी समिध कहींक ग्रंथमें कही हैं. “प्रथम कल्पसें अर्थात् मुख्यकल्पसें कर्म करनेकों समर्थ हुआ जो मनुष्य अनुकल्पसें अर्थात् गौण कल्पसें कर्म करता है तिसकों तिस किये हुए कर्मका फल परलोकमें नहीं मिलता है ऐसा श्रुति और स्मृति कहती है. अधिक अथवा

क्रम जो अपने गृह्यसूत्रके अनुसार कर्म कहा है, वह शास्त्रके अनुसार किया जावै तौ सब शास्त्रार्थ कियेसमान होता है.”

अथकर्मविशेषेम्निनामानि अग्निस्तुमरुतोनामगर्भाधानेविधीयते पवमानः पुंसवनेसीमंते मंगलाभिधः प्रबलोजातसंस्कारेपार्थिवोनामकर्मणि अन्नाशनेशुचिःप्रोक्तःसभ्यःस्याच्चौलकर्मणि व्रतादेशेसमुद्भवः गोदानादौसूर्यः विवाहेयोजकः आवसथ्येद्विजनामा प्रायश्चित्तेविटः पाकयज्ञेषुपावकः पित्र्येकव्यवाहनः दैवेहव्यवाहनः शांतिकेवरदःप्रोक्तः पौष्टिकेबलवर्धनः मृतदाहेक्रव्यादः ज्ञात्वैवमग्निनामानिगृह्यकर्मसमारभेत् पलाशेनजुहूः कार्याखदिरेणस्रुवःस्रुचः तदभावेयथालाभयज्ञियवृक्षजाः तभदावेपलाशमध्यपर्णैर्वापिप्पलपर्णैर्वाहोमःएवं चमसादयोपिखदिरादियज्ञियवृक्षजाः काम्येप्रतिनिधिर्नास्तिनित्येनैमित्तिकेहिसः काम्येप्युपक्रामादूर्ध्वमन्येप्रतिनिधिंविदुः नस्यात्प्रतिनिधिर्मंत्रकर्मदेवाग्निकर्तृषु नदेशारणिकालेषु त्रिषुप्रतिनिधिर्मतः नापिप्रतिनिधातव्यंनिषिद्धंवस्तुकुत्रचित् स्वकालादुत्तरोगौणःकालःसर्वस्यकर्मणः तर्पणेष्वासनेश्राद्धेभुक्तौमूत्रपुरीषयोः षट्स्रुनिर्माल्यकादर्भादर्व्याद्याअभिचारके मंत्रोपियश्चशूद्रार्थेब्राह्मणःप्रेतभोजने ॥

अब कर्मोंके विशेषकरके अग्निके नाम कहताहुं.

गर्भाधानसंस्कारमें जो अग्नि स्थापन किया जाता है वह मरुतनामक जानना. पुंसवनकर्ममें जो अग्नि स्थापन किया जाता है वह पवमानसंज्ञक जानना. सीमंतसंस्कारमें जो अग्नि स्थापन किया जाता है वह मंगलनामा जानना. जातकर्मसंस्कारमें जो अग्नि स्थापन किया जाता है वह प्रबलनामक जानना. नामसंस्कारमें जो अग्नि स्थापन किया जाता है वह पार्थिवसंज्ञक जानना. अन्नप्राशनकर्ममें जो अग्नि स्थापन किया जाता है वह शुचिनामा जानना. चौलसंस्कारमें जो अग्नि स्थापन किया जाता है वह सभ्य जानना. यज्ञोपवीतसंस्कारमें जो अग्नि स्थापन किया जाता है वह समुद्भवनामा जानना. गोदान आदिविषे सूर्यनामा अग्नि जानना. विवाहसंस्कारमें योजक अग्नि जानना. गृह्याग्निसंबंधी कर्ममें द्विजसंज्ञक अग्नि जानना. प्रायश्चित्तविषे विट अग्नि जानना. पाकयज्ञोंविषे पावकनामा अग्नि जानना. पितृकर्ममें कव्यवाहन अग्नि जानना. दैवकर्ममें हव्यवाहन अग्नि जानना. शांतिकर्ममें वरदनामा अग्नि जानना. पौष्टिक कर्ममें बलवर्धननामा अग्नि जानना. मृतके दाहकर्ममें क्रव्याद अग्नि जानना. इस प्रकार अग्निके नामोंकों जानके गृह्याग्निसंबंधी कर्मकों आरंभ करना.” “ढाककी जुहू बनानी. खैरके स्रुव और स्रुक् बनाने.” ये वृक्ष नहीं मिलैं तौ यथासंभव यज्ञके योग्य वृक्षोंके बनाने. यज्ञके योग्य वृक्षभी नहीं मिलैं तौ ढाकके बीचके पत्तोंसें अथवा पीपलवृक्षके पत्तोंसें होम करना. इस प्रकार चमस आदि पात्रभी खैर आदि यज्ञके योग्य वृक्षोंके बनाने. “काम्यकर्ममें प्रतिनिधि नहीं करना. नित्यकर्म और नैमित्तिककर्ममें प्रतिनिधि करना. काम्यकर्ममें आरंभके उपरंत प्रतिनिधि करना ऐसा दूसरे ग्रंथकार कहते हैं. मंत्र, कर्म, देवता, अग्नि और कर्ता इन्होंके स्थानमें प्रतिनिधि नहीं करना. देश, अरणी और काल इन्होंके स्थानमें प्रतिनिधि नहीं करना. किसीभी कर्ममें निषिद्ध पदार्थ प्रतिनिधिके स्थानमें नहीं योजना. सब

कर्मोंका जो अपना काल है तिस्सें पीछे गौणकाल होता है. तर्पण, श्राद्ध, आसन, भोजन, मूत्र, विष्ठा इन छहोंमें कुश निर्माल्य हो जाते हैं. अभिचारकर्ममें दर्वी आदि पात्र निर्माल्य हो जाते हैं अर्थात् तिस तिस कर्मके अनंतर वे अन्य कर्ममें अयोग्य होते हैं. शूद्रके कार्यमें उच्चारण किया मंत्र और प्रेतश्राद्धमें भोजन करनेवाला ब्राह्मण निर्माल्य हो जाता है, अर्थात् ये सब कामके नहीं रहते है.

अथकर्मांगदेवताः विवाहस्याग्निर्देवता तेनविवाहांगभूतस्वस्तिवाचनाद्यंतेकर्मांगदेवताग्निःप्रीयतामितिवदेत् औपासनेग्निसूर्यप्रजापतयः स्थालीपाकेग्निः गर्भाधानेब्रह्मा पुंसवनेप्रजापतिः सीमंतेधाता जातकर्मणिमृत्युः नामकर्मनिष्क्रमणान्नप्राशनेषुसविताचौलेकेशिनःउपनयनेइंद्रश्रद्धामेधाः अंतेसुश्रवाः पुनरुपनयनेग्निः समावर्तनस्येंद्रः उपाकर्मणिव्रतेषुचसविता वास्तुहोमेवास्तोष्पतिरंतेप्रजापतिः आग्रयणेआग्रयणदेवताः सर्पबलेःसर्पाः तडागादीनांवरुणः ग्रहयज्ञेआदित्यादिनवग्रहाः कूष्मांडहोमेचांद्रायणेअग्न्याधानेचाग्न्यादयः अग्निष्टोमस्याग्निः अन्येष्विष्टकर्मसुप्रजापतिरिति ॥

अब कर्मोंकी अंगदेवता कहताहुं.

विवाहकी अग्नि देवता है इस लिये विवाहके अंगभूत जो स्वस्तिवाचन आदि कर्म तिन्होंके अंतमें "कर्मांगदेवता अग्निः प्रीयताम्" ऐसा कहना. औपासनमें अग्नि, सूर्य और प्रजापति ये देवता हैं. स्थालीपाककी अग्नि देवता है. गर्भाधानकी ब्रह्मा देवता है. पुंसवनसंस्कारकी प्रजापति देवता है. सीमंतोन्नयनसंस्कारकी धाता देवता है. जातकर्मकी मृत्यु देवता है. नामकर्म, निष्क्रमण और अन्नप्राशन इन्होंकी देवता सविता है. चौलसंस्कारकी केशिन देवता है. उपनयनसंस्कारकी इंद्र, श्रद्धा, मेधा ये देवता हैं और अंतमें सुश्रवा देवता है. पुनरुपनयनसंस्कारकी अग्नि देवता है. समावर्तनसंस्कारकी इंद्र देवता है. उपाकर्म और महानाम्नी आदि व्रतोंकी सविता देवता है. वास्तुहोममें वास्तोष्पति देवता है, और अंतमें प्रजापति देवता है. आग्रयणकी आग्रयण देवता है. सर्पबलिकी सर्प देवता है. तलाव आदिकोंकी वरुण देवता है. ग्रहोंके यज्ञविषे नवग्रह देवता हैं. कूष्मांडहोम, चांद्रायण और अग्न्याधान इन्होंकी अग्नि आदि देवता हैं. अग्निष्टोमकी अग्नि देवता है. अन्य जो इष्ट कर्म हैं तिन्होंकी देवता प्रजापति है.

अथकलियुगेकार्याकार्यविवेकः गीतागंगातथाविष्णुःकपिलाश्वत्थसेवनं एकादशीव्रतं चैवसप्तमंनकलौयुगे विष्णुंशिवंवाभजतांगुरोःपित्रोश्चसेविनां गोवैष्णवमहाशैवतुलसीसेविनामपि नस्यात्कलिकृतोदोषःकाश्यांनिवसतामपि कलौगुरूणांभजनमीशभक्त्यधिकंस्मृतंजपादौयत्रयासंख्याकलौसास्याच्चतुर्गुणा कलौदानंमहाश्रेष्ठंशिवविष्णोश्चकीर्तनं कृतेयद्दशभिर्वर्षैस्त्रेतायांहायनेनतु द्वापरेतत्तुमासेनअहोरात्रेणतत्कलौ प्रथमस्कंधेकुशलान्याशुसिध्यंतिनेतराणिकृतानियदितिकलौपुण्यकर्मणांसंकल्पेपिसिद्धिः पापानांत्वाचरणादेवेत्युक्तं स्मृत्यंतरविरोधेतुकलौपाराशरीस्मृतिः ध्यायन्कृतेयजन्यज्ञैस्त्रेतायांद्वापरेर्चयन् यदाप्नोतितदाप्नोतिक

लौसंकीर्त्यकेशवमितिहेमाद्रौव्यासवचनं अत्रकृतयुगाद्यधिकरणकध्यानादिफलार्थंकल्यधिकरणकंकीर्तनंविधीयतइतिवाक्यार्थःकौस्तुभकर्तृपितामहैर्भक्तिनिर्णयेविस्तरेणनिरूपितः हेमाद्रौकलिंसभाजयंत्यार्यागुणज्ञाःसारभागिनः यत्रसंकीर्तनेनैवसर्वःस्वार्थोभिलभ्यतइतिश्रीभागवतवचनमुदाहृत्यसंकीर्तनेनहरिसंकीर्तनेनेत्यर्थइतिहेमाद्रावेवव्याख्यातं कृष्णवर्णंत्विषाकृष्णं सांगोपांगास्त्रपार्षदं यज्ञैःसंकीर्तनप्रायैर्यजंतिहिसुमेधसः यज्ञादिस्वस्वाचारमाचरद्भिरपिकालेषुसंकीर्तननिष्ठैर्भाव्यमित्याशयइतिकौस्तुभे अनेनचतुर्वर्गफलंनारायणाश्रयणमात्रेणभवतीतिसिद्धं यावैसाधनसंपत्तिःपुरुषार्थचतुष्टये तयाविनातदाप्नोतिनरोनारायणाश्रयइतिभारतोक्तेः ॥

अब कलियुगविषे कौनसा करनेके योग्य और कौनसा नहीं करनेके योग्य है तिसका निर्णय कहताहुं.

“ गीता, गंगाजी, विष्णु, कपिला गौ, पीपलकी सेवा और एकादशीका व्रत ये छह सेवन करनेकों योग्य हैं, और सातमा कर्म कलियुगमें नहीं योग्य है. विष्णु अथवा शिवकों भजनेवाले; माता और पिताकी सेवा करनेवाले; गौ, वैष्णव, महाशैव और तुलसी इन्होंकी सेवा करनेवाले और काशीमें वास करनेवाले इन सबोंकों कलियुगसंबंधी दोष प्राप्त नहीं होता है. कलियुगमें गुरुकी सेवा देवताकी भक्तिसें विशेष है ऐसा कहा है. जहां जप आदिविषे जो संख्या कही है वह कलियुगविषे चौगुनी जाननी. कलियुगविषे दान करना, शिव और विष्णुका कीर्तन करना अत्यंत श्रेष्ठ है. कृतयुगमें जो दश वर्षोंकरके सिद्धि होती है वह त्रेतायुगमें एक वर्षकरके, द्वापरयुगमें एक महीनाकरके और कलियुगमें एक दिनरात्रिकरके सिद्धि होती है.” **प्रथमस्कंधमें** ऐसा कहा है की, जिस “कलियुगमें पुण्य शीघ्र फलद्रूप होते है तैसे पाप शीघ्र नहीं सिद्ध होते हैं.” क्योंकी, पाप करनेसें सिद्ध होते हैं, ऐसा वचन होनेसें कलियुगविषे पुण्यकर्मोंकी संकल्पमात्रसें सिद्धि होती है, और पाप करनेसें लगता है ऐसा कहा है. “दूसरी स्मृतिका विरोध होवै तौ कलियुगविषे पाराशरीस्मृति ग्रहण करनी.” “ कृतयुगमें ध्यान करनेसें, त्रेतायुगमें यज्ञ करनेसें और द्वापरयुगमें पूजा करके जो फल प्राप्त होता है सो कलियुगमें केशवके नामकीर्तनसें प्राप्त होता है,” ऐसा **हेमाद्रि** ग्रंथमें व्यासजीका वचन है. इस स्थलमें कृतयुगादिमें ध्यान आदिके जो फल कहे हैं तिन्होंकी प्राप्तिके अर्थ कलियुगमें विष्णुका कीर्तन करना ऐसा वाक्यार्थ, **कौस्तुभ** ग्रंथका कर्ता जो अनंतदेव है तिसके पितामहनें **भक्तिनिर्णय** ग्रंथमें विस्तारसें निरूपण किया है. **हेमाद्रि** ग्रंथमें, चार युगोंमें कलियुग श्रेष्ठ है ऐसा समझके कलिके गुणकों जाननेवाले और गुणके सारकों ग्रहण करनेवाले ऐसे सज्जन लोग कलिकी प्रशंसा करते हैं. क्योंकी, “ जिस कलियुगमें संकीर्तनसेंही सब प्रकारका स्वार्थ सिद्ध होता है,” ऐसा **श्रीमद्भागवतका** वचन कहके संकीर्तन अर्थात् हरिका कीर्तन करना ऐसा अर्थ है, ऐसा **हेमाद्रि** ग्रंथमें कहा है. “ अंग अर्थात् हृदय आदि, उपांग अर्थात् कौस्तुभ आदि, अस्त्र अर्थात् सुदर्शन, पार्षद अर्थात् सुनंद और नंद आदिसें युक्त और कांतिकरके इंद्रनील मणिके समान प्रकाशित

ऐसे जो श्रीकृष्णचंद्र हैं तिन्होंकी पूजा, विशेषकरके नामका उच्चारण है जिसमें ऐसे यज्ञकरके विवेकी मनुष्य करते हैं." पंचमहायज्ञ आदि अपने अपने आचारके अनुसार आचरण करनेवाले जो हैं तिन्होंनेंभी अपने नित्यकर्म करनेसें जो शेष काल रहै तिसमें विष्णुके नामका कीर्तन करना ऐसा अभिप्राय कौस्तुभ ग्रंथमें कहा है. इस करके धर्म, अर्थ काम और मोक्ष इन चार प्रकारके पुरुषार्थोंका फल नारायणके आश्रयमात्रसें प्राप्त होता है, यह सिद्ध हुआ. क्योंकी, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार प्रकारके पुरुषार्थोंकी प्राप्तिके लिये जो साधनसंपत्ति कही है तिसके विना नारायणके आश्रय होनेवाले जो मनुष्य हैं तिन्होंकों वे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन्होंकी प्राप्ति होती है, ऐसा महाभारतमें वचन कहा है.

श्रीभागवतेपि धर्मार्थकाममोक्षाख्यंयइच्छेच्छ्रेयआत्मनः एकंह्येवहरेस्तत्रकारणंपादसेवनमिति अत्रएकपदावधारणादिपदैरन्यसाधनानपेक्षत्वंभक्तियोगस्योच्यते ज्ञानयोगादेश्चहरिपादसेवनसापेक्षत्वंध्वन्यते तथाचस्पष्टमेकादशादौ तस्मान्मद्भक्तियुक्तस्ययोगिनोवैमदात्मनः नज्ञानंनचवैराग्यंप्रायःश्रेयोभवेदिह यत्कर्मभिर्यत्तपसाज्ञानवैराग्यतश्चयत् योगेनदानधर्मेण श्रेयोभिरितरैरपि सर्वंमद्भक्तियोगेनमद्भक्तोलभतेंजसा स्वर्गापवर्गमद्धामकथंचिद्यदिवांछतीति श्रेयःस्रुतिंभक्तिमुदस्यतेविभोक्लिश्यंतियेकेवलबोधलब्धये तेषामसौक्लेशलएवशिष्यते नान्यद्यथास्थूलतुषावघातिनामित्यादिपरःसहस्रवचनानि ज्ञानयोगस्यभगवदाराधनंतत्प्रसादंच विनैवसिद्धिरितिक्वापिकेनाप्यनुक्तेश्च सर्वापेक्षाचयज्ञादिश्रुतेरश्ववदित्यधिकरणेज्ञानोत्पत्तौयज्ञादिसर्वसाधनापेक्षोक्तेश्च किंचभक्तियोगेदुराचारिणोपिदृढवैराग्यरहितस्याप्यधिकारोगम्यते अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमामनन्यभाक् साधुरेवसमंतव्यःसम्यग्व्यवहितोहिसः क्षिप्रंभवतिधर्मात्माशश्वच्छांतिंनिगच्छति कौंतेयप्रतिजानीहिनमेभक्तःप्रणश्यति ननिर्विण्णोनातिसक्तोभक्तियोगोस्यसिद्धिदइत्यादिवचनेभ्यः नैवंदुराचारिणापिदृढवैराग्यादिसाधनचतुष्टयसंपत्त्यभावेपिवेदांतश्रवणाद्यनुष्ठितौज्ञानोत्पत्तिर्भवतीतिक्वाप्युपलभ्यते नचयथोक्ताधिकारसंपत्तिविनानुष्ठितंसाधनंकिमपिफलायकल्पते तस्मात्सर्वथासर्वैःकलौश्रीहरिपादसेवनादिभक्तियोगाश्रयणमेवकर्तव्यमितिसिद्धं ॥

श्रीमद्भागवतमेंभी कहा है की—"जो मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन नामोंवाले अपने कल्याणकी इच्छा करै तिसकों तिसकी प्राप्तिका विष्णुके चरणोंकी सेवा करनी यहही एक कारण है." इस वाक्यमें एकपद और अवधारण आदि पद हैं, इन्होंकरके भक्तियोगकों अन्य साधनोंकी गरज नहीं है ऐसा सूचित होता है, और ज्ञानयोग आदिकों विष्णुके चरणोंकी सेवाकी अपेक्षा है ऐसा ध्वनितार्थ होता है. तैसेही एकादशस्कंध आदिमें स्पष्ट कहा है सो ऐसा—"मेरी भक्तिकरके युक्त हुये और मेरेविषे चित्तकों लगानेवाले ऐसे योगीका कल्याण करनेवाले साधन बहुधा ज्ञान और वैराग्य ये नहीं होते हैं. कर्मोंकरके जो मिलता है; तपके करनेसें जो मिलता है; ज्ञान और वैराग्यसें जो मिलता है; योगकरके तथा दानधर्मकरके जो प्राप्त होता है और अन्य प्रकारके कल्याणोंके साधनोंसें जो प्राप्त होता है, वह सब मेरी भक्तिके योगकरके मेरे भक्तकों आयासके विना प्राप्त होता है. स्वर्ग, मोक्ष और वैकुंठ इन्होंकी जो कदाचित् वांछा करता है तौ वहभी प्राप्त होता है."

भक्तिके विना ज्ञानकी प्राप्ति नहीं है ऐसा प्रतिपादन करते हैं—“ हे विभो, कल्याण और मोक्षकों देनेवाली ऐसी आपकी भक्तिकों छोडके जो पुरुष केवल ज्ञानकी प्राप्तिके लिये यतन करता है तिसकों केवल क्लेश मात्र होता है; अन्य कछु प्राप्त नहीं होता है. इसका दृष्टांत—जैसे मोटे तुषकों लेके कूटके पिछोडनेवालेकों जैसा क्लेश मात्र प्राप्त होता है, तिसी प्रकार आपकी भक्तिकों तुच्छ मानके ज्ञानके विषयमें विचार करनेवाले हैं,” इस आदि अन्यभी बहुतसे वचन कहे हैं. विष्णुका आराधन और विष्णुके प्रसाद विना ज्ञानयोगकी सिद्धि होती है ऐसा किसी ग्रंथकारनें किसीभी ग्रंथमें नहीं कहा है. “ **सर्वापेक्षा च यज्ञादिश्रुतेः अश्ववत्** ” यह अधिकरणमें अश्व जैसा रथ वहनेका साधन कहा है, इस दृष्टांतसें “**विविदिषन्ति यज्ञेन०**” इस श्रुतिके अनुरोधसें ज्ञानकी उत्पत्तिके विषयमें यज्ञ आदि सब साधनोंकी आवश्यकता है ऐसा कहा है; और दुष्ट आचारोंवाले और दृढ वैराग्यसें वर्जित ऐसे मनुष्यकोंभी भक्तियोगमें अधिकार है. “जो कदाचित् अत्यंत दुष्ट आचारोंवाला मनुष्य अन्य देवोंकी भक्ति छोडके केवल मुझकों भजता है वह मनुष्य साधुही जानना. क्योंकी, मैं परमेश्वरके भजनसेंही कृतार्थ होउंगा ऐसा तिसनें श्रेष्ठ व्यवसाय किया है.” “वह दुराचारी होवै तौभी मेरा भजन करनेवाला धर्मात्मा होके परमेश्वरप्राप्तिरूप निरंतर शांतिकों प्राप्त होता है. हे अर्जुन, ऐसी प्रतिज्ञा जान की, मेरा भक्त कभीभी नाशकों नहीं प्राप्त होता है. उदास नहीं होवै और अति आसक्त नहीं होवै तौभी तिसकों भक्तियोग सिद्धि देनेवाला होता है.” इन आदि वचन हैं. दुराचारी होवै तौभी तिस मनुष्यनेंभी दृढ वैराग्य आदि चार साधनोंकी सिद्धिके अभावमेंभी वेदांत आदिके सुननेसें ज्ञानकी उत्पत्ति होती है ऐसा कहींभी प्रमाण नहीं है. यथोक्त अधिकारकी संपत्तिके विना कुछभी साधन करनेसें कुछभी फल प्राप्त नहीं होता है. इस प्रकारसें सब जगह ईश्वरभाव रखके सबोंनें कलियुगविषे श्रीविष्णुभगवान्के चरणारविंदकी सेवा आदि भक्तियोगका आश्रय करनाही योग्य है, यह सिद्ध होता है.

अथकलौनिषिद्धानि समुद्रयातुःस्वीकारःकमंडलुविधारणं द्विजानामसवर्णासुकन्यासूपयमस्तथा देवराद्यैः सुतोत्पत्तिर्मधुपर्केपशोर्वधः मांसदानंतथाश्राद्धेवानप्रस्थाश्रमस्तथा दत्ताक्षतायाः कन्यायाःपुनर्दानंपरस्यच दीर्घकालंब्रह्मचर्यंनरमेधाश्वमेधकौ महाप्रस्थानगमनं गोमेधश्चतथामखः इमान्धर्मान्कलियुगेवर्ज्यानाहुर्मनीषिणः मद्यंवर्ज्यंमहापापेमरणांतविशोधनं सौत्रामण्यादियज्ञेपिसुरापात्रग्रहस्तथा मद्यमक्षादिवामाद्यागमस्यतुनमानता मीमांसाद्वितयेसर्वशिष्टैश्चतदनादरात् औरसोदत्तकश्चैतौपुत्रौकलियुगेस्मृतौ अन्यान्दशविधान्पुत्रान्क्रीताद्यान्वर्जयेत्कलौ कौस्तुभेस्वयंदत्तस्तृतीयोपिकलौविहितइति नवैवकलौनिषिद्धाइत्युक्तं कलियुगेब्रह्महंत्रादेरेवाऽव्यवहार्यत्वादिरूपंपातित्यं तत्संसर्गिणस्तुनरकहेतुदोषसत्त्वेपि पातित्यंनास्ति संसर्गदोषःपापेष्वितिकलिवर्ज्येषुवचनात्कृतेसंभाष्यपततित्रेतायांस्पर्शनेनतु द्वापरेत्वन्नमादायकलौपततिकर्मणेतिवचनाच्च ब्रह्महननादिकर्मणैवपातित्यंनसंसर्गमात्रेणेति तदर्थात् इदंचलोकेष्वबहिष्कृतपातकिषुलोकविद्विष्टत्वेनापरिहार्यसंसर्गेपातित्याभावपरं नहि लोकेष्वबहिष्कृतानांप्रच्छन्नाभक्ष्यभक्षणापेयपानागम्यागमनादिपातकवतांतज्ज्ञानवतातिशि

ष्टेनापिसंभाषणादिसंसर्गोनरकहेतुरपिपरिहर्तुंशक्यतेलोकविद्वेषापातात् लोकबहिष्कृतपापिनांसंसर्गस्तुपातित्यहेतुरेव तथैवशिष्टाचारादितिमेभाति अतएव त्यजेद्देशंकृतयुगेत्रेतायां ग्राममुत्सृजेत् द्वापरेकुलमेकंतुकर्तारंतुकलौयुगेइतिवाक्येकर्तृत्यागोविधीयते त्यागोहिसंसर्गपरिहारएव किंचानेनवाक्येनयत्रकुलादौब्रह्महत्यादिपातकीनिष्पद्यतेतत्कुलादिकंद्वापरादावेवबहिष्कार्यंनतुकलौकुलादेर्बहिष्कारः किंतुकर्तुरेवकलौबहिष्कारइतिप्रतिपाद्यते नचैतद्वाक्यविरोधिवाक्यांतरंपतितसगोत्रसपिंडादीनांकर्मानर्हत्वासंव्यवहार्यत्वप्रतिपादकंक्वापिग्रंथेउपलभ्यते यत्तुनिर्णयसिंधौघटस्फोटप्रकरणेगृहेषुस्वैरमापद्येरन्इतिवसिष्ठवचनसामर्थ्यात् पात्रनिनयनात्प्राक्पतितज्ञातीनांधर्मकार्येष्वधिकारोनास्तीत्यपरार्कव्याख्यानमुपन्यस्तंतन्नसर्वपतितविषयं किंतुघटस्फोटार्हप्रायश्चित्तानिच्छुपतितविषयं अन्यथापात्रनिनयनात्प्रागितिनवदेत् प्रायश्चित्तात्प्रागित्येववदेत् कर्तारंतुकलौयुगे इत्यादिप्रत्यक्षवचनेनविरोधेर्थापत्तिमूलकस्य सर्वपतितविषयककुलबहिष्कारवर्णनस्य पुरुषव्याख्यानरूपस्याप्रामाण्यापाताच्चेतिभाति इति संक्षेपः ॥

अब कलियुगविषे निषिद्ध कर्मोंकों कहताहुं.

द्विजोंनें जहाजमें बैठके समुद्रविषे गमन करनेवालोंका अंगीकार करना; जलसें भरे कमंडलुका धारण करना; दूसरे वर्णमें उत्पन्न हुई कन्यासें द्विजोंनें विवाह करना; देवर आदिसें पुत्रकी उत्पत्ति करानी; मधुपर्कविषे पशुकों मारना; श्राद्धमें मांस देना; वानप्रस्थाश्रम धारण करना; उदकपूर्वक दान कीई हुई शुद्ध कन्याका फिर दूसरेकों दान करना; बहुत कालपर्यंत ब्रह्मचर्य रखना; नरमेध, अश्वमेध करना; उत्तर दिशाकी यात्रा करना और गोमेधयज्ञ करना इन धर्मोंकों कलियुगविषे बुद्धिमान् पंडितनें वर्जित करने ऐसा विद्वान् कहते हैं. मदिरा वर्जित करनी. महापापमें मरणपर्यंत प्रायश्चित्त, और सौत्रामणि आदि यज्ञमेंभी मदिराके पात्रकों ग्रहण करना वर्जित है. मदिराभक्षण आदि जो वाममार्गियोंके शास्त्र हैं तिन्होंकों नहीं मानना; क्योंकी, पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा इन दोनों शास्त्रोंमें शिष्टोंनें मदिराका निषेध किया है. औरस अर्थात् विवाहित करी स्त्रीमें अपने शरीरसें उत्पन्न हुआ और दत्तक अर्थात् गोद लिया, ये दो पुत्र कलियुगमें कहे हैं. अन्य क्रीत आदि दश प्रकारके पुत्र कलियुगविषे वर्जित हैं. कौस्तुभ ग्रंथमें कलियुगविषे स्वयंदत्त ऐसा तीसरा पुत्रभी योग्य है और बाकी रहे नव प्रकारके पुत्र निषिद्ध हैं ऐसा कहा है. कलियुगविषे ब्रह्महत्या करनेवालेकों अव्यवहार्यरूपी पतितपना कहा है. तिस ब्रह्महत्याराके साथ संसर्ग करनेवालेकों तौ नरकका कारणरूप ऐसा दोष लगता है; परंतु पतितपना नहीं होता है. क्योंकी, पापोंमें संसर्गका दोष नहीं है ऐसा कलिवर्ज्यमें वचन है. “ कृतयुगमें पापीके साथ बोलनेसें मनुष्य पतित हो जाता था; त्रेतायुगमें पापीकों स्पर्श करनेसें पतितपना; द्वापरयुगमें पापीके अन्नकों ग्रहण करनेसें पतितपना और कलियुगमें पापकर्म करनेसें मनुष्य पतित होता है, ” इस वचनसें ब्रह्महत्या आदि कर्मके करनेसेंही मनुष्य पतित होता है, पापीके संसर्गमात्रसें पतितपना नहीं होता ऐसा तिस वचनका अर्थ कहा है, इस लिये यह वचन लोकोंमें जातिबाह्य नहीं होके जो पातकी है तिन्होंके विषयमें लोकके विद्वेषकरके परिहार करनेमें अशक्य जो

संसर्ग है तिसके विषयमें पतितपना नहीं है इस विषयक जानना. लोकोंमें बहिष्कृत नहीं परंतु गुप्तपनेसें अभक्ष्यभक्षण, अपेयपान, अगम्यागमन, इन आदि पाप करनेवाले मनुष्योंकों जाननेवाले अत्यंत शिष्टनेंभी, तिन पापियोंसें बोलना आदि संसर्ग करना यद्यपि नरकका कारण है, तथापि तिसका परिहार करना अशक्य है; क्योंकी तैसा करनेसें लोकोंमें वैरकी उत्पत्ति होती है. जो जातिसें बाहिर किये पापी हैं तिन्होंका संसर्ग मनुष्यके पतितपनेका कारण है और तैसाही शिष्टोंका आचार है ऐसा मुझकों प्रतीत होता है. इस कारणसें "कृतयुगमें देशका त्याग करना, त्रेतायुगमें ग्रामका त्याग करना, द्वापरमें एककुलका त्याग करना और कलियुगविषे तौ पापकर्म करनेवालेकों त्यागना." इस वचनसें कर्म करनेवालेका त्याग करना ऐसा विधि प्राप्त होता है. त्याग अर्थात् संसर्गका परिहार है. और इस वाक्यकरके जिस कुल आदिमें ब्रह्महत्या आदि पाप करनेवाला उत्पन्न होता है वह कुल आदिकों द्वापरयुग आदिमेंही जातिसें बाहिर करना योग्य था, और कलियुगमें कुल आदिकों जातिसें बाहिर नहीं करना; किंतु बुरा कर्म करनेवालेकोंही कलियुगमें जातिसें बाहिर करना ऐसा प्रतिपादन किया है. इस वाक्यकों विरुद्ध ऐसा अन्य वचन पतित मनुष्यके सगोत्री और सपिंडोंनें किसी कर्मकोंभी नहीं करना और लोकोंके साथ किसी प्रकारका व्यवहारभी नहीं करना ऐसा कहनेवाला दूसरा वाक्य किसीभी ग्रंथमें नहीं लब्ध होता है. जो **निर्णयसिंधु** ग्रंथविषे घटस्फोटप्रकरणमें " गृहमें अपनी इच्छापूर्वक वर्तना " ऐसा वसिष्ठवचन प्रबल मानके पात्रनिनयनके पहले पतितकी जातिकों धर्मकार्यके विषयमें अधिकार नहीं है ऐसा **अपरार्क** ग्रंथके व्याख्यानका उपन्यास किया है सो सब प्रकारके पतितोंके विषयमें नहीं है, किंतु घटस्फोटके विषयमें योग्य होके प्रायश्चित्तकी इच्छा नहीं करनेवाला जो पतित है तिसके विषयमें जानना. जो तैसा नहीं माना जावै तौ 'पात्रनिनयनके पहले,' ऐसा कहना नहीं बनता किंतु 'प्रायश्चित्तके पहले' ऐसा कहना बनता है. 'कलियुगविषे कर्ताका त्याग करना,' इस आदि जो प्रत्यक्ष वचन तिसके साथ विरोध होनेमें अर्थापत्तिमूलक, सर्वपतितविषयक, कुलबहिष्कारवर्णन, पुरुषव्याख्यानरूप जो सो सब अप्रमाण होवैगा ऐसा भासमान होता है. ऐसा संक्षेप कहा.

नचैवंघटस्फोटविधिर्व्यर्थइतिवाच्यं तस्यपारलौकिकदोषपरिहारार्थत्वात् लोकबहिष्कृत पातकिविषये संभाषणादिसंसर्गस्यपातित्यहेतुत्वाभावेपिपरत्रनरकजनकदोषहेतुत्ववत्पतिते नसहैककुलत्वसंसर्गस्यापीहपातित्यादिदोषहेतुत्वाभावेपिपारत्रिकदोषहेतुत्वात् अत्रचघटस्फोटविधेरेवार्थापत्तिविधायमानत्वात् तथाचपारत्रिकदोषपरिहारार्थंघटस्फोटविधिरितिनतद्विधिबलेनपतितमात्रस्यकुलेबहिष्कारः सत्राख्ययज्ञःकलौवर्ज्यः ब्रह्महत्यादिमहापातकेषुप्रायश्चित्तेननरकनिवृत्तिर्नभवतिकिंत्विहलोकेऽव्यवहार्यतामात्रंकलौभवतिस्वर्णस्तेयादिषुतुप्रायश्चित्तेननरकनिवृत्तिर्व्यवहार्यताच केचित्तुरहस्यकृतेषुमहापापेषुरहस्यप्रायश्चित्तंकलौनोपदेष्टव्यमित्याहुः विप्रादिस्त्रीसंभोगेनभ्रष्टानांशूद्रादीनांप्रायश्चित्तेपिसंसर्गोनिषिद्धः यज्ञेपशुमार[१]णंसोमविक्रयश्चविप्राणांकलौवर्ज्यः ज्येष्ठादिसर्वभ्रातृणांसमभागःकलौस्मृतः आततायिद्विजा

---

[१] शूद्रहस्तेनकार्यंनतुविप्रेणस्वयंकार्यमित्यर्थः ।।

नांनोधर्मयुद्धेपिहिंसनं अब्धौनौयातुर्द्विजस्यप्रायश्चित्तेपिसंसर्गोन गवार्थेब्राह्मणार्थेचप्राणत्यागःकलौनहि द्विजानांगोपशुरुद्रादौभोज्यान्नत्वंकलौनहि शिष्यस्यगुरुपत्नीषुनचिरंवासशीलता आपादिक्षत्रवैश्यादिवृत्तिंविप्रःकलौत्यजेत् कलौद्विजोनहिभवेदश्वस्तनिकजीविकः द्वादशाब्दंगुरौवासंमुखाग्निधमनक्रियां यतेर्भिक्षांसर्ववर्णेकलौत्रीणिविवर्जयेत् नवोदकनिषेधंच दक्षिणांगुरुवांछितां वृद्धरुग्णादिमरणंजलाग्निपतनादिभिः गोतृप्तिमात्रेभूमिष्ठेपयस्याचमनक्रियां पितृवादेसाक्षिदंडंकलौपंचविवर्जयेत् घृतदुग्धादिभिःपक्वमन्नंशूद्रात्कलौत्यजेत् भिक्षामटन्यतीरात्रौनवसेत्गृहिणांगृहे विधूमसन्नमुसलेकालेभिक्षाकलौत्यजेत् चत्वार्यब्दसहस्राणिचत्वार्यब्दशतानिच कलेर्यदागमिष्यंतितदात्रेतापरिग्रहः संन्यासश्चनकर्तव्योब्राह्मणेन विजानता त्रेतापरिग्रहःसर्वाधानं अर्धाधानंस्मृतंश्रौतस्मार्ताग्न्योस्तुपृथक्कृतिः सर्वाधानंतयोरैक्यकृतिःपूर्वयुगाश्रया अस्यापवादः यावद्वर्णविभागोस्तियावद्वेदःप्रवर्तते संन्यासंचाग्निहोत्रंचतावत्कुर्यात्कलौयुगेइति शपथाःशकुनाःस्वप्नाःसामुद्रिकमुपश्रुतिः देवपूजोपहारादेः संकल्पःकार्यसिद्धये प्रश्नोत्तरंकालविदांसंभवंतिकलौक्वचित् इतिकलौकार्याकार्यनिर्णयः ॥

इस प्रकार घटस्फोटका जो विधि कहा है सो व्यर्थ है ऐसा नहीं कहना; क्योंकी, वह घटस्फोटविधि करनेसें परलोकसंबंधी दोषका परिहार होता है. लोकोंसें बाहिर किये पापीके साथ बोलना आदि संसर्ग करनेमें यदि वह संसर्ग पतितपनेका कारण नहीं है तथापि परलोकमें नरक उत्पन्न करनेवाले दोषकों जैसा कारण है, तैसा पतितके साथ एककुलरूप संसर्ग इस लोकमें पतितपना आदि दोषकों कारण नहीं है; तथापि वह परलोकसंबंधी दोषकों कारण है. इस स्थलमें घटस्फोटविधि 'अर्थापत्ति' ऐसे प्रकारसें प्रमाणीभूत हुआ है, और तैसेही परलोकसंबंधी दोष दूर करनेके अर्थ घटस्फोटविधि है. तब घटस्फोटविधिके सामर्थ्यसें पतितमात्रके कुलविषे बाहिर करना नहीं होता है. सत्रनामक यज्ञ कलियुगविषे वर्जित करना. कलियुगमें ब्रह्महत्या आदि महापाप बन आवै तौ प्रायश्चित्तसें नरककी निवृत्ति नहीं होती है; किंतु इस लोकमें व्यवहारकी मात्र योग्यता कलियुगविषे प्राप्त होती है. सोनाकी चोरी करना आदि पापोंमें तौ प्रायश्चित्त करनेसें नरककी निवृत्ति और व्यवहारकी योग्यता प्राप्त होती है. कितनेक ग्रंथकार एकांतमें किये महापापोंविषे रहस्यप्रायश्चित्त कलियुगमें नहीं करना ऐसा कहते हैं. ब्राह्मण आदिकी स्त्रियोंसें भोग करनेसें भ्रष्ट हुये शूद्र आदिकोंनें प्रायश्चित्त किया तौभी तिन्होंका संसर्ग करना बुरा है. कलियुगविषे यज्ञमें पशुकों मारना[1] और सोमविक्रय ये दोनों कर्म ब्राह्मणोंनें वर्जित करने. कलियुगमें ज्येष्ठ अर्थात् वडा भाई आदि सब भाइयोंकों भाग अर्थात् हिस्सा बराबर कहा है. आततायी अर्थात् अग्नि लगानेवाला, जहर देनेवाला, शस्त्रकों हांथमें धारण करनेवाला, चोरी करनेवाला, खेतकों और स्त्रीकों हरनेवाला, ऐसे ब्राह्मणोंकोंभी धर्मयुद्धमें नहीं मारना. जहाजमें बैठके समुद्रमें गमन करनेवाले द्विजनें प्रायश्चित्त किया होवै तौ भी तिसका संसर्ग नहीं करना. कलियुगमें गौके अर्थ और ब्राह्मणोंके अर्थ प्राणोंका त्याग नहीं करना. कलियुगमें द्विजोंनें शूद्र आदिका अन्न भक्षण नहीं करना. शिष्यनें गुरुकी स्त्रियोंके समीपमें बहुत कालतक

---

[1] शूद्रके हाथसें कराना, ब्राह्मणनें आप नहीं करना ऐसा अर्थ.

नहीं बैठना. आपत्कालमें ब्राह्मणनें क्षत्रिय और वैश्य आदिके वृत्तिका त्याग करना. कलियुगविषे दो तीन दिनोंमें पूरा हो सकै इतने अन्नका संचय करके उपजीविका करनेवाला ऐसा होके ब्राह्मणनें नहीं रहना. गुरुके पास बारह वर्षपर्यंत वास करना, मुखसें अग्निकों धमना, संन्यासीनें सब वर्णोंके यहां भिक्षा करनी इन तीन कर्मोंकों कलियुगविषे वर्जित करने. नवीन जलका निषेध; गुरुकी इच्छाके अनुसार दक्षिणा देनी; वृद्ध, रोगी, इन आदिकोंनें जलसमाधि, अग्निपतन, भृगुपतन इन आदि करके मरना; गौकी तृप्ति हो सकै इतने पृथिवीमें स्थित हुये जलमें आचमन करना; पिता और पुत्रके वादमें साक्षीकों दंड करना ये पांचों कर्म कलियुगमें वर्जित करने. घृत और दूध आदिमें पकाया हुआ अन्न शूद्रके हाथसें नहीं ग्रहण करना. भिक्षा मांगनेकों विचरते हुए संन्यासीनें गृहस्थियोंके घरविषे रात्रिमें नहीं रहना. धूमा और मुसलकी चोट इन्होंकरके रहित कालमें संन्यासीनें भिक्षा मांगनी नहीं. कलियुगके चार हजार चारसौ वर्ष व्यतीत हुए पीछे जाननेवाले ब्राह्मणनें त्रेतापरिग्रह और संन्यास धारण नहीं करना. त्रेतापरिग्रह अर्थात् सर्वाधान. "श्रौताग्नि और स्मार्ताग्नि ये पृथक् पृथक् करने, तिन्होंका नाम अर्धाधान और वे श्रौताग्नि और स्मार्ताग्नि एकत्र करने वह सर्वाधान, और सो एकत्र करना पूर्वयुगमें था." इन्होंका अपवाद—कलियुगविषे जबपर्यंत वर्णाश्रमधर्म और वेदका प्रकार रहै तबपर्यंत संन्यास, और अग्निहोत्र ये आचरण करने. शपथ, शकुन, स्वप्न, सामुद्रिक, उपश्रुति, कार्यकी सिद्धिके अर्थ देवताकी पूजा और उपहार इस आदिका संकल्प; कालकों जाननेवालोंके प्रश्न और उत्तर ये सब कलियुगविषे कहींक संभव होते हैं. इस प्रकार कलियुगविषे कार्य और अकार्यका निर्णय समाप्त हुआ.

अथस्वप्नविचारः स्वप्नोद्विविधः इष्टफलोनिष्टफलश्चेति तत्रसामान्यतइष्टफलोयथा नदीसमुद्रतरणमाकाशगमनंतथा गृहनक्षत्रमार्तंडचंद्रमंडलदर्शनं हर्म्यस्यारोहणंचैवप्रासादशिरसोपिवा स्वप्नेचमदिरापानंवसामांसस्यभक्षणं कृमिविष्ठानुलेपश्चरुधिरेणाभिषेचनं भोजनंदधिभक्तस्यश्वेतवस्त्रानुलेपनं रत्नान्याभरणादीनिस्वप्नेदृष्ट्वाप्रसिद्धयति देवताविप्रपृथ्वीशान्प्रशस्ताभरणांगनाः वृषेभपर्वतक्षीरिफलिवृक्षाधिरोहणं दर्पणामिषमाल्याप्तिंशुक्लपुष्पांबराश्रितान् द्रष्टुःस्वप्नेर्थलाभःस्याद्व्याधिमोक्षश्चजायते ॥

अब स्वप्नका निर्णय कहताहुं.

स्वप्न दो प्रकारका है. १ अच्छा फल देनेवाला. २ बुरा फल देनेवाला. तिन दोनोंमें सामान्यसें अच्छा फल देनेवाले स्वप्नकों कहताहुं.—नदी और समुद्रका तिरना; आकाशमें गमन करना; ग्रह, नक्षत्र, सूर्य, चंद्रमा इन्होंके मंडलका दर्शन; राजाका मकान, देवताका मंदिर आदिके शिखरपर चढना; मदिराका पीना; मज्जा और मांसकों खाना; कीडे और विष्ठाका शरीरपर लेप करना; लोहूसें स्नान करना; दहीसहित भातका भोजन करना; सुपेद वस्त्र और सुपेद गंध, रत्न, गहना इन्होंको स्वप्नमें देखै तौ कार्यकी सिद्धि होती है. देवता; ब्राह्मण; राजा; उत्तम प्रकारके गहनोंको धारण करनेवाली स्त्री इन्होंके दर्शन; बैल, पर्वत,

गूलर वृक्ष, फलयुक्त वृक्ष, इन्होंपर चढना; सीसा, मांस, फूल इन्होंकी प्राप्ति; सुपेद वस्त्र और सुपेद फूलोंसें आश्रित हुये पुरुषोंका देखना इन सबोंकों स्वप्नमें देखनेवालेकों द्रव्यकी प्राप्ति और रोगका नाश होता है.

अथानिष्टफलः दुष्टंकिंशुकवल्मीकपारिभद्राधिरोहणं तैलकार्पासपिण्याकलोहप्राप्तिर्विपत्तये विवाहकरणंस्वप्नेरक्तस्त्रग्वस्त्रधारणं स्रोतसाहरणंनेष्टंपक्वमांसस्यभोजनं आदित्यस्याथचंद्रस्यनिष्प्रभस्यावलोकनं नक्षत्रादेश्चपातस्यस्वप्नेमरणशोककृत् अशोककरवीरपलाशानां पुष्पितानांस्वप्नेदर्शनेशोकः नौकारोहणेप्रवासः रक्तवस्त्रगंधधारिण्यास्त्रियालिंगनेमृत्युःघृत तैलादिनाभ्यंगेव्याधिः केशदंतपातेधननाशःपुत्रशोकोवा खरोष्ट्रमहिषैर्यानेतद्युक्तरथारोहणेवामृत्युः कर्णनासाकरादिच्छेदेपंकमज्जनेतैलाभ्यंगेविषभक्षणेप्रेतालिंगनेनलदमालिनोदिगंबरस्ययानेकृष्णपुरुषदर्शनेचमृत्युः ॥

अब अशुभ स्वप्नोंकों कहताहुं.—'केशू वृक्ष, सर्प आदिकी बंबी, नींबवृक्ष इन्होंपर चढना, तेल, कपास, खल, लोहा इन्होंकी प्राप्ति दुःख देती है. स्वप्नमें विवाह करना; लाल वस्त्र और लाल मालाकों धारण करना, पानीके प्रवाहनें हरण किया और पकाये हुये मांसका भोजन ये अशुभ हैं. प्रभासें वर्जित सूर्यका और चंद्रमाका दर्शन, तारादिकोंके पडनेका दर्शन स्वप्नमें देखनेसें मरण और शोक करते हैं. स्वप्नमें फूलोंसें सहित अशोक वृक्ष, कनेर, केशू इन्होंकों देखनेसें शोक प्राप्त होता है. स्वप्नमें नावपर चढनेसें प्रवास होता है. स्वप्नमें लाल वस्त्र और लाल चंदनकों धारण करनेवाली स्त्री संग मिलै तौ मृत्यु होता है. स्वप्नमें घृत और तेल आदिकरके मालिस करनेमें रोग उपजता है. स्वप्नमें बाल और दंत टूटके गिर पडैं तौ धनका नाश अथवा पुत्रका शोक होता है. स्वप्नमें गद्धा, ऊंट, भैंसा इन्होंपर बैठना, अथवा इन्होंसें युक्त हुये रथपर आरोहणसें मृत्यु होता है. स्वप्नमें कान, हाथ, नासिका इन आदिका छेदन होवै, और कीचडमें मज्जित होना; तेलकी मालिस; जहरका भक्षण, मरे हुये मनुष्यका आलिंगन; जासवंदके फूलोंकी मालाकों धारण करनेवाला और नंगा ऐसा मनुष्य होके गमन करै और काले पुरुषकों देखना ये सब मृत्युकारक होते हैं.

अथजागृतावनिष्टानि अरुंधतींध्रुवंचैवनभोमंदाकिनींतथा स्वनासाग्रंचचंद्रांकमायुर्हीनो नपश्यति पांसुपंकादिषुन्यस्तचरणंखंडितंयदि स्नानांबुलिप्तगात्रस्ययस्यास्यंप्राक्प्रशुष्यति गात्रेष्वार्द्रेषुसर्वेषुसूर्यादिद्वयदर्शनं स्वर्णप्रतीतिर्वृक्षेषुस्वपदानामदर्शनं पिहितेकर्णयुगुलेयस्यघोषानुपश्रुतिः अदर्शनंस्वशिरसःप्रतिबिंबेजलादिषु छिद्रप्रतीतिश्छायायांसचिरंनैवजीवति ॥

अब जागृत अवस्थाके अरिष्टोंकों कहताहुं.—अरुंधती, ध्रुव, आकाशगंगा, अपनी नासिकाका अग्रभाग, चंद्रमाकेविषे काला चिन्ह ये आयुसें हीन हुआ मनुष्य नहीं देख सक्ता. जिस मनुष्यका स्थापित किया पैर रेती और कीचड आदिविषे खंडित हुये प्रकट होवैं; अथवा जिसका स्नान करनेके पीछे सब शरीर गीला रहै और मुख पहले सूखा हो जावै; सूर्य आदि दो दो दीखैं; सब वृक्ष सोनासरीखे पीले दीखैं; कीचड आदिविषे अपने

पैरोंके चिन्ह अप्रकट दीखैं; जिसके दोनों कानोंके छिद्र ढके पीछे मगजका शब्द नहीं सुना जावै; जल आदिमें अपना शिर दीखै नहीं, अपनी छायामें छिद्रकी प्रतीति होवै ऐसा मनुष्य बहुत दिन नहीं जीवता है.

अथविशेषइष्टफलाःस्वप्नाः यस्तुपश्यतिवैस्वप्नेराजानंकुंजरंहयं सुवर्णंवृषभंगांवाकुटुंबंतस्यवर्धते वृषंवृक्षंवारुह्यतत्रस्थस्यजागरेधनाप्तिः श्वेतसर्पेणदक्षिणभुजदंशेदशदिनेसहस्रधनलाभः जलस्थस्यवृश्चिकोरगग्रासेजयपुत्रधनानि प्रासादशैलारोहणेसमुद्रतरणेराज्यं तडागमध्येपद्मपत्रेषुघृतपायसभोजनेराज्यं बलाकाकुक्कुटीक्रौंचीदर्शनेभार्याप्राप्तिः निगडैर्बंधेबहुपाशबंधेवापुत्रधनादि आसनेशयनेयानेशरीरेवाहनेगृहे ज्वलमानेविबुध्येततस्यश्रीःसर्वतोमुखी सूर्यचंद्रमंडलदर्शनेरोगिणोरोगनाशोन्यस्यधनं सुरारुधिरयोःपानेविप्रस्यविद्याशूद्रादेर्धनं शुक्लांबरगंधधारिण्यासुभगास्त्रियालिंगनेसंपत्तिः छत्रपादुकोपानहखड्गलाभेधनं वृषभयुक्तरथारोहणेधनं दधिलाभेवेदाप्तिः दधिपयःपानेघृतलाभेचयशः घृतभक्षणेक्लेशः अंत्रैर्वेष्टनेराज्यं मनुष्यस्यचरणमांसभक्षणेशतंलाभः बाहुभक्षणेसहस्रं शीर्षमांसभक्षणेराज्यंवा सहस्रधनंवा सफेनक्षीरपानेसोमपानं गोधूमदर्शनेधनलाभः यवदर्शनेयज्ञः गौरसर्षपदर्शनेलाभः नागपत्रंलभेत्स्वप्नेकर्पूरागमनंतथा चंदनंपांडुरंपुष्पंतस्यश्रीःसर्वतोमुखी सर्वाणिशुक्लान्यतिशोभनानिकार्पासभस्मौदनतक्रवर्ज्यं सर्वाणिकृष्णान्यतिनिंदितानिगोहस्तिदेवद्विजवाजिवर्ज्यं स्वप्नस्तुप्रथमेयामेवत्सरांतेफलप्रदः द्वितीयेष्टमासैः तृतीयेत्रिमासांते चतुर्थेयामेमासांते अरुणोदयेदशाहांते सूर्योदयेसद्यःफलं ॥

अब विशेषकरके शुभ फल देनेवाले स्वप्नोंकों कहताहुं.—जो मनुष्य स्वप्नमें राजा, हस्ती, घोडा, सोना, बैल और गौ इन्होंकों देखता है तिसका कुटुंब बढता है. स्वप्नमें बैल-पर अथवा वृक्षपर चढै और उसी समय जाग उठै तौ मनुष्यकों धनकी प्राप्ति होती है. स्वप्नमें जिस मनुष्यके दाहिने हाथकों श्वेत सर्प डसै तिसकों दश दिनमें हजार रुपयोंका लाभ होता है. स्वप्नविषे जलमें स्थित हुये मनुष्यकों वीछू और सर्प डसै तौ जय, पुत्र और धन इन्होंकी प्राप्ति होती है. स्वप्नमें देवालय, राजगृह और पर्वतपर चढै और समुद्रकों तिरै तौ राज्यकी प्राप्ति होती है. तलावके मध्यमें कमलके पत्तोंविषे घृत और खीरकों भोजन करै तौ राज्य मिलता है. स्वप्नमें बगला, मुरगी, कुंजपक्षी इन्होंके दर्शनमें स्त्रीकी प्राप्ति होती है. स्वप्नमें बेडियोंसें अथवा फांसियोंसें शरीरकों बंधा होवै तौ पुत्र और धन आदि मिलता है. स्वप्नमें आसन, शय्या, पालकी और गाडी आदि वाहन, शरीर, घर, इन्होंकों अग्नि लग जावै तौ तिस मनुष्यकों सब तर्फ लक्ष्मी मिलती है. स्वप्नमें सूर्य और चंद्रमाका मंडल दीखै तौ रोगीके रोगका नाश और अन्य पुरुषकों धनकी प्राप्ति होती है. स्वप्नमें मदिरा और लोहू पीया जावै तौ ब्राह्मणकों विद्या मिलती है, शूद्र आदिकों धन मिलता है. स्वप्नमें सुपेद वस्त्र और सुपेद चंदन धारण करनेवाली स्त्रीसें मिलाप होवै तौ धन मिलता है. स्वप्नमें, छत्र, खडाऊं, जूतीजोडा, तलवार इन्होंका लाभ होवै तौ धन मिलता है. स्वप्नमें बैलोंसें युक्त हुये रथपर चढै तौ धन मिलता है. स्वप्नमें दहीका लाभ होवै तौ वेदोंकी प्राप्ति होती है. स्वप्नमें दही और दूधका पीना और घृतका लाभ होवै तौ यशकी प्राप्ति होती है. स्वप्नमें

घृत भक्षण करै तौ दुःख उपजता है. स्वप्नमें आंतोंसें शरीर वेष्टित किया जावै तौ राज्य मिलता है. स्वप्नमें मनुष्यके पैरके मांसकों खावै तौ १०० रुपयोंका लाभ होता है. बाहुओंके मांसकों खावै तौ १००० रुपयोंका लाभ होता है. शिरके मांसकों खावै तौ राज्य अथवा १००० रुपयोंका लाभ होता है. झागोंसहित दूधके पीनेमें सोमपान मिलता है. गेहूं देखनेमें धनका लाभ होता है. जवोंके देखनेमें यज्ञकी प्राप्ति होती है. सुपेद सरसोंके देखनेमें लाभ होता है. नागरपान, कपूर, चंदन, सुपेद फूल इन्होंका लाभ होवै तौ सब काल लक्ष्मी प्रसन्न होती है. स्वप्नमें कपास, भस्म, भात, तक्र इन पदार्थोंके विना सब सुपेद पदार्थ अत्यंत शुभ हैं. गौ, हस्ती, देवता, ब्राह्मण इन्होंके विना सब काले पदार्थ स्वप्नमें देखने निंदित हैं. रात्रिके प्रथम प्रहरमें आया स्वप्न एक वर्षमें फलकों देता है. दूसरे प्रहरमें आया स्वप्न आठ महीनोंमें फल देता है. तीसरे प्रहरमें आया स्वप्न तीन महीनोंमें फल देता है और चौथे प्रहरमें आया स्वप्न एक महीनेमें फलकों देता है. अरुणोदयकालमें आया स्वप्न दश दिनके अंतमें फलकों देता है. सूर्यके उदयमें आया स्वप्न तत्काल फलकों देता है.

अथदुःस्वप्नदर्शनेकृत्यं योमेराजन्नित्यृचासूर्योपस्थानेदुःस्वप्ननाशः अधःस्वप्नस्येतिजपाद्वा क्वचिद्दर्शवच्छ्राद्धेनदुःस्वप्ननाशः चंडीसप्तशतीपाठेनवा यद्वाश्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रजपः कार्यःअथवाश्रीभारतस्थस्यश्रीमद्भागवतस्थस्यवागजेंद्रमोक्षस्यश्रवणंपाठोवा इतिदुःस्वप्ननाशकविधिः ॥

अब दुष्ट स्वप्न देखनेमें तिसका परिहार.—“**योमेराजन्०**” इस ऋचासें सूर्यका उपस्थान करना अथवा “**अधःस्वप्नस्य०**” इस मंत्रका जप करना. तिसकरके दुष्ट स्वप्नका नाश होता है. किसीक ग्रंथमें दर्शश्राद्धके समान श्राद्ध करना, तिसकरके दुष्ट स्वप्नका नाश होता है ऐसा कहा है. अथवा दुर्गापाठ करना. किंवा श्रीविष्णुसहस्रनामका जप करना. अथवा श्रीभातरमें किंवा श्रीमद्भागवतमें कहे गजेंद्रमोक्षका श्रवण किंवा पाठ करना. इस प्रकार दुष्ट स्वप्ननाशक विधि कहा.

इत्थंगर्भाधानादुद्वाहांताःसमस्तसंस्काराः ॥ सपरिकरानिर्णीताअस्मिंस्तार्तीयपूर्वार्धे ॥१॥

इस प्रकार तृतीय परिच्छेदके पूर्वार्धमें गर्भाधानसें विवाहपर्यंत सब संस्कारोंके प्रयोगोंका निर्णय कहा है.

ततआह्निकआचारस्ततआधानादिकाःप्रकीर्णार्थाः ॥
शांतिकपौष्टिकमुख्यानित्यानैमित्तिकाश्चोक्ताः ॥ २ ॥

पीछे आन्हिक आचार और तिसके पीछे आधान आदि मिश्र विषय, पीछे शांतिक और पौष्टिक है मुख्य जिन्होंमें ऐसे नित्य और नैमित्तिक कहे.

पूर्वपरिच्छेदकयोःकालःसामान्यतोविशेषाच्च ॥
निर्णीतःसहकृत्यैस्तिथिमासाद्येषुविध्युक्तैः ॥ ३ ॥

प्रथम और दूसरे परिच्छेदमें तिथि और महीना आदिके स्थानमें विधिप्रयुक्त अनेक प्रकारके कृत्योंसहित सामान्यकरके और विशेषकरके कालका निर्णय कहा है.

नानापापेप्रायश्चित्तंव्यवहारविस्तरश्चापि ॥ उपदानमहादानादिविधिश्चोक्तोमयूखादौ ॥४॥

अनेक प्रकारके पापोंके विषयमें प्रायश्चित्तव्यवहारका विस्तार और उपदान और महादान इत्यादिकोंका विधि ये विषय **मयूख** आदि ग्रंथोंमें कहे हैं.

श्राद्धविधिःसांगोप्याशौचेनिर्णीतिरंत्यसंस्कारः॥तार्तीयीकस्योत्तरखंडेग्रेसंप्रवक्ष्यंते ॥५॥

अंगोंके अनुसार श्राद्धविधि, आशौचनिर्णय और अंतसमयके संस्कार इन सबोंकों तृतीय परिच्छेदके उत्तरार्धमें कहुंगा.

मूलभूतानिपद्यानिविकृतानिक्वचित्क्वचित् ॥
निर्विकाराण्यपिनवान्यप्युक्तान्यत्रकानिचित् ॥ ६ ॥

मूलके श्लोक कहींक अशुद्ध थे वे बदल दिये हैं और कहींक नवीन श्लोक भी लिखे हैं.

मीमांसाधर्मशास्त्रज्ञाःसुधियोनलसाबुधाः ॥ कृतकार्याःप्राङ्निबंधैस्तदर्थंनायमुद्यमः॥७॥

ग्रंथकार यह ग्रंथ करनेका प्रयोजन कहते हैं.

मीमांसा और धर्मशास्त्र इन्होंकों जाननेवाले और बुद्धिमान् और आलस्यसें रहित ऐसे जो पंडित हैं वे महान् विद्वानोंनें रचे हुये जो पहले ग्रंथ हैं तिन्होंसें कृतकार्य होते हैं तिन्होंके अर्थ यह उद्यम नहीं किया है.

येपुनर्मंदमतयोलसाअज्ञाश्चनिर्णयं ॥ धर्मंवेदितुमिच्छंतिरचितस्तदपेक्षया ॥ ८ ॥
निबंधोयंधर्मसिंधुसारनामासुबोधनः ॥ अमुनाप्रीयतांश्रीमद्विठ्ठलोभक्तवत्सलः ॥ ९ ॥

मंदबुद्धिवाले और आलस्यकों प्राप्त हुये और अविद्वान ऐसे, निर्णयकों नहीं जाननेवाले और धर्मकों जाननेकी इच्छा करनेवाले ऐसे जो मनुष्य हैं तिन्होंके वास्ते **धर्मसिंधुसार** नामवाला और सुंदर बोधकों देनेवाला ऐसा यह ग्रंथ रचा है. इस ग्रंथकरके भक्तोंपर दया करनेवाले श्रीमान् विठ्ठलजी प्रसन्न हो.

प्रेम्णासद्भिर्ग्रंथःसेव्यः शब्दार्थतः सदोषोपि ॥
संशोध्यवापिहारिणा सुदाममुनिसतुषपृथुकमुष्टिरिव ॥ १० ॥

यह ग्रंथ कहींक जगह शब्दके अर्थसें अशुद्धभी होवै तथापि पंडितोंनें विचारपूर्वक शोधन करके ग्रहण करना योग्य है. यहां दृष्टांत है की जैसे सुदामा ब्राह्मणके दिये तुषोंसहित

चावलोंकी मुष्टि श्रीकृष्णजीनें आप शोधन करके ग्रहण करी है तैसे विद्वानोंनें यह मेरे ग्रंथका स्वीकार करना.

श्रीकाश्युपाध्यायवरोमहात्माबभूवविद्वद्द्विजसार्वभौमा ॥
तस्मादुपाध्यायकुलावतंसोयज्ञेश्वरोनंतइमावभूतां ॥ ११ ॥

विद्वान् ब्राह्मणोंके मध्यमें केवल सार्वभौम ऐसे महात्मा श्रीकाश्युपाध्यायजी होते भये, तिनके सकाशसें उपाध्यायके कुलमें अलंकाररूपी यज्ञेश्वरोपाध्याय और अनंतोपाध्याय ऐसे दो पुत्र हुये.

यज्ञेश्वरोयज्ञविधानदक्षोदैवज्ञवेदांगसुशास्त्रशिक्षः ॥
भक्तोत्तमोनंतगुणैकधामानंताह्वयोनंतकलावतारः ॥ १२ ॥

तिन दोनोंके मध्यमें श्रौतमार्गमें कुशल और ज्योतिषी, वेदोंका अंग जो व्याकरण तिसमें सुशिक्ष ऐसे यज्ञेश्वरोपाध्याय हुए. भक्तोंके मध्यमें श्रेष्ठ और अनंत भगवान्के अंशसें अवतार और अनंत गुणोंके वास करनेका स्थान ऐसे अनंतोपाध्याय होते भये.

एषोत्यजज्जन्मभुवंस्वकीयांतांकौंकणाख्यांसुविरक्तिशाली ॥
श्रीपांडुरंगेवसतिंविधाय भीमातटेमुक्तिमगात्सुभक्त्या ॥ १३ ॥

ये अनंतोपाध्याय वैराग्यकों प्राप्त होके अपने कोंकणनामके जन्मभूमिकों छोडके श्रीपांडुरंगक्षेत्रमें श्रीपांडुरंगके समीप वास करके श्रीपांडुरंगकी भक्तिसें भीमानदीके तटपर मुक्तिकों प्राप्त होते भये.

तस्यानंताभिधानस्योपाध्यायस्यसुतःकृती ॥
काशीनाथाभिधोधर्मसिंधुसारंसमातनोत् ॥ १४ ॥

तिन अनंतोपाध्यायका पुत्र और विद्वान् ऐसे काशीनाथनें यह **धर्मसिंधुसार** नामका ग्रंथ रचा है.

इति श्रीमत्काश्युपाध्यायसूरि० धर्मसिंधुसारे तृतीयपरिच्छेदे पूर्वार्धः समाप्तः ग्रंथसंख्या ४,५००.

इति श्रीवेरीनिवासि बुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिअनुवादित धर्मसिंधुसारभाषाटीकायां तृतीयपरिच्छेदे पूर्वार्धं समाप्तम्.

इति तृतीयपरिच्छेदस्य पूर्वार्धं समाप्तम्

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

गणनायकमाराध्य विघ्नसंघनिवारकं ।।
तार्तीयीकोत्तरार्धस्य व्याख्यानं क्रियते मया ।। १ ।।

विघ्नोंके समूहकों निवारण करनेवाले श्रीगणेशजीकी आराधना करके तृतीयपरिच्छेदके उत्तरार्धके भाषाटीकाका आरंभ करताहुं.

श्रीरुक्मिणीपांडुरंगंप्रणम्यपितरौगुरून् ।।
तृतीयपरिच्छेदोत्तरार्धंतनोमिश्रीशतुष्टये ।। १ ।।

श्रीरुक्मिणीसहित पांडुरंगजी, माता, पिता और गुरु इन्होंकों प्रणाम करके श्रीपांडुरंगकी प्रसन्नताके अर्थ तृतीयपरिच्छेदका उत्तरार्ध करताहुं.

श्रीनाथःकरुणासिंधुरिंदिराशंकरःसती ।। विघ्नेशोभास्करेंद्राद्याविघ्नान्घ्नंतुसदैवमे ।।२।।

दयाके सागर ऐसे श्रीनाथ, लक्ष्मी, महादेव, पार्वती, गणेश, सूर्य और इंद्र आदि देवता ये सब सर्वकाल मेरे विघ्नोंकों दूर करो.

तत्रतावच्छ्राद्धादिनिर्णयंवक्तुमधिकारनिर्णयायजीवत्पितृकाधिकारोविविच्यते पादुकेचोत्तरीयंचतर्जन्यांरूप्यधारणं नजीवत्पितृकःकुर्याज्ज्येष्ठेभ्रातरिजीवति अत्रपादुकेकाष्ठमय्यौ उत्तरीयंसग्रंथिपरिमंडलंवस्त्रमेकंद्व्यंगुलादिविस्तृतंसूत्रकृतंपरिमंडलरूपंवाउत्तरीयस्थानापंन्न स्मृत्युक्ततृतीययज्ञोपवीतंवा जीवत्पितृकेणजीवज्ज्येष्ठभ्रातृकेणचनधार्यमितितात्पर्यं प्रावरणरूपंद्वितीयवस्त्रंतुजीवत्पितृकादिभिःसर्वैर्धार्यं एकवस्त्रोनभुंजीतनकुर्याद्देवतार्चनमित्यादिना सर्वकर्मस्वेकवस्त्रत्वनिषेधात् पितरिपितामहेज्येष्ठभ्रातरिचाकृताधानेजीवतिपुत्रपौत्रकनिष्ठभ्रातृभिराधानंनकार्यं ज्येष्ठभ्रातर्यकृतविवाहेकनिष्ठेनविवाहोनकार्यः अत्रविशेषःपूर्वार्धेउक्तः एवंपित्रादिषुअकृतसोमयागेषुजीवत्सुपुत्रादेःसोमेनाधिकारः एवंपूर्णमासेष्टौदर्शेष्टावग्निहोत्रहोमेचपित्राद्यैरनारब्धेपुत्रादेर्नाधिकारः एवंसंन्यासेपि कनिष्ठस्यसोदरस्यैवदोषोनभिन्नोदरस्यभ्रातुः पित्रादेराज्ञायांपुत्रादेर्नदोषइतिकेचित् अधिकारिणिपितरिसत्याज्ञायामपिदोषः पातित्यजात्यंधत्वादिदोषैरनधिकारिण्याज्ञयानदोषः पातित्यादावाज्ञांविनापिनदोषइत्यपरे तथाजीवत्पितृकस्यपितृकृत्येषुदर्शादिश्राद्धतर्पणपैतृकदानेषुनाधिकारः अत्रविशेषः स्वापत्य संस्कारस्वद्वितीयविवाहादिनिमित्तकनांदीश्राद्धेचातुर्मास्यांतर्गतपितृयज्ञेसोमांगतृतीयसवनस्थपितृयज्ञेजीवत्पितुरधिकारः पिंडपितृयज्ञेहोमांतःपिंडपितृयज्ञोनारंभोवापिंडपितृयज्ञस्येतिपक्षद्वयं पितुःपित्राद्युद्देशेनपिंडदानमितितृतीयःपक्षःक्वचित् एवमष्टकादिविकृतिष्वपिपक्षत्रयं गयांप्रसंगतोगत्वामातुःश्राद्धंसुतश्चरेत् जीवत्पितामातुःश्राद्धमुद्दिश्यगयांनगच्छेत् महानदीषुसर्वासुतीर्थेचप्राप्तेजीवत्पितृकःपितुःपितृमात्राद्युद्देशेनश्राद्धंकुर्यात् नवम्यामन्वष्टकाश्राद्धंक्षयाहेमातुः प्रत्यब्दश्राद्धंचसपिंडकमेवजीवत्पितृकःकुर्यात् तथा संन्यस्तेतातेपतितेचतातेजीवत्यपिसतिदर्शश्राद्धमहालयसंक्रांतिग्रहणादिश्राद्धानिसर्वाणि पितुःपित्राद्युद्देशेन

जीवत्पितृकेणकार्याणि एतानिचसांकल्पिकविधिनापिंडरहितानिकार्याणि अन्वष्टक्यादाविवपिंडदानेविशेषवचनाभावात् ॥

तहां प्रथम श्राद्ध आदिका निर्णय कहनेका है इसलिये अधिकारका निर्णय कहना चाहिये, इस हेतुसें जीवते हुये पितावाले पुरुषके अधिकारका निर्णय कहताहुं. “ पादुका, उत्तरीयवस्त्र, तर्जनी अंगुलीमें चांदीकी पवित्रीका धारण करना, इन तीनोंकों जीवते हुए पितावालेनें और जिसका बडा भाई जीवता होवै तिसनें नहीं धारण करना. ” यहां पादुका काष्ठकी खडाऊं लेनी. उत्तरीयवस्त्र अर्थात् ग्रंथियोंसें युक्त और चारों तर्फ वींटा हुआ ऐसा वस्त्र लेना, अथवा दो आदि अंगुल विस्तारसें संयुक्त सूतसें बना हुआ और वींटा हुआ ऐसा वस्त्र अथवा उत्तरीयवस्त्रके स्थानमें स्मृतिके अनुसार कहा हुआ तीसरा यज्ञोपवीत अर्थात् जनेऊ, सो जीवते हुए पितावालेनें और जिसका बडा भाई जीवता होवै तिसनें धारण नहीं करना ऐसा तात्पर्य है. आच्छादनरूपी दूसरा वस्त्र तौ जीवते हुए पितावाले आदि सबोंनें धारण करना योग्य है. क्योंकी, “ एक वस्त्र धारण करके भोजन और देवताका पूजन नहीं करना,” इस आदि वचनकरके सब कर्मोंविषे एक वस्त्रका निषेध है. पिता, पितामह और बडा भाई ये जीवते होके तिन्होंनें आधान नहीं किया होवै तौ पुत्र, पौत्र, छोटा भाई इन्होंनें आधान नहीं करना. बडे भाईका विवाह नहीं हुआ होवै तौ छोटे भाईनें विवाह नहीं करना. इस विषयमें विशेष निर्णय तृतीय परिच्छेदके पूर्वार्धमें कहा है. इस प्रकार पिता आदि जीवते होके सोमयज्ञ नहीं किया होवै तौ पुत्र आदिकोंको सोमयज्ञ करनेका अधिकार नहीं है. इस प्रकार पूर्णमासेष्टि, दर्शेष्टि और अग्निहोत्रहोम ये पिता आदिनें आरंभित नहीं किये होवैं तौ पुत्र आदिकोंको करनेमें अधिकार नहीं है. इसी प्रकार संन्यासके विषयमेंभी यहही निर्णय जानना. एक मातासें उत्पन्न हुए ऐसे छोटे भाईकोंही यह दोष कहा है, दूसरी मातासें उत्पन्न हुये भाईकों दोष नहीं है. पिता आदिकी आज्ञा लेके पुत्र आदिकों दोष नहीं है ऐसा कोईक ग्रंथकार कहते हैं. अधिकारी पिता होवै तौ आज्ञामेंभी दोष है. पतितपना और जात्यंध आदि दोषोंसें युक्त हुआ अनधिकारी पिता होवै तौ आज्ञासें पूर्वोक्तकों करनेमें दोष नहीं है. पतितपना आदिविषे आज्ञाके विनाभी दोष नहीं है, ऐसा दूसरे ग्रंथकार कहते हैं. तैसेही जिसका पिता जीवता होवै तिस मनुष्यकों पितरोंके कर्मरूपी दर्श आदि श्राद्ध, तर्पण, पितरोंके अर्थ दान इन्होंमें अधिकार नहीं है. **यहां विशेष निर्णय**—अपने पुत्रका संस्कार, अपना दूसरा विवाह इन आदि निमित्तक नांदीश्राद्ध, चातुर्मास्यांतर्गत पितृयज्ञ, और सोमयज्ञका अंग जो तृतीयसवन तिसके मध्यमें कर्तव्य पितृयज्ञ है, तिसके विषयमें जीवते हुए पितावाले पुरुषकों अधिकार है. पिंडपितृयज्ञमें होमपर्यंत पिंडपितृयज्ञ करना, अथवा आरंभ नहीं करना. इस प्रकार पिंडपितृयज्ञके दो पक्ष कहे हैं. पिताके जो पिता आदि हैं तिन्होंके उद्देशकरके पिंडदान करना ऐसा तीसरा पक्ष किसीक ग्रंथमें कहा है. इस प्रकार अष्टका आदि जो विकृति हैं तिन्होंके विषयमेंभी तीन पक्ष कहे हैं. “ गयाजीमें प्रसंगसें गये हुए पुत्रनें माताका श्राद्ध करना. जिसका पिता जीवता होवै तिसनें माता मर गई होवै तौभी माताके श्राद्धके उद्देशसें गयाजीमें नहीं जाना. जिसका पिता जीवता होवै वह पुरुष महानदी और तीर्थोंमें प्राप्त होवै तौ पिताके जो पिता, माता

आदि हैं तिन्होंके उद्देशसें श्राद्ध करना. नवमीके दिन अन्वष्टका श्राद्ध, क्षयदिनमें माताका प्रतिसांवत्सरिक श्राद्ध ये दोनों जीवते हुए पितावालेनें पिंडोंसहितही करने. जो पिता संन्यासी किंवा पतित ऐसा जीवता होवै तौभी दर्शश्राद्ध, महालय, संक्रांति, ग्रहण इस आदि सब श्राद्ध पिताके जो पिता आदि हैं तिन्होंके उद्देशकरके जीवते हुए पितावालेनें करने. ये श्राद्ध सांकल्पिकविधिसें पिंडोंसें रहित करने. क्योंकी, अन्वष्टक्य आदि श्राद्धके अंतमें पिंडदानके विषयमें जैसा वचन कहा है तैसा यह श्राद्धमें पिंडदानके विषयमें विशेष वचन नहीं है.

आश्विनशुक्लप्रतिपदिदौहित्रोजीवत्पितृकःसपिंडकंमातामहश्राद्धंकुर्यात् तथाभ्रातृपुत्रो ऽपुत्रस्यपितृव्यस्यप्रत्यब्दश्राद्धंसपिंडंकुर्यात् एवंकनिष्ठभ्राताप्यपुत्रज्येष्ठभ्रातुः प्रत्यब्दं तथा सपत्नीपुत्रःसापत्नमातुःश्राद्धं एवंदौहित्रोऽपुत्रस्यमातामहस्यप्रत्यब्दं इत्थंचपितृव्यादिश्राद्ध चतुष्टयेजीवत्पितृकस्याप्यधिकारः पितृव्यभ्रात्रादीनामपुत्राणांपत्नीसत्त्वेसैवाधिकारिणीनतु भ्रातृपुत्रादेःश्राद्धाधिकारः एवंपतिरेवपुत्राभावेभार्याश्राद्धंकुर्यात् सपत्नीपुत्रसत्त्वेतुसएवकुर्यान्नभर्ता दौहित्रभ्रातृपुत्रयोःसत्त्वे मृतस्यविभक्तत्वेदौहित्रएव अविभक्तत्वेभ्रातृपुत्रः केचित्भ्रातृतत्पुत्रयोःसत्त्वेभ्रात्रैवश्राद्धंकार्यमित्याहुः तथाजीवत्पितृकस्य पितृपितामहादिमनुष्य पितृतर्पणनिषेधेप्यग्निष्वात्तादिदेवर्षिपितृतर्पणनिषेधाभावात्स्नानांगतर्पणेब्रह्मयज्ञांगभूतदेवर्षि पितृतर्पणेचाधिकारोस्त्येव एवंयदीयश्राद्धेधिकारस्तदीयश्राद्धांगतर्पणेप्यधिकारः जीवत्पितापिकुर्वीततर्पणंयमभीष्मयोः श्राद्धांगतर्पणभिन्नतर्पणंजीवत्पितृकेणतिलैर्नकार्यं श्राद्धप्रयोग मध्येवामजान्वन्यग्भावोनीवीबंधश्चनकार्यः नद्यादौस्नात्वातर्पणांतेसमंत्रकंवस्त्रनिष्पीडनंविहितंतन्नकार्यं तथाखड्गमौक्तिकहस्तेनकर्तव्यंपितृतर्पणमितिविहितंखड्गधारणंनकार्यं अपसव्यं द्विजाग्र्याणांपित्र्येकर्मणिकीर्तितं आप्रकोष्ठात्तुकर्तव्यमेतत्पितरिजीवति जीवतिसंन्यस्तादिरूपेपितरिमृतमातृमातामहकोपिपुत्रःपितुः पितृपितामहप्रपितामहानांपिपुर्मातृपितामहीप्रपितामहीनांपितुर्मातामहमातृपितामहमातृप्रपितामहानामितिपार्वणत्रयमेकोद्दिष्टगणंच स्वमातरंपितुःपत्न्याइतिस्वपितृव्यंपितुर्भ्रातुरितिस्वमातामहंचपितुः श्वशुरस्येत्येवमादिनापितृसंबंधपुरस्कारेणैवोद्दिश्यमहालयश्राद्धंकुर्यात् एवंदर्शादिषूह्यम् पितुःसंन्यासाभावेपितीर्थश्राद्धंजीवत्पितुरेवमेव एवंवृद्धिश्राद्धेप्यूह्यं ब्रह्मयज्ञांतेनित्यंपितृतर्पणमपिसंन्यस्तादिरूपजीवत्पितृकेणैवमेवकार्यमित्याहुः ॥

आश्विन शुदि प्रतिपदाविषे जिसका पिता जीवता होवै ऐसे दौहित्र अर्थात् धेवतानें मातामह अर्थात् नानाका पिंडोंसहित श्राद्ध करना. इसी प्रकार भाईके पुत्रनें पुत्ररहित चाचाका प्रतिसांवत्सरिक श्राद्ध सपिंड करना. इसी प्रकार छोटे भाईनेंभी पुत्ररहित बडे भाईका प्रतिसांवत्सरिक श्राद्ध करना. तैसेही सपत्नी अर्थात् पिताकी दूसरी स्त्रीके पुत्रनें पिताकी अन्य स्त्रीका श्राद्ध करना. इसी प्रकार धेवतानें पुत्ररहित मातामहका प्रतिसांवत्सरिक श्राद्ध करना. इसी प्रकार (पितृव्य आदि चार श्राद्ध—पितृव्य, बडा भाई, सापत्न माता और मातामह) करनेमें जिसका पिता जीवता होवै ऐसे मनुष्यकोंभी अधिकार है. पितृव्य और भाई आदिकोंकों पुत्र नहीं होवै और भार्या होवै तब वहही भार्या श्राद्ध करनेकी अधिका-

रिणी है. भाईके पुत्र आदिकों श्राद्धका अधिकार नहीं है. इस प्रकार पुत्र नहीं होवै तब पतिनेंही स्त्रीका श्राद्ध करना. पतिकी दूसरी स्त्रीका पुत्र होवै तौ वहही पुत्रनें श्राद्ध करना, पतिनें नहीं करना. दौहित्र और भाईका पुत्र ये होके मृत हुआ विभक्त होवै तौ दौहित्रही अधिकारी है. विभक्त नहीं होवै तौ भाईके पुत्रनें श्राद्ध करना. कितनेक पंडित भाई और भाईका पुत्र ऐसे दोनों होवैं तब भाईनेंही श्राद्ध करना उचित है ऐसा कहते हैं. तैसेही जिसका पिता जीवता होवै तिस मनुष्यकों पिता, पितामह इन आदि जो मनुष्य पितर तिन्होंके तर्पणका निषेध है, तथापि अग्निष्वात्तादिक जो देव, ऋषि, पितर इन्होंके तर्पणका निषेध नहीं है. इसवास्ते स्नानका अंगभूत तर्पण और ब्रह्मयज्ञका अंगभूत देव, ऋषि, पितर इन्होंके तर्पणमें अधिकार है. इसी प्रकार जिसका श्राद्ध करनेमें अधिकार है तिसके श्राद्धका अंगभूत तर्पण करनेमेंभी अधिकार है. "जिसका पिता जीवता होवै तिसनेंभी यम और भीष्मका तर्पण करना. श्राद्धके अंगभूत तर्पणसें दूसरा तर्पण जिसका पिता जीवता होवै तिसनें तिलोंसें नहीं करना. श्राद्धके प्रयोगमें वामा गोडा नीचे करना और वस्त्रका नीवीबंध ये नहीं करने. नदी आदिमें स्नान करके तर्पण किये पीछे मंत्रसहित जो वस्त्रका निचोडना कहा है वह नहीं करना. तैसेही "गैंडाकी ढालका छल्ला और मोतीकों हाथमें लेके पितरोंका तर्पण करना." इस वचनसें प्राप्त जो खड्गधारण सो नहीं करना. "श्रेष्ठ द्विजोंनें पितरोंके कर्मविषे अपसव्य करना ऐसा कहा है, इसलिये जिसका पिता जीवता होवै तिसनें कुहनीके नीचले भागपर्यंत अपसव्य करना." पिता संन्यासी आदि होके जीवता होवै और माता और मातामह अर्थात् नाना मर गया होवै ऐसे पुत्रनेंभी "**पितुः पितृपितामहप्रपितामहानां, पितुर्मातृपितामहीप्रपितामहीनां, पितुर्मातामहमातृपितामहमातृप्रपितामहानाम्**" ये तीन पार्वण, एकोद्दिष्टगण, अपनी माताका "**पितुः पत्न्याः**" ऐसा उच्चारण और अपने पितृव्यका उच्चार "**पितुर्भ्रातुः**" ऐसा और अपने मातामहका उच्चार "**पितुः श्वशुरस्य**" इस आदि पिताके संबंधपुरस्कारसेंही उद्देश करके महालयश्राद्ध करना. इस प्रकार दर्श आदि श्राद्धोंमेंभी विचार करना. पिता संन्यासी नहीं होवै तौभी जीवते हुए पितावालेनें तीर्थश्राद्ध इसही प्रकारसें करना. ऐसाही नांदीश्राद्धमेंभी विचार कर लेना. ब्रह्मयज्ञके अंतमें नित्यका पितृतर्पणभी संन्यासी आदिस्वरूप ऐसा जीवता पिता जिसका, तिसनेंभी ऐसाही करना ऐसा कहते हैं.

यदातुमातुर्वार्षिकमपुत्रमातामहवार्षिकमपुत्रपितृव्यवार्षिकंवाक्रियतेतदाक्रमेणमातृपितामहीप्रपितामहीनांमातामहमातृपितामहमातृप्रपितामहानांपितृव्यपितामहप्रपितामहानामित्येवोद्देशः यदाचपित्रादिभिःस्वाशक्त्यादिनानियोजितः पित्रादिकरणीयंश्राद्धंस्वयंपित्रादेः प्रतिनिधीभूयकरोतितदा पितुरमुकशर्मणोयजमानस्यपितृपितामहप्रपितामहानामित्येवंयथाश्राद्धमुद्देशः सर्वत्रपितृकृत्येभ्रातृष्वविभक्तेषुज्येष्ठस्यैवाधिकारः विभक्तेषुपृथक्पृथक् सापत्नभ्रातरिज्येष्ठेसत्यपिकनिष्ठएवस्वमातृवार्षिकान्वष्टक्यादिकुर्यात् जीवत्पितृपितामहकस्य संन्यस्तपितृपितामहकस्यचपितामहस्यपित्राद्युद्देशेनवृद्धिश्राद्धंतीर्थश्राद्धंदर्शादिश्राद्धंवाभवति पित्रादिषुत्रिषुजीवत्सुसत्सुसंन्यस्तेषुचनकिमपिश्राद्धंकार्यं केचित्तुपित्रादित्रयात्परेभ्यःश्राद्धं

देयमाहुः मृतेपितरिपितामहजीवनेपित्रेपितामहात्पराभ्यांचश्राद्धंदेयं एवंपितृपितामहमरणे प्रपितामहजीवनेप्यूह्यम् ॥

जिस कालमें माताका वार्षिकश्राद्ध, पुत्ररहित मातामहका वार्षिकश्राद्ध, अथवा पुत्ररहित चाचाका वार्षिकश्राद्ध करनेका प्रसंग प्राप्त होवै तिस कालमें क्रम करके **“ मातृपितामही-प्रपितामहीनां, मातामहमातृपितामहमातृप्रपितामहानाम् , पितृव्यपितामहप्रपितामहानाम् ”** इस प्रकारसें उद्देश करना. जिस समयमें पिता आदिकों श्राद्ध करनेविषे शक्ति नहीं होवै इस आदि कारणसें पुत्रकी योजना करी होवै, तब वह पिता आदिनें करनेका श्राद्ध पिता आदिकी जगह प्रतिनिधि होके श्राद्ध करनेवाला होवै तिस कालमें **“ पितुः अमुकशर्मणो यजमानस्य पितृपितामहप्रपितामहानाम् ”** ऐसा जैसा श्राद्ध होवै तिसके अनुसार उद्देश करना. नहीं विभागकों प्राप्त हुये सब भाईयोंमें बडे भाईकों पितरोंके कर्ममें अधिकार है. विभागकों प्राप्त हुये भाईयोंनें अलग अलग श्राद्ध करना. पिताकी दूसरी स्त्रीका पुत्र अपनेसें बडा होवै तौभी छोटे भाईनें अपनी माताका वार्षिकश्राद्ध और अन्वष्टक्य आदि श्राद्ध करना. पिता और पितामह जीवते होवैं और ये दोनों संन्यासी हो गये होवैं तौ पितामहके जो पिता आदि हैं तिन्होंके उद्देशसें नांदीश्राद्ध, तीर्थश्राद्ध अथवा दर्श आदि श्राद्ध करने. पिता, पितामह और प्रपितामह ये तीनों जीवते होवैं और संन्यासी होवैं तौ कोईभी श्राद्ध नहीं करना. कितनेक ग्रंथकार, पिता, पितामह और प्रपितामह इन तीनोंसें उपरके वृद्ध प्रपितामहादिक तिन्होंके उद्देशसें श्राद्ध करना ऐसा कहते हैं. पिता मर गया होवै और पितामह जीवता होवै तब पिता, और पितामहके उपरंत जो प्रपितामह और वृद्धप्रपितामह हैं तिन्होंके उद्देशसें श्राद्ध करना. इसी प्रकार पिता और पितामह मर गये होवैं और प्रपितामह जीवता होवै तबभी ऐसाही जानना.

यस्तु[१]गृह्याग्निमान्जीवन्मातृपितृकःपितुःपित्रादिभ्यः पिंडदानमितितृतीयपक्षाश्रयेणारब्धपिंडपितृयज्ञाष्टकान्वष्टकाश्राद्धोन्वष्टकायांच पितुःपित्रादिमात्रादिमातामहादिभ्यःपिंडादिकंददानआसीदनंतरंचमातामृतासोन्वष्टकायांस्वमात्रादिभ्यःपितुःपित्रादिभ्यश्चदद्यात् यदाचपिंडपितृयज्ञान्वष्टकाद्यनारंभपक्षोजीवत्पितृकस्यतदापिसंन्यस्तादिपितृकस्यदर्शादिश्राद्धं पितुःपित्राद्युद्देशेनव्यतिषंगभिन्नप्रयोगेणसांकल्पिकेनभवत्येव ॥

जिसके पिता और माता जीवते होवैं ऐसे गृह्याग्निसें युक्त हुये पुत्रनें पिताके जो पिता आदि हैं तिन्होंकों पिंडदान करना, ऐसे तीसरे पक्षका अंगीकार करके आरंभित ऐसे पिंडपितृयज्ञ, अष्टकाश्राद्ध, अन्वष्टकाश्राद्ध; तिन्होंमांहसें अन्वष्टकाश्राद्धमें पिताके जो पिता आदि तीन, माता आदि तीन और मातामहादिक तीन तिन्होंके उद्देशसें पिंड आदि देने. पीछे माता मर गई होवै, तौ तिसनें अन्वष्टकाश्राद्धमें अपनी माता, पितामही, प्रपितामही और पिताकी पितृत्रयी इन्होंके उद्देशसें पिंड आदि देने. जिस समयमें पिता जीवता होनेसें पिंडपितृयज्ञ, अन्वष्टका आदिका आरंभ नहीं किया होवै, इस पक्षमें पिता संन्यासी आदि-

---

१ श्रौताग्निमतोप्युपलक्षणमेतत् ॥

रूप हो गया होवै तिस कालमें दर्श आदि श्राद्ध पिताके जो पिता आदि हैं तिन्होंके उद्देशकरके व्यतिषंगसें भिन्न प्रयोग जो सांकल्पिक विधि है तिसकरके होता है.

पितुरविभक्तैःपुत्रैःपृथग्वैश्वदेवोनकार्यः पितृपाकोपजीवीस्यात्भ्रातृपाकोपजीवकइत्युक्तेः अतएवगृह्याग्नौपाकवैश्वदेवकरणपक्षेपिसाग्निकेपितरिसाग्निकैरप्यविभक्तैःपुत्रैःपृथग्वैश्वदेवोनकार्यः येषांपाकाभावेग्नेर्लौकिकत्वंमतंतैःपाकमात्रमग्निसंस्कारार्थंकार्यमितिभाति विभक्तैस्तु पृथग्वैश्वदेवःकार्यः तत्रवैश्वदेवस्यदेवयज्ञभूतयज्ञपितृयज्ञात्मकत्वाज्जीवत्पितृकैरपिपंचमहायज्ञांतर्गतःपितृयज्ञःकार्यः वैश्वदेवाद्भिन्नाःपंचमहायज्ञास्तैत्तिरीयाणांतैरपिविभक्तैर्जीवत्पितृकैःपितृयज्ञःकार्यः तस्यदेवरूपिपितृदेवताकत्वेनपितृपितामहादिमनुष्यरूपिपितृदेवकत्वाभावात् मुंडनंपिंडदानंचप्रेतकर्मचसर्वशः नजीवत्पितृकःकुर्याद्गुर्विणीपतिरेवच अत्रमुंडनंक्षुरेणशिरसोवपनं तेनकर्तनंसिद्धयति सर्वंप्रेतकर्मप्रेतदहनवहनसपिंडीकरणांतौर्ध्वदेहिकादिकमित्यर्थः मुंडनंरागप्राप्तमेवनिषिद्धयते तेनचौलोपनयनादिषुआधानदर्शपौर्णमासज्योतिष्टोमादिषुनित्यंप्राप्तं तीर्थप्रायश्चित्तमातृमरणादौनैमित्तिकप्राप्तंचभवत्येव केचित्काम्यनागबल्यादिषु काम्यमपिभवतीत्याहुः गंगायांभास्करक्षेत्रेमातापित्रोर्गुरोर्मृतौ आधानेसोमपानेचवपनंसप्तसु स्मृतं गुरोरितिदत्तकस्यपूर्वापरपित्रोरित्यर्थः वाक्यांतरेतीर्थमात्रेक्षौरोक्तेर्गंगाभास्करक्षेत्रग्रहणंजीवत्पितृकस्यतत्रविशेषतःक्षौरविधानार्थं जीवत्पितृकस्यापिंडदाननिषेधःनांदीश्राद्धतीर्थश्राद्धयोःसंन्यस्तादिपितृकस्यदर्शमहालयादिश्राद्धेषुचपिंडरहितसांकल्पिकश्राद्धबोधनार्थः ॥

पितासें विभागकों नहीं प्राप्त हुए ऐसे पुत्रोंनें पृथक् वैश्वदेव नहीं करना. “क्योंकी, पिताके पाकसें उपजीविका करनेवाला और भाईके पाकसें उपजीविका करनेवाला ऐसा रहना” इस प्रकारके वचन हैं; इसलियेही गृह्याग्निपर पाक और वैश्वदेव करनेका विधि होवै तौभी अग्निहोत्री पिता होके एकत्र रहनेवाले साग्निक पुत्रोंनें अलग वैश्वदेव नहीं करना. गृह्याग्निमें पाक नहीं होवै तब गृह्याग्नि लौकिक अग्नि हो जाता है, ऐसा जिन्होंका मत है तिन्होंनें अग्निसंस्कारके लिये पाक मात्र गृह्याग्निपर करना ऐसा प्रतिभान होता है. विभागकों प्राप्त हुये भाईयोंनें वैश्वदेव अलग अलग करना. तिन्होंके मध्यमें वैश्वदेव, देवयज्ञ, और भूतयज्ञ पितृयज्ञरूपी कहा है इस कारणसें जिसका पिता जीवता होवै तिसनेंभी पंचमहायज्ञांतर्गत पितृयज्ञ करना उचित है. तैत्तिरीय शाखियोंके पंचमहायज्ञ वैश्वदेवयज्ञसें अलग कहे हैं, तथापि पिता जीवता होवै और विभागकों प्राप्त हो गये होवैं ऐसे तैत्तिरीयशाखी जो हैं तिन्होंनेंभी पितृयज्ञ करना. क्योंकी वह पितृयज्ञ देवरूपी पितृदेवतावाला होनेसें तिसकों पिता, पितामह आदि मनुष्यरूपी पितृदेवकत्व नहीं है. “मुंडन, पिंडदान और सब प्रकारका प्रेतकर्म ये जीवता हुआ पितावालेनें और गर्भिणीके पतिनें नहीं करने.” यहां मुंडन अर्थात् उस्तरासें शिरकी हजामत करना, इस्सें वालोंका कटाना सिद्ध होता है. यहां सब प्रकारका प्रेतकर्म अर्थात् प्रेतका दाह, प्रेतकों कांधिया लगना और सपिंडीकरणपर्यंत और्ध्वदेहिक कर्म ऐसा अर्थ है. राग अर्थात् रिंजसें प्राप्त हुए मुंडनका निषेध है, इस उपरसें चौलसंस्कार और यज्ञोपवीत आदिविषे; आधान, दर्शपौर्णमास, ज्योतिष्टोम, इन आदिविषे नित्य प्राप्त

हुआ, तीर्थ, प्रायश्चित्त, माताका मरण इन आदिविषे प्राप्त हुआ नैमित्तिक मुंडन ये करने. कितनेक ग्रंथकार, नागबलि आदि जो काम्यकर्म हैं तिन्होंविषे जो प्राप्त हुआ मुंडन है सोभी करना ऐसा कहते हैं. "गंगाजी, भास्करक्षेत्र; माता, पिता और गुरु इन्होंका मरण; आधान और सोमपान इन सात जगह मुंडन कराना." यहां गुरु अर्थात् गोद हुए पुत्रकों जन्मानेवाला और गोद लेनेवाला ऐसे दोनों पिताओंका ग्रहण है, इस प्रकार अर्थ है. दूसरे वाक्यमें, तीर्थोंपर मुंडन कराना ऐसा कहा होवै तहां गंगाजी, और भास्करतीर्थपर मुंडन कराना कहा, सो इस करके जिसका पिता जीवता होवै तिस पुत्रनेंभी गंगाजीपर और भास्करक्षेत्रपर जाके विशेषकरके क्षौर कराना, ऐसा विधान करनेके वास्ते जानना. जीवते हुए पितावालेकों पिंडदानका जो निषेध कहा है सो नांदीश्राद्ध, तीर्थश्राद्ध और पिता संन्यासी आदिरूपवाला हो जावै तब पुत्रनें करनेका ऐसा दर्श, महालय आदि श्राद्ध इन्होंके मध्यमें पिंडरहित सांकल्पिक श्राद्धका बोध होनेके अर्थ कहा है.

महापितृयज्ञेसोमयागेमातृमातामहादेर्वार्षिकश्राद्धेषु गयायामन्वष्टक्यादौचपिंडदानंभवत्येवेत्युक्तं पिंडदानंप्रकुर्वीतमातापित्रोःक्षयाहनीतिश्राद्धविधिनापिंडदानेसिद्धे पुनःपिंडविधिःपित्रोर्वार्षिकेगर्भिणीपतित्वनिषिद्धकालादिप्रयुक्तनिषेधबाधनार्थं तेनविवाहव्रतचूडासुवर्षमर्धंतदर्धकं पिंडदानंमृदास्नानंनकुर्यात्तिलतर्पणमितिनिषेधस्यापिबाधः क्षयाहग्रहणंसपिंडीकरणमासिकेष्वपिपिंडदानोपलक्षणपरं ॥

महापितृयज्ञ, सोमयज्ञ, माता, मातामह इन आदिके वार्षिकश्राद्ध, गयाश्राद्ध और अन्वष्टक्य आदि श्राद्ध इन आदिविषे पिंडदान होताही है ऐसा पहले कहा है. "मातापिताके क्षयदिनमें पिंडदान करना" ऐसा जो श्राद्धका विधि तिस्सें पिंडदान करना ऐसा सिद्ध होनेमें फिर पिंडदानका जो विधि कहा है वह मातापिताके वार्षिकश्राद्धमें, गर्भिणीपतित्व निषिद्ध काल आदि है तिन्होंकरके प्रयुक्त निषेधका बाध होनेके अर्थ कहा है. इसकरके "विवाह, यज्ञोपवीतकर्म, चौलकर्म इन्होंके होनेमें क्रमकरके एक वर्ष, छह महीने और तीन महीनेपर्यंत पिंडदान, मृत्तिकास्नान और तिलतर्पण ये नहीं करने ऐसा जो निषेध है तिसकाभी बाध होता है. क्षयदिनका ग्रहण किया होवै तौ वह सपिंडीकरण, मासिकश्राद्ध इन्होंके मध्यमेंभी जो पिंडदान करना है तिसके उपलक्षणसंबंधी है.

अथप्रेतकर्मप्रतिप्रसवः जीवत्पितृकःस्वमातुरपुत्रसापत्नमातुःस्वपुत्रसपत्नीपुत्ररहितभार्यायाश्चपुत्रपितृव्यस्यापुत्रमातामहमातामह्योश्चदाहादिप्रेतकर्माणिकुर्यात् अत्रापुत्रपदेनमुख्यगौणपुत्रपौत्रप्रपौत्राभावोविवक्षितः मातुरौर्ध्वदेहिकमनुपनीतोपिजीवत्पितृकःकुर्यात् तत्र विशेषः ऊनत्रिवर्षश्चूडारहितश्चेद्दाहमात्रंसमंत्रकंकृत्वान्यदन्येनकारयेत् यदातुकृतचूडःपूर्णत्रिवर्षोवातदासर्वंसमंत्रकंप्रेतकर्मकुर्यात् ब्रह्मचारीतुपित्रोर्मातामहस्यचांत्यकर्मकुर्यान्नान्यस्य भर्तृदौहित्रयोःसत्त्वेभर्तैवपत्न्यादाहादिकुर्यात् मुंडनंतुभर्तुर्न एवमपुत्रस्यपत्नीदौहित्रयोःसत्त्वेपत्न्येवपत्युःकुर्यात् तत्रदाहमात्रंसमंत्रकंकृत्वान्यत्संकल्पमात्रंस्वयंविधायब्राह्मणद्वाराकारयेत् भर्तृसपत्नीपुत्रयोःसत्त्वेसापत्नपुत्रएवकुर्यान्नभर्ता सपत्नीपुत्रदौहित्रयोःसत्त्वेसपत्नीपुत्रएव अपुत्रयोर्विधवाविधुरयोर्भ्रातृपुत्रदौहित्रयोःसत्त्वेदौहित्रएवाधिकारीतिबहवः विधवा

याभर्तुर्भ्रातृपुत्रएव विधुरस्यस्वभ्रातृपुत्रएवेतिजीवत्पितृकनिर्णयभट्टाः अपुत्रस्यपत्नीभ्रातृपुत्रयोःसत्त्वेपत्न्येव एवंपुत्रासन्निधौपौत्रादेःपितामहपितामह्याद्यौर्ध्वदेहिकाद्यधिकारः इत्थंपित्र्यकर्ममुंडनप्रेतकर्माद्यधिकारानधिकारौजीवत्पितृकस्यप्रपंचितौ अत्रविषयभेदाद्बालबोधार्थत्वाच्चपुनरुक्तिर्नातिदोषाय सपिंडानांसगोत्रसपिंडमरणेसकृत्सकृत्तिलांजलिदानंविहितंतज्जीवत्पितृकेणापिकार्यम् एवंमातामहाचार्यादिभ्योपि इतिजीवत्पितृकनिर्णयः ॥

अब प्रेतकर्मका प्रतिप्रसव[1] कहताहुं.

जीवते हुए पितावाले पुरुषनें अपनी माता, पुत्ररहित सापत्न माता, अपना पुत्र और सपत्नीपुत्र इन्होंसें रहित स्त्री; पुत्ररहित चाचा; पुत्ररहित मातामह और मातामही इन्होंका दाह आदि प्रेतकर्म करने. यहां अपुत्र पदकरके मुख्य और गौण ऐसे पुत्र, पौत्र और प्रपौत्र इन्होंका अभाव विवक्षित किया है, अर्थात् इन्होंमांहसें कोईभी नहीं होवै तौ ऐसा अर्थ होता है. जिसका यज्ञोपवीतकर्म नहीं हुआ होवै और जिसका पिता जीवता होवै ऐसे पुत्रनेंभी माताका अंत्यकर्म करना. **तहां विशेष निर्णय**—तीन वर्षकी अवस्थासें कम अवस्थावाला और चौलसंस्कारसें रहित ऐसा जो पुत्र होवै तौ तिसनें मंत्रसहित दाहकर्म मात्र करके अन्य कर्म दूसरेके द्वारा करवाना. जिसका चौलसंस्कार हो चुका होवै अथवा तीन वर्षकी पूर्ण अवस्था हो गई होवै ऐसे पुत्रनें समंत्रक सब प्रेतकर्म आप करना. ब्रह्मचारीनें पिता, माता और मातामह इन्होंका प्रेतकर्म करना. दूसरोंका प्रेतकर्म नहीं करना. पति और दौहित्रके होनेमें भार्याका दाह आदि कर्म पतिनेंही करना. पतिनें मुंडन नहीं कराना. इस प्रकार पुत्ररहित पुरुषकी भार्या और धेवता होवै तब भार्यानेंही पतिका दाह आदि कर्म करना. तहां दाह मात्र समंत्रक स्वतः करके अन्य कर्म संकल्पमात्र आप करके शेष रहा कर्म ब्राह्मणके द्वारा करवाना. पति और पतिकी दूसरी विवाही हुई स्त्रीका पुत्र होवै तब दाह आदि प्रेतकर्म दूसरी विवाही हुई स्त्रीके पुत्रनेंही करना. पतिनें नहीं करना. सापत्न पुत्र और धेवताके होनेमें सापत्न पुत्रनेंही दाह आदि कर्म करना. पुत्ररहित विधवा स्त्री अथवा विधुर अर्थात् रांडे पुरुषके भाईका पुत्र और धेवता होवै, तब धेवताही अधिकारी है. इस प्रकार बहुतसे ग्रंथकार कहते हैं. विधवाके पतिके भाईका पुत्रही अधिकारी है. रांडे पुरुषका अपने भाईका पुत्रही अधिकारी है इस प्रकार जिवत्पितृकनिर्णयमें भट्ट कहते हैं. पुत्ररहित पुरुषकी भार्या और भाईका पुत्र ये दोनों होवैं तब भार्याही अधिकारी है. इस प्रकार पुत्र समीपमें नहीं होवै तब पौत्र आदिकों पितामह और पितामही आदिके अंत्यकर्म आदिका अधिकार है. इस प्रकार जीवते हुए पितावालेकों पित्र्यकर्म, मुंडन और प्रेतकर्म इन आदिका अधिकार और अनधिकारका विस्तार कहा है. यहां विषयके भेदसें और शास्त्रव्युत्पत्तिरहित ऐसे बालकोंके बोधके अर्थ जो पुनरुक्ति हुई होवै सो अति दोषके अर्थ नहीं है. सगोत्र सपिंडके मरनेमें सपिंडोंनें एकएकवार तिलांजलि देनी ऐसा कहा है; इस लिये वह तिलांजलि जीवते हुए पितावालेनेंभी देनी. इस प्रकार मातामह, आचार्य, गुरु आदिकोंभी देनी. ऐसा जीवत्पितृकका निर्णय समाप्त हुआ.

---

[1] किसीक कार्यका जो सामान्यकरके निषेध किया होवै तिसका विशेषकरके पुनः जो विधि करनेका तिसकों प्रतिप्रसव कहतें हैं.

अथश्राद्धाद्यधिकारिनिर्णयः तत्रसांवत्सरिकादिश्राद्धेषुदाहाद्यौर्ध्वदेहिकक्रियायांचौरसःपुत्रोमुख्योधिकारी औरसंपुत्राणांबहुत्वेज्येष्ठएवाधिकारी ज्येष्ठस्याभावेऽसन्निधानेवापातित्यादिनाधिकाराभावेवाज्येष्ठानुजः यत्तुज्येष्ठासन्निधौसर्वतःकनिष्ठोधिकारीनतुमध्यमाइति तन्निर्मूलम् तत्रपुत्राणांविभक्तत्वेकनिष्ठेभ्योधनंगृहीत्वाज्येष्ठेनैवसपिंडीकरणांताक्रियाकार्या सांवत्सरिकादिकंतु पृथक्पृथक् अविभक्तत्वेतुसांवत्सरिकादिकमप्येकेनैवकार्यं एकेनकृतेपिसर्वेषांफलभागित्वात्सर्वैःपुत्रैर्ब्रह्मचर्यपरान्नवर्जनादयोनियमाःकार्याः पुत्राणामेकदेशस्थित्यभावेदेशांतरेगृहांतरेवास्थितैस्तैरविभक्तैरपिपृथगेववार्षिकादिकंकार्यत् तत्रयदाज्येष्ठासन्निधौकनिष्ठोदाहादिकंकरोतितदाषोडशश्राद्धांतमेवकुर्यान्नसपिंडीकरणम् वर्षपर्यंतंज्येष्ठप्रतीक्षांकुर्यात् तन्मध्येज्ञातेज्येष्ठेनैवकार्यम् नोचेद्वर्षांतेकनिष्ठेनापिकार्यत् वर्षात्प्राक्पुत्रभिन्नेनकृतमपिमासिकानुमासिकसपिंडीकरणंपुत्रेणपुनःकार्यं एवंकनिष्ठेनकृतमपिज्येष्ठपुत्रेणपुनःकार्यं विशेषस्त्वग्रेवक्ष्यते ॥

अब श्राद्ध आदिके अधिकारियोंका निर्णय कहताहुं.

तहां वार्षिक आदि श्राद्धोंमें और दाह आदि अंत्यक्रियामें औरस पुत्रही मुख्य अधिकारी है. औरस पुत्र बहुतसे होवैं तब बडा औरस पुत्रही अधिकारी है. बडे पुत्रके अभावमें अथवा बडा औरस पुत्र समीपमें नहीं होवै अथवा पतितपना आदि करके बडे पुत्रकों अधिकार नहीं होवै तब बडे भाईसें छोटा जो भाई होवै वह अधिकारी है. जो बडा पुत्र समीपमें नहीं होवै तौ सब प्रकारसें छोटा पुत्र अधिकारी है. बीचले पुत्र अधिकारी नहीं ऐसा जो कहा है वह निर्मूल है. तहां पुत्र आपसमें विभागकों प्राप्त हो चुके होवैं तब छोटे पुत्रसें धन ग्रहण करके बडे पुत्रनें सपिंडीकरणपर्यंत क्रिया करनी. वार्षिकश्राद्ध आदि तौ अलग अलग करना. नहीं विभागकों प्राप्त हुये पुत्रोंमें वार्षिक आदि श्राद्धभी एकही पुत्रनें करना. एकके करनेमें सबोंकों फलकी प्राप्ति होती है. इस कारणसें सब पुत्रोंनें ब्रह्मचर्य और दूसरेके अन्नकों वर्जना आदि नियम धारण करने. पुत्रोंकी एक देशमें स्थिति नहीं होवै और दूसरे देशमें अथवा दूसरे घरमें वसते होवैं तौ तिस नहीं विभागकों प्राप्त हुये पुत्रोंनेंभी अलग अलगही वार्षिक आदि श्राद्ध करना. तहां जिस समयमें बडा पुत्र समीप नहीं होनेमें छोटे पुत्रनें दाह आदि कर्म किया होवै तिस समयमें षोडशीश्राद्धपर्यंतही छोटे पुत्रनें क्रिया करनी. सपिंडीकरण नहीं करना. वर्षपर्यंत बडे भाईकी प्रतीक्षा करनी. जो वर्षपर्यंत बडा पुत्र प्राप्त हो जावै तौ बडे पुत्रनेंही सपिंडीकर्म करना. जो वर्षपर्यंत बडे पुत्रके आनेका निश्चय नहीं होवै तब छोटे पुत्रनें वर्षके अंतमें सपिंडीकर्म करना. वर्षके पहले पुत्रके विना दूसरे पुरुषनें मासिक, अनुमासिक, सपिंडीकरण आदि क्रिया करी होवै तौभी पुत्रनें आके फिर करनी. इस प्रकार छोटे पुत्रनें करी होवै तौभी बडे पुत्रनें फिर करनी. इसका विशेष निर्णय आगे कहैंगे.

कनिष्ठस्यसाग्निकत्वेसपिंडीकरणमपिद्वादशेह्निकनिष्ठेनकार्यं औरसपुत्राभावेपुत्रिकासुतक्षेत्रजादयोद्वादशविधाःपुत्राउक्तास्तथापि कलौतेषांपुत्राणांनिषेधादौरसपुत्राभावेदत्तकए

वाधिकारी मातापितृभ्यामन्यतरेणवाविधिपूर्वंदत्तःप्रतिगृहीतृसवर्णोदत्तकः भार्यानुमत्यापत्युःपुत्रदातृत्वंतदप्यापदि अत्यंतापदितुभार्यानुमत्यभावेपि पत्न्याःपत्यनुमत्यैव अत्रविशेषविचारःप्रागुक्तः दत्तकाभावेपौत्रः पौत्राभावेप्रपौत्रः अन्येत्वौरसाभावेपौत्रः तदभावेप्रपौत्रः प्रपौत्राभावेदत्तकइत्याहुः उपनीतपौत्रसत्त्वेप्यनुपनीतस्याप्यौरसपुत्रस्यैवाधिकारः सचकृतचूडस्यैववर्षाधिकवयसः पूर्णत्रिवर्षस्यत्वकृतचूडस्यापि अनुपनीतेनापिमंत्रपाठपूर्वकमेवपित्रोरौर्ध्वदेहिकंसांवत्सरिकादिकंश्राद्धंचकार्यं अशक्तौत्वग्निदानमात्रंसमंत्रकमनुपनीतेनकार्यं अन्यत्त्वन्यद्वारा एवंश्राद्धेदर्शमहालयादौसंकल्पमात्रंकार्यं अन्यदितरेण केचित्तूनत्रिवर्षेणचूडारहितेनापिदाहमात्रंसमंत्रकंकार्यंशेषमन्येनेत्याहुः दत्तकस्तूपनीतएवाधिकारी दत्तकाभावेप्रपौत्राभावेचभर्तुःपत्नीपत्न्याभर्ताचदाहाद्यौर्ध्वदेहिकंसांवत्सरिकश्राद्धादिकंचकुर्यात् भर्तुरपिसपत्नीपुत्रसत्त्वेधिकारोन विदध्यादौरसःपुत्रोजनन्याऔर्ध्वदेहिकं तदभावेसपत्नीजइत्युक्तेः भार्ययापिसमंत्रकमेवौर्ध्वदेहिकादिकंकार्यं अशक्तौत्वग्निदानमात्रंसमंत्रकंकृत्वाशेषमन्येनकार्यं श्राद्धेसंकल्पमात्रंकृत्वाशेषमन्येन ॥

छोटा पुत्र अग्निहोत्री होवै तौ सपिंडीकरणश्राद्धभी छोटे भाईनें बारहमें दिनविषे करना. औरस पुत्रके अभावमें पुत्रिकापुत्र, क्षेत्रजपुत्र इन आदि बारह प्रकारके पुत्र कहे हैं, तथापि कलियुगविषे तिन पुत्रोंका निषेध होनेसें औरस पुत्रके अभावमें दत्तक पुत्रही अधिकारी है. माता और पिता इन दोनोंनें अथवा मातानें अथवा पितानें विधिपूर्वक दिया होके गोद लेनेवाले पिताके वर्णका होवै तिसकों दत्तक पुत्र कहते हैं. भार्याकी अनुमति लेके पतिनें पुत्र देना यहभी आपत्कालमें कहा है. अत्यंत आपत्कालमें भार्याकी अनुमतिके विनाभी पतिनें पुत्र देना. भार्यानें पतिकी अनुमतिसेंही पुत्र गोद देना. इस निर्णयका विशेष विचार पहले कह दिया है. दत्तक पुत्रके अभावमें पौत्र अधिकारी है. पौत्रके अभावमें प्रपौत्र अधिकारी है. दूसरे ग्रंथकार तौ औरस पुत्रके अभावमें पौत्र और पौत्रके अभावमें प्रपौत्र अधिकारी है ऐसा कहते हैं. यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुआ पौत्र होवै तौभी नहीं यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुआ औरस पुत्रही अधिकारी है. वह अधिकार एक वर्षकी अवस्थासें अधिक अवस्थावाला और चौलसंस्कारकों प्राप्त हुआ ऐसे औरस पुत्रकोंही है. तीन वर्षकी अवस्थासें पूर्ण हो गया होवै और जिसका चौलसंस्कार नहीं हुआ होवै ऐसे औरस पुत्रकोंभी वह अधिकार है. नहीं यज्ञोपवीतवाले औरस पुत्रनेंभी मातापिताका मंत्रपाठपूर्वकही अंत्यकर्म और वार्षिक आदि श्राद्ध करना. सब कर्म करनेकी शक्ति नहीं होवै तौ यज्ञोपवीतसें रहित पुत्रनें समंत्रक अग्निदान करना और अन्य सब कर्म दूसरेके द्वारा कराना. इसही प्रकार श्राद्ध, दर्शश्राद्ध, महालय आदि श्राद्धमें संकल्प मात्र करके अन्य सब कर्म दूसरेके द्वारा करवाने. कितनेक ग्रंथकार तौ, तीन वर्षकी अवस्थासें कम अवस्थावाला होके चौलसंस्कारसें वर्जित ऐसे औरस पुत्रनेंही समंत्रक दाह मात्र करना; अन्य सब कर्म दूसरेके द्वारा करवाना इस प्रकार कहते हैं. दत्तक पुत्र तौ यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुआही अधिकारी है. दत्तक पुत्रके अभावमें और प्रपौत्रके अभावमें पतिका भार्यानें और भार्याका पतिनें दाह आदि कर्म और वार्षिक आदि श्राद्ध करना. दूसरी विवाही हुई स्त्रीका पुत्र होवै तब पतिकोंभी भार्याका दाह आदि कर-

नेका अधिकार नहीं है. क्योंकी, “ माताका अंत्यकर्म औरस पुत्रनें करना, और औरस पुत्रके अभावमें सपत्नीके पुत्रनें करना ” ऐसा वचन है. भार्यानेंभी पतिका समंत्रक अंत्यकर्म आदि करना. शक्ति नहीं होवै तौ समंत्रक अग्निदान मात्र आप करके शेष कर्म दूसरे पुरुषके द्वारा करवाना. श्राद्धमें संकल्प मात्र आप करके शेष कर्म दूसरेके द्वारा कराना.

यद्यप्यविभक्तस्यसंसृष्टस्यवा भ्रातुरेवधनग्रहणाधिकारस्तथापिक्रियाधिकारःपत्न्याएव विभक्तासंसृष्टेतु भ्रातरिधनाधिकारोपिपत्न्याएव पत्न्यभावेविभक्तासंसृष्टस्यकन्यापिंडदाधनहारिणीच तत्रापिविवाहितैवपिंडदा धनहरात्वनूढापि दुहितुरभावेदौहित्रोधनहारीपिंडदश्च दौहित्राभावेभ्राता भ्रातुरभावेभ्रातुःपुत्रः अविभक्तस्यसंसृष्टस्यचपत्न्यभावेभ्राता संसृष्टोनामपूर्वंविभक्तोभूत्वापुनःस्वधनंभ्रातृधनैरेकीकृत्यैकपाकाद्युपजीवनः तत्रसोदरासोदरसमवायेसोदरएव तत्रापिज्येष्ठकनिष्ठयोःसत्त्वेकनिष्ठएव कनिष्ठभ्रातुरभावेज्येष्ठभ्रातैव कनिष्ठबहुत्वेमृतानंतरस्तदभावेतदनंतरादयः एवंज्येष्ठबहुत्वेमृतानंतरक्रमेणैव सोदरभ्रातुरभावेसापत्नभ्राता अत्रापिज्येष्ठत्वादिविचारःपूर्ववदेव केचित्तुदुहितृदौहित्रयोर्धनहारित्वेपिविभक्तासंसृष्टस्यदाहादिकंभ्रात्रैवकार्यं सगोत्रसद्भावेभिन्नगोत्रस्यतदनधिकारादित्याहुःभ्रातुरभावेभ्रातृपुत्रः तत्रापिसोदरभ्रातृपुत्रोमुख्यः तदभावेसापत्नभ्रातृपुत्रः तदभावेपितापितुरभावेमाता मात्रभावेस्नुषा तदभावेभागिनी तत्रानुजाग्रजसोदरासोदराणांसमवायेभ्रातृवत् भगिन्यभावेभगिनीपुत्रः समवायेतद्वदेव तदभावेपितृव्यतत्पुत्रादयःसपिंडाः तदभावेसोदकाः तदभावेगोत्रजाः तदभावेमातामहमातुलतत्पुत्रादयोमातृसपिंडाअनुक्रमेण मातृसपिंडाभावेस्वपितृष्वसृमातृष्वसृपुत्राः तदभावेपितुःपितृष्वसृमातृष्वसृमातुलपुत्ररूपाःपितृबंधवः एवंमातुःपितृष्वस्रादिपुत्ररूपमातृबंधवःपितृबंधूनामभावेधिकारिणः तदभावेशिष्यःशिष्याभावेजामाताश्वशुरस्य श्वशुरोजामातुः तदभावेसखा तदभावेविप्रस्यकश्चिद्धनहारी विप्रभिन्नस्यराज्ञाधनंगृहीत्वातेनधनेनान्यद्वाराकारणीयं अथवाविप्राद्यैर्मरणोन्मुखैर्धर्मपुत्रःकार्यः ॥

विभागकों नहीं प्राप्त हुए अथवा संसृष्ट ऐसे भाईयोंकोंही धन ग्रहण करनेमें अधिकार है. तथापि क्रिया भार्यानेंही करनी. विभागकों प्राप्त हुआ और असंसृष्ट हुआ ऐसा भाई होवै तौभी धनग्रहणका अधिकार भार्याकोंही है. भार्याके अभावमें विभक्त और असंसृष्ट जो भाई मर जावै तब तिसकों पिंड देनेवाली और तिसके धनकों लेनेवाली पुत्री कही है. तहांभी विवाही हुई पुत्री पिंड देनेकी अधिकारिणी है. धनकों लेनेकी अधिकारिणी तौ विनाविवाही हुई पुत्रीभी है. पुत्रीके अभावमें धन लेनेका अधिकारी और पिंड देनेका अधिकारी धेवता कहा है. धेवताके अभावमें भाई; भाईके अभावमें भाईका पुत्र अधिकारी है. अविभक्त और संसृष्ट ऐसे भाईकी भार्या नहीं होवै तब भाई अधिकारी है. पहले विभागकों प्राप्त होके फिर अपने धनकों भाईके धनमें मिलाके एक रसोईसें भोजन आदि करता रहै तिसकों संसृष्ट कहते हैं. तहां एक पेटसें उपजा भाई और दूसरे पेटसें उपजा भाई इन दोनोंके मध्यमें एक पेटसें उपजा भाईही अधिकारी है. तहां भी बडे भाई और छोटे भा-

ईके होनेमें छोटा भाईही अधिकारी है. छोटे भाईके अभावमें बडा भाईही अधिकारी है. छोटे भाई बहुतसे होवैं तब मरनेवालेसें जो छोटा होवै वह अधिकारी है. तिसके अभावमें तिस्सें जो छोटे भाई आदि होवैं सो अधिकारी हैं. इसी प्रकार बडे भाई बहुतसे होवैं तब मरनेवालेसें पीछे जो होवै तिस क्रमकरके अधिकारी जानने. एक मातासें उत्पन्न हुए भाईके अभावमें सापत्न भाई अधिकारी है. यहांभी ज्येष्ठपना आदिका विचार पहलेकी तरह जानना. कितनेक ग्रंथकारनें तौ धेवता और पुत्रीकों धन लेनेका अधिकारभी कहा है तथापि विभक्त होके असंसृष्ट ऐसे भाईका दहन आदि कर्म भाईनेंही करना उचित है, क्योंकी, सगोत्रीके होते हुये भिन्न गोत्रवालेकों अधिकार नहीं है ऐसा कहा है. भाईके अभावमें भाईका पुत्र अधिकारी है; तहांभी एक पेटसें उपजे हुये भाईका पुत्र मुख्य है. तिसके अभावमें सापत्न भाईका पुत्र मुख्य है; तिसके अभावमें पिता; पिताके अभावमें माता; माताके अभावमें पुत्रकी स्त्री; तिसके अभावमें भगिनी अर्थात् बहन प्रधान है. तहांभी छोटा, बडा, एक पेटसें उपजा, दूसरे पेटसें उपजा इन्होंका निर्णय भाईके प्रमाण जानना. बहनके अभावमें बहनका पुत्र. बहनके पुत्र बहुतसे होवैं तौ भाईके प्रमाण निर्णय जानना. बहनका पुत्र नहीं होवै तौ पितृव्य अर्थात् चाचा, पितृव्यके पुत्र आदि सपिंड अधिकारी जानने. सपिंड नहीं होवैं तौ सोदक; सोदक नहीं होवै तौ गोत्रज; गोत्रज नहीं होवै तौ मातामह; मातुल अर्थात् मामा; मामाका पुत्र इन आदि माताके सपिंड क्रमके अनुसार अधिकारी होते हैं. माताके सपिंडोंमें कोई नहीं होवै तौ अपने पिताकी बहनके पुत्र और अपनी माताकी बहनके पुत्र अधिकारी हैं. तिन्होंके नहीं होनेमें पिताके पिताकी बहन और पिताके माताकी बहन जो हैं तिन्होंके पुत्र और मातुलपुत्ररूपी पितृबंधु अधिकारी हैं. इस प्रकार पितृबंधुके अभावमें माताके पिताकी बहन आदिके पुत्ररूपी मातृबंधु अधिकारी होते हैं. तिन्होंके अभावमें शिष्य; शिष्यके अभावमें, श्वशुरका जमाई और जमाईका श्वशुर अधिकारी है. तिन्होंके अभावमें मित्र अधिकारी है. मित्रके अभावमें ब्राह्मणका धन कोईभी पुरुषनें ग्रहण करना. ब्राह्मणसें भिन्न मनुष्यके धनकों राजानें लेके तिस धनकरके दूसरे मनुष्यके द्वारा कर्म कराना. अथवा मरनेके समयमें ब्राह्मण आदिनें धर्मपुत्र करना उचित है.

अथस्त्रीणांदाहाद्यधिकारिणः अनूढायाःस्त्रियाःपिता तदभावेभ्रात्रादिः ऊढायास्तत्पुत्राभावेसपत्नीपुत्रः तदभावेपौत्रप्रपौत्राः तदभावेपतिः तदभावेदुहिता तदभावेदौहित्रः तदभावेपत्युर्भ्राता तदभावेपत्युर्भ्रातृपुत्रः तदभावेस्नुषा तदभावेपिता पितुरभावेभ्राता तदभावेभ्रातृपुत्रादयःपूर्वोक्ताः अत्रसर्वत्रपुत्रभिन्नानांपुत्रासन्निधानात्पुत्राभावाद्वाकर्तृत्वमितिस्थितम् तत्रयदिपुत्रासन्निधानात्कर्तृत्वंतदापुत्रभिन्नैर्दाहमारभ्यसपिंडीकरणात्प्राचीनकर्मैवकार्यम् नतुपुत्रभिन्नैःसपिंडीकरणंकार्यम् पुत्राभावेत्वन्यैःसपिंडीकरणमपिकार्यम् तत्रापिसपिंडादिभिर्नृपांतैर्दाहमारभ्यदशाहक्रियाकार्याएव ताएवपूर्वाइत्युच्यंते ततएकादशाहमारभ्यसपिंडीकरणांतामध्यमसंज्ञास्तासुसपिंडादीनांकृताकृतत्वम् तदूर्ध्वाअनुमासिकसांवत्सरिकाद्यास्ताउत्तराख्याःसपिंडादिभिर्नकार्याएव इदंचतदीयवृत्त्यादिस्थावरधनस्यचरधनस्यवाग्रहणाभावे तदन्यतरधनग्रहणेतुसपिंडादिभिरपिमध्यमोत्तराख्याअपिक्रियाःकार्याएव राज्ञातु

मृतधनसत्त्वेतद्धनद्वारातत्सजातीयवर्णहस्तेनसर्वाअपिक्रियाःकरणीयाएव धनाभावेतुपूर्वांताएवावश्यंकरणीयानान्याः सपिंडादिनृपांतभिन्नानांतुमृतस्यधनाभावेपिस्वधनेनैवसपिंडीकरणांतक्रियाकरणमावश्यकं मृतस्यधनंगृहीत्वाप्रेतकार्याकरणेनृपांतानांतद्वर्णवधप्रायश्चित्तं पुत्राद्यैर्भ्रातृसंतत्यंतैर्दौहित्रैश्चतत्पुत्रैश्चत्रिविधाअपिक्रियाधनग्रहणसत्त्वेतदसत्त्वेवापि कार्या एव तत्रस्त्रीणामुत्तराःक्रियामृताहन्येव नतुदर्शादौ भर्तृश्राद्धेनैवनिर्वाहस्मृतेः पूर्वमध्यमाख्यास्तुपृथगेवस्त्रीणाम् केचित्पुत्रपत्योरभावेस्त्रीणांदौहित्रादिभिःसपिंडीकरणरहिताएवोत्तराःक्रियाःकार्याः सपिंडीकरणंतुतासांनकार्यम् सपिंडीकरणाभावेपिएकोद्दिष्टविधिनावार्षिकादिकंकार्यमित्याहुः ब्राह्मणस्त्वन्यवर्णानांनकुर्यात्कर्मपैतृकं कामाल्लोभाद्भयान्मोहात्कृत्वातज्जातितांव्रजेत् शूद्रेणापिब्राह्मणस्यनकार्यंपैतृकंक्वचित् ॥

अब स्त्रियोंके दाह आदि कर्मोंके अधिकारियोंकों कहताहुं.

नहीं विवाही स्त्रीका पिता अधिकारी है; तिसके अभावमें भाई आदि अधिकारी हैं. विवाही हुई स्त्रीका पुत्रके अभावमें सापत्न पुत्र अधिकारी है. तिसके अभावमें पौत्र और प्रपौत्र अधिकारी हैं. तिन्होंके अभावमें पति; पतिके अभावमें पुत्री; पुत्रीके अभावमें धेवता; धेवताके अभावमें पतिका भाई; तिसके अभावमें पतिके भाईका पुत्र; तिसके अभावमें पुत्रकी वहू; तिसके अभावमें पिता; पिताके अभावमें भाई; तिसके अभावमें पूर्वोक्त भाईके पुत्र आदि अधिकारी हैं. यहां सब जगह पुत्रसें भिन्न जो अधिकारी कहे हैं तिन्होंकों पुत्र समीप नहीं होवै अथवा पुत्रका अभाव होवै तब कर्म करनेका अधिकार है ऐसा जानना. तहां जो पुत्र समीप नहीं होनेसें अन्य कर्ता होवै तब पुत्ररहित पुरुषोंनें दाहका आरंभ करके सपिंडीकरणसें प्राचीनही कर्म करना. पुत्ररहित मनुष्योंनें सपिंडीकरण नहीं करना. पुत्रके अभावमें तौ अन्य सबोंनेंभी सपिंडीकरण करना. तहांभी सपिंड आदिसें राजापर्यंत जो अधिकारी हैं तिन्होंमांहसें एक कोईसेनेंभी दाहका आरंभ करके दश दिनोंकी क्रिया निश्चयकरके करनी, और वही क्रिया **पूर्वा** कही जाती है. पीछे ग्यारहमे दिनकों आरंभ करके सपिंडीकरणपर्यंत क्रिया, **मध्यम** क्रिया होती है, और ये क्रिया सपिंड आदिकोंनें करनी अथवा नहीं करनी. तिस्सें उपरंत अनुमासिक और सांवत्सरिक आदि क्रिया **उत्तरसंज्ञक** होती हैं, ये सपिंड आदिकोंनें नहीं करनी. यह निर्णय मृतकी वृत्ति आदि स्थावर धन अथवा जंगम धनके ग्रहणके अभावमें जानना. तिन्होंमांहसें एक कोईसे धनके ग्रहणमें तौ सपिंड आदिकोंनेंभी मध्यम और उत्तर नामवाली भी क्रिया करनीही योग्य हैं. राजानें तौ, मरनेवालेका जो धन होवै तौ तिसकरके मरनेवालेकी जातिसंबंधी वर्णवाले पुरुषके हाथसें सब क्रिया करानी. मरनेवालेके धनके अभावमें तौ पूर्वांता मात्र क्रिया अवश्य करानी योग्य है. अन्य क्रिया नहीं करानी. सपिंड आदिसें राजापर्यंत जो अधिकारी तिन्होंसें भिन्न पुरुषोंनें मरनेवालेका धन नहीं होवै तबभी अपने धनसेंही सपिंडीकरणपर्यंत क्रिया करनी आवश्यक है. मरनेवालेके धनकों लेके जो तिसका प्रेतकर्म नहीं करै तौ राजापर्यंत सब अधिकारीयोंकों तद्वर्णवधका प्रायश्चित्त है. पुत्र है आदिमें जिनकों और भाईकी संतति है अंतमें जिनकों ऐसे, धेवतोंनें, धेवतोंके पुत्रोंनें धन लेनेमें अथवा धन नहीं लेनेमें तीन प्रकारकी

क्रिया करनी योग्य है. तहां स्त्रियोंकी उत्तरक्रिया मृतदिनमेंही होनी उचित है. दर्श आदिविषे नहीं करनी. क्योंकी, पतिके श्राद्ध करकेही निर्वाह होता है ऐसा स्मृतिका वचन है. स्त्रियोंकी पूर्व और मध्यमनामवाली क्रिया तौ अलग अलगही होती है. कितनेक ग्रंथकार, पुत्र और पतिके अभावमें स्त्रियोंकी धेवता आदिनें सपिंडीकरणसें रहितही उत्तरक्रिया करनी योग्य है. तिन्होंका सपिंडीकरण तौ नहीं करना. सपिंडीकरणके अभावमेंभी एकोद्दिष्टविधि करके वार्षिक आदि श्राद्ध करना ऐसा कहते हैं. "ब्राह्मणनें दूसरे वर्णका पैतृककर्म नहीं करना. काम, लोभ और मोहके आधीन होके करै तौ मरनेवालेकी जातिकों प्राप्त होता है. शूद्रनेंभी ब्राह्मणका पैतृककर्म नहीं करना.

दत्तकस्तु जनकपितुःपुत्राद्यभावे जनकपितुःश्राद्धंकुर्याद्धनंचगृह्णीयात् जनकपालकयोरुभयोःपित्रोःसंतत्यभावेदत्तकोजनकपालकयोरुभयोरपिधनंहरेत् श्राद्धंचप्रतिवार्षिकमुभयोःकुर्यात् दर्शमहालयादौतु द्वयोःपित्राद्योःश्राद्धंदेयं तत्र द्वयोःपित्राद्योःपृथक्पिंडदानं पित्रादिद्वयद्वयोद्देशेनैकैकोवापिंडः एवं दत्तकस्यपुत्रोपि दत्तकजनकस्यपुत्राद्यभावेस्वपितरं पितामहद्वयंप्रपितामहद्वयंचोच्चार्यदर्शादिकंकुर्यात् तथैवधनंहरेत् एवंदत्तकपौत्रोपितज्जनककुलेप्रपितामहस्यपुत्राद्यभावेपितरंपितामहंचैकमुच्चार्यप्रपितामहद्वयमुच्चार्यदर्शादिश्राद्धंकुर्यात्प्रपितामहस्यधनंचहरेत् यद्येषांस्वासुभार्यास्वपत्यंनस्याद्रिक्थंहरेयुः पिंडंचैभ्यस्त्रिपुरुषंदद्युरित्यादिरेकपिंडेद्वावनुकीर्तयेद्गृहीतारंचोत्पादयितारंचातृतीयात्पुरुषादित्यादेश्च लौगाक्ष्यादिस्मृतिवचनात् यदिजनकपालकयोरुभयोरपिपुत्रादिसंततिसत्त्वंतदादत्तकउभयोरप्यौर्ध्वदेहिकंवार्षिकादिकंचनकुर्यात् पालकपितुरौरसपुत्राद्विभक्तेनदत्तकेनदर्शमहालयादिश्राद्धमात्रंपालकपित्रापिपार्वणोद्देशेनकार्यम् अविभक्तस्यतुतदौरसकृतदर्शादिनैवदत्तकस्य दर्शादिसिद्धिरितिभाति ॥

दत्तकनें तौ जन्म देनेवाले पिताके पुत्र आदिके अभावमें जन्म देनेवाले पिताका श्राद्ध करना, और धनभी ग्रहण करना. जन्मानेवाला और पालनेवाला इन दोनों पिताओंकों संतानका अभाव होवै तब दत्तकनें दोनों पिताओंका धन लेना और दोनोंके प्रतिवार्षिकश्राद्धभी करने. दर्श, महालय आदिके दिनविषे दोनों पिता आदिकोंका श्राद्ध करना. तहां दोनों पिता आदिकोंकों पृथक् पृथक् पिंडदान करना अथवा पिता आदि दोदोके उद्देशकरके एक एक पिंड देना. इस प्रकार दत्तकके पुत्रनेंभी दत्तकके जन्म देनेवाले पिताकों पुत्र आदि नहीं होवै तब अपना पिता, दोनों पितामह और दोनों प्रपितामह इन्होंका उच्चार करके दर्श आदि श्राद्ध करना, और तिसी प्रकारसें धनभी ग्रहण करना. ऐसेही दत्तकके पौत्रनेंभी तिसके जन्म देनेवाले पिताके कुलमें प्रपितामहकों पुत्र आदिका अभाव होवै तब एक पिता और एक पितामह इन्होंका उच्चार करके और दो प्रपितामहोंका उच्चार करके दर्श आदि श्राद्ध करना और प्रपितामहका धन आदि ग्रहण करना. क्योंकी, जन्मदेनेवाले पितासें आदिके जो तीन पुरुष हैं तिन्होंकी स्त्रियोंकों संतान नहीं होवै तब दत्तकनें और दत्तकके पुत्र आदिनें तीन पुरुषोंकों पिंड देके तिन्होंका धन लेना, और एक पिंडके स्थानमें गोद लेनेवाला पिता, और जन्म देनेवाला पिता इन दोनोंका उच्चार करना.

इस प्रमाण तीसरे पुरुषपर्यंत जानना. इस आदि लौगाक्षि इत्यादि स्मृतिवचन हैं. जो जन्म देनेवाला और गोद लेनेवाला ऐसे दोनों पिताओंकों पुत्रादि संतान होवै तब दत्तक पुत्रनें दोनोंकाही अंत्यकर्म और वार्षिक आदि श्राद्ध नहीं करना. पालक पिताका औरस पुत्र होके तिस औरस पुत्रसें दत्तक पुत्रक विभक्त होवै तौ तिसनें दर्श, महालय आदि श्राद्ध मात्र पालक पिता आदिके पार्वणके उद्देशसें करने. विभक्त नहीं हुआ होवै तौ औरस पुत्रनें किया जो दर्श आदि श्राद्ध तिस करके दत्तक पुत्रके दर्श आदि श्राद्धकी सिद्धि होवैगी ऐसा प्रतिभान होता है.

ब्रह्मचारिणोमासिकाब्दिकादिश्राद्धंमातापितृभिःकार्यम् ब्रह्मचारिणातुमातृपितृमातामहोपाध्यायाचार्यभिन्नानांशवनिर्हरणंदाहाद्यंत्यकर्मचनकार्यम् अन्याधिकार्यभावेमातृपितृमातामहाचार्याणांदाहादिकंब्रह्मचारिणाकार्यम् तत्रदशाहकर्मकरणेदशाहमाशौचं दाहमात्रकरणे एकाहम् तदाप्यस्यनित्यकर्मलोपोनास्ति अशुचित्वेप्याशौचिनामन्नंतेननभोक्तव्यं तैःसहनवस्तव्यं तदुभयकरणेप्रायश्चित्तपुनरुपनयनेवक्ष्येते अन्येषांदाहादौकृच्छ्रत्रयंपुनरुपनयनंच धर्मार्थेकेनचित्कस्यचित्सवर्णस्यदाहादिश्राद्धादिकरणेसंपत्त्यादिफलं अयंसर्वोपिश्राद्धविधिः शूद्राणाममंत्रकःकार्यः अत्रकेचिद्वैदिकमंत्रपाठएवशूद्राणांवर्ज्यः पौराणमंत्रास्तुपठनीयाइत्याहुःपौराणमंत्राअपिशूद्रेणस्वयंनपठनीयाःकिंतुविप्रद्वारापठनीयाः वेदमंत्रास्तुनविप्रद्वारापीतिसिंधुः एवंद्विजस्त्रियोपि व्रतोद्यापनादाविवसंकल्पमात्रंस्वयंकृत्वावैदिकमंत्रादिप्रयुक्तंसर्वं श्राद्धंविप्रद्वाराकारयेयुरितिपारिजातकारमतम् शूद्रस्यसदामश्राद्धमेव पित्रेनमःपितामहाय नमइत्येवमादिना नमोंतनांममंत्रेणनिमंत्रणपाद्यासनगंधपुष्पादिनाविप्रान्संपूज्यामंनिवेद्यसक्तुनापिंडदानादिकृत्वादक्षिणादानादिश्राद्धंसमाप्य सजातीयान्गृहसिद्धपक्वान्नेनभोजयेत् यत्तु सिंधौनाममंत्रेणावाहनाग्नौकरणकाश्यपगोत्रोच्चारपूर्वकपिंडदानादिकंतर्पणादिकंपाकेनपिंडदानादिकंचोक्तंतत्सच्छूद्रविषयम् सप्तपुरुषंत्रिपुरुषंवा परंपरया स्नानवैश्वदेवतर्पणादिकंशूद्रकमलाकरादिग्रंथसंगृहीतंधर्मंनियमेनाचरन्सच्छूद्रउच्यते एवंकिरातयवनादिहीनजातीयानां विप्रेभ्यआमदानदक्षिणादानपूर्वकंस्वस्वजातीयभोजनात्मकमेवश्राद्धम् राजकार्येनियुक्तस्य बंधनिग्रहवर्तिनः व्यसनेषुचसर्वेषुश्राद्धंविप्रेणकारयेत् अत्रप्रथमंजीवत्पितृकनिर्णयउक्तस्तत्रप्रसंगात्किंचिदधिकारविचारोप्युक्तः इदानींतुसर्वोप्यधिकारक्रमविचारःसविस्तरउक्तइतितेनात्रपुनरुक्तिर्बालबोधनार्थत्वान्नदोषाय इतिश्रीमदनंतोपाध्यायसूनुविरचितेधर्मसिंधुसारे श्राद्धाधिकारदाहाद्यधिकारनिर्णयः ॥

ब्रह्मचारीका मासिक और वार्षिक आदि श्राद्ध मातापितानें करना. ब्रह्मचारीनें तौ माता, पिता, मातामह, उपाध्याय और आचार्य इन्होंसें भिन्न मनुष्योंके मरनेमें मुरदाकों कांधिया लगना और दाह आदि अंत्यकर्म नहीं करना. दूसरा अधिकारी नहीं होवै तब माता, पिता, मातामह और आचार्य इन आदिका दाह आदि अंत्यकर्म ब्रह्मचारीनें करना योग्य है. तहां दश दिनका कर्म करनेमें दश दिन आशौच लगता है. दाह मात्र कर्म करनेमें एक दिन आशौच लगता है. तिस कालमें अंत्यकर्ममेंभी ब्रह्मचारीनें नित्यकर्मका नाश नहीं करना.

ब्रह्मचारी अशुचि होवै तौभी आशौचियोंका अन्न भक्षण नहीं करना, और आशौचियोंके साथ नहीं वसना. ब्रह्मचारी आशौचियोंके साथ वसै और तिन्होंके साथ भोजन करै तौ तिसका प्रायश्चित्त और पुनरुपनयन ये आगे कहैंगे. दूसरोंके दाह आदिमें तीन कृच्छ्र और पुनरुपनयन करना. धर्मके अर्थ किसीक पुरुष किसीक अपने वर्णके मनुष्यका दाह आदि और श्राद्ध आदि करै तौ संपत्ति आदि फल मिलता है. यह सब श्राद्धविधि शूद्रोंका मंत्ररहित करना. इस विषयमें कितनेक ग्रंथकार, वैदिक मंत्रोंका पाठ मात्र शूद्रकों वर्जित है, और पुराणके मंत्रोंका पाठ करना ऐसा कहते हैं. पुराणके मंत्रभी शूद्रोंनें आप नहीं पठित करने; किंतु, ब्राह्मणके द्वारा पठित कराने उचित है. वेदके मंत्र तौ ब्राह्मणके द्वाराभी नहीं पठित कराने ऐसा **निर्णयसिंधुमें** कहा है. इस प्रकार द्विजोंकी स्त्रियोंनेंभी व्रतके उद्यापनकी तरह संकल्प मात्र आप करके वैदिक मंत्रोंसें युक्त सब श्राद्ध ब्राह्मणके द्वारा कराना ऐसा **पारिजातकारका** मत है. शूद्रनें सब काल आमान्न करकेही श्राद्ध करना. **"पित्रे नमः पितामहाय नमः"** इत्यादिक नमोंत नाममंत्रसें निमंत्रण, पाद्य, आसन, गंध और पुष्प इत्यादि उपचारोंसें ब्राह्मणोंकी पूजा करके आमान्न निवेदन करके सत्तुओंसें पिंडदान आदि करके दक्षिणादान आदि विधिसें श्राद्ध समाप्त करके अपनी जातीके पुरुषोंकों घरमें सिद्ध किये पक्वान्नकरके भोजन कराना. जो **निर्णयसिंधुमें** नाममंत्रकरके आवाहन, अग्नौकरण, काश्यपगोत्रोच्चारणपूर्वक पिंडदान आदिक और तर्पण आदिक और पाककरके पिंडदान आदि करना ऐसा कहा है वह सत् शूद्रके विषयमें है. सात पुरुष अथवा तीन पुरुषपर्यंत परंपरासें स्नान, वैश्वदेव, तर्पण आदि **शूद्रकमलाकर** ग्रंथमें संगृहीत किया धर्म आचरण करनेवाला सो सत् शूद्र होता है. इस प्रकार भील, यवन इन आदि हीन जातियोंनें ब्राह्मणोंकों आमान्नका दान और दक्षिणादान देके अपनी अपनी जातिका भोजनात्मक श्राद्ध करना. राजकार्यमें नियुक्त, बधमें प्राप्त हुआ और सब प्रकारके व्यसनोंमें, ब्राह्मणद्वारा श्राद्ध कराना. यह उत्तरार्धमें प्रथम जीवत्पितृकका निर्णय कहा है तहां प्रसंगसें कछुक अधिकारका विचारभी कहा है. विद्यमान कालमें तौ संपूर्ण अधिकारके क्रमका विचार विस्तारसहित कहा है; तिस करके और जिनकों शास्त्रव्युत्पत्ति नहीं तिन्होंके बोधके अर्थ यहां पुनरुक्ति हुई है सो दोषकों पात्र नहीं है. इति वेरीनिवासि **बुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिअनुवादितधर्मसिंधुसारभाषाटीकायां श्राद्धाधिकारनिर्णयः समाप्तः ॥**

अथश्राद्धशब्दार्थः पित्रादीन्मृतानुद्दिश्यविहितेकालेदेशेपक्वान्नामान्नहिरण्यान्यतमद्रव्यस्यविधिनादानंश्राद्धम् तत्राग्नौकरणंपिंडदानंब्राह्मणभोजनंचप्रधानम् तदुक्तं होमश्चपिंडदानंचतथाब्राह्मणभोजनम् श्राद्धशब्दाभिधेयंस्यादेकस्मिन्नौपचारिकमिति क्वचिद्वचनादशक्त्या वापिंडदानाद्यकरणे ब्राह्मणभोजनादिमात्रमपिश्राद्धपदार्थःसंपद्यतइतिचतुर्थपादार्थः तथाच वचनांतरं यजुषांपिंडदानंतुबह्वृचानांद्विजार्चनम् श्राद्धशब्दाभिधेयंस्यादुभयंसामवेदिनाम् अश्रद्धयापितरोनसंतीतिमत्वाश्राद्धमकुर्वाणस्यरक्तंपितरःपिबंति ॥

अब श्राद्धशब्दका अर्थ कहताहुं.

मृत हुये पिता आदिके उद्देशकरके विहित कालमें और देशमें पक्वान्न, आमान्न, सोना

इन्होंमांहसें एक कोईसे द्रव्यका विधिसें दान करना श्राद्ध कहता है. तहां अग्नौकरण, पिंडदान और ब्राह्मणभोजन ये प्रधान हैं. सो कहा है—"होम, पिंडदान, तैसेही ब्राह्मणभोजन ये तीन कर्म मिलकर जो विशेष कर्म सो श्राद्ध कहाता है." किसीक स्थलमें वचनकरके अथवा अशक्तिसें पिंडदान आदि नहीं किया जावै तब ब्राह्मणभोजन आदि मात्र करना जो है वह श्राद्ध होता है, ऐसा 'श्राद्ध' इस पदका अर्थ सिद्ध होता है. इस प्रकार चौथे पदका अर्थ कहा. तैसाही दूसरा वचन है—"यजुर्वेदियोंका पिंडदान श्राद्ध होता है. ऋग्वेदियोंका ब्राह्मणोंका पूजन श्राद्ध होता है, और सामवेदियोंका पिंडदान और ब्राह्मणपूजन ये श्राद्ध है." 'पितर नहीं हैं ऐसा अश्रद्धासें मानके श्राद्धको नहीं करनेवाले मनुष्यके पितर रक्त पीते हैं.

अथश्राद्धभेदाः तत्रश्राद्धंचतुर्विधम् पार्वणश्राद्धमेकोद्दिष्टश्राद्धंनांदीश्राद्धंसपिंडीकरणश्राद्धंचेतिभेदात् पित्रादित्रयोद्देशेनविहितंपिंडत्रययुतंपार्वणम् तच्चैकपार्वणकद्विपार्वणकत्रिपार्वणकमितित्रिविधम् तत्रपित्रादेर्मृततिथौक्रियमाणंप्रतिसांवत्सरिकमेकपार्वणकं अमावास्यादिषण्णवतिश्राद्धनित्यश्राद्धानिमहालयान्वष्टक्यभिन्नानिद्विपार्वणकानि एतेषुसपत्नीकपित्रादित्रयसपत्नीकमातामहादित्रययोरेवोद्देशात् अन्वष्टकाश्राद्धंत्रिपार्वणकंपित्रादित्रयमात्रादित्रयसपत्नीकमातामहादित्रयाणामुद्देशात् महालयश्राद्धंतीर्थश्राद्धंचपार्वणैकोद्दिष्टरूपम् पित्रादिपार्वणत्रयस्यपत्न्याद्येकोद्दिष्टगणस्यचोद्देशात् केचिदेतद्द्वयंमातामहमातामह्योःपार्वणभेदेनपार्वणचतुष्टययुतंकुर्वंति केषांचित्सूत्रेदर्शोपित्रिपार्वणकश्चतुःपार्वणकोवेतिहेमाद्रौ एकोद्देशेनक्रियमाणमेकपिंडयुतमेकोद्दिष्टम् तदपित्रिविधं नवसंज्ञंनवमिश्रसंज्ञंपुराणसंज्ञं चेति मृतस्यप्रथमदिनमारभ्यदशाहांतंविहितानिनवसंज्ञानि एकादशाहादीन्यूनाब्दांतानिनवमिश्राणि एतानिविश्वदेवहीनानि ततःपराणिकनिष्ठभ्रातृवार्षिकशस्त्रहतचतुर्दशीश्राद्धादीनिपुराणसंज्ञानि केचित्सपिंड्युत्तरंक्रियमाणानांपार्वणानामपिपुराणसंज्ञामाहुः पुत्रजन्मविवाहादौक्रियमाणंवृद्धिश्राद्धंनांदीश्राद्धम् इदंपूर्वार्धेविस्तरेणप्रपंचितम् तदेवगर्भाधानपुंसवनसीमंतेषुआधानेसोमेचक्रियमाणंकर्मांगमितिचोच्यते अत्रक्रतुदक्षौविश्वेदेवाः अन्यकर्मसुवृद्धिसंज्ञम् तत्रसत्यवसुविश्वेदेवाःइतिनामभेदोदेवभेदश्चान्यत्समानं एतच्चपार्वणत्रययुतत्वात्पार्वणभेदांतर्गतमपिदर्शादितोबहुधर्मभेदात्पृथगुद्दिष्टं मृतस्यद्वादशाहादिकालेपिंडार्घ्यसंयोजनादिरूपंसपिंडीकरणं एतदपिपार्वणैकोद्दिष्टविकाररूपं अत्रविशेषोवक्ष्यते एवंचपार्वणमेकोद्दिष्टमितिद्विविधमेवश्राद्धं एतत्पुनस्त्रिविधं नित्यंनैमित्तिकंकाम्यंचेति नियतनिमित्तेविहितंनित्यं यथादर्शादि प्रत्यहंविहितमपिश्राद्धंनित्यसंज्ञंपार्वणद्वययुतंविश्वदेवहीनमुक्तं अनियतनिमित्तेविहितंनैमित्तिकं यथासूर्यचंद्रग्रहणादौ एतदपिषट्दैवतं फलकामतोपाधिकंकाम्यं यथापंचम्यांदितिथौकृत्तिकादिनक्षत्रेच ॥

अब श्राद्धके भेद कहताहुं.

तहां श्राद्ध चार प्रकारका है—पार्वणश्राद्ध, एकोद्दिष्टश्राद्ध, नांदीश्राद्ध और सपिंडीकरणश्राद्ध इन भेदोंसें चार प्रकारका जानना. पिता आदि तीनोंके उद्देशकरके किया तीन पिंडोंसें

युत पार्वणश्राद्ध होता है. सो एक पार्वणक, द्विपार्वणक, त्रिपार्वणक ऐसा तीन प्रकारका है. तिन्होंके मध्यमें पिता आदिकोंके मृततिथिके दिनमें किया जो प्रतिसांवत्सरिक श्राद्ध वह एकपार्वणक होता है. अमावस आदि षण्णवतिश्राद्ध, नित्यश्राद्ध, महालय और अन्वष्टक्यश्राद्ध इन्होंके विना अन्य जो श्राद्ध हैं वे द्विपार्वणक होते हैं; क्योंकी द्विपार्वणक श्राद्धोंमें पत्नीसहित पिता आदि तीन और पत्नीसहित मातामह आदि तीन इन्होंकाही उद्देश कहा है. अन्वष्टकाश्राद्ध जो है सो त्रिपार्वणक होता है; क्योंकी, इस श्राद्धमें पिता आदि तीन, माता आदि तीन और पत्नियोंसहित मातामह आदि तीन ऐसे तीन पार्वणोंका उद्देश कहा है. महालयश्राद्ध और तीर्थश्राद्ध ये दोनों पार्वणश्राद्ध और एकोद्दिष्टश्राद्धरूप कहे हैं; क्योंकी, इन दोनों श्राद्धोंमें पिता आदि तीन पार्वण और पत्नी आदि एकोद्दिष्टगण इन्होंका उद्देश कहा है. कितनेक शिष्ट मातामह और मातामही इन्होंके पृथक् पार्वण करके चार पार्वणोंसें युक्त ये दो श्राद्ध करते हैं, कितनेकोंके सूत्रमें दर्शश्राद्धभी तीन पार्वणोंसें युक्त अथवा चार पार्वणोंसें युक्त करना ऐसा कहा है, ऐसा **हेमाद्रि** ग्रंथमें लिखा है. एकके उद्देशसें क्रियमाण ऐसा एक पिंडसें युत एकोद्दिष्टश्राद्ध होता है. वह एकोद्दिष्टश्राद्धभी नवसंज्ञक, नवमिश्रसंज्ञक और पुराणसंज्ञक, ऐसा तीन प्रकारका है. मरनेवालेके प्रथम दिनमें आरंभ करके दश दिनपर्यंत जो विहित श्राद्ध वे नवसंज्ञक होते हैं. एकादशाह है आदिमें जिनकों और ऊनाब्द है अंतमें जिनकों ऐसे नवमिश्रसंज्ञक हैं. ये विश्वेदेवोंसें रहित होते हैं. तिस्सें परे कनिष्ठ भाईका वार्षिक, शस्त्रसें हत हुये मनुष्यका चतुर्दशीश्राद्ध इन आदि पुराणसंज्ञक होते हैं. कितनेक ग्रंथकार, सपिंडीके पीछे करनेके जो पार्वणश्राद्ध तिनकों पुराणसंज्ञक कहते हैं. पुत्रजन्म, विवाह इत्यादिकमें जो करनेका वृद्धिश्राद्ध वह नांदीश्राद्ध होता है. यह नांदीश्राद्ध पूर्वार्धमें विस्तारसें प्रकाशित किया है. गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, आधान और सोमयज्ञ इन्होंमें किया जावै जो कर्मका अंगभूत वृद्धिश्राद्ध तिसकों इष्टिश्राद्ध कहते हैं. इस इष्टिश्राद्धमें क्रतुदक्षसंज्ञक विश्वेदेव होते हैं. अन्य कर्ममें जो नांदीश्राद्ध सो वृद्धिसंज्ञकश्राद्ध होता है. वृद्धिसंज्ञकश्राद्धमें सत्यवसुसंज्ञक विश्वेदेव होते हैं. इस प्रमाणसें नामभेद और देवभेद हैं. अन्य सब सामान्य जानना. यह नांदीश्राद्ध तीन पार्वणोंसें युक्त कहा है, इस कारणसें पार्वणके भेदोंमेंके अंतर्गतभी है तथापि दर्शश्राद्ध आदिसें इसके धर्म बहुतसे भिन्न होनेसें पृथक् कहा है. मृतका बारहमा दिन आदि कालमें पिंड और अर्घ्य इन्होंका मेलन इत्यादिरूप जो कर्म है वह सपिंडीकरण होता है. यह सपिंडीकरणभी पार्वण और एकोद्दिष्ट ऐसा विकाररूपी है. इसविषयमें विशेष निर्णय आगे कहेंगे. इस प्रकार पार्वण और एकोद्दिष्ट ऐसा दो प्रकारका श्राद्ध हैं. यह श्राद्ध फिर तीन प्रकारका है—**नित्य, नैमित्तिक और काम्य** ऐसा; नियतनिमित्तमें जो विहित होवै सो नित्यश्राद्ध होता है. जैसे—दर्श आदि श्राद्ध. दिनदिनके प्रति विहित जो श्राद्ध वहभी नित्यसंज्ञक होता है. यह दो पार्वणोंसें युत और विश्वेदेवोंसें रहित होता है. अनियत जो निमित्त तिसमें जो विहित होवै वह नैमित्तिकश्राद्ध होता है. जैसे—सूर्य और चंद्रमाके ग्रहण आदि कालमें श्राद्ध. यहभी षट्दैवत होता है. फलकी इच्छासें जो किया जावै वह काम्यश्राद्ध होता है. जैसे—पंचमी आदि तिथिमें और कृत्तिका आदि नक्षत्रमें कर्तव्य श्राद्ध.

अथश्राद्धदेशाः दक्षिणाप्रवणेगोमयोपलिप्तेकृमिकेशास्थिश्लेष्मादिवर्जितेकृत्रिमभूमिवर्जितेरजस्वलादर्शनादिवर्जितेश्राद्धंकार्यं कुरुक्षेत्रप्रभासपुष्करप्रयागकाशीगंगायमुनानर्मदादितीरनैमिषगंगाद्वारगयाशीर्षाक्षय्यवटादिषुश्राद्धंमहाफलं शमीपत्रप्रमाणेनपिंडंदद्याद्गयाशिरे उद्धरेत्सप्तगोत्राणिकुलमेकोत्तरंशतं पितामाताचभार्याचभगिनीदुहितातथा पितृमातृष्वसाचैवसप्तगोत्राणिवैविदुः एषांगोत्राणिपुरुषाःक्रमेणचतुर्विंशतिविंशतिषोडशद्वादशैकादशदशाष्टावित्येकोत्तरशतसंख्यास्तेषामुद्धारइत्यर्थः तत्रपितृकुलेद्वादशपूर्वाद्वादशपराइति चतुर्विंशतिरेवमग्रेपि तुलसीकाननच्छायाशालग्रामस्यसन्निधिः चक्रांकितस्यसान्निध्यमेषुयत्क्रियतेनरैः स्नानंदानंतपःश्राद्धंसर्वमक्षय्यतांव्रजेत् गोगजाश्वादिदुष्टप्रदेशेम्लेच्छदेशेचश्राद्धंन कार्यं परकीयगृहादौश्राद्धकरणेतद्भूमिस्वामिपितरोभागंहरंति तेनगृहस्वामिनेमूल्यंदत्वाकार्यं स्वाम्यनुज्ञयावाकार्यं वनानिगिरयोनद्यस्तीराण्यायतनानिच देवखाताश्चगर्ताश्चनस्वाम्यंतेषु कस्यचित्नैकवासानचद्वीपेनांतरिक्षेकदाचन श्रुतिस्मृत्युदितंकर्मनकुर्यादशुचिःक्वचित् ॥

अब श्राद्धदेश कहताहुं.

दक्षिणदिशाकों नीची, गोबरसें लीपी, कीडा, हड्डी, बाल, कफ इन आदिसें वर्जित; कृत्रिम पृथिवीसें वर्जित, रजस्वला स्त्रीके दर्शनसें वर्जित ऐसी भूमीपर श्राद्ध करना. कुरुक्षेत्र; प्रभास; पुष्कर; प्रयाग; काशी; गंगा, यमुना, नर्मदा इन आदिका तीर; नैमिषारण्य; गंगाद्वार; गयाजी; अक्षय्यवट इत्यादि जगहमें कियां श्राद्ध बहुत फल देता है. "गयाजीमें जांटीके पत्ताके समान पिंड देना, तिसकरके ७ गोत्र, १०१ कुल इन्होंका उद्धार होता है." "पिता, माता, भार्या, बहन, पुत्री, पिताकी बहन और माताकी बहन ऐसे सात गोत्र जानने." इन्होंके गोत्र अर्थात् क्रमसें २४, २०, १६, १२, ११, १०, ८ इस प्रमाण १०१ जो पुरुष हैं तिन्होंका उद्धार होता है ऐसा अर्थ है. तिन्होंमांहसें पिताके कुलके बारह पीछले और बारह आगले ऐसे चौवीस पुरुष हैं. इसी प्रकार आगेभी जानना. "तुलसीके बनकी छाया, शालग्रामका सान्निध्य, और चक्रांकितका सान्निध्य इन्होंविषे मनुष्योंसें जो स्नान, दान, तप और श्राद्ध किया जाता है वह सब अक्षय्य होता है. गौ, हस्ती और घोडा इन्होंसें दुष्ट हुये देशमें और म्लेच्छ देशमें श्राद्ध नहीं करना. दूसरेके घर आदिविषे श्राद्ध करनेसें तिस पृथिवीके स्वामीके पितर तिस श्राद्धका भाग हरते हैं, इसलिये तिस घरके स्वामीकों मूल्य देके श्राद्ध करना अथवा स्वामीकी आज्ञा लेके श्राद्ध करना. "वन, पर्वत, नदीके तीर, देवताके मंदिर, देवखात अर्थात् अकृत्रिम छिद्र और कुंड इन्होंमें किसीकाभी स्वामीपना नहीं है." एक वस्त्र धारण करनेवाला और अशुचि इन्होंनें कहींभी और द्वीपमें, आकाशमें श्रुतिस्मृतिविहित कर्म कभीभी नहीं करना.

अथश्राद्धकालाः तेचप्रायेणमासंक्रांतियुगादिमन्वादिमहालयादयःपूर्वपरिच्छेदेउक्ताएव केचित्तूच्यंते महातीर्थप्राप्तिर्व्यतीपातोमृताहोग्रहणद्वयंश्राद्धंप्रतिरुचिः श्रोत्रियादिब्राह्मण संपत्तिरर्धोदयकपिलाषष्ठयाद्यलभ्ययोगाग्रहपीडादुःस्वप्नदर्शनंनवान्नप्राप्तिर्नवोदकप्राप्तिर्गृहप्रच्छादनादिनिमित्तंचश्राद्धकालाः यदाविष्टिर्व्यतीपातोभानुवारस्तथैवच पद्मकोनामयोगोय

मयनादेश्चतुर्गुणः सर्वमासानांकृष्णपक्षेषुश्राद्धमुक्तम् अत्रप्रत्यहंपंचम्यादिवायदहःसंपत्तिर्वेतित्रयःपक्षाः एकदिनपक्षेदर्शएव नारायणवृत्तौतुदर्शश्राद्धेनैवपक्षश्राद्धसिद्धिरुक्ता सर्वमासेषुदर्शश्राद्धाशक्तौकन्याकुंभवृषस्थेर्केसतिदर्शत्रयेएकत्र[1]दर्शेवाश्राद्धं साग्निकस्यत्वशक्तस्यपिंडपितृयज्ञमात्रेणदर्शसिद्धिःनिरग्निकस्यब्राह्मणभोजनमात्रेणधान्यादिद्रव्यदानेनवादर्शसिद्धिः कृष्णपक्षेषुमहालयापरपक्षस्यश्रेष्ठत्वं तत्रापिपंचदशाहादिपक्षाअन्योपिबहुविस्तरोद्वितीयपरिच्छेदेउक्तः अत्रविशेषांतरंकालतत्त्वविवेचनेपंचदशाहव्यापिमहालयप्रयोगारंभोत्तरमाशौचपातेकृतमहालयानांवैकल्यं तेनशुद्ध्यंतेकस्यांचित्तिथौसकृन्महालयमात्रमनुष्ठेयंएवंपंचम्यादिपक्षेपि प्रतिबंधांतरेप्रतिनिधिद्वाराशेषमहालयानुष्ठानं पितृव्यज्येष्ठभ्रात्रादीनामपुत्राणांमहालयापरपक्षेतत्तन्मृततिथौतदेकपार्वणकमहालयश्राद्धंजीवत्पितृकेणापिकार्यमिति द्वादशपौर्णमास्योःसंभवेमाघीश्रावणीप्रौष्ठपद्योनित्याः कस्मिंश्चित्कृष्णपक्षेप्रतिपदादिपंचदशतिथिषुकृत्तिकादिभरण्यंतनक्षत्रेषुविष्कंभादियोगेषुसूर्यादिवारेषुबवादिकरणेषुच श्राद्धेफलविशेषोक्तेरेतेतिथ्यादयः काम्यश्राद्धकालाज्ञेयाः इतिसामान्यकालः ॥

अब श्राद्धका काल कहताहुं.

वे श्राद्धकाल अमावस, संक्रांति, युगादि, मन्वादि और महालय इस आदि बहुत प्रकारसें पूर्व परिच्छेदमें कहे हैं. और कितनेक कहताहुं.—महातीर्थप्राप्ति, व्यतीपात, मृतदिन, दोनों ग्रहण इन्होंमें, श्राद्ध करनेकी इच्छा, श्रोत्रिय आदि ब्राह्मणका आगमन, अर्धोदय, कपिलाषष्ठी इस आदि अलभ्य योग, ग्रहपीडा, दुष्ट स्वप्न देखना, नवान्नप्राप्ति, नवीन जलकी प्राप्ति, गृहप्रच्छादन इत्यादिक निमित्त ये श्राद्धकाल हैं. "भद्रा, व्यतीपात, रविवार इन्होंका योग पद्मकयोग होता है. और वह अयन आदिसें चतुर्गुणित पुण्यकारक है. सब महीनोंविषे कृष्णपक्षमें श्राद्ध करना ऐसा कहा है. इस पक्षमें दिनदिनके प्रति किंवा पंचमीमें, अथवा जिस दिनमें श्राद्ध करनेकों अनुकूल होवै वह दिन ऐसे तीन पक्ष कहे हैं. महिनेमें एकही दिन करना होवै तौ दर्शश्राद्धही है. **नारायणवृत्ति** ग्रंथमें तौ दर्शश्राद्धकरके पक्षश्राद्धकी सिद्धि कही है. सब महीनोंमें दर्शश्राद्ध करनेकी शक्ति नहीं होवै तौ कन्या, कुंभ और वृष इन राशियोंपर स्थित हुये सूर्यमें तीन अमावस तिथियोंमें अथवा एक अमावस तिथिमें श्राद्ध करना. साग्निक मनुष्य अशक्त होवै तौ पिंडपितृयज्ञमात्रसें तिसके दर्शश्राद्धकी सिद्धि होती है. निरग्निक मनुष्यके दर्शश्राद्धकी सिद्धि ब्राह्मणभोजनमात्रसें अथवा अन्नादि द्रव्यदानसें होती है. सब कृष्णपक्षोंमें महालयश्राद्धका जो कृष्णपक्ष है वह श्रेष्ठ है. तिसमेंभी पंदरह दिन आदि पक्ष और अन्य बहुत विस्तार दूसरे परिच्छेदमें कहा है. इस विषयमें दूसरा विशेष निर्णय **कालतत्त्वविवेचन** ग्रंथमें कहा है. पंदरह दिनपर्यंत जो महालयपक्ष है तिसके प्रयोगका आरंभ किये पीछे आशौच प्राप्त होवै तौ किया महालयश्राद्ध व्यर्थ होता है, इसलिये आशौच दूर हुए पीछे कोईभी एक तिथिके दिनमें सकृन्महालय मात्र करना. इस प्रकार पंचमी आदि पक्षमें ऐसाही निर्णय जानना. आशौचके विना दूसरा प्रतिबंध प्राप्त होवै तौ प्रतिनिधिद्वारा शेष महालय कराने. पुत्रसें रहित ऐसे चाचा, बडा भाई इन्होंका

---

[1] एकस्मिन्नित्येकत्र ॥

एक पार्वणवाला महालयश्राद्ध अपरपक्षके मध्यमें तिन्होंके मृततिथिके दिनमें जीवते हुए पितावालोंनेंभी करना. बारह पौर्णमासियोंका संभव नहीं होवै तौ माघकी, श्रावणकी, भाद्रपदकी, ये पौर्णमासी नित्य कही हैं. कोईसे कृष्णपक्षमें प्रतिपदासें पंदरह तिथि, कृत्तिकासें भरणीपर्यंत नक्षत्र, विष्कंभ आदि योग, रविवार आदि वार और बव आदि करण ये होवैं तब श्राद्ध करना ऐसा विशेषवचन कहा है. इसलिये ये तिथि आदि जो काल कहे हैं वे काम्यश्राद्धके काल जानने. इस प्रकार श्राद्धका सामान्य काल कहा.

अथापराह्णादिविशेषनिर्णयः दिनस्यपंचविभागास्त्रित्रिमुहूर्तकास्तत्राद्योभागः प्रातःसंज्ञः द्वितीयःसंगवः तृतीयोमध्याह्नः चतुर्थोपराह्णः पंचमोभागःसायाह्नः दिनस्यपंचदशोभागो मुहूर्तः तत्रसप्तमोगंधर्वोष्टमोमुहूर्तःकुतुपः नवमोरौहिणः तत्रदर्शादिश्राद्धानांनिर्णयःपूर्वपरिच्छेदयोःप्रायेणोक्तः विशेषस्तूच्यते साग्निकानांकात्यायनादीनामन्वाधानपिंडपितृयज्ञदर्शश्राद्धानामेकदिनकर्तव्यत्वनियमात् त्रेधाविभक्तदिनतृतीयभागरूपापराह्णव्यापिन्याममायां दर्शश्राद्धंकर्तव्यं ॥

अब अपराण्ह आदि विशेषकरके निर्णय कहताहुं.

तीन तीन मुहूर्तका एक भाग ऐसे दिनके पांच भाग करने. तिन्होंमें आदिका भाग प्रातःकाल है. दूसरा संगवकाल है. तीसरा मध्यान्हकाल है. चौथा अपराण्हकाल है. पांचमा सायान्हकाल है. दिनका पंदरहमा भाग मुहूर्त होता है. तिन्होंमें सातमा मुहूर्त गंधर्वसंज्ञक है. आठमा मुहूर्त कुतुपसंज्ञक है. नवमा मुहूर्त रौहिणसंज्ञक है. तहां दर्श आदि श्राद्धोंका निर्णय पहले दो परिच्छेदोंमें प्रायशः कहा है. तिस्सें जो विशेष निर्णय है सो कहताहुं—साग्निक ऐसे कात्यायन आदिनें अन्वाधान, पिंडपितृयज्ञ और दर्शश्राद्ध ये तीनों एक दिनमें करने ऐसा नियम कहा है. इसलिये दिनके तीन विभाग करके तीसरा भाग जो अपराण्हकाल तद्व्यापिनी अमावसमें दर्शश्राद्ध करना.

अथप्रतिसांवत्सरिकमासिकादिनिर्णयउच्यते तत्रैकोद्दिष्टंमध्याह्नेसप्तमाष्टमनवममुहूर्तरूपेकार्यं तत्रापिकुतुपरौहिणसंज्ञकावष्टमनवममुहूर्तौमुख्यःकालः तत्रपूर्वत्रैवपरत्रैववादिनेमध्याह्नव्याप्तौसैवतिथिर्ग्राह्या दिनद्वयेमध्याह्नव्याप्तौमध्याह्नास्पर्शेवापूर्वत्रैव दिनद्वयेसाम्येनैकदेशव्याप्तौपूर्वा खर्वदर्पाद्यैर्व्यवस्थेत्यन्ये वैषम्येणैकदेशव्याप्तावाधिक्येननिर्णयः पार्वणेत्वपराह्णव्यापिनीग्राह्या पूर्वत्रैवपरत्रैववापराह्णव्याप्तौसैवग्राह्या दिनद्वयेतद्व्याप्तौतदस्पर्शेवांशतःसमव्याप्तौवापूर्वा विषमव्याप्तौत्वाधिकाग्राह्या माधवाचार्यास्तुदिनद्वयेपूर्णापराह्णव्याप्तावंशतःसमव्याप्तौचोत्तरतिथेःक्षयेपूर्वा वृद्धौपरा उत्तरतिथेःक्षयवृद्ध्यभावेपिपरेत्याहुः अयंक्षयाहनिर्णयःप्रत्याब्दिकेमासिकेसकृन्[1]महालयेचज्ञेयः ॥

अब प्रतिसांवत्सरिक और मासिक आदि श्राद्धका निर्णय कहताहुं.

तिन्होंमें एकोद्दिष्टश्राद्ध सातमा, आठमा और नवमा इन मुहूर्तोंसें युक्त मध्यान्हकालमें

---

[1] मृततिथौ क्रियमाणसकृन्महालये इत्यर्थः ॥

करना. तिन्होंमेंभी आठमा और नवमा ऐसे दो कुतुपरौहिणसंज्ञक मुहूर्त मुख्यकाल कहाते हैं. तहां पूर्वदिनमेंही अथवा परदिनमेंही मध्यान्हव्यापिनी जो होवै वहही तिथि ग्रहण करनी. दोनों दिनोंमें मध्यान्हव्यापिनी होवै अथवा मध्यान्हकालमें स्पर्श नहीं होवै तब पूर्वदिनकी तिथि लेनी. दोनों दिनोंमें सरीखी एकदेशव्यापिनी होवै तौ पूर्वदिनकीही लेनी. खर्व, दर्प इत्यादिकसें व्यवस्था जाननी ऐसा दूसरे ग्रंथकार कहते हैं. विषमपनेसें एकदेशमें व्याप्ति होवै तब अधिकपनेसें निर्णय जानना. पार्वणश्राद्धमें तौ अपराण्हव्यापिनी तिथि लेनी. पूर्वदिनमेंही अथवा परदिनमेंही अपराण्हव्यापिनी होवै तौ वहही तिथि लेनी. दोनों दिनोंमें अपराण्हव्यापिनी होवै अथवा नहीं होवै, किंवा अंशकरके समानपनेसें व्याप्ति होवै तौ पहली तिथि लेनी. विषमव्याप्तिमें अधिक व्यापिनी तिथि लेनी. माधवाचार्य तौ दोनों दिनोंमें पूर्ण अपराण्हव्याप्ति होवै और अंशसें समान व्याप्ति होके उत्तर तिथिका क्षय होवै तब पहली तिथि लेनी, और उत्तर तिथिकी वृद्धि होवै तब दूसरे दिनकी तिथि लेनी, उत्तर तिथिके क्षय और वृद्धिका अभाव होवै तबभी दूसरे दिनकी तिथि लेनी ऐसा कहते हैं. यह क्षयदिनका निर्णय प्रतिसांवत्सरिकश्राद्ध, मासिकश्राद्ध, और मृततिथिके दिनमें करनेका जो सकृन्महालय इन विषयोंमें जानना.

श्राद्धेभरण्यादिनक्षत्रंव्यतीपातादियोगश्चापराह्णव्यापीत्युक्तंद्वितीये केचिच्छुक्लपक्षेउदयव्यापिनक्षत्रंकृष्णपक्षेस्तमयव्यापियोगस्तुकुतुपादिव्यापीत्याहुः एतच्चपार्वणश्राद्धंकुतुपादिमुहूर्तपंचकेकार्यंनसायाह्नेनरात्रौनप्रातःसंगवयोः पिंडपितृयज्ञदिनेसायाह्नेपिपार्वणमनुज्ञायते यदाविघ्नवशाद्दिनेसांवत्सरिकश्राद्धंनकृतंतदारात्रावपिप्रथमप्रहरपर्यंतंकार्यं मृताहातिक्रमेचांडालत्वादिदोषोक्तेः ग्रहणादिनेदर्शमासिकप्रतिवार्षिकादिश्राद्धप्राप्तौतद्दिनेएवान्नेनामेनवाहेम्नावाकुर्यान्नोत्तरदिने प्रथमाब्दिकंत्रयोदशेमलमासेकार्यमित्युक्तं तेनयत्रद्वादशमासिकंशुद्धमासेभवतितत्रत्रयोदशेधिकएवप्रथमाब्दिकंकार्यं यदात्वधिकमध्येद्वादशंमासिकंतदाद्वादशमासिकस्यद्विरावृत्तिंकृत्वाचतुर्दशेशुद्धमासेप्रथमाब्दिकं एवंद्वितीयादिमासिकस्यापिमलमासेप्राप्तस्यद्विरावृत्तिर्ज्ञेया द्वितीयाब्दिकंतुशुद्धमासेएव एवंमहालयोपिशुद्धेएवनाधिकेमासेकिंचिदपि मलमासमृतानांतुयदासएवमलमासोभवतितदाधिकएवसांवत्सरिकंनशुद्धे दर्शदिनेवार्षिकप्राप्तौपूर्ववार्षिकंकृत्वाततःपिंडपितृयज्ञंपाकांतरेणदर्शश्राद्धंचकुर्यात् परेतुआदौपिंडपितृयज्ञस्ततोवार्षिकंततोदर्शइतिक्रममाहुः एवंमासिकादिष्वपिज्ञेयं ॥

भरणी आदि नक्षत्र और व्यतीपात आदि योग श्राद्धके विषयमें अपराण्हव्यापी लेने ऐसा दूसरे परिच्छेदमें कहा है. कितनेक ग्रंथकार, शुक्लपक्षमें सूर्योदयव्यापी नक्षत्र और कृष्णपक्षमें अस्तमयव्यापी नक्षत्र लेना और योग तौ कुतुप आदि व्यापी लेने ऐसा कहते हैं. यह पार्वणश्राद्ध कुतुप आदि पांच मुहूर्तोंमें करना; सायान्ह, रात्रि, प्रातःकाल और संगवकाल इन्होंमें नहीं करना. पिंडपितृयज्ञके दिनमें सायान्हकालविषेंभी पार्वणश्राद्ध करना. जब विघ्नके वशसें दिनमें सांवत्सरिक श्राद्ध नहीं किया होवै तब रात्रिमेंभी प्रथम प्रहरपर्यंत करना. क्योंकी, मृतदिनके उल्लंघनमें चांडालपना आदि दोष प्राप्त होता है ऐसा वचन है. ग्रहणके दिनमें दर्शश्राद्ध, मासिकश्राद्ध और प्रतिसांवत्सरिकश्राद्ध ये तीनों प्राप्त होवैं तौ तिस दिन-

मेंही आमान्नसें किंवा सोनासें करने. उत्तरदिनमें नहीं करने. प्रथमाब्दिक श्राद्ध तेरहमे मलमासमें करना ऐसा वचन कहा है. तिसकरके जिस समयमें द्वादश मासिकश्राद्ध शुद्ध मासमें होता है तिस कालमें तेरहमा महीना जो अधिकमास है तिसमेंही प्रथमाब्दिक करना. जब अधिकमासमें द्वादशमासिकश्राद्ध होता है तब द्वादशमासिकश्राद्धकी द्विरावृत्ति करके चौदहमा जो शुद्ध मास है तिसमें प्रथमाब्दिक करना. इस प्रकार मलमासमें प्राप्त हुए द्वितीयमासिकश्राद्ध आदिकीभी द्विरावृत्ति करनी. द्वितीयाब्दिकश्राद्ध तौ शुद्धमासमेंही करना. इसही प्रकार महालयश्राद्धभी शुद्धमासमें करना. अधिकमासमें कुछभी कर्म नहीं करना. मलमासमें मृत हुये मनुष्योंका जब वही मलमास होवै तब अधिकमासमेंही सांवत्सरिकश्राद्ध करना, शुद्धमासमें नहीं करना. दर्श अर्थात् अमावसके दिन वार्षिकश्राद्ध प्राप्त होवै तब पहले वार्षिकश्राद्ध करके पीछे पिंडपितृयज्ञ और दर्शश्राद्ध दूसरे पाकसें करना. अन्य ग्रंथकार तौ, आदिमें पिंडपितृयज्ञ, पीछे वार्षिकश्राद्ध और पीछे दर्शश्राद्ध करना ऐसा क्रम कहते हैं. इसी प्रकार मासिक आदि श्राद्धोंमेंभी जानना.

सपिंडीकरणादूर्ध्वंयावदब्दत्रयंभवेत् तावदेवनभोक्तव्यंतदीयेश्राद्धमात्रके प्रथमाब्देस्थ्यादिभोजीद्वितीयेमांसभक्षकः तृतीयेरक्तभोजीस्याच्छुद्धंश्राद्धंचतुर्थके इत्यास्तांप्रासंगिकंप्रकृतमनुसरामः पार्वणमपिहेमश्राद्धमामश्राद्धंचद्वेधाविभक्तदिनपूर्वभागेएवकार्यं सर्वंचश्राद्धंतत्तन्निर्णीतकालेतत्तत्तिथ्यभावेपिकर्तव्यं साकल्यवचनादिनाशास्त्रतस्तत्रतत्तत्तिथिसत्त्वादिति [1]कालतत्त्वविवेचने वृद्धिश्राद्धंप्रातःसंगवयोःकार्यं मध्याह्नोगौणः अपराह्णसायाह्नरात्रयोनिषिद्धाः रात्रौविवाहेप्रातर्वृद्धिश्राद्धंनकृतंतदारात्रावपिकार्यमितिकश्चित् ग्रहणनिमित्तकंपार्वणश्राद्धंपुत्रजन्मनिमित्तकंजातकर्मांगंवृद्धिश्राद्धंचरात्रावपिकार्यं इतिकालनिर्णयः ॥

सपिंडीकरणके उपरंत तीन वर्षपर्यंत तिसके श्राद्धमात्रमें भोजन नहीं करना. प्रथम वर्षमें भोजन किया जावै तौ अस्थि अर्थात् हड्डी आदिका भोजन करनेवाला, दूसरे वर्षमें मांसभक्षक, और तीसरे वर्षमें रक्त अर्थात् लोहूका भोजन करनेवाला हो जाता है. चौथे वर्षमें वह श्राद्ध शुद्ध होता है. इस प्रकार प्रासंगिक प्रकरण स्थित रहो. अब प्रकृत कहताहुं.—पार्वणरूपी होवै तौभी हेमश्राद्ध और आमश्राद्ध दो प्रकारसें विभक्त किये दिनके पूर्वभागमेंही करने. सब श्राद्ध तिस तिस निर्णीत कालमें तिस तिस तिथिका अभाव होवै तौभी करने; क्योंकी, साकल्यवचन आदि शास्त्रकरके तिस तिस कालमें तिस तिस तिथि है ऐसा कालतत्त्वविवेचन ग्रंथमें कहा है. वृद्धिश्राद्ध प्रातःकाल और संगवकालमें करना. मध्याह्नकाल गौणकाल कहा है. अपराण्ह, सायान्ह और रात्रि ये निषिद्ध काल कहे हैं. रात्रिमें विवाह होवै तौ प्रातःकालमें वृद्धिश्राद्ध नहीं किया जावै तब रात्रिमेंभी करना ऐसा कहींक ग्रंथमें कहा है. ग्रहणनिमित्तक पार्वणश्राद्ध और पुत्रजन्मनिमित्तक जातकर्मका अंगभूत वृद्धिश्राद्ध ये रात्रिमेंभी करने. ऐसा कालका निर्णय समाप्त हुआ.

---

१ तेनदिनद्वयेपराण्हेतिथिस्पर्शाभावस्थलेपूर्वदिनेतत्कालेतिथ्यभावेप्यपराण्हएवश्राद्धंनसायान्हे ॥ २ इसउपरसें ऐसा होता है की, दो दिनोंमें अपराण्हकालमें तिथिका स्पर्श नहीं होवै ऐसे पक्षमें पूर्वदिनमें अपराण्हकालविषे तिथि नहीं होवै तथापि अपराण्हकालमेंही श्राद्ध करना, सायान्हकालमें नहीं करना.

पुत्रादिभिः पितृमात्राद्युद्देशेनश्राद्धेक्रियमाणेनामगोत्रंमंत्राश्चतत्तदन्नंतान्पितॄन्प्रापयंति तत्रपित्रादीनांदेवरूपत्वेतदन्नममृतरूपंभूत्वा तत्रोपतिष्ठतेगांधर्वत्वेभोग्यरूपेणपशुत्वेतृणरूपेणसर्पत्वेवायुरूपेणयक्षत्वेपानरूपेणदानवादित्वेमांसत्वेन प्रेतत्वेरुधिरत्वेनमनुष्यत्वेन्नादिरूपेणेतिग्रंथांतरे तस्यतेपितरःश्रुत्वाश्राद्धकालमुपस्थितं अन्योन्यंमनसाध्यात्वासंपतंतिमनोजवाः तैर्ब्राह्मणैःसहाश्नंतिपितरोवायुरूपिणः अतएवश्रीरामेणश्राद्धेक्रियमाणेसीताविप्रेषुदशरथादीन्ददर्शेतिकथाश्रूयते प्रावृष्यंतेयमःप्रेतान्पितॄंश्चापियमालयात् विसर्जयतिभूलोकंकृत्वाशून्यंस्वकंपुरं तेपुत्रादेःप्रकांक्षंतिपायसंमधुसंयुतं कन्यागतेसवितरिपितरोयांतिवैसुतान् अमावास्यादिनेप्राप्तेगृहद्वारंसमाश्रिताः श्राद्धाभावेस्वभवनंशापंदत्वाव्रजंतिते अतोमूलैःफलैर्वापि तथाप्युदकतर्पणैः पितृतृप्तिंप्रकुर्वीतनैवश्राद्धंविवर्जयेत् किंचश्राद्धेनब्रह्मादिस्तंबपर्यंतसकलभूततृप्तिःश्रूयते तत्रपिशाचादिरूपाणांविकिरादिभिस्तृप्तिर्वृक्षादिरूपाणांस्नानवस्त्रोदकादिना केषांचिदुच्छिष्टपिंडादिनेति अतोब्रह्मीभूतपितृकेणापिश्राद्धंकार्यं तत्रपितृपितामहप्रपितामहादिरूपमेकैकंपार्वणंवसुरुद्रादित्यादिभेदेनध्येयं एकोद्दिष्टंवसुरूपेणेतिसर्वत्र केचित्तुपितृपितामहप्रपितामहाःप्रद्युम्नसंकर्षणवासुदेवात्मनाध्येयाः कर्तानिरुद्धात्मनेत्याहुः एवमरुणप्रजापत्यग्निरूपेणक्वचित् क्वचिन्मासऋतुवत्सररूपेणेति तत्रयथाचारंसमुच्चयेविकल्पेनवाध्यानमितिव्यवस्था पित्रादिपार्वणंयत्रतत्रमातामहादयः सर्वत्रैवहिकर्तव्यानाब्दिकेमासिकेषुनमासिकेषुत्वाब्दिकेचत्रिदैवत्यंप्रकीर्तितं वृद्धौतीर्थेन्वष्टकासुगयायांचमहालये त्रिपार्वणकमत्रेष्टंशेषंषाट्पौरुषंविदुः सपत्नीकंपित्रादित्रयंसपत्नीकंमातामहादित्रयमितिषाट्पौरुषत्वं क्षयाहंवर्जयित्वैकंस्त्रीणांनास्तिपृथक्क्रिया अन्वष्टकासुवृद्धौचगयायांचक्षयेहनि अत्रमातुःपृथक्श्राद्धमन्यत्रपतिनासह ॥

पुत्र आदिकोंनें पिता, माता आदियोंके उद्देशकरके करनेका जो श्राद्ध तिसके नाम, गोत्र और मंत्र ये वह वह अन्न तिन पितरोंकों ले जाके देते हैं. तहां पिता आदि देवरूपी होवैं तौ वह अन्न अमृतरूप होके तिस स्थानमें तिन्होंकों प्राप्त होता है. गंधर्वरूपी होवैं तौ भोग्यरूपसें, पशुरूपी होवैं तौ तृणरूपसें, सर्परूपी होवैं तौ वायुरूपसें, यक्षरूपी होवैं तौ पानरूपकरके, दानव आदिरूपी होवैं तौ मांसरूपकरके, प्रेतरूपी होवैं तौ रक्तरूपकरके और मनुष्यरूपी होवैं तौ अन्न आदि रूपकरके, इस रीतिसें तिस तिस स्वरूप करके, तिस तिस स्थानमें प्राप्त होता है. दूसरे ग्रंथमें—"श्राद्धकर्ताके पितर उपस्थित हुये श्राद्धकालकों सुनके परस्परोंका मनमें ध्यान करके मनके समान वेगवाले होके प्राप्त होते हैं. पीछे वायुरूपी वे पितर, श्राद्धकों आमंत्रित किये ब्राह्मणोंके संग भोजन करते हैं." इस हेतुसेंही श्रीरामचंद्रनें श्राद्ध किया तिस समयमें सीताजी ब्राह्मणोंविषे दशरथ आदिकों देखती भई ऐसी कथा सुनी है. "प्रावृट्ऋतु अर्थात् श्रावण और भाद्रपदके अंतमें धर्मराज अपने पुरकों शून्य करके प्रेतोंकों और पितरोंकों मनुष्यलोकमें भेजता है." पीछे वे पितर पुत्र आदिसें मधुयुक्त पायस प्राप्त होनेकी इच्छा करते हैं. कन्याराशिपर प्राप्त हुये सूर्यमें पितर पुत्रोंके समीप प्राप्त होते हैं. अमावसके दिनमें घरके द्वारका आश्रय करके श्राद्धप्रतीक्षा करते रहते हैं. पुत्रादिसें श्राद्ध नहीं किया जावै तौ तिसकों शाप देके अपने स्थानकों गमन करते हैं. इस

करणसें मूल, फल अथवा जलका तर्पण इन्होंकरके पितरोंकी तृप्ति करनी. श्राद्धकों वर्जित नहीं करना." श्राद्धकरके ब्रह्म आदिसें स्तंबपर्यंत सब प्राणियोंकी तृप्ति होती है ऐसा सुना है. तिहां पिशाच आदि रूपवालोंकी विकिर आदि करके तृप्ति होती है. वृक्ष आदिरूपवालोंकी तृप्ति स्नानोत्तर जो वस्त्रनिष्पीडनका जल आदि तिस्सें होती है. कितनेकोंकी तृप्ति उच्छिष्ट पिंड आदिसें होती है, इसलिये ब्रह्मीभूत पितृकनेंभी श्राद्ध करना. तिसमें पितृपितामहप्रपितामह आदिरूप एक एक पार्वण; वसु, रुद्र, आदित्य इन आदि भेदकरके चितवन करना योग्य है. अर्थात् पिता वसुरूपी, पितामह रुद्ररूपी, और प्रपितामह आदित्यरूपी ऐसा जानना. एकोद्दिष्टगणका वसुरूपकरके ध्यान करना, इस प्रकार सब जगह जानना. कितनेक ग्रंथकार तौ पिता, पितामह और प्रपितामह इन्होंका ध्यान प्रद्युम्न, संकर्षण और वासुदेव इन रूपोंसें करना, और कर्ता अनिरुद्धरूप है ऐसा कहते हैं. इसही प्रकार वरुण, प्रजापति, अग्नि इन्होंके रूपसें ध्यान करना ऐसा किसीक ग्रंथमें कहा है. किसीक ग्रंथमें मास, ऋतु, संवत्सर इन्होंके रूपकरके ध्यान करना ऐसा कहा है. तहां जैसा आचार होवै तिसके अनुसार समुच्चयकरके अथवा विकल्पकरके ध्यान करना, इस प्रकार व्यवस्था जाननी. "पिता इत्यादिक पार्वण जहां है तहां मातामहादिक पार्वणका उद्देश करना. आब्दिक और मासिक इन श्राद्धोंमें मातामहादिकोंका उद्देश नहीं करना. मासिकश्राद्धमें और आब्दिकश्राद्धमें तीन देवता कहे हैं. नांदीश्राद्ध, तीर्थश्राद्ध, अन्वष्टकाश्राद्ध, गयाश्राद्ध और महालयश्राद्ध इन्होंमें तीन पार्वण इष्ट हैं. अन्य श्राद्ध षाट्पौरुष कहे हैं." पत्नियोंसहित पिता आदि तीन और पत्नियोंसहित मातामह आदि तीन ये षाट्पौरुष कहाते हैं. "एक क्षयदिन वर्जित करके स्त्रियोंका पृथक् श्राद्ध नहीं है. अन्वष्टकाश्राद्ध, वृद्धिश्राद्ध, गयाश्राद्ध और क्षयदिन इन्होंमें माताका पृथक् श्राद्ध करना, अन्य जगह पतिके संग करना."

अथविश्वेदेवाः यत्रविशेषोनोच्यतेतत्रसर्वत्रपार्वणश्राद्धेपुरूरवार्द्रवसंज्ञकाविश्वेदेवाः काम्यश्राद्धेमहालयेचधूरिलोचनसंज्ञकाः नैमित्तिकेऽष्टकाख्याष्टमीश्राद्धेचकामकालसंज्ञकाः एकोद्दिष्टंसपिंडीकरणंवानैमित्तिकसंज्ञं नांदीश्राद्धेसत्यवसुसंज्ञकाः तत्रापिगर्भाधानपुंसवनसीमंतोन्नयनेतिसंस्कारत्रयांगमग्न्याधानसोमयागांगंचनांदीश्राद्धमिष्टिश्राद्धसंज्ञकं कर्मांग श्राद्धसंज्ञकंचतत्रक्रतुदक्षसंज्ञकाविश्वेदेवाः पार्वणद्वयाद्ययोर्जीवनान्मातृपार्वणकमेवंक्रियमाणंनांदीश्राद्धंदेवरहितंकार्यं एवंपार्वणत्रयस्याभिन्नत्वेनानुष्ठीयमानेनांदीश्राद्धेपिमातृपार्वणंदेवहीनं नांदीश्राद्धेहिदिनत्रयेक्रमेणपार्वणत्रयंकार्यं एकस्मिन्दिनेपृथक्पृथक्पार्वणत्रयंसहतंत्रेणपार्वणत्रयमितित्रयःपक्षाः नित्यश्राद्धंदेवरहितंकार्यं एवंसपिंडीकरणात्प्राक्तनान्येकोद्दिष्ट श्राद्धान्यपिदेवहीनानि इतिश्राद्धदेवतानिर्णयः ॥

अब विश्वेदेव कहताहुं.

जिस श्राद्धमें विशेष नहीं कहा होवै तहां सब जगह पार्वणश्राद्धमें पुरूरव और आर्द्रव इन नामोंवाले विश्वेदेवोंका ध्यान करना. काम्यश्राद्धमें और महालयश्राद्धमें धूरिलोचनसंज्ञक विश्वेदेव लेने. नैमित्तिकश्राद्ध, अष्टकाख्य अष्टमीश्राद्ध इन्होंमें कामकालसंज्ञक विश्वेदेव

लेने. एकोद्दिष्टश्राद्ध अथवा सपिंडीकरणश्राद्ध ये नैमित्तिकश्राद्ध होते हैं. नांदीश्राद्धमें सत्यवसुसंज्ञक विश्वेदेव लेने. तहांभी गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन इन तीन संस्कारोंके अंगभूत और अन्वाधान, सोमयाग इन्होंके अंगभूत ऐसे नांदीश्राद्ध, इष्टिश्राद्धसंज्ञक और कर्मोंके अंगभूतसंज्ञक नांदीश्राद्ध इन्होंमें ऋतुदक्षसंज्ञक विश्वेदेव लेने. पितृपार्वण और मातामहपार्वण इन दोनों पार्वणोंका पहला पुरुष जीवता होवै तब मातृपार्वणयुक्त जो करनेके योग्य नांदीश्राद्ध वह देवरहित करना. इस प्रकार पृथक् पृथक् पार्वण करके करनेका जो नांदीश्राद्ध तिसमें मातृपार्वण देवरहित करना. तीन दिन नांदीश्राद्धमें क्रमकरके तीन पार्वण करने. एकदिनमें अलग पार्वण अथवा बराबर तीन पार्वण अथवा एकतंत्रसें तीन पार्वण ऐसे तीन पक्ष कहे हैं. नित्यश्राद्ध करना होवै तौ वह देवरहित करना. इसी प्रकार सपिंडीकरणके पहले करनेके जो एकोद्दिष्टश्राद्ध वेभी देवरहित करने. ऐसा श्राद्धदेवतोंका निर्णय कहा.

अथश्राद्धेब्राह्मणाः तत्रजातकर्मादिसंस्कारैःसंस्कृतःसत्यवाक्शुचिः वेदाध्ययनसंपन्नःषट्सुकर्मस्ववस्थितः पुरुषत्रयविख्यातःसवैब्राह्मणउच्यते इतिब्राह्मणसामान्यलक्षणंतत्रोत्तममध्यमाधमभेदेनत्रिविधाब्राह्मणाः ॥

अब श्राद्धमें ब्राह्मण कहताहुं.

श्राद्धविषे “जातकर्म आदि संस्कारोंसें संस्कृत हुआ और सत्यवक्ता, पवित्र, वेदके पठनसें युक्त, षट्कर्मी, अर्थात् अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह इन्होंसें युक्त और पिता आदि तीन पुरुष हैं विख्यात जिसके ऐसा जो सो ब्राह्मण होता है. इस प्रकार ब्राह्मणका सामान्य लक्षण कहा. तहां उत्तम, मध्यम और अधम इन भेदोंसें तीन प्रकारके ब्राह्मण होते हैं.

तत्रोत्तमाः वेदाध्ययनसंपन्नावेदांगाध्यायिनोपिच येवैयाकरणायेचमीमांसाध्ययनेरताः पौराणिकश्चवेदांतीधर्मशास्त्ररतोपिच एतेषामपिचयेपुत्राब्रह्मवेत्तातथैवच वेदार्थज्ञःकर्मनिष्ठस्तपोनिष्ठश्चयोगिनः पितृमातृपरश्चैवस्वधर्मनिरतस्तथा शिशुरप्यग्निहोत्रीचसोमादिश्रौतकर्मवित् शिवभक्तोविष्णुभक्तोभार्यायामृतुकालगः गुरुभक्तोज्ञाननिष्ठःसोमयाजीचसत्यवाक् सुशीलस्नातकयतिब्रह्मचारिणउत्तमाः एतेसर्वेसपत्नीकायुवत्वादिगुणान्विताः सापिंड्ययोनिशिष्यत्वादिसंबंधैश्चवर्जिताः कुष्ठापस्मारादिदोषैर्हीनाश्चेदुत्तमाःस्मृताः तत्रदशाहादिसूतं[1]कादिप्रयोजकसापिंड्यसगोत्रसोदकत्वरूपसंबंधःसापिंड्यपदाभिधेयः योनिसंबंधोमातुलत्वश्वशुरत्वशालकत्वादिः आदिनागुरुत्वसहाध्यायित्वमित्रत्वादयः तथाचसपत्नीकत्वादिगुणयुक्ताउक्तसंबंधहीनाअपस्मारांधत्वादिदोषहीनावेदाध्यायित्वादिसप्तविंशतिप्रकाराविप्राउत्तमा इतिसिद्धं तत्रविशेषः यद्येकंभोजयेच्छ्राद्धेछंदोगंतत्रपूजयेत् ऋचोयजूंषिसामानित्रितयंतत्रविद्यते ऋग्वेदिनंचपित्रर्थेयाजुषंतुपितामहे [2]प्रपितामहेसामगंचभोजयेच्छ्राद्धकर्मणि अथर्ववेदिनंवैश्वदेवेपित्र्येचभोजयेत् एतेनस्वशाखीयद्विजाभावेद्विजानन्यान्निमंत्रयेदितिनिरस्तं के

---

[1] आदिपदात्स्नानं। [2] भोजयेच्छ्राद्धयज्ञेषुसामगंप्रपितामहे ।

चिद्यथाकन्यातथाहविरितिनियमात्यैःसहयोनिसंबंधस्तएवपरशाखीयाः श्राद्धार्हाइत्याहुस्तन्निर्मूलं केचिच्छ्राद्धकर्तृसगोत्रसप्रवरावर्ज्याः पितृपुत्रौभ्रातरौद्वौनिरग्निंगुर्विणीपतिं सगोत्रप्रवरंचैववर्जयेच्छ्राकर्मणीतिवचनादित्याहुः विनामांसेनमधुनाविनादक्षिणयाशिषा परिपूर्णंभवेच्छ्राद्धंयतिषुश्राद्धभोजिषु इतियतिप्रशंसा ॥

तिन्होंमें उत्तम ब्राह्मण कहे जाते हैं—वेदके अध्ययनसें संयुक्त, वेदोंके अंगोंकों पढनेवाला, व्याकरणशास्त्र पढनेवाला, मीमांसाशास्त्र पढनेवाला, पुराण जाननेवाला, वेदांती, धर्मशास्त्र जाननेवाला ऐसे और इन्होंके पुत्र, ब्रह्मवेत्ता, वेदका अर्थ जाननेवाला, कर्ममें निष्ठावाला, तपमें निष्ठावाला, योगी, पिता और माताकी सेवा करनेवाला, अपने धर्ममें आसक्त, अवस्थासें बालकभी होवै परंतु अग्निहोत्री, सोम आदि श्रौतकर्म जाननेवाला, शिवभक्त, विष्णुभक्त, स्वभार्यामें ऋतुकालविषे भोग करनेवाला, गुरुभक्त, ज्ञाननिष्ठ, सोमयज्ञ करनेवाला, सत्यवक्ता, सुशील, स्नातक, संन्यासी और ब्रह्मचारी ये सब उत्तम हैं. ये सब पत्नियोंसहित और जुवानपना आदि गुणसें संयुक्त होके सापिंड्यसंबंध, योनिसंबंध, और शिष्यत्वसंबंध इन्होंकरके वर्जित, और कुष्ठ, मृगीरोग इन आदि दोषोंसें जो हीन होवैं वे उत्तम कहे हैं. तहां दशाहादिक अर्थात् जननाशौच और मृताशौच इन्होंकों कारण ऐसा जो सापिंड्यसगोत्रसोदकत्वरूपी संबंध सो सापिंड्यसंबंध होता है. मामापना, शुशरापना और श्यालापना इत्यादिरूपी जो संबंध सो योनिसंबंध होता है. यहां आदिशब्दकरके गुरुत्व, सहाध्यायित्व और मित्रत्व इन आदिका ग्रहण करना. इस प्रकार विचार किया जावै तौ सपत्नीकपना आदि गुणसें युक्त और उक्त संबंधसें हीन, मृगीरोग और अंधापना इन आदि दोषोंसें हीन, वेद पढनेवाला, आदि सत्ताईस प्रकारके ब्राह्मण उत्तम होते हैं, ऐसा सिद्ध हुआ है. **तहां विशेष**—“ जो श्राद्धमें एक ब्राह्मण आमंत्रित कराना होवै तौ अथर्वणवेदी निमंत्रित करना. क्योंकी, तिस ब्राह्मणमें ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद ये तीनों विराजमान हैं. पिताके स्थानमें ऋग्वेदी ब्राह्मणकों, पितामहके स्थानमें यजुर्वेदी ब्राह्मणकों और प्रपितामहके स्थानमें सामवेदी ब्राह्मणकों श्राद्धकर्मविषे भोजन करवाना. अथर्वणवेदी ब्राह्मणकों विश्वेदेव और पितर इन स्थानोंमें स्थापन करना. इसकरके अपनी शाखाके ब्राह्मणोंके अभावमें अन्य ब्राह्मणोंकों निमंत्रित करना ऐसा जो मत है वह खंडित हुआ. कितनेक ग्रंथकार, “ जैसी कन्या तैसा हवि ” ऐसा नियम है इसलिये जिन्होंके साथ योनिसंबंध होता है वेही परशाखी श्राद्धकों योग्य हैं ऐसा कहते हैं सो निर्मूल है. कितनेक ग्रंथकार, श्राद्धकर्ताके सगोत्री और समानप्रवरवाले वर्जित करने; “ पिता और पुत्र, दोनों भाई, निरग्निक, गर्भिणीपति, सगोत्री, समानप्रवरवाला ये श्राद्धकर्ममें वर्जित करने ” ऐसा वचन होनेसें कहते हैं. “ श्राद्धमें संन्यासी भोजन करै तौ मांस, शहद, दक्षिणा और आशीर्वाद इन्होंके विनाभी श्राद्ध परिपूर्ण होता है. ” इस प्रकार संन्यासीकी प्रशंसा जाननी.

अथमध्यमाविप्राः मातामहोमातुलोभागिनेयोदौहित्रोजामातागुरुः शिष्योयाज्यःश्वशुरऋत्विक्शालकःपितृष्वसृपुत्रोमातृष्वसृपुत्रोमातुलपुत्रोतिथिः सगोत्रोमित्रमित्येतेमध्यमाः दौहित्रजामातृस्वस्त्रीयादीनांविद्यादिगुणवतांश्राद्धेनिमंत्रणाभावेदोषः गुणहीनत्वेतुनदोषः

षड्भ्यस्तुपुरुषेभ्योर्वाक्श्राद्धार्हानैवगोत्रिणः षड्भ्यस्तुपरतोभोज्याअलाभेगोत्रजाअपि अत्र विशेषः ऋत्विजःसपिंडाःसंबंधिनःशिष्याश्चवैश्वदेवस्थानेनियोज्यानतुपित्र्ये एवमन्येपिविगुणाविप्रादेवस्थानेयोज्याः पितापितामहोभ्रातापुत्रोवाथसपिंडकाः नपरस्परमर्घ्याःस्युर्नश्राद्धे ऋत्विजस्तथा वैश्वदेवेनियोक्तव्यायद्येतेगुणवत्तराः ॥

अब मध्यम ब्राह्मण कहताहुं.—मातामह, मामा, भानजा, धेवता, जमाई, गुरु, शिष्य, यजमान, शुशरा, ऋत्विक्, शाला, पिताकी बहनका पुत्र, माताकी बहनका पुत्र, मामाका पुत्र, अतिथि अर्थात् अभ्यागत, सगोत्री अर्थात् अपने गोत्रवाला और मित्र ये मध्यम ब्राह्मण हैं. धेवता, जमाई, भाजना इन आदि विद्या और गुणसें युक्त होवैं और तिन्होंकों श्राद्धमें निमंत्रण नहीं किया जावै तौ दोष लगता है. ये तीनों गुणहीन होवैं तौ दोष नहीं है. "छह पीढीवाले सगोत्री श्राद्धमें निमंत्रणके योग्य नहीं हैं, दूसरे गोत्रवाले नहीं मिलैं तब छह पीढीसें परे सगोत्रीकों निमंत्रण देना." **यहां विशेष**—ऋत्विक्, सपिंड, संबंधी और शिष्य ये विश्वेदेवोंके स्थानमें युक्त करने. पितरोंके स्थानमें नहीं योजने. इस प्रकार दूसरेभी गुणहीन ब्राह्मण विश्वेदेवोंके स्थानमें योजने. "पिता, पितामह, भाई अथवा पुत्र, सपिंडक" ये आपसमें पूजनेके योग्य नहीं हैं. अर्थात् श्राद्धमें योग्य नहीं हैं. ऐसेही ऋत्विजभी श्राद्धमें पूज्य नहीं हैं. जो ये अत्यंत गुणवान् होवैं तौ विश्वेदेवोंके स्थानमें योजने.

अथवर्ज्याविप्राः क्षयश्वासमूत्रकृच्छ्रभगंदरादिमहारोगीहीनांगोधिकांगःकाणोबधिरोमूकःशत्रुः कितवोभृतकाध्यापकोमित्रद्रोहीपिशुनःकुनखीकृष्णदंतः क्लीबोमातापितृगुरुत्यागी चोरोनास्तिकःपापकर्माविहितकर्मत्यागी नक्षत्रोपजीवीवैद्योराजभृत्योगायकोलेखकःकुसीदजीवीवेदविक्रयीकवित्वजीवीदेवार्चनजीवीनटोगृहदाहीसमुद्रगामीशस्त्रकर्ता सोमविक्रयीपक्षिपोषकःपरिवेत्तादिधिषूपतिः कुमाराध्यापकःपुत्रात्प्राप्तविद्योद्रव्यप्राप्त्यर्थंवेदघोषकारीग्रामयाजीकेशपशुविक्रयीशिल्पीपित्रातिवादकारी शूद्रयाजकोजटीश्मश्रुहीनोनिर्दयोरजस्वलापतिर्गर्भिणीपतिः कुब्जोवामनोरक्तनेत्रोवाणिज्योपजीवीछिन्नोष्ठश्छिन्नलिंगोगडुमान्ज्वरितोदेवलकोविधुरोनिरग्निःशूद्रगुरुः शूद्रशिष्योदांभिकोगोविक्रयीरसविक्रयीवेदनिंदकोवृक्षरोपकःसदायाचकः कदर्यःकृषिजीवीसाधुनिंदितोमेषमाहिषपोषकःकपिलकेशोविस्मृतवेदोनिष्ठुरवागित्यादयोविप्राहव्यकव्ययोर्वर्ज्याः धर्मार्थमुदरार्थंवौषधकारीविगर्हितः देवार्चनपरोनित्यंवित्तार्थीवत्सरत्रयम् असौदेवलकोनामदेवस्वग्राहकोपिच वर्जनीयःसविज्ञेयःसर्वकर्मसुसर्वदा इदंमनुष्यस्थापितदेवताविषयमितिभाति दाराग्निहोत्रसंयोगंकुरुतेयोग्रजेस्थिते परिवेत्तासविज्ञेयःपरिवित्तिस्तुअग्रजः अग्रजानुज्ञादौनदोषइत्युक्तम् ज्येष्ठायांयद्यनूढायांकन्यायामूह्यतेनुजा साचाग्रेदिधिषुर्ज्ञेयापूर्वातुदिधिषुर्मता प्रतिमाविक्रयंयोवैकरोतिपतितस्तुसः जीवनार्थंपरास्थीनिनयतेपतितःसच गाननृत्यादिकमुदरार्थंनिषिद्धंनतुभगवदर्थम् ॥

अब वर्जनेके योग्य ब्राह्मण कहताहुं.—क्षय, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, भगंदर इन आदि महारोगोंसें युक्त; हीन अंगवाला; अधिक अंगवाला; काणा; बहिरा; गूंगा; वैरी; जुवारी; द्रव्य लेके पढानेवाला; मित्रद्रोही; निंदक; कुत्सित नखोंवाला; काले दंतोंवाला; हीजडा;

माता, पिता, गुरु इन्होंकों त्यागनेवाला; चोर; नास्तिक; पापकर्म करनेवाला; स्नानसंध्या आदि कर्मकों त्यागनेवाला; नक्षत्रविद्यासें उपजीविका करनेवाला; वैद्य; राजाका नौकर; गान करनेवाला; लिखनेवाला; व्याज लेनेवाला; वेद बेचनेवाला; कविता करके उपजीविका करनेवाला, देवताकी पूजासें उपजीविका करनेवाला; नट अर्थात् तमासा करनेवाला; घरकों जलानेवाला; समुद्रमें गमन करनेवाला; शस्त्र बनानेवाला; सोम बेचनेवाला; पक्षियोंकों पालनेवाला; परिवेत्ता; दिधिषूपति; बालकोंकों पढानेवाला; पुत्रसें विद्या पढनेवाला; धनकी प्राप्तिके अर्थ वेदका घोष करनेवाला; ग्रामका कर्मकर्ता पंडित; बाल और पशुकों बेचनेवाला; शिल्पकर्म करनेवाला; पितासें अत्यंत वाद करनेवाला; शूद्रके होम आदि करनेवाला; जटावाला; डाढीमूछसें हीन; दयासें रहित; रजस्वला हुई स्त्रीका पति; गर्भिणी स्त्रीका पति; कूबडा; वामना; लाल नेत्रोंवाला; व्यापार करनेवाला; कटा हुआ होठवाला; कटा हुआ लिंगवाला; गडुमान; ज्वरवाला; देवलक; जिसकी स्त्री मर गई होवै ऐसा; निरग्निक; शूद्रका गुरु; शूद्रका शिष्य; पाखंडी; गायोंकों बेचनेवाला, रस बेचनेवाला; वेदकी निंदा करनेवाला; वृक्षोंकों लगानेवाला; सब काल याचना अर्थात् मांगनेवाला; कृपण; खेती करनेवाला; साधुसें निंदित; मेंढा और भैंसा इन्होंकों पालनेवाला; पीले बालोंवाला; वेदकों भूलनेवाला; बकवाद करनेवाला इन आदि ब्राह्मण देवकर्ममें और पितृकर्ममें वर्जित करने. “धर्मके अर्थ अथवा अपनी उपजीविकाके अर्थ औषधि करनेवाला ब्राह्मण निंदित होता है.” धनके अर्थ तीन वर्षतक देवताकी पूजा करनेवाला और देवताके द्रव्यकों लेनेवाला देवलक होता है. यह देवलक सब कर्मोंमें और सब कालमें वर्जित करना,” यह वचन मनुष्यनें स्थापित किये देवतोंके विषयमें है ऐसा लगता है. “बडा भाई अविवाहित और निरग्निक होके जो छोटा भाई विवाह और अग्निहोत्र धारण करता है वह परिवेत्ता और बडा भाई परिवित्ति जानना.” “बडे भाईकी आज्ञा लेके विवाह करनेमें दोष नहीं है ऐसा कहा है.” “बडी बहनके विवाहके पहले जिस छोटी बहनका विवाह होवै वह छोटी बहन अग्रेदिधिषु होती है, और बडी बहन दिधिषु होती है.” “जो मनुष्य मूर्तिकों बेचता है वह पतित जानना. और उपजीविकाके अर्थ दूसरेकी हड्डियोंकों ले जाता है वहभी पतित जानना.” उपजीविकाके अर्थ गाना और नाचना आदि निषिद्ध हैं, भगवान्‌की प्रीतिके अर्थ निषिद्ध नहीं है.

अत्रविप्राणांग्राह्यत्वोक्त्यैवतद्भिन्नानांवर्ज्यत्वेसिद्धे पुनर्वर्ज्यपरिगणनंवर्ज्यभिन्नानांनिर्गुणानामपिग्राह्यत्वार्थम् विद्याशीलादिगुणवत्त्वेकुष्ठित्वकाणत्वादिशारीरदोषाणांनदूषकत्वम् गयायांतुनिर्गुणाअपितेएवभोज्याः नविचार्यंकुलंशीलंविद्याचतपएवच पूजितैस्तैस्तुसंतुष्टादेवाःसपितृगुह्यकाइत्युक्तेः ब्राह्मणान्नपरीक्षेततीर्थेक्षेत्रनिवासिनः यत्तुनब्राह्मणंपरीक्षेतदैवेकर्मणिधर्मवित् पित्र्येकर्मणितुप्राप्तेपरीक्षेतप्रयत्नतइतितदसंभवपरम् गायत्रीसारमात्रोपिवरंविप्रःसुयंत्रितः नायंत्रितश्चतुर्वेदीसर्वाशीसर्वविक्रयीतिहेमाद्रौव्यासः श्राद्धेकाणादयोभोज्यामिश्रितावेदपारगैः विप्रानिमंत्रणात्पूर्वमेवपरीक्षणीयानतुनिमंत्रणोत्तरम् इतिब्राह्मणविचारः ॥

इस जगह ग्राह्य ब्राह्मणोंके विषयमें जो उक्ति है तिसकरकेही तिन्होंसें भिन्न ब्राह्मणोंको वर्ज करने ऐसा सिद्ध होनेमेंभी फिर वर्जनेके योग्य ब्राह्मणोंकी गणना जो है सो वर्ज ब्राह्म-

णोंसें भिन्न जो निर्गुण ब्राह्मण हैं तिन्होंके ग्रहणके अर्थ है. विद्या, शील, आदि गुणोंसें युक्त ब्राह्मण कुष्ठी और काणा और दुर्बल ऐसाभी होवै तबभी दोष नहीं है. गयाजीमें तौ गुणसें रहितभी तहांके ब्राह्मण हैं परंतु वेही भोजन करानेके योग्य हैं. "कुल, शील, विद्या, तप इन्होंका विचार नहीं करना. गयाजीमें वसनेवाले ब्राह्मणोंकी पूजा करनेसें देवता, पितर और गुह्यक इन्होंकेसह देव प्रसन्न होते हैं" ऐसा वचन हैं. इसलिये तीर्थविषे क्षेत्रमें रहनेवाले ब्राह्मणोंकी परीक्षा नहीं करनी. "देवकर्ममें धर्मज्ञ मनुष्यनें ब्राह्मणकी परीक्षा नहीं करनी, पित्र्यकर्ममें यतनसें ब्राह्मणकी परीक्षा करनी." यह वचन असंभवविषयक है. आचारसंपन्न होके केवल गायत्रीमंत्र जाननेवाला ब्राह्मण उत्तम है. चार वेदोंकों जाननेवाला होके सब पदार्थोंकों खानेवाला और सब पदार्थोंकों बेचनेवाला और आचारसें रहित ऐसा ब्राह्मण उत्तम नहीं है." ऐसा **हेमाद्रि** ग्रंथमें व्यासजीका वचन है. वेदपारग ब्राह्मणोंसें मिश्रित हुये काणा आदि ब्राह्मणोंकों श्राद्धमें भोजन कराना. श्राद्धका निमंत्रण देनेके पहले ब्राह्मणोंकी परीक्षा करनी, निमंत्रणके उपरंत ब्राह्मणकी परीक्षा नहीं करनी. ऐसा ब्राह्मणोंका विचार समाप्त हुआ.

अथश्राद्धार्हद्रव्याणि तत्रदर्भाःदर्भग्रहणेकालोमंत्रोदर्भभेदाश्चद्वितीयपरिच्छेदेउक्ताःविशेषस्तूच्यते कुशामुख्याःकुशाभावेकाशदूर्वोशीरतृणादयः तत्रकाशैर्दूर्वाभिर्वाकृतपवित्रहस्तोनाचामेत् द्वाभ्यामनामिकाभ्यांतुधार्येदर्भपवित्रके एकानामिकयावापिद्वयोर्मध्येतुपर्वणोः साग्रौविगर्भौतुकुशौकार्यंताभ्यांपवित्रकम् द्वाभ्यांयत्स्याच्चतुर्भिर्वाग्रंथियुक्तंनवाभवेत् स्नानेदानेजपेहोमेस्वाध्यायेपितृकर्मणि सपवित्रौसदर्भौवाकरौकुर्वीतनान्यथा ब्रह्मग्रंथिपवित्राढ्योनाचामेच्चबुधःसदा केचिद्ग्रंथितपवित्राभावेसाग्रदर्भौद्वौदक्षिणकरेवामेतुत्रीन्द्वौवाबिभृयादित्याहुः आसनेद्वौदर्भौ पितृकर्मणिसमूलाद्विगुणादर्भाः दैवेसाग्राऋजवः पित्र्येपिसपिंडीकरणपर्यंतमृजुदर्भास्तदूर्ध्वंद्विगुणाभुग्नाइति येचपिंडाश्रितादर्भायैःकृतंपितृतर्पणं मलमूत्रोत्सर्गेधृतामलमूत्राद्यमेध्यगाः मार्गेचितौयज्ञभूमौस्थितायेस्तरणासने ब्रह्मयज्ञेचयेदर्भास्त्यागार्हाः सर्वएवते अन्यानिचपवित्राणिकुशदूर्वात्मकानिच हेमात्मकपवित्रस्यकलांनार्हंतिषोडशीं पंचगुंजमाषमानेनषोडशमाषंहेममयंपवित्रकमित्याहुः ॥

अब श्राद्धके योग्य द्रव्योंकों कहताहुं.

तहां प्रथम डाभ कहताहुं.—डाभकों ग्रहण करनेविषे काल, मंत्र और डाभोंके भेद दूसरे परिच्छेदमें कुशग्रहणमें अमावसके प्रकरणमें कहे हैं. यहां विशेष मात्र कहताहुं—कुश मुख्य हैं. कुशके अभावमें काश, दूर्वा, खसतृण इत्यादिक ग्रहण करने. तिन्होंके मध्यमें काश अथवा दूर्वाके पवित्रे हाथमें धारण करके आचमन नहीं करना. दोनों अनामिका अंगुलियोंमें दो डाभोंके पवित्रे धारण करने अथवा एक अनामिकाके स्थानमें पवित्रा दो पर्वोंके मध्यभागमें धारण करना. जिन्होंके गर्भमें अन्य दल नहीं होवै ऐसे अग्रभागसहित दो कुश लेके तिन्होंके पवित्रे करने. दो कुशोंके अथवा एक कुशके ग्रंथिसेंयुक्त किंवा ग्रंथिसें विरहित ऐसे पवित्रे बनाने. स्नान, दान, जप, होम, ब्रह्मयज्ञ, और पितृकर्म ये कर्म करने होवैं

तब दोनों हाथोंमें पवित्रे अथवा डाभ धारण करने. डाभके विना कर्म नहीं करना. जाननेवाले पुरुषनें ब्रह्मग्रंथिसें युक्त पवित्रेकों हाथमें धारण करके आचमन नहीं करना. कितनेक ग्रंथकार, ग्रंथियुक्त पवित्रा नहीं होवै तौ अग्रभागसहित दो डाभोंकों दाहिने हाथमें और वाम हाथमें तीन किंवा दो डाभ धारण करने ऐसा कहते हैं. आसनमें दो डाभ, पितृकर्ममें मूलसहित द्विगुण डाभ लेना. दैवकर्ममें अग्रभागसहित और सरल ऐसे डाभ लेने. पितृकर्मविषेभी सपिंडीकरणपर्यंत सरल डाभ लेने. सपिंडीकरण हुए पीछे द्विगुणभुग्न अर्थात् दोवार मोडे हुये डाभ लेने. “ पिंडप्रदान किये हुए डाभ, जिन डाभोंसें पितरोंका तर्पण किया गया होवै वे डाभ, मलमूत्रके त्यागनेमें धारण कियेसें अशुद्ध हुए ऐसे और मलमूत्र आदिसें अशुद्ध हुए ऐसे और रास्ता, चिता, यज्ञभूमि इन्होंमें बिछाये हुये डाभ; परिस्तरण और आसनके स्थानमें बिछाये हुये, ब्रह्मयज्ञमें वर्ते हुये ऐसे डाभ त्यागनेयोग्य हैं. कुश और दूर्वाके बने पवित्रे सोनाके पवित्राकी सोलहमी कलाकों प्राप्त नहीं होते हैं अर्थात् सब प्रकारके डाभके पवित्रोंसें सुवर्णका पवित्रा श्रेष्ठ है. ” पांच चिरमठियोंका मासा इस प्रमाणसें सोलह मासे सोनाका पवित्रा चाहिये ऐसा कहते हैं.

अथहविः व्रीहियवतिलमाषगोधूमश्यामाकप्रियंगुमुद्गसर्षपाःश्राद्धेप्रशस्ताःचणकोविकल्पितः यावनालोपिविकल्पितः इष्टापूर्तेमृताहेचदर्शवृद्धयष्टकासुच पात्रेभ्यस्त्वेषुकालेषुदेयंनैवकुभोजनं अगोधूमंचयच्छ्राद्धंमाषमुद्गविवर्जितं तैलपक्केनरहितंकृतमप्यकृतंभवेत् राजमाषाश्चनिष्पावाअपिशस्ताःसतीनकाः राजमाषामहाराष्ट्रभाषयाचवळीतिप्रसिद्धाःनिष्पावाः पावटेइति सतीनकावाटाणेइतिकदलीफलमाम्रफलंसूरणःपनसःत्रिविधंकर्कटीफलं कोशातकीदोडकाइतिप्रसिद्धा कुस्तुंबुरुवैकल्पिकं पटोलंबदरमामलकंखर्जूरीफलंचिंचार्द्रकंशुंठीमूलकंद्राक्षालवंगैलापत्रकाणिजीरकंहिंगुदाडिमफलमिक्षुःशर्करागुडःकर्पूरःसैंधवसामुद्रेलवणेपूगीफलंतांबूलपत्रमितिश्राद्धेप्रोक्तानिहवींषिगव्येदधिदुग्धेघृतंगव्यंमाहिषंच केचित्माहिषंतक्रंसद्यःकृतमनुद्धृतनवनीतंग्राह्यमाहुः केचिन्महिषीक्षीरंशर्करादियुतंग्राह्यमाहुः मथितं निर्जलंदधिसर्वंनिषिद्धं जंबीरफलंविहितप्रतिषिद्धत्वाद्विकल्पितं अक्षोटअक्रोडइतिप्रसिद्धः शृंगाटकःशिंगाडेइतिप्रसिद्धः चिर्भटंखर्बुजइतिप्रसिद्धं शीतकंदलीराताळीतिप्रसिद्धं एते श्राद्धेविहिताः आंम्रातकआंबाडाइतिप्रसिद्धस्तंडुलीयोमाठइतिप्रसिद्धः एतौद्वौविहितप्रतिषिद्धौ केचिद्राजमाषंकृष्णेतरमुद्गंकृष्णनिष्पावंचनिषिद्धमाहुः कथंचिद्यदिविप्रेभ्योनदत्तंभोजनेमधु पिंडास्तुनैवदातव्याःकदाचिन्मधुनाविना अक्षतागोपशुश्चैवश्राद्धेमांसंतथामधु देवराच्चसुतोत्पत्तिःकलौपंचविवर्जयेदितिवचनद्वयान्मधुनिऐच्छिकविकल्पः केचिद्यथाचारं प्रदेयंतुमधुमांसादिकंतथेतिवचनाद्देशाचारानुसारेणव्यवस्थितविकल्पमाहुः मांसंश्राद्धेषुनैव देयंकलिवर्ज्यत्वात् नदद्यादामिषंश्राद्धेनचाद्याद्धर्मतत्त्वविदित्यादिश्रीभागवतवचनाच्च अन्यानिमुंजातचव्यकसेरुकालेयानिद्रव्याणिबहूनिमहानिबंधेषूक्तानितान्यप्रसिद्धत्वाच्छ्राद्धेवश्यापेक्षोपयोगयोरभावाच्चनोच्यंते ॥

अब हवि अर्थात् श्राद्धमें शुद्ध पदार्थ कौनसे हैं तिन्होंकों कहताहुं.

व्रीहि, जव, तिल, उडद, गेहूं, शामक, कांगनी, मूंग, सरसों, ये पदार्थ श्राद्धमें श्रेष्ठ हैं. चना विकल्पसें प्रशस्त हैं. ज्वार अन्न भी श्राद्धमें विकल्पसें प्रशस्त है. ' इष्टापूर्त अर्थात् बावडी, कूवा आदिका उत्सर्ग, मृतदिन, दर्शश्राद्ध, वृद्धिश्राद्ध, अष्टकाश्राद्ध इन्होंमें ब्राह्मणोंके अर्थ निंद्य पदार्थका भोजन निश्चयसें नहीं देना. जिस श्राद्धमें गेहूं, उडद, मूंग और तेलसें पक्क हुए पदार्थ इन्होंका अभाव होवै तौ किया हुआभी श्राद्ध व्यर्थ हो जाता है. राजमाष, निष्पाव तथा सतीनक येभी श्रेष्ठ हैं." राजमाषकों महाराष्ट्र भाषामें चौली कहते हैं. निष्पावकों पावटे अर्थात् मोठ कहते हैं. सतीनककों मटर कहते हैं. केलीका फल, आंबका फल, जमीकंद, फनस, तीन प्रकारकी काकडी, कडु वीतोरी ऐसा प्रसिद्ध है. कोथिंबीर, ये सब पदार्थ श्राद्धमें श्रेष्ठ हैं अथवा नहीं हैं. परवल, आंवलाफल, बेर, खजूर, अमली, अदरक, सूंठ, सफेत मूली, द्राख, लौंग, इलायची, तेजपात, जीरा, हींग, अनार, ईख, खांड, गुड, कपूर, सेंधानमक, समुद्रोत्पन्न नमक, सुपारी, नागरपान, ये पदार्थ श्राद्धमें उत्तम कहे हैं. गायका दही और दूध, गायका और भैंसका घृत ये पदार्थ श्राद्धमें श्रेष्ठ हैं. कितनेक पंडित तत्काल बनाया हुआ और जिसमांहसें नौनी नहीं निकासा ऐसा भैंसका तक्रभी ग्रहण करनेकों योग्य है ऐसा कहते हैं. कितनेक ग्रंथकार भैंसका दूध खांड आदि डालके लेना ऐसा कहते हैं. जलसें रहित मथित ऐसा सब प्रकारका दही निषिद्ध है. जंबीरी नींबू श्राद्धमें विहित अथवा निषिद्ध है इस करके विकल्प जानना. खिरोट, सिंगाडा, खर्बूजा, रातालु ये पदार्थ श्राद्धमें योग्य हैं. आंबाडा अर्थात् अंबरख, चौलाई ये दोनों पदार्थ श्राद्धमें विहित और निषिद्ध जानने. कितनेक ग्रंथकार चौला, काले मूंगोंसें अन्य मूंग और काले मोठ ये पदार्थ निषिद्ध होते हैं ऐसा कहते हैं. "जो कभी श्राद्धविषे भोजनमें ब्राह्मणोंको शहद नहीं दिया होवै तौभी शहदके विना पिंडोंका दान कभीभी नहीं करना." "अक्षता कन्या, गोरूप पशु, श्राद्धमें मांस और शहद और देवरसें पुत्रकी उत्पत्ति ये पांच कर्म कलियुगविषे वर्जित करने योग्य हैं" ऐसे दो वचन हैं, इसवास्ते शहदके विषयमें इच्छाप्राप्त विकल्प है. कितनेक ग्रंथकार, जैसा अपना आचार होवै तिसके अनुसार शहद और मांस आदि देना " ऐसा वचन होनेसें देशाचारके अनुसार करके व्यवस्थित विकल्प है ऐसा कहते हैं. श्राद्धोंमें मांस नहीं देना, क्योंकी, मांस कलियुगमें वर्जित किया है. " धर्मको जाननेवाले मनुष्यनें श्राद्धमें मांस नहीं देना और भक्षणभी नहीं करना " ऐसा श्रीमद्भागवतमें वचन कहा है. खारा राना जमीकंद, वच, कसेरु, कालेय इन आदि बहुत पदार्थ बडे निबंध ग्रंथोंमें कहे हैं; परंतु वे अप्रसिद्ध हैं और श्राद्धमें अवश्य उपयोगी नहीं हैं इस कारणसें नहीं कहे हैं.

अथवर्ज्यानि यद्यपिविहितोक्त्यैवतद्भिन्नानामग्राह्यत्वंप्राप्तंतथापिविशेषदोषप्रदर्शनायाप्राप्तनिषेधज्ञापनायचतानिसंग्रह्यंते उत्कोचादिनाप्राप्तंपतितात्यजादेःप्राप्तमन्यायार्जितंकन्याविक्रयादिलब्धंधनंनिंद्यं पित्रर्थंमेदेहीतियाचनार्जितमपिनिषिद्धं आढकीकुलित्थमसूरकोद्रव

राजसर्षपानिषिद्धाः लांकेतिप्रसिद्धाः मर्कटकाश्चवर्ज्याः शिग्रुकूष्मांडोभयविधालाबुकरमर्दार्द्रमरीचपिंडमूलककुसुंभशणवंशांकुराः दशविधालशुनादिपलांडुभेदाः कृत्रिमलवणानि रक्तबिल्वंश्वेतंकृष्णंवृंताकंगाजरापरपर्यायंगृंजनं भोकरसंज्ञःश्लेष्मातकोरक्तनिर्यासाश्चवर्ज्याः सामुद्रसैंधवेभक्ष्येप्रत्यक्षंलवणेबुधैः बिडालोच्छिष्टमाघ्रातंश्राद्धेद्रव्यंविवर्जयेत् करीरफलपुष्पाणिविडंगमरिचानिच बीजपूरंपटोलंचश्राद्धेदत्वापतत्यधः कृष्णधान्यानिसर्वाणिवर्जयेच्छ्राद्धकर्माणि नवर्जयेत्तिलांश्चैवमुद्गमाषांस्तथैवच दातुर्यद्यत्प्रियंतत्तद्देयंनिंद्यंनचेद्धितं अजाविमहिषीक्षीरंतद्विकारांश्चवर्जयेत् वालुकाकीटपाषाणैःकेशैर्यच्चाप्युपद्रुतं वस्त्रेणवीजितंचान्नं वर्जयेच्छ्राद्धकर्मणि अमेध्यैर्जंगमैःस्पृष्टंशुष्कंपर्युषितंचयत् द्विःपक्कंपरिदग्धंचासिद्धभक्ष्यांश्चवर्जयेत् यत्सकृत्पाकेनभक्षणार्हमपिहिंगुजीरकादिसंस्कारार्थंपुनःपच्यतेतद्द्विःपक्कंवर्ज्यं यत्तुद्विःपाकेनैवभक्षणार्हंतन्ननिषिद्धमितिसिंधुः यदन्नैकदेशःकेनचित्पूर्वमास्वादितस्तदन्नंश्राद्धेवर्ज्यं मारीषंराजगिरेतिप्रसिद्धंशाकंधान्यंचवर्ज्यं वटप्लक्षोदुंबरकपित्थनीपमातुलिंगफलानिनभक्षयेत् क्षीरंचलवणैर्मिश्रंताम्रेगव्यंसुरासमम् अस्यापवादः पयोनुद्धृतसारंचपयसा संयुतंदधिघृतंचैतानिगव्यानिनैवदुष्टानिताम्रके पिप्पलीवर्तुलमरीचादेःप्रत्यक्षस्यनिषेधोनत्वन्यद्रव्यमिश्रितस्यनारिकेलंविहितप्रतिषिद्धंयच्चपौतिकशाकादिकंजीर्णतक्रंसंधिन्यादिक्षीरमनिर्दशायाः क्षीरंमृग्यादिक्षीरंफेनिलतक्रादिकंहस्तदत्तस्नेहलवणादिकंचनित्यभोजनेनिषिद्धम् तत्सर्वंश्राद्धेपिवर्जयेत् माधवीये मृतैर्मक्षिकाकृमिजंतुभिःकेशरोमनखादिभिश्चदूषितंसतिसंभवेवर्जयेत् असंभवेतुकेशादिकमुद्धृत्यसंप्रोक्ष्यहिरण्यस्पर्शंकृत्वाभुंजीत मार्जारमूषकादिभिरालीढादिकंत्वापद्यपिवर्ज्यमित्युक्तम् यत्तुमंडकवटकसक्तुपायसापूपकृसरादीनांस्नेहसिद्धानांचपर्युषितत्वदोषोनास्तीतिवचनंतन्नित्यभोजनपरंनतुश्राद्धपरमितिशिष्टाः यदग्निपक्कंसदेकरात्रिद्विरात्राद्यंतरितंतत्पर्युषितमुच्यते ॥

अब श्राद्धमें वर्जित पदार्थ कहताहुं.

जोभी विहितकी उक्तिकरके पूर्वोक्त पदार्थोंसें दूसरे पदार्थोंका ग्रहण नहीं करना ऐसा प्राप्त हुआ तौभी विशेष दोष दिखानेके लिये और अप्राप्त निषेध बतानेके लिये तिन्होंका संग्रह किया जाता है. अर्थात् वे पदार्थ कहताहुं. उत्कोच आदिकरके प्राप्त हुआ, पतित और म्लेच्छ आदिसें प्राप्त हुआ, अन्यायसें प्राप्त हुआ और कन्या आदिके बेचनेसें प्राप्त हुआ धन निंदित है. 'पितृकर्मके अर्थ मुझकों देना' ऐसी याचना करके संपादित किया धनभी निषिद्ध है. अर्हर, कुलथी, मसूर, कोदू, रानी सरसों ये निषिद्ध हैं. लांक करके प्रसिद्ध जो मटर हैं वे निषिद्ध हैं. सहोंजना, कोहला, दोनों प्रकारकी तूंबी, करवंदा, आली मिरच, लाल मूली, करड, शण, बांसकी कोंपल, दश प्रकारके ल्हसन आदि प्याजके भेद, बनाये हुये नमक, लाल बेलफल, सुपेद और काले बैंगन, गाजर, ल्हेसवा, लाल गूंद ये पदार्थ वर्जित करनेके योग्य हैं. "सामुद्र नमक और सेंधा नमक ये नमक प्रत्यक्ष भक्षण करने. बिलावका उच्छिष्ट अथवा सूंघा हुआ पदार्थ श्राद्धमें वर्जित करना ऐसा विद्वानोंनें

---

१ माधवीयेतुमार्जारोच्छिष्टादेरपिकुशादिप्रोक्षणाद्युक्तम् ॥

कहा है. करीर वृक्षके फल और फूल, वाविडंग, मिरच, बिजोरा, परवल ये श्राद्धमें देनेसें मनुष्य नरकमें पडता है." सब प्रकारके काले अन्न श्राद्धकर्ममें वर्जित करने; परंतु तिल, मूंग, उडद इन्होंकों श्राद्धमें नहीं वर्जित करने. दाताकों जो जो पदार्थ प्रिय होवै वह निंदित नहीं होवै तौ देना, और वह हितकारक होता है." बकरी, भेड, भैंस इन्होंका दूध और तिस दूधसें बने हुये दही आदि पदार्थ इन्होंकों वर्जित करना. रेती, कीडा, पत्थरकी रज, बाल इन्होंसें संयुक्त और वस्त्रके पवनसें वीजित किया ऐसा अन्न श्राद्धकर्ममें वर्जित करना. अशुद्ध प्राणियोंकरके छूहा हुआ, सूखा, पर्युषित अर्थात् वासी, दोवार पकाया हुआ, दग्ध हुआ ऐसा अन्न, पहले सिद्ध किया अन्न ये सब श्राद्धमें वर्जित करने. जो एकवार पकानेसें भक्षण करनेके योग्य होता है वह हींग और जीरा आदिका संस्कार करनेके अर्थ फिर पकाया जाता है ऐसा दोवार पकाया अन्न वर्जित करना. जो तो दोवार पाकायेसेंही भक्षण करनेके योग्य होता है ऐसा पदार्थ निषिद्ध नहीं है ऐसा **निर्णयसिंधु** ग्रंथका मत है. जिस अन्नका एकदेश किसी दूसरे प्राणीनें सूंघा होवै ऐसा अन्न श्राद्धमें वर्जित करना. मारीष अर्थात् राजगिरा नामसें प्रसिद्ध शाक और धान्य श्राद्धमें वर्जित करना. वड, पिलखन, गूलर, कैथ, कदंब और बिजोरा इन्होंके फलोंकों नहीं भक्षण करना. "तांबाके पात्रमें स्थित हुआ गायका दूध और नमकयुक्त दूध मदिराके समान हो जाता है. **इसका अपवाद**–जिसमांहसें नोंनी नहीं निकासा होवै ऐसा दूध और दूधसें संयुत हुई दही और घृत ये तांबाके पात्रमें स्थित होवैं तौभी निषिद्ध नहीं हैं. पीपली, गोल मिरच इन आदि पदार्थोंका प्रत्यक्ष निषेध है; अन्य द्रव्य मिश्रित कियेसें दोष नहीं है. नारियल विहित है और निषिद्ध है. पोईशाक आदि, वासी तक्र, बैलके साथ भोग करनेकों तैयार हुई गायका दूध, प्रसूत अर्थात् व्याई हुई गायका दशदिनपर्यंत दूध, हरिणी आदिका दूध, झागोंसहित तक्र आदि, हाथमें दिया स्नेहद्रव्य और नमक इन आदि पदार्थ नित्यके भोजनमें निषिद्ध हैं. वे सब श्राद्धमेंभी वर्जित करने. **माधवके** ग्रंथमें मरे हुये माखी, कीडा आदि प्राणी और बाल, रोम, नख इन आदिकरके दूषित हुआ अन्न संभव होवै तौ वर्जित करना, संभव नहीं होवै तौ अन्नमांहसें बाल आदिकों निकासके और जलसें प्रोक्षण करके सोनाका स्पर्श करके भोजन करना. कुत्ता, बिलाव, मूषा इन आदिनें उच्छिष्ट किया अन्न आपत्कालमेंभी वर्जित करना ऐसा कहा है. घृत और तेलमें सिद्ध किये मांडा, वडा, सत्तू, खीर, मालपुआ, कंसार इन आदि पदार्थोंके पर्युषितमें वासीपनेका दोष नहीं है. यह वचन नित्यके भोजनविषयमें है, श्राद्धके विषयमें नहीं है ऐसा शिष्ट जन कहते हैं. जो अग्निमें पकाया हुआ होके एक अथवा दो रात्रि आदिके अंतरसें रहै तिसकों पर्युषित अर्थात् वासी कहते हैं.

कदर्यादीनामन्नंनित्यभोजनेश्राद्धकर्मणिचनग्राह्यम् तेचकदर्यश्चोरोनटोवीणोपजीवीवार्धुषिकोभिशस्तोगणिकाचिकित्सकः‌क्रुद्धः पुंश्चलीमत्तःक्रूरःशत्रुःपतितोदांभिकःपतिपुत्ररहितास्त्रीस्वर्णकारः स्त्रीजितोग्रामयाजकोघातुकःकर्मारस्तंतुवायःकृतघ्नोवस्त्रक्षालनोपजीवीदारोपजीवीसोमविक्रयीचित्रकर्मागायकइत्यादयस्त्रैवर्णिकाअपिअग्राह्यान्नाः आत्मानंधर्मकृत्यंच

पुत्रदारांश्चपीडयेत् लोभाद्यःपितरौभृत्यान्सकदर्यइतिस्मृतः द्वावेवाश्रमिणौभोज्यौब्रह्मचारी गृहीतथा वानप्रस्थोयतीलिंगीनभोज्यान्नाःप्रकीर्तिताः षण्मासंयोद्विजोभुंक्तेशूद्रस्यान्नंविगर्हितम् सतुजीवन्भवेच्छूद्रोमृतःश्वाचाभिजायते अन्यानिचद्रव्याणिनिबंधेषुबहूनिनिषिद्धानि तानिविहितोक्त्यर्थसिद्धत्वादप्रसिद्धत्वाच्चनोक्तानि दुर्गंधिफेनिलंक्षारंपंकिलंपल्वलोदकम् न भवेद्यत्रगोतृप्तिर्नक्तंयच्चाप्युपाहृतम् नग्राह्यंतज्जलंश्राद्धेयच्चाभोज्यनिपानजम् स्नानमाचमनं दानंदेवतापितृतर्पणम् शूद्रोदकैर्नकुर्वीततथामेघाद्विनिःसृतैः नाहरेदुदकंरात्रौतुलसींगोमयंमृदं तुलसीबिल्वजान्हवीजलभिन्नंपर्युषितंजलंपुष्पंचत्यजेत् दौहित्रःकुतुपःकालश्छागःकृष्णाजिनंतथा रौप्यंदर्भास्तिलागावःखड्गपात्रंपितृप्रियम् आरण्याःकृष्णतिलामुख्याःतदभावे ग्राम्यागौराःकृष्णाश्च छागसान्निध्यंश्राद्धेतिप्रशस्तं कुक्कुटविड्वराहकाकमार्जारशूद्रषंढरजस्वलासान्निध्यमतिनिंद्यम् चांडालरजस्वलाखंजश्वित्रिन्यूनांगातिरिक्तांगादिभिर्वीक्षितमन्नमभोज्यं आपदिमृद्भस्महिरण्योदकस्पर्शाद्भोज्यम् पावमानीतरत्समंदीमंत्रैर्गायत्र्यादिभिश्चदर्भजलप्रोक्षणेदुष्टान्नशुद्धिः पादुकोपानहौछत्रंरक्तंचित्रांबरंतथा रक्तपुष्पंचमार्जारंश्राद्धभूमौ विवर्जयेत् घंटानादोश्वधत्तूरशंखशुक्तिसान्निध्यंचवर्ज्यम् ॥

कदर्य आदिकोंका अन्न नित्यभोजनमें और श्राद्धकर्ममें नहीं लेना. सो ऐसे—कदर्य, चोर, नट, वीणाके बाजासें उपजीविका करनेवाला, व्याजसें उपजीविका करनेवाला, लोकके अपवादसें दूषित, वेश्या, वैद्य, क्रोधी, जारिणी स्त्री, बावला, क्रूर, वैरी, पतित, पाखंडी, पति और पुत्रसें रहित स्त्री, सुनार, स्त्रीजित, ग्रामका उपाध्याय, पारधी, शिल्पी, कोष्ठी, कृतघ्न, धोबी, स्त्रीसें उपजीविका करनेवाला, सोमविक्रयी, चितेरे निकालनेवाला, गानेवाला इन आदि जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य जातिकेभी होवैं तथापि तिन्होंके पाससें अन्न नहीं लेना. "आत्मा, धर्मकृत्य, पुत्र, स्त्री, माता, पिता इन्होंकों जो लोभसें पीडित करता है सो कदर्य कहाता है." "ब्रह्मचारी और गृहस्थी ये दोनों भोज्यान्न होते हैं; वानप्रस्थ, संन्यासी और लिंगी ये भोज्यान्न नहीं हैं. जो द्विज छह महीनेपर्यंत शूद्रसंबंधी निंदित अन्न भक्षण करता है सो जीवता हुआ शूद्र है और मृत हुए पीछे कुत्ताकी योनिकों प्राप्त होता है." ग्रंथोंमें अन्य पदार्थभी बहुतसे निषिद्ध कहे हैं और विहित वचनके अर्थके सिद्धपनेसें और अप्रसिद्धपनेसें नहीं कहे हैं. "दुर्गंधसें युक्त, झागोंसें सहित, खारा, कीचडसें युक्त, छोटी जोहडी अर्थात् लेटमें स्थित हुआ, जिसमें गायकी तृप्ति नहीं होवै ऐसा और रात्रिमें भरके रखा हुआ ऐसा जल श्राद्धमें नहीं ग्रहण करना, और अभोज्यान्नके घरका जल श्राद्धमें ग्रहण नहीं करना. स्नान, आचमन, दान, देवता और पितरोंका तर्पण ये शूद्रके जलसें और मेघके जलसें नहीं करने. रात्रिविषे जल, तुलसी, गोवर और माटी इन्होंकों नहीं लाना." तुलसी, बेलपत्र और गंगाजल इन्होंसें भिन्न पर्युषित अर्थात् वासी जल और पुष्प नहीं लेने. "धेवता, कुतुपकाल, बकरा, काला मृगछाला, चांदी, डाभ, तिल, गौ, गेंडाके शृंगका पात्र ये पदार्थ पितरोंकों प्रिय हैं." वनमें उपजनेवाले काले तिल मुख्य हैं, तिन्होंके अभावमें ग्रामविषे उपजे सुपेद और काले तिल ग्रहण करने. बकराका श्राद्धके समीपमें होना अत्यंत श्रेष्ठ है. मुर्गा, विष्ठाकों खानेवाला शूर, काक, बिलाव, शूद्र, हीजडा, रजस्वला इन्होंका

श्राद्धमें समीप होना अति निंदित है. चांडाल, रजस्वला, गंजा, श्वित्रकुष्ठी, न्यून अंगवाला, अधिक अंगवाला इन्होंनें देखा हुआ अन्न भोजन करनेकों योग्य नहीं है. आपत्कालमें माटी, भस्म, सोना, अथवा पानी इन्होंके स्पर्शसें भोजन करनेकों योग्य है. पावमानी ऋचा और "तरत्समंदी" इन मंत्रोंसें और गायत्री आदि मंत्रोंकरके डाभसें जलका प्रोक्षण करनेसें दूषित अन्नकी शुद्धि होती है. "खडाऊं, जूतीजोडा, छत्री, रक्त और चित्रविचित्र कपडा, लाल पुष्प और विलाव इन्होंकों श्राद्धकी भूमिमें वर्जित करने. घंटाका शब्द, घोडा, धतूरा, शंख और सींपी ये पदार्थ श्राद्धके समीपमें नहीं रखने.

अथश्राद्धदिनकृत्यम् गोमयादिभिर्भूमिभांडशुद्धिः देवताब्रह्मचारियतिशिशूनांपिंडदानपर्यंतमन्नंनदेयम् अतिशिशवस्तुगृहांतरेभोजनीयाः तिलानवकिरेत्तत्रसर्वतोबंधयेदजान् पाकःश्राद्धकर्त्रास्वयमेवकार्यः तदभावेशुद्धपत्न्यातदभावेतुबांधवैः सगोत्रैर्वासपिंडैर्वामित्रैर्वासुगुणान्वितैः पुंश्चलींचतथावंध्यांविधवांचान्यगोत्रजां वर्जयेच्छ्राद्धपाकार्थममातृपितृवंशजाम् नपाकंकारयेत्पुत्रींगर्भिणींचापिदुर्मुखीं पाकभांडानिसौवर्णरौप्यताम्रोद्भवानिच कांस्यानिमृन्मयंतूक्तंनव्यमेवमनीषिभिः पैत्तलंरंगजातंचविहितंनोननिंदितम् नकदाचित्पचेदन्नमयःस्थालीषुपैतृकम् फलशाकादिछेदनार्थभिन्नानामायसानांशस्त्राणां भांडानांचदर्शनमपिपाकादिस्थानेनिषिद्धं पक्वान्नस्थापनार्थंतुशस्यंतेदारुजान्यपि गृह्याग्नौतुपचेदन्नंश्राद्धीयंलौकिकेपिवा यस्मिन्नग्नौपचेदन्नंतस्मिन्होमोविधियते ॥

अब श्राद्धदिनका कृत्य कहताहुं.

गोवर आदिसें पृथिवी और पात्रकी शुद्धि करनी. देवता, ब्रह्मचारी, संन्यासी और बालक इन्होंकों पिंडदान होवै तबपर्यंत अन्न नहीं देना. अत्यंत छोटे बालककों दूसरे घरमें भोजन कराना. "श्राद्धकी पृथिवीके स्थानमें तिल बखेरने, और सब जगह बकरे बांध देने." श्राद्ध करनेवालेनें श्राद्धसंवंधी पाक अर्थात् रसोई आपही बनानी. आपनेकों नहीं वन शकै तौ शुद्ध स्त्रीसें रसोई बनानी. शुद्ध स्त्रीके अभावमें बांधवोंसें रसोई बनानी अथवा सगोत्रियोंसें अथवा सपिंडोंसें अथवा सुंदर गुणोंवाले मित्रोंसें रसोई बनानी. जारिणी, वंध्या, विधवा, दूसरे गोत्रमें उत्पन्न हुई और श्राद्धकर्ताके पिता और माताके वंशमें नहीं जन्मी हुई ऐसी स्त्रियोंकों श्राद्धकी रसोई वनानेमें वर्जित करनी. पुत्री, गर्भिणी, दुर्मुखी इन्होंके द्वारा पाक नहीं वनाना. श्राद्धकी रसोईके पात्र सोना, चांदी, तांबा और कांसीके होने चाहिये. माटीके पात्र तौ नवीनही लेने ऐसा विद्वानोंनें कहा है. पितलके और रंगजात पात्र विहित नहीं और निंदितभी नहीं हैं. लोहाके पात्रमें श्राद्धका अन्न कभीभी नहीं पकाना." श्राद्धविषे फल और शाक आदिकों छेदन करनेके अर्थ जो लोहाके शस्त्र हैं तिन्होंसें भिन्न शस्त्रोंका और पात्रोंका दर्शनभी पाक आदिके स्थानमें निषिद्ध है. पका हुआ अन्न रखनेकों काष्ठके भी पात्र श्रेष्ठ हैं. गृह्याग्निपर अथवा लौकिक अग्निपर श्राद्धसंवंधी अन्न पकाना. जिस अग्निपर अन्न पकाया जावै तिस अग्निमें होम करना.

तत्रगृह्याग्नौपाकेविशेषः प्रातर्होमंकृत्वातदेकदेशंमहानसेकृत्वापाकंकुर्यात् पाकांतेपाका

ग्न्येकदेशंगृह्याग्नौसंयोज्यगृह्येऽग्नौकरणवैश्वदेवादिकार्यम् अत्रैवंव्यवस्था कात्यायनादीनांगृह्याग्नौपाकः आश्वलायनानांतुनैत्यकेपचनाग्नौ अग्नौकरणंत्वाश्वलायनानांव्यतिषंगेणश्राद्धे गृह्याग्निपक्वचरुणागृह्येएव व्यतिषंगाभावेपाणिहोमः अन्यशाखीयस्यगृह्याग्नावग्नौकरणंविधुरस्योच्छिन्नाग्निकस्यचपृष्टोदिविविधानादिनाग्निसंपादनं तच्चपूर्वार्धेउक्तम् भोजनपात्राणितुहेमरौप्यकांस्यजानिवापलाशकमलकदलीमधूकपत्रनिर्मितानिवा ॥

तिन्होंके मध्यमें गृह्याग्निपर पाक करनेमें विशेष कहताहुं.—प्रातःकालमें होम करके तिस गृह्याग्निमेंसें एकदेशसें अग्नि लेके वह अग्नि पाकघरमें ले जाके तिस अग्निपर पाक करना. पाक किये पीछे पाकके अग्निके एकदेशकों गृह्याग्निमें संयुक्त करके गृह्याग्निमें अग्नौकरण, वैश्वदेव इत्यादिक करने. इस विषयमें इस प्रमाणसें व्यवस्था करनी. कात्यायन आदिकोंनें गृह्याग्निपर पाक करना. आश्वलायनोंनें तौ नित्यके पाकाग्निपर पाक करना. अग्नौकरण करनेका सो आश्वलायनोंनें व्यतिषंगकरके श्राद्धमें गृह्याग्निपर चरु पकायके गृह्याग्निमेंही करना. व्यतिषंगका अभाव होवै तौ पाणिहोम करना. अन्य शाखावालोंनें गृह्याग्निमेंही अग्नौकरण करना. मृत हुई स्त्रीवाला और नष्ट हुआ अग्निवाला होवै तौ "**पृष्टोदिवि०**" इस विधान आदिसें अग्नि उत्पन्न करना. वह विधान पूर्वार्धमें कहा है. भोजनपात्र तौ सोना, चांदी और कांसी इन्होंसें बने हुये होने चाहिये. अथवा पलाश, कमल, केला, महुवा इन्होंके पत्तोंसें बनाने उचित हैं.

अथनिमंत्रणादिश्राद्धाहेभुक्तान्नपरिणामपर्यंतंकर्तुर्विप्राणांचनियमाः स्त्रीसंगपुनर्भोजनानृतभाषणाध्यापनद्यूतायासभारोद्वहनहिंसादानप्रतिग्रहचौर्याध्वगमनदिवास्वापकलहादिवर्जनंकर्तृभोक्तृभयधर्माः स्त्रीसंगश्चश्राद्धदिनेतत्पूर्वदिनेचऋतुकालेपिवर्ज्यः तांबूलक्षुरकर्माभ्यंगदंतधावनवर्जनंकर्तृधर्माः भोक्तृविप्राणांतैलाभ्यंगेउद्वर्तनेक्षौरेचविकल्पः कर्तुर्भोक्तुश्चमुख्यवारुणस्नानेनैवाधिकारोनतुगौणस्नानेन श्राद्धकृच्छुक्लवासाःस्यान्मौनीचविजितेंद्रियःउपवासंपरान्नंचऔषधंचविवर्जयेत् अवस्त्रत्वंमलवद्वस्त्रत्वंकौपीनवत्त्वंकच्छहीनत्वमनुत्तरीयत्वंकाषायवस्त्रत्वमार्द्रवस्त्रत्वंद्विगुणवस्त्रत्वंरक्तवस्त्रत्वंदग्धवस्त्रत्वंस्यूतवस्त्रत्वमित्येकादशविधनग्नत्वंकर्तृभोक्तृभ्यांवर्ज्यं कर्तुर्ललाटेऊर्ध्वपुंड्रादेर्विकल्पः भोक्तुस्तुभवत्येव चंदनतिलकस्तुपिंडदानात्प्राक् कर्तुर्वर्ज्यः भोक्तुस्तुभोजनकालात्प्राक्वर्ज्यः सदर्भहस्तेनतिलकोनकार्यः करणेआचमनंदर्भत्यागश्च कर्त्रानिमंत्रितविप्रत्यागोनकार्यः प्रमादेनत्यागेयत्नेनविप्रःप्रसादनीयःबुद्धिपूर्वकत्यागेयतिचांद्रायणंप्रायश्चित्तं आमंत्रितस्तुयोविप्रोभोक्तुमन्यत्रगच्छति नरकाणांशतंगत्वाचांडालेष्वभिजायते आमंत्रितस्तुयःश्राद्धेविलंबंकुरुतेद्विजः देवद्रोहीपितृद्रोहीपच्यतेनरकेषुसः स्त्रीसंगःपुनर्भोजनंचश्राद्धपूर्वरात्रावपिकर्तृभोक्तृभ्यांवर्ज्यं दशकृत्वःपिबेदापोगायत्र्याश्राद्धभुक्द्विजः सायंसंध्यामुपासीतजपेच्चजुहुयादपि सूतकेचप्रवासेचअशक्तौश्राद्धभोजने औपासनादिकंहोमंनकुर्यात्किंतुकारयेत् निमंत्रितस्तुनश्राद्धेकुर्याद्भार्यादिताडनं अपराह्णाख्यमुहूर्तत्रयेवनस्पतिच्छेदंदधिमंथनंसर्वैर्नकार्यं यदाकर्तुरशक्त्यातत्पुत्रशिष्यादिःप्रतिनिधिःश्राद्धंकरोतितदा यजमानप्रतिनिधिभ्यामुभाभ्यांपूर्वोक्ताःसर्वेकर्तृनियमाःकार्याः मुक्तकच्छातुयानारीमुक्त

केशीतथैवच हसतेवदतेत्यंतंनिराशाःपितरोगताः सवर्णंप्रेषयेदाप्तंद्विजानांतुनिमंत्रणे अभोज्यंब्राह्मणस्यान्नंवृषलेननिमंत्रितं तथैववृषलस्यान्नंब्राह्मणेननिमंत्रितं वृषलःशूद्रः ॥

इसके अनंतर निमंत्रणसें श्राद्धके दिनमें भक्षण किये अन्नका परिपाक होवै तिस कालपर्यंत श्राद्धकर्ताके और ब्राह्मणोंके नियम कहताहुं.—स्त्रीसंग, दूसरेवार भोजन, झूठ बोलना, पढाना, जूवा खेलना, परिश्रम, बोझाका उठाना, हिंसा, दान, प्रतिग्रह, चोरी करना, मार्ग चलना, दिनमें नींद लेना, कलह इन आदि कर्म वर्जित करने, ऐसे कर्म कर्ता और भोक्ताके हैं. श्राद्धके दिनमें, श्राद्धके दिनके पूर्वदिनमें ऋतुकालविषेभी स्त्रीका भोग वर्जित करना. तांबूल, श्मश्रुकर्म, अभ्यंग, दंतधावन इन्होंकों वर्जित करना ये यजमानके धर्म हैं. भोजन करनेवाले ब्राह्मणोंकों तेलकी मालिस, श्मश्रुकर्म और उवटना मलना इन्होंका करना विहित है अथवा निषिद्ध है. कर्ताकों और भोक्ताकों मुख्य जलस्नानसेंही अधिकार प्राप्त होता है, गौण स्नानसें नहीं प्राप्त होता है. “श्राद्धकर्ता सुपेद वस्त्र पहना हुआ, मौनी, और इंद्रियोंकों जीतनेवाला होना चाहिये. कर्तानें उपवास, दूसरेका अन्न और ओषधी इन्होंकों वर्जित करना. वस्त्र नहीं धारण करना, मलिन वस्त्र धारण करना, कौपीन धारण करना, कच्छ अर्थात् धोतीकी लांगड आदिसें रहितपना, डुपटा आदि वस्त्र नहीं धारण करना, काषायवस्त्र धारण करना, गीला वस्त्र धारण करना, दुगुना वस्त्र धारण करना, लाल वस्त्र धारण करना, जला हुआ वस्त्र धारण करना, सीमा हुआ वस्त्र धारण करना. इस प्रकार ग्यारह प्रकारका नग्नपना कर्ता और भोक्ताकों वर्जित है.” कर्ताकों मस्तकपर ऊर्ध्व पुंड्र आदि तिलक विहित है अथवा निषिद्ध है. भोजन करनेवालेकों लळाटपर ऊर्ध्व पुंड्र आदि तिलक होनाही उचित है. चंदनका तिलक पिंडदान करनेके पहले कर्तानें नहीं करना. भोजन करनेवालेकों भोजनकालके पहले वर्जित है. डाभसहित हाथसें तिलक नहीं करना, किया जावै तौ आचमन करके डाभोंका त्याग करना. कर्तानें निमंत्रित किये ब्राह्मणका त्याग नहीं करना. प्रमादकरके त्याग किया जावै तौ बडे प्रयत्नसें ब्राह्मणकों प्रसन्न करना. जानके त्याग किया जावै तौ यतिचांद्रायण प्रायश्चित्त करना. “आमंत्रित किया ब्राह्मण भोजन करनेकों अन्य जगह गमन करै तौ वह सौ नरकोंमें वास करके चांडालोंमें जन्मता है. श्राद्धमें आमंत्रित अर्थात् बुलाया हुआ ब्राह्मण विलंब करै तौ वह देवद्रोही और पितृद्रोही होके नरकोंमें पकता है.” स्त्रीका संग और दूसरेवार भोजन, श्राद्धके पहली रात्रीमेंभी कर्ता और भोक्तानें वर्जित करना. श्राद्धमें भोजन करनेवाले ब्राह्मणनें गायत्रीमंत्रसें दशवार अभिमंत्रित किया जल पीना, सायंसंध्या करनी, जप और होमभी करना.” “आशौच, प्रवास, अशक्ति, श्राद्धभोजन इन्होंमें औपासनिक होम आप नहीं करना किंतु दूसरेके द्वारा कराना. श्राद्धमें निमंत्रित हुए मनुष्यनें स्त्री आदिकों ताडन नहीं करना.” अपराण्हनामक जो तीन मुहूर्तपरिमित काल है तिसमें सबोंनें वृक्ष नहीं तोडना, और दहींका मथन नहीं करना. जब कर्ताकों शक्ति नहीं होवै और तिसके स्थानमें पुत्र, शिष्य आदि श्राद्ध करैं तब यजमान और तिसके प्रतिनिधिनें पूर्वोक्त सब कर्ताके नियम पालने उचित हैं. “कछनी आदिसें रहित और बालोंकों खोल्हे हुई ऐसी स्त्री हसै और अत्यंत बोलै तब पितर निराश हुये गमन करते हैं. अपनी जातीका और आप्त ऐसा पुरुष ब्राह्मणकों निमं-

त्रण देनेकों भेजना. शूद्रकरके निमंत्रित किया ब्राह्मणका अन्न तथा ब्राह्मणकरके निमंत्रित किया वृषलका अन्न भोजन करनेके योग्य नहीं है. ” यहां वृषलकरके शूद्र लिया है.

अथश्राद्धेब्राह्मणसंख्या वैश्वदेवेसमाःपित्र्येविषमाः तेनद्वौवैश्वदेवेत्रयःपितृपार्वणे इति पंचविप्राः अथवाचत्वारोदैवेपार्वणेतुपित्रादीनामेकैकस्यत्रयस्त्रयइतित्रयोदशविप्राः यद्वापित्रादेरेकैकस्यपंचेत्येकोनविंशतिः किंवाएकैकस्यसप्तेतिपंचविंशतिः एवंदर्शादौपार्वणाधिक्ये विप्राधिक्यमूह्यं तथाचवैश्वदेवेद्वौचतुरोवोपवेश्यपित्रादिष्वेकैकस्यस्थानेएकंत्रीन्पंचसप्तनववोपवेशयेदितिनिष्कर्षः सत्क्रियांदेशकालौचद्रव्यब्राह्मणसंपदं शौचंचविस्तरंहंतीतिपक्षेअशक्तौवादैवेएकःपितृपार्वणेचैकइतिद्वौविप्रौ तदुक्तंश्रीभागवते द्वौदैवेपितृकार्येत्रीनेकैकमुभयत्रवा भोजयेत्सुसमृद्धोपिश्राद्धेकुर्यान्नविस्तरं देशकालोचितश्रद्धाद्रव्यपात्रार्हणानिच सम्यग्भवंतिनैतानिविस्तरात्स्वजनार्पणादिति एतेनद्वौदैवेएकःपित्र्येइतिविप्रत्रयपक्षोनिर्मूलोवेदितव्यः द्वौदैवेथर्वणौविप्रौप्राङ्मुखावुपवेशयेत् पित्र्येतूदङ्मुखांस्त्रींश्चऋग्यजुःसामवेदिनः अत्यशक्तौ पार्वणद्वयेएकोविप्रः ॥

अब श्राद्धविषे ब्राह्मणोंकी संख्या कहताहुं.

विश्वेदेवस्थानमें समान संख्याके ब्राह्मण और पितरोंकी जगह विषम संख्याके ब्राह्मण ऐसा कहा है, तिसकरके विश्वेदेवस्थानमें दो ब्राह्मण और पितृपार्वणमें तीन ब्राह्मण इस प्रकार पांच ब्राह्मण होने चाहिये. अथवा देवतोंके स्थानमें चार और पार्वणके स्थानमें पिता आदिके एक एकके तीन तीन ब्राह्मण ऐसे मिलकै तेरह ब्राह्मण कहे हैं. किंवा पिता आदि एक एकके पांच पांच ब्राह्मण ऐसे मिलकै सब उन्नीस ब्राह्मण कहे हैं. अथवा एक एक पितरके स्थानमें सात सात ब्राह्मण ऐसे मिलके पच्चीस ब्राह्मण कहे हैं. इसी प्रकार दर्श आदि श्राद्धमें पार्वणकी अधिकताविषे ब्राह्मणोंकी अधिकताका विचार करना. अर्थात् विश्वेदेवोंके स्थानमें दो अथवा चार ब्राह्मणोंको बैठायके एक एक पितरके स्थानमें एक, तीन, पांच, सात, नव ऐसे ब्राह्मणोंको बैठाना ऐसा तात्पर्य जानना. “ श्राद्धमें विस्तार किया जावै तौ सत्क्रिया, देश, काल, द्रव्य, ब्राह्मणसम्पत्ति और शौचपना इन्होंका नाश होता है, ” इस पक्षमें अथवा असामर्थ्यमें विश्वेदेवोंके स्थानमें एक और पितरोंके स्थानमें एक इस प्रकार दो ब्राह्मण निमंत्रित करने. सोही श्रीमद्भागवतमें कहा है. “ देवकार्यमें दो और पितृकार्यमें तीन अथवा देवतोंके स्थानमें एक और पितरोंके स्थानमें एक ऐसे ब्राह्मण भोजनकों निमंत्रित करने. समृद्ध पुरुषनेंभी श्राद्धमें विस्तार नहीं करना. अपने आप्तोंको भोजनकों निमंत्रित करनेसें जो विस्तार तिस्सें देश, काल, उचित श्रद्धा, द्रव्य, पात्र, पूजा ये यथाविधि नहीं होते हैं. ” इस्सें देवतोंके स्थानमें दो और पितरोंके स्थानमें एक इस प्रकार तीन ब्राह्मणोंको भोजन करानेका पक्ष निर्मूल जानना. “ दैवकर्ममें अथर्वण वेदको जाननेवाले दो ब्राह्मण पूर्वको मुखवाले करवायके बैठाने. पितृकर्ममें उत्तरको मुखवाले और ऋग्, यजु, साम इन वेदोंको जाननेवाले ऐसे तीन ब्राह्मण बैठाने. ” अत्यंत असामर्थ्यमें दो पार्वणोंमें एक ब्राह्मण निमंत्रित करना.

यदैकएवविप्रस्तदाविश्वेदेवस्थाने शिवलिंगंशालग्रामंवासंस्थाप्य सर्वश्राद्धंसमाचरेत् दैवान्नंतत्क्षिपेदग्नौदद्याद्वाब्रह्मचारिणे स्थानत्रयेएकोविप्रइतिपक्षःसपिंडीकरणादन्यत्र सपिंडीकरणेतुपार्वणेत्रयएवविप्राः वृद्धिश्राद्धेतुदैवेद्वौप्रतिपार्वणंद्वौ द्वावेवमष्टौनिकृष्टपक्षे संपदिदैवेचत्वारःप्रतिपार्वणंचत्वारइतिषोडशेत्येवंदैवेपित्र्येचसमाविप्रा इतिविशेषः सर्वथाब्राह्मणालाभेकृत्वादर्भमयान्बटून् प्रेषानुप्रेषसंयुक्तंसर्वश्राद्धंप्रकल्पयेत् अत्रविप्रानुकूल्यरूपदृष्टप्रयोजनाभावेप्यदृष्टार्थंदक्षिणादेया एवंयतेःश्राद्धोपवेशनेपि साचदक्षिणाकालांतरेन्यस्मैप्रतिपादनीया अथवाभ्यर्चितंलिंगंशालग्राममथापिवा संस्थाप्यदेवपित्रर्थंपीठेश्राद्धंचरेन्नरः पितरस्तस्यतिष्टंतिकल्पकोटिशतंदिवि निमंत्रणंतुविप्राणांपूर्वेद्युःसद्यएववा कुर्याद्विप्रांश्चनियमान्श्रावयेत्पैतृकान्बुधः अक्रोधनैःशौचपरैःसततंब्रह्मचारिभिःभवितव्यंभवद्भिश्चमयाचश्राद्धकारिणेति।।

जिस कालमें एकही ब्राह्मण होवै तिस कालमें विश्वेदेवोंकी जगह शिवलिंग अथवा शालग्राम स्थापित करके संपूर्ण श्राद्ध करना. “देवतोंका अन्न अग्निमें छोडना अथवा ब्रह्मचारीकों देना. तीनों स्थानोंमें मिलके एक ब्राह्मण होना यह पक्ष सपिंडीकरणश्राद्धसें अन्य श्राद्धमें जानना. सपिंडीकरणमें तौ पार्वणविषे तीनही ब्राह्मण बैठाने. वृद्धिश्राद्धमें तौ, देवतोंके स्थानमें दो और प्रतिपार्वणकों दो दो ऐसे आठ ब्राह्मण निकृष्टपक्षमें होना चाहिये संपत्ति होवै तौ विश्वेदेवोंके स्थानमें चार और प्रतिपार्वणमें चार इस प्रकार सोलह ब्राह्मण ऐसे दैवकर्ममें और पितृकर्ममें समसंख्याके ब्राह्मण निमंत्रित करने, यह विशेष है. “सब प्रकारसें ब्राह्मण नहीं मिलैं तौ डाभके बटु अर्थात् मोटक बनाके प्रेष और अनुप्रेषसहित सब श्राद्ध करना.” यहां ब्राह्मणोंके अनुकूलपरूप दृष्टप्रयोजनके अभावमें अदृष्टफलके अर्थ दक्षिणा देनी. इस प्रकार संन्यासी श्राद्धमें प्राप्त होवै तब भी दक्षिणा देनी. वह दक्षिणा अन्यकालमें दूसरोंकों देनी. “अथवा पूजित किया लिंग किंवा शालग्राम देवपितृस्थानमें पीठपर स्थापित करके जो मनुष्य श्राद्ध करता है तिसके पितर कल्पकोटि सैंकडेपर्यंत स्वर्गमें रहते हैं.” ब्राह्मणोंकों श्राद्धका निमंत्रण पहले दिनमें अथवा तिसी दिनमेंही करना; और श्राद्धसंबंधी नियम आप करने और ब्राह्मणोंसें श्रवण कराने. सो नियम ऐसे—“क्रोधसें रहित, शौचमें तत्पर, निरंतर ब्रह्मचारी, ऐसे आप सबोंनेंभी रहना और मेंभी रहूंगा.”

अथसामान्यतःश्राद्धपरिभाषा निपात्यदक्षिणंजानुंदेवान्परिचरेत्सदा पितॄणांपरिचर्यातुवामजानुनिपातनात् प्रदक्षिणंतुदेवानांपितॄणामप्रदक्षिणम् पितॄणांद्विगुणाभुग्नादर्भादैवेऋजुत्वगाः दैवेतूदङ्मुखःकर्तापित्र्येस्याद्दक्षिणामुखःसंकल्पेक्षणदानेपाद्येआसनेआवाहनेर्घ्यदानेगंधाद्याच्छादनांतपंचोपचारेन्नदानेपिंडदानेंजनाभ्यंजनयोरक्षय्येस्वधावाचनेचसंबंधगोत्रनामोच्चारणमावश्यकमन्यत्रकृताकृतम् संबंधगोत्रनामरूपाणीतिसंबंधनामगोत्ररूपाणीतिवोच्चारणेक्रमः तत्रसकारेणतुवक्तव्यंगोत्रंसर्वत्रधीमतेतिवाक्यात्काश्यपसगोत्रस्यकाश्यपगोत्रस्येतिवोच्चारः केचिच्छाखाभेदाद्व्यवस्थामाहुः गोत्रस्यत्वपरिज्ञानेकाश्यपंगोत्रमुच्यते शर्मांतंविप्रनामोक्तंवर्मांतंक्षत्रियस्यतु गुप्तांतंचैववैश्यस्यदासांतंशूद्रजन्मनः पित्रादिनामाज्ञानेतुतातपितामहप्रतिपामहेत्येवंब्रूयात् ननामोच्चारयेदित्याश्वलायनः शाखांतरेतुपितुर्नाम्नःस्थाने पृथि

वीषदितिपितामहस्यांतरिक्षसदितिप्रपितामहस्यदिविषदितिनामोच्चार्यम् स्त्रीणांदांतंनामसावित्रीदेत्येवमुच्चार्यम् केचिद्देवीशब्दांतमाहुः अन्येदेवीदापदयोःसमुच्चयमूचुः विभक्तिभिस्तु यत्किंचिद्दीयतेपितृकर्मणि तत्सर्वंसफलंज्ञेयंविपरीतंनिरर्थकम् षष्ठीविभक्त्यासंकल्पःक्षणश्चाक्षय्यकर्मच षष्ठ्यावास्याच्चतुर्थ्यावासनदानंद्विजातये द्वितीययावाहनंस्याद्विभक्तिस्तुचतुर्थिका अन्नदानेपिंडपूजास्वधास्वस्तीतिवाचने पिंडदानेतुसंबुद्धिर्येचत्वेत्यादितःपुरा ततःपरं चतुर्थीचेत्युभयंसर्वसंमतम् शेषाणिसर्वकर्माणिसंबुद्ध्यंतेयथायथम् इदंतेवाइदंवोवाप्रयुज्यैवसमाचरेत् सव्येनदैवंकर्मस्यादपसव्येनपैतृकम् विप्रप्रदक्षिणाविप्रस्वागतंचार्घ्यदानकम् सूक्तस्तोत्रजपोन्नस्यपात्रेषुपरिवेषणम् आह्वानमन्नस्याघ्राणंतथाचस्वस्तिवाचनम् तांबूलदानमारभ्यासमाप्तेरितिपैतृकम् प्रदक्षिणाद्येतदुक्तंसव्येनैवसमाचरेत् देवार्चादक्षिणादिःस्यात्पादजान्वंसमूर्धसु शिरोंसजानुपादेषुवामांगादिषुपैतृके अक्षय्यासनार्घ्यवर्ज्यंस्वधाकारेणपितृभ्यः भर्वदानम् देवेभ्यःस्वाहापदेन दैवतीर्थेनदैवंतत्पितृतीर्थेनपैतृकम् ॥

अब सामान्यसें श्राद्धपरिभाषा कहताहुं.

दाहिने गोडेकों निवायके देवतोंकी पूजा करनी. वामे गोडेकों निवायके पितरोंकी पूजा करनी. देवतोंका कृत्य प्रदक्षिणक्रमसें करना, और पितरोंका कृत्य अप्रदक्षिण क्रमसें करना. पितरोंके डाभ द्विगुणभुग्न अर्थात् मध्यमें मोडे हुये होने चाहिये. दैवकर्ममें सीधे डाभ होने चाहिये अर्थात् मोडे हुये नहीं होवैं. दैवकर्ममें कर्तानें उत्तराभिमुख और पितृकर्ममें कर्तानें दक्षिणाभिमुख रहना. संकल्प, क्षणदान, पाद्य, आसन, आवाहन, अर्घ्यदान, गंधसें आदि लेके आच्छादनपर्यंत पांच उपचार, अन्नदान, पिंडदान, अंजन, अभ्यंजन, अक्षय्य और स्वधावाचन इन्होंमें संबंध, गोत्र, नाम इन्होंका उच्चार आवश्यक है, अन्य जगह विकल्प जानना. संबंध, गोत्र, नाम और रूप इस क्रमसें; किंवा संबंध, नाम, गोत्र, रूप, इस क्रमसें उच्चार करना. तहां "बुद्धिमान् पुरुषनें सब जगह सकारकरके गोत्रका उच्चार करना" इस वचनसें "**काश्यपसगोत्रस्य,** किंवा **काश्यपगोत्रस्य**" ऐसा उच्चार करना. कितनेक ग्रंथकार शाखाके भेदकरके व्यवस्था कहते हैं—"गोत्रका ज्ञान नहीं होवै तौ काश्यपगोत्रका उच्चार करना. ब्राह्मणोंका शर्मांत नाम, क्षत्रियोंका वर्मांत नाम, वैश्यका गुप्तांत नाम और शूद्रका दासांत नाम ऐसा नामका उच्चार करना. पिता आदिके नामका ज्ञान नहीं होवै तौ "**तात पितामह प्रपितामह**" ऐसाही उच्चार करना; नामका उच्चार नहीं करना ऐसा आश्वलायन कहते हैं. अन्य शाखामें तौ पिताके नामके स्थानमें '**पृथिवीषत्**' ऐसा, पितामहके नामके स्थानमें '**अंतरिक्षसत्**' ऐसा और प्रपितामहके नामके स्थानमें '**दिविषत्**' ऐसा नाम उच्चारण करना. स्त्रियोंके दांत नाम '**सावित्रीदा**' ऐसा उच्चार करना. कितनेक ग्रंथकार देवीशब्दांत उच्चार करना ऐसा कहते हैं, दूसरे ग्रंथकार 'देवी' और 'दा' इन पक्षोंका समुच्चय कहते हैं. अर्थात् दोनों पदोंका उच्चार करना ऐसा कहते हैं. जैसे, "**सावित्रीदेवीदा.**" "पितृकर्ममें विभक्तिकरके जो समर्पण किया जाता है वह सब सफल जानना. विभक्तिके विना दिया हुआ जो है सो व्यर्थ है." संकल्प, क्षण और अक्षय्यकर्म ये षष्ठी विभक्तिसें करने, ब्राह्मणकों आसन देनेका सो षष्ठी अथवा चतुर्थी विभक्तिसें देना.

आवाहन द्वितीया विभक्तिसें करना. अन्नदान, पिंडोंकी पूजा, स्वधा, स्वस्तिवाचन ये चतुर्थी विभक्तिसें करने. “ येचत्वा० ” इत्यादिक उच्चारके पहले जो पिंडदान करनेका सो संबुद्धि विभक्तिसें करना. तिसके पीछे चतुर्थी विभक्ति इस प्रमाण दोनों सर्वसंमत कहे हैं. शेष रहे सब कर्म संबुद्धिविभक्तिके अंतमें यथायोग्य ‘ इदं ते ’ एकवचनांत अथवा ‘ इंद वो ’ बहुवचनांत इस प्रकार योजना करके कर्म करना. सव्य होके देवकर्म करना और अपसव्य होके पितृकर्म करना. विप्रप्रदक्षिणा, विप्रस्वागत, अर्घ्यदान, सूक्त और स्तोत्र इन्होंका जप, पात्रोंपर अन्न परोसना, आव्हान, अन्नका अवघ्राण, स्वस्तिवाचन, तांबूलदानसें आरंभ करके समाप्तिपर्यंत कर्म ऐसा यह पितृकर्म प्रदक्षिणा आदि सव्य होके करना. देवताकी पूजा करनी होवै तौ पैर, गोडा, कंधा और मस्तक दक्षिणांगपूर्वक करनी. ” पितरोंकी पूजा करनी होवै तौ वामांगपूर्वक मस्तक कंधा, गोडा और पैर ऐसी करनी. अक्षय्य, आसन, अर्घ्य इन्होंकों वर्जित करके पितरोंकों अन्य सब दान स्वधाकारसें देने. देवतोंकों स्वाहाकारसें देने. “ दैवतीर्थसें देवकर्म और पितृतीर्थसें पितृकर्म करना. ”

अथाचमनानि श्राद्धारंभेद्विराचमनंविप्रपादक्षालनांते स्वपादक्षालनपूर्वकं द्विराचमनं देवार्चनांते पित्रर्चनांतेचैकैकमाचमनमाघ्राणांतेएकंविकिरदानांतेद्विरेकंवा श्राद्धांतेस्वपादक्षालनपूर्वकंद्विराचमनमिति अन्येभस्ममर्यादांतेकरशुद्ध्यंतेउच्छिष्टचालनांतेचाप्येकैकमाहुः ॥

अब आचमन कहताहुं.

श्राद्धके आरंभमें दोवार आचमन करना. ब्राह्मणके पैरोंका प्रक्षालन किये पीछे अपने पैरोंकों प्रक्षालन करके दोवार आचमन करना. देवताकी पूजाके अंतमें और पितरोंकी पूजाके अंतमें एकवार आचमन करना. अवघ्राणके अंतमें एकवार आचमन करना. विकिरदानके अंतमें एकवार किंवा दोवार आचमन करना. श्राद्धके अंतमें अपने पैरोंकों धोके पीछे दोवार आचमन करना. दूसरे ग्रंथकार भस्ममर्यादा करनेके पीछे और हाथोंकी शुद्धि करनेके अंतमें और उच्छिष्ट चालनके अंतमें एक एकवार आचमन करना ऐसा कहते हैं.

अथभोक्तुःपादशौचांतेद्विराचमनंपाणिहोमांतेएकंभोजनांतेद्विरिति ॥

अब भोक्ताके आचमनकों कहताहुं.—पादप्रक्षालनके पीछे दोवार आचमन, पाणिहोम अर्थात् हाथपर अग्नौकरण किये पीछे एकवार आचमन और भोजनके अंतमें दोवार आचमन करना.

अथदर्भाः आचांतःप्राक्कुशांस्त्यक्त्वापाणावन्यांश्चधारयेत् तथाचश्राद्धारंभेधृतान्दर्भान्पाद्यांतेचविसर्जयेत् ततोदेवार्चनांतेपित्रर्चनांतेपिंडशेषाघ्राणांतेविकिरदानांतेश्राद्धांतेचपूर्वधृतदर्भांस्त्यजेत् श्राद्धसागरादिप्रयोगेतुपित्रर्चनांतेदर्भत्यागोनदृश्यते तेनक्वचिदाचमनेपिदर्भत्यागोनेतिभाति ॥

अब डाभ कहताहुं.

आचमन किये पीछे पहले धारण किये डाभ त्यागके हाथमें दूसरे डाभ धारण करने.

तैसेही श्राद्धके आरंभमें धारण किये डाभोंकों पाद्यके अंतमें त्यागना. पीछे देवताकी पूजाके अंतमें, पितरोंकी पूजाके अंतमें, पिंडोंका शेष अवघ्राण किये पीछे, विकिर दिये पीछे और श्राद्धके अंतमें पूर्व धारण किये डाभ त्यागने. **श्राद्धसागर** आदि प्रयोगग्रंथमें तौ, पितरोंकी पूजाके अनंतर डाभका त्यागना नहीं दीखता है. इसमें कहींक आचमनमेंभी डाभका त्याग करना ऐसा नहीं प्रतिभान होता है.

अथोहविचारः यत्रबहुवचनांतःपितृशब्दस्तत्रपितृशब्दस्यसर्वपितृवाचित्वादूहोन यथा र्घ्यपात्रेपितॄनिमान्प्रीणयेत्यत्रमात्रादिश्राद्धेमातॄनितिनवदेत् तत्रापिशुंधनमंत्रेषुशुंधंतांपितरः शुंधंतांपितामहाइत्यादिशुंधंतांमातरःइत्यादिचोहएव बहुवचनंतुनोह्यते प्रथममंत्रेएवपूज्यत्वा र्थकत्वात् ऋचंनोहेदितिनिषेधादृक्मंत्रेषुनोहः पिंडदानेयेचत्वामत्रानुतेभ्यश्चेत्यत्रमातृश्राद्धे याश्चत्वामत्रानुताभ्यश्चेतिनवदेत् स्त्रीणांस्त्रियःपुरुषाश्चानुगाइतिपुमान्स्त्रियेतिपुल्लिंगशेषादिति वृत्तिकृत् अन्येतुयाश्चेत्याद्यूहमाहुः मात्रादिद्वित्वेपिंडदानेएतद्वामस्तन्मातरौयज्ञदाश्रीदेयेच युवामत्रान्वित्येकंपिंडंदत्वास्मन्मातृभ्यां० अयंपिं०इत्यादिअभ्यंजनेस्मन्मातरौ० अभ्यंजा थां०अंजनेअंजाथां एवंपितामहीप्रपितामहीद्वित्वेप्यूहः ॥

अब ऊहका निर्णय कहताहुं.

जहां बहुवचनांत पितृशब्द होवै तहां पितृशब्द सब पितरोंका वाचि है इसवास्ते ऊह नहीं करना. जैसे अर्घ्यपात्रके स्थानमें **‘पितॄनिमान्प्रीणय’** इसके स्थानमें माता आदिके श्राद्धमें **‘मातॄ’** ऐसा कहना नहीं. तिसके मध्यमेंभी शुंधनमंत्रोंमें **“ शुंधंतांपितरः शुंधंतांपितामहाः ”** इत्यादिक और **“ शुंधंतांमातरः ”** इस आदि ऊह करना. बहुवचनमें तौ ऊह नहीं करना; क्योंकी, प्रथम मंत्रके मध्यमें पूज्यत्वका अर्थ है. ऋग्वेदके विषयमें ऊह नहीं करना ऐसा निषेध होनेसें ऋग्वेदके मंत्रोंमें ऊनहीं करना. पिंडदानमें **‘येचत्वामत्रानुतेभ्यश्च’** इसके स्थानमें मातृश्राद्धमें **‘याश्चत्वामत्रानुताभ्यश्च’** ऐसा ऊह नहीं करना. स्त्रियोंके मध्यमें स्त्रियें और पुरुष अनुयायी होते हैं; क्योंकी, **“पुमान्स्त्रिया ”** इस सूत्रसें स्त्रीयें और पुरुषोंकी सहोक्ति होनेमें पुल्लिग शेष रहता है ऐसा वृत्तिकार कहता है. दूसरे ग्रंथकार तौ **‘याश्च’** इत्यादिक ऊह करना ऐसा कहते हैं. माता आदि दो होवैं तौ, पिंडदानमें **‘एतद्वामस्मन्मातरौयज्ञदाश्रीदेयेचयुवामत्रानु०’** ऐसा ऊह करके और एक पिंड देके **‘अस्मन्मातृभ्यां० अयंपिंडः०’** इत्यादिक उच्चार करना. अभ्यंजनके विषयमें **‘अस्मन्मातरौ० अभ्यंजाथां०’** और अंजनके विषयमें **‘ अंजाथां,’** इस प्रकार पितामही और प्रपितामही दो दो होनेमेंभी तैसाही ऊह करना.

अथबहुत्वे एतद्वोस्मन्मातरोयज्ञदेश्रीदेरुद्रदेयथानामगोत्रायेचयुष्मानत्रानुइत्येकपिंडदानादि अभ्यंजनेऽभ्यङ्ध्वं अंजनेऽङ्ध्वमित्यादि एकनामत्वेएकमेवनामाद्विवचनांतंबहुवचनांतंवावदेत् एवमर्घ्यदानकालेप्यस्मन्मातरावित्याद्यूहेनसंबोध्यइदंवामर्घ्यमिदंवोअर्घ्यमित्यूहोबोद्धव्यः तथाचायंतुनःपितरःसो० तिलोसिसोमदेवत्यो० उशंतस्त्वानि० पिंडानुमंत्रण दशादानोपस्थानप्रवाहणप्राशनादिमंत्रेषु बहुवचनांतपितृपदयुक्तत्वादिहेतोर्नोहइतिप्रसिद्धंना

प्रोक्षितंस्पृशेद्वस्तुनवदेन्मानुषींगिरम् नचोदीक्षेतभुंजानंनचैवाश्रूणिपातयेत् दैवेपित्र्येचसर्वत्रजपहोमादिकर्मसु मौनंकुर्यात्प्रयत्नेनसकलंफलमाप्नुयात् यदिमौनस्यलोपःस्याज्जपहोमार्चनादिषु व्याहरेद्वैष्णवंमंत्रंस्मरेद्वाविष्णुमव्ययम् यस्यस्मृत्याचनामोक्त्यातपोयज्ञक्रियादिषु न्यूनंसंपूर्णतांयातिसद्योवंदेतमच्युतं आदिमध्यावसानेषुश्राद्धस्येदमुदाहरेत् ॥

इसके अनंतर बहुतसी माता होवैं तौ तिस विषयमें 'एतद्वोस्मन्मातरोयज्ञदेश्रीदेरुद्रदे यथानामगोत्रा येचयुष्मानत्रानु०' ऐसा ऊह करके एक पिंड देना इत्यादिक जानना. अभ्यंजनके विषयमें 'अभ्यङ्ध्वं,' अंजनके विषयमें 'अङ्ध्वं०' इत्यादिक जानना. एक नाम होवै तौ एकही नाम द्विवचनांत अथवा बहुवचनांत उच्चारण करना. इस प्रमाण अर्घ्यदानकालमेंभी 'अस्मन्मातरौ' इत्यादिक ऊहसें संबोधन करके 'इदंवामर्घ्यमिदंवोअर्घ्यं' ऐसा ऊह जानना. तैसेही " आयंतुनः पितरःसो०, तिलोसिसोमदैवत्यो०, उशंतस्त्वानि० " पिंडानुमंत्रण, दशादान, उपस्थान, प्रवाहण, प्राशन इत्यादिकोंके मंत्र बहुवचनांत पितृपदयुक्त होनेसें तिन्होंमें ऊह नहीं करना यह प्रसिद्ध है. " प्रोक्षणसें वर्जित हुये वस्तुकों स्पर्श नहीं करना. मनुष्यकी वाणीका उच्चारण नहीं करना, भोजन करते हुये ब्राह्मणकों नहीं देखना, आंशुओंकों नहीं निकासना. दैवकर्म, पितृकर्म, जप, होम आदि कर्म इन्होंमें यतनकरके मौन धारण करना. तिस्सें संपूर्ण कर्मोंके फलकी प्राप्ति होती है. जप, होम, पूजा इत्यादिक कर्मोंमें मौन नहीं किया जावै तौ वैष्णवमंत्रका उच्चार करना, अथवा सनातन विष्णुका स्मरण करना. " स्मरणका मंत्र—" यस्यस्मृत्याचनामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ॥ न्यूनंसंपूर्णतां याति सद्योवंदेतमच्युतम्. " श्राद्धके आरंभ, मध्य और समाप्तिमें विष्णुनाम आदिका उच्चारण करना.

अथसंक्षेपतआश्वलायनादीनांप्रयोगक्रमः सव्येनापसव्येनवादेशकालौसंकीर्त्यापसव्येनतत्तच्छाखाहपितॄणांषष्ठीविभक्त्याएतेषाममुकश्राद्धंसदैवंसपिंडंपार्वणविधिनैकोद्दिष्टेनवान्नेनामेनवाहिरण्येनवाश्वःसद्योवाकरिष्यइतिसंकल्पोयथासंभवंकार्यः सर्वत्रकुरुष्वेत्यादियथोचितंब्राह्मणैःप्रतिवचनंदेयमेव ततोदैवधर्मेणविप्रस्यदक्षिणजानुंस्पृष्ट्वामुकपितॄणाममुकश्राद्धेअमुकविश्वेदेवार्थंत्वयाक्षणःक्रियतामितिक्षणं[1]दद्यात् ओंतथेतिविप्रोवदेत् कर्ताप्राप्नोतुभवानितिविप्रःप्राप्नवानीति एवंपितृधर्मेणवामजानुस्पर्शेनामुकश्राद्धेमुकस्यस्थानेत्वयाक्षणइत्यादिपूर्ववत् त्रयस्थानेएकविप्रत्वेपितृपितामहप्रपितामहानांस्थानेइत्यादिः अक्रोधनैरित्यादिप्रार्थना अत्रसर्वत्रदेवपूर्वत्वं क्वचित्पितृपूर्वकत्वंवक्ष्यते इदंसंकल्पक्षणदानादिपूर्वेद्युःसद्योवाकार्यं ततः कुतुपेस्नातःस्नातान्धौतपादान्विप्रान्सन्निधापयेत् ततःसव्येनतिलोदकयवोदकेआचारात्कार्ये ततःसव्येनशुद्ध्यर्थंप्रायश्चित्तार्थंसूक्तजपःप्रदक्षिणाच समस्तसंपदितिनमस्कारः अपसव्येनाचारादधिकारवाचनं ततआचमनप्राणायामौसव्येनकृत्वाअपसव्येनाद्वितीयःसंकल्पःकेचित्सद्यःकरणपक्षेद्वितीयसंकल्पंनेच्छंति ततस्तिष्ठन्सव्येनैवदैवेपित्र्येचभवतांस्वागतमितिप्रतिविप्रंप्रश्नः पूर्ववत्द्वितीयंक्षणदानम् अत्रबह्वृचानांगृह्याग्निमतांदर्शश्राद्धान्वष्टकापूर्वेद्युःश्राद्धे

---

[1] निमंत्रयेत् ।

षुपिंडपितृयज्ञव्यतिषंगेणश्राद्धप्रयोगोनान्येषांनापिश्राद्धांतरेषु सचद्वितीयक्षणदानांतश्राद्धतंत्रंकृत्वापरिसमूहनादीध्माधानांतपिंडपितृयज्ञतंत्रांतेपादक्षालनादिभस्ममर्यादांतं अग्नावग्नौकरणंकृत्वापरिवेषणादिसंपन्नवचनांतेपिंडदानादिपात्रोत्सर्गपर्यंतंकृत्वा विकिरादिश्राद्धशेषं समापनीयमित्येवंरूपः एवंहिरण्यकेशीयादीनामपिप्रथमसंकल्पोत्तरमग्न्युपसमाधानान्वाधानाद्याज्यसंस्कारांतेपाद्यादिपूजांतेतत्तन्मंत्रोहयुतःसविस्तरोग्नौकरणहोमोज्ञेयः ॥

अब संक्षेपसें आश्वलायन आदिकोंका प्रयोगक्रम कहताहुं.

सव्यकरके अथवा अपसव्यकरके देशकालका उच्चार करके अपसव्यकरके तिस तिस श्राद्धकों योग्य जो पितर तिन्होंका षष्ठीविभक्तिकरके "**एतेषाममुकश्राद्धंसदैवंसपिंडंपार्वणविधिनैकोद्दिष्टेनवान्नेनामेनवाहिरण्येनवाश्वःसद्योवाकरिष्ये,**" ऐसा संकल्प संभवके अनुसार करना. सब जगह '**कुरुष्व**' ऐसा यथायोग्य प्रतिवचन ब्राह्मणोंनें अवश्य देना. पीछे दैवधर्मकरके ब्राह्मणके दाहिने गोडेकों स्पर्श करके "**अमुकपितॄणाममुकश्राद्धेअमुकविश्वेदेवार्थत्वयाक्षणःक्रियताम्**" ऐसा कहके क्षण देना. पीछे "**ॐतथा**" ऐसा ब्राह्मणोंनें कहना. कर्तानें "**प्राप्नोतुभवान्**" ऐसा कहना. ब्राह्मणोंनें "**प्राप्नुवानि**" ऐसा बोलना. इस प्रकार पितृधर्मकरके ब्राह्मणके वाम गोडेकों स्पर्श करके "**अमुकश्राद्धेअमुकस्यस्थाने त्वयाक्षणः०**" इस आदि पूर्वकी तरह करना. त्रयीके स्थानमें एक ब्राह्मण होवै तो "**पितृपितामहप्रपितामहानांस्थाने०**" इत्यादिक जानना. "**अक्रोधनैः०**" इत्यादिक प्रार्थना करनी. यहां सब जगह देवपूर्वक कर्म करना. कहींक पितृपूर्वक कर्म कहेंगे. संकल्प करना, क्षण देना, आदि कर्म पूर्वदिनमें अथवा श्राद्धदिनमें करना. पीछे कुतुपकालमें स्नान करके कर्तानें स्नात हुये ऐसे और पैरोंकों धोये हुए ऐसे ब्राह्मणोंकों संनिध वैठायके पीछे सव्य होके तिलोदक और यवोदक आचारके अनुसार करना. पीछे सव्य करके शुद्धिके अर्थ और प्रायश्चित्तके अर्थ सूक्तोंका जप और परिक्रमा ये कर्म करने. और "**समस्तसंपत्०**" इस मंत्रकरके नमस्कार करना. आचारके अनुसार अपसव्य करके अधिकारवाचन करना. पीछे आचमन और प्रायाणाम सव्यसें करके अपसव्यसें दूसरा संकल्प करना. कितनेक ग्रंथकार, सद्यःकरणपक्षमें दूसरा संकल्प नहीं करना ऐसा कहते हैं. पीछे खडे रहके सव्यकरकेही देवकर्ममें और पितृकर्ममें "**भवतांस्वागतं**" ऐसा प्रत्येक ब्राह्मणोंके प्रति प्रश्न करके पहिलेकी तरह दूसरीवार क्षण देना. इस विषयमें गृह्याग्नियुक्त बव्हृचोंनें दर्शश्राद्ध, अन्वष्टकाश्राद्ध और पूर्वेद्युःश्राद्ध इन्होंमें; पिंडपितृयज्ञके व्यतिषंग करके श्राद्धप्रयोग करना, अन्य शाखावालोंनें नहीं करना, और बव्हृचोंनेंभी अन्य श्राद्धोंमें नहीं करना. वह व्यतिषंगप्रयोग कहा जाता है—दूसरीवार क्षण देना यहांपर्यंत कर्म करके परिसमूहनसें इध्मास्थापनपर्यंत पिंडपितृयज्ञका तंत्र किये पीछे ब्राह्मणके पादप्रक्षालनसें आरंभ करके भस्ममर्यादापर्यंत कर्म किये पीछे अग्निमें अग्नौकरण करके परिवेषणसें संपन्नवचनपर्यंत कर्म किये पीछे पिंडदानसें पात्रचालनपर्यंत कर्म करके विकिर आदि शेष श्राद्ध समाप्त करना. ऐसे स्वरूपका व्यतिषंगप्रयोग जानना. इस प्रमाणसें हिरण्यकेशीय आदिकोंका पहला संकल्प किये पीछे अग्निका

स्थापन, अन्वाधान इत्यादिक आज्यसंस्कारपर्यंत कर्म किये पीछे पाद्य आदिक पूजा. तिसके अनंतर तिन तिन मंत्रोंके ऊहसें युक्त, विस्तारसहित अग्नौकरणहोम जानना.

अथपाद्यं अंगणेश्राद्धदेशद्वारेवाचतुरस्रंद्विहस्तंप्रादेशमात्रंवोदक्प्लवंदेवमंडलंकृत्वा ततोदक्षिणेषडंगुलंत्यक्त्वादक्षिणाप्लवंचतुर्हस्तंवितस्तिमात्रंवा पितृमंडलंवर्तुलंसव्यापसव्यप्रादक्षिण्याप्रादक्षिण्यादिदैवपैतृधर्मेणगोमूत्रगोमयाभ्यांकार्यं यथायथंदर्भयवतिलगंधपुष्पैस्तदर्चनं मंडलसमीपेपीठेउपविष्टस्यैवप्राङ्मुखस्यविप्रस्यपादयोरुदङ्मुखः प्रत्यङ्मुखोवाकर्तामुकसंज्ञकाविश्वेदेवाइदंवः पाद्यंस्वाहानमइतियवगंधपुष्पयुतजलमंजलिनाप्रक्षिप्यशंनोदेवीरितिशुद्धोदकेनपादावपर्येवप्रक्षालयेत् नाधोभागेनापिसग्रंथिकपवित्रहस्तेनपितृमंडलेउदङ्मुखस्योपविष्टस्यपादयोर्दक्षिणामुखस्तिलगंधादिजलमंजलिनापितृतीर्थेन पितरमुकनामरूपगोत्रेदंतेपाद्यं स्वधानमइतित्रयस्थानेएकविप्रत्वेपितृपितामहप्रपितामहाइदंवःपाद्यमिति बहुवचनांतेनप्रक्षिप्यशंनोदेवीरित्यादिपूर्ववत् एवमग्रेपिपित्रादित्रयेब्राह्मणत्रयपक्षेइदंतेइत्येकविप्रपक्षेइदंवइतिवचनोहोज्ञेयः एवंमातामहादिपार्वणेपिबोध्यम् अत्रपाद्यात्पूर्वंपादार्घ्यःपाद्योत्तरंचगंधपुष्पाक्षतैःपादादिमूर्धांतमर्चनपूर्वकंदैवेएषवःपादार्घ्यइतिदत्वापित्र्येपितिलैर्मूर्धाद्यर्चनपूर्वकंपादार्घ्यदानमुक्तंतत्कात्यायनादीनामेवाचारात्तेषामेव बह्वृचानांतुनैषआचारः ततःपाद्यशेषंगंधयवतिलादिसव्यापसव्याभ्यांमंडलयोस्त्यक्त्वास्वपादक्षालनंपवित्रत्यागंचकृत्वान्यपवित्रेधृत्वादेवमंडलोत्तरेस्वयंविप्राश्च द्विराचम्यश्राद्धदेशेगच्छेयुः पादक्षालनोदकाचमनोदकयोःसंसर्गो नकार्यः अपसव्येनामुकश्राद्धसिद्धिरस्त्वितिवदेत्तैःप्रत्युक्तःनिरंगुष्ठंविप्रदक्षिणहस्तंधृत्वासव्यापसव्याभ्यांभूर्भुवःस्वः समाध्वमितिसदर्भेषुपीठेविलंबेनोपवेशयेत् तत्रदैवेप्राङ्मुखोविप्रःपित्र्येतूदङ्मुखःअसंभवेदक्षिणान्यदिङ्मुखः ॥

अब पाद्य कहताहुं.—आंगणमें अथवा श्राद्धभूमीके द्वारमें चतुष्कोण, दो हाथपरिमित किंवा प्रादेशमात्र उत्तरके तर्फ नीचा ऐसा देवमंडल बनाके पीछे दक्षिणके तर्फ छह अंगुल जगह छोडके दक्षिणके तर्फ नीचा चार हाथपरिमित किंवा वितस्तिमात्र ऐसा पितृमंडल वर्तुल, सव्य और अपसव्य, प्रादक्षिण्य और अप्रादक्षिण्य; इत्यादि दैवपितृधर्मकरके गोमूत्र और गोवरसें करना. पीछे यथायोग्य डाभ, जव, तिल, गंध और पुष्प इन्होंसें तिस मंडलकी पूजा करनी. मंडलके समीपमें पटडापर बैठा हुआ और पूर्वकों मुखवाला ऐसा जो ब्राह्मण तिसके पैरोंपर उत्तरकों मुखवाले अथवा पश्चिमकों मुखवाले कर्तानें “**अमुकसंज्ञका विश्वेदेवा इदं वः पाद्यं स्वाहा न मम**” ऐसा कहके जव, गंध, पुष्प इन्होंसें युक्त जलकी अंजलि छोडके “**शन्नोदेवी०**” इस मंत्रसें शुद्धजलकरके ब्राह्मणके पैरोंकों उपरसें धोना, पैरोंके अधोभागकों नहीं धोना, और ग्रंथियुक्त पवित्र हाथमें घालके पैरोंकों नहीं धोना. पितृमंडलके स्थानमें उत्तराभिमुख बैठाया जो ब्राह्मण तिसके पैरोंपर कर्तानें दक्षिणाभिमुख होके तिल, गंध इत्यादिसें युक्त जलकी अंजलिसें पितृतीर्थकरके “**पितरमुकनामरूपगोत्रेदंते पाद्यं स्वधा नमः**” इस प्रकार तीन स्थानोंमें करना. एक ब्राह्मण होवै तौ “**पितृपितामहप्रपितामहा इदं वः पाद्यं**” ऐसा बहुवचनांत वाक्य कहके तिसकरके जल डालना. और

"शन्नोदेवी०" इत्यादिक मंत्रकरके पहलेकी तरह पैरोंकों धोना. इसी प्रमाण आगेभी पिता आदि त्रयीके स्थानमें तीन ब्राह्मणोंका पक्ष होवै तौ **"इदं ते"** ऐसा एक ब्राह्मणके पक्षमें जो उच्चार सो **"इदं वः"** ऐसे बहुवचनसें ऊह जानना. इसी तरह मातामह आदिके पार्वणमेंभी जानना. यहां पाद्यसमयमें पाद्यके पहले पादार्घ्य और पाद्यके अनंतर गंध, पुष्प और अक्षत इन्होंकरके पैरोंसें मस्तकपर्यंत पूजनपूर्वक विश्वेदेवोंके अर्थ **"एष वः पादार्घ्यः"** ऐसे वाक्यसें देके पितरोंके अर्थ तिलोंकरके मस्तकसें पैरोंपर्यंत पूजनपूर्वक पादार्घ्यदान करना ऐसा कहा है, सो कात्यायन आदिकोंकाही आचार होनेसें तिन्होंकोंही विहित कहा है. ऋग्वेदियोंका यह आचार नहीं है. तिसके अनंतर पाद्य देके जो शेष गंध, जव, तिल आदिक सव्यसें और अपसव्यसें दोनों मंडलोंपर छोडके अपने पैरोंकों धोके पवित्रोंकों त्यागके दूसरे पवित्रोंकों धारण करके देवमंडलके उत्तरप्रदेशमें आप और ब्राह्मणोंनें दो वार आचमन करके श्राद्धभूमिमें गमन करना. पैरोंकों धोनेके जलकों और आचमनका जल इन्होंकों मिलाना नहीं. अपसव्य करके **"अमुकश्राद्धसिद्धिरस्तु"** ऐसा कहना. पीछे तिन ब्राह्मणोंनें प्रतिवचन दिये पीछे ब्राह्मणके अंगुठासें रहित दाहिने हाथकों पकडके सव्य और अपसव्यसें **"भूर्भुवःस्वःसमाध्वं"** ऐसा कहके डाभसहित पाटडोंपर ब्राह्मणोंकों शीघ्र बैठाने. तिन्होंके मध्यमें देवतोंकी जगह पूर्वाभिमुख ब्राह्मण और पितरोंकी जगह उत्तराभिमुख ब्राह्मण बैठाने. असंभव होवै तौ दक्षिणदिशाकों वर्जित करके अन्य दिशाके अभिमुख ब्राह्मणकों बैठाने.

अथआसनानि हैमंराजतंताम्रंवादुकूलंकंबलंवादारुजंतृणमयंपर्णमयंवासनंप्रशस्तम् दारुजेषुश्रीपर्णीजंबूकदंबाम्रबकुलशमीश्लेष्मातकशालवृक्षजन्यान्यासनानिशस्तानि अयःशंकुमयंपीठंप्रदेयंनोपवेशने अग्निदग्धान्यायसानिभग्नानिचविवर्जयेत् प्राक्संस्थादक्षिणासंस्थाभोक्तृपंक्तिस्तुपैतृके तत्रदेवासनेप्रागग्रौद्वौदर्भौपित्र्येदक्षिणाग्रैकैकंदर्भंस्थापयेत् घृतैस्तिलादितैलैर्वास्थापयेच्चप्रतिद्विजं दीपंसव्यापसव्याभ्यांदीपमेकंतुसव्यतः ब्राह्मणाश्चेतःप्रभृत्याश्राद्धसमाप्तेर्मौनिनःपवित्रहस्ताउच्छिष्टोच्छिष्टस्पर्शंवर्जयंतोवर्तेरन् अत्रयथालक्षणअतिथिरागतश्चेत्सव्येनविप्रपंक्तौविष्णूद्देशेनपूजयेत् सव्येनापवित्रःपवित्रोवेतिमंत्रंपठित्वावैष्णव्यैनमः काश्यप्यैनमः क्षमायै० इतिभूमिंनत्वामेदिनीलोकमातात्वमित्यादिश्लोकैःस्तुत्वाच श्राद्धभूमिंगयांध्यात्वाध्यात्वादेवंगदाधरं प्राचीनावीति तद्विष्णोःपरमंपदं० तद्विप्रासो० गायत्रींचजपित्वा सव्येनप्राणायामतिथ्यादिकीर्तनांतेपसव्येनामुकपितृणामुपक्रांतममुकश्राद्धंकरिष्येइतिसंकल्प्यात्रादौमध्येंतेचदेवताभ्यःपितृभ्यश्च० अमूर्तानांच० चतुर्भिश्च० यस्यस्मृत्येतिचत्रिःपठेत् ॥

अब आसन कहताहुं.—सोनाका, चांदीका, अथवा तांबाका, अथवा वस्त्रसें बना, कंबल, काष्ठसें बना, तृणसें बना, पत्तोंसें बना ऐसा आसन प्रशस्त होता है. काष्ठसें बने आसनोंमें शिवण, जामन, कदंब, आंब, बकुल, जांटी, ल्हेसुवा, शालवृक्ष, इन्होंसें बने आसन उत्तम होते हैं. "लोहाकी कीलोंसें युक्त हुआ आसन बैठनेकों नहीं देना. अग्निसें जले हुये और लोहाके टूटे हुये आसन वर्जित करने." "पितरोंके तर्फ प्राक्संस्था, दक्षि-

णसंस्था ब्राह्मणोंकी पंक्ति बैठानी.” तिन्होंके मध्यमें पूर्वकों आग्रभागवाले दो डाभ देवतोंके आसनपर देने. पितरोंके आसनपर दक्षिणके तर्फ आग्रभागवाला एक एक डाभ इस प्रमाणसें आसनपर डाभकों स्थापित करना. घृतका अथवा तिलोंके तेलका एक एक दीपक सव्यसें और अपसव्यसें ब्राह्मण ब्राह्मणकेप्रति प्रकाशित करना. एकही दीपक प्रकाशित करना होवै तौ सव्यकरके प्रकाशित करना.” इस समयसें आरंभ करके श्राद्धकी समाप्तिपर्यंत मौन धारण करनेवाले और हाथोंमें पवित्राकों धारण करनेवाले, उच्छिष्टोच्छिष्टका स्पर्श वर्जित करनेवाले ऐसे ब्राह्मणोंनें रहना. यहां लक्षणोंके अनुसार अतिथि अर्थात् अभ्यागत प्राप्त होवै तौ सव्यसें ब्राह्मणोंकी पंक्तिमें तिसकों बैठायके विष्णुके उद्देशसें तिसकी पूजा करनी. सव्यसें “**अपवित्रःपवित्रोवा०**” यह मंत्र कहके “**वैष्णव्यै नमः, काश्यप्यै नमः, क्षमायै नमः,**” ऐसा पृथिवीकों नमस्कार करके “**मेदिनीलोकमातात्व०**” इत्यादिक श्लोकोंसें स्तुतिभी करनी. पीछे “**श्राद्धभूमिंगयांध्यात्वाध्यात्वादेवंगदाधरं०**” इत्यादिक मंत्र कहके और अपसव्य होके “**तद्विष्णोः परमं पदं० तद्विप्रासोवि०**” इन मंत्रोंका और गायत्रीमंत्रका जप करके और सव्य होके प्राणायाम, तिथि आदिका उच्चार करके पीछे अपसव्य होके “**अमुकपितॄणामुपक्रांतममुकश्राद्धंकरिष्ये**” ऐसा संकल्प करके इस स्थलमें पूर्व, मध्य और अंतमें “**देवताभ्यः पितृभ्यश्च०, अमूर्तानां०, चतुर्भिश्च०, यस्यस्मृत्या०**” इस प्रमाणसें तीनवार पाठ करना.

अथदक्षिणेवामेवाकुक्षौतिलैःसहकुशत्रयं परिहितवस्त्रांचलबद्धंकृत्वाकटिसंलग्नवस्त्रबहिर्भागेनसंवेष्टयरक्षणाख्योनीवीबंधोनिहन्मिसर्वंयदमेध्यवद्भवेदितिश्लोकमंत्रेणकार्यः सर्वतश्चापसव्येनापहतेत्यप्रदक्षिणं तिलान्क्षिप्त्वोदीरतेतिसव्येनप्रोक्षणंस्मृतं तिलारक्षंतुमंत्रेणद्वारेकुशतिलान्क्षिपेत् तरत्समंदीसूक्तेनपावमानीभिरेवच अभिमंत्र्यजलंतेनपाकादिप्रोक्षयेत्सुधीः यद्वातद्विष्णोर्मंत्रेणगायत्र्यावाभिमंत्रितं यद्देवाइतिमंत्राणांत्रयेणैवान्यशाखिनः वाचयेत्पाकपूतत्वंपुष्पाद्यंसर्वमुक्षयेत् नाप्रोक्षितंस्पृशेच्छ्राद्धकालेत्र्येतंजपेत्ततः पदार्थयोग्यतांवाचयित्वादेवार्चनंचरेत् तत्रप्रत्युपचारंदैवेपित्र्येचाद्यंतयोरपोदद्यात् देवद्विजसन्निधावुदङ्मुखउपविश्य तद्दक्षिणकरमुत्तानंवामकरेणधृत्वादक्षिणेनसयवंदर्भद्वयममुकेषांविश्वेषांदेवानांभूर्भुवःस्वरिदमासनंस्वाहेतिहस्तेजलमासिच्यदक्षिणभागेआसनेक्षिपेन्नहस्तेदर्भदानं आसनेष्वासनं दद्यान्नतुपाणौकदाचन पितृकर्मणिवामेचदैवेदद्यात्तुदक्षिणे विप्रोधर्मोसिविशिराजाप्रतिष्ठित इतिमंत्रेणगृहीत्वास्वासनमितिवदेत् कर्तासनंस्पृशन्नपोदत्वास्यतामितिविप्रोधर्मोसीतिवदेत् अपोदत्वादैवेक्षणःक्रियतामितिनिरंगुष्ठंकरंगृह्णीयादोंतथेत्यादिप्राग्वत् इदंतृतीयनिमंत्रणं ॥

इसके अनंतर दाहिनी अथवा वामी कूखमें तिलोंसहित तीन कुश परिधान किये वस्त्रके अंतमें बांधके कटिसें संलग्न हुया जो वस्त्रका बाहिरका भाग तिसकरके वेष्टन करके यह रक्षणनामक नीवीबंध, “**निहन्मिसर्वंयदमेध्यवद्भवेत्०**” इस श्लोकमंत्रसें करना. सब जगह अपसव्यकरके “**अपहता०**” इस मंत्रसें अप्रदक्षिण कर्म करना, और “**उदीरता०**” इस मंत्रसें तिलोंकों डालके सव्यसें प्रोक्षण करना. “**तिलारक्षंतु०**” इस मंत्रसें श्राद्धभूमिके द्वारदेशमें कुशयुक्त तिल डालने. “**तरत्समंदी०**” इस सूक्तसें और “**पावमानी०**”

इन ऋचाओंसें जल अभिमंत्रित करके तिस जलसें पाक आदि पदार्थपर प्रोक्षण करना. अथवा “ **तद्विष्णो०** ” इस मंत्रसें, किंवा गायत्रीमंत्रसें, किंवा “ **यद्देवा०** ” इस मंत्रसें जल अभिमंत्रित करना. अन्य शाखावालोंनें तीन मंत्रोंसेंही अभिमंत्रण करना. पाककी पवित्रता बोलनी, और तिस अभिमंत्रित किये जलसें पुष्प आदि पूजाके सब उपचार प्रोक्षण करने. श्राद्धकालमें प्रोक्षणसें रहित पदार्थकों स्पर्श नहीं करना. प्रोक्षण नहीं किया जावै तौ तिस मंत्रका जप करना. पदार्थकी योग्यता बोलके देवतोंकी पूजा करनी. ” तिन्होंके मध्यमें प्रत्येक उपचार समर्पण करनेके समयमें देवतोंकी तर्फ और पितरोंकी तर्फ उपचारके आदिअंतमें जल देना. देवस्थानमें जो ब्राह्मण होवै तिसके समीपमें उत्तरकों मुखवाला होके बैठके तिस ब्राह्मणके सीधे दाहिने हाथकों वाम हाथसें धारण करके दाहिने हाथसें जवोंसहित दो डाभ “ **अमुकेषांविश्वेषांदेवानांभूर्भुवःस्वरिदमासनं स्वाहा** ” ऐसा कहके हाथपर जल सिंचन करके दक्षिणभागमें आसनपर देना, हाथमें डाभ नहीं देने. “ आसनोंके स्थानमें आसन देना, हाथपर कबीभी आसन नहीं देना. पितृकर्ममें वामभागविषे और दैवकर्ममें दक्षिणभागविषे आसन देना. ” ब्राह्मणोंनें “ **धर्मोसिविशिराजाप्रतिष्ठितः** ” इस मंत्रसें ग्रहण करके “ **स्वासनं** ” ऐसा प्रतिवचन देना. कर्तानें आसनकों स्पर्श करके और जल देके “ **आस्यतां** ” ऐसा कहे पीछे ब्राह्मणोंनें “ **धर्मोसि** ” ऐसा कहना. पीछे जल देके “ **दैवे क्षणः क्रियतां** ” ऐसा कहके अंगूठासें रहित हाथ ग्रहण करना. “ **ॐतथा** ” इत्यादिक पहलेकी तरह जानना. यह तीसरा निमंत्रण है.

अथार्घ्यकल्पना तत्रपात्राणिहैमंरौप्यंताम्रमयंवादारुजंवापलाशादिपर्णमयंवाकांस्यंवाशंखशुक्तिजंवाखड्गपात्रंवार्घ्यपात्रंप्रशस्तं अत्रविप्रैकत्वद्वित्वचतुष्केष्वपिदैवेर्घ्यपात्रद्वयमेव यत्तुदैवेद्वेर्घ्यपात्रेपित्र्येत्रीण्युभयत्रैकैकंवेत्येकपात्रत्वपक्षांतरंतदशक्तिपरं एवंपात्रद्वयंप्रोक्षितायांभुविप्रागग्रकुशेषुन्युब्जमुत्तानंवासाद्यप्रोक्ष्य न्युब्जपक्षेउत्तानीकृत्यतयोर्द्विकुशेद्वेद्वेपवित्रेनिधायशंनोदेवीरितिमंत्रावृत्त्यापआसिच्ययवोसीतिमंत्रेणावृत्त्यायवानोप्यतूष्णींगंधपुष्पाणिक्षिपेत् केचिद्गंधद्वारांओषधीःप्रतिमोदध्वमित्यृग्भ्यांगंधपुष्पाणिक्षिपंति देवार्घ्यपात्रेसंपन्नेइत्युक्त्वा सुसंपन्नेइतिप्रत्युक्तोवामकरंविप्रदक्षिणजानुनिन्यस्यामुकविश्वान्देवान्भवत्स्वावाहयिष्येइतिपृष्ट्वावाहयेत्यनुज्ञातोविश्वेदेवासआगतेत्यृचाप्रतिविप्रंदक्षिणपादादियुग्मंक्रमेणजान्वंसमूर्धांतंयवान्विकिरेत् विश्वेदेवाःशृणुतेत्यृचोपस्थायभूमौशिष्टान्यवान्विकिरेत् हिरण्यकेशीयादयस्त्वर्घ्यदानगंधादिपूजोत्तरमग्नौकरणकालेयेदेवासइत्यायातपितरइतिमंत्राभ्यामग्निदक्षिणतोदेवपित्रावाहनंकुर्वंति कातीयैस्त्वर्घ्यपात्रासादनात्प्रागेवदेवपित्रावाहनंकार्यं तथैवकात्यायनसूत्रात् ततोर्घ्यपात्रसंपत्तिंवाचयित्वाद्विजोत्तमान् तदग्रेचार्घ्यपात्रेतुस्वाहार्घ्यइतिविन्यसेत् अपोदत्वाविप्रहस्तेदद्यादर्घ्यपवित्रके यादिव्याइतिमंत्रेणहस्तेष्वर्घ्यंविनिक्षिपेत् विश्वेदेवाइदंवोर्घ्यंस्वाहानमइतीरयन् प्रतिविप्रंयादिव्येत्यावृत्तिः केचित्तुयादिव्याइत्यनेनदत्तार्घ्यानुमंत्रणमाहुः मयूखेकातीयप्रयोगेविप्रहस्तेर्घ्यपवित्रदानांतेआवाहनवदंगेष्वर्चनंकृत्वार्घ्यदानमित्युक्तं एकविप्रत्वेएकस्यैवहस्तेद्विरर्घ्यदानंविप्रचतुष्टयपक्षेएकैकंपात्रंविभज्यद्वयोर्द्वयोर्देयंकूर्चस्तुतत्तत्पात्रस्थएव ॥

अब अर्घ्यकल्पना कहताहुं.—तिन्होंके मध्यमें पात्र—सोनाके, चांदीके, तांबाके अथवा काष्ठके अथवा ढाक आदिके पत्तोंके अथवा कांशीके अथवा शंख और शिंपीके अथवा गैंडाकी ढालके अर्घ्यपात्र प्रशस्त हैं. यहां अर्घ्यविषे एक अथवा दो, अथवा चार ब्राह्मण होवैं तबभी देवतोंके तर्फ दोही अर्घ्यपात्र होते हैं. देवतोंके तर्फ दो अर्घ्यपात्र; पितरोंके तर्फ तीन अथवा दोनों जगह एक एक अर्घ्यपात्र इस प्रमाण एक पात्रत्वरूप जो दूसरा पक्ष वह अशक्तिविषयक कहा है. इस प्रकार प्रोक्षित करी पृथिवीविषे पूर्वकों अग्रभागवाले डाभोंपर सीधे अथवा मूंधे दो पात्रोंकों स्थापित करके और प्रोक्षण करके मूंधा करनेके पक्षमें सीधे करके तिन्होंमें दो डाभ और दो पवित्रे धरके **"शन्नोदेवीः०"** इस मंत्रावृत्तिसें तिन पात्रमें जल डालके **"यवोसि०"** इस मंत्रकी आवृत्तिसें जव डालके मंत्रसें रहित गंधपुष्प डालने. कितनेक शिष्ट **"गंधद्वारां०, ओषधीःप्रतिमोदध्वं"** इन दो ऋचाओंसें गंधपुष्पकों डालते हैं. पीछे **"देवार्घ्यपात्रेसंपन्ने"** ऐसा वाक्य कहके **"सुसंपन्ने"** ऐसा ब्राह्मणोंनें प्रतिवचन दिये पीछे कर्तानें अपना वाम हाथ ब्राह्मणके दाहिने गोडेपरे स्थापित करके **"अमुकविश्वान्देवान्भवत्स्वावाहयिष्ये"** ऐसे वाक्यसें पूछके **"आवाहय"** ऐसी आज्ञाकों प्राप्त हुआ **"विश्वेदेवास आगत०"** इस ऋचासें प्रत्येक ब्राह्मणके दाहिने पैरसें आरंभ करके युग्म ऐसे क्रमसें गोडा, कंधा और मस्तकपर्यंत जव डालने. पीछे **"विश्वेदेवाः शृणुते०"** इस ऋचासें प्रार्थना करके शेष रहे जव भूमिपर डालने. हिरण्यकेशीय आदिक तौ अर्घ्यदान, गंधादि पूजा ये किये पीछे अग्नौकरणकालमें **"येदेवास०"** यह मंत्र और **"आयातपितर"** यह मंत्र इन दोनों मंत्रोंसें अग्नीके दक्षिणदेशमें देव और पितरोंका आवाहन करते हैं. कात्यायनोंनें तौ अर्घ्यपात्र स्थापन करनेके पहलेही देवपितरोंका आवाहन करना. क्योंकी, कात्यायनसूत्र तैसाही कहता है. "पीछे अर्घ्यपात्रकी संपत्ति ब्राह्मणोंसें कहवायके ब्राह्मणके अग्रभागमें अर्घ्यपात्र **"स्वाहा अर्घ्यः"** ऐसा कहके रखने. पीछे ब्राह्मणके हाथपर जल देके अर्घ्यपात्रस्थ पवित्र हाथपर देना और **"यादिव्या०"** इस मंत्रसें हाथपर अर्घ्य देके **"विश्वेदेवा इदं वोर्घ्यं स्वाहा नमः"** ऐसा कहना. प्रत्येक ब्राह्मणके स्थानमें **"यादिव्या०"** इस मंत्रकी आवृत्ति करनी. कितनेक ग्रंथकार तौ **"यादिव्या०"** इस मंत्रसें दिये अर्घ्यका अनुमंत्रण करना ऐसा कहते हैं. **मयूखग्रंथमें** कातीयप्रयोगविषे ब्राह्मणके हाथमें अर्घ्य और पवित्र दिये पीछे आवाहनकी तरह अंगोंके स्थानमें अर्चन करके पीछे अर्घ्यदान करना ऐसा कहा है. एक ब्राह्मण होवै तौ एककेही हाथपर दोवार अर्घ्य देना. चार ब्राह्मणोंका पक्ष होवै तौ एक एक पात्र वांटके दो दो ब्राह्मणोंकों देना. कूर्च तौ तिस तिस पात्रस्थही ग्रहण करना.

क्वचित्क्षीरदधिघृततिलतंडुलसर्षपकुशाग्रपुष्पेतिद्रव्याष्टकमर्घ्यपात्रेप्रक्षिप्यामित्युक्तं आद्यं तयोरपोयच्छन्गंधाद्यैरर्चनंचरेत् अमुकविश्वेदेवाअयंवोगंधःस्वाहानमइतिकरेणैवविप्रहस्तेष्वेवद्भिर्द्धिर्दानं एवंसर्वत्रदैवेस्वाहानमइत्यंतमुच्चार्योपचारदानं चंदनागरुकर्पूरकुंकुमानिप्रदापयेत् गंधद्वारेतिवैगंधमायनेतेचपुष्पकं धूरसीत्यमुनाधूपमुद्दीप्यस्वेतिदीपकं युवंवस्त्राणिमंत्रेणवस्त्रंदद्यात्प्रयत्नतः आसनेस्वासनंब्रूयादर्घ्येस्वर्घ्यंद्विजोत्तमः सुगंधश्चसुपुष्पाणिसुमाल्यानिसुधूप

कः सुज्योतिश्चैवदीपश्चस्वाच्छादनमितिक्रमः कर्तास्कंधधृतोत्तरीयोविगतपवित्रकरोविप्रहस्तदत्तगंधैर्विप्रभालाद्यंगेषुलिंपेत् विप्रभालेवर्तुलपुंड्रंत्रिपुंड्रंवानकुर्यात् अत्रविप्राणांकस्तूरीविकल्पिता आयनेतेइतिवौषधीःप्रतिमोदध्वमितिवागंधदानवद्धस्तेष्वेवेदंवःपुष्पमितिपुष्पदानं कार्यं ॥

कहींक ग्रंथमें दूध, दही, घृत, तिल, चावल, शिरसम, कुशोंके अग्रभाग और पुष्प इस प्रकार आठ द्रव्य अर्घ्यपात्रमें डालने ऐसा कहा है. प्रत्येक उपचारकी आदि अंतमें जल देके गंधादिक उपचारोंसें पूजा करनी. "अमुकविश्वेदेवा अयं वो गंधः स्वाहा नमः" इस वाक्यसें हाथकरकेही ब्राह्मणके हाथपर दो दोवार गंध देना. ऐसा सब जगह देवकर्ममें "स्वाहा नमः" इसपर्यंत उच्चार करके उपचार देने. "चंदन, अगर, कपूर और केसर ये पदार्थ अर्पण करने. "गंधद्वारां०" इस मंत्रसें गंध, "आयनेते०" इस मंत्रसें पुष्प, "धूरसि०" इस मंत्रसें धूप, "उद्दीप्यस्व०" इस मंत्रसें दीपक, "युवंवस्त्राणि०" इस मंत्रसें वस्त्र प्रयत्नसें देना. आसनविषे "स्वासनं" ऐसा, अर्घ्यविषे 'अस्त्वर्घ्यं' ऐसा ब्राह्मणनें बोलना. गंध आदिविषे 'सुगंधः' 'सुपुष्पाणि' 'सुमाल्यानि' 'सुधूपकः' 'सुज्योतिः' अथवा 'सुदीपः,' 'स्वाच्छादनं' ऐसा क्रम जानना." कर्तानें कंधापर उत्तरीय वस्त्र धारण करके हाथोंसें पवित्रोंको काढके ब्राह्मणके हाथपर दिये गंधसें ब्राह्मणके कपाल आदि अंगोंपर लेप करना. ब्राह्मणके मस्तकपर गोल पुंड्र अथवा त्रिपुंड्र नहीं करना. यहां ब्राह्मणोंको कस्तूरीका तिलक करना अथवा नहीं करना. "आयनेते०" इस मंत्रसें, अथवा "ओषधीः प्रतिमोदध्वं०" इस मंत्रसें गंधदानकी तरह हाथपरही "इदंवः पुष्पं" ऐसा कहके पुष्पदान करना.

तत्रविहितपुष्पाणि अगस्त्यंभृंगराजंचतुलसीकमलंतथा चंपकंतिलपुष्पंचदूर्वाश्चपितृवल्लभाः विहिताप्रतिषिद्धाचतुलसीपिंडपूजने सुकुमारैःकिसलयैर्यवदूर्वांकुरैरपि जलोद्भवैश्च कुसुमैर्मल्लिकाचूतपुष्पकैः अतिमुक्तैश्चतगरैःसंपूज्याःपितरःसदा जातीपुष्पैर्विप्रपूजांकुर्यात्पिंडार्चनंतुनः ॥

तहां विहित पुष्पोंको कहताहुं.—अगस्त्य, भंगरा, तुलसी, कमल, चंपा, तिलपुष्प और दूर्वा ये पितरोंको प्रिय होते हैं. पिंडोंकी पूजामें तुलसी विहित है और निषिद्ध है. कोमल पत्ते, जव, दूर्वाके अंकुर, जलमें उत्पन्न हुये पुष्प, मोगरी, आंबाका मोर, मधुमाधवीके पुष्प, तगरके पुष्प, इन्होंकरके पितरोंकी सब काल पूजा करनी. चमेलीके पुष्पोंसें ब्राह्मणोंकी पूजा करनी, पिंडोंकी नहीं करनी.

अथवर्ज्यपुष्पाणि करवीरंचधत्तूरंबिल्वपत्रंचकेतकीं बकुलंकुंदपुष्पंचकिंशुकंचकुरंटिकां सर्वाणिरक्तपुष्पाणिवर्जयेच्छ्राद्धकर्मणि जलोद्भवानिदेयानिरक्तान्यपिविशेषतः ॥

अब वर्जनेके योग्य पुष्पोंको कहताहुं.—"कनेर, धत्तूरा, बेलपत्र, केतकी, बकुल, कुंदपुष्प, केसू पुष्प, कुरंटाका पुष्प और सब प्रकारके लाल पुष्प ये सब श्राद्धकर्ममें वर्जित करने. जलमें उत्पन्न हुये लाल पुष्प विशेष करके अर्पण करने."

अथधूपः धूपस्तुगुग्गुलुर्देयस्तथाचंदनसारजः अगरुश्चसकर्पूरोघृतमध्वादिसंयुतः येतु प्राण्यंगजाधूपाहस्तवाताहताश्चये नतेश्राद्धेनियोक्तव्यायेचकेचोग्रगंधयः घृतंनकेवलंदद्याद्दुष्टंवातृणगुग्गुलं पाददेशेयंवोधूपइतिदानं ॥

अब धूप कहताहुं.—गूगलका धूप, चंदनके सारसें उपजा धूप, घृत, शहद, आदिसें युक्त और कपूरसहित अगरका धूप देना. जीवोंके अंगसें उत्पन्न हुये और हाथोंके पवनसें प्रदीप्त किये और उग्रगंधवाले धूप ये श्राद्धमें अर्पण नहीं करने. अकेला घृत नहीं देना. तृण और गूगलसें दुष्ट हुआ नहीं देना. ब्राह्मणोंके पैरोंके समीप "अयंवोधूपः" ऐसा कहके धूप देना.

अथदीपः घृतेनदीपोदातव्यस्तिलतैलेनवापुनः वसामेदादिदीपोवर्ज्यः इदंवोज्योतिरिति वायंवोदीपप्रकाशइतिवामुखसमीपेदीपः ॥

अब दीपक कहताहुं.—"घृत किंवा तिलोंके तेलकरके प्रकाशित किया दीपक देना." मांसका स्नेह, मेद अर्थात् धातूका स्नेह इन आदिसें प्रकाशित किया दीपक वर्जित करना. "इदंवोज्योतिः," अथवा "अयंवोदीपप्रकाशः" ऐसा कहके ब्राह्मणके मुखके समीप दीपक सर्मपण करना.

कौशेयंकार्पासंवावस्त्रंविहितं कृष्णंमलिनमुपभुक्तंछिद्रितंनिर्दशंरजकधौतंचनिषिद्धंयज्ञोपवीतंदातव्यंवस्त्राभावेविजानता निष्क्रयोवायथाशक्तिवस्त्रालाभेप्रदीयते पितॄन्सत्कृत्यवासोभिर्दद्याद्यज्ञोपवीतकं यज्ञोपवीतदानेनविनाश्राद्धंतुनिष्फलं यज्ञोपवीतंयतिस्त्रीशूद्रश्राद्धेष्वपिज्ञेयं ॥

रेशिमका अथवा रुईका वस्त्र विहित है. काला, मलिन, पहना हुआ, छिद्रोंवाला, दशासें रहित, धोबीनें धोया हुआ, ये वस्त्र निषिद्ध हैं. "वस्त्रके अभावमें सुज्ञ पुरुषनें यज्ञोपवीत अर्थात् जनेऊ देना. अथवा वस्त्रके अलाभमें शक्तिके अनुसार वस्त्रकी कीमत देनी. पितरोंका वस्त्रोंसें सत्कार करके जनेऊ अर्पण करना. जनेऊके दानके विना किया श्राद्ध निष्फल होता है. संन्यासी, स्त्री और शूद्र इन्होंके श्राद्धमेंभी जनेऊ देना.

अथान्यान्यपिदेयानि धातुमयानिधूपदीपपात्राणि कमंडलुंताम्रमयंकाष्ठजंवापिमृन्मयं नारिकेलमयंवापिश्राद्धेदद्यात्प्रयत्नतः छत्रोपानदासनशयनदर्पणचामरव्यजनपादुकाकेशप्रसाधनीपटवासादिसुगंधचूर्णागारधानिकायष्टिकंबलांजनशलाकाश्चदेयाः अलंकाराश्चदातव्यायथाशक्तिहिरण्मयाः केयूरहारकटकमुद्रिकाकुंडलादयः स्त्रीभ्योयोषिदलंकारादेयाःश्राद्धेषुयोषितां मंजीरमेखलादामकर्णिकाकंकणादयः सौवर्णराजतंकांस्यंदद्याद्भोजनभाजनं कर्पूरादेश्चभांडानितांबूलायतनंतथा स्वयमन्येनवाबंदीकृतानांकेनाप्युपायेनमोचनेपितॄणांब्रह्मपदं॥

अब अन्य देनेके योग्य पदार्थ कहताहुं.—धातुसें बने हुये धूप और दीपके पात्र देने. "श्राद्धमें जतनकरके तांबाका, काष्ठका अथवा माटीका किंवा नारियलका कमंडलु देना." छत्री, जूतीजोडा, आसन, पलंग, बिछोना, शीसा, चवर, वीजना, खडाऊं, कंघवा अथवा

कांघई, सुगंधचूर्ण, अंगीठी, लाठी, कंबल, अंजन, सलाई ये पदार्थ देने. शक्तिके अनुसार सोनासें बने हुये बांहके गहने, बाजूबंध हार, कडूले, अंगूठी, कुंडल इन आदि गहने देने. स्त्रियोंके श्राद्धोंमें स्त्रियोंकों पाजेव, तगडी, कानका भूषण, कांगणी, इन आदि स्त्रियोंके गहने देने. सोनाके, चांदीके, कांसीके ऐसे भोजनपात्र, कपूर आदि घालनेकी डीबी, तांबूलके पात्र, अर्थात् पानदान ये दान करने." आप अथवा अन्यनें कैद किये हुये मनुष्योंकों किसी उपायसें बंधमुक्त किये जावैं तौ पितरोंकों ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है.

इत्थंचोक्तवचनादाच्छादनदानांते पृथग्यज्ञोपवीतंदत्वाशक्तिसत्त्वेछत्रालंकारादिकंदत्वातत्कालेस्पर्शायोग्यानांसंकल्पंकृत्वापूजनंपूर्णमस्तुसंकल्पसिद्धिरस्त्वित्युक्त्वाप्रत्युक्तौ मंत्रहीनंक्रियाहीनंसंपद्धीनंद्विजोत्तमाः श्राद्धंसंपूर्णतांयातुप्रसादाद्भवतांमम यस्यस्मृत्या० देवताभ्य० इतिजपेत् एवमासनादिसर्वपूजाकांडंदैवंसमाप्यपैतृकमासनप्रभृतिपूजाकांडमारभेदितिकांडानुसमयक्रमएवमाधवसंमतः ॥

इस प्रकार कहे हुए वचनसें आच्छादन देके अनंतर पृथक् यज्ञोपवीत देके शक्ति होवै तौ छत्री और गहना आदि देना. तत्कालमें स्पर्शके अयोग्य जो होवैं तिन्होंका संकल्प करके "पूजनंपूर्णमस्तु, संकल्पसिद्धिरस्तु" ऐसा बोलके प्रतिवचन दिये पीछे "मंत्रहीनं क्रियाहीनं संपद्धीनं द्विजोत्तमाः ॥ श्राद्धं संपूर्णतां यातु प्रसादाद्भवतां मम ॥ यस्य स्मृत्या० देवताभ्यः० " इस प्रकार जप करना. ऐसा आसन आदि सब पूजाकांड देवसंबंधी समाप्त करके पितृसंबंधी आसन आदि पूजाकांडका आरंभ करना. इस प्रकार कांडानुसमयक्रमही माधवकों संमत है.

कातीयास्त्वासनक्षणावाहनार्घ्यपर्यंतं पाद्यांतप्रयोगात्पदार्थानुसमयक्रमेणैवदैवेपित्र्येचकृत्वागंधादिपूजामेवकांडानुसमयेनकुर्वंति एकंपदार्थंदैवपित्र्यादिषुसर्वत्रानुष्ठायतेनैवक्रमेणद्वितीयादिपदार्थाअनुष्ठेयाइत्ययंपदार्थानुसमयः एकत्रैवसर्वपदार्थान्समाप्यान्यत्रसर्वपदार्थानुष्ठानमितिकांडानुसमयः ॥

कात्यायन तौ आसन, क्षण, आवाहन और अर्घ्यपर्यंत, पाद्यपर्यंत प्रयोग है इस लिये पदार्थानुसमयक्रमकरकेही देवतोंकी तर्फ और पितरोंकी तर्फ करके गंध आदि पूजाही कांडानुसमयकरके करते हैं. एक पदार्थ दैवकर्ममें और पितृकर्ममें सब जगह समर्पण करके तिसी क्रमसें दूसरा आदि पदार्थ अर्पण करना इसकों पदार्थानुसमय ऐसा कहते हैं. एक जगह सब पदार्थोंकी समाप्ति करके पीछे अन्य जगह सब पदार्थोंकों अर्पण करना यह कांडानुसमय जानना.

अथान्यपवित्रेधृत्वापित्रर्चनं संकल्प्यासनाद्याच्छादनांतपूजावैश्वदेवोक्तरीत्यैवपितृधर्मेण कार्या विशेषस्तूच्यते द्विगुणभुग्नंकुशत्रयंविप्रवामेक्षिपेत् पार्वणस्थानेविप्रत्रयपक्षेपितुर्यथानामगोत्रस्येदमासनमित्यादिपृथगुच्चारः एकविप्रत्वेपितृपितामहप्रपितामहानामिदमासनमित्युच्चारः एवमग्रिमोपचारेष्वप्यूह्यं शेषंप्राग्वत् ततस्तृतीयनिमंत्रणमपिप्राग्वद्धस्तधारणपूर्वकंकार्यं ॥

इसके अनंतर दूसरे पवित्रोंकों धारण करके पितरोंकी पूजाका संकल्प करके आसनसें आदि ले आच्छादनपर्यंत पूजा वैश्वदेवोक्त रीतिसें अर्थात् देवकर्ममें जो रीति कही है तिस रीतिसें पितृधर्मसें करनी. **विशेष कहताहुं.**—द्विगुणभुग्न अर्थात् मध्यमांहसें मोडे हुए तीन कुश ब्राह्मणके वामे भागमें डालने. पार्वणके स्थानमें तीन ब्राह्मण ऐसा पक्ष होवै तौ "**पितुर्यथानामगोत्रस्यइदमासनं०**" इत्यादि पृथक् उच्चार करना. एक ब्राह्मण होवै तौ "**पितृपितामहप्रपितामहानामिदमासनं**" ऐसा उच्चार करना. इस प्रकार आगले उपचारोंमेंभी विचार लेना. शेष कर्म पूर्वकी तरह करना. तदनंतर तीसरा निमंत्रणभी पहलेकी तरह ब्राह्मणका हाथ ग्रहण करके करना.

अथार्घ्यासादनं द्विजाग्रेदक्षिणाग्रांस्त्रींस्त्रीन्दर्भानास्तीर्यतेष्वाग्नेयीसंस्थानिप्रतिपार्वणंपात्राणित्रीणित्रीण्येवासाद्य पितृपात्रपश्चिमेमातामहादिपार्वणस्यप्रतिपार्वणमेकविप्रत्वेनवविप्रत्वादिपक्षेपित्रीण्येवपात्राणि एकविप्रत्वेतद्धस्तेएवार्घ्यत्रयं नवविप्रत्वादिपक्षेएकैकंपात्रंविभज्यत्रिषुत्रिषुदेयं प्रतिपात्रोपरिदक्षिणाग्राद्विगुणाःसाग्रानिरग्रावात्रयस्त्रयःकुशाःपितृतीर्थेनपात्रेषुजलमापूर्यशंनोदेवीरितिसर्वपात्रेषुसकृदनुमंत्रणमाश्वलायनानां तद्भिन्नैःकातीयादिभिःशन्नोदेवीरितिमंत्रेणप्रतिपात्रंमंत्रावृत्त्याजलमापूर्यं हिरण्यकेशीयास्तुशन्नोदेवीरितिमंत्रंनेच्छंतिसर्वे मतेतिलोसीतिमंत्रावृत्त्याप्रतिपात्रंतिलावापः अत्रपितृशब्दस्यानूहइत्युक्तं गंधादिप्रक्षेपःप्राग्वत् ततःपित्रर्घ्यपात्रंसंपन्नमित्यादियथालिंगंसंपत्तिंवाचयित्वापोदत्वादक्षिणामुखस्तिष्ठन् सव्यंकरंकुशतिलयुतंविप्रवामजानुनिन्यस्यपितृपितामहादीन्द्वितीयांतानुच्चार्यभवत्सुआवाहयिष्येइतिपंक्तिमूर्धन्यमेकंविप्रंपृच्छेत् सर्वत्रपंक्तिमूर्धन्यंप्रत्येवप्रश्नः आवाहयेत्यनुज्ञातउशंतस्त्वेतिमंत्रावृत्त्यामुकममुकनामगोत्ररूपमावाहयामीतिप्रतिविप्रंमूर्धादिपादांतमंसादियुग्मांगेषुतिलविकिरणेनावाह्यसर्वविप्रावाहनांतेआयंतुनःपितरइतिसकृदुपतिष्ठेत् अत्रकातीयैर्नमोवःपितरइत्यादिइहसंतःस्यामेत्यंतेनार्चनमुक्तं आवाहनेसव्यापसव्ययोर्विकल्पः हस्तशिष्टतिलान्विप्राग्रेभूमौविकीर्यपित्रर्घ्यपात्रसंपत्तिरस्त्वित्युक्त्वाप्रत्युक्तः सव्यंकृत्वापोदत्वाधःस्थदर्भैःसहार्घ्यपात्रमेकैकंपाणिभ्यामुद्धृत्यविप्राग्रेस्वधार्घ्याइतिमंत्रावृत्त्यास्थापयेत् एकविप्रत्वेएकाग्रेएवपात्रत्रयंमंत्रावृत्त्या नवविप्रत्वेपितृविप्रत्रयमुख्याग्रेपात्रन्यासोमंत्रेण एवंपितामहादिषुमुख्याग्रेएव एवंचत्रिरेवस्वधार्घ्याइतिमंत्रोच्चारःप्रतिपार्वणे ॥

अब अर्घ्यपात्रका स्थापन कहताहुं.—ब्राह्मणोंके अग्रभागमें दक्षिणकी तर्फ अग्रभागवाले तीन तीन कुश बिछायके तिन कुशोंपर आग्नेयीसंस्थ पार्वणपार्वणके प्रति तीन तीन पात्रोंकों स्थापित करके पितृपात्रके पश्चिमप्रदेशमें मातामह आदि पार्वणोंके प्रत्येक पार्वणविषे एक ब्राह्मण ऐसा पक्ष किंवा नव ब्राह्मण इत्यादि पक्षमेंभी तीनही पात्र रखने. एक ब्राह्मण होवै तौ तिसकेही हाथपर तीन अर्घ्य देने. नव ब्राह्मण इत्यादि पक्ष होवै तौ एक एक अर्घ्यपात्र तीन तीन ब्राह्मणोंकों वांटके देना. पात्रपात्रके उपर दक्षिणकों अग्रभागवाले, मध्यमें मोडके दुगुने किये, अग्रभागसहित अथवा अग्रभागसें रहित ऐसे तीन तीन कुश डालने. पितृतीर्थकरके तिन अर्घ्यपात्रोंमें जल घालके "**शन्नोदेवी०**" इस मंत्रसें सब पात्रोंका एकवार अनुमंत्रण आश्वलायनोंनें करना. आश्वलायनशाखासें जो अन्य शाखावाले कात्यायन

आदि तिन्होंनें तौ "**शन्नोदेवी०**" इस मंत्रसें प्रत्येक पात्रमें मंत्रकी आवृत्तिसें जल घालना. हिरण्यकेशीय तौ "**शन्नोदेवी०**" यह मंत्र इच्छते नहीं हैं. सवोंके मतमें "**तिलोसि०**" इस मंत्रकी आवृत्तिसें प्रत्येक पात्रमें तिल घालने. यहां पितृशब्दका ऊह नहीं करना ऐसा कहा है. गंध आदि द्रव्य पहलेकी तरह अर्पण करना. पीछे "**पित्र्यर्घ्यपात्रंसंपन्नं**" इत्यादि जैसा लिंग होवै तिसके अनुसार संपत्ति बोलवायके जल देके दक्षिणाभिमुख स्थित होके वाम हाथ कुशतिलोंसें युक्त ऐसा ब्राह्मणके वामे गोडेपर स्थापित करके पितृपितामह आदिका द्वितीया विभक्त्यंत उच्चार करके "**भवत्सु आवाहयिष्ये**" ऐसा कहके पंक्तिके आरंभमें स्थित हुए एक ब्राह्मणकों पूछना. सब जगह पंक्तिका जो पहला ब्राह्मण तिसकोंही पूछना. पीछे "**आवाहय**" ऐसा अनुज्ञात होके "**उशंतस्त्वा०**" इस मंत्रकी आवृत्तिसें "**अमुकममुकनामगोत्रमावाहयामि**" ऐसा कहके प्रत्येक ब्राह्मणके प्रति मस्तकसें पैरोंपर्यंत कंधा आदि जो युग्म अंग तिन्होंके स्थानमें तिलोंकों डालके आवाहन करना. इस प्रकार सब ब्राह्मणोंका आवाहन किये पीछे "**आयंतुनःपितरः०**" इस मंत्रसें एकवार प्रार्थना करनी. इस स्थानमें कात्यायनशाखावालोंनें "**नमोवःपितर०**" इस आदिसें प्रारंभ करके "**इहसंतःस्याम**" इसपर्यंत मंत्रोंकरके अर्चन कहा है. आवाहनविषे सव्य और अपसव्यका विकल्प कहा है. आवाहन करके हाथोंमें शेष रहे तिलोंकों ब्राह्मणके अग्रभागमें पृथिवीपर डालके "**पित्र्यर्घ्यपात्रसम्पत्तिरस्तु०**" ऐसा कहके प्रत्युक्त हुआ सव्य होके जल देके पृथिवीपर स्थापित किये डाभसहित एक एक अर्घ्यपात्र दोनों हाथोंसें उठायके ब्राह्मणके अग्रभागमें "**स्वधार्घ्याः**" इस मंत्रावृत्तिसें स्थापन करना. एक ब्राह्मण होवैं तौ एककेही आगे तीन पात्रोंकों मंत्रावृत्तिसें स्थापन करने. नव ब्राह्मण होवै तौ पितृस्थानमें जो तीन ब्राह्मण तिन्होंमें मुख्य ब्राह्मणके अग्रभागमें मंत्रकरके पात्रकों स्थापन करना. इसी प्रकार पितामह आदिके स्थानमें मुख्य ब्राह्मणके आगे पात्र स्थापन करना. इसी प्रकार प्रत्येक पार्वणके स्थानमें "**स्वधार्घ्याः**" ऐसा तीनवारही मंत्रका उच्चार करना.

अथर्ववेदिनांप्रपितामहादिपित्रंतंप्रातिलोम्येनसर्वःप्रयोगः ततःसंत्वर्घ्याइतिप्रत्युक्तोपोदत्वापात्रस्थंपवित्रंविप्रहस्तेषुदत्वा प्रथमपात्रोदकंसशेषंखड्गपात्रेपात्रांतरेवागृहीत्वापितरिदंते अर्घ्यंपितामहेदंतेअर्घ्यमित्यादियथालिंगंप्रत्येकमर्घ्यंदेयं त्रित्रादित्रयाणामेकविप्रत्वेत्रिभिःपात्रैरेकस्यैवहस्तेर्घ्यंदेयं षण्णामेकविप्रत्वेषट्पात्राण्येकहस्ते पितुःस्थानेविप्रत्रयादिपक्षेएकार्घ्यं विभज्यतेषुदेयं अर्घ्यांतेजलदानंपितारिदंतेअर्घ्यमित्यर्घ्यमंत्रश्चप्रतिविप्रमावर्तते एवंपितामहादिविप्रेष्वपि एवमर्घ्यंदत्वाविप्रहस्तात्स्रवंतीरपोयादिव्याइतिमंत्रेणप्रतिविप्रमनुमंत्रयेदितिबह्वृचःअन्यशाखिनांतुयादिव्याइतिमंत्रेणार्घ्यदानम् अर्घ्यदानांतेप्रतिविप्रमपोदानंतथाचैकविप्रत्वेनुमंत्रणमपोदानंचांतेसकृदेवविप्रभेदेत्वावर्ततेअर्घ्यदानेनामगोत्राद्युच्चारो नक्रियतेश्राद्धसागरकारैस्तुकार्यइतियुक्तंभातीत्युक्तं ॥

अथर्वणवेदवालोंका सब प्रयोग प्रपितामहसें आरंभ करके पितापर्यंत ऐसा प्रतिलोमपनेसें जानना. पीछे "**संत्वर्घ्याः**" ऐसा प्रतिवचन देके और जल देके पात्रोंमें स्थित हुये पवित्रकों ब्राह्मणोंके हाथोंमें देके प्रथम पात्रका जल पात्रमें शेष रखके गैंडाकी ढालके पा-

त्रमें अथवा दूसरे पात्रमें ग्रहण करके “ **पितरिदंतेअर्घ्यं पितामहेदंतेअर्घ्यं** ” इत्यादिक जैसा लिंग होवै तिसके अनुसार प्रत्येक अर्घ्य देना. पिता आदि त्रयीके स्थानमें एक ब्राह्मण होवै तो तीन पात्रोंका एककेही हाथपर अर्घ्य देना. छहोंका एक ब्राह्मण होवै तौ छह पात्रोंका अर्घ्य एकके हाथपर देना. पिताके स्थानमें तीन ब्राह्मण इत्यादिक पक्ष होवै तौ एक अर्घ्य विभागके तीन ब्राह्मणोंकों देना. अर्घ्यके अंतमें जलका दान और “ **पितरिदंतेअर्घ्यं** ” यह अर्घ्यमंत्र कहना ये प्रत्येक ब्राह्मणके स्थानमें करना. इस प्रकार पितामह आदिके ब्राह्मणोंविषेभी जानना. इसी प्रकार अर्घ्य देके ब्राह्मणोंके हाथसें झिरनेवाला जल “ **यादिव्या०** ” इस मंत्रसें प्रत्येक ब्राह्मणके प्रति अनुमंत्रण करना, ऐसा ऋग्वेदियोंका प्रकार जानना. अन्य शाखावालोंनें तौ “ **यादिव्या०** ” इस मंत्रसें अर्घ्यदान करना. अर्घ्यदान किये पीछे प्रत्येक ब्राह्मणकों जल देना. तैसेही एक ब्राह्मण होवै तो अनुमंत्रण करना और जल देना यह अंतमें एकहीवार करना. अलग अलग ब्राह्मण होवैं तौ आवृत्तिसें प्रत्येक ब्राह्मणके स्थानमें करना. अर्घ्यदानविषे नाम, गोत्र आदिका उच्चार नहीं करना. **श्राद्धसागर** ग्रंथके कर्तानें तौ नाम, गोत्र आदिका उच्चार करना योग्य है ऐसा कहा है.

अथशेषजलयुतप्रथमार्घ्यपात्रेपात्रद्वयस्थशेषोदकमेकीकृत्यतेनजलेनमुखांजनंकार्यं आयुःकामेननेत्रसेचनंकार्यं संस्रवान्त्समवनीयेत्याद्याश्वलायनसूत्रात् केचिद्विप्रहस्तगलितांबुसंस्रावस्तस्यैकीकरणमाहुः दर्शादौमातामहपात्रोदकेतत्पात्रद्वयोदकंसमवनीयमातामहपात्रोदकंपितृपात्रस्थसंस्रावेसंनयेत् मातृपार्वणभेदेमातामहपात्रसमनीतोदकंमातृपात्रस्थसमवनीतोदकेनतदुदकंपितृपात्रस्थैकीकृतोदकइति तत्संस्रावपात्रंदैविकविप्रादुत्तरतोरत्निमात्रेप्रोक्षितेदर्भेषुन्युब्जंसकूर्चंपितृभ्यःस्थानमसीत्यासादयेत् यद्वाप्रथमपात्रमुत्तानंसंस्रावोदकसहितंमंत्रेणासाद्यतृतीयपात्रेणसकूर्चपवित्रंतदाच्छादयेत् पक्षद्वयेपिगंधादिनाभ्यर्च्यासमाप्तेर्नचालयेन्नचस्पृशेत् ॥

इसके अनंतर शेप जलसें युक्त जो पहला अर्घ्यपात्र तिसमें दो पात्रोंके शेष जलकों इकठ्ठा करके तिस जलसें मुख गीला करना. आयुकी इच्छा करनेवाले मनुष्यनें नेत्रोंपर सिंचन करना. क्योंकी, “ **संस्रवान्त्समवनीय** ” इत्यादिक आश्वलायनसूत्र है. सो इसका यह अर्थ है—संस्रव अर्थात् अर्घ्यपात्रमें शेष जलकों एकत्र करना. कितनेक ग्रंथकार ब्राह्मणके हाथसें गलित हुआ जो जल वह संस्राव, तिसका एकीकरण करना ऐसा कहते हैं. दर्श आदि श्राद्धोंमें मातामह पात्रके जलमें माताके पितामह आदि दो पात्रोंके जलकों एकत्र करके मातामहपात्रका जल पितृपात्रस्थ संस्रावमें मिलाना. मातृपार्वण पृथक् होवै तौ मातामह पात्रमें एकत्र किया जल माताके पात्रके जलसें एकत्र करके वह जल पितृपात्रके एक किये जलमें एकत्र करना, और वह संस्रावपात्र दैविक ब्राह्मणोंके उत्तरके तर्फ अरत्निमात्र प्रोक्षण किये प्रदेशमें डाभोंके स्थानविषे मूंधा और कूर्चसहित “ **पितृभ्यःस्थानमसि** ” इस मंत्रसें स्थापन करना. अथवा पहला पात्र सीधा, संस्रावजलसें सहित मंत्रसें स्थापित करके तीसरे पात्रमें कूर्चकों पवित्रसहित आच्छादन करना. इन दोनोंभी पक्षोंमें गंध आदि उपचा-

रोसें तिस पात्रकी पूजा करके समाप्तिपर्यंत वह पात्र चालित करना नहीं, और स्पर्शभी नहीं करना.

कातीयास्तुशुंधंतामितिभूमिंप्रोक्ष्यपितृषदनमसीतिकुशानास्तीर्यपितृभ्यःस्थानमसीतिप्रथमंन्युब्जंकृत्वागंधादिदीपांतरैर्चंति ॥

कात्यायनशाखावाले तौ "**शुंधंतां**" इस मंत्रसें पृथिवी प्रोक्षण करके "**पितृषदनमसि**" इस मंत्रसें कुशोंकों बिछायके "**पितृभ्यः स्थानमसि**" इस मंत्रसें प्रथम पात्र मूंधा करके गंधसें दीपकपर्यंत उपचारोंसें पूजा करते हैं.

अथप्राचीनावीति आद्यंतयोरपोयच्छन्गंधाद्यैःपूजनंचरेत् अमुकशर्मन्यथानामगोत्रायंतेगंधःस्वधानमइतिएकविप्रत्वेशर्माणोयंवोगंधइत्यादिनात्रिस्त्रिर्गंधदानंशेषंप्राग्वत् केचिदमीतेगंधाइतिबहुत्वंगंधेप्राहुःअर्घ्यदानभिन्नेसर्वत्रस्वधानमइत्यंतेनदानम् अत्रपित्र्यविप्रपूजनेगंधादेःपदार्थानुसमयःकांडानुसमयोवा संपूर्णवाचनादिप्राग्वत् कृत्वाचतुष्कोणंवर्तुलंचयथाक्रमंवारिणागोमयभस्मादिनावामंडलानिसव्यापसव्याभ्यांकुर्यात् तत्रनैर्ऋतीमारभ्येशानीपर्यंतंदैवेईशानीतोनैर्ऋतीपर्यंतंपित्र्येचप्रादक्षिण्याप्रादक्षिण्याभ्यांकार्याणि तत्रपूर्वोक्तपात्राण्यासादयेत् नायसान्यपिपात्राणिपैत्तलानिनतुक्वचित् नचसीसमयानीहशस्यंतेत्रपुजान्यपि कांस्यपात्रंविकल्पितंपर्णपात्रेषुपलाशमधूकोदुंबरकुटजप्लक्षजानिशस्तानि कदलीचूतपनसजंबुचंपकानिमध्यमानि एवंपात्राण्यासाद्यपितृपूर्वकंपरितोभस्ममर्यादांपितृपूर्वकंविप्राणांकरशुद्धिंचसव्यापसव्याभ्यांकुर्यात् तत्रपिशंगइतिरक्षाणइतिमंत्रद्वयंकेचिदाहुः आचम्यकरशुद्धिजलंपादक्षालनमंडलेक्षिपेत् ॥

इसके अनंतर अपसव्य होके "आदि अंतमें जल देता हुआ गंध आदि उपचारोंसें पूजा करनी." सो ऐसी—"**अमुकशर्मन् यथानामगोत्रायं ते गंधः स्वधानमः**" ऐसा, एक ब्राह्मण होवै तौ "**शर्माणोयंवोगंधः**" इस आदि प्रकारसें तीन तीनवार गंध देना. शेष कर्म पहिलेकी तरह करना. कितनेक ग्रंथकार "**अमीतेगंधाः**" ऐसा बहुवचनांत गंधविषे उच्चार कहते हैं. अर्घ्यदानके विना सब जगह "**स्वधानमः**" ऐसा अंतमें उच्चार करके उपचार देने. यहां पितरोंके ब्राह्मणके पूजनमें गंध आदि उपचार पदार्थानुसमयसें किंवा कांडानुसमयसें देने. संपूर्ण वाचन आदि पहिलेकी तरह करके चतुष्कोण, गोल यथाक्रमसें अर्थात् देवतोंके चतुष्कोण और पितरोंके गोल जलसें अथवा गोबर, और भस्म आदिसें मंडल सव्य और अपसव्यसें करने. तिन्होंमें नैर्ऋत्य दिशासें आरंभ करके ईशानपर्यंत देवतोंके और ईशानसें आरंभ करके नैर्ऋत्यपर्यंत पितरोंके प्रदक्षिण और अप्रदक्षिण ऐसे करने, और तिन मंडलोंपर पूर्वोक्त पात्रोंकों स्थापन करना. "लोहाके और पित्तलके पात्र कभीभी प्रशस्त नहीं होते हैं. सीसाके और रांगके पात्र प्रशस्त नहीं हैं." "कांसीका पात्र विहित है अथवा निषिद्ध है. पत्तोंके पात्रोंमांहसें ढाक, महुवा, गूलर, कूडा, पिलखन इन्होंके पात्र श्रेष्ठ हैं. अर्थात् इन्होंके पत्ते श्रेष्ठ हैं. केला, आंब, फणस, जामन, चंपा इन्होंके पात्र मध्यम हैं. ऐसे पात्रोंकों स्थापित करके पितृपूर्वक, पात्रोंकी चारों तर्फ भस्म-

मर्यादा और पितृपूर्वक ब्राह्मणके हाथोंकी शुद्धि ये सव्य और अपसव्यसें करने. तिस पिशंगीविषे "पिशंग०" और "रक्षाणो०" ये दो मंत्र कितनेक कहते हैं. आचमन करके हाथोंकी शुद्धिका जल पादप्रक्षालनके मंडलपर डालना.

अथाग्नौकरणम् तच्चाश्वलायनानांगृह्याग्निमतांव्यतिषंगेणश्राद्धप्रयोगेगृह्याग्निपक्वचरुणा गृह्याग्नावेवकार्यं व्यतिषंगाभावेपाणिहोमः श्रौताग्निमतांदर्शेव्यतिषंगाभावात्पाणिहोमएव पूर्वेद्युरन्वष्टक्ययोर्दक्षिणाग्नौश्रपणंहोमश्च निरग्निकानांतुसर्वत्रपाणिहोमएव आपस्तंबादीनां श्रौताग्निमतांसर्वाधानिनांदक्षिणाग्नौ अर्धाधानिनांगृह्याग्निमात्रवतांचगृह्याग्नावेव प्रवासस्थानांनिरग्निकानांचअयाश्चाग्ने मनोज्योतिरुद्बुध्यध्वंव्याहृतिहोमेनोत्पादितेलौकिकाग्नौहुत्वाग्नेरुत्सर्गः नत्वेषांक्वापिपाणिहोमः पाकस्तुसर्वत्रपचनाग्नावेवकातीयानांगृह्याग्निमतांगृह्याग्निविहृतपचनाग्नौपाकोग्नौकरणंतुगृह्याग्नावेव श्रौताग्निमतांसर्वाधानपक्षेदक्षिणाग्नावर्धाधानपक्षे औपासनाग्नावितिकाशिकायामुक्तं कातीयानामर्धाधानपक्षएवयुक्तइतिभाति निरग्नीनांकातीयानामपसव्यादिनापित्र्यादिद्विजहस्तएवाग्नौकरणम् तत्रपक्षद्वयम् देवद्विजकरेएवसव्येन होमः यद्वापसव्येनपित्र्यद्विजपंक्तौप्रथमद्विजकरेइति बह्वृचानांतुपित्र्यद्विजकरेष्वेवप्रतिविप्रं होमः वाजसनेयिनांत्वेकहोमएवेतिश्राद्धकाशिकायांकातीयसूत्रवृत्तौ केचित्तुपृष्ठोदिविविधानेनाग्निमुत्पाद्याग्नावेवजुह्वति सामगादीनांसाग्नीनामग्नावग्नेरसंनिधानेदैवकरेपित्र्यकरेवा निरग्नीनांतुदेवद्विजकरएव मृतभार्यस्यापत्नीकस्यप्रथमदेवद्विजकरएवहोमोनपित्र्येइतिसर्वसाधारणम् ॥

अब अग्नौकरण कहताहुं.—वह अग्नौकरण गृह्याग्निमान् ऐसे आश्वलायनोंनें व्यतिषंगसें श्राद्धप्रयोग होवै तब गृह्याग्निमें चरु पकाके तिसही चरुसें गृह्याग्निमेंही करना. व्यतिषंगप्रयोग नहीं होवै तौ ब्राह्मणके हाथपर होम करना. श्रौताग्निवालोंनें, दर्शश्राद्धमें व्यतिषंग नहीं होनेसें पाणिहोमही करना. पूर्वेद्युःश्राद्ध और अन्वष्टक्यश्राद्ध इन्होंमें दक्षिणाग्निविषे चरुश्रपण और होम ये करने. निरग्निकोंनें तौ सब जगह पाणिहोम करना. आपस्तंबशाखी आदि श्रौताग्निवाले सर्वाधानियोंनें दक्षिणाग्नीमें चरुश्रपण और होम ये करने. अर्धाधानी और गृह्याग्निसें युत जो हैं, तिन्होंनें गृह्याग्निमें करना. प्रवासमें स्थित हुये मनुष्योंनें और निरग्निकोंनें "अयाश्चाग्ने०, मनोज्योतिः, उद्बुध्यध्वं०" और व्याहृतियोंका होम करके उत्पन्न किये लौकिकअग्निमें होम करके अग्निका विसर्जन करना. इन आपस्तंब आदिकोंको पाणिहोम कहींभी नहीं कहा है. पाक करनेका सो तौ पचनाग्निपरही करना. गृह्याग्नियुक्त जो कात्यायन तिन्होंनें गृह्याग्निसें अग्नि लेके तिस पचनाग्निपर पाक करना, और अग्नौकरण तौ गृह्याग्निमेंही करना. श्रौताग्नियुक्त होके सर्वाधानपक्ष होवै तौ दक्षिणाग्निमें अग्नौकरण और अर्धाधानपक्ष होवै तौ गृह्याग्निमें अग्नौकरण करना ऐसा **काशिका** ग्रंथमें कहा है. कात्यायनोंको अर्धाधानपक्षही योग्य है ऐसा प्रतिभान होता है. निरग्निक ऐसे जो कात्यायन तिन्होंनें अपसव्य आदिसें पिता आदिके स्थानमें जो पहला ब्राह्मण होवै तिसके हाथपरही अग्नौकरण करना. **तिसविषे दो पक्ष हैं.**—देवतोंकी तर्फके ब्राह्मणके हाथपरही सव्यसें होम करना. अथवा अपसव्यसें, पितरोंके ब्राह्मणोंकी पंक्तिमें पहले ब्राह्मणके हाथपर होम

करना; ऐसे दो पक्ष कहे हैं. बव्हृचोंनें तौ पितरोंके ब्राह्मणोंके हाथपरही प्रत्येक ब्राह्मणके स्थानपर होम करना. वाजसनेयी होवै तौ एक होमही करना ऐसा श्राद्धकाशिका ग्रंथविषे कातीयसूत्रकी वृत्तिमें कहा है. कितनेक ग्रंथकार तौ “पृष्टोदिवि” इस विधानसें अग्नि उत्पन्न करके अग्निमेंही अग्नौकरण होम करते हैं. साग्निक ऐसे सामवेदियोंनें तौ अग्निपर अग्नौकरण करना. अग्नि समीपमें नहीं होवै तौ देवतोंके ब्राह्मणके हाथपर अथवा पितरोंके ब्राह्मणके हाथपर करना. निरग्निकोंनें देवतोंके ब्राह्मणके हाथपर करना. मृतपत्नीक जो अपत्नीक तिसनें पहला देवब्राह्मणके हाथपरही होम करना, पितरोंके ब्राह्मणके हाथपर होम नहीं करना. इस प्रकार यह निर्णय सर्वसाधारण जानना.

अथहोमप्रकारः बह्वृचानांव्यतिषंगपक्षेग्नावग्नौकरणंकरिष्ये इतिपृष्ट्वाक्रियतामितिअनुज्ञातो गृह्यपक्वंचरुमुद्धृत्यद्विधाविभज्यापसव्येनोत्तरभागादवदानसंपदामेक्षणेऽवदायसोमायपितृमतेस्वधानमः सोमायपितृमतइदंनममेतिहोमत्यागौकृत्वादक्षिणभागात्पुनस्तथैवावदायाग्नयेकव्यवाहनायस्वधानमइति होमत्यागौकुर्यात् सव्येनापसव्येनवामेक्षणमग्नावनुप्रहरेत् यद्वा सव्येनस्वाहांतोक्तमंत्रेणाहुतिद्वयंसोमाग्न्योर्व्यत्यासेनादायजुहुयादिति कातीयानांतुगृह्येश्रपणमकृत्वैवपचनाग्निपक्वमन्नमादायघृताक्तंकृत्वा पूर्ववत्प्रश्नानुज्ञानंतरंस्मार्ताद्यग्निंपरिस्तीर्यतिस्रः समिधआधायसव्येनाग्नयेकव्यवाहनायस्वाहासोमायपितृमतेस्वाहेतिमेक्षणेनाहुतिद्वयंजुहुयात्अपसव्येनवापाणिहोमेपीत्थमेवप्रकारऊह्योविशेषस्तूक्तः आपस्तंबानांतुआज्यभागांतेउद्ध्रियतामग्नौचक्रियतामितिप्रश्नेकाममुद्ध्रियतामितिअनुज्ञानं हिरण्यकेशीयानामुद्धरिष्याम्यग्नौकरिष्यामीतिप्रश्नः यन्मेमातेत्यादिमंत्रैःसप्तान्नाहुतयःषडाज्याहुतयइतित्रयोदशाहुतयःमंत्रास्तुविस्तरभयान्नोक्ताः हिरण्यकेशीयानामाज्यभागांतेसोमायपितृमतेइत्यादिषोडशमंत्रैःषोडशाज्याहुतयःषोडशान्नाहुतयश्चप्रतिपार्वणंबोध्याः मंत्रेषुपित्रादिपदोहआज्यान्नपदयोरूहश्चतत्तत्ग्रंथेष्वेवज्ञेयोतिविस्तृतत्वान्नोच्यते ॥

अब होमका प्रकार कहताहुं.—ऋग्वेदियोंका व्यतिषंगपक्ष होवै तौ “**अग्नौ अग्नौकरणं करिष्ये**” ऐसा प्रश्न करके “**क्रियतां**” ऐसी आज्ञा ग्रहण करके गृह्याग्निपर पक्व किया चरु ग्रहण करके तिसके दो भाग बनायके अपसव्यसें उत्तरभागसें अवदानधर्मकरके चरु मेक्षणपर लेके “**सोमायपितृमते स्वधानमः सोमायपितृमतइदंनमम**” इस प्रकार होम और त्याग करके दक्षिणभागसें फिर तैसाही अवदान अर्थात् आहुति ग्रहण करके “**अग्नयेकव्यवाहनाय स्वधानमः**” इस प्रकार होम और त्याग करना. सव्यसें अथवा अपसव्यसें मेक्षण अग्निमें त्यागना. अथवा सव्यकरके स्वाहांत उक्त मंत्रसें दो आहुति सोम और अग्नि इन्होंके व्यत्याससें लेके होम करना. कात्यायनोंनें तौ गृह्याग्निपर चरु पकाये विनाही पचनाग्नीपर पकाया चरु लेके तिसपर घृत घालके पहलेकी तरह प्रश्न और आज्ञाके अनंतर स्मार्ताग्नीको परिस्तरण करके तीन समिधोंका होम करके सव्य होके “**अग्नयेकव्यवाहनाय स्वाहा, सोमायपितृमते स्वाहा**” इस प्रकार मेक्षण करके दो आहुतियोंसें होम कराना, अथवा अपसव्यसें होम करना. पाणिहोमकेविषेभी ऐसाही प्रकार जानना. अन्य विशेष पहले कहा है. आपस्तंब जो हैं तिन्होंनें आज्यभागके अनंतर “**उद्ध्रि-**

यतां अग्नौच क्रियतां " ऐसा प्रश्न होवै तौ "**काममुद्ध्रियतां**" ऐसी अनुज्ञा जाननी. हिरण्यकेशियोंका "**उद्धरिष्याम्यग्नौकरिष्यामि**" ऐसा प्रश्न और "**यन्मेमाता०**" इत्यादिक मंत्रोंसें सात चरुकी आहुति और छह घृतकी आहुति इस प्रकार तेरह आहुति जाननी. विस्तारके भयसें यहां मंत्र तौ नहीं कहे हैं. हिरण्यकेशियोंके आज्यभागके अनंतर "**सोमायपितृमते०**" इत्यादि सोलह मंत्रोंसें सोलह घृतकी आहुति और सोलह अन्नकी आहुति ऐसी प्रत्येक पार्वणमें जाननी. मंत्रमें पिता आदि पदोंका ऊह और घृत और अन्न इन पदोंका ऊह करना होवै तौ वह तिस तिस ग्रंथसें जानना. अत्यंत विस्तार होवैगा इसलिये यहां नहीं कहा है.

अथपाणिहोमप्रकारः तत्रविप्रपाणावग्नौकरणंकरिष्येइतिप्रश्नः क्रियतामित्यनुज्ञा करिष्येइतिप्रश्नेकुरुष्वेत्यनुज्ञानभवतीतिसर्वत्राश्वलायनमतं कातीयादीनांतुभवत्येव आश्वलायनसूत्रवृत्तौतुपाणिहोमेकथमपिप्रश्नःप्रतिवचनंचनकार्यमितिद्योतितं ॥

अब पाणिहोमका प्रकार कहताहुं.—जिस पाणिहोममें "**विप्रपाणावग्नौकरणंकरिष्ये**" ऐसा प्रश्न, "**क्रियतां**" ऐसी अनुज्ञा, "**करिष्ये**" ऐसा प्रश्न होवै तौ "**कुरुष्व**" ऐसी अनुज्ञा नहीं होती है ऐसा सब जगह आश्वलायनका मत जानना. कात्यायन आदिकोंका तौ होताही है. आश्वलायनसूत्रकी वृत्तिमें तौ पाणिहोमके स्थानमें कैसाभी प्रश्न और प्रतिवचन नहीं करना ऐसा प्रकाशित किया है.

सदर्भेपित्र्यविप्रपाणिंसव्येनपरिसमुह्यपर्युक्ष्यमेक्षणेनकरेणवापूर्ववदाहुतिद्वयंसोमायेत्यादिमंत्राभ्यांप्राचीनावीत्येवजुहुयात् तत्रकरेणहोमपक्षेवामहस्तेनदर्भेणदक्षिणकरेउपस्तीर्यदक्षिणेनद्विरवदायवामेनाभिघार्यचतुरवत्तित्वादिसंपाद्यं बह्वृचानांसर्वपित्र्यकरेषुहोमएकोद्दिष्टविप्रकरेहोमःकृताकृतः होमांतेसव्येनपरिसमूहनोक्षणे पाणिहोमेमेक्षणानुप्रहरणंन केचित्पाणिहोमेपरिसमूहनादिकंमेक्षणंचनेच्छंति विप्राश्चपाणिहुतान्नंकर्त्रादेवपूर्वंसव्येनैवामासुपक्वमितिमंत्राभिघारितेस्वस्वपात्रेसंस्थाप्यभोजनस्थानादन्यत्राचम्ययथास्थानमुपविशेयुः अग्नौकरणशेषंपिंडार्थमवस्थाप्यापित्र्यपात्रेष्वेवसर्वान्नपरिवेषणांते केचिदग्नौकरणशेषपरिवेषणोत्तरंसर्वान्नपरिवेषणमाहुः अन्नौकरणशेषंदेवपात्रेषुनदेयं कातीयानांतुसाग्नीनामग्नौहोमेदेवपूर्वंसर्वपात्रेषुशेषदानं निरग्नेर्देवविप्रकरेहोमेपितृपात्रेष्वेवपित्र्यकरेहोमेदेवादिसर्वपात्रेषुहुतशेषदानमितिकाशिका अन्नंपाणौहुतंयच्चयच्चान्यत्परिवेषितं एकीकृत्यैवभोक्तव्यंपृथक्भक्षोनविद्यते बौधायनानांतुपाणिहुतेन्नेभक्षितेन्यान्नपरिवेषणमुक्तं ॥

पितरोंके ब्राह्मणके डाभसहित हाथकों परिसमूहन करके और पर्युक्षण करके मेक्षणसें अथवा हाथसें पहलेकी तरह दो आहुति "**सोमाय०**" इत्यादिक दो मंत्रोंसें अपसव्य होके देनी. तिन्होंमें हाथसें होम करनेके पक्षमें, वाम हाथसें डाभकरके दाहिने हाथकों घृत लगायके और दाहिने हाथसें दोवार चरु लेके वाम हाथसें अभिघार करके चतुर्वत्तित्व इत्यादि करना. ऋग्वेदियोंनें सब पितरोंके ब्राह्मणोंके हाथोंपर होम करना. एकोदिष्टके ब्राह्मणोंके हाथपर यज्ञ करना अथवा नहीं करना ऐसा कहा है. होम किये पीछे सव्य होके प-

रिसमूहन और पर्युक्षण करना. पाणिहोममें मेक्षण और अनुप्रहरण नहीं करना. कितनेक ग्रंथकार पाणिहोममें परिसमूहन आदि और मेक्षण आदिकी इच्छा नहीं करते हैं. ब्राह्मणोंनें, हाथपर होम किया अन्न कर्तानें देवपूर्वक सव्यकरकेही “ आमासुपक० ” इस मंत्रसें अभिघारित किये अपने अपने पात्रपर रखके भोजनस्थानसें दूसरी जगह आचमन करके फिर अपने अपने स्थानपर बैठना. अग्नौकरण करके शेष रहा अन्न पिंडके अर्थ रखके पितरोंके ब्राह्मणोंके पात्रोंपरही सब पदार्थ परोसनेके अनंतर परिवेषण करना. कितनेक ग्रंथकार अग्नौकरणसें शेष रहा अन्न परोसनेके अनंतर अन्य सब पदार्थ परोसने ऐसा कहते हैं. अग्नौकरणका शेष अन्न देवतोंके पात्रोंपर नहीं परोसना. साग्निक कात्यायनोंनें तौ, अग्निमें अग्नौकरणहोम होनेमें देवपूर्वक सब पात्रोंपर शेष अन्न परोसना. निरग्निक मनुष्योंकों देवतोंके ब्राह्मणोंके हाथपर होम करना होवै तौ पितरोंके पात्रोंपरही शेष अन्नका दान करना. पितरोंके ब्राह्मणोंके हाथपर होम करना होवै तौ देव आदिक सब पात्रोंपर शेष अन्नका दान करना ऐसा श्राद्धकाशिका ग्रंथमें कहा है. “ हाथपर जो अन्न होमा होवै सो, और जो दूसरा अन्न पात्रपर परोसा होवै सो ऐसा सब अन्न इकट्ठा करकेही भक्षण करना, पृथक् भक्षण नहीं करना. ” बौधायन शाखियोंकों तौ, हाथपर हवन किया अन्न भक्षण किये प.छे दूसरा अन्न परोसना ऐसा कहा है.

अथपूर्वोक्तवद्देवपूर्वंघृताभिघारितपात्रेषुपूर्वोक्तहविष्यान्नपरिवेषणं स्वयंपत्नीवान्योवाकुर्यात् नापवित्रेणनैकेनहस्तेनचविनाकुशं नायसेनापिपात्रेणश्राद्धेषुपरिवेषयेत् व्यंजनादिकं पर्णाद्यंतर्हितहस्तैर्देयं दर्व्यादेयंघृतंचान्नंसमस्तव्यंजनानिच उदकंचैवपक्कान्नंनोदर्व्यातुकदाचन हस्तदत्तंतुनाश्नीयाल्लवणव्यंजनादिकं अपक्कंतैलपक्कंचहस्तेनैवप्रदीयते घृतादिपात्राणिभूमौ स्थापयेन्नभोजनपात्रे ओदनेपरमान्नेचपात्रमासाद्यतत्रघृतपूरणेरुधिरतुल्यता पंक्तौविषमदातुश्चनिष्कृतिर्नैवविद्यते सर्वदाचतिलाग्राह्यापितृकृत्येविशेषतः भोज्यपात्रेतिलान्दृष्ट्वानिराशाः पितरोगताः हिंगुशुंठीपिप्पलीमरिचकानिशाकादिसंस्कारार्थान्येवनतुसाक्षाद्भक्षयेत् परिवेषषणकालेएवतत्सर्वप्रकारमन्नंपिंडार्थंपिंडपात्रेपरिवेषणीयमितिसागरे ॥

इसके अनंतर पूर्वोक्त रीतिसें देवपूर्वक, घृतका अभिघार किये पात्रपर पूर्वोक्त हविष्य अन्न (शुद्धान्न) आप अथवा अपनी स्त्री अथवा अन्य किसीनें परोसना. “ अपवित्र हाथसें, कुशके विना, एक हाथसें और लोहाके पात्रसें श्राद्धोंमें अन्न नहीं परोसने. ” व्यंजन और चटनी आदि पदार्थ पान आदिसें व्यवहित हाथोंसें परोसना. “ घृत, अन्न, सब प्रकारके व्यंजन और चटनी ये कडछीसें परोसने. पक्कान्न कडछीसें कभीभी नहीं परोसने. हाथसें परोसे हुए नमक, और व्यंजन आदि पदार्थ नहीं भोजन करने. अपक्क और तेलसें पकाये हुये पदार्थ हाथसेंही परोसने.” घृत आदिके पात्र पृथिवीपर रखने, भोजनके पात्रपर नहीं रखने. भात और खीरपर पात्र रखके तिसमें घृत परोसा जावै तौ वह लोहूके समान होता है. “ पंक्तिमें बैठे हुये मनुष्योंमें जो विषमभाव अर्थात् एककों विशेष और एककों कम ऐसे परोसनेवाले मनुष्यके पापका नाश करनेहारा ऐसा प्रायश्चित्तही नहीं है. पितृकर्ममें सब कालमें विशेषकरके तिल ग्रहण करने. भोजन करनेके पात्रपर तिलोंकों देखके पितर निराश

होके चले जाते हैं." हींग, सूंठ, पीपल, मिरच ये पदार्थ शाक आदिके संस्कारके अर्थही युक्त किये भक्षण करने, साक्षात् भक्षण नहीं करने. परोसनेके कालमेंही वह सब प्रकारका अन्न पिंडपात्रपर परोसना ऐसा श्राद्धसागर ग्रंथमें कहा है.

अथोपवीती दैवेपात्रेपरितःकुशयवान्विकीर्य पित्र्येतुतिलान्विकीर्यान्नंगायत्र्याप्रोक्ष्यतूष्णींपरिषिच्यदक्षिणहस्तउपरिवामोधोदैवेपित्र्येतुविपरीतइत्येवंस्वस्तिकाकारकराभ्यांपात्रमालभेत् तत्रमंत्रः पृथिवीतेपात्रंद्यौरपिधानंब्राह्मणस्त्वामुखेमृतंजुहोमिब्राह्मणानांत्वाविद्यावतांप्राणापानयोर्जुहोम्यक्षितमसिमामैषांक्षेष्टाअमुत्रामुष्मिंल्लोके इतिअयंमंत्रआपस्तंबकात्यायनादिभिर्नानाविधःपठितोयथासंप्रदायंवाच्यः इत्यभिमंत्र्यअतोदेवेतिवाइदंविष्णुरितिवाऋचमुक्त्वाविष्णोहव्यंरक्षस्वेतिपित्र्येतुकव्यंरक्षस्वेतिन्युब्जेनकरेणन्युब्जं द्विजांगुष्ठमनखमन्नेनिवेश्यप्रदक्षिणंभ्रामयेत् पित्र्येत्वप्रदक्षिणंअत्रकातीयानामपहताइतियवानांदैवेतिलानांपित्र्येपात्रपरितोविकिरणमुक्तम् ततोवामकरेणपात्रंस्पृशन्नमुकेविश्वेदेवादेवताइदमन्नंहव्यमयंब्राह्मणआहवनीयार्थेइयंभूर्गया अयंभोक्तागदाधरइदमन्नंब्रह्म इदंसौवर्णंपात्रमक्षय्यवटच्छायेयंअमुकदेवेभ्यः इदमन्नंसोपस्करममृतरूपंपरिविष्टंपरिवेक्ष्यमाणंचातृप्तेःस्वाहाहव्यंनमोनमम ओंतत्सदितिसयवदर्भजलंदक्षिणकरेपात्रवामभागेभूमौक्षिपेत् एवंदैविकविप्रांतरेपि ततोयेदेवासइत्युपस्थानम् ततःपित्र्यधर्मेणपितृपात्रालंभांगुष्ठनिवेशनाद्यंतेवामेनपात्रमालभ्यपितादेवताएकविप्रत्वेपित्रादयोयथानामगोत्रादेवताइदमन्नंकव्यमित्यादि० इदंराजतंपात्रमक्षय्यवटच्छायेयंअस्मत्पित्रेमुकनामगोत्ररूपाय त्रयस्थानेविप्रैक्येस्मत्पितृपितामहप्रपितामहेभ्योमुकगोत्रनामरूपेभ्यः इदमन्नंसोपस्करममृतरूपंपरिविष्टंपरिवेक्ष्यमाणंचातृप्तेःस्वधाकव्यंनमोनममॐतत्सदितितिलकुशजलंपितृतीर्थेनवामकराधोनीतेनदक्षिणकरेणपात्रदक्षिणेभूमौक्षिपेत् एवमन्यत्रापियथादैवतमूहः पितृस्थानेनेकविप्रत्वेत्रिषुविप्रेषुपित्रेइत्यादिनैकवचनांतेनत्यागः एवमग्रेपित्रिषुत्रिषूह्यम् ततोयेचेहेतिसकृदुपस्थानम् अतिथिश्चेद्देवधर्मेणस्वेष्टदेवतायैइदमन्नमित्यादियेदेवासइत्यादि अपसव्यं देवताभ्यःपितृभ्य०सप्तव्या० अमूर्तानां०ब्रह्मार्पणं०हरिर्दाता० चतुर्भिश्च० ओंतत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु येषामुद्दिष्टंतेषामक्षय्याप्रीतिरस्तु इतितिलोदकमुत्सृजेत्सव्यं एकोविष्णु०अन्नहीनंक्रियाहीनंमंत्रहीनंचयद्भवेत् तत्सर्वमच्छिद्रंजायतामित्युक्त्वाविप्रैर्जायतांसर्वमच्छिद्रमित्युक्ते अनेनपितृयज्ञेनपितृरूपीजनार्दनवासुदेवःप्रीयतामितितिलकुशजलमुत्सृजेदित्याचारः ॥

इसके अनंतर उपवीती होके देवताके पात्रोंके सब तर्फ कुश और जवोंको वखेरके और पितरोंके पात्रोंके सब तर्फ तिलोंको वखेरके गायत्रीमंत्रसें अन्नका प्रोक्षण करके मंत्रसें रहित जलका सिंचन करके दाहिने हाथपर वाम हाथ दैवकर्ममें नीचे और पितृकर्ममें तौ विपरीत अर्थात् वाम हाथ उपर और दाहिना हाथ नीचे, इस प्रकार स्वस्तिकाकार हाथोंसें पात्र धारण करना. तिसका मंत्र "पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्त्वामुखेमृतं जुहोमि ब्राह्मणानां त्वाविद्यावतां प्राणापानयोर्जुहोम्यक्षितमसि मामैषांक्षेष्ठा अमुत्रामुष्मिंल्लोके." यह मंत्र आपस्तंब, कात्यायन आदिकोंनें संप्रदायके अनुसार अनेक प्रकारसें कहा है, इस

लिये अपने संप्रदायके अनुसार अभिमंत्रण करके "अतोदेवा०," अथवा "इदंविष्णु०" इन्होंमांहसें एक ऋचा कहके "विष्णोहव्यंरक्षस्व" इस प्रकार देवतोंके तर्फ; पितरोंके तर्फ तौ "कव्यंरक्षस्व" ऐसा कहके मूंधे हाथसें मूंधा, नखसें वर्जित ब्राह्मणके अंगूठेकों अन्नपर स्थापित करके प्रदक्षिण फिराना. पितरोंके तर्फ तौ अप्रदक्षिणक्रमसें फिराना. यहां कात्यायनोंकों "अपहता०" इस मंत्रसें जव देवतोंकी तर्फ और तिल पितरोंके पात्रोंके सव तर्फ वखेरना ऐसा कहा है. पीछे वामहाथसें पात्रकों स्पर्श करता हुआ "अमुके विश्वेदेवा देवता इदमन्नं हव्यमयं ब्राह्मणआहवनीयार्थे इयंभूर्गया अयंभोक्ता गदाधर इदमन्नं ब्रह्म इदं सौवर्णं पात्रमक्षय्यवटच्छायेयं अमुकदेवेभ्यः इदमन्नं सोपस्करममृतरूपं परिविष्टं परिवेक्ष्यमाणंचातृप्तेः स्वाहा हव्यं नमो नमम ॥ ॐतत्सत्" ऐसा मंत्र कहे पीछे जव और डाभ इन्होंसहित जल, दाहिने हाथसें पात्रके वामभागमें पृथिवीपर छोडना. इस प्रकार देवतोंके अन्य ब्राह्मणोंके विषयमेंभी जानना. पीछे "येदेवास०" इस मंत्रसें प्रार्थना करनी. पीछे पित्र्यधर्मकरके पितरोंके पात्रोंका आलंभन अर्थात् ग्रहण और अंगुष्ठनिवेशन अर्थात् अंगुष्ठका स्थापन करना इस आदिपर्यंत कर्म किये पीछे वामहाथसें पात्र ग्रहण करके "पितादेवता" ऐसा ऊह; एक ब्राह्मण होनेमें "पित्रादयो यथानामगोत्रादेवता इदमन्नंकव्यं इत्यादि० इदंराजतंपात्रमक्षय्यवटच्छायेयं अस्मत्पित्रेमुकनामगोत्ररूपाय" ऐसा ऊह; त्रयीके स्थानमें एक ब्राह्मण होवै तौ "अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहेभ्योमुकगोत्रनामरूपेभ्यः इदमन्नं सोपस्करममृतरूपं परिविष्टंपरिवेक्ष्यमाणं चातृप्तेः स्वधा कव्यं नमोनमम॥ ॐतत्सत्" ऐसा मंत्र कहे पीछे तिल, डाभ और जल पितृतीर्थसें, वामहस्तके नीचे किने हुए दाहिने हाथसें पात्रके दक्षिणभागमें पृथिवीपर छोडना. इसी प्रकार अन्य जगहभी देवताके अनुसार ऊह करना. पितरोंके स्थानमें अनेक ब्राह्मण होवैं तौ तीन तीन ब्राह्मणोंके स्थानमें "पित्रे" इस आदि एकवचनांतसें त्याग करना. और इसही प्रकार आगेभी तीन तीन ब्राह्मणोंमें ऐसाही जानना. पीछे "येचेह०" इस मंत्रसें एकवार प्रार्थना करनी. अतिथि होवै तौ देवधर्मकरके "स्वेष्टदेवतायैइदमन्नं" इत्यादि कहके "येदेवास०" इत्यादिक मंत्र कहना. पीछे अपसव्य करके "देवताभ्यः पितृभ्य० सप्तव्या० अमूर्तानां० ब्रह्मार्पणं० हरिर्दाता० चतुर्भिश्च० ॐतत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ॥ येषामुद्दिष्टं तेषामक्षय्या प्रीतिरस्तु" ऐसे मंत्र कहके तिलोंसहित जल छोडना. पीछे सव्य करके "एकोविष्णु० अन्नहीनंक्रियाहीनंमंत्रहीनंचयद्भवेत् ॥ तत्सर्वमच्छिद्रंजायताम्" ऐसा कहके ब्राह्मणोंनें "जायतां सर्वमच्छिद्रं" ऐसा प्रतिवचन कहना. पीछे "अनेन पितृयज्ञेन पितृयज्ञरूपी जनार्दनवासुदेवः प्रीयताम्" ऐसा कहके तिल और कुशोंसहित जल छोडना, ऐसा आचार कहा है.

केचिद्ब्रह्मार्पणमित्यादिसंकल्पोत्सर्गेसव्यमेकोविष्णुरित्यादावपसव्यंकुर्वंति तत्रब्रह्मार्पणेतिएकोविष्णुरित्यनयोःसंकल्पयोर्विभागेसव्यापसव्यविभागेच प्रत्यक्षवचनानुपलंभाद्यथाचारंकार्यं अकृतेसंकल्पेन्नंविप्रानस्पृशेयुः ईशानावि० गयायै० गदाधराय० पुंडरीकाक्षा० इति नत्वापितृपूर्वंविप्रकरेषुजलेदत्तेविप्रास्तेनान्नंप्रोक्ष्यात्रिर्गायत्र्याभिमंत्रयेयुः कर्तासव्येनपितृपूर्वक

मापोशनार्थमुदकंदत्वासव्याहृतिकांगायत्रींत्रिः सकृद्वामधुवाताइतितृचमुक्त्वामधुमधुमध्वितित्रिरुक्त्वा ॐतत्सद्यथासुखंजुषध्वमितिवदेत् विप्राश्चबलिदानवर्ज्यंनित्यवदापोशनंकृत्वा कर्त्राश्रद्धायांप्राणेनिविष्टोमृतंजुहोमिशिवोमाविशाप्रदाहायप्राणायस्वाहेत्यादिपंचमंत्रेषूच्यमानेषुपंचप्राणाहुतीःकृत्वा ब्रह्मणिमआत्मामृतत्वायेत्युच्यमानेषष्ठींकुर्युः ॥

कितनेक पंडित "ब्रह्मार्पणं" इत्यादिक संकल्पके उत्सर्गमें सव्य, और "एकोविष्णु०" इत्यादिकके विषयमें अपसव्य करते हैं. तिसमें "ब्रह्मार्पणं०" और "एकोविष्णु०" इन दो संकल्पोंके विभागमें ये दो संकल्प अलग अलग करने. इस विषयमें सव्य और अपसव्य ये दोनों जगह पृथक् पृथक् करनेके विषयमें प्रत्यक्ष वचन नहीं मिलता है इसवास्ते जैसा आचार होवै तिसके अनुसार करना योग्य है. संकल्प कियेविना ब्राह्मणोंनें अन्नकों स्पर्श नहीं करना. "ईशानवि० गयायै० गदाधराय० पुंडरीकाक्षाय०" इस प्रकार नमस्कार करके पितृपूर्वक ब्राह्मणोंके हाथोंपर जल देना. पीछे ब्राह्मणोंनें तिस जलसें अन्नका प्रोक्षण करके गायत्रीमंत्रसें तीनवार अभिमंत्रण करना. कर्तानें सव्यसें पितृपूर्वक आपोशनके अर्थ जल देके व्याहृतिसहित गायत्रीमंत्र तीनवार अथवा एकवार कहके "मधुवाता०" इन तीन ऋचाओंकों कहके "मधु मधु मधु" ऐसा तीनवार कहके "ॐतत्सद्यथासुखं जुषध्वं" ऐसा कहना. ब्राह्मणोंनें बलिदान अर्थात् चित्राहुति वर्जित करके नित्यकी तरह आपोशन करना. कर्ता "श्रद्धायां प्राणेनिविष्टोमृतंजुहोमि ॥ शिवोमाविशप्रदाहाय प्राणायस्वाहा" इत्यादिक पांच मंत्रोंकों पढता होवै तब ब्राह्मणोंनें पांच प्राणाहुति लेके "ब्रह्मणिमआत्मामृतत्वाय०" ऐसा मंत्र कहके अनंतर छठी आहुति लेनी.

ततोमौनिनोमुखशब्दंचापल्यंवर्जयंतःसशेषंभुंजीरन् दधिक्षीरघृतपायसानितुनिःशेषम् आपोशनकरेविप्रेसंकल्पाच्छिद्रभाषणात् निराशाःपितरोयांति आपोशनंदक्षिणभागेकार्यंनतुवामभागे पुनरापूर्यापोशनंसुरापानसमम् आपोशनमकृत्वान्नंमर्दयेन्नैवकर्हिचित् विप्रैर्बलिदानंनकार्यं केचिदाज्येनकुर्वंति तन्न पायसाज्यमाषान्नैर्बलिदाननिषेधात् विप्राश्चवामकरेणान्नंनस्पृशेयुर्नपदाभाजनंस्पृशेयुःसंपादितमेववस्तुकरादिनायाचेयुर्नासंपादितम्अन्नगुणदोषान्नकीर्तयेयुः कर्ताचानिषिद्धान्नंभोक्तुःपितुश्चात्मनश्चप्रियंप्रयच्छन्तत्तदन्नमाधुर्यादिगुणकीर्तनेनप्ररोचयन्ददामीत्यवदन्याचितंयच्छन्भुंजानानपश्यन्हविर्गुणानपृच्छन्दैन्याश्रुपातक्रोधादिकमकुर्वन्जलंपाययन्शनैर्भोजयेत् उच्छिष्टाःपितरोयांतिपृच्छतोलवणादिकं ॥

पीछे मौन धारण करनेवाले, मुखशब्द और चापल्यसें रहित ऐसे ब्राह्मणोंनें शेषसहित अन्न भोजन करना. दही, दूध, घृत और खीर ये पदार्थ संपूर्ण भक्षण करने. "ब्राह्मणोंनें आप आपोशन करना, संकल्प करना, छिद्र भाषण, इन्होंसें पितर निराश होके गमन करते हैं." आपोशन दक्षिणभागमें करना, वामभागमें नहीं करना. आपोशनके लिये जल एकहीवार लेना. दूसरीवार पूर्ण करनेमें जल मदिराके समान होता है. "आपोशन कियेविना कभीभी अन्नका मर्दन नहीं करना." ब्राह्मणोंनें बलिदान नहीं करना. कितनेक घृतकी आहुति करते हैं, परंतु वह ठीक नहीं है; क्योंकी, खीर घृत और उडदका अन्न इन्होंकी

आहुती देनेविषे निषेध कहा है. ब्राह्मणोंनें वाम हाथसें अन्नकों छूहना नहीं, और पैरसें पात्रकों स्पर्श नहीं करना. सिद्ध किये पदार्थ होवैं वेही हाथ आदिकरके मागने; नहीं सिद्ध हुए ऐसे मांगने नहीं. अन्नके गुण और दोषोंकों कहना नहीं. कर्तानें निषिद्ध नहीं होवैं ऐसे पदार्थ भोक्ता, पिता और आप इन्होंकों प्रीतिकारक ऐसे देने. और तिस तिस अन्नके मधुरपना आदि जो गुण हैं तिन्होंके कहनेकरके रुचि उत्पन्न करता हुआ मैं देताहुं ऐसा नहीं कहना; जो कछु मांगै वह देना; भोजन करनेवालोंके सन्मुख नहीं देखना; पदार्थोंके गुण नहीं पूछने; दीनपना, अश्रुपात और क्रोध आदि नहीं करना; पीनेके अर्थ जल देना; शनैःशनैः भोजन कराना. “नमक आदिके पूछनेसें उच्छिष्ट अर्थात् झूठे मुखवाले हुये पितर तत्काल चले जाते हैं.”

अथसव्येनैवसव्याहृतींगायत्रींत्रिरुक्त्वापौरुषंसूक्तं कृणुष्वपाजोरक्षोहणमित्याद्यारक्षोघ्नीःपितृलिंगकानिंद्रेशसोमसूक्तपावमानीसूक्तानि अप्रतिरथसंज्ञमाशुःशिशानसूक्तंविष्णुब्रह्मरुद्रार्कस्तोत्रादिकंभोक्तृविप्रान्श्रावयेत् असंभवेगायत्रीजपंकुर्यात् वीणांवंशध्वनिंचापिविप्रेभ्यःसन्निवेदयेत् मंडलब्राह्मणंपाठ्यंनाचिकेतत्रयंतथा त्रिमधुत्रिसुपर्णंचपावमानयजूंषिच आशुःशिशानसूक्तंचअग्नयेकव्यवाहनं प्रौढपादोबहिःकक्षोवहिर्जानुकरोपिवा अंगुष्ठेनविनाश्नातिमुखशब्देनवापुनः पीतावशिष्टतोयानिपुनरुद्धृत्यवापिबेत् खादितार्धंपुनःखादेन्मोदकादिफलादिकम् मुखेनवाधमेदन्नंनिष्ठीवेद्भाजनेपिच इत्थमश्नन्द्विजःश्राद्धंहत्वागच्छत्यधोगतिम् श्राद्धपंक्तौतुभुंजानोब्राह्मणोब्राह्मणंस्पृशेत् तदन्नमत्यजन्भुक्त्वागायत्र्यष्टशतंजपेत् पात्रेविप्रांतरोच्छिष्टसंसर्गेतन्निरस्य हस्तंप्रक्षाल्यभुक्त्वास्नात्वाद्विशतंजपेत् उच्छिष्टभोजनेसहस्रंजपेत् भुंजानेषुतुविप्रेषुप्रमादात्स्रवतेगुदम् पादकृच्छ्रंततःकृत्वाअन्यंविप्रंनियोजयेत् ॥

इसके अनंतर सव्य होके व्याहृतिसहित गायत्री तीनवार कहके पुरुषसूक्त, “**कृष्णुष्वपाजः०**” और “**रक्षोहणं०**” इत्यादिक रक्षोघ्नी ऋचा, पितर हैं लक्षण जिन्होंके ऐसे इंद्र, ईश और सोम इन्होंके सूक्त; पावमानीसूक्त; अप्रतिरथसंज्ञक “**आशुःशिशान०**” सूक्त; विष्णु, ब्रह्मा, महादेव और सूर्य इन्होंके स्तोत्र इन आदि भोजन करनेवाले ब्राह्मणोंकों सुनाने. जो इन्होंकों सुनानेका संभव नहीं होवै तौ गायत्रीमंत्रका जप करना. “वीणा और मुरलीका शब्द ब्राह्मणोंकों सुनाना. मंडल ब्राह्मण, नाचिकेतकी तीन वल्ली, त्रिमधु, त्रिसुपर्ण और पावमान ऐसे यजुर्वेदमें कहे सूक्त; आशुःशिशानसूक्त और अग्नयेकव्यवाहन ये सूक्त सुनाने.” “पैरके ऊपर पैर धरके, आसनकी मरजादा छोडके, गोडासें बाहिर हाथ करके, अंगूठाके विना केवल अंगुलियोंसें अथवा मुखसें शब्द करके भोजन करता हुआ अथवा एकवार पात्रमें लिये हुए पानीका पान करके तिसी पात्रमें बाकी रहे पानीकों फिर पान करता हुआ, लड्डू आदि और फल आदि पदार्थमांहसें आधा खाके फिर खानेवाला, मुखकरके अन्नपर फूंक मारै अथवा पात्रमें थूकै इस प्रकार ब्राह्मण भोजन करै तौ वह श्राद्धका नाश करके आप नरकमें जाता है.” “श्राद्धकी पंक्तिमें भोजन करनेवाला ब्राह्मण जो दूसरेकों छूहै तौ तिसनें पात्रमें जितना अन्न होवै उसकों भोजन करके गायत्रीमंत्रका १०८ जप करना. भोजनपात्रमें जो दूसरे ब्राह्मणके झूठेका स्पर्श हो जावै तौ तिस अन्नकों

त्यागके हाथोंकों धोयके भोजन करके पीछे स्नान करना और २०० गायत्रीमंत्रका जप करना. उच्छिष्ट अन्न भक्षण करनेमें १००० जप करना. भोजन करते हुये ब्राह्मणोंमें प्रमादसें गुदा झिर जावै तौ पादकृच्छ्रप्रायश्चित्त करके दूसरे ब्राह्मणकों नियुक्त करना.''

अथविप्रवमने तत्रपित्रादिविप्रवमनेलौकिकाग्निस्थापनचरुनिर्वापाज्यभागांतेनामगोत्रपूर्वकमग्नौपितॄनावाह्यवैश्वदेविकवमनेदेवानावाह्यसंपूज्यान्नत्यागंकृत्वा प्राणायस्वाहेत्यादिमंत्रैर्द्वात्रिंशदाहुतीर्जुहुयात्पुनःश्राद्धंवाकुर्यादितिपक्षद्वयम् पक्षद्वयेपींद्रायसामेतिसूक्तजपोनित्यः अनयोःपक्षयोर्व्यवस्थोच्यते वैश्वदेविकाविप्रवमनेहोमएवनपुनःश्राद्धं पित्र्यविप्रेष्वपिपिंडदानोत्तरंवांतौहोमएवनपुनःश्राद्धं पिंडदानात्प्राक्पित्र्यविप्रवांतौतद्दिनेउपवासंकृत्वापरेद्युःपुनःश्राद्धंकार्यं इदंसपिंडीकरणमहैकोद्दिष्टमासिकाब्दिकप्रत्याब्दिकश्राद्धेष्वेव दर्शादौतुवमनेतद्दिनेएवामेनश्राद्धंकार्यं एवमष्टकान्वष्टकापूर्वेद्युःश्राद्धेष्वपि तत्रामश्राद्धे साग्नेर्बह्वृचस्यव्यतिषंगादियथोक्तप्रयोगासंभवात्सांकल्पिकविधिनादर्शान्वष्टकापूर्वेद्युःश्राद्धान्यामेनकार्याणि तत्तल्लोपप्रायश्चित्तंवानिबंधोक्तंकर्तव्यमितिभाति वृद्धिश्राद्धेपिंडरहितसंक्रांत्यादिश्राद्धेनित्यश्राद्धेचवमनेआवृत्तिरेव तीर्थश्राद्धेदर्शवदामेनैव महालयश्राद्धेपार्वणस्थानीयविप्रवमनेपुनरावृत्तिःएकोद्दिष्टस्थानीयविप्रवमनेहोमएवेतिभाति वैश्वदेविकविप्रवमनेसर्वश्राद्धेषुहोमएवेत्युक्तमेवहोमपक्षेआवृत्तिपक्षेचसर्वत्रसूक्तजपोनित्यइत्यप्युक्तम् ॥

इसके अनंतर ब्राह्मणकों वमन आवै तौ कर्तव्यविधि.—तहां पिता आदिके स्थानमें स्थित किये ब्राह्मणकों वमन होवै तौ लौकिक अग्निका स्थापन करके चरुका निर्वाप, आज्यभागपर्यंत कर्म करके नामगोत्रपूर्वक अग्निविषे पितरोंका आवाहन करना. विश्वेदेवतोंके ब्राह्मणकों वमन होवै तौ देवतोंका आवाहन करना. पीछे पूजा करके देवताके उद्देशसें अन्नका त्याग करके "**प्राणायस्वाहा**" इत्यादिक मंत्रोंसें ३२ आहुतियोंकरके होम करना. अथवा पुनः श्राद्ध करना. इस प्रकार दो पक्ष कहे हैं. इन दोनों पक्षोंमें "**इंद्रायसां०**" इस सूक्तका जप नित्य है. **इन दोनों पक्षोंकी व्यवस्था कहताहुं.**—विश्वेदेवोंके ब्राह्मणकों वमन होवै तौ होमही करना. फिर श्राद्ध करना नहीं. पितरोंके ब्राह्मणोंकों पिंडदानके उपरंत वमन होवै तौ होमही करना, फिर श्राद्ध नहीं करना. पिंडदानके पहले पितरोंके ब्राह्मणकों वमन होवै तौ तिस दिनमें उपवास करके दूसरे दिनमें फिर श्राद्ध करना; परंतु यह निर्णय सपिंडीकरण, महैकोदिष्ट, मासिक, आब्दिक और प्रतिसांवत्सरिक ये श्राद्धोंमेंही जानना. दर्श आदि श्राद्धमें वमन होवै तौ तिसही दिनमें कच्चे अन्नसें श्राद्ध करना. इस प्रकार अष्टका, अन्वष्टका और पूर्वेद्युःश्राद्ध इन्होंविषेभी ऐसाही निर्णय जानना. तहां साग्निक ऋग्वेदियोंनें कच्चे अन्नके श्राद्धमें व्यतिषंग आदि यथोक्त प्रयोगका संभव नहीं होवै तौ सांकल्पिकविधिसें दर्श, अष्टका, अन्वष्टका और पूर्वेद्युःश्राद्ध ये कच्चे अन्नकरके करने. अथवा तिस तिस श्राद्धके लोपका प्रायश्चित्त ग्रंथमें कहा है तिसके अनुसार करना ऐसा प्रतिभान होता है. वृद्धिश्राद्ध, पिंडरहित संक्रांति आदि श्राद्ध और नित्यश्राद्धमें वमन होवै तौ तिसकी आवृत्तिही करनी. तीर्थश्राद्ध होवै तौ दर्शश्राद्धकी तरह कच्चे अन्नसें करना. महालयश्राद्धमें पार्वणके स्थानमें स्थित हुए ब्राह्मणकों वमन होवै तौ श्राद्धकी पुनरावृत्ति करनी. एकोदिष्टस्थानके

ब्राह्मणको वमन होवै तौ होमही करना, ऐसा प्रतिभान होता है. विश्वेदेवतोंके ब्राह्मणको वमन होवै तौ सब श्राद्धोंमें होम करना ऐसा पहले कहा है. होमपक्षमें और फिर श्राद्ध करना इस पक्षमें सब जगह सूक्तका जप नित्य है ऐसाभी कहा है.

भोजनांतेप्राचीनावीती तृप्ताःस्थेतिविप्रान्पृष्ट्वा तृप्ताःस्मइतिप्रत्युक्तोगायत्रींमधुवाताइतितृचमक्षन्नमीतिचश्रावयित्वा अथवाक्षन्नमीत्येतदंतेतृप्तिप्रश्नंकृत्वाश्राद्धंसंपन्नमितिपृष्ट्वासुसंपन्नमित्युक्तः परिवेषणकालेनुद्धरणेधुनापिंडार्थंसर्वान्नादुद्धृत्यविकिरार्थंचोद्धृत्य अन्नशेषैश्चकिंकार्यमितिपृच्छेत्तुसद्विजान् तेइष्टैःसहभोक्तव्यमितिप्रत्युक्तिपूर्वकं प्रदद्युःसकलंतस्मैस्वीकुर्युर्वा यथारुचि कातीयैस्तुतृप्तान्ज्ञात्वावक्ष्यमाणप्रकारेणविकिरंदैवेपित्र्येचदत्वाविप्रेभ्यः पितृपूर्वकंसकृदपोदत्वागायत्रींमधुमतीश्चश्रावयित्वातृप्तिप्रश्नःसंपत्तिप्रश्नश्चकार्यः एवंशाखांतरेप्युत्तरापोशनात्पूर्वमेवविकिरदानं बह्वृचानांतुपिंडांतेएवविकिरः हिरण्यकेशीयैराचांतेउक्तः ॥

इस प्रकार ब्राह्मणोंका भोजन हुए पीछे अपसव्य होके "**तृप्ताःस्थ**" ऐसा ब्राह्मणोंको पूछके "**तृप्ताः स्मः**" ऐसा ब्राह्मणोंनें प्रतिवचन दिये पीछे गायत्री, "**मधुवाता०**" ये तीन ऋचा और "**अक्षन्नमी०**" ये मंत्र श्रवण कराने. अथवा "**अक्षन्नमी०**" यह ऋचा कहे पीछे तृप्तिप्रश्न करके "**श्राद्धं संपन्नं**" ऐसा पूछके "**सुसंपन्नं**" ऐसा प्रतिवचन दिये पीछे, पात्र परोसनेके समयमें पिंड करनेके अर्थ अन्न काढके नहीं रखा होवै तौ इस समयमें पिंडोंके लिये और विकिरके लिये सब अन्नमेंसें अन्न काढके रखना. "शेष रहे अन्नकरके क्या करना योग्य है ऐसा ब्राह्मणोंको कर्तानें पूछना. पीछे ब्राह्मणोंनें मित्रोंके साथ भोजन करना ऐसा प्रतिवचन पहले कहके सब अन्न तिस श्राद्धकर्ताको देना, अथवा अपनी रुचीके अनुसार आप अंगीकार करना." कात्यायनोंनें तौ ब्राह्मण तृप्त हुए हैं ऐसा जानके आगे कहनेका जो प्रकार तिसकरके विकिर देवतोंके अर्थ और पितरोंके अर्थ देके ब्राह्मणोंको पितृपूर्वक एकवार जल देके गायत्री और मधुमती ऋचा इन मंत्रोंका श्रवण करवायके तृप्तिप्रश्न और संपत्तिप्रश्न करने. इस प्रकार अन्य शाखाओंमेंभी उत्तरआपोशनके पहले विकिर देना. ऋग्वेदियोंनें तौ, पिंडदानके अनंतर विकिर देना. हिरण्यकेशिय ब्राह्मणोंनें आचमन किये पीछे विकिर देना.

ततउच्छिष्टभाग्भ्योन्नंदीयतामित्युक्त्वाविप्राः पात्रस्थंभुक्तशेषंदैविकंदक्षिणेपैतृकंवामेबहिःकृत्यपितृपूर्वंदत्तमुत्तरापोशनममृतापिधानमसीतिकुर्युः पिंडदानंस्वाचांतेनाचांतेषुवाविप्रेषुकार्यं विप्राश्चमुखप्रक्षालनपूर्वकहस्तप्रक्षालनादिशरावादौकुर्युर्नकांस्यताम्रपात्रयोःशुद्धोदकेनाचम्यकयानइतितृचंजपेयुः ॥

इसके अनंतर "**उच्छिष्टभाग्भ्योन्नं दीयतां**" ऐसा ब्राह्मणोंको कहे पीछे ब्राह्मणोंनें भोजन करके शेष रहा पात्रस्थ अन्न देवतोंके ब्राह्मणोंनें पात्रके दक्षिणभागमें और पितरोंके ब्राह्मणोंनें पात्रके वामभागमें बाहिर रखके पितृपूर्वक दिया आपोशन "**अमृतापिधानमसि**" इस मंत्रसें लेना. पिंडदान करना होवै तौ वह ब्राह्मणोंनें आचमन किये पीछे अथवा आचमनके पहले करना. ब्राह्मणोंनें मुखप्रक्षालनपूर्वक हस्तप्रक्षालन करनेका सो माटीके पात्र आ-

दिमें करना. कांसीके पात्रमें अथवा तांबा आदिके पात्रमें नहीं करना. शुद्ध जलसें आचमन करके “ कयान० ” इस ऋचाका जप करना.

अथपिंडदानं तच्चार्चनोत्तरमग्नौकरणोत्तरंभोजनोत्तरंविकिरोत्तरंस्वधावाचनोत्तरंविप्रविसर्जनोत्तरमितिषट्पक्षाःस्मृत्युक्ताः तेषांशाखाभेदेनव्यवस्थेतिसिंधुः तत्राश्वलायनानांभुक्तवत्स्वनाचांतेष्वाचांतेषुवाविप्रेषुपिंडदानंततोविकिरः आपस्तंबहिरण्यकेशीयादीनांविप्रविसर्जनांतेपिंडदानं कातीयानांविकिरोत्तरमाचांतेष्वनाचांतेषुवा तत्राग्निहोमेग्निसमीपेपाणिहोमेविप्रसमीपेबह्वृचानांपिंडदानं अन्येषांप्रायोविप्रसमीपएव तत्रद्विजोच्छिष्टादुत्तरतोव्याममात्रेरत्निमात्रेवापिंडदानंसंकल्प्यबह्वृचानामेककरेणान्येषांकराभ्यांधृतेनस्फ्येनखादिरकाष्ठेनदर्भमूलेनवापहताअसुराइतिमंत्रंप्रतिलेखंपठन्आग्नेय्यग्रंप्रत्यगपवर्गंपार्वणसंख्ययारेखामेकांद्वित्र्यादिकांवोल्लिख्य प्रत्येकमभ्युक्षेत् पिंडसंकल्पेरेखाकरणेचसव्यापसव्ययोर्विकल्पः अत्रकातीयैर्येरूपाणीतिमंत्रेणाग्नौकरणाग्नेरुल्मुकंरेखादक्षिणतोनिधेयं रेखासुसकृदाच्छिन्नंबर्हिर्दक्षिणाग्रमास्तीर्यशुंधंतांपितरःशुंधंतांपितामहाइत्यादिमंत्रैस्तिलोदकंबर्हिष्यासिंचेत् अत्रकातीयानांपितरमुकनामगोत्रावनेनिंक्ष्वेत्यादिमंत्राः अन्येषांमार्जयंतांपितरःसोम्यासइत्यादयो मंत्राः ॥

अब पिंडदान कहताहुं.—पिंडदान करनेका सो ब्राह्मणकी पूजा किये पीछे अग्नौकरणके अनंतर, भोजनके अनंतर, विकिरके अनंतर, स्वधावाचनके अनंतर अथवा ब्राह्मणोंका विसर्जन किये पीछे करना, इस प्रकार छह पक्ष स्मृतिमें कहे हैं, तिन्होंकी अपनी अपनी शाखाके भेदके अनुसार व्यवस्था जाननी ऐसा **निर्णयसिंधु** ग्रंथमें कहा है. तहां आश्वलायनोंनें ब्राह्मणोंका भोजन हुए पीछे आचमनके पहले अथवा आचमनके अनंतर पिंडदान करके विकिर देना. आपस्तंब, हिरण्यकेशीय आदिकोंनें ब्राह्मणोंका विसर्जन किये पीछे पिंडदान करना. कात्यायनोंनें विकिर दिये पीछे आचमन करके अथवा आचमनके पहले पिंडदान करना. तहां ऋग्वेदियोंनें अग्निमें अग्नौकरण किया होवै और अग्नीके समीप पाणिहोम करना होवै तौ ब्राह्मणके समीपमें पिंडदान करना. अन्य शाखावालोंनें विशेषकरके ब्राह्मणोंके समीपमेंही पिंडदान करना. तहां ब्राह्मणके उच्छिष्टसें उत्तरकी तर्फ चार हाथप्रमाण अथवा अरत्निप्रमाण अर्थात् विस्तृत जो छोटी अंगुली तिस्सें युक्त जो मुष्टि तद्युक्त जो हाथ ऐसे प्रदेशमें पिंडदानका संकल्प करके ऋग्वेदियोंनें एक हाथसें, अन्य शाखावालोंनें दोनों हाथोंसें धारण किया जो खैरके काष्ठसें बना स्फ्य अर्थात् खड्ग तिसकरके अथवा डाभकी जड करके “अपहता असुरा०” इस मंत्रका रेखारेखाकेप्रति पाठ करता हुआ आग्नेयी दिशामें अग्रभाग होवै और पश्चिममें समाप्ति होवै ऐसी पार्वणोंकी संख्याके जितनी एक, दो अथवा तीन आदि रेखा काढके प्रत्येक रेखाकों जलसें सिंचन करना. पिंड, संकल्प और रेखाकरण इन्होंविषे सव्य और अपसव्यका विकल्प कहा है.—यहां कात्यायनोंनें “येरूपाणि०” इस मंत्रसें अग्नौकरणके अग्नीका उल्मुक रेखाके दक्षिणके तर्फ स्थापन करना. रेखाओंपर एकवार छिन्न किई डाभमुष्टि दक्षिणकों अग्रभागवाली करके बिछायके “शुंधंतां पितरः शुंधंतां पितामहाः०” इन आदि मंत्रोंसें तिलोंसहित जल तिस दर्भमुष्टिपर सिंचन करना.

यहां कात्यायनोंको **"पितरमुकनामगोत्रअवनेनिक्ष्व०"** इत्यादिक मंत्र कहे हैं. अन्य शाखावालोंको **"मार्जयंतां पितरः सोम्यास०"** इत्यादिक मंत्र कहे हैं.

अग्नौकरणशेषयुतसर्वान्नेनमधुसर्पिस्तिलमिश्रेणपिंडान्पत्न्याकारयित्वारेखायांपराचीनपाणिनापितृतीर्थेनपित्रादिभ्योदद्यात् एतत्तेऽस्मत्पितर्यथानामगोत्ररूपयेचत्वामत्रानुपित्रेअमुकनामगोत्ररूपायायंपिंडःस्वधानमस्तेभ्यश्चगयायांश्रीरुद्रपदेदत्तमस्त्वित्यादिमंत्रैरूहेण अत्र केषांचित्पिंडपात्रावनेजनंपात्रन्युब्जीकरणंच केचित्पिंडेषुमाषान्नंवर्जयंति ततोलेपभाक्तृप्तयेहस्तलेपंपिंडदर्भमूलेषुनिमृज्यात्रपितरोमादयध्वं यथाभागमावृषायध्वमितिपिंडान्सकृदनुमंत्र्यसव्यपार्श्वेनोदङ्ङावृत्ययथाशक्तिप्राणान्नियम्य पर्यावृत्यामीमदंतपितरइतितथैवानुमंत्र्य सव्येनपिंडशेषमाघ्रायाचम्यान्यपवित्रेधृत्वापसव्येनशुंधंतामित्यादियथासूत्रंजलनिनयनंपूर्ववत्कुर्यात् अत्रभुक्तशेषान्नाभावेद्रव्यांतरेणपिंडदानंकार्यं कपित्थबिल्वकुक्कुटांडामलकबदराणांमध्येशक्तितोन्यतमप्रमाणाःपिंडाःकेचित्पार्वणपिंडत्रयेयथोत्तरंप्रमाणाधिक्यमाहुः तथा हस्तलेपाभावेपिदर्भेषुहस्तंनिमृज्यादेवेतिमेधातिथिः एकोद्दिष्टश्राद्धेषुदर्भलेपोनेतिसुमंतुः अत्रनीवींविस्रस्याभ्यंजनादीतिकेचित् पिंडपूजनांतेउपस्थानात्प्राक्नीवीविस्रंसइतिसागरे ॥

अग्नौकरणके शेषसहित सब अन्नमें शहद, घृत, तिल इन्होंकों मिलायके तिस अन्नके पिंड स्त्रीसें करवायके वे रेखाविषे उतरते हाथसें पितृतीर्थ करके पिता आदिकोंके अर्थ देने. तिसका मंत्र **"एतत्तेऽस्मत्पितर्यथानामगोत्ररूप येचत्वामत्रानु पित्रे अमुकनामगोत्ररूपायायंपिंडः स्वधानमस्तेभ्यश्च गया यांश्रीरुद्रपदे दत्तमस्तु०"** इत्यादिक मंत्रसें ऊह करके देने. यहां पिंडदानमें कितनेकोंकों पिंडपात्र प्रक्षालन करना और पात्र मूंधा करना ऐसा कहा है. कितनेक शिष्ट पिंडोंविषे उडदका अन्न वर्जित करते हैं. पीछे लेपभाज पितरोंकी तृप्तिके अर्थ हस्तलेप, पिंडोंके डाभकी जडमें पूंछके **"अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वं०"** ऐसा मंत्र कहके पिंडोंका एकवार अनुमंत्रण करके सव्य पार्श्वसें उत्तरके तर्फ होके शक्तिके अनुसार प्राणोंका रोध करके पुनः फिरके **"अमीमदंतपितर०"** यह मंत्र कहके और तैसाही अनुमंत्रण करके सव्य होके पिंडशेष सूंघना. पीछे आचमन करके और दूसरे पवित्रोंकों धारण करके अपसव्यसें **"शुंधंतां०"** इत्यादि जैसा सूत्र होवै तिसके अनुसार पहलेकी तरह जल सिंचन करना. यहां पिंडदानविषे, ब्राह्मणोंनें भोजन करके जो अन्नशेष नहीं रहै तौ दूसरे द्रव्यसें पिंडदान करना. कैथ, बेलफल, मुर्गाका अंडा, आंवला, बेर इन्होंमांहसें शक्तिके अनुसार कोईसे एक प्रमाणसें पिंड करने. कितनेक ग्रंथकार, त्रयीके तीन पिंडोंविषे पहिलेसें दूसरा बडा ऐसा उत्तरोत्तर क्रमसें अधिक प्रमाण कहते हैं. तैसेही हस्तलेपका अभाव होवै तौभी डाभोंको हाथ पूंछने ऐसा **मेधातिथि** कहता है. एकोद्दिष्ट श्राद्धोंमें हस्तलेप नहीं है ऐसा **सुमंतु** कहता है. यहां नीवीका विस्रंस अर्थात् धोतीके अडूसाकों ढीला करके अभ्यंजन आदि करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. पिंडोंकी पूजा किये पीछे और उपस्थान करनेके पहले नीवीविस्रंस अर्थात् धोतीके अडूसेकों ढीला करना ऐसा **श्राद्धसागर** ग्रंथमें लिखा है.

अथास्मत्पितरमुकनामगोत्ररूपाभ्यंक्ष्वेतियथालिंगमंत्रावृत्त्या पिंडेषुतैलंघृतंवाभ्यंजनंदर्भैर्दत्वातथैवांक्ष्वेतिकज्जलंदद्यात् आपस्तंबानामादावंजनंततोभ्यंजनं एतद्वःपितरोवासइति मंत्रंप्रतिपिंडंपठन्वासोवादशांवात्रिगुणसूत्रंवाप्रतिपिंडेदद्यादितिहेमाद्रिः सकृन्मंत्रंपठन्सकृदेवदद्यादित्यन्ये कातीयैस्तुमंत्रेणप्रतिपिंडंनामगोत्राद्युच्चार्यत्रिगुणंसूत्रंदेयं ततःकशिपूपबर्हणेनिवेद्यास्मत्पितृभ्यइतिचतुर्थ्याक्षतगंधपुष्पधूपदीपसर्वप्रकारकनैवेद्यतांबूलदक्षिणादिभिः पिंडेपूजांसव्येनापसव्येनवाकुर्यात् यत्किंचित्पच्यतेभक्ष्यंभोज्यमन्नमगर्हितं अनिवेद्यनभोक्तव्यंपिंडमूलेकथंचन ततोनमोवःपितरइषइत्यादिमंत्रैःपिंडानुपस्थायोत्तानहस्तेनपरेतनइतिमंत्रेणसकृदुक्तेनयुगपत्प्रवाहयेत् ॥

इसके अनंतर “ **अस्मत्पितरमुकनामगोत्ररूपाभ्यंक्ष्व** ” इस प्रकार जैसा लिंग होवै तिसके अनुसार मंत्रावृत्तिसें पिंडविषे तेल अथवा घृतसें मालिस डाभसें देके, तैसेही “ **अंक्ष्व** ” ऐसा कहके काजल लगाना. आपस्तंबोंनें पहले अंजन, तिसके अनंतर अभ्यंजन अर्थात् उवटना आदि मालिस देना, “ **एतद्वःपितरोवासो०** ” यह मंत्रका प्रतिपिंडकों पठण करके वस्त्र अथवा वस्त्रकी दशा किंवा तिगुना सूत्र एक एक पिंडपर देना ऐसा **हेमाद्रिमें** कहा है. एकवार मंत्र कहके एकवारही देना ऐसा दूसरे ग्रंथकार कहते हैं. कात्यायनोंनें तौ मंत्रकरके एक एक पिंडपर नाम गोत्र आदिका उच्चार करके तिगुना सूत्र देना. पीछे तकिया और बिछोना आदि पदार्थ निवेदन करके “ **अस्मत्पितृभ्यः** ” ऐसी चतुर्थीविभक्तिसें अक्षत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, सब प्रकारका नैवेद्य, तांबूल और दक्षिणा इत्यादिक उपचारोंसें पिंडोंकी पूजा सव्यकरके अथवा अपसव्यकरके करनी. “भक्ष्य, भोज्य ऐसा शुद्ध अन्न जो कछु सिद्ध किया होवै सो पिंडोंके मूलमें निवेदन किये विना कभीभी भक्षण नहीं करना.” तदनंतर “ **नमो वः पितरइषे०** ” इत्यादिक मंत्रकरके पिंडोंकी प्रार्थना करके सीधे हाथसें “ **परेतन०** ” यह मंत्र एकवार कहके एककालमें पिंडोंकों कछुक लोटना.

ततोदक्षिणाग्निहोमपक्षेऽग्नेतमद्याश्वमित्यग्निसमीपमागत्य यदंतरिक्षमितिमंत्रेणगार्हपत्योपस्थानं औपासनेहोमपक्षेगार्हपत्यपदरहिततन्मंत्रेणोपस्थानंइदंबह्वृचानामेव पाणिहोमेतुतेषामपिनास्त्येव वीरंमेदत्तपितरइतिमंत्रेणमध्यममेकंपिंडंपिंडद्वयंवान्वष्टक्यादौमध्यपिंडत्रयमादायपत्न्यैदद्यात् पत्नीआधत्तपितरइतिमंत्रेणसकृत्पठितेनैवपिंडमेकमनेकंवाप्राशयेत् आपस्तंबस्त्वपांत्वौषधीनांरसंप्राशयामिभूतकृतंगर्भंधत्स्वेतिमध्यपिंडंपत्न्यैप्रयच्छति प्राशनमंत्रःसएव यथेहपुरुषोऽसदितिपाठमात्रंभिद्यते इत्थमेवकातीयानां इदंभार्यायाःपिंडप्राशनंप्रजाकामस्यैव केचिन्नित्यमाहुः भार्यानेकत्वेपिंडंविभज्यप्रतिपत्नीमंत्रेणप्राशयेत् पार्वणद्वयेपिंडद्वयंद्वाभ्यांदेयं पत्नीबहुत्वेगुणतोवयसाचयोग्यायैपिंडोदेयः बह्वीयोग्यत्वेएकस्मिन्दर्शेएकस्यैअन्यस्मिन्नपरस्यैइति पत्नीरुग्णान्यदेशस्थागुर्विणीसूतिकापिवा तदातंजीर्णवृषभश्छागोवाभोक्तुमर्हति इतरौजलेक्षिपेत् पुत्रादिकामनाभावेक्षिपेदग्नौजलेपिवा पिंडांस्तुगोजविप्रेभ्योवायसेभ्यः प्रदापयेत् तीर्थेश्राद्धेसदापिंडान्क्षिपेत्तीर्थेसमाहितः ॥

इसके अनंतर अग्नौकरणहोम, ऐसा पक्ष होवै तौ “ **अग्नेतमद्याश्व०** ” यह मंत्र कहके

अग्निके समीपमें प्राप्त होके “ **यदंतरिक्षं०** ” इस मंत्रसें गार्हपत्याग्नीका उपस्थान करना. ‘गृह्याग्निमें होम’ ऐसा पक्ष होवै तौ “गार्हपत्य” इस पदसें रहित मंत्र कहके उपस्थान करना, और यह उपस्थान ऋग्वेदियोंकोंही कहा है. पाणिहोम होवै तौ ऋग्वेदियोंकोंभी उपस्थान नहींही है. “ **वीरंमेदत्तपितरः** ” इस मंत्रसें मध्यमपिंड एक अथवा दो, अन्वष्टक्य इत्यादि श्राद्धमें मध्यके तीन पिंड लेके स्त्रीकों देने. पीछे स्त्रीनें “ **आधत्तपितरः** ” ऐसा एकवारही पठित किये मंत्रसें एक अथवा अनेक पिंड, भक्षण करने. आपस्तंब तौ “ **अपां त्वौषधीनां रसं प्राशयामि भूतकृतं गर्भं धत्स्व** ” इस मंत्रसें मध्यमपिंड स्त्रीकों देना ऐसा कहते हैं. भक्षण करनेका मंत्र तौ वहही है, परंतु “ **यथेहपुरुषोऽसत्** ” इस प्रकार पाठ मात्र पृथक् होता है. ऐसाही कात्यायनशाखियोंका निर्णय जानना. ये जो स्त्रीकों पिंड भक्षण करनेकों कहा है सो संतानकी इच्छा होवै तबही जानना. कितनेक ग्रंथकार नित्य है ऐसा कहते हैं. अनेक स्त्री होवैं तौ पिंडके विभाग करके एक एक स्त्रीनें मंत्रसें भक्षण करना. दो पार्वणोंमें दो पिंड दो स्त्रियोंकों देने. बहुत स्त्री होवैं तौ गुणोंसें और अवस्थासें जो योग्य होवै तिसकों पिंड देना. बहुतसी योग्य होवैं तौ एक दर्शश्राद्धमें एककों और दूसरे दर्शश्राद्धमें दूसरीकों देना. पत्नी रोगवाली, देशांतरमें रहनेवाली, गर्भिणी अथवा सूतिका ऐसी होवै तौ बूढा बैल अथवा बकरा इन्होंसें वह पिंड भक्षण कराना. अन्य दो पिंड जलमें डालने.” “ पुत्र आदिकी इच्छा नहीं होवै तौ अग्नि, जल, इन्होंमें पिंड डालने अथवा गौ, बकरा, काक इन्होंकों पिंड देने. तीर्थश्राद्ध होवै तौ सब कालमें पिंड तीर्थमेंही डालने.”

अथपिंडोपघाते श्वसृगालखरैःस्पृष्टःपिंडोभिन्नःप्रमादतः मार्जारमूषकैःस्पृष्टश्चांडालपतितादिभिः प्राजापत्यंचरेत्स्नात्वापुनःपिंडान्यथाविधि पाकांतरेणतेनपाकेनवापिंडदानमात्रं पुनःकार्यं नसर्वश्राद्धावृत्तिरितिसर्वसंमतं काकस्पर्शेतुनदोषः ॥

अब पिंडोपघात होवै तब तिसके विषयमें कहताहुं.—“ कुत्ता, शियाल, गद्धा, बिलाव, मूषा, चांडाल और पतित इन आदिका पिंडकों स्पर्श हो जावै और प्रमादसें पिंड फूट जावै तौ स्नान करके प्राजापत्यप्रायश्चित्त करना. और फिर यथाविधि पिंड देने. दूसरे पाकसें अथवा तिसही पाकसें पिंड मात्र फिर करना. सब श्राद्धकी आवृत्ति नहीं करनी ऐसा सबोंका मत है. काकका स्पर्श हो जावै तौ दोष नहीं है.

अथपिंडनिषेधः विवाहव्रतचूडासुवर्षमर्धंतदर्धकं संस्कारेषुतथान्येषुवृद्धिमात्रेचमासकं पिंडदानंमृदास्नानंनकुर्यात्तिलतर्पणं श्राद्धांगतर्पणंनित्यतर्पणंचतिलैर्नकार्यमित्यर्थः महालये गयायांपित्रोःप्रत्यब्देयस्यकस्यापिमृतस्यसपिंडीषोडशमासिकांतेषुप्रेतकृत्येषु कृतमंगलोपिपिंडान्दद्यात् केचिद्भ्रात्रादिवार्षिकेप्याहुः पिंडयज्ञेचयज्ञेचसापिंड्यांदद्युरेवच तथाविकृतावन्वष्टकादौयत्र पुनःपिंडदानविधिःयत्रवापूर्वेद्युःश्राद्धादौपिंडपितृयज्ञविकृतित्वंतत्रापिनपिंडदाननिषेधइतिसिंधुः तेनाष्टकाश्राद्धेपिननिषेधइतिभाति अयंचमंगलोत्तरंपिंडदानतिलतर्पणनिषेधस्त्रिपुरुषसपिंडानामितिभाति ॥

अब पिंडोंका निषेध कहताहुं.—“ विवाह, यज्ञोपवीत, चौलकर्म इन्होंके होनेमें क-

मसें एक वर्ष, छह महीने, तीन महीने और अन्य संस्कार और केवल वृद्धिश्राद्ध इन्होंमें एक महीनापर्यंत पिंडदान, मृतिकास्नान और तिलतर्पण ये नहीं करने." श्राद्धांगतर्पण और नित्यतर्पण तिलोंसें नहीं करना ऐसा अर्थ है. मंगलकार्य किये हुए मनुष्यनेंभी महालय, गयाश्राद्ध, मातापिताओंका प्रतिसांवत्सरिक और जो कोई मृत हुआ होवै तिसकी सपिंडी, षोडशमासिकांत प्रेतकर्म इन्होंमें पिंडदान करना. कितनेक ग्रंथकार भाई आदिके वार्षिकश्राद्धमें पिंडदान करना ऐसा कहते हैं. पिंडयज्ञ और सपिंडी इन्होंविषे पिंड देनाही उचित है." तैसाही विकृतिरूप अन्वष्टका आदिकोंमें जहां फिर पिंडदानविधि कहा है अथवा जहां पूर्वेद्युःश्राद्ध आदिमें पिंडपितृयज्ञकों विकृतिपना कहा है तहांभी पिंडदानका निषेध नहीं है ऐसा **निर्णयसिंधुमें** कहा है, तिसकरकेही अष्टकाश्राद्धमें पिंडदानका निषेध नहीं ऐसा प्रतिभान होता है. यह जो मंगल किये पीछे पिंडदान और तिलतर्पणका निषेध कहा है वह त्रिपुरुषसपिंडोंकों है ऐसा प्रतिभान होता है.

अथपिंडोद्वासनांतेविकिरोदेयः उपवीतीदैविकद्विजसन्निधौसदर्भभुविअसोमपाश्चयेदेवा इतिमंत्रेणसजलयवमन्नंविकिरेत् प्राचीनावीतीपित्र्यद्विजसन्निधौसदर्भभुवियेअग्निदग्धायेअनग्निदग्धेतिऋचासतिलमन्नंविकीर्य अग्निदग्धाश्चयेजीवायेप्यदग्धाःकुलेमम भूमौदत्तेनतृप्यंतुतृप्तायांतुपरांगतिमितिकातीयसौत्रमंत्रेणसतिलजलेनाप्लावयेत् पिंडवद्विकिरोपिसर्वान्नस्यैव केचिदसोमपाइतिदैवेविकिरंदत्वाअसंस्कृतप्रमीतायेइतिपौराणमंत्रेणपित्रेदत्वायेअग्निदग्धाइत्यृचापृथगुच्छिष्टपिंडंकुशोपरिदद्यादित्याहुः ॥

इसके अनंतर पिंडोंके विसर्जनके पीछे विकिर देना. सो ऐसा—उपवीती होके देवतोंके ब्राह्मणोंके समीप पृथिवीपर कुश धरके तिन कुशोंपर "**असोमपाश्चयेदेवा०**" इस मंत्रसें जल और जवोंसहित अन्न डालना. अपसव्य होके पितरोंके ब्राह्मणोंके समीप पृथिवीपर कुश धरके तिन कुशोंपर "**येअग्निदग्धा येअनग्निदग्धा०**" इस मंत्रसें तिलोंसहित अन्न डालके "**अग्निदग्धाश्च ये जीवा येप्यदग्धाः कुले मम ॥ भूमौ दत्तेन तृप्यंतु तृप्ता यांतु परां गतिम्**" इस कात्यायनसूत्रस्थ मंत्रसें तिलोंसें युक्त हुये जलकरके वह अन्न भिगोयके देना. पिंडकी तरह विकिरभी सब अन्नकाही देना. कितनेक ग्रंथकार, "**असोमपा०**" इस मंत्रसें देवतोंकी तर्फ विकिर देके "**असंस्कृतप्रमितायें०**" इस पौराणिक मंत्रसें पितरोंकी तर्फ विकिर देके "**येअग्निदग्धा०**" इस ऋचासें पृथक् उच्छिष्टपिंड कुशोंपर देना ऐसा कहते हैं.

हस्तौप्रक्षाल्यद्विराचम्यान्यपवित्रेधृत्वाहरिंस्मरेत् विकिरंपृथगेवनिष्कास्यकाकेभ्यउत्सृजेदितिकाशिका देवद्विजहस्तेशिवाआपःसंत्वित्यादिभिरपोगंधपुष्पयवान्दत्वाभूमौतेषुत्यक्तेष्वन्येऽक्षताआशीरर्थंदेयाःएवंपित्र्यहस्तेष्वपसव्येनापोगंधपुष्पतिलदानादिकृत्वासव्येनामुकगोत्रशर्माहमभिवादयामि अस्मद्गोत्रंवर्धतामित्यादि केचिदत्रपित्र्यहस्तेगंधतिलादिदानं सव्येनाहुः कातीयास्तुहस्तेक्षतदानांतेअक्षय्योदकंदत्वाअघोराःपितरःसंत्वित्युक्त्वाभिवादनंदातारोनोभिवर्धतामित्यादिकमाहुः ॥

इसके अनंतर हाथ धोके और दोवार आचमन करके दूसरे पवित्रे धारण करके हरिका स्मरण करना. विकिरका अन्न अलग काढके काकोंकों देना ऐसा **काशिका** ग्रंथमें कहा है. देवतोंके ब्राह्मणोंके हाथपर "**शिवा आपः संतु०**" इत्यादिक वाक्योंसें जल, गंध, पुष्प, जव देके पृथिवीपर पूर्वोक्त पदार्थ ब्राह्मणोंनें डाल दिये पीछे आशीर्वादके अर्थ दूसरी अक्षता देनी. इस प्रकार पितरोंके ब्राह्मणोंके हाथोंपर अपसव्यसें जल, गंध, पुष्प, तिल इत्यादिक देके सव्यकरके "**अमुकगोत्रशर्माहमभिवादयामि ॥ अस्मद्गोत्रं वर्धताम्**" इत्यादिक कहना. कितनेक ग्रंथकार तौ यहां पितरोंके ब्राह्मणोंके हाथपर गंध और तिल आदि देनेका सो सव्यसें देना ऐसा कहते हैं. कात्यायन तौ हाथपर अक्षता दिये पीछे अक्षय्योदक देके "**अघोराः पितरः संतु**" ऐसा कहके अभिवादन अर्थात् अमुकगोत्रोमुकशर्माहमभिवादयामि ऐसा करके "**दातारोनोभिवर्धताम्**" इत्यादिक कहना ऐसा कहते हैं.

एवमाशिषोगृहीत्वाक्षतान्मूर्धनिधृत्वास्वयंशिष्यादिभिर्वाभोजनपात्राणिचालयित्वाचामेत् अनुपनीतोनारीचासजातिश्चनचालयेत् सव्येनदैवेपित्र्येचस्वस्तिवाचनं देवेभ्यःस्वस्तीति ब्रूत पितृभ्योमुकनामगोत्रादिभ्यःस्वस्तीतिब्रूतेति ततःसव्यापसव्याभ्यांतत्तदुच्चारपूर्वकमक्षय्योदकदानं ततोन्युब्जपात्रमुत्तानंकृत्वाततःपरंसर्वमुपवीत्येवकुर्यात् द्विजेभ्यःसकर्पूरतांबूलादि दत्वापितृपूर्वकंनामगोत्राद्युच्चार्यदक्षिणांदद्यात् अमुकशर्माहममुकनामगोत्रपित्रादिस्थानोपविष्टायविप्रायरजतदक्षिणांप्रतिपादयामीत्यादिदैवेसुवर्णं अशक्तावुभयत्रयज्ञोपवीतंदक्षिणादक्षिणाःपांत्वित्युक्त्वास्वधांवाचयिष्येइतिपृष्ट्वावाच्यतामित्युक्तेपितृपितामहेत्याद्युच्चार्यस्वधोच्यतामित्युक्त्वास्तुस्वधेतितैरुक्तेपिंडसमीपेजलंनिषिच्य स्वधासंपद्यंतामितिसंपत्तिंवाचयेत् कातीयेसूत्रेदातारोनोभिवर्धतामित्याशिषोर्थेनंस्वधावाचनंन्युब्जपात्रमुत्तानीकरणंदक्षिणादानंचेतिक्रमः ॥

इस प्रकार आशीर्वाद ग्रहण करके अक्षतोंकों मस्तकपर धारण करके आप भोजनपात्रोंकों काढके अथवा शिष्य आदिसें कढवायके आचमन करना. नहीं जनेऊकों प्राप्त हुआ पुरुष, स्त्री और दूसरी जातिके पुरुष इन्होंनें पात्र नहीं काढने. पीछे सव्यकरके देवोंकी तर्फ और पितरोंकी तर्फ स्वस्तिवाचन करना. सो ऐसा—"**देवेभ्यः स्वस्तीतिब्रूत**" इत्यादिक "**पितृभ्योमुकनामगोत्रादिभ्यः स्वस्तीतिब्रूत**" पीछे सव्य और अपसव्य करके वह वह उच्चार पहले करके अक्षय्योदक देना. पीछे मूंधे पात्रकों सीधा करके तदनंतरका सब कर्म उपवीतीसेंही करना. ब्राह्मणोंकों कपूरसहित तांबूल आदि देके पितृपूर्वक नाम, गोत्र आदिका उच्चार करके दक्षिणा देनी. दक्षिणा देनेका वचन "**अमुकशर्माहममुकनामगोत्रपित्रादिस्थानोपविष्टाय विप्राय रजतदक्षिणां प्रतिपादयामि**" इत्यादिक जानना. देवतोंकों सोनाकी दक्षिणा देनी. सामर्थ्य नहीं होवै तौ देवता और पितर इन दोनोंकों जनेऊकी दक्षिणा देनी. "**दक्षिणाः पांतु**" ऐसा कहके "**स्वधां वाचयिष्ये**" ऐसा पूछके "**वाच्यतां**" ऐसा प्रतिवचन कहनेके अनंतर "**पितृपितामह०**" इत्यादिक उच्चार करके "**स्वधोच्यतां**" ऐसा कहके "**अस्तुस्वधा**" ऐसा ब्राह्मणोंनें प्रतिवचन कहे पीछे पिंडोंके समीप जल सिंचन करके "**स्वधा-**

संपद्यतां" ऐसा संपत्तिवाचन ब्राह्मणोंसें कहाना. कात्यायन सूत्रमें "दातारोनोभिवर्धतां" इस मंत्रसें आशीर्वाद मागना, पीछे स्वधावाचन, मूंधे पात्रकों सीधा करना और दक्षिणा देनां इस प्रकारसें क्रम जानना.

ततोदेवादिप्रीतिंवाचयित्वापिंडस्थानेक्षतादिक्षिप्त्वासव्येनैववाजेवाजेइति मंत्रेणोत्तिष्टंतु पितरोविश्वेदेवैःसहेतियुगपद्दर्भेणपितृपूर्वंविप्रान्स्पृशन्विसृजेत् आमावाजस्येतिप्रदक्षिणीकृत्य ततोदातारोनोभिवर्धतामित्यादिवरयाचनं येषांविसर्जनांतेपिंडदानंतेषामाचांतेषुसौमनस्यदक्षिणादिकाक्षय्यस्वधावाचनांतेदातारोनोभिवर्धतामित्यादि ततःपिंडदानादीतिक्रमःहिरण्यकेशीयानांपिंडदानादिप्रयोगोविस्तृतत्वान्नोक्तः विप्रैर्वरेदत्ते स्वादुषंस० ब्राह्मणासः पितरः० इतिमंत्रौपठेत् विप्राःइहैवस्तं० आयुःप्रजामितिवदेयुः आशीर्भिर्नंदितोविप्रान्पादाभ्यंगादिनासंतोष्यनत्वाद्यमेसफलंजन्म० मंत्रहीनं० यस्यस्मृत्येत्यादिविष्णुस्मरणपूर्वककर्मार्पयित्वाविप्रान्क्षमापयेत् अष्टौपदान्यनुव्रज्यदक्षिणीकृत्यचागतः दीपंहस्तेननिर्वाप्यपवित्रत्यागपूर्वकं पादशुद्धिर्द्विराचामेदुच्छिष्टोद्वासनंततः बह्वृचोवैश्वदेवंतुयथाविधिचरेत्ततः ततस्तु वैश्वदेवांतेसभृत्यसुतबांधवः भुंजीतातिथिसंयुक्तःसर्वंपितृनिषेवितं श्राद्धशेषान्नंशिष्यायज्ञातिभ्यश्चदेयं नशूद्राय द्विजभुक्तावशिष्टंतुशुचिभूमौनिखानयेत् ॥

पीछे देव आदिकोंका प्रीतिवचन करवायके पिंडोंके स्थानमें अक्षत आदि डालके सव्यसेंही "वाजेवाजे०" इस मंत्रसें "उत्तिष्ठंतु पितरो विश्वेदेवैः सह," ऐसा वाक्य कहके एककालमें कुशोंकरके पितृपूर्वक ब्राह्मणोंकों स्पर्श करके विसर्जन करना. पीछे "आमावाजस्य०" इस मंत्रसें ब्राह्मणोंकों परिक्रमा करनी. पीछे "दातारो नोभिवर्धतां०" इस आदि मंत्र कहके वर मांगना. जिन्होंकों विसर्जनके अंतमें पिंडदान करनेकों कहा है तिन्होंका क्रम, ब्राह्मणोंनें आचमन किये पीछे सौमनस्य दक्षिणादिक, अक्षय्य, स्वधावाचनपर्यंत कर्म किये पीछे "दातारोनोभिवर्धतां०" इत्यादिकके अनंतर पिंडदान आदि करना, इस प्रकारसें क्रम जानना. हिरण्यकेशियोंका पिंडदान आदिका प्रयोग विस्तृत होनेसें यहां नहीं कहा है. ब्राह्मणोंनें वरदान दिये पीछे "स्वादुषं० ब्राह्मणासः पितरः०" इन मंत्रोंका पाठ करना. पीछे ब्राह्मणोंनें "इहैवस्तं० आयुःप्रजां०" ये मंत्र कहने. आशीर्वादोंसें आनंदित होके ब्राह्मणोंके पैरोंकों अभ्यंग आदि लगाके ब्राह्मणोंकों प्रसन्न करके नमस्कार करना. "अद्य मे सफलं जन्म० मंत्रहीनं० यस्यस्मृत्या०" इत्यादिक मंत्र कहके विष्णुका स्मरण करके कर्म ईश्वरकों अर्पण करके ब्राह्मणोंके प्रति क्षमा मांगनी. " ब्राह्मणोंके पीछे आठ पैर गमन करके तिन्होंकी दाहनी तर्फसें अपने स्थानमें आना. पीछे पवित्रोंकों त्यागके दीपककों हाथसें बुझाय पैरोंकों धोना, और दोवार आचमन करके पीछे उच्छिष्टपात्र काढने. पीछे ऋग्वेदियोंनें विधिके अनुसार वैश्वदेव करना. पीछे वैश्वदेवके अंतमें दास, पुत्र, बांधव, और अभ्यागत इन्होंके सहवर्तमान पितरोंसें सेवित किये सब अन्नका भोजन करना." श्राद्धशेष अन्न शिष्यकों और ज्ञातिके पुरुषोंकों देना, शूद्रकों नहीं देना. "ब्राह्मणभोजन करके शेष रहा अन्न शुद्ध पृथिवीमें गाड देना."

अत्रपर्वादौनिषिद्धंमाषाद्यपिभोक्तव्यं वैधत्वेनानिषेधाप्रवृत्तेरितिकेचित् अनिषिद्धभोजनेनापिश्राद्धशेषभोजनविधिसिद्धिरित्यन्ये श्राद्धशेषभोजनाकरणेदोषः श्राद्धदिनेउपवासनिषेधाच्छ्राद्धशेषाभावेपाकांतरेणभोजनं एकादश्यादाववघ्राणं यत्रतूपवासोनावश्यकस्तत्रैकभक्तं श्राद्धशेषंदिवैवभोक्तव्यंनरात्रौ तेननक्तव्रतेऽवघ्राणमेव श्राद्धावशिष्टभोक्तारस्तेवैनिरयगामिनः सगोत्राणांसकुल्यानांज्ञातीनांचनदोषकृत् ब्रह्मचारियतिविधवानांनित्यंनिषिद्धं ज्ञातिगोत्रसंबंधिभिन्नगृहेश्राद्धशेषभोजनेप्राजापत्यंप्रायश्चित्तं यतीनांवपनंलक्षप्रणवजपश्चगुरोर्योगिनोवाश्राद्धशेषंगृहिणोनदोषाय नशूद्रंभोजयेत्तस्मिन्गृहेयत्नेनतद्दिने श्राद्धशेषंनशूद्रेभ्यःप्रदद्यादखिलेष्वपि इतिश्रीमदनंतोपाध्यायसूनुकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेपार्वणश्राद्धप्रक्रिया समाप्ता ॥

इस श्राद्धदिनमें, पर्व आदिके दिनमें निषिद्ध हुआ उडद आदिका अन्नभी भक्षण करना. क्योंकी जो विधिप्राप्त है तिसकों निषेधकी प्रवृत्ति नहीं ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. अनिषिद्ध भोजन करकेही श्राद्धशेषभोजनके विधिकी सिद्धि होती है ऐसा दूसरे ग्रंथकार कहते हैं. श्राद्धशेषका भोजन नहीं करनेमें दोष लगता है. श्राद्धदिनमें उपवासका निषेध है. इस लिये श्राद्धशेषका अभाव होवै तौ दूसरा पाक करके भोजन करना. एकादशी आदिविषे श्राद्धके अन्नकों सूंघ लेना. जिस दिनमें उपवास आवश्यक नहीं होवै तिस दिनमें एकवार भोजन करना. श्राद्धशेष दिनमेंही भोजन करना, रात्रिमें नहीं भक्षण करना, इस्सें नक्तव्रत होवै तौ सूंघही लेना. “जो श्राद्धशेष अन्नका भोजन करते हैं वे नरकगामी होते हैं. सगोत्री, सकुल्य अर्थात् आठ पीढीसें दशमी पीढीपर्यंतके पुरुष और जातिके पुरुष इन्होंकों श्राद्धशेष अन्नके भोजनका दोष नहीं है.” ब्रह्मचारी, संन्यासी और विधवा स्त्री इन्होंकों नित्य निषेध कहा है. जातिके पुरुष, सगोत्री, संबंधी इन्होंसें अन्योंके घरोंमें श्राद्धशेषका भोजन किया होवै तौ प्राजापत्यप्रायश्चित्त करना. संन्यासियोंनें वपन और लक्षसंख्याक ॐकारका जप करना. गुरु अथवा योगीका श्राद्धशेष गृहस्थियोंकों दोषकारक नहीं है. श्राद्धके दिनमें श्राद्धके घरविषे जतनकरके शूद्रकों भोजन नहीं कराना. सब श्राद्धोंमें शूद्रकों श्राद्धशेष नहीं देना. इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिअनुवादितधर्मसिंधुसारभाषाटीकायां पार्वणश्राद्धप्रक्रिया समाप्ता ॥

अथश्राद्धदिनेवैश्वदेवनिर्णयः तत्रतावच्छ्रौताग्निमतांबह्वृचानांश्राद्धात्पूर्वंपृथक्पाकेनवैश्वदेवः स्मार्ताग्निमतांनिरग्निकानांचबह्वृचानांश्राद्धांतएवश्राद्धशेषेणपृथक्पाकेनवा कातीयानांतुस्मार्तश्रौताग्निमतांश्राद्धीयपाकेनपूर्वमेव निरग्निकानामंतेश्राद्धशेषेणपृथक्पाकेनवा तैत्तिरीयाणांतुसाग्निकानांसर्वत्रादौवैश्वदेवः पंचमहायज्ञास्त्वंते अन्येषामादावंतेचेतिविकल्पः तैत्तिरीयाणामेववैश्वदेवात्पंचयज्ञाभिन्नाः सर्वशाखिनांवृद्धिश्राद्धेपाकेनक्रियमाणेपूर्वमेववैश्वदेवः बह्वृचानामंतेवापूर्वंवा आमादिनावृद्धिश्राद्धेसर्वेषांपूर्वमंतेवेतिभाति नित्यश्राद्धेपूर्वमेवएकादशाहाद्येकोद्दिष्टेषुसाग्निरनग्निश्चसर्वोपिश्राद्धशेषंद्विजाधीनंकृत्वापाकांतरेणैववैश्वदेवादिकुर्यात् ॥

अब श्राद्धदिनमें वैश्वदेवका निर्णय कहताहुं.

तहां श्रौताग्निसें युक्त हुये सब ऋग्वेदियोंनें अलग पाक करके श्राद्धके पहले वैश्वदेव करना. स्मार्ताग्निसें युक्त और निरग्निक ऐसे ऋग्वेदियोंनें श्राद्धके अंतमेंही श्राद्धशेषसें अथवा पृथक् पाकसें करना. स्मार्ताग्नि और श्रौताग्निसें युक्त जो कात्यायन तिन्होंनें श्राद्धके पाकसें श्राद्धके पहलेही करना. निरग्निक कात्यायनोंनें श्राद्धके अंतमें श्राद्धके शेषसें अथवा पृथक् पाकसें करना. साग्निक जो तैत्तिरीयशाखी हैं तिन्होंनें सब जगह श्राद्धोंमें श्राद्धके पहले वैश्वदेव करना. पंचमहायज्ञ तौ श्राद्धके अंतमें करने. अन्य शाखावालोंनें श्राद्धके पहले किंवा पीछे करना ऐसा विकल्प है. तैत्तिरीयशाखियोंके पंचमहायज्ञ वैश्वदेवसें भिन्न कहे हैं. सब शाखावालोंनें पाककरके वृद्धिश्राद्ध करना होवै तौ पहलेही वैश्वदेव करना. ऋग्वेदियोंनें अंतमें किंवा पहले वैश्वदेव करना. आमान्नसें वृद्धिश्राद्ध करना होवै तौ सबोंनें पहले किंवा अंतमें करना ऐसा प्रतिभान होता है. नित्यश्राद्धमें पहलेही करना. एकादशाह आदि एकोद्दिष्टश्राद्धोंमें साग्निक, निरग्निक ऐसे सबोंनेंभी श्राद्धशेष ब्राह्मणोंके आधीन करके दूसरे पाकसें वैश्वदेव आदि करने.

अथनित्यश्राद्धं वार्षिकादिश्राद्धदिनेश्राद्धात्पश्चात्तेनैवपाकेनपाकांतरेणवानित्यश्राद्धंकार्यं नित्यश्राद्धीयसर्वदेवतानांप्रथमश्राद्धेप्रवेशेप्रसंगसिद्धिरेव तथाचदर्शादिषुमहालयान्वष्टकादिषुनित्यश्राद्धलोपएव एतच्चदेवहीनंदर्शवत्षट्दैवतंद्वावेकंवाविप्रंनिमंत्र्यदेशकालान्ननियमहीनंपुनर्भोजनब्रह्मचर्यादिकर्तृभोक्तृनियमरहितंयादृशतादृशेनैवानिषिद्धान्नेनदिवैव रात्रौ प्रहरपर्यंतंवाकार्यं स्वस्याशक्तौपुत्रादिना सूतकेदर्शादिवल्लोपः वृद्धयुत्तरंमंडपोत्थानावधिसपिंडैर्नकार्यं नित्यवैश्वदेवांतर्गतपितृयज्ञोत्तरंमनुष्ययज्ञात्प्रागेवभाति तत्रदर्शवत्षट्पितृन्देवहीनानुच्चार्यनित्यश्राद्धंकरिष्येइतिशिष्यादिश्चेद्यजमानस्यपितृपितामहेत्याद्युच्चार्य संकल्पयेत् पितृणामिदमासनमित्यासनं नित्यश्राद्धेक्षणः क्रियतामितिक्षणः पूर्वोच्चारितापितरः अयं वोगंधइत्येवंगंधादिभिर्विप्रमभ्यर्च्य वर्तुलेचतुरस्रेवामंडलेपात्रेन्नंपरिविष्य पृथ्वीतेपात्रमित्यादिब्रह्मार्पणांतंदर्शवत् भोजनांतेदक्षिणांदत्वानवादत्वानमस्कारेणविसर्जयेत् ॥

अब नित्यश्राद्ध कहताहुं.

वार्षिक आदि श्राद्धके दिनमें श्राद्धके अनंतर तिसही पाकसें अथवा दूसरे पाकसें नित्यश्राद्ध करना. नित्यश्राद्धमें सब देवतोंका, पहले श्राद्धमें प्रवेश होवे तौ प्रसंगसिद्धिही होती है, अर्थात् दर्श आदि श्राद्ध, महालय, अन्वष्टका इत्यादिक श्राद्धोंमें नित्यश्राद्धका लोपही करना. यह नित्यश्राद्ध देवहीन और दर्शश्राद्धकी तरह छह देवतोंसें युक्त, दो किंवा एक ब्राह्मण निमंत्रण करके देश, काल, अन्न इन्होंके नियमोंसें रहित होके पुनर्भोजन, ब्रह्मचर्य इत्यादिक जो कर्ताके और भोक्ताके नियम हैं तिन्होंसें रहित ऐसा जैसेतैसे अनिषिद्ध अन्नसें दिनमेंही अथवा रात्रिमें प्रहरपर्यंत करना. अपनेकों सामर्थ्य नहीं होवै तौ पुत्र आदिके द्वारा करवाना. जननाशौच और मृताशौच होवै तौ दर्शश्राद्धकी तरह लोपही करना, वृद्धिश्राद्धके अनंतर मंडपोद्वासनपर्यंत सपिंडोंनें नहीं करना. नित्यवैश्वदेवमें जो पितृयज्ञ है वह किये

पीछे और मनुष्ययज्ञके पहलेही करना ऐसा प्रतिभान होता है. तिस नित्यश्राद्धमें दर्शश्राद्धकी तरह छह पितरोंका देवरहित उच्चार करके **“ नित्यश्राद्धं करिष्ये ”** ऐसा संकल्प करना. शिष्य आदि कर्ता होवै तौ **“ यजमानस्य पितृपितामह० ”** इस आदि उच्चार करके संकल्प करना. **“ पितॄणामिदमासनम् ”** ऐसा कहके आसन, **“ नित्यश्राद्धे क्षणः क्रियताम् ”** ऐसा कहके क्षण, **“ पूर्वोच्चारिताः पितरः अयं वो गंधः ”** इस प्रकार गंध आदि उपचारोंसें ब्राह्मणोंकी पूजा करके गोल किंवा चतुष्कोण मंडल करके तिस मंडलपर पात्र धरके तिस पात्रपर अन्न परोशके **“ पृथ्वी ते पात्रं० ”** इत्यादिकसें ब्रह्मार्पणपर्यंत कर्म दर्शश्राद्धकी तरह करने. भोजनके अनंतर दक्षिणा देके अथवा नहीं देके नमस्कार करके विसर्जन करना.

विप्रस्यान्नादेर्वाभावेयथाशक्त्यन्नमुद्धृत्यषोढाविभज्यास्मत्पितृपितामहेत्यादिचतुर्थ्यंतं षट् देवताउच्चार्येदमन्नंस्वधानममेतित्यजेत् तदन्नंविप्रायगोभ्योवादेयं जलादौवात्याज्यं अन्नत्यागस्यापिलोपेआर्चन्नत्रमरुतइतिऋचादशवारंजपेत् इतिनित्यश्राद्धविधिः ॥

ब्राह्मणका अथवा अन्नका अभाव होवै तौ शक्तिके अनुसार अन्न लेके तिस अन्नके छह विभाग करके **“ अस्मत्पितृपितामह० ”** इत्यादिक चतुर्थीविभक्त्यंत छह देवतोंका उच्चार करके **“ इदमन्नं स्वधा न मम ”** ऐसा कहके अन्नका त्याग करना. पीछे वह अन्न ब्राह्मण अथवा गौकों देना किंवा जल आदिमें त्याग देना. अन्नके त्यागकाभी लोप होवै तौ **“ आर्चन्नत्र मरुत० ”** इस ऋचाका दशवार जप करना. इस प्रकार नित्यश्राद्धका विधि कहा.

अथश्राद्धानुकल्पाः अनेकविप्रालाभेदेवस्थानेशालग्रामादिकंस्थापयित्वैकविप्रेपित्रादित्रयं मातामहादिसहितदेवताषट्कंचावाह्यसर्वंश्राद्धंकार्यमित्युक्तं सर्वथाविप्रालाभेदर्भवटुश्राद्धमित्याद्यप्युक्तं ॥

अब श्राद्धके अनुकल्प कहताहुं.

अनेक ब्राह्मण नहीं मिलैं तौ देवतोंके स्थानमें शालग्राम आदिका स्थापन करके एक ब्राह्मणके स्थानमें पिता आदि तीनोंकों और मातामह आदि सहित छह देवतोंका आवाहन करके सब श्राद्ध करना ऐसा कहा है. सब प्रकारसें ब्राह्मण नहीं मिलैं तब डाभके मोटक बनाके श्राद्ध करना इस आदिभी कहा है.

अथामश्राद्धं तत्रकेनचित्संकटेनपाकासंभवेजातकर्मणिचग्रहणनिमित्तकश्राद्धेचामश्राद्धं कार्यं सपिंडनश्राद्धंमासिकंप्रतिवार्षिकंमहालयाष्टकान्वष्टकादिश्राद्धंचामेननकार्यं शूद्रस्यतुदशाहपिंडादिश्राद्धमात्रमामेन नकदापिपाकेन तत्रपितॄनुद्दिश्यामुकश्राद्धंसदैवंसपिंडमामेनहविषाकरिष्यइतिसंकल्पः अन्यःप्रयोगःपूर्वोक्तएव पाकप्रोक्षणस्थानेआमप्रोक्षणं आवाहनेउशंतस्त्वेतिमंत्रेहविषेअत्तवेइत्यत्रहविषेस्वीकर्तवेइत्यूहः भस्ममर्यादांतंप्राग्वत् विप्रहस्तेषुतंडुलैरग्नौकरणं अन्नाच्चतुर्गुणंद्विगुणंसमंवातत्तदामंपात्रेषुसंस्थाप्यपाणिहोमशेषंपिंडार्थंसंस्थाप्यपात्रेषुदत्वापृथिवीतेपात्रमित्यादि इदमामंहव्यंकव्यमित्यादि इदमाममम्रृतरूपं

स्वाहेत्यादियथाधर्ममध्वित्यंतंप्राकृतं यथासुखंजुषध्वमित्यस्यापोशनप्राणाहुतितृप्तिप्रश्नानांलोपः संपन्नवाचनांतेन्नशेषप्रश्नलोपः सर्वमतेतंडुलैःसक्तुभिर्वापिंडदानंकेचिद्गृहसिद्धान्नेनपायसेनवापिंडानाहुः ॥

अब आमान्नश्राद्ध कहताहुं.

तहा किसीक संकटसें पाकका संभव नहीं होवै तब और जातकर्म और ग्रहणनिमित्तक श्राद्धमें आमान्नसें श्राद्ध करना. सपिंडीश्राद्ध, मासिक, प्रतिसांवत्सरिक, महालय, अष्टका और अन्वष्टका आदि श्राद्ध आमान्नसें नहीं करने. शूद्रनें तौ, दशाहपिंडादि सब श्राद्ध आमान्नसें करने, कभीभी पाकसें नहीं करने. तिस आमश्राद्धविषे पितरोंका उद्देश करके "**अमुकश्राद्धं सदैवं सपिंडमामेन हविषा करिष्ये**" ऐसा संकल्प करना. अन्य प्रयोग पूर्वकी तरहही करना. पाकप्रोक्षणस्थानमें आमान्नका प्रोक्षण करना. आवाहनके स्थानमें "**उशंतस्त्वा०**" इस मंत्रमें '**हविषे अत्तवे**' इसकी जगह '**हविषे स्वीकर्तवे**' ऐसा उच्चार करना. भस्ममर्यादापर्यंत कर्म पहलेकी तरह करना. ब्राह्मणोंके हाथोंपर चावलोंसें अग्नौकरण करना. अन्नसें चौगुना, दुगुना अथवा समान ऐसे तिस तिस आमान्नकों पात्रपर स्थापित करके पाणिहोम करके शेष रहा पिंडोंके अर्थ रखके और पात्रोंपर धरके "**पृथिवीतेपात्रं०**" इत्यादि—"**इदमामंहव्यंकव्यम्**" इत्यादि "**इदमाममममृतरूपस्वाहा**" इत्यादिक धर्मके अनुसार '**मधु**' यहांपर्यंत पूर्वकी तरह करना. पीछे "**यथासुखं जुषध्वम्**" इस वाक्यका और आपोशन, प्राणाहुति, तृप्तिप्रश्न इन्होंका लोप करना. संपन्नवाचनके अनंतर अन्नशेषप्रश्नका लोप करना. सर्वोंके मतमें चावलोंसें किंवा सत्तुओंसें पिंडदान करना ऐसा है. कितनेक ग्रंथकार घरमें सिद्ध किये अन्नसें अथवा खीरसें पिंड करना ऐसा कहते हैं.

एवंविप्रसमीपेपिंडदानांते नमोवःपितरइषेइत्यत्रोपस्थानमंत्रइषेस्थानेआमद्रव्यायेत्यूहः पिंडोद्वासनांतेपिंडजातीयद्रव्येणविकिरदानं आमश्राद्धेस्वस्तीतिब्रूतेतिवर्ज्यम् वाजेवाजेइति मंत्रेतृप्तायातेतिस्थानेतर्प्स्यथयातेत्यूहः ततःप्राग्वच्छेषंसमापयेत् आमश्राद्धंद्विजैःपूर्वाह्णेकार्यम् शूद्रैरपराह्णएव आमान्नाभावेहिरण्यश्राद्धमप्येवमेव संकल्पादौसर्वत्रहिरण्यपदमामपदस्थानेयोज्यम् ॥

इस प्रकार ब्राह्मणके समीप पिंडदान किये पीछे "**नमोवःपितर इषे०**" इस उपस्थानके मंत्रमें '**इषे**' इसकी जगह '**आमद्रव्याय**' ऐसा उच्चार करना. पिंडोंका विसर्जन हुए पीछे, जिस द्रव्यसें पिंड दिये होवैं तिस द्रव्यसें विकिर देने. आमश्राद्धविषे "**स्वस्तीतिब्रूत**" यह वाक्य वर्जित करना. "**वाजेवाजे०**" इस मंत्रमें "**तृप्तायात**" इसकी जगह '**तर्प्स्यथयात**' ऐसा उच्चार करना. पीछे पूर्व कहेकी तरह शेषकर्म समाप्त करना. द्विजोंनें आमश्राद्ध पूर्वाह्णकालमें करना, शूद्रोंनें अपराह्णकालमें करना. आमान्नका अभाव होवै तौ हिरण्यश्राद्ध अर्थात् सोनासें श्राद्धभी ऐसाही करना. संकल्प आदिविषे सब जगह आमपदके स्थानमें हिरण्यपद युक्त करना.

आमवद्धेमप्रोक्षणं अत्तवइत्यादिमंत्रत्रयोहःप्राग्वदेव तंडुलादिभिर्हस्तेग्नौकरणं हिरण्यं

मन्नादष्टगुणंचतुर्गुणंद्विगुणंसमंवादेयम् हिरण्यश्राद्धेदक्षिणास्त्येव श्राद्धीयमामंहेमवाद्विजदत्तंयथेष्टंविनियोज्यं शूद्रदत्तंतुभोजनादन्यत्रविनियोज्यम् श्राद्धीयामेनपंचयज्ञाःश्राद्धंचन कार्यम् हेमश्राद्धेआमश्राद्धेचपिंडदानविकल्पात्सांकल्पिकविधिनाप्येतद्द्वयं ॥

आमान्नकी तरह हिरण्य अर्थात् सोनाका प्रोक्षण करना. "अत्तव" इत्यादिक तीन मंत्रोंका उच्चार पहलेकी तरहही करना. चावल आदि करके हाथविषे अग्नौकरण करना. अन्नसें सोना आठगुना, चौगुना, दुगुना अथवा समान देना. हिरण्यश्राद्धमें दक्षिणा कहीही है. श्राद्धसंबंधी आमान्न अथवा सोना द्विजोंनें दिया होवै तौ यथेष्ट योजना करनी. शूद्रनें दिया होवै तौ भोजनसें अन्य जगह योजना करनी. श्राद्धसंबंधी आमान्नसें पंचमहायज्ञ और श्राद्ध नहीं करना. हिरण्यश्राद्धमें और आमान्नश्राद्धमें पिंडदानका विकल्प कहा है. इसवास्ते सांकल्पिक विधिसेंभी ये दोनों श्राद्ध करने.

सांकल्पिकेचसमंत्रकावाहनार्घ्याग्नौकरणपिंडदानविकिराक्षय्यस्वधावाचनप्रश्नेत्येतत्सप्तकंवर्ज्यं तत्रामुकश्राद्धमामेनहविषाहिरण्येनवासांकल्पिकविधिनाकरिष्यइतिसंकल्पः शूद्रगृहेन्यदीयमपिक्षीराद्यपिनभक्ष्यम् किमुततदीयमामादितद्गृहेपक्त्वानभक्ष्यमिति तस्माच्छूद्राल्लब्धंद्विजगृहेपक्त्वाभक्ष्यं इत्यामश्राद्धहेमश्राद्धविधिः ॥

सांकल्पिकविधिमें समंत्रक आवाहन, अर्घ्य, अग्नौकरण, पिंडदान, विकिर, अक्षय्य, स्वधावाचनप्रश्न ये सात प्रकार वर्जित करने. तिस सांकल्पिक विधिविषे "अमुकश्राद्धमामेन हविषा हिरण्येन वा सांकल्पिकविधिना करिष्ये" ऐसा संकल्प करना. शूद्रके घरमें अन्य वर्णनें दिये हुयेभी दूध आदिका भक्षण नहीं करना ऐसा है; इस्सें तिस शूद्रनें दिये आमान्न आदिकों शूद्रके घरमें पकाके कभीभी भक्षण नहीं करना. इस उपरसें ऐसा सिद्ध होता है की, शूद्रसें लब्ध हुआ आमान्न ब्राह्मणके घरमें पकाके भक्षण करना. इस प्रकार आमश्राद्ध और हेमश्राद्धका विधि कहा.

अथपक्वान्नद्रव्यकसांकल्पिकविधिः तत्रयेषुसंक्रांतियुगमन्वादिषुवृद्ध्युत्तरकालिकदर्शादिषुवापिंडदानंनिषिद्धंतत्रसर्वत्रसांकल्पिकविधिः यश्चपिंडदानादिबहुविस्तृतंश्राद्धमनुष्ठातुमशक्तःसोपिसांकल्पिकंकुर्यात् तद्यथा अमुकंश्राद्धंसांकल्पिकविधिनान्नेनहविषाकरिष्येइति संकल्प्य तृतीयक्षणदानांतंपूर्ववत्कृत्वार्घ्यदानंसमंत्रकावाहनंचवर्जयेत् देवानावाहयामीति पितॄनावाहयामीत्येवावाह्य गंधादिपूजनादिभस्ममर्यादांतेग्नौकरणंवर्जयित्वापरिवेषणादिसंपन्नवचनांतेउत्तरापोशनंविकिरपिंडदानवर्जमक्षय्यवचनांतंकृत्वास्वधांवाचयिष्ये स्वधोच्यतामितिवाक्यरहितंसर्वंपूर्ववत्समापयेत् इतिसांकल्पिकप्रयोगः ॥

अब पकान्नद्रव्यक सांकल्पिकविधि कहताहुं.

तहां संक्रांति, युगादि, मन्वादिश्राद्ध अथवा वृद्धिश्राद्धके अनंतर करनेके योग्य जो दर्शआदि श्राद्ध हैं तिन्होंमें पिंडदानका निषेध कहा है इसलिये तिन सब श्राद्धोंमें सांकल्पिकविधि करना, और पिंडदान आदि बहुत विस्तारवाला श्राद्ध करनेविषे जिसका सामर्थ्य नहीं

होवै तिसनें सांकल्पिकविधि करना. सो ऐसा—"अमुकश्राद्धं सांकल्पिकविधिनान्नेन हविषा करिष्ये" ऐसा संकल्प करके तीसरा क्षण देनेपर्यंत प्रयोग पहलेकी तरह करके अर्घ्यदान और समंत्रक आवाहन वर्जित करने. "देवानावाहयामि, पितॄनावाहयामि" ऐसा आवाहन करके गंधादिक उपचारोंसें जो पूजन है तिस्सें पिशंगीपर्यंत कर्म किये पीछे अग्नौकरण वर्जित करके परिवेषणसें संपन्नवचनपर्यंत कर्म हुए पीछे उत्तरापोशन, विकिर और पिंडदान इन्होंकों वर्जित करके अक्षय्यवचनपर्यंत कर्म करके "स्वधांवाचयिष्ये स्वधोच्यतां" इस वाक्यसें रहित सब प्रयोग पहलेकी तरह समाप्त करना. ऐसा सांकल्पिकप्रयोग कहा.

अथान्येप्यनुकल्पाः तत्रद्विजाद्यभावेदर्भबटुविधानेनपिंडदानमात्रमुक्तं अथवाद्रव्यविप्रयोरभावेपक्वान्नस्यपैतृकसूक्तेनहोमःकार्यः यद्वाश्राद्धदिनेप्राप्तेभवेन्निरशनःपुमान् किंचिद्द्यादशक्तोवाउदकुंभादिकंद्विजे तृणानिवागवेदद्यात्पिंडान्वाप्यथनिर्वपेत् तिलदर्भैःपितॄन्वापि तर्पयेत्स्नानपूर्वकम् अथवातृणभारंदहेत् धान्यंवातिलान्वास्वल्पांदक्षिणांवादद्यात् अथवा संकल्पादिसर्वंश्राद्धप्रयोगंपठेत् सर्वाभावेवनंगत्वोर्ध्वबाहुःस्वकक्षंदर्शयन्निदंपठेत् नमोस्तिवित्तंनधनंनचान्यच्छ्राद्धोपयोगिस्वपितॄन्नतोस्मि तृप्यंतुभक्त्यापितरोमयैतौभुजौकृतौवर्त्मनिमारुतस्येति प्रभासखंडेन्येपिमंत्राउक्ताः इत्यनुकल्पाः ॥

अब दूसरेभी अनुकल्प कहताहुं.

तहां ब्राह्मण आदिका अभाव होवै तौ डाभके मोटकोंके विधानकरके पिंडदान मात्र करना ऐसा कहा है. अथवा श्राद्धपदार्थ और ब्राह्मणका अभाव होवै तौ पकाये हुये अन्नका पितृसूक्तसें होम करना. "अथवा श्राद्धदिन प्राप्त होवै तब पुरुषोंनें उपवास करना, अथवा सामर्थ्य नहीं होवै तौ जलका घडा आदि अल्पदान ब्राह्मणके अर्थ देना, अथवा गायोंकों तृण देना, किंवा पिंडदान करना, अथवा तिल, डाभ इन्होंकरके स्नानपूर्वक पितरोंका तर्पण करना. अथवा तृणके भारकों दग्ध करना. अन्न किंवा तिल अथवा अल्प दक्षिणा देनी. किंवा संकल्पसें लेके संपूर्ण श्राद्धप्रयोग पठित करना. सबोंके अभावमें वनविषे जाके ऊपरकों बाहुवाला और अपने काखकों दिखाता हुआ इस मंत्रका पाठ करना. सो ऐसा—"नमोस्ति वित्तं न धनं न चान्यच्छ्राद्धोपयोगिस्वपितॄन्नतोस्मि ॥ तृप्यंतु भक्त्या पितरो मयैतौभुजौ कृतौ वर्त्मनि मारुतस्य." प्रभासखंडमें अन्य भी मंत्र कहे हैं. इस प्रकार अनुकल्प कहे हैं.

अथश्राद्धभोजनेप्रायश्चित्तानि दर्शश्राद्धेषट्प्राणायामाः महालयादिश्राद्धेषुत्रिवर्षोर्ध्वं प्रतिवार्षिकेषुचषट्प्राणायामाःगायत्र्यादशकृत्वोभिमंत्रितस्यजलस्यपानंवा एवमन्येष्वप्यनुक्तप्रायश्चित्तश्राद्धेषूक्तजलपानमेव वृद्धिश्राद्धेप्राणायामत्रयं जातकर्मादिचूडांतसंस्कारांगवृद्धिश्राद्धेसांतपनकृच्छ्रं जातकर्मांगश्राद्धेचांद्रायणंवा अन्यसंस्कारांगश्राद्धउपवासः सीमंतसंस्कारेतत्संस्कारांगश्राद्धेचचांद्रायणं आपदिदशाहांतर्नवसंज्ञकश्राद्धेषुएकादशाहेचश्राद्धभोजनेप्राजापत्यकृच्छ्रम् द्वादशाहिकसपिंडीश्राद्धेऊनमासेचपादोनकृच्छ्रः द्वितीयमासि

कत्रैपक्षिकोनषाण्मासिकोनाब्दिकेष्वर्धकृच्छ्रः अन्यमासिकेषुप्रथमाब्दिकेवर्षांतसपिंडनश्राद्धेचपादकृच्छ्रः उपवासोवा गुरवेद्रव्यंदातुंश्राद्धभोजनेसर्वत्रोक्तार्धम् जपशीलेतदर्धं अनापद्यूनमासांतेषुचांद्रायणंप्रजापत्यंच द्वितीयमासाद्युक्तचतुर्षुपादोनकृच्छ्रः त्रिमासादिषुपूर्वोक्तेष्वर्धकृच्छ्रः प्रथमाब्दिकेपादोनकृच्छ्रः द्वितीयतृतीयाब्दिकेएकोपवासः क्षत्रियश्राद्धेएतद्द्विगुणं वैश्यश्राद्धेत्रिगुणं शूद्रश्राद्धेसर्वत्रचतुर्गुणं चांडालविषजलसर्पपश्वादिहतपतितक्लीबादिनवश्राद्धेचांद्रायणं एकादशाहांतंचपराकश्चांद्रंच द्वादशाहादौपराकः द्विमासादिचतुर्ष्वतिकृच्छ्रः अन्यमासिकेषुकृच्छ्रः आब्दिकेपादः अभ्यासेसर्वत्रसर्वंद्विगुणं आमहेमश्राद्धेसांकल्पिकेचतत्तदुक्तप्रायश्चित्तार्धं यतिश्चब्रह्मचारीचपूर्वोक्तप्रायश्चित्तंकृत्वोपवासत्रयंप्राणायामशतंघृतप्राशनंचाधिकंचरेत् अनापदिद्विगुणंचरेत् दर्शादौगृहिवदेव ब्रह्मचारिणश्चौलसंस्कारेभोजनेकृच्छ्रः सीमंतेचांद्रं अन्येषूपवासः एकादशाहश्राद्धभोजनेचांद्रंपुनःसंस्कारश्चेतिहेमाद्रिः ॥

अब श्राद्धमें भोजन करनेमें प्रायश्चित्त कहताहुं.

दर्शश्राद्धमें छह प्राणायाम करने; महालय आदि श्राद्धमें, और तीन वर्षोंके अनंतरके प्रतिसांवत्सरिक श्राद्धमें भोजन किया जावै तौ छह प्राणायाम अथवा गायत्रीमंत्रसें दशवार जल अभिमंत्रित करके पीना. इस प्रकार प्रायश्चित्त नहीं कहे हुये ऐसे अन्य श्राद्धोंमेंभी पूर्वोक्त जलका पानही करना. वृद्धिश्राद्धविषे तीन प्राणायाम करने. जातकर्मसें चौलपर्यंत जो संस्कार हैं तिन्होंके अंगभूत वृद्धिश्राद्धविषे सांतपनकृच्छ्र करना, अथवा जातकर्मके अंगभूत श्राद्धविषे चांद्रायण करना. अन्य संस्कारके अंगभूत वृद्धिश्राद्धमें उपवास करना. सीमंतसंस्कार और तिस संस्कारके अंगभूत श्राद्ध इन्होंमें चांद्रायण करना. आपत्कालमें दश दिनपर्यंत नवसंज्ञकश्राद्ध, और एकादशाहश्राद्ध इन्होंमें भोजन किया जावै तौ प्राजापत्यकृच्छ्र करना. बारहमे दिनमें कर्तव्य जो सपिंडीश्राद्ध और ऊनमासिकश्राद्ध तिन्होंमें पादोनकृच्छ्र करना. द्वितीय मासिक, त्रैपक्षिक, ऊनषाण्मासिक और ऊनाब्दिक इन्होंमें अर्धकृच्छ्र करना. अन्य मासिकश्राद्ध, प्रथमाब्दिकश्राद्ध और वर्षके अंतमें कर्तव्य जो सपिंडीश्राद्ध इन्होंमें पादकृच्छ्र अथवा उपवास करना. गुरुके अर्थ द्रव्य देनेके लिये श्राद्धमें भोजन किया जावै तौ सब जगह उक्त प्रायश्चित्तके आधा प्रायश्चित्त करना. जप करनेवाला होवै तौ तिसनें चौथाई प्रायश्चित्त करना. आपत्काल नहीं होवै तौ ऊनमासिकपर्यंत श्राद्धोंमें चांद्रायण और प्राजापत्य ये दोनोंभी करने. द्वितीयमासिक आदि जो चार श्राद्ध कहे हैं तिन्होंविषे पादोनकृच्छ्र करना. त्रैमासिक आदि जो पहले कहे हैं तिन्होंविषे अर्धकृच्छ्र करना. प्रथमाब्दिक श्राद्धमें पादोनकृच्छ्र करना. द्वितीय, तृतीय आब्दिक श्राद्धमें एक उपवास करना. क्षत्रियका श्राद्ध होवै तौ तिसविषे तिस्सें दुगुना करना. वैश्यश्राद्धमें तिगुना जानना. और शूद्रश्राद्धमें सब जगह चौगुना करना. चांडाल, विष, जल, सर्प, पशु इन आदिसें मृत हुआ, पतित, हीजडा, इत्यादिकोंके नवश्राद्धोंमें भोजन किया जावै तौ चांद्रायण करना. एकादशाहांतश्राद्धमें पराक और चांद्रायण करना. द्वादशाह आदि श्राद्धमें पराक प्रायश्चित्त करना. द्विमासिक आदि चार श्राद्धोंमें अतिकृच्छ्र करना. अन्य मासिकश्राद्धमें कृच्छ्र, आब्दिकश्राद्धमें पादकृच्छ्र करना. अभ्यास होवै

तौ सब जगह सब दुगुना करना. आमश्राद्ध, हिरण्यश्राद्ध और सांकल्पिक इन श्राद्धोंमें तिस तिस उक्त प्रायश्चित्तका अर्ध जानना. संन्यासी, ब्रह्मचारी इन्होंनें पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करके तीन उपवास, सौ प्राणायाम, घृतप्राशन ये अधिक करने. आपत्काल नहीं होवै तौ दुगुना करना. दर्श आदि श्राद्धमें गृहस्थाश्रमीसरीखाही संन्यासी और ब्रह्मचारीनें प्रायश्चित्त करना. ब्रह्मचारी चौलसंस्कारमें भोजन करै तौ कृच्छ्रप्रायश्चित्त करना. सीमंतसंस्कारमें चांद्रायण, अन्य संस्कारमें उपवास करना. एकादशाहश्राद्धमें भोजन किया जावै तौ चांद्रायण और पुनःसंस्कार करना ऐसा हेमाद्रि ग्रंथमें कहा है.

अथक्षयाहश्राद्धेविशेषः तत्रयस्यपित्रादेर्मरणंयन्मासेयत्पक्षेयत्तिथौतद्दिनंतस्यमृताहस्तत्रपित्रादित्रिदैवत्यंवार्षिकश्राद्धंपुरूरवार्द्रवदेवसहितंकार्यं नचात्रसपत्नीकत्वंपित्रादीनां नाप्यत्रमातामहादित्रयं अत्रतिथिद्वैधेनिर्णयोरात्रावपिकार्यत्वंग्रहणदिनेतत्प्राप्तौनिर्णयोमलमासादिनिर्णयोदर्शदिनेतत्प्राप्तौनिर्णयः शुद्धिश्राद्धनिर्णयश्चश्राद्धकालनिर्णयप्रसंगेनपूर्वोक्तोनुसंधेयः पारणेमरणेचैवतिथिस्तात्कालिकीमतेतिवचनात् मरणकालिकतिथेरपराह्णादिव्याप्त्याब्दिकश्राद्धनिर्णयोज्ञेयः पित्रोःप्रथमाब्दिकश्राद्धंविभक्तैर्भ्रातृभिःपृथक्कार्यम् अविभक्तत्वेज्येष्ठेनैवमातृमृताहेमात्रादित्रिदैवत्यंश्राद्धं मातापित्रोर्मृताहैक्येपूर्वंपितुःश्राद्धंकृत्वास्नात्वामातुःश्राद्धंकार्यम् एवमेकदिनेपित्रोर्मरणेनमातुर्भर्त्रासहदाहकरणेपिज्ञेयं सहगमनेत्वेकमेवपाकंकृत्वापितृमातृपार्वणद्वययुतंश्राद्धम् षट्पिंडाअर्घ्याश्चविश्वेदेवास्तुनभिन्नाः सहगमने सुवासिनीमरणेचविप्रपंक्तौसुवासिनीमधिकांभोजयेत् सुवासिन्यैकुंकुमादिरुयलंकारान्दद्यात् सर्वत्रस्त्रीणांश्राद्धेवस्त्रयज्ञोपवीतगंधादिकमेवविप्रेभ्योदेयंनकुंकुमादि एवंसापत्नमातुर्मातामहतत्पत्न्योर्भ्रातुःश्वश्रूश्वशुरयोर्गुरोः पितृष्वसुर्मातृष्वसुर्भार्यायाभर्तुर्भगिन्यादेश्चैतेषामपुत्रत्वेपार्वणविधिनैवप्रतिवार्षिकंश्राद्धंकार्यं केचित्पितृमातृमातामहमातामहीव्यतिरिक्तानांसर्वेषामेकोद्दिष्टविधानेनैवेत्याहुः अत्रदेशाचारानुसारेणव्यवस्था पित्रादिवार्षिकदिनेपितृव्यादिवार्षिकप्राप्तौस्वयंपित्रादिश्राद्धंकार्यं पितृव्यादिश्राद्धंतुपुत्रशिष्यादिद्वाराकार्यं दिनांतरेवास्वयंकार्यं संन्यासिनोप्याब्दिकादिपुत्रःकुर्यात्सपार्वणं प्रथमेवर्षेवर्षांतसपिंडनपक्षेमृताहात्पूर्वदिनेसपिंडनमब्दपूर्तिश्राद्धंचकृत्वापरेद्युर्वार्षिकंकार्यं ॥

अब क्षयाहश्राद्धमें विशेष कहताहुं.

तहां जिसके पिता आदिका मरण जिस महीनेमें, जिस पक्षमें, जिस तिथिमें हुआ होवै वह दिन तिस मनुष्यका मृतदिन होता है; इसलिये तहां पिता आदि तीन देवतोंसें युक्त सांवत्सरिक श्राद्ध पुरूरवार्द्रव देवसहित करना; इस सांवत्सरिक श्राद्धमें पिता आदि तीनोंको सपत्नीकपना नहीं है, और यहां मातामह आदि त्रयीभी नहीं है. इस विषयमें दो दिन तिथि होवै तौ निर्णय, रात्रिमेंभी कर्तव्यत्व, ग्रहणदिनमें प्राप्त होवै तौ तिसका निर्णय, मलमास आदिका निर्णय, दर्शदिनमें प्राप्त होवै तौ तिसका निर्णय, और शुद्धिश्राद्धका निर्णय श्राद्धकालके निर्णय प्रसंगमें करके पूर्व कहेके प्रमाण जानना. "पारणामें और मरणमें तिथि तत्कालव्यापिनी लेनी," ऐसा वचन कहा है, इसलिये मरणकालिक तिथिके अपराण्ह आदि

कालकी व्याप्तिसें आब्दिकश्राद्धका निर्णय जानना. मातापिताका प्रथमाब्दिक श्राद्ध विभागकों प्राप्त हुये भाइयोंनें पृथक् करना. नहीं विभागकों प्राप्त हुये भाइयोंमें ज्येष्ठ अर्थात् बडे भाईनेंही करना. माताके मृतदिनमें माता आदि तीन देवतोंसें युक्त श्राद्ध करना. माता और पिताका मृतदिन एक होवै तौ प्रथम पिताका श्राद्ध करके पीछे स्नान करके माताका श्राद्ध करना. इस प्रमाणसें एक दिनमें मातापिताकों मरण होनेसें माताका दाह पतिके साथ किया होवै तौ ऐसाही निर्णय जानना. माता सती हो गई होवै तौ एकही पाक करके पिता और माता इन दो पार्वणोंसें युक्त श्राद्ध करना. पिंड और अर्घ्य छह करने. विश्वेदेव तौ पृथक् नहीं करने. सहगमन और सुवासिनी अर्थात् सुहागनका मरण होवै तौ ब्राह्मणोंकी पंक्तिविषे अधिक एक सुवासिनीकों भोजन करवाना. सुवासिनी स्त्रीकों रोली आदि स्त्रियोंके अलंकार देने. सब जगह स्त्रियोंके श्राद्धमें ब्राह्मणोंकों वस्त्र, यज्ञोपवीत, गंध इत्यादिक उपचार देने. रोली आदि नहीं देने. इस प्रकार सापत्नमाता अर्थात् पिताकी दूसरी स्त्री, मातामह, मातामहपत्नी, भाई, सासू, सुसरा, गुरु, फूफी, मावसी, भार्या, पति, बहन इन आदिकों पुत्र नहीं होवै तौ पार्वणविधिसेंही प्रतिवार्षिक श्राद्ध करना. कितनेक ग्रंथकार पिता, माता, मातामह और मातामही इन्होंकेविना अन्य सबोंका एकोद्दिष्टविधिसें श्राद्ध करना ऐसा कहते हैं. इस विषयमें देशाचारके अनुरूप व्यवस्था जाननी. पिता आदिकोंके वार्षिकश्राद्धके दिनमें पितृव्य आदिकोंका वार्षिकश्राद्ध प्राप्त होवै तौ आप अर्थात् पुत्रनें पिता आदिकोंका श्राद्ध करना. पितृव्य आदिकोंका श्राद्ध करना होवै तौ पुत्र, शिष्य आदिकोंसें करवाना, अथवा दूसरे दिनमें आप करना. “संन्यासियोंकाभी आब्दिकश्राद्ध पार्वणसहित पुत्रोंनें करना.” वर्षके अंतमें सपिंडी करनेका पक्ष होवै तौ प्रथम वर्षविषे मृतदिनके पूर्वदिनमें सपिंडी और अब्दपूर्तिश्राद्ध करके दूसरे दिनमें वार्षिकश्राद्ध करना.

अथक्षयाहाज्ञानेनिर्णयः यस्यमृतस्यदेशांतरमरणादिनामासोज्ञायतेतिथिर्नज्ञायतेतस्यतन्मासेदर्शेशुक्लैकादश्यांकृष्णैकादश्यांवाप्रतिवार्षिकश्राद्धं मृततिथिर्ज्ञातामासोनज्ञातस्तदामार्गशीर्षेमाघेवाभाद्रेवाषाढेवातत्तिथौवार्षिकम् तिथिमासयोरज्ञानेयद्दिनेदेशांतरंप्रस्थितस्तन्मासदिवसौग्राह्यौ प्रस्थानदिनादेरज्ञानेमृतवार्ताश्रवणतिथिमासौ प्रस्थानवार्ताश्रवणयोर्मासज्ञानेतिथेरज्ञानेतन्मासेदर्शादौ प्रस्थानादिमासविस्मरणेतिथिस्मरणेमार्गशीर्षादिषूक्तचतुर्षुतत्तिथौवार्षिकम् मरणतच्छ्रवणप्रस्थानानांदिनमासयोरज्ञानेमाघस्यमार्गस्यवादर्शेश्राद्धं द्वादशादिवर्षप्रतीक्षोत्तरंप्रतिकृतिदाहेदाहदिनेवार्षिकादि ॥

क्षयदिनका अज्ञान होवै तौ तिसका निर्णय कहताहुं.

देशांतरमें मरन आदि होनेसें महीनाका ज्ञान होके तिथिका ज्ञान नहीं होवै तौ तिस मनुष्यका तिस महीनाकी अमावसविषे अथवा शुक्लपक्षकी एकादशीविषे अथवा कृष्णपक्षकी एकादशीविषे वार्षिकश्राद्ध करना. मरनेकी तिथिका ज्ञान होके महीनाका ज्ञान नहीं होवै तब मंगशिर, माघ अथवा भाद्रपद किंवा आषाढ इन महीनोंमें तिस तिथिविषे वार्षिकश्राद्ध करना. तिथि और महीना इन दोनोंका ज्ञान नहीं होवै तौ जिस दिनमें देशांतरमें गमन

करनेकों प्रस्थान किया होवै वह दिन और महीना ग्रहण करना. प्रस्थानदिन आदिका ज्ञान नहीं होवै तौ मरनेकी वार्ता सुननेकी तिथि और महीना लेना. जिस महीनामें प्रस्थान किया होवै और मरनेकी वार्ता सुनी होवै तिस महीनाका ज्ञान होवै और तिथिका ज्ञान नहीं होवै तब तिसी महीनाकी अमावस आदि तिथिविषे करना. प्रस्थान आदिके महीनाका विस्मरण होके तिथिका स्मरण होवै तब मंगशिर आदि उक्त चार महीनोंमें तिसही तिथिविषे करना. मरन, मरनेकी वार्ताका सुनना और प्रस्थान इन्होंके दिन और महीनाका स्मरण नहीं होवै तब माघ किंवा मंगशिर इन महीनोंकी अमावसके दिनमें श्राद्ध करना. बारह वर्षपर्यंत प्रतीक्षा अर्थात् वाट देखे पीछे पालाशविधिसें दहन किया होवै तौ दहनदिनमें वार्षिक आदि श्राद्ध करना.

अथश्राद्धविघ्नेनिर्णयः निमंत्रणोत्तरंविप्रस्यसूतकेमृतकेवाप्राप्तेअशौचंन निमंत्रणंचद्वितीयक्षणरूपंसमंत्रकंग्राह्यंनलौकिकमितिभाति कर्तुस्तुपाकपरिक्रियोत्तरमाशौचाभावः पाकपरिक्रियाचसमंत्रकंपाकप्रोक्षणमित्याहुः कर्तुर्गृहेभोजनारंभोत्तरंजननेमरणेवाभोजनशेषं त्यक्त्वापरकीयजलेनाचामेत् ममतुप्रतिभातिसर्वस्याप्याशौचापवादस्यानन्यगतिविषयत्वात्संकटाभावेपाकपरिक्रियोत्तरमपिकर्तुराशौचेतदंतेश्राद्धम् भोक्तुस्तुभोजनारंभात्प्रागाशौचज्ञानेन्योनिमंत्रणीयः भोजनारंभोत्तरमाशौचेतुकर्त्रातथैवश्राद्धंसमापनीयं भोक्त्रातुभोजनांतेआशौचप्रकरणेवक्ष्यमाणं[1]प्रायश्चित्तंकार्यं संकटेतुपूर्वोक्तमितियुक्तंचेद्ग्राह्यं ॥

अब श्राद्धमें विघ्न होवै तिसका निर्णय कहताहुं.

निमंत्रण किये पीछे ब्राह्मणकों आशौच प्राप्त होवै तौ आशौच नहीं लगता. यहां द्वितीयक्षणरूपी और समंत्रक ऐसा निमंत्रण ग्रहण करना, लौकिक निमंत्रण नहीं ग्रहण करना ऐसा भासमान होता है. यजमानकों पाकपरिक्रिया किये पीछे आशौच नहीं लगता. पाकपरिक्रिया अर्थात् मंत्रोंकरके पाकका प्रोक्षण करना, सो कर्ताके घरमें भोजनके आरंभके अनंतर जन्म किंवा मरण होवै तौ पात्रमें शेष रहे अन्नका त्याग करके दूसरे घरके जलसें आचमन करना. मुझकों तौ ऐसा प्रतिभान होता है की सब प्रकारके आशौचापवाद अनन्यगतिविषयक होनेसें, संकटके अभावमें पाकपरिक्रियाके उपरंत कर्ताकों आशौच होवै तौ आशौचके अंतमें श्राद्ध करना. भोजन करनेवाले ब्राह्मणकों भोजनके आरंभके पहले आशौचके ज्ञानमें दूसरा ब्राह्मण निमंत्रित करना. भोजनके आरंभके उपरंत आशौच होवै तौ कर्तानें तैसाही श्राद्ध समाप्त करना. भोजन करनेवाले ब्राह्मणनें तौ भोजनके अंतमें, आशौचप्रकरणमें कहा प्रायश्चित्त करना. संकटमें तौ पूर्वोक्त जो योग्य होवै तौ ग्रहण करना.

अथसिंधौपाकोत्तरमाशौचाभाववचनस्यकर्तृमात्रपरत्वाद्भोक्तुःप्रायश्चित्तमाशौचंचोक्तंतद्यथा ब्राह्मणस्याशौचेश्राद्धेसकृत्कामतोन्नभोजनेसांतपनकृच्छ्रं अभ्यासेमासंकृच्छ्रंचरेत् अज्ञानाद्विप्रादीनांज्ञाताशौचानामन्नभक्षणे एकाहंत्र्यहंपंचाहंसप्ताहंक्रमेणाभोजनमंतेपंचगव्याशनंच अभ्यासेद्विगुणं आशौचंतुब्राह्मणादीनामाशौचेयःसकृदेवान्नमश्नातितस्यतावदा

---

[1] भोजनकालेसूतकप्राप्तौतदन्नभोजनेवक्ष्यमाणमित्यर्थः ॥

शौचंयावत्तेषामाशौचंतदंतेप्रायश्चित्तंकुर्यादितिविष्णूक्तंज्ञेयं श्राद्धकालेन्यकालेचैतत्सममेवेतिज्ञेयं दातृभोक्तृभ्यामुभाभ्यामाशौचंनज्ञातंचेन्नदोषः आशौचमध्येश्राद्धदिनपातेआशौचांतेएकादशाहेकार्यम् एकादशाहोमलमासेचेन्मलेपिकार्यम् [1]तत्रातिक्रमेशुद्धमासे एतन्मासिकेप्रतिवार्षिकेचज्ञेयम् दर्शादीनांतुपंचमहायज्ञादिवल्लोपएवनाशौचांतेकर्तव्यत्वंनापिप्रायश्चित्तं आशौचंविनादर्शादीनांलोपेप्युपवासादिरूपंप्रायश्चित्तमेवनकालांतरेनुष्ठानं एकादशाहेऽसंभवेमावास्यायांशुक्लकृष्णैकादश्योर्वार्षिकं मासिकंचोदकुंभंचयद्यदंतरितंभवेत् तत्तदुत्तरसातंत्र्यादनुष्ठेयंप्रचक्षते केचिदाब्दिकमप्यंतरितंदर्शादिकालासंभवेग्रिममासेतत्तिथौकार्यमित्याहुः आशौचेतरव्याध्यादिविघ्नेविस्मृतौचैवमेव केचिद्व्याध्यादिविघ्नेपुत्रादिनातद्दिने एवान्नेनाब्दिकमाहुः ॥

इसके अनंतर **निर्णयसिंधु** ग्रंथमें, पाकप्रोक्षणके अनंतर आशौच नहीं है ऐसा जो वचन है सो कर्तृविषयक है, इसवास्ते भोजन करनेवालेकों प्रायश्चित्त और आशौच कहा है. सो ऐसा—ब्राह्मणकों आशौचविषे श्राद्धमें एकवार अपनी इच्छा करके भोजन करनेमें सांतपनकृच्छ्र प्रायश्चित्त करना ऐसा कहा है. अभ्यास होवै तौ महीनापर्यंत कृच्छ्रप्रायश्चित्त करना. जाना हुआ है आशौच जिन्होंकों ऐसे ब्राह्मण आदिकोंका अन्न विना जाने भक्षण करनेमें ब्राह्मणके अन्नके भोजनमें एक दिन, क्षत्रियके अन्नके भोजनमें तीन दिन, वैश्यके अन्नके भोजनमें पांच दिन और शूद्रके अन्नके भोजनमें सात दिनपर्यंत उपवास करके अंतमें पंचगव्य प्राशन करना. अभ्यास होवै तौ दुगुना प्रायश्चित्त करना. आशौच तौ, ब्राह्मणादिकोंके आशौचमें एकवारही जो अन्न भक्षण करता है तिसकों, तावत्काल अर्थात् जबतक तिन सूतकियोंकों आशौच रहै तबतक आशौच रहता है. और तिसके अंतमें प्रायश्चित्त करना ऐसा श्रीविष्णुनें कहा है. श्राद्धकालमें और अन्य कालमें यह आशौच समानही है ऐसा जानना. दाता और भोक्ताकों आशौच नहीं जाना होवै तब दोष नहीं है. आशौचमें श्राद्धका दिन प्राप्त होवै तौ आशौचके अंतमें ग्यारहमे दिनविषे वह श्राद्ध करना. जो कदाचित् ग्यारहमा दिन मलमासमें होवै तबभी मलमासमेंही करना. तहां अतिक्रम हो जावै तौ शुद्धमासमें करना. यह निर्णय मासिकश्राद्धमें और प्रतिवार्षिकश्राद्धमें जानना. दर्शश्राद्ध आदिकोंका तौ पंचमहायज्ञकी तरह लोपही होता है, अर्थात् आशौचके अंतमें करना नहीं और लोपप्रायश्चित्तभी नहीं करना. आशौचके विना दर्शश्राद्ध आदिका लोप हो जावै तौ उपवास आदिरूपी प्रायश्चित्तही करना, दुसरे कालमें दर्शश्राद्ध आदि नहीं करना. ग्यारहमे दिनमें असंभव होवै तौ अमावसमें और शुक्लकृष्णपक्षकी एकादशीमें वार्षिकश्राद्ध करना. "मासिकश्राद्ध, उदकुंभश्राद्ध ऐसा जो जो अंतरित होवै वह वह उत्तर तंत्रके साथ करना ऐसा कहा है." कितनेक ग्रंथकार, अंतरित वार्षिकश्राद्धभी दर्श आदि कालका असंभव होवै तौ पिछले महीनेमें तिस तिस तिथिविषे करना ऐसा कहते हैं. आशौचसें व्यतिरिक्त व्याधि आदि विघ्न प्राप्त होवै और विस्मरण होवै तौ ऐसाही निर्णय जानना. कितनेक ग्रंथकार व्याधि आदि विघ्नोंके होनेमें पुत्र आदिके द्वारा तिसी दिनमें अन्नसें वार्षिकश्राद्ध कराना ऐसा कहते हैं.

---

[1] एकादशाहातिक्रमे मले न कार्यमित्यर्थः ॥

अथभार्यारजोदोषे तत्रदर्शयुगादिमन्वाद्यष्टकान्वष्टकादिश्राद्धानिपाककर्त्रंतरसत्त्वेन्नेन तद्दिनेकार्याण्यन्यथामादिद्रव्येण कालादर्शोदर्शश्राद्धंपंचमेहनीतिपक्षांतरमाह सकृन्महालयस्तुदर्शेभार्यारजसिमुख्यकालातिक्रमभियातत्रैवकार्यः एवमाश्विनशुक्लपंचम्यंतकालेप्यूर्ध्वं अष्टम्यादौसकृन्महालयोभार्यारजोदोषेनकार्यः कालान्तरसत्त्वादित्यादिमहालयप्रकरणोक्तमनुसंधेयं प्रत्याब्दिकंमासिकंचरजोदोषेपितद्दिनएवकार्यमित्येकःपक्षः पंचमेहनिकार्यमित्यपरः पक्षद्वयेपिग्रंथसंमतिः शिष्टाचारसंमतिश्च भार्यांतरसत्त्वेतद्दिनएवेतिसर्वसंमतं तद्दिनेकरणपक्षेश्राद्धकालेरजस्वलादर्शनादिकंवर्ज्यं तेनतादृशगृहासंभवेयोग्यपाककर्त्रसंभवेचपंचमेहनीतिपक्षःश्रेयान् अपुत्रास्त्रीरजोदोषेभर्तुराब्दिकादिकंपंचमेहनिकुर्यान्नत्वन्यद्वारातद्दिने॥

अब स्त्री रजस्वला होवै तिसका निर्णय कहताहुं.

तहां दर्श, युगादि, मन्वादि, अष्टका, अन्वष्टका इन आदि श्राद्ध पाक करनेवाला दूसरा कोई होवै तौ अन्नकरके तिसही दिनमें करने. पाक करनेवाला नहीं होवै तौ आमान्न आदिकरके करने. कालादर्श ग्रंथकार दर्शश्राद्ध पांचमे दिनमें करना ऐसा दूसरा पक्ष कहते हैं. सकृन्महालय तौ स्त्री रजस्वला होनेमें मुख्यकालके उल्लंघनके भयकरके तिसही दिनमें करना. इस प्रकारसें आश्विन शुक्ल पंचमीपर्यंत जो काल है तिसविषेभी ऐसाही निर्णय जानना. स्त्री रजस्वला होवै तौ अष्टमी आदि तिथियोंमें सकृन्महालय नहीं करना. क्योंकी, तिसकों अन्य काल है, इत्यादि महालय प्रकरणमें कहा हुआ निर्णय जानना. प्रतिसांवत्सरिकश्राद्ध और मासिकश्राद्ध ये दोनों स्त्री रजस्वला होवै तौ तिसही दिनमें करना ऐसा एक पक्ष और पांचमे दिनमें करना ऐसा दूसरा पक्ष है. इन दोनों पक्षोंविषे ग्रंथसंमति और शिष्टाचारसंमति है. दूसरी स्त्री होवै तौ तिसही दिनमें करना ऐसा सबोंका मत है. तिस दिनमें करनेका पक्ष होवै तौ श्राद्धकालविषे रजस्वला स्त्रीका दर्शन आदि वर्जित करना. इसकरके रजस्वला स्त्रीका दर्शन नहीं हो सकै ऐसा घर नहीं होवै और यथायोग्य पाक करनेवाला नहीं होवै तब पांचमे दिनमें करना यह पक्ष उत्तम है. नहीं है पुत्र जिसकों ऐसी स्त्री रजस्वला होवै तौ तिसनें पतिका आब्दिक आदि श्राद्ध पांचमे दिनमें करना; तिसही दिनमें दूसरेके द्वारा नहीं कराना.

अथपतिमुद्दिश्याग्निप्रवेशे तत्रसहगमनमेवविप्राणां क्षत्रियादेस्तुसहगमनमनुगमनंच एकचित्यारोहेणदंपत्योः सहैवमंत्रवद्दाहःसहगमनं भर्तुःसमंत्रकदाहोत्तरंपृथक्चितावग्निप्रवेशोनुगमनं तत्रोभयत्रापितिथ्यैक्येएकदिनेएवतंत्रेणपाकादिकृत्वादर्शवत्षट्पिंडषडर्घ्यविप्रभेदयुतंपितृपार्वणमातृपार्वणविशिष्टंश्राद्धंकार्यं विश्वेदेवास्तुभिन्नाभिन्नावा तिथिभेदेपिश्राद्धदिनैक्येएवमेव तिथिभेदाच्छ्राद्धदिनभेदेतुवार्षिकादिपृथगेवकार्यं केचित्तुसहगमनेतिथिभेदेपिभर्तुःक्षयाहश्राद्धदिनेएवपत्न्याःश्राद्धं नतुदिनांतरइत्याहुस्तदकल्पकालव्यवधानेयोज्यं नतुद्वित्र्यादितिथिव्यवधाने ॥

अब पतिके उद्देशकरके स्त्रीका अग्निमें प्रवेश होवै तिस विषयमें कहताहुं.

तहां ब्राह्मणोंको सहगमनही विहित है. क्षत्रिय आदिकों सहगमन और अनुगमन ये दोनोंभी विहित हैं. एक चितापर आरोहण करके स्त्रीपुरुषका समंत्रक दाह करना सहगमन होता है. पतिका समंत्रक दाह हुए पीछे पृथक् चितामें जो अग्निप्रवेश करना वह अनुगमन होता है. तहां दोनोंकी एक तिथि होवै तौ एक दिनमेंही एकतंत्रसें पाक आदि करके दर्शश्राद्धकीतरह छह पिंड, छह अर्घ्य पृथक् पृथक् ब्राह्मणोंके स्थानमें पितृपार्वण और मातृपार्वण एतद्विशिष्ट श्राद्ध करना. विश्वेदेव तौ, भिन्न किंवा अभिन्न करने ऐसा विकल्प है. तिथि निराली होवै और श्राद्धका दिन एक होवै तौभी ऐसाही निर्णय जानना. तिथि निराली होके श्राद्धका दिन निराला होवै तौ वार्षिक आदि श्राद्ध पृथक्ही करना. कितनेक ग्रंथकार तौ, सहगमनमें तिथि निराली होवै तौभी पतिके क्षयाह श्राद्धके दिनमेंही पत्नीका श्राद्ध करना, अन्य दिनमें नहीं करना ऐसा जो कहते हैं वह अल्प कालके अंतरमें युक्त करना; दो, तीन इत्यादिक तिथिके व्यवधानसें युक्त नहीं करना.

अथश्राद्धसंपातेनिर्णयः तत्रपित्रोर्मृताहैक्येपूर्वंपितुःश्राद्धंततःपाकभेदेनमातुरित्युक्तंगृहदाहादिनासपिंडानांयुगपन्मरणेसंबंधसामीप्यक्रमेणश्राद्धानिपाकभेदेनपृथक्कुर्यात् पृथक्पाकेनभिन्नश्राद्धाशक्तौ तंत्रेणअपर्णंकृत्वाश्राद्धंकुर्यात्पृथक्पृथक् क्रमेणैकदिनेमरणेमरणक्रमेण तत्रैकदिनेएकस्त्रयाणांश्राद्धानिनकुर्यात् वार्षिकश्राद्धत्रयप्राप्तौश्राद्धद्वयंस्वयंकुर्यात् तृतीयादिभ्रात्रादिनाकारयेद्दिनांतरेवाकुर्यात् पित्रोःसपिंडस्यचसंपातेतूक्तं श्राद्धंकृत्वातुतस्यैवपुनःश्राद्धंनतद्दिने नैमित्तिकंतुकर्तव्यंनिमित्तोत्पत्त्यनुक्रमात् तथाषण्णवतिश्राद्धेषुसमानदेवतात्वेतंत्रेणश्राद्धानि अधिकदेवतात्वेपृथक्श्राद्धानि वार्षिकमासिकोदकुंभश्राद्धेषुनित्यश्राद्धंदर्शादिश्राद्धंचदेवतानांभेदात्पृथक्कार्यं महालयेतीर्थश्राद्धेदर्शादिषण्णवतिषुचनित्यश्राद्धस्यप्रसंगसिद्धिःमासिकेनोदकुंभश्राद्धस्यप्रसंगसिद्धिः तत्रप्रसंगसिद्धिस्थलेदर्शादिकंप्रसंगिश्राद्धमेवसंकल्पपूर्वंसांगमनुष्ठेयं प्रसंगसिद्धंतुनित्यादिकंनसंकल्पादावुच्चार्यमितिलोपापरपर्याय एवप्रसंगसिद्धिपदेनोच्यते तंत्रसिद्धौतुप्रकारद्वयंभाति दर्शव्यतीपातश्राद्धयोस्तंत्रानुष्ठानेषट्पुरुषानुद्दिश्यदर्शश्राद्धंव्यतीपातश्राद्धंचतंत्रेणकरिष्येइतिसंकल्प्यदर्शपातश्राद्धयोःदेवार्थक्षणः करणीयइतिदैवेनिमंत्र्यदर्शपातश्राद्धयोःपित्राद्यर्थेक्षणःकरणीयइतिवर्गद्वयार्थविप्रद्वयादिकंनिमंत्र्यैकमेवश्राद्धंकार्यमित्येकःप्रकारःअथवापूर्ववत्संकल्प्यदैवेतंत्रेणैकमेवविप्रंनिमंत्र्य षोडशमासिकतंत्रवत्दर्शश्राद्धेक्षणःकरणीयइतिदर्शविप्रनिमंत्रणानंतरंव्यतीपातश्राद्धेक्षणइतिविप्रांतरंनिमंत्र्यविप्रचतुष्टयादियुतंपातश्राद्धेपिंडाभावात्षडर्घ्यंपिंडयुतंश्राद्धमेकेनैवपाकेनकार्यमित्यपरः प्रकारःएवंत्रिचतुरादिश्राद्धानांतंत्रेऊह्यं अत्रपक्षद्वयेविचार्ययुक्ततरपक्षःसद्भिरनुष्ठेयः ॥

अब एक दिनमें अनेक श्राद्ध प्राप्त होवैं तौ तिसका निर्णय कहताहुं.

मातापिताका मृतदिन एक होवै तौ पहले पिताका श्राद्ध, और पीछे निराला पाक करके

माताका श्राद्ध करना ऐसा पहले कहा है. घरका दहन होना आदि कारणसें सपिंड मनुष्योंको एक कालमें मरण प्राप्त होवै तौ संबंधकी समीपताके क्रमकरके श्राद्ध निराले पाकसें करने. निराला पाक करके निराले श्राद्ध करनेका सामर्थ्य नहीं होवै तौ "एकतंत्रसें पाक वनायके निराले निराले श्राद्ध करने." क्रमकरके एक दिनमें मरण होवै तौ मरणके क्रमसें श्राद्ध करने. तहां एक दिनमें एक मनुष्यनें तीन मनुष्योंके श्राद्ध नहीं करने. तीन वार्षिक श्राद्ध प्राप्त होवैं तौ दो श्राद्ध आप करके तृतीय आदि श्राद्ध भाई आदिकेद्वारा कराना, अथवा दूसरे दिनमें आप करना. मातापिताका और सपिंड पुरुषका श्राद्ध एक दिनमें प्राप्त होवै तौ तिस विषयमें निर्णय पहले कह दिया है. "एकवार जिसका श्राद्ध किया गया होवै तिसकाही पुनः श्राद्ध तिस दिनमें नहीं करना; नैमित्तिक होवै तौ करना; क्योंकी, निमित्तकी उत्पत्तिका अनुक्रम है." अर्थात् षण्णवति श्राद्धोंमें समान देवता होवैं तौ एकतंत्रसें श्राद्ध करने. अधिक देवता होवैं तौ पृथक् श्राद्ध करने. वार्षिक, मासिक, और उदकुंभश्राद्ध इन्होंमें नित्यश्राद्ध और दर्श आदिक श्राद्धोंकी देवता भिन्न होनेसें वे पृथक् करने. महालय, तीर्थश्राद्ध और दर्श आदि षण्णवति श्राद्ध इन्होंमें नित्यश्राद्धके प्रसंगकी सिद्धि होती है. मासिकश्राद्धसें उदकुंभश्राद्धकी प्रसंगसिद्धि होती है. तहां प्रसंगसिद्धिस्थलमें दर्श आदि प्रसंगिश्राद्ध निश्चयकरके संकल्पपूर्वक और अंगोंसहित करना. प्रसंगसिद्ध तौ नित्य आदि श्राद्धके संकल्प आदिमें उच्चार नहीं करना ऐसा जो लोपका दूसरा पर्याय तिसकोंही प्रसंगसिद्धि ऐसा कहते हैं. तंत्रसिद्धिमें दो प्रकार दीखते हैं.—दर्शश्राद्ध और व्यतीपातश्राद्ध एकतंत्रसें कर्तव्य होवै तौ छह पुरुषोंका उद्देश करके "**दर्शश्राद्धं व्यतीपातश्राद्धं च तंत्रेण करिष्ये,**" ऐसा संकल्प करके "**दर्शपातश्राद्धयोः देवार्थे क्षणः करणीयः**" ऐसा देवताके ब्राह्मणोंकों निमंत्रण करके "**दर्शपातश्राद्धयोः पित्राद्यर्थे क्षणः करणीयः**" इस प्रकार दो वर्गके अर्थ दो ब्राह्मण आदिकों निमंत्र णकरके एकही श्राद्ध करना, ऐसा एक प्रकार. अथवा पहलेकी तरह संकल्प करके देवतोंके अर्थ एकतंत्रसें एकही ब्राह्मणकों निमंत्रण करके षोडशमासिकश्राद्धोंके तंत्रकी तरह "**दर्शश्राद्धे क्षणः करणीयः**" इस प्रकार दर्शश्राद्धके ब्राह्मणकों निमंत्रण देके पीछे "**व्यतीपातश्राद्धे क्षणः**" ऐसा दूसरे ब्राह्मणकों निमंत्रण करके चार आदि ब्राह्मणोंसें युत, व्यतीपातश्राद्धमें पिंडदान नहीं है इसवास्ते छह अर्घ्योंसें युक्त ऐसा सपिंडक श्राद्ध एकही पाकसें करना, यह दूसरा प्रकार है. इस प्रकार तीन, चार आदि श्राद्धोंके तंत्रविषे ऐसाही प्रकार जानना. इन दो पक्षोंविषे विचार करके अत्यंत योग्य जो पक्ष होवै वह सत्पुरुषोंनें ग्रहण करना योग्य है.

मयूखेतुसपिंडकेनदर्शश्राद्धेनापिंडकस्यव्यतीपातादिश्राद्धस्यैकदेवताकस्यप्रसंगसिद्धिरेवनतंत्रसिद्धिस्तंत्रोदाहरणंतुपातसंक्रांत्यादिरित्युक्तं यत्त्वन्वष्टक्येनपितृमातृवार्षिकमासिकयोःप्रसंगसिद्धिरित्युक्तंतन्महालयेनवार्षिकसिद्ध्यापत्त्याबहुग्रंथविरुद्धं यत्रचदर्शवार्षिकश्राद्धादौदेवताभेदाच्छ्राद्धभेदस्तत्रनिमित्तानियतिश्चात्रपूर्वानुष्ठानकारणमितिवाक्यात् पूर्ववार्षिकंततोदर्शःयत्सर्वान्प्रत्येकरूप्येणैकदानप्राप्नोति तदनियतनिमित्तकंवार्षिकंमासिकंवापूर्वं कार्यमितिवाक्यार्थः वार्षिकमासिकादीनांसंपातेपितृपूर्वकत्वंसंबंधसामीप्यादिकंचानुपदमेवोक्तं दर्शमहा

लययोःसंपातेपूर्वंमहालयस्ततोदर्शः दर्शवार्षिकमहालययोःप्राप्तौपूर्ववार्षिकंततोमहालयस्ततो दर्शइतित्रयंपाकभेदेन विस्तरोमहालयप्रकरणेतथा काम्यतंत्रेणनित्यस्यश्राद्धस्यतंत्रंसिद्ध्यति॥

मयूख ग्रंथमें तौ, सपिंडक जो दर्शश्राद्ध तिसकरके अधिक, एकदेवताक ऐसे व्यतीपात आदि श्राद्धोंकी प्रसंगसिद्धिही होती है, तंत्रसिद्धि नहीं. तंत्रका उदाहरण तौ व्यतीपात संक्रांति इत्यादिक ऐसा कहा है. अन्वष्टक्यश्राद्धकरके पिताके और माताके वार्षिक और मासिक श्राद्धोंकी प्रसंगसिद्धि होती है, ऐसा जो कहा है वह महालयश्राद्धकरके वार्षिककी सिद्धि माननेसें बहुत ग्रंथोंकेसाथ विरोध आता है. जहां दर्श और वार्षिक आदि श्राद्धमें देवता भिन्न होनेसें श्राद्धभेद होता है, तहां निमित्तका अनियम इस स्थलमें पूर्वानुष्टानविषे कारण है ऐसा वाक्य है इसवास्ते पहले वार्षिकश्राद्ध करके पीछे दर्शश्राद्ध करना. सबोंकों एकरूपकरके एक कालमें जो प्राप्त होवै नहीं वह अनियतनिमित्तक ऐसा वार्षिक किंवा मासिकश्राद्ध पहले करना ऐसा वाक्यार्थ है. वार्षिक, मासिक इत्यादिक एक दिनमें प्राप्त होवैं तौ पितृपूर्वकत्व और संबंधसामीप्यादिक अनुपदही कहा है. दर्श, महालय ये श्राद्ध एक दिनमें प्राप्त होवैं तौ पहले महालय और पीछे दर्शश्राद्ध करना. दर्शदिनमें वार्षिक और महालय प्राप्त होवैं तौ पहले वार्षिक, पीछे महालय और तिसके अनंतर दर्श ऐसे तीन निराले निराले पाक करके करने. इसका विस्तार महालयप्रकरणमें कहा है. तैसेही " काम्यतंत्रसें नित्यश्राद्धका तंत्र सिद्ध होता है. "

अथसंक्रांत्ययनद्वयविषुवद्वययुगादिमन्वादिभाद्रकृष्णत्रयोदशीश्रोत्रियागमनप्रयुक्तमघाभरणीमघायुतत्रयोदशीवैधृतिव्यतीपातोपरागपुत्रोत्पत्तिनिमित्तकालभ्ययोगनिमित्तकश्राद्धानिप्रौष्ठपदीभिन्नसर्वपौर्णमासीश्राद्धानिचैतानिश्राद्धानिपिंडरहितानिसांकल्पविधिनाकार्याणिएषुदर्शवत्षट्पुरुषोद्देशःतेनैषामेककालसंपातेतंत्रेणसिद्धिःनित्यश्राद्धस्यप्रसंगसिद्धिःउपरागश्राद्धस्यभिन्नकालत्वेपृथगनुष्ठानम् उपरागश्राद्धेनसंक्रांतिदर्शादिश्राद्धानांप्रसंगसिद्धिरितिप्रथमपरिच्छेदेमतांतरमुक्तं पुत्रोत्पत्तिनिमित्तकश्राद्धस्यनवदेवताकत्वात्पृथगनुष्ठानं तच्चहेम्नैव कार्यंनत्वामेननाप्यन्नेनेति इतिश्राद्धसंपातेनिर्णयः ॥

इसके अनंतर संक्रांति, दो अयन, तुलासंक्रांति, मेषसंक्रांति, युगादि, मन्वादि, भाद्रपदकृष्ण त्रयोदशी, श्रोत्रियका आगमननिमित्तक, मघा, भरणी, मघायुक्त त्रयोदशी, वैधृति, व्यतीपात, ग्रहण, पुत्र होनेके निमित्तक, अलभ्ययोगनिमित्तक ये श्राद्ध और प्रौष्ठपदीव्यतिरिक्त सर्व पौर्णमासीश्राद्ध ये श्राद्ध पिंडरहित सांकल्पविधिसें करने. इन श्राद्धोंमें दर्शश्राद्धकी तरह छह पुरुषोंका उच्चार करना, इसकरके इन्होंकी एककालमें प्राप्ति होवै तौ तंत्रसें सिद्धि होती है. नित्यश्राद्धकी प्रसंगसिद्धि करनी. ग्रहणश्राद्ध, भिन्न कालमें होवै तौ पृथक् करना. ग्रहणश्राद्धसें संक्रांति, दर्श इत्यादिक श्राद्धोंकी प्रसंगसिद्धि होती है ऐसा प्रथमपरिच्छेदमें दूसरा मत कहा है. पुत्रोत्पत्तिनिमित्तक श्राद्धकी नव देवता हैं इसलिये वह पृथक् करना, और वह श्राद्ध सोनासेंही करना, आमान्नसें नहीं करना अथवा अन्नसें नहीं करना. इस प्रकार श्राद्धसंपातका निर्णय कहा.

अथतिलतर्पणं तच्चयच्छ्राद्धेयावंतःपितरस्तर्पितास्तावत्पितृगणोद्देशेनतच्छ्राद्धांगत्वेनतिलै

स्तर्पणंकार्यम् तत्रकालनियमः पूर्वंतिलोदकंदर्शेप्रत्यब्देतुपरेहनीत्यादि तदयंनिष्कर्षः दर्शश्राद्धेश्राद्धात्पूर्वंश्राद्धांगतिलतर्पणं तत्रविप्रनिमंत्रणोत्तरंपाकारंभोत्तरंवाब्रह्मयज्ञकरणेब्रह्मयज्ञांगनित्यतर्पणेनैवदर्शांगतिलतर्पणस्यसिद्धिः ततःपूर्ववैश्वदेवोत्तरंवाब्रह्मयज्ञकरणेश्राद्धीयषट्पुरुषोद्देशेनश्राद्धांगतर्पणंकृत्वाश्राद्धारंभःकार्यः प्रत्याहिकंपितृतर्पणंतुब्रह्मयज्ञकालेकार्यम् एवंयुगादिमन्वादिसंक्रांतिपौर्णमासीवैधृतिव्यतीपातश्राद्धेषुदर्शवत्पूर्वमेव तीर्थश्राद्धेसर्वपित्रुद्देशेनपूर्वंवार्षिकश्राद्धेपरेद्युरेवश्राद्धीयदेवतात्रयोद्देशेन वार्षिकश्राद्धदिनेनित्यतर्पणंतिलैर्नकार्यम् सकृन्महालयेसर्वपित्रुद्देशेनपरेद्युरेव अन्येषुमहालयपक्षेष्वष्टकान्वष्टकापूर्वेद्युःश्राद्धेषु माध्यावर्षार्धोदयगजच्छायाषष्ठीभरणीमघाश्राद्धेषुहिरण्यश्राद्धेचानुव्रज्यतर्पणंश्राद्धीयदेवतोद्देशेनश्राद्धसंपातेतुयदितत्प्रसंगसिद्धिस्तदातदीयमेवतर्पणं तंत्रत्वेतुपूर्वतर्पणवतांपश्चात्तर्पणवतां चश्राद्धानांसमसंख्यत्वेआदावंतेवातर्पणं विषमसंख्यत्वेबह्वनुरोधेन संक्रांतिषुग्रहणेपित्रोःश्राद्धेदर्शेव्यतीपातेपितृव्यादिश्राद्धेमहालयेचनिषिद्धेपिदिनेश्राद्धांगतिलतर्पणंकार्यमितिकेचित् अन्येतु सर्वत्रश्राद्धांगतर्पणेकोपितिथ्यादिनिषेधोनेत्याहुः ॥

अब तिलतर्पणका निर्णय कहताहुं.

वह तिलतर्पण जिस श्राद्धमें जितने पितर तृप्त हुये हैं, तिन पितृगणोंके उद्देशसें तिस श्राद्धांगत्वकरके तिलोंसें तर्पण करना. तहां कालका नियम—दर्शश्राद्धमें पहले, प्रतिसांवत्सरिक श्राद्धमें दूसरे दिनविषे इत्यादि. तिसका यह तात्पर्य—दर्शश्राद्धमें श्राद्धके पहले श्राद्धांगतिलतर्पण करना. तहां ब्राह्मणकों निमंत्रण किये पीछे अथवा पाककों आरंभ किये पीछे ब्रह्मयज्ञ कर्तव्य होवै तौ ब्रह्मयज्ञके अंगभूत नित्यतर्पणसेंही दर्शश्राद्धके अंगभूत तिलतर्पणकी सिद्धि होती है. ब्राह्मणोंकों निमंत्रण करनेके पहले अथवा वैश्वदेवके अनंतर ब्रह्मयज्ञ कर्तव्य होवै तौ श्राद्धसंबंधी छह पुरुषोंके उद्देशकरके श्राद्धांगतर्पण करके श्राद्धका आरंभ करना. प्रतिदिन पितृतर्पण करना होवै तौ ब्रह्मयज्ञके समयमें करना. इस प्रकार युगादि, मन्वादि, संक्रांति, पौर्णमासी, वैधृति और व्यतीपात—एतन्निमित्तक श्राद्धमें दर्शश्राद्धकी तरह पहलेही करना. तीर्थश्राद्धमें सब पितरोंके उद्देशसें पहले करना. वार्षिकश्राद्धके दिनमें नित्यतर्पण तिलोंसें नहीं करना. सकृन्महालयमें सब पितरोंके उद्देशसें दूसरे दिनमेंही करना. इतर महालयपक्ष, अष्टका, अन्वष्टका, पूर्वेद्युःश्राद्ध, माध्यावर्ष, अर्धोदय, गजच्छाया, षष्ठी, भरणी, मघा ये श्राद्ध; और हिरण्यश्राद्ध इन्होंमें श्राद्धीय देवतोंके उद्देशसें श्राद्धके अनंतर तिसी कालमें तर्पण करना. एक दिनमें दो तीन श्राद्ध प्राप्त होवैं और जो तिन श्राद्धोंकी प्रसंगसिद्धि होवै तब वहही तर्पण करना. तंत्र करना होवै तौ पूर्वतर्पणयुक्त और पश्चात्तर्पणयुक्त ऐसे श्राद्धोंकी समसंख्या होनेमें पहले किंवा अंतमें तर्पण करना. विषम संख्या होवै तौ पूर्वतर्पणयुक्त और पश्चात्तर्पणयुक्त ऐसे श्राद्धोंमें जिनकी संख्या अधिक होवै तिसके अनुसार पहले किंवा अंतमें करना. संक्रांति, ग्रहण, मातापिताका श्राद्ध, दर्श, व्यतीपात, पितृव्यादिकश्राद्ध और महालय इन्होंमें, निषिद्ध दिन होवै तौभी श्राद्धांग तिलतर्पण करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. दूसरे ग्रंथकार तौ सब जगह श्राद्धांग तिलतर्पणविषे तिथि आदिकोंका निषेध नहीं है ऐसा कहते हैं.

अथश्राद्धांगतर्पणनिषेधः वृद्धिश्राद्धेसपिंड्यांचप्रेतश्राद्धेनुमासिके संवत्सरविमोकेच नकुर्यात्तिलतर्पणम् तत्रतर्पणप्रकारः परेहनितर्पणेस्नात्वातर्पणंकृत्वानित्यस्नानंप्रातःसंध्यांच कुर्यात् यद्वानित्यस्नानप्रातःसंध्योत्तरंश्राद्धांगतर्पणंसंबंधनामगोत्ररूपाणिद्वितीयांतान्युच्चार्य स्वधानमस्तर्पयामीतिबह्वृचैर्दक्षिणहस्तेनान्यदंजलिनात्रिस्त्रिस्तर्पयेत् प्रत्यंजलिंमंत्रावृत्तिः एवं नित्यतर्पणेपिज्ञेयम् ॥

अब श्राद्धांगतर्पणका निषेध कहताहुं.

वृद्धिश्राद्ध, सपिंडी, प्रेतश्राद्ध, अनुमासिक और अब्दपूर्ति इन्होंमें तिलोंसें तर्पण नहीं करना. तहां तर्पणका प्रकार—दूसरे दिनमें तर्पण कर्तव्य होवै तौ स्नान करके तर्पण करके नित्यस्नान और प्रातःसंध्या ये करने. अथवा नित्यस्नान और प्रातःसंध्या ये किये पीछे श्राद्धांगतर्पण करना. सो ऐसा—संबंध, नाम, गोत्र और रूप इन्होंका द्वितीयाविभक्त्यंत उच्चार करके “ स्वधानमस्तर्पयामि ” ऐसा कहके ऋग्वेदियोंनें दाहिने हाथसें और अन्य शाखियोंनें अंजलिसें तीन तीन वार तर्पण करना. प्रत्येक अंजलीकों मंत्रकी आवृत्ति करनी, और नित्यतर्पणविषेभी ऐसाही निर्णय जानना.

अथब्रह्मयज्ञांगेनित्यतर्पणेतिलयुक्ततर्पणनिषेधकालः रविभौमभृगुवारेषुप्रतिपत्षष्ठ्येकादशीसप्तमीत्रयोदशीषुभरणीकृत्तिकामघासुनिशिसंध्यासु गृहेजन्मनक्षत्रेशुभकार्यदिनेऽन्यदीयेशोभनयुतगृहेमन्वादिषुयुगादिषुगजच्छायायामयनद्वयेच तिलतर्पणंमृदास्नानंपिंडदानंचनकार्यं केचिदयनद्वयेयुगादिमन्वादिषुतिलतर्पणंनदोषायेत्याहुः विवाहव्रतचूडासुवर्षमर्धंतदर्धकमन्यत्रसंस्कारेमासंमासार्धंवातिलतर्पणादिकं महालयगयाक्षयाहश्राद्धंविनानकार्यमित्युक्तं अत्रनिषिद्धदिनेतिलालाभेवाहेमरौप्ययुतहस्तेनदर्भयुतहस्तेनवानित्यतर्पणंकार्यं ॥

अब ब्रह्मयज्ञका अंगभूत जो नित्यतर्पण तिसविषे तिलयुक्त तर्पणके निषेधका काल कहताहुं.—रविवार, मंगलवार, शुक्रवार, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी, सप्तमी, त्रयोदशी, भरणी, कृत्तिका, मघा, रात्रि, संधिकाल, गृह, जन्मनक्षत्र, शुभकार्यका दिन, शुभकार्यसें युक्त परकीय गृह, मन्वादितिथि, युगादितिथि, गजच्छाया और दोनों अयनदिन इन्होंमें तिलतर्पण, मृत्तिकास्नान और पिंडदान ये नहीं करने. कितनेक ग्रंथकार दो अयनदिन, युगादि, मन्वादि इन दिनोंमें तिलतर्पण करनेमें दोष नहीं है ऐसा कहते हैं. “ विवाह, यज्ञोपवीतसंस्कार, और चौल ये हुए होवैं तौ क्रमकरके एक वर्ष; छह महीने; तीन महीनेपर्यंत और अन्य संस्कारोंमें एक महीना किंवा आधा महीनापर्यंत तिलतर्पण आदि महालय, गयाश्राद्ध, और क्षयदिनश्राद्ध इन्होंके विना करना नहीं ऐसा कहा है. ” यहां निषिद्धदिनमें अथवा तिलोंका अभाव होनेमें सोना और चांदीसें युक्त हाथसें अथवा डाभसें युक्त हाथसें नित्यतर्पण करना.

अथतिथ्यादिनिषेधापवादः तीर्थेतिथिविशेषेचगयायांप्रेतपक्षके निषिद्धेपिदिनेकुर्यात्तर्पणंतिलमिश्रितमिति तिथिविशेषोष्टकादिरितिमयूखे अत्रकातीयानांकेषांचिद्वार्षिकादौपरेहनिभरण्यादौविसर्जनांतेचश्राद्धांगतर्पणाचारोनदृश्यतेतत्रमूलंमृग्यं क्षयाहश्राद्धदिनेनित्यतर्पणेतिलग्रहणंतुबहुग्रंथविरुद्धं ॥

अब तिथि आदिके निषेधका अपवाद कहताहूं.—"तीर्थ, तिथिविशेष, गयाश्राद्ध, और प्रेतपक्ष इन्होंमें जो निषिद्ध दिन होंवै तथापि तिलतर्पण करना." तिथिविशेष अर्थात् अष्टकादि तिथि ऐसा **मयूख** ग्रंथमें कहा है. इस विषयमें कितनेक कात्यायनोंका, वार्षिक आदि श्राद्धमें दूसरे दिनमें और भरणी आदि श्राद्धोंमें विसर्जनके अनंतर श्राद्धांगतर्पणका आचार नहीं दीखता है, तहां मूल चितवन करना योग्य है. क्षयाहश्राद्धके दिनमें नित्यतर्पणविषे तिलोंकों ग्रहण करना बहुत ग्रंथोंमें विरुद्ध कहा है.

अथनांदीश्राद्धेयद्वक्तव्यंतत्पूर्वार्धेप्रपंचितम् एतच्चोपनयनादिमहाकर्मसुपूर्वेद्युःकार्यं जातकर्माद्यल्पकर्मसुतदहरेव तत्रदेशकालौसंकीर्त्यसत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवानांदीमुखामातृपितामहीप्रपितामह्योनांदीमुख्यः पितृपितामहप्रपितामहानांदीमु० मातामहमातुः० पत्नीसहितानांदी० एतानुद्दिश्यपार्वणविधानेनसपिंडंनांदीश्राद्धंकरिष्येइतिसंकल्पः अर्घ्यकालेनवैवपात्राण्यासाद्यतेषुद्वौद्वौकुशौनिधाययवोसिसोमदैवत्यइतिपूर्वोक्तोहेनयवानोप्योशंतस्त्वेति द्वयोर्द्वयोरावाह्यामुकविश्वेदेवाः प्रीयंतांनांदीमुखामातरःप्रीयंतांनांदीमुखाःपितामह्यःप्रीयंतामित्यादिनायथालिंगंपात्राणिपुरतोन्यसेत् नांदीमुखामातरइदंवोर्घ्यमित्यादिनायथालिंगंद्वाभ्यामर्घ्यपात्रंविभज्यदेयं द्विर्द्विर्गंधदानं चतुर्थ्यंतानुद्दिश्यस्वाहाहव्यंनममेत्यादिदेववदन्नदानं पिंडदानकालेनांदीमुखाभ्योमातृभ्यःस्वाहा नांदीमुखाभ्यःपितामहीभ्यःस्वाहेत्येवंप्रत्येकंद्वौद्वावित्यष्टादशपिंडान्दद्यात् अत्रानुमंत्रणंकृताकृतं एवंसर्वंपित्र्यमपिसव्यादिनादैवधर्मेणैवकार्यमित्यादिसर्वंपूर्वार्धतोज्ञेयं तत्रानुक्तोविशेषएवात्रोक्तः ॥

इसके अनंतर नांदीश्राद्धमें जो कहना योग्य है सो पूर्वार्धमें कह दिया है. यह नांदीश्राद्ध यज्ञोपवीत आदि महत्कार्योंमें पूर्वदिनविषे करना. जातकर्म आदि अल्प कार्योंमें तिसही दिनविषे करना. तहां देश और कालका उच्चार करके "**सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नांदीमुखाः मातृपितामहीप्रपितामह्यो नांदीमुख्यः पितृपितामहप्रपितामहानांदीमु० मातामहमातुः० पत्नीसहिता नांदी० एतानुद्दिश्य पार्वणविधानेन सपिंडं नांदीश्राद्धं करिष्ये**" इस प्रकारसें संकल्प जानना. अर्घ्यकालमें नवही पात्र स्थापित करके तिन पात्रोंपर दो दो कुश धरके "**यवोसि सोमदैवत्य०**" ऐसा पूर्व कहे विचारसें तिन पात्रोंपर जव डालके "**उशंतस्त्वा०**" इस मंत्रसें दोदोओंका आवाहन करके "**अमुकविश्वेदेवाः प्रीयंतां नांदीमुखा मातरः प्रीयंतां नांदीमुखाः पितामह्यः प्रीयंताम्**" इत्यादिक वाक्यसें जैसा लिंग हीवै तिसके अनुसार पात्रोंकों आगे स्थापित करना. पीछे "**नांदीमुखा मातरइदंवोर्घ्यं**" इत्यादिक वाक्यसें जैसा लिंग होवै तिसके अनुसार दोनोंकों अर्घ्यपात्रका विभाग करके दान करना, दो दोवार गंध देना. चतुर्थीविभक्त्यंत उद्देश करके "**स्वाहाहव्यं नमम**" इत्याहिक प्रकारसें देवतोंकी तरह अन्नदान करना. पिंडदानकालमें **नांदीमुखाभ्यो मातृभ्यः स्वाहा, नांदीमुखाभ्यः पितामहीभ्यः स्वाहा**". इस प्रकार प्रत्येककों दो दो पिंड ऐसे अठारह पिंड देने. यहां अनुमंत्रण करना अथवा नहीं करना. इस प्रकार सब पितृकर्म सव्य आदिसें और दैवधर्मकरकेही करना. इत्यादि सब प्रकार पूर्वार्धमें जानना. पूर्वार्धमें नहीं कहा विशेष प्रकार मात्र यहां कहा है.

अथविभक्ताविभक्तनिर्णयः तत्रजीवत्पितृकनिर्णयेश्राद्धाधिकारिनिर्णयेचप्रायेणोक्तम् विशेषस्तूच्यते विभक्तधनानांभ्रात्रादीनांसर्वेधर्माःपृथगेव सपिंड्यंतप्रेतकर्मषोडशमासिकानिचैकस्यैवेत्यादितुप्रागुक्तं अविभक्तानांतुधननिरपेक्षाणिस्नानसंध्याब्रह्मयज्ञमंत्रजपोपवासपारायणादीनिनित्यनैमित्तिककाम्यानिपृथगेव अग्निसाध्यंश्रौतस्मार्तनित्यकर्मापिपृथगेव पितृपाकोपजीवीस्याद्भ्रातृपाकोपजीविकइतिपक्षांतरंकात्यायनादिपरं पंचमहायज्ञमध्येदेवभूतपितृमनुष्ययज्ञाज्येष्ठस्यैव पाकभेदेआश्वलायनानांवैश्वदेवभेदोविकल्पेन ज्येष्ठेनकृतेवैश्वदेवेकानिष्ठस्य पाकसिद्धौतेनतूष्णींकिंचिदन्नमग्नौक्षिप्त्वाविप्रायदत्वा भोक्तव्यमितिकेचित् देवपूजातुपृथगेकत्रवा प्रतिवार्षिकदर्शसंक्रांतिग्रहणादिश्राद्धानिज्येष्ठस्यैव तीर्थश्राद्धाद्यपियुगपत्सर्वेषामविभक्तानांप्राप्तावेकस्यैव भेदेनप्राप्तौभिन्नं एवंगयाश्राद्धेपियोज्यम् काम्येदानहोमादौद्रव्यसाध्ये भ्रात्राद्यनुमत्याधिकारः मघात्रयोदशीश्राद्धंपृथगेवेत्युक्तम् ॥

अब विभक्त और अविभक्तोंका निर्णय कहताहुं.

तहां जीवत्पितृकनिर्णयप्रसंगमें और श्राद्धाधिकारिनिर्णयप्रसंगमें बहुत प्रकारसें कहा है. तिससें विशेष मात्र अब कहा जाता है—विभक्त हुए धनवाले भाई आदिकोंके सब धर्म पृथक्ही हैं. सपिंडीपर्यंत प्रेतकर्म, षोडशमासिक ये एकनेंही करने इत्यादिक तौ पहलेही कह दिया है. नहीं विभागकों प्राप्त हुये भाईयोंनें तौ धनकी अपेक्षा जिसमें नहीं ऐसे स्नान, संध्या, ब्रह्मयज्ञ, मंत्रजप, उवास, पारायण इत्यादिक जो नित्य, नैमित्तिक और काम्य कर्म हैं वे पृथक् पृथक्ही करने. अग्निसाध्य ऐसा जो श्रौत और स्मार्तकर्म है, वहभी पृथक्ही करना. “पितृपाकसें उपजीविका करनेवाला और भ्रातृपाकसें उपजीविका करनेवाला,” इत्यादिक दूसरा पक्ष कहा है, सो कात्यायन आदिविषयक जानना. पंचमहायज्ञोंमें देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ, और मनुष्ययज्ञ ये यज्ञ बडे भाईकोंही हैं. पाक निराला होवै तौ आश्वलायनशाखियोंनें पृथक् वैश्वदेव करना अथवा नहीं करना. बडे भाईनें वैश्वदेव कर लिया होवै और छोटे भाईका पाक सिद्ध होवै तब तिस छोटे भाईनें मंत्रसें रहित अल्प अन्नका त्याग अग्निमें करके ब्राह्मणोंकों अन्न देके भोजन करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. देवपूजा करनी होवै तौ निराली किंवा एकत्र करनी. प्रतिसांवत्सरिक, दर्श, संक्रांति, ग्रहण इत्यादिक श्राद्ध बडे भाईनें करने. नहीं विभागकों प्राप्त हुये भाई एककालमें तीर्थपर प्राप्त होके तीर्थश्राद्ध आदि करना होवै तौ एक भाईनेंही करना. पृथक् पृथक् तीर्थपर प्राप्त होवैं तौ पृथक् पृथक् करना. ऐसीही गयाश्राद्धमेंभी योजना करनी. द्रव्यसें साध्य ऐसे जो दान, होम आदि काम्यकर्म हैं तिन्हौंकेविषे भाई आदिकोंकी अनुमतिसें छोटे भाईकों अधिकार है. मघायुक्त त्रयोदशीश्राद्ध निरालाही करना ऐसा कहा है.

अथतीर्थश्राद्धम् तत्रगंगादितीर्थप्राप्तावर्घ्यावाहनद्विजांगुष्ठनिवेशनतृप्तिप्रश्नविकिरविसर्जनदिग्बंधवर्ज्यंसकृन्महालयवत्सर्वपितृगणोद्देशेनधूरिलोचनसंज्ञकविश्वेदेवसहितंतीर्थश्राद्धंकुर्यात् अग्नौकरणंकृताकृतं करणपक्षेतीर्थजलसमीपेश्राद्धंचेत्तदाप्राकृतमंत्रयुतंतीर्थजलेकार्यम् अन्यथाहस्तादौ पिंडानांतीर्थेप्रक्षेपएवप्रतिपत्तिः अत्रतीर्थवासिनएवविप्राविगुणाअपिमुख्याः

तदभावेन्ये अत्रश्राद्धीयेदेशेन्नादिद्रव्येचकाकश्वादिभिर्दृष्टेपिनदोषः तीर्थश्राद्धांगतर्पणंदर्शवत्पूर्वकार्यम् देशकालौसंकीर्त्यसर्वपितृगणमुच्चार्यएतेषाममुकतीर्थप्राप्तिनिमित्तकंतीर्थश्राद्धंसपिंडंसदैवंसद्यःकरिष्येइतिसंकल्पः धूरिलोचनविश्वेदेवादिसर्वंसकृन्महालयवत् तीर्थयात्रायांसाग्नेःसपत्नीकस्यैवाधिकारःनिरग्निकस्यत्वपत्नीकस्यापि स्त्रियाःस्नानदानतीर्थयात्रानामस्मरणादिकंपुत्राद्यनुमत्यैव सधवायायात्रादिकंपत्यासहैव ॥

अब तीर्थश्राद्ध कहताहुं.

तहां गंगा आदि तीर्थोंकी प्राप्ति होवै तौ अर्घ्य, आवाहन, ब्राह्मणके अंगूठेका निवेशन, तृप्तिप्रश्न, विकिर, विसर्जन, दिग्बंध इन्होंकों वर्जित करके सकृन्महालयकी तरह सब पितृगणोंके उद्देशसें धूरिलोचनसंज्ञक विश्वेदेवोंसहित तीर्थश्राद्ध करना. अग्नौकरण करना अथवा नहीं करना. अग्नौकरण करना इस पक्षमें तीर्थके जलके समीप श्राद्ध करना होवै तौ प्राकृतमंत्रयुक्त तीर्थके जलमें करना. तैसा नहीं हो सकै तौ ब्राह्मणोंके हाथ आदिपर करना. पिंड तीर्थमें छोडने ऐसा निर्णय कहा है. इस तीर्थश्राद्धविषे तीर्थवासी ब्राह्मण गुणोंसें हीन होवैं तबभी वेही प्रधान कहे हैं. वे ब्राह्मण नहीं मिलैं तौ दूसरे ब्राह्मणोंकों निमंत्रण करने. इस तीर्थश्राद्धविषे श्राद्धभूमि और श्राद्धसंबंधी अन्न इन्होंपर काक और कुत्ता आदिकी दृष्टि पडै तौभी दोष नहीं है. तीर्थश्राद्धांगतर्पण करना होवै तौ दर्शश्राद्धकी तरह पहले करना. देशकालका संकीर्तन करके सब पितृगणोंका उच्चार करके "एतेषाममुकतीर्थप्राप्तिनिमित्तकं तीर्थश्राद्धं सपिंडं सदैवं सद्यः करिष्ये" इस प्रकार संकल्प करना. धूरिलोचन विश्वेदेवादि सब कृत्य सकृन्महालयकी तरह करना. साग्निक सपत्नीक मनुष्यकोंही तीर्थयात्राविषे अधिकार कहा है. निरग्निक होवै तौ अपत्नीक पुरुषकोंभी अधिकार कहा है. स्त्रीनें स्नान, दान, तीर्थयात्रा, नामस्मरण इत्यादिक करना होवै तौ पुत्र आदिकी अनुमतिसेंही करना. सुहागन स्त्रीनें यात्रादिक पतिके साथही करना.

अथतीर्थयात्राविधिः तीर्थयात्रांचिकीर्षुःप्राग्विधायोपोषणंगृहे पारणाहेघृतश्राद्धंवृद्धिधर्मयुतंचरेत् तथाचषट्दैवतंनवदैवतंवाद्वादशदैवतंवाबाहुसर्पिर्युतेनान्नेनश्राद्धंकुर्यात् निवेदनकालेइदंघृतंसान्नंदत्तंदास्यमानंचेत्यादिवदेत् गणेशंविप्रान्साधूंश्चशक्त्यासंपूज्ययात्रासंकल्पंकृत्वाश्राद्धशेषेणपारणांकृत्वाव्रजेदितिकेचित् अन्येतुश्राद्धांतेयात्रासंकल्पंकृत्वाश्राद्धशेषंघृतमात्रमादायग्रामांतरंक्रोशन्यूनंगत्वातत्रश्राद्धशेषघृतसहितान्नांतरेणपारणामित्याहुः श्रीपरमेश्वरप्रीतिकामः पितृमुक्तिकामोवाऽमुकप्रायश्चित्तार्थंवातीर्थयात्रांकरिष्येइतियात्रासंकल्पऊहः उपवासात्पूर्वंमुंडनंकार्यमितिकेचित् अन्येतुप्रायश्चित्तार्थंयात्रायामेवमुंडनमित्याहुः एवंगयोद्देश्यकयात्रायामपिमुंडनविकल्पः उद्यतस्तुगयांगंतुंश्राद्धंकृत्वाघृताधिकं विधायकार्पटीवेषंग्रामंकृत्वाप्रदक्षिणं ततःप्रतिदिनंगच्छेत्प्रतिग्रहविवर्जितः यश्चान्यंकारयेच्छ्रद्धयातीर्थयात्रांनरेश्वरः स्वकीयद्रव्ययानाभ्यांतस्यपुण्यंचतुर्गुणं यात्रामध्येआशौचेरजोदोषेवाशुद्धिपर्यंतंस्थित्वातदंतेगच्छेत् विषममार्गेतुनदोषः ॥

अब तीर्थयात्राका विधि कहताहुं.

तीर्थयात्रा करनेकी इच्छावालेनें पहले घरमें उपोषण करके पारणाके दिनमें वृद्धिश्राद्धके धर्मसें युक्त घृतश्राद्ध करना. सो ऐसा—षट्दैवत, नवदैवत अथवा द्वादशदैवत और बहुत घृतसें युक्त ऐसे अन्नकरके श्राद्ध करना. अन्ननिवेदनकालमें "**इदं घृतं सान्नं दत्तं दास्यमानं च**" इत्यादिक वाक्य कहना[1]. गणेश, ब्राह्मण, साधु इन्होंकी यथाशक्ति पूजा करके, यात्राका संकल्प करके और श्राद्धशेषसें पारणा करके गमन करना. ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. दूसरे ग्रंथकार तौ श्राद्ध किये पीछे यात्राका संकल्प करके श्राद्धशेष घृतमात्र ग्रहण करके एक कोससें कम ऐसे दूसरे गाममें जाके तहां श्राद्धशेष घृतसहित दूसरे अन्नसें पारणा करनी ऐसा कहते हैं. "**श्रीपरमेश्वरप्रीतिकामः पितृमुक्तिकामो वा अमुकप्रायश्चित्तार्थं वा तीर्थयात्रां करिष्ये**" ऐसा यात्राके संकल्पमें विचार करना. उपवासके पहले मुंडन कराना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. दूसरे ग्रंथकार तौ प्रायश्चित्तके अर्थ जो यात्रा तिसविषे मुंडन कराना ऐसा कहते हैं. इस प्रकार गयाजीके उद्देशसें जो यात्रा तिसविषेभी मुंडन कराना अथवा नहीं कराना. "गयाजीमें जानेकों उद्युक्त, हुए मनुष्यनें घृतप्रचुर श्राद्ध करके कार्पटीवेष अर्थात् तीर्थाटन करनेवालेका वेष धारण करके अपने गामकों परिक्रमा करके तदनंतर प्रतिग्रहसें वर्जित होके प्रतिदिनमें प्रयाण करना. जो राजा अपनी शक्तिके अनुसार द्रव्यसें और वाहन अर्थात् सवारीसें दूसरेसें यात्रा कराता है तिसकों चौगुना पुण्य प्राप्त होता है. यात्रामें आशौच अथवा रजोदोष प्राप्त होवै तौ तिसकी शुद्धिपर्यंत रहके तदनंतर प्रयाण करना. भयप्रद मार्ग होवै तौ दोष नहीं है.

संकल्पितयात्रामध्येतीर्थांतरप्राप्तौश्राद्धादिकंकार्यमेव वाणिज्यार्थंगतेनापिमुंडनोपवासादिकंकार्यं कार्यांतरप्रसंगेनतीर्थगमनेर्धंफलं वाणिज्यार्थंगमनेपादफलं मार्गेद्विर्भोजनादिकरणेछत्रोपानहसेवनेचपादोनं यानमारुह्यगमनेर्धं अनुषंगेणतीर्थप्राप्तौतीर्थस्नानात्स्नानजंफलंन तीर्थयात्राफलं मार्गेंतरानदीप्राप्तौस्नानादिपरपारतः अर्वागेवसरस्वत्याएषमार्गगतोविधिः ॥

जिस यात्राका संकल्प किया होवै तिस यात्राकों जाते हुये मार्गमें अन्य तीर्थ प्राप्त होवै तौ श्राद्ध आदि अवश्य करना. व्यापारके अर्थ तीर्थमें गमन करते हुयेनेंभी मुंडन और उपवास आदि करना. अन्य कार्यके प्रसंगसें तीर्थ प्राप्त होवै तौ आधा फल मिलता है. व्यापारके अर्थ गमन करनेमें तीर्थ प्राप्त होवै तौ चौथाई फल मिलता है. मार्गमें दोवार भोजन आदि करनेमें और छत्री, जूतीजोडा इन्होंके सेवनेमें चौथाईसेंभी कम फल मिलता है. सवारीपर स्थित होके प्रयाण करनेमें आधा फल मिलता है. दूसरेके अनुषंगसें तीर्थ प्राप्त होवै तौ तीर्थके स्नानसें स्नानसंबंधी फल मिलता है. तीर्थयात्राका फल नहीं मिलता है. "मार्गमें नदी प्राप्त होवै तौ नदीके परले तीरपर स्नान आदि करना. सरस्वती नदीके पूर्वले तीरपर स्नान आदि करना. यह मार्ग अर्थात् राश्तासंबंधी विधि जानना.

---

[1] यह श्राद्ध यात्रा करके घरकों आये पीछेभी करना. इसविषे त्रिस्थलीसेतुमें कहा है:—"घरकों आके पितरोंका पूजन करमा, तिस्सें यथोक्त फलभागी होता है." तीर्थयात्रा करके घरकों आये मनुष्यनें पुनः वह श्राद्ध करना ऐसा अर्थ है.

तीर्थसामीप्यप्राप्तौविधिः यानानितुपरित्यज्यभाव्यंपादचरैर्नरैः भक्त्याचविलुठेत्तत्रकुर्याद्वेषंचकार्पटं तीर्थप्राप्तिपूर्वदिनेतीर्थप्राप्तिदिनेवोपवासःकार्यः तीर्थेमुसलस्नानंकृत्वोदङ्मुखः प्राङ्मुखोवाकेशश्मश्रुनखलोमान्युदक्संस्थानिवापयेत् ततःसमंत्रकंस्नानं तत्रप्रणवेनजलमालोड्यतीर्थमावाह्य ॐनमोस्तुदेवदेवायशितिकंठायदंडिने रुद्रायचापहस्तायचक्रिणेवेधसेनमः सरस्वतीचसावित्रीवेदमातागरीयसी सन्निधात्रीभवत्वत्रतीर्थेपापप्रणाशिनीतिमंत्रेणस्नायात् शेषःस्नानविधिर्नित्यवत् ततस्तर्पणादितीर्थश्राद्धं श्राद्धोत्तरदिनेततोगमनं नश्राद्धदिने मुंडनंचोपवासश्चसर्वतीर्थेष्वयंविधिः वर्जयित्वाकुरुक्षेत्रंविशालंविरजंगयाम् सर्वतीर्थेष्वितिप्रसिद्धमहातीर्थेष्वित्यर्थः दशमासोत्तरंपुनस्तीर्थप्राप्तौमुंडनादितीर्थविधिः प्रयागेतुयोजनत्रयादागतस्यदशमासादर्वागपि प्रयागेजीवत्पितृकगुर्विणीपतिकृतचूडबालानामपिसभर्तृकस्त्रीणामपिप्रथमयात्रायांवपनं केचित्सभर्तृकस्त्रीणांसर्वान्केशान्समुद्धृत्यछेदयेदंगुलद्वयमित्याहुः तत्रवेणीदानविधिर्द्वितीयपरिच्छेदेउक्तः यतिभिस्तुतीर्थेप्यृतुसंधिष्वेवकक्षोपस्थवर्जं वपनंकार्यं तीर्थप्राप्तावविलंबेनस्नानपितृतर्पणश्राद्धादिकुर्यात् नपर्वादिकालंविचारयेत् आकस्मिकमहातीर्थप्राप्तौद्वित्रिदिनादिवासासंभवेभुक्तेनापिरात्रावपिसूतकिनापिग्रहणपर्वणीव स्नानंहिरण्यादिनातीर्थश्राद्धंचकार्यं एवंमलमासेपियोज्यं ॥

तीर्थका सान्निध्य प्राप्त होनेमें कर्तव्य विधि कहताहुं.—"सवारीका त्याग करके मनुष्योंनें पादचारी होके और भक्तिसें तिस पृथिवीपर लोटना. तीर्थयात्रा करनेवालेका वेष धारण करना." तीर्थकी प्राप्तिके पहले दिनमें अथवा तिसी दिनमें उपवास करना. पीछे तीर्थमें मुसलस्नान अर्थात् विधि और मंत्रसें रहित स्नान करके उत्तरके तर्फ मुखवाला अथवा पूर्वके तर्फ मुखवाला होके बाल, डाढी, मूंछ, रोम, नख इन्होंका उदक्संस्थ वपन कराना. पीछे समंत्रक स्नान करना. तिस कालमें प्रणवमंत्रसें जलकों आलोडित करके तीर्थका आवाहन करके "**ॐनमोस्तु देवदेवाय शितिकंठाय दंडिने ॥ रुद्राय चापहस्ताय चक्रिणे वेधसे नमः ॥ सरस्वती च सावित्री देवमाता गरीयसी ॥ सन्निधात्री भवत्वत्र तीर्थे पापप्रणाशिनि**" इस मंत्रसें स्नान करना. शेष स्नानविधि नित्यस्नानकी तरह करना. तदनंतर तर्पण आदि तीर्थश्राद्ध करना. श्राद्धके दूसरे दिनमें तहांसें प्रयाण करना. श्राद्धके दिनमें नहीं करना. मुंडन और उपवास करना यह विधि कुरुक्षेत्र, विशाल, विरज और गया इन्होंकों वर्जित करके सब तीर्थोंमें है. सब तीर्थ इस पदकरके प्रसिद्ध महातीर्थ ग्रहण किये जाते हैं ऐसा अर्थ है. दश महीनोंके अनंतर फिर तीर्थ प्राप्त होवै तौ मुंडन आदि तीर्थविधि करना. प्रयागविषे तौ बारह कोशसें आये मनुष्यनें दश महीनोंके पहलेभी मुंडन आदि कराना. जीवता हुआ पितावाला, गर्भिणीपति, चौलसंस्कारवाला बालक, और सौभाग्यवती स्त्री इन्होंकोंभी प्रयागविषे प्रथमयात्रामें मुंडन कहा है. सुहागन स्त्रियोंनें "संपूर्ण बालोंका उद्धार करके दो अंगुल छेदित करने" ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. प्रयागविषे वेणीदान करनेका विधि दूसरे परिच्छेदमें कहा है. संन्यासियोंनें तौ तीर्थोंविषेभी ऋतुके संधिकालमेंही काख और लिंग आदिकों वर्जित करके मुंडन कराना. तीर्थकी प्राप्तिमें शीघ्रतासें स्नान, पितृतर्पण और श्राद्ध आदिक करने. पर्व आदि कालका विचार नहीं करना.

अकस्मात् महातीर्थ प्राप्त होवै और दोतीन दिन वास नहीं हो सकै तब भोजन किये हुए मनुष्यनें, रात्रिसमयमें, अथवा आशौचीनेंभी ग्रहणसंबंधी पर्वकी तरह स्नान और सोना आदिसें तीर्थश्राद्ध करना. ऐसीही मलमासमेंभी योजना करनी.

अथपरार्थस्नानं मातरंपितरंजायांभ्रातरंसुहृदंगुरुं तीर्थेस्नायाद्यमुद्दिश्यसोष्टमांशंलभेन्नरः यद्वाप्रतिकृतिंदर्भमयींसत्तीर्थवारिषु मज्जयेच्चयमुद्दिश्यसोष्टमांशंफलंलभेत् ॥

अब परार्थस्नानविधि कहताहुं.

“माता, पिता, स्त्री, भाई, मित्र, और गुरु इन्होंमेंसें जिसके उद्देशसें तीर्थमें स्नान करै तिस मनुष्यकों तिसका अष्टमांश फल प्राप्त होता है. अथवा जिसके उद्देशसें डाभकी प्रतिमा करके तिस प्रतिमाकों महातीर्थके जलमें स्नान करावै तिसकों अष्टमांश फल प्राप्त होता है.

पक्वान्नेनतीर्थेश्राद्धेतेनैवपिंडाः हिरण्यादिनाकृतेपिंडद्रव्याणि सक्तुसंयावपायसपिण्याक गुडान्यतमानि पिंडानांतीर्थेप्रक्षेपएव नान्याप्रतिपत्तिः एतच्चापुत्रयाविधवयाकार्यं सपुत्रया नकर्तव्यंभर्तुःश्राद्धंकदाचनेतिस्मृतेः अनुपनीतेनापिकार्यं यतिनातुनकर्तव्यं दंडंप्रदर्शयेद्भिक्षुर्गयांगत्वानपिंडदः दंडस्पर्शाद्विष्णुपदेपितृभिःसहमुच्यते एवंकूपवटादिष्वपिदंडप्रदर्शनमेव तीर्थेवृत्तिदौर्बल्येनप्रतिग्रहेदशमांशदानेनशुद्धिः ॥

पक्वान्नसें तीर्थविषे श्राद्ध किया होवै तौ तिसही अन्नसें पिंडदान करना. सोना आदिकरके श्राद्ध किया होवै तौ पिंडप्रदानके द्रव्य कहे जाते हैं.—सत्तु; महोनभोग, खीर, पिन्नी, गुड इन्होंमांहसें एक कोईसा द्रव्य लेना. पिंडोंकों तीर्थविषेही त्यागना. दूसरा निर्णय नहीं है. यह तीर्थश्राद्ध पुत्ररहित विधवा स्त्रीनें करना. क्योंकी, पुत्रवाली स्त्रीनें पतिका श्राद्ध कभीभी नहीं करना ऐसी स्मृति है. यह श्राद्ध जिसका यज्ञोपवीत हो चुका होवै तिसनेंभी करना. संन्यासीनें तौ नहीं करना. संन्यासीनें गयाजीमें जाके श्राद्ध नहीं करना; दंडसें प्रदर्शन मात्र करना. विष्णुपदकों दंडके स्पर्शसें पितरोंसहित वह संन्यासी मुक्त हो जाता है. ऐसेही कूप और वट इत्यादिकोंमेंभी दंडप्रदर्शनही करना. तीर्थपर आजीविकाकी क्षीणतासें प्रतिग्रह लेनेमें तिसके दशमांश दान करनेसें शुद्धि होती है.

श्रीविठ्ठलंरुक्मिणींचपितरौदीनवत्सलौ॥ध्यात्वेष्टसिद्धयेनत्वावक्ष्येऽथाशौचनिर्णयं ॥१॥

अब मनोवांछित सिद्धिके अर्थ श्रीविठ्ठलजी और रुक्मिणी इन्होंका ध्यान करके और दीनवत्सलरूपी मातापिताकों नमस्कार करके आशौचनिर्णय कहताहुं.—

तत्रादौगर्भनाशजननाद्याशौचं आचतुर्थाद्भवेत्स्रावःपातःपंचमषष्ठयोः अतऊर्ध्वंप्रसूतिःस्यात्तत्राशौचंविविच्यते तत्रगर्भस्रावेआद्यमासत्रयेमातुस्त्रिरात्रंचतुर्थमासेचतूरात्रमस्पृश्यलरूपमाशौचं पित्रादिसपिंडानांस्रावमात्रेस्नानाच्छुद्धिः पंचमषष्ठमासयोर्गर्भपातेगर्भिण्यामाससमसंख्यंक्रमेणपंचषट्दिनान्यस्पृश्यत्वलक्षणमाशौचं पित्रादिसपिंडानांतुत्रिदिनंजननाशौचं

मृताशौचंतुनास्ति इदंस्रावपाताशौचंसर्ववर्णसाधारणं गर्भिण्याःसप्तममासप्रभृतिप्रसवेमातुः पित्रादिसपिंडानांचसंपूर्णजननाशौचं तच्चविप्रेदशाहं क्षत्रियेद्वादशाहं वैश्येपंचदशाहं शूद्रे मासः संकरजातीनांशूद्रवत् विज्ञानेश्वरस्तुनैषामाशौचंकिंतुस्नानमात्रमित्याह सर्ववर्णेषुदशाहंवा जननाशौचेगर्भिण्यादशाहमस्पृश्यत्वं कर्मानधिकारस्तुकन्योत्पत्तौमासं पुत्रोत्पत्तौविंशतिरात्रं इदंस्वस्वाशौचोत्तरमितिविप्रस्त्रियाःक्रमेणचत्वारिंशत्त्रिंशद्दिनान्यनधिकारः पितुःसापत्नमातुश्चकन्यायाःपुत्रस्यवोत्पत्तौसचैलस्नानात्प्रागस्पृश्यत्वं पित्रादिसपिंडानांजननाशौचेकर्मानधिकारमात्रं कर्माद्यतिरिक्तकालेस्पर्शेदोषोन जातकर्मणिदानेचनालच्छेदनात्पूर्वंपितुरधिकारः एवंपंचमषष्ठदशमदिनेजन्मदादिपूजनेषुदानेचाधिकारः तत्रविप्राणांप्रतिग्रहेपिदोषोन॥

तहां प्रथम गर्भका नाश और जन्म इत्यादिक आशौच कहताहुं.—चतुर्थमासपर्यंत गर्भका नाश होवै तौ वह **स्राव** कहाता है. पांचमे और छठे महीनेमें गर्भका नाश होवै तौ वह **पात** कहाता है. सातमे महीनेसें सूति कहाती है. तिसविषे आशौचका विवेचन करताहुं. तहां गर्भस्राव होवै तौ पहले तीन महीनोंमें माताकों तीन रात्रि, चौथे महीनेमें चार रात्रि अस्पृश्यत्वरूप आशौच रहता है. स्रावमात्रविषे पिता आदि सब सपिंडोंकी स्नानसें शुद्धि होती है. पांचमा और छठा इन महीनोंमें गर्भपात होवै तौ गर्भिणीकों मासतुल्य क्रमसें पांच, छह दिनपर्यंत अस्पृश्यत्वलक्षणरूपी आशौच जानना. पिता आदि सपिंडोंको तौ तीन दिन जननाशौच रहता है, मृताशौच नहीं है. यह जो स्राव और पातका आशौच सो सब वर्णोंकों साधारण है. गर्भिणीकों संतान सातमा महीना आदिमें होवै तौ माता और पिता आदि सात पुरुषपर्यंत संपूर्णकों जननाशौच कहा है. वह जननाशौच ब्राह्मणोंविषे दश दिन, क्षत्रियोंविषे बारह दिन, वैश्योंविषे पंदरह दिन, शूद्रोंकों एक महीना, और संकरजातिकों एक महीना रहता है. विज्ञानेश्वर तौ संकरजातिकों आशौच नहीं, किंतु स्नान मात्र करना ऐसा कहता है. अथवा सब वर्णोंकों दश दिन आशौच रहता है. जन्मके आशौचमें गर्भिणीकों दश दिन अस्पृश्यत्व रहता है. कर्मका अनधिकार तौ कन्याकी उत्पत्तिमें एक महीना, पुत्रकी उत्पत्तिमें वीस रात्रिपर्यंत जानना और यह निर्णय अपने अपने आशौचके अनंतर जानना. ब्राह्मणकी स्त्रीकों क्रमसें चालीस, तीस दिनपर्यंत अधिकार नहीं है. कन्या अथवा पुत्रकी उत्पत्ति होनेके अनंतर पिता और सापत्न माताकों सचैल स्नानके पहले अस्पृश्यत्व कहा है. जननाशौच होवै तौ पिता आदि सपिंडोंकों कर्मका अनधिकार मात्र कहा है, अस्पृश्यत्व नहीं है. कर्म आदि कालसें अन्य कालमें स्पर्श हुआ होवै तौ अन्योंकों दोष नहीं है. जातकर्ममें और दानमें नालच्छेदनके पहले पिताकों अधिकार है. ऐसाही, पांचमा, छठा और दशमा इन दिनोंमें दान और जन्मदादि देवतोंका पूजन इन्होंविषे अधिकार कहा है. तिन दिनोंविषे ब्राह्मणोंकों प्रतिग्रहविषे दोष नहीं है.

कूटस्थमारभ्यसप्तमपुरुषपर्यंताःसपिंडाःततः सप्तसमानोदकाः ततःसप्तैकविंशतिपर्यंताः सगोत्राः तत्रसपिंडानांदशाहमित्युक्तं सोदकानांत्रिरात्रं सगोत्राणामेकरात्रमितिनागोजीभट्टीये अन्येतुसगोत्राणांनाशौचमित्याहुः अयंसपिंडसोदकाद्याशौचविभागो जननेमरणेच

---

१. संकरजातीनां.

समानः मरणेत्वाशौचविच्छेदेपिस्नानमात्रंयावदेककुलत्वज्ञानंतावद्भवत्येवेतिविशेषः अत्रेदं बोध्यं कूटस्थादारभ्यसंततिभेदएकसंततौकश्चिदष्टमोऽपरसंततौचकश्चित्सप्तमस्तयोश्चैकतः सापिंड्यानुवृत्तिःपरतोनिवृत्तिरित्युक्तं तत्राष्टमेननिवृत्तसापिंड्यकेनसप्तमादीनांपरसंततिस्थानांजननेमरणेत्रिदिनमाशौचंकार्यं सप्तमेनत्वनुवृत्तसापिंड्यकेनाष्टमादीनांजननेमरणेवादशाहमेवकार्यं एवंसोदकत्रिरात्रादौकन्याविषयकत्रिपुरुषसापिंड्येचोह्यं तत्राष्टमस्यमृतपितृकत्वेजीवत्पितृकत्वेपिचत्रिदिनमेव त्र्यंबकीयेभट्टोजीयेनागोजीयेचाशौचप्रकरणेन्यत्रचपित्रादिजीवनाजीवनकृतविशेषादर्शनादितिकेचित् अपरेतुनिर्णयसिंधौसापिंड्यप्रकरणेआदशमाद्धर्मविच्छित्तिरित्यादिसुमंतुवाक्यस्यशूलपाणिकृतव्याख्याने एकपिंडदानक्रियान्वयित्वरूप सापिंड्यलक्षणमनुसृत्यजीवत्पित्रादित्रिकस्यप्रपितामहात्परेत्रयःपिंडभाजस्तदूर्ध्वं त्रयोनवपुरुषपर्यंतालेपभाजः श्राद्धकर्ताचदशमइतिदशमादूर्ध्वंसापिंड्यनिवृत्तिः पितृपितामहजीवने नवपुरुषपर्यंतंपितृजीवनेष्टपुरुषपर्यंतंसापिंड्यमितिप्रतिपादनादष्टमादेः पित्रादिजीवनदशायां दशाहमाशौचं पित्रादिमरणोत्तरमेवत्रिदिनमितिवदंति अत्रममद्वितीयपक्षएवयुक्तोभाति ॥

मूलपुरुषसें आरंभ करके सातमे पुरुषपर्यंत सपिंड होते हैं. आठमे पुरुषसें आरंभ करके सात पुरुष समानोदक होते हैं. तिस्सें सात पुरुष अर्थात् इक्कीस पीढीपर्यंत सगोत्र होते हैं. तिन्होंमें सपिंडोंकों दश दिनपर्यंत आशौच कहा है, सोदकोंकों तीन रात्रिपर्यंत आशौच कहा है और सगोत्रोंकों एक रात्रि आशौच है ऐसा नागोजीभट्टकृत **आशौचनिर्णय** ग्रंथमें कहा है. दूसरे ग्रंथकार तौ, सगोत्रोंकों आशौच नहीं है ऐसा कहते हैं. यह सपिंड और सोदक इत्यादिकोंका आशौचविभाग जननाशौच और मरणाशौच इन्होंविषे समान कहा है. मरणाशौचमें तौ आशौचका विच्छेद हो जावै तबभी जबतक एक कुलत्वका ज्ञान होवै तबतक स्नानमात्र करना ऐसा यह विशेष है. यहां ऐसा आवश्यक जानना है की, मूलपुरुषसें आरंभ करके संततिभेद होवै तौ एक संततिमें कोईक पुरुष आठमा और दूसरी संततिमें कोईक पुरुष सातमा ऐसे होवैं तौ तिन्होंकी एक तर्फसें सापिंड्यकी अनुवृत्ति और दूसरी तर्फसें सापिंड्यकी निवृत्ति होती है ऐसा कहा है. तहां सापिंड्यसें निवृत्त हुआ जो आठमा तिसनें दूसरी संततिमें स्थित हुये जो सातमा आदिक तिन्होंके और मरणमें तीन दिन आशौच करना. अनुवृत्त है सापिंड्य जिसका ऐसे सातमेनें तौ आठमा आदिकोंके जननमें और मरणमें दश दिन आशौच करना. इसी प्रकार सोदक त्रिरात्रादिकोंविषे और कन्याविषयक त्रिपुरुष सापिंड्यमेंभी ऐसाही निर्णय जानना. तहां आठमा मृतपितृक अथवा जीवत्पितृक होवै तथापि तिसनें तीन दिनही आशौच करना. क्योंकी त्र्यंबकभट्टकृत **त्र्यंबकीमें** और भट्टोजिदीक्षितकृत और नागोजीभट्टकृत आशौचप्रकरणमें और अन्य ग्रंथोंमेंभी पिता आदि जीवते होवैं अथवा नहीं होवैं तिसविषे विशेष निर्णय कहींभी नहीं दीखता है, ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. दूसरे ग्रंथकार तौ, **निर्णयसिंधु** ग्रंथमें सापिंड्यप्रकरणविषे '**दशमे पुरुषसें धर्मविच्छित्ति**' इत्यादिक जो सुमंतुका वाक्य है तिसके शूलपाणिनें किये व्याख्यानमें एकपिंडदानक्रियान्वयित्वरूप अर्थात् एकपिंडदानक्रियाका संबंध है जिसकों ऐसा सापिंड्यलक्षणका अंगीकार करके जीवता है पिता, पितामह और प्रपितामह जिसके ऐसा

जो तिसके प्रपितामहके परे तीन पिंडभाक् होते हैं, पिंडभाक् जो हैं तिन्होंसें उपरके तीन और नव पुरुषपर्यंत लेपभाक् होते हैं, और श्राद्धकर्ता दशमा इस प्रकार दशमे पुरुषसें उपरंत सापिंड्यकी निवृत्ति होती है; पिता और पितामह जीवते होवैं तौ नव पुरुषोंपर्यंत सापिंड्य होता है; पिता जीवता होवै तौ आठ पुरुषोंपर्यंत सापिंड्य होता है ऐसा प्रतिपादन किया है; इसलिये आठमा आदिका पिता आदि जीवता होवै तौ तिस आठमेकों दश दिन आशौच रहता है, पिता आदिक मरनेके उपरंतही तीन दिन आशौच रहता है ऐसा कहते हैं. यहां मुझकों दूसरा पक्षही योग्य मालूम होता है.

पितृगृहेकन्याप्रसूतौपित्रोस्तद्गृहवर्तिभ्रातॄणांचैकाहः पितृगृहवर्तिपितृव्यादीनांसर्वेषांपितृसपिंडानामेकाहइतिस्मृत्यर्थसारे एवंभ्रात्रादिगृहेभगिन्यादिप्रसवेपितेषामेकाहः माधवस्तु पितृगृहेकन्यायाःप्रसूतौपित्रोस्त्रिरात्रं तद्गृहवर्तिभ्रातॄणामेकाहइत्याह कन्यायाःपतिगृहेप्रसवेपित्रादीनांनाशौचं मृतजातेशिशौसपिंडानांसंपूर्णमेवजननाशौचं मृताशौचंनास्ति जननोत्तरंनालच्छेदनात्पूर्वंशिशुमरणेपित्रादिसपिंडानांत्रिदिनंजननाशौचं मातुस्तुदशाहमेव मृताशौचंतुनास्ति नालच्छेदनोत्तरंदशाहाभ्यंतरेशिशुमरणेसपिंडादीनांसंपूर्णमेवजननाशौचं मरणाशौचंतुनास्ति ॥

पिताके घरमें कन्या प्रसूत होवै तब पितामाताकों और तिस घरमें रहनेवाले भाइयोंकों एक दिन जननाशौच लगता है. पिताके घरमें रहनेवाले चाचा और ताऊ आदिकों और पिताके सब सपिंडोंकों एक दिन आशौच रहता है ऐसा **स्मृत्यर्थसार** ग्रंथमें कहा है. इस प्रकार भाई आदिके घरमें बहन आदि प्रसूत होवै तौभी भाइयोंकों एक दिन जननाशौच रहता है. माधव तौ पिताके घरमें कन्या प्रसूत होवै तब पितामाताकों तीन रात्रि और तिस घरमें रहनेवाले भाइयोंकों एक दिन जननाशौच है ऐसा कहता है. पतिके घरमें कन्या प्रसूत होवै तौ पिता आदिकोंकों आशौच नहीं है. शिशु मृत हुआ उत्पन्न होवै तौ सपिंडोंकों संपूर्णही जननाशौच कहा है, मृताशौच नहीं है. उत्पत्ति होनेके अनंतर और नालच्छेदन करनेके पहले बालक मृत्युकों प्राप्त होवै तौ पिता आदि सपिंडोंकों तीन दिन जननाशौच रहता है, माताकों तौ दश दिनही रहता है, और मृताशौच नहीं रहता है. नालच्छेदनके उपरंत दश दिनके भीतर बालकके मरनेमें सपिंड आदिकोंकों संपूर्णही जननाशौच रहता है और मरणाशौच नहीं रहता है.

अथमृताशौचं तत्रमृताशौचवतामस्पृश्यत्वंकर्मानधिकारश्च दशाहानंतरंनामकरणात्प्राक्शिशुमरणेसपिंडानांस्नानमात्रं मातापित्रोस्तुपुत्रमृतौत्रिरात्रंकन्यामृतौचैकाहः सापत्नमातुःसर्वत्रपितृवत् नाम्नःपूर्वंखननमेवनित्यं नामकरणानंतरंचूडाकरणपर्यंतंतदभावेवर्षत्रयपूर्तिपर्यंतंदाहखननयोर्विकल्पः नामकरणोत्तरंदंतोत्पत्तेःप्राक्पुत्रमरणेदाहेसपिंडानामेकाहः खननेतुस्नानाच्छुद्धिः मातापित्रोरुभयत्रापित्रिरात्रं कन्यामृतौतुत्रिपुरुषसापिंडानामुभयत्र स्नानाच्छुद्धिः मातापित्रोः कन्यामृतौदंतोत्पत्तिपर्यंतमुभयत्रैकाहः अत्र नामकरणंद्वादशदिनोपलक्षणं दंतजननंसप्तममासोपलक्षणं तेनद्वादशदिनमारभ्यषण्मासपर्यंतमेकाहादिफ

लितं सप्तममासप्रभृतिचूडाकरणपर्यंतंतदभावेतृतीयवर्षपूर्तिपर्यंतंदाहेखननेवासपिंडानामेकाहः केचित्खननेएकाहोदाहेत्रिरात्रमित्याहुः मातापित्रोरुभयत्रत्रिरात्रं एतत्पुत्रमृतौ कन्यामृतौतुवर्षत्रयपर्यंतंसपिंडानांस्नानाच्छुद्धिः मातापित्रोःसप्तममासप्रभृतिकन्यामृतौत्रिरात्रं विज्ञानेश्वरस्त्वेकादशदिनमारभ्ययावदुपनयनंपुत्रमृतौकन्यामृतौतुयावद्विवाहंमातापित्रोस्त्रिरात्रमेवेत्याह प्रथमवर्षादौकृतचूडस्यमरणेपित्रादीनांसर्वेषांत्रिदिनंनियतंदाहश्चनियतः त्रिवर्षोर्ध्वंकृतचूडस्याकृतचूडस्यवामरणेप्रागुपनयनात्पित्रादिसर्वसपिंडानांत्रिदिनंदाहोनियतः सोदकानांत्वनुपनीतमरणेनूढकन्यामरणेचनाशौचंकिंतुस्नानमात्रं अनुपनीतभ्रातृमरणेभगिन्यानाशौचं ऊनद्विवर्षस्यखननंमुख्यंअनुगमनंवैकल्पिकं पूर्णद्विवर्षस्यदाहोमुख्यः अनुगमनंनित्यं अत्रदाहोदकदानादितूष्णीमेव कृतचूडायपूर्णत्रिवर्षायचभूमौपिंडदानं दंतजननपर्यंतंतत्तुल्यवयस्केभ्योद्वितीयदिनेतदुद्देशेनदुग्धदानं त्रिवर्षांतंचौलांतंवापायसदानंतदूर्ध्वमुपनयनपर्यंतमाशौचांतेसवयोभ्यस्तदुद्देशेनभोजनादिदानं ॥

अब मृताशौच कहताहुं.

तहां मृताशौचवालोंकों स्पर्श नहीं करना और तिन्होंकों कर्मका अनधिकार है. दश दिनके अनंतर और नामकरणके पहले बालक मर जावै तौ सपिंडोंनें स्नान मात्र करना. पुत्रके मरनेमें मातापिताकों तौ तीन रात्रि और कन्याके मरनेमें एक दिन आशौच रहता है. सापत्नमाताकों सब जगह पिताके समान आशौच रहता है. नामकरणके पहले बालक मर जावै तौ खनन अर्थात् पृथिवीमें गाडना यही नित्य है. नामकरणके अनंतर चूडाकर्मपर्यंत, तिसके अभावमें तीन वर्षकी पूर्तिपर्यंत दाह और खननका विकल्प कहा है. नामकरणके उपरंत और दंतोंकी उत्पत्तिके पहले पुत्रके मरनेमें दाह किया जावै तौ सपिंडोंकों एक दिन आशौच रहता है. खनन करनेमें तौ स्नानसें शुद्धि कही है. मातापिताकों दाहमें और खननमेंभी तीन रात्रि आशौच कहा है. कन्याके मरनेमें तौ त्रिपुरुषसपिंडोंकी दोनों तरह करनेमें अर्थात् दाह और खननमें स्नानसें शुद्धि होती है. मातापिताकों कन्याके मरनेमें दंतोत्पत्तिपर्यंत दोनों पक्षोंमें एक दिन आशौच है. यहां नामकरण बारहमे दिनका उपलक्षण है. दंतजनन सातमे महीनाका उपलक्षण है. तिसकरके बारहमे दिनसें आरंभ करके छठे महीनेपर्यंत एक दिन आदि आशौच इत्यादि फलितार्थ होता है. सातमे महीनेसें आरंभ करके चूडाकरणपर्यंत, तिसके अभावमें तीसरे वर्षकी पूर्तिपर्यंत दाहमें अथवा खननमें सपिंडोंकों एक दिन आशौच है. कितनेक ग्रंथकार खननमें एक दिन, और दाहमें तीन रात्रि आशौच रहता ऐसा कहते हैं. मातापिताकों दोनों पक्षोंमें तीन रात्रि आशौच रहता है. और यह निर्णय पुत्रके मरनेमें जानना. कन्याके मरनेमें तौ तीन वर्षपर्यंत सपिंडोंकी स्नानसें शुद्धि होती है. मातापिताकों सातमे महीनेसें लेके कन्याके मरनेमें तीन रात्रि आशौच रहता है. विज्ञानेश्वर तौ ग्यारहमे दिनसें आरंभ करके जबतक यज्ञोपवीत होवै तबतक पुत्रके मरनेमें और जबतक विवाह होवै तबतक कन्याके मरनेमें मातापिताकों तीन रात्रि आशौच रहता है ऐसा कहता है. प्रथम वर्ष आदिमें जिसका चूडाकर्म हो चुका होवै ऐसे पुत्रके मरनेमें पिता आदि सबोंकों निश्चयकरके तीन दिन आशौच है और निश्चयकरके दाह करना. तीन

वर्षके उपरंत जिसका चूडाकर्म हो चुका होवै अथवा नहीं हो चुका होवै ऐसे पुत्रके मरनेमें यज्ञोपवीतकर्मके पहले पिता आदि सब्र सपिंडोंकों तीन दिन आशौच और दाह आवश्यक है. नहीं यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुए पुत्रके मरनेमें और नहीं विवाहित हुई कन्याके मरनेमें सोदकोंकों तौ आशौच नहीं है. किंतु तिन्होंनें स्नान मात्र करना. नहीं यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुये भाईके मरनेमें बहनकों आशौच नहीं है. पूर्ण दो वर्षसें कम आयुवालेके मरनेमें खनन करना प्रधान है. अनुगमन करना अथवा नहीं करना. पूर्ण दो वर्षकी आयुवालेके मरनेमें दाह करना मुख्य है, और अनुगमन करना नित्य है. यहां दाह, तिलांजलि आदि अमंत्रकही करना. जिसका चूडाकर्म हो चुका होवै और पूर्ण तीन वर्षका होके मृत हुआ होवै तिसकों पृथिवीपर पिंडदान करना. दंतजननपर्यंत, तिस मृत हुए बालककी आयुके समान आयुवाले बालकोंकों तिसके उद्देशसें दूसरे दिनविषे दूधका दान करना. तीन वर्षपर्यंत आयुवाला अथवा चौलकर्मपर्यंत हुएके मरनेमें दूधकी खीरका दान करना. तिसके अनंतर यज्ञोपवीतकर्मपर्यंत आशौचकी निवृत्ति होनेकें पश्चात् तिसके समान आयुवाले बालकोंकों तिस मृत हुए बालकके उद्देशसें भोजन आदिक दान करना.

स्त्रीशूद्रयोस्तुकृतचूडयोरप्युदकदानादिवैकल्पिकं शूद्रस्यत्रिवर्षपर्यंतमेतदेवाशौचं अस्योपनयनस्थानेविवाहः तथाचत्रिवर्षोर्ध्वंविवाहपर्यंततदभावेषोडशवर्षपर्यंतंवाशूद्रस्यमरणेत्रिदिनंतदूर्ध्वंजात्याशौचं कन्यायावर्षत्रयानंतरंवाग्दानात्प्राङ्मरणेत्रिपुरुषसपिंडानामेकाहःमातापित्रोस्त्रिदिनं दाहादितूष्णीं वाग्दानोत्तरंविवाहात्प्राक्कन्यामरणेपितृसपिंडानांभर्तृसपिंडानांचत्रिदिनं अत्रोभयकुलेपिसाप्तपुरुषंसापिंड्यं दाहादितूष्णीमेव जननेनुपनीतमरणेचातिक्रांताशौचंनास्ति पितुरपत्यजननश्रवणेदेशांतरेकालांतरेस्नानंभवत्येव अनुपनीतमरणेतिक्रांतेपिस्नानंभवत्येवेतिस्मृत्यर्थसारः अनुपनीतस्यानूढकन्यायाश्चमातापितृमरणेएवदशाहाशौचं अन्यमरणेनुनकिमपि उपनयनोत्तरंमरणेसपिंडानांदशाहं सोदकानांत्रिरात्रं सगोत्राणामेकाहंस्नानाच्छुद्धिर्वेत्यादिविशेषःप्रागुक्तोत्रानुसंधेयः ॥

जिन्होंका चूडाकर्म हो चुका होवै ऐसे स्त्री और शूद्रके मरनेमें तिन्होंकों जलदान आदि करना अथवा नहीं करना. शूद्रकों तीन वर्षपर्यंत यहही आशौच जानना. इसकों यज्ञोपवीतके स्थानमें विवाह जानना. अर्थात् तीन वर्षके उपरंत विवाहपर्यंत अथवा विवाह नहीं हुआ होवै तौ सोलह वर्षपर्यंत शूद्रके मरनेमें तीन दिन आशौच रहता है. सोलह वर्षके अनंतर किंवा विवाहके अनंतर जात्याशौच जानना. तीन वर्षके उपरंत और वाग्दानके पहले कन्या मर जावै तौ त्रिपुरुषसपिंडोंकों एक दिन और मातापिताकों तीन दिन आशौच और दाह आदिक अमंत्रक करना. वाग्दानके अनंतर विवाहके पहले कन्या मर जावै तौ पिताके सपिंडोंकों और पतिके सपिंडोंकों तीन दिन आशौच रहता है. इस विषयमें दोनों कुलोंमें साप्तपुरुषसापिंड्य कहा है. दाह आदिक अमंत्रकही करना. जन्मनेमें और नहीं यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुएके मरनेमें अतिक्रांताशौच नहीं है. पिताकों पुत्र किंवा कन्याके जन्मकों सुननेमें देशांतरविषे और कालांतरविषे तिसनें अवश्य स्नान करना. नहीं यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुएके मरनेमें अतिक्रांतविषेभी स्नान करना, ऐसा “ **स्मृत्यर्थसार** ” ग्रंथमें

कहा है. नहीं यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुए पुत्रकों और अविवाहित हुई कन्याकों मातापिताके मरनेमें दश दिन आशौच लगता है, अन्य किसीके मरनेमें कुछभी आशौच नहीं लगता है. यज्ञोपवीत होनेके अनंतर मृत होनेमें सपिंडोंकों दश दिन, सोदकोंकों तीन रात्रि, सगोत्रोंकों एक दिन, किंवा स्नानकरके शुद्धि आदि विशेष पहले कहा यहां जानना.

स्त्रीशूद्रयोर्विवाहोत्तरंमरणेदशाहः शूद्रस्यविवाहाभावेषोडशवर्षोत्तरमित्युक्तं विवाहोर्ध्वं कन्यायाःपितृगृहेमरणेमातापित्रोःसापत्नमातुःसापत्नभ्रातुःसोदरभ्रातुश्चत्रिरात्रं पितृव्यादीनांतद्गृहवर्तिनामेकाहः तद्गृहवर्तिनामपिसपिंडानामेकाहइतिकेचित् ग्रामांतरमृतौपित्रोःपक्षिणीतिकेचित् ऊढायाःकन्यायाःपतिगृहेमरणेपित्रोःसापत्नमातुश्चत्रिरात्रं भ्रातुःपक्षिणी पितृव्यादीनांएकाहइतिकेचित् ॥

स्त्री और शूद्र विवाहके उपरंत मर जावैं तौ दश दिन आशौच रहता है. शूद्रके विवाहके अभावमें सोलह वर्षके उपरंत आशौच लगता है ऐसा पहले कहा है. विवाहके उपरंत पिताके घरमें कन्याके मरनेमें मातापिता, सापत्न माता, सापत्न भाई और सोदर भाई इन्होंकों तीन रात्रि आशौच लगता है. पिताके घरमें रहनेवाले चाचा और ताऊ आदिकोंकों एक दिन आशौच लगता है. पिताके घरमें रहनेवाले सपिंडोंकोंभी एक दिन आशौच लगता है ऐसा कितनेक पंडित कहते हैं. कन्या दूसरे गाममें मर जावै तौ मातापिताकों डेढ दिन आशौच लगता है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. विवाहित हुई कन्या पतिके घरमें मरै तौ पितामाताकों और सापत्नमाताकों तीन रात्रि आशौच लगता है. भाईकों डेढ दिन आशौच लगता है. चाचा आदिकोंकों एक दिन आशौच है, ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं.

मातापित्रोर्मरणेसापत्नमातुर्मृतौचोढकन्यायास्त्रिरात्रंदशाहांतः दशाहोर्ध्वंकालांतरेवत्सरांतरेपिपक्षिणी भ्रातुरुपनीतस्यविवाहितभगिन्याश्चपरस्परगृहमरणेपरस्परस्यत्रिरात्रं गृहांतरमृतौपरस्परस्यपक्षिणी ग्रामांतरेत्वेकाहः अत्यंतनिर्गुणत्वेएकग्रामेपिस्नानं एवंसापत्नभ्रातृभगिन्योरपि भगिनीमृतौभगिन्याअप्येवमेवेतिभाति ऊढकन्यायाःपितामहपितृव्यादिमरणे स्नानमेव मातुलमरणेभगिनीपुत्रस्यभगिनीकन्यायाश्चपक्षिणी उपकारकमातुलमरणेस्वगृहे मातुलमरणेचत्रिरात्रं अनुपनीतमातुलमरणेग्रामांतरेमातुलमरणेचैकरात्रं एवंसापत्नमातुलमरणेपि मातुलानीमरणेभर्तृभगिन्यपत्यस्यस्त्रीपुंसरूपस्यपक्षिणी सापत्नमातुलानीमरणेतुनाशौचं उपनीतभागिनेयमरणेमातुलस्यमातुलभगिन्याश्चत्रिरात्रं एवंसापत्नभागिनेयेमृतेपित्रनुपनीतभागिनेयमरणेमातुलस्यमातुलभगिन्याश्चपक्षिणी एवंसापत्नभागिनेयेमृतेपि अनुपनीतपदेनावशिष्टोपनयनमात्रःकृतचूडश्चूडायाअभावेत्रिवर्षोर्ध्ववयस्कोवाग्राह्यइतिभाति एवमग्रेप्यनुपनीतपदस्यार्थोबोध्यः भागिनेयीमरणेतुस्नानमात्रमितिभाति मातामहमरणेदुहित्रपत्यस्यपुत्ररूपस्यकन्यारूपस्यवात्रिरात्रं ग्रामांतरेपक्षिणी मातामह्यांमृतायांदौहित्रस्यदौहित्र्याश्चपक्षिणी अत्रसर्वत्रपुरुषस्योपनीतस्यैवस्त्रियाश्चविवाहितायाएवमातापित्रतिरिक्ताशौचेधिकारइत्युक्तं अत्रमातुलमातुलानीमातामहादिमृतौत्र्यपत्यस्याशौचोक्तिस्त्र्यंबकीयानुसारेणान्य

त्रतुनैवंस्पष्टमुपलभ्यते उपनीतदौहित्रमरणेमातामहस्यमातामह्याश्चत्रिरात्रं अनुपनीतेदौहित्रेमृतेमातामहस्यमातामह्याश्चपक्षिणी दौहित्रीमरणेतुनाशौचमितिभाति ॥

मातापिताके मरनेमें और सापत्न माताके मरनेमें विवाहित हुई कन्याकों दश दिनोंके पहले तीन रात्रि आशौच है. दश दिनोंके उपरंत, अन्य कालमें और वर्षके अंतमेंभी डेढ दिन आशौच है. उपनयन हुआ भाई और विवाहित हुई बहन परस्पर अर्थात् बहनके घरमें भाई और भाईके घरमें बहन मर जावै तौ आपसमें तीन रात्रि आशौच है. दूसरे घरमें मरनेविषे आपसमें डेढ डेढ दिन आशौच है. दूसरे गाममें मरनेविषे एक दिन आशौच है. अत्यंत निर्गुणपनेमें एक गामविषेभी स्नान करना. इसही प्रकार सापत्न भाई और सापत्न बहनकाभी निर्णय जानना. बहनके मरनेमें बहनकोंभी इसी प्रकार निर्णय जानना ऐसा प्रतिभान होता है. विवाहित हुई कन्यानें पितामह और पितृव्य आदिके मरनेमें स्नानही करना. मामाके मरनेमें बहनके पुत्रकों और बहनकी पुत्रीकों डेढ दिन आशौच है. उपकार करनेवाले मामाके मरनेमें और भानजाके घरमें मामाके मरनेमें तीन रात्रि आशौच है. नहीं यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुए मामाके मरनेमें और दूसरे गामविषे मामाके मरनेमें एक रात्रि आशौच है. सापत्न मामाके मरनेमेंभी ऐसाही निर्णय जानना. मामीके मरनेमें पतिकी बहनका पुत्र अथवा पुत्रीकों डेढ दिन आशौच है. सापत्न मामीके मरनेमें आशौच नहीं है. उपनीत भानजाके मरनेमें मामाकों और मामाकी बहनकों तीन रात्रि आशौच है. सापत्न भानजाकेविषेभी ऐसाही निर्णय जानना. अनुपनीत भानजाके मरनेमें मामा और मामाकी बहनकों डेढ दिन आशौच होता है. इसही प्रकार सापत्न भानजेके मरनेमेंभी ऐसाही जानना. यहां ‘अनुपनीतपदकरके शेष रहा यज्ञोपवीतकर्मवाला और जिसका चूडाकर्म हो चुका होवै ऐसेका ग्रहण किया जाता है, अथवा चूडाकर्मके अभावमें तीन वर्षके उपरंत आयुवाला ग्रहण किया जाता है, ऐसा लगता है. इसही प्रकार आगे अनुपनीतपदका अर्थ जानना. भानजीके मरनेमें स्नान मात्र करना ऐसा लगता है. मातामह अर्थात् नानाके मरनेमें धेवता और धेवतीकों तीन रात्रि आशौच है. दूसरे ग्राममें मरनेविषे डेढ दिन आशौच है. मातामही अर्थात् नानीके मरनेमें धेवताकों और धेवतीकों डेढ दिन आशौच है. यहां सब जगह यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुआ पुरुष और विवाहकों प्राप्त हुई कन्याकों मातापिताके आशौचके विना अन्य आशौचविषे अधिकार है ऐसा कहा है. यहां मामा, मामी, नाना आदिके मरनेमें स्त्रीरूप संतानकों जो आशौच कहा है वह **त्र्यंबक** ग्रंथके अनुसार कहा है. दूसरे ग्रंथमें तौ ऐसा कहींभी स्पष्ट माळूम नहीं होता है. यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुए धेवताके मरनेमें नानीकों और नानाकों तीन रात्रि आशौच है. नहीं यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुए धेवताके मरनेमें नानीकों और नानाकों डेढ दिन आशौच है. धेवतीके मरनेमें आशौच नहीं है, ऐसा माळूम होता है.

श्वश्रूश्वशुरयोर्मरणेजामातुःसन्निधौत्रिरात्रं असन्निधौतुपक्षिणी उपकारकयोर्मरणेत्वसन्निधावपित्रिरात्रमेव ग्रामांतरेएकरात्रं भार्यामरणेननिवृत्तसंबंधयोःश्वश्रूश्वशुरयोरनुपकारकयोर्मृतेतुपक्षिण्येकाहोवेतिभाति जामातरिमृतेश्वश्रूश्वशुरयोरेकरात्रंस्नानाच्छुद्धिर्वा स्वगृहे

जामातृमरणेत्रिरात्रं उपनीतेशालकेमृतेभगिनीभर्तुरेकाहः अनुपनीतेतुशालकेस्नानं ग्रामांतरेमृतेपिस्नानं भार्यामरणेननिवृत्तसंबंधेशालकेस्नानमितिनागोजीभट्टीये शालकसुतमरणे स्नानं कश्चिच्छालिकायांमृतायांशालकवदेकाहादिकमाह मातुःस्वसरिमृतायांस्वस्रपत्ययोः कन्यापुत्रयोःपक्षिणी एवंसापत्नमातुःस्वसृमरणेपि पितुःस्वसरिमृतायांभ्रात्रपत्ययोःकन्यापुत्रयोःपक्षिणी पितुःसापत्नस्वसृमरणेतुस्नानमात्रं भ्रात्रपत्यमरणेतुपितृष्वसुःस्नानं स्वगृहे पितृष्वसृमातृष्वसृमरणेत्र्यहं ॥

सुसरा और सासूके मरनेमें समीप रहनेवाले जमाईकों तीन रात्रि और दूर रहनेवाले जमाईकों डेढ दिन आशौच है. उपकार करनेवाले सुसरा और सासूके मरनेमें दूर रहनेवाले जमाईकोंभी तीन रात्रिही आशौच है. दूसरे ग्राममें रहनेवाले जमाईकों एक रात्रि आशौच है. भार्याके मरनेसें दूर हुआ है संबंध जिन्होंका ऐसे और उपकार नहीं करनेवाले ऐसे सुसरा और सासूके मरनेमें जमाईकों डेढ दिन अथवा एक दिन आशौच है ऐसा माल्रम होता है. जमाईके मरनेमें सुसराकों और सासूकों एक दिन आशौच अथवा स्नानसें शुद्धि कही है. अपने घरमें जमाईके मरनेमें तीन रात्रि आशौच है. यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुए शालाके मरनेमें बहनके पतिकों एक दिन आशौच है. नहीं यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुए शालाके मरनेमें स्नानपर्यंत आशौच है. दूसरे ग्राममें रहनेवाले शालाके मरनेमेंभी स्नानपर्यंत आशौच है. भार्याके मरनेकरके दूर हुआ है संबंध जिसका ऐसे शालाके मरनेमें स्नानपर्यंत आशौच है ऐसा **नागोजीभट्टके** किये **आशौच** ग्रंथमें कहा है. शालाके पुत्रके मरनेमें स्नानपर्यंत आशौच है. कोईक ग्रंथकार शालीके मरनेमें शालाके मरनकी तरह एक दिन आशौच कहते हैं. माताके बहनके मरनेमें बहनके पुत्र और पुत्रीकों डेढ दिन आशौच है. इसी प्रकार माताके सापत्न बहनके मरनेमेंभी निर्णय जानना. पिताकी बहनके मरनेमें भाईके पुत्र और पुत्रीकों डेढ दिन आशौच है. पिताके सापत्न बहनके मरनेमें स्नानपर्यंत आशौच है. भाईके संतानके मरनेमें पिताके बहनकों स्नानपर्यंत आशौच है. अपने घरमें पिताकी बहन और माताकी बहन इन्होंके मरनेमें तीन दिन आशौच है.

उपनीतबंधुत्रयमरणेपक्षिणी अनुपनीतस्यगुणहीनस्यवाबंधुत्रयस्यमरणेएकाहः स्वगृहेमरणेतुत्रिरात्रं अत्रबंधुत्रयपदेनात्मबंधुत्रयंपितृबंधुत्रयंमातृबंधुत्रयमितिनवबंधवोग्राह्याः तेयथा आत्मपितृष्वसुःपुत्राआत्ममातृष्वसुःसुताः आत्ममातुलपुत्राश्चविज्ञेयाआत्मबांधवाः पितुःपितृष्वसुःपुत्राःपितुर्मातृष्वसुःसुताः पितुर्मातुलपुत्राश्चविज्ञेयाःपितृबांधवाः मातुःपितृष्वसुःपुत्रामातुर्मातृष्वसुःसुताः मातुर्मातुलपुत्राश्चविज्ञेयामातृबांधवाइति पितृष्वस्रादिकन्यानांतुविवाहितानांमरणेतद्बंधुवर्गस्त्वेकेनेतिवचनबलादेकाहः अनूढानांतुमरणेस्नानमात्रमितिनिर्णयसिंधवाशयः नागोजीभट्टास्तुबंधुत्रयवाक्येपुत्रपदंकन्योपलक्षकमित्याहुः तन्मते पितृष्वस्रादिकन्यानामूढानांमरणेपक्षिणीअनूढानामेकाहइत्यादि पितृष्वस्रादिकन्याभिस्तुबंधुत्रयमरणेस्नानमात्रंकार्यमितिसिंधवाशयेनसिद्धयति भट्टमतेतुपुत्रपदवत्तद्वाक्यस्थात्मपदस्यापिकन्यापरत्वापत्त्याकन्याभिरपिबंधुत्रयाशौचंकार्यमित्यापततितत्रचबहुशिष्टाचारविगानमितिसिंधवाशयोयुक्तोभाति ॥

यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुये बंधुत्रयके मरनेमें डेढ दिन आशौच है. यज्ञोपवीतकों नहीं प्राप्त हुये अथवा गुणोंसें रहित ऐसे बंधुत्रयके मरनेमें एक दिन आशौच है. अपने घरमें मरनेमें तौ तीन रात्रि आशौच है. यहां 'बंधुत्रय' पदकरके आत्मबंधुत्रय, पितृबंधुत्रय और मातृबंधुत्रय इस प्रकारसें नव बंधुओंका ग्रहण होता है. वे बंधु कहे जाते हैं—"पिताकी बहनके पुत्र, अपनी माताकी बहनके पुत्र, और अपने मामाके पुत्र ये अपने बांधव जानने. पिताके पिताकी बहनके पुत्र, पिताकी मावसीके पुत्र और पिताके मामाके पुत्र ये पितृबांधव जानने. माताके पिताकी बहनके पुत्र, माताकी बहनके पुत्र, और माताके मामाके पुत्र ये मातृबांधव जानने; इस प्रकारसें नवबांधव हैं. विवाहकों प्राप्त हुई पिताकी बहन आदिकी कन्याओंके मरनेमें "तिन्होंका बंधुवर्ग एक दिन करके शुद्ध है." इस वचनबलकरके शुद्ध होता है. और नहीं विवाहकों प्राप्त हुई कन्याओंके मरनेमें स्नानपर्यंत आशौच है ऐसा **निर्णयसिंधुका** अभिप्राय है. **नागोजीभट्ट** तौ बंधुत्रयवाक्यमें पुत्रपद कन्याका उपलक्षण है ऐसा कहते हैं और तिन्होंके मतसें पिताकी बहन आदिकी विवाहित हुई कन्याओंके मरनेमें डेढ दिन आशौच है. नहीं विवाहकों प्राप्त हुई कन्याओंके मरनेमें एक दिन आशौच है इत्यादि जानना. पिताकी बहन आदिकोंकी कन्याओंनें तौ बंधुत्रयके मरनेमें स्नान मात्र करना ऐसा **निर्णयसिंधुके** अभिप्रायसें सिद्ध होता है. **नागोजीभट्टके** मतमें तौ पुत्रपदकी तरह तिस वाक्यमें स्थित हुये आत्मपदकाभी कन्याविषयक होनेसें कन्याओंनेंभी बंधुत्रयका आशौच करना ऐसा प्राप्त होता है; परंतु तिस विषयमें बहुशिष्टाचारानिंदा होती है इस लिये **निर्णयसिंधुका** अभिप्राय योग्य है ऐसा मालूम होता है.

अत्रेदंतत्त्वं देवदत्तीयबंधुनवकमध्येआत्मबंधुत्रयेसंबंधसाम्यात्परस्परमाशौचं अवशिष्ट बंधुषट्केतु बंधुषट्कमरणेदेवदत्तस्यआशौचंदेवदत्तस्यमरणेतुबंधुषट्कस्यनाशौचंसंबंधाभावादितिसुधीभिरूह्यं दत्तकस्यमरणेपूर्वापरपित्रोस्त्रिरात्रंसपिंडानामेकाहमाशौचं नीलकंठीये दत्तकनिर्णयेतूपनीतदत्तकमरणादौपालकपित्रादिसपिंडानांदशाहादिकमेवाशौचमित्युक्तं दत्तकेनापिपूर्वापरपित्रोर्मृतौत्रिरात्रंपूर्वापरसपिंडानांमरणेएकाहः पित्रोरौर्ध्वदेहिककरणेतु कर्मांगंदशाहमेव दत्तकस्यपुत्रपौत्रादेर्जननेमरणेवापूर्वापरसपिंडानामेकाहः एवंपूर्वापरसपिंडमरणादावपिदत्तकपुत्रपौत्रादेरेकाहः इदंसपिंडसमानोदकभिन्नेदत्तीकृतेज्ञेयं सगोत्रसपिंडेसोदकेचदत्तीकृतेयथाक्रमंदशाहंत्रिरात्रंचयथाप्राप्तंभवत्येव ॥

यहां यह तत्त्व है. देवदत्तके नव बंधुओंमें आत्मबंधुत्रयविषे संबंधके समानपनेसें आपसमें आशौच है. शेष रहे छह बंधुओंमें छह बंधुओंमांहसें मरण होनेमें देवदत्तकों आशौच कहा है. परंतु देवदत्तके मरनेमें तौ बंधुषट्ककों आशौच नहीं है. क्योंकी, संबंधका अभाव है; ऐसा पंडितोंनें जानना. दत्तक अर्थात् गोद हुए पुत्रके मरनेमें दोनों मातापिताओंकों तीन रात्रि आशौच है, और सपिंडोंकों एक दिन आशौच है. नीलकंठकृत **दत्तकनिर्णयमें** तौ यज्ञोपवीतकों प्राप्त हुए दत्तक पुत्रके मरनेमें पालक पिता आदि सपिंडोंकों दश दिन आदि आशौच कहा है. दत्तक पुत्रकोंभी दोनों माता पिताओंके मरनेमें तीन रात्रि आशौच और दोनों मातापिताओंके सपिंडोंके मरनेमें एक

दिन आशौच है. मातापिताका और्ध्वदेहिक कर्म करना होवै तौ कर्मसंबंधी दश दिन आशौच होता है. दत्तकके पुत्र और पौत्र आदिकोंके जन्म और मरणमें दोनों पक्षके सपिंडोंकों एक दिन आशौच है. इस प्रकारसें दोनों पक्षके सपिंडोंके मरण आदिविषे दत्तकके पुत्र और पौत्र आदिकोंकोंभी एक दिन आशौच है. यह निर्णय सपिंड और समानोदक इन्होंसें भिन्न जो गोद लिया पुत्र होवै तिसके विषयमें है. सगोत्री, सपिंड और सोदक इन्होंमांहसें गोद लिया होवै तौ यथाक्रम दश दिन, तीन रात्रि आशौच है.

आचार्येमृतेत्रिरात्रं ग्रामांतरेमृतेपाक्षिणी उपनीयवेदाध्यापकःआचार्यः स्मार्तकर्मनिर्वाहकोप्याचार्यःआचार्यभार्यासुतयोर्मरणेएकाहः मंत्रोपदेशकगुरुमरणेत्रिरात्रं ग्रामांतरेपक्षिणी शास्त्राध्यापकोव्याकरणज्योतिःशास्त्राद्यंगाध्यापकश्चानूचानसंज्ञकस्तन्मरणेएकाहः सकलवेदाध्यापकगुरुमरणेपक्षिणी वेदैकदेशाध्यापकउपाध्यायस्तन्मरणेएकाहः शिष्यस्योपनीयाध्यापितस्यमृतौत्रिरात्रं निवृत्ताध्ययनस्यमृतौपक्षिणी परोपनीतस्यबहुकालमध्यापितस्यमरणेएकाहः सहाध्यायिमृतौपक्षिणी ऋत्विज्यनिवृत्तर्त्विक्कर्मणिमृतेत्रिरात्रं ग्रामांतरेपक्षिणी कर्मनिवृत्तौग्रामांतरेएकाहः एकग्रामेपक्षिणी एवंयाज्यमरणेपि सार्थवेदाध्यायीश्रौतस्मार्तकर्मनिष्ठश्चश्रोत्रियस्तयोर्मरणेमैत्रीगृहानंतर्यादिसंबंधेत्रिरात्रं एकतरसंबंधेपक्षिणी संबंधाभावेएकाहः सवर्णमित्रमरणेएकाहः यतिमरणेसर्वसपिंडानांस्नानमात्रं स्वगृहेउदासीनासपिंडमरणेएकाहः स्वाधिष्ठितस्वगृहेअसपिंडमरणेत्र्यहं आशौचप्रयोजकसंबंधिनिस्वगृहेमृते त्रिरात्रं ग्रामाधिपदेशाधिपादेर्मृतौसज्योतिः दिवामरणेरात्रौस्नानाच्छुद्धिःरात्रिमरणेदिवाशुद्धिरितिसज्योतिःपदार्थः पक्षिणीपदार्थस्तुदिवामरणेसदिवसःसारात्रिर्द्वितीयदिवसेनक्षत्रदर्शनपर्यंतमिति आगामिवर्तमानाहर्द्वययुतामध्यगतारात्रिः रात्रिमरणेसारात्रिस्तदुत्तरमहोरात्रिश्चेतिपक्षिणी केचित्तुरात्रिमरणेपिमरणादिनाद्द्वितीयदिनस्थनक्षत्रपर्यंतमेवपक्षिणीपदार्थइत्याहुः एवमतिक्रांतेविषयेदिवारात्रौवामरणज्ञानानुसारेणपक्षिणीव्यवस्थायोज्या ॥

आचार्यके मरनेमें तीन रात्रि आशौच है. दूसरे गामविषे आचार्यके मरनेमें डेढ दिन आशौच है. यज्ञोपवीत कर्म कराके वेद पढानेवाला आचार्य होता है. स्मार्तकर्मका निर्वाहकभी आचार्य है. आचार्यकी स्त्री और पुत्रके मरनेमें एक दिन आशौच है. मंत्रका उपदेश करनेवाले गुरुके मरनेमें तीन रात्रि आशौच है. दूसरे गाममें डेढ दिन आशौच है. शास्त्र पढानेवाला और व्याकरण, ज्योतिषशास्त्र आदि अंगोंकों पढानेवाला और गुरुसें अंगोंसहित वेदोंकों पढानेवाला ऐसे गुरुओंके मरनेमें एक दिन आशौच है. संपूर्ण वेदोंकों पढानेवाले गुरुके मरनेमें डेढ दिन आशौच है. वेदके एकदेशकों पढानेवाले गुरुके मरनेमें एक दिन आशौच है. यज्ञोपवीत कराके पठित कराये शिष्यके मरनेमें तीन रात्रि आशौच है. अध्ययन समाप्त हुए ऐसे शिष्यके मरनेमें डेढ दिन आशौच है. दूसरेनें यज्ञोपवीतकों प्राप्त किया हुआ और बहुत कालपर्यंत अध्ययन पढाये हुए ऐसे शिष्यके मरनेमें एक दिन आशौच है. सहाध्यायीके मरनेमें डेढ दिन आशौच है. ऋत्विक्कर्म समाप्त नहीं किये हुए ऐसे ऋत्विक्कें मरनेमें यजमानकों तीन रात्रि आशौच है. दूसरे गामविषे मरनेमें डेढ

दिन आशौच है. कर्मकी निवृत्ति होनेविषे दूसरे गाममें एक दिन आशौच है. एक गाममें डेढ दिन आशौच है. ऐसेही यजमानके मरनेमेंभी आशौच जानना. अर्थसहित वेदोंको पढानेवाला और श्रौतस्मार्तकर्मनिष्ठ ऐसा जो श्रोत्रिय इन दोनोंके मरनेमें, मित्रता और घरकी समीपता होवै तौ तीन रात्रि आशौच है. दोनोंमांहसें एक संबंध होवै तौ डेढ दिन आशौच है. संबंधके अभावमें एक दिन आशौच है. अपनी जातिके मित्रके मरनेमें एक दिन आशौच है. संन्यासीके मरनेमें सब प्रकारके सपिंडोंनें स्नान मात्र करना. अपने घरमें उदासीन जो असपिंड है तिसके मरनेमें एक दिन आशौच है. अपने रहनेके घरविषे असपिंड मर जावै तौ तीन दिन आशौच है. आशौचका उत्पादक संबंधी अपने घरमें मर जावै तौ तीन रात्रि आशौच है. ग्रामके स्वामीके और देशके स्वामीके मरनेमें सज्योति आशौच है. दिनविषे मरनेमें रात्रिविषे स्नानसें शुद्धि है और रात्रिविषे मरनेमें दिनविषे शुद्धि है, ऐसा सज्योतिपदका अर्थ है. पक्षिणीपदका अर्थ तौ दिनमें मरना होवै तौ वह दिन, वह रात्रि और दूसरे दिनमें नक्षत्रदर्शनपर्यंत ऐसा पक्षिणी जानना. आगामी और वर्तमान इन दो दिनोंसें युत मध्यगतरात्रि पक्षिणी जाननी. रात्रिविषे मरनेमें वह रात्रि और तिसके अनंतर दिनरात्रि पक्षिणी जाननी. कितनेक ग्रंथकार तौ रात्रिविषे मरनेमें मरणदिनसें दूसरे दिनके नक्षत्रदर्शनपर्यंत पक्षिणी जानना ऐसा कहते हैं. इस प्रकारसें अतिक्रांत आशौचविषे दिनमें अथवा रात्रिमें मरणके ज्ञानके अनुसार पक्षिणीकी व्यवस्था जाननी.

आचार्यमातुलादीनांत्रिरात्राद्याशौचमन्यस्मिन्नंत्यकर्मकर्तरिज्ञेयं शिष्यादीनामंत्यकर्मकर्तृत्वेतुदशाहाद्येव ॥

आचार्य, मामा इन आदिकोंका जो तीन रात्रि आदिक आशौच कहा है वह दूसरा अंत्यक्रिया कर्ता होवै तौ जानना. शिष्य आदि अंत्यक्रिया करनेवाले होवैं तौ दश दिन आदि आशौच है.

ग्राममध्येयावच्छवस्तिष्ठतितावद्ग्रामस्याशौचं नगरेतुनैवं ग्रामनगरलक्षणान्यन्यत्रगृहेगवादिपशुमृतौयावच्छवस्तिष्ठेत्तावदाशौचं द्विजगृहेशुनोमृतौगृहस्यदशरात्रमाशौचंशूद्रमरणेमासं पतितमृतौमासद्वयं म्लेच्छादिमृतौमासचतुष्टयं दासानांगृहजातक्रीतऋणमोक्षितलब्धत्वादिप्रकाराणांस्वामिमरणेस्वजातीयाशौचं युद्धेशस्त्रघातेनसद्योमृतेस्नानमात्रंनाशौचमंत्यकर्मापिदशाहादिकंसद्यएवकर्तव्यं युद्धक्षतेनकालांतरेमरणेएकाहः त्र्यहादूर्ध्वंयुद्धक्षतेनमरणेपराङ्मुखहतेयुद्धेकपटेनहतेचत्रिरात्रं युद्धक्षतेनसप्तरात्रादूर्ध्वंमृतौदशाहइत्याहुः शिष्टास्तुयुद्धेहतस्यसद्यःशौचादिकंलोकविद्विष्टत्वान्नवदंति प्रयागादौकाम्यमरणेस्नानमात्रं प्रायश्चित्तार्थमग्न्यादिमरणेएकाहः महारोगपीडाक्षमाणांजलादिप्रवेशेत्रिरात्रं अत्रापिनाशिष्टाचारसंमतिः एवंकारागृहेमृतस्यैकरात्रेपि ॥

गाममें जबतक मुर्दा स्थित रहै तबतक गामकों आशौच है. नगरमें तौ आशौच नहीं है. गाम और नगरके लक्षण दूसरे ग्रंथमें देख लेने. घरविषे गौ आदि पशुके मरनेमें जबतक वह मुर्दा स्थित रहै तबतक गृहकों आशौच है. ब्राह्मण आदि द्विजके घरविषे कुत्ताके

मरनेमें घरकों दश रात्रि आशौच है. शूद्रके मरनेमें एक महीना आशौच है. पतितके मरनेमें दो महीने आशौच है. म्लेच्छ आदिके मरनेमें चार महीने आशौच है. घरमें जन्मा हुआ और मोल देके लिया हुआ, कर्जासें मुक्त किया हुआ, अपने सामिल मिलाया हुआ ऐसे दासोंनें स्वामियोंके मरनेमें अपनी जातिके पुरुषके समान आशौच पालना. युद्धविषे शस्त्रके लगनेसें तत्काल मरनेमें स्नान मात्र करना, आशौच नहीं है. और तिसका दशाह आदि अंत्यकर्मभी तत्कालही करना योग्य है. युद्धमें घायल होके कालांतरविषे मरनेमें एक दिन आशौच है. युद्धमें घायल होके तीन दिनके उपरंत मरनेमें, और युद्धमें पराङ्मुख होके मरनेमें और युद्धमें कपट करके मरनेमें तीन रात्रि आशौच है. युद्धमें घायल होके सात दिनके उपरंत मरे तौ दश दिन आशौच है ऐसा कहते हैं. शिष्ट जन तौ युद्धविषे मृत हुए मनुष्यकी सद्यःशुद्धि लोकविद्विष्टके लिये नहीं कहते हैं. प्रयाग आदिविषे कामनाके अनुसार मरनेमें स्नान मात्र आशौच है. प्रायश्चित्तके अर्थ अग्नि आदिविषे मरनेमें एक दिन आशौच है. महारोगकी पीडा सहन करनेमें असमर्थ होके जल आदिविषे प्रवेश करके मरनेमें तीन रात्रि आशौच है. यहांभी शिष्टोंके आचारकी संमति नहीं है. इस प्रकार कारागृहमें मरनेवालेका जो एक रात्रि आशौच तिसविषेभी शिष्टाचारकी संमति नहीं है.

अथातिक्रांताशौचं तत्रजननाशौचेतिक्रांताशौचंनास्ति पितुःस्नानमात्रंतत्रापिभवति मृताशौचेप्यनुपनीतमरणादिनिमित्तेषुत्रिरात्रैकरात्रेषुमातुलादिपरगोत्रीयमरणनिमित्तकेषु पक्षिणीत्रिरात्रादिषुचातिक्रांताशौचंनास्ति तत्रोढकन्यायाःपित्रोर्मरणेत्रिरात्रेतिक्रांतेपि दशाहांतस्त्र्यहं तदूर्ध्ववत्सरांतरेपिपक्षिणीत्युक्तं एवंसोदकादिविषयेत्रिरात्रादिष्वतिक्रांताशौचंन स्नानमात्रंत्वत्रापिकालांतरेपिभवत्येव किंतुदशाहादिमृताशौचविषयमेवातिक्रांताशौचंकर्तव्यं तत्रदशाहाद्याशौचानांत्रिरात्रादीनांचतत्तदाशौचमध्येज्ञानेवशिष्टदिनैःशुद्धिः पुत्रादेरपिशेषदिनैरेवशुद्धिः अंत्यकर्मापिशेषदिनैरेवसमापनीयं एवमस्थिपर्णशरसंस्कारोपिशेषेणैवएवंसोदकत्रिरात्रेपिशेषेणशुद्धिः त्रिरात्राद्युत्तरंतुदशाहन्यूनाशौचानांदशाहमध्येज्ञानेपिनातिक्रांताशौचंकिंतुस्नानमात्रं मातापित्रोर्मरणेदूरदेशेपिवत्सरांतरेपिश्रवणेपुत्रस्यश्रवणप्रभृतिदशाहादिपूर्णमेवाशौचं दंपत्योःपरस्परंदेशांतरेकालांतरेपिपूर्णदशाहमेव सपत्नीनांपरस्परंदेशकालविशेषानपेक्षंदशाहमेव सापत्नमातुर्मरणे पुत्रस्यदशाहोर्ध्वंदेशकालानपेक्षंत्रिरात्रंऔरसपुत्रमृतौमातापित्रोर्वत्सरांतरेपित्रिरात्रं दशाहोर्ध्वमेकदेशेसपिंडमरणेज्ञातेमासत्रयपर्यंतंत्रिरात्रं षण्मासपर्यंतंपक्षिणी नवमासपर्यंतमेकरात्रं ततोवर्षपर्यंतंसज्योतिःस्नानमात्रंवामाधवमतेपक्षत्रयपर्यंतंत्रिरात्रं षण्मासपर्यंतंपक्षिणी वर्षपर्यंतमेकरात्रं वर्षोर्ध्वंस्नानमात्रमितिअत्रापदनापद्विषयत्वेनव्यवस्था ॥

अब अतिक्रांताशौच कहताहुं.

तहां जननाशौचमें अतिक्रांताशौच नहीं है. पिताकों स्नान मात्र, वह जननाशौचमेंभी है. मृताशौचमेंभी अनुपनीतके मरण आदि निमित्तक तीन रात्रि, एक रात्रि और परगोत्रस्थ

---

१ इदंमातुलादित्रिरात्रपक्षिण्यादीनामुपलक्षणं ॥

मामा आदिके मरणनिमित्तक जो पक्षिणी और तीन रात्रि आदि आशौच है तिन्होंमें अतिक्रांत आशौच नहीं है. तहां मातापिताका मरण होवै तौ विवाहित हुई कन्याकों तीन रात्रि आशौच है. वह अतिक्रांत अशौच होवै तौभी दश दिनके भीतर तीन रात्रि आशौच कहा है. दश दिनके अनंतर वर्षदिनपर्यंत डेढ दिन आशौच है ऐसा कहा है. इस प्रकार सोदक आदिके विषयमें जो तीन रात्रि आदि आशौच है तहां अतिक्रांताशौच नहीं है. तथापि यहांभी कालांतरमें स्नान मात्र करनाही उचित है. किंतु, दश दिन आदि मृताशौचमेंही अतिक्रांताशौच करना योग्य है. तहां दश दिन आदि और तीन दिन आदि आशौचोंका तिस तिस आशौचमें ज्ञान होनेविषे शेष रहे दिनोंकरके शुद्धि जाननी. पुत्र आदिकोंकीभी शेष दिनकरकेही शुद्धि जाननी. अंत्यकर्मभी शेष रहे दिनोंकरकेही समाप्त करना योग्य है. इस प्रकारसें अस्थिसंस्कार, पालाशसंस्कार, येभी शेष रहे दिनोंकरकेही समाप्त करने. इस प्रमाणसें सोदकके त्रिरात्राशौचकीभी शेष रहे दिनोंकरके शुद्धि जाननी. त्रिरात्र आदि आशौचके अनंतर तौ दश दिनसें कम आशौचका दश दिनोंविषे ज्ञान होवै तौभी अतिक्रांत आशौच नहीं है; किंतु, स्नान मात्र करना. मातापिताके मरनेमें दूर देशविषे और वर्षके अनंतर सुनना होवै तौभी पुत्रकों ज्ञात हुए दिनसें दश दिन आदि पूर्ण आशौच कहा है. स्त्रीपुरुषका आपसमें देशांतरमें और कालांतरमेंभी पूर्ण दश दिनका आशौच कहा है. सपत्नियोंकों अर्थात् सौकनोंकों आपसमें देश और कालके विशेषकी अपेक्षाके विना दश दिनका आशौच कहा है. सापत्न माता मर जावै तौ पुत्रकों दश दिनके अनंतर देश और कालकी अपेक्षाके विना तीन रात्रि आशौच कहा है. औरस पुत्रके मरनेमें मातापिताकों दूसरे वर्षमेंभी तीन रात्रि आशौच है. दश दिनके अनंतर एक देशमें सपिंड मनुष्यके मरणका ज्ञान होवै तौ तीन महीनेपर्यंत तीन रात्रि, छह महीनेपर्यंत डेढ दिन, नव महीनेपर्यंत एक रात्रि और नव महीनोंके उपरंत सज्योति अर्थात् दिनमें सुना जावै तौ दिनभर और रात्रिमें सुना जावै तौ रात्रिभर आशौच है किंवा स्नानमात्र आशौच है. माधवके मतमें तौ डेढ महीनापर्यंत तीन रात्रि, छह महीनेपर्यंत डेढ दिन, वर्षपर्यंत एक रात्रि और वर्षके उपरंत स्नान मात्र आशौच है. यहां आपत्काल और अनापत्कालके विषयत्वसें व्यवस्था जाननी.

अथदेशांतरेसपिंडमरणेदशाहोर्ध्वंज्ञातेपक्षत्रयपर्यंतंत्रिरात्रं षण्मासपर्यंतंपक्षिणी नवमासपर्यंतमेकाहः वर्षपर्यंतंसज्योतिरितिमाधवमतं विज्ञानेश्वरस्तुदेशांतरेसपिंडमरणेदशाहोर्ध्वंज्ञातेस्नानमात्रमित्याह अत्रमाधवमतमेवयुक्तं अतिक्रांताशौचंवयोवस्थानिमित्ताशौचंचसर्ववर्णसाधारणं देशांतरंतुविप्रस्यविंशतियोजनात्परं क्षत्रियादेःक्रमेणचतुर्विंशतित्रिंशत्षष्टियोजनैः केचिद्विप्रस्यत्रिंशद्योजनोत्तरंदेशांतरमाहुः भाषाभेदसहितमहागिरिणाभाषाभेदसहितमहानद्यावाव्यवधानमपिदेशांतरं यत्तुकेचिद्भाषाभेदरहितमपिगिरिनदीव्यवधानं देशांतरमाहुः तद्योजनगतविंशत्यादिसंख्यायास्त्रिचतुरादिन्यूनत्वेपिदेशांतरत्वसंपादकतयायोज्यमितिभाति अन्यथामहानदीपरपूर्वतीरवासिनामेकयोजनमध्येपिदेशांतरत्वापत्तेः अत्रसगोत्रविषया

---

१ यह मामा आदिकोंका त्रिरात्र, पक्षिणी आदि जो आशौच हैं तिन्होंका उपलक्षण है.

शौचान्येवभार्यापतिपुत्रादिभिःसर्वैरनुष्ठेयानि यानितुमातुलत्वभगिनीत्वादिप्रयुक्तानिभिन्नगोत्राशौचानितेषुजायापतिपुत्रादिषुमध्येयत्संबंधियत्तत्तेनैवानुष्ठेयंनसर्वैः ॥

इसके अनंतर देशांतरमें सपिंड मनुष्यका मरण दश दिनके उपरंत जाना जावै तौ डेढ महीनापर्यंत तीन रात्रि, छह महीनेपर्यंत डेढ दिन, नव महीनेपर्यंत एक दिन और वर्षपर्यंत सज्योति ऐसा **माधवका** मत है. **विज्ञानेश्वर** तौ देशांतरविषे सपिंडका मरना दश दिनसें उपरंत जाना जावै तौ स्नान मात्र करना ऐसा कहते हैं. यहां **माधवका** मतही योग्य है. अतिक्रांताशौच और वयोवस्थानिमित्तक आशौच ये दोनों सब वर्णोंमें साधारण कहे हैं. ब्राह्मणकों ८० कोशके परे देशांतर होता है. क्षत्रियकों ९६ कोशके परे, वैश्यकों १२० कोशके परे और शूद्रकों २४० कोशके परे ऐसा देशांतर कहा है. कितनेक ग्रंथकार ब्राह्मणकों १२० कोशके परे देशांतर कहते हैं. भाषाके भेदसें सहित बडा पर्वत अथवा भाषाके भेदसें सहित बीचमें बडी नदीकरके व्यवधानभी देशांतर होता है. कितनेक ग्रंथकार भाषाके भेदसें वर्जित बडा पर्वत अथवा बडी नदीकरके व्यवधानकों देशांतर कहते हैं. वह कोशोंकी ८० आदि संख्यामें तीन, चार आदि कम होनेमेंभी देशांतर होवैगा ऐसी संपादकताकरके युक्त करना ऐसा प्रतिभान होता है. ऐसा नहीं माना जावै तौ बडी नदीके पर और पूर्व तीरपर वसनेवालोंकों चार कोशके मध्यमेंभी देशांतर प्राप्त हो सक्ता है. यहां सगोत्रविषयक आशौचमात्र स्त्री, पति, पुत्र इन आदि सबोंनें अनुष्ठित करने. जो मामापना और बहनपना आदिकरके प्रयुक्त जो भिन्न गोत्रविषयक आशौच तिन्होंमें स्त्री, पति, पुत्र इन आदिविषे जिसका जो संबंधी होवै तिसका तिसनेंही आशौच अनुष्ठित करना, सबोंनें नहीं अनुष्ठित करना.

रात्रौजननमरणेरात्रौमरणज्ञानेवारात्रिंत्रिभागांकृत्वाप्रथमभागद्वयेपूर्वदिनंतृतीयभागेउत्तरदिनमारभ्याशौचं यद्वार्धरात्रात्प्राक्पूर्वदिनंपरतःपरदिनं अत्रदेशाचारादिनाव्यवस्था ॥

रात्रिविषे जन्म और मरण होनेमें अथवा रात्रिविषे मरणका ज्ञान होनेमें रात्रिके तीन भाग करके पहले दो भागोंविषे पहला दिन लेना और तीसरे भागविषे परदिन, तिस दिनसें आशौच अनुष्ठित करना. अथवा अर्ध रात्रके पहले पहला दिन और अर्ध रात्रके पश्चात् पिछला दिन लेना. यहां देशाचार आदिकरके व्यवस्था जाननी.

आहिताग्नेर्मंत्रवद्दाहदिनमारभ्यपुत्रादिभिराशौचंकार्यं अत्राहिताग्निपदेनश्रौताग्नित्रयवान्ग्राह्यः तद्भिन्नोगृह्याग्निमानप्यनाहिताग्निपदेनग्राह्यः आहिताग्नेर्विदेशमरणेमंत्रवद्दाहात्पूर्वं पुत्रादीनामाशौचंसंध्यादिनित्यकर्मलोपश्चनास्ति मंत्रवद्दाहमारभ्यतुपुत्रादिसपिंडानांदुहितृदौहित्रादिभिन्नगोत्राणांचाशौचंभवत्येवनत्वतिक्रांतनिमित्तकआशौचाभावस्तस्यह्रासोवाअत एवाहिताग्नेःपर्णशरदाहेपिदशाहमेवदेशांतरेकालांतरेपिसिद्ध्यति अनाहिताग्नेर्मरणदिनादारभ्यपुत्रादिभिराशौचंकार्यं अनाहिताग्नेर्देशांतरेमरणेअतिक्रांताशौचंमरणश्रवणानंतरमेवपूर्वोक्तव्यवस्थयाकार्यं अनाहिताग्नेरस्थिदाहपर्णशरदाहयोस्तुपूर्वमगृहीताशौचयोर्भार्यापुत्रयोर्दशाहमेव गृहीताशौचयोस्तुसंस्कारकर्तृभिन्नयोर्दाहकालेत्रिरात्रं सपत्न्योर्मिथश्चैवंपत्नीसं

स्कारेपत्युश्चैवं एतद्भिन्नसपिंडानांतुपूर्वमगृहीताशौचानामनाहिताग्निसंस्कारकालेत्रिरात्रं गृहीताशौचानांतुसपिंडानांदाहकालेस्नानमात्रं इदं सपिंडानांत्रिरात्रादिकंपुत्रादेर्दशाहादिकंचदशाहोर्ध्वसंस्कारकरणेज्ञेयं दशाहमध्येसंस्कारकरणेतुशेषदिनैरेवशुद्धिःकर्मसमाप्तिश्च आहिताग्नेरेवदशाहमध्येपिशरीरदाहेस्थिदाहेपर्णशरदाहेवाशेषेणनशुद्धिःसमंत्रकदाहदिनस्यैवप्रथमदिनत्वादित्युक्तं दशाहोर्ध्वदेशांतरमृतानाहिताग्निवार्ताश्रवणादिनाकृतत्रिरात्राशौचानांसपिंडानांचतुर्थादिदिनेषुसंस्कारारंभेदाहकाले स्नानं अगृहीताशौचानांत्रिदिनमेव भार्यापुत्रादेःश्रवणादिनादारभ्यदशाहंद्वितीयादावहन्यारंभेचतुर्थदिनेसपिंडशुद्धिः भार्यादेर्दशाहमेव श्रवणादिनादित्यूह्यं देशांतरगतस्यद्वादशवर्षादिप्रतीक्षोत्तरंपर्णशरदाहेप्येवमेवपुत्रादेःसपिंडानांचदशरात्रंत्रिरात्रादिकमूह्यं प्रतीक्षाचयदारभ्यवार्तानश्रूयतेतदारभ्यपंचदशवर्षाणिमातापित्रोः अन्येषांपूर्ववयसिविंशतिः मध्यमेपंचदश उत्तरेवयसिद्वादश प्रतीक्षायुक्त्यादिभिर्मरणनिश्चयासंभवेकार्या ॥

आहिताग्निका समंत्रक दाह जिस दिनमें हुआ होवै तिस दिनसें आरंभ करके पुत्र आदिकोंनें आशौच करना. यहां 'आहिताग्नि' इस पदकरके तीन श्रौताग्निवाला ग्रहण करना. तिस्सें भिन्न गृह्याग्निवाला 'अनाहिताग्नि' इस पदकरके ग्रहण करना. आहिताग्निका विदेशमें मरण होवै तौ समंत्रक दाहके पहले पुत्र आदिकोंको आशौच और संध्या आदि नित्यकर्मका लोप नहीं होता है. समंत्रक दाहके आरंभसें तौ पुत्र आदि सपिंडोंकों और पुत्री, धेवता इन आदि भिन्न गोत्रवालोंकों आशौच होताही है. अतिक्रांतनिमित्तक आशौचका अभाव अथवा तिस आशौचकों न्यून करना ये नहीं हैं, इसी कारणसेंही आहिताग्निका पालाशविधिदाह हुआ होवै तौभी देशांतर और कालांतरके होनेमेंभी दश दिनका आशौच है ऐसा सिद्ध होता है. अनाहिताग्निके मरणदिनसें आरंभ करके पुत्र आदिकोंनें आशौच करना. अनाहिताग्नि देशांतरमें मरै तौ अतिक्रांताशौच, मरण सुननेसें अनंतरही पूर्वोक्त व्यवस्थाकरके करना. अनाहिताग्निका अस्थिदाह अथवा पर्णशरदाह होवै तौ पहले नहीं ग्रहण किया है आशौच जिन्होंनें ऐसे स्त्री और पुत्रकों दश दिन आशौच है. गृहीत किया है आशौच जिन्होंनें और संस्कारकर्तासें भिन्न ऐसे स्त्रीपुत्रकों दाहकालमें तीन रात्रि आशौच है. सपत्नियोंकाभी आपसमें इसी प्रकारसें आशौच जानना. स्त्रीके संस्कारमें पतिकोंभी ऐसाही आशौच जानना. इन्होंसें भिन्न जो सपिंड तिन्होंनें पहले आशौच नहीं ग्रहण किया होवै तौ अनाहिताग्निके संस्कारकालमें तीन रात्रि आशौच है. जिन सपिंडोंनें आशौच गृहीत किया होवै तिन्होंनें दाहकालमें स्नानमात्र करना. यह सपिंडोंको त्रिरात्र आदिक और पुत्र आदिकोंको दश दिन आदि जो आशौच कहा है वह दश दिनके अनंतर संस्कार करनेमें जानना. दश दिनके मध्यमें संस्कार करना होवै तौ शेष दिनोंकरकेही शुद्धि और कर्मकी समाप्ति होती है. आहिताग्निकाही दश दिनके मध्यमेंभी शरीरदाह अथवा अस्थिदाह अथवा पर्णशरदाह इन्होंमें शेष दिनोंकरके शुद्धि नहीं होती है; क्योंकी आहिताग्निका समंत्रक दाह जिस दिनमें होता है वहही तिसका प्रथम दिन है ऐसा कहा है. देशांतरमें मृत हुआ जो अनाहिताग्नि तिसकी मृतवार्ता दश दिनके अनंतर सुननेसें सुननेके दिनसें त्रिरात्र आशौच सपिंडोंनें अनुष्ठित किया होके चतुर्थ

आदि दिनोंमें क्रियाका आरंभ होवै तौ सपिंडोंनें दाहकालविषे स्नान मात्र करना. अगृहीत आशौचवाले सपिंडोंनें तीन दिनही आशौच अनुष्ठित करना. स्त्री, पुत्र आदिकों श्रवणदिनसें दश दिन आशौच है. दूसरे आदि दिनमें संस्कारका आरंभ करनेविषे चतुर्थ दिनमें सपिंडोंकी शुद्धि होती है. भार्या आदिकोंकी श्रवण दिनसें दश दिनसेंही शुद्धि होती है ऐसा जानना. देशांतरमें गये हुए मनुष्यकी बारह वर्षपर्यंत प्रतीक्षा करके पीछे पालाशविधिसें दाह किया होवै तौभी ऐसाही निर्णय जानना. पुत्रादिक और सपिंड इन्होंकों क्रमसें दश रात्र, त्रिरात्र आदि आशौच जानना. प्रतीक्षा करनेकी सो जिस दिनसें वार्ता नहीं सुनी होवै तिस दिनसें पंदरह वर्षपर्यंत माता और पिताकी प्रतीक्षा करनी. अन्य मनुष्योंकी पहली अवस्थामें वीस वर्ष, मध्यम अवस्थामें पंदरह वर्ष और उत्तर अवस्थामें बारह वर्ष प्रतीक्षा अर्थात् वाट देखनी. युक्ति आदि करके मरणके निश्चयके अभावमें प्रतीक्षा करनी.

अथाशौचसंपातेनिर्णयः दशाहमृताशौचेदशाहस्यततोन्यूनस्यवामृताशौचस्यसंपातेपूर्वप्रवृत्ताशौचसमाप्त्याशुद्धिः १ दशाहजननाशौचेदशाहंन्यूनंवाजननाशौचंपततिचेत्पूर्वप्रवृत्तसमाप्त्याशुद्धिः २ दशाहमृताशौचेजननाशौचंदशाहंत्र्यहंवासंपतेत्तदामृताशौचसमाप्त्याशुद्धिः ३ त्र्यहमृताशौचेत्र्यहंततोन्यूनंवामृताशौचंत्र्यहंजननाशौचंवासंपतेत्तदापूर्वप्रवृत्तांतेशुद्धिः ४ त्रिदिनजननाशौचेत्रिदिनजननाशौचपातेपूर्वांतेशुद्धिः ५ पक्षिणीमृताशौचेपक्षिण्येकाहान्यतरमृतकपातेपूर्वांतेशुद्धिः जननाशौचेनसमेनाधिकेनवामृताशौचं नापैति पक्षिण्यादिरूपमृतकेनत्रिदिनंदशाहंचजननाशौचंत्रिदिनमृताशौचेनदशाहंजाताशौचं च नापैतीतिवहवः कश्चित्तुन्यूनेनापिमृतकेनाधिकस्यापिजाताशौचस्यानिवृत्तिरित्याह त्रिदिनमृताशौचेनदशाहंमृतकंननिवर्तते एवंपक्षिण्यात्रिदिनमेकाहेनपक्षिणीचनापैति त्रिदिनजाताशौचेनदशाहंजाताशौचंननिवर्तते ॥

अब आशौचसंपातविषे निर्णय कहताहुं.

१ दश दिनके मृताशौचमें दूसरा दश दिनका अथवा इस्सेंभी कम दिनका मृताशौच प्राप्त होवै तौ पहले प्रवृत्त हुए आशौचकी समाप्ति करके शुद्धि होती है. २ दश दिनके जननाशौचमें दश दिनका अथवा कम दिनका जननाशौच प्राप्त होवै तौ पहले प्रवृत्त हुएकी समाप्ति होनेसें शुद्धि होती है. ३ दश दिनोंके मृताशौचमें दश दिनवाला अथवा तीन दिनवाला जननाशौच प्राप्त होवै तौ तिस कालमें मृताशौचकी समाप्तिकरके शुद्धि होती है. ४ तीन दिनवाले मृताशौचमें तीन दिनका किंवा कम दिनका मृताशौच किंवा तीन दिनका जननाशौच प्राप्त होवै तौ पूर्वाशौचके अंतमें शुद्धि होती है. ५ तीन दिनोंवाले जननाशौचमें तीन दिनोंका जननाशौच प्राप्त होवै तौ पूर्वाशौचके अंतमें शुद्धि होती है. डेढ दिनवाले मृताशौचमें डेढ दिनवाला और एक दिनवाला इन्होंमांहसें एक कोईसा मृताशौच प्राप्त होवै तौ पूर्वाशौचके अंतमें शुद्धि होती है. समानरूपी अथवा अधिक ऐसे जननाशौचकरके मृताशौच दूर नहीं होता है. डेढ दिन आदिरूप मृताशौचकरके तीन दिनवाला और दश दिनोंवाला जननाशौच और तीन दिनवाले मृताशौचकरके दश दिनोंवाला जननाशौच दूर

नहीं होता है, ऐसा बहुतसे ग्रंथकार कहते हैं. कितनेक ग्रंथकार तौ न्यूनरूपी मृताशौचकरके अधिकरूपी जननाशौचकी निवृत्ति होती है ऐसा कहते हैं. तीन दिनोंवाले मृताशौचकरके दश दिनोंवाला मृताशौच दूर नहीं होता है. इस प्रकारसें डेढ दिनवाले आशौचकरके तीन दिनवाला आशौच और एक दिनवाले आशौचकरके डेढ दिनवाला आशौच दूर नहीं होता है. तीन दिनोंवाले जननाशौचकरके दश दिनोंवाला जननाशौच दूर नहीं होता है.

अत्रेदंबोध्यं संपातोनामाशौचिनामेकाशौचित्वज्ञानेपराशौचित्वज्ञानंतेनपूर्वाशौचमध्ये उत्पन्नमपिपराशौचंपूर्वाशौचांतेज्ञातंचेत्पूर्वेणननिवर्ततेसंपाताभावात् पूर्वत्वपरत्वेतूत्पत्तिकृतेन ज्ञानकृते तेनपूर्वोत्पन्नस्यपरोत्पन्नज्ञानोत्तरंज्ञानेपिपूर्वोत्पन्नेनपरोत्पन्नंतन्मध्येज्ञातंनिवर्ततएवसंपातएवज्ञानकृतोनतुपूर्वत्वादिकमितिसिद्धांतादिति दशाहांत्यरात्रौयदिनिवृत्तियोग्य[1]दशाहसंपातस्तदादिनद्वयमधिकंकार्यं दशमरात्रेश्चतुर्थयामेनिवृत्तियोग्यदशाहांतरसंपातेदिनत्रयमधिकम् दशाहांत्यरात्रौचतुर्थयामेवानिवृत्तियोग्यत्रिरात्राशौचपातेतुपूर्वेणशुद्धिर्नद्व्यहादिवृद्धिः एवंत्र्यहाद्याशौचानांनिवृत्तियोग्यानांपरस्परंतृतीयरात्रौतृतीयरात्रिशेषेवासंपातेपूर्वेणशुद्धिर्नद्व्यहादिवृद्धिः वर्धितद्वित्रिदिनेदशाहांतरपातेपूर्वेणद्विरात्रेणत्रिरात्रेणवाननिवृत्तिःवर्धितद्विरात्रेणपक्षिण्यानिवृत्तिः वर्धितत्रिरात्रेणान्यत्रिरात्रस्यनिवृत्तिः ॥

यहां ऐसा जानना योग्य है—आशौचियोंकों एक आशौचके ज्ञानमें दूसरे आशौचका जो ज्ञान वह **संपात** होता है. तिसकरके ऐसा होता है की, पूर्वाशौचविषे दूसरा आशौच प्राप्त होवै तौभी पूर्वाशौचके अंतमें जाना जावै तौ पूर्वाशौचकरके वह आशौच दूर नहीं होता है; क्योंकी, संपातका अभाव है. पूर्वत्व और परत्व ये दोनों उत्पत्तिकृत हैं, ज्ञानकृत नहीं हैं; तिसकरके पूर्वोत्पन्न आशौचका ज्ञान परोत्पन्न आशौचके ज्ञानके उपरंत होवै तौभी पूर्वोत्पन्नकरके परोत्पन्न तिसके मध्यमें ज्ञान होवै तौ वह आशौच दूर होताही है. क्योंकी, संपातही ज्ञानकृत है. पूर्वत्वादिक ज्ञानकृत नहीं है ऐसा सिद्धांत है. दश दिनके आशौचकी अंतकी रात्रिमें जो निवृत्ति होनेकों योग्य ऐसे दश दिनोंका आशौच प्राप्त होवै तौ दो दिन अधिक करना. दशमी रात्रिके चौथे प्रहरमें निवृत्तिके योग्य ऐसा दश दिनोंका दूसरा आशौच प्राप्त होवै तौ तीन दिन अधिक करना. दशमे दिनके अंतकी रात्रिविषे अथवा चौथे प्रहरमें निवृत्ति होनेकों योग्य ऐसा तीन रात्रिका आशौच प्राप्त होवै तौ पूर्वाशौचकरके शुद्धि होती है. दो दिन आदि अधिक करनेका प्रयोजन नहीं है. ऐसेही निवृत्ति होनेके योग्य ऐसे तीन दिनवाले आशौचकी आपसमें तीसरी रात्रिमें अथवा तीसरी रात्रिके शेषमें प्राप्ति होवै तौ पूर्वाशौचसें दूसरे आशौचकी शुद्धि होती है. दो दिन आदि अधिक करनेका प्रयोजन नहीं है. अधिकरूपी ऐसा जो दो तीन दिनका आशौच है तिसमें दूसरा दश दिनोंवाला आशौच प्राप्त होवै तौ पहले दो किंवा तीन दिनोंके आशौचसें निवृत्ति नहीं होती है. अधिक किये दो रात्रिकरके डेढ दिनके आशौचकी निवृत्ति होती है. वर्धित किये त्रिरात्र आशौचकरके दूसरे त्रिरात्रकी निवृत्ति होती है.

यदातुभागिनेयादिर्मातुलादेरंत्यकर्मकरोतितदातन्निमित्तेदशाहाद्याशौचेसतियदिसपिंडम

---

[1] योग्यपदंजननदशाहेमृतदशाहवारणाय एवमग्रेप्यूह्यं ॥

रणनिमित्तंदशाहादिकंपतितितदातस्यपूर्वेणशुद्धिर्नभवति कर्मांगाशौचस्यास्पृश्यतामात्रप्रयोजकत्वेनसंध्यादिकर्मलोपाभावेनलघुत्वात् लघुनागुरोर्निवृत्त्यभावात् एवंत्रिरात्रपातेपिजननत्रिरात्रस्यनिवृत्तिर्मृतकत्रिरात्रस्यनेत्यादिकमूह्यं पुत्रस्यसपिंडाशौचेनमातापित्रोराशौचंनापैति एवंभार्यायाभर्त्राशौचंनापैति केचित्पत्युर्भार्याशौचमपिनापैतीत्याहुः मात्राशौचमध्येपित्राशौचपातेपूर्वांतेशुद्धिः स्मृत्यर्थसारादयस्तुपितुःसंपूर्णमेवाशौचंकार्यमित्याहुः पित्राशौचेमातुर्मरणेपित्राशौचंसमाप्यपक्षिणीमधिकांकुर्यात् इयंपक्षिणीवृद्धिर्दशमरात्रेरर्वाक्मरणेतज्ज्ञानेवाभवति दशमरात्रौतद्रात्रिचतुर्थयामेवामातृमरणादौतुद्विरात्रत्रिरात्रावेवनपक्षिणी मातुरनाहिताग्निभर्तुर्मरणात्द्वितीयादिदिनेषुसहगमनेपिनाधिकापक्षिणी भर्ताशौचांतेशुद्धिः नवश्राद्धपिंडादिकंयुगपत्समापयेत् भर्त्राशौचोत्तरमन्वारोहणेत्रिरात्रं एतत्त्रिरात्रंसपिंडानामेवपुत्रस्यतुमात्राशौचंसंपूर्णमेवेतिभाति सहगमनेसपिंडानामपिपूर्णमेवाशौचंत्रिरात्रंत्वनुगमनपरमितिगौडाः इदमेवयुक्तम् इयंसंपातेपूर्वेणशुद्धिः सूतिकायाअग्नि[1]दस्यचनास्ति यदा देशांतरमृतपितुर्वार्तांश्रुत्वापुत्रैर्दशाहमाशौचंकृतं संस्कारस्त्वस्थ्यलाभादिहेत्वंतरवशान्नकृतोदशाहोत्तरंचसंस्कारआरब्धस्तत्रसंस्कारकर्तुःपुत्रस्यकर्मांगंदशाहमाशौचं तदाशौचमध्येसपिंडमरणेपूर्वांतेशुद्धिर्नमातुर्मरणेपिनाधिकापक्षिणी किंतुसपिंडाशौचंमात्राशौचंचसंपूर्णमेवकार्यं अतिक्रांतकालाद्वर्तमानस्य बलवत्त्वात् एवंद्वादशवर्षादिप्रतीक्षोत्तरंपुत्रादिभिः क्रियमाणपित्रादिसंस्कारांगदशाहाशौचेन्यसपिंडादिमरणेपीतिपूर्वशेषेणशुद्धेरपवादः सिंधावुक्तः जननाशौचेमृताशौचेवामृतकसंपातेपिंडदानाद्यंतकर्मप्रतिबंधोनास्ति मृताशौचेजाताशौचेवापुत्रजननेजातकर्मादिप्रतिबंधोनास्तीत्येके पूर्वाशौचांतेजातकर्मेत्यन्ये मातुर्याधिकापक्षिणीतन्मध्येपितुर्महैकोद्दिष्टश्राद्धंवृषोत्सर्गशय्यादानादिकंचकुर्यात् अन्यसपिंडाशौचेत्वेकादशाहकृत्यंनकार्यमितिबहवः कार्यमितिकश्चित् ॥

जिस कालमें भानजा आदि मामा आदिका अंत्यकर्म करै तिस कालमें तन्निमित्तक दश दिन आदि आशौचमें जो सपिंड मनुष्यका मरणनिमित्तक दश दिनवाला आशौच प्राप्त होवै तौ तिस आशौचकी पूर्वाशौचकरके शुद्धि नहीं होती है. क्योंकी, कर्मांग आशौच अस्पर्शताकों मात्र कारण होनेसें संध्या आदि कर्मका लोप नहीं होनेसें वह लघु आशौच है, इसलिये लघुरूपी आशौचकरके गुरुरूपी आशौचकी निवृत्ति नहीं होती है. ऐसेही त्रिरात्र आशौचकी प्राप्तिमेंभी जन्मसंबंधी त्रिरात्र आशौचकी और मृतसंबंधी त्रिरात्र आशौचकी निवृत्ति नहीं होती है ऐसा जानना. पुत्रकों सपिंडाशौचकरके मातापिताका आशौच दूर नहीं होता है. ऐसेही भार्याकों जो पतिका आशौच वह दूर नहीं होता है. कितनेक ग्रंथकार पतिकों जो भार्याका आशौच वहभी दूर नहीं होता है ऐसा कहते हैं. माताके आशौचमें पिताका आशौच प्राप्त होवै तौ पूर्वाशौचके अंतमें शुद्धि होती है. **स्मृत्यर्थसार** आदि तौ पिताका संपूर्ण आशौच करना ऐसा कहते हैं. पिताके आशौचमें माताका मरण होवै तौ पिताका आशौच समाप्त करके माताका डेढ दिन अधिक करना. यह पक्षिणी अधिक आशौच करनेका सो दशमी रात्रिके पहले मरनेमें अथवा मरनेका ज्ञान होनेमें करना. दशमी रात्रिमें

---

[1] समंत्रकदाहकर्ता.

अथवा दशमी रात्रिके चौथे प्रहरमें मातका मरना आदिविषे तौ दो तीन रात्रिही अधिक करना. डेढ दिन अधिक नहीं करना. अनाहिताग्नि पतिके मरनेसें आरंभ करके दूसरे आदि दिनविषे मातानें सहगमन किया होवै तौभी माताका आशौच डेढ दिन अधिक नहीं करना; किंतु पतिके आशौचके अंतमें शुद्धि होती है. नवश्राद्ध और पिंड आदिक एकही कालमें समाप्त करने. पतिके आशौचके अनंतर स्त्री सती होवै तौ आशौच तीन रात्रि करना. और यह तीन रात्रिका आशौच सपिंड मनुष्योंकोंही है. पुत्रोंकों तौ माताका संपूर्ण आशौच रहता है ऐसा प्रतिभान होता है. सहगमनमें सपिंड मनुष्योंकों संपूर्ण आशौच है, तीन रात्रि आशौच तौ अनुगमनविषयक है ऐसा **गौड** कहते हैं. और यहही मत युक्त है. यह संपातमें पूर्वाशौचकरके जो शुद्धि होती है सो सूतिकाकी और अग्नि देनेवालेकी नहीं होती है. जिस समयमें देशांतरमें मृत हुए पिताके मरनेकी वार्ता सुनके पुत्रोंनें दश दिन आशौच किया और अस्थियोंका नहीं मिलना आदि कारणसें संस्कार नहीं किया जावै और दश दिनके उपरंत संस्कारका आरंभ किया जावै तौ तिस समयमें संस्कार करनेवाले पुत्रकों कर्मांगरूपी दश दिनका आशौच है. इस आशौचमें सपिंड मनुष्य मर जावै तौ पूर्वाशौचकरके शुद्धि नहीं होती है. माताके मरनेमेंभी डेढ दिन अधिक नहीं होता है; किंतु, सपिंडाशौच और मात्राशौच संपूर्णही करना; क्योंकी अतिक्रांत कालसें वर्तमान काल बलवान् है. ऐसेही बारह वर्ष आदि प्रतीक्षा किये पीछे पुत्र आदिकोंनें क्रियमाण जो पिता आदिकोंका संस्कार तिसके अंगरूपी दशाहाशौचमें अन्य सपिंड आदिका मरण होवै तौ पूर्वशेषकरके शुद्धिका अपवाद **निर्णयसिंधु** ग्रंथमें कहा है. जननाशौचमें अथवा मृताशौचमें मृताशौच प्राप्त होवै तब पिंडदान आदि अंतकर्मका प्रतिबंध नहीं है. मृताशौचमें अथवा जननाशौचमें पुत्रका जन्म होवै तौ जातकर्म आदि संस्कारका प्रतिबंध नहीं है; ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. पूर्वके आशौचके अंतमें जातकर्म करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. माताका जो अधिक डेढ दिन आशौच है तिसविषे पिताका महैकोद्दिष्टश्राद्ध, वृषोत्सर्ग, शय्यादान इन आदि करना. अन्य सपिंडोंके आशौचमें तौ एकादशाहका कर्म नहीं करना ऐसा बहुतसे ग्रंथकार कहते हैं. कोईक ग्रंथकार करना ऐसा कहता है.

अथशवस्पर्शानुगमनादिसंसर्गाशौचं संसर्गाशौचेनित्यकर्मानधिकारोनास्ति किंत्वस्पृश्यत्वमात्रं तदपितदीयभार्यापुत्रादीनांनास्ति किंतुसंसर्गकर्तुरेव एवंतद्गृहवर्तितत्स्वामिकान्नादिद्रव्याणांनाग्राह्यत्वं तत्रसजातीयशवस्पर्शेसज्योतिराशौचं हीनवर्णस्पर्शेऽधिकंकल्प्यं ॥

अब शव अर्थात् मुर्दाकों छुहना और मुर्दाके साथ गमन करना इत्यादिक संसर्गाशौच कहताहुं.—संसर्गाशौचमें नित्यकर्म करनेका अधिकार है. किंतु, स्पर्श करना वर्जित है. वह स्पर्श करनाभी तिसकी स्त्री और पुत्र आदिकों नहीं है किंतु, संसर्ग करनेवालेकोंही है. इस प्रकार तिसके घरके पदार्थ, जिनके उपर तिसका स्वामित्व है ऐसे अन्न आदि द्रव्योंकों ग्रहण करना वर्जित नहीं है; तहां सजातीय शव अर्थात् मुर्दाका स्पर्श हुआ होवै तौ सज्योति आशौच है. हीनवर्णवाले मुर्दाके स्पर्शमें अधिक आशौच कल्पित करना.

अथानुगमने सजातीयस्यविजातीयस्यशवस्यानुगमनेस्नात्वाग्निसंस्पर्शंघृतप्राशनंचकृत्वापुनःस्नात्वाप्राणायामंकुर्यात् विप्रस्यशूद्रानुगमनेत्रिरात्रंनद्यांस्नानंघृतप्राशनंप्राणायामशतंचनात्रनित्यकर्मलोपः ॥

अब प्रेतके साथ अनुगमन करना होवै तौ कहताहुं.—अपनी जातिके अथवा दूसरी जातिके मुर्दाके साथ अनुगमन करनेमें स्नान करके अग्निसंस्पर्श और घृतप्राशन करके फिर स्नान करके प्राणायाम करना. ब्राह्मण शूद्रके शवके साथ अनुगमन करै तौ तीन रात्रि, नदीमें स्नान, घृतप्राशन और १०० प्राणायाम इन्होंकों करना. यहां नित्यकर्मका लोप नहीं है.

अथनिर्हरणे स्नेहेनसजातीयशवनिर्हरणेतदन्नाशनेतद्गृहवासेचदशाहः तद्गृहवासमात्रेन्नाशनमात्रेवात्रिरात्रम् अन्नाशनगृहवासयोरभावेएकाहः ग्रामांतरस्थंशवंनिर्हृत्यग्रामांतरवासेसज्योतिः मौल्यग्रहणेसजातीयनिर्हरणेदशाहः विजातीयनिर्हारेशवजातीयम् भृतिग्रहणेनहीनजातीयनिर्हरणेशवजातीयद्विगुणम् सोदकशवनिर्हरणेपिदशाहः शवालंकारकरणेपादकृच्छ्रं अज्ञानादुपवासः अशक्तौस्नानं धर्मार्थमनाथद्विजशवनिर्हरणेदाहकरणेचाश्वमेधादिपुण्यंस्नानमात्राच्छुद्धिः अग्निस्पर्शोघृताशनंचात्रापि धर्मार्थमपिशूद्रशवनिर्हरणेद्विजस्यैकाहः धर्मार्थमनाथशवानुगमनादौनदोषः ब्रह्मचारिणस्तुपितृमातृमातामहाचार्योपाध्यायभिन्नशवनिर्हरणादौव्रतलोपःपूर्वोक्तरीत्याशौचंच ततस्तेनकृच्छ्रप्रायश्चित्तंपुनरुपनयनंचकार्यं पित्रादेर्निर्हरणेपिब्रह्मचारिणाआशौचिनामन्नंनभक्ष्यं तेषांस्पर्शोपिनकार्यः अत्रापिनित्यकर्मलोपोन ॥

मुर्दाकों वहना अर्थात् कांधिया लगना होवै तौ कहताहुं.—स्नेहसें अपनी जातिके मुर्दाकों कांधिया लगनेमें, तिसके घरके अन्नकों खानेमें, और तिसके घरमें वसनेमें दश दिन आशौच है. तिसके घरमें वास मात्र करनेमें अथवा तिसके अन्नकों खानेमें तीन रात्रि आशौच है. अन्नका खाना और घरमें वास करना इन्होंके अभावमें एक दिन आशौच है. दूसरे ग्रामके मुर्दाकों कांधिया होके दूसरे ग्राममें वास करनेमें सज्योति आशौच है. अपनी जातिके मनुष्यके मुर्दाकों मोल लेकर कांधिया लगनेमें दश दिन आशौच है. दूसरी जातिके मुर्दाकों कांधिया लगनेमें मुर्दाकी जातिके समान आशौच है. मोल लेके हीन जातिके मुर्दाकों कांधिया लगनेमें मुर्दाकी जातिसें दुगुना आशौच है. सोदकसंज्ञक मुर्दाकों कांधिया लगनेमें दश दिन आशौच है. मुर्दाकों तिलक आदि करनेमें पादकृच्छ्र करना. विना जाने तिलक आदि करनेमें उपवास करना. उपवास करनेमें शक्ति नहीं होवै तौ स्नान करना. धर्मके अर्थ अनाथ ब्राह्मणके मुर्दाकों कांधिया लगनेमें और दाह करनेमें अश्वमेध आदि यज्ञका पुण्य मिलता है, और स्नान मात्र करनेसें शुद्धि होती है. यहांभी अग्निस्पर्श करके घृतप्राशन करना. धर्मके अर्थ शूद्र जातिके मुर्दाकों ब्राह्मण खांधिया लगै तौभी तिसकों एक दिन आशौच है. धर्मके अर्थ अनाथ अर्थात् जिसकों कोई नहीं होवै ऐसे मुर्दाके साथ गमन आदिमें दोष नहीं है. ब्रह्मचारीनें तौ पिता, माता, नाना, आचार्य, उपाध्याय इन्होंसें भिन्न मुर्दाकों कांधिया लगनेमें तिसके व्रतका लोप होता है और तिसकों पूर्वोक्त रीतिसें

आशौच लगता है. पीछे तिस ब्रह्मचारीनें कृच्छ्रप्रायश्चित्त और पुनरुपनयन करना. पिता आदिकों कांधिया लगनेमेंभी ब्रह्मचारीनें आशौचवालोंका अन्न नहीं भक्षण करना, और तिन्होंकों स्पर्शभी करना योग्य नहीं है. यहां आशौचमेंभी नित्यकर्मका लोप नहीं होता है.

अथदाहादौ समोत्कृष्टवर्णप्रेतस्यस्नेहादिनादाहोदकदानादिसकलौर्ध्वदेहिककरणेतत्तज्जात्याशौचं तदंतेस्नेहलोभाद्यनुसारेणगुरुलघुप्राजापत्यादीनांत्रय स्नेहादिनासवर्णानांदाहमात्रकरणेतद्गृहवासेत्रिरात्रं तदन्नभक्षणेदशरात्रं तदुभयाभावेएकाहः हीनवर्णेनोत्तमवर्णस्यदाहमात्रकरणेशवजात्याशौचं भृतिग्रहणेनसवर्णस्यदाहमात्रकरणेपिदशाहाद्येव मौल्येनोत्तमवर्णदाहेद्विगुणं उत्तमेनाधमवर्णदाहनिर्हरणकरणेतज्जात्याशौचंतदंतेक्रमेणद्विगुणं त्रिगुणंचतुर्गुणंप्रायश्चित्तं मौल्येनहीनवर्णदाहादौतुप्रायश्चित्तमाशौचंचोक्तापेक्षयाद्विगुणं धर्मार्थसमोत्कृष्टवर्णप्रेतस्यदाहादिसकलौर्ध्वदेहिककरणेपिनाशौचं नित्यपिंडदानाद्यनंतरंस्नानमात्राच्छुद्धिः द्विजेनशूद्रस्यधर्मेणापिदाहादिनकार्यं ॥

इसके अनंतर दाह आदि करनेमें निर्णय कहताहुं.—समान अथवा ऊंचे वर्णवाले प्रेतका स्नेह आदिकरके दाह, और जलदान इत्यादि संपूर्ण और्ध्वदेहिक कर्म करनेमें तिस तिस जातिका आशौच लगता है. और तिस आशौचके अंतमें स्नेह और लोभ आदिके अनुसार गुरु, लघु, प्राजापत्य इन आदि तीन प्रायश्चित्त करने. स्नेह आदि कारणसें समान वर्णवाले मनुष्यका दाह मात्र करनेमें और तिसके घरविषे वास करनेमें तीन रात्रि आशौच है. तिसका अन्न भक्षण करनेमें दश रात्रि आशौच है. इन दोनोंके अभावमें एक दिन आशौच है. हीन वर्णवालेनें उत्तमवर्णवालेका दाह मात्र करनेमें मुर्दाकी जातिके समान आशौच है. द्रव्य लेके समान वर्णवालेके शवका दाह मात्र करनेमेंभी दश दिन आदि आशौच है. मोल लेके उत्तम वर्णवालेके शवका दाह करनेमें दुगुना आशौच है. उत्तम वर्णवालेनें नीच वर्णवालेके शवका दाह करनेमें और कांधिया लगनेमें तिसकी जातिके अनुसार आशौच है. और आशौचके अनंतर क्रमकरके दुगुना, तिगुना और चौगुना प्रायश्चित्त करना. मोल लेके हीन वर्णवालेके दाह आदिमें तौ प्रायश्चित्त और आशौच उक्त आशौच और प्रायश्चित्तसें दुगुना करना. धर्मके अर्थ समान और ऊंचे वर्णवाले ऐसे प्रेतके दाह आदि संपूर्ण और्ध्वदेहिक कर्म करनेमेंभी आशौच नहीं है किंतु नित्य पिंडदानके अनंतर स्नानमात्र करनेसें शुद्धि होती है. द्विजोंनें शूद्रका दाह आदि धर्मके अर्थभी नहीं करना.

अथब्रह्मचारिणापितृमातृमातामहादीनामन्याधिकार्यभावेदाहाद्यंतकर्मकार्यं तदाकर्मांगंदशाहमस्पृश्यत्वलक्षणमाशौचंचकार्यं तदापितेषामाशौचिनामन्नंब्रह्मचारिणानभोक्तव्यं आशौचिस्पृष्टतया वासश्चनकार्यः तदुभयकरणेप्रायश्चित्तंपुनरुपनयनंच ब्रह्मचारिणापूर्वोक्तपित्रादिभिन्नानांदाहाद्यंतकर्मकरणेकृच्छ्रत्रयप्रायश्चित्तंपुनरुपनयनंचाशौचांतेकार्यम् पित्रादेर्दाहमात्रकरणेएकाहमाशौचंकार्यं अत्रसर्वत्रब्रह्मचारिणःसंध्याग्निकार्यादिकर्मलोपोन ब्रह्मचारिभिन्नस्यापिदाहादिनिमित्तकसंसर्गाशौचेब्रह्मयज्ञादिनित्यकर्मलोपोनेत्युक्तं तत्रदेवपूजावै

श्वदेवादिकमन्येनकारणीयम् स्वयंकर्तुंयोग्यंतुस्वेनैवकार्यम् ब्रह्मचारिणःपित्राद्यंत्यकर्माकरणेतुपित्रादिमरणेप्याशौचंन समावर्तनोत्तरंपूर्वमृतानांपित्रादिसपिंडानांत्रिरात्रमाशौचंकार्यं॥

इसके अनंतर ब्रह्मचारीनें पिता, माता, नाना इन आदिकोंका दूसरा अधिकारी नहीं होवै तौ दाह आदि अंत्यकर्म करना. और तिस कालमें कर्मका अंगभूत ऐसा दश दिन अस्पृश्यत्वलक्षण आशौच होता है. तिस कालमें तिन आशौचियोंका अन्न ब्रह्मचारीनें भक्षण करना नहीं, और आशौचियोंका स्पर्श होवै ऐसी जगह वास करना नहीं. तिन दोनोंके करनेमें प्रायश्चित्त और पुनरुपनयन करना. ब्रह्मचारीनें पूर्वोक्त पिता आदिसें भिन्न मनुष्योंका दाह आदि अंत्यकर्म करनेमें आशौचके अनंतर तीन कृच्छ्र प्रायश्चित्त और पुनरुपनयन करना. पिता आदिका दाह मात्र करनेमें एक दिन आशौच करना. यहां सब जगह ब्रह्मचारीके संध्या और होम आदि कर्मका लोप नहीं है. ब्रह्मचारीसें भिन्न मनुष्यकोंभी दाह आदिनिमित्तक संसर्गाशौच होनेमें ब्रह्मयज्ञादि नित्यकर्मका लोप नहीं है ऐसा कहा है; तहां देवताकी पूजा और वैश्वदेव आदि कर्म दूसरेके द्वारा कराना. आप करनेकों योग्य कर्म तौ आपही करना. ब्रह्मचारीनें पिता आदिका अंत्यकर्म नहीं किया होवै तौ तिसकों पिता आदिकोंके मरनेमेंभी आशौच नहीं है. समावर्तनके उपरंत पूर्व मृत हुये पिता आदि सपिंडोंका तीन रात्रि आशौच करना.

अथरोदनेआशौचादि विप्रादिभिःसवर्णमरणविषयेऽस्थिसंचयनात्पूर्वंरोदनेस्नानं तदुत्तरमाचमनं विप्रस्यशूद्रविषयेऽस्थिसंचयनात्प्राक्त्रिरात्रं तदुत्तरमेकरात्रं शूद्रस्यविषयेतद्गृहवासादिसंबंधेऽस्थिसंचयात्प्रागेकरात्रं तदूर्ध्वंस्नानं सपिंडानांत्वनुगमनरोदनादौनदोषः नात्रापिकर्मलोपः अत्रसर्वत्रयस्ययावानाशौचकालस्तंनिर्वाह्यस्नात्वैवसविशुद्ध्यतिनतुस्नानं विनातावत्कालमात्रातिक्रमेणशुद्धिः अंत्यकर्मकर्तुरस्थिसंचयनात्प्राक्स्त्रीसंगेचांद्रायणंप्रायश्चित्तं ऊर्ध्वंप्राजापत्यत्रयं अन्येषांमृताशौचिनांसंचयनात्प्राक्संगमेत्रिरात्रमुपवासः ऊर्ध्वमेकरात्रं ॥

अब रोदन किया होवै तौ आशौच कहताहुं.—ब्राह्मण आदिकोंनें अपने वर्णके मनुष्यके मरनेमें अस्थिसंचयनके पहिले रोदन किया होवै तौ स्नान करना. अस्थिसंचयनके उपरंत रोदन किया होवै तौ आचमन करना. ब्राह्मणनें शूद्रके मरनेमें अस्थिसंचयनके पहिले रोदन किया होवै तौ तिसकों तीन रात्रि आशौच है. अस्थिसंचयनके उपरंत एक रात्रि अशौच है. अस्थिसंचयनके पहिले शूद्रके घरमें वसना आदि संबंध होवै तौ एक रात्रि आशौच है. अस्थिसंचयनके उपरंत स्नान मात्र करना. सपिंडोंनें तौ मुर्दाके साथ गमन करनेमें और रोदन करनेमें दोष नहीं है. इस आशौचमेंभी कर्मका लोप नहीं करना. यहां सब जगह जिसकों जितना आशौचकाल कहा है तितना तिसनें पालन करके पीछे स्नानसेंही वह शुद्ध होता है. स्नान किये विना तिसनें कालका मात्र अतिक्रम करनेसें शुद्धि नहीं होती है. अंत्यकर्म करनेवालेनें अस्थिसंचयन करनेके पहिले स्त्रीसंग करनेमें चांद्रायण प्रायश्चित्त है. अस्थिसंचयनके उपरंत तीन प्राजापत्य प्रायश्चित्त करना. अन्य मृताशौचियोंनें अस्थिसंच-

यनके पहिले स्त्रीसंग किया होवै तौ तीन रात्रि उपवास करना. अस्थिसंचयनके उपरंत एक रात्रि उपवास करना.

अथाशौचान्नभक्षणे असगोत्रोनापदिबुद्धिपूर्वंसकृदप्याशौचिस्वामिकंपक्कमन्नंयस्मिन्दिने भुंक्तेतदारभ्यतेनयावत्तेषामाशौचमवशिष्टंतावदाशौचंकार्यं आशौचांतेचविप्राशौचेसांतपनंप्रायश्चित्तं शूद्राशौचेचांद्रायणं क्षत्रियादेःकलावभावान्नलिख्यते क्वचिल्लेखस्तुव्युत्पादनमात्रार्थोनेदानीमुपयुज्यतेइतिप्रायउपेक्ष्यते मत्याभ्यासेविप्रशूद्राशौचयोः क्रमेणमासंषण्मासंकृच्छ्रादिव्रताचरणं अमत्याभोजनेयावदन्नपाकमाशौचंक्रमेणैकरात्रंसप्तरात्रंचोपोषणंदशशतंच प्राणायामाः अमत्याभ्यासेद्विगुणं आपद्यमत्याभोजनेतदहराशौचमेकःप्राणायामः शूद्राशौचेऽष्टाधिकसहस्रगायत्रीजपः ज्ञानतःआपदित्रिरघमर्षणमत्रोत्तरसहस्रगायत्रीजपः शूद्राशौचेप्राजापत्यं शूद्रस्यद्विजाशौचेस्नानंपंचगव्याशनंच सर्वमिदंजननाशौचेन्यूनंयोज्यं एवमाहिताग्न्याशौचेपिन्यूनमितिस्मृत्यर्थसारे सर्वमिदमाशौचिस्वामिकान्नभोजने ॥

अब आशौचियोंके अन्नकों भक्षण करनेमें निर्णय कहताहुं.—असगोत्री मनुष्य आपत्कालके विना जानके एकवारभी आशौचीका पकाया हुआ अन्न जिस दिनमें खावै तिस दिनसें तिसनें जवतक तिन आशौचियोंका आशौच बाकी है तबतक आशौच करना. आशौचकी समाप्तिके अनंतर ब्राह्मणका आशौच होवै तौ सांतपन प्रायश्चित्त करना. शूद्रके आशौचमें चांद्रायण करना. क्षत्रिय और वैश्यका कलियुगमें अभाव होनेसें निर्णय नहीं लिखा है. कहींक ग्रंथमें लेख है परंतु वह तौ विशेष करके स्पष्टीकरणके अर्थ होके तिसका यहां उपयोग नहीं होनेसें प्रायशः त्याग दिया है. जानके अभ्यास होवै तौ ब्राह्मण और शूद्रके आशौचमें क्रमसें एक महीना और छह महीनोंपर्यंत कृच्छ्र आदि व्रतोंका आचरण करना. विनाजाने भोजन करनेमें जितना कालपर्यंत अन्नका पाक होवै तितने कालपर्यंत आशौच, क्रमसें एक रात्रि और सात रात्रि उपवास करके एक हजार प्राणायाम करने. विना जानके अभ्यास होवै तौ दुगुना प्रायश्चित्त करना. आपत्कालविषे विना जानके भोजन करनेमें वहही दिनपर्यंत आशौच करके एक प्राणायाम करना. शूद्रके आशौचमें १००८ गायत्रीजप करना. आपत्कालमें जानके भोजन करनेमें तीनवार अघमर्षण और १००८ गायत्रीजप करना. जानके शूद्रके आशौचमें प्रजापत्य करना. द्विजोंके आशौचमें शूद्रनें स्नान और पंचगव्यका प्राशन करना. यह सब प्रायश्चित्त जन्मके आशौचमें कम जानना. ऐसेही अग्निहोत्रीके आशौचमेंभी कम आशौच जानना, ऐसा **स्मृत्यर्थसार** ग्रंथमें कहा है.—यह सब निर्णय आशौचवाला जिसका स्वामी होवै तिसके अन्नके भक्षण करनेमें जानना.

यदातुतदस्वामिकमाशौचिस्पृष्टमात्रमन्नंभुंक्तेतदामत्याभोजनेकृच्छ्रं अमत्यार्धमितिस्मृत्यर्थसारेउक्तं आशौचिस्पृष्टाशौचिस्वामिकान्नभोजीतुतत्स्वामिकान्नाशननिमित्तंतत्स्पृष्टान्नाशननिमित्तंचेतिप्रायश्चित्तद्वयंसमुच्चयेनकुर्यात् आशौचिस्वामिकान्नप्रतिग्रहेतूक्तप्रायश्चित्तार्धंआशौचंतुनास्ति दातृभोक्तृभ्यामुभाभ्यामज्ञातेजननेमरणेवानदोषः अन्यतरेणज्ञातेदोषःतत्र

दातुर्ज्ञानेभोक्तुरज्ञानेभोक्तुरल्पंप्रायश्चित्तं दातुरज्ञानेपिभोक्तुर्ज्ञानेपूर्णमेव भोजननिमित्तक शौचेपिकर्मलोपोन ॥

जिस कालमें आशौचवालेका वह अन्न नहीं होके मात्र आशौचवालेनें छुहे हुए अन्नकों जानके भोजन करनेमें कृच्छ्रप्रायश्चित्त करना. नहीं जानके भोजन करनेमें आधा प्रायश्चित्त करना, ऐसा **स्मृत्यर्थसार** ग्रंथमें कहा है. आशौचवालेनें छुहा हुआ ऐसा आशौचिस्वामिक अन्न भक्षण करनेवालेनें तौ, आशौचिस्वामिक अन्न भक्षण किया, तिस निमित्तक और तिसनें छुहा हुआ अन्न भक्षण किया तिस निमित्तक ऐसे दो प्रायश्चित्त समुच्चयसें करने. आशौचवाला है स्वामी जिसका ऐसे मनुष्यके अन्नकों लेनेमें पूर्वोक्त प्रायश्चित्तसें आधा प्रायश्चित्त करना. आशौच नहीं लगता है. दाता और भोक्ता इन दोनोंकों अज्ञात जननाशौच अथवा मृताशौचमें दोष नहीं है. दोनोंमांहसें एक कोईकों ज्ञात होवै तौ दोष है. तहां दाता जानता होके भोक्ता नहीं जानता होवै तब भोक्ताकों अल्प प्रायश्चित्त है और दाताकों नहीं जाननेमेंभी भोक्ताके जाननेमें पूर्णही प्रायश्चित्त है. भोजननिमित्तक आशौचमें कर्मका लोप नहीं करना.

अथतुकथमपिस्वल्पसंबंधयुक्तेस्नानंवासोयुतंस्यादितित्रिंशच्छ्लोकी स्मृत्यर्थसारेप्येवंअय मस्यार्थः स्वल्पेनापिएकाहाद्याशौचप्रयोजकेनसंबंधेनयुक्तेशालकजामात्रादौमृतेसचैलंस्नानंकार्यम् सर्वत्रगुरुणोलघुनोवामृताशौचस्यप्राप्तिकालेसमाप्तिकालेचस्नातव्यमितियावत् अथवा स्वल्पैर्दशाहभिन्नपक्षिणीत्रिदिनाद्याशौचप्रयोजकैःसंबंधैःयुक्तेबंधुत्रयमातुलानुपनीतसपिंडादौमृतेदेशांतरेपिकालांतरेस्नानंभवत्येव तथाचयस्यसन्निहितकालेआशौचप्राप्तिस्तस्यातिक्रांत कालेस्नानं यस्यतुसन्निहितकालेपिस्नानमात्रंतस्यकालांतरेस्नानमपिनेत्यर्थः यद्वास्वल्पआशौचप्रयोजकसंबंधभिन्नःसंबंधः यथाशालकसुतत्वंऊढकन्यायाःपितृव्यतत्पुत्रत्वादिभगिन्या भ्रातृपुत्रत्वादितद्युक्तेआशौचाभावेपिस्नानमात्रंभवत्येव यत्किंचित्संबंधेआशौचाभावेपिस्नान मात्रंसन्निधौसर्वत्रकार्यमित्यर्थः पक्षत्रयमपिइदंशिष्टाचारेदृश्यतेइतियुक्तंभाति ॥

इसके अनंतर कैसाही स्वल्प संबंधसें युक्त मनुष्यका मरण होवै तवभी वस्त्रोंसहित स्नान करना ऐसा **त्रिंशच्छ्लोकी** ग्रंथमें कहा है, और **स्मृत्यर्थसार** ग्रंथमेंभी ऐसाही कहा है. इसका यह अर्थ है—एक दिन आदि आशौच उत्पन्न करनेवाला जो अल्प संबंध है तिसकरके युक्त ऐसा शाला, जमाई इन आदिके मरनेमें वस्त्रोंसहित स्नान करना. सब जगह गुरु अथवा लघुरूपी मृताशौचकी प्राप्तिकालमें और समाप्तिकालमें स्नान करना योग्य है ऐसा सिद्धांत है. अथवा दश दिनोंके आशौचके विना अन्य डेढ दिन, तीन दिन इत्यादि जो अशौच हैं तिन्होंकों कारणभूत जो संबंध तिन्होंसें युक्त ऐसे तीन बंधु, मामा, और जिसका जनेऊ नहीं हुआ होवै ऐसा सपिंड इत्यादिकके मरनेमें देशांतरविषे और कालांतरविषेभी स्नान कहा है. तैसाही जिसकों सन्निहितकालमें आशौचकी प्राप्ति होवै तिसकों अतिक्रांतकालमें स्नान कहा है. जिसकों सन्निहितकालमेंभी स्नानमात्र कहा है तिसकों कालांतरमें स्नानभी नहीं ऐसा अर्थ है. अथवा आशौचकों कारणभूतमात्र ऐसे संबंधके विना अन्य सं-

बंध, जैसा–शालाका पुत्र, विवाहित कन्याकों पितृव्य; पितृव्यका पुत्र आदि; बहनकों भाईका पुत्र आदि; ऐसे संबंधसें जो युक्त तिस विषयमें अशौच नहीं है. तथापि स्नान मात्र कहा है; अल्पस्वल्प संबंधमें आशौच नहीं होवै तबभी सन्निध होनेमें स्नान मात्र सब जगह करना ऐसा अर्थ है. ऐसे ये तीन पक्ष शिष्टाचारमें दिखते हैं. वे योग्य हैं ऐसा माळूम होता है.

अथाशौचापवादः सपंचधा कर्तृतः १ कर्मतः २ द्रव्यतः ३ मृतदोषतः ४ विधानतइति ५ ॥

इसके अनंतर आशौचका अपवाद कहताहुं.—वह अपवाद ५ प्रकारका है—१ कर्तासें, २ कर्मसें, ३ द्रव्यसें, ४ मृतदोषसें और ५ विधानसें ऐसा पांच प्रकारका कहा है.

तत्रकर्तृतोयथा यतीनांब्रह्मचारिणांचसपिंडजननमरणयोर्नाशौचं मातापितृमरणेतुयतिब्रह्मचारिणोःसचैलंस्नानमात्रंभवत्येव ब्रह्मचारिणःसमावर्तनोत्तरंब्रह्मचर्यदशायांमृतानांपित्रादिसपिंडानांत्रिरात्रमाशौचंउदकदानंचकार्यं अनुगमननिर्हरणनिमित्तकंत्वाशौचंब्रह्मचारिणोप्यस्त्येव पित्राद्यंत्यकर्मकरणेब्रह्मचारिणआशौचमप्यस्त्येव आरब्धप्रायश्चित्तानांप्रायश्चित्तानुष्ठानसमयेआशौचंन समाप्तेतुप्रायश्चित्तेत्रिरात्रमतिक्रांताशौचं कृतकर्मांगनांदीश्राद्धानांतत्कर्मसमाप्तिपर्यंतं तत्कर्मोपयोगिकार्येअर्त्यादिसंकटेआशौचंन जाताशौचमृताशौचवतोर्मरणसमयप्राप्तौनाशौचं तेनदानादिकंसतिवैराग्येआतुरस्यसंन्यासोपिभवतीतिसिंध्वादयः देशविप्लवदुर्भिक्षादिमहापदिसद्यःशौचं आपदपगमेआशौचावशेषेअवशिष्टाशौचमस्त्येव ॥

तिन्होंमें कर्ताके योगसें अपवाद कहताहुं.—संन्यासी, ब्रह्मचारी इन्होंकों सपिंडोंका जननाशौच और मृताशौच नहीं है. माता और पिताके मरनेमें संन्यासी और ब्रह्मचारीनें वस्त्रोंसहित स्नान अवश्य करना. ब्रह्मचारीका समावर्तन हुए पीछे ब्रह्मचर्यदशामें मृत हुये जो पिता आदि सपिंड तिन्होंका तीन रात्रि आशौच करके तिन्होंकों जलका दान करना. मुर्दाके साथ गमन करना और मुर्दाकों कांधिया लगना इस निमित्तवाले आशौच तौ ब्रह्मचारीकोंभी लगते हैं. पिता आदिकोंका अंत्यकर्म करनेमें ब्रह्मचारीकों आशौच रहता है. पहले आरंभित किये हैं प्रायश्चित्त जिन्होंनें ऐसे मनुष्योंकों प्रायश्चित्तके अनुष्ठानके समयमें आशौच नहीं है. समाप्त हुये प्रायश्चित्तमें तौ तीन रात्रि अतिक्रांताशौच करना. कर्मका अंगभूत नांदीश्राद्ध जिन्होंनें किया होवै तिन्होंकों तिस कर्मकी समाप्ति होनेपर्यंत तिस कर्मके उपयोगका जो कार्य तिसके विषयमें पीडा आदि संकट होवै तौ आशौच नहीं है. जननाशौच और मृताशौच इन्होंसें युक्त मनुष्योंकों मरणसमय प्राप्त होवै तौ आशौच नहीं है. इस उपरसें दान आदि और वैराग्य होवै तब मरनेवालेनें संन्यास लेना उचित है ऐसा निर्णयसिंधु आदि ग्रंथमें कहा है. देशपीडा, काल इत्यादिक बडी आपत्में तात्काल शुद्धि होती है, आपत्ति दूर हुए पीछे आशौच शेष होवै तौ अवशिष्ट आशौच कहा है.

अथकर्मतः अन्नसत्रिणामन्नादिदानेषुनाशौचं प्रतिगृहीतुस्तुआमान्नग्रहणेदोषोन पक्का

न्नभोजनेतुत्रिरात्रंक्षीरपानं गृहीतेनंतव्रदातावेकादश्यादौचारब्धकृच्छ्रादिव्रतेचनाशौचं तत्र स्नानादिशारीरनियमाःस्वयंकार्याः अनंतपूजादिकमन्येनकारणीयम् ब्राह्मणभोजनादिकमाशौचांते राजादीनांप्रजापालनादौनाशौचं ऋत्विजांमधुपर्कपूजोत्तरंतत्कर्मणिनाशौचं तेनयेष्वाधानपशुबंधादिषुमधुपर्कोनोक्तस्तेषुकृतेपिवरणेतान्त्यक्त्वान्येऋत्विजःकार्याः दीक्षितानां दीक्षणीयोत्तरमवभृथस्नानपर्यंतंयज्ञकर्मणिनाशौचं दीक्षितर्त्विग्भ्यांस्नानमात्रंकर्ममध्येकार्यं अवभृथात्पूर्वमेवाशौचाभावः अवभृथंतुनभवत्येवेतिसिंधुः कर्मांतेतुत्रिरात्रंपूर्वन्यायात् रोगभयराजभयादिनाशार्थेशांतिकर्मणिनाशौचं क्षुत्पीडितकुटुंबस्यप्रतिग्रहेनाशौचं विस्मरणशीलस्याधीतवेदशास्त्राध्ययनेपिनाशौचं वैद्यस्यनाडीस्पर्शनेनाशौचं श्राद्धेतूक्तं मूर्तिप्रतिष्ठाचौलोपनयनविवाहाद्युत्सवतडागाद्युत्सर्गकोटिहोमतुलापुरुषदानादिककर्मसुनांदीश्राद्धोत्तरंनाशौचं संकल्पितेपुरश्चरणजपेऽविच्छेदेनसंकल्पितहरिवंशश्रवणादौचप्रारंभोत्तरंनाशौचं कालादिनियमाभावेतुस्तोत्रहरिवंशादिकमाशौचेहेयमेव सर्वोप्ययमाशौचापवादोनन्यगतिकत्वेआर्तौचज्ञेयइतिसिंधौनागोजीयेचोक्तं तेनानन्यगतिकत्वादिकमालोच्यैवाशौचाभावोयोज्यः अत्रयद्वक्तव्यंतत्पूर्वार्धेतत्रतत्रोक्तमेव ॥

अब कर्मसें आशौचका अपवाद कहताहुं.—अन्नका सत्र अर्थात् सदावर्त जिन्होंका होवै तिन्होंकों अन्न आदि दानविषे आशौच नहीं है. प्रतिग्रह लेनेवालेकों आमान्नके ग्रहणमें दोष नहीं है. पक्वान्नके भोजनमें तीन रात्रि दुग्धपानव्रत करना. पहले ग्रहण किये ऐसे अनंत आदि व्रतमें, और एकादशी आदि व्रतमें और आरंभ किये कृच्छ्र आदि व्रतमें आशौच नहीं है. तहां स्नान आदि शरीरसंबंधी नियम आप करने. और अनंतपूजा आदि दूसरेके द्वारा कराने. ब्राह्मणभोजन आदि आशौचके अंतमें करना. राजा आदिकों प्रजाका पालन आदिविषे आशौच नहीं है. ऋत्विजोंकों मधुपर्कपूजाके उपरंत तिस कर्मविषे आशौच नहीं है. तिसकरके आधान, पशुबंध आदि जिन यज्ञोंमें मधुपर्क नहीं कहा है तहां ऋत्विक्वरणके पीछेभी तिन्होंका त्याग करके अन्य ऋत्विज करने योग्य है. यज्ञदीक्षा जिन्होंनें धारण करी होवै तिन्होंकों दीक्षणीय इष्टिके अनंतर अवभृथस्नानपर्यंत यज्ञकर्मविषे आशौच नहीं है. अध्ययन अधीत वेदशास्त्रके अध्ययनविषेभी आशौच नहीं है. दीक्षित और ऋत्विक् इन्होंनें स्नान मात्र कर्मके मध्यमें करना. अवभृथके पहलेही आशौचका अभाव है. अवभृथस्नान तौ आशौचमें नहीं होता है ऐसा निर्णयसिंधुका मत है. कर्मकी समाप्ति होनेके अनंतर तौ पहले कहेकी तरह तीन रात्रि आशौच करना. रोगभय, राजभय इन आदिके नाशके अर्थ शांतिकर्मविषे आशौच नहीं है. जिसका कुटुंब भूखसें पीडित हुआ होवै तिसकों प्रतिग्रह लेनेमें आशौच नहीं है. पुनःपुनः अध्ययन भूल जानेवालेकों, और वैद्यकों नाडीका स्पर्श करनेमें आशौच नहीं है. श्राद्धविषे तौ पहले कह दिया है. मूर्तिकी प्रतिष्ठा, चौल, उपनयन, विवाह आदि उत्सव, तलाव आदिका उत्सर्ग, कोटिहोम, तुला इन आदि कर्मोंविषे नांदीश्राद्ध किये पीछे आशौच नहीं है. पूर्वसंकल्पित ऐसा पुरश्चरणजप और अविच्छेदकरके संकल्पित किये हरिवंशश्रवण आदि इन्होंमें प्रारंभके अनंतर आशौच नहीं है. काल आदि नियमका अभाव होवै तौ स्तोत्र, हरिवंश आदि आशौचमें वर्जितही करने. सब प्रकारका

यह आशौचका अपवाद दूसरी गति नहीं होवै ऐसी पीडाविषे जानना ऐसा **निर्णयसिंधु** और नागोजीभट्टकृत **आशौचनिर्णयमें** कहा है. तिसउपरसें दूसरी गति नहीं है इस आदि देखकेही आशौचका अभाव योजित करना योग्य है. इस विषयमें जो कहना योग्य है वह पूर्वार्धमें तहां तहां कह दिया है.

केचित्तुव्रतेष्विवदीक्षितानामृत्विजामारब्धोत्सवादीनांचस्वरूपतआरंभतश्चावश्यकत्वादार्त्याद्यभावेप्याशौचाभावइत्याहुः कन्यायाऋतुशंकादिसंकटेमुहूर्तांतराभावेकूष्मांडहोमादिनाजाताशौचेविवाहारंभोपिकार्यइत्युक्तं विवाहादिषुनांदीश्राद्धोत्तरमाशौचपातेपूर्वसंकलितान्नमसगोत्रैर्दातव्यंभोक्तव्यंच दातारंभोक्तारंसिद्धान्नंचसूतकीनस्पृशेत् विवाहादौतदन्यत्रवाभुंजानेषुविप्रेषुदातुराशौचपातेपात्रस्थमप्यन्नंत्यक्त्वान्यगेहोदकाचांताःशुद्ध्यंतीत्यादिपूर्वार्धेउक्तं एवंसहस्रभोजनादावपिपूर्वसंकलितान्नेषुज्ञेयम् पार्थिवशिवपूजायांनाशौचं आशौचेसंध्याश्रौतस्मार्तहोमादिविषयेपूर्वार्धेउक्तं अग्निसमारोपप्रत्यवरोहावाशौचयोर्नकार्यौ तेन समारोपोत्तरमाशौचपातेपुनराधानमेव समारोपप्रत्यवरोहयोरन्यकर्तृकत्वस्याशौचापवादस्य चाभावात् इदंबह्वृचानांद्वादशाहंहोमलोपेन्येषांत्र्यहंहोमलोपेएवपुनराधानंज्ञेयं ग्रहणनिमित्तकेस्नानश्राद्धदानादौनाशौचं कश्चित्स्नानमात्रंकार्यंनश्राद्धादीत्याह संक्रांतिस्नानादावपि नाशौचं नित्यकृत्येषुस्नानाचमनभोजननियमास्पृश्यस्पर्शनादिनियमेषुनाशौचं अन्यद्वैश्वदेव ब्रह्मयज्ञदेवपूजादिनित्यंनैमित्तिकंकाम्यंचाशौचेषुनकार्यं भोजनकालेआशौचापादकजननमरणश्रवणेमुखस्थंग्रासंत्यक्त्वास्नायात् मुखस्थग्रासभक्षणेएकोपवासः सर्वान्नभोजनेत्रिरात्रोपवासः इतिकर्मतआशौचसदसद्भावविचारः ॥

कितनेक ग्रंथकार तौ व्रतोंमें जैसा आशौच नहीं है तिसप्रमाणसें दीक्षित, ऋत्विज और पूर्व आरंभित ऐसे उत्सव आदिक इन्होंकों स्वरूपकरके और आरंभकरके आवश्यकत्व होनेसें पीडा आदिके अभावमें आशौचका अभाव है ऐसा कहते हैं. कन्याकों ऋतुदर्शन होवैगा इस आदि संकटमेंही दूसरा मुहूर्त नहीं होवै तौ कूष्मांडहोम आदि करके जननाशौचमें विवाहका आरंभभी करना ऐसा कहा है. विवाह आदिमें नांदीश्राद्धके अनंतर आशौच प्राप्त होवै तौ पूर्वसंकलित अन्न दूसरे गोत्रवालेनें देना और भोजनभी करना. आशौचवालेनें दाता, भोक्ता और सिद्ध हुआ अन्न इन्होंकों छूहना नहीं. विवाह आदि कार्यमें अथवा अन्य समयमें ब्राह्मणोंके भोजन होनेके समयमें दाताकों आशौचकी प्राप्ति होवै तौ पात्रमें स्थितभी अन्नका त्याग करके दूसरेके घरके जलसें आचमन करनेसें ब्राह्मणोंकी शुद्धि होती है ऐसा पूर्वार्धमें कहा है. ऐसेही सहस्रभोजन आदिमेंभी पूर्वसंकलित जो अन्न तिन्होंविषे ऐसाही निर्णय जानना. पार्थिव शिवकी पूजाविषे आशौच नहीं है. आशौचमें संध्या, श्रौत स्मार्त होम आदिक इन्होंकेविषे निर्णय पूर्वार्धमें कह दिया है. अग्निसमारोप और प्रत्यवरोह ये दोनों आशौचमें नहीं करने. तिसकरके समारोप किये पीछे आशौच प्राप्त होवै तौ पुनराधानही करना; क्योंकी, समारोप और प्रत्यवरोह ये अन्योंनें करने नहीं, और तिसविषयमें आशौचका अपवाद नहीं है. यह पुनराधान ऋग्वेदियोंका बारह दिन होमका लोप होनेमें और अन्य शाखियोंका तीन दिन होमका लोप होनेमेंही जानना. ग्रह-

णनिमित्तक स्नान, श्राद्ध और दान आदिमें आशौच नहीं है. कोईक ग्रंथकार, ग्रहणमें स्नान मात्र करना, श्राद्ध नहीं करना ऐसा कहता है. संक्रांतिनिमित्तक स्नान आदिमेंभी आशौच नहीं है. नित्य करनेके योग्य स्नान, आचमन, भोजन, नियम, और नहीं स्पर्श करनेके योग्यकों स्पर्श करना आदि नियमोंविषे आशौच नहीं है. अन्य वैश्वदेव, ब्रह्मयज्ञ, देवपूजा इन आदि नित्यनैमित्तक कर्म और काम्यकर्म आशौचमें नहीं करने. भोजनकालमें आशौच उत्पन्न करनेवाला ऐसा जन्म और मरण सुननेमें मुखमें स्थित हुए ग्रासकों त्यागके स्नान करना. मुखमें स्थित हुये ग्रासकों भक्षण करनेमें एक उपवास करना. संपूर्ण भोजन करनेमें तीन रात्रि उपवास है. इस प्रकार क्रमसें आशौचके सत् और असत् भावका विचार समाप्त हुआ.

अथद्रव्यतः पुष्पफलमूललवणमधुमांसशाकतृणकाष्ठोदकक्षीरदधिघृतौषधतिलतद्विकारेक्षुतद्विकाराणांलाजादिभर्जितान्नस्यलड्डुकादीनांचाशौचिस्वामिनामाशौचिग्रहस्थितानांचग्रहणेदोषोन आशौचिहस्तात्तुकिमप्येतन्नग्राह्यं पण्येतुवणिजादेराशौचेपितद्धस्ताल्लवणादेरामान्नस्यचक्रयेनदोषः जलदधिलाजादिकंतुक्रयेणापितद्धस्तान्नग्राह्यं ॥

अब द्रव्यसें आशौचका अपवाद कहताहुं.—पुष्प, फल, मूल, नमक, शहद, मांस, शाक, तृण, काष्ठ, जल, दूध, दही, घृत, औषध, तिल और तिलोंका विकार अर्थात् तेल, ईख, ईखका विकार अर्थात् गुड आदि, धानकी खील आदि भुना अन्न, और लड्डु आदि इन पदार्थ आशौचिस्वामिक अर्थात् जिस आशौचीका इन पदार्थोंपर स्वामिपना है ऐसे और आशौचीके घरमें स्थित हुए पदार्थ ग्रहण करनेमें दोष नहीं है. आशौचवाले मनुष्यके हाथसें तौ इन्होंमांहसें कोईसाभी पदार्थ नहीं ग्रहण करना. बजारमें तौ दुकानदार आदिकों आशौचके होनेमेंभी तिसके हाथसें नमक आदि आमान्न खरीद करनेमें दोष नहीं है. जल, दही, धानकी खील इन आदि पदार्थ तौ मूल्य देकेभी तिसके हाथसें ग्रहण नहीं करने.

अथमृतदोषतः शास्त्रानुज्ञांविनाशस्त्राग्निविषजलपाषाणभृगुपातानशनादिभिर्बुद्धिपूर्वकंस्वेच्छयात्मघातकानांनाशौचं तच्चात्मघातनंक्रोधात्परोद्देशेनवास्तु स्वतएवेष्टसाधनताभ्रमेणवा तथाचौर्यादिदोषेराजहतानांपारदार्येतत्पत्यादिहतानांविद्युद्धतानांचनाशौचं अन्यैर्निषिद्धोपिगर्वान्नदीतरणवृक्षाधिरोहकूपावरोहादौप्रवृत्तोमृतस्तस्यापिनाशौचं योगवादिहरणार्थंतद्धननार्थंवाप्रवृत्तोगोसर्पनाखिशृंगिदंष्ट्रिगजचोरविप्रांत्यजादिभिर्हतस्तस्यनाशौचं महापातकिनांतत्संसर्गिणांचमहापापितुल्यानांचपतितानांनपुंसकानांचमरणेनाशौचं स्त्रीणांचपत्यादिहंत्रीणांहीनजातिगामिनीनांगर्भघ्नीनांकुलटानांचपूर्वोक्तात्मघातादिपापयुक्तानांचमृतौनाशौचंतत्रैषांशवानांस्पर्शाश्रुपातवहनदहनांत्यकर्माणिनकुर्यात् स्पर्शादिकरणेज्ञानाज्ञानाभ्यासादितारतम्येनकृच्छ्रातिकृच्छ्रसांतपनचांद्रायणादिप्रायश्चित्तानिसिंध्वादिग्रंथांतरतोज्ञेयानि तेनैषांमृतदेहस्यजलेप्रक्षेपः ततःसंवत्सरोत्तरंपुत्रादिस्तदीयात्मघातादिपापानुसारेणप्रायश्चित्तंतस्यकृत्वानारायणबलिंचकृत्वापर्णशरदाहादिपूर्वकमाशौचमौर्ध्वदेहिकंचकुर्यात् केचित्प्रेतशरीरंदग्ध्वादाहनिमित्तंचांद्रायणत्रयंकृत्वाऽस्थीनिसंस्थाप्याब्दांतेपूर्वोक्तरीत्यौर्ध्वदेहिकमित्याहुः ॥

अब मृतदोषसें आशौचका अपवाद कहताहुं.—शास्त्रकी आज्ञाके विना शस्त्र, अग्नि, विष, जल, पत्थर, पर्वतपरसें गेरना, लंघन इन आदिकरके जानकरके अपनी इच्छासें आत्मघात करनेवाले मनुष्योंका आशौच नहीं है. वह आत्मघात अर्थात् आत्महत्या क्रोधसें अथवा दूसरेके उद्देशसें होवै अथवा अपना इष्ट साधनेके भ्रमसें तथा चोरी करना आदि दोषमें राजाके सकाशसें मृत हुए होवैं और परस्त्रीलंपट होनेसें तिस स्त्रीके पति आदिके हाथसें मृत हुए और विजलीसें मृत हुए मनुष्योंका आशौच नहीं है. अन्योंनें निषेध किया होकेभी गर्वसें नदीमें तिरनेसें, वृक्षपर चढनेसें और कूवा आदिमें उतरनेसें जो मनुष्य मरै तौ तिसकाभी आशौच नहीं है. गौ आदि चोरनेके अर्थ अथवा गौकों मारनेके अर्थ प्रवृत्त हुआ; और गौ, सर्प, नखोंवाला, शिंगोंवाला, दंष्ट्रावाला, हस्ती, चोर, ब्राह्मण, म्लेच्छ इन आदिकरके मृत हुए मनुष्यका आशौच नहीं है. महापापियोंका, महापापियोंका संसर्ग करनेवालोंका, महापापियोंके समानोंका, पतितोंका और नपुंसकोंका आशौच नहीं है. पति आदिकों मारनेवाली, हीनजातिके पुरुषोंसें भोग करनेवाली, गर्भकों नाशनेवाली, कुलटा और पूर्वोक्त आत्महत्या आदि पापोंसें युक्त हुई ऐसी स्त्रियोंके मरनेमें आशौच नहीं है. तहां इन्होंके मुर्दोंकों स्पर्श, आंशु निकासना, कांधिया लगना, दहन और अंत्यकर्म इन्होंकों नहीं करना. स्पर्श आदिके करनेमें जानके और विना जानके अभ्यास आदि अनुसार कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, सांतपन, चांद्रायण इन आदि प्रायश्चित्त **निर्णयसिंधु** आदि ग्रंथोंसें जानने; तिसकरके ऐसा सिद्ध होता है की इन्होंके मरनेमें इन्होंके शरीर जलमें गेरने. तिस हेतुके लिये एक वर्षभरके उपरंत पुत्र आदिनें तिसके आत्महत्या आदि पापोंके अनुसारसें तिन्होंका प्रायश्चित्त करके और नारायणबलि करके पर्णशरविधिसें दाहपूर्वक आशौच और अंत्यकर्म करना. कितनेक ग्रंथकार तौ प्रेतके शरीरकों दग्ध करके दाहनिमित्तक तीन चांद्रायण करके अस्थियोंकों रखके वर्षके अंतमें पूर्वोक्त रीतिसें अंत्यकर्म करना ऐसा कहते हैं.

अथलौकिकाग्निनातूष्णींदग्ध्वास्वजीवनसंदेहाद्वाभक्त्यावापुत्रादयःसंवत्सरादर्वागपितत्तदात्मघातादिपापोक्तद्विगुणप्रायश्चित्तपूर्वकंनारायणबलिंकृत्वापर्णशरदाहमस्थिदाहंवाकृत्वाशौचमौर्ध्वदेहिकंचकुर्युः इदंचप्रायश्चित्तार्हाणामेव प्रायश्चित्तानर्हाणांघटस्फोटेनबहिष्कृतानांचदासीद्वारापतितोदकविध्यनंतरंसापिंडीकरणवर्जमौर्ध्वदेहिकं तेनसांवत्सरिकमप्येकोद्दिष्टविधिनैव यद्वात्मघातिनांपुत्रादिर्मृतजातीयवधोक्तब्रह्महत्यादिप्रायश्चित्तसहितंचांद्रायणांतप्तकृच्छ्रद्वयंचकृत्वानारायणबलिपूर्वकंतंदहेत् तथाचात्मघातिनांगोगजव्याघ्रादिहेतुकदुर्मरणवतांचपतितादीनांचपूर्वोक्तानांसर्वेषांनमरणदिनादारभ्याशौचं किंतुतत्तत्प्रायश्चित्तनारायणबलिपूर्वकसमंत्रकदाहदिनमारभ्यैवाशौचं जलाग्न्यादिभिःप्रमादमृतानांतुमरणदिनादारभ्याशौचादिकमस्त्येव तच्चत्रिरात्रमितिकेचित् दशाहमितिबहवः किंतुप्रमादमरणस्यापिदुर्मरणत्वात्तन्निमित्तप्रायश्चित्तपूर्वकमेवदाहादिकार्यम् तदुक्तंस्मृत्यर्थसारे चंडालगोब्राह्मणचोरपशुदंष्ट्रिसर्पाम्न्युदकादिभिः प्रमादान्मरणेचांद्रायणंतप्तकृच्छ्रद्वयंचतत्प्रायश्चित्तंकृत्वापंचदशकृच्छ्राणिवाप्रायश्चित्तंकृत्वाविधिवद्दहनाशौचोदकदानादिसर्वंकार्यमेवेति प्राणांतिकप्रा

यश्चित्तेनमृतस्यदशाहमाशौचंसर्वाणिप्रेतकार्याणिचकर्तव्यानि प्रायश्चित्तेनतस्यशुद्धत्वात् एवमारब्धप्रायश्चित्तस्यप्रायश्चित्तमध्येमरणेपिशुद्धत्वादिकंज्ञेयं ॥

अथवा लौकिक अग्निसें अमंत्रक दाह करके अपने जीवनके संदेहसें अथवा भक्तिसें पुत्र आदिकोंनें वर्षके पहले तिस तिस आत्महत्या आदि पापोंकों कहे प्रायश्चित्तके दुगुना प्रायश्चित्तपूर्वक नारायणबलि करके पर्णशरदाह अथवा अस्थिदाह करके आशौच और अंत्यकर्म करना. यह निर्णय प्रायश्चित्तकों जो योग्य हैं तिन्होंके विषयमें कहा है. प्रायश्चित्तकों जो योग्य नहीं हैं ऐसे और घटस्फोटविधिसें बहिष्कृत हुए लोकोंका दासीके द्वारा पतितोदकविधि किये पीछे तिन्होंका सपिंडीकरणसें वर्जित अंत्यकर्म करना. तिसकरके ऐसा होता है की, तिन्होंका सांवत्सरिक श्राद्धभी एकोद्दिष्टविधिसेंही करना. अथवा आत्महत्या करनेवालोंके पुत्र आदिकोंनें मरनेवालेकी जातिके मरनेविषे कहा जो ब्रह्महत्या आदिका प्रायश्चित्त तिस्सें सहित चांद्रायण, और दो तप्तकृच्छ्र ऐसा प्रायश्चित्त करके नारायणबलिपूर्वक तिसका दाह करना. तैसेही, आत्महत्या करनेवालोंका; गौ, हस्ती, सिंह आदि इन्होंकरके मृत हुओंका और पतित आदिक पूर्वोक्त सबोंका मरणदिनसें आशौच नहीं है. किंतु, वह आशौच प्रायश्चित्त और नारायणबलिपूर्वक समंत्रक दाह जिस दिनमें होवै तिस दिनसें करना. जल और अग्नि आदिकरके गफलतसें मृत हुये मनुष्योंका मरणदिनसेंही आशौच आदि है, और यह आशौच तीन रात्रि है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. यह आशौच दश दिन है ऐसा बहुत ग्रंथकार कहते हैं. किंतु, गफलतसें मरणभी दुर्मरण है इसवास्ते तन्निमित्त प्रायश्चित्त पहले करकेही दाह आदि करना. वह प्रायश्चित्त **स्मृत्यर्थसार** ग्रंथमें कहा है. सो ऐसा—चांडाल, गौ, ब्राह्मण, चोर, पशु, दंष्ट्री, सर्प, अग्नि, जल इन आदिकरके गफलतसें मरनेमें चांद्रायण, और दो तप्तकृच्छ्र, ऐसा तिन्होंका प्रायश्चित्त करके अथवा पंदरह कृच्छ्र प्रायश्चित्त करके यथाविधि दाह, आशौच और जलदान आदि ये सब कर्म करने. प्राणांतिक प्रायश्चित्तसें जो मरा होवै तिसका दश दिन आशौच और सब प्रेतकार्य ये करने; क्योंकी, प्रायश्चित्तकरके तिसकी शुद्धि हुई है. इस प्रकार जिसनें प्रायश्चित्तका आरंभ किया होवै तिसका प्रायश्चित्तमें मरना होवै तौ शुद्ध है इत्यादि जानना.

आहिताग्नेस्तुपतितादेर्मरणेदर्पादिनाचांडालशृंगिचोरादिहेतुकेचमरणेविशेषः त्रेताग्नीन्प्रक्षिपेदप्सुआवसथ्यंचतुष्पथे पात्राणितुदहेदग्नौसाग्निकेपापकर्मणि ततःप्रायश्चित्तार्हत्वानर्हत्वादिपूर्वोक्तव्यवस्थयानिर्मथ्याग्निनादाहाद्यंतकर्मेति महापातकसंयुक्तःसाग्निकोयदिजीवति पुत्रादिःपालयेदग्नीन्प्रायश्चित्तक्रियावधि प्रायश्चित्तंनकुर्याद्यःकुर्वन्वाम्रियतेयदि जलेग्नीन्प्रक्षिपेदग्नौपात्राणितुजलेषुवा माधवीये आहिताग्नेर्दुर्मरणेप्यात्मघातेचतंलौकिकाग्निनातूष्णींदग्ध्वातदस्थीनिक्षीरेणप्रक्षाल्यतत्प्रायश्चित्तंकृत्वाश्रौताग्निभिः समंत्रकंदाहादिकार्यमित्युक्तं इदंनिरग्नेरपिदुर्मरणेयोज्यं ॥

पतित आदि जो आहिताग्नि है तिसके मरनेमें और गर्व आदिसें चांडाल, शिंगवाला, पशु, चोर, इन्होंकरके मरनेमें विशेष निर्णय है—“अहिताग्नि पापकर्म करै तौ दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य और आहवनीय ये तीन अग्नि जलमें डाल देने. गृह्याग्नि तौ चौराहापर डाल

देना और पात्रोंकों अग्निमें दग्ध करना." पीछे प्रायश्चित्तके योग्य और अयोग्य आदिका पूर्वोक्त व्यवस्थासें मंथन करके निकासे हुए अग्निसें दाह आदि अंत्यकर्म करना. "महापापसें युक्त हुआ आहिताग्नि जीवता होवै तब पुत्र आदिनें वह प्रायश्चित्त लेवै तावत्पर्यंत तिसके अग्निकी रक्षा करनी. जो प्रायश्चित्त नहीं करैगा अथवा प्रायश्चित्त करता हुआ मर जावै तौ तिसके अग्नि जलमें डाल देने; पात्रोंकों जलमें अथवा अग्निमें त्यागना." माधवके ग्रंथमें आहिताग्नि दुर्मरणसें और आत्महत्यासें मर जावै तौ तिसका लौकिकाग्निसें अमंत्रक दाह करके तिसके अस्थियोंकों दूधसें धोके तिसका प्रायश्चित्त करके श्रौताग्निसें समंत्रक दाह आदि करना ऐसा कहा है. यह निर्णय निरग्निककोंभी दुर्मरणमें जानना.

अथसर्पहतेविशेषः प्रमादेनवादर्पादिनावासर्पतोमृतावाशौचादिनकार्यम् वक्ष्यमाणंनागपूजाव्रतंकृत्वानारायणबलिसौवर्णनागदानप्रत्यक्षगोदानानिकृत्वादाहाशौचादिकार्यं सर्वत्रदुर्मरणेपतितादिमरणेचतत्तत्प्रायश्चित्तादिकृत्वादाहाशौचादिकार्यमित्युक्तं ॥

अब सर्पके डसनेसें मरे हुएके निर्णयमें विशेष कहताहुं.—गफलतसें अथवा गर्व आदिसें सर्प आदिसें मरनेमें आशौच आदि नहीं करना. वक्ष्यमाण नागपूजाव्रत करके नारायणबलि, सोनाके सर्पका दान और प्रत्यक्ष गोदान इन्होंकों करके, दाह और आशौच आदि करना. सब जगह दुर्मरण और पतित आदि मरण होवै तौ वह वह प्रायश्चित्त करके दाह और आशौच आदि करना ऐसा कहा है.

तत्रप्रायश्चित्तानिप्रसंगादुच्यंते बुद्धिपूर्वकमात्मघातेनमृतानांत्रिंशत्कृच्छ्राणिप्रायश्चित्तं एतच्चजातिवधप्रायश्चित्तेनसमुच्चितंकार्यं तद्यथा ब्राह्मणेनात्मघातेकृतेद्वादशाब्दंब्रह्महत्याप्रायश्चित्तंत्रिंशत्कृच्छ्रमात्मघातप्रायश्चित्तंचतत्पुत्रादिःकुर्यात् ब्राह्मणस्त्रियात्मघातेकृतेब्राह्मणस्त्रीवधप्रायश्चित्तंत्रिंशत्कृच्छ्राणिच एवंशूद्राद्यात्मघातेप्यूह्यं अशक्तावात्मघातेचांद्रायणद्वयंतप्तकृच्छ्रचतुष्कं प्रमादेनजलादिमरणेपंचदशकृच्छ्राणि चांद्रायणपूर्वकंतप्तकृच्छ्रद्वयंवा पतितमृतेषोडशकृच्छ्राणि ब्रह्महत्यादिपापिनांप्रायश्चित्तात्पूर्वंमरणेतत्तत्पापप्रायश्चित्तंपुत्रेणकार्यम् प्रायश्चित्तानर्हाणांतुपतितोदकदानविधिरेवनप्रायश्चित्तादीत्युक्तं सिंधौतुप्रायश्चित्तानर्हाणामपिपुत्रादिर्नारायणबलिपूर्वंसर्वमौर्ध्वदेहिकंसपिंडीकरणंदर्शादिश्राद्धंगयादिश्राद्धंचकुर्यादेव एवंम्लेच्छीकृतस्यापि पतितोदकविधिरपुत्रविषयइत्युक्तं इदमेवयुक्तं ॥

तहां प्रसंगसें प्रायश्चित्तोंकों कहताहुं.—जानके आत्महत्या करके मृत हुए मनुष्योंका तीस कृच्छ्र प्रायश्चित्त है. यह प्रायश्चित्त जातिबांधवके प्रायश्चित्तसहित करना. सो ऐसा—ब्राह्मणनें आत्मघात किया होवै तौ बारह वर्षपर्यंत ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त और आत्मघातका तीस कृच्छ्र प्रायश्चित्त ऐसे दो, पुत्र आदिनें करने. ब्राह्मणकी स्त्रीनें आत्मघात किया होवै तौ ब्राह्मणकी स्त्रीकों मारनेका प्रायश्चित्त और तीस कृच्छ्र करने. इसी प्रकार शूद्र आदिनें आत्मघात करनेमेंभी यहही निर्णय जानना. आत्महत्याका पूर्वोक्त प्रायश्चित्त करनेकी शक्ति नहीं होवै तौ दो चांद्रायण और चार तप्तकृच्छ्र करने. गफलतसें जल आदिसें मरनेमें पंदरह कृच्छ्र करने अथवा चांद्रायणपूर्वक दो तप्तकृच्छ्र करने. पतित मनुष्यके मरनेमें सोलह कृच्छ्र

करने. ब्रह्महत्या आदि पाप करनेवालोंको प्रायश्चित्तके पहले मरनेमें तिसके पापका प्रायश्चित्त पुत्रनें करना. प्रायश्चित्तके अयोग्योंका तौ पतितोदकदानविधिही करना, प्रायश्चित्त आदि नहीं करना ऐसा कहा है. निर्णयसिंधु ग्रंथमें तौ, प्रायश्चित्तको अयोग्य होवै तौभी तिन्होंके पुत्र आदिनें नारायणबलिपूर्वक संपूर्ण अंत्यकर्म, सपिंडीकरण, दर्श आदि श्राद्ध और गया आदि श्राद्ध ये करने. इसी प्रकार म्लेच्छ हुए मनुष्यकाभी निर्णय जानना. पतितोदकविधि अपुत्रविषयक है ऐसा कहा है, और यही योग्य है.

यस्तुकिंचित्कालंम्लेच्छीकृतः प्रायश्चित्तार्हस्तस्यषोडशकृच्छ्रादिप्रायश्चित्तंपुत्रेणकृत्वापर्णशरदाहादिकार्यम् प्रमादमरणभिन्नेषुचौर्यपारदार्यादिहेतुकेषुदुर्मरणेषुचांद्रायणद्वयंतप्तकृच्छ्रंवेत्याकरतोविचार्ययोज्यं किंचव्याघ्रादिहेतुकदुर्मरणेषुशातातपोक्तदानादिविधिरपिकार्यःतथा हि व्याघ्रहतेविप्रकन्याविवाहनं गजहतेचतुर्निष्कपरिमितहेमनिर्मितगजदानं राजहतेसौवर्णपुरुषदानं चोरहतेप्रत्यक्षधेनुदानं वैरिहतेवृषदानं वृषभेणहतेयथाशक्तिहेमदानं शय्यायांचमृतेदेयाशय्यातूलीसमन्विता निष्कहेमनिर्मितविष्णुप्रतिमाधिष्ठिताच शौचहीनमरणेद्विनिष्कहैमविष्णुदानं संस्कारहीनमरणेविप्रपुत्रोपनयनं अश्वहतेनिष्कत्रयहेमकृताश्वदानं शुनाहतेक्षेत्रपालस्थापनं सूकरहतेमहिषदानं कृमिभिर्हतेपंचखारीमितगोधूमदानं वृक्षहतेवस्त्रयुतसौवर्णवृक्षदानं शृंगिणाहतेवस्त्रयुतवृषभदानं शकटहतेसोपस्करंकिंचित्द्रव्यदानं भृगुपातमृतेधान्यपर्वतदानं अग्निनामृतेउदपानोत्सर्गविधिः काष्ठहतेधर्मार्थसभाकरणं शस्त्रहते महिषीदानं अश्महतेसवत्सपयस्विन्यागोर्दानम् विषेणहतेहेमनिर्मितपृथ्वीदानं उद्बंधनेनमृतेहेमकपिदानं जलेमृतेद्विनिष्कहेमनिर्मितवरुणदानं विषूचिकामृतेस्वाद्वन्नेनशतविप्रभोजनं कंठस्थितकवलस्यमरणेघृतधेनुदानं कासरोगमृतेऽष्टकृच्छ्राणि अतीसारमृतेलक्षगायत्रीजपः शाकिन्यादिग्रहैर्मृतेरुद्रैकादशिनीजपः विद्युत्पातमृतेविद्यादानं अंतरिक्षमृतेवेदपारायणं पतितेमृतेषोडशकृच्छ्राणि अस्पृश्यस्पर्शयुक्तमरणेसच्छास्त्रपुस्तकदानमित्यादि ॥

जो मनुष्य कछुक कालपर्यंत म्लेच्छ हो रहा होके प्रायश्चित्तके योग्य होवै तिसका सोलह कृच्छ्र आदि प्रायश्चित्त पुत्रनें करके पालाशविधिसें दाह आदि करना. प्रमादमरणके विना अन्य चोरी, परस्त्रीगमन इत्यादिक कारणोंसें जो दुर्मरण है तिन्होंमें दो चांद्रायण अथवा तप्तकृच्छ्र ऐसे बडे ग्रंथसें विचार लेने, और व्याघ्र आदि कारणकरके प्राप्त हुये दुर्मरणमें शातातपनें कहा दानादिकविधिभी करना. सो ऐसा—व्याघ्रसें मरनेमें ब्राह्मणकी कन्याका विवाह करना. हस्तीसें मरनेमें चार निष्क परिमित सोनाका हस्ती बनायके दान करना. राजासें मरनेमें सोनाके पुरुषका दान करना. चोरसें मरनेमें प्रत्यक्ष गौका दान करना. वैरीसें मरनेमें बैलका दान करना. बैलसें मरनेमें जैसी शक्ति होवै तिसके अनुसार सोनाका दान करना. शय्यां अर्थात् पलंगपर मरनेमें सहित चार मासे सोनासें बनाई विष्णुकी प्रतिमासें संयुक्त ऐसी शय्या देनी. शौचसें हीनके मरनेमें आठ मासे सोनासें बनी विष्णुकी प्रतिमाका दान करना. संस्कारसें हीन मनुष्यके मरनेमें ब्राह्मणके पुत्रका यज्ञोपवीतसंस्कार करना. अश्वसें मरनेमें १२ मासे सोनासें बनाये हुये अश्वका दान करना. कुत्तासें मरनेमें क्षेत्रपालकी स्थापना करनी. शूरसें मरनेमें भैंसाका दान करना, कीडोंसें मरनेमें पांच

खारीपरिमित गेहूंका दान करना. वृक्षसें मरनेमें वस्त्रसें युत सोनाके वृक्षका दान करना. शींगवाले पशुसें मरनेमें वस्त्रसें युत बैलका दान करना. गाडासें मरनेमें सामग्रीसहित कछुक द्रव्यका दान करना. पर्वतके उपरसें गिरके मरनेमें अन्नके पर्वतका दान करना. अग्निसें मरनेमें तलाव आदिका उत्सर्ग करना. काष्ठसें मरनेमें धर्मार्थ धर्मशाला बनानी. शस्त्रसें मरनेमें भैंसका दान करना. पत्थरसें मरनेमें बछडावाली और बहुत दूध देनेवाली ऐसी गौका दान करना. विष अर्थात् जहरसें मरनेमें सोनासें रची हुई पृथिवीका दान करना. फांसीसें मरनेमें सोनाका वानर बनाके दान करना. जलसें मरनेमें दो निष्कपरिमित सोनासें बनी वरुणकी मूर्तिका दान करना. हैजारोगसें मरनेमें मधुर अन्नसें १०० ब्राह्मणोंकों भोजन देना. कंठमें ग्रास रहनेसें मरनेमें घृतधेनुका दान करना. खांसी रोगसें मरनेमें आठ कृच्छ्र करने. अतीसार रोगसें मरनेमें एक लक्ष गायत्रीमंत्रका जप करना. शाकिनी आदि ग्रहोंसें मरनेमें रुद्रैकादशिनीका जप करना. बिजलीके पडनेसें मरनेमें विद्याका दान करना. आकाशमें मरनेमें वेदका पारायण करना. पतित होके मरनेमें सोलह कृच्छ्र करने. नहीं स्पर्श करनेके योग्यकों स्पर्श करके मरनेमें श्रेष्ठ शास्त्रके पुस्तकका दान इस आदि करना.

अत्रशय्यामरणेशौचहीनसंस्कारहीनमरणेकृमिविषूचिकाकंठकवलकासातिसाररोगग्रहग्रहणैर्मरणेंतरिक्षमृतेऽस्पृश्यस्पर्शमरणेचदानादिविधिरेवनप्रायश्चित्तंनैवनारायणबलिर्नापिवर्षादिकालप्रतीक्षाव्याघ्रादिहेतुकंविषजलशस्त्रादिहेतुकंचमरणंप्रमादेनदर्पादिनाबुद्ध्याचेत्यनेकधासंभवति तत्रोक्तव्यवस्थयाप्रायश्चित्तंनारायणबलिर्दानादिविधिश्चेतित्रयाणांसमुच्चयःयदिपुत्रादिःपितुर्जलादिदुर्मरणप्रायश्चित्तंब्रह्महत्यादितत्तत्पापप्रायश्चित्तंवात्मघातप्रायश्चित्तंवाकर्तुंनशक्नोति तदोक्तदानादिविधिंनारायणबलिंचकृत्वाऽत्यशक्तौनारायणबलिमात्रंकृत्वौर्ध्वदेहिकंकुर्यात् तावतापुत्रादिसपिंडानांशुद्धिसिद्धेः पित्रादेस्तुपुत्रादिभिस्तत्तत्प्रायश्चित्ताकरणेनरकादिभोगःस्यादेवेतिबोद्धव्यं ॥

इस स्थलमें शय्यामरण, शौचहीन और संस्कारहीन मरण; कीटक, विषूचिका, हैजारोग कंठमें ग्रासका रहना; खांसी, अतीसाररोग, शाकिनीआदि ग्रहोंसें मरण; अंतरिक्षमरण और नहीं स्पर्श करनेके योग्यका स्पर्श करके मरनेमें दान आदि विधिही करना, प्रायश्चित्त नहीं करना, और नारायणबलि और वर्षाआदि कालकी प्रतीक्षा ये नहीं करने. व्याघ्र आदि, जहर, जल, शस्त्र आदि इन कारणोंसें मरना सो गफलतसें, गर्व आदिसें और जानके ऐसा अनेक प्रकारसें मरना सूचित होता है. तहां पूर्वोक्त व्यवस्थाकरके प्रायश्चित्त, नारायणबलि और दान आदि विधि ये तीनों करने. जो पुत्र आदि पिता आदिके दुर्मरणका प्रायश्चित्त अथवा ब्रह्महत्या आदि जो जो पाप तिस तिस पापका प्रायश्चित्त अथवा आत्महत्याका प्रायश्चित्त करनेमें समर्थ नहीं होवै तौ पूर्वोक्त दान आदि विधि और नारायणबलि ये दोनों करके, और अत्यंत अशक्ति होवै तौ नारायणबलि मात्र करके तिसनें अंत्यकर्म करना; क्योंकी, तितना करनेसें पुत्र आदि सपिंडोंके शुद्धिकी सिद्धि होती है. पिता आदिकों तौ पुत्र आदिकोंनें तिस तिस प्रायश्चित्तकों नहीं करनेमें नरक आदि भोग प्राप्त होवैगा ऐसा जानना योग्य है.

अथविधिविहितजलादिमरणे तत्रप्रयागेसर्ववर्णानांरोगिणामरोगिणांचभागीरथीप्रवेशादिनामरणेकामितमहाफलं शूद्रस्यारोगिणोपिप्रयागभिन्नेपिजलादिमरणमनुज्ञातं व्याधितोभिषजात्यक्तोविप्रोवृद्धोथवायुवा तनुंत्यजेज्जलाग्न्याद्यैःसयथेष्टंफलंलभेत् दुश्चिकित्सैर्महारोगैः पीडितोजीवनाक्षमः प्रविशेज्ज्वलनंदीप्तंकरोत्यनशनंतथा अगाधतोयराशिंचभृगोःपतनमेव च गच्छेन्महापथंवापितुषारगिरिमादरात् प्रयागवटशाखाग्राद्देहत्यागंकरोतिच उत्तमान्प्राप्नुयाल्लोकान्नात्मघातीभवेत्क्वचित् नराणामथनारीणांसर्ववर्णेषुसर्वदा आशौचंस्यात्त्र्यहंतेषांव आनलहतेतथा वाराणस्यांम्रियेद्यस्तुप्रत्याख्यातभिषक्क्रियः काष्ठपाषाणमध्यस्थो जाह्नवी जलमध्यगः अविमुक्तोन्मुखस्तस्यकर्णमूलगतोहरः प्रणवंतारकंब्रूतेइत्यादीवचनोच्चयः पुराणस्थोमाधवादिनिबंधेषुह्युदाहृतः अत्रानुज्ञातेबुद्धिपूर्वकात्मघातेगृहस्थादीनामेवाधिकारः यतेस्तुनाधिकारः त्र्यहाद्याशौचविधानात् यतेः काम्यकर्मण्यनधिकाराच्चेतिनिर्णयसिंधुः ॥

अब विधिसें विहित जो जल आदिमें मरण तिसविषे निर्णय कहताहुं.—तहां प्रयागविषे रोगवाले अथवा नहीं रोगवाले ऐसे सब वर्णोंकों गंगाजीके जलमें प्रवेश करना आदिसें मरनेमें वांछित महाफल मिलता है. शूद्र रोगी नहीं होवै तौभी तिसकों प्रयागसें भिन्न जल आदिसें मरना विहित कहा है. "व्याधिष्ठ, वैद्योंनें त्यागा हुआ ऐसा ब्राह्मण वृद्ध होवै अथवा जवान होवै, जल और अग्नि आदिकरके शरीरका त्याग करै तिसकों मनोवांछित फल प्राप्त होता है. जिन्होंकी चिकित्सा नहीं हो सकै ऐसे महारोगोंसें पीडित और जीवनमें असमर्थ ऐसे मनुष्यनें प्रदीप्त हुए अग्निमें प्रवेश करना अथवा अनशन व्रत करना. अगाध जलके समूहमें प्रवेश करना. पर्वतसें गिर पडना. उत्तरकी यात्रा करनी अथवा आदरसें हिमालयकों प्राप्त होना. प्रयागविषे जो वडका वृक्ष है तिसके अग्रभागसें जो गंगाजीमें देहका त्याग करता है वह कभीभी आत्मघाती नहीं होता है. और तिसकों उत्तम लोक प्राप्त होते हैं. इस प्रकार देहविसर्जन करनेवाले सब वर्णोंके नरोंका और नारियोंका आशौच तीन दिन रहता है. बिजलीसें मरनेमेंभी तीन दिन आशौच है. जो असाध्य होनेसें औषधोपचार बंद हुए हैं ऐसा गंगाजीके जलके मध्यमागमें स्थित, अथवा काष्ठ, पत्थर इन्होंके मध्यमें स्थित जो काशीक्षेत्रमें मरता है वह और काशीजीमें जानेविषे जो उन्मुख होता है तिसके कर्णमूलमें विश्वेश्वर अर्थात् महादेवजी तारकप्रणवका उपदेश करते हैं इन आदि पुराणोक्त वचनोंका समूह **माधव** आदिके ग्रंथोंमें कहा है." यहां शास्त्रसें अनुज्ञात जो जानके आत्महत्या है, तिसविषे गृहस्थाश्रमी आदिकोंही अधिकार कहा है, संन्यासीकों अधिकार नहीं है; क्योंकी, तीन दिन आदि आशौचका विधान कहा है और संन्यासीकों काम्यकर्ममें अधिकार नहीं है ऐसा **निर्णयसिंधु** ग्रंथकारका मत है.

इदानींतनशिष्टास्तुरोगादिपीडांसोढुमशक्तौसंन्यासाश्रमंगृहीत्वातीर्थादिनात्मघातंकुर्वंति गृहस्थविधुरादयश्चनकुर्वंति केचित्त्वपरिहार्यरोगादिग्रस्तवृद्धादेर्जलादिनाबुद्ध्यात्मघातःकलौप्रयागभिन्नदेशेनभवति भृग्वग्निपतनैश्चैववृद्धादिमरणंतथेतिकलिवर्ज्येषुपरिगणनादित्याहुः एतन्मतेमरणांतप्रायश्चित्तविधयःकाशीखंडादौविप्रादेर्देहत्यागविधयश्चयुगांतरपराः प्रयागमरणंस्त्रीणांसहगमनंचकलियुगेसर्वसंमतं अत्रसर्वत्रसहगमनभिन्नेविधिवाक्यानुज्ञातेदेहत्या

गेत्रिरात्रमाशौचमितिबह्वः दशाहमितिकेचित् एवंफलकामनयाविहितेकाम्यप्रयागमरणे पिपक्षद्वयंज्ञेयं ॥

विद्यमानकालके शिष्ट लोग तौ रोग आदिकी पीडा सहन करनेमें सामर्थ्य नहीं होवै तौ संन्यास आश्रम ग्रहण करके तीर्थ आदिसें आत्मघात करते हैं. गृहस्थी और रांडे पुरुष आदि तौ नहीं करते हैं. कितनेक ग्रंथकार तौ, नहीं दूर हो सक्ता होवै ऐसे रोग आदिसें ग्रस्त हुये वृद्ध आदिका जल आदिसें बुद्धिपूर्वक आत्मघात कलियुगविषे प्रयागसें अन्य देशमें नहीं होता है; क्योंकी, "भृगु, अग्नि इन्होंमें प्रवेश करना इन्होंसें वृद्ध आदिकोंका मरना" कलिवर्ज्यमें गिना है ऐसा कहते हैं. इस मतमें मरणांतप्रायश्चित्तविधि और काशीखंड आदिविषे ब्राह्मण आदिकों कहा हुआ देहत्यागविधि ये अन्य युगोंविषे हैं. प्रयागमें मरना और स्त्रीका सहगमन ये कर्म कलियुगविषे सबोंके माने हुये हैं. यहां सब जगह सहगमनके विना अन्य जो विधिवाक्यसें अनुज्ञात देहत्याग तिसविषे तीन रात्रि आशौच है ऐसा बहुत ग्रंथकार कहते हैं, और कितनेक ग्रंथकार दश दिन आशौच है ऐसा कहते हैं. इस प्रकार फलकी इच्छासें विहित जो कामनिक प्रयागमरण तिसके विषयमेंभी दो पक्ष अर्थात् तीन रात्रि अथवा दश दिन आशौच जानना.

अथयःपतितोघटस्फोटेनबहिष्कृतोयश्चम्लेच्छीकृतोयश्चप्रायश्चित्तानर्हपापीतस्यत्रिविधस्यपितृमातृभिन्नस्यपतितोदकविध्यनंतरं सपिंडीकरणवर्ज्यमंत्यकर्मपितुर्मातुश्चत्रिविधस्यापि नारायणबलिपूर्वकंसपिंडीकरणसहितंसर्वंभवतीत्युक्तं तत्रपतितोदकदानविधिर्यथा सर्वगां दासीमाहूयतस्यैवेतनंदत्वाअशुद्धपूर्णघटहस्तांतांब्रूयात् हेदासिगच्छमूल्येनतिलान्तोयपूर्णमिमंघटंचशीघ्रमानयततोदक्षिणामुखीउपविश्यवामपादेनतंघटंसतिलंक्षिप् घटक्षेपणकालेचामुकसंज्ञकपतितप्रेतपिबपिबेतिमुहुरुच्चारयेति सादासीतद्वाक्यंश्रुत्वामूल्यंगृहीत्वातथाकुर्यात् एवंकृतेपतिततृप्तिर्नान्यथा एतच्चपतितस्यमृतादिनेकार्यं इतिपतितोदकविधिः इतिमृतदोषतआशौचापवादःसप्रसंगःसविस्तरोनिरूपितः ॥

इसके अनंतर जो घटस्फोट करके बहिष्कृत किया पतित, म्लेच्छ हुआ और प्रायश्चित्तके अयोग्य ऐसा जो पापी है, तिस तीन प्रकारके, पिता और मातासें भिन्न तिन्होंका पतितोदकविधि हुए पीछे सपिंडीकरण वर्जित करके अंत्यकर्म और पिता, माता और तीन प्रकारके जो हैं तिन्होंकाभी नारायणबलिपूर्वक और सपिंडीकरणसहित सब अंत्यकर्म होता है ऐसा कहा है. तिन्होंमें पतितोदकदानका विधि कहताहुं—सबोंसें गमन करनेवाली ऐसी दासीकों बुलायके तिसकों मजूरी देके कुत्सित जलसें पूरित हुये घटकों तिसके हाथमें देके तिसकों कहना की, हे दासि, गमन कर, जलसें पूरित हुआ घट और मूल्य देके तिल ये शीघ्र ले आना. पीछे दक्षिणकों मुखवाली होके और बैठके वामे पैरसें तिलोंसहित तिस घटकों लूढाय दे. घटकों लुढानेके समयमें "अमुकसंज्ञक पतित प्रेत पिब पिब" अर्थात् अमुकसंज्ञक पतित प्रेत, प्राशन कर, प्राशन कर, ऐसा वारंवार उच्चारण कर. पीछे वह दासीनें तिस वाक्यकों सुनके और मोलकों लेके तैसा करना. ऐसा करनेसें पतितकी तृप्ति होती है. अन्य प्रकारसें नहीं होती है. यह कर्म पतितके मृतदिनमें करना. ऐसा पतितोदक-

दानका विधि समाप्त हुआ. ऐसा मृतदोषकरके आशौचका अपवाद प्रसंगसहित और विस्तारसहित निरूपित किया.

अथविधानतः यतेर्मृतावाशौचंनास्ति तस्यप्रेतक्रियोदकदानाशौचसपिंडीकरणादेर्निषिद्धत्वात् सपिंडीस्थानएकादशेहनिपार्वणश्राद्धमात्रंकार्यं प्रतिसांवत्सरिकश्राद्धदर्शश्राद्धादिकंतु पार्वणविधिनासपिंडकंभवत्येव अत्रविस्तरोग्रंथांतरेवक्ष्यते एतच्चत्रिदंडिनामेकदंडिनांहंसपरमसंसादीनांसर्वेषामेवज्ञेयं एवंवानप्रस्थमरणेपिनाशौचं कृतजीवच्छ्राद्धेमृतेसपिंडैराशौचादिकर्तव्यंनवेतिविकल्पः ब्रह्मचारिमृतौत्वाशौचमस्त्येव युद्धमृतेप्याशौचंनेतिसर्वग्रंथेषूपलभ्यते नत्वेवंब्राह्मणेषुशिष्टाचारः इतिपंचधाशौचापवादोनिरूपितः ॥

अब विधानसें अपवाद कहताहुं–संन्यासीके मरनेमें आशौच नहीं है; क्योंकी, तिसकी प्रेतक्रिया, जलदान, आशौच और सपिंडीकरण इन्होंका निषेध कहा है. सपिंडीके स्थानमें ग्यारहमे दिनविषे पार्वणश्राद्ध मात्र करना. प्रतिसांवत्सरिकश्राद्ध, दर्शश्राद्ध आदि तौ, पार्वणविधिकरके सपिंडक होताही है. इस विषयमें विस्तार दूसरे ग्रंथमें जानना. यह निर्णय त्रिदंडीसंन्यासी, एकदंडी, हंस, परमहंस इन आदि सब संन्यासियोंका ऐसाही जानना. इस प्रकारसें वानप्रस्थी मर जावै तौभी आशौच नहीं है. जीवते हुए अपने श्राद्ध जिसनें किये होवै वह मर जावै तौ सपिंडोंनें आशौच आदि करना अथवा नहीं करना ऐसा विकल्प है. ब्रह्मचारीके मरनेमें तौ आशौच कहाही है. युद्धविषे मरनेमें आशौच नहीं है ऐसा सब ग्रंथोंमें कहा है; परंतु ब्राह्मणोंमें ऐसा शिष्टाचार नहीं है. इस प्रकार पांच प्रकारके आशौचका अपवाद निरूपण किया.

अथजीवतोप्याशौचं यथापतितस्यघटस्फोटकालेसर्वसपिंडानामेकाहमाशौचं ॥

अब जीवते हुएका आशौच कहताहुं.

जैसे; पतितके घटस्फोटकालमें सब सपिंडोंकों एक दिन आशौच है.

इत्याशौचंसापवादंयथामतिनिरूपितं समर्पितंरुक्मिणीशश्रीमद्विठ्ठलपादयोः इतिसापवादाशौचप्रकरणं ॥

ऐसा अपवादसहित आशौचनिर्णय बुद्धिके अनुसार निरूपण किया, वह रुक्मणीपति जो श्रीमान् विठ्ठलजी तिन्होंके चरणोंमें समर्पित हो. इस प्रकार अपवादसहित आशौचप्रकरण कहा है.

अथौर्ध्वदेहिकारंभोपयोगिनारायणबल्यादिप्रकारउच्यते तत्रदुर्मरणेष्वात्मघातेजलादिभिःप्रमादमरणे पतितादिमरणेचपूर्वोक्तव्यवस्थयामुकगोत्रस्यामुकशर्मणोमुकदोषनाशार्थमौर्ध्वदेहिकेसंप्रदानत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थममुकप्रायश्चित्तममुकदानंवाकरिष्यइत्यादिसंकल्पपूर्वकं तत्तत्प्रायश्चित्तंदानंचकार्यं अशक्तौदानमेवकार्यं ततोमुकगोत्रामुकशर्मणोमुकदुर्मरणदोषनाशार्थमौर्ध्वदेहिकप्रदानत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थं नारायणबलिंकरिष्यइतिसंकल्प्य पूर्वार्धोक्तसंत

तिफलककाम्यनारायणबलिवत्सर्वंकुर्यात् एतत्तुवर्षांतरकरणपक्षे सद्यःकरणपक्षेतुपूर्वोक्तद्विगुणप्रायश्चित्तंसंकल्प्यशुक्लैकादश्यादिकालमनपेक्ष्यैवसमनंतरोक्तसंकल्पंकृत्वाविधिनास्थापितेकलशद्वयेहेमप्रतिमयोर्विष्णुंवैवस्वतंयमंचावाह्य पुरुषसूक्तेनयमायसोमामितिचक्रमेणषोडशोपचारैःसंपूज्य तत्पूर्वभागेरेखायांदक्षिणाग्रकुशानास्तीर्यशुंधंतांविष्णुरूप्यमुकप्रेतइतिदशस्थानेष्वपोनिनीयमधुघृततिलमिश्रानोदनपिंडान्दशामुकगोत्रामुकशर्मप्रेतविष्णुदेवतायंतेपिंडइतिदक्षिणसंस्थान्प्राचीनावीतीत्यादिपैतृधर्मेणदद्यात् गंधादिभिरभ्यर्च्यप्रवाहणांतंकृत्वानद्यांक्षिपेत् श्वःसद्योवापूर्वस्थापितंविष्णुमभ्यर्च्यैकविप्रेविप्रालाभेदर्भबटौवा पादक्षालनादितृप्तिप्रश्नांतंविष्णुरूपप्रेतावाहनपूर्वकंकृत्वाविप्रसमीपेतुष्णींरेखाःकृत्वा दर्भास्तरणेअपोनिनयनंचकृत्वादर्भेषुसव्येनविष्णवेब्रह्मणेशिवायचसपरिवाराययमायचेति चतुर्भ्यःपिंडचतुष्टयंदत्वापसव्येनविष्णुरूपिप्रेतामुकगोत्रनामायंतेपिंडइत्येकंपंचमंपिंडंदत्वा तथैवाभ्यर्च्यप्रवाहणांतेविप्राचांतादिश्राद्धशेषसमापनांतेप्रेतबुद्ध्याविप्रायवस्त्राभरणादिदत्वा विप्रेणप्रेतायतिलांजलिंदापयेत् अमुकगोत्रायामुकशर्मणेविष्णुरूपिणेप्रेतायायंतिलतोयांजलिरितिमंत्रेण विप्रालाभेस्वयंदद्यात् ततोविप्रान्वाचयेत् अनेननारायणबलिकर्मणाभगवान्विष्णुरिममुकंप्रेतंशुद्धमपापमर्हंकरोत्विति काम्यप्रयोगेस्मिन्प्रयोगेचसंकल्पेनामगोत्रोच्चारेचविशेषः स्पष्टएव पूर्वत्रकाश्यपगोत्रदेवदत्तप्रेतेत्याद्युच्चारःअत्रतुगोत्रनामज्ञानसत्त्वाद्दुर्मरणेनमृतस्ययन्नामगोत्रंतदेवोच्चारयेदितिसंकल्पेविशेषेपिहेतुःस्पष्टएवेति इतिदुर्मरणेऔर्ध्वदेहिकाधिकारार्थंनारायणबलेःप्रयोगः ॥

अब और्ध्वदेहिक कर्मके आरंभकों उपयोगी नारायणबलि आदि प्रकार कहताहुं.

तिन्होंमें दुर्मरण, आत्महत्या, गफलतसें जल आदिकरके मरनेमें और पतित आदिके मरनेमें पूर्व कही व्यवस्थासें “ **अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणोमुकदोषनाशार्थमौर्ध्वदेहिके संप्रदानत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थं अमुकप्रायश्चित्तममुकदानं वा करिष्ये** ” इत्यादिक संकल्प पहले करके वह वह प्रायश्चित्त और दान करना. प्रायश्चित्तके करनेमें सामर्थ्य नहीं होवै तौ दानही करना. तदनंतर “ **अमुकगोत्रामुकशर्मणोमुकदुर्मरणदोषनाशार्थमौर्ध्वदेहिकप्रदानत्वयोग्यतासिद्ध्यर्थं नारायणबलिं करिष्ये** ” ऐसा संकल्प करके पूर्वार्धमें कहा संतान होना यह जिसका फल है ऐसे कामनिक नारायणबलिकी तरह संपूर्ण कर्म करना. यह निर्णय वर्षके अंतमें नारायणबलि करना ऐसे पक्षमें जानना. ‘ तत्कालमें नारायणबलि करना ऐसा पक्ष होवै तौ पूर्वोक्त दुगुने प्रायश्चित्तका संकल्प करके शुक्ल पक्षकी एकादशी आदि कालकी अपेक्षा किये विना समीप कहा हुआ संकल्प करके यथाविधि स्थापित किये दो कलशोंपर सोनाकी दो मूर्तियोंकों स्थापित करके तिन मूर्तियोंमें विष्णु और वैवस्वतयमका आवाहन करके पुरुषसूक्तसें और “ **यमायसोमं०** ” इस मंत्रसें क्रमसें षोडशोपचार पूजा करके तिसके पूर्वप्रदेशमें रेखापर दक्षिण दिशाकों अग्रभाग होवै ऐसे डाभोंकों विस्तृत करके “**शुधंतां विष्णुरूपी अमुकप्रेत,**” ऐसा वाक्य कहके दश स्थानोंमें जल देके शहद, घृत और तिल इन्होंसें मिश्रित किये भातके दश पिंड “**अमुकगोत्रामुकप्रेतविष्णुदेवतायं ते पिंडः**”

ऐसा कहके दक्षिणसंस्थ ऐसे अपसव्य आदि पितृधर्मकरके देने. पीछे गंध आदि उपचारोंसें तिन पिंडोंकी पूजा करके पिंडप्रवाहणपर्यंत कर्म करके वे पिंड नदीमें त्याग देने. दूसरे दिनमें अथवा तत्कालमें पूर्वस्थापित किये विष्णुकी पूजा करके एक ब्राह्मणविषे अथवा ब्राह्मण नहीं मिलै तौ डाभके मोटकविषे विष्णुरूपी प्रेतका पहले आवाहन करके पादप्रक्षालनसें तृप्तिप्रश्नपर्यंत कर्म करना. पीछे तिस ब्राह्मणके समीप रेखा काढके तिसपर डाभोंको विस्तृत करके तिन डाभोंपर जल देके तिनपर सव्यसें “ **विष्णवे ब्रह्मणे शिवाय च सपरिवाराय यमाय च** ” ऐसा कहके चारोंकों चार पिंड देके अपसव्य होके “ **विष्णुरूपिप्रेतामुकगोत्रनामायं ते पिंडः** ” ऐसा कहके एक पांचमा पिंड देके तैसीही पूजा करके पिंडप्रवाहपर्यंत कर्म किये पीछे ब्राह्मणोंका आचमन आदि श्राद्धशेष समाप्तिपर्यंत कर्म हुए पीछे प्रेतबुद्धिसें ब्राह्मणोंकों वस्त्र, गहने इन आदिका दान देके ब्राह्मणोंके द्वारा प्रेतके अर्थ तिलांजलि दिलवानी. तिलांजलि देनेका मंत्र—“ **अमुकगोत्रायामुकशर्मणे विष्णुरूपिणे प्रेताय तिलतोयांजलिः.** ” ब्राह्मण नहीं मिलै तौ आप देना. पीछे ब्राह्मणोंसें बुलवाना. सो ऐसा—“ **अनेन नारायणबलिकर्मणा भगवान् विष्णुरिममुकं प्रेतं शुद्धमपापमर्हं करोतु** ” काम्यप्रयोगमें और इस प्रयोगमें संकल्प और नामगोत्रका उच्चारण इन्होंविषे विशेष प्रकार स्पष्टही है. पहिले काम्य प्रयोगमें “ **काश्यपगोत्र देवदत्तप्रेत** ” इत्यादिक उच्चार करना. इस प्रयोगमें तौ गोत्र और नामका ज्ञान है इसलिये दुर्मरणकरके मृत हुएका नाम और गोत्र होवै वहही उच्चारण करना ऐसा संकल्पविशेषमेंभी कारण स्पष्टही है. ऐसा दुर्मरणमें और्ध्वदेहिकके अधिकारके अर्थ नारायणबलिका प्रयोग समाप्त हुआ है.

अथसर्पहतेव्रतं प्रतिमासंशुक्लपंचम्यांउपवासंनक्तंवाकृत्वापिष्टमयंनागंपंचफणमनंतवासुकिशंखपद्मकंबलकर्कोटकाश्वतरधृतराष्ट्रशंखपालकालियतक्षककपिलेति द्वादशनामभिर्द्वादशमासेषुसंपूज्यपायसेनविप्रान्संभोज्यवत्सरांतेहेमनागंप्रत्यक्षांगांचदत्वा नारायणबलिपूर्वकं दाहाशौचादिकंकार्यम् अथवानमोअस्तुसर्पेभ्यइतितिस्त्रआज्याहुतीर्जुहुयात् पंचम्यांपन्नगंहेमंस्वर्णेनैकेनकारयेत् क्षीराज्यपात्रमध्यस्थंपूज्यविप्रायदापयेत् प्रायश्चित्तमिदंप्रोक्तंनागदष्टस्य शंभुनेति ततोनारायणबल्यादि ॥

अब सर्पसें मरनेमें व्रत कहताहुं.

प्रत्येक मासकी शुक्लपक्षकी पंचमीकों उपवास अथवा नक्तव्रत करके पांच फणोंवाला पीठीका नाग बनायके अनंत, वासुकि, शंख, पद्म, कंबल, कर्कोटक, अश्वतर, धृतराष्ट्र, शंखपाल, कालिय, तक्षक और कपिल ऐसे बारह नाभोंसें बारह महीनोंमें पूजा करके खीरसें ब्राह्मणोंकों भोजन देके वर्षके अंतमें सोनाका नाग और प्रत्यक्ष गौका दान करके नारायणबलि करके दाह और आशौच आदि करना. अथवा “ **नमोऽस्तु सर्पेभ्यो॰** ” इस मंत्रकरके तीन घृतकी आहुतियोंसें होम करना. “ पंचमीके दिनमें एक तोलाभर सोनाका नाग बनायके दूध और घृतसें युक्त ऐसे पात्रमें वह नाग रखके पूजन करके ब्राह्मणकों देना. सर्पसें डसे हुएका यह प्रायश्चित्त महादेवजीनें कहा है. ” पीछे नारायणबलि आदि करना.

अथपालाशप्रतिकृतिदाहादिविधिः तत्रदेशांतरमरणेपराकद्वयमष्टौकृच्छ्रान्वाकृत्वास्थीनिदहेत् अस्थ्नांचांडालश्वादिस्पर्शेपंचगव्योदकादिभिःप्रक्षाल्यदहेत् यस्यास्थीनिसर्वथानलभ्यंतेतस्यपर्णशरदाहः कुर्याद्दर्भमयंप्रेतंकुशैस्त्रिशतषष्टिभिः पालाशीभिःसमिद्भिर्वासंख्याचैवंप्रकीर्तिता तत्रभूमौकृष्णाजिनमास्तीर्यतत्रशरंदक्षिणायतंनिवेश्यतत्रपलाशवृंतानिन्यसेत् शिरसिचत्वारिंशत् ४० ग्रीवायांदश १० बाह्वोःप्रत्येकंपंचाशदेवंशतं १०० करांगुलीषु दश १० उरसिविंशतिः २० जठरेत्रिंशत् ३० शिश्नेचत्वारि ४ अंडयोस्त्रयंत्रयं ६ ऊर्वोः प्रत्येकंपंचाशदेवंशतं १०० जंघातःपादतलांतंप्रत्येकंपंचदशैवं ३० पादांगुलीषुदश १० एवंषष्ट्यधिकशतत्रयमितैर्दर्भैःपालाशसमिद्भिर्वाशरीरंकृत्वाऊर्णावस्त्रेणबध्वाजलमिश्रपिष्टेन लिंपेत् शक्तौसत्यांनारिकेरादीन्यपि तथाहि शिरसिनारिकेरफलंवर्तुलालाबुवा ललाटेकदलीपत्रं दंतेदाडिमबीजानि कर्णयोःकंकणंब्रह्मपत्रंवा चक्षुषोःकपर्दौ २ नासिकायांतिलपुष्पं नाभावब्जं स्तनयोर्जंबीरफलद्वयं वातेमनःशिलां पित्तेहरितालं कफेसमुद्रफेनं रुधिरे मधुपुरीषेगोमयं मूत्रेगोमूत्रं रेतसिपारदं वृषणयोर्वृंताकद्वयं शिश्नेगृंजनं केशेषुवनसूकरसटावटप्ररोहावा लोमसुऊर्णा मांसेमाषपिष्टलेपः पंचगव्यैःपंचामृतैश्चसर्वतःसिंचनं पुनर्नो असुं० असुनीतेइत्यृग्भ्यांप्राणप्रवेशंभावयेत् यद्वा यत्तेयममितिसूक्तेनशुक्रमसीतिपारदंक्षिप्त्वाअक्षीभ्यामितिशरीरंस्पृशेत् शरीरंस्नापयित्वा चंदनमनुलिप्य वस्त्रोपवीतेपरिधाप्य अयं सदेवदत्तइत्यभिमृश्य इदंचास्योपासनमितिध्यात्वाविधिवद्दाहादिकार्यं अत्राहिताग्नेरस्थिदाहेपर्णशरदाहेवादशाहमाशौचमनाहिताग्नेस्त्र्यहमित्यादिप्रागुक्तमनुसंधेयं द्वादशाब्दादिप्रतीक्षोत्तरंपर्णशरदाहादिक्रियतेचेत्तदात्रिंशत्कृच्छ्राणिचांद्रायणत्रयंवाकृत्वाकार्यं ॥

अब पलाशकी समिधोंका पुतला बनायके दाह आदि विधि कहताहुं.

तहां देशांतरविषे मरनेमें दो पराक अथवा आठ कृच्छ्र प्रायश्चित्त करके अस्थियोंका दाह करना. अस्थियोंकों चांडाल और कुत्ता आदिकोंका स्पर्श हो जावै तौ तिन्होंकों पंचगव्य और जल आदिसें धोके दाह करना. जिसके अस्थि सब प्रकारसें नहीं मिलैं तिसका पर्णशरविधिसें दाह करना. “तीनसो साठ कुश लेके तिन्होंकरके डाभका प्रेत बनाना अथवा तीनसो साठ पलाशकी समिधोंसें बनाना, ऐसी संख्या कही है.” तहां पृथिवीपर काला मृगछाला विस्तृत करके तिसपर शरसंज्ञक तृण दक्षिणके तर्फ फैला हुआ स्थापित करके तिसपर पलाशके वृंतोंकों स्थापित करना. सो ऐसा—शिरपर ४०; ग्रीवा अर्थात् कंठपर १०; एक एक बाहुपर पंचास पंचास ऐसे दोनों बाहुओंमें १००; हाथोंकी अंगुलियोंपर १०; छातीपर २०; पेटपर ३०; लिंगपर ४; दोनों अंडोंपर ६; दोनों उरुओंपर पंचास पंचास ऐसे १००; जांघसें लेके पैरके तलवेपर्यंत पंदरह पंदरह ऐसे ३०; पैरोंकी अंगुलियोंपर १०, इस प्रकार ३६० कुश अथवा पलाशकी समिधोंसें शरीर बनायके ऊनके वस्त्रसें बांधके जलयुक्त पीठीसें लीपना. शक्ति होवै तौ नारियल आदिकोंसेंभी युक्त करना. सो दिखाते हैं—शिरकी जगह नारियलका फल अथवा गोल तूंबा; ललाटकी जगह केलीका पत्ता;

दंतोंकी जगह अनारके दानें; कानोंकी जगह कंकण अथवा ताडका पत्ता; नेत्रोंकी जगह दो कौडी; नासिकाकी जगह तिलका फूल; नाभीकी जगह कमल; चूंचियोंकी जगह बिजोराके दो फल; वातकी जगह मनशिल; पित्तकी जगह हरताल; कफकी जगह समुद्रझाग; रक्तकी जगह शहद; विष्ठाकी जगह गोवर; मूत्रकी जगह गोमूत्र; वीर्यकी जगह पारा; अंडकोशोंकी जगह दो बैंगन; लिंगकी जगह गाजर; बालोंकी जगह बनके शूरके बाल अथवा वडकी डाढी; रोमोंकी जगह ऊन; मांसकी जगह उडदोंकी पीठीका लेप; पंचगव्यकरके और पंचामृतकरके सब तर्फसें सिंचन करना. पीछे **“पुनर्नोअसुं० असुनीते०”** इन दो ऋचाओंकों कहके प्राणोंका प्रवेश हुआ है ऐसी भावना करनी. अथवा **“यत्तेयमं०”** इस सूक्तसें और **“शुक्रमसि०”** इस मंत्रसें पारा घालके **“अक्षीभ्यां०”** इस मंत्रसें शरीरकों स्पर्श करना. पीछे शरीरकों स्नान करवायके चंदनका लेप करके वस्त्र और यज्ञोपवीत पहनाके **“अयं स देवदत्तः”** ऐसा वाक्य कहके स्पर्श करके **“इदं चास्योपासनम्”** ऐसा कहके ध्यान करके यथाविधि दाह आदि करना. इस स्थलमें आहिताग्निका अस्थिदाह अथवा पर्णशरदाह करनेमें दश दिन आशौच है, और अनाहिताग्निका तीन दिन आशौच इत्यादिक सब पूर्व कहा निर्णय जानना. बारह वर्ष आदि कालकी प्रतीक्षा किये पीछे पर्णशरदाह आदि कर्म करना होवै तौ तिस कालमें तीस कृच्छ्र अथवा तीन चांद्रायण करके करना योग्य है.

अथातीतप्रेतसंस्कारकालः प्रत्यक्षशवसंस्कारेदिनंनैवविशोधयेत् आशौचमध्येसंस्कारे दिनंशोध्यंतुसंभवे दशाहोत्तरंतुदिनंसंशोध्यैवग्राह्यं तत्रवत्सरादूर्ध्वंक्रियमाणप्रेतकर्मण्युत्तरायणमेवश्रेष्ठं तत्रापिकृष्णपक्षएव तत्रनंदात्रयोदशीचतुर्दशीदिनक्षयान्वर्जयेत् शुक्रशनिवारौवर्ज्यौ भौमवारोपिवर्ज्यइत्येके नक्षत्रेषुभरणीकृत्तिकार्द्राश्लेषामघाज्येष्ठामूलंधनिष्ठोत्तरार्धंशततारकादिचतुष्टयंचेतिनक्षत्राणि त्रिपुष्करयोगश्चेत्यतिदुष्टानिसर्वथात्यजेत् कृत्तिकापुनर्वसूत्तराफल्गुनीविशाखोत्तराषाढापूर्वाभाद्रपदाचेतित्रिपादनक्षत्राणि द्वितीयासप्तमीद्वादशीचतिथिः कुजशनिरविवाराश्चेतित्रयाणांयोगेत्रिपुष्करः कैश्चिद्रविस्थानेगुरुवारउक्तः एतेष्वेवतिथिवारेषुमृगचित्राधनिष्ठायोगेद्विपुष्करः त्रिपुष्करयोगोवृद्धौलाभेनष्टेहृतेमृतौचत्रिगुणफलदः द्विपुष्करोद्विगुणफलदः तेनप्रेतकार्येद्वावपित्याज्यौ द्वयोर्योगेद्विपुष्करइतिकश्चित् गुरुशुक्रास्तपौषमासमलमासावैधृतिव्यतीपातपरिघयोगाः विष्टिःकरणं चतुर्थाष्टमद्वादशचंद्रश्चेत्यपिसर्वथात्यजेत् रोहिणीमृगपुनर्वसुपूर्वोत्तराफल्गुनीचित्राविशाखाऽनुराधापूर्वोत्तराषाढाधनिष्ठेतिकिंचिद्दुष्टानि संभवेत्यजेत् भौमवारोपित्याज्यइत्येके कर्तुस्तिसृषु[१]जन्मतारासुप्रत्यरितारायांचपर्णशरादिदाहोनेष्टः ॥

अब अतिक्रांत प्रेतसंस्कारका काल कहताहुं.

प्रत्यक्ष मुर्दाके संस्कारविषे दिनकी शुद्धिका विचार नहीं करना. आशौचविषे संस्कार करनेका संभव होवै तौ दिनकी शुद्धिका विचार करना. दश दिनके अनंतर तौ दिनशुद्धि दे-

---

[१] जन्मनक्षत्रे ततोदशमैकोनविंशेचनक्षत्रेइत्यर्थः ॥

खकेही दिन ग्रहण करना. तहां वर्षके उपरंत क्रियमाण प्रेतकर्ममें उत्तरायणही श्रेष्ठ है. तहांभी कृष्णपक्षही श्रेष्ठ है. तहां कृष्णपक्षमेंभी प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी और दिनक्षय इन्होंकों वर्जित करना. शुक्र और शनिवार वर्जित करने. कितनेक ग्रंथकार मंगलवारकोंभी वर्जित करते हैं. नक्षत्रोंमें भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठाका उत्तरार्ध और शतभिषा आदि चार ये नक्षत्र और त्रिपुष्करयोग इस प्रकार अत्यंत दुष्ट सब काल वर्जित करने. कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, इस प्रमाणसें ये त्रिपादनक्षत्र और द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी ये तिथि; मंगल, शनैश्वर और रविवार ये वार इन तीनोंका योग होवै तब त्रिपुष्करयोग होता है. कितनेक ग्रंथकारोंनें रविवारके स्थानमें बृहस्पतिवार कहा है. इन्ही तिथि और वारोंमें मृगशिर, चित्रा और धनिष्ठा इन नक्षत्रोंका योग होवै तब द्विपुष्करयोग होता है. वृद्धि, लाभ, नाश, चोरी, और मरण इन्होंमें त्रिपुष्करयोग होवै तौ त्रिगुना फल जानना और द्विपुष्करयोग होवै तौ दुगुना फल देता है, इसलिये प्रेतकार्यमें दोनोंभी वर्जित करने योग्य है. कितनेक ग्रंथकार दोनोंके योगकों द्विपुष्कर कहते हैं. बृहस्पति और शुक्रका अस्त, पौषमास, मलमास, वैधृति, व्यतीपात, परिघयोग; भद्राकरण; चतुर्थ, अष्टम, द्वादश इन स्थानोंमें चंद्रमा ये सब प्रकारसें वर्जित करने योग्य हैं. रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु; पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा और धनिष्ठा ये नक्षत्र कछुक दुष्ट होते हैं; इसलिये संभव होवै तौ इन्होंकों त्यागना. मंगलवारकाभी त्याग करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. कर्ताके तीन जन्मतारा और प्रत्यरितारा इन्होंविषे पर्णशर आदि दाह इष्ट नहीं है.

तथाचार्कगुरुचंद्रवाराअश्विनीपुष्यहस्तस्वातीश्रवणभानिचप्रशस्तानि मध्यमानिसर्वथा त्याज्यानिचोक्तानि नंदायांशुक्रवारेचतुर्दश्यांत्रिजन्मताराप्रत्यरितारासुचैकोद्दिष्टश्राद्धमतिनिंद्यं साक्षादेकादशाहेनकोपिनिषेधः ॥

तथा रविवार, बृहस्पतिवार, सोमवार; अश्विनी, पुष्य, हस्त स्वाती, श्रवण ये नक्षत्र श्रेष्ठ हैं. मध्यम और सब प्रकारसें त्यागनेके योग्य नक्षत्र कहे हैं. प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी, शुक्रवार, चतुर्दशी, तीन जन्मतारा और प्रत्यरितारा इन्होंमें एकोदिष्टश्राद्ध अतिनिंद्य होता है, प्रत्यक्ष ग्यारहमे दिनमें कोईभी दोष नहीं है.

अस्यनिषिद्धनक्षत्रादेरपवादः युगमन्वादिसंक्रांतिदर्शेचप्रेतकर्मणि पुनःसंस्कारादिकेपि नक्षत्रादिनशोधयेत् गुरुभार्गवयोर्मौढ्येपौषमासेमलिम्लुचे नातीतःपितृमेधःस्याद्गयांगोदावरींविना इतिपुनःसंस्कारकालः ॥

इन निषिद्ध नक्षत्र आदिकोंका अपवाद—“युगादि, मन्वादि, संक्रांति, दर्श, प्रेतकर्म और पुनःसंस्कार आदि इन्होंमें नक्षत्र आदिका विचार नहीं करना. बृहस्पति और शुक्रका अस्त, पौषमास, मलमास इन्होंमें अतिक्रांत पितृकर्म, गया और गोदावरीके विना नहीं होता है. इस प्रकारसें पुनःसंस्कारका काल कहा है.”

साग्निकस्यपर्णशरदाहेकृतेपश्चाद्देहलाभेपर्णशरदाहीयार्धदग्धकाष्ठैस्तंदहेत् तादृशकाष्ठालाभेलौकिकाग्निनादग्ध्वातदस्थीनिमहाजलेक्षिपेत् एवमन्येषांनिरग्नीनामपिपर्णशरदाहोत्तरंशरीरलाभेस्थिलाभेवायोज्यं अमृतंमृतमाकर्ण्यकृतंयस्यौर्ध्वदेहिकम् प्रायश्चित्तमसौस्मार्तकृत्वाग्नीनादधीतच अत्रपुनःसंस्कारादिप्रकारःपूर्वार्धेउक्तः आधानांतेआयुष्मतेष्टिः अनाहिताग्नेस्तुचरुः भर्तरिजीवत्येवमरणवार्ताश्रुत्वायादिस्त्रियासहगमनंकृतंतदातत्स्त्रीमरणमवैधमेव ज्ञातमरणमेवहिसहगमनेनिमित्तं नतुमरणज्ञानमात्रं अतस्तस्याभार्यायाआत्मघातादिदोषप्रायश्चित्तंतत्पुत्रादिभिःकृत्वानारायणबलिपूर्वकमौर्ध्वदेहिकंकार्यं भर्तुस्तुदाहाद्यौर्ध्वदेहिककरणनिमित्तमुक्तपुनःसंस्कारादिकार्यं ॥

साग्निकका पर्णशरदाह किये पीछे तिसके देहका लाभ होवै तौ पर्णशरदाहके जो अर्धदग्ध काष्ठ हैं तिनकरके तिस शरीरकों दग्ध करना. तैसे काष्ठ नहीं मिलैं तौ लौकिक अग्निसें दग्ध करके तिसके अस्थियोंकों बहुतसे जलमें डालना. इसही प्रकार अन्य निरग्नियोंकाभी पर्णशरदाह किये पीछे शरीरके मिलनेमें अथवा अस्थियोंके मिलनेमें ऐसाही निर्णय जानना. “नहीं मरे हुएकों मरा हुआ सुनके जिसका अंत्यकर्म किया होवै तिसनें स्मृत्युक्त प्रायश्चित्त करके अग्निका आधान करना.” इसविषे पुनःसंस्कार आदि प्रकार पूर्वार्धमें कह दिया है. आधान किये पीछे आयुष्मतेष्टि करनी. अनाहिताग्नि होनेमें चरु करना. पति जीवता होवै और मरनेकी वार्ता सुनके स्त्रीनें सहगमन किया होवै तब वह स्त्रीका मरना अविधिही कहा है. जाना हुआही पतिका मरना सहगमनमें निमित्त है. मरनेका जाननामात्र निमित्त नहीं है, इस कारणसें तिस स्त्रीका आत्महत्या आदि दोषका प्रायश्चित्त तिसके पुत्र आदिकोंनें करके नारायणबलिपूर्वक अंत्यकर्म करना. पतिका तौ, दाह आदि अंत्यकर्मकरणनिमित्तक पुनःसंस्कार आदि करना योग्य है.

क्वचित्जीवतोप्यंत्यकर्मविहितं यथाप्रायश्चित्तानिच्छोःपतितस्यघटस्फोटे तथाहिमहापातकेनोपपातकेनवापतितोयदिप्रायश्चित्तंनकरोतितदातंगुरूणांबांधवानांराज्ञश्चसमक्षमाहूयतत्पापंप्रकटीकृत्यतंपुनःपुनरुपादिशेत् प्रायश्चित्तंकुरुष्वाचारंलभस्वेति सयद्येवमपिनांगीकरोतितदारिक्तादिनिंद्यतिथौसायाह्नेसपिंडाबांधवाश्चसंभूयदासीहस्तेनानीतममेध्यकुत्सितजलादिपूर्णघटंसर्वतोदास्याद्यन्वारंभंकुर्वंतोदास्यादासस्यवावामपादेनन्युब्जंछिन्नाग्रदर्भेषुकारयित्वादासीसहितावदेयुरमुमनुदकंकरोमीतिनामग्रहणपूर्वकंप्राचीनावीतिनोमुक्तशिखाश्चसंतः ततोधिकारीकर्तादाहवर्ज्यंजीवंतमेवोद्दिश्यपिंडोदकदानादिप्रेतकार्याण्येकादशाहांतानिनाम्नैवकुर्यात् मिताक्षरायांप्रेतकार्योत्तरंघटनिनयनमुक्तं एकाहमाशौचंसर्वेषां यस्यघटस्फोटःकृतस्तेनसहसंभाषणस्पर्शादिसंसर्गोनकेनापिकार्यः करणेपतिततुल्यता घटस्फोटप्रयोजनंतुपूर्वार्धेतेउक्तं घटस्फोटनिश्चयोत्तरंघटस्फोटदिनात्प्राक्पतितज्ञातीनाधर्मकार्येष्वनधिकारइतिकश्चित् ॥

क्वचित् प्रसंगमें जीवतेकाभी अंत्यकर्म करना ऐसा कहा है. जैसे; प्रायश्चित्त करनेकी इच्छा नहीं करनेवाले पतितका घटस्फोट किया होवै तौ वह घटस्फोटविधि कहताहुं.—महापातक अथवा उपपातक करके पतित हुआ मनुष्य जो प्रायश्चित्त नहीं करै तौ गुरु, बांधव,

और राजा इन्होंके सन्मुख तिस पतितकों बुलायके तिसका पाप प्रकट करके तिसकों वारंवार उपदेश करना. सो ऐसा—प्रायश्चित्त कर, अपना आचार ग्रहण कर. ऐसा उपदेश करकेभी जो वह अंगीकार नहीं करै तौ चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी इन आदि निंद्य तिथिके दिनमें सायान्हकालविषे सपिंड और बांधव एक जगह मिलाके दासीके हाथकरके प्राप्त किये अशुद्ध और कुत्सित जल आदिसें पूरित ऐसे घटकों, सब प्रकारसें दासी आदिकों अन्वारंभ (स्पर्श) करती हुई दासी अथवा दासके वामें पैरकरके छिन्न किये अग्रभाग जिन्होंके ऐसे डाभोंपर मूंधा करके प्राचीनावीती होके और शिखासें वर्जित और दासीसें सहित ऐसे सबोंनें तिसका नाम ग्रहण करके "अमुमनुदकं करोमि," ऐसा बोलना. तिसके पीछे अधिकारी कर्तानें दाह वर्जित करके जीवतेकेही उद्देशसें पिंड और जलदान आदि प्रेतकर्म ग्यारहमे दिनपर्यंतके प्रेतकर्म नामसेंही करने. मिताक्षराग्रंथमें, प्रेतकर्म करनेके अनंतर घट ले जाना ऐसा कहा है. सबोंकों एक दिन आशौच है. जिसका घटस्फोटविधि किया होवै तिसके साथ संभाषण और स्पर्श आदि संसर्ग किसीनेंभी नहीं करना, करनेमें वह मनुष्य पतितके समान हो जाता है. घटस्फोटविधिका प्रयोजन पूर्वार्धके अंतमें कहा है. घटस्फोट करनेके निश्चयके अनंतर घटस्फोटदिनके पहिले पतितकी जातिके मनुष्योंकों धर्मकार्यविषे अधिकार नहीं है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं.

कृतघटस्फोटस्यपुंसोनुतापेतत्पापप्रायश्चित्तांतेसंग्रहविधिंरुच्यते तत्रादौशुद्धिपरीक्षा कृतप्रायश्चित्तोज्ञातिसमक्षंगोभ्यस्तृणभारंदद्यात् गोभिस्तृणेभक्षितेशुद्धिः भक्षणाभावेपुनःप्रायश्चित्तंचरेत् एवंनिश्चितसंशुद्धौसमानेयुर्नवंघटं हैमंवामृन्मयंवापिपवित्रजलपूरितं ततःसपिंडास्तंघटंसंस्पृश्याभिमंत्र्यतज्जलैःपावमानीभिरापोहिष्ठेत्यादिभिस्तरत्समंदीभिश्चपापिनमभिषिच्यतेनसहसर्वेस्नात्वातंजलघटमस्मैदद्युः सचशांताद्यौःशांतापृथिवीशांतंविश्वमंतरिक्षंयोरोचनस्तमिहगृह्णामीतियजुर्भिस्तंघटंगृह्णीयात् ततस्तदुदकंतेनैवसाकंसर्वेपिबेयुः ततःसकूष्मांडमंत्रैराज्यहोमंकृत्वासुवर्णंगांचदद्यात् ततस्तस्यजातकर्मादिव्रतबंधांताविवाहांतावासंस्काराःकार्याः एवंकृतेशुद्धेनतेनसंस्पर्शसंभोजनादिव्यवहारंकुर्यात् एवमुपपातकेमहापातकेचकृतघटस्फोटस्यशुद्धिर्ज्ञेया इतिसंक्षेपतःकृतघटस्फोटशुद्धिः ॥

जिसका घटस्फोट किया होवै तिस पुरुषकों पश्चात्ताप प्राप्त होवै तौ तिस पापका प्रायश्चित्त करनेके अनंतर तिसकों जातिमें लेनेविषे विधि कहताहुं.—तिसमें प्रथम शुद्धिकी परीक्षा—प्रायश्चित्त किया होवै तौ जातिके मनुष्योंके सन्मुख गौवोंके अर्थ तृणका भार देना. गौवोंकरके तृणके भक्षित करनेमें शुद्धि होती है. भक्षण नहीं किया होवै तौ फिर प्रायश्चित्त करना. "इस प्रकारसें शुद्धिका निश्चय हुए पीछे सोनाका किंवा माटीका नवीन घट शुद्ध जलसें भरके प्राप्त करना." तदनंतर सपिंड लोगोंनें तिस घटकों स्पर्श करके अभिमंत्रण करके तिस जलसें पावमानी ऋचा, "आपोहिष्ठा०" इन आदि ऋचा और "तरत्समंदी०" ऋचा इन्होंसें पापीके उपर अभिषेक करके तिसके साथ सबोंनें स्नान करके वह जलसें भरा घट तिस पापीकों देना. पीछे तिसनें "शांताद्यौः शांतापृथिवी शांतंविश्वमंतरिक्षंयोरोचनस्तमिहगृह्णामि" इन यजुर्वेदके मंत्रोंसें वह घट लेना. पीछे वह

जल तिस पापीके सहवर्तमान सबोंनें प्राशन करना. पीछे तिसनें कूष्मांडमंत्रसें घृतका होम करके सोना और गौका दान करना. पीछे तिस पापीके जातकर्मसें यज्ञोपवीतसंस्कारपर्यंत अथवा विवाहपर्यंत संस्कार करने. इस प्रकार विधि करनेसें शुद्ध हो जावै तब तिसकों स्पर्श और तिसके साथ भोजन आदि व्यवहार करना. इस प्रकार उपपातक और महापातकके विषयमें जिसका घटस्फोट किया होवै तिसकी शुद्धि जाननी. इस प्रकार संक्षेपसें घटस्फोटकी शुद्धि कही है.

वंदेश्रीमदनंताभिधगुरुचरणौसतांमताचरणौ ।
जननीमथान्नपूर्णांसंपूर्णांसद्गुणैर्वंद्याम् ॥ १ ॥

सत्पुरुषोंकों मान्य है आचरण जिन्होंका ऐसे श्रीमान् अनंत नामवाले पिताके चरणोंकों और श्रेष्ठ गुणोंसें संपूर्ण और बंदन करनेके योग्य ऐसी अन्नपूर्णा नामवाली माताकों प्रणाम करताहुं.

श्रीविठ्ठलंनमस्कृत्यविघ्नकक्षहुताशनं अंत्येष्टिनिर्णयंवक्ष्येसर्वशाखोपयोगिनम् ॥ २ ॥

विघ्नरूपी सूखे तृणविषे अग्नि ऐसे जो श्रीविठ्ठलजी तिनकों प्रणाम करके सब शाखाओंकों उपयोगी ऐसा अंत्येष्टिनिर्णय कहताहुं.

तत्रांत्यक्रियाधिकारिणःश्राद्धारंभेएवोक्ताः सर्वाभावेधर्मपुत्रःकार्यः तत्रपुत्राद्यधिकारिणापित्रादिकमासन्नमरणंदृष्ट्वासार्धाब्दादिप्रायश्चित्तंमोक्षधेन्वादिदानानिच तेनकारणीयानि स्वयंवातमुद्दिश्यकर्तव्यानि तत्रप्रायश्चित्तप्रयोगःप्रायश्चित्तप्रकरणेद्रष्टव्यः शक्तौसत्यांप्रायश्चित्तांतेदशदानानिकार्याणि तत्रगवामंगेषुतिष्ठंतिगोदानमंत्रःसर्वभूताश्रयाभूमिर्वराहेणसमुद्धृता अनंतसस्यफलदाअतःशांतिंप्रयच्छमे इतिभूमेः महर्षेर्गोत्रसंभूताःकाश्यपस्यतिलाःस्मृताः तस्मादेषांप्रदानेनममपापंव्यपोहत्वितितिलानां हिरण्यगर्भगर्भस्थमितिहिरण्यस्य कामधेनुषुसंभूतंसर्वक्रतुषुसंस्थितं देवानामाज्यमाहारमतःशांतिंप्रयच्छमेइत्याज्यस्य शरणंसर्वलोकानां लज्जायारक्षणंपरं सुवेषधारिवस्त्रत्वमतः० इतिवस्त्रंदेयं सर्वदेवमयंधान्यंसर्वोत्पत्तिकरंमहत् प्राणिनांजीवनोपायमतःशांतिंप्रयच्छमेइतिधान्यं तथारसानांप्रवरःसदैवेक्षुरसोमतः मम तस्मात्परांलक्ष्मींददस्वगुडैसर्वदेतिगुडः प्रीतिर्यतःपितॄणांचविष्णुशंकरयोःसदा शिवनेत्रोद्भवंरूप्यमतः० इतिरजतं यस्मादन्नरसाःसर्वेनोत्कृष्टालवणंविना शंभोःप्रीतिकरंनित्यमतः० इतिलवणं भूम्यादिप्रमाणानितुजननशांतिप्रकरणेउक्तानि पायश्चित्तादिकर्मसुविष्णवादिनामकीर्तनात्सांगता प्रायश्चित्ताद्यसंभवेपिमरणकालेविष्णुशिवनामकीर्तनमात्रात्सर्वपापक्षयो मुक्तिश्चेतिसर्वपुराणादिसिद्धांतः तथाचश्रीभागवते यस्यावतारगुणकर्मविडंबनानिनामानियेऽसुविगमेविवशागृणंति तेनैकजन्मशमलंसहसैवहित्वासंयांत्यपावृतमृतंतमजंप्रपद्ये इत्यादिमुमूर्षुंपितरंपुत्रोयदिदानंप्रदापयेत् तद्विशिष्टंगयाश्राद्धादश्वमेधशतादपि तानिचतिलपात्रदानंऋणधेनुमोक्षधेनुपापधेनुवैतरणीधेनूत्क्रांतिधेनुदानादीनि व्यतीपातोथसंक्रां

तिस्तथैवग्रहणंरवेः पुण्यकालास्तथासर्वेयदामृत्युरुपस्थितः आसन्नमृत्युनादेयागौःसवत्सा तुपूर्ववत् तदभावेतुगौरेवनरकोत्तारणायवै शुक्लपक्षेदिवाभूमौगंगायांचोत्तरायणे धन्यास्तात मरिष्यंतिहृदयस्थेजनार्दने इत्यादिवचनात् मुमूर्षोर्दानादौशक्त्यभावेपुत्रादिर्दद्यात् ॥

तहां अंत्यकर्मके अधिकारी श्राद्धारंभमेंही कह दिये हैं. सबोंके अभावमें धर्मपुत्र करना. तहां पुत्र आदि अधिकारीनें पिता आदिका मरण समीपमें देखकर सार्धाब्दप्रायश्चित्त और मोक्षधेनु इत्यादिक दान तिसनें तिन्होंसें करवाने अथवा आप तिन्होंके उद्देशसें करने. तहां प्रायश्चित्तका प्रयोग प्रायश्चित्तप्रकरणमें देखना योग्य है. शक्ति होवै तौ प्रायश्चित्त किये पीछे दशदान करने. तिसविषे मंत्र **"गवामंगेषु तिष्ठंति०"** यह गौदानका मंत्र है. **"सर्वभूताश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता ॥ अनंतसस्यफलदा ह्यतः शांतिं प्रयच्छ मे,"** यह पृथिवीदानका मंत्र है. **"महर्षेर्गोत्रसंभूताः काश्यपस्य तिलाः स्मृताः ॥ तस्मादेषां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु,"** यह तिलोंका मंत्र है. **"हिरण्यगर्भगर्भस्थं०"** यह सोनाके दानका मंत्र है. **"कामधेनुषु संभूतं सर्वक्रतुषु संस्थितम् ॥ देवानामाज्यमाहारमतः शांतिं प्रयच्छ मे"** यह घृतका मंत्र है. **"शरणं सर्वलोकानां लज्जाया रक्षणं परम् ॥ सुवेषधारिवस्त्रत्वमतः०,"** इस मंत्रसें वस्त्र देना. **"सर्वदेवमयं धान्यं सर्वोत्पत्तिकरं महत् ॥ प्राणिनां जीवनोपायमतः शांतिं प्रयच्छ मे,"** इस मंत्रसें अन्नका दान करना. **"तथारसानां प्रवरः सदैवेक्षुरसो मतः ॥ मम तस्मात्परां लक्ष्मीं ददस्व गुडसर्वदा"** इस मंत्रसें गुडका दान करना. **"प्रीतिर्यतः पितॄणां च विष्णुशंकरयोः सदा ॥ शिवनेत्रोद्भवं रूप्यमतः०"** इस मंत्रसें चांदीका दान करना. **"यस्मादन्नरसाः सर्वे नोत्कृष्टा लवणंविना ॥ शंभोः प्रीतिकरं नित्यमतः०"** इस मंत्रसें नमक देना. पृथिवी आदिके प्रमाण तौ जननशांतिके प्रकरणमें कहे हैं. प्रायश्चित्त आदि कर्ममें विष्णु आदिके नामके संकीर्तन करके कर्मकी सांगता होती है. प्रायश्चित्त आदिका असंभव होवै तबभी मरणकालमें विष्णु और शिवके नामके संकीर्तनसें सब पापोंका नाश और मुक्ति प्राप्त होती है ऐसा सब पुराण आदिका सिद्धांत है. तैसेही श्रीभागवतमें अवतार, गुण और कर्म इन्होंकों विडंबन अर्थात् अनुकरण करना ऐसा कहा है. गुणविडंबन अर्थात् सर्वज्ञ, भक्तवत्सल इत्यादि. कर्मविडंबन अर्थात् गोवर्धनोद्धारण, कंसाराति इत्यादिक ऐसे जिसके, नाम प्राण निकसनेके समयमें पराधीन होकेभी जो उच्चारते हैं वे अनेक जन्मोंके पापोंकों त्यागके अज, निरुपाधि और सत्य ऐसे ब्रह्मकों प्राप्त होते हैं, तिसकी मैं शरण हूं" इस आदि वचन है, "जिसका मृत्यु समीप होवै ऐसे पितासें जो पुत्र दान दिलवावै तौ वह दान गयाश्राद्ध और १०० अश्वमेध यज्ञोंसें विशेष होता है." वे दान—तिलपात्रदान, ऋणधेनु, पापधेनु, वैतरणीधेनु, उत्क्रांतिधेनु इत्यादिक दान करने. क्योंकी, "व्यतीपात, सूर्यसंक्रांति, तैसेही सूर्यग्रहण ये जो पुण्यकाल हैं वे मरनेके समयमें प्राप्त होते हैं." जिसका मृत्यु समीप होवै तिसनें बछडावाली गौका दान करना. तिसके अभावमें नरककों तिरनेके अर्थ गौका दान करना. शुक्लपक्ष, दिन, पृथिवी, गंगाजी, उत्तरायण इन्होंमें और हृदयविषे विष्णुकों स्थित करके जो मरते हैं वे धन्य हैं, इस आदि वचन है. मुमूर्षु मनुष्यकों दान आदि करनेकों शक्ति नहीं होवै तौ पुत्र आदिनें देनें.

तत्रतिलपात्रदानविधिः यथाशक्तिकांस्यपात्रेताम्रपात्रेवातिलान्क्षिप्त्वासुवर्णंचप्रक्षिप्यममजन्मप्रभृतिमरणांतंकृतनानाविधपापप्रणाशार्थंतिलपात्रदानंकरिष्ये विप्रंसंपूज्यममजन्मप्रभृतिमरणांतंनानाविधपापनाशार्थमिदंतिलपात्रंससुवर्णंसदक्षिणंअमुकशर्मणेतुभ्यं संप्रददे तिलाःपुण्याःपवित्राश्चतिलाःसर्वकराःस्मृताःशुक्लावायदिवाकृष्णाऋषिगोत्रसमुद्भवाः यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानिच तिलपात्रप्रदानेनममपापंव्यपोहतु नममेतिविप्रहस्तेजलंक्षिपेत् पुत्रादिस्त्वस्यजन्मप्रभृत्यादिसंकल्पमस्यपापंव्यपोहत्वितिमंत्रंचवदेत् ऐहिकामुष्मिकंयच्च सप्तजन्मार्जितंऋणं तत्सर्वंशुद्धिमायातुगामेकांददतोममेतिऋणधेनुदानमंत्रः अन्यत्सर्वंसामान्यगोदानवत् तद्विधिस्तुद्वितीयपरिच्छेदेउक्तः मोक्षंदेहिहृषीकेशमोक्षंदेहिजनार्दन मोक्षधेनुप्रदानेनमुकुंदःप्रीयतांममेति मोक्षधेनुमंत्रः आजन्मोपार्जितंपापंमनोवाक्कायकर्मभिः तत्सर्वंनाशमायातुगोप्रदानेनकेशवेतिपापधेनुदानमंत्रः ॥

तिन्होंमें तिलपात्रदानका विधि—जैसी शक्ति होवै तिसके अनुसार कांसीका पात्र अथवा तांबाका पात्र लेके तिसमें तिल और सुवर्ण घालके “मम जन्मप्रभृतिमरणांतं कृतनानाविधपापप्रणाशार्थं तिलपात्रदानं करिष्ये,” इस प्रकारसें संकल्प करके ब्राह्मणकी पूजा करके “ मम जन्मप्रभृति मरणांतं नानाविधपापनाशार्थं इदं तिलपात्रं ससुवर्णं सदक्षिणं अमुकशर्मणे तुभ्यं संप्रददे, तिलाः पुण्याः पवित्राश्च तिलाः सर्वकराः स्मृताः ॥ शुक्ला वा यदि वा कृष्णा ऋषिगोत्रसमुद्भवाः यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ॥ तिलपात्रप्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ॥ न मम ” ऐसा मंत्र कहके ब्राह्मणके हाथपर जल देना. पुत्र आदिनें तौ, “ अस्य जन्मप्रभृति० ” इत्यादिक संकल्प और “ अस्य पापं व्यपोहतु” ऐसा मंत्र कहना. “ऐहिकामुष्मिकं यच्च सप्तजन्मार्जितं ऋणम् ॥ तत्सर्वं शुद्धिमायातु गामेकां ददतो मम ” इस प्रमाण ऋणधेनुदानका मंत्र है. अन्य सब विधि सामान्य गोदानकी तरह जानना. वह सामान्य गोदानका विधि द्वितीय परिच्छेदमें कहा है. “ मोक्षं देहि हृषीकेश मोक्षं देहि जनार्दन ॥ मोक्षधेनुप्रदानेन मुकुंदः प्रीयतां मम ” ऐसा मोक्षधेनुके दानका मंत्र है. “ आजन्मोपार्जितं पापं मनोवाक्कायकर्मभिः ॥ तत्सर्वं नाशमायातु गोप्रदानेन केशव ” इस प्रकारसें पापधेनुका मंत्र है.

अथवैतरणीविधिः अद्येत्याद्यमुकस्यममयमद्वारस्थितवैतरण्याख्यनद्युत्तारणार्थंगोदानंकरिष्ये विप्रंपादप्रक्षालनवस्त्रगंधमाल्यादिभिरभ्यर्च्यतद्धस्तेशिवाआपःसंतु सौमनस्यमस्तु अक्षतंचारिष्टंचास्तु यच्छ्रेयस्तदस्तु यत्पापंतत्प्रतिहतमस्त्वितिकृत्वा धेनुकेत्वंप्रतीक्षस्वयमद्वारेमहापथे उत्तितीर्षुरहंदेविवैतरण्यैनमोस्तुते इतिधेनुंप्रार्थ्य विष्णुरूपद्विजश्रेष्ठभूदेवद्विजपावन तर्तुंवैतरणीमेतांकृष्णांगांप्रददाम्यहमितिविप्रंप्रार्थ्य वैतरणीसंतारणार्थमिमांगांकृष्णावस्त्ररक्तमाल्याद्यलंकृतांयथाशक्तिदक्षिणायुतां तुभ्यमहंसंप्रददे यमद्वारेपथेघोरेघोरावैतरणीनदी तांतर्तुंकामोयच्छामिकृष्णांवैतरणींतुगां नममेतिविप्रहस्तेजलंक्षिपेत् कृष्णायाअभावेऽन्यवर्णादेया गोरभावेद्रव्यंदेयं पुत्रादिर्दाताचेत्प्रथमेमंत्रेउत्तितीर्षुरयमितिपठेत् द्वितीयेतर्तुंवैतरणीमस्येति तृतीयेतांतर्तुमस्येति ॥

अब वैतरणी गोदानका विधि कहताहुं.

“अद्येत्यादि० अमुकस्य यमद्वारस्थितवैतरण्याख्यनद्युत्तारणार्थं गोदानं करिष्ये,” ऐसा संकल्प करके ब्राह्मणकी पादप्रक्षालन, वस्त्र, गंध, पुष्पोंकी माला इत्यादिक उपचारोंसें पूजा करके ब्राह्मणके हाथपर “शिवा आपः संतु, सौमनस्यमस्तु, अक्षतंचारिष्टं चास्तु, यच्छ्रेयस्तदस्तु, यत्पापं तत्प्रतिहतमस्तु” इस प्रकार करके “धेनुके त्वं प्रतीक्षस्व यमद्वारे महापथे ॥ उत्तितीर्षुरहं देवि वैतरण्यै नमोस्तुते” इस मंत्रसें धेनु अर्थात् गौकी प्रार्थना करके “वैतरणीसंतारणार्थं इमां गांकृष्णारक्तमाल्याद्यलंकृतां यथाशक्तिदक्षिणायुतां तुभ्यमहं संप्रददे ॥ यमद्वारे पथे घोरे घोरा वैतरणीनदी ॥ तां तर्तुकामो यच्छामि कृष्णां वैतरणीं तु गां नमम” ऐसे मंत्र कहके ब्राह्मणके हाथपर जल देना. कृष्णवर्णवाली गौ नहीं मिलै तौ अन्य वर्णवाली गौ देनी. गौके अभावमें द्रव्य देना. पुत्र आदि दान कर्ता होवै तौ प्रथम मंत्रमें “उत्तितीर्षुरयं” ऐसा पढना. दूसरे मंत्रमें “तर्तुं वैतरणीमस्य” ऐसा मंत्र पढना. तीसरे मंत्रमें “तांतर्तुमस्य” ऐसा पढना.

अथोत्क्रांतिधेनुः अद्येत्याद्यमुकस्यसुखेनप्राणोत्क्रमणप्रतिबंधकसकलपापक्षयद्वारासुखेनप्राणोत्क्रमणायथाशक्त्यलंकृतामिमामुत्क्रांतिधेनुंरुद्रदैवत्याममुकशर्मणेतुभ्यंसंप्रददे गवामंगेष्वितिमंत्रांतेनममेतिवदेत् धेन्वभावेद्रव्यंदेयं ॥

अब उत्क्रांतिधेनुका विधि कहताहुं.

अद्येत्यादिअमुकस्यसुखेनप्राणोत्क्रमणप्रतिबंधकसकलपापक्षयद्वारासुखेनप्राणोत्क्रमणाय यथाशक्त्यलंकृतामिमामुत्क्रांतिधेनुंरुद्रदैवत्याममुकशर्मणेतुभ्यंसंप्रददे ॥ गवामंगेषु०” यह मंत्र कहे पीछे “नमम” ऐसा पठन करना. गौ नहीं मिलै तौ द्रव्य देना.

उक्तप्रायश्चित्तादिदानांतविधिमकृत्वापित्रादिमरणेपुत्रादिनाप्रायश्चित्तंकृत्वादाहादि कर्तव्यं दानान्येकादशाहेकार्याणि पितुःपापाभावनिश्चयेप्रायश्चित्तंनावश्यकं केचिदुत्क्रांतिवैतरण्यौदशदानानिचैवहि मृतेपिकृत्वातंप्रेतंदहेदित्याहुः तुलसींसन्निधौकुर्यात्शालग्रामशिलां तथाकेचित्तिललोहहेमकार्पासलवणभूमिधेनुसप्तधान्येत्यष्टदानान्याहुः क्वचिन्मुमूर्षोर्मधुपर्कदानमुक्तं ॥

प्रायश्चित्तसें दानपर्यंत पूर्वोक्त विधि किये विना पिता आदिकों मरण प्राप्त होवै तौ पुत्र आदिनें प्रायश्चित्त करके दाह आदि करना. दान करने होवैं तौ ग्यारहमे दिनमें करने. पिताकों पापाचरण नहीं है ऐसा निश्चय होवै तौ प्रायश्चित्त अवश्यक नहीं है. कितनेक ग्रंथकार उत्क्रांतिधेनु, वैतरणीधेनु और दशदान इन्होंकों मृत होनेके अनंतर करके तिस प्रेतका दाह करना ऐसा कहते हैं. “तुलसी और शालग्रामशिला इन्होंकों मरणसमयमें समीपमें रखना.” कितनेक ग्रंथकार तिल, लोहा, सोना, कपास, नमक, भूमि, गौ और सप्तधान्य ऐसे आठ दान कहते हैं. कहींक ग्रंथमें मरनेकी इच्छावालेकों मधुपर्कका दान कहा है.

पुत्रादिः कर्तांत्यकर्माधिकारार्थंकृच्छ्रत्रयादिकंवपनंचकुर्यात् तत्रमातापित्रोःसापत्नमातुःपितृव्यस्यज्येष्ठभ्रात्रादेश्चांत्यकर्मकरणेक्षौरमावश्यकं पुत्राणांकर्तृभिन्नानामपिक्षौरंनित्यं एवंपत्न्याअपिप्रथमेदशमेह्निवाक्षौरंनित्यं तथादत्तकस्यपूर्वापरयोर्मात्रोःपित्रोर्मृतौक्षौरं रात्रौतुदग्ध्वापिंडान्तंकृत्वावपनवर्जितं वपनंवर्जितंरात्रौश्वस्तनीवपनक्रिया पत्नीपुत्रकनिष्ठभ्रात्रादेरंत्यकर्मणिक्षौरंनकार्यं अन्यत्रकृताकृतं ॥

पुत्र आदि कर्तानें अंत्यकर्मका अधिकार प्राप्त होनेके लिये तीन कृच्छ्र आदि प्रायश्चित्त और मुंडन करना. तहां माता, पिता, सापत्न माता, चाचा, ताऊ, बडा भाई, इन आदिका अंत्यकर्म करनेमें क्षौर करना आवश्यक है. कर्तासें भिन्न पुत्रोंकोंभी क्षौर करना नित्य है. इसी प्रकार भार्याकोंभी प्रथम दिनमें अथवा दशम दिनमें क्षौर करना नित्य है. तथा दत्तक अर्थात् गोद हुए पुत्रनें दोनों पिता और दोनों माताओंके मरनेमें क्षौर करना. "रात्रि होवै तौ, क्षौर वर्जित करके दाहकर्म करना और पिंडांत क्रिया करनी. रात्रिमें क्षौर नहीं करना, किंतु दूसरे दिनमें क्षौर करना." भार्या, पुत्र, छोटा भाई इन आदिका अंत्यकर्म करना होवै तौ क्षौर नहीं करना. अन्य जगह क्षौर करना अथवा नहीं करना.

स्मशानेनीयमानशवस्यशूद्रस्पर्शेशूद्रेणवहनेवा कुंभेसलिलमादायपंचगव्यंतथैवच सुमंत्रैरभिमंत्र्यापस्तेनसंस्नाप्यदाहयेत् कृच्छ्रत्रयंचकुर्यात् सूतिकारजस्वलयोःस्पर्शेप्येवमेव प्रायश्चित्तंतुपंचदशकृच्छ्राः शूद्रेणद्विजदाहेतुचांद्रायणपराकप्राजापत्यानिसमुच्चयेनपुत्रादिःकृत्वास्थीनिपुनर्दहेत् अस्थ्यभावेपालाशविधिः ऊर्ध्वोच्छिष्टाधरोच्छिष्टोभयोच्छिष्टेषुकृच्छ्रत्रयं अस्पृश्यस्पर्शनेषट्कृच्छ्राः अंतरालमृतौनवखट्वामरणेद्वादश निगडमृतौपंचदश रजकादिसप्तविधांत्यजादिस्पृष्टमरणेत्वेकत्रिंशत्कृच्छ्राणि देशांतरमरणेपराकद्वयमष्टौकृच्छ्रावाकृच्छ्रत्रयंप्रकुर्वीतआशौचमरणेपिच अर्धदग्धेशवेचितेरस्पृश्यस्पर्शेकृच्छ्रत्रयं एवंपुत्रादयःपित्रादेःपापिनःपापानुसारेणप्रायश्चित्तकांडोक्तंप्रायश्चित्तंदुर्मरणात्मघातादिनिमित्तेपूर्वोक्तप्रायश्चित्तंनारायणबल्यादिकंचकृत्वैवांत्यकर्मकुर्युः एवमुक्तप्रायश्चित्तंविनादाहादिकृतंव्यर्थंभवेत् उभयोश्चनरकः ॥

स्मशानमें लेजानेके शवकों शूद्रका स्पर्श हुआ होवै अथवा तिसकों शूद्र कांधिया लगै तौ "कलशमें जल और पंचगव्य ग्रहण करके वह जल सुंदर मंत्रोंसें अभिमंत्रित करके तिस्सें स्नान करवायके दाह करना और तीन कृच्छ्र प्रायश्चित्त करना." सूतिका और रजस्वला इन्होंका स्पर्श होवै तौ ऐसाही निर्णय जानना. प्रायश्चित्त तौ पंदरह कृच्छ्र करना. शूद्रनें द्विजका दाह किया होवै तौ चांद्रायण, पराक, प्राजापत्य ये एकके पीछे दूसरा इस प्रकार तीनोंभी पुत्र आदिनें करके तिसके अस्थियोंका फिर दाह करना. अस्थियोंके अभावमें पालाशविधि करना. ऊर्ध्वोच्छिष्ट[1], अधरोच्छिष्ट और उभयोच्छिष्ट इन्होंके होनेमें तीन कृच्छ्र, नहीं स्पर्श करनेके योग्यकों स्पर्श करनेमें छह कृच्छ्र, अंतराल मरण होवै तौ नव कृच्छ्र, शय्या अर्थात् खाटपर मरनेमें बारह कृच्छ्र, तुरंगमें (कारागृहमें) मरनेमें पंदरह कृच्छ्र, रजक

---

[1] इसका लक्षण तृतीय परिच्छेदके पूर्वार्धमें रजस्वलाप्रकरणमें कहा है.

अर्थात् धोबी आदि सात प्रकारके अंत्यज आदिका स्पर्श होके मरनेमें एकत्रीस कृच्छ्र, देशांतरविषे मरनेमें दो पराक, अथवा आठ कृच्छ्र प्रायश्चित्त करना. "आशौचविषे मरनेमें तीन कृच्छ्र करना." मुर्दा आधा दग्ध हो चुकै तब तिसकों अनंतर नहीं स्पर्श करनेके योग्यका स्पर्श होवै तौ तीन कृच्छ्र करना. इस प्रकारसें पुत्र आदिनें पिता आदि पापीका जैसा पाप होवै तिसके अनुसार प्रायश्चित्तकांडमें कहा प्रायश्चित्त, दुर्मरण, आत्महत्या इत्यादिक निमित्त होवै तौ पूर्व कहा प्रायश्चित्त और नारायणबलि आदि करके अंत्य कर्म करना. इस प्रकारसें उक्त प्रायश्चित्त किये विना दाह आदि किया होवै तौ व्यर्थ होता है. और दोनोंकों नरक प्राप्त होता है.

पतिपत्न्योरेककालेदहनेप्राप्तेभार्यायाःपत्यासहद्विवचनांतमंत्रोहेनदाहंकृत्वापिंडादिकंपतिपूर्वकंपृथक्कार्यं एवंसपत्नीनामेककालेमृतौसहैवदाहः पिंडादिकंतुज्येष्ठक्रमेणपृथगेव एवंपितापुत्रयोर्भ्रात्रोश्चलौकिकाग्निदाह्ययोर्दाहः सहैवपिंडादिपितृपूर्वंज्येष्ठपूर्वंचपृथक्पुंबालानांस्त्रीबालानांचदहनखननेचैवमेवेतिनागोजीभट्टीये रजस्वलागर्भिण्यादिमरणेसहगमनेचवक्ष्यते॥

पति और स्त्रीका दाह एक कालमें प्राप्त होवै तौ पतिके सहवर्तमान स्त्रीका द्विवचनांत मंत्रके उच्चारसें दाह करके पतिपूर्वक पिंड आदि कर्म पृथक् करना. ऐसे बहुत सपत्नियोंका एक कालमें मरना होवै तौ तिन्होंका साथही दाह करना, पिंड आदि कर्म तौ ज्येष्ठके क्रमकरके पृथक्ही करना. ऐसे लौकिक अग्निकरके दग्ध करनेके योग्य ऐसे पिता और पुत्र अथवा दो भाई इन्होंका साथही दाह करके पिंड आदि कर्म पितृपूर्वक और ज्येष्ठपूर्वक पृथक् करना. पुरुषबालकोंका और स्त्रीबालकोंका दाह और खनन करनेमेंभी ऐसाही निर्णय जानना, ऐसा नागोजीभट्टकृत ग्रंथमें कहा है. रजस्वला, गर्भिणी इत्यादिकोंके मरणविषे सहगमन प्रकरणमें आगे कहैंगे.

अथगोमयोपलिप्तभूमौकुशेषूपविष्टोदक्षिणाशिराःशयितोवागोपीचंदनादिमृदाकृततिलकः श्रीविष्णुंस्मरन् पुण्यसूक्तंगीतांसहस्रनामादिस्तोत्राणिपठेच्छृणुयाद्वा अमृतत्वप्राप्त्यर्थंपुण्यसूक्तस्तोत्रादीनांपाठंश्रवणंवाकरिष्येइतिसंकल्पः श्रोतुःसंकल्पाशक्तौश्रावयितास्यामुकशर्मणोमृतत्वप्राप्तयेऽमुकंश्रावयिष्यइतिसंकल्पयेत् नानानमितिसूक्तंपुरुषसूक्तंविष्णुसूक्तमुपनिषद्वागाइत्यादिपुण्यसूक्तानि रामकृष्णादिनामस्मरणेजातिमात्रस्याधिकारः ॥

अब गोबरसें लिपी हुई पृथिवीपर कुश डालके तिन कुशोंपर बैठके अथवा दक्षिणके तर्फ शिर करके शयन किया हुआ और गोपीचंदन आदि मृत्तिकासें तिलक किया हुआ होके श्रीविष्णुका स्मरण करता हुआ पुण्यसूक्त, गीता, सहस्रनाम आदि स्तोत्र इन्होंका पाठ करना, अथवा श्रवण करना. "अमृतत्वप्राप्त्यर्थं पुण्यसूक्तस्तोत्रादीनां पाठं श्रवणं वा करिष्ये," इस प्रकारसें संकल्प जानना. श्रवण करनेवालेकों संकल्प करनेकी शक्ति नहीं होवै तौ श्रवण करानेवालेनें "अस्यामुकशर्मणोऽमृतत्वप्राप्तयेऽमुकं श्रावयिष्ये," इस प्रकारसें

संकल्प करना. “ नानानं० ” यह सूक्त, पुरुषसूक्त, विष्णुसूक्त और उपनिषद्भाग इत्यादिक पुण्यसूक्त होते हैं. राम, कृष्ण आदि नामोंके स्मरणमें सब जातियोंकों अधिकार है.

अथसाग्नेर्विशेषः गृह्याग्निमतोगृह्याग्निनाश्रौताग्निमतस्त्रेताग्निभिर्दाहःकार्यः तत्रगृह्याग्निमतःश्रौताग्निमतश्चकृष्णपक्षेमरणेतदैवसायंकालाहुतीर्दर्शसायंकालपर्यंताःपक्षहोमवत्सकृद्ग्रहणेनैवहुत्वापुनःसंकल्पपूर्वकंप्रातराहुतीश्चप्रतिपत्प्रातर्होमांतास्तद्वदेवहुत्वादर्शयागंकुर्यात् यागासंभवेआज्यंसंस्कृत्यस्रुचिचतुर्वारंगृहीत्वापुरोनुवाक्यायाज्याभ्यामेकैकांप्रधानाहुतिंजुहुयात् स्मार्तेतुचतुर्गृहीताज्येनाग्नयेस्वाहेंद्राग्निभ्यांस्वाहेतिनाम्नैवप्रधानाहुतिद्वयं शुक्लपक्षेरात्रौमरणेसायंहोमस्यकृतत्वात्प्रातर्होममात्रमाकृष्यतदैवकुर्यात् नात्रपौर्णिमांतानांदर्शांतानांवाहोमानामिष्टिप्रधानपूर्णाहुतीनांवाकरणं शुक्लपक्षेदिवामरणेतुनकस्यापिहोमस्याकर्षणं एवंकृष्णपक्षमरणेपिदैवात्पूर्णमासेष्ट्यतिक्रमेहोमापकर्षप्रधानपूर्णाहुत्यादिकंचकृताकृतमनारब्धत्वादितिभाति करणपक्षेऽतिक्रांतपूर्णमासपूर्णाहुतीर्हुत्वापक्षहोमान्कृत्वादर्शपूर्णाहुतयःकार्याः अग्न्यारण्योरारूढेप्रमीयेतपतिर्यदि प्रेतंस्पृष्ट्वामथित्वाग्निंजप्त्वाचोपावरोहणं घृतंचद्वादशोपात्तंतूष्णींहुत्वाशवक्रिया विच्छिन्नश्रौताग्नेर्मृतौतुप्रेताधानंकार्यं तद्यथा प्रेतंस्वाग्न्यालयेक्षिप्त्वारणीसंनिधाप्य यस्याग्नयेजुह्वतोमांसकामाःसंकल्पयंतेयजमानमांसं जायंतुतेहविषेसादितायस्वर्गंलोकमिमंप्रेतंनयंत्वितियजुर्मंत्रेणमथित्वाग्निमायतनेप्रणीयद्वादशगृहीताज्येनतूष्णींहुत्वातेनदाहादिकार्यं नष्टेष्वग्निष्वथारण्योर्नाशेस्वामीम्रियेतचेत् आहरेदरणीद्वंद्वं मनोज्योतिर्ऋचाततःशेषंप्रागवत् ॥

अब साग्निकका विशेष निर्णय कहताहुं.

जो गृह्याग्निवाला होवै तिसका गृह्याग्निसें और श्रौताग्निवाला होवै तिसका तीन श्रौताग्निसें दाह करना. तिन्होंमें गृह्याग्निवालाका और श्रौताग्निवालाका कृष्णपक्षविषे मरण होवै तौ तिसही सायंकालकी आहुति दर्शसायंकालपर्यंत पक्षहोमकी तरह एकवार देके होम करके पुनः संकल्पपूर्वक प्रातःकालकी आहुति प्रतिपदाके प्रातर्होमपर्यंत तिस प्रकारसें होम करके दर्शयज्ञ करना. यज्ञका संभव नहीं होवै तौ घृतका संस्कार करके वह अन्न स्रुक्पात्रमें चारवार लेके पुरोनुवाक्या अथवा याज्या इन दो मंत्रोंसें एक एक प्रधान आहुतिसें होम करना. स्मार्ताग्निमें तौ चारवार गृहीत किये घृत करके “ अग्नये स्वाहा, इंद्राग्निभ्यां स्वाहा ” इस प्रकार नाममंत्रकरकेही दो प्रधान आहुति देनी. शुक्लपक्षविषे रात्रिमें मरण होवै तौ सायंकालका होम किया है इसवास्ते प्रातःकालका होम मात्र अपकर्षसें तिसी समयमें करना. यह शुक्लपक्षमें पूर्णिमांत अथवा दर्शांत होम, अथवा इष्टि कही है प्रधान जिसमें ऐसी पूर्णाहुति करनेका प्रयोजन नहीं है. शुक्लपक्षविषे दिनमें मरण प्राप्त होवै तौ कोईसेभी होमका अपकर्ष नहीं करना. इस प्रकारसें कृष्णपक्षमें मरण प्राप्त होवै तौ दैववशकरके पूर्णमासेष्टिका अतिक्रम होवै तौ होमका अपकर्ष करना. प्रधान पूर्णाहुति इत्यादिक, आरंभ हुआ नहीं है इस लिये करना अथवा नहीं करना ऐसा प्रतिभान होता है. करनेका पक्ष होवै तौ अतिक्रांत पूर्णमास, पूर्णाहुति इन्होंका हवन करके पक्षहोम करके दर्शपूर्णाहुति करनी. “अरणीमें

अग्निसमारोप करके जो पति मृत होवै तौ तिसके प्रेतकों स्पर्श करके अग्नि मंथन करके प्रत्यवरोहणमंत्रका जप करके बारहवार घृत लेके अमंत्रक होम करके पीछे प्रेतक्रिया करनी." विच्छिन्न हैं श्रौताग्नि जिसके तिसकों मरण प्राप्त होवै तौ, प्रेताधान करना. सो ऐसा—प्रेतकों अग्निशालामें रखके तहां समीपमें अरणी स्थापित करके "**यस्याग्नयो जुव्हतो मांसकामाः संकल्पयंते यजमानमांसं ॥ जायंतुते हविषे सादिताय स्वर्गं लोकमिमं प्रेतं नयंतु**" इस यजुर्मंत्रसें मंथन करके अग्निकों कुंडमें प्राप्त करके बारहवार गृहीत किये घृतसें अमंत्रक होम करके तिस अग्निसें दाह आदि करना. "अग्नि नष्ट हो जावै और अरणीका नाश हो जावै तब यजमान मृत होवै तौ "**मनोज्योति०**" इस ऋचाकरके दो अरणी करनी." शेष कर्म पहलेकी तरह करना.

स्मार्ताग्निमतः स्मार्ताग्निर्यदिविच्छिन्नस्ततोयतोविच्छेदस्तावत्कालगणनयापूर्वार्धोक्तरीत्याप्रायश्चित्तंतदैवकुर्यात्संकल्पयेद्वा प्रायश्चित्तांतेहोमद्रव्यंस्थालीपाकद्रव्यंचतावत्कालगणनयादेयं ततोरणिपक्षेपूर्ववदरणीमंथनं पक्षांतरेमुकशर्मणोग्निविच्छेदनिमित्तकंदाहायाग्निसिद्ध्यर्थं प्रेताधानंकरिष्यइतिसंकल्प्यायतनेसंभारान्निक्षिप्यलौकिकाग्निंप्रतिष्ठाप्याज्यंसंस्कृत्यायाश्चेतिमंत्रेणयस्याग्नयइतिपूर्वोक्तमंत्रेणचहुत्वाव्याहृतिचतुष्टयंजुहुयात् एवमौपासनःसिद्धोभवति पत्नीमरणेप्येवमितिभट्टाः एवंविधुरस्यापिश्रौताग्निपरिग्रहसत्त्वेयथायथंतत्तदग्निभ्यांदाहः विधुरस्याग्निपरिग्रहोत्तरंतद्विच्छेदेपूर्वोक्तरीतिभ्यांतत्तदग्न्योराधानं ॥

जो स्मार्त अग्निवाला होवै और तिसका स्मार्त अग्नि विच्छिन्न होवै तौ जिस दिनसें अग्निका विच्छेद हुआ होवै तितने दिन गिनके पूर्वार्धमें कही रीतिसें तिसी कालमें प्रायश्चित्त करना. अथवा संकल्प करना. प्रायश्चित्त किये पीछे होमद्रव्य और स्थालीपाकद्रव्य तितने कालकी गिनती करके देना. तदनंतर अरणीपक्ष होवै तौ पहलेकी तरह अरणीका मंथन करना. दूसरा पक्ष होवै तौ, "**अमुकशर्मणोऽग्निविच्छेदनिमित्तकं दाहायाग्निसिद्ध्यर्थं प्रेताधानं करिष्ये,**" ऐसा संकल्प करके तिस स्थानमें सब सामग्रियोंकों सिद्ध करके लौकिक अग्निकी स्थापना करके घृतका संस्कार करके "**अयाश्च०**" इस मंत्रकरके और "**यस्याग्नये०**" इस पूर्वोक्त मंत्रकरके होम करके चार व्याहृतिमंत्रोंसें होम करना. इस प्रकारसें करनेमें औपासन अग्नि सिद्ध होता है. भार्या मर गई होवै तौभी ऐसाही निर्णय जानना ऐसा भट्ट कहते हैं. इस प्रकारसें विधुर अर्थात् रांडे पुरुषनें श्रौताग्नि धारण किया होवै तौ यथायोग्य तिस तिस अग्निकरके दाह करना. विधुरनें अग्नि धारण किये पीछे तिस अग्निका नाश हो जावै तौ पहले कही दो रीतियोंसें तिस तिस अग्निका स्थापन करना.

अगृहीतगृह्याग्निकयोःस[1]भार्यविधुरयोर्ब्रह्मचारिसमावृत्तयोश्चानुपनीताविवाहितपुत्रकन्ययोश्चनिरग्निकभार्याविधवयोश्चकपालाग्निनालौकिकाग्निनावादाहः अग्निवर्णकपालेकरीषादिनोत्पादितोभूर्भुवःस्वःस्वाहेत्याज्याहुत्यासंस्कृतोग्निः कपालाग्निः लौकिकाग्निश्चांत्यजाग्निपतिताग्निसूतिकाग्निचिताग्न्यमेध्याग्निभिन्नोग्राह्यः यस्यानयतिशूद्रोग्निंतृणकाष्ठहवींषिवा प्रेत

---

[1] सपत्नीकस्यापि दायाद्यपक्षाश्रयेणागृहीताग्नित्वं ज्ञेयं ।

त्वंचसदातस्यशूद्रःपापेनलिप्यते आहिताग्निदंपत्योः पूर्वंपतिमरणेपत्युः सर्वाग्निभिर्दाहः पश्चान्मृतभार्यायास्तुनिर्मथ्याग्निनाकपालाग्निनावा पूर्वंभार्यामरणेतुतस्याअपिसर्वाग्निभिर्दाहः कार्यः सर्वपात्राण्यपितस्यैदेयानि पश्चान्मृतस्यतुपत्युःपुनराधानेनत्रेताग्निसत्त्वेतेनदाहः आधानाकरणेनिर्मथ्येनलौकिकाग्निनावेतिकेचित् याज्ञिकाचारोपिप्रायेणैवमेव ॥

गृह्याग्नि धारण नहीं किया होवै ऐसा सपत्नीक और विधुर, ब्रह्मचारी और समावर्तनकों प्राप्त हुआ, यज्ञोपवीतकों नहीं प्राप्त हुआ पुत्र और अविवाहित कन्या, निरग्निक भार्या और विधवा इन्होंका दाह कपालाग्निसें अथवा लौकिकाग्निसें करना. अग्निवर्णकपालमें गोवर आदि साधनसें उत्पन्न किया होके **‘‘भूर्भुवःस्वःस्वाहा’’** इस मंत्रसें घृतकी आहुतिसें संस्कार किया जो अग्नि वह कपालाग्नि होता है. लौकिक अग्नि लेनेका सो अंत्यजाग्नि, पतिताग्नि, सूतिकाग्नि, चिताग्नि और अशुद्ध अग्नि इन्होंसें वर्जित करके ग्रहण करना. अग्नि, तृण, काष्ठ, होमद्रव्य ये जिसके शूद्र लेता है तिस मरनेवालेका प्रेतपना सब काल रहता है और वह शूद्र पापी हो जाता है.’’ आहिताग्निरूपी स्त्रीपुरुषोंमांहसें पहले पति मर जावै तौ सब अग्नियोंसें पतिका दाह करना. पीछेसें मृत हुई स्त्रीका दाह निर्मथ्याग्निसें अथवा कपालाग्निसें करना. पहले स्त्री मर जावै तौ तिसका दाह सब अग्नियोंसें करना. सब पात्रभी तिस स्त्रीकोंही देने. स्त्रीके अनंतर पति मर जावै तौ, पुनराधान करके तीन अग्नि होवैं तौ तिन्होंसें दाह करना. आधान नहीं किया होवै तौ निर्मथ्याग्निकरके अथवा लौकिक अग्निकरके दाह करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं, और याज्ञिकोंका आचारभी बहुत प्रकारसें ऐसाही है.

अत्रनिर्णयसिंधुः साग्नेःपत्नीमृतौद्वौपक्षौ पुनर्विवाहेच्छायांपूर्वाग्निभिर्भार्यांदग्ध्वापुनर्दारक्रियांकुर्यात्पुनराधानमेवचेत्येकःपक्षःदाहयित्वाग्निहोत्रेणस्त्रियंवृत्तवतींपतिरित्यादिवचनजातानिपुनर्विवाहेच्छुपराण्येव पुनर्विवाहाशक्तोनिर्मथ्याग्निनातांदग्ध्वापूर्वाग्निष्वेवाग्निहोत्रहोमेष्ट्यादिचातुर्मास्यादिकार्यं सोमयागोनकार्यःपूर्वाग्न्येकदेशेनदहेदितियज्ञपार्श्वदेवयाज्ञिकादयःयानितुतस्मादपत्नीकोप्यग्निहोत्रमाहरेदितिश्रुतिस्मृत्यादिवचनानितानिपूर्वाग्निष्वेवाग्निहोत्रपराणिनत्वपत्नीकस्याधानार्थानिअपत्नीकस्याधानविधायकमूलवचनाभावात् दारकर्मणियद्यशक्तआत्मार्थमग्न्याधेयमित्यापस्तंबसूत्रंतुपुनर्विवाहाशक्तौपूर्वकृतमग्न्याधेयमात्मार्थमेवस्थाप्यंनपत्न्यैदद्यादित्येवंपरं ब्राह्मणभाष्यापरार्काशार्करामांडारादिमतमप्येवमेव येत्वपत्नीकस्याधानमाहुस्तदाशयंनविद्मइति इदंनिर्णयसिंधुमतमेवयुक्तंभाति याज्ञिकानामाचारस्त्वंतर्गूढविवाहेच्छामूलकोनप्रामाण्यापादकः पुनर्विवाहाशयासर्वाग्निदानेपश्चाद्विवाहासंभवेसिंधुमतेआधानाभावान्निर्मथ्याग्निरेवशरणंकेषांचिन्मतेपुनराधानं अत्रनिर्मथ्यादिनापूर्वमृतभार्यादाहपक्षेपूर्वाग्नीनामुत्सर्गेष्ट्यात्यागंकृत्वापुनराधानंकृत्वाग्निहोत्रंकार्यमितिकेचिदाहुः एवं[1]स्मार्ताग्नि

---

[1] अत्रमूलमंत्येष्टिपद्धतौ ॥ किंत्वेतावदिहाप्यस्ति दग्ध्वानिर्मथ्यवन्हिना उत्सर्गेष्ट्यात्यजेदग्नीन्पुनस्तानादधीतच शवाग्नयोवाएतेयेपत्न्यांमृतायांधार्यंतेइतिकठश्रुतिः सिंध्वादावेतत्पक्षानुक्तेरेकीयमतत्वमस्योक्तं इदंमतद्वयंस्मार्तेपियोज्यं ॥

मतः पूर्वभार्यामरणेपिगृह्याग्न्येकदेशेनतांदहेदवशिष्टाग्नौनित्यहोमस्थालीपाकाग्रयणानिकार्याणिअत्रसर्वत्रश्रौतस्मार्तेचकुशपत्नीविधानेनैवाधानांदिकर्माधिकारः ॥

इस विषयमें निर्णयसिंधुका मत कहते हैं—साग्निककी स्त्री मर जावै तौ दो पक्ष हैं—फिर विवाह करनेकी इच्छा होवै तौ पहले अग्निसें स्त्रीका दहन करके फिर विवाह करके पुनराधान करना ऐसा एक पक्ष है. "पतिनें शीलवती स्त्रीका अग्निहोत्रसें दाह करना" इत्यादिक सब वचन फिर विवाहकी इच्छा करनेवालेके विषयमें हैं. फिर विवाहविषे असमर्थ होवै तौ निर्मथ्याग्निसें तिसका दाह करके पूर्व अग्निमेंही अग्निहोत्रहोम, इष्टि इत्यादिक और चातुर्मास्य आदिक करना; सोमयाग करना नहीं. पूर्वाग्निके एकदेशसें दाह करना ऐसा **यज्ञपार्श्व**, **देवयाज्ञिक** आदि कहते हैं. "तिस कारणसें जिसकों स्त्री नहीं होवै तिसनेंभी अग्निहोत्र धारण करना," ऐसे जो श्रुति स्मृति आदिके वचन हैं वे पूर्वाग्निमेंही अग्निहोत्र करना एतद्विषयक अपत्नीककों आधानका विधान कहनेहारे नहीं हैं; क्योंकी, अपत्नीककों आधानविधि कहनेहारा मूलवचन नहीं है. विवाह आदिविषे जो असमर्थ होवै तौ "अपने अर्थ अग्निका आधेय करना," ऐसा जो आपस्तंबसूत्र वह तौ, फिर विवाह करनेकों सामर्थ्य नहीं होवै तौ पहले किया अग्निका आधेय अपने अर्थही रखना, और स्त्रीके अर्थ नहीं देना एतद्विषयक है. **ब्राह्मणभाष्य**, **अपरार्क**, **आशार्क**, **रामांडार** इन आदि ग्रंथोंका मतभी ऐसाही है. जो ग्रंथकार अपत्नीकनें आधान करना ऐसा कहते हैं तिन्होंके आशयकों हम नहीं जानते, ऐसा जो **निर्णयसिंधुका** मत सोही योग्य है ऐसा प्रतीत होता है. याज्ञिकोंका आचार तौ, अंतर्गत जो गुप्त विवाहकी इच्छा तन्मूलक है, प्रमाणीभूत नहीं है. फिर विवाहकी आशासें सब अग्नि दान कर दिये और पीछे विवाहके असंभवमें निर्णयसिंधुके मतसें आधानके अभावसें निर्मथ्याग्निही ग्रहण करना. कितनेक ग्रंथकारोंके मतमें पुनराधान करना ऐसा है. यहां 'निर्मथ्याग्नि आदिकरके पूर्व मृत हुई भार्याका दाह करना, इस पक्षमें पूर्वाग्निका उत्सर्गेष्टिसें त्याग करके पुनराधान करके अग्निहोत्र करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. इस प्रकारसें स्मार्ताग्निवालेकी पहले स्त्री मर जावै तौभी गृह्याग्निके एकदेशसें तिस स्त्रीका दाह करना. और अवशिष्ट अग्निमें नित्यहोम, स्थालीपाक, आग्रयण ये करने. यहां सब जगह श्रौतस्मार्तविषेभी कुशपत्नीविधानसेंही आधान आदि कर्मका अधिकार कहा है.

अनेकभार्यस्यज्येष्ठायांजीवत्यांकनिष्ठभार्यामरणेनिर्मथ्यादिनातांदहेत् नश्रौतस्मार्ताग्निभिः केचित्पूर्वसर्वाग्निभिःकनिष्ठांदग्ध्वाज्येष्ठयासहपुनराधानंकार्यमित्याहुस्तदग्निद्वयसंसर्गपरंमतांतरपरंवाबोध्यं दाहकालेग्निनाशेतुयजमानेचितारूढेपात्रन्यासेकृतेसतिवर्षाद्यभिहतेवन्हौचिताग्निस्थेकथंचन तदार्धदग्धकाष्ठानितानिनिर्मथ्यतंदहेत् ॥

अनेक भार्या जिसकों होवैं तिसकी ज्येष्ठ भार्या जीवती होके कनिष्ठ भार्या मर जावै तौ निर्मथ्य अग्नि आदिसें तिसका दाह करना, श्रौतस्मार्ताग्निसें दाह नहीं करना. कितनेक ग्रंथकार, प्रथम सब अग्नियोंसें कनिष्ठ स्त्रीका दाह करके ज्येष्ठ पत्नीसहवर्तमान पुनराधान करना ऐसा कहते हैं. यह दो अग्निका संसर्ग जहां होवै तद्विषयक अथवा दूसरा जो मत तद्विषयक जानना. दाहकालमें अग्निका नाश हो जावै तौ यजमानकों चितापर आरूढ करके

यज्ञपात्र स्थापन करनेमें चिताका अग्नि वर्षा आदिसें नष्ट हो जावै तौ तिस कालमें आधे दग्ध हुए काष्ठोंकों मंथन करके तिस अग्निकरके तिसका दाह करना."

अथगृहात्स्मशानेशवनयनप्रकारः तत्रविप्रप्रेतंनगरपश्चिमद्वारेणशूद्रंदक्षिणद्वारेणनिःसार्यसजातीयाःशवंप्रच्छादितमुखंप्राक्शिरसंदाहदेशंनयेयुः पूर्वोक्तोग्निःशवाग्रेन्येननेतव्यः प्रेताग्न्योर्मध्येन्येननगंतव्यं सर्वेसपिंडादयोधःकृतोपवीतामुक्तकेशाज्येष्ठपुरःसराःप्रेतमनुगच्छेयुः प्रेतश्चनग्नोनदग्धव्यः निःशेषतश्चनदाह्यः शववस्त्रंचस्मशानवासिभ्योदेयं प्रेतश्चकेशनखादिवापयित्वासंस्नाप्यगंधपुष्पाद्यैरलंकृत्यदग्धव्यः दिनेमृतौदिवैवदाहोरात्रिमृतस्यरात्रावेव दिवावारात्रौवास्थितःशवःपर्युषितः पर्युषितशवंपंचगव्येनस्नापयित्वाप्राजापत्यत्रयंकृत्वादहेत् मुखस्थसप्तछिद्राणिहिरण्यशकलैराच्छादयेत् अत्रपात्रन्यासोमंत्रवद्दाहादिविधिश्चस्वस्वसूत्रानुसारिश्रौतस्मार्तौत्येष्टिप्रयोगेषुज्ञेयः ततोदाहांतेघटस्फोटादिकंकार्यं शिलाविपर्ययेपिघटस्फोटस्यनावृत्तिः ततश्चितामप्रदक्षिणंसर्वेपर्यावृत्यसचैलंस्नात्वाचम्यसगोत्रसपिंडसमानोदकानांमातामहीमातामहयोराचार्यादेश्चदुहितृभगिन्योश्चावश्यंतिलांजलिंदद्युः तद्यथा वृद्धपूर्वादक्षिणामुखाअमुकगोत्रनामाप्रेतस्तृप्यत्वितिमंत्रेणांजलिनासकृत्पाषाणेसिंचेयुः अत्र स्नानोदकदानेऽपनःशोशुचदघमितिमंत्रेण स्नानमेवतेनमंत्रेणेत्यन्ये स्त्रीणांतुमंत्रोनास्ति मातुलपितृष्वसृमातृष्वसृस्वस्रीयश्वशुरमित्रयाजकादीनामुदकदानंकृताकृतं करणपक्षेपिनाश्मन्येवेतिनियमः व्रात्यब्रह्मचारिपतितव्रतिक्लीबचोराश्चनोदकंदद्युः तत्रव्रात्यायथाकालमुपनयनहीनाः व्रतिनःप्रक्रांतप्रायश्चित्ताः चोराःसुवर्णतत्समद्रव्यापहारिणः ब्रह्मचारिभिर्मातापितृपितामहमातामहगुर्वाचार्यादीनामुदकदानंकार्यंप्रक्रांतप्रायश्चित्तैस्तुतदंतेउदकदानंत्रिरात्राशौचंचकार्यं व्रात्यादिभिःप्रेतस्पर्शवहनदाहपिंडादिकमपिनकार्यं अन्याभावेब्रह्मचार्यपि पित्रादेर्दाहमाशौचंकुर्यात् कर्मलोपस्तुनास्तीत्युक्तं इदंचोदकदानमेकवाससापसव्येनैव उदकदानोत्तरंपुनःस्नात्वावस्त्राणिनिष्पीड्यकुलवृद्धाःपुत्रादीन्पूर्वेतिहासैःसमाश्वास्यविप्रानुमत्याकनिष्ठानुक्रमेणगृहंगत्वानिंबपत्राणिशनैर्भक्षयित्वाचम्याग्न्युदकगोमयादीन्स्पृष्ट्वाद्वाराश्मनिपदंनिधाय गृहंप्रविशेयुः निंबपत्रभक्षणंकृताकृतं ततस्तद्दिनेउपवसेयुःउपवासाशक्तावयाचितलब्धेनान्यगृहपक्वेनैवेकेनैवहविष्यान्नेनवर्तेरन् ॥

अब घरसें स्मशानविषे मुर्दा लेजानेका प्रकार कहताहुं.

तहां ब्राह्मणका मुर्दा होवै तौ नगरके पश्चिम द्वारकरके, शूद्रके मुर्दाकों नगरके दक्षिणद्वारकरके निकासके समानजातिवाले मनुष्योंनें शवमुख प्रच्छादित किया होके पूर्वकों शिरवाले ऐसे तिस मुर्देकों दाहदेशमें ले जाना. पूर्व कहा अग्नि मुर्दाके आगे दूसरे मनुष्यनें ले जाना. मुर्दा और अग्निके मध्यमें दूसरे मनुष्यनें गमन नहीं करना. अधोभागमें यज्ञोपवीत करनेवाले और छुटे हुये वालोंवाले और ज्येष्ठ पुरुष हैं आगे जिन्होंमें ऐसे सब सपिंड आदिनें मुर्दाके साथ अनुगमन करना. नंगा मुर्दा दग्ध नहीं करना. निःशेषकरकेभी दाह नहीं करना. मुर्दाका वस्त्र स्मशानविषे वसनेवालोंकों देना. मुर्दाके बाल और नख आदिकों कटवायके स्नान करायके गंध और पुष्प आदिकोंसें अलंकृत करके दाह करना. दिनविषे

मरा होवै तौ दिनमेंही दाह करना. रात्रिविषे मरा होवै तौ रात्रिमेंही दाह करना. दिनमें अथवा रात्रिमें मुर्दा दाह करनेका रहै तौ वह पर्युषित अर्थात् शीला हो जाता है. पर्युषित हुए मुर्दाकों पंचगव्यसें स्नान करायके तीन प्राजापत्य करके दाह करना. मुख, नासिकाके दो छिद्र, दो नेत्र, दो कान इन सात छिद्रोंकों सोनाके टुकडोंसें आच्छादित करना. यहां पात्रस्थापन और समंत्रक दाह आदि विधि ये अपने अपने सूत्रके अनुसार श्रौत और स्मार्त जो अंत्येष्टिप्रयोग हैं तिन्होंमें देख लेने. पीछे दाहके अंतमें घटस्फोट आदि विधि करना. शिलाका विपर्यास होवैगा तथापि घटस्फोटनविधि अर्थात् घटकों फोडना इसकी आवृत्ति नहीं करनी. पीछे सबोंनें चिताकी अप्रदक्षिण ऐसी परिक्रमा करके वस्त्रोंसहित स्नान करके और आचमन करके सगोत्र, सपिंड, समानोदक, मातामही, मातामह, आचार्य आदि, कन्या, बहन इन्होंकों तिलांजलि अवश्य देना. सो ऐसा—वृद्धपूर्वक दक्षिणाभिमुख होके "अमुकगोत्रनामा प्रेतस्तृप्यतु" इस मंत्रकरके अंजलीसें एकवार शिलापर जल देना. यहां स्नानोदक देना होवै तौ "अपनःशोशुचदघ०" इस मंत्रकरके देना. स्नानही तिस मंत्रकरके देना ऐसा दूसरे ग्रंथकार कहते हैं. स्त्रियोंनें जल देनेविषे मंत्र नहीं है. मामा, फूकी, मावसी, बहनका पुत्र, सुसरा, मित्र, उपाध्याय, इन आदिके अर्थ जलका दान करना अथवा नहीं करना. करणपक्षमेंभी शिलापरही करना ऐसा नियम नहीं है. व्रात्य, ब्रह्मचारी, पतित, व्रती, नपुंसक, चोर, इन्होंनें तिलांजलि देना नहीं. तिन्होंमें योग्य कालमें जिन्होंका यज्ञोपवीत नहीं किया गया होवै वे व्रात्य कहाते हैं; प्रायश्चित्तका आरंभ करनेवाले व्रती कहाते हैं; सोना और सोनाके समान द्रव्यकों हरनेवाले चोर कहाते हैं. ब्रह्मचारीनें माता, पिता, पितामह, मातामह, गुरु आचार्य इन आदिकों जल देना. प्रायश्चित्तका आरंभ करनेवालोंनें तौ प्रायश्चित्तकी समाप्तिके अनंतर जलका दान और तीन रात्रि आशौच करना. व्रात्य आदिकोंनें मुर्दोंकों स्पर्श, वहन, दहन और पिंड आदिभी करना नहीं. दूसरा अधिकारी नहीं होवै तौ ब्रह्मचारीनेंभी पिता आदिका दाह करके आशौच करना; कर्मका लोप तौ नहीं है ऐसा कहा है. यह जलदान करना होवै तौ एकवस्त्र होके अपसव्यकरकेही देना. जलदान किये पीछे फिर स्नान करके वस्त्रोंकों निचोडके कुलमें जो वृद्ध होवैं तिन्होंनें पुत्र आदिकोंकों पूर्व इतिहासोंकरके अच्छी तरह आश्वासित करके ब्राह्मणोंकी अनुमतिकरके कनिष्ठोंके अनुक्रमकरके घरकों गमन करके नींबके पत्तोंकों हौले हौले भक्षण करके आचमन करके अग्नि, जल, गोवर इन आदिकों स्पर्श करके द्वारके पत्थरपर पैरकों स्थापित करके घरमें प्रवेश करना. नींबके पत्ते भक्षण करने अथवा नहीं करने. पीछे तिस दिनमें उपवास करना. उपवास करनेकों सामर्थ्य नहीं होवै तौ याचना किये विना प्राप्त हुआ अथवा दूसरेके घरमें पकाया हुआ ऐसा हविष्य अन्न भक्षण करना.

तत्राशौचमध्येमाषमांसापूपमधुरलवणदुग्धाभ्यंगतांबूलक्षाराणिवर्ज्यानिक्षाराणितु तिलमुद्गादृतेशैव्यंसस्येगोधूमकोद्रवौ धान्याकंदेवधान्यंचशमीधान्यंतथैवच स्विन्नधान्यंतथापण्यं मूलंक्षारगणःस्मृतः केचित्सैंधवंभक्ष्यमित्याहुः आदर्शस्त्रीसंगद्यूतादिहसनरोदनोच्चासनानि नित्यंत्यजेयुः बालवृद्धातुरवर्जंतृणकटास्तीर्णभूमौपृथक्शयीरन्नकंबलाद्यास्तीर्णभूमौ मार्ज

नादिरहितमेवस्नानं अस्थिसंचयनादूर्ध्वंभार्यापुत्रव्यतिरिक्तानांशय्यासनादिभोगोस्त्येवस्त्रीसंगस्तुनास्ति ॥

तिस आशौचमें उडद, मांस, मालपुआ, मधुर, नमक, दूध, अभ्यंग, तांबूल और खार ये पदार्थ वर्जित करने. **क्षार पदार्थ कहते हैं**—"तिल, मूंग इन्होंके विना शेंगोंसें उत्पन्न होनेवाले अन्न; सस्यमें गेहूं और कोदू ये अन्न और धान्याक; देवअन्न; शमीधान्य अर्थात् मूंग, उडद, राना उडद, कुलथी, चना, इत्यादि और आने अन्न और पण्य और मूल इन्होंकों क्षारगण कहते हैं." कितनेक ग्रंथकार सेंधानमक भक्षण करना ऐसा कहते हैं. दर्पण, स्त्रीसंग, जुवा आदि, हसना, रोवना, ऊंचा आसन इन्होंकों नित्य त्यागना. वालक, वृद्ध, रोगी इन्होंकों वर्जित करके अन्योंनें तृण और चटाइसें आस्तृत करी पृथिवीपर पृथक् पृथक् शयन करना. कंबल आदिसें आस्तीर्ण हुई पृथिवीपर नहीं शयन करना. मार्जन आदि किये विनाही स्नान करना. अस्थिसंचयनके उपरंत भार्या और पुत्रसें व्यतिरिक्त हुये पुरुषोंको शय्या और आसन आदिका भोगना उचितही है. स्त्रीका संग तौ नहीं करना.

अस्थिसंचयनंतु समंत्राग्निदाहदिनादारभ्यप्रथमदिनेद्वितीयेतृतीयेचतुर्थेसप्तमेनवमेवागोत्रजैःसहस्वस्वसूत्रोक्तप्रकारेणकार्यं तत्रद्विपादत्रिपादनक्षत्राणिकर्तुर्जन्मनक्षत्रंचवर्ज्यं संभवेर्कभौममंदवारावर्ज्याः पालाशदाहास्थिदाहयोःसद्यःसंचयनं अस्थ्नांगंगांभसितीर्थांतरेवा प्रक्षेपः तद्विधिर्वक्ष्यते अरण्येवृक्षमूलेनिखननंवा अस्थीन्यन्यकुलस्थस्यनीत्वाचांद्रायणंचरेत् दययान्यस्यापिनयनेमहापुण्यं अस्थ्नांश्वसूकरशूद्रादिस्पर्शेपंचगव्यशालग्रामतुलस्युदकैःप्रोक्षणं आशौचमध्येस्वगोत्रजैःसहभोक्तव्यं तच्चदिवैव भोजनंचमृन्मयेषुपर्णपुटकेषुवाकार्यं न तुधातुपात्रेषु ॥

अस्थिसंचयन तौ समंत्रक अग्निसें जिस दिनमें दाह किया होवै तिस दिनसें आरंभ करके पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, सातमा, अथवा नवमा इन दिनोंमें गोत्रके मनुष्योंके सहवर्तमान अपने अपने सूत्रमें कहे प्रकारसें करना. तिसविषे द्विपाद, त्रिपादनक्षत्र और कर्ताका जन्मनक्षत्र ये वर्जित करने योग्य हैं. संभव होवै तौ रविवार, मंगलवार, शनिवार ये वर्जित करने. पालाशविधिसें दाह करनेमें और अस्थिदाह करनेमें तत्काल अस्थिसंचयन करना. अस्थियोंकों गंगाजीके जलमें अथवा दूसरे किसी तीर्थमें डाल देना. तिसका विधि कहेंगे. वनमें अथवा वृक्षकी जडमें अस्थियोंकों गाड देना. "अन्य कुलके मनुष्यकी अस्थियोंकों लेजानेमें चांद्रायण करना." दयाकरके दूसरेकेभी अस्थियोंकों लेजानेमें बहुत पुण्य है. अस्थियोंकों कुत्ता, शूर और शूद्र आदिका स्पर्श होवै तौ पंचगव्य, शालग्राम और तुलसी इन्होंके जलकरके प्रोक्षण करना. आशौचमें अपने गोत्रियोंके साथ भोजन करना, और वह भोजन दिनमेंही करना. भोजन माटीके पात्रोंमें अथवा पत्तोंसें बनी पत्तलमें करना; धातुके पात्रोंमें नहीं करना.

दाहदिनादारभ्यदशपिंडादशदिनमध्येदर्भास्तीर्णभूमावमंत्रकंदेयाः क्षत्रियादीनांनवपिंडाःनवदिनांतंदशमपिंडस्त्वाशौचांत्यदिने प्रथमेहनियोदेशोयश्चकर्तायच्चतंडुलादिद्रव्यंयच्चो

त्तरीयशिलापाकपात्रादितदेवदशाहांतं एतदन्यतमव्यत्ययेयतोव्यत्ययस्ततःपुनरावृत्तिः शिलाविपर्ययेपिघटस्फोटादेर्नावृत्तिरित्युक्तेलौकिकशिलाग्रहणं तेनपिंडदानतिलांजल्यादिकस्यैवावृत्तिर्नदाहस्य केचिदाचार्यविपर्ययेप्यावृत्तिमाहुः यत्रपुत्रादिमुख्यकर्तुरसन्निधानादमुख्याधिकारिणापिंडदानक्रियारब्धातत्रमध्येपुत्रादिसन्निधानेप्यमुख्यकर्त्रैवदशाहांताक्रियासमापनीया एकादशाहादिकंतुपुत्रादिमुख्येनैव समंत्रकदाहमात्रेन्येनकृतेतुपिंडदानादिदशाहकृत्यं सन्निकृष्टमुख्येनैवकार्यमितिमिताक्षरादयः अन्येतुसगोत्रोऽसगोत्रोवायःसमंत्रकदाहकर्तासएवदशाहंकुर्यादित्याहुः पत्न्याःकर्तृत्वेरजोदर्शनेजातेसातदंतेकुर्यात् कर्तुरस्वास्थ्येन्येनसर्वाः क्रियाःपुनःकार्याः पिंडद्रव्येषुतंडुलामुख्याः तदभावेफलंमूलशाकतिलामिश्रसक्तवोपि प्रेतश्राद्धेषुपितृशब्दस्वधाशब्दानुशब्दाःपुष्पधूपदीपदानादौमंत्राश्चनवाच्याः त्र्यहाशौचेपर्णशरदाहादौप्रथमेदिनेएकः पिंडःद्वितीयेचत्वारः तृतीयेपंचेतिक्रमोबोध्यः पुत्रेणपर्णशरदाहेकृते तस्यदशाहाशौचात्तेनत्र्यहमध्येपिंडसमाप्तिर्नकार्या शिरस्त्वाद्येनपिंडेनप्रेतस्यक्रियतेसदा द्वितीयेनतुकर्णाक्षिनासिकाः तृतीयेनकंठस्कंधभुजवक्षांसि चतुर्थेननाभिलिंगगुदानि पंचमेन जानुजंघपादं षष्ठेनमर्माणि सप्तमेननाड्यः अष्टमेनदंतलोमानि नवमेनवीर्यं दशमेनतुपूर्णत्वंतृप्तताक्षुद्विपर्ययः जलंदशाहमाकाशेस्थाप्यंक्षीरंचमृन्मये प्रेतात्रस्नाहीत्युदकं इदंपिबेतिच क्षीरं इदंचकृताकृतं ततः प्रेतोपकृतयेदशरात्रमखंडितं कुर्यात्प्रदीपंतैलेनवारिपात्रंचमार्तिकं भोज्याद्भोजनकालेतुभक्तमुष्टिंचनिर्वपेत् नामगोत्रेणसंबुद्ध्याधरित्र्यांपितृयज्ञवत् भूर्लोकात्प्रेतलोकंतुगंतुंश्राद्धंसमाचरेत् तत्पाथेयंहिभवतिमृतस्यमनुजस्यच ॥

दाहदिनसें आरंभ करके दश पिंड दश दिनोंविषे डाभसें आस्तृत करी पृथिवीपर अमंत्रक देने. क्षत्रिय आदिकोंनें नव दिनपर्यंत नव पिंड देने, दशमा पिंड तौ आशौचके अंतके दिनमें देना. प्रथम दिनमें जो देश, जो कर्ता, और जो चावल आदि द्रव्य, जो उत्तरीय, जो शिला और पाकका पात्र आदि होवै वेही दश दिनपर्यंत ग्रहण करने. इन्होंमांहसें एक कोईका विपर्यास होवै तौ जिस दिनसें विपर्यास हुआ होवै तिस दिनसें पुनरावृत्ति करनी. शिलाके विपर्यासमेंभी घटस्फोट आदिका विपर्यास नहीं करना ऐसा पहले कहा है, इसलिये लौकिक शिलाका ग्रहण करना. तिसकरके पिंडदान और तिलांजलि आदिकीही आवृत्ति करनी, दाहकी आवृत्ति नहीं करनी. कितनेक ग्रंथकार आचार्यके विपर्यासमेंभी आवृत्ति करनी ऐसा कहते हैं. जहां पुत्र आदि मुख्य कर्ताके असन्निधानसें अमुख्य अधिकारीनें पिंडदानक्रियाका आरंभ किया होवै तहां मध्यविषे पुत्र आदिके सन्निधानमेंभी अमुख्य कर्तानेंही दश दिनपर्यंत क्रिया समाप्त करनी. एकादशाह आदि तौ पुत्र आदि मुख्य कर्तानेंही करना. दूसरेनें किये समंत्रक दाहमात्रमें तौ पिंडदान आदि दश दिनका कृत्य समीपके मुख्य कर्तानेंही करना ऐसा मिताक्षरा आदि ग्रंथ कहते हैं. दूसरे ग्रंथकार तौ, सगोत्र अथवा असगोत्र जो समंत्रक दाहकर्ता होवै तिसनेंही दशाह कर्म करना ऐसा कहते हैं. स्त्री कर्म करनेवाली होवै और तिसकों रजका दर्शन होवै तब वह स्त्रीनें तिसके अंतमें करना. कर्ता स्वस्थ नहीं होवै तौ दूसरे पुरुषनें सब क्रिया फिर करनी. पिंडोंके द्रव्योंमें चावल मुख्य हैं. तिसके अभावमें फल, मूल, शाक और तिलमिश्रित किये सत्तू प्रधान हैं.

प्रेतश्राद्धोंमें पितृशब्द, स्वधाशब्द और अनुशब्द और पुष्प, धूप, दीपदान इत्यादिविषे मंत्र नहीं कहने. तीन दिनोंके आशौचमें, पालाशविधिकरके दाह आदि हुआ होवै तौ, पहले दिनमें एक पिंड, दूसरे दिनमें चार पिंड और तीसरे दिनमें पांच पिंड ऐसा क्रम जानना. पुत्रनें पालाशविधि करके दाह किया होवै तौ तिसकों दश दिन आशौच कहा है, इसलिये तीन दिनोंमें पिंडोंकी समाप्ति नहीं करनी. "पहले पिंडकरके प्रेतकों शिर सर्वकाल प्राप्त होता है." दूसरे पिंडसें कान, नेत्र, नासिका; तीसरे पिंडसें कंठ, कंधा, भुजा, छाती; चौथे पिंडसें नाभि, लिंग, गुदा; पांचमे पिंडसें गोडे, जंघा, पैर; छट्ठे पिंडसें सब प्रकारके मर्मस्थान; सातमे पिंडसें सब नाडी; आठमे पिंडसें दंत और रोम; नवमे पिंडसें वीर्य और दशमे पिंडसें पूर्णपना, तृप्तता, भूखका नाश ऐसे होते हैं. माटीके पात्रमें जल और दूध स्थापित करके दश दिन आकाशमें स्थापित करना. "प्रेतात्र स्नाहि" ऐसा कहके स्थापित करना. "इदं पिब" ऐसा कहके दूध स्थापित करना. ये दोनों कर्म करने अथवा नहीं करने. पीछे प्रेतकों उपकारके अर्थ दश रात्रिपर्यंत तेलका अखंडित दीपक स्थापित करना. और माटीके पात्रमें जल भरके स्थापित करना. भोजन करनेके कालमें भोजन करनेके अन्नमेंसें भातकी मुष्टि लेके संबुद्धिविभक्तिसें नामगोत्रका उच्चारण करके वह पितृयज्ञकी तरह पृथिवीपर देना. "भूलोकसें लेके प्रेतलोकपर्यंत जानेके लिये मृत मनुष्यका जो श्राद्ध करना वह पाथेयश्राद्ध होता है."

अथदशाहमध्येदर्शपातेनिर्णयः पिंडदानादौप्रारब्धेयदिमध्येदर्शप्राप्तिस्तदामातापितृव्यतिरिक्तानांसर्वंदशाहकृत्यमाकृष्यदर्शएवसमापनीयं मातापितृविषयेतुत्र्यहमध्येदर्शपातेनापकर्षः त्रिरात्रात्परंदर्शपातेतुपित्रोरपिसर्वंदर्शएवसमापनीयमितिकेचित् अन्येतुत्रिरात्रोर्ध्वमपिदर्शपातेऔरसपुत्रेणपित्रोस्तंत्रसमाप्तिर्नकार्येत्याहुः अत्रदेशाचाराद्व्यवस्थेतिसिंध्वादयः यदिदैवाद्दर्शात्पूर्वंपिंडदानादितंत्रंनारब्धंतदादाहमात्रेसमंत्रकेजातेपिनदर्शेतंत्रसमाप्तिनियम इतिभाति दर्शोत्तरमेवतंत्रारंभसमाप्तिसंभवेन द्विरैंदवेतुकुर्वाणःपुनःशावंसमश्नुतइत्युक्तदोषाप्रसक्तेः एवंदर्शेपकृष्यतंत्रसमाप्तावप्यग्निपिंडदातुर्दशाहमाशौचमस्त्येव पुत्रादेः सपिंडस्यतु सुतरां दशाहंप्रेतपिंडान्प्रदायास्नात्वाभुक्त्वावसपिंडस्यत्रिरात्रोपवासः सपिंडस्योपवासएकः मत्याद्विगुणं प्रेतकृत्यंकुर्वतास्थिसंचयनादर्वाक्स्त्रीसंगेकृतेचांद्रायणं ऊर्ध्वंकृच्छ्रत्रयं अन्येषामाशौचिनांसंचयनादर्वाक्त्रिरात्रं तदुत्तरमेकोपवासः

अब दश दिनके मध्यमें दर्श प्राप्त होवै तौ तिसका निर्णय कहताहुं.

पिंडदान आदि कर्मका आरंभ करके जो मध्यविषे अमावस प्राप्त होवै तब मातापितासें व्यतिरिक्तोंका सब दश दिनोंका कृत्य अपकर्षसें अमावसके दिनमें समाप्त करना. मातापिताकेविषे तौ तीन दिनोंके मध्यमें अमावस प्राप्त होवै तौ अपकर्ष करना नहीं. तीन दिनके अनंतर अमावस प्राप्त होवै तौ मातापिताके सब कृत्य अमावसके दिनमें समाप्त करने ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. दूसरे ग्रंथकार तौ तीन रात्रिके उपरंतभी अमावस प्राप्त होवै तौ

औरस पुत्रनें मातापिताके तंत्रकी समाप्ति नहीं करनी ऐसा कहते हैं. यहां देशाचारके अनुसार व्यवस्था करनी ऐसा **निर्णयसिंधु** आदि ग्रंथकार कहते हैं. जो दैववशसें अमावसके पहले पिंडदान आदि तंत्रका आरंभ नहीं किया होवै और दाह मात्र समंत्रक हुआ होवै तथापि अमावसकों तंत्रकी समाप्ति करनेका नियम नहीं है ऐसा प्रतिभान होता है; क्योंकी, अमावसके उपरंतही तंत्रका आरंभ और समाप्ति होनेवाली होनेसें “दो चंद्रमाओंसें युक्त हुये कालमें कर्म करनेवालेकों फिर आशौच प्राप्त होता है” ऐसा जो दोष कहा है तिसकी प्राप्ति नहीं है. इसी प्रकार अमावसमें अपकर्ष करके तंत्रकी समाप्ति होवै तौभी अग्नि और पिंडदान करनेवालोंकों दश दिन आशौच रहताही है. पुत्र आदि सपिंडकों तौ निःसंशय आशौच रहताही है. दश दिनपर्यंत प्रेतकों पिंड देके स्नान किये विना भोजन करनेमें असपिंडनें तीन रात्रि उपवास करना. सपिंडनें एक उपवास करना. जानकरके स्नान किये विना भोजन करनेमें दुगुने उपवास करने. प्रेतकृत्य करनेवालेनें अस्थिसंचयनके पहले स्त्रीसंग किया होवै तौ चांद्रायण करना. अस्थिसंचयनके पश्चात् स्त्रीसंग किया होवै तौ तीन कृच्छ्र करने, अन्य आशौचवालोंकों अस्थिसंचयनके पहले तीन रात्रि आशौच है, और अस्थिसंचयनके उपरंत एक उपवास करना.

अथनवश्राद्धं प्रथमेह्नितृतीयेचपंचमेसप्तमेतथा नवमैकादशेचैवतन्नवश्राद्धमुच्यते नवश्राद्धानिपंचाहुराश्वलायनशाखिनः आपस्तंबाःषडित्याहुर्विभाषालितरेषुहि पंचपक्षेएकादशाहेनवश्राद्धंनकार्यं एतान्येवविषमश्राद्धानीत्युच्यंते नवश्राद्धानिदशाहांतर्नवमिश्रंतुवत्सरइत्यन्यत्र अकृत्वातुनवश्राद्धंप्रेतत्वान्नैवमुच्यते नवश्राद्धंत्रिपक्षंचषाण्मासिकंमासिकानिच नकरोतिसुतोयस्तुतस्याधःपितरोगताः अर्घ्यहीनमधूपंचगंधमाल्यविवर्जितं नवश्राद्धममंत्रंस्यादवनेजनवर्जितं आशिषोद्विगुणादर्भाजपाशीःस्वस्तिवाचनं पितृशब्दःस्वसंबंधःशर्मशब्दस्तथैवच पात्रालंभोवगाहश्चउल्मुकोल्लेखनादिकं तृप्तिप्रश्नश्चविकिरःशेषप्रश्नस्तथैवच प्रदक्षिणाविसर्गश्चसीमांतगमनंतथा अष्टादशपदार्थाश्चप्रेतश्राद्धेविवर्जयेत् तिलोसीतिमंत्रेस्वधानमःपितृशब्दानवाच्याः किंतुप्रेतशब्दोहेनतूष्णींवातिलावपनं तूष्णीमर्घ्यदानं अमुष्मैस्वाहेतिप्रेतनाम्नापाणिहोमः बह्वृचानांसर्वैकोद्दिष्टेष्वग्नौकरणमस्त्येव अन्यशाखिनांतुतन्निषेधः नाम्नैकःपिंडः निनयनमंत्रेऊहः अनुमंत्रणादिकंत्वमंत्रकं अभिरम्यतामितिविसर्जनं एवंनवश्राद्धवर्ज्यैकोद्दिष्टेषु नवश्राद्धंत्वमंत्रकंसर्वमितिनारायणवृत्तिः उत्तानंस्थापयेत्पात्रमेकोद्दिष्टेसदाबुधः न्युब्जंतुपार्वणेकुर्यात्तस्योपरिकुशान्न्यसेत् सपिंडीकरणांतानिप्रेतश्राद्धानिलौकिकाग्नावित्याश्वलायनमतं नवश्राद्धानिसंभवेन्नेनकुर्यादन्यथामान्नेन ॥

अब नवश्राद्ध कहताहुं.

“पहला, तिसरा, पांचमा, नवमा, और ग्यारहमा इन दिनोंमें जो श्राद्ध है वह **नवश्राद्ध** होता है. आश्वलायनशाखियोंनें नवश्राद्ध पांच कहे हैं. आपस्तंबशाखियोंनें छह कहे हैं. अन्य शाखावाले इस विषयमें विकल्प कहते हैं”. पांच इस पक्षमें ग्यारहमे दिनविषे नवश्राद्ध नहीं करना. येही नवश्राद्ध विषमश्राद्ध कहाते हैं. “नवश्राद्ध दश दिनके भीतर करने

और नवमिश्रश्राद्ध तौ वर्षके भीतर करना" ऐसा अन्य जगह कहा है. "नवश्राद्ध नहीं करनेसें मनुष्य प्रेतपनेसें नहीं छुटता है. नवश्राद्ध, त्रैपक्षिकश्राद्ध, षाण्मासिक और मासिकश्राद्ध इन्होंकों जो पुत्र नहीं करता है तिसके पितर अधोयोनिकों प्राप्त होते हैं. अर्घ्यरहित, धूपरहित, गंधपुष्पविवर्जित, अमंत्रक, पाद्यरहित ऐसे नवश्राद्ध जानने. आशीर्वाद, द्विगुण दर्भ, जपसंबंधी आशीर्वाद, स्वस्तिवाचन, पितृशब्द, स्वसंबंध, शर्मशब्द, पात्रालंभ, प्रवाहण, उल्मुक, उल्लेखन आदिक, तृप्तिप्रश्न, विकिर, शेषप्रश्न, प्रदक्षिणा, विसर्जन, सीमांतगमन ये अठारह कर्म प्रेतश्राद्धमें वर्जित करने. "**तिलोसि०**" इस मंत्रमें स्वधाशब्द, नमःशब्द और पितृशब्द इन्होंका उच्चार नहीं करना, किंतु प्रेतशब्दके विचारसें अथवा अमंत्रक तिल छोडने. अर्घ्यदान अमंत्रक करना. "**अमुष्मै स्वाहा**" इस मंत्रसें प्रेतके नामकरके पाणिहोम करना. ऋग्वेदियोंकों सब एकोद्दिष्ट श्राद्धोंमें अग्नौकरण कहा है. अन्य शाखावालोंकों तौ एकोद्दिष्टश्राद्धमें अग्नौकरणका निषेध है. नामकरके एक पिंड देना. निनयनमंत्र अर्थात् जल देनेके मंत्रमें उच्चार करना. अनुमंत्रण आदिक तौ अमंत्रक करना. "**अभिरम्यताम्**" इस मंत्रकरके विसर्जन करना, ऐसा नवश्राद्ध वर्जित करके एकोद्दिष्टश्राद्धमें जानना. नवश्राद्ध तौ सब अमंत्रक करना ऐसा **नारायणवृत्तिमें** कहा है. "जाननेवाले पुरुषनें एकोद्दिष्टश्राद्धमें पात्र सीधा स्थापन करना. पार्वणश्राद्धमें तौ पात्र सूंधा स्थापित करके तिसके ऊपर कुशोंकों स्थापित करना." सपिंडीकरणपर्यंत प्रेतश्राद्ध लौकिक अग्निमें करने ऐसा आश्वलायनोंका मत है. संभव होवै तौ अन्नसें नवश्राद्ध करने. अन्यथा आमान्नसें करने.

विघ्नेतु नवश्राद्धंमासिकंचयद्यदंतरितंभवेत् तत्तदुत्तरश्राद्धेनसहतंत्रेणकार्यं शावेआशौचांतरप्राप्तौनवश्राद्धानिकुर्यादेव सहगमनेतु नवश्राद्धानिसर्वाणिसपिंडीकरणंपृथक् एकएव वृषोत्सर्गोगौरेकातत्रदीयते शूद्रस्यामंत्रकंसर्वंद्विजवन्नाम्नैवकार्यमितिस्मृत्यर्थसारः अत्रवयोधिकमरणेतत्कनिष्ठानांसपिंडानांदशमेहनिमुंडनंकेचिदाहुः मातापित्राचार्येषुमृतेषुनियमेन दशमेहनिमुंडनं एवंभर्तरिमृतेस्त्रियाअपिमुंडननियमः पुत्राणांसर्वेषांदाहकर्तुश्चदाहांगभूतं प्रथमदिनेदशमदिनेचमुंडनं अत्रदेशाचाराद्व्यवस्था अत्ररात्रिमृतस्यरात्रौदाहेपिप्रातरेवमुंडनमित्युक्तं ॥

विघ्न होवै तौ नवश्राद्ध, मासिकश्राद्ध ऐसा जो जो श्राद्ध अंतरित होवै वह वह उत्तरश्राद्धके साथ एकतंत्रसें करना. मृताशौचमें अन्य आशौच प्राप्त होवै तौ नवश्राद्ध करने. सहगमन होवै तौ सब नवश्राद्ध करने और सपिंडीकरणश्राद्ध पृथक् करना. तहां एकही वृषोत्सर्ग करना. स्त्रीके वृषोत्सर्गके स्थानमें एक गौका दान देना. शूद्रका सब कर्म अमंत्रक नाममंत्रसेंही द्विजोंकी तरह करना ऐसा **स्मृत्यर्थसार** ग्रंथमें कहा है. इस स्थलमें अवस्थासें अधिक ऐसे मनुष्यके मरनेमें मरनेवालेके छोटे सपिंडोनें दशमे दिनमें मुंडन कराना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. माता, पिता और आचार्य इन्होंके मरनेमें नियम करके दशमे दिनविषे मुंडन कराना. ऐसेही पतिके मरनेमें स्त्रीनेंभी मुंडन कराना ऐसा नियम है. सब पुत्रोंनें और दाह करनेवालेनें प्रथम दिनमें और दशमे दिनमें दाहका अंगभूत मुंडन क-

राना; यहां देशाचारके अनुसार व्यवस्था जाननी. यहां रात्रिविषे मृत हुए मनुष्यका रात्रिविषे दाह करनेमेंभी प्रातःकालमेंही मुंडन कराना ऐसा योग्य है.

ततोदशमेह्हनिपूर्ववस्त्रशुद्धिंगृहशुद्धिंचकृत्वा गौरसर्षपतिलकल्केनसशिरःस्नानंकृत्वानववस्त्रेपरिधायपरिहितवस्त्राणिप्रेतवस्त्राणिचांत्यजेभ्यआश्रितेभ्यश्चदत्वासुवर्णादीनिमंगलवस्तूनिस्पृष्ट्वागृहंप्रविशेत् ॥

तदनंतर दशमे दिनमें पहले वस्त्रोंकी शुद्धि और घरकी शुद्धि करके सुपेद सरसों और तिलोंकी पीठीसें शिरसहित स्नान करके नवीन धोती और डुपटा धारण करके पहले पहने हुये वस्त्रोंकों और प्रेतके वस्त्रोंकों अंत्यज और आश्रितोंके अर्थ देके सोना आदि मंगल पदार्थोंकों स्पर्श करके घरविषे प्रवेश करना.

अथास्थिक्षेपविधिः तत्रादौसंचयनदिनेऽस्थिस्थापनप्रकारः प्रेतस्थानेबलिंदत्वाक्षीरेणाभ्युक्ष्यवाग्यतः प्रेतस्यास्थीनिगृण्हीयात्प्रधानांगोद्भवानिच पंचगव्येनसंस्नाप्यक्षौमवस्त्रेणावेष्ट्यच प्रक्षिप्यमृन्मयेभांडेनवेसाच्छादनेशुभे अरण्येवृक्षमूलेवाशुद्धेसंस्थापयेदथ सूक्ष्मान्यस्थीनितद्भस्मनीत्वातोयेविनिक्षिपेत् ततःसंमार्जनंभूमेःकर्तव्यंगोमयांबुभिः पूजांचपुष्पधूपाद्यैर्बलिभिःपूर्ववच्चरेत् तत्स्थानाच्छनकैर्नीत्वातीर्थेवाजाह्नवीजले कश्चिच्चप्रक्षिपेत्पुत्रोदौहित्रोवासहोदरः मातुःकुलंपितृकुलंवर्जयित्वानराधमः अस्थीन्यन्यकुलस्थस्यनीत्वाचांद्रायणंचरेत् गंगातोयेषुयस्यास्थिक्षिप्यतेशुभकर्मणः नतस्यपुनरावृत्तिर्ब्रह्मलोकात्सनातनात् अस्तंगतेगुरौशुक्रेतथामासेमलिम्लुचे गंगायामस्थिनिक्षेपंनकुर्यादितिगौतमः दशाहांतरस्थिप्रक्षेपेतुनास्तादिदोषः दशाहाभ्यंतरेयस्यगंगातोयेस्थिमज्जति गंगायांमरणंयादृक्तादृक्फलमवाप्नुयात् ॥

अब अस्थियोंकों स्थापन करनेका विधि कहताहुं.

तहां आदिविषे अस्थिसंचयनके दिनमें अस्थियोंकों स्थापन करनेका प्रकार कहते हैं— “ मौनी होके प्रेतके स्थानमें बलि देके चिताके स्थानकों दूधसें प्रोक्षण करके प्रेतके प्रधानअंगोंके अस्थियोंकों ग्रहण करना, और पंचगव्यसें स्नान करायके और रेशमी वस्त्रसें वेष्टित करके माटीके नवीन अच्छे पात्रमें घालके पीछे दूसरे पात्रसें आच्छादित करके वनमें अथवा शुद्धरूपी वृक्षके मूलमें स्थापित करना. पीछे सूक्ष्म अस्थि और वह भस्म जलमें छोड देना. पीछे गोवरसें युक्त किये पानीसें पृथिवीका संमार्जन करना. और पुष्प, धूप इत्यादिक और वलि इन्होंकरके पहलेकी तरह पूजा करनी. “ पीछे पुत्र, धेवता अथवा मित्र, भाई इन्होंमांहसें एक कोईसेंनें युक्तिसें तिस स्थानसें अस्थियोंकों लेके तीर्थविषे अथवा गंगाजीविषे छोड देना. माताका कुल और पिताका कुल वर्जित करके जो मनुष्य अन्य कुलके मनुष्योंकी अस्थियोंकों ले जावै वह नराधम होता है और तिसनें चांद्रायण करना. जिस शुभकर्मवालेकी अस्थि गंगाजीके जलमें प्राप्त होती हैं तिसका शाश्वत ऐसे ब्रह्मलोकसें पुनरागमन नहीं होता है. बृहसति और शुक्रके अस्तमें और मलमासमें गंगाजीविषे अस्थियोंकों नहीं डालना, ऐसा गौतममुनि कहते हैं. ” दश दिनके भीतर अस्थि डालनेमें तौ

अस्त आदिका दोष नहीं है. जिसकी अस्थि दश दिनके भीतर गंगाजीमें प्राप्त हो जाती है तिसकों गंगाजीविषे मरनेका जो फल है वह प्राप्त होता है. ”

अथतीर्थेस्थिक्षेपंकर्तुंतत्पूर्वांगविधिः यत्रास्थीनिनिखातानितांभूमिंसचैलस्नानपूर्वकंपृथग्गोमूत्रादिभिःप्रोक्षयेत् तत्रगायत्र्यागोमूत्रेण गंधद्वारामितिगोमयेन आप्यायस्वेतिक्षीरेण दधिक्राव्णइतिदध्ना घृतंमिमिक्षइतिघृतेन उपसर्पेतिचतसृणामृचांशंखःपितरस्त्रिष्टुप् भूप्रार्थनखननमृदुद्धरणास्थिग्रहणेषुक्रमेणविनियोगः ताभिर्ऋग्भिःक्रमेणास्थिग्रहणांतानिकर्माणि कृत्वास्वयंजलाशयेगृह्योक्तविधिनास्नायात् ततोस्थिशुद्धिंकुर्यात् सायथा अस्थीनिस्पृष्ट्वैतोन्विद्रमितितृचावृत्त्यापंचगव्यैःस्नात्वास्पृष्ट्वैवदशस्नानानिकुर्यात् तत्रगायत्र्यादिपंचमंत्रैर्गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिःस्नानानिकृत्वादेवस्यत्वेतिकुशोदकेन मानस्तोकेतिभस्मना अश्वक्रांतेरथक्रांतेइतिमृदामधुवाताइतिमधुना आपोहिष्ठेतिशुद्धोदकेन चस्नायात् एवंदशस्नानानिकृत्वाऽस्थ्नांकुशैर्मार्जनंकुर्यात् तत्रमंत्रः अतोदेवाइत्यृक् अथसप्तसूक्तानि एतोन्विंद्रं० १ शुचीवो० १ नतमंहोन० ८ इतिवाइति० १३ स्वादिष्ठया० १० ममाग्नेवर्चो० ९ कद्रुदायप्र० ९ ततोयदीयान्यस्थीनितस्यकृतसपिंडीकरणस्यपार्वणविधिनाश्राद्धमस्थिक्षेपांगभूतंहिरण्येनकुर्यात् सक्तुनाचपिंडदानं दशाहांतरस्थिक्षेपकरणेएकोद्दिष्टविधिनाश्राद्धंततस्तिलतर्पणंकृत्वा पुनःपंचगव्यपंचामृतशुद्धोदकैरस्थीनिप्रक्षाल्ययक्षकर्दमेनालिप्यपुष्पैः प्रपूज्याऽजिनकंबलदर्भभूर्जपत्रशाणभूर्जपत्रताडपत्राणांक्रमेणसप्तधासंवेष्ट्यताम्रसंपुटेस्थापयेत् तत्रयक्षकर्दमलक्षणं द्वादशकर्षंचंदनंकुंकुमंचषट्कर्षःकर्पूरश्चतुः कर्षाकस्तूरीचैतेषांमेलनाद्यक्षकर्दमः ततोस्थिषुहेमरौप्यखंडानिमौक्तिकप्रवालनीलमणींश्चप्रक्षिप्यस्वसूत्रोक्तविधिनास्थंडिलाग्निप्रतिष्ठादिकृत्वाष्टोत्तरशतंतिलाज्याहुतीर्जुहुयात् उदीरतांशंखःपितरस्त्रिष्टुप् अस्थिप्रक्षेपांगतिलाज्यहोमेविनियोगः उदीरतामितिसूक्तस्यचतुर्दशऋग्भिःप्रत्यृचमाहुतिरित्येवंसूक्तस्यसप्तावृत्तिभिरवशिष्टदशाहुतीःप्रथमऋगावृत्त्येत्येवमष्टोत्तरशतं तिलाहुतीरष्टोत्तरशतमाज्याहुतीश्चजुहुयात् सवेष्टनास्थिसमुच्चययुतंताम्रसंपुटमादायतीर्थंगच्छेत् तत्रनियमाः मूत्रपुरीषोत्सर्गकाले आचमनकालेचनास्थीनिधारयेत् शूद्रयवनांत्यजादिकांस्वहीनजातिमस्थिधारणकालेनस्पृशेदितिकाशीखंडे ततस्तीर्थंप्राप्यतीर्थप्राप्तिनिमित्तकंस्नानादिविधायास्थीनिस्नापयित्वामुकगोत्रस्यामुकशर्मणोब्रह्मलोकादिप्राप्तयेमुकतीर्थेस्थिप्रक्षेपमहं करिष्येइतिसंकल्प्य पलाशपर्णपुटेपंचगव्येनास्थीन्यासिच्यहिरण्यशकलमाल्यघृततिलमिश्रितास्थीनिमृत्पिंडेनिधायदक्षिणांदिशमवेक्षमाणोनमोस्तुधर्मायेतिवदंस्तीर्थेप्रविश्य नाभिमात्रजलेस्थित्वासमेप्रीतोस्त्वित्युक्त्वातीर्थे क्षिपेत् ततःस्नात्वाजलाद्बहिरागत्यसूर्यंदृष्ट्वाहरिंस्मृत्वाविप्रायथाशक्तिरजतंदक्षिणांदद्यात् अमुकस्यास्थिक्षेपःकृतस्तत्सांगतार्थंरजतमिदंतुभ्यंसंप्रददेइति इत्यस्थिक्षेपप्रकारः ॥

अब तीर्थमें अस्थि छोडनेके लिये तिसका पूर्वांगविधि कहताहुं.

प्रथम वस्त्रोंसहित स्नान करके जहां अस्थि निखात किये होवैं तिस पृथिवीका पृथक् पृ-

थक् गोमूत्र आदिकरके प्रोक्षण करना. तहां गायत्रीमंत्रसें गोमूत्रकरके प्रोक्षण, "**गंधद्वारां०**" इस मंत्रसें गोवरकरके प्रोक्षण, "**आप्यायस्व०**" इस मंत्रसें दूधकरके प्रोक्षण, "**दधिक्राव्णो०**" इस मंत्रसें दहीकरके प्रोक्षण, "**घृतंमिमिक्षे०**" इस मंत्रसें घृतकरके ऐसा प्रोक्षण करना. पीछे "**उपसर्पेतिचतसृणामृचांशंखः पितरस्त्रिष्टुप् ॥ भूप्रार्थनखननमृदुद्धरणास्थिग्रहणेषुक्रमेण विनियोगः**" इन ऋचाओंसें क्रमकरके अस्थिग्रहणपर्यंत कर्म करके कर्तानें जलके स्थानमें गृह्योक्तविधिसें स्नान करना. पीछे अस्थियोंकी शुद्धि करनी. सो दिखाते हैं.—अस्थियोंकों स्पर्श करके "**एतोन्विंद्रं०**" इन तीन ऋचाओंकी आवृत्तिसें पंचगव्य करके स्नान करके स्पर्श करकेही दश स्नान करने. तिसविषे गायत्री आदि पांच मंत्रोंसें गोवर, गोमूत्र, दूध, दही और घृत इन्होंकरके स्नान करके "**देवस्यत्वा०**" इस मंत्रसें कुशोदककरके स्नान; "**मानस्तोके०**" इस मंत्रसें भस्मकरके स्नान; "**अश्वक्रांते रथक्रांते०**" इस मंत्रसें मृत्तिकास्नान; "**मधुवाता०**" इस मंत्रसें शहदकरके स्नान; और "**आपोहिष्ठा०**" इस मंत्रसें शुद्ध जलसें स्नान करना. इस प्रकार दश स्नान करके अस्थियोंपर कुशोंकरके मार्जन करना. तहां मंत्र—"**अतोदेवा०**" यह एक ऋचा, इसके अनंतर सात सूक्त, सो ऐसे–"**एतोन्विंद्रं० १, शुचीवो० १, नंतमंहो० ८, इतिवाइति० १३, स्वादिष्ठया० १०, ममाग्रेवर्चो० ९, कद्रुद्रायप्र० ९**" तदनंतर जिसकी अस्थि होवै तिसका सापिंडीकरण किया गया होवै तौ पार्वणविधिकरके अस्थिक्षेपका अंगभूत श्राद्ध सोनाकरके करना, और सत्तुके पिंड देने. दश दिनके भीतर अस्थिक्षेप करनेमें एकोद्दिष्टविधिकरके श्राद्ध करना. पीछे तिलतर्पण करके फिर पंचगव्य, पंचामृत, शुद्ध जल इन्होंसें अस्थियोंको प्रक्षालित करके यक्षकर्दमसें लिप्त करके पुष्पोंसें पूजा करके कृष्णमृगछाला, कंबल, डाभ, भोजपत्र, ताडके पत्ते इन्होंसें क्रमकरके सातवार वेष्टित करके तांबाके संपुटमें स्थापित करना. **तहां यक्षकर्दमका लक्षण कहते हैं.**—चंदन १२ तोले, केशर १२ तोले, कपूर ६ तोले और कस्तूरी ४ तोले इन पदार्थोंकों एकत्र मिलानेसें यक्षकर्दम होता है. पीछे अस्थियोंमें सोना और चांदीके टुकडे; मोती; पन्ना; नीलमणि इन्होंकों लगाके अपने सूत्रमें कहे विधिकरके स्थंडिलपर अग्निप्रतिष्ठा आदि करके तिल और घृतकी १०८ आहुति देके होम करना. होमका मंत्र "**उदीरतांशंखःपितरस्त्रिष्टुप् ॥ अस्थिप्रक्षेपांगतिलाज्यहोमेविनियोगः.**" "**उदीरतां०**" इस सूक्तकी चौदह ऋचाओंकरके प्रतिऋचाकों एक आहुति इस क्रमसें सूक्तकी सात आवृत्ति करके और शेष दश आहुति पहली ऋचाकी आवृत्तिसें इस प्रकार १०८ तिलोंकी आहुति और १०८ घृतकी आहुति करके होम करना. वेष्टनसहित अस्थियोंके समुच्चयसें युत वह तांबाका संपुट लेके तीर्थविषे गमन करना. **तिसविषे नियम**—मूत्र और विष्ठाकों त्यागनेके कालमें और आचमनके कालमें अस्थियोंकों नहीं धारण करना. अस्थिधारण किया होवै तब शूद्र, यवन, अंत्यज इन आदि और अपनेसें हीन जाति इन्होंकों स्पर्श नहीं करना ऐसा **काशीखंडमें** कहा है. पीछे तीर्थमें गमन करके तीर्थप्राप्तिनिमित्तक स्नान आदि करके अस्थियोंकों स्नान करायके "**अमुकंगोत्रस्यामुकशर्मणोब्रह्मलोकादिप्राप्तये अमुकतीर्थेअस्थिप्रक्षेपमहंकरिष्ये**" ऐसा संकल्प करके पलाशके पत्तोंके पुटमें पंचगव्यसें अस्थियोंकों सींचन करके सोनाके टुकडे, पुष्प, घृत और तिल इन्होंकरके मिश्रित अस्थियोंकों

मृत्तिकाके पिंडपर स्थापित करके दक्षिणदिशाकों देखता हुआ "नमोस्तु धर्माय" ऐसा कहके तीर्थविषे प्रवेश करके नाभिप्रमाण जलमें स्थित होके "स मे प्रीतोस्तु" ऐसा कहके तीर्थमें अस्थियोंकों छोड देना. तदनंतर स्नान करके जलसें बाहिर आके सूर्यका दर्शन करके हरिका स्मरण करके ब्राह्मणोंके अर्थ अपनी शक्तिके अनुसार चांदीकी दक्षिणा देनी. दक्षिणा देनेका वाक्य—"अमुकस्यास्थिक्षेपः कृतस्तत्सांगतार्थं रजतमिदं तुभ्यं संप्रददे" ऐसा कहना. इस प्रकार अस्थि छोडनेका प्रकार कहा है.

अथैकादशाहकृत्यं अथैकादशाहेप्रातरुत्थायगृहानुलेपनंकृत्वास्पृष्टसर्ववस्त्रक्षालनपूर्वकंसर्वसपिंडानांसचैलस्नानांतेसंध्यापंचमहायज्ञादिकर्मणिशुद्धिः एकादशाहेसंगवकालेस्नानाच्छुद्धिरितिकेचित् एकादशाहेपुत्रादेःकर्तुरपिपंचमहायज्ञाद्यधिकारः सपिंडानांदर्शवार्षिकश्राद्धेष्वधिकारः नांदीश्राद्धमात्रंचतुःपुरुषसपिंडैःसपिंडीकरणात्प्राक्नकार्यं ॥

अब ग्यारहमे दिनका कृत्य कहताहुं.

ग्यारहमे दिनविषे प्रातःकालमें उठकर घरका अनुलेपन करके आशौचमें स्पर्श किये सब वस्त्रोंकों धोके वस्त्रोंसहित स्नान किये पीछे संध्या, पंचमहायज्ञ आदि कर्मविषे सब सपिंडोंकी शुद्धि होती है. ग्यारहमे दिनविषे संगवकालमें स्नानसें शुद्धि होती है, ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. ग्यारहमे दिनविषे पुत्र आदि कर्ताकोंभी पंचमहायज्ञ आदि कर्मका अधिकार होता है. सपिंडोंकों दर्श और वार्षिक श्राद्धमें अधिकार होता है. चार पुरुषपर्यंत सपिंडोंनें नांदीश्राद्ध मात्र सपिंडी करनेके पहले करना नहीं.

ततोदशाहकर्मकारीअमुख्यःकर्ता मुख्योवापुत्रादिःकर्ता वृषोत्सर्गाद्येकादशाहिकंसर्वं कर्मकुर्यात् एकादशाहेप्रेतस्ययस्यनोत्सृज्यतेवृषः प्रेतत्वंसुस्थिरंतस्यदत्तैःश्राद्धशतैरपि अत्रस्वयमेवसर्वंकुर्यान्नतुकाम्यवृषोत्सर्गवदाचार्यवरणं अयंगृहेनकार्यः अयंद्वादशाहेप्युक्तः क्वचिन्मृताहेप्युक्तः विषुवद्वितयेचैवमृताहेबांधवस्यचेति वत्सराभ्यंतरेपित्रोर्वृषस्योत्सर्गकर्मणि वृद्धिश्राद्धंनकुर्वीततदन्यत्रसमारभेत् ॥

तदनंतर दश दिनोंका कर्म करनेवाला अमुख्य कर्ता अथवा मुख्य पुत्र आदि कर्तानें ग्यारहमे दिनका वृषोत्सर्ग आदि सब कर्म करना. "ग्यारहमे दिनविषे जिस प्रेतके उद्देशसें वृषोत्सर्ग नहीं किया जावै और सैकडों श्राद्ध किये जावैं तथापि तिस मनुष्यका प्रेतपना सुस्थिर रहता है." इस वृषोत्सर्गमें सब कर्म आपही करना. काम्य वृषोत्सर्गकी तरह आचार्यका वरण नहीं करना. यह वृषोत्सर्ग घरमें नहीं करना. यह वृषोत्सर्ग बारहमे दिनविषेभी करना ऐसा कहा है. कहींक ग्रंथविषे मृतदिनमेंभी करना ऐसा कहा है. "तुला और मेषकी संक्रांतिके दिनमें और बांधवके मृतदिनमें वृषोत्सर्ग करना." "एक वर्षके भीतर पितामाताके वृषोत्सर्गकर्ममें वृद्धिश्राद्ध नहीं करना, एक वर्षके अनंतर करना."

वृषलक्षणंतु लोहितोयस्तुवर्णेनमुखेपुच्छेचपांडुरः श्वेतःखुरविषाणाभ्यांसनीलोवृषउच्यते अथवाश्वेतवर्णस्यमुखपुच्छादिश्यामत्वेनीलवृषत्वं यद्वासर्वश्यामस्यमुखादिश्वेतत्वेनीलवृष

त्वंकेचित्वृषाभावेमृद्भिःपिष्टैर्वावृषंकृत्वाहोमादिविधिनावृषोत्सर्गइत्याहुः यथोक्तालाभेयथालाभोद्विवर्षएकवर्षोवावृषोवर्षाधिकाश्चतस्रएकावावत्सतरीस्यात् प्रयोगस्तुस्वस्वसूत्रानुसारीग्राह्यः सव्येनपाणिनापुच्छंसमादायवृषस्यतु दक्षिणेनापआदायसतिलाःसकुशास्ततः प्रेतगोत्रंसमुच्चार्यामुकस्मैवृषएषमयादत्तस्तंतारयत्वितिवदन्सहेमजलंभूमावुत्सृजेत् विधारयेन्नतंकश्चिन्नचकश्चनवाहयेत् नदोहयेच्चतांधेनुंनचकश्चनबंधयेत् पतिपुत्रवत्याःसुवासिन्यानवृषोत्सर्गः तत्स्थानेएकापयस्विनीगौर्देया पतिपुत्रयोरन्यतराभावेतुस्त्रीणामपिवृषोत्सर्गः सहगमनेतुस्त्रीणांवृषोत्सर्गस्थानेगौरेव वृषोत्सर्गसांगतार्थंतिलोदकुंभधेनुवस्त्रहिरण्येतिपंचदानानि आशौचांतरंचेदेकादशाहेप्राप्नोतितदावृषोत्सर्गादिकमाद्यमासिकंशय्यादिदानानिचकुर्यादेव एवंकृतेवृषोत्सर्गेफलंवाजिमखोदितं यमुद्दिश्योत्सृजेन्नीलंसलभेतपरांगतिं वृषोत्सर्गःपुनात्येव दशातीतान्दशापरान् इतिवृषोत्सर्गः ॥

वृष अर्थात् बैलका लक्षण कहते हैं.—“लाल वर्णवाला होके मुख और पुच्छमें पांडुरवर्णवाला होवै, खुरोंमें और शिंगोंमें श्वेतवर्णवाला होवै वह **नीलवृष** कहता है.” अथवा श्वेतवर्णवाला होके मुख और पुच्छमें कृष्णवर्णवाला होवै वह नीलवृष कहता है. अथवा सब अंगोंमें कृष्णवर्ण होके मुख और पुच्छमें श्वेतवर्ण होवै वह नीलवृष होता है. कितनेक ग्रंथकार वृषके अभावमें मृत्तिकाकरके अथवा पीठीकरके वृष बनायके होम आदिकी विधिसें वृषोत्सर्ग करना ऐसा कहते हैं. यथोक्त बैलके अभावमें जैसा मिलै तैसा दो वर्षकी अवस्थावाला अथवा एक वर्षकी अवस्थावाला ऐसा बैल होवै. एक वर्षकी अवस्थासें अधिक अवस्थावाली ऐसी बछिया एक किंवा चार होनी चाहिये. प्रयोग तौ अपने अपने सूत्रके अनुसार ग्रहण करना योग्य है. “बैलकी पुच्छकों वाम हाथसें ग्रहण करके दाहिने हाथसें तिल और कुशोंसहित जल ग्रहण करके” प्रेतके गोत्रका उच्चारण करके “अमुकस्मै वृष एष मया दत्तस्तं तारयतु” ऐसा कहके सोनासहित जल पृथिवीपर छोडना. “तिस बैलकों कोईभी धारै नहीं और वाहै नहीं.” तिस गौकों न कोई बांधै और न कोई दूहै.” पतिपुत्रवाली सुहागन स्त्रीका वृषोत्सर्ग नहीं करना. किंतु वृषोत्सर्गके स्थानमें एक दूध देनेवाली गौ देनी. पति और पुत्रमांहसें एक कोईसेका अभाव होवै तब स्त्रीयोंकाभी वृषोत्सर्ग करना. सहगमनमें स्त्रियोंके वृषोत्सर्गके स्थानमें गौ देनी. वृषोत्सर्गकी सांगताके अर्थ तिल, जलका कलश, गौ, वस्त्र और सोना ये पांच दान करने. जो कदाचित् ग्यारहमे दिनमें दूसरा आशौच प्राप्त होवै तब वृषोत्सर्ग आदि, आद्यमासिकश्राद्ध और शय्या आदि दान ये करनेही उचित है. “इस प्रकार वृषोत्सर्ग करनेमें अश्वमेधयज्ञका फल मिलता है, और जिसके उद्देशसें नीलवृषका वृषोत्सर्ग किया जाता है वह मनुष्य उत्तम गतिकों प्राप्त होता है. वृषोत्सर्ग अर्थात् बैलका छोडना दश पिछले और दश आगले पुरुषोंकों पवित्र करता है.” ऐसा वृषोत्सर्ग कहा.

अथैकादशाहेमहैकोद्दिष्टं इदंचमहैकोद्दिष्टंषोडशश्राद्धेभ्योभिन्नमेव अतएवेदंकरिष्यमाणसर्वैकोद्दिष्टप्रकृतिभूतमित्युच्यते इदंचपाकेनैव अत्रसतिसंभवेविप्रोभोजयितव्यः असंभवेग्नौहोमः ब्राह्मणंभोजयेदाद्येहोतव्यमनलेथवेत्युक्तेः श्मश्रुकर्मतुकर्तव्यंनखच्छेदस्तथैवच स्न

पनाभ्यंजनेदद्याद्द्विप्रायविधिपूर्वकं ततःक्षणपाद्यार्घ्यासनगंधपुष्पाच्छादनान्येवदद्यात् नात्र धूपदीपौ एकोद्दिष्टंदेवहीनमित्युक्तेरेकएवविप्रः दिवैवचनिमंत्रणं एकमर्घ्यपात्रं स्वधाशब्द नमःशब्दपितृशब्दानसंति तेनप्रत्तःप्रेतइमांल्लोकान्प्रीणयाहिनइतिमंत्रोहोर्घ्यपात्रे नाभिश्रवणं सर्वंप्राचीनावीतिनैवकार्यं देवकार्याभावात् अग्नौकरणविकल्पः तत्रचपाणिहोमेपिन तस्यभक्षणंकिंत्वग्नौप्रक्षेपः एकएवपिंडः अनुमंत्रणादिसर्वममंत्रकं स्वदितमितितृप्तिप्रश्नःकात्यायनानां अक्षय्यस्थानेउपतिष्ठतामितिवदेत् अभिरम्यतामितिविसर्जनं अभिरताःस्मेतिविप्रप्रतिवचनं श्राद्धशेषभोजनंनास्ति अंतेस्नानं नवश्राद्धैकोद्दिष्टेतुसर्वममंत्रकमित्युक्तं विप्राभावेत्वग्नावेकोद्दिष्टंयथा अग्नौपायसंश्रपयित्वाज्यभागांतेऽग्नेरग्रेश्राद्धप्रयोगंकृत्वाग्नौप्रेतमावाह्यगंधाद्यैःसंपूज्य पृथिवीतेपात्रमित्यादिनान्नंसंकल्प्योदीरतामवरइत्यष्टाभिश्चतुरावृत्ताभिर्ऋग्भिर्द्वात्रिंशदाहुतीर्हुत्वापिंडदानादिश्राद्धंसमापयेदिति एवमेतदेकोद्दिष्टंस्त्रीणामपि ॥

अब ग्यारहमे दिनमें महैकोद्दिष्टश्राद्ध कहताहुं.

यह महैकोद्दिष्टश्राद्ध सोहलह श्राद्धोंसें भिन्नही है, इसी कारणसें अनंतर क्रियमाण जो सब एकोद्दिष्टश्राद्ध हैं. तिन्होंका प्रकृतिभूत महैकोद्दिष्टश्राद्ध है, ऐसा कहा है. यह श्राद्ध पाककरके करना. यहां संभवके होनेमें ब्राह्मणकों भोजन करवाना योग्य है. असंभव होवै तौ अग्निमें होम करना. क्योंकी, आद्यश्राद्धमें ब्राह्मणकों भोजन करवाना अथवा अग्निमें होम करना ऐसा वचन है. "ब्राह्मणके अर्थ विधिपूर्वक श्मश्रुकर्म, नखच्छेद ये कराने; स्नान और अभ्यंगभी कराना." पीछे क्षण, पाद्य, अर्घ्य, आसन, गंध, पुष्प और आच्छादन इतनेही उपचार देने. इस श्राद्धमें धूप, दीप नहीं देना. "एकोद्दिष्टश्राद्ध देवतोंसें हीन करना," इस वचनसें एकही ब्राह्मण योग्य है. तिस ब्राह्मणकों दिनमेंही निमंत्रण करना. एक अर्घ्यपात्र स्थापन करना. स्वधाशब्द, नमःशब्द, पितृशब्द ये नहीं हैं, तिसकरके "प्रत्तःप्रेतइमाँल्लोकान्प्रीणयाहिनः" इस प्रकार अर्घ्यपात्रविषे मंत्रमें उच्चार करना. अभिश्रवण नहीं करना. सब कर्म प्राचीनावीती होके करना; क्योंकी, देवकर्मका अभाव है. अग्नौकरणविषे विकल्प कहा है. इस श्राद्धमें पाणिहोम किया होवै तौभी वह भक्षण नहीं करना; किंतु अग्निमें प्रक्षेप करना. एकही पिंड देना. अनुमंत्रण आदि सब अमंत्रक करना. "स्वदितम्" ऐसा तृप्तिप्रश्न कात्यायनोंकों कहा है. अक्षय्यस्थानमें "उपतिष्ठताम्" ऐसा कहना. "अभिरम्यताम्" इस मंत्रसें विसर्जन करना. "अभिरताःस्म" ऐसा ब्राह्मणोंनें प्रतिवचन देना. श्राद्धशेषभोजन नहीं है. अंतमें स्नान करना. नवश्राद्धसंबंधी एकोद्दिष्टमें तौ, सब कर्म अमंत्रक करना ऐसा कहा है. ब्राह्मणका अभाव होवै तौ अग्निमें एकोद्दिष्ट करनेका सो ऐसा—अग्निमें खीर पकायके आज्यभागपर्यंत कर्म किये पीछे अग्निके अग्रभागमें श्राद्धप्रयोग करके अग्निविषे प्रेतका आवाहन करके गंध आदि उपचारोंसें पूजा करके "पृथिवीतेपात्रम्०" इस आदि मंत्रोंसें अन्नका संकल्प करके "उदीरतामवर०" इस मंत्रसें चार आवृत्तियोंसें युक्त हुई आठ ऋचाओंकी बत्तीस आहुतियोंसें होम करके पिंडदान आदि श्राद्ध समाप्त करना. इस प्रकार यह एकोद्दिष्टश्राद्ध स्त्रियोंकाभी करना.

अथाद्यमासिकं तस्यमासादौमासिकंकार्यमितिवचनान्मृताहोमुख्यःकालःसचाशौचप्रतिबंधादतिक्रांतइतितदंतेएकादशेह्नितत्कार्यं अतएवब्राह्मणंभोजयेदाद्येहोतव्यमनलेथवा पुनश्चभोजयेद्विप्रंद्विरावृत्तिर्भवेदिहेतिप्रथममासिकार्थंद्वितीयावृत्तिरुक्ता अत्रचद्विरावृत्तिर्भवेदिहेत्युक्तिः षोडशमासिकानांसपिंड्यधिकारार्थमपकृष्यकर्तव्यानांद्वादशाहादौकरणपक्षेयोज्यातेषामेकादशाहएवकरणपक्षेतुषोडशमासिकानांषोडशावृत्तयएकंमहैकोद्दिष्टमितिसप्तदशावृत्त्यापत्त्याद्विरावृत्तिर्भवेदिहेत्युक्तेरसंगतेः तथाचसपिंड्यधिकारार्थापकृष्याणांमासिकानांद्वादशाहेकरणेएकादशाहेमहैकोद्दिष्टोत्तरमतिक्रांतमाद्यमासिकंकरिष्यइति संकल्प्याद्यमासिकमात्रमन्नेनामेनवाविप्रेदर्भबटौवाप्रेतमावाह्यकार्यं नत्वाद्यमासिकस्याग्नौहोमः पुनश्चभोजयेद्विप्रमितिविशेषवचनात् इत्थंचमहैकोद्दिष्टमेकमाद्यमासिकमेकमित्येकोद्दिष्टस्यद्विरावृत्तिःस्पष्टैव येत्वाद्यमासिकातिरेकेणमहैकोद्दिष्टस्यैवद्विरावृत्तिंवदंतितेभ्रांताः अत्रकेचिदाद्याब्दिकस्यापिमृताहएवकालइतितस्याप्यतिक्रांतत्वादेकादशाहेआद्यमासिकमाद्याब्दिकंचतंत्रेणकरिष्ये इतिसंकल्प्यद्वयमपितंत्रेणकार्यमित्याहुः अन्येतुमासादौमासिकंकार्यमाब्दिकंवत्सरेगते इतिवचनाद्द्वितीयवर्षारंभेप्रथमाब्दिकमितिनाब्दिकस्यैकादशाहेनुष्ठानमित्याहुः एवंत्रिपक्षेसपिंडीकरणपक्षेएकादशाहेआद्यमासिकमूनमासेऊनमासिकंद्वितीयमासारंभेद्वितीयमासिकंपक्षत्रयेत्रैपक्षिकंचैकोद्दिष्टविधिनाकृत्वावशिष्टद्वादशमासिकान्यपकृष्यतथैवकृत्वासपिंडीकरणं एवंपक्षांतरेषूह्यं ॥

अब आद्यमासिक कहताहुं.

“ महीनाके प्रथम दिनमें मासिकश्राद्ध करना. ” ऐसा वचन है इसलिये मृतदिन आद्यमासिकका मुख्यकाल है; परंतु वह आशौचके प्रतिबंधसें अंतरित होता है, इस लिये आशौच जानेके अनंतर ग्यारहमे दिनमें वह करना; इस कारणसेंही “आद्यमासिकश्राद्धमें ब्राह्मणकों भोजन कराना; अथवा अग्निमें होम करना; फिर ब्राह्मणकों भोजन कराना ऐसी इस श्राद्धमें द्विरावृत्ति होती है; ” इस प्रकार प्रथममासिकके अर्थ द्विरावृत्ति कही है. “ यहां द्विरावृत्ति करनी ” ऐसा वचन है ऐसा जो कहा है वह सपिंडीके अधिकारके अर्थ अपकर्ष करके करनेके योग्य जो सोलह मासिकश्राद्ध सो बारहमे आदि दिनमें करनेका पक्ष होवै तौ तिसविषे योजना करनी. वे सोलह मासिकश्राद्ध ग्यारहमे दिनमेंही करनेका पक्ष होवै तौ सोलह मासिकोंकी सोलह आवृत्ति और एक महैकोद्दिष्ट मिलके सतरह आवृत्ति प्राप्त होनेसें “ यहां द्विरावृत्ति करनी ” इस वचनसें असंगति कही है. और सपिंडीके अधिकारके अर्थ अपकर्षसें करनेके योग्य मासिकश्राद्धोंकों बारहमे दिनमें करनेका पक्ष होवै तौ ग्यारहमे दिनमें महैकोद्दिष्टश्राद्ध किये पीछे “ अतिक्रांतमाद्यमासिकं करिष्ये ” ऐसा संकल्प करके आद्यमासिकमात्र ब्राह्मण किंवा डाभके मोटकमें प्रेतका आवाहन क़रके अन्नसें अथवा आमान्नसें करना, आद्यमासिकका अग्निमें होम नहीं करना, “ क्योंकी फिर ब्राह्मणोंकों भोजन कराना ऐसा विशेषवचन कहा है. ” इस प्रकार महैकोद्दिष्ट एक और आद्यमासिक एक इस प्रकारसें एकोद्दिष्टकी द्विरावृत्ति स्पष्ट कही है. आद्यमासिकके विना महैकोद्दिष्टकी द्विरावृत्ति करनी ऐसा जो कहते हैं वे भ्रांत हैं. इस विषयमें कितनेक ग्रंथकार, प्रथमाब्दिककाभी मृतदिनही

काल होनेसें वहभी अतिक्रांत होता है इसलिये ग्यारहमे दिनमें **"आद्यमासिकमाद्याब्दिकं च तंत्रेण करिष्ये"** ऐसा संकल्प करके दोनोंही तंत्रसें करने ऐसा कहते हैं. दूसरे ग्रंथकार तौ महीनाके प्रथम दिनमें मासिक करना. और वार्षिकश्राद्ध संवत्सर गत हुए पीछे करना" इस वचनसें दूसरे वर्षके आरंभमें प्रथमाब्दिक करना, ग्यारहमे दिनमें प्रथमाब्दिक नहीं करना ऐसा कहते हैं. इसी प्रकार तीसरे सपिंडीकरणपक्षविषे ग्यारहमे दिनमें आद्यमासिक, ऊनमासमें ऊनमासिक, दूसरे मासके आरंभमें द्वितीयमासिक और डेढ महीनामें त्रैपक्षिक इन्होंकों एकोद्दिष्टविधिसें करके अवशिष्ट रहे बारह मासिकोंका अपकर्ष करके तैसेही करके सपिंडीकरण करना. इस प्रकार दूसरे पक्षविषे जानना.

एकादशाहेतंत्रेणषोडशमासिकापकर्षपक्षेमहैकोदिष्टोत्तरं देशकालौसंकीर्त्यातिक्रांतमाद्यमासिकंसपिंड्यधिकारार्थमपकृष्योनमासिकादीन्यूनाब्दिकांतानि पंचदशमासिकानिचतंत्रेणैकोद्दिष्टेनविधिनाकरिष्यइतिसंकल्प्य तंत्रेणषोडशापिकुर्यात् केचिन्मतेत्वतिक्रांतेआद्यमासिकाद्याब्दिकेऊनादिमासिकादीनिचेत्यादिसंकल्पः ॥

ग्यारहमे दिनमें तंत्रकरके सोलह मासिकोंका अपकर्ष करके करनेका पक्ष होवै तौ महैकोद्दिष्ट किये पीछे देशकालका उच्चारण करके **"अतिक्रांतमाद्यमासिकं सपिंड्यधिकारार्थमपकृष्योनमासिकादीन्यूनाब्दिकांतानि पंचदश मासिकानिच तंत्रेणैकोद्दिष्टविधिना करिष्ये,"** ऐसा संकल्प करके तंत्रसें सोलहभी मासिक करने. कितनेकोंके मतमें आद्यमासिक आर आद्याब्दिक अतिक्रांत हो जावै तौ **"ऊनादिमासिकादीनिच"** इत्यादि संकल्प करना.

मासिकानितु आद्यमासिकं १ ऊनमासिकं २ द्वितीयमासिकं ३ त्रैपक्षिकं ४ तृतीय मासिकं ५ चतुर्थमासिकं ६ पंचममासिकं ७ षष्ठं ८ ऊनषाण्मासिकं ९ सप्तममासिकं १० अष्टमं ११ नवमं १२ दशमं १३ एकादशं १४ द्वादशं १५ ऊनाब्दिकं १६ चेति क्रमेणज्ञेयानि ॥

अब मासिकोंकों कहताहुं.—आद्यमासिक १, ऊनमासिक २, द्वितीयमासिक ३, त्रैपक्षिक ४, तृतीयमासिक ५, चतुर्थमासिक ६, पंचममासिक ७, षष्ठमासिक ८, ऊनषाण्मासिक ९, सप्तममासिक १०, अष्टम ११, नवम १२, दशम १३, एकादश १४, द्वादश १५, ऊनाब्दिक १६, इस प्रकार क्रमसें जानने.

अथैकादशाहेरुद्रगणश्राद्धं तच्चैकादशरुद्रोद्देशेनरुद्ररूपप्रेतोद्देशेनवा रुद्रोद्देशपक्षेसव्येन तद्रूपप्रेतोद्देशपक्षेपसव्येन वीरभद्रः १ शंभुः २ गिरीशः ३ अजैकपात् ४ अहिर्बुध्न्यः ५ पिनाकी ६ अपराजितः ७ भुवनाधीश्वरः ८ कपाली ९ स्थाणुः १० भगः ११ इत्येकादशरुद्राः अत्रशक्तेनैकैकरुद्रनाम्नैकोविप्रइत्येकादशविप्राभोज्याः अशक्ते नतुसर्वोद्देशेनैकएवविप्रोभोज्यः आमान्नान्येकादशैकंवामान्नंदेयं अत्रश्राद्धेपिंडदानार्घ्याग्नौकरणविकिराणामभावः एवमेवाष्टवसुश्राद्धं एतच्चकृताकृतं वसुनामान्यप्यन्यत्र एतदेकादशाहकृत्यंत्र्यहाशौचेचतुर्थदिनेकर्तव्यं द्वितीयदिनेप्रथमदिनेवास्थिसंचयनंकार्यं पंचमदिनेसपिंडीकरणं ॥

अब ग्यारहमे दिनमें रुद्रगणश्राद्ध कहताहुं.

वह रुद्रगणश्राद्ध एकादश रुद्रोंके उद्देशसें अथवा रुद्ररूपी प्रेतके उद्देशसें करना. रुद्रोंके उद्देशसें करनेका पक्ष होवै तौ सव्यसें करना. रुद्ररूपी प्रेतके उद्देशसें कर्तव्य पक्ष होवै तौ अपसव्यसें करना. वीरभद्र १, शंभु २, गिरीश ३, अजैकपात् ४, अहिर्बुध्न्य ५, पिनाकी ६, अपराजित ७, भुवनाधीश्वर ८, कपाली ९, स्थाणु १०, भग ११, इस प्रकारसें ग्यारह रुद्र जानने. इस श्राद्धमें समर्थ मनुष्यनें एक एक रुद्रके नामसें एक एक ब्राह्मण ऐसे ग्यारह ब्राह्मणोंकों भोजन देना. असमर्थ मनुष्यनें तौ सबोंके उद्देशसें एक ब्राह्मणकों भोजन देना. आमान्न देना होवै तौ ग्यारह किंवा एक देना. इस श्राद्धमें पिंडदान, अर्घ्य, अग्नौकरण और विकिर इन्होंकों नहीं करना. इसी तरह अष्टवसुश्राद्धभी करना. यह अष्टवसुश्राद्ध करना अथवा नहीं करना. अष्टवसुके नाम दूसरे ग्रंथमें देख लेने. यह एकादशाहकृत्य तीन दिनका आशौच होवै तौ चौथे दिनमें करना. दूसरे दिनमें अथवा पहले दिनमें अस्थिसंचयन करना. पांचमे दिनमें सपिंडीभी करनी.

अत्रैकादशाहेद्वादशाहेवापददानानिकार्याणितेनप्रेतस्यमार्गेसुखगतिः आसनोपानहच्छत्रंमुद्रिकाचकमंडलुः यज्ञोपवीताज्यवस्त्रंभोजनंचान्नभाजनं दशकंपदमेतत्स्यात्पदान्येवंत्रयोदश देयानिवायथाशक्तितेनासौप्रीणितोभवेत् अन्नंचैवोदकुंभंचोपानहौचकमंडलुः छत्रंवस्त्रंतथायष्टिंलोहदंडंचदापयेत् अग्निष्टिकांप्रदीपंचतिलांस्तांबूलमेवच चंदनंपुष्पमालांचोपदानानिचतुर्दश वैतरणीधेनूत्क्रांतिधेनुमोक्षधेन्वादिदानानिगोभूम्यादिदशदानानितिलपात्रदानादीनिमरणकालेनकृतानिचेदेकादशाहादौपुत्रादिभिःप्रेतोद्देशेनकार्याणि अश्वंरथंगजंधेनुंमहिषींशिबिकादिकं शालग्रामंपुस्तकंचकस्तूरींकुंकुमादिकं दासींरत्नंभूषणादिशय्यांछत्रंचचामरं दद्याद्वित्तानुसारेणप्रेतस्तत्तत्सुखंलभेत् ॥

यहां ग्यारहमे दिनमें अथवा बारहमे दिनमें पददान करने, तिसकरके प्रेतकों रास्तामें सुखकी प्राप्ति होती है. “ आसन, जूतीजोडा, छत्री, अंगूठी, लोटा, जनेऊ, घृत, वस्त्र, अन्न और अन्नपात्र ये दश चीज मिलके पददान होता है. इस प्रकारसें तेरह पददान अथवा अपनी शक्तिके अनुसार देने, तिसकरके मरनेवाला सुखी होता है. अन्न, जलका कलश, जूतीजोडा, लोटा, छत्री, वस्त्र, लाठी, लोहका दंड, अंगीठी, दीपक, तिल, तांबूल, चंदन और पुष्पोंकी माला ये चौदह उपदान कहे हैं. वैतरणीधेनु, उत्क्रांतिधेनु, मोक्षधेनु, इत्यादिक दान और गौ, पृथिवी इत्यादिक दशदान और तिलपात्रदान आदि ये मरणसमयमें नहीं किये होवैं तौ ग्यारहमे दिन आदिविषे पुत्र आदिकोंनें प्रेतके उद्देशसें करने. घोडा, रथ, हस्ती, गौ, भैंस, पालकी आदि, शालग्राम, पुस्तक, कस्तूरी, केशर आदि, दासी, रत्न, गहने इत्यादिक, शय्या, छत्री और चवर ये दान जैसा द्रव्य होवै तिसके अनुसार देने, तिसकरके प्रेतकों वह वह सुख प्राप्त होता है.

अथशय्यादानं एकादशाहेशय्यायादानेएषविधिःस्मृतः तेनोपभुक्तंयत्किंचिद्वस्त्रवाहनभाजनं यद्यदिष्टंचतस्यासीत्तत्सर्वंपरिकल्पयेत् प्रेतंचपुरुषंहैमंतस्यांसंस्थापयेत्तदा पूजयित्वाप्रदा

तव्यामृतशय्यायथोदिता तस्माच्छय्यांसमासाद्यसारदारुमयींदृढां दंतपत्रचितांरम्यांहेमपट्टैरलंकृताम् हंसतूलिप्रतिच्छन्नांशुभगंडोपधानिकां प्रच्छादनपटीयुक्तांगंधधूपादिवासितां उच्छीर्षकेघृतभृतंकलशंपरिकल्पयेत् तांबूलकुंकुमक्षोदकर्पूरागरुचंदनं दीपिकोपानहच्छत्रचामरासनभाजनं पार्श्वेषुस्थापयेद्भक्त्यासप्तधान्यानिचैवहि शयनस्थस्यभवतियदन्यदुपकारकं भृंगारकरकाद्यंतत्पंचवर्णंवितानकंसंपूज्यद्विजदांपत्यंनानाभरणभूषितं उपवेश्यतुशय्यायांमधुपर्कंततोवदेत् दानमंत्रस्तु यथानकृष्णशयनंशून्यंसागरजातया शय्यातस्याप्यशून्यास्तुतथाजन्मनिजन्मनि तस्मादशून्यशयनंकेशवस्यशिवस्यच शय्यातस्याप्यशून्यास्तुतथाजन्मनिजन्मनि दत्वैवंतस्यसकलंप्रणिपत्याविसर्जयेत् पाद्मेतु अस्थिलालाटकंगृह्यसूक्ष्मंकृत्वासपायसं भोजयेत्द्विजदांपत्यंविधिरेषःसनातनइत्युक्तं नैतन्महाराष्ट्रदेशादिशिष्टैराद्रियते यद्देशेतदाचारस्तत्रास्तु स्वर्गेपुरंदरपुरेलोकपालालयेतथा सुखंवसत्यसौजंतुःशय्यादानप्रभावतः आभूतसंप्लवं यावत्तिष्ठत्यातंकवर्जितः प्रेतशय्याप्रतिग्राहीनभूयःपुरुषोभवेत् गृहीतायांतुतस्यांवैपुनःसंस्कारमर्हति ॥

अब शय्यादान कहताहुं.

" ग्यारहमे दिनविषे (शय्याके दानमें यह विधि कहा है.) मरनेवाले मनुष्यनें उपभुक्त जो कछु वस्त्र, वाहन, पात्र और मरनेवालेकी जो जो प्रिय वस्तु हैं वे सब सिद्ध करना. सोनाका प्रेतपुरुष बनायके शय्यादानकालमें तिस शय्यापर स्थापन करना. पीछे पूजा करके मृतशय्याका यथाविधिसें दान करना. शालके काष्ठकरके बनी हुई; दृढरूप; हस्तिदंतके पत्तोंसें चित्ती हुई; सुशोभित; सोनाके वस्त्रोंसें अलंकृत; रूईका गदैला और गद्दीसें आच्छादित हुई; सुंदर तकियोंसें युक्त हुई; पलंगपोससें युक्त हुई; गंध, धूप, आदिसें अधिवासित करी ऐसी शय्या करनी. तिसके शिराहने घृतसें पूरित हुये कलशकों स्थापित करना. तांबूल, केशर, बुका, आदि सुगंधी चूर्ण; कपूर, अगर, चंदन, दीवट, जूतीजोडा, छत्र, चवर, आसन, बर्तन और सतनजा इन पदार्थोंकों भक्तिसें पार्श्वभागमें स्थापित करना. शय्यापर स्थित होनेवालेकों जो उपकारक पदार्थ होवैं वेभी समीपमें स्थापित करने. झारी, लोटा इन आदि देने; और पांच रंगोंसें युक्त हुआ चंदोवा ऊपरके भागमें तान देना. पीछे अनेक प्रकारके गहनोंसें अलंकृत किये ब्राह्मणके दांपत्यकों अर्थात् स्त्रीपुरुषकों शय्यापर बैठायके तिस स्त्रीपुरुषकी पूजा करके मधुपर्क करना " दानका मंत्र—" यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया ॥ शय्या तस्याप्यशून्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि ॥ तस्मादशून्यशयनं केशवस्य शिवस्य च ॥ शय्या तस्याप्यशून्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि, " इस प्रकारसें तिस स्त्रीपुरुषके अर्थ सब पदार्थ देके नमस्कार करके विसर्जन करना. पद्मपुराणमें तौ, "मस्तककी हड्डी लेके तिसका चूर्ण बनायके खीरमें मिलायके तिस स्त्रीपुरुषकों भोजन देना, यह विधि सनातन है " ऐसा कहा है; परंतु यह विधि महाराष्ट्र आदि देशोंके शिष्टोंनें आद्रित नहीं किया है. जिस देशमें जो आचार होवै तहां होना उचित है. " शय्यादानके प्रभावसें मृत हुआ प्राणी स्वर्ग, इंद्रकी पुरी, लोकपालोंके स्थान इन्होंविषे निर्भय होके पृथ्वीपर प्राणी हैं

तवपर्यंत सुखसें रहता है. प्रेतकी शय्याकों ग्रहण करनेवाला मनुष्य फिर पुरुष नहीं बनता है, इसलिये वह शय्यादान लेनेमें मनुष्यका फिर संस्कार होना उचित है. ”

अथोदकुंभः एकादशाहात्प्रभृतिघटस्तोयान्नसंयुतः दिनेदिनेप्रदातव्योयावत्संवत्सरंसुतैः यस्यसंवत्सरादर्वाक्सपिंडीकरणंभवेत् मासिकंचोदकुंभंचदेयंतस्यापिवत्सरं अपिश्राद्धशतैर्दत्तैरुदकुंभंविनानराः दरिद्रादुःखिनस्तातभ्रमंतिचभवार्णवे यावदब्दंचयोदद्यादुदकुंभंविमत्सरः प्रेतायान्नसमायुक्तंसोश्वमेधफलंलभेत् इदंचोदकुंभश्राद्धंसपिंडीकरणात्प्रागेकोद्दिष्टविधिना सपिंड्युत्तरंतुपार्वणविधिना इदंत्रयोदशदिनादारभ्यकर्तव्यमितिभट्टाः अत्रपिंडदानं कृताकृतं देवहीनंचैतत् अदैवंपार्वणश्राद्धंसोदकुंभमधर्मकं कुर्यात्प्रत्याब्दिकाच्छ्राद्धात्संकल्पविधिनान्वहमितिवचनात् प्रायश्चित्तांगविष्णुश्राद्धवदत्रश्राद्धेसर्वेश्राद्धधर्मानसंतिकिंतुवाचनिकमात्राः तेनसंकल्पविधिनासंकल्पक्षणपाद्यासनगंधाच्छादनांतपूजनान्नपरिवेषणांतेपृथिवीतेपात्रमित्याद्युक्त्वा एषउदकुंभइदमन्नंदत्तंचेत्यादित्यागविधिः अंतेतांबूलदक्षिणादि नात्र ब्रह्मचर्यपुनर्भोजनादिनियमाः वृद्धिनिमित्तेनमासिकापकर्षेउदकुंभश्राद्धानामप्यपकर्षः प्रेतश्राद्धत्वात् प्रत्यहंसोदकुंभान्नदानाशक्तेनाप्येकस्मिन्दिने तावद्भिरामान्नैरुदकुंभैश्चतावदामान्नोदकुंभनिष्क्रयेणवापकृष्योदकुंभश्राद्धानिकार्याणि अब्दमध्येप्रत्यहमुदकुंभश्राद्धंकुर्वतोमध्येआशौचप्राप्तौतावच्छ्राद्धानां लोपएवदर्शादिवत् आशौचोत्तरंप्रतिबंधादकरणेतदुत्तरोदकुंभेनसहतंत्रतयातिक्रांतोदकुंभानांप्रयोगः अतिक्रांतोदकुंभश्राद्धान्यद्यतनोदकुंभश्राद्धंचतंत्रेण करिष्यइतिसंकल्पः ॥

अब उदकुंभश्राद्ध कहताहुं.

ग्यारहमे दिनसें जल और अन्नसहित कुंभ नित्यप्रति वर्षपर्यंत पुत्रोंनें देना. जिसकी सपिंडी वर्षके पहले होवै तिसकाभी मासिकश्राद्ध और उदकुंभ वर्षभर करना. सैंकडें श्राद्ध कियेभी जावैं तवभी उदक्कुंभके दानके विना मनुष्य दरिद्री और दुःखी होके संसारमें भ्रमते हैं. जो मनुष्य विमत्सर होके प्रेतके अर्थ वर्षदिनपर्यंत अन्नयुक्त जलका कुंभ देता है तिसकों अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होता है. यह उदकुंभश्राद्ध सपिंडीकरणके पहले एकोद्दिष्टविधिकरके करना, सपिंडीके उपरंत तौ, पार्वणविधिकरके करना. यह उदकुंभश्राद्ध तेरहमे दिनसें करना ऐसा भट्ट कहते हैं. यहां पिंडदान करना अथवा नहीं करना, और यह देवहीनही है; क्योंकी, यह पार्वणश्राद्ध, उदकुंभयुक्त, देवहीन, श्राद्धधर्मविरहित, प्रत्याब्दिकश्राद्धपर्यंत प्रतिदिन सांकल्पविधिसें करना” ऐसा वचन है. प्रायश्चित्तांगभूत विष्णुश्राद्धकी तरह इस श्राद्धमें सव धर्म नहीं हैं; किंतु वाचनिक मात्र कहे हैं, इसकरके सांकल्पविधिसें संकल्प, क्षण, पाद्य, आसन, गंध, आच्छादन इसपर्यंत पूजा किये पीछे अन्न परोशनापर्यंत कर्म हुए पीछे “पृथिवी ते पात्रं०” इत्यादिक कहके “एष उदकुंभ इदमन्नं दत्तं च” इत्यादिक अन्नत्यागविधि करना. अंतमें तांवूल, दक्षिणा इत्यादिक देना. इस श्राद्धमें ब्रह्मचर्य, पुनर्भोजन इत्यादिक नियम नहीं हैं. वृद्धिश्राद्धके निमित्तसें मासिकोंका अपकर्ष करना होवै तौ उदकुंभश्राद्धोंकाभी अपकर्ष करना, क्योंकी वे प्रेतश्राद्ध हैं. नित्यप्रति उदकुंभसहित अन्नदान

करनेविषे जो अशक्त होवै तिसनेंभी एक दिनमें तितने आमान्नोंकरके और तितने उदकुंभोंकरके अथवा तितने आमान्नोंका और उदकुंभोंका निष्क्रय (द्रव्य) करके अपकर्षसें उदकुंभश्राद्ध करने. वर्षपर्यंत प्रतिदिन उदकुंभश्राद्ध करनेवालेकों मध्यमें आशौच प्राप्त होवै तौ तितने श्राद्धोंका लोपही दर्शश्राद्धकी तरह जानना. आशौचके अनंतर प्रतिबंधसें नहीं करनेमें तिसके अनंतरका जो उदकुंभश्राद्ध तिसके साथ एकतंत्रकरके अतिक्रांत हुए उदकुंभका प्रयोग करना. "अतिक्रांतोदकुंभश्राद्धान्यद्यतनोदकुंभश्राद्धं च तंत्रेण करिष्ये" इस प्रकारसें संकल्प करना.

तथाप्रथमाब्देदीपदानमुक्तं प्रत्यहंदीपकोदेयोमार्गेतुविषमेनरैः यावत्संवत्सरंवापिप्रेतस्य सुखलिप्सया प्राङ्मुखोदङ्मुखंदीपंदेवागारेद्विजालये कुर्याद्याम्यमुखंपित्रेअद्भिःसंकल्प्यसुस्थिरमिति ॥

तैसेही प्रथम वर्षमें दीपदान करनेविषे कहा है. "मनुष्योंनें विषम रास्ताविषे प्रेतकों सुख होनेकी इच्छासें प्रतिदिन एक वर्षपर्यंत दीपक देना. देव और ब्राह्मणोंके मंदिरमें पूर्वकों मुखवाला अथवा उत्तरकों मुखवाला दीपक प्रज्वलित करना. पिताके उद्देशसें जलसें संकल्प करके दक्षिणकों मुखवाला और सुस्थिर ऐसा दीपक प्रज्वलित करना."

अथषोडशमासिकानि द्वादशप्रतिमास्यानिऊनमासंत्रिपक्षकं ऊनषाण्मासिकंचोनाब्दिकंचापीतिषोडश अत्रमतांतराणिसिंधौ अथैषांकालाः मासादौमासिकंकार्यमाद्यंत्वेकादशेहनि एकद्वित्रिदिनैरूनेत्रिभागेनोनएववा ऊनमासिकमूनाब्दमूनषाण्मासिकंचरेत् त्रैपक्षिकं त्रिपक्षेचोनमास्यंद्वादशेह्निवा तत्रोनमासिकोनषाण्मासिकोनाब्दिकानामेकदिनेनोनपक्षेपंचम्यांमृतस्यतृतीयायांद्वाभ्यामूनत्वपक्षेद्वितीयायां त्रिभिर्न्यूनेप्रतिपदायामनुष्ठानमितिकेचित् माधवस्तूनषाण्मासिकमूनाब्दिकंचमृताहात्पूर्वेद्युःकार्यमित्याह त्रैपक्षिकंत्रिपक्षेतीतेमृताहेकार्यं॥

अब सोलह मासिक कहताहुं.

प्रत्येक मासका एक इस प्रकारसें बारह मासोंके बारह, ऊनमासिक, त्रैपक्षिक, ऊनषाण्मासिक और ऊनाब्दिक ऐसे मिलके सोलह मासिक जानने." इस विषयमें दूसरे मत **निर्णयसिंधु** ग्रंथविषे कहे हैं. **इसके अनंतर इन्होंके काल कहते हैं.**—महीनाके प्रथम दिनमें मासिक करना. ग्यारहमे दिनमें आद्यमासिकश्राद्ध करना. एक, दो अथवा तीन दिनोंसें कम अथवा तीसरे भागसें कम ऐसे कालमें ऊनमासिक, ऊनाब्दिक और ऊनषाण्मासिक ये करने. त्रैपक्षिक तीन पक्षोंसें करना, अथवा ऊनमासिक बारहमे दिनमें करना. तिन्होंविषे ऊनमासिक, ऊनषाण्मासिक और ऊनाब्दिक इन मासिकोंका 'एक दिनसें कम' ऐसे दिनमें करनेका पक्ष होवै तौ पंचमीमें मृत हुएका तृतीयाविषे; 'दो दिनसें कम' ऐसा पक्ष होवै तौ द्वितीयाविषे, 'तीन दिनोंसें कम' ऐसा पक्ष होवै तौ प्रतिपदाविषे करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. **माधवग्रंथकार** तौ, ऊनषाण्मासिक और ऊनाब्दिक ये श्राद्ध मृत दिनके पूर्वदिनमें करने ऐसा कहता है. त्रैपक्षिक करना होवै तौ तीन पक्ष अतीत हो चुके पीछे मृतदिनमें करना.

अत्राहिताग्नेर्विशेषः त्रैपक्षिकपर्यंतानिसंस्कारतिथौततःपराणिप्रत्याब्दिकंचमृततिथौतेनाद्यंदाहादेकादशेह्नित्रिमासादूर्ध्वसंस्कारेत्वेवंभाति त्रिपक्षपर्यंतानिदाहतिथौकृत्वापराण्यतिक्रांतानिमृततिथौप्राप्तमासिकेनसहकार्याणीति ॥

यहां आहिताग्निका विशेष प्रकार.—त्रैपक्षिकपर्यंत मासिक, अग्निसंस्कार जिस तिथिमें किया होवै तिस तिथिमें करने. तिन्होंसे परे सब मासिक और प्रत्याब्दिक मृततिथिमें करने ऐसा विशेष कहा है. तिसकरके तीन महीनोंके अनंतर अग्निसंस्कार होवै तौ आद्यमासिकश्राद्ध दाहके दिनसें ग्यारहमे दिनमें करना ऐसा प्रतिभान होता है. त्रैपक्षिकपर्यंत चार मासिकश्राद्ध दाहकी तिथिमें करके पीछे अतिक्रांत हुये मासिकश्राद्ध मृततिथिविषे प्राप्त हुए मासिकश्राद्धके साथ करने.

ऊनश्राद्धेषुवर्ज्यानि त्रिपुष्करेषुनंदासुसिनीवाल्यांभृगोर्दिने चतुर्दश्यांचनोनानिकृत्तिकासुद्विपुष्करे त्रिपुष्करद्विपुष्करयोगयोर्लक्षणंप्रागुक्तं आद्यमासिकमाद्याब्दिकंचैकादशेह्नीत्येकंमतं आद्यमासिकमेवैकादशेह्निप्रथमाब्दिकंतुद्वितीयवर्षारंभएवेत्यपरमतमित्युक्तं ॥

ऊनमासिक, ऊनषाण्मासिक, और ऊनाब्दिक इन श्राद्धोंमें वर्ज्य दिन कहताहुं.—त्रिपुष्कर, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी, अमावस और चतुर्दशी, ये तिथि, शुक्रवार, कृत्तिका नक्षत्र, और द्विपुष्कर इन्होंविषे ऊनश्राद्ध नहीं करने. त्रिपुष्कर और द्विपुष्कर और इन्होंका लक्षण पहले कह चुके हैं. आद्यमासिक और प्रथमाब्दिक ग्यारहमे दिनमें करने ऐसा एक मत; आद्यमासिकही ग्यारहमे दिनमें करना और प्रथमाब्दिक तौ दूसरे वर्षके आरंभमेंही करना ऐसा दूसरा मत है ऐसा पहले कहा है.

एतानिषोडशश्राद्धानिवर्षांतसपिंडनपक्षेउक्तेषुस्वस्वकालेप्येकोद्दिष्टविधिनाकार्याणिद्वादशाहादिकालेषुसपिंडनापकर्षपक्षेएकदिनेएवापकृष्ययुगपदेकोद्दिष्टविधिनाकार्याणिश्राद्धानिशोडशादत्वानतुकुर्यात्सपिंडनमितिषोडशश्राद्धैर्विनासपिंडनेधिकाराभावबोधनात् एतानिपक्वान्नेनामान्नेनवाकार्याणि पाकपक्षेयुगपत्करणेसर्वेषामेकएवपाकोविप्राअर्घ्याःपिंडाश्चषोडश एतानिद्वादशाहादौसपिंडनात्पूर्वंकृतान्यपिपुनःसपिंडयुत्तरंस्वस्वकालेपार्वणविधिनाकार्याणि यस्यसंवत्सरादर्वाक्विहितातुसपिंडता विधिवत्तानिकुर्वीतपुनःश्राद्धानिषोडश अर्वाक् संवत्सराद्यस्यसपिंडीकरणंकृतं षोडशानांद्विरावृत्तिंकुर्यादित्याहगौतमइत्यादिवचनात् षोडशानांद्विरावृत्तित्वंचैकादशाहसपिंडनपक्षेज्ञेयं तत्राद्यमासिकस्यकालसत्त्वात् द्वादशाहेसपिंडनपक्षेतुपंचदशानांद्विरावृत्तिः त्रिपक्षेसपिंडनपक्षेआद्यमासिकोनमासिकद्वितीयमासिकानांस्वकालेकृतत्वादपकृष्यकृतानामेवपुनरावृत्तिविधानात्तेषांकालाभावाच्चत्रयोदशानामेवपुनरावृत्तिः एवमन्यपक्षेष्वपियथासंभवमूह्यं ॥

ये सोलह मासिकश्राद्ध वर्षके अंतमें सपिंडी करनेका पक्ष होवै तौ उक्त किये अपने अपने जो काल तिस कालमें एकोद्दिष्टविधिसें करने. बारहमा दिन आदि कालमें सपिंडीका अपकर्षपक्ष होवै तौ एक दिनमेंही अपकर्ष करके एककालमें एकोद्दिष्टविधिसें करना; क्योंकी, “सोलह श्राद्ध किये विना सपिंडीश्राद्ध नहीं करना” इस वचनसें षोडश श्राद्ध किये विना

सपिंडीश्राद्धविषे अधिकार नहीं है ऐसा बोध होता है. ये मासिकश्राद्ध पक्कान्नकरके अथवा आमान्नकरके करने. पाकसें करनेके पक्षमें एककालमें करना होवै तौ सबोंका एक पाक करके ब्राह्मण, अर्घ्य और पिंड ये सोलह सोलह करने. ये मासिकश्राद्ध बारहमा आदि दिनविषे सपिंडीके पहले किये गयेभी होवैं तौभी फिर सपिंडीके उपरंत अपने अपने कालमें पार्वणविधिसें करने; क्योंकी, जिस वर्षभरके पहले सपिंडीश्राद्ध किया गया होवै तिसकें सोलह श्राद्ध फिर यथाविधि करने. जिस मनुष्यका सपिंडीश्राद्ध वर्षभरके पहले किया होवै तिसके षोडशश्राद्धोंकी द्विरावृत्ति करनी," ऐसा **गौतमजी** कहते हैं इस आदि वचन है; इसलिये षोडशश्राद्धोंकी द्विरावृत्ति करनी ऐसा जो कहा है वह ग्यारहमे दिनमें सपिंडीकरणका पक्ष होवै तौ जानना. क्योंकी, वह ग्यारहमा दिन आद्यमासिकश्राद्धका काल कहा है. बारहमे दिनविषे सपिंडीकरणके पक्षमें पंदरह मासिकोंकी द्विरावृत्ति करनी. तीसरे पक्षमें अर्थात् पंहतालीसवे दिनविषे सपिंडीकरणके पक्षमें आद्यमासिक, ऊनमासिक और द्वितीय मासिक ये अपने अपने कालमें किये गये होनेसें अपकर्ष करके जो किये तिन्होंकीही पुनरावृत्ति करनी ऐसा विधि है, और तिन्होंके अपने कालका अभाव है इस लिये तेरह मासिकश्राद्धोंकीही पुनरावृत्ति करनी. इस प्रकार अन्य पक्षविषे जैसा संभव होवै तिसके अनुसार जानना.

येतुद्वादशाहेसपिंडनंकृत्वात्रयोदशाहादावाद्यमासिकसहितानांषोडशानांपुनरावृत्तिंकुर्वंतितेभ्रांताः यदामरणादारभ्यद्वादशमासमध्येकश्चिदधिकमासःपतेत्तदातन्मासस्थंमासिकश्राद्धमधिकेशुद्धेमासेचेतिद्विवारंकार्यमितिसप्तदशश्राद्धानिभवंति मलमासेमृतस्यतुएकादशाहेआद्यमासिकंकृत्वाद्वितीयमासमृततिथौतत्पुनःकृत्वाकिंचिदूनेद्वितीयमासे ऊनमासिकंतृतीयमासारंभेद्वितीयमासिकंसार्धद्विमासांतेत्रैपक्षिकं सपिंडयुत्तराण्यवशिष्टमासिकानिस्वस्वकालेएवकार्याणि चतुःपुरुषमध्येसपिंडेषुनांदीश्राद्धप्राप्तौतुतत्प्राप्तिमासेएवैकस्मिन्नेवदिनेसर्वाण्यपकृष्यकार्याणि प्रेतश्राद्धानिसर्वाणिसपिंडीकरणंतथा अपकृष्यापिकुर्वीतकर्तुंनांदीमुखंद्विजइत्युक्तेः तत्रैकः पाकःषोडशश्राद्धपक्षेषोडशब्राह्मणाअष्टचत्वारिंशत्पिंडाःपुरूरवार्द्रवविश्वेदेवार्थमेकोविप्रइतिसर्वेषामनुष्ठानं एवंपक्षांतरेषुश्राद्धसंख्यानुसारेणविप्राद्यूह्यं केचित्पाकभेदमाहुः उदकुंभश्राद्धानामप्यनुमासिकवत्प्रेतोद्देश्यकश्राद्धत्वात्तेषामप्यपकर्षइत्युक्तंवृद्धिं विनानुमासिकापकर्षेतुदोषमाहोशनाः वृद्धिश्राद्धविहीनस्तुप्रेतश्राद्धानियश्चरेत् सश्राद्धीनरकेघोरेपितृभिःसहमज्जतीति चतुःपुरुषसपिंडेष्वाधानादिप्राप्तिनिमित्तोप्यपकर्षःकार्यःअत्रविशेषःपूर्वार्धेउक्तः यद्यन्मासिकंसूतकादिनातिक्रांतंभवेत्तत्तदुत्तरमासिकेनसहतंत्रेणकार्यमित्युक्तं ॥

जो तौ, बारहमे दिनविषे सपिंडी करके तेरहमा आदि दिनमें आद्यमासिकसहित सोलह मासिकोंकी पुनरावृत्ति करते हैं वे भ्रांत होते हैं. जिस कालमें मरणसें आरंभ करके बारह महीनोंविषे कोईक एक अधिक मास प्राप्त होवै तब तिस अधिकमाससंबंधी मासिकश्राद्ध अधिक और शुद्ध इन दोनों मासोंमें दोवार करना ऐसे सत्तरह श्राद्ध होते हैं. मलमासमें मृत हुआ होवै तौ ग्यारहमे दिनमें आद्यमासिकश्राद्ध करके दूसरे मासकी मृततिथिमें वह फिर करके कछुक कम ऐसे दूसरे मासमें ऊनमासिक और तीसरे मासके आरंभमें द्वितीय-

मासिक और अढाई महीनोंके अंतमें त्रैपक्षिक इस प्रमाणसें करने. सपिंडीके अनंतरके शेष रहे मासिकश्राद्ध अपने अपने कालमेंही करने. सपिंडोंकेविषे चार पुरुषोंमें नांदीश्राद्ध प्राप्त होवै तौ वह नांदीश्राद्ध जिस महीनामें प्राप्त हुआ तिसही महीनामें एक दिनविषे अपकर्षकरके सब मासिक करने; क्योंकी, द्विजोंनें नांदीश्राद्ध करनेके लिये सब प्रेतश्राद्ध, और सपिंडी ये अपकर्षकरकेही करने ऐसा वचन है. तिसविषे षोडशश्राद्धोंका पक्ष होवै तौ एक पाक, सोलह ब्राह्मण, अठतालीश पिंड, पुरुरवार्द्रव विश्वेदेवता इन्होंके अर्थ एक ब्राह्मण इस प्रकारसें सबोंका अनुष्ठान करना. इस प्रमाणसें अन्य पक्षोंविषे जैसी श्राद्धसंख्या होवै तिसके अनुसार ब्राह्मण आदि जानने. कितनेक ग्रंथकार, पाक निराला करना ऐसा कहते हैं. उदकुंभश्राद्ध अनुमासिकश्राद्धकी तरह प्रेतोद्देशक श्राद्ध हैं इसलिये तिन्होंकाभी अपकर्ष करना ऐसा कहा है. वृद्धिश्राद्धके विना अनुमासिकका अपकर्ष होवै तौ **उशनामुनि** दोष कहते हैं. “जो मनुष्य वृद्धिश्राद्धसें हीन होके अपकर्षकरके प्रेतश्राद्ध करता है वह श्राद्धकर्ता पितरोंसहित घोर नरकमें प्राप्त होता है.” चार पुरुष सपिंडोंके मध्यमें आधान आदि प्राप्तिनिमित्तकभी अपकर्ष करना; इस विषयमें विशेष प्रकार पूर्वार्धमें कह दिया है. जो जो मासिकश्राद्ध सूतक आदिसें अतिक्रांत होवै वह वह उत्तर मासिकके साथ एकतंत्रसें करना ऐसा कहा है.

अथसपिंडीकरणविचारः तत्रसपिंडनकालः नासपिंड्याग्निमान्पुत्रःपितृयज्ञंसमाचरेदितिवचनात् पित्रादीनांमात्रादीनांत्रितयमध्येन्यतममरणेसाग्निकोद्वादशाहेसपिंडनंकृत्वागामिदर्शेपिंडपितृयज्ञादिकंकुर्यात् अत्रस्मार्ताग्निमानपिसाग्निकोग्राह्यइतिभाति तस्यापिपिंडपितृयज्ञावश्यकत्वात् साग्नेःप्रेतस्यतुत्रिपक्षेएव प्रेतश्चेदाहिताग्निःस्यात्कर्तानग्निर्यदाभवेत् सपिंडीकरणंतस्यकुर्यात्पक्षेतृतीयकेइत्युक्तेः अत्रसाग्निःश्रौताग्निमानेव द्वयोःसाग्नित्वेद्वादशाहएव साग्निकस्तुयदाकर्ताप्रेतोवाप्यग्निमान्भवेत् द्वादशाहेतदाकुर्यात्सपिंडीकरणंपितुरित्युक्तेः द्वयोरप्यनग्नित्वेत्वनेकेकालाः सपिंडीकरणंकुर्याद्यजमानस्त्वनग्निमान् अनाहिताग्नेःप्रेतस्यपूर्णे संवत्सरेथवा एकादशेमासिषष्ठेत्रिमासेवात्रिपक्षके मासांतेद्वादशेवाह्निकुर्याद्वैकादशेहनि यदहर्वृद्धिरापन्नातदहर्वेतिनिश्चितं अत्रवृद्धिनिमित्तापकर्षोनिरग्नेरेवोक्तस्तथापि साग्नेरपिसंभवेयोज्यः अत्रवृद्धिपदंचूडोपनयनविवाहमात्रपरंसीमंतादिसंस्कारेषुवृद्धिश्राद्धस्यलोपएवकार्योनतुतदर्थंसपिंडनापकर्षइतिकेचित् अन्येतुगर्भाधानपुंसवनादिष्वन्नप्राशनांतेषुसंस्कारेष्वकरणेदोषोक्तेरावश्यकेषुवृद्धिश्राद्धस्याप्यावश्यकत्वात्सपिंडनापकर्षःकार्यएव तथाचचतुःपुरुषसपिंडेषुसपिंडीकरणाभावेगर्भाधानादिकमपिनकार्यमित्याहुः तेनपितामहमरणेपौत्रस्यवृद्धौ प्राप्तायामप्यपकर्षःसपिंडीकरणानुमासिकादीनांसिद्धः एवमावश्यकवृद्धियुतकर्मप्राप्तौकनिष्ठःपुत्रोवाभ्रातावाभ्रातृपुत्रोवान्यःसपिंडोवाशिष्योवागौणकर्तापिकुलप्राप्तवृद्धिसिद्ध्यर्थंसपिंडनाद्यपकर्षंकुर्यात्तत्रचकृतेमुख्यस्यपुत्रादेर्नपुनःकरणं वृद्धिनिमित्तापकर्षेपुनःकरणाभावात् येवाभद्रंदूषयंतिस्वधाभिरितिदोषश्रुतेः ‘वृद्धिंविनागौणाधिकारिणासपिंड्यादिकरणेतुमुख्याधिकारिणापुत्रादिनापुनरावर्तनीयं एकादशाहांतकर्मणस्तुनपुनरावृत्तिरित्युक्तंतत्रावश्यकपदेनानन्यगतिकंवृद्धिकर्मग्राह्यं तेनसगतिकेष्टापूर्तादौसगतिकोपनयनविवाहादौचनापकर्षः अ

गतिकेचविवाहादावप्यपकर्षइतिव्यवस्थायोज्या आनंत्यात्कुलधर्माणांपुंसांचैवायुषःक्षयात् अस्थिरत्वाच्छरीरस्यद्वादशाहःप्रशस्यते अत्रकुलधर्मपदेनवृद्धिश्राद्धयुतंकर्मग्राह्यं नतुपंचमहायज्ञदेवपूजाश्राद्धादि अस्यवर्णधर्मत्वेननित्यत्वात्सपिंडीकरणनिमित्तकप्रतिबंधायोगात् सपिंडीकरणात्पूर्वंपंचमहायज्ञादिधर्मोनकार्यइतिक्वापिस्मृतिवचनेनुपलंभाच्च एतेनसपिंडीकरणाभावेसपिंडेषुदेवपूजाश्राद्धादिधर्मलोपंवदंतोनिर्मूलत्वादुपेक्ष्याः अत्रद्वादशाहपदेनाशौचसमाप्त्युत्तरदिनंग्राह्यं तेनत्रिदिनाशौचेपंचमदिनेसपिंडीकरणंद्वादशाहादिकालेषुप्रमादादनुष्ठितंसपिंडीकरणंकुर्यात्कालेषूत्तरभाविषु इदमुत्तरकालविधानंसाग्निनिरग्निसाधारणं सपिंडीकरणश्राद्धमुक्तकालेकृतंनचेत् हस्तार्द्रारोहिणीभेवानुराधायांचतच्चरेत् इदमपिसाधारणं स्मृत्यर्थसारेवर्षांतसपिंडनपक्षेवर्षांत्यदिनेपूर्वंसंवत्सरविमोक्षश्राद्धंकृत्वासपिंडनंचकृत्वापरेद्युर्मृताहेवार्षिकंकार्यमित्युक्तं इतिकालविचारः ॥

अब सपिंडीकरणका विचार कहताहुं.

तहां सपिंडीका काल.—“ साग्निक पुत्रनें सपिंडी किये विना पिंडपितृयज्ञ आदि करना नहीं. ” ऐसा वचन कहा है, इसलिये पिता आदि तीन और माता आदि तीन इन्होंमेंसें कोई मृत होवै तौ साग्निकनें बारहमे दिनमें सपिंडी करके आगामी दर्श अर्थात् अमावसमें पिंडपितृयज्ञ आदि करना. यहां स्मार्ताग्निवालाभी साग्निक ग्रहण करना ऐसा मालूम होता है; क्योंकी, तिसकोंभी पिंडपितृयज्ञ आवश्यक है. साग्निक मृतका तौ त्रिपक्षमेंही सपिंडीश्राद्ध करना; क्योंकी, “ मरनेवाला जो साग्निक होवै और कर्ता निरग्निक होवै तौ तिसकी सपिंडी तीसरे पक्षमें करनी ” ऐसा वचन है. इस स्थलमें साग्निक करके श्रौताग्निमान्ही समझ लेना. मृत और कर्ता ये दोनों साग्निक होवैं तौ बारहमे दिनमेंही करनी; क्योंकी, जिस कालमें कर्ता और मरनेवाला साग्निक होवैं, तिस कालमें पिताकी सपिंडी बारहमे दिनमें करनी ऐसा वचन है. दोनोंभी अग्निरहित होवैं तौ अनेक काल कहे हैं. “ अनग्निमान् कर्तानें अनाहिताग्नि मृत हुएकी सपिंडी पूर्ण वर्षके अंतमें, किंवा ग्यारहमे महीनेमें, छठे महीनेमें, तीसरे महीनेमें, अथवा तीसरे पक्षमें अथवा महीनाके अंतमें किंवा बारहमे दिनमें, ग्यारहमे दिनमें अथवा जिस दिनमें नांदीश्राद्ध प्राप्त होवै तिस दिनमें करनी ऐसा निश्चय है. यहां वृद्धिश्राद्धनिमित्तक अपकर्ष निरग्निककोंही कहा है, तथापि साग्निककोंभी संभवमें युक्त करना. यह वचनमें वृद्धिपद चौलकर्म, यज्ञोपवीत और विवाह इन्होंके विषयक है. सीमंत आदि संस्कारोंमें वृद्धिश्राद्धका लोपही करना. वृद्धिश्राद्धके अर्थ सपिंडीका अपकर्ष करना नहीं ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. दूसरे ग्रंथकार तौ गर्भाधान, पुंसवन इन आदिसें लेके अन्नप्राशनपर्यंत संस्कार नहीं किये होवैं तौ दोष कहा है, इसलिये आवश्यक ऐसे संस्कारविषे वृद्धिश्राद्धकोंही आवश्यकपना होनेसें सपिंडीका अपकर्षही करना. तैसेही सपिंडीकरण नहीं करनेमें चार पुरुष सपिंडोंके मध्यमें गर्भाधान आदिभी नहीं करना ऐसा कहते हैं; तिसकरके पितामहके मरनेमें पौत्रकों वृद्धिकी प्राप्तिमेंभी सपिंडीकरण, अनुमासिक इन आदिकोंकाभी अपकर्ष सिद्ध होता है. इसी प्रकार आवश्यक ऐसे वृद्धिश्राद्धसें युत हुए कर्मकी प्राप्तिमें छोटा पुत्र अथवा भाई अथवा भाईका पुत्र अथवा अन्य सपिंड अथवा शिष्य ऐसे गौण

कर्तानेंभी कुलमें प्राप्त हुए वृद्धिश्राद्धकी सिद्धि होनेके अर्थ सपिंडी आदिका अपकर्ष करना. वह करनेमें पुत्र आदि मुख्य कर्तानें फिर नहीं करना; क्योंकी, वृद्धिनिमित्तक अपकर्षमें फिर करनेका अभाव कहा है; क्योंकी, "जो स्वधाशब्दसें मंगल दूषित करते हैं" ऐसा इस मंत्रमें दोषश्रवण है. वृद्धिश्राद्धके विना गौण कर्तानें सपिंडी आदिके करनेमें तौ मुख्य अधिकारीरूपी पुत्र आदिनें फिर करनी. एकादशाह कर्मकी तौ फिर आवृत्ति नहीं करनी ऐसा कहा है. तहां आवश्यकपदकरके दूसरी गति नहीं है जिसकों ऐसा वृद्धिकर्म ग्रहण करना. तिसकरके सगतिक ऐसा इष्टापूर्ति आदिमें और दूसरी गति है जिसकों ऐसे यज्ञोपवीतकर्म और विवाह आदिविषे अपकर्ष नहीं करना. दूसरी गति नहीं है जिसकों ऐसे विवाह आदिविषे अपकर्ष करना ऐसी व्यवस्था युक्त करनी. "कुलके धर्म अपार कहे हैं और पुरुषोंकी आयुका क्षय कहा है और शरीर अस्थिर कहे हैं, इसवास्ते बारहमा दिन प्रशस्त कहा है." इस वाक्यमें 'कुलधर्मपदकरके' वृद्धिश्राद्धसें युक्त कर्म लेना. पंचमहायज्ञ, देवपूजा, श्राद्ध इत्यादिक नहीं लेना; क्योंकी, ये पंचमहायज्ञ, देवपूजा, श्राद्ध इत्यादिकों वर्णधर्मकरके नित्यपना है अर्थात् नहीं करनेमें प्रत्यवाय होनेसें नित्य कर्तव्य हैं, इसलिये सपिंडीकरणनिमित्तक प्रतिबंधका प्रयोग कहा है. क्योंकी, सपिंडीकरणके पहले पंचमहायज्ञ आदि धर्म नहीं करना ऐसा स्मृतिवचनमें कहींभी उपलब्ध नहीं है. इसकरके सपिंडीकरणके अभावमें सपिंडोंविषे देवपूजा, श्राद्ध आदि धर्मका लोप करना ऐसा कहनेहारे निर्मूलपनेसें त्यागनेयोग्य हैं. यहां 'द्वादशाह' पदकरके आशौचकी समाप्ति जिस दिनमें होवै तिस्सें उत्तरदिन ग्रहण करना. तिसकरके तीन दिनके आशौचमें पांचमे दिनविषे सपिंडीकरण करना. "प्रमाद्करके बारहमा आदि दिनोंविषे सपिंडीकरण रहै तौ उत्तर भावी कालमें करना." यह उत्तरकालका विधान साग्निक और निरग्निककों साधारण है. "सपिंडीश्राद्ध उक्त कालमें नहीं किया होवै तौ हस्त, आर्द्रा, रोहिणी और अनुराधा इन नक्षत्रोंमें करना, और यहभी साधारण है. **स्मृत्यर्थसार** ग्रंथमें वर्षके अंतविषे सपिंडी करनेके पक्षमें वर्षके अंतदिनविषे पहले संवत्सरविमोक्षश्राद्ध करके और सपिंडी करके दूसरे दिनविषे मृतदिनमें वार्षिक करना ऐसा कहा है. इस प्रकार सपिंडीकालका विचार कहा है.

तच्चसपिंडनंपुत्रेविदेशस्थेपिसतिनान्यःकुर्यात् एवंज्येष्ठपुत्रेविदेशस्थेपिनकनिष्ठःकुर्यात् षोडशश्राद्धानितुज्येष्ठासन्निधानेकनिष्ठेनकार्याणि पुनर्ज्येष्ठेननकार्याणि आहिताग्निःकनिष्ठोपिसपिंडनंकुर्यादेव वृद्धिनिमित्तेतुकनिष्ठादिभिरपिसपिंडनंकार्यमित्युक्तं वृद्धिंविनाकनिष्ठपुत्रेणकृतेपिसपिंडनेज्येष्ठपुत्रेणपुनःकार्यम् आहिताग्निनापितृयज्ञार्थंकृतेसपिंडनेपिज्येष्ठेनपुनःकार्यमितिभाति तत्रपुनःकरणेप्रेतशब्दोनवाच्यःदेशांतरस्थपुत्राणांश्रुत्वातुवपनंभवेत् दशाहंसूतकंचैवतदंतेचसपिंडनं ॥

वह सपिंडीश्राद्ध पुत्र देशांतरमें होवै तौभी दूसरेनें नहीं करना. इसी प्रकार बडा पुत्र विदेशमें होवै तबभी छोटे पुत्रनेंभी नहीं करना. सोलह श्राद्ध तौ बडा पुत्र समीपमें नहीं होवै तब छोटे पुत्रनें करने. फिर बडे पुत्रनें नहीं करने. आहिताग्नि ऐसे छोटे पुत्रनेंभी सपिंडी करनी. वृद्धि निमित्त होवै तौ छोटे पुत्र आदिनें सपिंडी करनी ऐसा कहा है. वृद्धिके

विना छोटे पुत्रनें सपिंडन किया होवै तौभी बडे पुत्रनें फिर करना. आहिताग्नि कनिष्ठनें पिंडपितृयज्ञके अर्थ सापिंडी करी होवै तौभी बडे पुत्रनें फिर करनी ऐसा मालूम होता है. तहां फिर सपिंडी करनेमें प्रेतशब्दका उच्चार नहीं करना. “ देशांतरमें रहनेवाले पुत्रोंनें तौ श्रवण किये पीछे मुंडन कराना. दश दिन आशौच करके आशौचके अंतमें सपिंडन करना.

अथव्युत्क्रममृतौ मृतेपितरियस्याथविद्यतेचपितामहः तेनदेयास्त्रयःपिंडाःप्रपितामहपूर्वकाः तेभ्यश्चपैतृकःपिंडोनियोक्तव्यस्तुपूर्ववत् मातर्यथमृतायांतुविद्यतेचपितामही प्रपितामहीपूर्वस्तुकार्यस्तत्राप्ययंविधिः एवंप्रपितामहजीवनेतत्पित्रादिभिःकार्यः यत्तुव्युत्क्रमात्तुप्रमीतानांनैवकार्यासपिंडनेतिवन्मातापितृभर्तृभिन्नविषयं प्रपितामहादिभिःपितुःसपिंडनेकृतेपश्चात्पितामहमरणेपिपुनःपितामहेनसहपितुःसपिंडनंकार्यं यदातुपितुःसपिंडनात्प्राक्पितामहोमृतस्तदापितामहसपिंडनंकृत्वा पितामहादिभिःसहपितृसपिंडनंकार्यं यदाचपितुर्मरणोत्तरंपितामहःप्रपितामहोवामृतस्तयोश्चपुत्रांतरंसपिंडनाधिकारीदेशांतरेतिष्ठतितदादाहाद्येकादशाहांतमात्रंकर्मकृत्वा सपिंडनहीनाभ्यामपिपितामहप्रपितामहाभ्यांसहपितुःसपिंडनंकुर्यात् पितामहप्रपितामहयोःपुत्रांतराभावेतुपौत्रःप्रपौत्रोवातयोःसपिंडनंकृत्वैवपितुःसपिंडनंकुर्यात् पितामहस्यपुत्रांतराभावेपौत्रेणसपिंडनषोडशानुमासिकांतमेवकर्मकार्यं पितामहवार्षिकादिकं तुनावश्यकं इच्छयापितामहवार्षिकादिकरणेतुफलातिशयः ॥

अब व्युत्क्रम मरण होवै तौ कहताहुं.

जिसका पिता मृत होके पिताका पिता जीवता होवै तिसनें प्रपितामहपूर्वक ऐसे तीन पिंड देने, और तिन पिंडोंमें पितासंबंधी पिंडका पहलेकी तरह संयोजन करना. जिसकी माता मरै और पितामही अर्थात् दादी जीवती होवै तहांभी प्रपितामहीपूर्वक यह विधि करना. इसी प्रकार प्रपितामह जीवता होवै तबभी प्रपितामहका पिता आदिके साथ संयोजन करना. “ जो तो व्युत्क्रमकरके मृत हुए तिन्होंकी सपिंडी नहीं करनी. ” ऐसा जो है सो तौ माता, पिता, पति इन्होंसें भिन्नविषयक है. प्रपितामह आदिके साथ पिताकी सपिंडी करी होके पीछे पितामह मरै तौ फिर पितामहकेसाथ पिताकी सपिंडी करनी. जब तौ पिताकी सपिंडीके पहले पितामह मर गया होवै तब पितामहकी सपिंडी करके पितामह आदिके साथ पिताकी सपिंडी करनी. जब तौ पिताके मरणके उपरंत पितामह अथवा प्रपितामह मरै और तिन्होंके सपिंडनका अधिकारी दूसरा पुत्र देशांतरमें स्थित होवै तब दाहसें एकादशाहपर्यंत कर्म मात्र करके सापिंडनसें हीन हुये पितामह और प्रपितामहके साथ पिताकी सपिंडी करनी. पितामह और प्रपितामहकों दूसरा पुत्र नहीं होवै तौ पौत्र अथवा प्रपौत्रनें तिसकी सपिंडी करकेही पिताकी सपिंडी करनी. पितामहकों दूसरा पुत्र नहीं होवै तौ पौत्रनें सापिंडी, षोडशानुमासिकांतही कर्म करना. पितामहका वार्षिक आदि तौ करना आवश्यक नहीं है. इच्छाकरके पितामहका वार्षिक आदि करनेमें फलका अतिशय जानना.

पितृदशाहंकुर्वन्यदिपुत्रोहुतस्तदातत्पुत्रःस्वपितुरौर्ध्वदेहिकंकृत्वापितामहौर्ध्वदेहिकंपुनः सर्वमावर्तयेत् अतीतेदशाहेतुनपुनरावृत्तिः पुत्रांतराभावेपितामहसपिंडनोत्तरंपितृसपिंडन

मित्युक्तं अशक्तिवशात्पित्रानुज्ञातेनपौत्रेणपितामहदशाहकर्मण्यारब्धेपश्चात्पितृमृतौपित्राशौचंवहन्नेवपौत्रःपितामहौर्ध्वदेहिकंकुर्यात् प्रक्रांतत्वात्पितृदशाहादिकर्मापिकुर्यात्प्राप्तत्वात् ॥

पिताके दश दिनोंका कर्म करता हुआ पुत्र जो मर जावै तब तिस कालमें तिसके पुत्रनें अपने पिताका अंत्यकर्म करके पितामहका अंत्यकर्म सब फिर करना. दश दिन अतीत हो जावैं तौ पुनरावृत्ति नहीं करनी. दूसरे पुत्रके अभावमें पितामहके सपिंडनके उपरंत पिताकी सपिंडी करनी ऐसा कहा है. असामर्थ्यके होनेसें पिताकरके अनुज्ञात हुये पौत्रनें पितामहके दश दिनके कर्मका आरंभ करके पीछे पिता मर जावै तौ पिताके आशौचकों प्राप्त हुए पौत्रनेंही पितामहका अंत्यकर्म करना; क्योंकी, तिसका आरंभ किया गया है. पिताका दश दिनका आदि कर्मभी करना. क्योंकी, वह प्राप्त हुआ है.

अथस्त्रीषूच्यते पितामह्यादिभिःसार्धंमातरंतुसपिंडयेत् केचित्पितृमरणोत्तरंमातृमरणे पित्रैवसहमातृसपिंडनमाहुः दौहित्रःसपिंडनकर्ताचेन्मातामहेनसहसपिंडनमित्यपरेसहगमनेतुभर्त्रैवसहसपिंडनं येनकेनापिसपिंडनेप्यन्वष्टक्यप्रतिवार्षिकादिश्राद्धेषुपितामह्यादिभिः सहैवमातुःपार्वणंकार्यं अत्रकेचित्स्वपुत्रसपत्नीपुत्रयोःपत्युश्चाभावेस्त्रीणांसपिंडनंनास्तीत्याहुः अत्रान्वारोहणेभर्त्रासहपत्नीसंयोजनमितिपक्षेमतद्वयं पितृपिंडस्यपितामहादिषुत्रिषुसंयोजनंप्रथमंकृत्वापश्चान्मातृपिंडंपितामहादिषुसंयोजयेदित्येकः प्रथमंमातृपिंडंपित्रैवसंयोज्यमातृपिंडेनैकीकृतंपितृपिंडंपितामहादिषुसंयोजयेदित्यपरःपक्षः अत्रद्वितीयपक्षएवयुक्तः ॥

अब स्त्रियोंविषे कहताहुं.

“पितामही आदिके साथ माताकी सपिंडी करनी.” कितनेक ग्रंथकार पिताके मरणके अनंतर माताके मरणमेंभी पिताके साथही माताकी सपिंडी करनी ऐसा कहते हैं. जो कन्याका पुत्र सपिंडी करनेवाला होवै तौ मातामहके साथ सपिंडी करनी ऐसा दूसरे ग्रंथकार कहते हैं. सहगमनमें तौ पतिकेसाथही सपिंडी करनी. जिस किसकेसाथ सपिंडी होवै तौभी अन्वष्टक्य, प्रतिसांवत्सरिक इन आदि श्राद्धोंमें पितामही आदिके साथही माताका पार्वण करना. यहां कितनेक ग्रंथकार, अपना पुत्र, सपत्नीपुत्र, पति इन्होंके अभावमें स्त्रियोंकों सपिंडी नहीं है ऐसा कहते हैं. यहां सहगमनमें पतिके साथ पत्नीका संयोजन करना ऐसा जो पक्ष है तिसविषे दो मत हैं—पिताके पिंडका, पितामह आदि तीनोंसें प्रथम संयोजन करके पीछे माताके पिंडका पितामह आदिविषे संयोजन करना ऐसा एक पक्ष है. प्रथम माताका पिंड पिताके साथही संयोजन करके माताके पिंडसें एकीकृत किया ऐसा पिताका पिंड पितामह आदिविषे योजित करना ऐसा दूसरा पक्ष है. यहां दूसरा पक्षही युक्त है.

केचित्सहगमनेएकदिनमरणेवास्त्रियाःसपिंडनंनास्ति भर्तुःकृतेसपिंडनेभार्यायाअपिकृतंभवतीतिमतांतरमाहुःसर्वाभावेस्वयंपत्न्यःस्वभर्तॄणाममंत्रकं सपिंडीकरणंकुर्युस्ततःपार्वणमेवच ब्रह्मचारिणामनपत्यानांचव्युत्क्रममृतानांचसपिंडनंनकार्यमितिमतांतरं अत्रसर्वत्रसपिंडनाभावपक्षोनशिष्टाचारेदृश्यते यतीनांसपिंडीकरणंनास्तिकिंतुतत्स्थानेएकादशेन्हिपार्वणं

कार्यं इदंसपिंडीकरणश्राद्धंपार्वणैकोद्दिष्टरूपंतेनपितामहादित्रयार्थंत्रयोविप्राअर्घ्याःपिंडाश्च त्रयः प्रेतार्थमेकोविप्रःपिंडोर्घ्यश्च देवार्थंद्वौ यद्वापार्वणेएकःप्रेतेएकःदेवार्थमेकोविप्रः अत्र कामकालौविश्वेदेवौ प्रेतस्यपित्रादेरर्घ्यपात्रंपितामहार्घ्यपात्रत्रयेसंयोज्यंएवंप्रेतपिंडोपिपितामहादिपिंडत्रयेसंयोज्यः पितृविप्रकरेहोमःसाग्नेरपिभवेदिह सपिंडीकरणश्राद्धमन्नेनैवकार्यंनत्वामादिना अनुमासिकान्यप्यन्नेनैवकार्याणि ॥

कितनेक ग्रंथकार सहगमन होनेमें अथवा एक दिनमें स्त्रीपुरुषका मरण होवै तब स्त्रीकी सपिंडी नहीं करनी. पतिकी सपिंडी करनेसें स्त्रीकीभी सपिंडी हो जाती है, ऐसा दूसरा मत कहते हैं. "सबोंके अभावमें आपही स्त्रीनें अपने पतिकी अमंत्रक सपिंडी करनी, पीछे पार्वणश्राद्धही करना." ब्रह्मचारी, संतानसें रहित और व्युत्क्रमसें मरनेवाले इन्होंकी सपिंडी नहीं करनी, ऐसा दूसरा मत है. यहां सब जगह सपिंडीके अभावका पक्ष शिष्टजनमें नहीं दीखता है. संन्यासियोंकी सपिंडी नहीं करनी, किंतु सपिंडीके स्थानमें ग्यारहमे दिनविषे पार्वणश्राद्ध करना. यह सपिंडीकरणश्राद्ध पार्वण और एकोद्दिष्टरूपी कहा है. तिसकरके पितामह आदि तीनोंके अर्थ तीन ब्राह्मण और तीन अर्घ्य, तीन पिंड ये देने. प्रेतके अर्थ एक ब्राह्मण, एक पिंड और एक अर्घ्य देना. देवतोंके अर्थ दो ब्राह्मण कहे हैं. अथवा पार्वणविषे एक, प्रेतविषे एक और देवतोंके अर्थ एक ब्राह्मण इस प्रकारसें कहने. इस सपिंडीश्राद्धमें कामकाल विश्वेदेव ग्रहण करने. पिता आदि प्रेतका अर्घ्यपात्र पितामह आदिकोंके तीन अर्घ्यपात्रोंमें युक्त करना. इस प्रकार प्रेतका पिंडभी पितामह आदिके तीन पिंडोंमें युक्त करना योग्य है. "इस सपिंडीश्राद्धमें पितृस्थानमें जो ब्राह्मण होवै तिसके हाथपर साग्निकनेंभी होम करना." सपिंडीश्राद्ध अन्नसेंही करना, आमान्न आदिसें करना नहीं. अनुमासिक श्राद्धभी अन्नसेंही करने.

प्रेतःसपिंडनादूर्ध्वंपितृलोकंसगच्छति कुर्यात्तस्यचपाथेयंद्वितीयेह्निसपिंडनादितिवचनात् त्रयोदशेह्निपाथेयश्राद्धंकृत्वापुण्याहवाचनादिकंकृत्वावर्षपर्यंतंप्रत्यहमुदकुंभश्राद्धंकुर्यात् अशक्तौमासिकश्राद्धेष्वेकोदकुंभोदेयः सपिंडनोत्तरानुमासिकानांपार्वणविधिनानुष्ठानंवृद्धिप्राप्तौ तेषामप्यपकर्षः सचचतुःपुरुषसपिंडेष्वेवेत्युक्तं एवंवर्षपर्यंतंकृत्वावर्षांत्यादिनेसंवत्सरविमोक्षश्राद्धंपार्वणविधिनाकार्यं इदमेवाब्दपूर्तिश्राद्धमित्यप्युच्यते वृद्धिश्राद्धेसपिंड्यांचप्रेतश्राद्धानुमासिके संवत्सरविमोकेचनकुर्यात्तिलतर्पणं इदमूनाब्दिकांतषोडशश्राद्धेभ्योभिन्नमेवअतएवास्यप्रेतश्राद्धत्वाभावाद्वृद्धिप्राप्तावपिनापकर्षः ततोवर्षांत्यदिनेशक्त्याभूरिब्राह्मणभोजनंचकार्यमित्यंत्येष्टिपद्धतौभट्टाः युक्तंचैतत् जीवतोवाक्यकरणात्प्रत्यब्दंभूरिभोजनात् गयायांपिंडदानाच्चत्रिभिःपुत्रस्यपुत्रतेपिवाक्येनभूरिभोजनपदेनप्रत्याब्दिकश्राद्धातिरिक्तस्यैवबहुविप्रभोजनस्यविहितत्वात् श्राद्धेकुर्यान्नविस्तरमितिनिषेधाच्छ्राद्धस्यभूरिभोजनपदाभिधेयत्वासंभवात् ॥

"सपिंडी करनेके अनंतर मृत हुआ पितृलोकमें गमन करता है; इसलिये सपिंडीके दूसरे दिनमें तिसका पाथेयश्राद्ध करना;" ऐसा वचन है इस लिये तेरहमे दिनविषे पाथेयश्राद्ध करके पुण्याहवाचन आदि करना. पीछे वर्षपर्यंत नित्यप्रति उदकुंभश्राद्ध करना. नित्यप्रति करनेकों असामर्थ्य होवै तौ मासिकश्राद्धोंमें एक जलका कुंभ देना. सपिंडनसें उपरंत

अनुमासिकश्राद्ध पार्वणविधिसें करने और वृद्धिश्राद्धकी प्राप्तिमें तिन्होंकाभी अपकर्ष करना. वह अपकर्ष चार पुरुषोंके सपिंडोंमें है ऐसा कहा है. ऐसा वर्षपर्यंत करके वर्षके अंतके दिनमें संवत्सरविमोक्षश्राद्ध पार्वणविधिसें करना. यही अब्दपूर्तिश्राद्ध कहाता है. वृद्धिश्राद्ध, सपिंडी, प्रेतश्राद्ध, अनुमासिकश्राद्ध और संवत्सरविमोकश्राद्ध इन्होंमें तिलोंसें तर्पण नहीं करना. यह अब्दपूर्तिश्राद्ध ऊनाब्दिकपर्यंत जो सोलह श्राद्ध हैं, तिन्होंसें भिन्न कहा है. इसी कारण करकेही यह प्रेतश्राद्ध नहीं होनेसें वृद्धिकी प्राप्तिमेंभी इस अब्दपूर्तिश्राद्धका अपकर्ष नहीं करना. पीछे वर्षके अंतके दिनमें शक्तिके अनुसार बहुतसे ब्राह्मणोंकों भोजन करवाना ऐसा अंत्येष्टि पद्धतिमें **भट्ट** कहते हैं, और यह योग्यभी है. क्योंकी, "पिता जीवता होके तिसकी आज्ञा मान्य करनेसें, प्रत्यब्दश्राद्धमें भूरिभोजन करनेसें और गयाजीविषे पिंडके देनेसें पुत्रकों पुत्रपना होता है," इस वाक्यसें भूरिभोजन पदकरके प्रत्याब्दिकश्राद्धके व्यतिरिक्तही वहुत ब्रह्मणोंकों भोजन देना विहित है. क्योंकी, श्राद्धविषे विस्तर नहीं करना," ऐसा निषेध है इसलिये श्राद्धकों भूरिभोजनपदाधेयत्वका संभव नहीं है.

अथप्रथमाब्देनिषिद्धानि मातापित्रोर्मरणेवर्षपर्यंतपरान्नंगंधमाल्यादिभोगंमैथुनमभ्यंगस्नानंचवर्जयेत् ऋतौभार्यामुपेयादेव आर्त्विज्यंलक्षहोममहादानादिकाम्यकर्माणितीर्थयात्राविवाहादिवृद्धिश्राद्धयुतंकर्ममात्रंशिवपूजांचवर्जयेत् संध्योपासनदेवपूजापंचमहायज्ञातिरिक्तकर्ममात्रंवर्ज्यं प्रमीतौपितरौयस्यदेहस्तस्याशुचिर्भवेत् नदैवंनापिवापित्र्यंयावत्पूर्णोनवत्सरइतिकेचित् महातीर्थस्यगमनमुपवासव्रतानिच सपिंडीश्राद्धमन्येषांवर्जयेद्वत्सरंबुधः अस्यापवादः पत्नीपुत्रस्तथापौत्रोभ्रातातत्तनयःस्नुषा मातापितृव्यश्चैतेषांमहागुरुनिपातने कुर्यात्सपिंडनंश्राद्धंनान्येषांतुकदाचन एकादशाहपर्यंतंप्रेतश्राद्धंचरेत्सदा पित्रोर्मृतौचनान्येषांकुर्याच्छ्राद्धंतुपार्वणं गयाश्राद्धंमृतानांतुपूर्णेब्देप्रशस्यते गारुडे तीर्थश्राद्धंगयाश्राद्धंश्राद्धमन्यच्चपैतृकं अब्दमध्येनकुर्वीतमहागुरुविपत्तिषु केचिद्वर्षांतसपिंडनपक्षेएवैतेसर्वेनिषेधानतुद्वादशाहसपिंडनपक्षइत्याहुः अपरेतुद्वादशाहसपिंडनपक्षेपिसर्वएतेनिषेधाइत्याहुः अत्रैवंव्यवस्थावृद्धिप्राप्तिंविनाऽर्वाक्सपिंडनापकर्षेपिप्रेतस्यपितृत्वप्राप्तिर्वर्षांतएवकृतेसपिंडीकरणेनरःसंवत्सरात्परं प्रेतदेहंपरित्यज्यभोगदेहंप्रपद्यतइत्यादिवचनात् तेनसपिंडीकरणसत्त्वेपिवृद्धिदैवपित्र्येष्वनधिकारःवृद्धिनिमित्तापकर्षेतुवृद्ध्यादावधिकारइति अतएवकालतत्त्वनिर्णये संकटादौमृतपितृकापत्यानांसंस्काराभ्युदयिकंमृतमातापितृकेणपुत्रेणस्वापत्यसंस्कारादिकंचप्रथमाब्देपिकार्यमित्युक्तंदर्शमहालयादिश्राद्धस्यनित्यतर्पणस्यचाप्येवं[1]मेवव्यस्थाज्ञेया ॥

अब प्रथम वर्षमें निषिद्ध कृत्य कहताहुं.

मातापिताके मरनेमें वर्षपर्यंत दूसरेका अन्न, गंधमाल्य आदि भोग, मैथुन, अभ्यंगस्नान ये वर्जित करने. ऋतुकालमें अपनी स्त्रीसें भोग करनाही उचित है. ऋत्विक्कर्म, लक्षहोम,

---

१. वृद्धिनिमित्तापकर्षेदर्शादिकमाभ्युदयिकंचकार्यं इच्छयासापिंड्यपकर्षेदर्शादिकंवर्षांतेकार्यमितिव्यवस्थेत्यर्थः ।

महादान इन आदि काम्य कर्म; तीर्थयात्रा; विवाह आदिक वृद्धिश्राद्धयुक्त सब कर्म; शिवपूजा ये वर्जित करने. संध्या, सायंकालकी और प्रातःकालकी उपासना, देवपूजा, पंचमहायज्ञ इन्होंके विना सब कर्म वर्जित करने. “जिसके माता और पिता मर जावैं तिसका देह वर्षपर्यंत अशुद्ध रहता है इसवास्ते तिसनें एक वर्षपर्यंत कोईसाभी देवकर्म और पितृकर्म नहीं करना” ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. “महातीर्थकी यात्रा, उपवास, व्रत, अन्योंका सपिंडीश्राद्ध इन्होंकों ज्ञाता पुरुषनें वर्षपर्यंत वर्जित करना.” **इसका अपवाद** “माता पिताके मरनेमें, पत्नी, पुत्र, पौत्र, भाई, भाईका पुत्र, पुत्रकी वहु, माता और चाचा इन्होंकी सपिंडी करनी. इन्होंसें अन्योंकी कभीभी नहीं करनी. ग्यारहमे दिनपर्यंतके प्रेतश्राद्ध सब कालमें करने. मातापिताके मरनेमें अन्योंका पार्वणश्राद्ध तौ नहीं करना. मृत हुये मनुष्योंका गयाश्राद्ध वर्षभरके उपरंत करना उचित है. **गरुडपुराणमें** तौ तीर्थश्राद्ध, गयाश्राद्ध, अन्य पितृश्राद्ध ये पितामाताके मरनेमें वर्षपर्यंत नहीं करने. वर्षके अंतमें सपिंडी करनेका पक्ष होवै तौ ये सब निषेध मानने. बारहमे दिनविषे सपिंडी करना इस पक्षमें नहीं मानने ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. अन्य ग्रंथकार तौ बारहमे दिनविषे सपिंडी करना इस पक्षमेंभी ये सब निषेध हैं ऐसा कहते हैं. **यहां ऐसी व्यवस्था**—वृद्धिकी प्राप्तिके विना पहले सपिंडीका अपकर्ष करनेमेंभी प्रेतकों पितृपनेकी प्राप्ति वर्षके अंतमें होती है; क्योंकी, “सपिंडीकरणके पीछेभी मनुष्य एक वर्षके उपरंत प्रेतदेहकों त्यागके भोगदेहकों प्राप्त होता है” इस आदि वचन कहे हैं. तिसकरके सपिंडीकरणके होनेमेंभी वृद्धिसंज्ञक दैवकर्म और पितृकर्म इन्होंविषे अधिकार नहीं है. वृद्धिनिमित्तसें अपकर्ष किया होवै तौ वृद्धि आदि कर्मविषे अधिकार कहा है. इस लियेही **कालतत्त्वनिर्णय** ग्रंथमें, संकट आदिविषे मृत हुआ है पिता जिन्होंका ऐसे संतानोंका संस्काररूप मंगलकार्य और मातापिता जिसका मृत होवै ऐसे पुत्रनें अपनी संतानका संस्कार आदि प्रथम वर्षमें करना ऐसा कहा है. दर्श, महालय इत्यादि श्राद्ध और नित्यतर्पण इन्होंकीभी ऐसीही व्यवस्था जाननी.

अथविधानानि तत्रपंचकमृतौ पंचकंनामधनिष्ठोत्तरार्धमारभ्यरेवत्यंतंसार्धनक्षत्रचतुष्टयं तत्रदाहनिषेधाद्दर्भमयपुत्तलैर्यवपिष्टानुलिप्तैः पंचोर्णासूत्रवेष्टितैःसहशवंदहेत् तत्रतिथ्यादिसंकीर्त्यामुकस्यधनिष्ठापंचकादिमरणसूचितवंशारिष्टविनाशार्थंपंचकविधिंकरिष्य इतिसंकल्प्योक्तविधाःप्रतिमानक्षत्रमंत्रैरभिमंत्र्यगंधपुष्पैःसंपूज्यदाहसमयेप्रेतोपरिन्यसेत् प्रथमांशिरसिद्वितीयांनेत्रयोः तृतीयांवामकुक्षौ चतुर्थींनाभौ पंचमींपादयोः तदुपरिनाममंत्रैर्घृताहुतीर्जुहुयात् तत्रनामानिक्रमेण प्रेतवाहःप्रेतसखःप्रेतपःप्रेतभूमिपः प्रेतहर्ताचेति ततउदकंदलायमायसोमंत्र्यंबकमितिमंत्राभ्यांप्रत्येकंप्रतिमास्वाज्याहुतीर्जुहुयात्ततःप्रेतमुखेपंचरत्नंदत्वापुत्तलैःसहप्रेतंदहेत् सूतकांतेतिलहेमघृतानिदत्वाकांस्यपात्रेतैलंप्रक्षिप्यतत्रात्मप्रतिबिंबंवीक्ष्यविप्रायदद्यात् शांतिंचकुर्यात् ॥

अब विधान कहताहुं.

तहां पंचकोंविषे मरण होवै तौ कर्तव्यविधि—धनिष्ठा नक्षत्रके उत्तरार्धसें आरंभ करके रेवती नक्षत्रके अंतपर्यंत ऐसे साढेचार नक्षत्र पंचक कहाते हैं. तिन पंचकोंमें दाहका

निषेध कहा है, इसकरके डाभके पुतले बनायके जवोंकी पीठीसें लीपना और पांच ऊनसूत्रोंसें वेष्टित करके तिन्होंसहित मुर्दाका दाह करना, तहां तिथि आदिका संकीर्तन करके **“ अमुकस्य धनिष्ठापंचकादिमरणसूचितवंशारिष्टविनाशार्थं पंचकविधिं करिष्ये ”** ऐसा संकल्प करके उक्त प्रकारसें प्रतिमा बनाके तिन्होंकों नक्षत्रमंत्रोंसें अभिमंत्रित करके गंधपुष्पोंसें पूजा करके दाहकालमें प्रेतके ऊपर स्थापित करना. पहली शिरपर, दूसरी नेत्रोंपर, तीसरी वामी कुक्षिपर, चौथी नाभीपर और पांचमी पैरोंपर इस प्रकारसें स्थापित करके तिन्होंके ऊपर नाममंत्रोंसें घृतकी आहुति देनी. **तहां क्रमसें नाम—“ प्रेतवाहः, प्रेतसखः, प्रेतपः, प्रेतभूमिपः, प्रेतहर्ता ”** ऐसे जानने. पीछे जल देके **“ यमायसोमं० त्र्यंबकं० ”** इन दो मंत्रोंसें प्रत्येक प्रतिमापर घृतकी आहुतियोंसें होम करना. पीछे प्रेतके मुखमें पंचरत्न घालके प्रतिमासहित प्रेतका दाह करना. सूतकके अंतमें तिल, सोना, घृत इन्होंके दान करके कांसीके पात्रमें तेल घालके तिसमें अपना प्रतिबिंब देखके ब्राह्मणके अर्थ देना और शांतिभी करनी.

अत्रायंविशेषः नक्षत्रांतरेमृतस्यपंचकेदाहप्राप्तौपुत्तलविधिरेवनशांतिकं पंचकमृतस्याश्विन्यांदाहप्राप्तौशांतिकमेवनपुत्तलविधिः शांतिश्चलक्षहोमरुद्रजपान्यतररूपायथाविभवंकार्या अथवाकुंभेयमप्रतिमांसंपूज्यस्वगृह्योक्तविधिनाग्निप्रतिष्ठापनान्वाधानादिचरुश्रपणांतंकृत्वाज्यभागांतेनामभिश्चतुर्दशचर्वाहुतीर्जुहुयात् यमायस्वाहा १ धर्मराजाय० २ मृत्यवे० ३ अंतकाय० ४ वैवस्वताय० ५ कालाय० ६ सर्वभूतक्षयाय० ७ औदुंबराय० ८ दध्नाय० ९ नीलाय० १० परमेष्ठिने० ११ वृकोदराय० १२ चित्राय० १३ चित्रगुप्ताय० १४ एवंहुत्वाहोमशेषंसमाप्य कृष्णांगांकृष्णवस्त्रांचहेमनिष्कसमन्वितां दद्याद्विप्रायशांताययमो मेप्रीयतामिति ॥

यहां यह विशेष है—अन्य नक्षत्रमें मरै और पंचकोंमें दाह आवै तब पुत्तलविधि करना. शांति नहीं करनी. पंचकमें मृत हुएका दाह अश्विनी नक्षत्रमें प्राप्त होवै तौ शांतिही करनी. पुत्तलविधि नहीं करना. लक्षहोम अथवा रुद्रजप इन्होंमांहसें एक कोईसी अपनी शक्तिके अनुसार शांति करनी. अथवा कलशपर धर्मराजके प्रतिमाकी पूजा करके अपने गृह्यसूत्रमें कहे विधिसें अग्निस्थापन, अन्वाधान, चरुश्रपण इसपर्यंत कर्म करके आज्यभागपर्यंत कर्म किये पीछे नाममंत्रोंकरके चरुकी चौदह आहुतियोंसें होम करना. **नाममंत्र—“ यमायस्वाहा १, धर्मराजाय० २, मृत्यवे० ३, अंतकाय० ४, वैवस्वताय० ५, कालाय० ६, सर्वभूतक्षयाय० ७, औदुंबराय० ८, दध्नाय० ९, नीलाय० १०, परमेष्ठिने० ११, वृकोदराय० १२, चित्राय० १३, चित्रगुप्ताय० १४ ”** इस प्रकारसें होम करके होमशेष समाप्त करके गोदान करना. **गोदानका मंत्र—“ कृष्णां गां कृष्णवस्त्रां च हेमनिष्कसमन्विताम् ॥ दद्याद्विप्राय शांताय यमो मे प्रीयतामिति ”**

त्रिपादृक्षेप्येतदेवशांतिकंयदिभद्रातिथीनांस्याद्भानुभौमशनैश्चरैः त्रिपादृक्षैश्चसंयोगस्तदायोगस्त्रिपुष्करः द्विपुष्करोद्वयोर्योगेथवायंस्याद्द्विपादभैः द्विपादनक्षत्राणितु पुनर्वसूत्तराषाढाकृत्तिकोत्तरफल्गुनी पूर्वभाद्राविशाखाचज्ञेयमेतत्त्रिपादभं मृगचित्राधनिष्ठाचज्ञेयमेतत्

द्विपादभं त्रिपुष्करयोगेद्विपुष्करयोगेचमृतौकृच्छ्रत्रयंप्रायश्चित्तंकृत्वायवपिष्टमयपुरुषत्रयेणसहप्रेतदाहः पुरुषत्रयस्यप्रेतेन्यासआज्याहुतयश्चपूर्ववत् कनकहीरकनीलपद्मरागमौक्तिकेतिपंचरत्नस्यमुखेप्रक्षेपोपि रत्नाभावेकर्षार्धस्वर्णं स्वर्णाभावेघृतं एवंपूर्वत्रापि दहनेमरणेत्रिद्विपुष्करेत्रिगुणंफलं द्विगुणंखननेप्येवमेतद्दोषोपशांतये सुवर्णदक्षिणांदद्यात्कृष्णवस्त्रमथापिवा शांतिंकुर्यात्सूतकांतेपूर्वोक्तांतेनमंगलं ॥

त्रिपादनक्षत्रमेंभी यही शांति करनी. “ जो भद्रातिथि अर्थात् द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी ये तिथि होवैं; रविवार, मंगलवार, शनिवार ये वार और त्रिपाद नक्षत्र इन्होंका संयोग होवै तब वह **त्रिपुष्करयोग** जानना. दोनोंके योगमें **द्विपुष्करयोग** होता है, अथवा द्विपाद नक्षत्रोंके योगसें **द्विपुष्करयोग** होता है. ” **त्रिपादनक्षत्र** तौ—पुनर्वसु, उत्तराषाढा, कृत्तिका, उत्तराफल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा, विशाखा ये त्रिपाद नक्षत्र हैं. मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा ये द्विपाद नक्षत्र हैं. त्रिपुष्करयोगमें और द्विपुष्करयोगमें मरै तौ तीन कृच्छ्र प्रायश्चित्त करके जवोंकी पीठीसें तीन पुरुष बनायके तिन्होंके साथ प्रेतका दाह करना. इन तीन पुरुषोंकों प्रेतपर स्थापित करना और घृतकी आहुति पहलेकी तरह देनी. सोना, हीरा, नीलमणि, माणिक, मोती ये पंचरत्न मुखमें स्थापित करने. रत्नोंके अभावमें आधा तोला सोना और सोनाके अभावमें घृत वालना. ऐसेही पहलेभी करना. “ त्रिपुष्कर और द्विपुष्करविषे दाह और मरण होनेमें त्रिगुना और दुगुना फल जानना. खनन किया जावै तबभी ऐसाही फल होता है. इस दोषकी शांतिके अर्थ सोनाकी दक्षिणा अथवा कृष्ण वस्त्र देना. सूतकके अंतमें पूर्वोक्त शांति करनी, तिसकरके मंगल प्राप्त होता है.

मृतस्यश्मशानेनयनोत्तरंपुनर्जीवनेसतियस्यगृहेसप्रविशतितस्यमरणं तत्रसक्षीरघृताक्तौदुंबरसमिधांसावित्र्यष्टसहस्रेणहोमः अंतेकपिलादानंतिलपूर्णकांस्यपात्रदानंच एकाशीतिपलं कांस्यंतदर्धंवातदर्धकं नवषट्त्रिपलंवापिदद्याद्विप्रायशक्तितः ॥

मृत हुए मनुष्यकों स्मशानमें ले जानेके अनंतर वह फिर जीवता होके जिसके घरमें प्रवेश करता है तिसका मरण होता है. तहां दूधसें युक्त घृतमें भिगोई हुई गूलरकी समिधोंका सावित्रीमंत्रसें आठ हजार होम करना. अंतमें कपिला गौका दान और तिलोंसें पूर्ण कांसीके पात्रका दान करना. ३२४ तोलेभर, अथवा १६२ तोले, अथवा ३६ तोले, अथवा २४ तोले, अथवा १२ तोले, कांसीका पात्र अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणके अर्थ देना.

अथब्रह्मचारिमृतौ ब्रह्मचारिमरणेद्वादशषट्त्रीणिवाब्दानिशक्त्याप्रायश्चित्तंकृत्वादेशकालौस्मृत्वामुकगोत्रनाम्नोब्रह्मचारिणोमृतस्यव्रतविसर्गंकरिष्ये तदंगंनांदीश्राद्धंकरिष्यइत्युक्त्वाहिरण्येननांदीश्राद्धंकृत्वाग्निप्रतिष्ठापनाद्याघारांते चतसृभिर्व्याहृतिभिराज्यंहुत्वाग्नयेव्रतपतयेस्वाहा अग्नयेव्रतानुष्ठानफलसंपादनायस्वाहा विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहेतितिस्रआज्याहुतीर्हुत्वास्विष्टकृदादिसमाप्यं ॥

अब ब्रह्मचारीके मरनेमें निर्णय कहताहुं.

ब्रह्मचारीका मरण होवै तब बारह, छह, अथवा तीन अब्द अपनी शक्तिके अनुसार प्रायश्चित्त करके देशकालका स्मरण करके " अमुकगोत्रनाम्नो ब्रह्मचारिणो मृतस्य व्रतविसर्गं करिष्ये ॥ तदंगं नांदीश्राद्धं करिष्ये " ऐसा कहके सोनासें नांदीश्राद्ध करके अग्निस्थापनसें आघारांत कर्म हुए पीछे चार व्याहृतिमंत्रोंसें घृतका होम करके " अग्नये व्रतपतये स्वाहा, अग्नयेव्रतानुष्ठानफलसंपादनाय स्वाहा, विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा " इस प्रमाणसें घृतकी तीन आहुतियोंसें होम करके स्विष्टकृदादि कर्म समाप्त करना.

पुनर्देशकालौस्मृत्वामुकस्यौर्ध्वदेहिकाधिकारार्थमर्कविवाहंकरिष्येइत्यादिहिरण्येननांदीश्राद्धांतेर्कसमीपेनीत्वार्कशाखांवागृहीत्वार्कब्रह्मचारिणौहरिद्रयानुलिप्यपीतसूत्रेणसंवेष्ट्यवस्त्रयुग्मेनाच्छाद्याग्निप्रतिष्ठाद्याघारांतेआज्यहोमः अग्नयेस्वाहा १ बृहस्पतये० २ विवाहविधियोजकाय० ३ यस्मैत्वाकामकामायवयंसम्राड्यजामहे तमस्मभ्यंकामंदत्वाथेदंत्वंघृतंपिबस्वाहा कामायेदं० ततोव्यस्तसमस्तव्याहृतिहोमः एवमष्टाहुत्यंतेस्विष्टकृदादिकृत्वार्कशाखांब्रह्मचारिशवंचतुषाग्निनाविधिवद्दहेत् स्नातकमरणेप्येवमितिकेचित् एतन्निर्मूलमित्यन्ये सूतकांतेत्रिंशद्ब्रह्मचारिभ्यःकौपीनकृष्णाजिनकर्णभूषणादिपादुकाछत्रगोपीचंदनमाल्यमणिविद्रुममालायज्ञोपवीतादियथासंभवंदद्यात् ॥

फिर देशकालका स्मरण करके " अमुकस्य और्ध्वदेहिकाधिकारार्थं अर्कविवाहं करिष्ये " इत्यादि संकल्प करके सोनासें नांदीश्राद्धपर्यंत कर्म किये पीछे आकवृक्षके समीप जाके अथवा आककी डालीकों ग्रहण करके आक और ब्रह्मचारीकों हलदीसें लीपके पीले सूत्रसें वेष्टित करके दो वस्त्रोंसें आच्छादित करके अग्निस्थापन आदि आघारांत कर्म करनेके अनंतरं घृतका होम करना. सो ऐसा—" अग्नये स्वाहा १, बृहस्पतये स्वाहा २, विवाहविधियोजकाय० ३, यस्मै त्वा कामकामाय वयं सम्राड्यजामहे ॥ तमस्मभ्यं कामं दत्वाथेदं त्वं घृतं पिब स्वाहा कामायेदं० " पीछे व्यस्त और समस्त व्याहृतियोंसें होम करना. इस प्रकार आठ आहुति दिये पीछे स्विष्टकृत् आदि कर्म करके आककी डाली और ब्रह्मचारीके मुर्दाकों तुषाग्निसें यथाविधि दहन करना. स्नातकके मरनेमेंभी ऐसाही विधि करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. यह निर्मूल है ऐसा अन्य ग्रंथकार कहते हैं. सूतकके अंतमें ३० तीस ब्रह्मचारियोंकों कौपीन, कृष्ण मृगछाला, कानोंका गहना आदि, खडाऊं, छत्री, गोपीचंदन, फूलोंकी माला, मणि, मूंगोंकी माला, जनेऊ इन आदि संभवके अनुसार देने.

अथकुष्ठिमृतौ मृतस्यकुष्ठिनोदेहंतीर्थेवाभुविवाक्षिपेत् नदाहंनोदकंपिंडंनचदानंक्रियांचरेत् यदिस्नेहाचरेद्दाहंयतिचांद्रायणंचरेत् तथाचशक्त्यनुसारेणषडब्दादिप्रायश्चित्तंकृत्वाकुष्ठादिमहारोगमृतस्यदाहादिक्रियांकुर्यान्नान्यथेति ॥

अब कुष्टिके मरणमें निर्णय कहताहुं.

मृत हुए कुष्टीके देहकों तीर्थमें छोडना अथवा पृथिवीमें गाड देना. तिसके दाह, जल-

दान, पिंडदान और क्रिया ये नहीं करने. जो स्नेहसें दाह किया जावै तौ यतिचांद्रायण करना. ” तैसेही कुष्ट आदि महारोगसें मृत हुएका शक्तिके अनुसार षडब्द आदि प्रायश्चित्त करके दाह आदि क्रिया करनी, अन्यथा नहीं करनी.

अथरजस्वलादिमरणे रजस्वलायाःप्रेतायाःसंस्कारादीनिनाचरेत् ऊर्ध्वंत्रिरात्रात्स्नातांतां शवधर्मेणदाहयेत् अथवारजस्वलांसूतिकांचमलंप्रक्षाल्यस्नापयित्वाकाष्ठवदमंत्रकंदग्ध्वास्थीनिमंत्राग्निनादहेत् उभयत्रचांद्रायणत्रयंप्रायश्चित्तमस्त्येव तदैवमंत्रवदाहकारणेच्छायांतु अद्येत्याद्यमुकगोत्रायारजस्वलावस्थामरणनिमित्तप्रत्यवायपरिहारार्थमौर्ध्वदेहिकयोग्यत्वार्थं च चांद्रायणत्रयप्रायश्चित्तपूर्वकं शूर्पेणाष्टोत्तरशतस्नानानिकारयिष्येइतिसंकल्प्यचांद्रायणत्रयं प्रत्याम्नायेनकृत्वायवपिष्टेनप्रेतमनुलिप्यस्वयंस्नात्वाशूर्पोदकैरष्टोत्तरशतवारंस्नापयेत् ततोभस्म गोमयमृत्तिकाकुशोदकैःपंचगव्यैः शुद्धोदकैश्चसंस्नाप्ययदंतियच्चदूरकइत्यादिपावमानीभिरापोहिष्ठेतितृचेनकयानइत्यादिभिश्चसंस्नाप्यपूर्ववस्त्रंपरित्यज्यान्यवस्त्रेणसंवेष्ट्यदहेत् सूतिकायामप्येवं ॥

अब रजस्वला आदिके मरणमें निर्णय कहताहुं.

रजस्वला मरै तौ तिसके संस्कार आदि नहीं करने. तीन रात्रिके उपरंत तिसकों स्नान करायके शवधर्मकरके तिसका दाह करना. ” अथवा रजस्वला और सूतिका इन्होंके मलकों धोके तिन्होंकों स्नान करायके काष्ठकी तरह अमंत्रक दाह करके अस्थियोंका मंत्राग्निसें दाह करना. दोनोंमें तीन चांद्रायणप्रायश्चित्त कहा है. मरणसमयमेंही समंत्रक दाह करनेकी इच्छा होवै तौ “ अद्येत्यादि अमुकगोत्राया रजस्वलावस्थामरणनिमित्तप्रत्यवायपरिहारार्थमौर्ध्वदेहिकयोग्यत्वार्थंच चांद्रायणत्रयप्रायश्चित्तपूर्वकं शूर्पेणाष्टोत्तरशतस्नानानि कारयिष्ये, ” ऐसा संकल्प करके तीन चांद्रायण प्रत्याम्नायसें करके जवोंकी पीठीसें प्रेतकों लीपके आप स्नान करके शूर्पोदकसें १०८ वार स्नान कराना. पीछे भस्म, गोवर, मृत्तिका, कुशोदक, पंचगव्य और शुद्ध जल इन्होंकरके स्नान करायके “ यदंतियच्चदूरके० ” इत्यादिक पावमानी “ आपोहिष्ठा० ” ये तीन ऋचा और “ कयान० ” इत्यादिकोंसें स्नान करायके पहले वस्त्रका त्याग करके अन्य वस्त्रोंसें वेष्टित करके दाह करना. सूतिकाके विषयमेंभी ऐसाही विधि करना.

सूतिकायाआद्यत्र्यहमरणेत्र्यब्दंप्रायश्चित्तं द्वितीयत्र्यहेद्व्यब्दं तृतीयत्र्यहेएकाब्दं दशम दिनेतुकृच्छ्रत्रयमितिविशेषःक्वचिदुक्तःमासपर्यंतमपिकृच्छ्रत्रयमित्यन्ये मिताक्षरायांतुकुंभेजलमादायपंचगव्यंक्षिप्त्वापुण्यमंत्रैरापोहिष्ठावामदेव्यवारुणादिभिरभिमंत्र्यपूर्वोक्तमंत्रैःसंस्नाप्यविधिनासूतिकांदहेदितिविशेषउक्तः इतिरजस्वलासूतिकयोर्विधिः ॥

सूतिका पहले तीन दिनोंमें मरै तौ त्र्यब्दप्रायश्चित्त, दूसरे तीन दिनोंमें मरै तौ द्व्यब्द प्रायश्चित्त, तीसरे तीन दिनोंमें मरै तौ एकाब्दप्रायश्चित्त, दशमे दिनमें मरै तौ तीन कृच्छ्र प्रायश्चित्त ऐसा यह विशेष क्वचित् ग्रंथमें कहा है. महीनापर्यंत मरै तौ तीन कृच्छ्र करने ऐसा

दूसरे ग्रंथकार कहते हैं. मिताक्षरा ग्रंथमें तौ, कलशमें जल और पंचगव्य घालके "आपोहिष्ठा०, वामदेव्य०, वारुण०" इत्यादिक पुण्यमंत्रोंसें अभिमंत्रण करके पहले कहे मंत्रोंसें स्नान करायके विधिकरके सूतिकाका दाह करना ऐसा विशेष कहा है. इस प्रकारसें रजस्वला और सूतिकाका विधि कहा है.

अथगर्भिणीमरणे गर्भिण्यामृतायाः शुद्ध्यर्थंत्रयस्त्रिंशत्कृच्छ्राणिकृत्वागांभूमिंसुवर्णंचदत्वागर्भंपृथक्कृत्यतांदहेत् सगर्भदहनेतत्तद्वधप्रायश्चित्तं सगर्भायादाहेकर्तुरब्दत्रयंप्रायश्चित्तं॥

अब गर्भिणीके मरनेमें निर्णय कहताहुं.

गर्भिणी मर जावै तौ तिसकी शुद्धिके अर्थ तेतीस कृच्छ्र प्रायश्चित्त करके गौ, पृथिवी, और सोना इन्होंके दान देके गर्भकों पृथक् करके तिसका दाह करना. गर्भसहित दाह करनेमें तिस तिस वधका प्रायश्चित्त कहा है. गर्भवाली स्त्रीका दाह करनेमें कर्तानें तीन अब्द प्रायश्चित्त करना.

अथान्वारोहणंस्त्रीणामात्मनोभर्तुरेवच सर्वपापक्षयकरंनिरयोत्तारणायच अनेकस्वर्गफलदंमुक्तिदंचतथैवच जन्मांतरेचसौभाग्यंधनपुत्रादिवृद्धिदं तिस्रःकोट्योर्धकोटीचयावंत्यंगरुहाणिवै तावंत्यब्दसहस्राणिस्वर्गेलोकेमहीयते मातृकंपैतृकंचैवयत्रकन्याप्रदीयते कुलत्रयंपुनात्येषाभर्तारंयानुगच्छतीत्यादिमहिमविस्तरोमिताक्षरादौज्ञेयः अत्रनिष्कामत्वेमुक्तिःसकामत्वेस्वर्गादिफलानीतिव्यवस्था ॥

अब अन्वारोहण अर्थात् सती होना कहताहुं.—"स्त्रियोंका सती होना आपके और पतिके सब पापोंका नाश करनेहारा होके नरकसें उद्धारके अर्थ है; और अनेक स्वर्गफल देनेवाला है; मुक्ति देता है; दूसरे जन्ममें सौभाग्य, धन, पुत्र इन आदिकी वृद्धि करनेवाला होता है. जो स्त्री भर्ताकेसाथ अनुगमन करती है, सो माताका कुल, पिताका कुल और जिस कुलमें तिसका दान हुआ होवै वह कुल इन तीन कुलोंकों पवित्र करके साढे तीन किरोड (जितने शरीरके रोम हैं, तितने हजार) वर्षपर्यंत स्वर्गलोकमें रहती है" इत्यादिक महिमाका विस्तार मिताक्षरा आदि ग्रंथविषे देख लेना. इस अन्वारोहणमें कामनासें रहित होनेमें मुक्ति होती है और कामनासें सहित होनेमें स्वर्ग आदि फल मिलता है, ऐसी व्यवस्था जाननी.

अथप्रयोगः देशकालौस्मृत्वामातृपितृश्वशुरादिकुलपूतत्वब्रह्महत्यादिदोषदूषितपतिपूतत्वपत्यवियोगारुंधतीसमाचारत्वसार्धकोटित्रयसहस्रसंवत्सरस्वर्महीयमानत्वादिपुराणोक्तानेकफलप्राप्तयेश्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतिद्वाराविमुक्तिप्राप्तयेवापतिचितान्वारोहणंकरिष्ये इतिसंकल्प्यहरिद्राकुंकुमवस्त्रफलादियुतानिशूर्पाणिसुवासिनीभ्योदद्यात् तत्रमंत्रः लक्ष्मीनारायणोदेवोबलसत्त्वगुणाश्रयः गाढंसत्त्वंचमेदेयाद्वायनैःपरितोषितः सोपस्काराणिशूर्पाणिवायनैःसंयुतानिच लक्ष्मीनारायणप्रीत्यैसत्त्वकामाददाम्यहं अनेनसोपस्कारशूर्पदानेनलक्ष्मीनाराय

णौप्रीयेतां ततोंचलेपंचरत्नंनीलांजनंचबध्वामुखेमौक्तिकंन्यस्याग्निसमीपंगत्वाग्निप्रार्थनंकुर्यात् स्वाहासंश्लेषनिर्विण्णशर्वगोत्रहुताशन सत्त्वमार्गप्रदानेननयमांपत्युरंतिकमिति अथाग्नावाज्येनजुहुयात् अग्नयेतेजोधिपतयेस्वाहा १ विष्णवेसत्त्वाधिपतयेस्वाहा २ कालायधर्माधिपतये० ३ पृथिव्यैलोकाधिष्ठात्र्यै० ४ अद्भ्योरसाधिष्ठात्रीभ्यः० ५ वायवेबलाधिपतये० ६ आकाशायसर्वाधिपतये० ७ कालायधर्माधिष्ठात्रे० ८ अद्भ्यःसर्वसाक्षिणीभ्यः० ९ ब्रह्मणेवेदाधिपतये० १० रुद्रायस्मशानाधिपतयेस्वाहेत्येकादशाहुतीर्हुत्वाग्निंप्रदक्षिणीकृत्यदृषदमुपलांसंपूज्यपुष्पांजलिंगृहीत्वाग्निंप्रार्थयेत् त्वमग्नेसर्वभूतानामंतश्चरसिसाक्षिवत् त्वमेवदेवजानीषेनविदुर्यानिमानुषाः अनुगच्छामिभर्तारंवैधव्यभयपीडिता सत्त्वमार्गप्रदानेननयमांभर्तुरंतिकं मंत्रमुच्चार्यशनकैःप्रविशेच्चहुताशनं विप्रश्चइमानारीरविधवाइत्यृचं इमाःपतिव्रताःपुण्याःस्त्रियोयायाःसुशोभनाः सहभर्तृशरीरेणसंविशंतुविभावसुमितिचपठेत् कातरांतुप्रेतोत्तरतःसुप्तांदेवरःशिष्योवाउदीर्ष्वेतिमंत्राभ्यामुत्थापयेत् अनुव्रजतिभर्तारंस्मशानंयागृहान्मुदापदेपदेश्वमेधस्यफलंप्राप्नोतिसाध्रुवं यत्तु यास्त्रीब्राह्मणजातीयामृतंपतिमनुव्रजेत् सास्वर्गमात्मघातेननात्मानंनपतिंनयेदित्यादिब्राह्मण्यानिषेधवचनजातंतत्पृथक्चितिपरं भर्तुर्मंत्राग्निदाहोत्तरमनुगमनंपृथक्चितिः मंत्राग्निदाहात्पूर्वमास्थिभिःपर्णशरेणवासहगमनमेकचितिरेव अस्थ्यादेःपतिस्थानापत्त्यापतिशरीरतुल्यत्वात् इयमेकचितिःसर्ववर्णानां पृथक्चितिस्तुक्षत्रियवैश्यशूद्रादेरेवनतुब्राह्मणीनां पृथक्चितिविधिस्तु देशांतरमृतेपत्यौसाध्वीतत्पादुकाद्वयं निधायोरसिसंशुद्धाप्रविशेज्जातवेदसमिति ॥

अब प्रयोग कहताहुं.

देशकालका स्मरण करके "मातृपितृश्वशुरादिकुलपूतत्वब्रह्महत्यादिदोषदूषितपतिपूतत्वपत्यवियोगारुंधतीसमाचारत्वसार्धकोटित्रयसहस्रसंवत्सरस्वर्महीयमानत्वादि पुराणोक्तानेकफलप्राप्तये श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतिद्वारा विमुक्तिप्राप्तये वा पतिचितान्वारोहणं करिष्ये," ऐसा संकल्प करके हलदी, कुंकुम, वस्त्र, फल इन आदिकोंसें युक्त हुये शूर्पोंको सुहागन स्त्रियोंके अर्थ देना. दानका मंत्र—"लक्ष्मीनारायणो देवो बलसत्त्वगुणाश्रयः ॥ गाढं सत्वं च मे देयाद्वायनैः परितोषितः ॥ सोपस्कराणि शूर्पाणि वायनैः संयुतानि च ॥ लक्ष्मीनारायणप्रीत्यै सत्वकामा ददाम्यहम् ॥ अनेन सोपस्करशूर्पदानेन लक्ष्मीनारायणौ प्रीयेताम्." तदनंतर वस्त्रमें पंचरत्न, नीलांजन इन्होंकों बांधके मुखमें मोती घालके अग्निके समीप जाके अग्निकी प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—"स्वाहासंश्लेषनिर्विण्ण शर्वगोत्रहुताशन ॥ सत्त्वमार्गप्रदानेन नय मां पत्युरंतिकम्." पीछे अग्निमें घृतका होम करना. होमके मंत्र—"अग्नये तेजोधिपतये स्वाहा १, विष्णवे सत्त्वाधिपतये स्वाहा २, कालाय धर्माधिपतये० ३, पृथिव्यै लोकाधिष्ठात्र्यै० ४, अद्भ्यो रसाधिष्ठात्रीभ्यः० ५, वायवे बलाधिपतये० ६, आकाशाय सर्वाधिपतये० ७, कालाय धर्माधिष्ठात्रे० ८, अद्भ्यः सर्वसाक्षिणीभ्यः० ९, ब्रह्मणे वेदाधिपतये० १०, रुद्राय स्मशानाधिपतये स्वाहा ११" ऐसे ग्यारह आहुतियोंसें होम करके अग्निकी परिक्रमा करके दृषद और उपल इन्होंकी पूजा करके हाथमें पुष्पांजलि लेके अग्निकी प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—

"त्वमग्ने सर्वभूतानामंतश्चरसि साक्षिवत् ॥ त्वमेव देव जानीषे न विदुर्यानि मानुषाः ॥ अनुगच्छामि भर्तारं वैधव्यभयपीडिता ॥ सत्त्वमार्गप्रदानेन नय मां भर्तुरंतिकम्" इस प्रकारसें मंत्र हौले हौले कहके अग्निमें प्रवेश करना. पीछे ब्राह्मणोंनें "इमा नारीरविधवा०" यह ऋचा और "इमाः पतिव्रताः पुण्याः स्त्रियो या याः सुशोभनाः ॥ सह भर्तृशरीरेण संविशंतु विभावसुम्" इस मंत्रका पाठ करना. कायर होवै तौ प्रेतके उत्तरके तर्फ सोती हुईकों देवरनें अथवा शिष्यनें "उदीर्ष्वा०" इन दो मंत्रोंसें उठानी. "जो स्त्री घरसें पतिके साथ आनंदसें दग्ध होनेकों श्मशानविषे जाती है तिसकों पैरपैरमें अश्वमेधयज्ञका फल निश्चयसें प्राप्त होता है." "ब्राह्मणजातिकी स्त्री मृत हुए ऐसे पतिके साथ सती होती है वह स्त्री आत्मघात करके आपकों और पतिकों स्वर्गमें नहीं प्राप्त करती है" इस आदिक ब्राह्मणीकों निषेध करनेवाले जो वचन सो पृथक्चितिविषयक हैं. पतिका मंत्राग्निसें दाह हुए पीछे जो सती होना सो पृथक्चिति कहाता है. मंत्राग्निसें दाह होनेके पहले अस्थियोंकरके अथवा पर्णशरकरके जो सती होना सो एकचितिही कहाता है. क्योंकी, अस्थि आदि पतिके स्थानमें होनेसें तिनकों पतिके शरीरकी तुल्यता प्राप्त होती है. यह एकचिति सब वर्णोंकों उक्त है. पृथक्चिति तौ क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदिकोंही युक्त है; ब्राह्मणोंकी स्त्रियोंकों उक्त नहीं है. पृथक्चितिका विधि तौ "देशांतरविषे पति मर गया होवै तौ साध्वी स्त्रीनें पतिकी दोनों खडाउओंकों छातीपर स्थापित करके अच्छी तरह शुद्ध होके अग्निमें प्रवेश करना."

पतितेनप्रायश्चित्तार्थंमृतेनवाभर्त्रासहान्वारोहणंनभवति यत्तुब्रह्मघ्नोवाकृतघ्नोवामित्रघ्नोवा भवेत्पतिः पुनात्यविधवानारीइत्यादिवाक्यंतज्जन्मांतरीयब्रह्महत्यादिपापशोधनपरं दिनैकगम्यदेशस्थासाध्वीचेत्कृतनिश्चयानदहेत्स्वामिनंतस्यायावदागमनंभवेत् तृतीयेह्निउदक्यायामृते भर्तरिवैद्विजाः तस्याःसहगमार्थंतंस्थापयेदेकरात्रकं रजस्वलायाःप्रथमद्वितीयदिनेपतिमृतौ लौकिकाग्निभिरमंत्रकंतंदग्ध्वापंचमेह्नि अस्थिभिःसहान्वारोहणं यदिरजस्वलादेशकालवशादिनातदैवानुगंतुमिच्छतिनशुद्धिंप्रतीक्षतेतदासैकद्रोणमितव्रीहीन्मुसलैरवहत्यतदाघातैःसर्वरजोनिवृत्तौपंचमृत्तिकाभिःशौचंकृत्वा दिनक्रमेणत्रिंशद्विंशतिर्दशवाधेनूर्दत्वाविप्रवचनाच्छुद्धिं लब्ध्वासहगमनंकुर्यात् अत्रावहननेनरजोनिवृत्तिरतींद्रियेतीदंयुगांतरपरंयोज्यमितिभाति जननमृताशौचयोस्तुसहगमनंनेतिकेचित् कालतत्त्वविवेचनेतुपूर्वप्रवृत्ताशौचमध्येभर्तृमरणेआशौचवतीनामपिभार्याणांसहगमनंभवति सूतिकोदक्ययोस्तुनेत्युक्तं इदमेव युक्तंभाति इदंच सहगमनंगर्भिणीबालापत्यासूतिकाभिरदृष्टरजोभिःपतिताभिर्व्यभिचारिणीभिर्भर्तृदुष्टभावाभिश्चनकार्यं केचिदत्रपतिव्रतानामेवाधिकारः वर्ततेयाश्चसततंभर्तृणांप्रतिकूलतः कामात्क्रोधाद्भयान्मोहात्सर्वाःपूताभवंतिताइत्यादितुवाक्यमर्थवादइत्याहुः तत्रपृथक्चित्यारोहणेभर्त्राशौचमध्येतदूर्ध्वंवाकृतेत्रिरात्रमाशौचंपिंडाश्च सहगमनेतु तस्याःपिंडादिकंशौचंपतिपिंडादितः क्रमात् अन्वारोहेतुनारीणांपत्युश्चैकोदकक्रिया पिंडदानक्रियातद्वच्छ्राद्धंप्रत्याब्दिकंतथा अन्वारोहेकृतेपत्न्याःपृथक्पिंडांस्तिलांजलीन् पृथक्शिलेनकुर्वीतदद्यादेकशिलेतथा तत्रावयव पिंडार्थपाकैक्यंभिन्नपिंडता नवश्राद्धानिभिन्नानिसपिंडीकरणंपृथक् एकएववृषोत्सर्गोगौरेकातत्रदीयते सपिंडीकरणंतुनकार्यं अथवाभर्त्रैवसहकार्यंयद्वाभर्त्रादिभिस्त्रिभिःसहकार्यमि

मित्यादिपक्षाउक्ताः मासिकसांवत्सरिकादौपाकैक्यकालैक्यादिव्यवस्थापिश्राद्धप्रकरणेउक्ता इतिसहगमनेनिर्णयः ॥

पतित अथवा प्रायश्चित्तके अर्थ मृत हुए ऐसे पतिके साथ स्त्रीका अन्वारोहण नहीं होवै है. “ब्रह्महत्या करनेवाला, कृतघ्न, अथवा मित्रकों मारनेवाला ऐसाभी पति होवै तौभी तिसकों सुहागन स्त्री पवित्र करती है.” इस आदि वाक्य दूसरे जन्मके जो ब्रह्महत्यादि पाप तिन्होंके शुद्धिविषयक हैं. “एक दिनमें पहुंचनेके योग्य देशमें रहनेवाली साध्वी स्त्री सती होनेके निश्चयवाली होवै तौ जबतक तिसका आगमन नहीं होवै तबतक तिसके पतिका दाह नहीं करना. रजस्वला स्त्रीका पति तीसरे दिनमें मृत होवै तौ हे द्विज तिस स्त्रीके सती होनेके निमित्त तिस प्रेतकों एक रात्रि रखना.” पहले और दूसरे दिनमें पति मृत हो जावै तौ लौकिक अग्निसें तिस पतिका अमंत्रक दाह करके पीछे पांचमे दिनविषे अस्थियोंके साथ स्त्रीनें सती होना. जो कदाचित् रजस्वला स्त्री देश और कालके वश आदिकरके उसी समयमें सती होनेकी इच्छा करै और शुद्धिकी प्रतीक्षा नहीं करै तब वह स्त्रीनें द्रोणपरिमित व्रीहि अन्नकों मूशलसें कूटके तिनकी चोटोंकरके संपूर्ण रजकों दूर करके पांच मृत्तिकाओंसें शौच करके दिनोंके क्रमसें अर्थात् पहले दिनमें तीस, दूसरे दिनमें वीस, तीसरे दिनमें दश गोप्रदान करके ब्राह्मणोंके वचनसें शुद्धि ग्रहण करके सहगमन करना. इस स्थलमें व्रीही अन्नकों कूटनेसें जो रजका दूर करना कहा है वह इंद्रियोंकों अगोचर है इस लिये यह निर्णय अन्य युगोंविषे योजित करना ऐसा लगता है. जन्मका आशौच और मरणका आशौच होवै तौ सती होना ठीक नहीं है ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. **कालतत्त्वविवेचन** ग्रंथमें तौ, पहले प्रवृत्त हुए आशौचमें पतिका मरण होवै तौ आशौचवाली स्त्रीनेंभी सती होना उचित है. सूतिका अथवा रजस्वला स्त्रीनें सती होना नहीं चाहिये ऐसा कहा है, और ऐसाही योग्य है. यह सती होना गर्भिणी, बालक संतानवाली, सूतिका, जिसकों ऋतुकाल नहीं आने लगा होवै ऐसी, पतित हुई, व्यभिचारिणी, पतिमें दुष्टभाव करनेवाली ऐसी स्त्रियोंनें नहीं करना. कितनेक ग्रंथकार सती होनेमें पतिव्रता स्त्रियोंकोंही अधिकार है, “जो स्त्री काम, क्रोध, भय अथवा मोहसें पतीके साथ निरंतर प्रतिकूलवृत्तिसें चलती होवैं वे सब स्त्रियें सती होनेके समयमें पवित्र हो जाती हैं,” इत्यादि वाक्य अर्थवाद है ऐसा कहते हैं. तहां पृथक्चित्यारोहण पतिके आशौचमें अथवा आशौचके उपरंत करनेमें तीन रात्रि आशौच और पिंड. सहगमन होवै तौ “तिस स्त्रीका आशौच और पिंड आदि क्रिया पतिके पिंड आदिके क्रमसें जाननी.” अन्वारोहण होवै तौ स्त्रीकी और पतिकी एक जलक्रिया, पिंडदानक्रिया और प्रतिसांवत्सरिकश्राद्ध ये एकही करने. अन्वारोहण करनेमें स्त्रीकों पृथक् पिंड नहीं देने, और पत्थरके ऊपर पृथक् तिलांजली देनी नहीं; किंतु एक पत्थरपर देनी. तहां अवयवपिंडोंके अर्थ पाक करनेका सो दोनोंका एक करके पिंड पृथक् पृथक् करने. नवश्राद्ध पृथक् करने, और सपिंडीकरणभी पृथक् पृथक् करना. तिस सहगमनमें वृषोत्सर्ग एकही करना. स्त्रीके वृषोत्सर्गमें एक गौ देनी. सपिंडीकरण तौ नहीं करना अथवा पतिके साथ करना. अथवा पति आदि तीनोंके साथ करना इन आदि पक्ष

पहले कहे हैं. मासिक और सांवत्सरिक आदि श्राद्धोंविषे एक पाक और एक कालकी व्यवस्थाभी श्राद्धप्रकरणमें कही है. ऐसा सहगमन अर्थात् सती होनेका निर्णय कहा.

काशीनाथउपाध्यायइत्थमंत्यक्रियाविधिं निर्णीयभगवत्पादेचार्पयत्तद्विशुद्धये इत्यंत्येष्टिनिर्णयः ॥

इस प्रकारसें काशीनाथ उपाध्यायनें अंत्यक्रियाविधिका निर्णय करके वह निर्णय शुद्धि होनेके अर्थ भगवान्के चरणोंसें अर्पण किया है. ऐसा अंत्येष्टिका निर्णय समाप्त हुआ.

अथविधवाधर्माः पत्यौमृतेतुभार्याणांविधाद्वयमुदीरितं वैधव्यंपालयेत्सम्यक्सहाग्निगमनंतुवा पत्यौमृतेचयायोषिद्वैधव्यंपालयेत्सदा सापुनःप्राप्यभर्तारंस्वर्गलोकंसमश्नुते विधवापालयेच्छीलंशीलभंगात्पतत्यधः तद्वैगुण्यादपिस्वर्गात्पतिःपततिसर्वथा तस्याःपिताचमाताचभ्रातृवर्गस्तथैवच विधवाकबरीबंधोभर्तृबंधायजायते शिरसोवपनंतस्मात्कार्यंविधवयासदा एकवारंसदाभुक्तिरुपवासव्रतानिच पर्यंकशयनानारीविधवापातयेत्पतिं नैवांगोद्वर्तनंकार्यंगंधद्रव्यस्यसेवनं नाधिरोहेदनड्वाहंप्राणैःकंठगतैरपि कंचुकंनपरिदध्याद्वासोनविकृतंवसेत् वैशाखेकार्तिकेमाघेविशेषनियमंचरेत् तांबूलाभ्यंजनेचैवकांस्यपात्रेचभोजनं यतिश्चविधवाचैववर्जयेच्चंदनादिकं अपुत्राविधवाभर्त्रादित्रयमुद्दिश्यप्रत्यहंतिलकुशोदकैस्तर्पणंकुर्यात् श्राद्धादौ तुप्रागुक्तं ॥

अब विधवाके धर्म कहताहुं.

"पतिके मरनेमें स्त्रियोंकों दो प्रकार कहे हैं. सो ऐसे—विधवापनाकी अच्छी तरहसें पालना करनी, अथवा पतिके साथ सती हो जाना. पतिके मरनेमें जो स्त्री सब कालमें विधवाके धर्मोंकों पालती है वह स्त्री फिर पतिकों प्राप्त होके स्वर्गलोकमें प्राप्त होती है. विधवा स्त्रीनें शीलकी पालना करनी. शीलके भंगसें विधवा स्त्री नरकमें प्राप्त होती है. विधवा स्त्रीके दोषसें सब प्रकारकरके पति नरकमें पडता है, और तिस विधवाका पिता, माता और भाई आदि विधवाके दोषसें नरकमें प्राप्त होते हैं. विधवा स्त्रीके बालोंका बांधना पतिकों बंधन करता है इसलिये विधवा स्त्रीनें सब कालमें शिरका मुंडन कराना योग्य है. विधवा स्त्रीनें सब कालमें एकवार भोजन करना, उपवास और व्रत आचरण करने. पलंगपर शयन करनेवाली विधवा स्त्री अपने पतिकों नरकमें प्राप्त करती है. विधवा स्त्रीनें अंगोंकों उवटना आदि नहीं मलना और सुगंधित द्रव्यका सेवन नहीं करना. प्राण कंठमेंभी प्राप्त हो जावैं, परंतु विधवानें बैलपर नहीं बैठना. घाघरी और दामन आदि नहीं पहनना. चित्रविचित्र रंगका वस्त्र नहीं धारण करना. वैशाख, कार्तिक और माघ इन महीनोंमें विशेष नियम आचरण करने. नागरपान, तेलफुलेलका लगाना, कांसीके पात्रमें भोजन करना और चंदन आदिका लगाना इन्होंकों संन्यासी और विधवा स्त्रीनें वर्जित करना." पुत्रोंसें रहित हुई विधवा स्त्रीनें पति आदि तीनोंके उद्देशसें नित्यप्रति तिल, कुश और जल इन्होंसें तर्पण करना. श्राद्ध आदिविषे निर्णय पहले कह दिया है.

अथसंन्यासः तत्रब्रह्मचर्यंकृत्वासमावर्तनांतेकृतदारःपुत्रानुत्पाद्ययज्ञैरिष्ट्वावानप्रस्थाश्रमंचकृत्वासंन्यसेदित्याश्रमसमुच्चयपक्षः ब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेत्गृहाद्वावनाद्वाअथपुनरव्रतीवाव्रतीवास्नातकोवाऽस्नातकोवोत्सन्नाग्निरनग्निकोवा यदहरेवविरजेत्तदहरेवप्रव्रजेदित्याश्रमविकल्पपक्षः प्रव्रजेद्ब्रह्मचर्याद्वाप्रव्रजेच्चगृहादपि वनाद्वाप्रव्रजेद्विद्वानातुरोवाथदुःखितइतिवाक्ये आतुरोमुमूर्षुः दुःखितश्चोरव्याघ्रादिभीतइत्यर्थः आतुराणांचसंन्यासेनविधिर्नैवचक्रिया प्रेषमात्रंसमुचार्यसंन्यासंतत्रकारयेत् संन्यासेदंडग्रहणादिरूपेविविदिषाख्येविप्रस्यैवाधिकारःविद्वत्संन्यासेतुक्षत्रियवैश्ययोरपि कलियुगेसंन्यासनिषेधस्त्रिदंडिसंन्यासपरइतिप्राञ्चः ॥

अब संन्यास कहताहुं.

तिसविषे ब्रह्मचर्य करके समावर्तन हुए पीछे स्त्रीकरके पुत्रोंकों उत्पन्न करके और यज्ञोंसें यजन करके और वानप्रस्थ आश्रमका स्वीकार करके संन्यास ग्रहण करना. इस प्रकार आश्रमोंका समुच्चयपक्ष है. ब्रह्मचर्यसेंही संन्यास लेना अथवा गृहस्थाश्रमसें संन्यास लेना किंवा वानप्रस्थ आश्रमसें संन्यास लेना. इसके अनंतर पुनः अव्रती अथवा व्रती, स्नातक अथवा अस्नातक; विच्छिन्नाग्नि अथवा अनग्निक ऐसा होनेमें जिस दिनमें निश्चयसें विरक्तपना उत्पन्न होवै तिसी दिनमें संन्यास ग्रहण करना, इस प्रकारसें आश्रमका विकल्पपक्ष कहा है. “विद्वान् होके ब्रह्मचर्यसें संन्यास लेना अथवा गृहस्थाश्रमसें संन्यास लेना अथवा वानप्रस्थाश्रमसें संन्यास लेना अथवा आतुर अथवा दुःखित होनेमें संन्यास आश्रमका अंगीकार करना.” इस वाक्यमें आतुर अर्थात् मरनेकी इच्छावाला और दुःखित पदकरके चोर, व्याघ्र आदिसें भीत हुआ ऐसा अर्थ समझ लेना. “आतुरोंके संन्यासमें विधि नहीं है और कर्मकांडभी नहीं है, किंतु इस विषयमें प्रेष मात्र उच्चारण करके संन्यास लेना.” दंडग्रहण आदिरूप और विविदिषाख्य संन्यासविषे ब्राह्मणकोंही अधिकार कहा है. विद्वत्संन्यासविषे तौ, क्षत्रिय और वैश्यकोंभी अधिकार कहा है. कलियुगमें जो संन्यासका निषेध कहा है वह त्रिदंडिसंन्यासविषयक है, ऐसा प्राचीन ग्रंथकार कहते हैं.

सचसंन्यासश्चतुर्धा कुटीचकोबहूदकोहंसःपरमहंसश्चेति अत्रोत्तरोत्तरःश्रेष्ठः बहिःकुट्यांगृहेवावसन्काषायवासास्त्रिदंडी शिखायज्ञोपवीतवान्बंधुषुगृहेवाभुंजानआत्मनिष्ठोभवेत्सकुटीचकःपुत्रादीन्हित्वासप्तागाराणिभैक्षंचरन्पूर्वोक्तकाषायवस्त्रादिवेषवान्बहूदकः हंसस्तुपूर्वोक्तवेषोप्येकदंडः परमहंसस्तुशिखायज्ञोपवीतहीनएकदंडीस्यात् काषायवस्त्रं चतुर्णामपि हंसपरमहंसयोःशिखायज्ञोपवीतसत्त्वासत्त्वाभ्यांभेदः एकदंडस्तुद्वयोरपि परमहंसस्यदंडधारणंविविदिषादशायांनित्यं विद्वत्तादशायांतुकृताकृतं नदंडंनशिखांनाच्छादनंचरातिपरमहंसइतिश्रवणात् वैराग्यंविनाजीवनाद्यर्थंसंन्यासेतुनरकाः एकदंडंसमाश्रित्यजीवंतिबहवोनराः नरकेरौरवेघोरेकर्मत्यागात्पतंतिते काष्ठदंडोधृतोयेनसर्वाशीज्ञानवर्जितः सयातिनरकान्घोरानित्यादिस्मरणात् ॥

वह संन्यास चार प्रकारका है—कुटीचक, बहूदक, हंस और परमहंस ऐसा जानना. इन चारोंविषे उत्तरोत्तर अर्थात् कुटीचकसें बहूदक ऐसे श्रेष्ठ हैं. बाहिर पर्णकुटीमें अथवा

घरमें रहके भगवा वस्त्र धारण करनेवाला त्रिदंडी, शिखा और यज्ञोपवीतसें युक्त होके बांधवोंके गृहमें अथवा घरमें भोजन करनेवाला होके आत्मनिष्ठ होवै वह कुटीचक होता है. पुत्र आदिका त्याग करके और सात घरोंमें भिक्षाचरण और पूर्व कहे भगवां वस्त्र आदि वेषकों धारण करनेवाला बहूदक होता है. हंस तौ पूर्वोक्त वेष धारण करनेवाला होकेभी एकदंडी होता है. परमहंस तौ शिखा और यज्ञोपवीतसें हीन एकदंडी होता है. चारों संन्यासोंविषे भगवां वस्त्र कहे हैं. हंस और परमहंसमें शिखा और यज्ञोपवीतका होना अथवा नहीं होना इतना भेद है. अर्थात् शिखा और यज्ञोपवीतवाला हंस होता है, शिखा और यज्ञोपवीतसें रहित परमहंस होता है, एक दंड तौ हंस और परमहंस इन दोनोंकों कहा है. परमहंसकों दंडका धारण करना विविदिषा दशामें नित्य है. विद्वत्तादशामें दंडकों धारण करना अथवा नहीं करना. क्योंकी, दंड, शिखा, आच्छादन (वस्त्र) ये परमहंस धारण नहीं करते हैं ऐसा सुना है. वैराग्यके विना उपजीविकाके अर्थ संन्यास ग्रहण करनेमें नरक प्राप्त होता है; क्योंकी, एक दंडका आश्रय करके जो बहुत मनुष्य उपजीविका करते हैं वे कर्मके त्यागसें घोर नरकमें गिरते हैं, और ज्ञानशून्य होके जो दंडका धारण करता है और जो भक्ष्य और अभक्ष्यका विचार नहीं करता है वह मनुष्य घोर नरकोंमें प्राप्त होता है इत्यादिक स्मृति कही है.

अथसंन्यासग्रहणविधिः तत्रोत्तरायणंप्रशस्तं आतुरस्यतुदक्षिणायनमपि तत्रादौगृह्याग्निमंतंतादृशविधुरंप्रतिचप्रयोगः तत्रशांत्यादिलक्षणंगुरुंसंशोध्यतन्निकटेत्रिमासंयतिधर्मान् संवीक्ष्यगायत्रीजपरुद्रजपकूष्मांडहोमादिभिःशुद्धिंलब्ध्वारिक्तातिथौदेशकालौस्मृत्वामुकस्य ममकरिष्यमाणसंन्यासेधिकारार्थंचतुःकृच्छ्रात्मकं प्रायश्चित्तंप्रतिकृच्छ्रंतत्प्रत्याम्नायैकैकगोनिष्क्रयद्वाराहमाचरिष्ये कृच्छ्रप्रत्याम्नायगोनिष्क्रयंद्रव्यंविप्रेभ्योदातुमुत्सृजे इतिसंकल्पपूर्वकंरजतनिष्कतदर्धतदर्धान्यतमंप्रतिधेनुंतद्यात् एकादश्यांद्वादश्यांवायथाब्रह्मरात्रिःस्यात्तथा श्राद्धान्यारभेत् अत्रानाश्रमिणश्चतुःकृच्छ्रमन्यस्यतप्तकृच्छ्रमितिसिंधुः स्वस्यनवश्राद्धस्यषोडशश्राद्धसपिंडीकरणानिसाग्निःपार्वणविधिनानिरग्निरेकोद्दिष्टविधिनाकुर्यादितिकेचित् नेस्यन्ये ॥

अब संन्यासग्रहणका विधि कहताहुं.

संन्यास लेनेविषे उत्तरायण श्रेष्ठ है. आतुरकों तौ दक्षिणायनभी श्रेष्ठ है. तहां आदिमें गृह्याग्निवाला और गृह्याग्निसें विधुर इन्होंका प्रयोग कहताहुं. तहां शांति आदि लक्षणोंसें युक्त उत्तम गुरु देखके तिसके समीपमें तीन महीनेपर्यंत संन्यासीके सब धर्म अच्छी तरह देखके गायत्रीजप, रुद्रजप, और कूष्मांडहोम इन आदिसें देहकी शुद्धि करके रिक्ता तिथिविषे देशकालका स्मरण करके "अमुकस्य मम करिष्यमाणसंन्यासेधिकारार्थं चतुःकृच्छ्रात्मकप्रायश्चित्तं प्रतिकृच्छ्रं तत्प्रत्याम्नायैकैकगोनिष्क्रयद्वाराहमाचरिष्ये ॥ कृच्छ्रप्रत्याम्नायगोनिष्क्रयं द्रव्यं विप्रेभ्यो दातुमुत्सृजे" इस प्रकारसें संकल्पपूर्वक चांदीका निष्क, आधा निष्क, अथवा चौथाई निष्क इन्होंमांहसें कोईसे एक प्रमाणका प्रत्येक गोनिष्क्रय

देना. एकादशीके दिनमें अथवा द्वादशीके दिनमें जैसी ब्रह्मरात्रि प्राप्त होवै तैसे श्राद्ध, करना. इस स्थलमें अनाश्रमी होवै तौ चार कृच्छ्र और अन्य होवै तो, तप्तकृच्छ्र करना ऐसा निर्णयसिंधुका मत है. अपने नवश्राद्धविषे षोडशीश्राद्ध और सपिंडीकरण प्राप्त होवैं तौ साग्निकनें पार्वणविधिकरके और निरग्निकनें एकोद्दिष्टविधिकरके करने ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. दूसरे ग्रंथकार नहीं करने ऐसा कहते हैं.

अथाष्टौश्राद्धानि तत्रापस्तंबहिरण्यकेशीयादीनामग्नौकरणपिंडादिरहितः सांकल्पिकप्रयोगः आश्वलायनादीनांसपिंडकःपार्वणप्रयोगः तत्रादौसव्येनसयवजलेनश्राद्धांगतर्पणं ब्रह्माणंतर्पयामि विष्णुं त० महेश्वरंत० देवर्षीन्० ब्रह्मर्षीन्० क्षत्रर्षीन्० वसून्० रुद्रान्० आदित्यान्० सनकं० सनंदनं० सनातनं० पंचमहाभूतानि० चक्षुरादिकरणानि० भूतग्रामं० पितरं० पितामहं० प्रपितामहं० मातरं० पितामहीं० प्रपितामहीं० आत्मानं० पितरं० पितामहं० इतिनद्यादौकृत्वागृहमागत्यदेशकालौस्मृत्वाकरिष्यमाणसंन्यासांगत्वेनाष्टौश्राद्धानिपार्वणविधिनान्नेनामेनवाकरिष्येइतिसंकल्प्यक्षणंदद्यात् अत्रसर्वंनांदीश्राद्धवत् तेननापसव्यं तिलस्थानेयवाःयुग्माविप्राः तथाचदेवस्थानेविप्रौद्वौश्राद्धाष्टकेषोडशेत्यष्टादशविप्राः तत्रसत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवानांदीमुखाःस्थानेक्षणःकर्तव्यः इत्येकंवृत्वाद्वितीयंवृणुयात् एवमग्रेपि प्रथमेदेवश्राद्धेब्रह्मविष्णुमहेश्वरानांदीमुखाःस्थानेक्षणः० १ द्वितीयेऋषिश्राद्धेदेवर्षिब्रह्मर्षिक्षत्रर्षयःनांदी० २ दिव्यश्राद्धेवसुरुद्रादित्या नांदी० ३ मनुष्यश्राद्धेसनकसनंदनसनातना नांदी० ४ पंचमेभूतश्राद्धेपृथिव्यादिपंचमहाभूतान्येकादशचक्षुरादिकरणादिचतुर्विधभूतग्रामानां० ५ षष्ठेपितृश्राद्धेपितृपितामहप्रपितामहा नांदी० ६ मातृश्राद्धेमातृपितामहीप्रपितामह्यो नां० ७ अष्टमेआत्मश्राद्धेआत्मपितृपितामहानांदी० ८ आत्मांतरात्मापरमात्मेतिकेचित् इतिद्वौद्वौविप्रौवृणुयात् सर्वत्रनांदीमुखत्वंविशेषणं युग्माविप्राः सत्यवसूदक्षक्रतूवादेवौततः सर्वेषांपाद्यंदत्वाप्राङ्मुखानुदक्संस्थानुपवेश्यप्रार्थयेत् संन्यासार्थमहंश्राद्धंकुर्वेब्रूताद्विजोत्तमाः अनुज्ञांप्राप्ययुष्माकांसिद्धिंप्राप्स्यामिशाश्वतीं कुरुइतिप्रत्युक्तःसयवऋजुदूर्वादियुग्मेनाब्दानपूर्वकंसंबुद्ध्यंतेइदमासनमित्यष्टादशस्वासनंदद्यात् ततआश्वलायनानामर्घ्यपात्रासादनंआपस्तंबादीनांसांकल्पिकत्वान्नार्घ्यं देवार्थमेकंपार्वणाष्टकार्थमष्टावित्येवंनवपत्राणि सर्वत्रपवित्रद्वयांतर्हितेषुशन्नोदेवीरित्यपआसिच्याविश्वदेवपात्रेयवोसीतियवाः अष्टपात्रेषुतिलोसीतिमंत्रस्योहेनयवानोप्यगंधादिपूजनं ऊहस्तु यवोसिसोमदेवत्योगोसवेदेवनिर्मितः प्रत्नवद्भिःप्रत्तःपुष्ट्या नांदीमुखान्देवान्प्रीणयाहिनःस्वाहानमः इतिप्रथमपात्रे द्वितीयेनांदीमुखानृषीन्० तृतीये नांदीमुखान्दिव्यान्प्री० चतुर्थेनांदीमुखान्मनुष्यान्प्रीण० पंचमेनांदीमुखानिभूतानिप्री० षष्ठसप्तमाष्टमेषुनांदी० पितॄन्प्रीणयेत्यादि० एकैकंपात्रंद्विधाविभज्यसर्वत्रयादिव्याइतिमंत्रांते विश्वेदेवानांदीमुखाइदंवोर्घ्यमितिदत्वाब्रह्मविष्णुमहेश्वरानांदीमुखाइदंवोर्घ्यंस्वाहानमइत्यादिनायथायथंषोडशविप्रहस्तेषुदद्यात् यादिव्याइतिस्रवदनुमंत्रणं पात्रंन्युब्जीकृत्यगंधाद्याच्छादनांतपूजां तत्रसर्वत्रसंबुद्ध्यंतोनांदीमुखविशेषणयुक्तउच्चारः भोजनपात्राण्यासाद्यब्रह्मादिषोडशविप्रकरेष्वग्नयेकव्यवाहनायस्वाहासोमायपितृमतेस्वाहेतिमंत्राभ्यामाहुतिद्वयंदद्यात् नेद

मापस्तंबादीनां उपस्तीर्यान्नंपरिविष्यान्नाभावेआमंतान्निष्क्रयंवाप्रोक्ष्यपृथ्वीतेपात्रमित्यादिनायथादैवतमन्नस्यामादेर्वात्यागः येदेवास० प्रजापतेन० ब्रह्मार्पणंब्रह्म० अनेनाष्टश्राद्धेनांदीमुखादेवादयःप्रीयंतां आपोशनदानांतेबलिदानवर्ज्यंभुंजीयुः तृप्तेषूपास्मै० अक्षन्नमी० संपन्नमितिपृष्टेरुचिरमितिसर्वेब्रूयुः नेदमामान्नेआचांतेषुयवलाजदधिबदरियुतान्नेनाष्टचत्वारिंशत्पिंडान्कृत्वाप्रागायताउदक्संस्थाअष्टौरेखाः कृत्वाभ्युक्ष्यकुशान्दूर्वावास्तीर्यपिंडस्थानेषुचतुर्विंशतौजलंसिंचेत् तद्यथा शुंधंतांब्रह्मणोनांदीमुखाः शुंधंतांविष्णवोनांदी० शुंधंतांमहेश्वरानां० इतिप्रथमरेखायां तदुत्तररेखासुशुंधंतांदेवर्षयोनां०शुंधंतांब्रह्मर्षयोनां०इत्याद्यूहोज्ञेयः ततोब्रह्मणेनांदीमुखायस्वाहेत्येकंपिंडंदत्वा द्वितीयएवमेवदेयस्तूष्णींवेतिप्रतिदैवतंपिंडद्वयंएवमग्रेपि विष्णवेनांदीमुखायस्वाहेत्यादयःस्वाहांताःपिंडदानमंत्राऊह्याःअत्रपितरोमादयध्वमित्यादि पुनःशुंधंतांतत्रमंजनमभ्यंजनंचकृताकृतं पिंडान्गंधादिनासंपूज्यनत्वोपसंपन्नमितिविसृज्यविप्रेभ्योदक्षिणादितंत्रंनेदंपिंडदानाद्यापस्तंबादीनांकात्यायनानामाश्वलायनवत् ॥

अब आठ श्राद्ध कहताहुं—तिन्होंमें आपस्तंब, हिरण्यकेशीय इन आदिकोंका अग्नौकरणपिंडादिकसें रहित सांकल्पिक प्रयोग कहा है. आश्वलायन इन आदिकोंका सपिंडक ऐसा पार्वणप्रयोग है. तिसमें प्रथम सव्य करके जवोंसहित जलसें श्राद्धांगतर्पण करना. तिस तर्पणकी देवता "ब्रह्माणं तर्पयामि, विष्णुं त०, महेश्वरं त०, देवर्षीन् त०, ब्रह्मर्षीन् त०, क्षत्रर्षीन्०, वसून्०, रुद्रान्०, आदित्यान्०, सनकं०, सनंदनं०, सनातनं०, पंचमहाभूतानि०, चक्षुरादिकरणानि०, भूतग्रामं०, पितरं०, पितामहं०, प्रपितामहं०, मातरं०, पितामहीं०, प्रपितामहीं०, आत्मानं०, पितरं०, पितामहं०" इस प्रकारसें नदी आदि तीर्थोंमें तर्पण करके घरमें आयके देशकालका स्मरण करके "करिष्यमाणसंन्यासांगत्वेन अष्टौ श्राद्धानि पार्वणविधिनान्नेनामान्नेन वा करिष्ये," ऐसा संकल्प करके क्षण देना. इस श्राद्धमें सब कर्म नांदीश्राद्धकी तरह करना. इसलिये अपसव्य नहीं है. तिलोंके जगह जव. समसंख्याके ब्राह्मण. वे कहताहुं—देवस्थानमें दो ब्राह्मण और आठ श्राद्धोंके स्थानमें सोलह ऐसे मिलके अठारह ब्राह्मण जानने. तिस विषयमें "सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नांदीमुखाः स्थाने क्षणः कर्तव्यः" ऐसा कहके एक ब्राह्मणकों वरके पीछे दूसरे ब्राह्मणका वरण करना. ऐसा आगेभी जानना. पहिले देवश्राद्धमें "ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा नांदीमुखाः स्थाने क्षणः० १" दूसरे ऋषिश्राद्धमें "देवर्षिब्रह्मर्षिक्षत्रर्षयः नांदी० २" तीसरे दिव्यश्राद्धमें "वसुरुद्रादित्या नांदी० ३" मनुष्यश्राद्धमें "सनकसनंदनसनातना-नांदी० ४" पांचमें भूतश्राद्धमें "पृथिव्यादिपंचमहाभूतान्येकादशचक्षुरादिकरणादिचतुर्विधभूतग्रामा नांदी०" छठे पितृश्राद्धमें पितृपितामहप्रपितामहा नांदी० ६" सातमें मातृश्राद्धमें "मातृपितामहीप्रपितामह्यो नांदी० ७" आठमें आत्मश्राद्धमें "आत्मपितृपितामहा नांदी० ८" 'पितृपितामह' इस स्थानमें "आत्मान्तरात्मापरमात्मा" ऐसा उच्चार करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. इस प्रकारसें दो दो ब्राह्मण वरने. सब ठिकाणमें 'नांदीमुख' इस विशेषणकी योजना करनी. समसंख्य ब्राह्मण और देव सत्यवसु अथवा दक्षक्रतु जानने. पीछे सब ब्राह्मणोंकों पाद्य देके पूर्वाभिमुख अथवा उत्तरसंस्थ बैठायके ति-

न्होंकी प्रार्थना करनी. प्रार्थनाका मंत्र—“ **संन्यासार्थमहं श्राद्धं कुर्वे ब्रूत द्विजोत्तमाः ॥ अनुज्ञां प्राप्य युष्माकं सिद्धिं प्राप्स्यामि शाश्वतीम्** ” इस प्रकारसें प्रार्थना करके “ **कुरु** ” ऐसा प्रतिवचन देनेके अनंतर जवोंसहित, सरल दो दूव आदि लेके जलदानपूर्वक संबुद्ध्यंत उच्चारण किये पीछे “ **इदमासनम्** ” ऐसा कहके अठारह ब्राह्मणोंकों आसन देना. पीछे आश्वलायनोंनें अर्घ्यपात्र स्थापन करने. आपस्तंब आदिकोंका सांकल्पविधि होनेसें अर्घ्य नहीं है. देवतोंके अर्थ एक और आठ पार्वणोंकों आठ ऐसे मिलके नव पात्र स्थापन करने. सब जगह दो दो पवित्रोंसें आच्छादित हुये पात्रोंमें “ **शन्नोदेवी०** ” इस मंत्रसें जल घालके विश्वेदेवोंके पात्रोंमें “ **यवोसि०** ” इस मंत्रसें जव डालने. आठ पात्रोंमें “ **तिलोसि०** ” इस मंत्रके ऊहसें जव घालके गंध आदिसें पूजा करनी. सो ऊह ऐसा—“ **यवोसि सोमदेवत्यो गोसवे देवनिर्मितः ॥ प्रत्नवद्भिः प्रत्तः पुष्ट्यानांदीमुखान् देवान् प्रीणयाहि नः स्वाहा नमः** ” ऐसे मंत्रसें प्रथम पात्रमें, दूसरे पात्रमें “ **नांदीमुखान् ऋषीन्०** ” तीसरे पात्रमें “ **नांदीमुखान् दिव्यान् प्री०** ” चवथे पात्रमें “ **नांदीमुखान् मनुष्यान् प्री०** ” पांचमे पात्रमें “ **नांदीमुखानि भूतानि प्री०** ” छठे, सातमे और आठमे पात्रमें “ **नांदीमुखान् पितॄन् प्रीणय** ” इत्यादिक जानना. एक एक पात्रके दो दो भाग करके सब जगह “ **यादिव्या०** ” यह मंत्र कहनेके अनंतर “ **विश्वेदेवा नांदीमुखा इदं वोर्घ्यम्** ” ऐसा कहके अर्घ्य देके “ **ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा नांदीमुखा इदं वोर्घ्यं स्वाहा नमः** ” इत्यादिक प्रकारसें यथायोग्य सोलह ब्राह्मणोंके हाथोंपर अर्घ्य देना. पीछे “ **यादिव्या०** ” इस मंत्रसें, झिरनेवाले जलका अनुमंत्रण करना. पीछे पात्र मूंधा करके गंध आदिसें आच्छादनपर्यंत पूजा करनी. पूजाविषे सब जगह संबुद्ध्यंत नांदीमुख इस विशेषणसें युक्त उच्चार करना. भोजनपात्र धरके ब्रह्मा आदि सोलह ब्राह्मणोंके हाथोंपर “ **अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा, सोमाय पितृमते स्वाहा,** ” इन दो मंत्रोंसें दो आहुति देनी. आपस्तंब आदिकोंकों यह अग्नौकरण नहीं है. पात्रकों घृत लगायके अन्न धरके, अन्न नहीं होवै तौ आमान्न धरके किंवा तिसका मोलरूपी द्रव्य धरके प्रोक्षण करके “ **पृथिवी ते पात्रं०** ” इन आदि मंत्रोंसें जैसी देवता होवै तिसके अनुसार अन्नका किंवा आमान्नका त्याग करना. पीछे “ **येदेवास० प्रजापतेन० ब्रह्मार्पणं ब्रह्म० अनेनाष्टश्राद्धेन नांदीमुखादेवादयः प्रीयंताम्** ” ऐसा कहके जल छोडना. आपोशन देनेके अनंतर चित्राहुति वर्जित करके ब्राह्मणोंनें भोजन करना. तृप्त हुए पीछे “ **उपास्मै० अक्षन्नमी० संपन्नं०** ” ऐसा पूछे पीछे “ **रुचिरं०** ” ऐसा सब ब्राह्मणोंनें बोलना. आमान्नविषे यह संपन्न आदि नहीं कहना. आचमनके अनंतर जब दही, धानकी खील, बेर इन्होंसें युत हुये अन्नके अठतालीस पिंड बनायके पूर्वकों फैली हुई और पश्चिमसें आरंभ करी और उदक्संस्थ ऐसी आठ रेखा निकासके तिन्होंपर जल प्रोक्षण करके तिन रेखाओंपर कुश अथवा दूवकों आस्तृत करके चौवीस पिंडोंके स्थानमें जल छांटना. सो दिखाते हैं—“ **शुंधंतां ब्रह्माणो नांदीमुखाः शुंधंतां विष्णवो नांदीमुखाः शुंधंतां महेश्वरा नांदीमुखाः** ” इस प्रकारसें प्रथम रेखापर. तिस्सें उत्तररेखापर “ **शुंधंतां देवर्षयो नांदी० शुंधंतां ब्रह्मर्षयो नां०** ” इत्यादि ऊह करना. पीछे “ **ब्रह्मणे नांदीमुखाय स्वाहा** ” ऐसा कहके एक पिंड देके दूसराभी ऐसाही देना अथवा मंत्ररहित देना. इस प्रकारसें प्र-

त्येक देवताकों दो पिंड देने, और ऐसेही आगेभी "विष्णवे नांदीमुखाय स्वाहा" इत्यादिक स्वाहांत पिंड देनेके मंत्र जानने. "अत्र पितरो मादयध्वम्" इत्यादिकसें आरंभ करके पुनः शुंधंतां इसपर्यंत तंत्र, अंजन, अभ्यंजन ये करने अथवा नहीं करने. पिंडोंकी गंध आदिसें पूजा करके नमस्कार करके "उपसंपन्नम्" ऐसा वाक्य कहके विसर्जन करके ब्राह्मणोंके अर्घ दक्षिणा देना आदि तंत्र करना. यह पिंडदान आदि आपस्तंब आदिकों नहीं है. कात्यायनशाखियोंकों आश्वलायनोंकी तरह पिंडदान आदि कहा है.

अष्टश्राद्धोत्तरंतद्दिनेद्वितीयेवाषट्शिखाकेशान्स्थापयित्वा कक्षोपस्थवर्जंकेशश्मश्रुनखादिवापयित्वास्नात्वा कौपीनाच्छादनादिहोमद्रव्यंचविनान्यद्धनादिविप्रादिभ्यःपुत्रादिभ्यश्च त्यजेत् कौपीनादिकंगैरिकरंजितंकृत्वावैणवंदंडंसत्वचंशिरोभ्रूललाटान्यतमप्रमाणंसमूलमंगुलिस्थूलंविप्रानीतमेकादशनवचतुःसप्तान्यतमपर्वकंपर्वग्रंथियुतं मुद्रायुतंसंपाद्यशंखोदकेनप्रणवपुरुषसूक्तकेशवादिनामभिरभिषिच्यस्थापयेत् ततःकमंडलुकौपीनाच्छादनकंथापादुकाः स्थापयेत् शिक्यपात्रादिकमपिकेचित् ॥

अष्टश्राद्ध करनेके अनंतर तिस दिनमें अथवा दूसरे दिनमें शिखाके छह वाल रखके काख, उपस्थ इन्होंके वालोंकों वर्जित करके डाढी, मूंछ, नख इन आदिका मुंडन करवायके स्नान करके कौपीन, आच्छादन आदि और होमद्रव्य इन्होंके विना अन्य सब द्रव्योंकों ब्राह्मण और पुत्र आदिकों देना. कौपीन आदि गेरूसें रंगवायके छालसें युत और शिर, भृकुटि, मस्तक इन्होंमांहसें एक कोईसाके प्रमाण उंचीका और जडसहित अंगुलीके समान मुटाईसें युत और ब्राह्मणकरके प्राप्त किया और ग्यारह, नव, चार, सात इन्होंमांहसें एक कोईसा परिमित पर्वोंवाला और पर्वोंकी ग्रंथियोंसें युत और मुद्रासें युत ऐसा वांसका दंड संपादित करके ओंकार, पुरुषसूक्त, केशव आदि नाम इन्होंसें शंखके जलकरके अभिषेचित करके रखना. पीछे कमंडलु, कौपीन, आच्छादन, कंथा और खडाऊं इन्होंकों रखना. छींका और पात्र आदिकोंभी रखना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं.

देशकालौसंकीर्त्याशेषदुःखनिवृत्तिनिरतिशयानंदप्राप्तिपरमपुरुषार्थप्राप्तये परमहंसाख्य संन्यासग्रहणंकरिष्ये तदंगतयागणपतिपूजनपुण्याहवाचनमातृकापूजननांदीश्राद्धानिकरिष्ये तानिकृत्वाजपेत् ब्रह्मणेनमः विष्णवे० रुद्राय० सूर्याय० सोमाय० आत्मने० अंतरात्मने० परमात्मने अग्निमीळेऋक् इषेत्वोर्जेत्वा० अग्नआयाहिऋक् शन्नोदेवीऋक् जपित्वासक्तुपिष्टं मुष्टित्रयंप्रणवेनात्रिःप्राश्यनाभिमालभेत् आत्मनेस्वाहा अंतरात्मने० परमात्मनेस्वा० प्रजापतयेस्वाहेति मंत्रैः ततःपयोदधिमिश्रमाज्यंजलमेववात्रिवृदसीतिप्रथमंप्राश्यप्रवृदसीतिद्वितीयं विवृदसीतितृतीयंप्राश्यापःपुनंत्वितिजलंप्राश्याचम्योपवासंकरिष्येइतिसंकल्पयेत् ॥

देशकालका संकीर्तन करके "अशेषदुःखनिवृत्तिनिरतिशयानंदप्राप्तिपरमपुरुषार्थप्राप्तये परमहंसाख्यसंन्यासग्रहणं करिष्ये ॥ तदंगतया गणपतिपूजनपुण्याहवाचनमातृकापूजननांदीश्राद्धानि करिष्ये" ऐसा संकल्प करके वे करके जप करना सो ऐसा—"ब्रह्मणे नमः विष्णवे० रुद्राय० सूर्याय० सोमाय० आत्मने० अंतरात्मने० परमात्मने०

अग्निमीळे ऋक् इषेत्वोर्जेत्वा० अग्नआयाहि० ऋक् शन्नोदेवी०, ऋक् ” इस प्रकारसें जप करके पिसे हुये सत्तुओंकी तीन मूठी प्रणवमंत्रसें तीनवार प्राशन करके नाभीकों स्पर्श करना. **नाभिस्पर्शका मंत्र—“ आत्मने स्वाहा अंतरात्मने० परमात्मने स्वाहा प्रजापतये स्वाहा०** ” पीछे दूध और दहीसें मिश्रित घृत अथवा जलही, “ **त्रिवृदसि** ” इस मंत्रसें प्रथम प्राशन करके, “ **प्रवृदसि** ” इस मंत्रसें दूसरीवार प्राशन करके “ **विवृदसि** ” इस मंत्रसें तीसरीवार प्राशन करके, “ **आपःपुनंतु** ” इस मंत्रसें जल प्राशन करके आचमन करके, “ **उपवासं करिष्ये** ” ऐसा संकल्प करना.

अथसावित्रीप्रवेशः ॐभूःसावित्रींप्रविशामि ॐतत्सवितुर्वरेण्यं ॐभुवःसावित्रींप्र० भर्गोदेवस्य० ॐस्वःसावित्रीं० धियोयो० ॥ ॐभूर्भुवःस्वःसावित्रींप्र० तत्सवितुर्वरेण्यं० ऋक् ततोस्तात्प्राक्गृह्याग्निंसमिध्यविच्छिन्नश्चेत्पुनःसंधानविधिनानिरग्निर्वाविधुरादिर्वापृष्ठोदिविविधानेनाग्निंसंपादयेत् पृष्ठोदिविविधानंचकात्यायनवैश्वदेवप्रसंगेपूर्वार्धेउक्तं ॥

अब सावित्रीप्रवेश कहताहुं,—“ **ओं भूःसावित्रीं प्रविशामि ओंतत्सवितुर्वरेण्यं ओंभुवः सावित्रीं प्र० भर्गोदेवस्य० ओंस्वःसावित्रीं० धियोयो० ओंभूर्भुवःस्वः सावित्रींप्रवि० तत्सवितुर्वरेण्यं० ऋक्.** ” पीछे सूर्यास्तके पहले गृह्याग्नि प्रदीप्त करके विच्छिन्न होवै तौ पुनःसंधानविधि करके, निरग्नि अथवा विधुर आदिक होवै तौ पृष्टोदिविविधानसें अग्नि उत्पन्न करना. पृष्टोदिविविधान कात्यायनोंके वैश्वदेवप्रसंगमें पूर्वार्धमें कह दिया है.

अथास्तात्पूर्वंब्रह्मान्वाधानं संन्यासंकर्तुंब्रह्मान्वाधानंकरिष्येइतिसंकल्प्याग्निध्यानाद्याज्यसंस्कृत्यस्त्रुक्स्त्रुवौसंमृज्यस्त्रुचिचतुराज्यंगृहीत्वोंस्वाहेतिहुत्वापरमात्मनइदं० परिषेचनादि इतिब्रह्मान्वाधानं ॥

इसके अनंतर सूर्यास्तके पहले ब्रह्मान्वाधान करना. सो ऐसा—“ **संन्यासं कर्तुं ब्रह्मान्वाधानं करिष्ये** ” ऐसा संकल्प करके अग्निका ध्यान आदि कर्म करना. पीछे आज्यसंस्कार करके स्त्रुचि और स्त्रुवा इन पात्रोंका संस्कार करके स्त्रुचिपात्रमें चारवार घृत लेके “ **ओंस्वाहा** ” इस मंत्रसें आहुति देके “ **परमात्मन इदं०** ” ऐसा त्याग करना. पीछे उदकसिंचन आदि कर्म करना. इस प्रकारसें ब्रह्मान्वाधान कहा.

ततःसायंसंध्याहोमवैश्वदेवान्कृत्वाग्निसमीपेजागरंकुर्यात् ॥

तदनंतर सायंसंध्या, होम, वैश्वदेव इन्होंकों करके अग्निके समीपमें जागरण करना.

प्रातर्नित्यहोमांतेवैश्वदेवादिकंकृत्वाग्नेयंवैश्वानरंवास्थालीपाकंकुर्यात् तत्रकरिष्यमाणसंन्यासपूर्वांगभूतमाग्नेयस्थालीपाकंकरिष्यइतिसंकल्पः ध्यात्वाचक्षुषीआज्येनेत्यंतेत्रप्रधानमग्निंचरुणाशेषेणेत्यादि अग्नयेत्वाजुष्टंनिर्वपामीत्यादिनाग्नानिर्वापादि नाग्नैवप्रधानहोमः एवंवैश्वानरपक्षेप्यूह्यं ततस्तरत्समंदीतिजपित्वाकुशहेमरूप्यजलैःस्नात्वादेशादिस्मृत्वासंन्यासांगभूतंप्राणादिहोमंपुरुषसूक्तहोमंविरजाहोमंचतंत्रेणकरिष्ये इतिसंकल्प्यान्वाधानेआज्येनेत्यंतेप्राणादिपंचदेवताःसमिच्चर्वाज्यैःपुरुषंपुरुषसूक्तेनप्रत्यृचंषोडशवारंसमिच्चर्वाज्यैःप्राणाद्येकोनविंशति

देवताविरजामंत्रैः प्रतिद्रव्यमेकैकसंख्यसमिच्चर्वाज्याहुतिभिःप्रजापतिंसकृदाज्येनशेषेणेत्यादि षष्ट्युत्तरशतवारंतूष्णींनिरूप्यतथैवप्रोक्ष्यश्रपयित्वाज्यभागांतेप्राणायस्वाहेत्यादिपंचमंत्रैर्द्रव्यत्रयंसकृत्सकृद्धुत्वायथादैवंत्यक्त्वा सहस्रशीर्षेतिषोडशर्चेनप्रत्यृचंपृथक्पृथक्द्रव्यत्रयंहुत्वा पुरुषायेदंनममेतिसर्वत्रत्यजेत् ॥

प्रातः कालमें नित्यहोम दिये पीछे वैश्वदेव आदि करके आग्नेय अथवा वैश्वानर स्थालीपाक करना. तिसविषे संकल्प **“ करिष्यमाणसंन्यासपूर्वांगभूतमाग्नेयस्थालीपाकं करिष्ये”** इस प्रकारसें संकल्प करना. ध्यान करके **“चक्षुषी आज्येनेत्यंतेत्रप्रधानमग्निं चरुणा शेषेण०”** इत्यादिक अन्वाधान करना. पीछे **“ अग्नयेला जुष्टं निर्वपामि ”** इत्यादिक नामोंसें निर्वाप आदि करना. नाममंत्रोंसेंही प्रधानहोम करना. इसही प्रकार वैश्वानरस्थालीपाकपक्षमेंभी जानना. पीछे **“ तरत्समंदी० ”** इस मंत्रका जप करके कुश, सोना, चांदी इन्होंसें युक्त ऐसे जलसें स्नान करके, देशकालका स्मरण करके **“ संन्यासांगभूतं प्राणादिहोमं पुरुषसूक्तहोमं विरजाहोमं च तंत्रेण करिष्ये ”** ऐसा संकल्प करके अन्वाधानमें **“ आज्येनेत्यंतेप्राणादि० पंचदेवताःसमिच्चर्वाज्यैः पुरुषंपुरुषसूक्तेन प्रत्यृचं षोडशवारं समिच्चर्वाज्यैः प्राणाद्येकोनविंशतिदेवताविरजामंत्रैः प्रतिद्रव्यमेकैकसंख्यसमिच्चर्वाज्याहुतिभिः प्रजापतिं सकृदाज्येन शेषेण इत्यादि ”** एकसो साठवार मंत्रसें रहित निर्वाप करके मंत्ररहित प्रोक्षण करके चरु सिजायके आज्यभागपर्यंत होम किये पीछे **“ प्राणाय स्वाहा ”** इत्यादि पांच मंत्रोंसें समिध, चरु, घृत इन तीन द्रव्योंका एक एकवार होम करके जैसी देवता होवै तिसके अनुसार त्याग कहके **“ सहस्रशीर्षा० ”** इन सोलह ऋचाओंकी प्रत्येक ऋचासें पृथक् पृथक् तीन द्रव्योंका होम करके **“ पुरुषायेदं न मम ”** ऐसा सब जगह त्याग कहना.

अथविरजाहोमः प्राणापानव्यानोदानसमानामेशुध्यंतांज्योतिरहंविरजाविपाप्माभूयासं स्वाहा प्राणादिभ्यइदं० वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणरेतोबुद्धयाकूतिसंकल्पामेशुद्धयतांज्योति० वागादिभ्यइदं० त्वक्चर्ममांसरुधिरमेदोमज्जास्नायवोस्थीनिमेशुद्ध्यंतां० त्वगादिभ्यइदं० शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोरूदरजंघाशिश्नोपस्थपायवोमेशुद्ध्यं० शिरआदिभ्य० उत्तिष्ठपुरुषहरितपिंगललोहिताक्षदेहिदेहिददापयितामेशुद्ध्यं० पुरुषादिभ्य० पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाशोमेशुद्ध्यं० पृथिव्यादिभ्य० शब्दस्पर्शरूपरसगंधामेशुद्ध्यं० शब्दादिभ्य० मनोवाक्कायकर्माणिमेशुद्ध्यंतां० मनआदिकर्मभ्य० अव्यक्तभावैरहंकारैर्ज्योतिरहं० अव्यक्तादिभ्य० आत्मामेशुद्धयतांज्यो० आत्मन० अंतरात्मामे० अंतरात्मन० परमात्मामे० परमात्मन० क्षुधेस्वाहा क्षुधइदं० क्षुत्पिपासायस्वाहा क्षुत्पिपासायेदं० विविट्यैस्वा० विविट्या० ऋग्विधानाय० कषोत्कायस्वा० क्षुत्पिपासामलाज्येष्ठामलक्ष्मींनाशयाम्यहं अभूतिमसमृद्धिंचसर्वांनिर्णुदमेपाप्मानंस्वाहाअग्नयइदं० अन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमयमानंदमयमात्मामेशुद्ध्यंतां० अन्नमयादिभ्य० एवंसमिच्चर्वाज्यैःप्रतिद्रव्यंचत्वारिंशदाहुतीर्हुत्वा यदिष्टंयच्चपूर्तंयच्चापद्यनापदि प्रजापतौतन्मनासिजुहोमि विमुक्तोहंदेवकिल्बिषात्स्वाहेत्याज्यंहुत्वा प्रजापतयइदमितित्यजेत् ततःपुरुषसूक्तंअग्निमीळेइत्यादिचतुर्वेदादींश्चजपित्वास्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्य ब्रह्मचार्यादिभ्योगोहिरण्यवस्त्रादिदत्वासंमासिंचंतुमरुतइतिमंत्रेणगृह्याग्निमु

परस्थायतत्रदारुपात्राणिदहेत्तैजसानिगुरवेदद्यात् ततआत्मन्यग्निसमारोपंअयंतेयोनिरित्यृचा यातेअग्नेयज्ञियातनूस्तयेह्यारोहात्मात्मानमित्यादियजुषाचत्रिरुक्तेनाग्नेर्ज्वालांप्राश्नन्कुर्यात् कृष्णाजिनमादायगृहान्निष्क्रम्य सर्वेभवंतुवेदाढ्याःसर्वेभवंतुसोमपाः सर्वेपुत्रमुखंदृष्ट्वासर्वेभवंतुभिक्षुकाइतिपुत्रादिभ्यआशिषंदत्वानमेकश्चिन्नाहंकस्यचित् पुत्रादीनुक्त्वाविसृजेत् जलाशयंगत्वांजलिनाजलमादायाशुःशिशानइतिसूक्तेनाभिमंत्र्यसर्वाभ्योदेवताभ्यः स्वाहेतित्यजेत्तिथ्यादिस्मृत्वाऽपरोक्षब्रह्मावाप्तयेसंन्यासंकरोमीतिसंकल्प्यजलांजलिंगृहीत्वाॐएषहवाअग्निःसूर्यःप्राणंगच्छस्वाहाॐस्वांयोनिंगच्छस्वाहाॐआपोवैगच्छस्वाहेतिमंत्रत्रयेणजलेष्वंजलित्रयंदद्यात् पुत्रेषणावित्तेषणालोकेषणासर्वेषणामयापरित्यक्ताअभयंसर्वभूतेभ्योमत्तः स्वाहाइत्यंजलिंजलेक्षिपेत् पुनरेवमभयंदत्वावदेत् यत्किंचिद्बंधनंकर्मकृतमज्ञानतोमया प्रमादालस्यदोषात्थंतत्सर्वंसंत्यजाम्यहं त्यक्तसर्वोविशुद्धात्मागतस्नेहशुभाशुभः एषत्यजाम्यहंसर्वंकामभोगसुखादिकं रोषंतोषंविवादंचगंधमाल्यानुलेपनं भूषणंनर्तनंगेयंदानमादानमेवच नमस्कारंजपंहोमंयाश्चनित्याःक्रियामम नित्यंनैमित्तिकंकाम्यंवर्णधर्माश्रमाश्रये सर्वमेवपरित्यज्यददाम्यभयदक्षिणां पद्भ्यांकराभ्यांविहरन्नाहंवाक्कायमानसैःकरिष्येप्राणिनांपीडांप्राणिनःसंतुनिर्भयाः सूर्यादिदेवान्विप्रांश्चसाक्षित्वेनध्यात्वानाभिमात्रेजलेप्राङ्मुखःसावित्रीप्रवेशंपूर्ववत्कृत्वातरत्समंदीतिसूक्तंपठित्वापुत्रेषणायावित्तेषणायालोकेषणायाश्चव्युत्थितोहंभिक्षाचर्यंचरामीतिजलेजलंजुहुयात् ॥

अब विरजाहोम कहताहुं—सो ऐसा—“प्राणापानव्यानोदानसमानामेशुद्ध्यंतांज्योतिरहंविरजापाप्माभूयासं स्वाहा प्राणादिभ्य इदं० वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणरेतोबुद्ध्याकूतिसंकल्पा मे शुद्ध्यंतां ज्योति० वागादिभ्य इदं० त्वक्चर्ममांसरुधिरमेदोमज्जास्नायवोस्थीनि मे शुद्ध्यंतां त्वगादिभ्य इदं० शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोरूदरजंघाशिश्नोपस्थपायवो मे शुद्ध्यंतां० शिरआदिभ्यः उत्तिष्ठपुरुषहरितपिंगललोहिताक्ष देहिदेहि ददापयिता मे शुद्ध्यं० पुरुषादिभ्य० पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाशोमे शुद्ध्यं० पृथिव्यादिभ्यः० शब्दस्पर्शरूपरसगंधा मे शुद्ध्यं० शब्दादिभ्य० मनोवाक्कायकर्माणि मे शुद्ध्यंतां० मनआदिकर्मभ्य० अव्यक्तभावैरहंकारैर्ज्योतिरहं० अव्यक्तादिभ्य० आत्मामेशुद्ध्यंतां० ज्यो० आत्मन० अंतरात्मामे अंतरात्मन० परमात्मामे० परमात्मन० क्षुधेस्वाहा० क्षुधइदं० क्षुत्पिपासायस्वाहा क्षुत्पिपासायेदं० विविट्यैस्वा० विविट्या० ऋग्विधानाय० कषोत्काय स्वा० क्षुत्पिपासामलाज्येष्ठामलक्ष्मींनाशयाम्यहम् ॥ अभूतिमसमृद्धिंचसर्वान्निर्णुदमेपाप्मानं स्वाहा अग्नयइदं० अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमयमानंदमयमात्मा मे शुद्ध्यंतां० अन्नमयादिभ्य०” इस प्रकारसें समिध, चरु, घृत इन्होंकरके प्रत्येक द्रव्यकी चालीस आहुतियोंसें होम करके “यदिष्टंयच्चपूर्तंयच्चापद्यनापादि ॥ प्रजापतौतन्मनसिजुहोमि ॥ विमुक्तोहंदेवकिल्बिषात्स्वाहा” इस मंत्रसें घृतकी आहुति देके “प्रजापतयइदं०” ऐसा त्याग करना. पीछे पुरुषसूक्त, “ अग्निमीळे ” इत्यादि चार वेदोंका जप करके स्विष्टकृत् आदि होमशेष समाप्त करके ब्रह्मचारी आदिकों गौ, सोना, वस्त्र आदि देके “संमासिंचंतुमरुत०” इस मंत्रसें गृह्याग्निका उपस्थान करके तिस अग्निमें काष्ठके पात्रोंकों दग्ध करना. और धा-

तुके पात्र गुरुकों देना. “ **अयंतेयोनि०** ” यह ऋचा और “ **यातेअग्नेयज्ञियातनूस्तये ह्यारोहात्मात्मानं०** ” इत्यादि यजुर्मंत्र तीनवार कहके अग्निकी ज्वाला प्राशन करता हुआ अग्निसमारोप अपनेविषे करना. पीछे कृष्ण मृगछाला लेके घरसें निकसके “ **सर्वे भवंतु वेदाढ्याः सर्वे भवंतु सोमपाः ॥ सर्वे पुत्रमुखं दृष्ट्वा सर्वे भवंतु भिक्षुकाः** ” इस मंत्रसें पुत्र आदिकों आशीर्वाद देके “ **न मे कश्चित् नाहं कस्यचित्** ” अर्थात् मेरे कोई नहीं हैं और मैं किसीका नहीं हूं ऐसा पुत्र आदिकों कहके विसर्जन करना. पीछे जलके स्थानके प्रति जाके अंजलीमें जल लेके “ **आशुःशिशान०** ” इस सूक्तसें अभिमंत्रित करके “ **सर्वाभ्यो देवताभ्यः स्वाहा** ” ऐसा कहके जल छोडना. तिथि आदिकोंका स्मरण करके “ **अपरोक्षब्रह्मावाप्तये संन्यासं करोमि** ” ऐसा संकल्प करके जलकी अंजली लेके “ **ॐ एष हवा अग्निः सूर्यः प्राणं गच्छ स्वाहा** ” “ **ॐस्वां योनिं गच्छ स्वाहा ॐ-आपो वै गच्छ स्वाहा** ” इन तीन मंत्रोंसें जलमें तीन अंजली देनी. “ **पुत्रेषणा वित्तेषणा लोकेषणा सर्वेषणा मया परित्यक्ता अभयं सर्वभूतेभ्यो मत्तः स्वाहा** ” इस मंत्रसें जलकी अंजली जलमें छोडनी. फिर इस प्रकारसें अभय देके आगे कहताहुं सो कहना. “**यत्किंचिद्बंधनं कर्म कृतमज्ञानतो मया ॥ प्रमादालस्य दोषोत्थं तत्सर्वं संत्यजाम्यहम् ॥ त्यक्तसर्वो विशुद्धात्मा गतस्नेहशुभाशुभः ॥ एषत्यजाम्यहं सर्वं कामभोगसुखादिकम् ॥ रोषं तोषं विवादं च गंधमाल्यानुलेपनम् ॥ भूषणं नर्तनं गेयं दानमादानमेव च ॥ नमस्कारं जपं होमं याश्च नित्याः क्रिया मम ॥ नित्यं नैमित्तिकं काम्यं वर्णधर्माश्रमाश्च ये ॥ सर्वमेव परित्यज्य ददाम्यभयदक्षिणाम् ॥ पद्भ्यां कराभ्यां विहरन्नाहं वाक्कायमानसैः । करिष्ये प्राणिनां पीडां प्राणिनः संतु निर्भयाः** ” पीछे सूर्य आदि देवता और ब्राह्मण इन्होंके साक्षिपनेसें ध्यान करके नाभिमात्र जलमें पूर्वाभिमुख खडा रहके सावित्रीप्रवेश पहलेकी तरह करके “ **तरत्समंदी०** ” इस सूक्तका पाठ करके “ **पुत्रेषणाया वित्तेषणाया लोकेषणायाश्च व्युत्थितोहं भिक्षाचर्यं चरामि** ” ऐसा वाक्य कहके जलमें जलकी आहुति देनी. ”

अथप्रेषोच्चारः ॐभूःसंन्यस्तंमयाॐभुवःसंन्यस्तं० ॐस्वःसंन्यस्तं० ॐभूर्भुवःस्वःसंन्यस्तंमयेतित्रिर्मंदमध्योच्चस्वरेणोक्त्वाऽभयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहेति जलंजलेक्षिपेत् शिखामुत्पाट्ययज्ञोपवीतमुद्धृत्यकरेगृहीत्वा आपोवैसर्वादेवताःसर्वाभ्योदेवताभ्योजुहोमिस्वाहाॐभूः स्वाहेतिजलेजलैःसहहुत्वाप्रार्थयेत् त्राहिमांसर्वलोकेशवासुदेवसनातन संन्यस्तंमेजगद्योनेपुंडरीकाक्षमोक्षद युष्मच्छरणमापन्नंत्राहिमांपुरुषोत्तम ततोदिगंबरःपंचपदान्युदङ्मुखोगच्छेत् विविदिषुश्चेत्तस्मैआचार्योनत्वाकाषायकौपीनाच्छादनेदत्वादंडंदद्यात् सचकौपीनंवासश्चपरिधायॐइंद्रस्यवज्रोसिसखेमांगोपायेतिदंडंगृह्णीयात् वार्त्रघ्नःशर्ममेभवयत्पापंतन्निवारय प्रणवेनगायत्र्यावाकमंडलुं.इदंविष्णुरित्यासनं ततःसमित्पाणिर्गुरुंनत्वागरुडासनोपविष्टोगुरुंवदेत् त्रायस्वभोजगन्नाथगुरोसंसारवह्निना दग्धंमांकालदष्टंचत्वामहंशरणागतः योब्रह्माणंविदधातिपूर्वंयोवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मै तंहदेवमात्मबुद्धिप्रकाशंमुमुक्षुर्वैशरणमहंप्रपद्येइतिगुरुमुपस्थाय दक्षिणंजान्वाच्यपादावुपसंगृह्यअधीहिभगवोब्रह्मेतिवदेत् गुरुरात्मानंब्रह्मरूपंध्या

त्वाजलपूर्णंशंखंद्वादशप्रणवैरभिमंत्र्यतेनशिष्यमभिषिच्य शन्नोमित्रइतिशांतिंपठित्वातच्छिरसिहस्तंदत्वापुरुषसूक्तंजपित्वाशिष्यहृदयेहस्तंकृत्वा ममव्रतेहृदयंतेदधामीत्यादिमंत्रंजप्त्वादक्षिणकर्णेप्रणवमुपदिश्यतदर्थंचपंचीकरणाद्यवबोध्य प्रज्ञानंब्रह्मअयमात्माब्रह्मतत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मीतिऋग्वेदादिमहावाक्येष्वन्यतमंशिष्यशाखानुसारेणोपदिश्यतदर्थंबोधयेत् ततस्तीर्थाश्रमादिसंप्रदायानुसारेणनामदद्यात् ततःपर्यंकशौचंकारयित्वायोगपट्टंदद्यात् ॥

अब प्रेषोच्चार कहताहुं—ॐभूःसंन्यस्तंमया ॐभुवः संन्यस्तं० ॐस्वः संन्यस्तं० ॐभूर्भुवःस्वःसंन्यस्तंमया " इस प्रकारसें तीन वार मंद, मध्य और उच्च ऐसे स्वरसें कहके **अभयं सर्वभूतेभ्यो मत्तः स्वाहा** " इस मंत्रसें जल जलमें छोडना. शिखा उपाडके यज्ञोपवीत निकासके हाथमें ग्रहण करके " **आपो वै सर्वा देवताः सर्वाभ्यो देवताभ्यो जुहोमि स्वाहा ॐभूः स्वाहा** " इस मंत्रसें जलमें जलके साथ होम करके प्रार्थना करनी. प्रार्थनाके मंत्र " **त्राहि मां सर्वलोकेश वासुदेव सनातन ॥ सन्यस्तं मे जगद्योने पुंडरीकाक्ष मोक्षद ॥ युष्मच्छरणमापन्नं त्राहि मां पुरुषोत्तम ॥** " पीछे नंगा होके पांच पैर उत्तरकों मुखवाला होके गमन करना; विविदिषु होवै तौ तिसकों आचार्यनें नमस्कार करके भगवा कौपीन आच्छादन देके दंड देना. पीछे उसनें वह कौपीन और वस्त्रकों धारण करके, " **ॐ इंद्रस्य वज्रोसि सखे मां गोपाय** " इस मंत्रसें दंड ग्रहण करणा. पीछे " **वार्त्रघ्नः शर्म मे भव यत्पापं तन्निवारय** " यह मंत्र कहके ॐकारसें अथवा गायत्रीमंत्रसें कमंडलु लेना. " **इदंविष्णु०** " इस मंत्रसें आसन लेना. पीछे समिध हाथमें धारण करके गुरुकों प्रणाम करके गरुडासनसें बैठके गुरुसें बोलना. " **त्रायस्व भो जगन्नाथ गुरो संसारवह्निना । दग्धं मां कालदष्टं च त्वामहं शरणागतः ॥ यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ॥ तंहदेवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वैं शरणमहं प्रपद्ये** " इस मंत्रसें गुरुकी प्रार्थना करके दाहिना गोडा पृथिवीपर स्थापित करके गुरुके पैरोंकों धरके " **अधीहिभगवोंब्रह्म** " ऐसा बोलना. गुरुनें आप ब्रह्मरूप हुं ऐसा ध्यान करके जलसें भरे शंखका बारह प्रणवमंत्रोंसें अभिमंत्रण करके तिस जलसें शिष्यकों अभिषेक करके " **शन्नोमित्र०** " इस मंत्रसें शांतिपाठ करके शिष्यके मस्तकपर हाथ स्थापित करके पुरुषसूक्तका जप करके हृदयपर हाथ धरके " **मम व्रते हृदयं ते दधामि०** " इत्यादिक मंत्रका जप करके दाहिने कानमें ॐकारका उपदेश करके तिसका अर्थ और पंचीकरण आदिका बोध करके "**प्रज्ञानं ब्रह्म, अयमात्मा ब्रह्म, तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि** " ऐसे ऋग्वेद आदिके जो महावाक्य हैं इन्होंमांहसें एक कोईसा महावाक्य शिष्यकी शाखाके अनुसार उपदेश करके तिस वाक्यके अर्थका बोध करना. पीछे तीर्थ, आश्रम आदि संप्रदायके अनुसार नाम धरना. तिसके अनंतर पर्यंकशौच करायके योगपट्ट देना.

अथपर्यंकशौचप्रयोगः कस्मिंश्चित्पुण्यदिनेकश्चिद्गृहस्थःस्वाग्रेपीठादौयतिमुपवेश्यगुर्वनुज्ञातोयतयेपर्यंकशौचंकरिष्येइतिसंकल्प्य वामभागेप्राक्संस्थान्पंचमृद्भागान्दक्षिणभागेपितथैवपंचसंस्थाप्योभयत्रशुद्धोदकंचसंस्थाप्यवामप्रथममृद्भागेनपंचवारंमृज्जलाभ्यांयतिजानुद्वयंकराभ्यांयुगपत्प्रक्षालयेत् चरमप्रक्षालनेमृद्भागसमाप्तिः एवमग्रेपि ततोदक्षिणभागस्थप्रथमभागार्धे

नस्ववामकरंमृज्जलाभ्यांदशवारंप्रक्षाल्यापरार्धेनतेनैवजलेनोभौकरौसप्तवारं क्षालयेत् एवमग्रेपियोज्यं संख्यायांविशेषस्तूच्यते वामद्वितीयभागेनचतुर्वारंजंघाद्वयंयुगपत्प्रक्षाल्यदक्षिणाद्वितीयभागार्धेनसप्तवारंवामकरमर्धांतरेणचतुर्वारमुभौचकरौक्षालयेत् वामतृतीयेनयतिगुल्फौत्रिवारंदक्षिणभागार्धेनवामकरंषड्वारमुभौचतुर्वारं वामचतुर्थेनयतिपादपृष्ठौद्विवारंदक्षिणार्धेनस्ववामंकरंचतुर्वारभुमौद्विवारमवशिष्टार्धेनवामपंचमेनयतिपादतलेसकृद्दक्षिणपंचमार्धेनवामस्यद्विवारमुभयोश्चापरार्धेनसकृत्क्षालनमिति ।।

अब पर्यंकशौच कहताहुं.

किसीक पवित्र दिनमें कोईक गृहस्थीनें अपने अग्रभागमें आसन आदिपर संन्यासीकों वैठायके "गुर्वनुज्ञातो यतये पर्यंकशौचं करिष्ये" ऐसा संकल्प करके वामभागमें प्राक्संस्थ ऐसे पांच मृत्तिकाभाग और दक्षिणभागमें तैसेही पांच मृत्तिकाभाग स्थापित करके और वामदक्षिणभागमें शुद्ध जल स्थापित करके वाम भागके प्रथम भागसें पांचवार मृत्तिका और जलसें संन्यासीके दोनों गोडोंकों दोनों हाथोंसें एकवार धोने. अंतके धोवनेमें मृत्तिकाके भागकी समाप्ति करनी. ऐसाही आगेभी जानना. पीछे दक्षिण तर्फके प्रथम भागकी आधी मृत्तिकासें अपना वाम हाथ मृत्तिका और जलसें दशवार धोके दूसरे आधे भागसें तिसी जलसें दोनों हाथ सातवार धोने. ऐसाही आगेभी जानना. संख्याविषे विशेष तौ कहते हैं.— वाम भागकों जो दूसरा भाग है तिसकरके दोनों जांघोंकों चारवार एककालमें धोके दक्षिणका जो द्वितीय भाग है तिस करके सातवार वाम हाथ धोके दूसरे आधे भागसें चारवार दोनों हाथोंकों धोना. वाम भागमें जो तीसरा भाग है तिसकरके संन्यासीके दोनों टकनोंकों तीनवार धोके दाहिनी तर्फका जो आधा भाग है तिसका आधा करके वामहाथकों छहवार और दोनों हाथोंकों चारवार धोना. वाम जो चौथा भाग है तिसकरके संन्यासीके पैरोंके पृष्ठभागोंकों दोवार धोके दक्षिण भागमांहके आधे भागसें अपना वाम हाथ चारवार धोके अपनें दोनों हाथोंकों दोवार शेष रहे आधे भागसें धोना. वाम बाजूमें जो पांचमा भाग है तिस करके संन्यासीके पैरोंके तलुवोंकों एकवार धोके दाहिना जो पांचमा भाग है तिसके आधे भागसें वाम पैरकों दोवार और शेष रहे आधे भागसें दोनों पैरोंकों एकवार धोना.

अथयोगपट्टः कारितपर्यंकशौचोयतिःकटिशौचंकृत्वाकटिसूत्रकौपीनेधृत्वावस्त्रेणावगुंठ्य गुर्वनुज्ञयोच्चासनेउपविश्यसभ्यैःसहवेदांतेकिंचिदुपन्यसेत् गुरुर्यतिःशिष्यंयतिंशिरसिशंखेन पुरुषसूक्तेनाभिषिच्यवस्त्रगंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यैःसंपूज्यवस्त्रमुपरिधृत्वायतिभिः सहविश्वरूपाध्यायंपश्यामिदेवानित्यारभ्यभुंक्ष्वराज्यंसमृद्धमित्यंतंपठित्वा पूर्वकल्पितंनामदद्यात् ततःशिष्यंवदेत् इतःपरंत्वयासंन्यासाधिकारिणेसंन्यासोदेयोदीक्षायोगपट्टादिकंचकार्यं ज्येष्ठयतयोनमस्कार्याः ततोगुरुःकटिसूत्रंपंचमुद्रालंकृतंपूर्वंदंडंचशिष्यायदत्वाशिष्यंयथासंप्रदायंनमस्कुर्यात् अन्येयतयोगृहिणश्चनमस्कुर्युः शिष्योनारायणेत्युक्त्वोच्चासनादुत्थायतत्रगुरुमुपवेश्ययथाविधिनत्वान्ययतीन्नमेत् इतिगृह्याग्निमतोविधुरादेश्चविविदिषासंन्यासप्रयोगः ।।

अब योगपट्ट कहताहुं.

किया है पर्यंकशौच जिसनें ऐसे संन्यासीनें कटिकी शुद्धि करके कटिसूत्र, कौपीन इन्होंकों धारण करके वस्त्रसें कटिकों अवगुंठित करके गुरुकी आज्ञासें ऊंचे आसनपर बैठके सभ्य पुरुषोंके साथ वेदांतविषे कछुक उपन्यास करना. गुरु जो संन्यासी है तिसनें शिष्य जो संन्यासी है, तिसके शिरपर शंखकरके पुरुषसूक्तसें अभिषेक करके वस्त्र, गंध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य इन उपचारोंसें पूजा करके उपर वस्त्र धरके संन्यासियोंके साथ विश्वरूप अध्याय “ **पश्यामि देवान्** ” यहांसें आरंभ करके “**भुक्ष्वं राज्यं समृद्धम्**” इसपर्यंत पठण करके पूर्वकल्पित नाम देना. इसके उपरंत शिष्यकों कहना,—संन्यासविषे जो अधिकारी होवै तिसकों संन्यासकी दीक्षा देनी, और योगपट्ट आदि करना. ज्येष्ठ अर्थात् बडे संन्यासीकों नमस्कार करना. पीछे गुरुनें कटिसूत्र और पांच मुद्राओंसें अलंकृत ऐसा पूर्व कहा दंड, शिष्यकों देके संप्रदायके अनुसार तिसकों प्रणाम करना. पीछे अन्य संन्यासी और गृहस्थीयोंनें प्रणाम करना. शिष्यनें “ **नारायण** ” ऐसा कहके ऊंचे आसनसें उठके तिसपर गुरुकों बैठायके विधिके अनुसार नमस्कार करके अन्य संन्यासियोंकों प्रणाम करना. इस प्रकारसें गृह्याग्निमान् और विधुर आदिकोंका विविदिषा संन्यासप्रयोग कहा.

अथाग्निहोत्रिणोविशेषः तत्रश्रौताग्नयोविच्छिन्नाश्चेत्पुनराधानंपावमानेष्ट्यंतंपूर्णाहुत्यंतंवाकृत्वाप्रायश्चित्तादिसावित्रीप्रवेशांतंपूर्ववत्कुर्यात् ॥

अब अग्निहोत्रीका विशेष कहताहुं.

तहां श्रौताग्नि विच्छिन्न होवै तौ पुनराधान, पावमानेष्टीपर्यंत अथवा पूर्णाहुतिपर्यंत करके प्रायश्चित्तादि सावित्रीप्रवेशपर्यंत कर्म पहलेकी तरह करना.

अथब्रह्मान्वाधानं अग्नित्रयंसमिध्यसंस्कृतमाज्यंस्रुचिचतुर्वारंगृहीत्वाहवनीयेपूर्णाहुतिंॐस्वाहापरमात्मनइदमितिकुर्यात् सायंसंध्याग्निहोत्रहोमांतेउत्तरेणगार्हपत्यंद्वंद्वशःपात्राण्यासाद्याहवनीयदक्षिणतःकौपीनदंडाद्यासादयेत् रात्रिजागरांतेप्रातर्होमादिकृत्वापौर्णमास्यांब्रह्मान्वाधानंचेत्पौर्णमासेष्टिंकृत्वादर्शेष्टिमपिपक्षहोमाथकर्षपूर्वकमपकृष्यतदैवकुर्यात् दर्शेचेद्दर्शेष्टिरेव ॥

अब ब्रह्मान्वाधान कहताहुं.—तीन अग्नि प्रदीप्त करके संस्कारित किया घृत स्रुचिपात्रमें चारवार लेके आहवनीय अग्निविषे “ **ओं स्वाहा परमात्मन इदं०** ” ऐसा कहके पूर्णाहुति करनी. सायंसंध्या और अग्निहोत्रहोम करनेके अनंतर गार्हपत्य अग्निके उत्तर प्रदेशमें दो दो पात्र धरके आहवनीय अग्निके दक्षिण प्रदेशमें कौपीन, दंड इन आदिकों स्थापित करना. रात्रिविषे जागरण किये पीछे प्रातःकालमें होम आदि करके पौर्णमासीविषे ब्रह्मान्वाधान किया होवै तौ पौर्णमासेष्टि करके दर्शेष्टिभी पक्षहोमापकर्षपूर्वक अपकर्ष करके तिसही कालमें करनी. दर्श अर्थात् अमावसविषे ब्रह्मान्वाधान करना होवै तौ दर्शेष्टिही करनी.

अत्रपौर्णमास्यांदर्शेवादेशकालौस्मृत्वा संन्यासपूर्वांगभूतयाप्राजापत्येष्ट्यावैश्वानर्येष्ट्याचस

मानतंत्रयायक्ष्ये इतिसंकल्प्यसमुच्चयेनेष्टिद्वयं अत्रवैश्वानरोद्वादशकपालःपुरोडाशःप्राजापत्यश्चरुर्वैष्णवोनवकपालःपुरोडाशः अथवाकेवलप्राजापत्येष्टिः अत्रप्रयोगःस्वस्वसूत्रानुसारेणोह्यः बौधायनसूत्रानुसारेणकिंचिदुच्यते पवनपावनपुण्याहवाचनादिपूर्वांगांतेकेवलवैश्वानरेष्ट्याःकेवलप्राजापत्यावासंकल्पःव्रीहिमयःपुरोडाशोद्रव्यं पंचप्रयाजाः अग्निर्वैश्वानरःप्रजापतिर्वादेवता पंचदशसामिधेन्यः व्रतग्रहणांतेध्वर्युराज्यंसंस्कृत्यस्रुचिचतुर्गृहीतंगृहीत्वापृथिवीहोतेत्यादिचतुर्होतृहोमंकूष्मांडहोमसारस्वतहोमौचकृत्वानिर्वापादिः वैश्वानरोद्वादशकपालःपुरोडाशःप्राजापत्यश्चरुः वैश्वानरायप्रतिवेदयामइतिपुरोनुवाक्यावैश्वानरःपवमानःपवित्रैरितियाज्या प्राजापत्यायांप्रधानमुपांशुधर्मकं सुभूःस्वयंभूरित्याद्यनुवाक्याः प्रजापतेनत्वदेतामितियाज्या अथस्रुवेणाष्टावुपहोमावुभयत्र वैश्वानरोनऊतयआप्रयातुपरावतः अग्निरुक्थेनवाहसास्वाहा वैश्वानरायेदमितित्यागः सर्वत्र ऋतावानंवैश्वानरमृतस्यज्योतिषस्पतिंअजस्रंघर्ममीमहेस्वाहा २ वैश्वानरस्यदस० ३ पृष्ठोदिविपृष्ठोअग्निः० ४ जातोयदग्ने० ५ स्वमग्नेशोचिषा० ६ अस्माकमग्ने० ७ वैश्वानरस्यसुमतौ० ८ अथैनमुपातिष्ठेतसहस्रशीर्षेतिसूक्तेन ततःस्विष्टकृदादिशेषंसमापयेत् सर्वोवैरुद्रः विश्वंभूतमितिद्वाभ्यामग्न्युत्सर्गः आयुर्दाअग्नेइतिमंत्रेणदर्भस्तंबस्थयजमानभागात्किंचिदादाय सहस्रशीर्षेत्यनुवाकेनप्राश्य ओमितिब्रह्म ओमितीदंसर्वमित्यनुवाकेनहुतशेषमाहवनीयेप्रक्षिपेत् एवंवैश्वानर्याद्यन्यतरामिष्टिंकृत्वौपासनाग्नौसर्वाधानेदक्षिणाग्नौप्राणादिहोमादिविरजाहोमांतंकार्यं अन्यत्प्राग्वत् आहवनीयेअरणीमुसलोलूखलातिरिक्तदारुपात्राणांदाहः ततआत्मन्याहवनीयाग्निसमारोपः पूर्ववत् अरणीद्वयंगार्हपत्येप्रक्षिप्यतत्समारोपंकृत्वादक्षिणाग्नौमुसलोलूखलेहुत्वादक्षिणाग्नेरपिसमारोपः ततऔपासनाग्नेःसमारोपः इतिक्रमः अत्रविशेषोन्यत्रज्ञातव्यः इतिसाग्निकप्रयोगः स्नातकं प्रतिब्रह्मान्वाधानविरजाहोमादिरहितोवाप्रयोगोग्न्यभावात् ॥

इसके अनंतर पौर्णमासीके दिनमें अथवा अमावसमें देशकालका स्मरण करके समुच्चय करके “ **संन्यासपूर्वांगभूतया प्राजापत्येष्ट्यावैश्वानर्येष्ट्या च समानतंत्रया यक्ष्ये** ” ऐसा संकल्प करके समुच्चयसें दो इष्टि करनी. यहां वैश्वानरके उद्देशसें द्वादशकपाल पुरोडाश करना. प्राजापत्यचरु, विष्णु देवता है जिसका ऐसा नवकपाल पुरोडाश करना. अथवा केवल प्राजापत्येष्टि करनी. इस विषयमें प्रयोग अपने अपने सूत्रके अनुसार जानना. **बौधायनसूत्रके अनुसारसें कछुक कहताहुं.**—पवन, पावन, पुण्याहवाचन इत्यादि पूर्वांग हुए पीछे केवल वैश्वानरेष्टिका अथवा केवल प्राजापत्येष्टिका संकल्प करना. व्रीहिमय पुरोडाश यह द्रव्य, पांच प्रयाज, अग्निवैश्वानर अथवा प्रजापति देवता, पंदरह सामिधेनी. व्रतग्रहणके अनंतर अध्वर्यूनें घृतका संस्कार करके स्रुचिपात्रमें चारवार लिया हुआ घृत लेके “ **पृथिवीहोता** ” इत्यादि चतुर्होतृहोम, कूष्मांडहोम और सारस्वतहोम इन्होंकों करके निर्वाप आदि करना. वैश्वानर द्वादशकपाल पुरोडाश, प्राजापत्य चरु, “ **वैश्वानराय प्रतिवेदयाम०** ” यह पुरोनुवाक्या, “ **वैश्वानरः पवमानः पवित्रैः०** ” यह याज्या, प्राजापत्यइष्टिमें प्रधान कर्म हौले हौले उच्चारण करके “ **सुभूः स्वयंभूः** ” इत्यादिक अनुवाक्या जाननी. “ **प्रजापतेनत्वदेतां०** ” यह याज्या. इसके अनंतर स्रुवापात्रसें आठ उपहोम दोनों स्थानोंमें करने. ति-

न्होंके मंत्र—“ वैश्वानरोनऊतयआप्रयातुपरावतः अग्निरुक्थेनवाहसास्वाहा वैश्वानरायेदं० ” ऐसा सर्वत्र त्याग कहना. “ ऋतावानंवैश्वानरमृतस्यज्योतिषस्पतिं ॥ अजस्रंघर्ममीमहेस्वाहा २ वैश्वानरस्यदस० ३ पृष्टोदिवि पृष्टोअग्निः० ४ जातोयदग्ने० ५ त्वमग्नेशोचिषा० ६ अस्माकमग्ने० ७ वैश्वानरस्यसुमतौ० ८” इसके अनंतर “सहस्रशीर्षा०” इस सूक्तसें देवताकी प्रार्थना करनी. पीछे स्विष्टकृदादि होमशेषकी समाप्ति करनी. पीछे “ सर्वोवैरुद्रः० विश्वंभूतं० ” इन दो मंत्रोंसें अग्निका उत्सर्ग करना. “ आयुर्दाअग्ने०” इस मंत्रसें डाभके स्तंबपर स्थित जो यजमानका भाग तिसमांहसें कछुक लेके “ सहस्रशीर्षा० ” इस अनुवाकसें प्राशन करके “ ॐमितिब्रह्मॐमितीदंसर्वम् ” इस अनुवाकसें होमशेष रहे द्रव्यकों आहवनीय अग्निकेविषे छोडना. इस प्रकारसें वैश्वानर आदि दो इष्टियोंमांहसें एक इष्टि करके औपासनाग्निमें सर्वाधानपक्ष होवै तौ दक्षिणाग्निमें प्राण आदि होमसें आरंभ करके विरजाहोमपर्यंत कर्म करना. अन्य सब पहलेकी तरह जानना. अरणी, मूशल, ऊखल इन्होंके विना अन्य सब काष्ठके पात्र आहवनीय अग्निमें दग्ध करने. तदनंतर अपनेमें आहवनीय अग्निका समारोप पहलेकी तरह करना. दो अरणि गार्हपत्य अग्निमें डालके तिस गार्हपत्यका समारोप करके दक्षिणाग्निमें मूशल, ऊखल इन्होंकों दग्ध करके दक्षिणाग्निकाभी समारोप करना. पीछे औपासनाग्निका समारोप ऐसा क्रम जानना. इस विषयमें विशेष प्रकार दूसरे ग्रंथमें जानना. इस प्रकारसें साग्निकविषे प्रयोग कहा. स्नातकविषे ब्रह्मान्वाधान और विरजाहोम आदिसें रहितही प्रयोग जानना; क्योंकी, तिसकों अग्निका अभाव है.

अथातुरसंन्यासः आतुरसंन्यासेसंकल्पप्रेषोच्चाराभयदानेतित्रयंप्रधानमवश्यकंकार्यं अष्टश्राद्धादिदंडग्रहणांतमंगभूतंयथासंभवंकार्यं ॥

अब आतुरसंन्यास कहताहुं.

आतुरसंन्यासविषे संकल्प, प्रेषोच्चार और अभयदान ये तीन प्रधानकर्म अवश्य करने, और अष्टश्राद्धसें आरंभ करके दंडग्रहणपर्यंत अंगभूत कर्म जैसा संभव होवै तिसके अनुसार करने.

तत्प्रयोगः मंत्रस्नानंकृत्वाशुद्धवस्त्रंधृत्वाज्ञानप्राप्तिद्वारामोक्षसिद्ध्यर्थमातुरविधिनासंन्यासमहंकरिष्ये पंचकेशानवशेष्यवपनंकृत्वास्नात्वासंध्याद्यौपासनहोमांतंयथासंभवंसंपाद्यात्मनिसमारोपंकुर्यात् अग्निहोत्रीतुप्राजापत्यादिस्थानेपूर्णाहुतिंकृत्वाश्रौताग्निमात्मनिसमारोपयेत् उच्छिन्नाग्नीनांपुनराधानसंभवेसमारोपोन्यथातुनसमारोपः विधुरादीनामग्न्यभावादेवसमारोपोनावश्यकः ततस्तोयमादायाप्सुजुहोति एषहवाअग्नेर्योनिर्यःप्राणःप्राणंगच्छस्वाहा १ आपोवैसर्वादेवताःसर्वाभ्योदेवताभ्योजुहोमिस्वाहा २ भूःस्वाहेतिजलेजलैर्हुत्वाहुतशेषंजलमाशुःशिशानइत्यनुवाकेनाभिमंत्र्य पुत्रेषणावित्तेषणालोकैषणामयात्यक्ताःस्वाहेतिकिंचित्पिबेत् अभयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहेतिद्वितीयंपिबेत् संन्यस्तंमयेतिनिःशेषंतृतीयंततःपूर्ववत्सावित्रीप्रवेशः ततःप्राङ्मुखऊर्ध्वबाहुःप्रेषोच्चारंपूर्ववत्कुर्यात् अभयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहेतिप्राच्यांजलिंक्षिपेत् शिखामुत्पाट्ययज्ञोपवीतंछित्वाभूःस्वाहेत्यप्सुहुत्वापुत्रगृहेनतिष्ठेत् अत्यंतमातु

रश्चेत्प्रेषमात्रंवावदेत् जीवतिचेत्स्वस्थःसन्महावाक्योपदेशदंडग्रहणादिसर्वंकुर्यात् एवमातुरविधिनासंन्यासेमृतस्ययतिवत्संस्कारः ॥

तिसका प्रयोग—मंत्रस्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण करके " ज्ञानप्राप्तिद्वारा मोक्षसिद्ध्यर्थमातुरविधिनासंन्यासमहं करिष्ये," पांच वालोंकों शेष रखके क्षौर करायके स्नानसंध्या आदिसें आरंभ करके औपासनहोमपर्यंत जैसा संभव होवै तिसके अनुसार कर्म करके अपनेविषे समारोप करना. अग्निहोत्री होवै तौ तिसनें प्राजापत्यादि स्थानोंमें पूर्णाहुति करके अपनेमें अग्निका समारोप करना. उच्छिन्न हुए अग्निका समारोप पुनराधानका संभव होवै तौ करना. तैसा संभव नहीं होवै तौ समारोप करना नहीं. विधुर आदिकोंकों अग्नि नहीं होनेसें समारोप आवश्यक नहीं है. पीछे जल लेके जलमें होम करना. **तिसके मंत्र**—"**एषहवाअग्नेर्योनिर्यःप्राणःप्राणंगच्छस्वाहा १ आपोवैसर्वादेवताः सर्वाभ्यो जुहोमिस्वाहा २ भूःस्वाहा**" इस प्रकारसें जलमें जलसें होम करके होमसें शेष रहा जल "**आशुःशिशान**" इस अनुवाकसें अभिमंत्रण करके "**पुत्रेषणा वित्तेषणा लोकेषणा मया त्यक्ताः स्वाहा**" इस मंत्रसें थोडासा जल प्राशन करना. "**अभयं सर्वभूतेभ्यो मत्तः स्वाहा**" इस मंत्रसें दूसरी वार प्राशन करना. "**संन्यस्तं मया**" इस मंत्रसें तीसरी वार सब जल प्राशन करना. पीछे पहलेकी तरह सावित्रीप्रवेश करना. पीछे पूर्वके तर्फ मुखवाला और उपरकों बाहुओंवाला होके पहलेकी तरह प्रेषोच्चार करना. "**अभयं सर्वभूतेभ्यो मत्तः स्वाहा**" इस मंत्रसें पूर्व दिशाके तर्फ जल छोडना. शिखा उपाडके, यज्ञोपवीत तोडके "**भूःस्वाहा**" इस मंत्रसें जलमें आहुति देनी. पुत्रके घरमें रहना नहीं. अथवा अत्यंत आतुर होवै तौ प्रेष मात्र उच्चारण करना. जो जीवै तौ स्वस्थ होके महावाक्योंका उपदेश और दंडका ग्रहण आदि संपूर्ण कर्म करना. इस प्रकार आतुरविधिकरके संन्यासकों प्राप्त होके मृत हुएका संन्यासीकी तरह संस्कार करना.

अथमृतयतिसंस्कारः पुत्रःशिष्योवास्नात्वावपनंकृच्छ्रत्रयंचाधिकारार्थंकुर्यात् पुत्रातिरिक्तस्यवपनंकृताकृतं देशकालौस्मृत्वाब्रह्मीभूतस्ययतेःशौनकोक्तविधिनासंस्कारंकरिष्ये नवंकलशंतीर्थैनापूर्य गंगेचयमुने० नारायणःपरंब्रह्म०यच्चकिंचिज्जगत्सर्वं० इतिमंत्रैरभिमंत्र्यरुद्रसूक्तविष्णुसूक्तापोहिष्ठादिभिर्यतेःस्नानंविधाय चंदनादिभिःकलेवरंसंपूज्यमाल्यादिभिरलंकृत्यवाद्यघोषादिभिःशुद्धदेशंनयेत् जलेस्थलेवासमाहितंकुर्यात् स्थलपक्षेगर्तंव्याहृतिप्रोक्षितभुविदंडप्रमाणंकृत्वा मध्येसूक्ष्मगर्तंसार्धहस्तंकृत्वा सप्तव्याहृतिभिः पंचगव्येन त्रिःप्रोक्ष्यजलपक्षेनद्यांपंचगव्यंप्रक्षिप्यकुशानास्तीर्यसावित्र्यादेहंप्रोक्ष्य शंखोदकेनपुरुषसूक्तेनाष्टोत्तरशतावृत्तप्रणवैश्चसंस्नाप्याष्टाक्षरेणषोडशोपचारैःसंपूज्य तुलसीमालाद्यैरलंकृत्यविष्णोहव्यंरक्षस्वेतिदेहं गर्तेनद्यांवाक्षिपेत् इदंविष्णुरितिदंडंत्रेधाभग्नंदक्षिणहस्तेस्थापयेत् हंसःशुचिषदितिपरेणनाकं निहितंगुहायांविभ्राजदेतद्यतयोविशंति वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाःसंन्यासयोगाद्यतयःशुद्धसत्वाः इतिहृदयेजपेत् पुरुषसूक्तंभ्रुवोर्मध्येजपेत् ब्रह्मजज्ञानमितिमूर्धनि मूर्धानंभूर्भुवःस्वश्चेत्युक्त्वाशंखेनभेदयेत् अथवा भूमिर्भूमिमगान्मातामातरमप्यगात् भूयास्मपुत्रैःपशुभिर्योनोद्वेष्टिसभिद्यतामितिमंत्रेणपरश्वादिनाभेदयेत् शिरोभेत्तुमशक्तः शिरस्थापितंगुडपिंडादिकंभि

द्यात् गर्तंपुरुषसूक्तेनलवणेनप्रपूरयेत् सृगालश्वादिरक्षार्थंसिकतादिभिः प्रपूरयेत् नद्यादौशिरोभेदनोत्तरंदर्भैराच्छाद्यव्याहृतिभिरभिमंत्र्यपाषाणंबध्वा ॐस्वाहेतिह्रदेन्यसेत् ततोग्निनाग्निःस० त्वंह्यग्नेअग्निना० तंमर्जयंतसुक्रतुं० यज्ञेनयज्ञं० इत्यृक्चतुष्टयेनचित्तिःस्रुगित्यादिभिर्दशहोत्रादिसंज्ञकयजुर्मंत्रैश्चाभिमंत्रयेत् अतोदेवाइतिजापित्वापापैर्मुक्ताअश्वमेधादिफलभागिनोवयमितिभावयंतोवभृथबुद्धया सर्वेनुगामिनःस्नात्वा गंधादिधृत्वासोत्सवागृहंगच्छेयुः अत्रपरमहंसस्यस्थलेसमाधिर्मुख्यः जलेमध्यमः कुटीचकंतुप्रदहेत्पूरयेच्चबहूदकं हंसोजलेतुनिक्षेप्यःपरमहंसंप्रपूरयेदितिवचनात् अत्रपरमहंसंप्रकीरयेदितिक्वचित्पाठः एकोद्दिष्टंजलंपिंडमाशौचंप्रेतसत्क्रियां नकुर्याद्वार्षिकादन्यद्ब्रह्मीभूतायभिक्षवे कुटीचकातिरेकेणनदहेद्यतिनंकचित् ॥

अब मृत हुए संन्यासीका संस्कार कहताहुं.

पुत्र अथवा शिष्यनें स्नान करके क्षौर और अधिकारके अर्थ तीन कृच्छ्र प्रायश्चित्त करना. पुत्रसें वर्जितनें क्षौर कराना अथवा नहीं कराना. देशकालका स्मरण करके "ब्रह्मीभूतस्य यतेः शौनकोक्तविधिना संस्कारं करिष्ये." नवीन कलश तीर्थके जलसें भरके "गंगे च यमुने० नारायणः परंब्रह्म० यच्च किंचिज्जगत्सर्वम्०" इन मंत्रोंसें अभिमंत्रण करके रुद्रसूक्त, विष्णुसूक्त और "आपोहिष्ठा आदि" ऋचा इन्होंकरके संन्यासीकों स्नान करायके चंदन आदि उपचारोंसें शरीरकी पूजा करके माला आदिकोंसें अलंकृत करके बाजोंके शब्द आदिकरके शुद्ध देशमें ले जाना. पीछे जलमें किंवा स्थलमें स्थापित करना. स्थलपक्षमें खड्डा करना होवै तौ व्याहृतिमंत्रोंसें पृथिवीका प्रोक्षण करके दंडके प्रमाण खड्डा करके तिस खड्डेके मध्यभागमें डेढ हाथ परिमित छोटा खड्डा करके सात व्याहृतियोंसें पंचगव्यसें तीन वार प्रोक्षण करके; जलपक्षमें नदीविषे पंचगव्य डालके कुशाओंका आस्तरण करके गायत्री मंत्रसें देह प्रोक्षण करके, शंखके जलसें पुरुषसूक्त और ॐकारकी एकसौ आठ आवृत्ति करके स्नान करायके अष्टाक्षरमंत्रसें षोडशोपचारोंसें पूजा करके तुलसीकी माला आदिसें अलंकृत करके "विष्णो हव्यं रक्षस्व" इस मंत्रसें देह खड्डेमें अथवा नदीमें छोडना. "इदंविष्णु०" इस मंत्रसें तीन जगह भग्न हुए दंडकों दाहिने हाथपर स्थापन करना. "हंसःशुचिषत्०" और "परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजदेतद्यतयो विशंति ॥ वेदांतविज्ञानसुनिश्चितार्थाः संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्वाः" ये मंत्र हृदयके स्थानमें जपने. भृकुटीयोंके मध्यभागमें पुरुषसूक्तका जप करना. "ब्रह्मजज्ञानं०" इस मंत्रका जप मस्तकविषे करना. "भूर्भुवःस्वः" इस मंत्रकों कहके शंखसें मस्तक फोडना. अथवा "भूमिर्भूमिमगान्मातामातरमप्यगात् ॥ भूयास्मपुत्रैः पशुभिर्योनोद्वेष्टिसविद्यताम्" इस मंत्रसें फरश आदि करके मस्तक फोडना. मस्तक फोडनेविषे असमर्थ होवै तौ शिरपर स्थापित किये गुडके पिंड आदिकों फोडना. "पुरुषसूक्त कहके नमकसें खड्डा भरना." शियाल और कुत्ता आदिसें रक्षाके अर्थ वालू आदिसें खड्डा भर देना. नदी आदिमें शिरका भेद करनेके उपरंत डाभोंसें आच्छादित करके व्याहृतियोंसें अभिमंत्रण करके पत्थर बांधके "ॐस्वाहा" इसमंत्रसें न्हदमें स्थापित करना. पीछे "अग्निनाग्निःस० त्वंह्यग्नेअग्निना०

तंमर्जयंतसुक्रतुं० यज्ञेनयज्ञं० " इन चार ऋचाओंसें और " **चित्तिस्रुक्** " इत्यादिक दशहोत्रादिसंज्ञक यजुर्मंत्रोंसें अभिमंत्रण करना. " **अतोदेवा०** " इस मंत्रका जप करके " पापोंसें मुक्त और अश्वमेध आदि यज्ञके फलभागी हम हुए हैं " ऐसी भावना करते हुए सर्व अनुगमन करनेवालोंनें अवभृथबुद्धिसें स्नान करके गंध आदिकों धारण करके उत्सवयुक्त होके घरकों जाना. यहा परमहंसका समाधि स्थलमें मुख्य है; जलमें मध्यम है; क्योंकी, " कुटीचक संन्यासीका दहन करना; बहूदक संन्यासीकों गाड देना; हंससंज्ञक संन्यासीकों जलमें छोडना और परमहंससंज्ञक संन्यासीकों स्थलमें प्रपूरित करना ", ऐसा वचन कहा है. इस वचनमें ' **प्रपूरयेत्** ' इसकी जगह ' **प्रकीरयेत्** ' अर्थात् प्रकीर्ण करना ऐसा पाठ कहींक कहा है " ब्रह्मीभूत जो संन्यासी तिसके अर्थ वार्षिकश्राद्धसें अन्य एकोद्दिष्ट, जलांजलि, पिंड, आशौच, प्रेतक्रिया ये करने नहीं. कुटीचकसंज्ञक संन्यासीके विना अन्य संन्यासीका कभीभी दाह नहीं करना.

ततःकर्तास्नात्वाचम्य सिद्धिंगतस्यब्रह्मीभूतभिक्षोस्तृप्त्यर्थंतर्पणंकरिष्येइतिसंकल्प्यसव्येन देवतीर्थेनैवात्मानमंतरात्मानंपरमात्मानमितिचतुश्चतुस्तर्पयित्वा शुक्लपक्षेमृतस्यकेशवादिद्वादश नामभिः कृष्णपक्षेमृतस्यसंकर्षणादिद्वादशनामभिःकेशवंतर्पयामीत्येवंद्वितीयांतैःकुर्यात् इदं क्षीरेणेतिकेचित् ततःसिद्धिगतस्यभिक्षोस्तृप्त्यर्थंनारायणपूजनंबलिदानंघृतदीपदानंचकरिष्ये इतिसंकल्प्य देवयजनोपरितीरेवामृन्मयलिंगंकृत्वापुरुषसूक्तेनाष्टाक्षरेणचषोडशोपचारपूजां कृत्वाघृतमिश्रपायसबलिंदत्वा घृतदीपंचसमर्प्यपायसबलिंजलेक्षिपेत् ततःॐनमोब्रह्मणेनम इतिशंखेनाष्टार्घ्यान्दत्वागृहंव्रजेदितिप्रथमदिनकृत्यं एवंदशदिनांतंप्रत्यहंतर्पणंलिंगपूजनंपायस बलिदीपदानादिकुर्यात् ॥

पीछे कर्तानें स्नान करके और आचमन करके " **सिद्धिंगतस्य ब्रह्मीभूतभिक्षोस्तृप्त्यर्थं तर्पणं करिष्ये** " ऐसा संकल्प करके सव्य होके देवतीर्थकरकेही "**आत्मानमंतरात्मानं परमात्मानम्** " ऐसा वाक्य कहके चारवार तर्पण करके शुक्लपक्षमें मृत हुएका **केशव** आदि बारह नामोंसें और कृष्णपक्षमें मृत हुएका **संकर्षण** आदि बारह नामोंसें " **केशवं तर्पयामि** " ऐसा द्वितीयाविभक्त्यंत करके तर्पण करना. यह तर्पण दूधसें करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. पीछे " **सिद्धिंगतस्य भिक्षोस्तृप्त्यर्थं नारायणपूजनं बलिदानं घृतदीपदानं च करिष्ये** " ऐसा संकल्प करके देवयज्ञभूमिपर अथवा तीरपर मृत्तिकाका लिंग बनायके पुरुषसूक्तसें और अष्टाक्षरमंत्रसें षोडशोपचार पूजा करके घृतमिश्र खीरका बलि देके घृतका दीपक समर्पण करके खीरका बलि जलमें डालना. पीछे " **ॐनमोब्रह्मणेनमः०** " इस मंत्रसें शंखसें आठ अर्घ्य देके घरकों जाना. इस प्रकारसें पहले दिनका कृत्य कहा है. ऐसेही दश दिनपर्यंत नित्यप्रति तर्पण, लिंगपूजन, खीरका बलि और दीपदान ये करने.

अथैकादशेहनिपार्वणश्राद्धं तत्रमध्याह्नेनद्यादौश्राद्धांगतिलतर्पणंकृत्वादेशकालौस्मृत्वाप्राचीनावीती अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणोब्रह्मीभूतस्यास्मत्पितुःकरिष्यमाणदर्शादिसर्वश्राद्धाधिकारार्थमाद्यपार्वणश्राद्धंकरिष्येइतिपुत्रादिःसंकल्पयेत् शिष्यस्तुब्रह्मीभूतगुरोः प्रत्यब्दादिश्राद्धा

धिकारार्थंतत्पितृसंबंधिनामगोत्रोद्देश्यतासिद्ध्यर्थंचपार्वणश्राद्धमितिसंकल्पयेत् अन्यत्समानं पुरूरवार्द्रवसंज्ञकाविश्वेदेवाःपितृपितामहप्रपितामहानांनामगोत्रादिसहितानामुच्चारः सर्वत्रपितुर्ब्रह्मीभूतइतिविशेषणमात्रमधिकं शेषंप्रत्यब्दश्राद्धवत् केचिच्छिष्यःकर्ताचेदात्मांतरात्मपरमात्मनउद्दिश्य साधुरुरुसंज्ञकदेवयुतंसव्येनदेवधर्मकंनांदीश्राद्धवदेकादशाहेपार्वणश्राद्धंकुर्यादित्याहुः अत्रसर्वत्रविस्तरस्तोरोक्तसंन्यासपद्धतौद्रष्टव्यः ॥

अब ग्यारहमे दिनमें पार्वणश्राद्ध करना.—तिस दिनमें मध्यान्हविषे नदी आदिमें श्राद्धांगतिलतर्पण करके देशकालका स्मरण करके अपसव्य होके "अमुकगोत्रस्यामुकशर्मणो ब्रह्मीभूतस्यास्मत्पितुः करिष्यमाणदर्शादिसर्वश्राद्धाधिकारार्थमाद्यपार्वणश्राद्धं करिष्ये" ऐसा पुत्र आदिनें संकल्प करना. श्राद्ध करनेवाला शिष्य होवै तौ तिसनें "ब्रह्मीभूतगुरोः प्रत्यब्दादि श्राद्धाधिकारार्थं तत्पितृसंबंधिनामगोत्रोद्देश्यतासिद्ध्यर्थं च पार्वणश्राद्धम्" ऐसा संकल्प करना. अन्य सब समान है. पुरूरवार्द्रवसंज्ञक विश्वेदेव लेने. नामगोत्र आदिसहित पिता, पितामह, प्रपितामह इन्होंका उच्चार करना. सब जगह पिताकों 'ब्रह्मीभूत' ऐसा विशेषण मात्र अधिक योजित करना. शेष कर्म प्रतिसांवत्सरिक श्राद्धकी तरह जानना. कितनेक ग्रंथकार शिष्य कर्ता होवै तौ, आत्मा, अंतरात्मा, परमात्मा इन्होंके उद्देश करके साधुरुरुसंज्ञक देवतोंसें युक्त ऐसा सव्यकरके देवधर्मसें युक्त नांदीश्राद्धकी तरह ग्यारहमे दिनमें पार्वणश्राद्ध करना ऐसा कहते हैं. इस श्राद्धविषे सब जगह विस्तार तोरोक्त संन्यासपद्धति ग्रंथमें कहा है.

अथद्वादशाहेनारायणबलिः देशादिस्मृत्वासिद्धिंगतस्याभिक्षोःसंभावितसर्वपापक्षयपूर्वकं विष्णुलोकावाप्तिद्वाराश्रीनारायणप्रीत्यर्थंनारायणबलिंकरिष्ये इतिसंकल्प्यत्रयोदशयतीन्विप्रान्वानिमंत्र्यशुक्लपक्षेकेशवरूपिगुर्वर्थेत्वयाक्षणःकर्तव्यइत्येवं दामोदरांतकेशवादिद्वादशनामभिःक्षणोदेयः कृष्णेतुसंकर्षणादिद्वादशनामभिः त्रयोदशंविप्रंविष्णवर्थेत्वयाक्षणःकर्तव्यइति निमंत्र्यपादान्प्रक्षाल्यप्राङ्मुखानुपवेशयेत् विप्राग्रेस्थंडिलेग्निप्रतिष्ठापनादि अन्वाधानेचक्षुष्याज्येनेत्यंतेग्निंवायुंसूर्यंप्रजापतिंचव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिरेकैकपायसाहुत्या विष्णुमतोदेवाइतिषड्भिः प्रत्यृचमेकैकपायसाहुत्यानारायणंपुरुषसूक्तेनप्रत्यृचमेकैकपायसाहुत्याशुक्लेकेशवादिद्वादशदेवताः कृष्णेसंकर्षणादिद्वादशदेवताः एकैकपायसाहुत्याशेषेणेत्यादिद्विपंचाशदधिकशतमुष्टीनिरूप्यबलिपर्याप्ततंडुलानोप्याष्टत्रिंशदाहुतिपर्याप्तं पुरुषाहारमितविष्णुनैवेद्यपर्याप्तंच क्षीरेश्रपयित्वाज्यभागांतेग्निपूर्वतः शालग्रामेविष्णुंसूक्तेनाष्टाक्षरेणचषोडशोपचारैःसंपूज्य स्रुचाहस्तेनवान्वाधानानुसारेणहोमत्यागौविदध्यात् एवंशुक्लकृष्णभेदेनकेशवादिद्वादशांताः संकर्षणाद्यंतावाष्टत्रिंशदाहुतीर्हुत्वास्विष्टकृदादिशेषंसमाप्यपुनः शालग्रामंसंपूज्यविष्णुगायत्र्याविष्णवेर्घ्यंदत्वाहुतशेषपायसेनविष्णवेबलिंदत्वा निमंत्रितत्रयोदशविप्रान्केशवादिक्रमेणकेशवरूपिगुरवेनमइदमासनमित्यादिनासनगंधपुष्पधूपदीपाच्छादनानिदत्वा त्रयोदशेविप्रेपुरुषसूक्तेनप्रत्यृचांते विष्णवेनमइत्येवमादिनाविष्णुंदीपांतोपचारैःपूजयेत्चतुरस्रमंडलेषुत्रयोदशभोजनपात्राण्यासाद्योपस्तीर्यान्नंपरिषिच्यपृथिवीतेपात्रमित्यादिनाकेशवादिद्वादशोद्देशेनविष्णूद्दे

शेनचान्नंत्यक्त्वाअतोदेवा० ॐतद्ब्रह्म ॐतद्वायुर्ब्रह्मार्पणमित्याद्यापोशनादिप्राणाहुत्यंतेनारायणाद्युपनिषद्भागान्पठेत् तृप्तिप्रश्नांतेआचांतेषुप्रागग्रान्दर्भानास्तीर्याष्टाक्षरेणाक्षतोदकंदत्वाकेशवरूपिणेगुरवेऽयंपिंडःस्वाहानमम इत्येवंद्वादशपिंडान्दद्यात् कृष्णेतुसंकर्षणादिनामभिरिति सर्वत्र पिंडेषुविष्णुंसंपूज्यपुरुषसूक्तेनस्तुत्वाविसर्जयेत् विप्रेभ्यस्तांबूलदक्षिणादिदत्वात्रयोदशायविप्रायनाभ्याआसीदित्याद्यृक्त्रयेणफलतांबूलदक्षिणांदत्वानमस्कृत्यतांशालग्राममूर्तिमाचार्यायदद्यात् इतिनारायणबलिविधिः ॥

अब बारहमे दिनमें नारायणबलि कहताहुं.—देशकालका स्मरण करके "**सिद्धिंगतस्य भिक्षोः संभावितसर्वपापक्षयपूर्वकं विष्णुलोकावाप्तिद्वारा श्रीनारायणप्रीत्यर्थं नारायणबलिं करिष्ये**" ऐसा संकल्प करके तेरह संन्यासी अथवा ब्राह्मणोंकों निमंत्रण करके शुक्लपक्षविषे "**केशवरूपिगुर्वर्थे त्वया क्षणः कर्तव्यः**" इस प्रकार दामोदर नामपर्यंत केशव आदि बारह नामोंकरके क्षण देना. कृष्णपक्षमें तौ संकर्षण आदि बारह नामोंसें क्षण देना. तेरहमे ब्राह्मणकों "**विष्णवर्थं त्वया क्षणः कर्तव्यः**" ऐसा निमंत्रण करके पैरोंकों धोके ब्राह्मणकों पूर्वाभिमुख वैठाना. ब्राह्मणके आगे स्थंडिलपर अग्निस्थापन आदि करना. अन्वाधानमें "**चक्षुषीआज्येनेत्यंतेग्निं वायुं सूर्यं प्रजापतिं च व्यस्तसमस्तव्याहृतिभिरेकैकपायसाहुत्या विष्णुमतोदेवाइतिषड्भिः प्रत्यृचमेकैकपायसाहुत्या नारायणं पुरुषसूक्तेन प्रत्यृचमेकैकपायसाहुत्या शुक्ले केशवादिद्वादशदेवताः कृष्णे संकर्षणादिद्वादशदेवताः एकैकपायसाहुत्याशेषेणेत्यादि**" इस प्रकारसें अन्वाधान करके एकसौ बावन मुष्टि चावल लेके बलीकी पूर्ति हो सकै तितने चावल लेके अठतीस आहुति हो सकै इतना और पुरुषकों भोजनके परिमित विष्णुनैवेद्य हो सकै तितना चरु दूधमें पकायके आज्यभागपर्यंत कर्म हुए पीछे अग्निके पूर्वप्रदेशमें शालग्रामविषे विष्णुकी पुरुषसूक्तसें और अष्टाक्षरमंत्रसें षोडशोपचारोंसें पूजा करके स्रुचीसें अथवा हाथसें अन्वाधानमें कहे प्रमाणसें होम और त्याग करने. इस प्रकारसें शुक्लकृष्णभेदकरके केशव आदि बारह अथवा संकर्षण आदि बारह ऐसी अठतीस आहुतियोंसें होम करके स्विष्टकृत आदि होमशेष समाप्त करके फिर शालग्रामकी पूजा करके विष्णुगायत्रीसें विष्णुके अर्थ अर्घ्य देके होम करके शेष रहे खीरसें विष्णुके अर्थ बलि देना. निमंत्रण किये तेरह ब्राह्मणोंकों केशव आदि क्रमसें "**केशवरूपिगुरवे नम इदमासनम्**" इत्यादि वाक्यसें आसन, गंध, पुष्प, धूप, दीप और आच्छादन ये उपचार देके तेरहमें ब्राह्मणविषे पुरुषसूक्तकी प्रत्येक ऋचाके अंतमें "**विष्णवे नमः**" इत्यादि प्रकारसें दीपकपर्यंत उपचारोंसें विष्णुकी पूजा करनी. चौकूंटे मंडलमें तेरह भोजनपात्र धरके तिन्होंकों घृत लगायके अन्न परोशके "**पृथिवीते पात्रम्०**" इत्यादि वाक्यसें केशव आदि बारह देवतोंके उद्देशसें और विष्णुके उद्देशसें अन्नका त्याग करके "**अतोदेवा०, ॐतद्ब्रह्म, ॐतद्वायुः, ॐब्रह्मार्पणम्०**" इत्यादि वाक्योंसें आपोशनसें प्रारंभ करके प्राणाहुतिपर्यंत कर्म करनेके अनंतर नारायण आदि उपनिषद्भागका पाठ करना. तृप्तिप्रश्नपर्यंत कर्म करके ब्राह्मणोंका आचमन होनेके अनंतर पूर्वकी तर्फ अग्रभाग होवै ऐसे डाभ विछायके अष्टाक्षरमंत्रसें अक्षत और जल लेके "**केशवरूपिणे गुरवेऽयं पिंडः स्वाहा नमम**" इस प्रकारसें बारह पिंड देने. कृष्णपक्षमें तौ, संकर्षण

आदि नामोंसें देने ऐसा सब जगह जानना. पिंडोंकेविषे विष्णुकी पूजा करके पुरुषसूक्तसें स्तुति करके विसर्जन करना. ब्राह्मणोंके अर्थ तांबूल, दक्षिणा इत्यादिक देके तेरहमे ब्राह्मणको “नाभ्याआसी०” इन तीन ऋचाओंसें फल, तांबूल और दक्षिणा देके नमस्कार करके शालग्रामकी मूर्ति आचार्यके अर्थ देनी. इस प्रकारसें नारायणबलि कहा है.

अथद्वादशाहेत्रयोदशाहेवायथाचारमाराधनं तत्रप्रयोगः देशकालौस्मृत्वाश्रीनारायणप्रीत्यर्थमाराधनंकरिष्यइतिसंकल्प्य गुर्वर्थेक्षणःकर्तव्यः एवंपरमगुर्वर्थेपरमेष्ठिगुर्वर्थेपरात्परगुर्वर्थे एवंविप्रचतुष्टयंनिमंत्र्य शुक्लेकेशवादिनामभिःकृष्णेसंकर्षणादिनामभिःद्वादशविप्रान्निमंत्रयेत् एवंषोडशविप्राःयतयोवा अशक्तोयथाशक्तिविप्रान्निमंत्र्ययथायथंषोडशक्षणादेयाः षोडशानांपादक्षालनंकृत्वाचम्यपादक्षालनोदकंपात्रांतरेगृहीत्वागंधपुष्पादिभिःपूजयेत् विप्रान्प्राङ्मुखानुदङ्मुखान्वोपवेश्यषोडशोपचारैर्गंधादिपंचोपचारैर्वासंपूज्य सपरिकरमन्नंपरिविष्यगायत्र्याप्रोक्ष्यगुरवेइदमन्नंपरिविष्टंपरिवेक्ष्यमाणंचातृप्तेःस्वाहाहव्यंनमम एवंपरमगुर्वादिभ्यःपंचदशभ्योन्नत्यागंकृत्वाब्रह्मार्पणमित्यादि भुक्तेष्वाचांतेषुतेषुतांबूलदक्षिणावस्त्रादिभिःपूजयेत् अत्रकेचित्पूर्वंस्थापितपादोदकतीर्थपूजांकुर्वंति तद्यथा तीर्थपात्रंतंडुलादिकृतमंडलेसंस्थाप्य पुरुषसूक्तेनतीर्थराजायनमइतिषोडशोपचारैः संपूज्यतत्पात्रंशिरसिधृत्वा बंधुभिःसहविप्रान्प्रदक्षिणीकृत्यगुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुरितिनत्वाप्रथमविप्रहस्तात्तत्तीर्थंपिबेत् तत्रमंत्रः अविद्यामूलशमनं सर्वपापप्रणाशनं पिबामिगुरुपत्तीर्थंपुत्रपौत्रप्रवर्धनमिति कर्मेश्वरार्पणंकृत्वासुहृद्युतोभुंजीतवर्षपर्यंतंप्रतिमासंमृततिथावेवमेवाराधनंकार्यंनतुप्रतिमासिकश्राद्धंप्रत्यब्दंतुपार्वणश्राद्धं कृत्वाराधनमपिकार्यं ततोदर्शमहालयादिश्राद्धान्यपिसर्वसाधारण्येन कार्याणि नतत्रविशेषः इत्याराधनविधिः ॥

इसके अनंतर बारहमे दिनमें अथवा तेरहमे दिनमें जैसा आचार होवै तिसके अनुसार आराधन करना.

तिसविषे प्रयोग—देशकालका स्मरण करके “श्रीनारायणप्रीत्यर्थमाराधनं करिष्ये” ऐसा संकल्प करके “गुर्वर्थे क्षणः कर्तव्यः” इस प्रकार “परमगुर्वर्थे०, परमेष्ठिगुर्वर्थे०, परात्परगुर्वर्थे०” ऐसा चार ब्राह्मणोंकों निमंत्रण देके शुक्लपक्षमें केशव आदि नामोंकरके और कृष्णपक्षमें संकर्षण आदि नामोंकरके बारह ब्राह्मणोंकों निमंत्रण करना. इस प्रकारसें सोलह ब्राह्मण अथवा संन्यासीकों निमंत्रण करना. अशक्त होवै तौ तिसनें अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणोंकों निमंत्रण करके यथायोग्य सोलह क्षण देने. सोलह ब्राह्मणोंका पादप्रक्षालन करके आचमन करके पादप्रक्षालनका जल दूसरे पात्रमें लेके तिसकी गंध, पुष्प आदिसें पूजा करनी. ब्राह्मणोंकों पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठायके सोलह उपचारोंसें किंवा गंध आदि पांच उपचारोंसें पूजा करके सोपस्कर अन्न परोशके तिसकों गायत्रीमंत्रसें प्रोक्षण करके “गुरवे इदमन्नं परिविष्टं परिवेक्ष्यमाणं चातृप्तेः स्वाहा हव्यं न मम” इस प्रकार परम गुरु आदिक पंदरह ब्राह्मणोंकों अन्नत्याग करके “ब्रह्मार्पणम्०” इत्यादि कर्म करना. ब्राह्मणोंकों भोजन करायके आचमन करनेके अनंतर तिन्होंकी तांबूल, वस्त्र,

दक्षिणा इन आदिकरके पूजा करनी. इस स्थलमें कितनेक शिष्ट पूर्व स्थापन किया जो पादोदकतीर्थ तिसकी पूजा करते हैं. सो ऐसी—तीर्थपात्र, चावल आदियोंसें किये मंडलपर स्थापन करके पुरुषसूक्तसें और “ **तीर्थराजाय नमः** ” इस मंत्रसें तिसकी षोडशोपचारोंसें पूजा करके वह पात्र मस्तकपर धारण करके बंधुओंसहित ब्राह्मणोंकी परिक्रमा करके “ **गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु०** ” इस मंत्रसें नमस्कार करके प्रथम ब्राह्मणके हाथसें तिस तीर्थके जलकों प्राशन करना. प्राशनका मंत्र—“ **अविद्यामूलशमनं सर्वपापप्रणाशनम् ॥ पिबामि गुरुपत्तीर्थं पुत्रपौत्रप्रवर्धनम्** ” कर्म ईश्वरकों समर्पण करके आप्तवर्गोंके साथ भोजन करना. इस प्रकारसें वर्षपर्यंत प्रतिमासविषे मृततिथिके दिनमें ऐसीही आराधना करनी. प्रतिमासिकश्राद्ध नहीं करना. प्रतिवर्षमें तौ पार्वणश्राद्ध करके आराधनाभी करनी. पीछे दर्श, महालय आदि श्राद्धभी सब साधारणपनेसें करने. तिसविषे विशेष नहीं है. इस प्रकारसें आराधनविधि कहा है.

अत्रनारायणबलिपार्वणश्राद्धयोरेकदिनानुष्ठानपक्षेएकादशेवादिनेपूर्वंनारायणबलिंकृत्वा ततःपार्वणश्राद्धंकार्यं दिनद्वयेकरणपक्षेत्वेकादशेपार्वणंद्वादशेनारायणबलिः द्वादशेत्रयोदशेवादिनेआराधनं ऊनमासिकादिकालेष्वप्याराधनमितिकेचित् प्रतिमासमाराधनमित्यन्ये पार्वणश्राद्धंत्वेकादशाहप्रत्यब्दयोरेव तच्चपुत्रादीनामेवनियतं शिष्यादीनांतुनावश्यकं अपुत्रयतेस्तुशिष्येणापिप्रत्यब्दंपार्वणश्राद्धंकार्यं तदर्थंचनामगोत्रोल्लेखाधिकारार्थमेकादशेशिष्येणपार्वणश्राद्धंकार्यं ॥

यहां नारायणबलि और पार्वणश्राद्ध ये दोनों एक दिनविषे करनेका पक्ष होवै तौ ग्यारहमे दिनमें किंवा बारहमे दिनमें प्रथम नारायणबलि करके पीछे पार्वणश्राद्ध करना. दो दिनोंमें करनेका पक्ष होवै तौ ग्यारहमे दिनमें पार्वणश्राद्ध और बारहमे दिनमें नारायणबलि करना. बारहमे अथवा तेरहमे दिनमें आराधन करना. ऊनमासिक आदिके कालमेंभी आराधन करना ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं. प्रतिमासमें आराधन करना, ऐसा दूसरे ग्रंथकार कहते हैं. पार्वणश्राद्ध तौ ग्यारहमे दिन और प्रतिवार्षिक इन्होंविषेही करना; और वह पुत्र आदिकोंकोंही आवश्यक है; शिष्य आदिकोंकों आवश्यक नहीं है. पुत्ररहित संन्यासीका तौ शिष्यनेंभी प्रतिवर्षमें पार्वणश्राद्ध करना. तिसके अर्थ और नामगोत्रके उल्लेखका अधिकार प्राप्त होनेके अर्थ ग्यारहमे दिनमेंही शिष्यनें पार्वणश्राद्ध करना.

नारायणबल्यादेर्द्वादशाहादावसंभवे शुक्लपक्षस्थद्वादशीश्रवणपंचम्यःपूर्णिमामावास्याचेति गौणकालाःअत्रपूर्वपूर्वःश्रेयान्भार्याकन्यास्नुषादेःस्त्रियाःयतिसंस्कारकर्तृत्वेतुविधवायाःवपनपूर्वकंकृच्छ्रत्रयाचरणं सधवायास्तुकृच्छ्राचरणमेव ॥

बारहमे आदि दिनमें नारायणबलि आदिका असंभव होवै तौ शुक्लपक्षकी द्वादशी, श्रवणनक्षत्र, पंचमी अथवा पौर्णमासी, अमावस ये गौणकाल कहे हैं. इन्होंमें पहला पहला काल श्रेष्ठ है. भार्या, कन्या, पुत्रकी वहु इन आदि स्त्री संन्यासीका संस्कार करनेवाली होवै तौ विधवा स्त्रीनें मुंडनपूर्वक तीन कृच्छ्र करने. सौभाग्यवतीनें तौ एक कृच्छ्रही प्रायश्चित्त करना.

देशांतरस्थपुत्रःपितुर्यतेःसिद्धिवार्तांश्रुत्वा वपनपूर्वकंस्नात्वाक्षीरतर्पणपूजनादिदशाहांतंकृ

त्वैकादशाहादौपार्वणनारायणबल्यादिसर्वमविकृतंकुर्यात् सन्निहितेनज्येष्ठेनकृतंचेत्कनिष्ठोन कुर्यात् ॥

देशांतरमें रहनेवाले पुत्रनें पिता जो संन्यासी तिसकी सिद्धिवार्ता सुनके मुंडनपूर्वक स्नान करके दुग्धतर्पण, पूजा आदि दश दिनपर्यंत कर्म करके ग्यारहमे आदि दिनमें पार्वणश्राद्ध, नारायणबलि इत्यादिक सब कर्म यथाविधि करना. समीपमें रहनेवाले ज्येष्ठ पुत्रनें किया होवै तौ कनिष्ठ पुत्रनें नहीं करना.

शुक्लकृष्णादिभेदेनकेशवादिनामानिमृततिथ्यनुरोधेनैवग्राह्याणि नतुवार्ताश्रवणतिथ्यनुरोधेन मृततिथ्यज्ञानेतुवार्ताश्रवणानुरोधेनैवयतिसंस्कारकरणेश्वमेधसहस्रादिफलं असंस्कृतंविशीर्येतयतेर्यत्रकलेवरं धर्मलोपोभवेत्तत्रदुर्भिक्षंमरणंतथा दिवंगतेगुरौशिष्यउपवासंतदाचरेत् नस्नानमाचरेद्भिक्षुःपुत्रादिनिधनेश्रुते पितृमातृक्षयंश्रुत्वास्नानाच्छुद्ध्यतिसांबरात् ॥

शुक्लकृष्ण आदि भेदसें केशव आदि नाम मृततिथिके अनुरोधसेंही ग्रहण करने. वार्ताश्रवण तिथिके अनुरोधसें ग्रहण नहीं करना. मृततिथिका ज्ञान नहीं होवै तौ वार्ता सुननेके अनुरोधसेंही ग्रहण करना. संन्यासीका संस्कार करनेमें हजार अश्वमेधयज्ञका फल मिलता है. "जिस प्रदेशमें विना संस्कारकों प्राप्त हुआ संन्यासीका शरीर पडा रहै तहां धर्मका नाश, दुर्भिक्ष और मरण ये प्राप्त होते हैं. गुरु स्वर्गस्थ होवै तिस कालमें शिष्यनें उपवास करना. पुत्र आदिके मरणकों सुनके संन्यासीनें स्नान नहीं करना. मातापिताका मरण सुना जावै तौ वस्त्रोंसहित स्नान करनेसें शुद्धि होती है."

अथप्रसंगाद्यतिधर्माः प्रातरुत्थायब्रह्मणस्पतइतिजपित्वादंडादीनिमृदंचादायमूत्रपुरीषयोर्गृहस्थचतुर्गुणंशौचंकृत्वाचम्यपर्वद्वादशीवर्ज्यंप्रणवेनदंतधावनंकृत्वा मृदाबहिःकटिंप्रक्षाल्यजलतर्पणवर्ज्यंस्नात्वापुनर्जंघेप्रक्षाल्यवस्त्रादीनिगृहीत्वाप्रणवेनप्राणायाममार्जनादिकृत्वाकेशवादिनमोंतनामभिस्तर्पयित्वा भूस्तर्पयामीत्यादिव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिर्महर्जनस्तर्पयामीति तर्पयेत् अत्रविशेषोमाधवादौविश्वेश्वर्यादौचज्ञेयः सूर्योपस्थानादिकंत्रिकालविष्णुपूजादिकंचसिंधौज्ञेयं विधूमेसन्नमुसलेव्यंगारेभुक्तवज्जने कालेपराह्णेभूयिष्ठेनित्यंभिक्षांयतिश्चरेत् अत्रभिक्षाभेदाःग्रंथांतरेज्ञेयाः अत्रविविदिषोर्दंडिनःमाधुकरीमुख्या दंडवस्त्रादिपरिग्रहणरहितस्यतुकरपात्रंमुख्यं अन्येपक्षाः अशक्तविषयाः तत्रमाधुकरीपक्षेदंडादिगृहीत्वापंचभ्यःसप्तभ्योवागृहेभ्यो भिक्षांयाचित्वान्नंप्रोक्ष्य भूःस्वधानमइत्यादिव्यस्तसमस्तव्याहृतिभिः सूर्यादिदेवेभ्योभूतेभ्यश्चभूमौक्षिप्त्वाशेषमन्नंविष्णुनिवेदितंभुंजीत चंडीविनायकादिनैवेद्यंनभुंजीत भुक्त्वाचम्यषोडशप्राणायामान्कुर्यादितिसंक्षेपः ॥

अब प्रसंगसें संन्यासीके धर्म कहताहुं.

प्रातःकालमें उठके "ब्रह्मणस्पते०" इस मंत्रका जप करके; दंड आदि और मृत्तिका आदि लेके मूत्रविष्ठाके निमित्तक शुद्धि गृहस्थीसें चौगुनी करके; आचमन करके; पर्व और द्वादशी वर्जित करके ॐकारसें दंतधावन करके; मृत्तिकासें बाहिरका कटिप्रदेश प्रक्षालन

करके; जलतर्पण वर्जित ऐसा स्नान करके; फिर जंघाओंका प्रक्षालन करके; वस्त्र आदि ग्रहण करके; प्रणवमंत्रसें प्राणायाम, मार्जन इत्यादि करके; केशव आदि नमोंतनाममंत्रसें तर्पण करके "**भूस्तर्पयामि**" इत्यादि व्यस्तसमस्तव्याहृतिमंत्रोंसें "**महर्जनस्तर्पयामि**" ऐसा तर्पण करना. इस विषयमें विशेष प्रकार **माधव** आदि और **विश्वेश्वर्यादि** ग्रंथमें कहा है. सूर्यकी प्रार्थना आदि और त्रिकाल विष्णुपूजा आदि **निर्णयसिंधुमें** देख लेना. धूमरहित, मूशलके आघातसें रहित, अग्निसें रहित और मनुष्योंका भोजन हो चुका होवै ऐसे विशेष अपराण्हकालमें संन्यासीनें नित्य भिक्षा करनी. इस विषयमें भिक्षाके भेद दूसरे ग्रंथमें देख लेने. यहां भिक्षाविषे विविदिषु संन्यासीकों माधुकरी भिक्षा मुख्य है. दंड और वस्त्र आदिके ग्रहणसें रहित संन्यासीकों हाथरूपी पात्र मुख्य है. अन्य भिक्षाके पक्ष असमर्थविषयक हैं. तहां माधुकरीपक्षमें दंड आदिकों ग्रहण करके पांच अथवा सात घरोंसें भिक्षा मांगके अन्नकों प्रोक्षित करके "**भूःस्वधानमः**" इत्यादिक व्यस्तसमस्तव्याहृतिमंत्रोंसें सूर्य आदि देवतोंके अर्थ और भूतोंके अर्थ पृथिवीपर अन्न देके शेष रहा अन्न विष्णुकों अर्पण करके भोजन करना. चंडी और गणेश आदि देवतोंके नैवेद्य भक्षण नहीं करने. भोजन किये पीछे आचमन करके सोलह प्राणायाम करने. ऐसा संक्षेप जानना.

यतिहस्तेजलंदद्याद्भिक्षांदद्यात्पुनर्जलं भैक्ष्यंपर्वतमात्रंस्यात्तज्जलंसागरोपमं एकरात्रंवसेत्ग्रामेनगरेपंचरात्रकम् वर्षाभ्योन्यत्रवर्षासुमासांश्चचतुरोवसेत् अष्टौमासान्विहारःस्याद्यतीनांसंयतात्मनां महाक्षेत्रप्रविष्टानांविहारस्तुनविद्यते भिक्षाटनंजपःस्नानंध्यानंशौचंसुरार्चनं कर्तव्यानिषडेतानिसर्वथानृपदंडवत् मंचकंशुक्लवस्त्रंचस्त्रीकथालौल्यमेवच दिवास्वापश्चयानंचयतीनांपतनानिषट् वृथाजल्पंपात्रलोभंसंचयंशिष्यसंग्रहं हव्यंकव्यंतथान्नंचवर्जयेच्चसदायतिः यतिपात्राणिमृद्वेणुदार्वलाबुमयानिच नतीर्थवासीनित्यंस्यान्नोपवासपरोयतिः नचाध्ययनशीलःस्यान्नव्याख्यानपरोभवेत् एतद्वेदार्थभिन्नपरं एतेसंक्षेपतोयतिधर्माः अन्येपिमाधवीयमिताक्षरादौज्ञेयाः ॥

सन्यासीके हाथपर जल घालके भिक्षा देके फिर जल देना. यह भिक्षाका अन्न पर्वततुल्य होता है और जल समुद्रतुल्य होता है. वर्षाकालके विना अन्य समयमें संन्यासीनें गाममें एक रात्रि वसना और नगरमें पांच रात्रि वसना. और वर्षाकालमें चार महीने एक जगह वसना. मनकों रोकनेवाले संन्यासीयोंनें आठ महीने भ्रमण करना. महाक्षेत्रमें रहनेवाले संन्यासीनें भ्रमण नहीं करना. भिक्षाके अर्थ भ्रमणा, जप, स्नान, ध्यान, शुचिर्भूतपना, देवताका पूजन ये छह निश्चय करके राजदंडकी तरह पालन करने. पलंग, सुपेद वस्त्र, स्त्रियोंकी कथा, चंचलपना, दिनमें नींद, सवारी ये छह संन्यासीयोंकों नरकमें प्राप्त करते हैं. वृथा बोलना, पात्रका लोभ, संचय, शिष्योंका संग्रह, हव्य और कव्य ऐसा अन्न, इन्होंकों संन्यासीनें सब कालमें वर्जित करना. संन्यासीके पात्र माटी, वास, काठ, तूंबी इन्होंके होते हैं. तीर्थवासी, उपवासतत्पर ऐसा संन्यासीनें नित्यप्रति होना नहीं. अध्ययन करना और व्याख्यान देना संन्यासीकों उचित नहीं है. अध्ययन और व्याख्यानका जो निषेध कहा है सो

वेदार्थसें भिन्नविषयक कहा है. ऐसे ये संन्यासीके धर्म संक्षेपसें कहे हैं. अन्यभी संन्यासीके धर्म माधव और मिताक्षरा आदि ग्रंथोंमें कहे हैं सो देख लेने.

प्रथमेत्रपरिच्छेदेकालसामान्यनिर्णयः द्वितीयेथपरिच्छेदेविशेषात्कालनिर्णयः ॥ १ ॥

इस धर्माब्धिसारग्रंथमें प्रथम परिच्छेदमें कालका सामान्यनिर्णय कहाहै. पीछे दूसरे परिच्छेदमें विशेषकरके कालका निर्णय कहा है.

तृतीयस्यचपूर्वार्धेगर्भाधानादिसंक्रिया: आह्निकंचप्रकीर्णार्थाआधानाद्याःसविस्तराः ॥ २ ॥
देवप्रतिष्ठाशांत्यादिनित्यंनैमित्तिकंतथा तार्तीयकोत्तरार्धेस्मिन्जीवत्पितृकनिर्णयः ॥ ३ ॥
श्राद्धाधिकारकालादेर्निर्णयःश्राद्धपद्धतिः सूतकादेर्निर्णयश्चनिर्णयोदुर्मृतावपि ॥ ४ ॥
अंत्येष्टिसंस्कारविधिःसंन्यासःसहविस्तरः प्रायश्चित्तंव्यवहृतिंसर्वदानविधिंविना ॥ ५ ॥
कृत्स्नोपिधर्मशास्त्रार्थःसंक्षेपेणात्रनिर्मितः विबुधानांचबालानांतुष्टयेकष्टहानये ॥ ६ ॥

तीसरे परिच्छेदके पूर्वार्धमें गर्भाधान आदि संस्कार; आन्हिककर्म; आधान आदि विस्तारसहित मिश्र विषय; देवप्रतिष्ठा, शांति आदिक; नित्यनैमित्तिक कर्म इतने विषय कहे हैं. तीसरे परिच्छेदके उत्तरार्धमें जिसका पिता जीवता होवै तिसका निर्णय; श्राद्धाधिकार; काल इन आदिकोंका निर्णय; श्राद्धकी पद्धति; सूतक आदिकोंका निर्णय; दुर्मरण होनेमेंभी निर्णय; अंत्येष्टिसंस्कारका विधि; विस्तारसहित संन्यास इस प्रमाणसें विषय कहे हैं. प्रायश्चित्त, व्यवहार, सब दानोंका विधि, इन्होंके विना सब प्रकारके धर्मशास्त्रार्थ, विद्वानोंके संतोषके अर्थ और जिन्होंकों शास्त्रका बोध नहीं है तिन्होंके शास्त्रसंबंधी अज्ञानरूपी कष्ट दूर करनेके अर्थ इस ग्रंथमें संक्षेपसें कहा है.

मूलभूतानि पद्यानि विकृतानि क्वचित्क्वचित् ॥
निर्विकाराण्यपि नवान्यप्युक्तान्यत्र कानिचित् ॥ ७ ॥

कहीं कहीं मूलके श्लोक अशुद्ध होनेसें यह ग्रंथमें कितने एक नवीनभी श्लोक शुद्ध करके लिखे हैं.

मीमांसाधर्मशास्त्रज्ञाःसुधियोनलसाबुधाः कृतकार्याःप्राङ्निबंधैस्तदर्थंनायमुद्यमः ॥ ८ ॥

ग्रंथकार यह ग्रंथ करनेका प्रयोजन कहे हैं.

मीमांसा, धर्मशास्त्र इन्होंकों जाननेवाले और बुद्धिमान्, आलस्यसें वर्जित ऐसे जो पंडित हैं वे महाविद्वानोंनें किये पूर्व बने ग्रंथोंसें कृतकार्य होते हैं ऐसे जो पंडित हैं तिन्होंके अर्थ यह मेरा उद्यम नहीं है.

येपुनर्मंदमतयोलसाअज्ञाश्चनिर्णयं धर्मेवेदितुमिच्छंतिरचितस्तदपेक्षया ॥ ९ ॥
निबंधोयंधर्मसिंधुसारनामासुबोधनः अमुनाप्रीयतांश्रीमद्विठ्ठलोभक्तवत्सलः ॥ १० ॥

जो मंदबुद्धिवाले, आलस्यवाले और अविद्वान् होके धर्मविषे निर्णय जाननेकी इच्छा कर-

नेवाले ऐसे जो मनुष्य हैं तिन्होंके वास्ते यह धर्मसिंधुसार नामवाला ऐसा यह सुबोध ग्रंथ रचा है. इस ग्रंथसें भक्तवत्सल ऐसे श्रीविठ्ठलजी प्रसन्न हो.

प्रेम्णासद्भिर्ग्रंथः सेव्यःशब्दार्थतःसदोषोपि ॥
संशोध्यवापिहरिणा सुदाममुनिसतुषपृथुकमुष्टिरिव ॥ ११ ॥

यह मेरा ग्रंथ क्वचित् स्थलमें शब्दके अर्थसें दोषसहितभी होवै तौभी विद्वानोंनें विचारपूर्वक शोध करके प्रेमसें सेवन करने योग्य है. इसकों दृष्टांत कहते हैं.—जैसे सुदामा ब्राह्मणके तुषोंसहित चावल श्रीकृष्णनें सेवन किये, तैसा विद्वज्जनोंनें यह मेरे ग्रंथका स्वीकार करना.

श्रीकाश्युपाध्यायवरोमहात्मा बभूवविद्वद्द्विजराजराजः ॥
तस्मादुपाध्यायकुलावतंसो यज्ञेश्वरोनंतइमावभूतां ॥ १२ ॥

विद्वान् ब्राह्मणोंमें केवल सार्वभौम ऐसे महात्मा श्रीकाश्युपाध्याय भये हैं. तिन्होंके सकाशसें उपाध्यायकुलमें भूषणरूपी ऐसे यज्ञेश्वरउपाध्याय और अनंत ऐसे नामवाले दो पुत्र भये हैं.

यज्ञेश्वरोयज्ञविधानदक्षो दैवज्ञवेदांगसुशास्त्रशिक्षः ॥
भक्तोत्तमोनंतगुणैकधामानंताह्वयोनंतकलावतारः ॥ १३ ॥

तिन दो पुत्रोंमें यज्ञविधानमें कुशल, ज्योतिषी, वेदोंका अंग जो उत्तम व्याकरण, तिसमें सुशिक्ष ऐसे यज्ञेश्वरोपाध्याय भये हैं. भक्तजनोंमें श्रेष्ठ और अनंतभगवानके अंशभूत अवतार होनेसें अनंत गुणोंका वसतिस्थान ऐसे अनंतोपाध्याय भये हैं.

एषोत्यजज्जन्मभुवंस्वकीयां तांकौंकणाख्यांसुविरक्तिशाली ॥
श्रीपांडुरंगेवसतिंविधाय भीमातटेमुक्तिमगात्सुभक्त्या ॥ १४ ॥

ये अनंतजी उपाध्याय वैराग्यवान् होके कोंकण नामवाली अपनी जन्मभूमि छोडके श्रीपांडुरंगक्षेत्रमें श्रीपांडुरंगके समीप वास करके श्रीपांडुरंगकी भक्तिसें भीमानदीके तटपर मुक्तिकों प्राप्त होते भये.

तस्यानंताभिधानस्योपाध्यायस्यसुतःकृती ॥
काशीनाथाभिधोधर्मसिंधुसारंसमातनोत् ॥ १५ ॥

तिन अनंतोपाध्यायका पुत्र, विद्वान् ऐसा काशीनाथ नामवाला इस धर्मसिंधुसार नामके ग्रंथकों रचता भया.

इतिश्रीमत्काश्युपाध्यायसूरिसूनुयज्ञेश्वरोपाध्यायानुजानंतोपाध्यायसुतकाशीनाथोपाध्यायविरचितेधर्मसिंधुसारेतृतीयपरिच्छेदोत्तरार्धंसमाप्तम् ॥ श्रीगुरुपांडुरंगार्पणमस्तु ॥

इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिअनुवादित धर्मसिंधुसारभाषाटीकायां तृतीयपरिच्छेदस्योत्तरार्धं समाप्तम्.

एकादशीके निर्णयका पट.

श्रीकाशिनाथोपाध्यायैरेकादश्याविनिर्णयः ॥
कृतोष्टादशभेदात्मा स्मार्तवैष्णवयोः पृथक् ॥ १ ॥

धर्मसिंधु नामक ग्रंथके कर्ता काशीनाथोपाध्यायजीनें एकादशीके अठारह भेदोंका निर्णय स्मार्त और वैष्णव इन्होंका पृथक् पृथक् किया है.

संलक्ष्योदाहृतेः सिद्धिं संशोध्य ग्रंथपट्टयोः ॥
विभाव्यैक्यं च पट्टेऽस्मिन् स यथामति लिख्यते ॥ २ ॥

उदाहरणोंकी उपपत्ति अच्छी प्रकार मनमें लेके और शोधन करके धर्मसिंधु और यह पट इन्होंकी एकवाक्यता करके इस पटमें वह निर्णय अपनी बुद्धिके अनुसार लिखताहुं.

श्रीरामचंद्रनामा नामप्रागर्धघृष्टजिह्वाग्रः ॥
स ब्रह्मवित्पिता मे जयतितरामेष जानकीजानिः ॥ ३ ॥

रामचंद्रनामा इस नामका जो पूर्वार्ध अर्थात् **'रामचंद्र'** इसका पूर्वार्ध जो **'राम'** तिसकरके घर्षित है जिह्वाका अग्रभाग जिनका ऐसे ब्रह्मवेत्ताओंके सहवर्तमान और जानकी है जाया अर्थात् स्त्री जिनकी ऐसे यह हमारे पिताजी, सर्व उत्कर्षकरके रहते हैं.

नामस्मृत्या यस्य च विबोधितो धर्मशास्त्रदुर्बोधम् ॥
निर्णयमेकादश्या निःसंदिग्धं सुखेन विलिखामि ॥ ४ ॥

जिस पिताजीके नामस्मरणमात्रकरके विबोधित होके मैं धर्मशास्त्रमें दुर्बोध ऐसा यह एकादशीका निर्णय संशयरहित सुखसें लिखताहुं.

अत्रसमत्वंसूर्योदयाद्यक्षणाव्यवहितपूर्वक्षणांततिथिसत्त्वंषष्टिघटिकारूपं न्यूनत्वंतुकिंचिन्न्यूनषष्टिघटिकावधिशुद्धाविद्धाभेदेषु तिथिक्षयवृद्धिभ्यांविलक्षणं यथावैष्णवशुद्धैकादशी प्रथमभेदे दश० ५५।५९ एका० ४९।५९ द्वाद० ४३।५९ एवंपरमक्षयेपलोनचतुश्चत्वारिंशत्घटीमितंन्यूनत्वं एवमेवस्मार्तवैष्णवयोःशुद्धाविद्धाभेदैर्विलक्षणत्वमूह्यम् ॥

यहां समत्व अर्थात् सूर्योदयके प्रथम क्षणके समीपका जो पूर्व क्षण तिसके अंतपर्यंत तिथिका होना अर्थात् पूर्ण साठ घटीका होना. न्यूनत्व तौ, किंचित् कम साठ घटीकापर्यंत तिथिका होना, शुद्धा और विद्धा इन भेदोंकेविषे तिथिका क्षय और वृद्धि इन्होंकरके विलक्षण होता है. जैसे,—वैष्णवोंकी शुद्धा एकदशीके प्रथम भेदमें दशमी ५५ घटी और ५९ पल होवै, एकादशी ४९ घटी और ५९ पल होवै, और द्वादशी ४३ घटी ५९ पल होवै, इस प्रमाणसें परवधि क्षयके स्थलमें पलमात्रसें कम ऐसा ४४ घटीपरिमित न्यूनत्व होता है. इस प्रमाणसेंही स्मार्त और वैष्णव इन्होंके शुद्धा और विद्धा इन भेदोंसें विलक्षणपना जानना.

एतेवैष्णवानामेकादश्याःशुद्धाभेदाः अत्रारुणोदयवेधरहिताशुद्धासाचतुर्विधा साचोदाहरणेषुप्रदर्श्यंते.

वैष्णवोंके शुद्धा एकादशीके भेद ९.

यहां अरुणोदयवेधरहित जो एकादशी है सो शुद्धा. यह चार प्रकारकी है. तिसके उदाहरण.—

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.		
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.	
शुद्धन्यूनान्यूनद्वादशिका.	५५	५९	५८	०	५९	५९	इयमनुभयाऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रस्मार्तानांवैष्णवानांचैकादश्यामेवोपवासः भेदः १. यह एकादशी अनुभयाधिक्यवती शुद्धा है. यह उदाहरणमें, स्मार्त और वैष्णवोंनें एकादशीके दिनमेंही उपवास करना.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५५	०	५७	०	५८	०	
शुद्धन्यूनासमद्वादशिका.	५५	५९	५८	०	६०	०	इयमप्यनुभयाऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रापिस्मार्तानांवैष्णवानांचैकादश्यामेवोपवासः भे० २ यहभी एकादशी अनुभयाधिक्यवती शुद्धा है. यहांभी स्मार्त और वैष्णवोंनें एकादशीके दिनमेंही उपोषण करना.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५५	०	५७	०	५८	०	
शुद्धन्यूनाऽधिकद्वादशिका.	५५	५९	५८	०	६०	१	इयंद्वादशीमात्राऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रस्मार्तानामेकादश्यांवैष्णवानांद्वादश्यामेवोपवासइति माधवमतं सर्वेषांद्वादश्यामेवेतिहेमाद्रिमतं. भे० ३. यह एकादशी द्वादशीमात्राधिक्यवती शुद्धा है. यहां, स्मार्तोंनें एकादशीमें और वैष्णवोंनें द्वादशीमेंही उपवास करना ऐसा माधवका मत है. संबोंनें द्वादशीमेंही उपवास करना ऐसा हेमाद्रिका मत है.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५०	०	५८	०	६०	१	
शुद्धसमान्यूनद्वादशिका.	५५	५९	६०	०	५९	५९	इयमनुभयाऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रस्मार्तानांवैष्णवानांचैकादश्यामेवोपवासः इदमुदाहरणंविचार्यं भे० ४. यह एकादशी अनुभयाधिक्यवती शुद्धा है, यहां स्मार्त और वैष्णवोंनें एकादशीमें उपवास करना. यह उदाहरण विचारणीय है.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५५	०	५७	०	५८	०	
शुद्धसमासमद्वादशिका.	५५	५९	६०	०	६०	०	इयमप्यनुभयाऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रस्मार्तानांवैष्णवानांचैकादश्यामेवोपवासः भे० ५. यहभी एकादशी अनुभयाधिक्यवती शुद्धा है. यहां स्मार्त और वैष्णवोंनें एकादशीमेंही उपवास करना.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५५	०	५७	०	५८	०	

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.		
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.	
शुद्धसमाऽधिकद्वादशिका.	५५	५९	६०	०	६० ३	० १	इयंद्वादशीमात्राऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रस्मार्तानामेकादश्यांवैष्णवानांद्वादश्यामेवोपवासः इतिमाधवमतं सर्वेषांद्वादश्यामेवोपवासइतिहेमाद्रिमतं. भे० ६.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५५	०	५८	०	६०	१	यह एकादशी द्वादशीमात्राधिक्यवती शुद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमें और वैष्णवोंनें द्वादशीमेंही उपवास करना, ऐसा माधवका मत है. सबोंनें द्वादशीमेंही उपवास करना ऐसा हेमाद्रिका मत है.
शुद्धाऽधिकान्यूनद्वादशिका.	५५	५९	६० ०	० १	५९ क्ष	५८ य	इयमेकादशीमात्राऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रस्मार्तगृहस्थानांपूर्वैकादश्यांयतीनांवैष्णवानां चोर्वरितैकादश्यामेवोपवासइतिमाधवमतं कामाद्वा अकामाद्वा वैष्णवोद्वयमुपवसेदितिहेमाद्रिमतं. इदमुदाहरणंविचार्यं. भे० ७.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५५	०	६०	१	५८ क्ष	० य	यह एकादशी एकादशीमात्राधिक्यवती शुद्धा है. यहां स्मार्तोंनें पूर्व एकादशीमें; संन्यासी और वैष्णवोंनें शेष रही हुई एकादशीमें उपवास करना ऐसा माधवका मत है. सकाम अथवा निष्काम वैष्णवोंनें दोनों दिनमें उपवास करना ऐसा हेमाद्रिका मत है. यह उदाहरण विचार करनेके योग्य है.
शुद्धाऽधिकासमद्वादशिका.	५५	५९	६० ०	० १	५९ क्ष	५९ य	इयमप्येकादशीमात्राऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रापि स्मार्तगृहस्थानांपूर्वैकादश्यांयतीनांवैष्णवानां चावशिष्टैकादश्यामेवोपवासइतिमाधवमतं कामाद्वाअकामाद्वावैष्णवोद्वयमुपवसेदितिहेमाद्रिमतं. भे० ८.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५५	०	६०	१	५८ क्ष	० य	यहभी एकादशी एकादशीमात्राधिक्यवती शुद्धा है. यहांभी स्मार्तोंनें पूर्व एकादशीमें; यती और वैष्णवोंनें शेष रही एकादशीमें उपवास करना ऐसा माधवका मत है. सकाम अथवा निष्काम वैष्णवोंनें दोनों दिन उपवास करना ऐसा हेमाद्रिका मत है.

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.	
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.
शुद्धाऽधिकाऽधिकद्वादशिका.	५५	५९	६०	१	३	५५
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५५	०	६०	१	५	०

इयमुभयाऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रस्मार्तैर्वैष्णवैश्चपरैवैकादश्युपोष्येत्युभयमतं. भे० ९.

यह एकादशी उभयाधिक्यवती शुद्धा है. यहां स्मार्त और वैष्णवोंनें दूसरे दिनकीही उपोषणविषे ग्रहण करनी ऐसा हेमाद्रि और माधव इन्होंका मत है.

एतेवैष्णवानांविद्धैकादश्याभेदाः अत्रविद्धत्वमरुणोदयेदशमीसत्त्वंअरुणोदयस्तुसूर्योदयात्प्राक्चतुर्घटिकात्मकः

वैष्णवोंकी विद्धा एकादशीके भेद ९.

यहां विद्धत्व अर्थात् अरुणोदय समयमें होना. सूर्योदयके पहले चार घटिकात्मक जो काल है तिसकों अरुणोदय कहते हैं.

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.	
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.
विद्धन्यूनान्यूनद्वादशिका.	५६	१	५८	०	५९	५९
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५७	०	५८	०	५९	०

इयमनुभयाऽधिक्यवतीविद्धा अत्रस्मार्तानामेकादश्यामेवोपवासोवैष्णवानांविद्धत्वात् द्वादश्यामुपवासः भेदः १.

यह एकादशी अनुभयाधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमेंही उपवास करना. यह एकादशी विद्धा है इसलिये वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपवास करना.

विद्धन्यूनासमद्वादशिका.	५६	१	५८	०	६०	०
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५७	०	५८	०	५९	०

इयमप्यनुभयाऽधिक्यवतीविद्धा अत्रापिस्मार्तानामेकादश्यामेवोपवासोवैष्णवानांविद्धत्वात्द्वादश्यामुपवासः भे० २.

यह एकादशी अनुभयाधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमें और यह विद्धा होनेसें वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपवास करना.

विद्धन्यूनाऽधिकद्वादशिका.	५६	१	५८	१	६० १	० १
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५८	०	५९	०	६०	१

द्वादशीमात्राऽधिक्यवतीविद्धेयं अत्रस्मार्तैरेकादश्युपोष्यावैष्णवैर्द्वादश्युपोष्या हेमाद्रिमतेतुसर्वैर्द्वादश्येवोपोष्या. भे० ३.

यह एकादशी द्वादशीमात्राधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमें और वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपवास करना. हेमाद्रिके मतमें तो, सबोंनें द्वादशीमेंही उपवास करना ऐसा है.

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.		
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.	
विद्धसमान्यूनद्वादशिका.	५८	५९	६०	०	५९	५९	इयमनुमयाऽधिक्यवतीविद्धा अत्रस्मार्तानामेकादश्यामेवोपवासोवैष्णवानांविद्धत्वात् द्वादश्यामुपवासः भे० ४. यह एकादशी अनुभयाधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमेंही उपवास करना. विद्धा है इसलिये वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपवास करना.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५७	०	५८	०	५९	०	
विद्धसमासमद्वादशिका.	५९	१	६०	०	६०	०	इयमप्यनुभयाऽधिक्यवतीविद्धा अत्रस्मार्तानामेकादश्यामेवोपवासोवैष्णवानांविद्धत्वात् द्वादश्यामुपवासः भे० ५. यहभी एकादशी अनुभयाधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमेंही उपवास करना. विद्धा है इसलिये वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपवास करना.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५७	०	५८	०	५९	०	
विद्धसमाधिकद्वादशिका.	५७	१	६०	०	६० १	० ०	इयंद्वादशीमात्राऽधिक्यवतीविद्धा अत्रस्मार्तैरेकादश्युपोष्यावैष्णवैर्द्वादश्युपोष्या हेमाद्रिमतेतुसर्वैर्द्वादश्येवोपोष्या. भे० ६. यह एकादशी द्वादशीमात्राधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमें और वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपवास करना. हेमाद्रिके मतमें तौ सबोंनें द्वादशीमेंही उपवास करना.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५८	०	५९	०	६०	१	
विद्धाऽधिकान्यूनद्वादशिका.	५९	१	६० ०	० १	५३ क्ष	५८ य	इयमेकादशीमात्राऽधिक्यवतीविद्धा अत्रस्मार्तैर्गृहस्थैः पूर्वैकादश्युपोष्यायतिभिर्निष्कामगृहिभिर्वनस्थैर्विधवाभिर्वैष्णवैश्चपरैवोपोष्या विष्णुप्रीतिकामैःस्मार्तैरुपवासद्वयंकार्यमितिकेचित्. भे० ७. यह एकादशी एकादशीमात्राधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्तोंनें पहली एकादशीमें उपवास करना. संन्यासी, कामनासें रहित गृहस्थाश्रमी, वानप्रस्थाश्रमी, विधवा और वैष्णव इन सबोंनें दूसरे दिनकीही उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. विष्णुकी प्रीति इच्छनेवाले स्मार्तोंनें दो उपवास करने ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५८	०	६०	१	५८ क्ष	० य	

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.	
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.
विद्धाधिकासमद्वादशिका.	५९	१	६० ०	० १	५९ क्ष	५९ य
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५८	०	६०	१	५८	०
विद्धाधिकाऽधिकद्वादशिका.	५६	१	६० १	० ०	५	०
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५८	०	६०	१	४	०

इयमप्येकादशीमात्राऽधिक्यवतीविद्धा अत्रस्मार्तैर्गृहस्थैः पूर्वैकादश्युपोष्या यतिभिर्निष्कामगृहिभिर्वनस्थैर्विधवाभिर्वैष्णवैश्चपरैवोपोष्या विष्णुप्रीतिकामैःस्मार्तैरुपवासद्वयंकार्यमितिकेचित्. भे० ८.

यहभी एकादशी एकादशीमात्राधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्तोंनें पूर्व दिनकी एकादशी उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. संन्यासी, निष्काम गृहस्थाश्रमी, वानप्रस्थ, विधवा और वैष्णव इन सबोंनें दूसरे दिनकीही उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. विष्णुकी प्रीति इच्छनेवाले स्मार्तोंनें दो उपवास करने ऐसा कितनेक कहते हैं.

इयमुभयाऽधिक्यवतीविद्धा अत्रसर्वैःस्मार्तैर्वैष्णवैश्चावशिष्टापरैवैकादश्युपोष्या. भे० ९.

यह एकादशी उभयाधिक्यवती विद्धा है. यहां सब स्मार्त और वैष्णवोंनें शेष रही ऐसी दूसरे दिनकीही एकादशी उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी.

इमेस्मार्तानांशुद्धैकादशीभेदाः ॥ शुद्धत्वंनामसूर्योदयेदशम्यसत्त्वं साचतुर्विधा साचोदाहरणैःप्रदर्श्यते.

अब स्मार्तोंका एकादशीनिर्णय कहताहुं.

ये स्मार्तोंके शुद्धैकादशीके भेद. शुद्धत्व अर्थात् सूर्योदयके समयमें दशमी तिथि नहीं होना सो. वह शुद्धैकादशी चार प्रकारकी है. वे चार प्रकार उदाहरणोंसें प्रदर्शित करते हैं.

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.	
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.
शुद्धन्यूनान्यूनद्वादशिका.	५९	५९	५९	०	५९	०
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५७	०	५८	०	५९	०

इयमनुभयाऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रस्मार्तानामेकादश्यामेवोपवासोनद्वादश्यां वैष्णवानांतुविद्धत्वात् द्वादश्यामुपवासः भेदः १.

यह एकादशी अनुभयाधिक्यवती शुद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीके दिनमें उपवास करना, द्वादशीमें नहीं करना. विद्धा है इसलिये वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपवास करना.

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.		
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.	
शुद्धन्यूनासम द्वादशिका.	५९	५९	५९	४५	६०	०	इयमप्यनुभयाऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रस्मार्तानामेकादश्यामेवोपवासोनद्वादश्यां वैष्णवानांतुविद्धत्वात्द्वादश्यामुपवासः भे० २. यहभी एकादशी अनुभयाधिक्यवती शुद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमेंही उपवास करना. द्वादशीमें नहीं करना. विद्धा होनेसें वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपवास करना.
धर्मोब्धिस्थमुदाहरणं.	५७	०	५८	०	५९	०	
शुद्धान्यूनाऽधिकद्वादशिका.	५९	५९	५९	५९	६० १	० ०	इयंद्वादशीमात्राऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रशुद्धत्वात् स्मार्तानामेकादश्यामेवोपवासोनद्वादश्यामितिमाधवमतंहेमाद्रिमतेतुसर्वैर्द्वादश्येवोपोष्या केचित्तुमुमुक्षुभिः स्मार्तैःपरोपोष्येत्याहुः भे० ३. यह एकादशी द्वादशीमात्राधिक्यवती शुद्धा है. यहां, शुद्धा है इसलिये स्मार्तोंनें एकादशीमेंही उपवास करना. द्वादशीमें उपवास नहीं करना ऐसा माधवका मत है. हेमाद्रिके मतमें तौ सबोंनें द्वादशीमेंही उपवास करना. कितनेक ग्रंथकार तौ, मोक्षकी इच्छावाले स्मार्तोंनें दूसरे दिनकी एकादशी उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी ऐसा कहते हैं.
धर्मोब्धिस्थमुदाहरणं.	५८	०	५९	०	६० ०	० १	
शुद्धसमान्यून द्वादशिका.	५८	५९	६०	०	५९	५९	इयमनुभयाऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रस्मार्तानामेकादश्यामेवोपवासोनद्वादश्यां वैष्णवानांतुविद्धत्वात् द्वादश्यामेवोपवासः भे० ४. यहभी एकादशी अनुभयाधिक्यवती शुद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमेंही उपवास करना. विद्धा है इसलिये वैष्णवोंनें द्वादशीमेंही उपवास करना.
धर्मोब्धिस्थमुदाहरणं.	५७	०	५८	०	५९	०	
शुद्धसमासम द्वादशिका.	५८	५९	६०	०	६०	०	इयमप्यनुभयाऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रापिस्मार्तानामेकादश्यामेवोपवासोनद्वादश्यांवैष्णवानांतु विद्धत्वात्द्वादश्यामेवोपवासः भे० ५. यह एकादशी अनुभयाधिक्यवती शुद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमेंही उपवास करना, द्वादशीमें नहीं करना. विद्धा है इसलिये वैष्णवोंनें द्वादशीमेंही उपवास करना.
धर्मोब्धिस्थमुदाहरणं.	५७	०	५८	०	५८	०	

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.		
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.	
शुद्धसमाऽधिकद्वादशिका.	५९	५९	६०	०	६० १	० ०	इयंद्वादशीमात्राऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रशुद्धत्वात्स्मार्तानामेकादश्यामेवोपवासोनद्वादश्यामिति माधवमतंहेमाद्रिमतेतुसर्वैः पराद्वादश्येवोपोष्याकेचित्तुमुमुक्षुभिःस्मार्तैःपरोपोष्येत्याहुः भे० ६. यह एकादशी द्वादशीमात्राधिक्यवती शुद्धा है. यहां, शुद्धा होनेसें स्मार्तोंनें एकादशीमेंही उपवास करना, द्वादशीमें नहीं करना ऐसा माधवका मत है. हेमाद्रिके मतमें तौ, सबोंनें दूसरे दिनकी द्वादशीही उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. कितनेक ग्रंथकार, मोक्षकी इच्छावाले स्मार्तोंनें दूसरी उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी ऐसा कहते हैं.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५८	०	५९	०	६० ०	० १	
शुद्धाऽधिकान्यूनद्वादशिका.	५९	५९	६० १	० ०	५८ क्ष	५९ य	इयमेकादशीमात्राऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रस्मार्तैर्गृहिभिःपूर्वैकादश्युपोष्या यतिभिर्निष्कामगृहिभिर्वनस्थैर्विधवाभिर्वैष्णवैश्चपरैवोपोष्या विष्णुप्रीतिकामैरुपवासद्वयंकार्यमितिकेचित्. भे० ७ यह एकादशी द्वादशीमात्राधिक्यवती शुद्धा है. यहां स्मार्त गृहस्थोंनें पूर्व दिनकी एकादशी उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. संन्यासी, निष्काम गृहस्थाश्रमी, वानप्रस्थ, विधवा और वैष्णव इन सबोंनें दूसरे दिनकीही उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. विष्णुकी प्रीति इच्छनेवालोंनें दो उपवास करने ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५८	०	६०	१	५८ क्ष	० य	
शुद्धाधिकासमद्वादशिका.	५९	५९	६० १	० ०	६० क्ष	० य	इयमप्येकादशीमात्राऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रस्मार्तैर्गृहिभिः पूर्वैकादश्युपोष्या यतिभिर्निष्कामगृहिभिर्वनस्थैर्विधवाभिर्वैष्णवैश्चपरैवोपोष्या विष्णुप्रीतिकामैरुपवासद्वयंकार्यमितिकेचित्. भे० ८. यहभी एकादशी एकादशीमात्राधिक्यवती शुद्धा है. यहांभी स्मार्त गृहस्थोंनें पूर्व दिनकी एकादशी उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. संन्यासी, निष्काम गृहस्थाश्रमी, वानप्रस्थ, विधवा और वैष्णव इन सबोंनें दूसरे दिनकीही उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. विष्णुकी प्रीति इच्छनेवालोंनें दो उपवास करने.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५८	६०	६०	१	५८ क्ष	० य	

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.	
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.
शुद्धाधिकाधिकद्वादशिका.	५९	५९	६० १	० ०	३	०
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	५८	०	६० १	० ०	४	०

इयमुभयाऽधिक्यवतीशुद्धा अत्रसर्वैःस्मार्तैर्वैष्णवैश्चावशिष्टापरैवैकादश्युपोष्या. भे० ९.

यह एकादशी उभयाधिक्यवती शुद्धा है. यहां, सब स्मार्त और वैष्णवोंनें शेष रही ऐसी दूसरे दिनकीही एकादशी उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी.

इमेस्मार्तानांविद्धैकादशीभेदाः अत्रविद्धत्वंसूर्योदयेदशमीसत्त्वं सूर्योदयस्तुषष्टिघटिकांत्यक्षणाव्यवहितोत्तरक्षणलवादिकालावच्छिन्नः इयमपि विद्धा चतुर्विधा साचोदाहरणेषु प्रदर्श्यते ॥

स्मार्तोंकी विद्धैकादशीके भेद.

यहां विद्धत्व अर्थात् सूर्योदयके समयमें दशमी तिथिका होना सो. सूर्योदय तौ, साठ घटीयोंका जो अंत्य क्षण तिसके सन्निहित ऐसा जो आगामी क्षणलवादि काल तिसकों व्याप्त करके रहनेवाला सो. यह विद्धा एकादशीभी चार प्रकारकी है. वे चार प्रकार उदाहरणोंकरके दिखाते हैं.

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.	
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.
विद्धन्यूनान्यूनद्वादशिका.	२	०	५७ क्ष	५९ य	५७	०
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	२	०	५६ क्ष	० य	५५	०

इयमनुभयाऽधिक्यवती विद्धा अत्रस्मार्तानामेकादश्यामुपवासः वैष्णवानां द्वादश्यामुपवासः भेदः १.

यह एकादशी अनुभयाधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमें उपवास करना. वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपोषण करना.

विद्धन्यूनासमद्वादशिका.	२	०	५७ क्ष	५९ य	६०	०
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	२	०	५६ क्ष	० य	५५	०

इयमप्यनुभयाऽधिक्यवती विद्धा अत्रापिस्मार्तानामेकादश्यामुपवासः वैष्णवानां द्वादश्यामुपवासः भेदः २.

यहभी एकादशी अनुभयाधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमें और वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपोषण करना.

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.		
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.	
विद्धन्यूनाधिकद्वादशिका.	१	०	५८	५९	६० १	० ०	इयंद्वादशीमात्राऽधिक्यवती विद्धा अत्रैकादश्या विद्धत्वात् द्वादश्यामेवस्मार्तानामप्युपवासः तत्रकिमुवक्तव्यं वैष्णवानामिति एवंचोभयाधिक्ये द्वादशीमात्राधिक्येच स्मार्तानां विद्धायास्त्यागोनान्यत्र. भे० ३. यह एकादशी द्वादशीमात्राधिक्यवती विद्धा है. यह एकादशी विद्धा होनेसें द्वादशीमेंही स्मार्तोंनें उपोषण करना. द्वादशीमें वैष्णवोंनें उपवास करना. इस विषयमें कहनेकी आवश्यकता नहीं है. इसप्रकार उभयाधिक्य और द्वादशीमात्राधिक्य होनेमें स्मार्तोंनें विद्धैकादशी त्यागनी उचित है, अन्यत्र नहीं त्यागनी.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	१	०	५८	०	६० ०	० १	
विद्धसमान्यूनद्वादशिका.	२	०	५८ क्षय	०	५८	५९	इयमनुभयाऽधिक्यवती विद्धा अत्रस्मार्तानामेकादश्यामुपवासः वैष्णवानां द्वादश्यामुपवासः भे० ४. यह एकादशी अनुभयाधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमें और वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपवास करना.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	२	०	५६ क्षय	०	५५	०	
विद्धसमासमद्वादशिका.	२	०	५८ क्षय	०	६०	०	इयमप्यनुभयाऽधिक्यवतीविद्धा अत्रस्मार्तानामेकादश्यामुपवासः वैष्णवानां द्वादश्यामुपवासः भे० ५. यह एकादशी अनुभयाधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्तोंनें एकादशीमें और वैष्णवोंनें द्वादशीमें उपवास करना.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	२	०	५६ क्षय	०	५५	०	
विद्धसमाऽधिकद्वादशिका.	२	०	५८ क्षय	५९	६०	०	इयंद्वादशीमात्राऽधिक्यवती विद्धा अत्रैकादश्या विद्धत्वात् द्वादश्यामेव स्मार्तानामप्युपवासः तत्रकिमुवक्तव्यंवैष्णवानामिति पूर्ववदत्रस्मार्तानां विद्धायास्त्यागः भे० ६. यह एकादशी द्वादशीमात्राधिक्यवती विद्धा है. यहां, एकादशी विद्धा है इसलिये स्मार्तोंनेंभी द्वादशीमेंही उपवास करना. वैष्णवोंनें द्वादशीमें करना इस विषयमें कहनेकी अपेक्षा नहीं है. तीसरे भेदमें कहेकी तरह यहां स्मार्तोंनें विद्धाका त्याग करना.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	१	०	५८ क्षय	०	६० ०	० १	

	दशमी.		एकाद.		द्वादशी.		
	घ.	प.	घ.	प.	घ.	प.	
विद्धाधिकान्यूनद्वादशिका.	७	०	२	०	५५ क्ष	० य	इयमेकादशीमात्राऽधिक्यवती विद्धा अत्रस्मार्तैं र्गृहिभिः पूर्वैकादश्युपोष्या यतिभिर्निष्कामगृहिभिर्वनस्थैर्विधवाभिर्वैष्णवैश्चपरैवोपोष्या विष्णुप्रीतिकामैः स्मार्तैरुपवासद्वयंकार्यमिति केचित्. भे० ७. यह एकादशी एकादशीमात्राधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्त गृहस्थीयोंनें पहले दिनकी एकादशी उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. संन्यासी, निष्काम गृहस्थाश्रमी, वानप्रस्थ, विधवा और वैष्णव इन्होंनें दूसरे दिनकीही उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. विष्णुप्रीतिकी इच्छावाले स्मार्तोंनें दो उपवास करने ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	४	०	२	०	५८ क्ष	० य	
विद्धाऽधिकासमद्वादशिका.	५	०	२	०	५८ क्ष	० य	इयमप्येकादशीमात्राऽधिक्यवती विद्धा अत्रस्मार्तैर्गृहिभिः पूर्वोपोष्या यतिभिर्निष्कामगृहिभिर्वनस्थैर्विधवाभिर्वैष्णवैश्चपरैवोपोष्या विष्णुप्रीतिकामैःस्मार्तैरुपवासद्वयंकार्यमिति केचित्. भे० ८. यह एकादशी एकादशीमात्राधिक्यवती विद्धा है. यहां स्मार्त गृहस्थाश्रमीयोंनें पूर्व दिनकी उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. संन्यासी, निष्काम गृहस्थाश्रमी, वानप्रस्थ, विधवा और वैष्णव इन सबोंनें दूसरे दिनकीही उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. विष्णुप्रीतिकी इच्छावाले स्मार्तोंनें दो उपवास करने ऐसा कितनेक ग्रंथकार कहते हैं.
धर्माब्धिस्थमुदाहरणं.	४	०	२	०	५८ क्ष	० य	
विद्धाधिकाऽधिद्वादशिका.	७	०	४	०	३	०	इयमुभयाधिऽक्यवतीविद्धा अत्रसर्वैःस्मार्तैर्वैष्णवैश्चावशिष्टापरैवैकादश्युपोष्या एतदुदाहरणेपिस्मार्तानांविद्धायास्त्यागः भे०९. यह एकादशी उभयाधिक्यवती विद्धा है. यहां सब स्मार्त और वैष्णवोंनें शेष रही ऐसी दूसरे दिनकीही उपोषणके अर्थ ग्रहण करनी. यहां स्मार्तोंनें विद्धाका त्याग करना.
धर्माब्धिस्थमु ाहरणं.	२	०	३	०	४	०	

रामचंद्रतनूजेन वासुदेवेन विन्मुदे ॥
धर्माब्धिशेषपट्टोयमशोध्येकादशीभिदां ॥ १ ॥

रामचंद्रोपाध्यायके पुत्र वासुदेवोपाध्याय इन्होंनें धर्माब्धिका शेषभूत एकादशीके भेदोंका पट विद्वज्जनोंके संतोषके अर्थ शोधन किया है ॥

रसांकसप्तभूशके तपस्यविघ्नराट्तिथौ ॥
गुरौसमापितो मया पटः करोतु शं सतां ॥ २ ॥

शके १७९६ इस वर्षमें फाल्गुन शुद्ध चतुर्थी, गुरुवार इस दिनमें मैंनें समाप्त किया हुआ यह पट सज्जनोंको सुखकर हो. शुभं भवतु. ॥

दर्ता नं.
२३५८२